श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

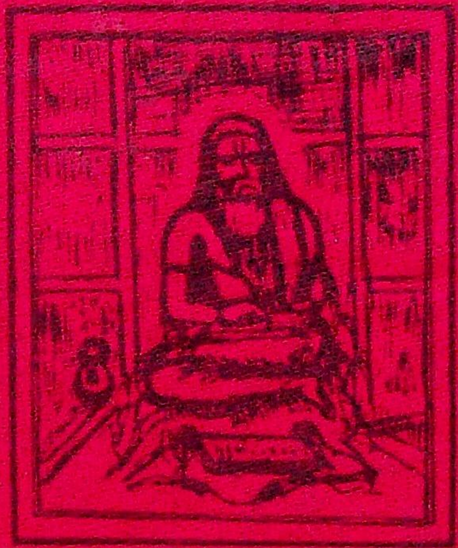
महर्षिवेदव्यासप्रणीतम्

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

(सचित्रं 'तत्त्वप्रबोधिनी' सरलहिन्दीटीकासहितम्)

पञ्चमः खण्डः

(अष्टमः स्कन्धः नवमः स्कन्धश्च)



दयालोक प्रकाशन संस्थान

१४ पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद, २११००२

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

महर्षिवेदव्यासप्रणीतम्

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

(सचित्रं 'तत्त्वप्रबोधिनी' सरलहिन्दीटीकासहितम्)

पञ्चमः खण्डः

(अष्टमः स्कन्धः नवमः स्कन्धश्च)



टीकाकर्त्री

श्रीमती दयाकान्ति देवी

धर्मपत्नी—श्रीलोकमणिलाल

दयालोक प्रकाशन संस्थान

१४ पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद, २११००२

प्रकाशक—दयालोक प्रकाशन संस्थान, १४, पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद

विक्रमसंवत् २०४६, प्रथम संस्करण १०००

प्राप्ति-स्थान
दयालोक प्रकाशन संस्थान
१४ पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद—२११००२

मूल्य : ३५० रूपये मात्र

मुद्रक—
शाकुन्तल मुद्रणालय
३४, बलरामपुर हाउस, इलाहाबाद

नम्र निवेदन

श्रीमद्भागवत श्रीकृष्णस्वरूप ही है—'श्रीमद्भागवताख्योऽयं प्रत्यक्षः कृष्ण एव हि'। (श्रीमद्भागवतमाहात्म्य ६।३०)। भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन तथा उनकी भक्ति का प्रचार इस ग्रन्थरत्न का मुख्य प्रयोजन है। यद्यपि श्रीमद्भागवत में भक्ति और ज्ञान का समान रूप से ही वर्णन मिलता है तो भी उपोद्घात और उपसंहार के अनुशीलन तथा श्रोता और वक्ता के प्रश्नोत्तरों की आलोचना से ग्रन्थ की भक्तिप्रधानता ही सिद्ध होती है।

शौनक आदि महर्षियों ने सूत से भगवान् की साकारोपासना सम्बन्धी प्रश्न करके सगुण साकार भगवान् की कथा सुनने में ही अपनी अभिरुचि दिखायी—

सुत जानासि भद्रं ते भगवान् सात्वतां पतिः।
देवक्यां वसुदेवस्य जातो यस्य चिकीर्षया ॥ (भाग० १।१।१२)

हे सूत जी ! आपका कल्याण हो। वैष्णव जन के रक्षक भगवान् जिस लीला को करने की इच्छा से वसुदेव जी की पत्नी देवकी के गर्भ से अवतीर्ण हुए थे, उसे आप जानते हैं।

तस्य कर्माण्युदाराणि परिगीतानि सूरिभिः।
ब्रूहि नः श्रद्दधानानां लीलया दधतः कलाः ॥ (१।१।१७)

आप हम श्रद्धालु जनों से, लीलापूर्वक कलाओं को धारण करने वाले उस परम प्रभु के, विद्वानों के द्वारा गाये गये महान् चरित का वर्णन करें।

अथाख्याहि हरेर्धीमन्नवतारकथाः शुभाः।
लीला विदधतः स्वैरमीश्वरस्यात्ममायया ॥ (१।१।१८)

हे विद्वान् सूत जी ! अपनी सत्त्वगुणी माया से स्वेच्छापूर्वक लीलाओं को धारण करने वाले भगवान् श्रीहरि के अवतारों की मंगलमयी कथाओं को अब कहिये।

कृतवान् किल वीर्याणि सह रामेण केशवः।
अतिमर्त्यानि भगवान् गूढः कपटमानुषः ॥ (१।१।२०)

भगवान् श्रीकृष्ण ने बलराम जी के साथ गुप्त रूप से मनुष्य के छलिया वेष में अलौकिक और पराक्रमयुक्त लीलायें की थीं, यह इतिहास प्रसिद्ध है।

इस प्रकार श्रीमद्भागवत का उपोद्घात तो श्रीकृष्णभक्तिरस से अप्लावित है ही, उपसंहार में भी सूत ने श्रीकृष्णचरणारविन्द की भक्ति के लिए ही प्रार्थना की है तथा श्रीकृष्णनामसंकीर्तन की महिमा गाते हुए उन्हीं को प्रणाम करके ग्रन्थ को समाप्त किया है। इससे श्रीमद्भागवत में श्रीकृष्ण-भक्ति की ही प्रधानता दृष्टिगोचर होती है।

हमारे संस्करण के प्रस्तुत पञ्चम भाग में दो स्कन्ध रखे गये हैं—अष्टम तथा नवम। अष्टम स्कन्ध में मन्वन्तर, गजेन्द्रमोक्ष, समुद्रमन्थन, भगवान् का मोहिनीरूपधारण, देवासुर-संग्राम, भगवान् का वामन अवतार तथा मत्स्यावतार वर्णित हैं। नवम स्कन्ध में सुद्युम्न की कथा, सुकन्या-चरित्र, अम्बरीष, मान्धाता, त्रिशंकु, हरिश्चन्द्र तथा भगीरथ की कथा, गंगावतरण, परशुरामचरित्र, ययातिचरित्र, भरतवंश-वर्णन, राजा रन्तिदेव की कथा, यदुवंशवर्णन इत्यादि समाविष्ट हैं।

करुणावरुणालय भगवान् की असीम अनुकम्पा से हमारा ज्ञानयज्ञ लगभग एक दशक से निरवच्छिन्न चल रहा है। इस अवधि में तत्त्वप्रबोधिनी टीका सहित श्रीमद्भागवत के अन्य खण्डों के साथ यह पाँचवाँ खण्ड प्रकाशित देखकर हमें प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। अन्य खण्डों की भाँति यह भी सम्पूर्ण विशेषताओं से ओत-प्रोत है। इस गुरुतर कार्य को अग्रसारित करने का सारा श्रेय मेरे पतिदेव श्री लोकमणिलाल जी को है। उनकी अनुकम्पा से आगे भी इसी प्रकार कार्य होते रहेंगे, ऐसी आशा है। लेखन कार्य अन्तिम अष्टम खण्ड में पहुँच गया है। यथा-समय शेष खण्ड भी प्रकाशित हो जायेंगे। इस कार्य में आचार्य श्री तारिणीश झा का कर्मठ सहयोग यदि मुझे प्राप्त नहीं होता तो इतने कम समय में इतने खण्डों का निकलना दुष्कर ही था। अतः आचार्य जी के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्त्तव्य समझती हूँ। फतेहपुर डिग्रीकालेज के प्राध्यापक डा० सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी भी इस ज्ञानयज्ञ में ऋत्विज का कार्य कर रहे हैं। उनसे मुझे अविस्मरणीय सहयोग मिल रहा है। इसलिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। अन्त में इसके सुचारु मुद्रण के लिए शाकुन्तल मुद्रणालय के व्यवस्थापक श्री उपेन्द्र त्रिपाठी को तथा इस कार्य से संपृक्त सभी व्यक्तियों को मैं धन्यवाद देती हूँ। आशा है, मेरी कृति से पाठकों को परितोष होगा। इत्यलम्।

मकर संक्रान्ति
संवत् २०४६, श्रीकृष्ण संवत् ५११५
१४ जनवरी, १९९०

निवेदिका
दयाकान्ति देवी

श्रीहरिः शरणम्

विषय-सूची

नवम स्कन्ध

— — —

चित्र-सूची

(रंगीन)

रेखाचित्र

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य

अष्टमः स्कन्धः



एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतमेको देवो देवकीपुत्र एव।
एको मन्त्रस्तस्य नामानि यानि कर्माण्येकं तस्य देवस्य सेवा ।।

श्रीमद्भागवत की आरती

आरती अति पावन पुराण की ।

धर्म भक्ति विज्ञान खान की ।। आ० ।।

महापुराण भागवत निर्मल ।

शुक-मुख-विगलित निगम-कल्प-फल ।

परमानन्द-सुधा-रसमय कल ।

लीला-रति-रस रस-निधान की ।। आ० ।।

कलि-मल-मथनि त्रिताप-निवारिनि ।

जन्म-मृत्युमय भव-भय-हारिनि ।

सेवत सतत सकल सुख कारिनि ।

सु महौषधि हरि-चरित-गान की ।। आ० ।।

विषय-विलास-विमोह-विनाशिनि ।

विमल विराग विवेक विकाशिनि ।

भगवत्तत्त्व-रहस्य प्रकाशिनि ।

परम ज्योति परमात्म-ज्ञान की ।। आ० ।।

परमहंस-मुनि-मन-उल्लासिनि ।

रसिक-हृदय-रस-रास विलासिनि ।

भुक्ति मुक्ति रति प्रेम सुदासिनि ।

कथा अकिञ्चन प्रिय सुजान की ।। आ० ।।



ॐ तत्सत्

श्रीगणेशाय नमः

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

प्रथमः अध्यायः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

प्रथमः श्लोकः

राजोवाच—स्वायम्भुवस्येह गुरो वंशोऽयं विस्तराच्छ्रुतः ।
यत्र विश्वसृजां सर्गो मनूनन्यान्वदस्व नः ॥१॥

पदच्छेद— स्वायम्भुवस्य इह गुरोः वंशः अयम् विस्तरात् श्रुतः ।
यत्र विश्वसृजाम् सर्गः मनून् अन्यान् वदस्व नः ॥

शब्दार्थ—

स्वायम्भुवस्य	३.	स्वायम्भुव मनु का	यत्र	८.	जिस (वंश में)
इह	२.	यहाँ	विश्वसृजाम्	९.	प्रजापतियों ने
गुरोः	१.	हे गुरुदेव ! मैंने	सर्गः	१०.	वंश परम्परा (चलाई थी)
वंशः	५.	वंश	मनून्	१३.	मनुओं का
अयम्	४.	यह	अन्यान्	१२.	दूसरे
विस्तरात्	६.	विस्तार	वदस्व	१४.	वर्णन कीजिये
श्रुतः	७.	सुन लिया	नः ॥	११.	हम से

श्लोकार्थ—हे गुरुदेव ! मैंने यहाँ स्वायम्भुव मनु का यह वंश-विस्तार सुन लिया । जिस वंश में प्रजापतियों ने वंश-परम्परा चलाई थी । हमसे दूसरे मनुओं का वर्णन कीजिये ॥

द्वितीयः श्लोकः

यत्र यत्र हरेर्जन्म कर्माणि च महीयसः ।
गृणन्ति कवयो ब्रह्मंस्तानि नो वद शृण्वताम् ॥२॥

पदच्छेद— यत्र यत्र हरेः जन्म कर्माणि च महीयसः ।
गृणन्ति कवयः ब्रह्मन् तानि नः वद शृण्वताम् ॥

शब्दार्थ—

यत्र-यत्र	३.	जिस-जिस मन्वन्तर में	गृणन्ति	९.	वर्णन करते हैं
हरेः	५.	भगवान् के	कवयः	२.	ज्ञानी जन महात्मा
जन्म	६.	अवतारों	ब्रह्मन्	१.	हे ब्रह्मन्
कर्माणि	८.	लीलाओं का	तानि	१०.	उन्हें आप
च	७.	और	नःवद	१२.	हमें सुनाइये
महीयसः ।	४.	महिमावान्	शृण्वताम् ॥	११.	सुनने के इच्छुक

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! ज्ञानी जन महात्मा जिस-जिस मन्वन्तर में महिमावान् भगवान् के अवतारों और लीलाओं का वर्णन करते हैं, उन्हें आप सुनने के इच्छुक हमें सुनाइये ॥

तृतीयः श्लोकः

यद्यस्मिन्नन्तरे ब्रह्मन्भगवान्विश्वभावनः ।
कृतवान्कुरुते कर्ता ह्यतीतेऽनागतेऽद्य वा ॥३॥

पदच्छेद— यत् यस्मिन् अन्तरे ब्रह्मन् भगवान् विश्वभावनः ।
कृतवान् कुरुते कर्ता हि अतीते अनागते अद्य वा ॥

शब्दार्थ—

यत्	७.	जिस-जिस	कृतवान्	१०.	कर (चुके हैं)
यस्मिन्	९.	जैसी-जैसी (लीलायें)	कुरुते	११.	कर रहे हैं (और)
अन्तरे	८.	मन्वन्तर में	कर्ता हि	१२.	करेंगे (वे हमें सुनाइये)
ब्रह्मन्	१.	हे ब्रह्मन् !	अतीते	४.	भूतकाल में
भगवान्	३.	भगवान्	अनागते	६.	भविष्यकाल में
विश्वभावनः ।	२.	विश्वभावन	अद्य वा ॥	५.	वर्तमानकाल में अथवा

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! विश्वभावन भगवान् भूतकाल में, वर्तमान काल में अथवा भविष्यकाल में जिस-जिस मन्वन्तर में जैसी-जैसी लीलायें कर चुके हैं, कर रहे हैं, करेंगे, हमें सुनाइये ॥

चतुर्थः श्लोकः

ऋषिरुवाच—मनवोऽस्मिन्व्यतीताः षट् कल्पे स्वायम्भुवादयः ।
आद्यस्ते कथितो यत्र देवादीनां च सम्भवः ॥४॥

पदच्छेद— मनवः अस्मिन् व्यतीताः षट्कल्पे स्वायम्भुव आदयः ।
आद्यः ते कथितः यत्र देव आदीनाम् च सम्भवः ॥

शब्दार्थ—

मनवः	६.	मन्वन्तर	आद्यः	९.	पहले (मन्वतर का)
अस्मिन्	१.	इस	ते	८.	उनमें से
व्यतीताः	७.	बीत चुके हैं	कथितः	१०.	वर्णन कर दिया
षट्	५.	छः	यत्रदेव	१२.	उसी में देवता
कल्पे	२.	कल्प में	आदीनाम्	१३.	आदि की
स्वायम्भुव	३.	स्वायम्भुव	च	११.	और
आदयः ।	४.	आदि	सम्भवः	१४.	उत्पत्ति हुई थी

श्लोकार्थ— इस काल में स्वायम्भुव आदि छः मन्वन्तर बीत चुके हैं। उनमें से पहले मन्वन्तर का वर्णन कर दिया। और उसी में देवता आदि की उत्पत्ति हुई थी ॥

पञ्चमः श्लोकः

आकूत्यां देवहूत्यां च दुहित्रोस्तस्य वै मनोः ।
धर्मज्ञानोपदेशार्थं भगवान्पुत्रतां गतः ॥५॥

पदच्छेद— आकूत्यां देवहूत्याम् च दुहित्रोः तस्य वै मनोः ।
धर्मज्ञान उपदेशार्थम् भगवान् पुत्रताम् गतः ॥

शब्दार्थ—

आकूत्याम्	५.	आकूति	धर्म	८.	धर्म और
देवहूत्याम्	७.	देवहूति ने	ज्ञान	९.	ज्ञान का
च	६.	और	उपदेशार्थम्	१०.	उपदेश करने के लिये
दुहित्रोः	४.	पुत्री	भगवान्	११.	भगवान् ने
तस्य	२.	उन	पुत्र	१२.	पुत्र
वै	१.	निश्चित ही	ताम्	१३.	रूप से
मनोः	३.	स्वायम्भुव मनु की	गतः ॥	१४.	अवतार ग्रहण किया

श्लोकार्थ—निश्चित ही उन स्वायम्भुव मनु की पुत्री आकूति और देवहूति को धर्म और ज्ञान का उपदेश करने के लिये भगवान् ने पुत्र रूप से अवतार ग्रहण किया था ॥

षष्ठः श्लोकः

कृतं पुरा भगवतः कपिलस्यानुवर्णितम् ।
आख्यास्ये भगवान्यज्ञो यच्चकार कुरूद्वह ॥६॥

पदच्छेद— कृतं पुरा भगवतः कपिलस्य अनुवर्णितम् ।
आख्यास्ये भगवान् यज्ञः यत् चकार कुरूद्वह ॥

शब्दार्थ—

कृतम्	४.	कार्यों को	आख्यास्ये	१०.	वर्णन करता हूँ
पुरा	५.	पहले ही	भगवतः	७.	भगवान्
भगवतः	२.	भगवान्	यज्ञः	८.	यज्ञ पुरुष ने
कपिलस्य	३.	कपिल के	यत्-चकार	९.	जो कुछ किया (उसका)
अनुवर्णितम्	६.	वर्णन कर चुका हूँ	कुरूद्वह ॥	१.	परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! भगवान् कपिल के कार्यों को पहले ही वर्णन कर चुका हूँ । भगवान् यज्ञ पुरुष ने जो कुछ किया उसका वर्णन करता हूँ ॥

सप्तमः श्लोकः

विरक्तः कामभोगेषु शतरूपापतिः प्रभुः ।
विसृज्य राज्यं तपसे सभार्यो वनमाविशत् ॥७॥

पदच्छेद— विरक्तः काम भोगेषु शतरूपा पतिः प्रभुः ।
विसृज्य राज्यम् तपसे सभार्यो वनम् आविशत् ॥

शब्दार्थ—

विरक्तः	६.	विरक्त होकर	विसृज्य	८.	छोड़ दिया (और)
काम	४.	कामनाओं (और)	राज्यम्	७.	राज्य को
भोगेषु	५.	भोगों से	तपसे	१०.	तपस्या करने के लिये
शतरूपा	२.	शतरूपा	सभार्यो	९.	अपनी पत्नी के साथ
पतिः	३.	पति (स्वायम्भुव मनु ने)	वनम्	११.	वन में
प्रभुः ।	१.	भगवान्	आविशत् ॥	१२.	चले गये

श्लोकार्थ—भगवान् शतरूपा के पति स्वायम्भुव मनु ने कामनाओं और भोगों से विरक्त होकर राज्य को छोड़ दिया । और अपनी पत्नी के साथ तपस्या करने के लिये वन में चले गये ।

अष्टमः श्लोकः

सुनन्दायां वर्षशतं पदैकेन भुवं स्पृशन् ।
तप्यमानस्तपो घोरमिदमन्वाह भारत ॥८॥

पदच्छेद— सुनन्दायाम् वर्ष शतम् पद एकेन भुवम् स्पृशन् ।
तप्यमानः तपः घोरम् इदम् अन्वाह भारत ॥

शब्दार्थ—

सुनन्दायाम्	२.	सुनन्दा नदी के किनारे	तप्यमानः	१०.	तपस्या करते समय (वे)
वर्ष शतम्	३.	सौ वर्षों तक	तपः	९.	तपस्या की (और)
पद	५.	पैर से	घोरम्	८.	कठिन
एकेन	४.	एक	इदम्	११.	इस प्रकार
भुवम्	६.	पृथ्वी को	अन्वाह	१२.	स्तुति करते थे
स्पृशन्	७.	स्पर्श करते हुये	भारत ॥	१.	हे परीक्षित् ! उन्होंने

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उन्होंने सुनन्दा नदी के किनारे सौ वर्षों तक एक पैर से पृथ्वी को स्पर्श करते हुये कठिन तपस्या की और तपस्या करते समय वे इस प्रकार स्तुति करते थे ॥

नवमः श्लोकः

मनुरुवाच—येन चेतयते विश्वं विश्वं चेतयते न यम्।
यो जागर्ति शयानेऽस्मिन्नायं तं वेद वेद सः ॥९॥

पदच्छेद— येन चेतयते विश्वम् विश्वम् चेतयते न यम्।
यः जागर्ति शयाने अस्मिन् अयम् तम् न वेद वेद सः ॥

शब्दार्थ—

येन	१.	जिनसे	जागर्ति	११	जागते रहते हैं
चेतयते	३.	चेतन हो जाता है	शयाने	१०.	सो जाने पर भी
विश्वम्	२.	यह विश्व	अस्मिन्	९.	इसके
विश्वम्	४.	यह विश्व	अयम्	१२.	यह
चेतयते	६.	चेतना का दान	तम्	१३.	उस परमात्मा को
न	७.	नहीं कर सकता	न वेद	१४.	नहीं जान सकता है
यम्	५.	जिन्हें	वेद	१६.	जानते हैं
यः	८.	जो	सः ॥	१५.	वही परमात्मा इसे

श्लोकार्थ—जिनसे यह विश्व चेतन हो जाता है। यह विश्व जिन्हें चेतना का दान नहीं कर सकता है। जो इसके सो जोने पर भी जागते रहते हैं। यह उस परमात्मा को नहीं जान सकता है। वही परमात्मा इसे जानते हैं ॥

दशमः श्लोकः

आत्मावास्यमिदं विश्वं यत् किञ्चिज्जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥१०॥

पदच्छेद— आत्म आवास्यम् इदम् विश्वम् यत् किञ्चित् जगत्याम् जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्वित् धनम् ॥

शब्दार्थ—

आत्म	९.	उन परमात्मा से ही	तेन	९.	इसलिये
आवास्यम्	१०.	ओत-प्रोत है	त्यक्तेन	१०.	त्याग करते हुये भी
इदम्	१.	यह	भुञ्जीथाः	११.	उपभोग करना चाहिये
विश्वम्	२.	सम्पूर्ण विश्व (और)	मा	१३.	नहीं
यत्	४.	जो	गृधः	१२.	तृष्णा करनी चाहिये
किञ्चित्	५.	कुछ भी	कस्य	१६.	किसकी है
जगत्याम्	३.	विश्व में रहने वाले	स्वित्	१४.	भला
जगत्।	८.	चर-अचर प्राणी हैं (वे)	धनम् ॥	१५.	सम्पत्ति

श्लोकार्थ—यह सम्पूर्ण विश्व और विश्व में रहने वाले जो कुछ भी चर-अचर प्राणी हैं, वे उन परमात्मा से ओत-प्रोत हैं। इसलिये त्याग करते हुये उपभोग करना चाहिये। तृष्णा नहीं करनी चाहिये। भला सम्पत्ति किसकी है।

एकादशः श्लोकः

यं न पश्यति पश्यन्तं चक्षुर्यस्य न रिष्यति ।
तं भूतनिलयं देवं सुपर्णमुपधावत ॥११॥

पदच्छेद— यम् न पश्यति पश्यन्तम् चक्षुः यस्य न रिष्यति ।
तम् भूतनिलयम् देवम् सुपर्णम् उपधावत ॥

शब्दार्थ—

यम्	२.	जिन परमात्मा को	तम्	७.	उन
न पश्यति	४.	नहीं देख सकती हैं (तथा)	भूत	८.	सभी प्राणियों के
पश्यन्तम्	१.	सब के साक्षी	निलयम्	९.	हृदय में रहने वाले
चक्षुः	३.	नेत्र इत्यादि इन्द्रियाँ	देवम्	११.	परमात्मा की
यस्य	५.	जिनके पास तक	सुपर्णम्	१०.	स्वयम् प्रकाश
न रिष्यति ।	६.	नहीं पहुँच पाती हैं	उपधावत ॥	१२.	शरण ग्रहण करो

श्लोकार्थ—सबके साक्षी जिन परमात्मा को नेत्र इत्यादि इन्द्रिया नहीं देख सकती हैं तथा जिनके पास तक नहीं पहुँच पाती हैं, उन सभी प्राणियों के हृदय में रहने वाले स्वयम् प्रकाश परमात्मा की शरण ग्रहण करो ॥

द्वादशः श्लोकः

न यस्याद्यन्तौ मध्यं च स्वः परो नान्तरं बहिः ।
विश्वस्यामूनि यद् यस्माद् विश्वं च तदृतं महत् ॥१२॥

पदच्छेद— न यस्य आद्यन्तौ मध्यम् च स्वः परः न अन्तरम् बहिः ।
विश्वस्य अमूनि यद् यस्मात् विश्वम् च तत् ऋतम् महत् ॥

शब्दार्थ—

न	५.	नहीं है (तथा)	विश्वस्य	१२.	विश्व की सत्ता है
यस्य	१.	जिसका	अमूनि	११.	इस
आद्यन्तौ	२.	आदि-अन्त	यद्	१०.	जिससे
मध्यम्	४.	मध्य भी	यस्मात्	१४.	जिससे यह
च	३.	और	विश्वम्	१५.	विश्व है
स्वः परः	६.	अपना पराया	च	१३.	और
न	९.	नहीं	तत्	१६.	वही सत्य
अन्तरम्	७.	अन्दर	ऋतम्	१८.	परम परमात्मा है
बहिः ।	८.	बाहर (भी)	महत् ॥	१७.	महान्

श्लोकार्थ—जिसका आदि, अन्त और मध्य भी नहीं है तथा अपना-पराया, अन्दर-बाहर भी नहीं है । जिससे इस विश्व की सत्ता है और जिससे यह विश्व है, वही महान् परम सत्य परमात्मा है ॥

त्रयोदशः श्लोकः

स विश्वकायः पुरुहूत ईशः सत्यः स्वयंज्योतिरजः पुराणः ।
धत्तेऽस्य जन्माद्यजयाऽऽत्मशक्त्या तां विद्ययोदस्य निरीह आस्ते ॥१३॥

पदच्छेद— सः विश्वकायः पुरुहूतः ईशः सत्यः स्वयम् ज्योतिः अजः पुराणः ।
धत्ते अस्य जन्म आदि अजया आत्मशक्त्या ताम् विद्यया उदस्य निरीहः आस्ते ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वही	धत्ते	१४.	स्वीकार करते हैं
विश्वकायः	३.	विश्व रूप है	अस्य	१२.	इस विश्व सृष्टि के
पुरुहूतः	४.	उनके अनन्त नाम हैं	जन्म आदि	१३.	जन्मादि के
ईशः	२.	परमात्मा	अजया	१०.	अपनी अजय
सत्यः	५.	वे सत्य	आत्मशक्त्या	११.	माया शक्ति के द्वारा ही वे
स्वयम्	६.	स्वयम्	ताम्	१६.	उसका
ज्योतिः	७.	प्रकाश	विद्यया	१५	विद्या शक्ति से
अजः	८.	अजन्मा (और)	उदस्य	१७.	त्याग करके
पुराणः ।	९.	पुराण पुरुष हैं	निरीहः आस्ते ॥	१८.	निष्क्रिय रहते हैं

श्लोकार्थ—वही परमात्मा विश्वरूप हैं। उनके अनन्त नाम हैं। वे सत्य, स्वयम् प्रकाश, अजन्मा और पुराण पुरुष हैं। अपनी अजय माया शक्ति के द्वारा ही वे इस विश्व सृष्टि के जन्मादि को स्वीकार करते हैं। विद्याशक्ति से उसका त्याग करके निष्क्रिय रहते हैं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

अथाग्रे ऋषयः कर्माणीहन्तेऽकर्महेतवे ।
ईहमानो हि पुरुषः प्रायोऽनीहां प्रपद्यते ॥१४॥

पदच्छेद— अथ अग्रे ऋषयः कर्माणि ईहन्ते अकर्म हेतवे ।
ईहमानः हि पुरुषः प्रायः अनीहाम् प्रपद्यते ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	इसी से	हेतवे	४.	प्राप्त करने के लिये
अग्रे	५.	पहले	ईहमानः	९.	कर्म करने वाला
ऋषयः	२.	ऋषि-मुनि	हि पुरुषः	१०.	ही पुरुष अन्त में
कर्माणि	६.	कर्म योग का	प्रायः	८.	अधिकतर
ईहन्ते	७.	अनुष्ठान करते हैं	अनीहाम्	११.	निष्क्रियता को
अकर्म ।	३.	नैष्कर्म्य स्थिति	प्रपद्यते ॥	१२.	प्राप्त कर लेता है

श्लोकार्थ—इसी से ऋषि-मुनि नैष्कर्म्य स्थिति प्राप्त करने के लिये पहले कर्मयोग का अनुष्ठान करते हैं। अधिकतर कर्म करने वाला ही पुरुष अन्त में निष्क्रियता को प्राप्त कर लेता है ॥

पञ्चदशः श्लोकः

ईहते भगवानीशो न हि तत्र विषज्जते ।
आत्मलाभेन पूर्णार्थो नावसीदन्ति येऽनु तम् ॥१५॥

पदच्छेद— ईहते भगवान् ईशः नहि तत्र विषज्जते ।
आत्मलाभेन पूर्ण अर्थः न अवसीदन्ति ये अनु तम् ॥

शब्दार्थ—

ईहते	३.	कर्म करते हैं (किन्तु)	आत्मलाभेन	७.	आत्मलाभ से
भगवान्	२.	भगवान् भी	पूर्ण अर्थः	८.	पूर्णकाम होने के कारण वे
ईशः	१.	सर्वशक्तिमान्	न	१०.	नहीं पड़ते
न हि	५.	नहीं	अवसीदन्ति	९.	कर्म बन्धन में
तत्र	४.	उन कर्मों में	ये	११.	जिन्होंने
विषज्जते ।	६.	आसक्त होते हैं	अनु तम् ॥	१२.	उनका अनुसरण किया है ॥

श्लोकार्थ—सर्वशक्तिमान् भगवान् भी कर्म करते हैं, किन्तु उन कर्मों में आसक्त नहीं होते हैं। आत्मलाभ से पूर्ण काम होने के कारण वे कर्म-बन्धन में नहीं पड़ते, जिन्होंने उनका अनुसरण किया है ॥

षोडशः श्लोकः

तमीहमानं निरहङ्कृतं बुधं निराशिषं पूर्णमनन्यचोदितम् ।
नॄन् शिक्षयन्तं निजवर्त्मसंस्थितं प्रभुं प्रपद्येऽखिलधर्मभावनम् ॥१६॥

पदच्छेद— तम् ईहमानम् निरहङ्कृतम् बुधम् निराशिषम् पूर्णम् अनन्यचोदितम् ।
नॄन् शिक्षयन्तम् निजवर्त्म संस्थितम् प्रभुम् प्रपद्येऽखिलधर्मभावनम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	१४.	उन्हीं	नॄन्	७.	मनुष्यों को
ईहमानम्	१३.	इच्छा करते हुये	शिक्षयन्तम्	८.	शिक्षा देने के लिये
निरहङ्कृतम्	१.	अहंकार रहित	निजवर्त्म	९.	अपनी मर्यादा में
बुधम्	२.	ज्ञान स्वरूप	संस्थितम्	१०.	स्थित रहने वाले
निराशिषम्	३.	इच्छा से शून्य	प्रभुम्	१५.	परमात्मा की
पूर्णम्	४.	परिपूर्ण	प्रपद्ये	१६.	शरण में हैं
अनन्य	५.	स्वच्छन्द रूप से	अखिलधर्म	११.	समस्त धर्मों के
चोदितम् ।	६.	कर्म करने वाले	भावनम् ॥	१२.	प्रवर्तक

श्लोकार्थ—अहंकार रहित, ज्ञान स्वरूप, इच्छा से शून्य, परिपूर्ण, स्वच्छन्द रूप से कर्म करने वाले मनुष्यों को शिक्षा देने के लिये अपनी मर्यादा में स्थित रहने वाले, समस्त धर्मों के प्रवर्तक, इच्छा करते हुये उन्हीं परमात्मा की शरण में हूँ ॥

सप्तदशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इति मन्त्रोपनिषदं व्याहरन्तं समाहितम् ।
दृष्ट्वासुरा यातुधाना जग्धुमभ्यद्रवन् क्षुधा ॥१७॥

पदच्छेद— इति मन्त्र उपनिषदम् व्याहरन्तम् समाहितम् ।
दृष्ट्वा असुराः यातुधानाः जग्धुम् अभ्यद्रवन् क्षुधा ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	दृष्ट्वा	६.	देखकर
मन्त्र	३.	मन्त्रमय	असुराः	७.	असुर और
उपनिषदम्	४.	उपनिषद्स्वरूप	यातुधानाः	८.	राक्षस
व्याहरन्तम्	५.	श्रुति का पाठ करते हुये	जग्धुम्	११.	टूट पड़े
समाहितम् ।	२.	एकाग्रचित्त से	अभ्यद्रवन्	१०.	मिटाने के लिये उन पर
			क्षुधा ॥	९.	भूख

श्लोकार्थ—इस प्रकार एकाग्रचित्त से मन्त्रमय उपनिषद् स्वरूप श्रुति का पाठ करते हुये देखकर असुर राक्षस भूख मिटाने के लिये उन पर टूट पड़े ॥

अष्टादशः श्लोकः

तांस्तथावसितान् वीक्ष्य यज्ञः सर्वगतो हरिः ।
यामैः परिवृतो देवैर्हत्वाशासत् त्रिविष्टपम् ॥१८॥

पदच्छेद— तान् तथा अवसितान् वीक्ष्य यज्ञः सर्वगतः हरिः ।
यामैः परिवृतः देवैः हत्वा अशासत् त्रिविष्टपम् ॥

शब्दार्थ—

तान्	१.	उन्हें	यामैः	८.	अपने पुत्र याम नामक
तथा	२.	इस प्रकार	परिवृतः	१०.	घिरे हुए वहां आये और
अवसितान्	३.	निश्चय किये हुये	देवैः	९.	देवताओं से
वीक्ष्य	४.	देखकर	हत्वा	११.	असुरों को मार कर
यज्ञः	५.	यज्ञ पुरुष	अशासत्	१३.	स्वर्ग का शासन करने लगे
सर्वगतः	६.	अन्तर्यामी	त्रिविष्टपम् ॥	१२.	इन्द्रपद पर प्रतिष्ठित होकर
हरिः ।	७.	भगवान्			

श्लोकार्थ—उन्हें इस प्रकार निश्चय किये हुये देखकर यज्ञ पुरुष अन्तर्यामी भगवान् अपने पुत्र याम नामक देवताओं से घिरे हुये वहाँ पर आये और असुरों को मार कर इन्द्रपद पर प्रतिष्ठित होकर स्वर्ग का शासन करने लगे ॥

एकोनविंशः श्लोकः

स्वारोचिषो द्वितीयस्तु मनुरग्नेः सुतोऽभवत् ।
द्युमत्सुषेणरोचिष्मत्प्रमुखास्तस्य चात्मजाः ॥१९॥

पदच्छेद— स्वारोचिषः द्वितीयः तु मनुः अग्नेः सुतः अभवत् ।
द्युमत् सुषेण रोचिष्मत् प्रमुखाः तस्य च आत्मजाः ॥

शब्दार्थ—

स्वारोचिषः	१.	स्वारोचिष नाम के	द्युमत्	१०.	द्युमत्
द्वितीयः तु	२.	दूसरे	सुषेण	११.	सुषेण (और)
मनुः	३.	मनु हुये	रोचिष्मत्	१२.	रोचिष्मान्
अग्नेः	४.	वे अग्नि के	प्रमुखाः	१३.	आदि (थे)
सुतः	५.	पुत्र	तस्य	८.	उनके
अभवत् ।	६.	थे	च	७.	और
			आत्मजः ॥	९.	पुत्र

श्लोकार्थ—स्वरोचिष नाम के दूसरे मनु हुये । वे अग्नि के पुत्र थे । और उनके पुत्र द्युमत्, सुषेण और रोचिष्मान् आदि थे ॥

विंशः श्लोकः

तत्रेन्द्रो रोचनस्त्वासीद् देवाश्च तुषितादयः ।
ऊर्जस्तम्भादयः सप्त ऋषयो ब्रह्मवादिनः ॥२०॥

पदच्छेद— तत्र इन्द्रः रोचनः तु आसीत् देवाः च तुषित आदयः ।
ऊर्जस्तम्भ आदयः सप्त ऋषयः ब्रह्मवादिनः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	उस मन्वन्तर में	आदयः	६.	आदि
इन्द्रः	२.	इन्द्र का नाम	ऊर्जस्तम्भ	८.	ऊर्जस्तम्भ
रोचनः	३.	रोचन	आदयः	९.	आदि
तु आसीत्	४.	था	सप्त	११.	सात
देवः	७.	देवगण थे	ऋषयः	१२.	ऋषि थे
च तुषित ।	५.	और तुषित	ब्रह्मवादिनः ॥	१०.	ब्रह्मवादी

श्लोकार्थ— उस मन्वन्तर में इन्द्र का नाम रोचन था । और तुषित आदि देवगण थे, ऊर्जस्तम्भ आदि ब्रह्मवादी सात ऋषि थे ॥

एकविंशः श्लोकः

ऋषेस्तु वेदशिरसस्तुषिता नाम पत्न्यभूत् ।
तस्यां जज्ञे ततो देवो विभुरित्यभिविश्रुतः ॥२१॥

पदच्छेद— ऋषेः तु वेद शिरसः तुषिता नाम पत्नी अभूत् ।
तस्याम् जज्ञे ततः देवः विभुः इति अभिविश्रुतः ॥

शब्दार्थ—

ऋषेः	२.	ऋषि की	तस्याम्	७.	उसके गर्भ से
तु वेदशिरसः	१.	वेद शिरा नामक	जज्ञे	८.	भगवान् ने अवतार लिया
तुषिता	३.	तुषिता	ततः	९.	तब वे
नाम	४.	नाम की	देवः	१०.	देवताओं में
पत्नी	५.	पत्नी	विभुः इति	११.	विभु इस नाम से
अभूत् ।	६.	थी	अभिविश्रुतः ॥	१२.	प्रसिद्ध हुये

श्लोकार्थ—वेद शिरा नामक ऋषि की तुषिता नाम की पत्नी थीं। उनके गर्भ से भगवान् ने अवतार लिया । तब वे देवताओं में विभु इस नाम से प्रसिद्ध हुये ॥

द्वाविंशः श्लोकः

अष्टाशीतिसहस्राणि मुनयो ये धृतव्रताः ।
अन्वशिक्षन्व्रतं तस्य कौमारब्रह्मचारिणः ॥२२॥

पदच्छेद— अष्टाशीति सहस्राणि मुनयः ये धृतव्रताः ।
अन्वशिक्षन् व्रतम् तस्य कौमार ब्रह्मचारिणा ॥

शब्दार्थ—

अष्टाशीति	७.	अट्ठासी	अन्वशिक्षन्	५.	शिक्षा ग्रहण करके
सहस्राणि	८.	हजार	व्रतम्	४.	व्रत की
मुनयः	९.	ऋषियों ने	तस्य	१.	उन्हीं
ये	६.	उन	कौमार	२.	नैष्ठिक
धृतव्रताः ।	१०.	धारण किया, व्रत को	ब्रह्मचारिणः ॥	३.	ब्रह्मचारी के आचरण से

श्लोकार्थ—उन्हीं नैष्ठिक ब्रह्मचारीके आचरण से व्रत की शिक्षा को ग्रहण करके उन अट्ठासी हजार ऋषियों ने व्रत को धारण किया ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

तृतीय उत्तमो नाम प्रियव्रतसुतो मनुः ।
पवनः सृञ्जयो यज्ञहोत्राद्यास्तत्सुता नृप ॥२३॥

पदच्छेद— तृतीयः उत्तमः नाम प्रियव्रत सुतः मनुः ।
पवनः सृञ्जयः यज्ञहोत्र आद्याः तत् सुताः नृप ॥

शब्दार्थ—

तृतीयः	२.	तृतीय	पवनः	९.	पवन
उत्तमः	४.	उत्तम	सृञ्जयः	१०.	सृञ्जय (और)
नाम	५.	नामक	यज्ञहोत्र	११.	यज्ञहोत्र
प्रियव्रत	६.	प्रियव्रत के	आद्याः	१२.	आदि थे
सुतः	७.	पुत्र थे	तत् सुताः	८.	उनके पुत्र
मनुः ।	३.	मनु	नृप ॥	१.	हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! तृतीय मनु उत्तम नामक प्रियव्रत के पुत्र थे । उनके पुत्र पवन, सृञ्जय और यज्ञहोत्र आदि थे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

वसिष्ठतनयाः सप्त ऋषयः प्रमदादयः ।
सत्या वेदश्रुता भद्रा देवा इन्द्रस्तु सत्यजित् ॥२४॥

पदच्छेद— वशिष्ठ तनयः सप्त ऋषयः प्रमद आदयः ।
सत्याः वेदश्रुताः भद्राः देवाः इन्द्रः तु सत्यजित् ॥

शब्दार्थ—

वशिष्ठ	१.	वशिष्ठ जी के	सत्याः	७.	सत्य
तनयाः	४.	पुत्र	वेदश्रुताः	८.	वेदश्रुत
सप्त	५.	सात	भद्राः	९.	भद्र नामक
ऋषयः	६.	सप्तर्षि थे	देवाः	१०.	देवताओं के प्रधान गण थे
प्रमद	२.	प्रमद	इन्द्रः तु	११.	इन्द्र का नाम
आदयः ।	३.	आदि	सत्यजित् ॥	१२.	सत्यजित् था

श्लोकार्थ—वशिष्ठ जी के प्रमद आदि सात पुत्र सप्तर्षि थे । सत्य, वेद, श्रुत, भद्र नामक देवताओं के प्रधान गण थे । इन्द्र का नाम सत्यजित् था ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

धर्मस्य सूनृतायां तु भगवान्पुरुषोत्तमः ।
सत्यसेन इति ख्यातो जातः सत्यव्रतैः सह ॥२५॥

पदच्छेद—

धर्मस्य सूनृतायाम् तु भगवान् पुरुषोत्तमः ।
सत्यसेन इति ख्यातः जातः सत्यव्रतैः सह ॥

शब्दार्थ—

धर्मस्य	१.	धर्म की पत्नी	इति	६.	इस
सूनृतायाम्	२.	सूनृता के गर्भ से	ख्यातः	७.	नाम से
तु भगवान्	४.	भगवान् ने	जातः	८.	अवतार लिया था
पुरुषोत्तमः	३.	पुरुषोत्तम	सत्यव्रतः	१०.	सत्यव्रत नाम के देव गण भी थे
सत्यसेनः ।	५.	सत्यसेन	सह ॥	९.	उनके साथ

श्लोकार्थ—धर्म की पत्नी सूनृता के गर्भ से पुरुषोत्तम भगवान् ने सत्यसेन इस नाम से अवतार लिया था। उनके साथ सत्यव्रत नाम के देवगण भी थे ॥

षड्विंशः श्लोकः

सोऽनृतव्रतदुःशीलानसतो यक्षराक्षसान् ।
भूतद्रुहो भूतगणांस्त्ववधीत् सत्यजित्सखः ॥२६॥

पदच्छेद—

सः अनृतव्रत दुःशीलान् असतः यक्षराक्षसान् ।
भूतद्रुहः भूतगणान् तु अवधीत् सत्यजित् सखः ॥

शब्दार्थ—

सः	३.	उन भगवान् ने	भूत	१०.	जीव
अनृत	४.	असत्य	द्रुहः	११.	द्रोही
व्रत	५.	परायण	भूत	१२.	भूत
दुःशीलान्	६.	दुःशील (और)	गणान्	१३.	गणों का
असतः	७.	दुष्ट	अवधीत्	१४.	संहार किया
यक्ष	८.	यक्षों और	सत्यजित्	१.	सत्यजित् के
राक्षसान् ।	९.	राक्षसों (एवम्)	सखः ॥	२.	सखा

श्लोकार्थ—सत्यजित् के सखा उन भगवान् ने असत्य परायण, दुःशील और दुष्ट यक्षों और राक्षसों एवम् जीवद्रोही भूत गणों का संहार किया ॥

सप्तविंशः श्लोकः

चतुर्थ उत्तमभ्राता मनुर्नाम्ना च तामसः ।
पृथुः ख्यातिर्नरः केतुरित्याद्या दश तत्सुताः ॥२७॥

पदच्छेद— चतुर्थः उत्तम भ्राता मनुः नाम्ना च तामसः ।
पृथुः ख्यातिः नरः केतु इति आद्याः दश तत् सुताः ॥

शब्दार्थ—

चतुर्थः	१.	चौथे	पृथुः	८.	पृथु
उत्तम	६.	वे उत्तम के	ख्यातिः	९.	ख्याति
भ्राता	७.	भाई थे	नरः	१०.	नर
मनुः	२.	मनु का	केतु	११.	केतु
नाम्ना	३.	नाम	इति आद्याः	१२.	इत्यादि
च	५.	और	दश	१३.	दस
तामसः ।	४.	तामस था	तत् सुता ॥	१४.	उनके पुत्र थे

श्लोकार्थ—चौथे मनु का नाम तामस था । और वे उत्तम के भाई थे । उनके पृथु ख्याति, नर केतु दस पुत्र थे ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

सत्यका हरयो वीरा देवास्त्रिशिख ईश्वरः ।
ज्योतिर्धामादयः सप्त ऋषयस्तामसेऽन्तरे ॥२८॥

पदच्छेद— सत्यकाः हरयः वीराः देवाः त्रिशिखः ईश्वरः ।
ज्योतिः धाम आदयः सप्त ऋषयः तामसे अन्तरे ॥

शब्दार्थ—

सत्यकाः	१.	सत्यक	ज्योतिर्धाम	९.	ज्योतिर्धाम
हरयः	२.	हरि (और)	आदयः	१०.	आदि
वीराः	३.	वीर	सप्त	११.	सात
देवाः	४.	देवताओं के प्रधानगण थे	ऋषयः	१२.	ऋषि थे
त्रिशिखः	६.	त्रिशिख था	तामसे	७.	उस तामस नाम के
ईश्वरः ।	५.	इन्द्र का नाम	अन्तरे ॥	८.	मन्वन्तर में

श्लोकार्थ—सत्यक, हरि और वीर देवताओं के प्रधानगण थे । इन्द्र का नाम त्रिशिख था । उस तामस मन्वन्तर में ज्योतिर्धाम आदि सात ऋषि थे ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

देवा वैधृतयो नाम विधृतेस्तनया नृप ।
नष्टाः कालेन यैर्वेदा विधृताः स्वेन तेजसा ॥२९॥

पदच्छेद— देवाः वैधृतयः नाम वैधृतेः तनयाः नृप ।
नष्टाः कालेन यैः वेदा विधृताः स्वेन तेजसा ॥

शब्दार्थ—

देवाः	६.	देवता हुये	नष्टाः	१०.	नष्ट हुये
विधृतयः	४.	वैधृति	कालेन	९.	समय के फेर से
नाम	५.	नाम के	यैः	७.	जिन्होंने
विधृतेः	२.	विधृति के	वेदा	११.	वेदों को
तनयाः	३.	पुत्र	विधृताः	१२.	बचाया था
नृप ।	१.	हे परीक्षित् !	स्वेनतेजसा ॥	८.	अपनी शक्ति से

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! विधृति के पुत्र वैधृति नाम के देवता हुये, अपनी शक्ति से जिन्होंने समय केफेर से नष्ट हुये वेदों को बचाया था ॥

त्रिंशः श्लोकः

तत्रापि जज्ञे भगवान्हरिण्यां हरिमेधसः ।
हरिरित्याहृतो येन गजेन्द्रो मोचितो ग्रहात् ॥३०॥

पदच्छेद— तत्र अपि जज्ञे भगवान् हरिण्याम् हरि मेधसः ।
हरिः इति आहृतः येन गजेन्द्रः मोचितः ग्रहात् ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	इस मन्वन्तर में	हरिः	८.	हरि
अपि	२.	भी	इति	९.	इस
जज्ञे	७.	अवतार लिया (और)	आहृतः	१०.	नाम को प्राप्त हुये
भगवान्	७.	भगवान् ने	येन	११.	इसी अवतार में उन्होंने
हरिण्याम्	५.	हरिणी के गर्भ से	गजेन्द्राः	१२.	गजेन्द्र को
हरि	३.	हरि	मोचितः	१४.	रक्षा की थी
मेधसः ।	४.	मेधा मुनि की पत्नी	ग्रहात् ॥	१३.	ग्राह से

श्लोकार्थ—इस मन्वन्तर में भी हरिमेधा मुनि की पत्नी हरिणी के गर्भ से भगवान् ने अवतार लिया और हरि इस नाम को प्राप्त किया। इसी अवतार में उन्होंने गजेन्द्र की ग्राह से रक्षा की थी ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

राजोवाच— बादरायण एतत् ते श्रोतुमिच्छामहे वयम् ।
हरिर्यथा गजपतिं ग्राहग्रस्तममूमुचत् ॥३१।

पदच्छेद—

बादरायण एतत् ते श्रोतुम् इच्छामहे वयम् ।
हरिः यथा गजपतिम् ग्राह ग्रस्तम् अमूमुचत् ॥

शब्दार्थ—

बादरायण	१.	हे मुनिवर !	हरिः	७.	भगवान् ने
एतत्	४.	यह	यथा	११.	कैसे
ते	३.	आपसे	गजपतिम्	८.	गजेन्द्र को
श्रोतुम्	५.	सुनना	ग्राह	९.	ग्राह के
इच्छामहे	६.	चाहते हैं (कि)	ग्रस्तम्	१०.	फन्दे से
वयम् ।	२.	हम	अमूमुचत् ॥	१२.	छुड़ाया था

श्लोकार्थ—हे मुनिवर ! हम आपसे यह सुनना चाहते हैं कि भगवान् ने गजेन्द्र को ग्राह के फन्दे से कैसे छुड़ाया था ।।

द्वात्रिंशः श्लोकः

तत्कथा सुमहत् पुण्यं धन्यं स्वस्त्ययनं शुभम् ।
यत्र यत्रोत्तमश्लोको भगवान्गीयते हरिः ॥३२॥

पदच्छेद—

तत् कथा सुमहत् पुण्यम् धन्यम् स्वस्त्ययनम् शुभम् ।
यत्र यत्र उत्तम श्लोकः भगवान् गीयते हरिः ॥

शब्दार्थ—

तत् कथा	१.	वही कथा	यत्र-यत्र	७.	जिससे महात्माओं के द्वारा
सुमहत्	२.	परम	उत्तम	८.	पवित्र
पुण्यम्	३.	पुण्यमय	श्लोकः	९.	कीर्ति
धन्यम्	४.	प्रशंसनीय	भगवान्	१०.	भगवान्
स्वस्त्ययनम्	५.	मंगलकारी (और)	गीयते	१२.	गान किया जाता है
शुभम् ।	६.	शुभ है	हरिः ॥	११.	श्री हरि के यश का

श्लोकार्थ—वही कथा परम पुण्यमय, प्रशंसनीय मंगलकारी और शुभ है । जिसमें महात्माओं के द्वारा पवित्र कीर्ति भगवान् श्री हरि के यश का गान किया जाता है ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

सूत उवाच—

परीक्षितैवं स तु बादरायणिः प्रायोपविष्टेन कथासु चोदितः ।
उवाच विप्राः प्रतिनन्द्य पार्थिवं मुदा मुनीनां सदसि स्म शृण्वताम् ॥३३॥

पदच्छेद—

परीक्षिता एवम् सः तु बादरायणिः प्रायः उपविष्टेन कथासु चोदितः ।
उवाच विप्राः प्रतिनन्द्य पार्थिवम् मुदा मुनीनाम् सदसि स्म शृण्वताम् ॥

शब्दार्थ

परीक्षिता	३.	राजा परीक्षित् ने (जब)	उवाच	१६.	कहने लगे
एवम्	४.	इस प्रकार	विप्राः	१०.	ब्राह्मणों (और)
सः तु	५.	उन	प्रतिनन्द्य	१५.	अभिनन्दन करते हुये
बादरायणिः	६.	श्री शुकदेव जी को	पार्थिवम्	१४.	राजा परीक्षित् का
प्रायः	१.	अनशन पर	मुदा	१३.	प्रसन्न होकर
उपविष्टेन	२	बैठे हुये	मुनीनाम्	११.	मुनियों की
कथासु	७.	कथा कहने के लिये	सदसिस्म	१२.	भरी सभा में (वे)
चोदितः ।	८.	प्रेरित किया (तब)	शृण्वताम् ॥	९.	कथा सुनने वाले

श्लोकार्थ—अनशन पर बैठे हुये राजा परीक्षित् ने जब इस प्रकार उन श्री शुकदेव को कथा कहने के लिये प्रेरित किया तब कथा सुनने वाले ब्राह्मणों और मुनियों की भरी सभा में वे प्रसन्न होकर राजा परीक्षित् का अभिनन्दन करते हुये कहने लगे ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमे
स्कन्धे मन्वन्तरानुचरिते प्रथमः अध्यायः ॥१॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

द्वितीयः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— आसीद् गिरिवरो राजंस्त्रिकूट इति विश्रुतः ।
क्षीरोदेनावृतः श्रीमान्योजनायुतमुच्छ्रितः ॥१॥

पदच्छेद— आसीत् गिरिवरः राजन् त्रिकूट इति विश्रुतः ।
क्षीरोदेन आवृतः श्रीमान् योगेन अयुतम् उच्छ्रितः ॥

शब्दार्थ—

आसीत्	१२.	था	क्षीरोदेन	२.	क्षीरसागर से
गिरिवरः	११.	श्रेष्ठ पर्वत	आवृतः	३.	घिरा हुआ
राजन्	१.	हे राजन् !	श्रीमान्	७.	श्री सम्पन्न
त्रिकूटः	४.	त्रिकूट	योगेन	९.	योजन
इति	५.	नाम से	अयुतम्	८.	दस हजार
विश्रुतः ।	६.	प्रसिद्ध	उच्छ्रितम् ॥	१०.	ऊँचा

श्लोकार्थ—हे राजन् ! क्षीरसागर से घिरा हुआ त्रिकूट नाम से प्रसिद्ध श्री सम्पन्न दस हजार योजन ऊँचा श्रेष्ठ पर्वत था ॥

द्वितीयः श्लोकः

शब्दार्थ--

तावता विस्तृतः पर्यक् त्रिभिः शृङ्गैः पयोनिधिम् ।
दिशः खं रोचयन्नास्ते रौप्यायसहिरण्मयैः ॥२॥

पदच्छेद— तावता विस्तृतः पर्यक् त्रिभिः शृङ्गैः पयोनिधिम् ।
दिशः खम् रोचयन् आस्ते रौप्यायस हिरण्मयैः ॥

तावता	३.	इतनी ही थी	दिशः	९.	दिशाओं और
विस्तृता	१.	उसकी लम्बाई-चौड़ाई	खम्	१०.	आकाश
पर्यक्	२.	चारों ओर भी	रोचयन्	११.	जगमगाते
त्रिभिः	६.	तीन	आस्ते	१२.	रहते थे
शृङ्गैः	७.	शिखरों की छटा से	रौप्यायस	४.	उसके चाँदी, लोहे और
पयोनिधिम् ।	८.	समुद्र	हिरण्मयैः ॥	५.	सोने के

श्लोकार्थ—उसकी लम्बाई-चौड़ाई भी चारों ओर इतनी ही थी । उसके चाँदी, लोहे और सोने के तीन शिखरों की छटा से समुद्र, दिशायें और आकाश जगमगाते रहते थे ॥

तृतीयः श्लोकः

अन्यैश्च ककुभः सर्वा रत्नधातुविचित्रितैः ।
नानाद्रुमलतागुल्मैर्निर्घोषैर्निर्झराम्भसाम् ॥३॥

पदच्छेद— अन्यैः च ककुभः सर्वाः रत्नधातु विचित्रितैः ।
नानाद्रुम लता गुल्मैः निर्घोषैः निर्झर अम्भसाम् ॥

शब्दार्थ—

अन्यैः	२.	उसके अन्य	नाना	८.	अनेक प्रकार के
च	१.	और	द्रुम	९.	वृक्ष
ककुभः	४.	शिखर	लता	१०.	लतायें और
सर्वाः	३.	सभी	गुल्मैः	११.	झाड़ियाँ थीं
रत्न	५.	रत्नों और	निर्घोषैः	१४.	सुन्दर ध्वनि हो रही थी
धातु	६.	धातुओं से	निर्झर	१२.	वहाँ झरनों के
विचित्रितैः ।	७.	चित्रित से थे	अम्भसाम् ॥	१३.	जल की

श्लोकार्थ—और उसके अन्य सभी शिखर रत्नों और धातुओं से चित्रित थे । अनेक प्रकार के वृक्ष, लतायें और झाड़ियाँ थीं । यहाँ झरनों के जल की सुन्दर ध्वनि हो रही थी ॥

चतुर्थः श्लोकः

स चावनिज्यमानाङ्घ्रिः समन्तात् पयऊर्मिभिः ।
करोति श्यामलां भूमिं हरिन्मरकताश्मभिः ॥४॥

पदच्छेद— सः च अवनिज्यमान अङ्घ्रिः समन्तात् पयऊर्मिभिः ।
करोति श्यामलाम् भूमिम् हरित् मरकत अश्मभिः ॥

शब्दार्थ—

सः च	४.	उनके	करोति	१२.	हो गई थी
अवनिज्यमान	६.	पखारे जा रहे थे	श्यामलाम्	११.	साँवली सी
अङ्घ्रिः	५.	पैर	भूमिम्	१०.	वहाँ की भूमि
समन्तात्	१.	सब ओर से	हरित्	७.	जिससे हरे
पय	२.	समुद्र की	मरकत	८.	पन्ने के
ऊर्मिभिः ।	३.	लहरों के द्वारा	अश्मभिः ॥	९.	पत्थरों से युक्त

श्लोकार्थ— सब ओर से समुद्र की लहरों के द्वारा उनके पैर पखारे जा रहे थे । जिससे हरे पन्ने के पत्थरों से युक्त वहाँ की भूमि साँवली सी हो गई थी ॥

पञ्चमः श्लोकः

सिद्धचारणगन्धर्वविद्याधरमहोरगैः ।
किन्नरैरप्सरोभिश्च क्रीडद्भिर्जुष्टकन्दरः ॥५॥

पदच्छेद—

सिद्ध चारण गन्धर्व विद्याधर महोरगैः ।
किन्नरैः अप्सरोभिः च क्रीडद्भिः जुष्ट कन्दरः ॥

शब्दार्थ—

सिद्ध	२.	सिद्ध	किन्नरैः	७.	किन्नर
चारण	३.	चारण	अप्सरोभिः	९.	अपसरायें
गन्धर्व	४.	गन्धर्व	च	८.	और
विद्याधर	५.	विद्याधर	क्रीडद्भिः	१०.	विहार करने के लिये बने रहते थे
महोरगैः।	६.	नाग	जुष्टकन्दरः॥	१.	उसकी कन्दराओं में

श्लोकार्थ—उसकी कन्दराओं में सिद्ध, चारण, गन्धर्व विद्याधर, नाग, किन्नर और अप्सरायें विहार करने के लिये बने रहते थे ॥

षष्ठः श्लोकः

यत्र संगीतसन्नादैर्नदद्गुहममर्षया ।
अभिगर्जन्ति हरयः श्लाघिनः परशङ्कया ॥६॥

पदच्छेद—

यत्र संगीत सन्नादैः नदद् गुहम् अमर्षया ।
अभिगर्जन्ति हरयः श्लाघिनः पर शङ्कया ॥

शब्दार्थ—

यत्र	१.	वहाँ पर	अभिगर्जन्ति	११.	गरजने लगते थे
संगीत	३.	संगीत की	हरयः	८.	सिंह
सन्नादैः	४.	ध्वनि की	श्लाघिनः	७.	गरवीले
नदद्	५.	प्रतिध्वनि सुनकर	पर	९.	दूसरे सिंह की
गुहम्	२.	गुफाओं में	शङ्कया॥	१०.	आशंका करके
अमर्षया।	६.	क्रोधित हुये			

श्लोकार्थ— वहाँ पर गुफाओं में संगीत की ध्वनि की प्रतिध्वनि सुनकर क्रोधित हुये गरवीले सिंह दूसरे सिंह की आशंका करके गरजने लगते थे ॥

सप्तमः श्लोकः

नानारण्यपशुव्रातसङ्कुलद्रोण्यलङ्कृतः ।
चित्रद्रुमसुरोद्यानकलकण्ठविहङ्गमः ॥७॥

पदच्छेद— नाना अरण्यपशुव्रात सङ्कुलद्रोणी अलङ्कृतः ।
चित्र द्रुम सुरा उद्यान कलकण्ठ विहङ्गमः ॥

शब्दार्थ—

नाना	१.	अनेक तरह के	चित्र	८.	नाना प्रकार के
अरण्य	२.	जंगली	द्रुम	९.	वृक्षों से भरे हुये
पशु	३.	जानवरों के	सुर	१०.	देवताओं के
व्रात	४.	झुन्डों से	उद्यान	११.	उद्यान में
सङ्कुल	५.	युक्त	कल	१३.	मधुर
द्रोणी	६.	वह पर्वत	कण्ठ	१४.	कण्ठ से (चहकते रहते थे)
अलङ्कृतः ।	७.	सुशोभित (हो रहा था)	विहङ्गमः ॥	१२.	पक्षी

श्लोकार्थ—अनेक तरह के जंगली जानवरों के झुन्डों से वह पर्वत सुशोभित हो रहा था । नाना प्रकार के वृक्षों से भरे हुये देवताओं के उद्यान में पक्षी मधुर कण्ठ से चहकते रहते थे ॥

अष्टमः श्लोकः

सरित्सरोभिरच्छोदैः पुलिनैर्मणिवालुकैः ।
देवस्त्रीमज्जनामोदसौरभाम्ब्वनिलैर्युतः ॥८॥

पदच्छेद— सरित्सरोभिः अच्छोदैः पुलिनैः मणि वालुकैः ।
देवस्त्री मज्जन आमोद सौरभ अम्बु अनिलैः युतः ॥

शब्दार्थ—

सरित्	२.	नदियाँ (और)	देवस्त्री	७.	वहाँ देवाङ्गनायें
सरोभिः	३.	सरोवर (भी थे)	मज्जन	८.	स्नान करके
अच्छोदैः	१.	वहाँ स्वच्छ जल वाले	आमोद	९.	आनन्दित होती थीं
पुलिनैः	४.	उनके किनारों पर	सौरभ	१०.	वह सुगन्धित
मणि	५.	मणियों की	अम्बु	११.	जल (और)
वालुकैः ।	६.	बालू (चमकती थी)	अनिलैः युतः ॥	१२.	वायु से युक्त था

श्लोकार्थ—वहाँ स्वच्छ जल वाले नदियाँ और सरोवर भी थे । उनके किनारों पर मणियों की बालू चमकती थी । वहाँ देवाङ्गनायें स्नान करके आनन्दित होती थीं । वह सुगन्धित जल और वायु से युक्त था ॥

नवमः श्लोकः

तस्य द्रोण्यां भगवतो वरुणस्य महात्मनः ।
उद्यानमृतुमन्नाम आक्रीडं सुरयोषिताम् ॥९॥

पदच्छेद—

तस्य द्रोण्याम् भगवतः वरुणस्य महात्मनः ।
उद्यानम् ऋतुमत् नाम आक्रीडम् सुरयोषिताम् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उस पर्वत की	उद्यानम्	८.	एक बगीचा था
द्रोण्याम्	२.	तराई में	ऋतुमत्	६.	ऋतुमान्
भगवतः	३.	भगवत् प्रेमी	नाम	७.	नाम का
वरुणस्य	५.	वरुण का	आक्रीडम्	१०.	क्रीडा करती रहती थीं
महात्मनः ।	४.	महात्मा	सुरयोषिताम् ॥	९.	जहाँ देवाङ्गनायें

श्लोकार्थ—उस पर्वत की तराई में भगवत् प्रेमी महात्मा वरुण का ऋतुमान् नाम का एक बगीचा था । जहाँ देवाङ्गनायें क्रीडा करती रहती थीं ॥

दशमः श्लोकः

सर्वतोऽलङ्कृतं दिव्यैर्नित्यं पुष्पफलद्रुमैः ।
मन्दारैः पारिजातैश्च पाटलाशोकचम्पकैः ॥१०॥

पदच्छेद—

सर्वतः अलङ्कृतम् दिव्यैः नित्यम् पुष्पफलद्रुमैः ।
मन्दारैः पारिजातैः च पाटल अशोक चम्पकैः ॥

शब्दार्थ—

सर्वतः	१.	वह बगीचा सब ओर से	मन्दारैः	७.	वहाँ मन्दार
अलङ्कृतम्	६.	शोभायमान था	पारिजातैः	८.	पारिजात
दिव्यैः	३.	दिव्य	च	९.	और
नित्यम्	२.	सर्वदा	पाटल	१०.	गुलाब
पुष्प फल	४.	पुष्प, फल और	अशोक	११.	अशोक
द्रुमैः ।	५.	वृक्षों से	चम्पकैः ॥	१२.	चम्पा के (वृक्ष थे)

श्लोकार्थ—वह बगीचा सब ओर से सर्वदा दिव्य पुष्प, फल और वृक्षों से शोभायमान था । वहाँ मन्दार, पारिजात गुलाब, अशोक और चम्पा के वृक्ष थे ॥

एकादशः श्लोकः

चूतैः प्रियालैः पनसैराम्रैराम्रातकैरपि ।
क्रमुकैर्नालिकेरैश्च खर्जूरैर्बीजपूरकैः ॥११॥

पदच्छेद—

चूतैः प्रियालैः पनसैः आम्रैः अम्रातकैः अपि ।
क्रमुकैः नारिकेरैः च खर्जूरैः बीजपूरकैः ॥

शब्दार्थ—

चूतैः	१.	वहाँ पर आम	क्रमुकैः	६.	सुपारी
प्रियालैः	२.	पयाल	नारिकेरैः	७.	नारियल
पनसैः	३.	कटहल	च	९.	और
आम्रैः	४.	आम्रफल	खर्जूरैः	८.	खजूर
अम्रातकैः	५.	आँवड़ा	बीजपूरकैः ॥	१०.	बिजौरा के
अपि ।	११.	भी (वृक्ष थे)			

श्लोकार्थ—वहाँ पर आम, पयाल, कटहल, आम्रफल, आँवड़ा, सुपारी, नारियल, खजूर और बिजौरा के भी वृक्ष थे ॥

द्वादशः श्लोकः

मधूकैः सालतालैश्च तमालैरसनार्जुनैः ।
अरिष्टोदुम्बरप्लक्षैर्वटैः किंशुकचन्दनैः ॥१२॥

पदच्छेद—

मधूकैः साल तालैः च तमालैः असन अर्जुनैः ।
अरिष्ट उदुम्बर प्लक्षैः वटैः किंशुक चन्दनैः ॥

शब्दार्थ—

मधूकः	१.	वहाँ पर महुआ	अरिष्ट	६.	रीठा
साल, तालैः	२.	साखू, ताड़	उदुम्बर	७.	गूलर
च	११.	और	प्लक्षैः	८.	पाकर
तमालैः	३.	तमाल	वटैः	९.	बरगद
असन	४.	असन	किंशुक	१०.	पलास
अर्जुनैः ।	५.	अर्जुन	चन्दनैः ॥	१२.	चन्दन आदि के वृक्ष

श्लोकार्थ—वहाँ पर महुआ, साखू, ताड़, तमाल, असन, अर्जुन, रीठा, गूलर, पाकर, बरगद, पलास और चंदन आदि के वृक्ष थे ॥

त्रयोदशः श्लोकः

पिचुमन्दैः कोविदारैः सरलैः सुरदारुभिः ।
द्राक्षेक्षुरम्भाजम्बूभिर्बदर्यक्षाभयामलैः ॥१३॥

पदच्छेद—

पिचुमन्दैः कोविदारैः सरलैः सुर दारुभिः ।
द्राक्षा इक्षु रम्भा जम्बूभिः बदरी अक्ष अभय अमलैः ॥

शब्दार्थ—

पिचुमन्दैः	१. वहां पर नीम	इक्षुरम्भा	७. ईख, केला
कोविदारैः	२. कचनार	जम्बूभिः	८. जामुन
सरलैः	३. साल	बदरी	९. बेर
सुर	४. देव	अक्ष	१०. रुद्राक्ष
दारुभिः ।	५. दारु	अभय	११. हरें और
द्राक्षा	६ दाख	आमलैः ॥	१२. आंवला (के वृक्ष थे)

श्लोकार्थ—वहां पर नीम, कचनार, साल, देवदारु, दाख, ईख, केला, जामुन, बेर, रुद्राक्ष, हरें और आंवला के वृक्ष थे ॥

चतुर्दशः श्लोक

बिल्वैः कपित्थैर्जम्बीरैर्वृतो भल्लातकादिभिः ।
तस्मिन्सरः सुविपुलं लसत्काञ्चनपङ्कजम् ॥१४॥

पदच्छेद—

बिल्वैः कपित्थैः जम्बीरैः वृतः भल्लातक आदिभिः ।
तस्मिन् सरः सुविपुलम् लसत्काञ्चन पङ्कजम् ॥

शब्दार्थ—

बिल्वैः	१. वहां पर बेल	तस्मिन्	७. उस उद्यान में
कपित्थैः	२. कैथ	सरः	९. सरोवर था
जम्बीरैः	३. नीबू से	सुविपुलम्	८. बड़ाभारी
वृतः	४ युक्त	लसत्	१२. सुशोभित हो रहा था
भल्लातक	५. भिलावा	काञ्चन	१०. जो सुनहले
आदिभिः ।	६ इत्यादि के वृक्ष थे	पङ्कजम् ॥	११. कमलों से

श्लोकार्थ—वहां पर बेल, कैथ, नीबू से युक्त भिलावा इत्यादि के वृक्ष थे। उस उद्यान में बड़ा भारी सरोवर था। जो सुनहले कमलों से सुशोभित हो रहा था ॥

पञ्चदशः श्लोकः

कुमुदोत्पलकह्लारशतपत्रश्रियोर्जितम् ।
मत्तषट्पदनिर्घुष्टं शकुन्तैश्च कलस्वनैः ॥१५॥

पदच्छेद— कुमुद उत्पल कह्लार शतपत्र श्रिया ऊर्जितम् ।
मत्त षट्पद निर्घुष्टम् शकुन्तैः च कलस्वनैः ॥

शब्दार्थ—

कुमुद	१.	वह कुमुद	मत्त	६.	वहाँ पर मतवाले
उत्पल	२.	उत्पल	षट्पद	७.	भौंरे
कह्लार	३.	कह्लार	निर्घुष्टम्	८.	गूंज रहे थे
शतपत्र	४.	शतदल की	शकुन्तैः	१०.	पक्षी
श्रियोर्जितम् ।	५.	शोभा से युक्त था	च	९.	और
			कलस्वनैः ॥	११.	कलरव कर रहे थे

श्लोकार्थ—वह कुमुद, उत्पल, कह्लार, शतदल की शोभा से युक्त था। वहाँ पर मतवाले भौंरे गूंज रहे थे। और पक्षी कलरव कर रहे थे ॥

षोडशः श्लोकः

हंसकारण्डवाकीर्णं चक्राह्वैः सारसैरपि ।
जलकुक्कुटकोयष्टिदात्यूहकुलकूजितम् ॥१६॥

पदच्छेद— हंस कारण्डव आकीर्णम् चक्राह्वैः सारसैः अपि ।
जलकुक्कुट कोयष्टि दात्यूह कुलकूजितम् ॥

शब्दार्थ—

हंस	१.	उसमें हंस	जलकुक्कुट	७.	वहाँ पन्डुब्बी
कारण्डव	२.	कारण्डव	कोयष्टि	८.	बत्तख (और)
आकीर्णम्	६.	भरे हुये थे	दात्यूह	९.	पपीहों के
चक्राह्वैः	३.	चक्रवाक	कुल	१०.	समूह
सारसैः	५.	सारस भी	कूजितम् ॥	११.	कूज रहे थे
अपि ।	४.	और			

श्लोकार्थ—उनमें कारण्डव, चक्रवाक और सारस भी भरे हुये थे। वहाँ पर पन्डुब्बी, बत्तख और पपीहों के समूह कूज रहे थे ॥

सप्तदशः श्लोकः

मत्स्यकच्छपसञ्चारचलत्पद्मरजः पयः ।
कदम्बवेतसनलनीपवञ्जुलकैर्वृतम् ॥१७॥

पदच्छेद—

मत्स्य कच्छप सञ्चार चलत् पद्मरजः पयः ।
कदम्ब वेतस नल नीप वञ्जुलकैः वृतम् ॥

शब्दार्थ—

मत्स्य	१.	वहाँ पर मछली (और)	कदम्ब,	७.	वह उद्यान कदम्ब
कच्छप	२.	कछुओं के	वेतस	८.	बेंत
सञ्चार	३.	चलने से	नल	९.	नरकुल
चलत्	४.	हिलते हुये	नीप	१०.	कदम्बलता
पद्मरजः	५.	कमल का पराग	वञ्जुलकैः	११.	मौलसिरी आदि के वृक्षों से
पयः ।	६.	जल को (सुगन्धित कर रहा है)	वृतम् ॥	१२.	घिरा हुआ था

श्लोकार्थ—वहाँ पर मछली और कछुओं के चलने से हिलते हुये कमल का पराग जल को सुगन्धित कर रहा था । वह उद्यान कदम्ब, बेंत, नरकुल, कदम्बलता, मौलसिरी आदि वृक्षों से घिरा हुआ था ॥

अष्टादशः श्लोकः

कुन्दैः कुरबकाशोकैः शिरीषैः कुटजेङ्गुदैः ।
कुब्जकैः स्वर्णयूथीभिर्नागपुन्नागजातिभिः ॥१८॥

पदच्छेद—

कुन्दैः कुरबक अशोकैः शिरीषैः कुटजइङ्गुदैः ।
कुब्जकैः स्वर्णयूथीभिः नाग पुन्नाग जातिभिः ॥

शब्दार्थ—

कुन्दैः	१.	वहाँ पर कुन्द	कुब्जकैः	७.	हरसिंगार
कुरबक	२.	कुरबक	स्वर्ण	८.	सोन
अशोकैः	३.	अशोक	यूथीभिः	९.	जुही
शिरीषैः	४.	सिरस	नाग	१०.	नाग
कुटज	५.	वनमल्लिका	पुन्नाग	११.	पुन्नाग (और)
इङ्गुदी ।	६.	लिसोड़ा	जातिभिः ॥	१२.	जाति आदि के वृक्ष

श्लोकार्थ—वहाँ पर कुन्द, कुरबक, अशोक, सिरस, वनमल्लिका, लिसोड़ा, हरसिंगार, सोनजूही, नाग, पुन्नाग, आदि जाति के वृक्ष थे ॥

एकोनविंशः श्लोकः

मल्लिकाशतपत्रैश्च माधवीजालकादिभिः ।
शोभितं तीरजैश्चान्यैर्नित्यर्तुभिरलं द्रुमैः ॥१९॥

पदच्छेद— मल्लिकाशतपत्रैः च माधवी जालक आदिभिः ।
शोभितम् तीरजैः च अन्यैः नित्य ऋतुभिः अलम्, द्रुमैः ॥

शब्दार्थ—

मल्लिका	१.	मल्लिका	तीरजैः	८.	तट पर उत्पन्न
शतपत्रैः	२.	शतपत्र	च	७.	और
च	४.	और	अन्यैः	११.	दूसरे
माधवी	३.	माधवी	नित्य	९.	प्रत्येक
जालक	५.	मोंगरा	ऋतुभिः	१०.	ऋतु में हरे रहने वाले
आदिभिः	६.	आदि थे	अलम्	१२.	अनेक
शोभितम् ।	१४.	शोभायमान रहता था	द्रुमैः ॥	१३.	वृक्षों से

श्लोकार्थ—वहाँ पर मल्लिका, शतपत्र, माधवी और मोंगरा आदि थे । और तट पर उत्पन्न प्रत्येक ऋतु में हरे रहने वाले दूसरे अनेक वृक्षों से शोभायमान रहता था ॥

विंशः श्लोकः

तत्रैकदा तद्गिरिकाननाश्रयः करेणुभिर्वारणयूथपश्चरन् ।
सकण्टकान् कीचकवेणुवेत्रवद् विशालगुल्मं प्ररुजन्वनस्पतीन् ॥२०॥

पदच्छेद— तत्र एकदा तत्गिरिकानन आश्रयः करेणुभिः वारण यूथपः चरन् ।
सकण्टकान् कीचकवेणुवेत्रवद् विशाल गुल्मम् प्ररुजन् वनस्पतीन् ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ पर	सकण्टकान्	८.	(वह) काँटे वाले
एकदा	२.	एक बार	कीचक	९.	कीचक
तत्गिरि	३.	उस पर्वत के	वेणु	१०.	बाँस
कानन	४.	जंगल में	वेत्रवद्	११.	बेंत से युक्त
आश्रयः	७.	निवास करता था	विशाल	१२.	बड़ी-बड़ी
करेणुभिः	५.	हथिनियों के साथ	गुल्मम्	१३.	झाड़ियों (और)
वारणयूथप	६.	हाथियों का राजा	प्ररुजन्	१५.	रौंदता हुआ
चरन् ।	१६.	घूम रहा था	वनस्पतीन् ॥	१८.	पेड़ों को

श्लोकार्थ—वहाँ पर एक बार उस पर्वत के जंगल में हथिनियों के साथ हाथियों का राजा निवास करता था । वह काँटे वाले कीचक, बाँस, बेंत से युक्त बड़ी-बड़ी झाड़ियों और पेड़ों को रौंदता हुआ घूम रहा था ॥

एकविंशः श्लोकः

यद्गन्धमात्राद्धरयो गजेन्द्रा व्याघ्रादयो व्यालमृगाः सखड्गाः ।
महोरगाश्चापि भयाद् द्रवन्ति सगौरकृष्णाः शरभाश्चमर्यः ॥२१॥

पदच्छेद— यत् गन्धमात्रात् हरयः गजेन्द्राः व्याघ्रआदयः व्यालमृगाः सखड्गाः ।
महोरगाः च अपि भयात् द्रवन्ति सगौरकृष्णाः शरभाः चर्मयः ॥

शब्दार्थ—

यत्	१.	जिसकी	महोरगाः	१०.	बड़े-बड़े नाग
गन्ध	२.	गन्ध	च	१४.	और
मात्रात्	३.	मात्र से	अपि	१६.	भी
हरयः	४.	सिंह	भयात्	१७.	डरकर
गजेन्द्राः	५.	हाथी	द्रवन्ति	१८.	भाग जाते थे
व्याघ्र	६.	बाघ	सगौर	११.	गोरे
आदयः	९.	आदि	कृष्णाः	१२.	काले
व्यालमृगाः	७.	गेंड़े	शरभाः	१३.	शरभ
सखड्गाः ।	८.	हिंस्र जन्तु	चर्मयः ॥	१५.	चमरी गाय आदि

श्लोकार्थ—जिसकी गन्ध मात्र से सिंह, हाथी, बाघ, गेंड़े, हिंस्र जन्तु, बड़े-बड़े नाग, गोरे-काले शरभ, चमरी गाय आदि भी डर कर भाग जाते थे ॥

द्वाविंशः श्लोकः

वृका वराहा महिषर्क्षशल्या गोपुच्छसालावृकमर्कटाश्च ।
अन्यत्र क्षुद्रा हरिणाः शशादयश्चरन्त्यभीता यदनुग्रहेण ॥२२॥

पदच्छेद— वृकाः वराहाः महिष ऋक्ष शल्याः गोपुच्छ सालावृक मर्कटाः च ।
अन्यत्र क्षुद्राः हरिणाः शशादयः चरन्ति अभीताः यत् अनुग्रहेण ॥

शब्दार्थ—

वृकाः	३.	भेड़िये	अन्यत्र	१४.	दूसरे
वराहाः	४.	सुअर	क्षुद्राः	१५.	छुद्र जीव
महिष	५.	भैंसे	हरिणाः	११.	हरिन
ऋक्ष	६.	रीछ	शशादयः	१३.	खरगोश आदि
शल्याः	७.	साही	चरन्ति	१७.	विचरते रहते थे
गोपुच्छ	८.	लंगूर	अभीताः	१६.	निर्भय होकर
सालावृक	९.	कुत्ते	यत्	१.	जिसकी
मर्कटाः	१.	बन्दर	अनुग्रहेण ॥	२.	कृपा से
च ।	१२.	और			

श्लोकार्थ—जिसकी कृपा से, भेड़िये, सुअर, भैंसे, रीछ, साही, लंगूर, कुत्ते, बन्दर, हरिन और खरगोश आदि दूसरे क्षुद्रजीव निर्भय होकर विचरते रहते थे ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

स घर्मतप्तः करिभिः करेणुभिर्वृतो मदच्युत्कलभैरनुद्रुतः ।
गिरिं गरिम्णा परितः प्रकम्पयन् निषेव्यमाणोऽलिकुलैर्मदाशनैः ॥२३॥

पदच्छेद— सः घर्मतप्तः करिभिः करेणुभिः वृतः मदच्युतकलभैः अनुद्रुतः ।
गिरिम् गरिम्णा परितः प्रकम्पयन् निषेव्यमाणः अलिकुलैः मद अशनैः ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वह हाथी	गिरिम्	११.	पर्वत को
घर्मतप्तः	२.	घाम से तपा हुआ	गरिम्णा	९.	अपनी धमक से
करिभिः	३.	हाथियों और	परितः	१०.	चारों ओर से
करेणुभिः	४.	हथिनियों से	प्रकम्पयन्	१२.	कंपाता हुआ
वृतः	५.	घिरा हुआ	निषेव्यमाणः	१६.	सेवन किया जाता हुआ
मदच्युत्	६.	मद जल टपकाता हुआ	अलिकुलैः	१५.	भौरों के समूह से
कलभैः	७.	छोटे-छोटे बच्चों से	मद	१३.	मद जल के
अनुद्रुतः ।	८.	अनुगमन किया जाता हुआ	अशनैः ॥	१४.	लोभी

श्लोकार्थ—वह हाथी घाम से तपा हुआ, हाथियों और हथिनियों से घिरा हुआ, मदजल टपकाता हुआ, छोटे-छोटे बच्चों से अनुगमन किया जाता हुआ, अपनी धमक से चारों ओर से पर्वत को कँपाता हुआ, मद जल के लोभी भौरों के समूह से सेवन किया जाता हुआ चल रहा था ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

सरोऽनिलं पङ्कजरेणुरूषितं जिघ्रन्विदूरान्मदविह्वलेक्षणः ।
वृतः स्वयूथेन तृषार्दितेन तत् सरोवराभ्याशमथागमत् द्रुतम् ॥२४॥

पदच्छेद— सरः अनिलम् पङ्कजरेणु रूषितम् जिघ्रन् विदूरात् मद्विह्वल ईक्षणः ।
वृतः स्वयूथेन तृषा अर्दितेन तत् सरोवरअभ्याशम् अथ अगमत् द्रुतम् ॥

शब्दार्थ—

सरः	९.	सरोवर की	वृतः	१५.	घिरा हुआ
अनिलम्	१०.	वायु को	स्वयूथेन	१४.	अपने समूह से
पङ्कजरेणुः	७.	कमल के पराग से	तृषा	१२.	प्यास से
रूषितम्	८.	सुवासित	अर्दितेन	१३.	व्याकुल
जिघ्रन्	११.	सूंघकर	तत्	५.	वह हाथी
विदूरात्	६.	दूर से ही	सरोवर	१७.	सरोवर के
मद	२.	मद से	अभ्याशम्	१८.	तट पर
विह्वल	३.	विह्वल	अथ	१.	तदनन्तर
ईक्षणः ।	४.	नेत्रों वाला	अगमत्	१९.	जा पहुँचा
			द्रुतम् ॥	१६.	तेजी से

श्लोकार्थ—तदनन्तर मद से विह्वल नेत्रों वाला वह हाथी दूर से ही कमल के पराग से सुवासित सरोवर की वायु को सूंघकर प्यास से व्याकुल अपने समूह से घिरा हुआ तेजी से सरोवर के तट पर जा पहुँचा ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

विगाह्य तस्मिन्नमृताम्बु निर्मलं हेमारविन्दोत्पलरेणुवासितम् ।
पपौ निकामं निजपुष्करोद्धृतमात्मानमद्भिः स्नपयन्गतक्लमः ॥२५॥

पदच्छेद— विगाह्य तस्मिन् अमृत अम्बुनिर्मलम् हेम अरविन्द उत्पलरेणुवासितम् ।
पपौ निकामम् निज पुष्कर उद्धृतम् आत्मानम् अद्भिः स्नपयन् गतक्लमः ॥

शब्दार्थ—

विगाह्य	८.	गजेन्द्र ने उसमें घुसकर	पपौ	१२.	जल पिया (और)
तस्मिन्	१.	उस सरोवर का	निकामम्	११.	पर्याप्त रूप से
अमृत	२.	अमृत के समान	निजपुष्कर	९.	अपनी सूंड़ से
अम्बु	४.	जल	उद्धृतम्	१०.	उठा-उठा कर
निर्मलम्	३.	निर्मल	आत्मानम्	१४.	अपनी
हेमअरविन्द	५.	सुनहले और अरुण	अद्भिः स्नपयन्	१३.	जल से स्नान करके
उत्पल रेणु	६.	कमलों के केसर से	गत	१६.	दूर की
वासितम् ।	७	महक रहा था	क्लमः ॥	१५.	थकान

श्लोकार्थ—उस सरोवर का अमृत के समान निर्मल जल सुनहले और अरुण कमलों के केसर से महक रहा था। गजेन्द्र ने उसमें घुसकर अपनी सूंड़ से उठा उठाकर पर्याप्त रूप से जल पिया और जल में स्नान करके अपनी थकान दूर की ॥

षड्विंशः श्लोकः

स्वपुष्करेणोद्धृतशीकराम्बुभिर्निपाययन्संस्नपयन्यथा गृही ।
घृणी करेणुः कलभांश्च दुर्मदो नाचष्ट कृच्छ्रं कृपणोऽजमायया ॥२६॥

पदच्छेद— स्वपुष्करेण उद्धृत शीकर अम्बुभिः निपाययन् संस्नपयन् यथा गृही ।
घृणी करेणुः कलभान् च दुर्मदः न आचष्ट कृच्छ्रम् कृपणः अज मायया ॥

शब्दार्थ—

स्व	४.	वह हाथी अपनी	घृणी	३.	मोह ग्रस्त होकर
पुष्करेण	५.	सूंड़ से	करेणुः	९.	हथिनियों
उद्धृत	८.	छोड़-छोड़कर	कलभान्	११.	बच्चों को
शीकर	७.	फुहारें	च	१०.	और
अम्बुभिः	६.	जल को	दुर्मदः	१६.	उन्मत्त हो रहा था (अतः)
निपाययन्	१३.	जल पिलाने लगा	न आचष्ट	१८.	नहीं समझ पाया
संस्नपयन्	१२.	नहलाने और	कृच्छ्रम्	१७.	बहुत बड़ी विपत्ति
यथा	२.	समान	कृपणः	१५.	वह बेचारा
गृही ।	१.	गृहस्थ पुरुषों के	अजमायया ॥	१४.	भगवान् की माया से मोहित हुआ

श्लोकार्थ—गृहस्थ पुरुषों के समान मोहग्रस्त होकर वह हाथी अपनी सूंड़ से जल की फुहारें छोड़-छोड़ कर हथिनियों और बच्चों को नहलाने और जल पिलाने लगा। भगवान् की माया से मोहित हुआ वह बेचारा उन्मत्त हो रहा था अतः बहुत बड़ी विपत्ति को नहीं समझ पाया ॥

सप्तविंशः श्लोकः

तं तत्र कश्चिन्नृप दैवचोदितो ग्राहो बलीयांश्चरणे रुषाग्रहीत् ।
यदृच्छयैवं व्यसनं गतो गजो यथाबलं सोऽतिबलो विचक्रमे ॥२७॥

पदच्छेद— तम् तत्र कश्चित् नृप दैवचोदितः ग्राहः बलीयान् चरणे रुषा अग्रहीत् ।
यदृच्छया एवम् व्यसनम् गतः गजः यथा बलम् सः अतिबलः विचक्रमे ॥

शब्दार्थ—

तम्	८.	उस हाथी का	अग्रहीत् ।	१०.	पकड़ लिया
तत्र	२.	उसी समय वहाँ	यदृच्छया	१२.	अकस्मात्
कश्चित्	४.	किसी	एवम्	११.	इस प्रकार
नृप	१	हे राजन् !	व्यसनम्गतः	१३.	विपत्ति में पड़कर
दैवचोदितः	३.	प्रारब्ध की प्रेरणा से	गजः	१४.	उस गजेन्द्र ने
ग्राहः	६.	ग्राह ने	यथा	१६.	अनुसार
बलीयान्	५.	बलवान्	बलम्	१५.	अपनी शक्ति के
चरणे	९.	पैर	सः अतिबलः	१८.	उस समय बड़ी चेष्टा की
रुषा	७.	क्रोध में भरकर	विचक्रमे ॥	१७.	अपने को छुड़ाने की

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उसी समय वहाँ प्रारब्ध की प्रेरणा से किसी बलवान् ग्राह ने क्रोध में भरकर उस हाथी का पैर पकड़ लिया । इस प्रकार अकस्मात् विपत्ति में पड़कर उस गजेन्द्र ने अपनी शक्ति के अनुसार अपने को छुड़ाने की उस समय बड़ी चेष्टा की ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

तथाऽऽतुरं यूथपतिं करेणवो विकृष्यमाणं तरसा बलीयसा ।
विचुक्रुशुर्दीनधियोऽपरे गजाः पार्ष्णिग्रहास्तारयितुं न चाशकन् ॥२८॥

पदच्छेद— तथा आतुरम् यूथपतिम्करेणवः विकृष्यमाणम् तरसा बलीयसा ।
विचुक्रुशुः दीनधियः अपरे गजाः पार्ष्णि ग्रहाः तारयितुम् न च अशकन् ॥

शब्दार्थ—

तथा	१.	इस प्रकार	विचुक्रुशुः	९.	बड़ा दुःख किया
आतुरम्	७.	घबड़ाये हुये देखकर	दीनधियः	१०.	दुःख से भरकर
यूथपतिम्	६.	उस गजेन्द्र को	अपरे गजाः	११.	दूसरे हाथियों ने भी
करेणवः	८.	हथिनियों ने	पार्ष्णिग्रहाः	१२.	पीछे से पकड़ कर
विकृष्य	४.	खींचे	तारयितुम्	१३.	बाहर निकालने की चेष्टा की
माणम्	५.	जाते हुये	न	१५.	नहीं
तरसा	२	अत्यधिक	च	१४.	और
बलीयसा ।	३.	वेग से	अशकन् ॥	१६.	समर्थ हुये

श्लोकार्थ—इस प्रकार अत्यधिक वेग से खींचे जाते हुये उस गजेन्द्र को घबड़ाये हुये देखकर हथिनियों ने बड़ा दुःख किया । दुःख में भरकर दूसरे हाथियों ने भी पीछे से पकड़कर बाहर निकालने की चेष्टा की और समर्थ नहीं हुये ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

नियुध्यतोरेवमिभेन्द्रनक्रयोर्विकर्षतोरन्तरतो बहिर्मिथः ।
समाः सहस्रं व्यगमन् महीपते सप्राणयोश्चित्रममंसतामराः ॥२९॥

पदच्छेद— नियुध्यतोः एव इभेन्द्रनक्रयोर्विकर्षतोः अन्तरतः बहिः मिथः ।
समाः सहस्रम् व्यगमन् महीपते सप्राणयोः चित्रम्अमंसत अमराः ॥

शब्दार्थ—

नियुध्यतोः	५. युद्ध करते हुये (तथा)	समाः	११. वर्ष
एवम्	२. इस प्रकार	सहस्रम्	१०. एक हजार
इभेन्द्र	३. गजेन्द्र (और)	व्यगमन्	१२. बीत गये
नक्रयोः	४. ग्राह को	महीपते	१. हे राजन् !
विकर्षतोः	९. खींचते हुये	सप्राणयोः	१४. इन शक्तिशालियों को देखकर
अन्तरतः	७. कभी अन्दर और	चित्रम्	१५. आश्चर्य
बहिः	८. कभी बाहर	अमंसत	१६. मानने लगे
मिथः ।	६. आपस में	अमराः ॥	१३. देवगण

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार गजेन्द्र और ग्राह को युद्ध करते हुये तथा आपस में कभी अन्दर और कभी बाहर खींचते हुये एक हजार वर्ष बीत गये । देवगण इन शक्तिशालियों को देखकर आश्चर्य-मानने लगे ॥

त्रिंशः श्लोकः

ततो गजेन्द्रस्य मनोबलौजसां कालेन दीर्घेण महानभूद् व्ययः ।
निकृष्यमाणस्य जलेऽवसीदतो विपर्ययोऽभूत् सकलं जलौकसः ॥३०॥

पदच्छेद— ततः गजेन्द्रस्य मनोबल ओजसाम् कालेन दीर्घेण महान् अभूत् व्ययः ।
निकृष्य माणस्य जले अवसीदतः विपर्ययः अभूत् सकलम् जल ओकसः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. तदनन्तर	निकृष्य	९. खींचे
गजेन्द्रस्यमनो	४. गजेन्द्र के मन का	माणस्य	१०. जाते हुये (गजेन्द्र की अपेक्षा)
बल ओजसाम्	५. बल और शरीर का बल	जले	११. जल में
कालेन	३. समय के कारण	अवसीदतः	१२. रहते हुये
दीर्घेण	२. अधिक	विपर्ययः	१५. बढ़ने
महान्	६. सारा का सारा	अभूत्	१६. लगा
अभूत्	८. हो गया	सकलम्	१४. समस्त बल
व्ययः ।	७. समाप्त	जलओकसः ॥	१३. जलचर ग्राह का

श्लोकार्थ—तदनन्तर अधिक समय के कारण गजेन्द्र के मन का बल और शरीर का बल सारा का सारा समाप्त हो गया । खींचे जाते हुये गजेन्द्र की अपेक्षा जल में रहने वाले जलचर ग्राह का समस्त बल बढ़ने लगा ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

इत्थं गजेन्द्रः स यदाऽऽप संकटं प्राणस्य देही विवशो यदृच्छया ।
अपारयन्नात्मविमोक्षणे चिरं दध्याविमां बुद्धिमथाभ्यपद्यत ॥३१॥

पदच्छेद— इत्थम् गजेन्द्रः सः यदा आप संकटम् प्राणस्य देही विवशः यदृच्छया ।
अपारयन् आत्मविमोक्षणे चिरम् दध्यौ इमाम् बुद्धिम् अथ अभ्यपद्यत ॥

शब्दार्थ—

इत्थम्	१.	इस प्रकार	यदृच्छया ।	९.	छुड़ाने में
गजेन्द्रः	४.	गजेन्द्र का	अपारयन्	१४.	उपाय न पाकर
सः	३.	उस	आत्म	१२.	अपने
यदा	२.	जब	विमोक्षणे	१३.	छुटकारे का
आप	७.	पड़ गया (और)	चिरम्	१५.	बहुत देर तक
संकटम्	६.	संकट में	दध्यौ	१६.	ध्यान करने पर
प्राणस्य	५.	प्राण	इमाम् बुद्धिम्	१७	इस निश्चय पर
देही	८.	शरीर को	अथ	११.	तदनन्तर
विवशः	१०.	विवश हो गया	अभ्यपद्यत ॥	१८.	पहुँचा

श्लोकार्थ—इस प्रकार जब उस गजेन्द्र का प्राण संकट में पड़ गया और शरीर को छुड़ाने में विवश हो गया, तदनन्तर अपने छुटकारे का उपाय न पाकर बहुत देर तक ध्यान करने पर इस निश्चय पर पहुँचा ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

न मामिमे ज्ञातय आतुरं गजाः कुतः करिण्यः प्रभवन्ति मोचितुम् ।
ग्राहेण पाशेन विधातुरावृतोऽप्यहं च तं यामि परं परायणम् ॥३२॥

पदच्छेद— न माम् इमे ज्ञातयः आतुरम् गजाः कुतः करिण्यः प्रभवन्ति मोचितुम् ।
ग्राहेण पाशेन विधातुः आवृतः अपि अहम् च तम् यामि परम् परायणम् ॥

शब्दार्थ—

न	५.	नहीं (छुड़ा सकते फिर)	पाशेन	१४.	फाँसी से
माम्	१.	मुझ	विधातुः	१३.	विधाता की
इमे ज्ञातयः	३.	ये सम्बन्धी	आवृतः	१५.	बंधा हुआ हूँ (फिर)
आतुरम्	२.	दुःखी को	अपि	१६.	भी
गजाः	४.	हाथी	अहम्	११.	मैं
कुतः	८.	कैसे	च	१०.	और
करिण्यः	६.	हथिनियाँ	तम्	१९.	उस ईश्वर की
प्रभवन्ति	९.	समर्थ हो सकती हैं	यामि	२०.	शरण लेता हूँ
मोचितुम् ।	७.	छुड़ाने में	परम्	१७.	सम्पूर्ण विश्व के
ग्राहेण	१२.	ग्राह रूपी	परायणम् ॥	१८.	एक मात्र जो आश्रय है

श्लोकार्थ—मुझ दुःखी को ये सम्बन्धी हाथी नहीं छुड़ा सकते फिर हथिनियाँ कैसे छुड़ाने में समर्थ हो सकती हैं । और मैं ग्राह रूपी विधाता की फाँसी से बंधा हुआ हूँ । फिर भी सम्पूर्ण विश्व के एक मात्र जो आश्रय है, उस ईश्वर की शरण लेता हूँ ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

यः कश्चनेशो बलिनोऽन्तकोरगात् प्रचण्डवेगादभिधावतो भृशम् ।
भीतं प्रपन्नं परिपाति यद्भयान्मृत्युः प्रधावत्यरणं तमीमहि ॥३३॥

पदच्छेद— यः कश्चन ईशः बलिनः अन्तक उरगात् प्रचण्डवेगात् अभिधावतः भृशम् ।
भीतम् प्रपन्नम् परिपाति यद्भयात् मृत्युः प्रधावति अरणम् तम् ईमहि ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जो	भीतम्	११.	भयभीत होकर
कश्चन	२.	कोई	प्रपन्नम्	१२.	शरण में आये हुये को
ईशः	३.	परमात्मा	परिपाति	१३.	रक्षा करता है
बलिनः	५.	बलशाली	यत्	१४.	जिसके
अन्तक	४.	अन्त करने वाले	भयात्	१५.	भय से
उरगात्	६.	सांप के समान	मृत्युः	१६.	मृत्यु भी
प्रचण्ड	८.	प्रचण्ड	प्रधावति	१७.	भाग जाती है
वेगात्	९.	वेग से	अरणम्	१९.	रक्षक परमात्मा की
अभिधावतः	१०.	दौड़ते हुये काल से	तम्	१८.	उसी
भृशम् ।	७.	अत्यन्त	ईमहि ॥	२०.	मैं शरण लेता हूँ

श्लोकार्थ—जो कोई परमात्मा अन्त करने वाले बलशाली सांप के समान अत्यन्त प्रचण्ड वेग से दौड़ते हुये काल से भयभीत होकर शरण में आये हुये की रक्षा करता है, जिसके भय से मृत्यु भी भाग जाती है, उसी रक्षक परमात्मा की मैं शरण लेता हूँ ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
अष्टमे स्कन्धे मन्वन्तरवर्णने गजेन्द्रउपाख्याने
द्वितीयः अध्यायः ॥२॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

तृतीयः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं व्यवसितो बुद्ध्या समाधाय मनो हृदि ।
जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम् ॥१॥

पदच्छेद— एवम् व्यवसितः बुद्ध्या समाधाय मनोहृदि ।
जजाप परमम् जाप्यम् प्राक्जन्मनि अनुशिक्षितम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	जजाप	१२.	जपने लगा
व्यवसितः	३.	निश्चय करके	परमम्	१०.	श्रेष्ठ
बुद्ध्या	१.	बुद्धि से	जाप्यम्	११.	मन्त्र को
समाधाय	६.	एकाग्र किया (और)	प्राक्	७.	पूर्व
मनो	४.	मन को	जन्मनि	८.	जन्म में
हृदि ।	५.	हृदय में	अनुशिक्षितम् ॥	९.	सीखे हुये

श्लोकार्थ—बुद्धि से इस प्रकार निश्चय करके मन को हृदय में एकाग्र किया और पूर्व जन्म में सीखे हुये श्रेष्ठ मन्त्र को जपने लगा ॥

द्वितीयः श्लोकः

गजेन्द्र उवाच— ॐ नमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम् ।
पुरुषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि ॥२॥

पदच्छेद— ॐ नमः भगवते तस्मै यत् एतद् चित् आत्मकम् ।
पुरुषाय आदि बीजाय परेशाय अभिधीमहि ॥

शब्दार्थ—

ॐ	१.	सच्चिदानन्द स्वरूप	आत्मकम्	८.	विस्तार होता से
नमः	४.	नमस्कार करता हूँ	पुरुषाय	९.	पुरुषरूप में विराजमान
भगवते	३.	भगवान् को मैं	आदि	१०.	संसार के आदि
तस्मै	२.	उन	बीजाय	११.	कारण
यत्	५.	जिनसे	परेशाय	१२.	एक मात्र स्वामी का
एतद्	६.	इस संसार में	अभिधीमहि ॥	१३.	मैं ध्यान करता हूँ
चित्	७.	चेतनता का			

श्लोकार्थ—सच्चिदानन्द स्वरूप उन भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ, जिनसे इस संसार में चेतनता का विस्तार होता है । पुरुषरूप में विराजमान संसार के आदिकारण एक मात्र स्वामी का मैं ध्यान करता हूँ ॥

तृतीयः श्लोकः

यस्मिन्निदं यतश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम् ।
योऽस्मात् परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम् ॥३॥

पदच्छेद— यस्मिन् इदम् यतः च इदम् येन इदम् यः इदम् स्वयम् ।
यः अस्मात् परस्मात् च परः तम् प्रपद्ये स्वयम्भुवम् ॥

शब्दार्थ—

यस्मिन्	१.	जिनमें	स्वयम्	९.	स्वयम्
इदम्	२.	यह संसार स्थित है	यः	११.	जो
यतः	३.	जिसकी सत्ता से	अस्मात्	१२.	इस संसार
च	५.	सत्तावान् है	परस्मात्	१४.	इसके कारण प्रकृति से
इदम्	४.	यह	च	१३.	और
येन	६.	जिनके द्वारा	परः	१५.	परे है
इदम्	७.	यह है	तम्	१६.	उस
यः	८.	जो	प्रपद्ये	१८.	शरण ग्रहण करता हूँ
इदम् ।	१०.	इस संसार रूप में है	स्वयम्भुवम् ॥	१७.	स्वयं सिद्ध सत्यात्मक परमात्मा की मैं

श्लोकार्थ—जिनमें यह संसार स्थित है, जिनकी सत्ता से यह सत्तावान् है। जिनके द्वारा यह है। जो स्वयम् इस संसार रूप में है। जो इस संसार और इसके कारण प्रकृति से परे है, उस स्वयम् सिद्ध सत्यात्मक परमात्मा की मैं शरण ग्रहण करता हूँ ॥

चतुर्थः श्लोकः

यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं क्वचिद् विभातं क्व च तत् तिरोहितम् ।
अविद्धदृक् साक्ष्युभयं तदीक्षते स आत्ममूलोऽवतु मां परात्परः ॥४॥

पदच्छेद— यः स्व आत्मनि इदम् निजमायया अर्पितम् क्वचित् विभातम् क्व च तत् तिरोहितम् ।
अविद्ध दृक् साक्षि उभयम् तत् ईक्षते सः आत्ममूलः अवतु माम् परात्परः ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जिन परमात्मा में	अविद्ध दृक्	१०.	उनकी दृष्टि एक सी रहती है
स्व आत्मनि	४.	उन्हीं के स्वरूप में	साक्षि	११.	साक्षिरूप
इदम्	२.	यह विश्व प्रपञ्च	उभयम्	१३.	उन दोनों को ही
निजमायया	३.	उनकी माया से	तत्	१२.	वे परमात्मा
अर्पितम्	५.	अध्यस्त है	ईक्षते	१४.	देखते हैं
क्वचित्	६	कभी तो यह	सः आत्ममूलः	१५.	वे अपने मूल भी स्वयं हैं
विभातम्	७.	प्रतीत होता है	अवतु	१८.	रक्षा करें
क्व च तत्	८.	कभी और यह	माम्	१७.	मेरी
तिरोहितम् ।	९.	छिप जाता है (किन्तु)	परात्परः ॥	१६.	कार्य-कारण से अतीत वे परमात्मा

श्लोकार्थ—जिन परमात्मा में यह विश्व प्रपञ्च उनकी माया से उन्हीं के स्वरूप में विशेष रूप में स्थित है। कभी तो यह प्रतीत होता है और कभी यह छिप जाता है। किन्तु उनकी दृष्टि एक सी रहती है साक्षिरूप से वे परमात्मा उन दोनों को ही देखते हैं। वे अपने मूल भी स्वयं ही हैं। कार्य-कारण से अतीत वे परमात्मा मेरी रक्षा करें ॥

पञ्चमः श्लोकः

कालेन पञ्चत्वमितेषु कृत्स्नशो लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु।
तमस्तदाऽऽसीद् गहनं गभीरं यस्तस्य पारेऽभिविराजते विभुः ॥५॥

पदच्छेद— कालेन पञ्चत्वम् इतेषु कृत्स्नशः लोकेषु पालेषु च सर्व हेतुषु।
तमः तदा आसीत् गहनम् गम्भीरम् यः तस्य पारे अभिविराजते विभुः ॥

शब्दार्थ—

कालेन	१.	प्रलय के समय	तमः	११.	अन्धकार ही
पञ्चत्वम् इतेषु	८.	नष्ट हो जाते हैं	तदा	९.	उस समय केवल
कृत्स्नशः	७.	पूर्णरूप से	आसीत्	१२.	रहता है
लोकेषु	२.	लोक	गहनम्गम्भीरम्	१०.	घना और गहरा
पालेषु	३.	लोकपाल	यः	१३.	जो
च	४.	और इन	तस्य पारे	१५.	उससे सर्वथा परे
सर्व	५.	सबके	अभिविराजते	१६.	विराजमान रहते हैं
हेतुषु।	६.	कारण	विभुः ॥	१४.	अनन्त परमात्मा

श्लोकार्थ—प्रलय के समय लोक-लोकपाल और इन सबके कारण पूर्ण रूप से नष्ट हो जाते हैं। उस समय केवल घना और गहरा अन्धकार ही रहता है। जो अनन्त परमात्मा उससे सर्वथा परे विराजमान रहते हैं, वे मेरी रक्षा करें॥

षष्ठः श्लोकः

न यस्य देवा ऋषयः पदं विदुर्जन्तुः पुनः कोऽर्हति गन्तुमीरितुम्।
यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतो दुरत्ययानुक्रमणः स मावतु ॥६॥

पदच्छेद— न यस्य देवाः ऋषयः पदम् विदुः जन्तुः पुनः कः अर्हति गन्तुम् ईरितुम्।
यथा नटस्य आकृतिभिः विचेष्टतः दुरत्यय अनुक्रमणः सः मा अवतु ॥

शब्दार्थ—

न	४.	नहीं	यथा	११.	समान
यस्य	२.	जिनके	नटस्य	१०.	वे नट के
देवा ऋषयः	१.	देवगण और ऋषिगण	आकृतिभिः	१२.	नाना आकृतियों और
पदम्	३.	स्वरूप को	विचेष्टतः	१३.	चेष्टाओं से युक्त हैं
विदुः	५.	जानते हैं	दुरत्यय	१५.	बड़ा कठिन है
जन्तुः	७.	प्राणी उसे	अनुक्रमण	१४.	जिनका चरित्र वर्णन करना
पुनः कः	६.	फिर अन्य कौन	सः	१६.	वे परमात्मा
अर्हतिगन्तुम्	९.	समर्थ हो सकता है	मा	१७.	मेरी
ईरितुम्।	८.	कहने में	अवतु ॥	१८	रक्षा करें

श्लोकार्थ—देवगण और ऋषिगण जिनके स्वरूप को नहीं जानते हैं। फिर अन्य कौन प्राणी उसे कहने में समर्थ हो सकता है। वे नट के समान नाना आकृतियों और चेष्टाओं से युक्त हैं। जिनका चरित्र वर्णन करना बड़ा कठिन है, वे परमात्मा मेरी रक्षा करें॥

सप्तमः श्लोकः

दिदृक्षवो यस्य पदं सुमङ्गलं विमुक्तसङ्गा मुनयः सुसाधवः ।
चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः ॥७॥

पदच्छेद— दिदृक्षवः यस्य पदम् सुमङ्गलम् विमुक्त सङ्गाः मुनयः सुसाधवः ।
चरन्ति अलोक व्रतम् अव्रणम् वने भूत आत्मभूताः सुहृदः सः मे गतिः ॥

शब्दार्थ—

दिदृक्षवः	४. दर्शन करने के लिये	चरन्ति	१२. पालन करते हैं
यस्य	१. जिनके	अलोकव्रतम्	११. अलौकिक व्रतों का
पदम्	३. स्वरूप का	अव्रणम्	१०. अखण्डभाव से
सुमङ्गलम्	२. परम मंगलमय	वने	९. वन में जाकर
विमुक्त	८. परित्याग कर देते हैं और	भूत	१३. सम्पूर्ण प्राणियों को
सङ्गाः	७. आसक्तियों का	आत्मभूताः	१४. आत्मरूप देखकर
मुनयः	५. ऋषिगण तथा	सुहृदः	१५. सबके सुहृद् बन जाते हैं
सुसाधवः ।	६. महात्मागण	सः मे गतिः ॥	१६. वे ही परमात्मा मेरी गति हैं

श्लोकार्थ—जिनके परम मंगलमय स्वरूप का दर्शन करने के लिये ऋषिगण और महात्मागण आसक्तियों का परित्याग कर देते हैं, और वन में जाकर अखण्ड भाव से अलौकिक व्रतों का पालन करते हैं, सम्पूर्ण प्राणियों को आत्मस्वरूप देखकर सबके सुहृद् बन जाते हैं, वे परमात्मा मेरी रक्षा करें ॥

अष्टमः श्लोकः

न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा न नामरूपे गुणदोष एव वा ।
तथापि लोकाप्ययसंभवाय यः स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति ॥८॥

पदच्छेद— न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा न नामरूपे गुणदोष एव वा ।
तथापि लोकअप्यय संभवाय यः स्वमायया तानि अनुकालम् ऋच्छति ॥

शब्दार्थ—

न	२. नहीं	तथापि	१०. फिर भी
विद्यते	५. हैं	लोक	११. विश्व की
यस्य	३. उनके	अप्यय	१३. संहार करने के लिये
च	१. और	संभवाय	१२. सृष्टि और
जन्मकर्म	४. जन्म कर्म	यः	१४ वे
वा	८. या	स्वमायया	१५. अपनी माया से
न नामरूपे	७. नहीं नामरूप	तानि	१६. उन्हें
गुणदोष एव	९ गुणदोष ही हैं	अनुकालम्	१७. समय-समय पर
वा ।	६ अथवा	ऋच्छति ॥	१८. स्वीकार करते हैं

श्लोकार्थ—और नहीं उनके जन्म-कर्म हैं । अथवा नहीं नाम रूप या गुण दोष ही हैं । फिर भी विश्व की सृष्टि और संहार के लिये वे अपनी माया से उन्हें समय-समय पर स्वीकार करते हैं ॥

नवमः श्लोकः

तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ।
अरूपायोरुरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे ॥९॥

पदच्छेद— तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणे अनन्त शक्तये ।
अरूपाय उरु रूपाय नमः आश्चर्य कर्मणे ॥

शब्दार्थ—

तस्मै	४.	परमात्मा को	अरूपाय	६.	जो अरूप होने पर भी
नमः	५.	नमस्कार	उरुरूपाय	७.	बहुरूप हैं उन
परेशाय	२.	ऐश्वर्यरूप उन	नमः	१०.	नमस्कार है
ब्रह्मणे	३.	परब्रह्म	आश्चर्य	८.	आश्चर्यमय
अनन्त शक्तये ।	१.	अनन्त शक्तिमान्	कर्मणे ॥	९.	कर्मों वाले परमात्मा को

श्लोकार्थ—अनन्त शक्तिमान्, ऐश्वर्यरूप उन परब्रह्म परमात्मा को नमस्कार है । जो अरूप होने पर भी बहुरूप हैं, उन आश्चर्यमय कर्मों वाले परमात्मा को नमस्कार है ॥

दशमः श्लोकः

नम आत्मप्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने ।
नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामपि ॥१०॥

पदच्छेद— नमः आत्म प्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने ।
नमः गिराम् विदूराय मनसः चेतसाम् अपि ॥

शब्दार्थ—

नमः	५	नमस्कार करता हूँ	नमः	१०.	नमस्कार करता हूँ
आत्म	१.	स्वयम्	गिराम्	६.	वाणी
प्रदीपाय	२.	प्रकाश	विदूराय	९.	दूर उन परमात्मा को
साक्षिणे	३.	सब के साक्षी	मनसः	७.	मन और
परमात्मने ।	४.	परमात्मा को	चेतसाम् अपि ॥	८.	चित्त से भी

श्लोकार्थ—स्वयम् प्रकाश, सबके साक्षी परमात्मा को नमस्कार करता हूँ । वाणी, मन और चित्त से भी दूर रहने वाले उन परमात्मा को नमस्कार है ॥

एकादशः श्लोकः

सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता ।
नमः कैवल्यनाथाय निर्वाणसुखसंविदे ॥११॥

पदच्छेद— सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता ।
नमः कैवल्यनाथाय निर्वाण सुख संविदे ॥

शब्दार्थ—

सत्त्वेन	३. अन्तः करण शुद्ध करके	कैवल्य	५. कैवल्य मुक्ति देने में
प्रतिलभ्याय	४. जिन्हें प्राप्त करते हैं	नाथाय	६. समर्थ उन
नैष्कर्म्येण	२. कर्म संन्यास द्वारा	निर्वाण	७. मोक्षरूप
विपश्चिता ।	१. विवेकी पुरुष	सुख	८. आनन्द के
नमः	१०. नमस्कार है	संविदे ॥	९. अनुभव रूप परमात्मा को

श्लोकार्थ—विवेकी पुरुष कर्म संन्यास द्वारा अन्तः करण शुद्ध करके जिन्हें प्राप्त करते हैं। कैवल्य मुक्ति देने में समर्थ उन मोक्ष रूप आनन्द के अनुभव रूप परमात्मा को नमस्कार है ॥

द्वादशः श्लोकः

नमः शान्ताय घोराय मूढाय गुणधर्मिणे ।
निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च ॥१२॥

पदच्छेद— नमः शान्ताय घोराय मूढाय गुणधर्मिणे ।
निर्विशेषाय साम्याय नमः ज्ञान घनाय च ॥

शब्दार्थ—

नमः	७. नमस्कार करता हूं	निर्विशेषाय	६. भेद रहित परमात्मा को मैं
शान्ताय	३. शान्त	साम्याय	८. समभाव में स्थित
घोराय	४. घोर (और)	नमः	१२ प्रभु को नमस्कार है
मूढाय	५. मूढ़ अवस्था धारण करने वाले	ज्ञान	९. ज्ञान
गुण	१. सत, रज, तम गुणों का	घनाय	१०. घन
धर्मिणे ।	२. धर्म स्वीकार करके	च ॥	११. और उन

श्लोकार्थ—सत, रज, तम गुणों का धर्म स्वीकार करके शान्त और मूढ़ अवस्था धारण करने वाले, भेद रहित परमात्मा को मैं नमस्कार करता हूं। समभाव में स्थित ज्ञान-घन और उन प्रभु को नमस्कार है ॥

त्रयोदशः श्लोकः

क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे ।
पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः ॥१३॥

पदच्छेद— क्षेत्रज्ञाय नमः तुभ्यम् सर्व अध्यक्षाय साक्षिणे ।
पुरुषाय आत्ममूलाय मूल प्रकृतये नमः ॥

शब्दार्थ—

क्षेत्रज्ञाय	४.	क्षेत्रों के ज्ञाता	पुरुषाय	६.	पुरुषरूप और
नमः	९.	नमस्कार करता हूँ	आत्म	७.	स्वयम् अपने
तुभ्यम्	१.	आप	मूलाय	८.	कारण परमात्मा को मैं
सर्व	२.	सबके	मूल	१०.	मूल
अध्यक्षाय	३.	स्वामी	प्रकृतये	११.	प्रकृति स्वरूप परमात्मा को
साक्षिणे ।	५.	साक्षीरूप	नमः ॥	१२.	नमस्कार है

श्लोकार्थ—आप सबके स्वामी, क्षेत्रों के ज्ञाता, साक्षीरूप, पुरुषरूप और स्वयम् अपने कारण परमात्मा को मैं नमस्कार करता हूँ। मूल प्रकृति स्वरूप परमात्मा को नमस्कार है ॥

चतुर्दशः श्लोकः

सर्वेन्द्रियगुणद्रष्ट्रे सर्वप्रत्ययहेतवे ।
असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः ॥१४॥

पदच्छेद— सर्वेन्द्रिय गुणद्रष्ट्रे सर्व प्रत्यय हेतवे ।
असता छायया उक्ताय सत् आभासाय ते नमः ॥

शब्दार्थ—

सर्वेन्द्रिय	१.	आप समस्त इन्द्रियों और	असता	८.	असत् वस्तु द्वारा
गुण	२.	उनके विषयों के	छायया	७.	छायारूप
द्रष्ट्रे	३.	द्रष्ट्रा हैं	उक्ताय	९.	आपका अस्तित्व प्रकट है
सर्व	४.	समस्त	सत्	१०.	सत्स्वरूप में
प्रत्यय	५.	प्रतीतियों के	आभासाय	११.	आभासित होने वाले
हेतवे ।	६.	आधार हैं	ते नमः ॥	१२.	आपको नमस्कार है

श्लोकार्थ—आप समस्त इन्द्रियों और उनके विषयों के द्रष्ट्रा हैं। समस्त प्रतीतियों के आधार हैं। छायारूप असत् वस्तु द्वारा आपका अस्तित्व प्रकट है। सत्स्वरूप में अभासित होने वाले वाले आपको नमस्कार है ॥

पञ्चदशः श्लोकः

नमो नमस्तेऽखिलकारणाय निष्कारणायाद्भुतकारणाय ।
सर्वागमाम्नायमहार्णवाय नमोऽपवर्गाय परायणाय ॥१५॥

पदच्छेद— नमः नमः ते अखिलकारणाय निष्कारणाय अद्भुतकारणाय ।
सर्व आगम आम्नाय महार्णवाय नमः अपवर्गाय परायणाय ॥

शब्दार्थ—

नमः	७.	नमस्कार है	सर्व	८.	समस्त
नमः ते	६.	तुम्हें नमस्कार है	आगम	९.	वेदों और
अखिल	४.	सबके	आम्नाय	१०.	शास्त्रों
कारणाय	५.	मूल कारण	महार्णवाय	११.	महा सागर
निष्कारणाय	१.	कारण रहित	नमः	१४.	नमस्कार है
अद्भुत	२.	अद्भुत	अपवर्गाय	१२.	मोक्ष स्वरूप
कारणाय ।	३.	कारण वाले	परायणाय ॥	१३.	संतों के एकमात्र आश्रय आपको

श्लोकार्थ—कारण रहित, अद्भुत कारण वाले, सबके मूल कारण तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है। समस्त वेदों और शास्त्रों के महासागर, मोक्ष स्वरूप संतों के एकमात्र आश्रय आपको नमस्कार है ॥

षोडशः श्लोकः

गुणारणिच्छन्नचिदूष्मपाय तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय ।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागमस्वयंप्रकाशाय नमस्करोमि ॥१६॥

पदच्छेद— गुण अरणि छन्न चिदूष्मपाय तत् क्षोभ विस्फूर्जित मानसाय ।
नैष्कर्म्य भावेन विवर्जित आगम स्वयम् प्रकाशाय नमः करोमि ॥

शब्दार्थ—

गुण	२.	गुणों के द्वारा	नैष्कर्म्य	९.	कर्मसंन्यास
अरण	१.	अरणि के समान	भावेन	१०.	के द्वारा
छन्न	३.	ढकी हुई	विवर्जित	१२.	ऊपर उठ जाने वाले
चिदूष्मपाय	४.	ज्ञान रूपी अग्नि वाले	आगम	११.	वेद-शास्त्रों से
तत्	५.	तथा गुणों में	स्वयम्	१३.	स्वयं
क्षोभ	६.	क्षोभ होने पर	प्रकाशाय	१४.	प्रकाश स्वरूप परमात्मा
विस्फूर्जित	७.	बहिर्मुखी	नमः	१५.	को मैं नमस्कार
मानसाय ।	८.	मन वाले	करोमि ॥	१६.	करता हूँ

श्लोकार्थ—अरणि के समान गुणों के द्वारा ढकी हुई ज्ञान रूपी अग्नि वाले तथा गुणों में क्षोभ होने पर बहिर्मुखी मन वाले, कर्मसंन्यास के द्वारा वेद-शास्त्रों से ऊपर उठ जाने वाले स्वयं प्रकाश स्वरूप परमात्मा को मैं नमस्कार करता हूँ ॥

सप्तदशः श्लोकः

मादृक्प्रपन्नपशुपाशविमोक्षणाय मुक्ताय भूरिकरुणाय नमोऽलयाय।
स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीतप्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते ॥१७॥

पदच्छेद— मादृक् प्रपन्न पशुपाश विमोक्षणाय मुक्ताय भूरिकरुणाय नमः अलयाय।
स्व अंशेन सर्व तनुभृत् मनसि प्रतीत प्रत्यक् दृशे भगवते बृहते नमः ते ॥

शब्दार्थ—

मादृक्	२	मेरे जैसे	स्वअंशेन	९.	आप अपने अंश के द्वारा
प्रपन्न	३.	शरणागतों को	सर्व	१०.	समस्त
पशु	१.	पशु के समान	तनुभृत्	११.	प्राणधारियों के
पाशविमोक्षणाय	४.	फांसी से मुक्त करने वाले	मनसिप्रतीत	१२.	हृदय में उपलब्ध होते हैं
मुक्ताय	६.	नित्य मुक्त	प्रत्यक् दृशे	१३.	हृदय में दिखाई देने वाले हैं
भूरिकरुणाय	७.	परम करुणामय	भगवते	१५.	परमात्मा
नमः	८.	आपको नमस्कार है	बृहते	१४.	अनन्त
अलयाय	५.	आलस्य रहित	नमः ते ॥	१६.	नमस्कार है आपको

श्लोकार्थ—पशु के समान मेरे जैसे शरणागतों को फांसी से मुक्त करने वाले, आलस्य रहित, नित्य मुक्त, परमकरुणामय आपको नमस्कार है। आप अपने अंश के द्वारा समस्त प्राणधारियों के हृदय में उपलब्ध होते हैं। हृदय में दिखाई देने वाले अनन्त परमात्मा आपको नमस्कार है ॥

अष्टादशः श्लोकः

आत्मात्मजाप्तगृहवित्तजनेषु सक्तैर्दुष्प्रापणाय गुणसङ्गविवर्जिताय।
मुक्तात्मभिःस्वहृदये परिभाविताय ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय ॥१८॥

पदच्छेद — आत्म आत्मज आप्तगृहवित्तजनेषु सक्तैः दुष्प्रापणाय गुणसङ्ग विवर्जिताय।
मुक्त आत्मभिः स्व हृदये परिभाविताय ज्ञान आत्मने भगवते नमः ईश्वराय ॥

शब्दार्थ—

आत्म	१.	जो लोग शरीर	मुक्त	९.	जीवन्मुक्त
आत्मज	२.	पुत्र	आत्मभिः	१०.	पुरुष
आप्त गृह	३.	गुरु जन, गृह	स्वहृदये	११.	अपने हृदय में
वित्तजनेषु	४.	सम्पत्ति और स्वजनों में	परिभाविताय	१२.	आपका चिन्तन करते हैं
सक्तैः	५.	आसक्त हैं	ज्ञान आत्मने	१३.	ज्ञान स्वरूप
दुष्प्रापणाय	६.	उन्हें आप की प्राप्ति कठिन है	भगवते	१५.	भगवान् को मैं
गुणसङ्ग	७.	आप गुणों की आसक्ति से	नमः	१६.	नमस्कार करता हूँ
विवर्जिताय।	८.	रहित हैं	ईश्वराय ॥	१४.	सर्व ऐश्वर्यपूर्ण

श्लोकार्थ—जो लोग शरीर, पुत्र, गुरु जन, गृह, सम्पत्ति और स्वजनों में आसक्त हैं। उन्हें आपकी प्राप्ति कठिन है। आप गुणों की आसक्ति से रहित हैं। जीवन्मुक्त पुरुष अपने हृदय में आपका चिन्तन करते हैं। ज्ञान स्वरूप, सर्वैश्वर्यपूर्ण भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ ॥

एकोनविंशः श्लोकः

यं धर्मकामार्थविमुक्तिकामा भजन्त इष्टां गतिमाप्नुवन्ति।
किं त्वाशिषो रात्यपि देहमव्ययं करोतु मेऽदभ्रदयो विमोक्षणम् ॥१९॥

पदच्छेद— यम् धर्म कामार्थ विमुक्ति कामाः भजन्ते इष्टाम् गतिम् आप्नुवन्ति।
किम् तु आशिषः राति अपि देहम् अव्ययम् करोतु मे अदभ्रदयः विमोक्षणम् ॥

शब्दार्थ—

यम्	५.	उन्हीं का	किम् तु	१०	इतना ही नहीं
धर्म	१.	धर्म	आशिषः	११.	अन्य सुख (तथा)
कामार्थ	२.	काम अर्थ और	राति	१५.	देते है
विमुक्ति	३.	मोक्ष को	अपि	१४.	भी
कामाः	४.	कामना से मनुष्य	देहम्	१३.	शरीर
भजन्ते	६.	भजन करके	अव्ययम्	१२.	अविनाशी
इष्टाम्	७.	अभीष्ट	करोतु	१९.	करें
गतिम्	८.	वस्तु को	मे	१७.	मेरा
आप्नुवन्ति।	९.	प्राप्त कर लेते हैं	अदभ्रदयः	१६.	पार्षद शरीर देने वाले परमात्मा
			विमोक्षणम् ॥	१८.	उद्धार

श्लोकार्थ—धर्म, काम, अर्थ और मोक्ष की कामना से मनुष्य उन्हीं भगवान् का भजन करके अभीष्ट वस्तु को प्राप्त करते है। इतना ही नहीं अन्य सुख तथा अविनाशी शरीर भी देते हैं। पार्षद शरीर देने वाले परमात्मा मेरा उद्धार करें ॥

विंशः श्लोकः

एकान्तिनो यस्य न कश्चनार्थं वाञ्छन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः।
अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमङ्गलं गायन्त आनन्दसमुद्रमग्नाः ॥२०॥

पदच्छेद— एकान्तिनः यस्य न कश्चन अर्थम् वाञ्छन्ति ये वै भगवत् प्रपन्नाः।
अति अद्भुतम् तत् चरितम् सुमङ्गलम् गायन्तः आनन्द समुद्र मग्नाः ॥

शब्दार्थ—

एकान्तिनः	२.	अनन्य प्रेमी भक्त	अति	११	परम
यस्य	१.	जिनके	अद्भुतम्	१२.	दिव्य
न	९	नहीं करते हैं और	तत्	१०.	उनकी
कश्चन	६.	किसी भी	चरितम्	१३.	लीलाओं का
अर्थम्	७.	वस्तु की	सुमङ्गलम्	१४.	मंगलमय
वाञ्छन्ति	८.	अभिलाषा	गायन्तः	१५	गान करते हुये
ये वै	३.	उन्हीं	आनन्द	१६.	आनन्द के
भगवत्	४.	भगवान् की	समुद्र	१७.	समुद्र में
प्रपन्नाः।	५.	शरण में रहते हुये (उनसे)	मग्नाः ॥	१८.	निमग्न रहते हैं

श्लोकार्थ—जिनके अनन्य प्रेमी भक्त उन्हीं भगवान् की शरण में रहते हुये उनसे किसी भी वस्तु की अभिलाषा नहीं करते हैं और उनकी परम दिव्य लीलाओं का मंगलमय गान करते हुये आनन्द के समुद्र में निमग्न रहते हैं ॥

एकविंशः श्लोकः

तमक्षरं ब्रह्म परं परेशमव्यक्तमाध्यात्मिकयोगगम्यम् ।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममिवातिदूरमनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे ॥२१॥

पदच्छेद— तम् अक्षरम् ब्रह्म परम् परेशम् अव्यक्तम् आध्यात्मिक योगगम्यम् ।
अतीन्द्रियम् सूक्ष्मम् इव अतिदूरम् अनन्तम् आद्यम् परिपूर्णम् ईडे ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	उस	अतीन्द्रियम्	८.	इन्द्रियातीत
अक्षरम्	२.	अविनाशी	सूक्ष्मम्	९.	अत्यन्त सूक्ष्म
ब्रह्म	१७.	ब्रह्म की	इव	१२.	जान पड़ने वाले
परम्	१६.	पर	अति	१०.	अत्यन्त
परेशम्	३.	सर्वशक्तिमान्	दूरम्	११.	दूर
अव्यक्तम्	४.	अव्यक्त	अनन्तम्	१३.	अनन्त
आध्यात्मिक	५.	आध्यात्मिक	आद्यम्	१४.	आदि
योग	६.	योग के द्वारा	परिपूर्णम्	१५.	परिपूर्ण
गम्यम् ।	७.	प्राप्त होने वाले	ईडे ॥	१८.	मैं स्तुति करता हूँ

श्लोकार्थ—उस अविनाशी, सर्वशक्तिमान्, अव्यक्त, आध्यात्मिक, योग के द्वारा प्राप्त होने वाले, इन्द्रियातीत, अत्यन्त सूक्ष्म, अत्यन्त दूर, जान पड़ने वाले, अनन्त आदि परिपूर्ण पर ब्रह्म की मैं स्तुति करता हूँ ॥

द्वाविंशः श्लोकः

यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः ।
नामरूपविभेदेन फल्ग्व्या च कलया कृताः ॥२२॥

पदच्छेद— यस्य ब्रह्म आदयः देवाः वेदाः लोकाः चराचराः ।
नामरूप विभेदेन फल्ग्व्या च कलया कृताः ॥

शब्दार्थ—

यस्य	१.	जिनकी	नाम	४.	नाम
ब्रह्मा	७	ब्रह्मा	रूप	५.	रूप के
आदयः	८.	आदि	विभेदेन	६.	भेद-भाव से युक्त
देवाः	९.	देवता	फल्ग्व्या	२.	अत्यन्त छोटी
वेदाः	१०	वेद	च	११.	और
लोकाः	१३.	लोकों की	कलया	३.	कला से
चराचराः ।	१२.	चराचर	कृताः ॥	१४.	सृष्टि हुई है

श्लोकार्थ—जिनकी अत्यन्त छोटी कला से नाम रूप के भेद-भाव से युक्त ब्रह्मा-आदि देवता, वेद और चराचर लोकों की सृष्टि हुई है ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

यथार्चिषोऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो निर्यान्ति संयान्त्यसकृत् स्वरोचिषः ।
तथा यतोऽयं गुणसंप्रवाहो बुद्धिर्मनः खानि शरीरसर्गाः ॥२३॥

पदच्छेद— यथा अर्चिषः अग्नेः सवितुः गभस्तयः निर्यान्ति संयाति असकृत् स्वरोचिषः ।
तथा यतः अयम् गुण संप्रवाहः बुद्धिः मनः खानि शरीर सर्गाः ॥

शब्दार्थ—

यथा	१.	जैसे	तथा	१०.	उसी प्रकार
अर्चिषः	३	लपटें (और)	यतः	११.	स्वयं प्रकाश परमात्मा से
अग्नेः	२.	अग्नि से	अयम्	१२.	ये
सवितुः	५.	सूर्य से	गुण प्रवाहः	१३.	गुणों के प्रवाह रूप
गभस्तयः	७.	किरणें	बुद्धिः	१४.	बुद्धि
निर्यान्ति	८.	निकलती हैं (और)	मनः	१५.	मन
संयाति	९.	लीन होती हैं	खानि	१६.	इन्द्रिय और
असकृत्	६.	बार-बार	शरीर	१७.	शरीर
स्वरोचिषः ।	४.	प्रकाशमान	सर्गाः ॥	१८.	प्रतीत होते तथा लीन होते हैं

श्लोकार्थ—जैसे अग्नि से लपटें और प्रकाशमान सूर्य से बार-बार किरणें निकलती हैं और लीन होती हैं, उसी प्रकार स्वयं प्रकाश परमात्मा से ये गुणों के प्रवाह रूप शुद्ध, मन, इन्द्रिय और शरीर प्रतीत होते तथा लीन हो जाते हैं ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

स वै न देवासुरमर्त्यतिर्यङ् न स्त्री न षण्ढो न पुमान् न जन्तुः ।
नायं गुणः कर्म न सन्न चासन् निषेधशेषो जयतादशेषः ॥२४॥

पदच्छेद— सः वै न देव असुर मर्त्य तिर्यक् न स्त्री न षण्ढः पुमान् न जन्तुः ।
न अयम् गुणः कर्म न सन् न च असन् निषेधशेषः जयतात् अशेषः ॥

शब्दार्थ—

सः वै न	१.	वे भगवान् न	न अयम्	१०.	न वे
देव	२.	देवता हैं	गुणः	११.	गुण हैं
असुर	३.	न असुर हैं	कर्म	१२.	न कर्म
मर्त्य	४.	वे मनुष्य और	न सन्	१३.	न कार्य हैं
तिर्यक्	५.	पशु-पक्षी भी नहीं हैं	न च असन्	१४.	न कारण ही हैं
न स्त्री	६.	न स्त्री हैं	निषेध	१५.	सब का निषेध हो जाने पर
न षण्ढः	७.	न नपुंसक	शेषः	१६.	जो बच रहता है
न पुमान्	८.	न पुरुष	जयतात्	१८.	मेरे लिये प्रकट हों
न जन्तुः ।	९.	वे कोई प्राणी नहीं हैं	अशेषः ॥	१७.	ऐसे पूर्ण ब्रह्म

श्लोकार्थ—वे न भगवान् न देवता हैं, न असुर हैं वे मनुष्य और पशु-पक्षी भी नहीं हैं। न स्त्री हैं, न नपुंसक, न पुरुष हैं। वे कोई प्राणी नहीं हैं। न वे गुण हैं। न कर्म, न कार्य, न कारण ही हैं। सबका निषेध हो जाने पर जो बच रहता है, ऐसे पूर्ण ब्रह्म मेरे लिये प्रकट हों ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

जिजीविषे नाहमिहामुया किमन्तर्बहिश्चावृतयेभयोन्या ।
इच्छामि कालेन न यस्य विप्लवस्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम् ॥२५॥

पदच्छेद— जिजीविषे न अहम् इह अमुया किम् अन्तः बहिः च आवृतया इभयोन्या ।
इच्छामि कालेन न यस्य विप्लवः तस्य आत्मलोक आवरणस्य मोक्षम् ॥

शब्दार्थ—

जिजीविषे	२.	जीना	इच्छामि	१८.	चाहता हूँ
न	३.	नहीं चाहता	कालेन	१०.	कालक्रम से
अहम्	१.	मैं	न	१३.	नहीं होता है
इह	४.	यहाँ	यस्य	११.	जिससे
अमुया	७.	इस	विप्लवः	१२.	छुटकारा
किम्	९.	मेरा क्या प्रयोजन है	तस्य	१४.	मैं तो उस
अन्तर्बहिः	५.	बाहर और भीतर	आत्मलोक	१५.	आत्म प्रकाश को
च आवृतया	६.	अज्ञानरूप आवरण से ढकी हुई	आवरणस्य	१६.	ढकने वाले अज्ञान को
इभयोन्या ।	८.	हाथी की योनि से	मोक्षम् ॥	१७.	छूटना

श्लोकार्थ—मैं जीना नहीं चाहता । यहाँ बाहर और भीतर अज्ञान रूप आवरण से ढकी हुई इस हाथी की योनि से मेरा क्या प्रयोजन है । कालक्रम से जिससे छुटकारा नहीं होता है, मैं तो उस आत्म प्रकाश को ढकने वाले अज्ञान से छूटना चाहता हूँ ॥

षड्विंशः श्लोकः

सोऽहं विश्वसृजं विश्वमविश्वं विश्ववेदसम् ।
विश्वात्मानमजं ब्रह्म प्रणतोऽस्मि परं पदम् ॥२६॥

पदच्छेद— सः अहम् विश्व सृजम् विश्वम् अविश्वम् विश्ववेदसम् ।
विश्व आत्मानम् अजम् ब्रह्म प्रणतः अस्मि परम् पदम् ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	ऐसा	विश्व	९.	विश्व की
अहम्	२.	मैं	आत्मानम्	१०.	अन्तरात्मा के रूप में
विश्व	३.	विश्व के	अजम्	११.	अजन्मा
सृजम्	४.	रचयिता	ब्रह्म	१४.	ब्रह्म को
विश्वम्	६.	विश्वस्वरूप	प्रणतः	१५.	नमस्कार
अविश्वम्	५.	विश्वरहित होने पर भी	अस्मि	१६.	करता हूँ
विश्व	७.	विश्वरूप	परम्	१२	परम
वेदसम् ।	८.	सामग्री से रहित क्रीडा करने वाले	पदम् ॥	१३.	पद स्वरूप

सप्तविंशः श्लोकः

योगरन्धितकर्माणो हृदि योगविभाविते ।
योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतोऽस्म्यहम् ॥२७॥

पदच्छेद— योग रन्धित कर्माणः हृदियोग विभाविते ।
योगिनः यम् प्रपश्यन्ति योगेशम् तम् नतः अस्मि अहम् ॥

शब्दार्थ—

योग	१.	योग के द्वारा	यम्	८.	जिन
रन्धित	४.	भस्म करके	प्रपश्यन्ति	१०.	साक्षात्कार करते हैं
कर्माणः	३.	कर्मों को	योगेशम्	९.	योगेश्वर भगवान् का
हृदि	७.	हृदय में	तम्	११.	उन परमात्मा को
योग	५.	अपने योग	नतः	१३.	नमस्कार
विभाविते ।	६.	युक्त	अस्मि	१४.	करता हूँ
योगिनः	१.	योगी लोग	अहम् ॥	१२.	मैं

श्लोकार्थ—योगी लोग योग के द्वारा कर्मों को भस्म करके अपने योग युक्त हृदय में जिन योगेश्वर भगवान का साक्षात्कार करते हैं। उन परमात्मा को में नमस्कार करता हूँ ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

नमो नमस्तुभ्यमसह्यवेगशक्तित्रयायाखिलधीगुणाय ।
प्रपन्नपालाय दुरन्तशक्तये कदिन्द्रियाणामनवाप्यवर्त्मने ॥२८॥

पदच्छेद— नमः नमः तुभ्यम् असह्यवेग शक्तित्रयाय अखिल धी गुणाय ।
प्रपन्न पालाय दुरन्त शक्तये कद् इन्द्रियाणाम् अनवाप्य वर्त्मने ॥

शब्दार्थ—

नमः	१५.	नमस्कार है	प्रपन्न	६.	शरणागत
नमः	१६.	नमस्कार है	पालाय	७.	वत्सल
तुभ्यम्	१४.	आपको	दुरन्त	८.	अनन्त
असह्यवेग	३	वेग असह्य है	शक्तये	९.	शक्ति सम्पन्न
शक्ति	२	शक्तियों का	कद्	१०.	कुत्सित
त्रयाय	१.	आपकी तीन	इन्द्रियाणाम्	११.	इन्द्रियों वाले
अखिलधी	४.	समस्त इन्द्रियों और	अनवाप्य	१३.	नहीं पा सकते
गुणाय ।	५.	विषयों के रूप में आप ही हैं	वर्त्मने ॥	१२	आपका मार्ग

श्लोकार्थ—आपकी तीन शक्तियों का वेग असह्य है। समस्त इन्द्रियों और विषयों के रूप में आप ही हैं। शरणागतवत्सल, अनन्त शक्ति सम्पन्न, कुत्सित इन्द्रियों वाले आपका मार्ग नहीं पा सकते। आपको नमस्कार है, नमस्कार है ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहंधिया हतम् ।
तं दुरत्ययमाहात्म्यं भगवन्तमितोऽस्म्यहम् ॥२९॥

पदच्छेद— न अयम् वेद स्वम् आत्मानम् यत् शक्त्या अहम् धिया हतम् ।
तम् दुरत्यय माहात्म्यम् भगवन्तम् इतः अस्मि अहम् ॥

शब्दार्थ—

न	४.	नहीं	हतम् ।	९.	आत्मा का स्वरूप ढक गया है
अहम्	१.	यह जीव	तम्	१०.	आपकी
वेद	५.	जानता है	दुरत्यय	१२.	अपार है
स्वयम्	२.	अपने	माहात्म्यम्	११.	महिमा
आत्मानम्	३.	स्वरूप को	भगवन्तम्	१३.	उन भगवान् की
यत् शक्त्या	६.	आपकी माया शक्ति	इतः	१२.	ऐसे
अहम्	७.	और अपनी	अस्मि	१५.	शरण में हूँ
धिया	८.	बुद्धि से	अहम् ॥	१४.	मैं

श्लोकार्थ—यह जीव अपने स्वरूप को नहीं जानता है। आपकी माया शक्ति और अपनी बुद्धि से आत्मा का स्वरूप ढक गया है। आपकी महिमा अपार है। ऐसे भगवान् की मैं शरण में हूँ ॥

त्रिंशः श्लोकः

एवं गजेन्द्रमुपवर्णितनिर्विशेषं ब्रह्मादयो विविधलिङ्गभिदाभिमानाः ।
नैते यदोपससृपुर्निखिलात्मकत्वात् तत्राखिलामरमयो हरिराविरासीत् ॥३०॥

पदच्छेद— एवम् गजेन्द्रम् उपवर्णितनिर्विशेषम् ब्रह्मा आदयः विविधलिङ्गभिदाअभिमानाः ।
न एते यदा उप ससृपुःखिल आत्मकत्वात् तत्र अखिल अमरमयः हरिः आविः आसीत् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	एते यदा	९.	वे सब देवता जब
गजेन्द्रम्	२.	गजेन्द्र ने	उपससृपुः	११.	आये तो
उपवर्णित	३.	भगवान् की स्तुति की	निखिल	१३.	सब के
निर्विशेषम्	४.	निर्विशेष रूप से	आत्मकत्वात्	१४.	आत्मस्वरूप
ब्रह्मा आदयः	८.	ब्रह्मा आदि	तत्र	१२.	वहाँ
विविध	५.	भिन्न-भिन्न	अखिल	१५.	सर्व
लिङ्ग	६.	नाम रूप को	अमरमयः	१६.	देव स्वरूप
भिदाअभिमानाः	७.	अपना स्वरूप मानने वाले	हरिः	१७.	श्री हरि
न	१०.	नहीं	आविः आसीत् ॥	१८.	प्रकट हो गये

श्लोकार्थ—इस प्रकार गजेन्द्र ने भगवान् की स्तुति की। निर्विशेष रूप से भिन्न भिन्न नाम रूप को अपना स्वरूप मानने वाले वे सब देवता जब नहीं आये तो वहाँ सबके आत्म स्वरूप, सर्व देव स्वरूप श्री हरि प्रकट हो गये ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

तं तद्वदार्त्तमुपलभ्य जगन्निवासः स्तोत्रं निशम्य दिविजैः सह संस्तुवद्भिः ।
छन्दोमयेन गरुडेन समुह्यमानश्चक्रायुधोऽभ्यगमदाशु यतो गजेन्द्रः ॥३१॥

पदच्छेद— तम् तत् वत् आर्त्तम् उपलभ्य जगन्निवासः स्तोत्रम् निशम्य दिविजैः सह संस्तुवद्भिः ।
छन्दोमयेन गरुडेन समुह्यमानः चक्र आयुधः अभ्यगमद् आशु यतः गजेन्द्रः ॥

शब्दार्थ—

तम्	३.	उस गजेन्द्र को	छन्दोमयेन	१०.	वेदमय
तत् वत्	४	इस प्रकार	गरुडेन	११.	गरूड़ पर
आर्त्तम् उपलभ्य	५.	पीडित देखकर	समुह्यमानः	१२.	सवार होकर
जगन्निवासः	१.	विश्व के एक मात्र आधार	चक्र	१३.	चक्र
स्तोत्रम्	६.	स्तुति	आयुधः	१४.	धारी भगवान् हरि
निशम्य	७.	सुनकर	अभ्यगमद्	१६.	आ पहुँचे
दिविजैः	८.	देवताओं के	आशु	१५.	शीघ्रता से वहाँ
सह	९.	साथ	यतः	१७.	जहाँ
संस्तुवद्भिः ।	२.	भगवान् की स्तुति करते हुये	गजेन्द्रः ॥	१८.	गजेन्द्र था

श्लोकार्थ—विश्व के एक मात्र आधार भगवान् को स्तुति करते हुये उस गजेन्द्र को इस प्रकार पीडित देखकर स्तुति सुनकर देवताओं के साथ वेदमय गरुड़ पर सवार होकर चक्रधारी भगवान् हरि शीघ्रता से वहाँ आ पहुँचे, जहाँ गजेन्द्र था ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

सोऽन्तः सरस्युरुबलेन गृहीत आर्तो दृष्ट्वा गरुत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम् ।
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छ्रान्नारायणाखिलगुरो भगवन् नमस्ते ॥३२॥

पदच्छेद— सः अन्तः सरसि उरुबलेन गृहीतः आर्तः दृष्ट्वा गरुत्मति हरिम् खे उपात्तचक्रम् ।
उत्क्षिप्य स अम्बुजकरम् गिरम् आह कृच्छ्रात् नारायण अखिलगुरो भगवन् नमः ते ॥

शब्दार्थ—

सः	३.	उस	चक्रम् ।	७.	चक्र
अन्तः	२.	भीतर	उत्क्षिप्य	१३.	ऊपर उठा कर
सरसि	१.	सरोवर के	स अम्बुजकरम्	११.	सूंड़ से एक कमल
उरुबलेन	४.	अत्यधिक बलवान् ग्राह ने	गिरम् आह	१५.	आर्तवाणी में कहा
गृहीतः	६.	पकड़ रखा था	कृच्छ्रात्	१४.	बड़े कष्ट से
आर्तः	५.	व्याकुल गजेन्द्र को	नारायण	१६.	हे नारायण !
दृष्ट्वा	१०.	देखकर	अखिलगुरो	१७.	हे अखिलगुरो !
गरुत्मति	९.	गरुड़ पर सवार श्रीहरि को	भगवन्	१८.	हे भगवान् !
खे	१२.	आकाश में	नमः	२०.	नमस्कार है
उपात्त	८.	धारण किये हुये	ते ॥	१९.	आपको

श्लोकार्थ—सरोवर के भीतर उस अत्यधिक बलवान् ग्राह ने व्याकुल गजेन्द्र को पकड़ रखा था। चक्रधारण किये हुये गरुड़ पर सवार श्रीहरि को देखकर सूंड से एक कमल आकाश में ऊपर उठा कर बड़े कष्ट से आर्तवाणी में कहा—हे नारायण ! जगद्गुरो ! हे भगवन् ! आपको नमस्कार है ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तं वीक्ष्य पीडितमजः सहसावतीर्य सग्राहमाशु सरसः कृपयोज्जहार ।
ग्राहाद् विपाटितमुखादरिणा गजेन्द्रं संपश्यतां हरिरमूमुचदुस्त्रियाणाम् ॥३३॥

पदच्छेद— **तम् वीक्ष्य पीडितम् अजः सहसा अवतीर्य सग्राहम् आशु सरसः कृपया उज्जहार ।**
ग्राहात् विपाटित मुखात् अरिणा गजेन्द्रम् संपश्यताम् हरिः अमूमुचत् उस्त्रियाणाम् ॥

शब्दार्थ—

तम् वीक्ष्य	३.	उस गजेन्द्र को देखकर	**ग्राहात्**	१४.	ग्राह का
पीडितम्	२.	अत्यन्त पीडित	**विपाटित**	१६.	फाड़ डाल (और)
अजः	१.	अजन्मा प्रभु ने	**मुखात्**	१५.	मुँह से
सहसा	५.	अकस्मात्	**अरिणा**	११.	चक्र से
अवतीर्य	६.	गरुड़ से उतर कर	**गजेन्द्रम्**	१७.	गजेन्द्र को
सग्राहम्	७	ग्राह के साथ ही	**संपश्यताम्**	१३.	सामने ही
आशु सरसः	८.	शीघ्रता पूर्वक सरोवर से	**हरिः**	१०.	श्री हरि ने
कृपया	४.	कृपा करके	**अमूमुचत्**	१८.	छुड़ा लिया
उज्जहार ।	९.	निकाल लाये	**उस्त्रियाणाम् ॥**	१२.	देवताओं के

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
अष्टमे स्कन्धे गजेन्द्रमोक्षणे तृतीयः अध्यायः ॥३॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

चतुर्थः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—तदा देवर्षिगन्धर्वा ब्रह्मेशानपुरोगमाः ।
मुमुचुः कुसुमासारं शंसन्तः कर्म तद्धरेः ॥१॥

पदच्छेद— तदा देवर्षि गन्धर्वाः ब्रह्म ईशान पुरोगमाः ।
मुमुचुः कुसुमासारम् शंसन्तः कर्म तत् हरेः ॥

शब्दार्थ—

तदा	१.	उस समय	मुमुचुः	१२.	वर्षा करने लगे
देवर्षि	५.	ऋषि और	कुसुमासारम्	११.	फूलों की
गन्धर्वाः	६.	गन्धर्व	शंसन्तः	१०.	प्रशंसा करने लगे तथा
ब्रह्म	२.	ब्रह्मा	कर्म	९.	कर्म की
ईशान	३.	शङ्कर आदि	तत्	८.	इस
पुरोगमाः ।	४.	देवता	हरेः ॥	७.	श्री हरि भगवान् के

श्लोकार्थ—उस समय ब्रह्मा शङ्कर आदि देवता, ऋषि और गन्धर्व श्रीहरि भगवान् के इस कर्म की प्रशंसा करने लगे तथा पुष्पों की वर्षा करने लगे ॥

द्वितीयः श्लोकः

नेदुर्दुन्दुभयो दिव्या गन्धर्वा ननृतुर्जगुः ।
ऋषयश्चारणाः सिद्धास्तुष्टुवुः पुरुषोत्तमम् ॥२॥

पदच्छेद— नेदुः दुन्दुभयः दिव्याः गन्धर्वाः ननृतुः जगुः ।
ऋषयः चारणाः सिद्धाः तुष्टुवुः पुरुषोत्तमम् ॥

शब्दार्थ—

नेदुः	३.	बजने लगीं	ऋषयः	६.	ऋषि
दुन्दुभयः	२.	दुन्दुभियाँ	चारणाः	७.	चारण और
दिव्याः	१.	स्वर्ग में	सिद्धाः	८.	सिद्धगण
गन्धर्वाः	४.	गन्धर्व	तुष्टुवुः	१०	स्तुति करने लगे
ननृतुः जगुः ।	५.	नाचने गाने लगे	पुरुषोत्तमम् ॥	९.	भगवान् पुरुषोत्तम की

श्लोकार्थ—स्वर्ग में दुन्दुभियाँ बजने लगीं । गन्धर्व नाचने गाने लगे । ऋषि, चारण और सिद्धगण भगवान् पुरुषोत्तम की स्तुति करने लगे ॥

तृतीयः श्लोकः

योऽसौ ग्राहः स वै सद्यः परमाश्चर्यरूपधृक्।
मुक्तो देवलशापेन हूहूर्गन्धर्वसत्तमः ॥३॥

पदच्छेद— यः असौ ग्राहः स वै सद्यः परम आश्चर्य रूपधृक्।
मुक्तः देवल शापेन हूहूः गन्धर्व सत्तमः ॥

शब्दार्थ—

यः असौ	१.	जो वह	**मुक्तः**	१२.	मुक्त हो गया
ग्राहः	२.	ग्राह था	**देवल**	१०.	देवल के
सः वै	३.	वह	**शापेन**	११.	शाप
सद्यः	४.	तत्काल	**हूहूः**	७.	हूहू नामका वह
परमाश्चर्य	५.	परम आश्चर्यमय दिव्य	**गन्धर्व**	९.	गन्धर्व बनकर
रूपधृक्।	६.	रूपधारण करके	**सत्तमः ॥**	८.	श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—जो वह ग्राह था, वह तत्काल परम आश्चर्यमय दिव्य रूप धारण करके हूहू नाम का श्रेष्ठ गन्धर्व बनकर देवल के शाप से मुक्त हो गया ॥

चतुर्थः श्लोकः

प्रणम्य शिरसाधीशमुत्तमश्लोकमव्ययम्।
अगायत यशोधाम कीर्तन्यगुणसत्कथम् ॥४॥

पदच्छेद— प्रणम्य शिरसा अधीशम् उत्तम श्लोकम् अव्ययम्।
अगायत यशोधाम कीर्तन्य गुण सत् कथम् ॥

शब्दार्थ—

प्रणम्य	११.	प्रणाम करके	**अगायत**	१२.	उन्हीं परमात्मा के यश का गान किया
शिरसा	१०.	सिर से	**यशोधाम**	४.	यश के भाण्डार
अधीशम्	९.	सर्वेश्वर भगवान् को	**कीर्तन्य**	५.	कीर्तन करने योग्य
उत्तम	१.	पवित्र	**गुण**	६.	गुणों तथा
श्लोकम्	२.	कीर्ति	**सत्**	७.	सुन्दर
अव्ययम्।	३.	अविनाशी	**कथम् ॥**	८.	कथाओं वाले

श्लोकार्थ—पवित्र कीर्ति, अविनाशी, यश के भाण्डार, कीर्तन करने योग्य गुणों तथा कथाओं वाले सर्वेश्वर भगवान् को सिर से प्रणाम करके उन्हीं परमात्मा के यश का गान किया ॥

पञ्चमः श्लोकः

सोऽनुकम्पित ईशेन परिक्रम्य प्रणम्य तम् ।
लोकस्य पश्यतो लोकं स्वमगान्मुक्तकिल्बिषः ॥५॥

पदच्छेद— सः अनुकम्पित ईशेन परिक्रम्य प्रणम्य तम् ।
लोकस्य पश्यतः लोकम् स्वम् अगात् मुक्त किल्बिषः ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	उसने	लोकस्य	७.	लोगों के
अनुकम्पित	३.	कृपा प्राप्त करके	पश्यतः	८.	देखते-देखते
ईशेन	२.	भगवान् की	लोकम्	१२.	लोक की
परिक्रम्य	५.	परिक्रमा (तथा)	स्वम्	११.	अपने
प्रणम्य	६.	प्रणाम करके	अगात्	१३.	यात्रा की
तम् ।	४.	उनकी	मुक्त	१०.	रहित होकर
			किल्बिषः ॥	९	पाप

श्लोकार्थ— उसने भगवान् की कृपा प्राप्त करके उनकी परिक्रमा तथा प्रणाम करके लोगों के देखते देखते पाप रहित होकर अपने लोक की यात्रा की ॥

षष्ठः श्लोकः

गजेन्द्रो भगवत्स्पर्शाद् विमुक्तोऽज्ञानबन्धनात् ।
प्राप्तो भगवतो रूपं पीतवासाश्चतुर्भुजः ॥६॥

पदच्छेद— गजेन्द्रः भगवत् स्पर्शात् विमुक्तः अज्ञान बन्धनात् ।
प्राप्तः भगवतः रूपम् पीतवासाः चतुर्भुजः ॥

शब्दार्थ—

गजेन्द्रः	१.	गजेन्द्र भी	प्राप्तः	११.	प्राप्त हो गया
भगवत्	२.	भगवान् के	भगवतः	७.	उसे भगवान् का
स्पर्शात्	३.	स्पर्श से	रूपम्	१०.	रूप
विमुक्तः	६.	मुक्त हो गया	पीतवासाः	८.	पीताम्बरधारी
अज्ञान	४.	अज्ञान के	चतुर्भुजः ॥	९.	चतुर्भुज
बन्धनात् ।	५.	बन्धन से			

श्लोकार्थ— गजेन्द्र भी भगवान् के स्पर्श से अज्ञान के बन्धन से मुक्त हो गया । उसे भगवान् का पीताम्बरधारी चतुर्भुज रूप प्राप्त हो गया ॥

सप्तमः श्लोकः

स वै पूर्वमभूद् राजा पाण्ड्यो द्रविडसत्तमः ।
इन्द्रद्युम्न इति ख्यातो विष्णुव्रतपरायणः ॥७॥

पदच्छेद— सः वै पूर्वम् अभूत् राजा पाण्ड्यः द्रविडसत्तमः ।
इन्द्रद्युम्नः इति ख्यातः विष्णु व्रत परायणः ॥

शब्दार्थ—

सः वै	१. वह गजेन्द्र भी	इन्द्रद्युम्नः	८. जो इन्द्रद्युम्न
पूर्वम्	२. पूर्वजन्म में	इति	९. इस
अभूत्	७. था	ख्यातः	१०. नाम से प्रसिद्ध था
राजा	६. राजा	विष्णु	११. वह श्रीहरि का
पाण्ड्यः	४. पाण्ड्यवंशी	व्रत	१२. उपासक और
द्रविड	३. द्रविड देश का	परायणः ॥	१३. भक्त था
सत्तमः ।	५. श्रेष्ठ		

श्लोकार्थ—वह गजेन्द्र भी पूर्वजन्म में द्रविड देश का पाण्ड्यवंशी श्रेष्ठ राजा था, जो इन्द्रद्युम्न इस नाम से प्रसिद्ध था। वह श्रीहरि का उपासक और भक्त था ॥

अष्टमः श्लोकः

स एकदाऽऽराधनकाल आत्मवान् गृहीतमौनव्रत ईश्वरं हरिम् ।
जटाधरस्तापस आप्लुतोऽच्युतं समर्चयामास कुलाचलाश्रमः ॥८॥

पदच्छेद— सः एकदा आराधनकाले आत्मवान् गृहीतः मौनव्रत ईश्वरम् हरिम् ।
जटाधरः तापस आप्लुतः अच्युतम् समर्चयामास कुलाचल आश्रमः ॥

शब्दार्थ—

सः	१. वे	हरिम् ।	१. श्री हरि की
एकदा	२. एक दिन	जटाधरः	१५. जटा धारण किये हुये
आराधन	३. पूजा के	तापसः	९. तपस्वी वेश
काले	४. समय	आप्लुतः	१०. बनाये हुये
आत्मवान्	७. मन को एकाग्र करके	अच्युतम्	१३. परमात्मा
गृहीत	६. धारण किये	समर्चयामास	१६. आराधना कर रहे थे
मौनव्रतः	५. मौनव्रत	कुलाचल	११. मलय पर्वत पर स्थित
ईश्वरम्	१४. भगवान्	आश्रमः ॥	१२. एक आश्रम में

श्लोकार्थ—वे एक दिन पूजा के समय मौनव्रत धारण किये, मन को एकाग्र करके, जटाधारण किये हुये, तपस्वी वेश बनाये हुये, मलय पर्वत पर स्थित एक आश्रम में परमात्मा भगवान् श्रीहरि की आराधना कर रहे थे ॥

नवमः श्लोकः

यदृच्छया तत्र महायशा मुनिः समागमच्छिष्यगणैः परिश्रितः ।
तं वीक्ष्य तूष्णीमकृतार्हणादिकं रहस्युपासीनमृषिश्चुकोप ह ॥९॥

पदच्छेद— यदृच्छया तत्र महायशाः मुनिः समागमत् शिष्यगणैः परिश्रितः ।
तम् वीक्ष्य तूष्णीम् अकृत अर्हण आदिकम् रहसि उपासीनम् ऋषिः चुकोप ह ॥

शब्दार्थ

यदृच्छया	१.	दैवयोग से	वीक्ष्य	१५.	देखकर
तत्र	६.	वहाँ	तूष्णीम्	८.	मौन व्रत धारण किये
महायशाः	४.	परम यशस्वी	अकृत	११.	त्याग कर
मुनिः	५.	अगस्त्य मुनि	अर्हण	९.	अतिथि सेवा
समागमत्	७.	आ पहुँचे	आदिकम्	१०.	इत्यादि गृहस्थोचित धर्मों को
शिष्यगणैः	२.	शिष्य मण्डली से	रहसि	१२.	एकान्त में
परिश्रितः ।	३.	घिरे हुये	उपासीनम्	१३.	बैठे हुये
तम्	१४.	उसे	ऋषिः चुकोप ह ॥	१६.	वे ऋषि क्रोधित हो गये

श्लोकार्थ—दैव योग से शिष्य मण्डली से घिरे हुये परम यशस्वी अगस्त्य मुनि वहाँ आ पहुँचे । मौनव्रत धारण किये अतिथि सेवा इत्यादि गृहस्थोचित धर्मों को त्यागकर एकान्त में बैठे हुये उसे देखकर वे ऋषि क्रोधित हो गये ॥

दशमः श्लोकः

तस्मा इमं शापमदादसाधुरयं दुरात्माकृतबुद्धिरद्य ।
विप्रावमन्ता विशतां तमोऽन्धं यथा गजः स्तब्धमतिः स एव ॥१०॥

पदच्छेद— तस्मै इमम् शापम् अदात् असाधुः अयम् दुरात्मा अकृत बुद्धिः अद्य ।
विप्र अवमन्ता विशताम् तमः अन्धम् यथा गजः स्तब्धमतिः सः एव ॥

शब्दार्थ—

तस्मै	१.	उस राजा को	विप्र	८.	ब्राह्मणों का
इमम्	२.	यह	अवमन्ता	९.	अपमान करने वाला
शापम्	३	शाप	विशताम्	१८.	प्राप्त हो
अदात्	४.	दिया	तमः	१७.	अज्ञानमयी योनि
असाधुः	१०.	दुष्ट	अन्धम्	१६.	घोर
अयम् दुरात्मा	५.	यह दुष्टात्मा	यथा	१३.	समान ये
अकृत	६.	अशिक्षित	गजः	१२.	हाथी के
बुद्धिः	७.	बुद्धिवाला	स्तब्ध मतिः ।	१४.	जड़बुद्धि है अतः इसे
अद्य ।	११.	आज	सः एव ॥	१५.	वही हाथी की

श्लोकार्थ—उस राजा को यह शाप दिया । यह दुष्टात्मा, अशिक्षित बुद्धि वाला, ब्राह्मणों का अपमान करने वाला, दुष्ट आज हाथी के समान जड़बुद्धि है । अतः इसे वही हाथी की घोर अज्ञानमयी योनि प्राप्त हो ॥

एकादशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं शप्त्वा गतोऽगस्त्यो भगवान् नृप सानुगः ।
इन्द्रद्युम्नोऽपि राजर्षिर्दिष्टं तदुपधारयन् ॥११॥

पदच्छेद— एवम् शप्त्वा गतः अगस्त्यः भगवान् नृप स अनुगः ।
इन्द्रद्युम्नः अपि राजर्षिः दिष्टम् तत् उपधारयन् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	स अनुगः ।	७.	शिष्य मण्डली सहित
शप्त्वा	५.	शाप देकर	इन्द्रद्युम्नः	१०.	इन्द्रद्युम्न ने
गतः	८.	चले गये	अपि	११.	भी
अगस्त्यः	३.	अगस्त्य ऋषि	राजर्षिः	९.	राजर्षि
भगवान्	२.	भगवान्	दिष्टम्	१३.	प्रारब्ध मानकर
नृप	१.	राजन्	तत्	१२.	उस शाप को
			उपधारयन् ॥	१४.	स्वीकार कर लिया

श्लोकार्थ—राजन् ! इस प्रकार भगवान् अगस्त्य ऋषि शाप देकर शिष्य मण्डली सहित चले गये । राजर्षि इन्द्रद्युम्न ने भी उस शाप को प्रारब्ध मानकर स्वीकार कर लिया ॥

द्वादशः श्लोकः

आपन्नः कौञ्जरीं योनिमात्मस्मृतिविनाशिनीम् ।
हर्यर्चनानुभावेन यद्गजत्वेऽप्यनुस्मृतिः ॥१२॥

पदच्छेद— आपन्नः कौञ्जरीम् योनिम् आत्मस्मृति विनाशिनीम् ।
हरि अर्चन अनुभावेन यत् गजत्वे अपि अनुस्मृतिः ॥

शब्दार्थ—

आपन्नः	५.	प्राप्त होने पर भी	अर्चनः	७.	आराधना के
कौञ्जरीम्	३.	हाथी की	अनुभावेन	८.	प्रभाव के
योनिम्	४.	योनि	यत्	९.	कारण
आत्मस्मृति	१.	आत्मा की स्मृति	गजत्वे	१०.	हाथी होने पर
विनाशिनीम् ।	२	भुला देने वाली	अपि	११.	भी
हरि	६.	भगवान् की	अनुस्मृतिः ॥	१२.	भगवान् की स्मृति हो ही गई

श्लोकार्थ—आत्मा की स्मृति भुला देने वाली हाथी की योनि प्राप्त होने पर भी भगवान् की आराधना के प्रभाव के कारण हाथी होने पर भी भगवान् की स्मृति हो ही गई ॥

त्रयोदशः श्लोकः

एवं विमोच्य गजयूथपमब्जनाभस्तेनापि पार्षदगतिं गमितेन युक्तः ।
गन्धर्वसिद्धविबुधैरुपगीयमानकर्माद्भुतं स्वभवनं गरुडासनोऽगात् ॥१३॥

पदच्छेद— एवम् विमोक्ष्य गजयूथपम् अब्जनाभः तेन अपि पार्षदगतिम् गमितेन युक्तः ।
गन्धर्वसिद्ध विबुधैः उपगीयमानकर्म अद्भुतम् स्वभवनम् गरुडासनः अगात् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	गन्धर्वसिद्ध	७.	गन्धर्व, सिद्ध
विमोक्ष्य	४.	मुक्त करके	विबुधैः	८.	देवताओं द्वारा
गजयूथपम्	३.	गजेन्द्र को	उपगीयमान	११.	कीर्तिगान किये जाते हुये
अब्जनाभः	२.	भगवान् श्रीहरि ने	कर्म	१०.	लीलाओं से युक्त
तेन अपि	५.	उसे भी	अद्भुतम्	९.	अद्भुत
पार्षद गतिम्	६.	अपना पार्षद बनाकर	स्वभवनम्	१५.	अपने धाम को
गमितेन	१२.	पार्षद रूप गजेन्द्र को	गरुडासनः	१४.	गरुड़ पर सवार होकर
युक्तः ।	१३.	साथ लेकर	अगात् ॥	१६.	चले गये

श्लोकार्थ—इस प्रकार भगवान् श्री हरि ने गजेन्द्र को मुक्त करके उसे भी अपना पार्षद बनाकर गन्धर्व, सिद्ध, देवताओं द्वारा अद्भुत लीलाओं से युक्त कीर्तिगान किये जाते हुये पार्षद रूप गजेन्द्र को साथ लेकर गरुड़ पर सवार होकर अपने धाम को चले गये ॥

चतुर्दशः श्लोकः

एतन्महाराज तवेरितो मया कृष्णानुभावो गजराजमोक्षणम् ।
स्वर्ग्यं यशस्यं कलिकल्मषापहं दुःस्वप्ननाशं कुरुवर्य शृण्वताम् ॥१४॥

पदच्छेद— एतत् महाराज तव ईरितः मया कृष्ण अनुभावः गजराज मोक्षणम् ।
स्वर्ग्यम् यशस्यम् कलिकल्मष अपहम् दुःस्वप्न नाशम् कुरुवर्य शृण्वताम् ॥

शब्दार्थ—

एतत्	५.	इस प्रकार	स्वर्ग्यम्	६.	स्वर्ग देने वाली
महाराज	२.	हे परीक्षित् !	यशस्यम्	७.	यश दायक
तव	१७.	तुम्हें	कलि	८.	कलि
ईरितः	१८.	सुना दी	कल्मष	९.	मल
मया	३.	मैंने	अपहम्	१०.	नाशक (और)
कृष्ण	१३.	श्रीकृष्ण की	दुःस्वप्न	११.	दुःस्वप्न को
अनुभावः	१४.	महिमा और	नाशम्	१२.	मिटाने वाली
गजराज	१५.	गजराज के	कुरुवर्य	१.	कुरुवंशशिरोमणि
मोक्षणम् ।	१६.	उद्धार की कथा	शृण्वताम् ॥	४.	सुनने के इच्छुकों को

श्लोकार्थ—कुरुवंश शिरोमणि हे परीक्षित् ! मैंने सुनने के इच्छुकों को इस प्रकार स्वर्ग देने वाली यशदायक, कलिमल नाशक और दुःस्वप्न को मिटाने वाली श्री कृष्ण की महिमा और गजराज के उद्धार की कथा तुम्हें सुना दी ॥

पञ्चदशः श्लोकः

यथानुकीर्तयन्त्येतच्छ्रेयस्कामा द्विजातयः ।
शुचयः प्रातरुत्थाय दुःस्वप्नाद्युपशान्तये ॥१५॥

पदच्छेद— यथा अनुकीर्तयन्ति एतत् श्रेयस्कामाः द्विजातयः ।
शुचयः प्रातः उत्थाय दुःस्वप्न आदि उपशान्तये ॥

शब्दार्थ—

यथा	१.	इसी से	शुचयः	९.	पवित्र होकर
अनुकीर्तयन्ति	११.	पाठ करते हैं	प्रातः	७.	प्रातः
एतत्	१०.	इसका	उत्थाय	८.	उठ कर
श्रेयस्कामाः	२.	कल्याणकामी	दुःस्वप्न	४.	दुःस्वप्न
द्विजातयः ।	३.	द्विजगण	आदि	५.	आदि की
			उपशान्तये ॥	६.	शान्ति के लिये

श्लोकार्थ—इसी से कल्याणकामी द्विजगण दुःस्वप्न आदि की शान्ति के लिये प्रातः उठकर पवित्र होकर इसका पाठ करते हैं ॥

षोडशः श्लोकः

इदमाह हरिः प्रीतो गजेन्द्रं कुरुसत्तम ।
शृण्वतां सर्वभूतानां सर्वभूतमयो विभुः ॥१६॥

पदच्छेद— इदम् आह हरिः प्रीतः गजेन्द्रम् कुरुसत्तम ।
शृण्वताम् सर्वभूतानाम् सर्व भूतमयः विभुः ॥

शब्दार्थ—

इदम्	११.	यह बात	शृण्वताम्	१०.	सुनते हुए ही
आह	१२.	कही	सर्वभूतानाम्	९.	सब लोगों के
हरिः	८.	श्रीहरि भगवान् ने	सर्व	४.	सर्व
प्रीतः	३.	प्रसन्न होकर	भूत	५.	भूत
गजेन्द्रम्	२.	गजेन्द्र से	मयः	६.	स्वरूप
कुरुसत्तम ।	१.	हे परीक्षित् !	विभुः ॥	७.	सर्व व्यापक

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! गजेन्द्र से प्रसन्न होकर सर्व भूत स्वरूप सर्व व्यापक श्रीहरि भगवान् ने सब लोगों के सुनते हुए ही यह बात कही ॥

सप्तदशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—ये मां त्वां च सरश्चेदं गिरिकन्दरकाननम् ।
वेत्रकीचकवेणूनां गुल्मानि सुरपादपान् ॥१७॥

पदच्छेद— ये माम् त्वाम् च सरः च इदम् गिरिकन्दर काननम् ।
वेत्र कीचक वेणूनाम् गुल्मानि सुर पादपान् ॥

शब्दार्थ—

ये माम्	१. जो लोग मेरा	वेत्र	७. बेंत
त्वाम् च	२. तेरा और	कीचक	८. कीचक
सरः	३. इस सरोवर	वेणूनाम्	९. बांस के
च	४. एवम्	गुल्मानि	१०. झुरमुट (तथा)
इदम् गिरि	५. इस पर्वत	सुर	११. दिव्य
कन्दरकाननम् ।	६. कन्दरा वन	पादपान् ॥	१२. वृक्षों का (स्मरण करते हैं)

श्लोकार्थ—जो लोग मेरा, तेरा और इस सरोवर एवम् इस पर्वत, कन्दरा, वन, बेंत, कीचक, बांस के झुरमुट तथा दिव्य वृक्षों का स्मरण करते हैं ॥

अष्टादशः श्लोकः

शृङ्गाणीमानि धिष्ण्यानि ब्रह्मणो मे शिवस्य च ।
क्षीरोदं मे प्रियं धाम श्वेतद्वीपं च भास्वरम् ॥१८॥

पदच्छेद— शृङ्गाणि इमानि धिष्ण्यानि ब्रह्मणः मे शिवस्य च ।
क्षीरोदम् मे प्रियम् धाम श्वेतद्वीपम् च भास्वरम् ॥

शब्दार्थ—

शृङ्गाणि	२. पर्वत शिखरों	क्षीरोदम्	११. क्षीरसागर
इमानि	१. इन	मे	८. मेरे
धिष्ण्यानि	७. निवास स्थानों	प्रियम्	९. प्यारे
ब्रह्मणः	४. ब्रह्मा जी के	धाम्	१०. धाम
मे	३. मेरे	श्वेतद्वीपम्	१४. श्वेतद्वीप का (स्मरण) करते हैं
शिवस्य	६. शिव जी के	च	१२. और
च ।	५. और	भास्वरम् ॥	१३. प्रकाशमान

श्लोकार्थ—इन पर्वतशिखरों मेरे, ब्रह्मा जी के और शिव जी के निवासस्थानों मेरे प्यारे धाम क्षीरसागर और प्रकाशमान श्वेतद्वीप का स्मरण करते हैं ॥

एकोनविंशः श्लोकः

श्रीवत्सं कौस्तुभं मालां गदां कौमोदकीं मम ।
सुदर्शनं पाञ्चजन्यं सुपर्णं पतगेश्वरम् । १९॥

पदच्छेद— श्रीवत्सम् कौस्तुभम् मालाम् गदाम् कौमोदकीम् मम ।
सुदर्शनम् पाञ्चजन्यम् सुपर्णम् पतगेश्वरम् ॥

श्रीवत्सम्	१. श्रीवत्स	मम् ।	४. मेरी
कौस्तुभम्	२. कौस्तुभमणि	सुदर्शनम्	७. सुदर्शन चक्र
मालाम्	३. वनमाला	पाञ्चजन्यम्	८. पाञ्चजन्य शङ्ख
गदाम्	६. गदा	सुपर्णम्	९. सुन्दर पंखवाले
कौमोदकीम्	५. कौमोदकी	पतगेश्वरम् ॥	१०. पक्षिराज गरुड़ का स्मरण करते हैं

श्लोकार्थ—श्रीवत्सकौस्तुभमणि, वनमाला, मेरी कौमोदकी गदा, सुदर्शन चक्र, पाञ्चजन्य शङ्ख, सुन्दर पंखवाले पक्षिराज गरुड़ का स्मरण करते हैं ॥

शब्दार्थ—

विंशः श्लोकः

शेषं च मत्कलां सूक्ष्मां श्रियं देवीं मदाश्रयाम् ।
ब्रह्माणं नारदमृषिं भवं प्रह्लादमेव च ॥२०॥

पदच्छेद— शेषम् च मत् कलाम् सूक्ष्माम् श्रियम् देवीं मत् आश्रमम् ।
ब्रह्माणम् नारदम् ऋषिम् भवम् प्रह्लादम् एव च ॥

शब्दार्थ—

शेषम्	४. शेष जी	ब्रह्माणम्	८. ब्रह्मा जी
च मत्	१. और मेरे	नारदम्	१०. नारद
कलाम्	३. कला स्वरूप	ऋषिम्	९. देवर्षि
सूक्ष्माम्	२. सूक्ष्म	भवम्	११. शंकर जी
श्रियम्देवीम्	७. लक्ष्मीदेवी	प्रह्लादम्	१३. भक्तराज प्रह्लाद का
मत्	५. मेरे	एव	१४. ही (स्मरण करते हैं)
आश्रमम् ।	६. आश्रम में रहनेवाली	च ॥	१२. और

श्लोकार्थ—और मेरे सूक्ष्म कला स्वरूप शेष जी मेरे आश्रम में रहनेवाली लक्ष्मी देवी, ब्रह्मा जी, देवर्षि नारद, शंकर जी और महाराज प्रहलाद का ही स्मरण करते हैं ॥

एकविंशः श्लोकः

मत्स्यकूर्मवराहाद्यैरवतारैः कृतानि मे ।
कर्माण्यनन्तपुण्यानि सूर्यं सोमं हुताशनम् ॥२१॥

पदच्छेद— मत्स्य कूर्म वराह आद्यैः अवतारैः कृतानि मे ।
कर्माणि अनन्त पुण्यानि सूर्यम् सोमम् हुताशनम् ॥

शब्दार्थ—

मत्स्य	१.	मत्स्य	कर्माणि	१०.	चरित्रों का (तथा)
कूर्म	२.	कच्छप	अनन्त	८.	अनन्त
वराह	३.	वराह	पुण्यानि	९.	पुण्यमय
आद्यैः	४.	आदि	सूर्यम्	११.	सूर्य
अवतारैः	५.	अवतारों में	सोमम्	१२.	चन्द्रमा और
कृतानि मे ।	६.	किये हुये मेरे	हुताशनम् ॥	१३.	अग्नि का (स्मरण करते हैं)

श्लोकार्थ—मत्स्य, कच्छप, वराह आदि अवतारों में किये हुये मेरे अनन्त पुण्यमय चरित्रों का तथा सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि का स्मरण करते हैं ॥

द्वाविंशः श्लोकः

प्रणवं सत्यमव्यक्तं गोविप्रान् धर्ममव्ययम् ।
दाक्षायणीर्धर्मपत्नीः सोमकश्यपयोरपि ॥२२॥

पदच्छेद— प्रणवम् सत्यम् अव्यक्तम् गोविप्रान् धर्मम् अव्ययम् ।
दाक्षायणीः धर्मपत्नीः सोम कश्यपयोः अपि ॥

शब्दार्थ—

प्रणवम्	१.	ॐकार	दाक्षायणीः	८.	दक्ष कन्यायें
सत्यम्	२.	सत्य	धर्मपत्नीः	७.	धर्म की पत्नियों
अव्यक्तम्	३.	मूल प्रकृति	सोम	९.	सोम और
गोविप्रान्	४.	गो ब्राह्मण	कश्यपयोः	१०.	कश्यप का
धर्मम्	६.	सनातन धर्म	अपि ॥	११.	भी (स्मरण करते हैं)
अव्ययम् ।	५.	अविनाशी			

श्लोकार्थ—ॐकार, सत्य, मूल प्रकृति, गो, ब्राह्मण, सनातनधर्म की पत्नियों, दक्ष-कन्यायों सोम और कश्यप का भी स्मरण करते हैं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

गङ्गां सरस्वतीं नन्दां कालिन्दीं सितवारणम् ।
ध्रुवं ब्रह्मऋषीन्सप्त पुण्यश्लोकांश्च मानवान् ॥२३॥

पदच्छेद— गङ्गां सरस्वतीम् नन्दाम् कालिन्दीम् सितवारणम् ।
ध्रुवम् ब्रह्म ऋषीन् सप्त पुण्यश्लोकान् च मानवान् ॥

शब्दार्थ—

गङ्गाम्	१. गङ्गा	ब्रह्म	८. ब्रह्म
सरस्वतीम्	२. सरस्वती	ऋषीन्	९. ऋषि
नन्दाम्	३. अलकनन्दा	सप्त	७. सात
कालिन्दीम्	४. यमुना	पुण्यश्लोकम्	११. पवित्र कीर्ति
सितवारणम् ।	५. ऐरावत हाथी	च	१०. और
ध्रुवम्	६. ध्रुव	मानवान् ॥	१२. महापुरुषों का (स्मरण करते हैं)

श्लोकार्थ—गङ्गा, सरस्वती, अलकनन्दा, यमुना, ऐरावत हाथी, ध्रुव, सात ब्रह्मर्षि और पवित्रकीर्ति महापुरुषों का स्मरण करते हैं ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

उत्थायापररात्रान्ते प्रयताः सुसमाहिताः ।
स्मरन्ति मम रूपाणि मुच्यन्ते ह्येनसोऽखिलात् ॥२४॥

पदच्छेद— उत्थाय अपर रात्रान्ते प्रयताः सुसमाहिताः ।
स्मरन्ति मम रूपाणि मुच्यन्ते हि एनसः अखिलात् ॥

शब्दार्थ—

उत्थाय	२. उठकर	मम	५. मेरे
अपररात्रान्ते	१. जो लोग रात के पिछले पहर में	रूपाणि	६. इन रूपों का
प्रयताः	३. पवित्र होकर	मुच्यन्ते	१०. छूट जाते हैं
सुसमाहिताः ।	४. एकाग्र चित्त से	हि एनसः	९. पापों से
स्मरन्ति	७. स्मरण करते हैं	अखिलात् ॥	८. वे समस्त

श्लोकार्थ—जो लोग रात के पिछले पहर में उठ कर पवित्र होकर एकाग्रचित्त से मेरे इन रूपों का स्मरण करते हैं, वे समस्त पापों से छूट जाते हैं ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

ये मां स्तुवन्त्यनेनाङ्ग प्रतिबुध्य निशात्यये ।
तेषां प्राणात्यये चाहं ददामि विमलां मतिम् ॥२५॥

पदच्छेद— ये माम् स्तुवन्ति अनेन अङ्ग प्रतिबुध्य निशा अत्यये ।
तेषाम् प्राण अत्यये च अहम् ददामि विमलाम् मतिम् ॥

शब्दार्थ—

ये	२.	जो लोग	तेषाम्	८.	उनके
माम्	६.	मेरी	प्राण	९.	प्राण
स्तुवन्ति	७.	स्तुति करेंगे	अत्यये	१०.	त्याग के समय
अनेन	५.	इससे	च अहम्	११.	मैं
अङ्ग	१.	सौम्य	ददामि	१४.	दान करूंगा
प्रतिबुध्य	४.	जगकर	विमलाम्	१२.	निर्मल
निशा अत्यये ।	३.	रात्रि की समाप्ति पर	मतिम् ॥	१३.	बुद्धि

श्लोकार्थ—सौम्य ! जो लोग रात्रि की समाप्ति पर जगकर इस से मेरी स्तुति करेंगे, उनके प्राण त्याग के समय मैं निर्मल बुद्धि दान करूंगा ।

षड्विंशः श्लोकः

इत्यादिश्य हृषीकेशः प्रध्माय जलजोत्तमम् ।
हर्षयन्विबुधानीकमारुरोह खगाधिपम् ॥२६॥

पदच्छेद— इति आदिश्य हृषीकेशः प्रध्माय जलज उत्तमम् ।
हर्षयन् विबुधानीकम् आरुरोह खग अधिपम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	ऐसा	हर्षयन्	९.	हर्षित करते हुये
आदिश्य	२.	कहकर	विबुध	७.	वे देव
हृषीकेशः	३.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	अनीकम्	८.	समूह को
प्रध्माय	६.	बजाया	आरुरोह	१२.	सवार हो गये
जलज	५.	शङ्ख	खग	१०.	पक्षियों के
उत्तमम् ।	४.	अत्यन्त श्रेष्ठ	अधिपम् ॥	११.	राजा गरुड़ पर

श्लोकार्थ—ऐसा कहकर भगवान् श्री कृष्ण ने अत्यन्त श्रेष्ठ शङ्ख बजाया । वे देव समूह को हर्षित करते हुये पक्षियों के राजा गरुड़ पर सवार हो गये ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमे स्कन्धे
गजेन्द्रमोक्षणं नाम चतुर्थः अध्यायः ॥४॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

पञ्चमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— राजन्नुदितमेतत् ते हरेः कर्माघनाशनम् ।
गजेन्द्रमोक्षणं पुण्यं रैवतं त्वन्तरं शृणु ॥१॥

पदच्छेद— राजन् उदितम् एतत् ते हरेः कर्म अघनाशनम् ।
गजेन्द्रम मोक्षणम् पुण्यम् रैवतम् तु अन्तरम् शृणु ॥

शब्दार्थ—

राजन्	१.	हे परीक्षित् !	नाशनम् ।	४.	नाश करने वाली
उदितम्	११.	सुना दिया	गजेन्द्रम्	६.	गजेन्द्र
एतत्	८.	इस	मोक्षणम्	७.	मोक्ष की
ते	२.	तुम्हें	पुण्यम्	९.	पवित्र
हरेः	५.	श्रीहरि की	रैवतम्	१२.	अब रैवत
कर्म	१०.	लीला को	तु अन्तरम्	१३.	मन्वन्तर की
अघ	३.	पापों का	शृणु ॥	१४.	कथा सुनो

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! तुम्हें पापों का नाश करने वाली श्री हरि की गजेन्द्र मोक्ष की इस पवित्र लीला को सुना दिया । अब रैवत मन्वन्तर की कथा सुनो ॥

द्वितीयः श्लोकः

पञ्चमो रैवतो नाम मनुस्तामससोदरः ।
बलिविन्ध्यादयस्तस्य सुता अर्जुनपूर्वकाः ॥२॥

पदच्छेद— पञ्चमः रैवतः नाम मनुः तामस सोदरः ।
बलि विन्ध्य आदयः तस्मै सुताः अर्जन पूर्वकाः ॥

शब्दार्थ—

पञ्चमः	१.	पाँचवें	बलि	९.	बलि
रैवतः	४.	रैवत था	विन्ध्य	१०.	विन्ध्य
नाम	३.	नाम	आदयः	११.	आदि
मनुः	२.	मनु का	तस्मै	७.	उनके
तामस	५.	वे तामस के	सुताः	१२.	कई पुत्र थे
सोदरः ।	६.	सगे भाई थे	अर्जनपूर्वकाः ॥	८.	अर्जुन सहित

श्लोकार्थ—पाँचवें मनु का नाम रैवत था । वे तामस के सगे भाई थे । उनके अर्जुन सहित बलि, विन्ध्य आदि कई पुत्र थे ॥

तृतीयः श्लोकः

विभुरिन्द्रः सुरगणा राजन्भूतरयादयः ।
हिरण्यरोमा वेदशिरा ऊर्ध्वबाह्वादयो द्विजाः ॥३॥

पदच्छेद— विभुः इन्द्रः सुरगणाः राजन् भूतरय आदयः ।
हिरण्यरोमा वेदशिरा ऊर्ध्वबाहुः आदयः द्विजाः ॥

शब्दार्थ—

विभुः	३.	विभु था (और)	हिरण्यरोमा	७.	हिरण्यरोमा
इन्द्रः	२.	उस समय इन्द्र का नाम	वेदशिरा	८.	वेदशिरा
सुरगणाः	६.	देवताओं के प्रधानगण थे	ऊर्ध्वबाहुः	९.	ऊर्ध्वबाहु
राजन्	१.	हे परीक्षित् !	आदयः	१०.	आदि
भूतरय	४.	भूतरय	द्विजाः ॥	११.	सप्तर्षि थे
आदयः ।	५.	आदि			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उस मन्वन्तर में इन्द्र का नाम विभु था । और भूतरय आदि देवताओं के प्रधान गण थे । हिरण्यरोमा, वेदशिरा, ऊर्ध्वबाहु आदि सप्तर्षि थे ॥

चतुर्थः श्लोकः

पत्नी विकुण्ठा शुभ्रस्य वैकुण्ठैः सुरसत्तमैः ।
तयोः स्वकलया जज्ञे वैकुण्ठो भगवान्स्वयम् ॥४॥

पदच्छेद— पत्नी विकुण्ठा शुभ्रस्य वैकुण्ठैः सुरसत्तमैः ।
तयोः स्वकलया जज्ञे वैकुण्ठः भगवान् स्वयम् ॥

शब्दार्थ—

पत्नी	२.	पत्नी का नाम	तयोः	४.	उन्हीं के गर्भ से वैकुण्ठ नामक
विकुण्ठा	३.	विकुण्ठा था	स्वकलया	८.	अपने अंश से
शुभ्रस्य	१.	शुभ्र ऋषि की	जज्ञे	१२.	अवतार लिया था
वैकुण्ठैः	५.	वैकुण्ठ नामक	वैकुण्ठ	११.	वैकुण्ठ नामक
सुर	७.	देवताओं सहित	भगवान्	९.	भगवान् ने
सत्तमैः ।	६.	श्रेष्ठ	स्वयम् ॥	१०.	स्वयम्

श्लोकार्थ—शुभ्र ऋषि की पत्नी का नाम विकुण्ठा था । उन्हीं के गर्भ से वैकुण्ठ नामक श्रेष्ठ देवताओं के सहित अपने अंश से भगवान् ने स्वयम् अवतार लिया था ॥

पञ्चमः श्लोकः

वैकुण्ठः कल्पितो येन लोको लोकनमस्कृतः ।
रमया प्रार्थ्यमानेन देव्या तत्प्रियकाम्यया ॥५॥

पदच्छेद— वैकुण्ठः कल्पितः येन लोकः लोक नमस्कृतः ।
रमया प्रार्थ्यमानेन देव्या तत् प्रिय काम्यया ॥

शब्दार्थ—

वैकुण्ठः	१०.	वैकुण्ठ नामक	रमया	२.	लक्ष्मी
कल्पितः	१२.	रचना की थी	प्रार्थ्यमानेन	४.	प्रार्थना से
येन	१.	उन्हीं ने	देव्या	३.	देवी की
लोकः	११.	धाम की	तत्	५.	उनको
लोक	८.	समस्त लोकों से	प्रिय	६.	प्रसन्न करने की
नमस्कृतः ।	९.	श्रेष्ठ	काम्यया ॥	७.	इच्छा से

श्लोकार्थ—उन्हीं ने लक्ष्मी देवी की प्रार्थना से उनको प्रसन्न करने की इच्छा से समस्त लोकों में श्रेष्ठ वैकुण्ठ नामक धाम की रचना की ॥

षष्ठः श्लोकः

तस्यानुभावः कथितो गुणाश्च परमोदयाः ।
भौमान्रेणून्स विममे यो विष्णोर्वर्णयेद् गुणान् ॥६॥

पदच्छेद— तस्य अनुभावः कथितः गुणाः च परमोदयाः ।
भौमान् रेणून् सः विममे यः विष्णोः वर्णयेत् गुणान् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उनके	रेणून्	१३.	परमाणुओं को
अनुभावः	२.	प्रभाव का	सः	११.	वह
कथितः	६.	वर्णन कर दिया	विममे	१४.	गिन ले
गुणाः	५.	गुणों का	यः	७.	जो
च	३.	और	विष्णोः	८.	विष्णु भगवान् के
परमोदयाः ।	४.	कल्याणमय	वर्णयेत्	१०.	वर्णन करना चाहे
भौमान्	१२.	पहले पृथ्वी के	गुणान् ॥	९.	गुणों का

श्लोकार्थ—उनके प्रभाव का और कल्याणमय गुणों का वर्णन कर दिया । जो विष्णु भगवान् के गुणों का वर्णन करना चाहे वह पहले पृथ्वी के परमाणुओं को गिन ले ॥

सप्तमः श्लोकः

षष्ठश्च चक्षुषः पुत्रश्चाक्षुषो नाम वै मनुः ।
पूरुपूरुषसुद्युम्नप्रमुखाश्चाक्षुषात्मजाः ॥७॥

पदच्छेद— षष्ठः च चक्षुषः पुत्रः चाक्षुषः नाम वै मनुः ।
पूरु पूरुष सुद्युम्न प्रमुखाः चाक्षुष आत्मजाः ॥

शब्दार्थ—

षष्ठः	२.	छठे	मनुः ।	३.	मनु
च	८.	और	पूरु	१०.	पूरु
चक्षुषः	४.	चक्षु के	पूरुष	११.	पुरुष
पुत्रः	५.	पुत्र	सुद्युम्न	१२.	सुद्युम्न आदि
चाक्षुषः	६.	चाक्षुष	प्रमुखाः	१३.	कई प्रमुख
नाम	७.	नाम के थे	चाक्षुष	९.	उन चाक्षुष के
वै	१.	निश्चय ही	आत्मजाः ॥	१४.	पुत्र

श्लोकार्थ—निश्चय ही छठे मनु चक्षु के पुत्र चाक्षुष नामके थे । और उन चाक्षुष के पूरु, पूरुष, सुद्युम्न आदि कई प्रमुख पुत्र थे ॥

अष्टमः श्लोकः

इन्द्रो मन्त्रद्रुमस्तत्र देवा आप्यादयो गणाः ।
मुनयस्तत्र वै राजन्हविष्मद्वीरकादयः ॥८॥

पदच्छेद— इन्द्रः मन्त्रद्रुमः तत्र देवाः आप्य आदयः गणाः ।
मुनयः तत्र वै राजन् हविष्मात् वीरक आदयः ॥

शब्दार्थ—

इन्द्रः	१.	इन्द्र का नाम	मुनयः	१४.	सप्तर्षि थे
मन्त्रद्रुमः	२.	मन्त्रद्रुम था	तत्र	१०.	वहाँ
तत्र	३.	उस मन्वन्तर में	वै	९.	निश्चित ही
देवा	४.	प्रधान देव	राजन्	८.	हे परीक्षित् !
आप्य	६.	आप्य	हविष्वात्	११.	हविष्मान् और
आदयः	७.	आदि	वीरक	१२.	वीरक
गणाः ।	५.	गण थे	आदयः ॥	१३.	

श्लोकार्थ—इन्द्र का नाम मन्त्रद्रुम था । उस मन्वन्तर में हे परीक्षित् ! निश्चय ही वहाँ हविष्मान् और वीरक आदि सप्तर्षि थे ॥

नवमः श्लोकः

तत्रापि देवः सम्भूत्यां वैराजस्याभवत् सुतः ।
अजितो नाम भगवानंशेन जगतः पतिः ॥९॥

पदच्छेद— तत्रापि देवः सम्भूत्याम् वैराजस्य अभवत् सुतः ।
अजितः नाम भगवान् अंशेन जगतः पतिः ॥

शब्दार्थ—

तत्रापि	४. उस समय भी	**अजितः**	८. अजित
देवः	७. दिव्य	**नाम**	९. नाम का
सम्भूत्याम्	६. सम्भूति के गर्भ से	**भगवान्**	३. भगवान् ने
वैराजस्य	५. वैराज की पत्नी	**अंशेन**	१०. अंश
अभवत्	१२. ग्रहण किया था	**जगतः**	१. जगत्
सुतः ।	११. अवतार	**पतिः ॥**	२. पति

श्लोकार्थ—जगत् पति भगवान् ने उस समय भी वैराज की पत्नी सम्भूति के गर्भ से दिव्य अजित नाम का अंश अवतार ग्रहण किया था ॥

दशम श्लोकः

पयोधिं येन निर्मथ्य सुराणां साधिता सुधा ।
भ्रममाणोऽम्भसि धृतः कूर्मरूपेण मन्दरः ॥१०॥

पदच्छेद— पयोधिम् येन निर्मथ्य सुराणाम् साधिता सुधा ।
भ्रममाणः अम्भसि धृतः कूर्म रूपेण मन्दरः ॥

शब्दार्थ—

पयोधिम्	२. समुद्र	**भ्रममाणः**	११. मथानी के
येन	१. उन्होंने ही	**अम्भसि**	१२. जल में आधार बने थे
निर्मथ्य	३. मन्थन करके	**धृतः**	९. धारण करके
सुराणाम्	४. देवगणों को	**कूर्म**	७. कच्छप
साधिता	६. पिलाया था (तथा)	**रूपेण**	८. रूप से
सुधा ।	५. अमृत	**मन्दरः ॥**	१०. मन्दराचल को

श्लोकार्थ—उन्होंने ही समुद्र मन्थन करके देवताओं को अमृत पिलाया था । तथा कच्छप रूप को धारण करके मंदराचल की मथानी के आधार बने थे ॥

एकादशः श्लोकः

राजोवाच— यथा भगवता ब्रह्मन्मथितः क्षीरसागरः ।
यदर्थं वा यतश्चाद्रिं दधाराम्बुचरात्मना ॥११॥

पदच्छेद— यथा भगवता ब्रह्मन् मथिताः क्षीर सागरः ।
यद् अर्थम् वा यतः च अद्रिम् दधार अम्बुचर आत्मना ॥

शब्दार्थ—

यथा	६. कैसे	अर्थम्	११. किस कारण से
भगवता	२. भगवान् ने	वा	८. अथवा
ब्रह्मन्	१. हे ब्रह्मन् !	यतः च	१२. किस उद्देश्य से
मथिताः	५. मन्थन	अद्रिम्	१३. मंदराचल को
क्षीर	३. क्षीर	दधार	१४. पीठ पर धारण किया था
सागरः ।	४. सागर का	अम्बुचर	९. उन्होंने कच्छप रूप
यद्	७. किस	आत्मा ॥	१०. धारण करके

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! ने क्षीरसागर का मन्थन कैसे किस अथवा कच्छप रूप धारण करके किस कारण से और किस उद्देश्य से मंदराचल को पीठ पर धारण किया ॥

द्वादशः श्लोकः

यथामृतं सुरैः प्राप्तं किञ्चान्यदभवत् ततः ।
एतद् भगवतः कर्म वदस्व परमाद्भुतम् ॥१२॥

पदच्छेद— यथा अमृतम् सुरैः प्राप्तम् किञ्च अन्यत् अभवत् ततः ।
एतद् भगवतः कर्म वदस्व परम अद्भुतम् ॥

शब्दार्थ—

यथा	३. कैसे	ततः ।	५. इसके बाद
अमृतम्	२. उस समय अमृत	एतद्	९. ये
सुरैः	१. देवताओं को	भगवतः	१०. परमात्मा की
प्राप्तम्	४. मिला	कर्म	१३. लीलायें
किञ्च	७. क्या	वदस्व	१४. हम से कहिये
अन्यत्	६. और	परम	११. बड़ी ही
अभवत्	८. हुआ	अद्भुतम् ॥	१२. अद्भुत

श्लोकार्थ—देवताओं को उस समय अमृत कैसे मिला इसके बाद और क्या हुआ ये परमात्मा की बड़ी ही अद्भुत लीलायें हमसे कहिये ॥

त्रयोदशः श्लोकः

त्वया सङ्कथ्यमानेन महिम्ना सात्वतां पतेः ।
नातितृप्यति मे चित्तं सुचिरं तापतापितम् ॥१३॥

पदच्छेद— त्वया सङ्कथ्यमानेन महिम्ना सात्वताम् पतेः ।
न अति तृप्यति मे चित्तम् सुचिरम् ताप तापितम् ॥

शब्दार्थ—

त्वया	१.	आपके द्वारा	अतितृप्यति	११.	तृप्त
सङ्कथ्यमानेन	२.	वर्णन किये जाने पर	मे	९.	मेरा
महिम्ना	५.	महिमा का	चित्तम्	१०.	मन
सात्वताम्	३.	भक्तों के	सुचिरम्	६.	बहुत समय से
पतेः	४.	स्वामी भगवान् की	ताप	७.	संसार की ज्वाला
न	१२.	नहीं होता है	तापितम् ॥	८.	जलता हुआ

श्लोकार्थ—आपके द्वारा भक्तों के स्वामी भगवान् की महिमा का वर्णन किये जाने पर बहुत समय से संसार की ज्वालाओं में जलता हुआ मेरा मन तृप्त नहीं होता है ॥

चतुर्दशः श्लोकः

सूत उवाच— **सम्पृष्टो भगवानेवं द्वैपायनसुतो द्विजाः ।**
अभिनन्द्य हरेर्वीर्यमभ्याचष्टुं प्रचक्रमे ॥१४॥

पदच्छेद— सम्पृष्टः भगवान् एवम् द्वैपायन सुतः द्विजाः ।
अभिनन्द्य हरेः वीर्यम् अभ्याचष्टुम् प्रचक्रमे ॥

शब्दार्थ—

सम्पृष्टः	६.	पूछे जाने पर	अभिनन्द्य	७	परीक्षित् के प्रश्न का अभिनन्दन करके
भगवान्	४.	भगवान् शुकदेव जी ने	हरेः	८.	भगवान् की
एवम्	५.	इस प्रकार	वीर्यम्	९.	महिमा का
द्वैपायन	२.	द्वैपायन मुनि के	अभ्याचष्टुम्	१०.	इस प्रकार वर्णन
सुतः	३.	पुत्र	प्रचक्रमे ॥	११.	आरम्भ किया
द्विजाः ।	१.	हे ऋषियों			

श्लोकार्थ—हे ऋषियों ! द्वैपायन मुनि के पुत्र भगवान् शुकदेव जी ने इस प्रकार पूछे जाने पर परीक्षित् के प्रश्न का अभिनन्दन करके भगवान् की महिमा का इस प्रकार वर्णन किया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—यदा युद्धेऽसुरैर्देवा बाध्यमानाः शितायुधैः।
गतासवो निपतिता नोत्तिष्ठेरन्स्म भूयशः ॥१५॥

पदच्छेद— यदा युद्धे असुरैः देवाः बाध्यमानाः शितआयुधैः।
गत असवः निपतिताः न उत्तिष्ठेरन् स्म भूयशः ॥

शब्दार्थ—

यदा	१.	जब	आयुधैः।	५.	शस्त्रों से
युद्ध	२.	युद्ध में	गत	१०.	त्याग कर
असुरैः	३.	असुरों ने	असवः	९.	प्राण
देवाः	६.	देवताओं को	निपतिताः	११.	युद्ध भूमि में गिरकर
बाध्यमानाः	७.	पराजित कर दिया	न उत्तिष्ठेरन्स्म	१२.	फिर न उठ सके
शित	४.	अपने तीखे	भूयशः ॥	८.	तब बहुत से वीर

श्लोकार्थ—जब युद्ध में असुरों ने अपने तीखे शस्त्रों से देवताओं को पराजित कर दिया था तब बहुत से वीर प्राण त्याग कर युद्ध भूमि में गिर कर फिर न उठ सके ॥

षोडशः श्लोकः

यदा दुर्वाससः शापात् सेन्द्रा लोकास्त्रयो नृप।
निःश्रीकाश्चाभवंस्तत्र नेशुरिज्यादयः क्रियाः ॥१६॥

पदच्छेद— यदा दुर्वाससः शापात् स इन्द्राः लोकाः त्रयः नृप।
निः श्रीकाः च अभवन् तत्र नेशुः इज्य आदयः क्रियाः ॥

शब्दार्थ—

यदा	२.	जब	श्रीकाः	९.	श्री
दुर्वाससः	३.	दुर्वासा के	च	७.	और
शापात्	४.	शाप से	अभवम्	११.	हो गये थे
सइन्द्राः	८.	स्वयं इन्द्र भी	तत्र	१२.	तब वहाँ
लोकाः	६.	लोक	नेशुः	१६.	लोप हो गया
त्रयः	५.	तीनों	इज्य	१३.	यज्ञ-त्याग
नृप।	१.	हे परीक्षित्!	आदयः	१४.	आदि
निः	१०.	हीन	क्रियाः ॥	१५.	कर्मों का भी

श्लोकार्थ—हे परीक्षित्! जब दुर्वासा के शाप से तीनों लोक और स्वयं इन्द्र भी श्रीहीन हो गये थे। तब वहाँ यज्ञ-याग आदि कर्मों का भी लोप हो गया ॥

सप्तदशः श्लोकः

निशाम्यैतत् सुरगणा महेन्द्रवरुणादयः ।
नाध्यगच्छन्स्वयं मन्त्रैर्मन्त्रयन्तो विनिश्चयम् ॥१७॥

पदच्छेद— निशम्य एतत् सुरगणाः महेन्द्र वरुण आदयः ।
न अध्यगच्छन् स्वयम् मन्त्रैः मन्त्रयन्तः विनिश्चयम् ॥

शब्दार्थ—

निशाम्य	२.	देखकर	न	११.	नहीं
एतत्	१.	यह सब	अध्यगच्छन्	१२.	पहुँच सके
सुरगणाः	६.	देवताओं ने	स्वयम्	७.	आपस में
महेन्द्र	३.	इन्द्र	मन्त्रैः	८.	बहुत कुछ सोच
वरुण	४.	वरुण	मन्त्रयन्तः	९.	विचार किया पर
आदयः ।	५.	आदि	विनिश्चयम् ॥	१०	किसी निश्चय पर

श्लोकार्थ—यह सब देखकर इन्द्र, वरुण आदि देवताओं ने आपस में बहुत कुछ सोच विचार किया । पर किसी निश्चय पर नहीं पहुँच सके ।

अष्टादशः श्लोकः

ततो ब्रह्मसभां जग्मुर्मेरोर्मूर्धनि सर्वशः ।
सर्वं विज्ञापयाञ्चक्रुः प्रणताः परमेष्ठिने ॥१८॥

पदच्छेद— ततः ब्रह्मसभाम् जग्मुः मेरो मूर्धनि सर्वशः ।
सर्वम् विज्ञापयाञ्चक्रुः प्रणताः परमेष्ठिने ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तब	सर्वम् ।	२.	सब के साथ
ब्रह्म	५.	ब्रह्मा जी की	सर्वम्	८.	सब ने
सभाम्	६.	सभा में	विज्ञापयाम्	११.	अपनी स्थिति का
जग्मुः	७.	गये	चक्रुः	१२.	वर्णन किया
मेरोः	३.	सुमेरु के	प्रणताः	९.	विनम्रता से
मूर्धनि	४.	शिखर पर स्थित	परमेष्ठिने ॥	१०.	ब्रह्मा जी से

श्लोकार्थ—तब सब के सब सुमेरु के शिखर पर स्थित ब्रह्मा जी की सभा में गये । सब ने विनम्रता से ब्रह्मा जी से अपनी स्थिति का वर्णन किया ॥

एकोनविंशः श्लोकः

स विलोक्येन्द्रवाय्वादीन् निःसत्त्वान्विगतप्रभान् ।
लोकानमङ्गलप्रायानसुरानयथा विभुः ॥१९॥

पदच्छेद— सः विलोक्य इन्द्र वायु आदीन् निःसत्त्वान् विगतप्रभान् ।
लोकान् अमङ्गल प्रायान् असुरान् अयथा विभुः ॥

शब्दार्थ—

सः विलोक्य	१.	ब्रह्माजी ने देखा	**लोकान्**	७.	लोगों की स्थिति
इन्द्र वायु	२.	इन्द्र-वायु	**अमङ्गल**	९.	संकट ग्रस्त है
आदीन्	३.	आदि देवता	**प्रायान्**	८.	प्रायः
निःसत्त्वान्	६.	शक्ति हीन हो गये हैं ।	**असुरान्**	११.	असुर
विगत	५.	हीन एवम्	**अयथा**	१०.	इसके विपरीत
प्रभान् ।	४.	श्री	**विभुः ॥**	१२.	सामर्थ्यवान् हो रहे हैं

श्लोकार्थ—ब्रह्माजी ने देखा इन्द्र, वायु आदि देवता श्रीहीन एवम् शक्तिहीन हो गये हैं । लोगों की स्थिति प्रायः संकट-ग्रस्त है । इसके विपरीत असुर सामर्थ्यवान् हो रहे हैं ॥

विंशः श्लोकः

समाहितेन मनसा संस्मरन्पुरुषं परम् ।
उवाचोत्फुल्लवदनो देवान्स भगवान्परः ॥२०॥

समाहितेन मनसा संस्मरन् पुरुषम् परम् ।
उवाच उत्फुल्ल वदनः देवान् सः भगवान् परः ॥

शब्दार्थ—

समाहितेन	१.	ब्रह्माजी ने एकाग्र	**उवाच**	११.	कहा
मनसा	२.	मन से	**उत्फुल्लवदनः**	७.	प्रफुल्लित मुख से
संस्मरन्	५.	स्मरण किया	**देवान्**	१०.	देवताओं से
पुरुषम्	४.	पुरुष भगवान् का	**सः**	६.	उन्होंने
परम्	३.	परम	**भगवान्**	९.	परमात्मा के बारे में
			परः ॥	८.	उन परम पुरुष

श्लोकार्थ—ब्रह्माजी ने एकाग्र मन से परम पुरुष भगवान् का स्मरण किया । उन्होंने प्रफुल्लित मुख से उन परम पुरुष परमात्मा के बारे में देवताओं से कहा ॥

एकविंशः श्लोकः

अहं भवो यूयमथोऽसुरादयो मनुष्यतिर्यग्द्रुमघर्मजातयः ।
यस्यावतारांशकलाविसर्जिता व्रजाम सर्वे शरणं तमव्ययम् ॥२१॥

पदच्छेद— अहम् भवः यूयम् अथ असुर आदयः मनुष्य तिर्यक् द्रुमघर्म जातयः ।
यस्य अवतार अंश कला विसर्जिताः व्रजाम सर्वे शरणं तम् अव्ययम् ॥

शब्दार्थ—

अहम्	१.	हे देवताओ ! मैं	यस्य	९.	जिनके
भवः	२.	शङ्कर जी	अवतार अंश	१०.	विराट्रूप के अंश की
यूयम्	३.	तुम लोग	कला	११.	कला से
अथ	४.	तथा	विसर्जिताः	१२.	रचे गये हैं
असुर आदयः	८.	असुर इत्यादि	व्रजाम	१६.	जाते हैं
मनुष्यतिर्यक्	५.	मनुष्य, पशु, पक्षी	सर्वे	१३.	हम सब
द्रुम	६.	वृक्ष और	शरणम्	१५.	शरण में
घर्मजातयः ।	७	स्वेदज प्राणी	तम् अव्ययम् ॥	१४.	उन्हीं अविनाशी परमात्मा की

श्लोकार्थ—हे देवताओ ! मैं, शङ्कर जी, तुम लोग तथा मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष और स्वेदज प्राणी, असुर इत्यादि जिनके विराट्रूप के अंश की एक कला से रचे गये हैं, हम सब उन्हीं अविनाशी परमात्मा का शरण में जाते हैं ॥

द्वाविंशः श्लोकः

न यस्य वध्यो न च रक्षणीयो नोपेक्षणीयादरणीयपक्षः ।
अथापि सर्गस्थितिसंयमार्थं धत्ते रजःसत्त्वतमांसि काले ॥२२॥

पदच्छेद— न यस्य वध्यः न च रक्षणीयः न उपेक्षणीय आदरणीय पक्षः ।
अथापि सर्गस्थिति संयम अर्थम् धत्ते रजः सत्त्व तमांसि काले ॥

शब्दार्थ—

न	१.	न तो	अथापि	१०.	फिर भी
यस्य	२.	उनकी दृष्टि में कोई	सर्ग	११.	सृष्टि
वध्यः	३.	वध का पात्र है	स्थिति	१२.	स्थिति और
न	५.	न	संयम	१३.	प्रलय
च	४.	और	अर्थम्	१४.	के लिये
रक्षणीयः	६.	रक्षा का	धत्ते	१८.	स्वीकार किया करते हैं
न	७.	न	रजःसत्त्व	१६.	रजोगुण, सत्त्व गुण और
उपेक्षणीय	८.	उपेक्षा का	तमांसि	१७.	तमो गुण को
आदरणीय पक्षः ॥	९.	और न आदर का पात्र है	काले ॥	१५.	समय-समय पर वे

श्लोकार्थ—न तो उनकी दृष्टि में कोई वध का पात्र है, और न रक्षा का, न उपेक्षा का और न आदर का पात्र है । फिर भी सृष्टि, स्थिति और प्रलय के लिये समय-समय पर वे रजोगुण, सत्त्व गुण और तमोगुण को स्वीकार करते हैं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

अयं च तस्य स्थितिपालनक्षणः सत्त्वं जुषाणस्य भवाय देहिनाम् ।
तस्माद् व्रजामः शरणं जगद्गुरुं स्वानां स नो धास्यति शं सुरप्रियः ॥२३॥

पदच्छेद— अयम् च तस्य स्थिति पालन क्षणः सत्त्वम् जुषाणस्य भवाय देहिनाम् ।
तस्मात् व्रजामः शरणम् जगत् गुरुम् स्वानाम् सः नः धास्यति शम् सुरप्रियः ॥

शब्दार्थ—

अयम्	७.	अतः यह	तस्मात्	१०.	इसलिये (हम सब)
च	१.	और	व्रजामः	१३.	जाते हैं
तस्य	२.	उन्होने	शरणम्	१२.	शरण में
स्थिति	८.	जगत की स्थिति और	जगत् गुरुम्	११.	उन्हीं जगत् गुरु की
पालनक्षणः	९.	रक्षा का अवसर है	स्वानाम्	१६.	निजजनों का
सत्त्वम्	५	सत्त्वगुण को	सः नः	१५.	वे हम
जुषाणस्य	६.	स्वीकार किया है	धास्यति	१६.	करेंगे
भवाय	४.	कल्याण के लिये	शम्	१७.	अवश्य ही कल्याण
देहिनाम् ।	३.	प्रणियों के	सुरप्रिया ॥	१४.	देवताओं के प्रिय

श्लोकार्थ——और उन्होंने प्राणियों के कल्याण के लिये सत्त्वगुण को स्वीकार किया है । अतः यह जगत की स्थिति और रक्षा का अवसर है । इसलिये हम सब उन्हीं जगत् गुरु की शरण में जावे है । देवताओं प्रिय वे हम निज जनों का अवश्य ही कल्याण करेंगे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

इत्याभाष्य सुरान्वेधाः सह देवैररिन्दम ।
अजितस्य पदं साक्षाज्जगाम तमसः परम् ॥२४॥

पदच्छेद— इति अभाष्य सुरान् वेधाः सः देवैः अरिन्दम ।
अजितस्य पदम् साक्षात् जगाम तमसः परम् ॥

शब्दार्थ—

इति	३.	इस प्रकार	अजितस्य	१०.	अजित के
आभाष्य	४.	कह कर	पदम्	१२.	धाम वैकुण्ठ में
सुरान्	६.	देवताओं को	साक्षात्	११.	निज
वेधाः	५.	ब्रह्मा जी	जगाम	१३.	गये
सह	७.	साथ लेकर	तमसः	८.	तमोमयी प्रकृति से
देवैः	२.	देवताओं से	परम् ॥	९.	परे
अरिन्दम ।	१.	हे परीक्षित् !			

श्लोकार्थ——हे परीक्षित् ! देवताओं से इस प्रकार कह कर ब्रह्मा जी देवताओं को साथ लेकर तमोमयी प्रकृति से परे अजित के निजधाम वैकुण्ठ में गये ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

तत्राऽदृष्टस्वरूपाय श्रुतपूर्वाय वै विभो।
स्तुतिमब्रूत दैवीभिर्गीर्भिस्त्ववहितेन्द्रियः ॥२५॥

पदच्छेद— तत्र अदृष्ट स्वरूपाय श्रुत पूर्वाय वै विभो।
स्तुतिम् अब्रूत दैवीभिः गीर्भिः तु अवहितेन्द्रियः॥

शब्दार्थ—

तत्र	४.	वहाँ जाने पर	स्तुतिम्	११.	उनकी स्तुति
अदृष्ट	६.	दिखाई न पड़ा	अब्रूत	१२.	करने लगे
स्वरूपाय	५.	उन्हें कुछ भी	दैवीभिः	१०.	वाणी के द्वारा
श्रुत	३.	सुन रखा था पर	गीर्भिः	९.	वेद
पूर्वाय	२.	पहले बहुत कुछ	तु	७.	इस लिये
वै विभो।	१.	यद्यपि भगवान् के सम्बन्ध में	अवहितेन्द्रियः॥	८.	ब्रह्मा जी एकाग्र मन से

श्लोकार्थ—यद्यपि भगवान् के सम्बन्ध में पहले बहुत कुछ सुन रखा था। पर वहाँ जाने पर उन्हें कुछ भी दिखाई न पड़ा। इसलिये ब्रह्मा जी एकाग्र मन से वेद वाणी के द्वारा उनकी स्तुति करने लगे॥

षड्विंशः श्लोकः

ब्रह्मोवाच—अविक्रियं सत्यमनन्तमाद्यं गुहाशयं निष्कलमप्रतर्क्यम्।
मनोऽग्रयानं वचसानिरुक्तं नमामहे देववरं वरेण्यम् ॥२६॥

पदच्छेद— अविक्रियम् सत्यम् अनन्तम् आद्यम् निष्कलम् अप्रतर्क्यम्।
मनो अग्रयानम् वचसा अनिरुक्तम् नमामहे देववरम् वरेण्यम्॥

शब्दार्थ—

अविक्रियम्	१.	हे भगवान्! आप निर्विकार	मनो	८.	मन से भी
सत्यम्	२.	सत्य	अग्रयानम्	९.	आगे जाने वाले
अनन्तम्	३.	अनन्त	वचसा	१०.	वाणी से
आद्यम्	४.	आदि पुरुष	अनिरुक्तम्	११.	परे
गुहाशयम्	५.	हृदयरूपी गुहा में विराजमान	नमामहे	१४.	नमस्कार करते हैं
निष्कलम्	६.	अखण्ड एवम्	देववरम्	१२.	हे देवश्रेष्ठ!
अप्रतर्क्यम्।	७	अतर्क्य हैं	वरेण्यम्॥	१३.	स्वयं प्रकाश परमात्मा हम आपको

श्लोकार्थ—हे भगवान्! आप निर्विकार, सत्य, अनन्त, आदि पुरुष, हृदयरूपी गुहा में विराजमान, अखण्ड एवम् अतर्क्य हैं। मन से भी आगे जाने वाले वाणी से परे हे देव श्रेष्ठ! स्वयं प्रकाश परमात्मा! हम आपको नमस्कार करते हैं॥

सप्तविंशः श्लोकः

विपश्चितं प्राणमनोधियात्मनामर्थेन्द्रियाभासमनिद्रमव्रणम् ।
छायातपौ यत्र न गृध्रपक्षौ तमक्षरं खं त्रियुगं व्रजामहे ॥२७॥

पदच्छेद— विपश्चितम् प्राणमनोधिया आत्मनाम् अर्थ इन्द्रिय आभासम् अनिद्रम् अव्रणम् ।
छायातपौ यत्र न गृध्रपक्षौ तम् अक्षरम् खम् त्रियुगम् व्रजामहे ॥

शब्दार्थ—

विपश्चितम्	४.	ज्ञाता हैं	छाया	११.	अविद्या और
प्राण	१.	आप प्राण	आतपौ	१२.	विद्या
मनोधिया	२.	मन बुद्धि और	यत्र	१०.	आपमें
आत्मनाम्	३.	अहंकार के	न	१४.	नहीं है
अर्थ	६.	उनके विषय	गृध्रपक्षौ	१३.	जीव के दोनों ही पक्ष
इन्द्रिय	५.	इन्द्रियाँ और	तम् अक्षरम्	१५.	ऐसे अविनाशी
आभासम्	७	आपके द्वारा प्रकाशित होते हैं	खम्	१६.	सुख स्वरूप
अनिद्रम	९.	अज्ञान रहित हैं	त्रियुगम्	१७.	तीनों युगों में विराजमान
अव्रणम् ।	८.	आप अशरीरी तथा	व्रजामहे ॥	१८.	हम आपकी शरण जाते हैं

श्लोकार्थ—आप प्राण, मन, बुद्धि और अहंकार के ज्ञाता हैं । इन्द्रियाँ और उनके विषय आपके द्वारा प्रकाशित होते हैं । आप अशरीरी तथा अज्ञान रहित हैं । आप में अविद्या और विद्या जीव के दोनों ही पक्ष नहीं हैं । ऐसे अविनाशी सुख स्वरूप तीनों युगों में विराजमान हम आपकी शरण जाते हैं ।

अष्टाविंशः श्लोकः

अजस्य चक्रं त्वजयेर्यमाणं मनोमयं पञ्चदशारमाशु ।
त्रिणाभि विद्युच्चलमष्टनेमि यदक्षमाहुस्तमृतं प्रपद्ये ॥२८॥

पदच्छेद— अजस्य चक्रम् तु अजया ईर्यमाणम् मनोमयम् पञ्चदशअरम् आशु ।
त्रिणाभि विद्युत् चलम् अष्टनेमि यत् अक्षरम् आहुः तम् ऋतम् प्रपद्ये ॥

शब्दार्थ—

अजस्य	१.	यह शरीर जीव का	विद्युत् चलम्	९.	यह विजली से अधिक द्रुत गामी है
चक्रम्	५.	चक्र है	अष्टनेमि	१०.	इसमें आठ नेमि हैं
तुअजया	२.	माया के द्वारा	यत्	११.	जो परमातमा इसके
ईर्यमाणम्	३.	प्रेरित	अक्षरम्	१२.	धुरे
मनोमयम्	४.	मनोमय	आहुः	१३.	कहे गये हैं
पञ्चदशअरम्	६.	दस इन्द्रियाँ पांच प्राण इसके अरे	तम्	१४.	उस
आशु ।	७.	हैं	ऋतम्	१५.	सत्य स्वरूप परमात्मा को
त्रिणाभि	८.	सत्त्व, रज और तम इसकी नाभि है	प्रपद्ये ॥	१६.	हम शरण ग्रहण करते हैं

श्लोकार्थ—यह शरीर जीव का माया के द्वारा प्रेरित मनोमय चक्र है । दस इन्द्रियाँ पांच प्राण इसके अरे हैं । सत्त्व, रज और तम इसकी नाभि है । यह बिजली से अधिक द्रुतगामी है । इसमें आठ नेमि हैं (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार) जो परमात्मा इसके धुरे कहे गये हैं, उस सत्य स्वरूप परमात्मा की हम शरण ग्रहण करते हैं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

य एकवर्णं तमसः परं तदलोकमव्यक्तमनन्तपारम् ।
आसाञ्चकारोपसुपर्णमेनमुपासते योगरथेन धीराः ॥२९॥

पदच्छेद— य: एक वर्णम् तमसः परम् तत् अलोकम् अव्यक्तम् अनन्त पारम् ।
आसाम् चकार उपसुपर्णम् एनम् उपासते योग रथेन धीराः ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जो	आसाम्	१०.	अन्तर्यामिरूप से
एकवर्णम्	२.	एक मात्र ज्ञान स्वरूप परमात्मा	चकार	११.	विराजमान
तमसः परम्	३.	प्रकृति से परे हैं	उपसुपर्णम्	९.	जीव के हृदय में
तत्	४.	वे	एनम्	१२.	ऐसे परमात्मा की
अलोकम्	५.	अदृश्य हैं	उपासते	१६.	आराधना करते हैं
अव्यक्तम्	६.	समस्त वस्तुओं में अव्यक्त हैं	योग	१४.	योग के द्वारा
अनन्त	७.	देश काल और वस्तु से	रथेन	१३.	भक्ति
पारम् ।	८.	परे है	धीराः ॥	१५.	विचारशील मनुष्य

श्लोकार्थ—जो एक मात्र ज्ञान स्वरूप परमात्मा प्रकृति से परे हैं, वे अदृश्य हैं। समस्त वस्तुओं में व्यापक हैं। देश, काल और वस्तु से परे हैं। जीव के हृदय में अन्तर्यामि रूप से विराजमान ऐसे परमात्मा की भक्ति योग के द्वारा विचारशील मनुष्य आराधना करते हैं।

त्रिंशः श्लोकः

न यस्य कश्चातितितर्ति मायां यया जनो मुह्यति वेद नार्थम् ।
तं निर्जितात्मात्मगुणं परेशं नमाम भूतेषु समं चरन्तम् ॥३०॥

पदच्छेद— न यस्य कः च अतितितर्ति मायाम् यया जनः मुह्यति वेद न अर्थम् ।
तम् निर्जितात्मा आत्म गुणम् परेशम् नमाम भूतेषु समम् चरन्तम् ॥

शब्दार्थ—

न	१०.	नहीं कर सकता	अर्थम् ।	५.	अपने वास्तविक लक्ष्य को
यस्य कः च	८.	उसे और कोई भी	तम्	११.	उस माया को
अतितितर्ति	९.	पार	निर्जितात्मा	१३.	जीत कर
मायाम्	२.	माया से	आत्मगुणम्	१२.	और उसके गुणों को
यया	१.	जिस	परेशम्	१७.	सर्वशक्तिमान् प्रभु को
जनः	४.	जीव	नमाम	१८.	हम प्रणाम करते हैं
मुह्यति	३.	मोहित होकर	भूतेषु	१४.	समस्त प्राणियों के हृदय में
वेद	७.	जानता	समम्	१५.	समभाव से
न	६.	नहीं	चरन्तम् ॥	१६.	विचरण करने वाले

श्लोकार्थ—जिस माया से मोहित होकर जीव अपने वास्तविक लक्ष्य को नहीं जानता। उसे और कोई भी पार नहीं कर सकता, उस माया को और उसके गुणों को जीत कर समस्त प्राणियों के हृदय में समभाव से विचरण करने वाले सर्वशक्तिमान् प्रभु को हम प्रणाम करते हैं॥

एकत्रिंशः श्लोकः

इमे वयं यत्प्रियययैव तन्वा सत्त्वेन सृष्टा बहिरन्तराविः ।
गतिं न सूक्ष्मामृषयश्च विद्महे कुतोऽसुराद्या इतरप्रधानाः ॥३१॥

पदच्छेद— इमे वयम् यत् प्रियया एव तन्वा सत्त्वेन सृष्टाः बहिः अन्तः आविः ।
गतिम् न सूक्ष्माम् ऋषयः विद्महे कुतः असुर आद्याः इतर प्रधानाः ॥

शब्दार्थ—

इमे	१.	यों तो	गतिम्	९.	एक रस
वयम्	२.	हम देवता और ऋषि गण भी	न	१३.	नहीं
यत् प्रियया	३.	उनके परमप्रिय	सूक्ष्माम्	११.	सूक्ष्म शरीर को
एव	६.	ही	ऋषयः	१२	ऋषि गण भी
तन्वा	५.	शरीर से	च	१५.	और फिर
सत्त्वेन	४.	सत्त्वमय	विद्महे	१४.	जानते
सृष्टाः	७	उत्पन्न हुये हैं परन्तु	कुतः	१८.	उसे कैसे जान सकते हैं
बहिः अन्तः	८.	बाहर भीतर	असुर आद्याः	१७.	असुर आदि
आविः ।	१०.	प्रकट	इतर प्रधानाः ॥	१६.	रजोगुण तथा तमोगुण प्रधान

श्लोकार्थ—यों तो हम देवता और ऋषिगण भी उनके परम प्रिय सत्त्वमय शरीर से ही उत्पन्न हुये हैं । परन्तु बाहर-भीतर एक रस प्रकट सूक्ष्म शरीर को ऋषि गण भी नहीं जानते । और फिर रजो गुण तथा तमो गुण प्रधान असुर आदि उसे कैसे जान सकते हैं

द्वात्रिंशः श्लोकः

पादौ महीयं स्वकृतैव यस्य चतुर्विधो यत्र हि भूतसर्गः ।
स वै महापुरुष आत्मतन्त्रः प्रसीदतां ब्रह्म महाविभूतिः ॥३२॥

पदच्छेद— पादौ मही इयम् स्वकृता एव यस्य चतुर्विधः यत्र हि भूत सर्गः ।
सः वै महापुरुष आत्म तन्त्रः प्रसीदताम् ब्रह्म महा विभूतिः ॥

शब्दार्थ—

पादौ	५.	चरण है	सः	११.	वे
महीइयम्	१.	यह पृथ्वी	वै	१०.	निश्चय ही
स्वकृता	२.	उन्हीं की बनाई हुई	महापुरुष	१४.	पुरुषोत्तम
एव	४.	ही	आत्म	१२.	परम
यस्य	३.	उनका	तन्त्रः	१३.	स्वतन्त्र
चतुर्विधः	७.	चार प्रकार के	प्रसीदताम्	१८.	हम पर प्रसन्न हों
यत्र हि	६.	इसी पृथ्वी पर	ब्रह्म	१७.	पर ब्रह्म
भूत	८.	प्राणी	महा	१५.	परम
सर्गः ।	९.	रहते हैं	विभूतिः ॥	१६.	ऐश्वर्यशाली

श्लोकार्थ—यह पृथ्वी उन्हीं की बनाई हुई उनका ही चरण है । इसी पृथ्वी पर चार प्रकार के प्राणी रहते हैं । निश्चय ही वे परम स्वतन्त्र पुरुषोत्तम परम ऐश्वर्यशाली पर ब्रह्म हम पर प्रसन्न हों ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

अम्भस्तु यद्रेत उदारवीर्यं सिध्यन्ति जीवन्त्युत वर्धमानाः ।
लोकास्त्रयोऽथाखिललोकपालाः प्रसीदतां ब्रह्म महाविभूतिः ॥३३॥

पदच्छेद— अम्भः तु यद्रेतः उदार वीर्यं सिध्यन्ति जीवन्ति उत वर्धमानाः ।
लोकाः त्रयः अथ अखिल लोकपालाः प्रसीदताम् ब्रह्म महाविभूतिः ॥

शब्दार्थ—

अम्भः	३.	जल	**लोकाः**	८.	लोक तथा
तु	२.	यह	**त्रयः**	७.	तीनों
यद्रेतः	१.	परमशक्तिशाली	**अथ**	६.	इसी से
उदार	४.	उन्हीं का उदार	**अखिल**	९.	समस्त
वीर्यम्	५.	वीर्य है	**लोकपालाः**	१०.	लोकों के लोकपाल
सिध्यन्ति	११.	उत्पन्न होते हैं	**प्रसीदताम्**	१६.	हम पर प्रसन्न हों
जीवन्ति	१२.	जीवित रहते हैं	**ब्रह्म**	१५.	परब्रह्म
उत वर्धमानाः ।	१३.	और बढ़ते हैं	**महाविभूतिः ॥**	१४.	वे परम ऐश्वर्यशाली

श्लोकार्थ—परमशक्तिशाली यह जल उन्हीं का उदार वीर्य है । इसी से तीनों लोक तथा समस्त लोकों के लोकपाल उत्पन्न होते हैं, जीवित रहते हैं और बढ़ते हैं । वे परम ऐश्वर्यशाली परब्रह्म हम पर प्रसन्न हों ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

सोमं मनो यस्य समामनन्ति दिवौकसां वै बलमन्ध आयुः ।
ईशो नगानां प्रजनः प्रजानां प्रसीदतां नः स महाविभूतिः ॥३४॥

पदच्छेद— सोमम् मनो यस्य समामनन्ति दिवौकसाम् वै बलम् अन्धः आयुः ।
ईशः नगानाम् प्रजनः प्रजानाम् प्रसीदताम् नः सः महाविभूतिः ॥

शब्दार्थ—

सोमम्	२.	चन्द्रमा	**ईशः**	११.	सम्राट् एवम्
मनो	४.	मन है	**नगानाम्**	१०.	वही वृक्षों का
यस्य	३.	उस प्रभु का	**प्रजनः**	१३.	वृद्धि करने वाला है
समामनन्ति	१.	श्रुतियाँ कहती हैं कि	**प्रजानाम्**	१२.	प्रजा की
दिवौकसाम्	६.	देवताओं का	**प्रसीदताम्**	१८.	प्रसन्न हो
वै	५.	यही चन्द्रमा	**नः**	१७.	हम पर
बलम्	८.	बल एवम्	**सः**	१४.	ऐसे
अन्धः	७.	अन्न	**महा**	१५.	परम
आयुः ।	९.	आयु हैं	**विभूतिः ॥**	१६.	ऐश्वर्यशाली प्रभु

श्लोकार्थ—श्रुतियाँ कहती हैं । चन्द्रमा उस प्रभु का मन है । यही चन्द्रमा देवताओं का अन्न, बल एवम् आयु हैं । वही वृक्षों का सम्राट् एवम् वृद्धि करने वाला है । ऐसे परम ऐश्वर्यशाली प्रभु हम पर प्रसन्न हों ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

अग्निर्मुखं यस्य तु जातवेदा जातः क्रियाकाण्डनिमित्तजन्मा ।
अन्तःसमुद्रेऽनुपचन् स्वधातून् प्रसीदतां नः स महाविभूतिः ॥३५॥

पदच्छेद— अग्निः मुखम् यस्य तु जातवेदाः जातः क्रियाकाण्डनिमित्तजन्मा ।
अन्तः समुद्रे अनुपचन् स्वधातून् प्रसीदताम् नः सः महाविभूतिः ॥

शब्दार्थ—

अग्निः	१. अग्नि	अन्तः	११. भीतर
मुखम्	३. मुख है	समुद्र	१०. यह अग्नि शरीर के समुद्र के
यस्य	२. जिन प्रभु का	अनुपचन्	१३. पाचन करता है
तु	४. और	स्वधातून्	१२. धातुओं का
जातवेदाः	७. अग्नि की	प्रसीदताम्	१८. प्रसन्न हों
जातः	९. हुई है	नः	१७. हम पर
क्रियाकाण्ड	५. कर्मकाण्डरूप	सः	१४. ऐसे
निमित्त	६. निमित्त से	महा	१५. परम
जन्मा ।	८. उत्पत्ति	विभूतिः ॥	१६. ऐश्वर्यशाली प्रभु

श्लोकार्थ—अग्नि जिन प्रभु का मुख है । और कर्म काण्डरूप निमित्त से अग्नि की उत्पत्ति हुई है । यह अग्नि शरीर के समुद्र के भीतर धातुओं का पाचन करता है । ऐसे परम ऐश्वर्यशाली प्रभु हम पर प्रसन्न हों ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

यच्चक्षुरासीत् तरणिर्देवयानं त्रयीमयो ब्रह्मण एष धिष्ण्यम् ।
द्वारं च मुक्तेरमृतं च मृत्युः प्रसीदतां नः स महाविभूतिः ॥३६॥

पदच्छेद— यत् चक्षुः आसीत् तरणिः देवयानम् त्रयीमयः ब्रह्मणः एषः धिष्ण्यम् ।
द्वारम् च मुक्तेः अमृतम् च मृत्युः प्रसीदताम् नः सः महाविभूतिः ॥

शब्दार्थ—

यत् चक्षुः	२. जिनके नेत्र	द्वारम्	१२. द्वार स्वरूप
आसीत्	३. हैं	च मुक्तेः	११. और मुक्ति के
तरणिः	१. सूर्य	अमृतम्	१०. जो अमृतमय
देव	८. जिनके द्वारा जीव देव	च	१३. तथा
यानम्	९. यान मार्ग से जाता है	मृत्युः	१४. मृत्यु भी है
त्रयीमयः	५. वेदों की साक्षात् मूर्ति	प्रसीदताम्	१८. प्रसन्न हों
ब्रह्मणः	६. और भगवान् के	नः	१७. हम पर
एषः	४. जो यह	सः	१५. ऐसे
धिष्ण्यम् ।	७. ध्यान करने योग्य धाम है	महाविभूतिः ॥	१६. परम ऐश्वर्यशाली प्रभु

श्लोकार्थ—सूर्य जिनके नेत्र हैं । जो यह वेदों की साक्षात् मूर्ति और भगवान् के ध्यान करने योग्य धाम है । जिनके द्वारा जीव देव यान मार्ग से जाता है । जो अमृतमय मुक्ति के द्वार स्वरूप तथा मृत्यु भी हैं । ऐसे परम ऐश्वर्यशाली प्रभु हम पर प्रसन्न हों ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

प्राणादभूद् यस्य चराचराणां प्राणः सहो बलमोजश्च वायुः ।
अन्वास्म सम्राजमिवानुगा वयं प्रसीदतां नः स महाविभूतिः ॥३७॥

पदच्छेद— प्राणात् अभूत् यस्य चर अचराणाम् प्राणः सहः बलम् ओजः च वायुः ।
अन्वास्म सम्राजम् इव अनुगाः वयम् प्रसीदताम् नः सः महाविभूतिः ॥

शब्दार्थ—

प्राणात्	२.	प्राण से ही	अन्वास्म	११.	इन्द्रियों के अधिष्ठातृ देवता हैं
अभूत्	५.	प्रकट हुआ है (तथा)	सम्राजम् इव	९.	चक्रवर्ती सम्राट् के समान
यस्य	१.	जिन प्रभु के	अनुगाः	१३.	उनके अनुचर हैं।
चर अचराणाम्	३.	चराचर का	वयम्	१२.	हम सब
प्राणः	४.	प्राण	प्रसीदताम्	१६.	प्रसन्न हों
सहः	६.	उसके साथ	नः	१५.	हम पर
बलम् ओजः	७.	बल ओज	सः	१०.	वह
च वायुः ।	८.	और वायु (प्रकट हुआ है)	महाविभूतिः ॥	१४	परम ऐश्वर्यशाली ऐसे प्रभु

श्लोकार्थ—जिन प्रभु के प्राण से ही चराचर का प्राण प्रकट हुआ है। तथा उसके साथ बल, ओज और वायु प्रकट हुआ है। चक्रवर्ती सम्राट् के समान वह इन्द्रियों के अधिष्ठातृ देवता हैं। हम सब उनके अनुचर हैं। परम ऐश्वर्यशाली ऐसे प्रभु हम पर प्रसन्न हों ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

श्रोत्राद् दिशो यस्य हृदश्च खानि प्रजज्ञिरे खं पुरुषस्य नाभ्याः ।
प्राणेन्द्रियात्मासुशरीरकेतं प्रसीदतां नः स महाविभूतिः ॥३८॥

पदच्छेद— श्रोत्रात् दिशः यस्य हृदः च खानि प्रजज्ञिरे खम् पुरुषस्य नाभ्याः ।
प्राणेन्द्रिय आत्मा असु शरीर केतम् प्रसीदताम् नः सः महाविभूतिः ॥

शब्दार्थ—

श्रोत्रात्	३.	कानों से	प्राणेन्द्रिय	११.	जो पाँचों प्राण दशों इन्द्रियाँ
दिशः	४.	दिशायें	आत्मा	१२.	मन
यस्य	१.	जिन	असु	१३.	पाँचों असु
हृदः	६.	हृदय से	शरीर	१४.	शरीर का
च	५.	और	केतम्	१५.	आश्रय हैं
खानि	७.	इन्द्रिय गोलक	प्रसीदताम्	१९.	प्रसन्न हों
प्रजज्ञिरे	१०.	उत्पन्न हुआ हैं	नः	१८.	हम पर
खम्	९.	आकाश	सः	१६.	ऐसे
पुरुषस्य	२.	पुरुष के	महाविभूतिः ॥	१७.	परम ऐश्वर्यशाली प्रभु
नाभ्याः ।	८.	नाभि से			

श्लोकार्थ—जिनके पुरुष के कानों से दिशायें, हृदय से इन्द्रिय गोलक, और नाभि से आकाश उत्पन्न हुआ है, जो पाँचों प्राण, दशों इन्द्रियाँ, मन, पाँचों असु शरीर के आश्रय हैं, ऐसे परम ऐश्वर्यशाली प्रभु हम पर प्रसन्न हों ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

बलान्महेन्द्रस्त्रिदशाः प्रसादान्मन्योर्गिरीशो धिषणाद् विरिञ्चः ।
खेभ्यश्च छन्दांस्यृषयो मेढ्रतः कः प्रसीदतां नः स महाविभूतिः ॥३९॥

पदच्छेद— बलात् महेन्द्रः त्रिदशाः प्रसादात् मन्योः गिरीशः धिषणात् विरिञ्चः ।
खेभ्यः च छन्दांसि ऋषयः मेढ्रतः कः प्रसीदताम् नः सः महाविभूतिः ॥

शब्दार्थ—

बलात्	१.	जिनके बल से	खेभ्यः	९.	इन्द्रियों से
महेन्द्रः	२.	इन्द्र	च	११.	और
त्रिदशाः	४.	समस्त देवगण	छन्दांसि	१०.	वेद
प्रसादात्	३.	प्रसन्नता से	ऋषयः	१२.	ऋषि तथा
मन्योः	५.	क्रोध से	मेढ्रतः	१३.	लिङ्ग से प्रजापति उत्पन्न हुये हैं
गिरीशः	६.	शङ्कर	प्रसीदताम्	१७.	प्रसन्न होवें
धिषणात्	७.	बुद्धि से	नः	१६.	हम पर
विरिञ्चः ।	८.	ब्रह्मा	सः	१४.	ऐसे वे
			महाविभूतिः ॥	१५.	ऐश्वर्यशाली परमात्मा

श्लोकार्थ—जिनके बल से इन्द्र, प्रसन्नता से समस्त देवगण, क्रोध से शङ्कर, बुद्धि से ब्रह्मा, इन्द्रियों से वेद और ऋषि तथा लिङ्ग से प्रजापति उत्पन्न हुये हैं। ऐसे वे परम ऐश्वर्यशाली परमात्मा हम पर प्रसन्न हों ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

श्रीर्वक्षसः पितरश्छाययाऽऽसन् धर्मः स्तनादितरः पृष्ठतोऽभूत् ।
द्यौर्यस्य शीर्ष्णोऽप्सरसो विहारात् प्रसीदतां नः स महाविभूतिः ॥४०॥

पदच्छेद— श्रीः वक्षसः पितरः छायया आसन् धर्मः स्तनात् इतरः पृष्ठतः अभूत् ।
द्यौः यस्य शीर्ष्णः अप्सरसः विहारात् प्रसीदताम् नः सः महाविभूतिः ॥

शब्दार्थ—

श्रीः	२.	लक्ष्मी	अभूत् ।	१५.	प्रकट हुई हैं
वक्षसः	१.	जिनके वक्षः स्थल से	द्यौः	१२.	आकाश
पितरः	४.	पितृगण	यस्य	१०.	जिनके
छायया	३.	छाया से	शीर्ष्णः	११.	सिर से
आसन्	५.	उत्पन्न हुये	अप्सरसः	१४.	अप्सरायें
धर्मः	७.	धर्म	विहारात्	१३.	और विहार से
स्तनात्	६.	स्तन से	प्रसीदताम्	१८.	प्रसन्न हों
इतरः	९.	अधर्म	नः	१७.	हम पर
पृष्ठतः	८.	पीठ से	सः महाविभूतिः ॥	१६.	ऐसे परम ऐश्वर्यशाली परमात्मा

श्लोकार्थ—जिनके वक्षः स्थल से लक्ष्मी, छाया से पितृगण उत्पन्न हुये। स्तन से धर्म, पीठ से अधर्म, जिनके सिर से आकाश और विहार से अप्सरायें प्रकट हुई हैं। ऐसे परम ऐश्वर्यशाली परमात्मा हम पर प्रसन्न हों ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

विप्रो मुखं ब्रह्म च यस्य गुह्यं राजन्य आसीद् भुजयोर्बलं च।
ऊर्वोर्विडोजोऽङ्घ्रिरवेदशूद्रौ प्रसीदतां नः स महाविभूतिः ॥४१॥

पदच्छेद— विप्रः मुखम् ब्रह्म च यस्य गुह्यम् राजन्यः आसीत् भुजयोः बलम् च।
ऊर्वोः विड् ओजः अङ्घ्रिःवेद शूद्रौ प्रसीदताम् नः सः महाविभूतिः ॥

विप्रः	३.	ब्राह्मण	बलम्	१०.	बल
मुखम्	२.	मुख से	च।	६.	और
ब्रह्म	६.	वेद	ऊर्वोःविड्	११.	जंघाओं से वैश्य (और)
च	४.	और	ओजः	१२.	उनकी वृत्ति
यस्य	१.	जिनके	अङ्घ्रिःअवेद	१३.	चरणों से वेदबाह्य
गुह्यम्	५.	अत्यन्त रहस्यमय	शूद्रौ	१४.	शूद्र और उनकी सेवा प्रकट हुई है
राजन्यः	८.	क्षत्रिय	प्रसीदताम्	१९.	प्रसन्न हों
आसीत्	१५.	प्रकट हुई है	नः	१८.	हम पर
भुजयोः	७	भुजाओं से	सः	१६.	वे
			महाविभूतिः ॥	१७.	परम ऐश्वर्यशाली परमात्मा

श्लोकार्थ—जिनके मुख से ब्राह्मण और अत्यन्त रहस्यमय वेद, भुजाओं से क्षत्रिय और बल, जंघाओं से वैश्य और उनकी वृत्ति, चरणों से वेदबाह्य, शूद्र और उनकी सेवा प्रकट हुई है, वे परम ऐश्वर्यशाली परमात्मा हम पर प्रसन्न हों॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

लोभोऽधरात् प्रीतिरुपर्यभूद् द्युतिर्नस्तः पशव्यः स्पर्शेन कामः।
भ्रुवोर्यमः पक्ष्मभवस्तु कालः प्रसीदतां नः स महाविभूतिः ॥४२॥

पदच्छेद— लोभः अधरात् प्रीतिः ऊपरि अभूत् द्युतिः नस्तः पशव्यः स्पर्शेन न कामः।
भ्रुवः यमः पक्ष्म भवः तु कालः प्रसीदताम् नः सः महाविभूतिः ॥

शब्दार्थ—

लोभः	२.	लोभ और	भ्रुवः	६.	भौहों से
अधरात्	१.	जिनके अधर से	यमः	१०.	यम
प्रीतिः ऊपरि	३.	ओष्ठ से प्रीति	पक्ष्म	१२.	नेत्र के रोओं से
अभूत्	५	हुई है	भवः	१४	उत्पत्ति
द्युतिः	६.	कान्ति	तु	११.	और
नस्तः	४.	नासिका से	कालः	१३.	कालकी
पशव्यः	८.	पशुओं का प्रिय	प्रसीदताम्	१६.	प्रसन्न हों
स्पर्शेन	७.	स्पर्श से	नः	१८	हम पर
कामः।	६.	काम	सः	१६.	वे
			महाविभूतिः ॥	१७.	परम ऐश्वर्यशाली परमात्मा

श्लोकार्थ—जिनके अधर से लोभ, ओष्ठ से प्रीति और नासिका से कान्ति, स्पर्श से पशुओं का प्रिय काम, भौहों से यम और नेत्र के रोओं से काल की उत्पत्ति हुई है, वे परम ऐश्वर्य शाली परमात्मा हम पर प्रसन्न हों॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

द्रव्यं वयः कर्म गुणान्विशेषं यद्योगमायाविहितान्वदन्ति ।
यद् दुर्विभाव्यं प्रबुधापबाधं प्रसीदतां नः स महाविभूतिः ॥४३॥

पदच्छेद— द्रव्यम् वयः कर्म गुणान् विशेषम् यत् योगमाया विहितान् वदन्ति ।
यत् दुर्विभाव्यम् प्रबुध अपबाधम् प्रसीदताम् नः सः महाविभूतिः ॥

शब्दार्थ—

द्रव्यम्	१.	पञ्चभूत	यत्	८.	जो कुछ
वयः	२.	काल	दुर्विभाव्यम्	९.	निर्वचनीय या अनिर्वचनीय है
कर्म	३.	कर्म	प्रबुध	६.	विवेकी पुरुषों के द्वारा
गुणान्	४.	इत्यादि गुण	अपबाधम्	७.	बाधित किये जाने योग्य
विशेषम्	५.	विशेष पदार्थ हैं	प्रसीदताम्	१८.	प्रसन्न हों
यत्	१०.	वे सब	नः	१७.	हम पर
योगमाया	११.	योग माया के द्वारा	सः	१४.	वे
विहितम्	१२.	बताये हुये	महा	१५.	परम
वदन्ति ।	१३.	कहे जाते हैं	विभूतिः ॥	१६.	ऐश्वर्यशाली परमात्मा

श्लोकार्थ—पञ्चभूत काल इत्यादि गुण विशेष पदार्थ हैं । विवेकी पुरुषों के द्वारा बाधित किये जाने योग्य जो कुछ निर्वचनीय या अनिर्वचनीय हैं, वे सब योग माया के द्वारा बताये गये कहे जाते हैं । वे परम ऐश्वर्यशाली परमात्मा हम पर प्रसन्न हों ।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

नमोऽस्तु तस्मा उपशान्तशक्तये स्वाराज्यलाभप्रतिपूरितात्मने ।
गुणेषु मायारचितेषु वृत्तिभिर्न सज्जमानाय नभस्वदूतये ॥४४॥

पदच्छेद— नमः अस्तु तस्मै उपशान्त शक्तये स्वाराज्य लाभ प्रति पूरित आत्मने ।
गुणेषु माया रचितेषु वृत्तिभिः न सज्जमानाय नभस्वत् ऊतये ॥

शब्दार्थ—

नमः	१७.	नमस्कार	आत्मने ।	१६.	ऐसे आत्मस्वरूप भगवान् को
अस्तु	१८.	है	गुणेषु	३.	गुणों में
तस्मै	९.	उन	माया	१.	जो माया
उपशान्त	१५.	शान्त हो गई हैं	रचितेषु	२.	निर्मित
शक्तये	१४.	जिन परमात्मा में समस्तशक्तियाँ	वृत्तिभिः	४.	दर्शनीय वृत्तियों के द्वारा
स्वाराज्य	१०	आत्मानन्द के	न	६.	नहीं होवे
लाभ	११.	लाभ से	सज्जमानाय	५.	आसक्त
प्रति	१२.	परि	नभस्वत्	७.	वायु के समान
पूरित	१३	पूर्ण	ऊतये ॥	८.	लीला वाले

श्लोकार्थ—जो माया के गुणों में दर्शनीय वृत्तियों के द्वारा आसक्त नहीं होते, वायु के समान लीला वाले उन आत्मानन्द के लाभ से परिपूर्ण जिन परमात्मा की समस्त शक्तियाँ शान्त हो गई हैं, ऐसे आत्मस्वरूप परमात्मा को नमस्कार है ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

स त्वं नो दर्शयात्मानमस्मत्करणगोचरम् ।
प्रपन्नानां दिदृक्षूणां सस्मितं ते मुखाम्बुजम् ॥४५॥

पदच्छेद— सः त्वम् नः दर्शय आत्मानम् अस्मत् करण गोचरम् ।
प्रपन्नानाम् दिदृक्षूणाम् सस्मितम् ते मुख अम्बुजम् ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	हे प्रभो !	गोचरम् ।	१०.	दर्शन करना चाहते हैं
त्वम्	११.	आप कृपा करके	प्रपन्नानाम्	३.	हम शरणागत
नः	१२.	हमें	दिदृक्षूणाम्	२.	आपके दर्शन की इच्छा वाले
दर्शय	१४.	दर्शन कराइये	सस्मितम्	५.	मुसकान युक्त
आत्मानम्	१३.	अपना	ते	४.	आपके
अस्मत्	८.	इन्हीं	मुख	६.	मुख
करण	९.	नेत्रों से	अम्बुजम् ॥	७.	कमल का

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आपके दर्शन की इच्छा वाले हम शरणागत आपके मुख कमल का इन्हीं नेत्रों से दर्शन करना चाहते हैं । आप कृपा करके हमें अपना दर्शन कराइये ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

तैस्तैः स्वेच्छाधृतै रूपैः काले काले स्वयं विभो ।
कर्म दुर्विषहं यन्नो भगवांस्तत् करोति हि ॥४६॥

पदच्छेद— तैः तैः स्वेच्छा धृतैः रूपैः काले-काले स्वयम् विभो ।
कर्म दुर्विषहम् यत् नः भगवान् तत् करोति हि ॥

शब्दार्थ—

तैः तैः	५.	अनेकों	कर्म	९.	काम
स्वेच्छा	४.	अपनी इच्छा से	दुर्विषहम्	११.	अत्यन्त कठिन होता है
धृतैः	७.	धारण करते हैं	यत्	८.	जो
रूपैः	६.	रूप	नः	१०.	हमारे लिये
काले-काले	२.	समय-समय पर	भगवान्	१२.	हे प्रभु ! आप
स्वयम्	३.	स्वयम् ही	तत्	१३.	उसे
विभो ।	१.	हे प्रभो ! आप	करोति हि ॥	१४.	स्वयं कर देते हैं

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आप समय-समय पर स्वयम् ही अपनी इच्छा से अनेकों रूप धारण करते हैं । जो काम हमारे लिये अत्यन्त कठिन होता है, हे प्रभु ! आप उसे स्वयं कर देते हैं ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

क्लेशभूर्यल्पसाराणि कर्माणि विफलानि वा ।
देहिनां विषयार्तानां न तथैवार्पितं त्वयि ॥४७॥

पदच्छेद— क्लेश भूरि अल्प साराणि कर्माणि विफलानि वा ।
देहिनाम विषय आर्तानाम् न तथैव अर्पितम् त्वयि ॥

शब्दार्थ—

क्लेश	४.	कर्म करने में क्लेश	देहिनाम्	३.	देहाभिमानियों को
भूरि	५.	अधिक होता है	विषय	१.	विषयों के
अल्प	७.	कम मिलता है	आर्तानाम्	२.	लोभ में पड़े हुये
सराराणि	६.	और फल	न	१४.	नहीं होता है
कर्माणि	९.	उनके कर्म	तथैव	१३.	कर्मों में ऐसा
विफलानि	१०.	असफल भी होते हैं	अर्पितम्	१२	अर्पित भाव से किये गये
वा ।	८.	अथवा	त्वयि ॥	११.	आपको

श्लोकार्थ— विषयों के लोभ में पड़े हुये देहाभिमानियों को कर्म करने में क्लेश अधिक होता है और फल कम मिलता है । अथवा उनके कर्म असफल भी होते हैं । आप को अर्पित भाव से किये गये कर्मों में ऐसा नहीं होता ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

नावमः कर्मकल्पोऽपि विफलायेश्वरार्पितः ।
कल्पते पुरुषस्यैष स ह्यात्मा दयितो हितः ॥४८॥

पदच्छेद— न अवमः कर्मकल्पः अपि विफलाय ईश्वर अर्पितः ।
कल्पते पुरुषस्य एषः सः हि आत्मा दयितः हितः ॥

शब्दार्थ—

न	७.	नहीं होता	कल्पते	१४.	माने गये हैं
अवमः	३.	छोटे से छोटा	पुरुषस्य	१०.	जीवात्मा का
कर्मकल्पः	४.	कर्माभास	एषः	९.	इस
अपि	५.	भी	सः हि	८.	वे परमात्मा
विफलानि	६.	कभी विफल	आत्मा	११.	स्वरूप
ईश्वर	१.	भगवान् को	दयितः	१२.	परम प्रियतम और
अर्पितः ।	२.	समर्पित किया हुआ	हितः ॥	१३.	हितैषी

श्लोकार्थ—भगवान् को समर्पित किया हुआ छोटे से छोटा कर्माभास भी कभी विफल नहीं होता । वे परमात्मा इस जीवात्मा का स्वरूप, परम प्रियतम और हितैषी माने गये हैं ॥

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

यथा हि स्कन्धशाखानां तरोर्मूलावसेचनम् ।
एवमाराधनं विष्णोः सर्वेषामात्मनश्च हि ॥४९॥

पदच्छेद— यथा हि स्कन्ध शाखानाम् तरोः मूल अवसेचनम् ।
एवम् आराधनम् विष्णोः सर्वेषाम् आत्मनः च हि ॥

शब्दार्थ—

यथाहि	१.	जैसे	एवम्	७.	को ही सींचना से (वैसे ही)
स्कन्ध	५.	उसकी बड़ी शाखायें	आराधनम्	९.	आराधना
शाखानाम्	६.	और छोटी डालियों	विष्णोः	८.	भगवान् की
तरोः	२.	वृक्ष की	सर्वेषाम्	१०.	सम्पूर्ण प्राणियों की
मूल	३.	जड़ को	आत्मनः	१२.	अपनी भी आराधना है
अवसेचनम् ।	४.	पानी से सींचना	च हि ॥	११.	और

श्लोकार्थ—जैसे वृक्ष की जड़ को पानी से सींचना उसकी बड़ी शाखाओं और छोटी डालियों को ही सींचना है, वैसे ही सम्पूर्ण प्रणियों की और अपनी भी आराधना है ॥

पञ्चाशः श्लोकः

नमस्तुभ्यमनन्ताय दुर्वितर्क्यात्मकर्मणे ।
निर्गुणाय गुणेशाय सत्त्वस्थाय च साम्प्रतम् ॥५०॥

पदच्छेद— नमः तुभ्यम् अनन्ताय दुर्वितर्क्य आत्मकर्मणे ।
निर्गुणाय गुणेशाय सत्त्वस्थाय च साम्प्रतम् ॥

शब्दार्थ

नमः	१०.	नमस्कार है	निर्गुणाय	७.	गुणों से परे रहकर भी सब
तुभ्यम्	९.	आपको	गुणेशाय	८.	गुणों के स्वामी हैं
अनन्ताय	१.	हे अनन्त !	सत्त्वस्थाय	६.	सत्त्वगुण में स्थित आप
दुर्वितर्क्य	२.	तर्क-वितर्क से परे हैं	च	४.	और
आत्मकर्मणे ।	२.	आपकी लीलायें	साम्प्रतम् ॥	५.	इस समय

श्लोकार्थ—हे अनन्त ! आपकी लीलायें तर्क-वितर्क से परे हैं । और इस समय सत्त्व गुण में स्थित रहकर भी सब गुणों के स्वामी हैं । आपको नमस्कार है ॥

इतिश्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
अष्टमे स्कन्धे अमृतमथने पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

षष्ठः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

एवं स्तुतः सुरगणैर्भगवान् हरिरीश्वरः ।
तेषामाविरभूद् राजन्सहस्त्रार्कोदयद्युतिः ॥१॥

पदच्छेद— एवम् स्तुतः सुरगणैः भगवान् हरिः ईश्वरः ।
तेषाम् आविः अभूत् राजन् सहस्त्र अर्क उदयद्युतिः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	९.	जब इस प्रकार	तेषाम्	११.	तब वे उनके बीच में
स्तुतः	१०.	स्तुति की	आविः अभूत्	१२.	प्रकट हो गये
सुरगणैः	२.	देवताओं ने	राजन्	१.	हे परीक्षित् !
भगवान्	७.	भगवान्	सहस्त्र अर्क	४.	हजारों सूर्यों के समान
हरिः	८.	श्री हरि की	उदय	३.	उदय हुये
ईश्वरः ।	६.	सर्वशक्तिमान्	द्युतिः ॥	५.	प्रकाशमान

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! देवताओं ने उदय हुये हजारों सूर्यों के समान प्रकाशमान सर्वशक्तिमान् भगवान् श्री हरि की जब इस प्रकार स्तुति की तब वे उनके बीच में प्रकट हो गये ॥

द्वितीयः श्लोकः

तेन सहसा सर्वे देवाः प्रतिहतेक्षणाः ।
नापश्यन्खं दिशः क्षोणिमात्मानं च कुतो विभुम् ॥२॥

पदच्छेद— तेन एव सहसा सर्वे देवाः प्रतिहत ईक्षणाः ।
न अपश्यन् खम् दिशः क्षोणिम् आत्मानम् च कुतः विभुम् ॥

शब्दार्थ—

तेन एव	१.	भगवान् की उस	न अपश्यन्	१२.	नहीं देख सके
महसा	२.	प्रभा से	खम्	९.	आकाश
सर्वे	३.	सभी	दिशः क्षोणिम्	१०.	दिशाओं, पृथ्वी और
देवाः	४.	देवताओं की	आत्मानम्	११.	अपने शरीर को भी
प्रतिहत	६.	चौंधिया गईं	च कुतः	८.	तो क्या
ईक्षणाः ।	५.	आँखें	विभुम् ॥	७.	वे भगवान् को

श्लोकार्थ— भगवान् की उस प्रभा से सभी देवताओं की आँखें चौंधिया गईं । वे भगवान् की तो क्या आकाश, दिशायें, पृथ्वी और अपने आपको भी नहीं देख सके ॥

तृतीयः श्लोकः

विरिञ्चो भगवान्दृष्ट्वा सह शर्वेण तां तनुम् ।
स्वच्छां मरकतश्यामां कञ्जगर्भारुणेक्षणाम् ॥३॥

पदच्छेद— विरिञ्चः भगवान् दृष्ट्वा सह शर्वेण ताम् तनुम् ।
स्वच्छाम् मरकत श्यामाम् कञ्ज गर्भ अरुण ईक्षणाम् ॥

शब्दार्थ—

विरिञ्चः	२.	ब्रह्मा जी ने	स्वच्छाम्	६.	स्वच्छ
भगवान्	१.	भगवान्	मरकत	५.	मरकत मणि के समान
दृष्ट्वा	१४.	दर्शन किया	श्यामाम्	७.	श्यामल और
सह	४.	साथ	कञ्ज	८.	कमल के
शर्वेण	३.	शङ्कर जी के	गर्भ	९.	भीतरी भाग के समान
ताम्	१२.	उस	अरुण	१०.	लाल
तनुम्	१३.	दिव्य शरीर का	ईक्षणाम् ॥	११.	नेत्रों वाले

श्लोकार्थ—भगवान् ब्रह्मा जी ने शङ्कर जी के साथ मरकत मणि के समान स्वच्छ श्यामल और कमल के भीतरी भाग के समान लाल नेत्रों वाले उस दिव्य शरीर का दर्शन किया ॥

चतुर्थः श्लोकः

तप्तहेमावदातेन लसत्कौशेयवाससा ।
प्रसन्नचारुसर्वाङ्गीं सुमुखीं सुन्दरभ्रुवम् ॥४॥

पदच्छेद— तप्त हेम अवदातेन लसत् कौशेय वाससा ।
प्रसन्नचारु सर्वाङ्गीं सुमुखीम् सुन्दर भ्रुवम् ॥

शब्दार्थ—

तप्त	३.	तपे हुये	प्रसन्न	१०.	प्रसन्नता फूट रही थी
हेम	४.	सोने के समान	चारु	८.	सुन्दर थे
अवदातेन	५.	सुन्दर	सर्वाङ्गी	७.	सभी अङ्ग
लसत्	६	सुशोभित हो रहा था	सुमुखीम्	९.	मुख से
कौशेय	१.	रेशमी	सुन्दर	१२.	सुन्दर थीं
वाससा ।	२.	पीताम्बर	भ्रुवम् ॥	११.	(और) भौहें अत्यन्त

श्लोकार्थ— रेशमी पीताम्बर तपे हुये सोने के समान सुन्दर सुशोभित हो रहा था । सभी अङ्ग सुन्दर थे । मुख से प्रसन्नता फूट रही थी और भौहें अत्यन्त सुन्दर थीं ॥

पञ्चमः श्लोकः

महामणिकिरीटेन केयूराभ्यां च भूषिताम् ।
कर्णाभरणनिर्भातकपोलश्रीमुखाम्बुजाम् ॥५॥

पदच्छेद— महामणि किरीटेन केयूराभ्याम् च भूषिताम् ।
कर्ण आभरण निर्भात कपोल श्रीमुख अम्बुजाम् ॥

शब्दार्थ—

महामणि	१.	सिर पर महामणिमय	आभरण	७.	आभूषण कुण्डलों की
किरीटेन	२.	किरीट	निर्भात	८.	चमक से
केयूराभ्याम्	४.	भुजाओं में बाजू बन्द	कपोल	९.	कपोलों की
च	३.	और	श्री	१०.	शोभा बढ़ा रहे थे
भूषिताम् ।	५.	सुशोभित थे	मुख	११.	मुख
कर्ण	६.	कानों के	अम्बुजाम् ॥	१२.	कमल के समान खिल रहा था

श्लोकार्थ—सिर पर मणिमय किरीट और भुजाओं में बाजू बन्द सुशोभित थे । कानों के आभूषण कुण्डलों की चमक से कपोलों की शोभा बढ़ा रहे थे । मुख कमल के समान खिल रहा था ॥

षष्ठः श्लोकः

काञ्चीकलापवलयहारनूपुरशोभिताम् ।
कौस्तुभाभरणां लक्ष्मीं बिभ्रतीं वनमालिनीम् ॥६॥

पदच्छेद— काञ्चो कलाप वलय हार नपुर शोभिताम् ।
कौस्तुभ आभरणाम् लक्ष्मीम् बिभ्रतीम् वन मालिनीम् ॥

शब्दार्थ—

काञ्ची	१.	कमर में करधनी की	कौस्तुभ	७.	गले में कौस्तुभ मणि
कलाप	२.	लड़ियां	आभरणाम्	११.	आभूषण
वलय	३.	हाथों में कंगन	लक्ष्मीम्	८.	वक्षः स्थल पर लक्ष्मीम्
हार	४.	गले में हार और	बिभ्रतीम्	१२.	सुशोभित हो रहे थे
नूपुर	५.	पैरों में नूपुर	वन	९.	तथा वन
शोभिताम् ।	६.	शोभायमान थे	मालिनीम् ॥	१०.	माला आदि

श्लोकार्थ—कमर में करधनी की लड़ियां, हाथों में कंगन, गले में हार और पैरों में नूपुर शोभायमान थे । गले में कौस्तुभ मणि, वक्षः स्थल पर लक्ष्मी तथा वनमाला आदि आभूषण सुशोभित हो रहे थे ॥

सप्तमः श्लोकः

सुदर्शनादिभिः स्वास्त्रैर्मूर्तिमद्भिरुपासिताम् ।
तुष्टाव देवप्रवरः सशर्वः पुरुषं परम् ।
सर्वामरगणैः साकं सर्वाङ्गैरवनिं गतैः ॥७॥

पदच्छेद— सुदर्शन आदिभिः स्व अस्त्रैः मूर्तिमद्भिः उपासिताम् ।
तुष्टाव देव प्रवरः सशर्वः पुरुषम् परम् ।
सर्व अमर गणैः साकम् सर्व अङ्गैः अवनिम् गतैः ॥

शब्दार्थ—

सुदर्शन	१.	सुदर्शन चक्र	पुरुषम्	१५.	पुरुष परमात्मा की
आदिभिः	२.	आदि	परम्	१४.	परम
स्व अस्त्रैः	३.	निज अस्त्र	सर्व	८.	सभी
मूर्तिमद्भिः	४.	मूर्तिमान् होकर	अमर गणैः	९.	देवताओं को
उपासिताम्	५.	उनकी सेवा कर रहे थे	साकम्	१०.	साथ लेकर
तुष्टाव	१६.	स्तुति करने लगे	सर्वअङ्गैः	१२	साष्टाङ्ग
देव प्रवरः	७	प्रधान देवगण	अवनिम्	११.	पृथ्वी पर
सशर्वः ।	६.	शङ्कर जी सहित	गतैः ॥	१३.	गिर कर

श्लोकार्थ—सुदर्शन चक्र आदि निज अस्त्र मूर्तिमान् होकर उनकी सेवा कर रहे थे शङ्कर जी सहित प्रधान देवगण सभी देवाताओं को साथ लेकर पृथ्वी पर साष्टांग गिरकर परम पुरुष परमात्मा की स्तुति करने लगे ॥

अष्टमः श्लोकः

ब्रह्मोवाच— **अजातजन्मस्थितिसंयमायागुणाय निर्वाणसुखार्णवाय ।**
अणोरणिम्नेऽपरिगण्यधाम्ने महानुभावाय नमो नमस्ते ॥८॥

पदच्छेद— अजात जन्मस्थिति संयमाय अगुणाय निर्वाण सुख अर्णवाय ।
अणोः अणिम्ने अपरिगण्य धाम्ने महानुभावाय नमः नमः ते ॥

शब्दार्थ—

अजात	४	सम्बन्ध रहित हैं	अणोः	१०.	सूक्ष्म हैं
जन्म	१.	जो जन्म	अणिम्ने	९.	जो सूक्ष्म से भी
स्थिति	२.	स्थिति और	अपरिगण्य	१२.	अनन्त है
संयमाय	३.	संयम या प्रलय से	धाम्ने	११.	जिनका स्वरूप
अगुणाय	५.	प्राकृत गुणों से रहित	महानुभावाय	१३	ऐसे परम ऐश्वर्यशाली
निर्वाण	६.	मोक्ष स्वरूप	नमः	१५.	नमस्कार है
सुख	७.	परमानन्द के	नमः	१६.	नमस्कार है
अर्णवाय ।	८.	महान् समुद्र हैं	ते ॥	१४.	आप परमात्मा को

श्लोकार्थ—जो जन्म, स्थिति और संयम वा प्रलय से सम्बन्ध रहित हैं । प्राकृत गुणों से रहित मोक्ष स्वरूप परमानन्द के महान् समुद्र हैं । जो सूक्ष्म से भी सूक्ष्म हैं । जिनका स्वरूप अनन्त है । ऐसे परम ऐश्वर्यशाली आप परमात्मा को नमस्कार है नमस्कार है ॥

नवमः श्लोकः

रूपं तवैतत् पुरुषर्षभेज्यं श्रेयोऽर्थिभिर्वैदिकतान्त्रिकेण ।
योगेन धातः सह नस्त्रिलोकान् पश्याम्यमुष्मिन् नु ह विश्वमूर्तौ ॥९॥

पदच्छेद— रूपम् तव एतत् पुरुषर्षभ इज्यम् श्रेयः अर्थिभिः वैदिकतान्त्रिकेण ।
योगेन धातः सह नः त्रिलोकान् पश्यामि अमुष्मिन् नु ह विश्वमूर्तौ ॥

शब्दार्थ—

रूपम्	९.	स्वरूप की	योगेन	६.	विधि से
तव	७.	आपके	धातः	१०.	हे प्रभो !
एतत्	८.	इसी	सह	१४.	देवताओं के साथ
पुरुषर्षभ	१.	हे पुरुषोत्तम ।	नः	१५.	हमें
इज्यम्	१०.	उपासना करते हैं	त्रिलोकान्	१६.	तीनों लोक
श्रेयः	२.	अपना कल्याण	पश्यामि	१७.	दिखाई दे रहे थे
अर्थिभिः	३.	चाहने वाले (साधक)	अमुष्मिन्	१२.	इस
वैदिक	४.	वेदोक्त एवम्	नु ह	११.	आपके
तान्त्रिकेण ।	५.	पाञ्चरात्रोक्त	विश्वमूर्तौ ॥	१३.	विश्वमयस्वरूप में

श्लोकार्थ—हे पुरुषोत्तम ! अपना कल्याण चाहने वाले साधक वेदोक्त एवम् पाञ्चरात्रोक्त विधि से आपके इसी स्वरूप की उपासना करते हैं । हे प्रभो ! आपके विश्वमय स्वरूप में देवताओं के साथ हमें तीनों लोक दिखाई दे रहे हैं ॥

दशमः श्लोकः

त्वय्यग्र आसीत् त्वयि मध्य आसीत् त्वय्यन्त आसीदिदमात्मतन्त्रे ।
त्वमादिरन्तो जगतोऽस्य मध्यं घटस्य मृत्स्नेव परः परस्मात् ॥१०॥

पदच्छेद— त्वयि अग्रे आसीत् त्वयि मध्ये आसीत् त्वयि अन्ते आसीत् इदम् आत्मतन्त्रे ।
त्वम् आदिः अन्तः जगतः अस्य मध्यम् घटस्य मृत्स्ना इव परः परस्मात् ॥

शब्दार्थ—

त्वयि	४.	आप में ही	त्वम्	१२.	आप ही
अग्रे	३.	पहले	आदिः	१५.	आदि
आसीत्	५.	था	अन्तः	१७.	अन्त हैं
त्वयि	७.	आप में ही	जगतः	१४.	संसार के
मध्ये	६.	मध्य में भी	अस्य	१३.	इस
आसीत्	८.	स्थित है	मध्यम्	१६.	मध्य और
त्वयि	९.	आप में ही	घटस्य	१९.	घड़े का आदि मध्य और अन्त
अन्ते	१०.	अन्त में भी	मृत्स्ना	२०.	मिट्टी हैं (वैसे ही
आसीत्	११.	लीन होगा	एव	१८.	जैसे
इदम्	२.	यह जगत्	परः	२२.	परे हैं
आत्मतन्त्रे ।	१.	हे परम स्वरूप प्रभो !	परस्मात् ॥	२१.	आप कार्य कारण से

श्लोकार्थ—हे परम स्वरूप प्रभो ! यह जगत् पहले आप में ही था । मध्य में भी आप में ही स्थित है । आप में ही अन्त में लीन होगा । आप ही इस संसार के आदि, मध्य और अन्त हैं । जैसे घड़े का आदि, मध्य और अन्त मिट्टी है, वैसे ही आप कार्य कारण से परे हैं ।

एकादशः श्लोकः

त्वं माययाऽऽत्माश्रयया स्वयेदं निर्माय विश्वं तदनुप्रविष्टः ।
पश्यन्ति युक्ता मनसा मनीषिणो गुणव्यवायेऽप्यगुणं विपश्चितः ॥११॥

पदच्छेद— त्वम् मायया आत्म आश्रयया स्वया इदम् निर्माय विश्वम् तत् अनुप्रविष्टः ।
पश्यन्ति युक्ताः मनसा मनीषिणः गुणव्यवाये अपि अगुणम् विपश्चितः ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	१. आप	पश्यन्ति	१८. साक्षात्कार करते हैं
मायया	४. माया से	युक्ताः	१२. एकाग्र
आत्म आश्रयया	३. अपनी आश्रय में रहने वाली	मनसा	१३. मन से
स्वया	२. अपने ही	मनीषिणः	११. शास्त्रज्ञ पुरुष
इदम्	५. इस	गुण	१४. गुणों के
निर्माय	७. रचना करते हैं (और)	व्यवाये	१५. परिणाम में
विश्वम्	६. संसार की	अपि	१६. भी आपके
तत्	८. इसमें	अगुणम्	१७. निर्गुण स्वरूप का ही
अनुप्रविष्टः ।	९. फिर से प्रवेश करते हैं	विपश्चितः ॥	१०. अतः विद्वान् और

श्लोकार्थ—आप अपने ही आश्रय में रहने वाली अपनी माया से इस संसार की रचना करते हैं। और इसमें फिर से प्रवेश करते हैं। अत: विद्वान् और शास्त्रज्ञ पुरुष एकाग्र मन से गुणों के परिणाम में भी आपके निर्गुण स्वरूप का ही साक्षात्कार करते हैं ॥

द्वादशः श्लोकः

यथाग्निमेधस्यमृतं च गोषु भुव्यन्नमम्बूद्यमने च वृत्तिम् ।
योगैर्मनुष्या अधियन्ति हि त्वां गुणेषु बुद्ध्या कवयो वदन्ति ॥१२॥

पदच्छेद— यथा अग्निम् एधसि अमृतम् च गोषु भुवि अन्नम् अम्बु उद्यमने च वृत्तिम् ।
योगैः मनुष्याः अधियन्ति हि त्वाम् गुणेषु बुद्ध्या कवयः वदन्ति ॥

शब्दार्थ

यथा	१. जैसे मनुष्य	वृत्तिम् ।	१०. जीविका प्राप्त कर लेते हैं वैसे ही
अग्निम्	३. आग	योगैः	१५. भक्ति योग और ज्ञान योग से
एधसि	२. लकड़ी से	मनुष्याः	१२. पुरुष
अमृतम् च	५. अमृत के समान दूध और	अधियन्ति	१७. प्राप्त कर लेते हैं (और)
गोषु	४. गौ से	हि त्वाम्	१६. आपको
भुवि अन्नम्	६. पृथ्वी से, अन्न	गुणेषु	१३. शुद्ध
अम्बु	७. जल	बुद्ध्या	१४. बुद्धि के द्वारा
उद्यमने	९. व्यापार से	कवयः	११. विवेकी
च	८. और	वदन्ति ॥	१८. वर्णन करते हैं

श्लोकार्थ—जैसे मनुष्य लकड़ी से आग, गौ से अमृत के समान दूध और पृथ्वी से अन्न, जल और व्यापार से जीविका प्राप्त कर लेते हैं, वैसे ही विवेकी पुरुष शुद्ध बुद्धि के द्वारा भक्तियोग और ज्ञान योग से आपको प्राप्त कर लेते हैं और वर्णन करते हैं ॥

त्रयोदशः श्लोकः

तं त्वां वयं नाथ समुज्जिहानं सरोजनाभातिचिरेप्सितार्थम् ।
दृष्ट्वा गता निर्वृतिमद्य सर्वे गजा दवार्ता इव गाङ्गमम्भः ॥१३॥

पदच्छेद— तम् त्वाम् वयम् नाथ सम् उज्जिहानम् सरोजनाभ अतिचिर ईप्सित अर्थम् ।
दृष्ट्वा गता निर्वृतिम् अद्य सर्वे गजाः दवार्ताः इव गाङ्गम् अम्भः ॥

शब्दार्थ—

तम्	१३.	आपके	दृष्ट्वा	१७.	आपका दर्शन करके
त्वाम्	८.	आपके	गताः	२०.	अनुभव करते हैं
वयम्	११.	हम	निर्वृतिम्	१९.	सुख और शान्ति का
नाथ	१६.	हे स्वामी !	अद्य	१८.	आज
सम्	१४.	भली भाँति	सर्वे	१२.	सब लोग
उज्जिहानम्	१५.	आविर्भाव से	गजाः	३.	हाथी
सरोजनाभ	१.	हे कमलनाभ !	दवार्ताः	२.	जैसे दावाग्नि से झुलसता हुआ
अतिचिर	७.	बहुत दिनों से	इव	६.	उसी प्रकार
ईप्सित	९.	दर्शनों के लिये	गाङ्गम्	४.	गङ्गा
अर्थम् ।	१०.	लालायित हो रहे	अम्भः ॥	५.	जल में डुबकी लगाकर शान्ति पाता है

श्लोकार्थ—हे कमलनाभ ! जैसे दावाग्नि से झुलसा हुआ हाथी गङ्गा जल में डुबकी लगाकर शान्ति प्राप्त करता है, उसी प्रकार बहुत दिनों से आपके दर्शनों के लिये लालायित हो रहे हम सब लोग आपके भली-भाँति आविर्भाव से, हे स्वामी, आपका दर्शन करके आज सुख और शान्ति का अनुभव करते हैं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

स त्वं विधत्स्वाखिललोकपाला वयं यदर्थास्तव पादमूलम् ।
समागतास्ते बहिरन्तरात्मन् किं वान्यविज्ञाप्यमशेषसाक्षिणः ॥१४॥

पदच्छेद— सः त्वम् विधत्स्व अखिल लोकपालाः वयम् यत् अर्थाः तव पादमूलम् ।
समागताः ते बहिः अन्तर् आत्मन् किम् वा अन्य विज्ञाप्यम् अशेष साक्षिणः ॥

शब्दार्थ—

सः	१२.	उसे	समागताः	११.	आये हैं
त्वम्	१३.	आप	ते	१.	आप ही
विधत्स्व	१४.	कृपाकरके पूर्ण कीजिये	बहिः	३.	बाहर के
अखिल	६.	समस्त	अन्तर्	२.	हमारे भीतर और
लोकपालाः	७.	लोकपाल	आत्मन्	४.	अन्तरात्मा हैं
वयम्	५.	हम	किम्	१७.	क्या
यत् अर्थाः	८.	जिस उद्देश्य से	वा अन्य	१६.	इस विषय में आप से
तव	९.	आपके	विज्ञाप्यम्	१८.	निवेदन करें
पादमूलम् ।	१०.	चरणों की शरण में	शेष साक्षिणः ॥	१५.	आप तो सबके साथी हैं

श्लोकार्थ—आप ही हमारे भीतर और बाहर के अन्तरात्मा हैं । हम समस्त लोकपाल जिस उद्देश्य से आपके चरणों की शरण में आये हैं, उसे आप कृपा करके पूर्ण कीजिये । आप तो सबके साक्षी हैं । इस विषय में आपसे क्या निवेदन करें ।

पञ्चदशः श्लोकः

अहं गिरित्रश्च सुरादयो ये दक्षादयोऽग्नेरिव केतवस्ते ।
किं वा विदामेश पृथग्विभाता विधत्स्व शं नो द्विजदेवमन्त्रम् ॥१५॥

पदच्छेद— अहम् गिरित्रः च सुर आदयः ये दक्षादयः अग्नेः इव केतवः ते ।
किम् वा विदाम ईश पृथक् विभाता विधत्स्व शम् नः द्विजदेवमन्त्रम् ॥

शब्दार्थ —

अहम् गिरित्रः	२.	मैं शंकर जी	विदाम	१३.	करें
च सुर आदयः	३.	और देवता आदि ऋषि	ईश	१.	हे प्रभो !
ये	५.	जो	पृथक्	१०.	फिर भी पृथक्
दक्षादि	४.	दक्ष आदि	विभाता	११.	प्रतीत होने वाले
अग्नेः	६.	अग्नि से अलग हुई	विधत्स्व	२०.	बताइये
इव	८.	समान	शम्	१८.	कल्याण के लिये
केतवः	७.	चिनगारी के	नः	१९.	वह हमें
ते ।	९.	आपके ही अंश हैं	द्विज	१४.	ब्राह्मण
किम्	१२.	हम क्या	देव	१६.	देवताओं के जो
वा	१५.	अथवा	मन्त्रम् ॥	१७.	करने योग्य हो

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! मैं, शंकर जी और देवता आदि ऋषि दक्षादि जो अग्नि से अलग हुई चिनगारी के समान आपके ही अंश है । फिर भी पृथक् प्रतीत होने वाले हम क्या करें । ब्राह्मण अथवा देवताओं के जो करने योग्य हो कल्याण के लिये वह हमें बताइये ॥

षोडशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं विरिञ्चादिभिरीडितस्तद् विज्ञाय तेषां हृदयं तथैव ।
जगाद जीमूतगभीरया गिरा बद्धाञ्जलीन्संवृतसर्वकारकान् ॥१६॥

पदच्छेद— एवम् विरिञ्च आदिभिः ईडितः तत् विज्ञाय तेषां हृदयं तथैव ।
जगाद जीमूत गभीरया गिरा बद्ध अञ्जलीन् संवृत सर्व कारकान् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	३.	इस प्रकार	जगाद	१६.	बोले
विरिञ्च	१.	ब्रह्मा	जीमूत	१३.	मेघ के समान
आदिभिः	२.	आदि देवताओं ने	गभीरया	१४.	गम्भीर
ईडितः	४.	स्तुति करके	गिरा	१५.	वाणी से
तत् विज्ञाय	१२.	वह बात जानकर भगवान्	बद्ध	८.	जोड़कर खड़े हो गये
तेषाम्	१०.	उनके	अञ्जलीन्	७.	हाथ
हृदयम्	११	हृदय की	संवृत	६.	रोक लीं (और)
तथा एव ।	९.	उसी प्रकार	सर्वकारकान् ॥	५.	अपनी सारी इन्द्रियाँ

श्लोकार्थ—ब्रह्मा आदि देवताओं ने इस प्रकार स्तुति करके अपनी सारी इन्द्रियाँ रोक लीं और हाथ जोड़कर खड़े हो गये । उसी प्रकार उनके हृदय की वह बात जानकर भगवान् मेघ के समान गम्भीर वाणी से बोले ॥

सप्तदश: श्लोक:

एक एवेश्वरस्तस्मिन्सुरकार्ये सुरेश्वरः ।
विहर्तुकामस्तानाह समुद्रोन्मथनादिभिः ॥१७॥

पदच्छेद— एकः एव ईश्वरः तस्मिन् सुर कार्ये सुरेश्वरः ।
विहर्तुं कामः तान् आह समुद्र उन्मथन आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

एकः	२.	अकेले	विहर्तुं	११.	विहार करने की
एव	४.	ही	कामः	१२.	इच्छा से वे
ईश्वरः	३.	भगवान्	तान्	१३.	उन देवताओं से
तस्मिन्	५.	उन	आह	१४.	बोले
सुर	६.	देवताओं के	समुद्र	८.	समुद्र
कार्ये	७.	कार्य में समर्थ थे	उन्मथन	९.	मन्थन
सुरेश्वरः ।	१.	जगत् के स्वामी	आदिभिः ॥	१०.	आदि लीलाओं के द्वारा

श्लोकार्थ——जगत् के स्वामी अकेले भगवान् ही उन देवताओं के कार्य में समर्थ थे । समुद्रमन्थन आदि लीलाओं के द्वारा विहार करने की इच्छा से वे उन देवताओं से बोले ॥

अष्टादश: श्लोक:

श्रीभगवानुवाच—हन्त ब्रह्मन्नहो शम्भो हे देवा मम भाषितम् ।
शृणुतावहिताः सर्वे श्रेयो वः स्याद् यथासुराः ॥१८॥

पदच्छेद— हन्त ब्रह्मन् अहो शम्भो हे देवा मम भाषितम् ।
शृणुत अवहिताः सर्वे श्रेयः वः स्यात् यथा सुराः ॥

शब्दार्थ—

हन्त	१.	हे	शृणुत	१०.	सुनो
ब्रह्मा	२.	ब्रह्मा	अवहिताः	९.	ध्यान से
अहो	३.	हे	सर्वे	६.	तुम सब
शम्भो	४.	शङ्कर	श्रेयः	१४.	कल्याण
हे देवाः	५.	हे देवताओ	वः	१३.	तुम्हारा
मम	७.	मेरे	स्यात्	१५.	होगा
भाषितम् ।	८.	वचन को	यथा	१२.	जिससे
			सुराः ॥	११.	हे देवताओ

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मा, हे शङ्कर, हे देवताओ, ! तुम सब मेरे वचन को ध्यान से सुनो । हे देवताओ ! जिससे तुम्हारा कल्याण होगा ॥

एकोनविंशः श्लोकः

यात दानवदैतेयैस्तावत् सन्धिर्विधीयताम् ।
कालेनानुगृहीतैस्तैर्यावद् वो भव आत्मनः ॥१९॥

पदच्छेद— यात् दानव दैतेयैः तावत् सन्धिः विधीयताम् ।
कालेन अनुगृहीतैः तैः यावत् वः भव आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

यात	८.	आता	कालेन	२.	काल की
दानव	१०.	दैत्यों और	अनुगृहीतैः	३.	कृपा है (अतः)
दैतेयैः	११.	दानवों से	तैः	१.	इस समय उन असुरों पर
तावत्	९.	तब-तक	यावत्	४.	जब-तक
सन्धिः	१२.	सन्धि	वः	५.	तुम्हारी
विधीयताम् ।	१३.	करलो	भव	७.	उन्नति का समय नहीं
			आत्मनः ॥	६.	अपनी

श्लोकार्थ—इस समय उन असुरों पर कालकी कृपा है । अतः जब-तक तुम्हारी अपनी उन्नति का समय नहीं आता तब-तक दैत्यों और दानवों से सन्धि कर लो ॥

विंशः श्लोकः

अरयोऽपि हि सन्धेयाः सति कार्यार्थगौरवे ।
अहिमूषकवद् देवा ह्यर्थस्य पदवीं गतैः ॥२०॥

पदच्छेद— अरयः अपि हि सन्धेयाः सति कार्य अर्थ गौरवे ।
अहि मूषकवत् देवाःहि अर्थस्य पदवीम् गतैः ॥

शब्दार्थ—

अरयः	७.	शत्रु से	गौरवे ।	३.	किसी महान्
अपि	८.	भी	अहि	१२.	सर्प तथा
हि	२.	निश्चय ही	मूषक	१३.	चूहे के
सन्धेयाः	९.	मित्रता कर लेनी चाहिये	वत्	१४.	समान व्यवहार किया जा सकता है
सति	६.	पड़ने पर	देवाःहि	१.	हे देवताओ !
कार्य	५.	मौका	अर्थस्य	१०.	प्रयोजन के
अर्थ	४.	प्रयोजन वश	पदवीम् गतैः ॥	११.	सिद्ध हो जाने पर

श्लोकार्थ—हे देवताओ ! निश्चय ही किसी महान् प्रयोजन वश मौका पड़ने पर शत्रु से भी मित्रता कर लेनी चाहिये । प्रयोजन के सिद्ध हो जाने पर सर्प तथा चूहे के समान व्यवहार किया जा सकता है ॥

एकविंशः श्लोकः

अमृतोत्पादने यत्नः क्रियतामविलम्बितम् ।
यस्य पीतस्य वै जन्तुर्मृत्युग्रस्तोऽमरो भवेत् ॥२१॥

पदच्छेद— अमृत उत्पादने यत्नः क्रियताम् अविलम्बितम् ।
यस्य पीतस्य वै जन्तुः मृत्यु ग्रस्तः अमरः भवेत् ॥

शब्दार्थ—

अमृत	२. अमृत	पीतस्य	७. पीकर
उत्पादने	३. निकालने का	वै जन्तुः	१०. प्राणी भी
यत्नः	४. प्रयत्न	मृत्यु	८. मरने
क्रियताम्	५. करो	ग्रस्तः	९. वाला
अविलम्बितम् ।	१. तुम लोग शीघ्र ही	अमरः	११. अमर
यस्य	६. जिसे	भवेत् ॥	१२. हो जाता है ।

श्लोकार्थ—तुम लोग शीघ्र ही अमृत निकालने का प्रयत्न करो, जिसे पीकर मरने वाला प्राणी भी अमर हो जाता है ॥

द्वाविंशः श्लोकः

क्षिप्त्वा क्षीरोदधौ सर्वा वीरुत्तृणलतौषधीः ।
मन्थानं मन्दरं कृत्वा नेत्रं कृत्वा तु वासुकिम् ॥२२॥

पदच्छेद— क्षिप्त्वा क्षीर उदधौ सर्वाः वीरुत् तृण लता ओषधीः ।
मन्थानम् मन्दरम् कृत्वा नेत्रम् कृत्वा तु वासुकिम् ॥

शब्दार्थ—

क्षिप्त्वा	७. डाल दो	मन्थानम्	१०. मथानी
क्षीर	१. पहले क्षीर	मन्दरम्	९. मंदराचल की
उदधौ	२. सागर में	कृत्वा	११. बनाकर
सर्वाः	३. सब प्रकार के	नेत्रम्	१३. नेती
वीरुत्	४. घास	कृत्वा	१४. बनाओ
तृण	५. तिनके	तु	८. फिर
लता ओषधीः ।	६. लतायें और औषधियाँ	वासुकीम् ॥	१२. वासुकि नाग की

श्लोकार्थ—पहले क्षीर सागर में सब प्रकार के घास, तिनके, लतायें और औषधियाँ डाल दो । फिर मंदराचल की मथानी बनाकर वासुकि नाग की नेती बनाओ ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

सहायेन मया देवा निर्मन्थध्वमतन्द्रिताः ।
क्लेशभाजो भविष्यन्ति दैत्या यूयं फलग्रहाः ॥२३॥

पदच्छेद— सहायेन मया देवाः निर्मन्थध्वम् अतन्द्रिताः ।
क्लेशभाजः भविष्यन्ति दैत्याः यूयम् फलग्रहाः ॥

शब्दार्थ—

सहायेन	३. सहायता से	क्लेशभाजः	७. क्लेश और श्रम ही
मया	२. मेरी	भविष्यन्ति	८. प्राप्त होगा पर
देवाः	१. हे देवताओ !	दैत्याः	६. दैत्यों को तो
निर्मन्थध्वम्	५. मन्थन करो	यूयम्	९. आप लोग
अतन्द्रिताः ।	४. आलस्य त्याग कर समुद्र	फलग्रहाः ॥	१०. उसका फल प्राप्त करेंगे

श्लोकार्थ—हे देवताओ ! मेरी सहायता से आलस्य त्याग कर समुद्र मन्थन करो । दैत्यों को तो क्लेश और श्रम प्राप्त होगा । पर आप लोग उसका फल प्राप्त करोगे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

यूयं तदनुमोदध्वं यदिच्छन्त्यसुराः सुराः ।
न संरम्भेण सिध्यन्ति सर्वेऽर्थाः सान्त्वया यथा ॥२४॥

पदच्छेद— यूयम् तत् अनुमोदध्वम् यत् इच्छन्ति असुराः सुराः ।
न संरम्भेण सिध्यन्ति सर्वे अर्थाः सान्त्वया यथा ॥

शब्दार्थ—

यूयम्	६. तुम	न	१२. नहीं होवे
तत्	५. यह सब	संरम्भेण	८. क्रोध करने से
अनुमोदध्वम्	७. स्वीकार कर लो	सिध्यन्ति	११. सिद्ध
यत्	३. तुमसे जो कुछ	सर्वे	९. वे सब
इच्छन्ति	४. चाहें	अर्थाः	१०. प्रयोजन वैसे
असुराः	२. असुर लोग	सान्त्वया	१४. शान्ति से होते हैं
सुराः ।	१. हे देवताओ !	यथा ॥	१३. जैसे कि

श्लोकार्थ—हे देवताओं ! असुर लोग तुमसे जो कुछ चाहें, वह सब तुम स्वीकार कर लो । क्रोध करने से वे सब प्रयोजन वैसे सिद्ध नहीं होते जैसे कि शान्ति से होते हैं ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

न भेतव्यं कालकूटाद् विषाज्जलधिसम्भवात् ।
लोभः कार्यो न वो जातु रोषः कामस्तु वस्तुषु ॥२५॥

पदच्छेद— न भेतव्यम् काल कूटात् विषात् जलधि सम्भवात् ।
लोभः कार्यो न वः जातु रोषः कामः तु वस्तुषु ॥

शब्दार्थ—

न	६.	नहीं	लोभः	९.	लोभ
भेतव्यम्	७.	डरना चाहिये	कार्यः	११.	करना चाहिये
काल	३.	काल	न	१०.	नहीं
कूटात्	४.	कूट	वः जातु	८.	तुम लोगों को कभी भी
विषात्	५.	विष से	रोषः	१४.	क्रोध नहीं करना चाहिये
जलधि	१.	समुद्र से	कामः	१२.	काम्य
सम्भवात् ।	२.	उत्पन्न	वस्तुषु ॥	१३.	वस्तुओं के न मिलने पर

श्लोकार्थ—समुद्र से उत्पन्न काल-कूट विष से नहीं डरना चाहिये । तुम लोगों को कभी भी लोभ नहीं करना चाहिये । काम्य वस्तुओं के न मिलने पर क्रोध नहीं करना चाहिये ॥

षड्विंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इति देवान्समादिश्य भगवान्पुरुषोत्तमः ।
तेषामन्तर्दधे राजन्स्वच्छन्दगतिरीश्वरः ॥२६॥

पदच्छेद— इति देवान् समादिश्य भगवान् पुरुषोत्तमः ।
तेषाम् अन्तर्दधे राजन् स्वच्छन्द गतिः ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

इति	७.	इस प्रकार	तेषाम्	९.	उनके बीच में ही
देवान्	६.	देवताओं को	अन्तर्दधे	१०.	अन्तर्ध्यान हो गये
समादिश्य	८.	आदेश देकर	राजन्	१.	हे परीक्षित् !
भगवान्	४.	भगवान्	स्वच्छन्द	२.	स्वतन्त्र
पुरुषोत्तमः ।	५.	पुरुषोत्तम	गतिः ईश्वरः ॥	३.	रहने वाले परमात्मा

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! स्वतन्त्र रहने वाले परमात्मा भगवान् पुरुषोत्तम देवताओं को इस प्रकार आदेश देकर उनके बीच में ही अन्तर्ध्यान हो गये ॥

सप्तविंशः श्लोकः

अथ तस्मै भगवते नमस्कृत्य पितामहः ।
भवश्च जग्मतुः स्वं स्वं धामोपेयुर्बलिं सुराः ॥२७॥

पदच्छेद— अथ तस्मै भगवते नमः कृत्य पितामहः ।
भवः च जग्मतुः स्वम् स्वम् धाम उपेयुः बलिम् सुराः ॥

अथ	१.	इसके बाद	च	७.	और
तस्मै	२.	उन	जग्मतुः	११.	चले गये (तब)
भगवते	३.	भगवान् को	स्वम्-स्वम्	९.	अपने-अपने
नमः	४.	नमस्कार	धाम	१०.	लोकों को
कृत्य	५.	करके	उपेयुः	१४.	गये
पितामहः ।	६.	ब्रह्मा	बलिम्	१३.	बलि के पास
भवः	८.	शङ्कर जी	सुराः ॥	१२.	इन्द्रादि देवता

श्लोकार्थ—इसके बाद उन भगवान् को नमस्कार करके ब्रह्मा और शंकर जी अपने-अपने लोकों को चले गये । तब इन्द्रादि देवता बलि के पास गये ॥

शब्दार्थ—

अष्टाविंशः श्लोकः

दृष्ट्वारीनप्यसंयत्ताञ्जातक्षोभान्स्वनायकान् ।
न्यषेधद् दैत्यराट् श्लोक्यः सन्धिविग्रहकालवित् ॥२८॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा अरीन् अपि असंयत्तान् जात क्षोभान् स्वनायकान् ।
न्यषेधत् दैत्यराट् श्लोक्यः संधि विग्रह काल वित् ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	४.	देखकर	न्यषेधत्	१५.	रोक दिया
अरीन्	१.	अपने शत्रुओं को	दैत्यराट्	१४.	दैत्य राज ने उन्हें
अपि	२.	भी	श्लोक्यः	१३.	पवित्र कीर्ति
असंयत्तान्	३.	स्वतन्त्र	संधि	९.	संधि और
जात	७.	हुआ	विग्रह	१०.	विरोध के
क्षोभान्	६.	क्षोभ	काल	११.	अवसर को
स्वनायकान् ।	५.	दैत्य सेनापतियों के मन में	वित् ॥	१२.	जानने वाले

श्लोकार्थ—अपने शत्रुओं को भी स्वतन्त्र देखकर दैत्यसेनापतियों के मन में क्षोभ हुआ । सन्धि और विरोध के अवसर को जानने वाले पवित्र कीर्ति दैत्यराज ने उन्हें रोक दिया ॥

एकोनत्रिंश श्लोकः

ते वैरोचनिमासीनं गुप्तं चासुरयूथपैः ।
श्रिया परमया जुष्टं जिताशेषमुपागमन् ॥२९॥

पदच्छेद— ते वैरोचनिम् आसीनम् गुप्तम् च असुर यूथपैः ।
श्रिया परमया जुष्टम् जित अशेषम् उपागमन् ॥

शब्दार्थ—

ते	१.	वे सब देवता	श्रिया	५.	सम्पत्तियों से
वैरोचनिम्	११.	बलि के	परमया	४.	समस्त
आसीनम्	१०.	राज सिंहासन पर आसीन	जुष्टम्	६.	सेवित
गुप्तम्	३.	सुरक्षित	जित	९.	जीत कर
च	७.	और	अशेषम्	८.	सम्पूर्ण लोकों को
असुरयूथपैः।	२.	असुर सेनापतियों से	उपागमन् ॥	१२.	पास गये

श्लोकार्थ—वे सब देवता असुर-सेनापतियों से सुरक्षित, समस्त सम्पत्तियों से सेवित और सम्पूर्ण लोकों को जीतकर राजसिंहासन पर आसीन बलि के पास गये ॥

त्रिंशः श्लोकः

महेन्द्रः श्लक्ष्णया वाचा सान्त्वयित्वा महामतिः ।
अभ्यभाषत तत् सर्वं शिक्षितं पुरुषोत्तमात् ॥३०॥

पदच्छेद— महेन्द्रः श्लक्ष्णया वाचा सान्त्वयित्वा महामतिः ।
अभ्यभाषत तत् सर्वम् शिक्षितम् पुरुषोत्तमात् ॥

शब्दार्थ—

महेन्द्रः	२.	इन्द्र ने	अभ्यभाषत	१०.	कहीं
श्लक्ष्णया	३.	बड़ी मधुर	तत्	८.	वे
वाचा	४.	वाणी से	सर्वम्	९.	सारी बातें
सान्त्वयित्वा	५.	समझाते हुये	शिक्षितम्	७.	बनाई गई
महामतिः ।	१.	बुद्धिमान्	पुरुषोत्तमात् ॥	६.	पुरुषोत्तम भगवान् द्वारा

श्लोकार्थ—बुद्धिमान् इन्द्र ने बड़ी मधुर वाणी से समझाते हुये पुरुषोत्तम भगवान् के द्वारा बनाई गई वे सारी बातें कहीं ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

तदरोचत दैत्यस्य तत्रान्ये येऽसुराधिपाः ।
शम्बरोऽरिष्टनेमिश्च ये च त्रिपुरवासिनः ॥३१॥

पदच्छेद— तत् अरोचत दैत्यस्य तत्र अन्ये ये असुराधिपाः ।
शम्बरः अरिष्टनेमिः च ये च त्रिपुर वासिनः ॥

शब्दार्थ—

तत्	१.	यह बात	शम्बरः	८.	शम्बर
अरोचत	३.	जँच गयी	अरिष्टनेमिः	९.	अरिष्टनेमि
दैत्यस्य	२.	दैत्यराज बलि को	च	१०.	और
तत्र	४.	वहाँ	ये	११.	जो
अन्ये	५.	दूसरे	च	१४.	थे उन्हें भी जँचो
ये	६.	जो	त्रिपुर	१२.	त्रिपुर
असुराधिपाः ।	७.	सेनापति	वासिनः ॥	१३.	निवासी

श्लोकार्थ—यह बात दैत्यराज बलि को जँच गई। वहाँ दूसरे जो सेनापति, शम्बर, अरिष्टनेमि और जो त्रिपुर निवासी थे, उन्हें भी जँच गई ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

ततो देवासुराः कृत्वा संविदं कृतसौहृदाः ।
उद्यमं परमं चक्रुरमृतार्थे परन्तप ॥३२॥

पदच्छेद— ततः देव असुराः कृत्वा संविदम् कृत सौहृदाः ।
उद्यमम् परमम् चक्रुः अमृत अर्थे परन्तप ॥

शब्दार्थ—

ततः	२.	इसके बाद	उद्यमम्	११.	उद्योग
देवअसुराः	३.	देवता और असुरों ने	परमम्	१०.	पूर्ण
कृत्वा	५.	करके	चक्रुः	१२.	करने लगे
संविदम्	४.	सन्धि	अमृत	८.	और वे अमृत के
कृत	७.	कर ली	अर्थे	९.	लिये
सौहृदाः ।	६.	मित्रता	परन्तप ॥	१.	हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इसके बाद देवता और असुरों ने सन्धि करके मित्रता कर ली। और वे अमृत के लिये पूर्ण उद्योग करने लगे ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

ततस्ते मन्दरगिरिमोजसोत्पाट्य दुर्मदाः ।
नदन्त उदधिं निन्युः सक्ताः परिघबाहवः ॥३३॥

पदच्छेद— ततः ते मन्दरगिरिम् ओजसा उत्पाट्य दुर्मदाः ।
नदन्तः उदधिम् निन्युः सक्ताः परिघ बाहवः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	इसके बाद	नदन्तः	१०.	ललकारते तथा गरजते हुये
ते	२.	उन्होंने	उदधिम्	११.	समुद्र की ओर
मन्दरगिरिम्	४.	मदराचल को	निन्युः	१२.	चले
ओजसा	३.	अपनी शक्ति से	सक्ताः	८.	शक्तिशाली
उत्पाट्य	५.	उखाड़ लिया	परिघ	६.	परिघ के समान
दुर्मदाः ।	९.	उन्मत्त होकर	बाहवः ॥	७.	भुजाओं वाले वे

श्लोकार्थ—इसके बाद उन्होने अपनी शक्ति से मदराचल को उखाड़ लिया। परिध के समान भुजाओं वाले वे शक्तिशाली उन्मत्त होकर ललकारते हुए समुद्र की ओर चले ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

दूरभारोद्वहश्रान्ताः शक्रवैरोचनादयः ।
अपारयन्तस्तं वोढुं विवशा विजहुः पथि ॥३४॥

पदच्छेद— दूरभार उद्वह श्रान्ताः शक्र वैरोचन आदयः ।
अपारयन्तः तम् वोढुम् विवशाः विजहुः पथि ॥

शब्दार्थ—

दूरभार	१.	उस भारी पर्वत को	अपारयन्तः	९.	समर्थ न हो सके तब
उद्वह	२.	उठा कर दूर-तक ले जाने	तम्	७.	जब उसे
श्रान्ताः	३.	में थक कर	वोढुम्	८.	ढोने में
शक्र	४.	इन्द्र तथा	विवशाः	१०.	विवश होकर उसे
वैरोचन	५.	बलि	विजहुः	१२.	पटक दिया
आदयः ।	६.	इत्यादि	पथि ॥	११.	मार्ग में ही

श्लोकार्थ—उस भारी पर्वत को उठाकर दूर-तक ले जाने में थक कर इन्द्र तथा बलि इत्यादि जब उसे ढोने में समर्थ न हो सके तब विवश होकर उसे मार्ग में ही पटक दिया ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

निपतन्स गिरिस्तत्र बहूनमरदानवान् ।
चूर्णयामास महता भारेण कनकाचलः ॥३५॥

पदच्छेद— निपतन्स गिरिः तत्र बहून् अमर दानवान् ।
चूर्णयामास महता भारेण कनक अचलः ॥

शब्दार्थ—

निपतन्स	१. गिरते हुये उस	दानवान्	९. दानवों को
गिरिः	३. पर्वत ने	चूर्णयामास	१०. चकना चूर कर डाला
तत्र	६. वहाँ पर	महता	४. बहुत
बहून्	७. बहुत से	भारेण	५. भारी होने के कारण
अमर	८. देवताओं तथा	कनक अचलः ॥	२. मंदराचल

श्लोकार्थ—गिरते हुये उस मंदराचल पर्वत ने बहुत भारी होने के कारण वहाँ पर बहुत से देवताओं तथा दानवों को चकनाचूर कर डाला ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

तांस्तथा भग्नमनसो भग्नबाहूरुकन्धरान् ।
विज्ञाय भगवांस्तत्र बभूव गरुडध्वजः ॥३६॥

पदच्छेद— तान् तथा भग्न मनसः भग्न बाहु ऊरु कन्धरान् ।
विज्ञाय भगवान् तत्र बभूव गरुडध्वजः ॥

शब्दार्थ—

तान्	७. उन देवों और असुरों को	कन्धरान्	६. कन्धों वाले
तथा	१. उस प्रकार	विज्ञाय	८. जानकर
भग्न	२. टूटे हुये	भगवान्	१०. भगवान्
मनसः	३. मन	तत्र	११. वहीं
भग्न	४. टूटे हुये	बभूव	१२. प्रकट हो गये
बाहु ऊरु	५. हाथ, कमर और	गरुडध्वजः ॥	९. गरुडध्वज

श्लोकार्थ—उस प्रकार टूटे हुये मन, टूटे हुये हाथ, कमर और कन्धों वाले उन देवों और असुरों को जान कर गरुड़ध्वज़ भगवान् वहीं प्रकट हो गये ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

गिरिपातविनिष्पिष्टान्विलोक्यामरदानवान् ।
ईक्षया जीवयामास निर्जरान् निर्व्रणान्यथा ॥३७॥

पदच्छेद— गिरिपात विनिष्पिष्टान् विलोक्य अमर दानवान् ।
ईक्षया जीवयामास निर्जरान् निर्व्रणान् यथा ॥

शब्दार्थ—

गिरिपात	३.	पर्वत के गिरने से	ईक्षया	९.	अपनी इच्छा शक्ति से
विनिष्पिष्टान्	४.	पिसे हुये	जीवयामास	१०.	जीवित कर दिया
विलोक्य	५.	देख कर	निर्जरान्	६.	देवताओं को
अमर	१.	देवता तथा	निर्व्रणान्	७.	घाव रहित करके
दानवान् ।	२.	असुरों को	यथा ॥	८.	स्वस्थ बना कर

श्लोकार्थ—देवता तथा असुरों को पर्वत के गिरने से पिसे हुये देखकर देवताओं को घाव रहित करके तथा स्वस्थ बनाकर अपनी इच्छा शक्ति से जीवित कर दिया ॥

अष्टात्रिंशःश्लोकः

गिरिं चारोप्य गरुडे हस्तेनैकेन लीलया ।
आरुह्य प्रययावब्धिं सुरासुरगणैर्वृतः ॥३८॥

पदच्छेद— गिरिम् च आरोप्य गरुडे हस्तेन एकेन लीलया ।
आरुह्य प्रययौ अब्धिम् सुर असुर गणैः वृतः ॥

शब्दार्थ—

गिरिम्	५.	पर्वत को	आरुह्य	८.	स्वयं सवार होकर
च	१.	और	प्रययौ	१४.	चल पड़े
आरोप्य	७.	रखकर (तथा)	अब्धिम्	१३.	समुद्र तट की ओर
गरुड़े	६.	गरुड़ पर	सुर	९.	देवताओं और
हस्तेन	४.	हाथ से	असुर	१०.	असुरों के
एकेन	३.	एक	गणैः	११.	समूह से
लीलया ।	२.	खेल ही खेल में	वृतः ॥	१२.	घिरे हुये

श्लोकार्थ—और खेल ही खेल में एक हाथ से पर्वत को गरुड़ पर रख कर तथा स्वयं सवार होकर देवताओं और असुरों से घिरे हुये समुद्र तट की ओर चल पड़े ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

अवरोप्य गिरिं स्कन्धात् सुपर्णः पततां वरः ।

ययौ जलान्त उत्सृज्य हरिणा स विसर्जितः ॥३९॥

पदच्छेद— अवरोप्य गिरिम् स्कन्धात् सुपर्णः पतताम् वरः ।
ययौ जलान्ते उत्सृज्य हरिणा सः विसर्जितः ॥

शब्दार्थ—

अवरोप्य	६.	उतार दिया	ययौ	१२.	चले गये
गिरिम्	५	उस पर्वत को	जलान्ते	१०.	समुद्र के तट पर
स्कन्धात्	४.	कन्धे से	उत्सृज्य	११.	छोड़ कर
सुपर्णः	३.	गरुड़	हरिणा	८.	भगवान् के द्वारा
पतताम्	१.	पक्षि	सः	७.	वे
वरः ।	२.	राज	विसर्जितः ॥	९.	विदा करने पर उसे

श्लोकार्थ—पक्षिराज गरुड़ के कन्धे से उस पर्वत को उतार दिया । वे भगवान् के द्वारा विदा करने पर उसे समुद्र के तट पर छोड़कर चले गये ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमे स्कन्धे
अमृतमथने मन्दराचलानयनं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

सप्तमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

ते नागराजमामन्त्र्य फलभागेन वासुकिम् ।
परिवीय गिरौ तस्मिन् नेत्रमब्धिं मुदान्विताः ॥१॥

पदच्छेद— ते नाग राज मामन्त्र्य फल भागेन वासुकिम् ।
परवीय गिरौ तस्मिन् नेत्रम् अब्धिम् मुदा अन्विताः ॥

शब्दार्थ—

ते	१.	देवता और असुरों ने	परवीय	१०.	लपेट कर
नागराजम्	२.	नागराज	गिरौ	९.	मंदराचल में
आमन्त्र्य	६.	वचन देकर (और)	तस्मिन्	८	उसे
फल	४	अमृतरूप फल में	नेत्रम्	७.	नेती बनाकर
भागेन	५.	हिस्से का	अब्धिम्	१२.	समुद्र मन्थन प्रारम्भ किया
वासुकिम् ।	३.	वासुकि को	मुदा अन्विताः ॥	११.	प्रसन्नता से युक्त होकर

श्लोकार्थ—देवताओं और असुरों ने नागराज वासुकि को अमृतरूप फल में हिस्से का वचन देकर और नेती बनाकर उसे मंदराचल में लपेट कर प्रसन्नता से युक्त होकर समुद्र मन्थन प्रारम्भ किया ॥

द्वितीयः श्लोकः

आरेभिरे सुसंयत्ता अमृतार्थं कुरूद्वह ।
हरिः पुरस्ताज्जगृहे पूर्वं देवास्ततोऽभवन् ॥२॥

पदच्छेद— आरेभिरे सुसंयत्ताः अमृत अर्थम् कुरूद्वह ।
हरिः पुरस्तात् जगृहे पूर्वम् देवाः ततः अभवन् ॥

शब्दार्थ—

आरेभिरे	५.	वे आ लगे	पुरस्तात्	७.	आगे मुख की ओर से
सुसंयत्ताः	४.	भली भाँति मिलकर	जगृहे	९.	लग गये
अमृतम्	२.	अमृत के	पूर्वम्	६.	उस समय पहले-पहल
अर्थम्	३.	लिये	देवाः	११.	देवता भी
कुरूद्वह ।	१.	हे परीक्षित् !	ततः	१०.	फिर
हरिः	८.	भगवान् अजित	अभवन् ॥	१२.	उधर ही आ जुटे

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! अमृत के लिये भली भाँति मिलकर वे आ लगे । उस समय पहले-पहल आगे मुख की ओर भगवान् अजित लग गये । फिर देवता भी उधर ही आ जुटे ॥

तृतीयः श्लोकः

तन्नैच्छन् दैत्यपतयो महापुरुषचेष्टितम् ।
न गृह्णीमो वयं पुच्छमहेरङ्गममङ्गलम् ॥३॥

पदच्छेद— तत् न ऐच्छन् दैत्य पतयः महापुरुष चेष्टितम् ।
न गृह्णीमः वयम् पुच्छम् अहेः अङ्गम् अमङ्गलम् ॥

शब्दार्थ—

तत्	७.	उन्होंने कहा	न	१३.	नहीं
न	६.	नहीं आयी	गृह्णीमः	१४.	पकड़ेंगे
ऐच्छन्	५.	पसन्द	वयम्	८.	हम
दैत्य	३.	दैत्य	पुच्छम्	१२.	पूंछ को
पतयः	४.	सेनापतियों को	अहेः	६.	साँप के
महापुरुष	१.	भगवान् की	अङ्गम्	११.	अङ्ग
चेष्टितम् ।	२.	यह चेष्टा	अमङ्गलम् ॥	१०.	अशुभ

श्लोकार्थ—भगवान् की यह चेष्टा दैत्य सेनापतियों को पसन्द नहीं आयी । उन्होंने कहा हम साँप के अशुभ अङ्ग पूंछ को नहीं पकड़ेंगे ।

चतुर्थः श्लोकः

स्वाध्यायश्रुतसम्पन्नाः प्रख्याता जन्मकर्मभिः ।
इति तूष्णीं स्थितान्दैत्यान् विलोक्य पुरुषोत्तमः ।
स्मयमानो विसृज्याग्रं पुच्छं जग्राह सामरः ॥४॥

पदच्छेद— स्वाध्याय श्रुत सम्पन्नाः प्रख्याताः जन्म कर्मभिः ।
इति तूष्णीम् स्थितान् दैत्यान् विलोक्य पुरुषोत्तमः ।
स्मयमानः विसृज्य अग्रम् पुच्छम् जग्राह स अमरः ॥

शब्दार्थ—

स्वाध्याय	१.	हमने वेद शास्त्रों का	दैत्यान्	१०.	दैत्यों को
श्रुत	२.	अध्ययन	विलोक्य	११.	देख कर
सम्पन्नाः	३.	किया है	पुरुषोत्तमः	१२.	पुरुषोत्तम भगवान् ने
प्रख्याताः	६.	प्रसिद्ध हैं	स्मयमानः	१३.	मुसकराते हुये
जन्म	४.	जन्म और	विसृज्य	१५.	छोड़ कर
कर्मभिः	५.	कर्म से भी	अग्रम्	१४.	वासुकि का मुंह
इति	७.	ऐसा कह कर	पुच्छम्	१७.	उसकी पूंछ
तूष्णीम्	८.	चुप होकर	जग्राह	१८.	पकड़ ली
स्थितान् ।	६.	स्थित हुये	स अमरः ॥	१६.	देवताओं सहित

श्लोकार्थ—हमने वेद-शास्त्रों का अध्ययन किया है । जन्म और कर्म से भी प्रसिद्ध हैं । ऐसा कह कर चुप होकर स्थित हुये दैत्यों को देखकर पुरुषोत्तम भगवान् ने मुसकराते हुये वासुकि का मुंह छोड़कर देवताओं सहित उसकी पूंछ पकड़ ली ॥

पञ्चमः श्लोकः

कृतस्थानविभागास्त एवं कश्यपनन्दनाः ।
ममन्थुः परमायत्ता अमृतार्थं पयोनिधिम् ॥५॥

पदच्छेद— कृत स्थान विभागाः ते एवम् कश्यपनन्दनाः ।
ममन्थुः परमायत्ताः अमृत अर्थम् पयोनिधिम् ॥

शब्दार्थ—

कृत	६.	निश्चित करके	ममन्थुः	११.	मन्थन करने लगे
स्थान	४.	स्थान का	परमायत्ताः	९.	पूरी तैयारी से
विभागाः	५.	विभाग	अमृत	७.	अमृत के
ते	२.	वे	अर्थम्	८.	लिये
एवम्	१.	इस प्रकार	पयोनिधिम् ॥	१०.	समुद्र
कश्यपनन्दनाः ।	३.	देवता और असुर			

श्लोकार्थ—इस प्रकार वे देवता और असुर स्थान का विभाग निश्चित करके अमृत के लिये पूरी तैयारी से समुद्र मन्थन करने लगे ॥

षष्ठः श्लोकः

मथ्यमानेऽर्णवे सोऽद्रिरनाधारो ह्यपोऽविशत् ।
ध्रियमाणोऽपि बलिभिर्गौरवात् पाण्डुनन्दन ॥६॥

पदच्छेद— मथ्यमाने अर्णवे सः अद्रिः अनाधारः हि अपः अविशत् ।
ध्रियमाणः अपि बलिभिः गौरवात् पाण्डुनन्दन ॥

शब्दार्थ—

मथ्यमाने	३.	मन्थन के समय	अविशत् ।	१२.	डूबने लगा
अर्णवे	२.	समुद्र	ध्रियमाणः	७.	धारण किये जाने पर
सः	४.	वह	अपि	८.	भी
अद्रिः	५.	पर्वत	बलिभिः	६.	बलवान् देवों और दैत्यों के द्वारा
अनाधारः	१०.	निराधार होने के कारण	गौरवात्	९.	भार की अधिकता से
हि अपः	११.	समुद्र के जल में	पाण्डुनन्दन ॥	१.	हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! समुद्र मन्थन के समय वह पर्वत बलवान् देवों और दैत्यों के द्वारा धारण किये जाने पर भी भार की अधिकता से निराधार होने के कारण समुद्र के जल में डूबने लगा ॥

सप्तमः श्लोकः

ते सुनिर्विण्णमनसः परिम्लानमुखश्रियः ।
आसन् स्वपौरुषे नष्टे दैवेनातिबलीयसा ॥७॥

पदच्छेद— ते सुनिर्विण्ण मनसः परिम्लान मुख श्रियः ।
आसन् स्व पौरुषे नष्टे दैवेन अतिबलीयसा ॥

शब्दार्थ—

ते	६. वे देवता और असुर	आसन्	१२. हो गये
सुनिर्विण्ण	७. खिन्न	स्वपौरुषे	४. अपने पुरुषार्थ
मनसः	८. मन तथा	नष्टे	५. नष्ट होते देखकर
परिम्लान	९. मलिन	दैवेन	३. दैव के द्वारा
मुख	१०. मुख की	अति	१. इस प्रकार अत्यन्त
श्रियः ।	११. कान्ति वाले	बलीयसा ॥	२. बलवान्

श्लोकार्थ—इस प्रकार अत्यन्त बलवान् दैव के द्वारा अपने पुरुषार्थ को नष्ट होते देखकर वे देवता और असुर खिन्न मन तथा मलिन मुख की कान्ति वाले हो गये ॥

अष्टमः श्लोकः

विलोक्य विघ्नेशविधिं तदेश्वरो दुरन्तवीर्योऽवितथाभिसन्धिः ।
कृत्वा वपुः काच्छपमद्भुतं महत् प्रविश्य तोयं गिरिमुज्जहार ॥८॥

पदच्छेद— विलोक्य विघ्नेशविधिं तदाईश्वरो दुरन्तवीर्यो अवितथअभिसन्धिः ।
कृत्वा वपुः काच्छपम् अद्भुतम् महत् प्रविश्य तोयम् गिरिम् उज्जहार ॥

शब्दार्थ—

विलोक्य	९. देखकर	कृत्वा	१४. धारण करके
विघ्नेश	७. विघ्नराज की	वपुः	१३. रूप
विधिम्	८. करतूत को	काच्छपम्	१२. कच्छप का
तदा	१. तब	अद्भुतम्	११. विचित्र
ईश्वरः	६. भगवान् ने	महत्	१०. विशाल एवम्
दुरन्त	२ अनन्त	प्रविश्य	१६. प्रवेश करके
वीर्यः	३. शक्ति और	तोयम्	१५. समुद्र के जल में
अवितथ	४. सत्य	गिरिम्	१७. मंदराचल को
अभिसन्धिः ।	५. संकल्प	उज्जहार ॥	१८. ऊपर उठा लिया

श्लोकार्थ—तब अनन्त शक्ति और सत्य संकल्प भगवान् ने विघ्नराज की करतूत को देखकर विशाल एवम् विचित्र कच्छप का रूप धारण करके समुद्र के जल में प्रवेश करके मंदराचल को ऊपर उठा लिया ॥

नवमः श्लोकः

तमुत्थितं वीक्ष्य कुलाचलं पुनः समुत्थिता निर्मथितुं सुरासुराः ।
दधार पृष्ठेन स लक्षयोजनप्रस्तारिणा द्वीप इवापरो महान् ॥९॥

पदच्छेद— तम् उत्थितम् वीक्ष्य कुलअचलम् पुनः सम् उत्थिता निर्मथितुम् सुरअसुराः ।
दधार पृष्ठेन सः लक्षयोजन प्रस्तारिणा द्वीप इव अपरः महान् ॥

शब्दार्थ—

तम्	३.	उस	दधार	१८.	धारण कर लिया
उत्थितम्	५.	ऊपर उठा हुआ	पृष्ठेन	१७.	पीठ पर
वीक्ष्य	६.	देखकर	सः	१०.	उन भगवान् ने
कुलअचलम्	४.	मंदरा चल को	लक्षयोजन	१४.	एक लाख योजन
पुनः	७.	फिर से	प्रस्तारिणा	१५.	विस्तृत
समुत्थित	८.	उठकर	द्वीप	१२.	जम्बू द्वीप के
निर्मथितुम्	९.	मन्थन आरम्भ कर दिया	इव	१३.	समान
सुर	१.	देवताओं और	अपरः	११.	दूसरे
असुराः ।	२.	असुरों ने	महान् ।	१६.	उस महान् पर्वत को

श्लोकार्थ—देवताओं और असुरों ने उस मदराचल को ऊपर उठा हुआ देखकर फिर से उठकर मन्थन आरम्भ कर दिया ! उन भगवान् ने दूसरे जम्बुदीप के समान एक लाख योजना विस्तृत उस महान् पर्वत को पीठ पर धारण कर लिया ॥

दशमः श्लोकः

सुरासुरेन्द्रैर्भुजवीर्यवेपितं परिभ्रमन्तं गिरिमङ्ग पृष्ठतः ।
बिभ्रत् तदावर्तनमादिकच्छपो मेनेऽङ्गकण्डूयनमप्रमेयः ॥१०॥

पदच्छेद— सुर असुरेन्द्रैः भुजवीर्य वेपितम् परिभ्रमन्तम् गिरिम् अङ्ग पृष्ठतः ।
बिभ्रत् तत् आवर्तनम् आदि कच्छपः मेने अङ्ग कण्डूयनम् अप्रमेयः ॥

शब्दार्थ—

सुर	२.	देवताओं द्वारा	बिभ्रत्	११.	सुशोभित हो रहा था
असुरेन्द्रः	१.	बड़े-बड़े असुरों और	तत्	१२.	उसका
भुज	३.	बाहु	आवर्तनम्	१३.	घूमना
वीर्य	४.	बल के पराक्रम से	आदि	१४.	आदि
वेपितम्	५.	प्रेरित किया हुआ	कच्छपः	१५.	कच्छप के
परिभ्रमन्तम्	९.	घूमता हुआ	मेने	१८.	प्रतीत हो रहा था
गिरिम्	१०.	वह पर्वत	अङ्ग	१६.	शरीर पर
अङ्ग	७.	भगवान् की	कण्डूयनम्	११.	खुजलाता जैसा
पृष्ठतः ।	८.	पीठ पर	अप्रमेयः ।।	६.	अनन्त शक्तिशाली

श्लोकार्थ—बड़े-बड़े असुरों और देवताओं द्वारा बाहुबल के पराक्रम से प्रेरित किया हुआ, अनन्त शक्तिशाली भगवान् की पीठ पर वह पर्वत सुशोभित हो रहा था । उसका घूमना आदि कच्छप के शरीर पर खुजलाता जैसा प्रतीत हो रहा था ॥

एकादशः श्लोकः

तथासुरानाविशदासुरेण रूपेण तेषां बलवीर्यमीरयन् ।
उद्दीपयन् देवगणांश्च विष्णुर्दैवेन नागेन्द्रमबोधरूपः ॥११॥

पदच्छेद— तथा असुरान् आविशत् आसुरेण रूपेण तेषाम् बलवीर्यम्ईरयन् ।
उद्दीपयन् देवगणान् च विष्णुः दैवेन नागेन्द्रम् अबोध रूपः ॥

शब्दार्थ—

तथा	१.	इस प्रकार	उद्दीपयन्	१३.	उत्साहित करते हुये
असुरान्	३.	असुरों में	देव	११.	उनमें देव
आविशत्	१०.	प्रवेश किया	गणान्	१२.	समूह को
आसुरेण	८.	असुर	च	१५.	और
रूपेण	९.	रूप से	विष्णुः	२.	भगवान् ने
तेषाम्	४.	उनकी	दैवेन	१४.	देवरूप से
बल	५.	शक्ति और	नागेन्द्रम्	१६.	वासुकि नाम में
वीर्यम्	६.	पराक्रम को	अबोध	१७.	निद्रा के
ईरयन् ।	७.	बढ़ाते हुये	रूपः ॥	१८.	रूप से प्रवेश किया

श्लोकार्थ—इस प्रकार भगवान् ने असुरों में उनकी शक्ति और पराक्रम को बढ़ाते हुये असुर रूप से प्रवेश किया। उनमें देव समूह को उत्साहित करते हुये देव रूप से और वासुकि नाग में निद्रा के रूप से प्रवेश किया ॥

द्वादशः श्लोकः

उपर्यगेन्द्रं गिरिराडिवान्यमाक्रम्य हस्तेन सहस्रबाहुः ।
तस्थौ दिवि ब्रह्मभवेन्द्रमुख्यैरभिष्टुवद्भिः सुमनोऽभिवृष्टः ॥१२॥

पदच्छेद— उपरि अगेन्द्रम् गिरिराट् इव अन्यम् आक्रम्य हस्तेन सहस्र बाहुः ।
तस्थौ दिविब्रह्म भवेन्द्र मुख्यैः अभिष्टुवद्भिः सुमनः अभिवृष्टः ॥

शब्दार्थ—

उपरि	२.	ऊपर	तस्थौ	९.	स्थित हो गये (तब)
अगेन्द्रम्	१.	इधर पर्वत के	दिवि	१०.	आकाश में
गिरिराट्	४.	पर्वत के	ब्रह्म	११.	ब्रह्मा
इव	५.	समान	भवेन्द्र	१२.	शङ्कर-इन्द्र
अन्यम्	३.	दूसरे	मुख्यैः	१३.	आदि प्रमुख देवता
आक्रम्य	८.	दबाकर	अभिष्टुवद्भिः	१४.	उनकी स्तुति करते हुये
हस्तेन	७.	अपने हाथों से उसे	सुमनः	१५.	उन पर पुष्पों की
सहस्रबाहुः ।	६.	सहस्रबाहु भगवान्	अभिवृष्टः ॥	१६.	वर्षा करने लगे

श्लोकार्थ—इधर पर्वत के ऊपर दूसरे पर्वत के समान सहस्रबाहु भगवान् अपने हाथों से उसे दबाकर स्थित हो गये । तब ब्रह्मा, शङ्कर, इन्द्र आदि प्रमुख देवता उनकी स्तुति करते हुये उन पर पुष्पों की वर्षा करने लगे ॥

त्रयोदशः श्लोकः

उपर्यधश्चात्मनि गोत्रनेत्रयोः परेण ते प्राविशता समेधिताः ।
ममन्थुरब्धिं तरसा मदोत्कटा महाद्रिणा क्षोभितनक्रचक्रम् ॥१३॥

पदच्छेद— उपर्यधः च आत्मनि गोत्रनेत्रयोः परेण ते प्राविशता समेधिताः ।
ममन्थुः अब्धिम् तरसा मद उत्कटाः महाद्रिणा क्षोभित नक्र चक्रम् ॥

शब्दार्थ—

उपर्यधः	२.	ऊपर-नीचे चल रहे	ममन्थुः	१८.	मन्थन प्रारम्भ कर दिया
च	९.	और	अब्धिम्	१७.	समुद्र
आत्मनि	१.	देवों और दैत्यों के बीच	तरसा	१४.	अत्यधिक
गोत्र	३.	पर्वत तथा	मद	१६.	मद से युक्त होकर
नेत्रयोः	४.	वासुकि नाग में	उत्कटाः	१५.	उत्कट
परेण	७.	अत्यधिक	महाद्रिणा	१०.	उस महान् पर्वत के द्वारा
ते	६.	उसे	क्षोभित	१३.	क्षुब्ध करते हुये
प्राविशता	५.	प्रवेश करके	नक्र	११.	मकर आदि
समेधिताः ।	८.	शक्तिशाली बना दिया	चक्रम् ॥	२१.	समूह का

श्लोकार्थ—देवों और दैत्यों के बीच ऊपर नीचे चल रहे पर्वत तथा वासुकि नाग में प्रवेश करके उसे अत्यधिक शक्तिशाली बना दिया। और उस महान् पर्वत के द्वारा मकर आदि समूह को क्षुब्ध करते हुये अत्यधिक उत्कट मद से युक्त होकर समुद्र मन्थन करने लगे ॥

चतुर्दशः श्लोकः

अहीन्द्रसाहस्रकठोरदृङ्मुखश्वासाग्निधूमाहतवर्चसोऽसुराः ।
पौलोमकालेयबलील्वलादयो दवाग्निदग्धाः सरला इवाभवन् ॥१४॥

पदच्छेद— अहीन्द्र साहस्र कठोर दृङ् मुख श्वास अग्नि धूम आहत वर्चसः असुराः ।
पौलोम कालेय बलि इल्वल आदयः दवाग्नि दग्धाः सरलाः इव अभवन् ॥

शब्दार्थ—

अहीन्द्र	१.	नागराज वासुकि के	पौलोमकालेय	७.	पौलोम-कालेय
साहस्रकठोर	२.	हजारों कठोर	बलि इल्वल	८.	बलि-इल्वल
दृङ्मुख	३.	नेत्र, मुख और	आदयः	९.	आदि
श्वास	४.	श्वासों से	दवाग्नि	१३.	दवाग्नि से
अग्नि	५.	विष की अग्नि निकलने लगी	दग्धाः	१४.	झुलसे हुये
धूम	६.	उसके धुंए से	सरलाः	१५.	साखू के पेड़ के
आहत	१२.	हीन हो गये (वे)	इव	१६.	समान
वर्चसः	११.	तेज	अभवन् ॥	१७.	हो गये
असुराः ।	१०.	असुर			

श्लोकार्थ—नागराजवासुकि के हजारों कठोर नेत्र, मुख और श्वासों से विष की अग्नि निकलने लगी। उसके धुंए से पौलोम, कालेय, बलि, इल्वल आदि असुर तेज हीन हो गये। वे दवाग्नि से झुलसे हुये साखू के पेड़ के समान हो गये ॥

पञ्चदशः श्लोकः

देवांश्च तच्छ्वासशिखाहतप्रभान् धूम्राम्बरस्रग्वरकञ्चुकाननान् ।
समभ्यवर्षन्भगवद्वशा घना ववुः समुद्रोर्म्युपगूढवायवः ॥१५॥

पदच्छेद— **देवान् च तत्श्वासशिखा आहत प्रभान् धूम्र अम्बर स्रक्वरकञ्चुकआननान् ।**
सम्अभ्यवर्षन् भगवत् वशाः घनाः ववुः समुद्र ऊर्मि उपगूढ वायवः ॥

शब्दार्थ—

देवान्	४.	उन देवताओं के	**सम्**	१२.	भलीभांति
च	७.	और	**अभ्यवर्षन्**	१३.	वर्षा करने लगे (तथा)
तत्	१.	उस वासुकि की	**भगवत्**	१०.	भगवान् की
श्वासशिखा	२.	श्वास की लपटों से	**वशाःघनाः**	११.	प्रेरणा से बादल
आहत प्रभान्	३.	फीके तेज वाले	**ववुः**	१८.	बहने लगी
धूम्र	९.	घूमिल हो गये	**समुद्र**	१४.	समुद्र की
अम्बर स्रक्	५.	वस्त्र माला	**ऊर्मि**	१५.	लहरों से
वरकञ्चुक	६.	कवच	**उपगूढ**	१६.	युक्त शीतल
आननान् ।	८.	मुख	**वायवः ॥**	१७.	वायु

श्लोकार्थ—उस वासुकि की श्वास की लपटों से फीके तेज वाले उन देवताओं के वस्त्रमाला, कवच और मुख घूमिल हो गये । भगवान् की प्रेरणा से बादल भलीभांति वर्षा करने लगे । तथा समुद्र की लहरों से युक्त शीतल वायु बहने लगी ।

षोडशः श्लोकः

मथ्यमानात् तथा सिन्धोर्देवासुरवरूथपैः ।
यदा सुधा न जायेत निर्ममन्थाजितः स्वयम् ॥१६॥

पदच्छेद— **मथ्य मानात् तथा सिन्धोः देव असुर वरूथपैः ।**
यदा सुधा न जायेत निर्ममन्थ अजितः स्वयम् ॥

शब्दार्थ—

मथ्यमानात्	६.	मन्थन करने पर भी	**यदा सुधा**	७.	जब अमृत
तथा	१.	इस प्रकार	**न**	८.	नहीं
सिन्धोः	५.	समुद्र	**जायेत**	९.	निकला (तब)
देव	२.	देवता और	**निर्ममन्थ**	१२.	समुद्र मन्थन करने लगे
असुर	३.	असुरों के	**अजितः**	१०.	अजित भगवान्
वरूथपैः ।	४.	समूह द्वारा	**स्वयम् ॥**	११.	स्वयम्

श्लोकार्थ—इस प्रकार देवता और असुरों के समूह द्वारा समुद्र मन्थन करने पर भी जब अमृत नहीं निकला तब अजित भगवान् स्वयम् समुद्र मन्थन करने लगे ॥

सप्तदशः श्लोकः

मेघश्यामः कनकपरिधिः कर्णविद्योतविद्यु-
न्मूर्ध्नि भ्राजद्विलुलितकचः स्रग्धरो रक्तनेत्रः।
जैत्रैर्दोर्भिर्जगदभयदैर्दन्दशूकं गृहीत्वा।
मथ्नन् मथ्ना प्रतिगिरिरिवाशोभताथोद्धृताद्रिः॥१७॥

पदच्छेद—मेघश्यामः कनकपरिधिः कर्ण विद्योतविद्युत् मूर्ध्नि भ्राजत् विलुलितकचः स्रक्धरः रक्तनेत्रः। जैत्रैः दोर्भिः जगद् अभयदैः दन्दशूकम् गृहीत्वा मथ्नन् मथ्ना प्रतिगिरिः इव अशोभत अथ उद्धृत अद्रिः॥

शब्दार्थ—

मेघश्यामः	१.	मेघ के समान सांवले शरीर पर	जैत्रैः दोर्भिः	११.	विश्वविजयी भुज दण्डों से
कनक परिधिः	२.	सुनहला पीताम्बर	जगद् अभयपदैः	१०.	सारे संसार को अभय देने वाले
कर्णविद्योत	४.	कानों में चमकते कुण्डल	दन्दशूकम् गृहीत्वा	१२.	वासुकि नाग को पकड़कर
विद्युत्	३.	बिजली के समान	मथ्नन्	१६.	समुद्र मन्थ करते हुये
मूर्ध्नि	५.	सिर पर	मथ्ना	१५.	मंदराचल की मथानी से
भ्राजत्	९.	अति शोभायमान हो रहे थे	प्रतिगिरिः इव	१७.	वे दूसरे पर्वत के समान
विलुलितकचः	६.	लहराते हुये घुंघराले बाल	अशोभत अथ	१८.	सुशोभित हो रहे थे
स्रक्धरः	७.	वनमाला धारण किये हुये	उद्धृत	१४.	ऊपर उठाये हुये
रक्तनेत्रः।	८.	लाल-लाल नेत्रों से युक्त वे	अद्रिः॥	१३.	कूर्म रूप से पर्वत को

श्लोकार्थ—मेघ के समान सांवले शरीर, सुनहला पीताम्बर, बिजली के समान कानों में चमकते हुये कुण्डल, सिर पर लहराते हुये घुँघराले बाल, वनमाला धारण किये हुये लाल-लाल नेत्रों से युक्त वे अतिशोभायमान हो रहे थे। सारे संसार को अभय देने वाले विश्वविजयी भुज-दण्डों से वासुकि नाग को पकड़कर कूर्म रूप से पर्वत को ऊपर उठाये हुये मंदराचल की मथानी से समुद्रमन्थन करते हुये सुशोभित हो रहे थे॥

अष्टादशः श्लोकः

निर्मथ्यमानादुदधेरभूद्विषं महोल्बणं हालहलाह्वमग्रतः ।
सम्भ्रान्तमीनोन्मकराहिकच्छपात् तिमिद्विपग्राहतिमिङ्गिलाकुलात् ।।१८।।

पदच्छेद— निर्मथ्यमानात् उदधेः अभूत् विषम् महा उल्बणम् हालहलाह्वम् अग्रतः ।
सम्भ्रान्त मीन उत् मकर अहि कच्छपात् तिमि द्विपग्राहतिमिङ्गिलाकुलात् ।।

शब्दार्थ—

निर्मथ्यमानात्	१.	समुद्र मन्थन के समय	मीन	८.	मछली
उदधेः	३.	समुद्र से	उत्	१२.	ऊपर आ गये तथा
अभूत्	७.	उत्पन्न हुआ	मकर अहि	९.	मकर साँप और
विषम्	६.	विष	कच्छपात्	१०.	कछुए
महा उल्बणम्	५.	अत्यन्त उग्र	तिमि	१३.	तिमि
हालहलाह्वम्	४.	हलाहल नाम का	द्विप ग्राह	१४.	समुद्री हाथी-ग्राह
अग्रतः ।	२.	सबसे पहले	तिमिङ्गिल	१५.	तिमिङ्गिल
सम्भ्रान्त	११.	भयभीत होकर	आकुलात् ।।	१६.	व्याकुल हो गये

श्लोकार्थ—समुद्र मन्थन के समय सबसे पहले समुद्र से हलाहल नामक अत्यन्त उग्र विष उत्पन्न हुआ । मछली, मकर, कछुए भयभीत होकर ऊपर आ गये । तथा तिमि, समुद्री हाथी, ग्राह, तिमिङ्गिल व्याकुल हो गये ।।

एकोनविंशः श्लोकः

तदुग्रवेगं दिशि दिश्युपर्यधो विसर्पदुत्सर्पदसह्यमप्रति ।
भीताः प्रजा दुद्रुवुरङ्ग सेश्वरा अरक्ष्यमाणाः शरणं सदाशिवम् ॥१९॥

पदच्छेद— तत् उग्रवेगम् दिशि दिशि उपरि अधः विसर्पत् असह्यम् अप्रति ।
भीताः प्रजाः दुद्रुवः अङ्ग स ईश्वराः अरक्ष्य माणाः शरणम् सदाशिवम् ॥

शब्दार्थ—

तत्	२.	वह विष	भीताः	११.	भयभीत होकर
उग्रवेगम्	३.	अत्यन्त उग्र वेग से	प्रजाः	१२.	सम्पूर्ण प्रजा (तथा)
दिशि	४.	दिशा	दुद्रुवुः	१८.	गये
दिशि	५.	विदिशा में	अङ्ग	१.	हे राजन् !
उपरि अधः	६.	ऊपर-नीचे सर्वत्र	स ईश्वराः	१३.	वे प्रजापति
विसर्पत्	८.	फैलने लगा	अरक्ष्यमाणाः	१४.	किसी के द्वारा त्राण न मिलने पर
उत्सर्पत्	७.	उड़ने और	शरणम्	१७.	शरण में
असह्यम्	९.	इस असह्य विष से बचने	सदा	१५.	भगवान् सदा
अप्रति ।	१०.	का कोई उपाय नहीं था	शिवम् ॥	१६.	शिवकी

श्लोकार्थ—हे राजन् ! वह विष अत्यन्त उग्रवेग से दिशा-विदिशा में उड़ने और फैलने लगा । इस असह्य विष से बचने का कोई उपाय नहीं था । भयभीत होकर सम्पूर्ण प्रजा तथा वे प्रजापति किसी के द्वारा त्राण न मिलने पर भगवान् सदा शिव की शरण में गये ॥

विंशः श्लोकः

विलोक्य तं देववरं त्रिलोक्या भवाय देव्याभिमतं मुनीनाम् ।
आसीनमद्रावपवर्गहेतोस्तपो जुषाणं स्तुतिभिः प्रणेमुः ॥२०॥

पदच्छेद— विलोक्य तम् देव वरम् त्रिलोक्याः भवाय देव्या अभिमतम् मुनीनाम् ।
आसीनम् अद्रौ अपवर्ग हेतोः तपो जुषाणम् स्तुतिभिः प्रणेमुः ॥

शब्दार्थ—

विलोक्य	१४.	देखकर (प्रजापतियों ने)	आसीनम्	९.	विराजमान
तम् देव	१.	उन देव	अद्रौ	८.	कैलाश पर्वत में
वरम्	२.	श्रेष्ठ भगवान् शङ्कर को	अपवर्ग	५.	मोक्ष के
त्रिलोक्याः	३.	तीनों लोकों के	हेतोः	६.	लिये
भवाय	४.	कल्याण और	तपो	१२.	तपस्या
देव्या	७.	सती जी के साथ	जुषाणम्	१३.	करते हुये
अभिमतम्	११.	सेवित	स्तुतिभिः	१०.	स्तुति करके उन्हें
मुनीनाम् ।	१०.	मुनियों के द्वारा	प्रणेमुः ॥	१६.	प्रणाम किया

श्लोकार्थ—उन देवश्रेष्ठ भगवान् शङ्कर को तीनों लोकों के कल्याण और मोक्ष के लिये सती जी के साथ कैलाश पर्वत पर विराजमान, मुनियों के द्वारा सेवित, तपस्या करते हुये देखकर प्रजापतियों ने स्तुति करके उन्हें प्रणाम किया ॥

एकविंशः श्लोकः

प्रजापतय ऊचुः—देवदेव महादेव भूतात्मन् भूतभावन ।
पाहि नः शरणापन्नांस्त्रैलोक्यदहनाद् विषात् ॥२१॥

पदच्छेद— देवदेव महादेव भूत आत्मन् भूतभावन ।
पाहि नः शरण अपन्नान् त्रैलोक्य दहनात् विषात् ॥

शब्दार्थ—

देवदेव	१.	देवताओं के आराध्यदेव	पाहि	१३.	रक्षा कीजिये
महादेव	२.	महादेव	नः	१२.	हम लोगों की
भूत	३.	समस्त प्राणियों के	शरण	१०.	शरण में
आत्मन्	४.	आत्मा	अपन्नान्	११.	आये हुये
भूत	५.	और उनके	त्रैलोक्य	७.	त्रिलोकी को
भावनः ।	६.	जीवनदाता	दहनात्	८.	भस्म करने वाले
			विषात् ॥	९.	इस उग्र विष से

श्लोकार्थ—देवताओं के आराध्यदेव, महादेव, समस्त प्राणियों के आत्मा और उनके जीवनदाता, त्रिलोकी को भस्म करने वाले इस उग्र विष से शरण में आये हुये हम लोगों की रक्षा कीजिये ॥

द्वाविंशः श्लोकः

त्वमेकः सर्वजगत ईश्वरो बन्धमोक्षयोः ।
तं त्वामर्चन्ति कुशलाः प्रपन्नार्तिहरं गुरुम् ॥२२॥

पदच्छेद— त्वमेकः सर्व जगतः ईश्वरः बन्ध मोक्षयोः ।
तम् त्वाम् अर्चयन्ति कुशलाः प्रपन्नार्तिहरम् गुरुम् ॥

शब्दार्थ—

त्वमेकः	१.	एक मात्र आप ही	त्वाम्	१३.	आपकी
सर्व	२.	समस्त	अर्चयन्ति	१४.	आराधना करते हैं
जगतः	३.	संसार को	कुशलाः	७.	विवेकी पुरुष
ईश्वरः	६.	समर्थ हैं	प्रपन्न	८.	शरणागत की
बन्ध	४.	बांधने और	आर्ति	९.	पीड़ा को
मोक्षयोः	५.	मुक्त करने में	हरम्	१०.	हरने वाले एवम्
तम् ।	१२.	ऐसे	गुरुम् ॥	११.	जगद्गुरु

श्लोकार्थ—एक मात्र आप ही समस्त संसार को बांधने और मुक्त करने में समर्थ हैं । विवेकी पुरुष शरणागत की पीड़ा को हरने वाले एवम् जगद्गुरु ऐसे आपकी आराधना करते हैं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

गुणमय्या स्वशक्त्यास्य सर्गस्थित्यप्ययान्विभो ।
धत्से यदा स्वदृग् भूमन्ब्रह्मविष्णुशिवाभिधाम् ॥२३॥

पदच्छेद— गुणमय्या स्वशक्त्या अस्य सर्गस्थिति अप्ययान् विभो ।
धत्से यदा स्वदृक् भूमन् ब्रह्म विष्णु शिवअभिधाम् ॥

शब्दार्थ—

गुणमय्या	३. गुणमयी	धत्से	१६.	धारण कर लेते हैं
स्व	२. अपनी	यदा	९	तब
शक्त्या	४. शक्ति से	स्व	१०.	अपनी
अस्य	५. इस जगत् की	दृक्	११.	दृष्टि में आप
सर्ग	६. सृष्टि	भूमन्	१२.	अनन्त होते हुये भी
स्थिति	७. स्थिति और	ब्रह्म	१३.	ब्रह्मा
अप्ययान्	८. प्रलय करते हैं	विष्णु	१४.	विष्णु और
विभो ।	१. हे प्रभो ! जब	शिवअभिधाम् ॥	१५.	शिवनाम

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! जब अपनी गुणामयी शक्ति से इस जगत् की सृष्टि, स्थिति और प्रलय करते हैं । तब अपनी दृष्टि में आप अनन्त होते हुये भी ब्रह्मा, विष्णु और शिव नाम धारण कर लेते हैं ।

चतुर्विंशः श्लोकः

त्वं ब्रह्मपरमं गुह्यं सदसद्भावभावनः ।
नानाशक्तिभिराभातस्त्वमात्मा जगदीश्वरः ॥२४॥

पदच्छेद— त्वम् ब्रह्म परमम् गुह्यम् सत् असतभाव भावनः ।
नाना शक्तिभिः आभातः त्वम् आत्मा जगत् ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	४. आप	नाना	८.	अनेक
ब्रह्म	७. ब्रह्म तत्त्व है	शक्तिभिः	९.	शक्तियों के द्वारा
परमम्	५. परम्	आभातः	१०.	प्रतीत होनेवाले
गुह्यम्	६. रहस्यमय	त्वम्	११.	आप ही
सत्	१. सत् और	आत्मा	१२.	संसार की आत्मा और
असतभाव	२. असत्भाव से	जगत्	१३.	संसार के
भावनः ।	३. विद्यमान	ईश्वरः ॥	१४.	ईश्वर हैं

श्लोकार्थ—सत् और असत्भाव से विद्यमान आप परम रहस्यमय ब्रह्म तत्त्व हैं । अनेक शक्तियों के द्वारा प्रतीत होने वाले आप ही संसार की आत्मा और संसार के ईश्वर हैं ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

त्वं शब्दयोनिर्जगदादिरात्मा प्राणेन्द्रियद्रव्यगुणस्वभावः ।
कालः क्रतुः सत्यमृतं च धर्मस्त्वय्यक्षरं यत् त्रिवृदामनन्ति ।।२५।।

पदच्छेद— त्वम् शब्दयोनिः जगत् आदिः आत्मा प्राणेन्द्रिय द्रव्य गुण स्वभावः ।
कालः क्रतुः सत्यम् ऋतम् च धर्मः त्वयि अक्षरम् यत् त्रिवृत् आननन्ति ।।

शब्दार्थ—

त्वम्	१.	अग्नि	कालः	९.	आप ही काल
शब्दयोनिः	२.	वेदों के कारण	क्रतुः सत्यम्	१०.	यज्ञ सत्य एवम्
जगत् आदिः	३.	जगत् के आदि कारण	ऋतम् च	११.	मधुरवाणी हैं और
आत्मा	७.	स्वरूप (तथा)	धर्मः त्वयि	१२.	धर्म आपका ही स्वरूप है और
प्राणेन्द्रिय	४.	प्राण, इन्द्रिय	अक्षरम्	१४.	अक्षरात्मक ओम् है
द्रव्य	५.	पञ्च महाभूत	यत्	१३.	जो
गुण	६.	शब्दादि विषयों के	त्रिवृत्	१५.	त्रिगुणात्म प्रकृति है वह
स्वभावः ।	८.	भिन्न-भिन्न स्वभाव हैं	आमनन्ति ।।	१६	आप ही हैं

श्लोकार्थ—आप वेदों के कारण जगत् के आदि कारण, प्राण, इन्द्रिय, पञ्च महाभूत, शब्दादि विषयों के स्वरूप तथा भिन्न-भिन्न स्वभाव हैं । आप ही काल, यज्ञ, सत्य एवम् मधुरवाणी हैं । और धर्म आपका ही स्वरूप है । जो अक्षरात्मक ओइम् है । और त्रिगुणात्म प्रकृति है वह आप ही हैं ।।

षड्विंशः श्लोकः

अग्निर्मुखं तेऽखिलदेवतात्मा क्षितिं विदुर्लोकभवाङ्घ्रिपङ्कजम् ।
कालं गतिं तेऽखिलदेवतात्मनो दिशश्च कर्णौ रसनं जलेशम् ।।२६।।

पदच्छेद—अग्निः मुखम् ते अखिल देवता आत्मा क्षितिम् विदुः लोक भव अङ्घ्रिपङ्कजम् ।
कालम् गतिम् ते अखिल देवतात्मनः दिशः च कर्णौः रसनम् जलेशम् ।।

शब्दार्थ—

अग्निः	५.	अग्नि	पङ्कजम्	१०.	कमल
मुखम्	७.	मुख है	कालम्	१४.	काल
ते	६.	आपका	गतिम्	१६.	गति हैं
अखिल	३.	सर्व	ते	१५.	आपकी
देवताआत्मा	४.	देव स्वरूप	अखिल	१२.	हे समस्त
क्षितिम्	८.	यह पृथ्वी आपका	देवतात्मनः	१३.	देव स्वरूप
विदुः	११.	कही गई है	दिशः च	१७.	दिशायें और
लोक	१.	तीनों लोकों के	कर्णौः	१८.	कान तथा
भव ।	२.	अभ्युदय करने वाले शङ्कर	रसनम्	२०.	रसनेन्द्रिय हैं
अङ्घ्रि	९.	चरण	जलेशम् ।।	१९.	वरुण

श्लोकार्थ—तीनों लोकों के अभ्युदय करने वाले शङ्कर सर्व देव स्वरूप अग्नि आपका मुख है । यह पृथ्वी आपका चरण कमल कही गई है । हे समस्त देवस्वरूप काल आपकी गति है । दिशायें और कान तथा वरुण रसनेन्द्रिय हैं ।।

सप्तविंशः श्लोकः

नाभिर्नभस्ते श्वसनं नभस्वान् सूर्यश्च चक्षूंषि जलं स्म रेतः ।
परावरात्माश्रयणं तवात्मा सोमो मनो द्यौर्भगवञ्छिरस्ते ॥२७॥

पदच्छेद— नाभिः नभः ते श्वसनम् नभस्वान् सूर्यः च चक्षूंषि जलम् स्म रेतः ।
परावर आत्म आश्रयणम् तव आत्मा सोमः मनः द्यौः भगवन् शिरः ते ॥

शब्दार्थ—

नाभिः	२.	नाभि है	परावर	१०.	ऊँचे-नीचे
नभः ते	१.	आकाश आपकी	आत्म	११.	सभी जीवों का
श्वसनम्	४.	श्वास है	आश्रयणम्	१२.	आश्रय
नभस्वान्	३.	वायु	तवआत्मा	१३.	आपका अहंकार है
सूर्यः	६.	सूर्य	सोमः मनः	१४.	चन्द्रमा मन है और
च	५.	और	द्यौः	१६.	स्वर्ग
चक्षूंषि	७.	नेत्र हैं	भगवन्	१५.	हे भगवन् !
जलम् स्म	९.	जल है	शिरः	१८.	मस्तक है
रेतः ।	८.	आपका वीर्य	ते ॥	१७.	आपका

श्लोकार्थ—आकाश आपकी नाभि है। वायु श्वास है। और सूर्य नेत्र हैं। आपका वीर्य जल है। ऊँचे-नीचे सभी जीवों का आश्रय आपका अहंकार है। चन्द्रमा मन है और हे भगवन् ! स्वर्ग आपका मस्तक है ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

कुक्षिः समुद्रा गिरयोऽस्थिसङ्घा रोमाणि सर्वौषधिवीरुधस्ते ।
छन्दांसि साक्षात् तव सप्त धातवस्त्रयीमयात्मन् हृदयं सर्वधर्मः ॥२८॥

पदच्छेद— कुक्षिः समुद्राः गिरयः अस्थिसङ्घाः रोमाणि सर्व ओषधि वीरुधः ते ।
छन्दांसि साक्षात् तव सप्त धातवः त्रयीमय आत्मन् हृदयम् सर्व धर्मः ॥

शब्दार्थ—

कुक्षिः	४.	कोख है	छन्दांसि	११.	गायत्री आदि छन्द
समुद्राः	३.	समुद्र आपकी	साक्षात्	१२.	साक्षात्
गिरयः	६.	पर्वत है	तव सप्त	१३.	आपकी सातों
अस्थिसङ्घाः	५.	हड्डियों का समूह	धातवः	१४.	धातुयें हैं
रोमाणि	१०	रोम हैं	त्रयीमय	१.	हे वेद स्वरूप !
सर्व	७.	सब प्रकार की	आत्मन्	२.	भगवन्
ओषधि	८.	औषधियाँ और	हृदयम्	१६	आपके हृदय हैं
वीरुधः ते ।	९.	लतायें आपके	सर्वधर्मः ॥	१५.	सभी प्रकार के धर्म

श्लोकार्थ—हे वेद स्वरूप भगवन् ! समुद्र आपकी कोख है। हड्डियों का समूह पर्वत है। सब प्रकार की औषधियाँ और लतायें आपके रोम हैं। गायत्री आदि छन्द साक्षात् आपकी सातों धातुयें हैं। सभी प्रकार के धर्म आपके हृदय हैं।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

मुखानि पञ्चोपनिषदस्तवेश यैस्त्रिंशदष्टोत्तरमन्त्रवर्गः ।
यत् तच्छिवाख्यं परमार्थतत्त्वं देव स्वयंज्योतिरवस्थितिस्ते ॥२९॥

पदच्छेद— मुखानि पञ्चोपनिषदः तव ईश यैः त्रिंशत् अष्टोत्तर मन्त्रवर्गः ।
यत् तत् शिव आख्यम् परमार्थं तत्त्वम् देव स्वयम् ज्योतिः अवस्थितिः ते ॥

शब्दार्थ—

मुखानि	४.	पाँच मुख हैं	तत्	१२.	तब उसी का
पञ्चोपनिषदः	२.	पाँच उपनिषद् ही	शिवआख्यम्	१३.	शिवनाम होता है
तव	३.	आपके	परमार्थं	१५.	परमार्थ
ईश	१.	हे स्वामिन् !	तत्त्वम्	१६.	तत्त्व है
यैः	५.	उन्हीं के पदच्छेद से	देव	८.	हे देव !
त्रिंशत् अष्टोत्तर	६.	अड़तीस	स्वयम् ज्योतिः	१४.	वही स्वयं प्रकाश
मन्त्रवर्गः ।	७.	कलात्मक मंत्र निकले हैं	अवस्थितिः	११.	स्थिति में होते हैं
यत्	१०.	जब अपनी	ते ॥	९.	आप

श्लोकार्थ—हे स्वामिन् ! पाँच उपनिषद ही आपके पाँच मुख हैं । उन्हीं के पदच्छेद से अड़तीस कलात्मक मंत्र निकले हैं । हे देव ! आप जब अपनी स्थिति होते हैं तब उसी का शिवनाम होता है । वही स्वयं प्रकाश परमार्थ तत्त्व हैं ॥

त्रिंशः श्लोकः

छाया त्वधर्मोर्मिषु यैर्विसर्गो नेत्रत्रयं सत्त्वरजस्तमांसि ।
सांख्यात्मनः शास्त्रकृतस्तवेक्षा छन्दोमयो देव ऋषिः पुराणः ॥३०॥

पदच्छेद— छाया तु अधर्म ऊर्मिषु यैः विसर्गः नेत्र त्रयम् सत्त्वरजः तमांसि ।
सांख्य आत्मनः शास्त्र कृतः तवेक्षा छन्दोमयः देव ऋषिः पुराणः ॥

शब्दार्थ —

छाया तु	४.	आपकी छाया है	सांख्य	११.	आप ही सांख्य आदि
अधर्म	२.	अधर्म की	आत्मनः	१३.	रूप में
ऊर्मिषु	३.	दम्भ आदि तरंगों में	शास्त्र	१२.	शास्त्रों के
यैः	५.	जिनसे	कृतः	१४.	स्थित हैं
विसर्गः	६.	सृष्टि होती है	तवेक्षा	१६.	आपका विचार है
नेत्र	१०.	नेत्र हैं	छन्दोमयः	१५.	गायत्री आदि छन्दरूपवेद ही
त्रयम्	९.	आपके तीन	देव	१.	हे देव !
सत्त्व रजः	७.	सत्त्व, रज और	ऋषिः	१८.	ऋषि हैं
तमांसि ।	८.	तम	पुराणः ॥	१७.	आप ही प्राचीन

श्लोकार्थ—हे देव ! अधर्म की दम्भ आदि तरंगों में आपकी छाया है । जिनसे सृष्टि होती है । सत्त्व रज और तम आपके तीन नेत्र हैं । आप ही सांख्य आदि शास्त्रों के रूप में स्थित हैं । गायत्री आदि छन्दरूप वेद ही आपका विचार है । आप ही प्राचीन ऋषि हैं ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

न ते गिरित्राखिललोकपालविरिञ्चवैकुण्ठसुरेन्द्रगम्यम् ।
ज्योतिः परं यत्र रजस्तमश्च सत्त्वं न यद् ब्रह्म निरस्तभेदम् ॥३१॥

पदच्छेद--- न ते गिरित्र अखिललोकपाल विरिञ्च वैकुण्ठ सुरेन्द्र गम्यम् ।
ज्योतिः परम् यत्र रजः तमः च सत्त्वम् न यत् ब्रह्म निरस्त भेदम् ॥

शब्दार्थ—

न	१०.	भी नहीं	ज्योतिः	४.	ज्योतिर्मय स्वरूप है
ते	२.	आपका	परम्	३.	परम
गिरित्र	१.	हे भगवन् !	यत्र	१२.	जहां
अखिल	५.	इसे समस्त	रजः तमः	१३.	रज, तम
लोकपाल	६.	लोकपाल	च सत्त्वम् न	१४.	और सत्त्व गुण नहीं है
विरिञ्च	७.	ब्रह्मा	यत्	१५.	और जो
वैकुण्ठ	८.	विष्णु और	ब्रह्म	१८.	ब्रह्मतत्त्व है
सुरेन्द्र	९.	देवराजइन्द्र	निरस्त	१७.	रहित
गम्यम् ।	११.	जानते हैं	भेदम् ॥	१६.	भेद

श्लोकार्थ---हे भगवन् ! आपका परम ज्योतिर्मय स्वरूप है । इसे समस्त लोकपाल, ब्रह्मा विष्णु और देवराज इन्द्र भी नहीं जानते हैं । जहाँ रज, तम और सत्त्वगुण नहीं है । और जो भेद रहित ब्रह्मतत्त्व है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

कामाध्वरत्रिपुरकालगराद्यनेकभूतद्रुहः क्षपयतः स्तुतये न तत् ते ।
यस्त्वन्तकाल इदमात्मकृतं स्वनेत्रवह्निस्फुलिङ्गशिखया भसितं न वेद ॥३२॥

पदच्छेद— काम अध्वर त्रिपुर कालगर आदि अनेक भूतद्रुहः क्षपयतः स्तुतये न तत् ते ।
यः तु अन्तकाल इदम् आत्मकृतम् स्वनेत्र वह्नि स्फुलिङ्ग शिखया भसितम् न वेद ॥

शब्दार्थ—

काम	१.	अपने कामदेव	यः तु	१७.	आप उसे
अध्वर	२	दक्ष के यज्ञ	अन्तकाल	१०.	प्रलय के समय
त्रिपुर	३.	त्रिपुरासुर	इदम्	१२.	यह विश्व
कालगर	४.	कालकूट विष	आत्मकृतम्	११.	आपके द्वारा बनाया हुआ
आदिअनेक	५.	आदि अनेक	स्वनेत्र	१३.	आप के ही नेत्र से निकली
भूतद्रुह	६.	जीव द्रोही असुरों को	वह्नि स्फुलिङ्ग	१४.	आग की चिनगारी एवं
क्षपयतः	७.	नष्ट कर दिया है	शिखया	१५.	लपट से जलकर
स्तुतये न	९.	स्तुति नहीं है (क्योंकि)	भसितम्	१६.	भस्म हो जाता है पर
तत् ते ।	८.	लेकिन यह आपकी कोई	न वेद ॥	१८.	जान तक नहीं पाते

श्लोकार्थ—आपने कामदेव, दक्ष के यज्ञ, त्रिपुरासुर और कालकूट विष आदि अनेक जीवद्रोही असुरों को नष्ट कर दिया है । लेकिन यह आपकी कोई स्तुति नहीं है । क्योंकि प्रलय के समय आपके द्वारा बनाया हुआ यह विश्व आपके ही नेत्र से निकली आग की चिनगारी एवम् लपट से जलकर भस्म हो जाता है पर आप उसे जान तक नहीं पाते ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

ये त्वात्मरामगुरुभिर्हृदि चिन्तिताङ्घ्रिद्वन्द्वं चरन्तमुमया तपसाभितप्तम् ।
कत्थन्त उग्रपरुषंनिरतं श्मशाने ते नूनमूतिमविदंस्तव हातलज्जाः ॥३३॥

पदच्छेद—ये तु आत्मरामगुरुभिः हृदि चिन्तित अङ्घ्रि द्वन्द्वम् चरन्तम् उमया तपसा अभितप्तम् ।
कत्थन्तः उग्रपरुषम् निरतम् श्मशाने ते नूनम् ऊतिम् अविदन् तव हात लज्जाः ॥

शब्दार्थ—

ये तु	१.	जो	अभितप्तम् ।	८.	लीन रहने वाले आपको
आत्मराम	२.	जीवन्मुक्त, आत्माराम	कत्थन्तः	१४.	कहते हैं
गुरुभिः हृदि	३.	महापुरुष अपने हृदय में	उग्रपरुषम्	१३.	उग्र अथवा निष्ठुर
चिन्तित	६.	ध्यान करते रहते हैं और	निरतम्	१२.	रहने के कारण
अङ्घ्रि	५.	चरणों का	श्मशाने	११.	श्मशान में
द्वन्द्वम्	४.	आपके युगल	ते नूनम्	१६.	आपको तथा
चरन्तम्	१०	देखकर	ऊतिम्	१८.	लीला को
उमया	९.	सती जी के साथ	अविदन्	१९.	क्या जानें
तपसा	७.	तपस्या में	तव	१७.	आपकी
			हातलज्जाः ॥	१५.	ऐसे निर्लज्ज व्यक्ति

श्लोकार्थ— जो जीवन्मुक्त, आत्माराम महापुरुष अपने हृदय में आप के युगल चरणों का ध्यान करते रहते हैं और तपस्या में लीन रहने वाले आपको सती जी के साथ देखकर श्मशान में रहने के कारण उग्र अथवा निष्ठुर कहते हैं ऐसे निर्लज्ज व्यक्ति आपको तथा आपकी लीला को क्या जानें ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

तत् तस्य ते सदसतोः परतः परस्य नाञ्जः स्वरूपगमने प्रभवन्ति भूम्नः ।
ब्रह्मादयः किमुत संस्तवने वयं तु तत्सर्गसर्गविषया अपि शक्तिमात्रम् ॥३४॥

पदच्छेद— तत् तस्य ते सदसतोः परतः परस्य न अञ्जः स्वरूप गमने प्रभवन्ति भूम्नः ।
ब्रह्म आदयः किमुत संस्तवने वयम् तु तत्सर्ग सर्गविषयाः अपि शक्ति मात्रम् ॥

शब्दार्थ—

तत्	५.	ऐसे	ब्रह्म आदयः	११.	ब्रह्मा आदि देवताओं ने
तस्य ते	४.	उस आपके	किमुत	१०.	अधिक क्या कहें
सदसतोः	१.	कार्य कारण रूप जगत से	संस्तवने	१३.	आपका गुण गान किया है
परतः	३	परे	वयम् तु	१६.	हम लोगों ने तो
परस्य	२.	परे माया से भी	तत् सर्ग	१४.	उसके पुत्रों के
न अञ्जः	९.	नहीं है	सर्ग विषयाः	१५.	पुत्र
स्वरूप गमने	७.	स्वरूप को जानने में कोई	अपि	१२.	भी
प्रभवन्ति	८.	समर्थ	शक्ति	१७.	अपनी शक्ति के
भूम्नः ।	६.	अनन्त	मात्रम् ॥	१८.	अनुसार ही आपकी स्तुति की है

श्लोकार्थ—कार्य कारण रूप जगत् से परे, माया से भी परे आपके उस ऐसे अनन्त स्वरूप को जानने में कोई समर्थ नहीं है । अधिक क्या कहें, ब्रह्मा आदि देवताओं ने भी आपका गुणगान किया है । उनके पुत्रों के पुत्र हम लोगों ने तो अपनी शक्ति के अनुसार ही आपकी स्तुति की है ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

एतत् परं प्रपश्यामो न परं ते महेश्वर।
मृडनाय हि लोकस्य व्यक्तिस्तेऽव्यक्तकर्मणः ॥३५॥

पदच्छेद— एतत् परम् प्रपश्यामः न परम् ते महेश्वर।
मृडनाय हि लोकस्य व्यक्तिः ते अव्यक्त कर्मणः ॥

शब्दार्थ—

एतत् परम्	२.	हम आपके इस लीला	मृडनाय	११.	कल्याण करने के लिये
प्रपश्यामः	३.	रूप को ही देख रहे हैं	हिलोकस्य	१०.	संसार का
न	६.	नहीं जानते	व्यक्तिः	१२.	व्यक्त रूप से सभी रहते हैं
परम्	५.	परम स्वरूप को	ते	७.	आपकी
ते	४.	आपके	अव्यक्त	९.	अव्यक्त हैं, पर आप
महेश्वर।	१.	हे महेश्वर!	कर्मणः ॥	८.	लीलायें

श्लोकार्थ—हे महेश्वर! हम आपके इस लीला रूप को ही देख रहे हैं। आपके परम स्वरूप को नहीं जानते। आपकी लीलायें अव्यक्त हैं। पर आप संसार का कल्याण करने के लिये व्यक्त रूप से भी रहते हैं॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—तद्वीक्ष्य व्यसनं तासां कृपया भृशपीडितः।
सर्वभूतसुहृद् देव इदमाह सतीं प्रियाम् ॥३६॥

पदच्छेद— तत् वीक्ष्य व्यसनम् तासाम् कृपया भृशपीडितः।
सर्वभूत सुहृद् देव इदम् आह सतीम् प्रियाम् ॥

शब्दार्थ—

तत्	२.	यह	सर्व	८.	समस्त
वीक्ष्य	४.	देखकर	भूत	९.	प्राणीमात्र के
व्यसनम्	३.	संकट	सुहृद्	१०.	अकारण बन्धु
तासाम्	१.	प्रजा का	देव	११.	देवाधिदेव शङ्कर जी ने
कृपया	५.	करुणा के कारण	इदम् आह	१४.	यह बात कही
भृश	६.	अत्यधिक	सतीम्	१३.	सती जी से
पीडितः।	७.	पीड़ित होते हुये	प्रियाम् ॥	१२.	अपनी प्रिया

श्लोकार्थ—प्रजा का यह संकट देखकर करुणा के कारण अत्यधिक पीड़ित होते हुये, समस्त प्राणीमात्र के अकारण बन्धु देवाधिदेव शङ्कर जी ने अपनी प्रिया सती जी से यह बात कही॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

शिव उवाच— अहो बत भवान्येतत् प्रजानां पश्य वैशसम् ।
क्षीरोदमथनोद्भूतात् कालकूटादुपस्थितम् ॥३७॥

पदच्छेद— अहो बत भवानि एतत् प्रजानाम् पश्य वैशसम् ।
क्षीरोद मथन उद्भूतात् कालकूटात् उपस्थितम् ॥

शब्दार्थ—

अहो	२.	यह बड़े	वैशसम् ।	११.	कितना बड़ा दुःख
बत	३.	खेद की बात है	क्षीरोद	५.	समुद्र
भवानि	१.	हे देवि !	मथन	६.	मन्थन से
एतत्	९.	इस	उद्भूतात्	७.	निकले हुये
प्रजानाम्	१०.	प्रजा पर	कालकूटात्	८.	कालकूट विष के कारण
पश्य	४.	देखो तो	उपस्थितम् ॥	१२.	आ पड़ा है

श्लोकार्थ—हे देवि ! यह बड़े खेद की बात है । देखो तो समुद्र मन्थन से निकले हुये कालकूट विष के कारण इस प्रजा पर कितना बड़ा दुःख आ पड़ा है ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

आसां प्राणपरीप्सूनां विधेयमभयं हि मे ।
एतावान्हि प्रभोरर्थो यद् दीनपरिपालनम् ॥३८॥

पदच्छेद— आसाम् प्राणपरीप्सूनाम् विधेयम् अभयम् हि मे ।
एतावान् हि प्रभोः अर्थो यत् दीन परिपालनम् ॥

शब्दार्थ—

आसाम्	१.	इन	एतावान् हि	८.	लोगों के जीवन का इतना ही
प्राण	२.	प्राणों की	प्रभोः	७.	शान्ति-सामर्थ्य सम्पन्न
परीप्सूनाम्	३.	रक्षा करने वालों को	अर्थो	९.	प्रयोजन है
विधेयम्	६.	प्रदान करना चाहिये	यत्	१०.	कि वे
अभयम्	५.	अभय	दीन	११.	दीन जनों की
हि मे ।	४.	मुझे	परिपालनम् ॥	१२.	रक्षा करें

श्लोकार्थ—इन प्राणों की रक्षा करनेवालों को मुझे अभय प्रदान करना चाहिये । शक्ति-सामर्थ्य सम्पन्न लोगों के जीवन का इतना ही प्रयोजन है कि वे दीन जनों की रक्षा करें ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

प्राणैः स्वैः प्राणिनः पान्ति साधवः क्षणभङ्गुरैः ।
बद्धवैरेषु भूतेषु मोहितेष्वात्ममायया ॥३९॥

पदच्छेद— प्राणैः स्वैः प्राणिनः पान्ति साधवः क्षणभङ्गुरैः ।
बद्धवैरेषु भूतेषु मोहित एषु आत्म मायया ॥

शब्दार्थ—

प्राणैः	४.	प्राणों की बलि देकर भी	बद्ध	११.	बाँध लेते हैं
स्वैः	२.	अपने	वैरेषु	१०.	वैर
प्राणिनः	५.	प्राणियों की	भूतेषु	९.	प्राणियों से
पान्ति	६.	रक्षा करते हैं	मोहिते	८.	मोहित हुये प्राणी ही
साधवः	१.	सज्जन पुरुष	आत्ममायया ॥	७.	आपकी माया से
क्षणभङ्गुरैः ।	३.	क्षणभङ्गुर			

श्लोकार्थ—सज्जन पुरुष अपने क्षणभङ्गुर प्राणों की बलि देकर भी प्राणियों की रक्षा करते हैं। आपकी माया से मोहित हुये प्राणी ही प्राणियों से वैर बाँध लेते हैं ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

पुंसः कृपयतो भद्रे सर्वात्मा प्रीयते हरिः ।
प्रीते हरौ भगवति प्रीयेऽहं सचराचरः ।
तस्मादिदं गरं भुञ्जे प्रजानां स्वस्तिरस्तु मे ॥४०॥

पदच्छेद— पुंसः कृपयतः भद्रे सर्वात्मा प्रीयते हरिः ।
प्रीते हरौ भगवति प्रीये अहम् सचराचरः ।
तस्मात् इदम् गरम् भुञ्जे प्रजानाम् स्वस्तिः अस्तु मे ॥

शब्दार्थ—

पुंसः	२.	प्राणियों पर	अहम्	११	मैं
कृपयतः	३.	कृपा करने वालों पर	सचराचरः ।	१०.	चराचर प्राणियों सहित
भद्रे	१.	हे देवि !	तस्मात्	१३.	इसलिये मैं
सर्वात्मा	४.	सबकी आत्मा	इदम्	१४.	इस
प्रीयते	६.	प्रसन्न होते हैं	गरम्	१५.	विष को
हरिः ।	५.	भगवान् श्रीकृष्ण	भुञ्जे	१६.	भक्षण करता हूँ जिससे
प्रीते	९.	प्रसन्न होने पर	प्रजानाम्	१८.	प्रजा का
हरौ	८.	श्री हरि के	स्वस्तिः	१९.	कल्याण
भगवति	७.	भगवान्	अस्तु	२०.	हो
प्रीये	१२.	प्रसन्न हो जाता हूँ	मे ॥	१७.	मेरी

श्लोकार्थ—हे देवि ! प्राणियों पर कृपा करने वालों पर सर्वात्मा भगवान् श्रीकृष्ण प्रसन्न होते हैं। भगवान् श्रीहरि के प्रसन्न होने पर चराचर प्राणियों सहित मैं प्रसन्न हो जाता हूँ। इसलिये मैं इस विष को भक्षण करता हूँ। जिससे मेरी प्रजा का कल्याण हो ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवमामन्त्र्य भगवान्भवानीं विश्वभावनः ।
तद् विषं जग्धुमारेभे प्रभावज्ञान्वमोदत ॥४१॥

पदच्छेद— एवम् आमन्त्र्य भगवान् प्रभावज्ञा अन्वविश्व भावनः ।
तत् विषम् जग्धुम् आरेभे प्रभाव ज्ञा ज्ञान् अन्वमोदत ॥

शब्दार्थ—

एवम्	५.	ऐसा	तद्	७.	उस
आमन्त्र्य	६	कह करके	विषम्	८.	विष को
भगवान्	३.	भगवान् शङ्कर ने	जग्धुम्	९.	भक्षण करना
भवानीम्	४.	सती जी से	आरेभे	१०.	आरम्भ किया सती जी ने भी
विश्व	१.	विश्व के	प्रभाव	११.	उनका प्रभाव
भावनः ।	२.	जीवनदाता	ज्ञा	१२.	जानने के कारण
			अन्वमोदत ॥	१३.	अनुमोदन कर दिया

श्लोकार्थ—विश्व के जीवनदाता भगवान् शङ्कर ने सती जी से ऐसा कह करके उस विषको भक्षण करना आरम्भ कर किया । सती जी ने भी उनका प्रभाव जानने के कारण अनुमोदन कर दिया ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

ततः करतलीकृत्य व्यापि हालाहलं विषम् ।
अभक्षयन्महादेवः कृपया भूतभावनः ॥४२॥

पदच्छेद— ततः करतली कृत्य व्यापि हालाहलम् विषम् ।
अभक्षयत् महादेवः कृपया भूत भावनः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	इसके बाद	अभक्ष यत्	११.	भक्षण कर लिया
करतली	९.	अपनी हथेली पर	महादेवः	५.	भगवान् शङ्कर ने
कृत्य	१०.	लेकर	कृपया	४.	कृपालु
व्यापि	६.	उस तीक्ष्ण	भूत	२.	प्राणियों के
हालाहलम्	७.	हलाहल	भावनः ॥	३.	जीवनदाता
विषम् ।	८.	विषको			

श्लोकार्थ—इसके बाद प्राणियों के जीवनदाता कृपालु भगवान् शंकर ने उस तीक्ष्ण हलाहल विषको अपनी हथेली पर लेकर भक्षण कर लिया ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

तस्यापि दर्शयामास स्ववीर्यं जलकल्मषः ।
यच्चकार गले नीलं तच्च साधोर्विभूषणम् ॥४३॥

पदच्छेद— तस्य अपि दर्शयामास स्ववीर्यम् जल कल्मषः ।
यत् चकार गले नीलम् तत् च साधोः विभूषणम् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	३.	उस विष ने	यत्	८.	उससे
अपि	४.	भी	चकार	११.	पड़ गया
दर्शयामास	७.	प्रकट कर दिया	गले	९.	उनका गला
स्व	५.	अपना	नीलम्	१०.	नीला
वीर्यम्	६.	प्रभाव	तत् च	१२.	पर वह तो
जल	१.	जल के	साधोः	१३.	भगवान् शङ्कर के लिये
कल्मषः ।	२.	पाप रूप	विभूषणम् ॥	१४.	भूषणरूप हो गया

श्लोकार्थ—जल के पाप रूप उस विष ने भी अपना प्रभाव प्रकट कर दिया । उससे उनका गला नीला पड़ गया । पर वह तो भगवान् शङ्कर के लिये भूषण रूप हो गया ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

तप्यन्ते लोकतापेन साधवः प्रायशो जनाः ।
परमाराधनं तद्धि पुरुषस्याखिलात्मनः ॥४४॥

पदच्छेद— तप्यन्ते लोकतापेन साधवः प्रायशः जनाः ।
परम आराधनम् तत् हि पुरुषस्य अखिल आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

तप्यन्ते	६.	दुःखी होते हैं	परम	१०.	परम
लोक	४.	संसार के	आराधनम्	१२.	आराधना है
तापेन	५.	दुःख से	तत् हि	७.	पर यह तो
साधवः	२.	सज्जन	पुरुषस्य	११.	पुरुष की
प्रायशः	१.	प्रायः	अखिल	८.	समस्त प्राणियों के
जनाः ।	३.	पुरुष	आत्मनः ॥	९.	आत्मस्वरूप

श्लोकार्थ—प्रायः सज्जन पुरुष संसार के दुःख से दुःखी होते हैं । पर यह तो समस्त प्राणियों के आत्मस्वरूप परम पुरुष की आराधना है ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

निशम्य कर्म तच्छम्भोर्देवदेवस्य मीढुषः ।

प्रजा दाक्षायणी ब्रह्मा वैकुण्ठश्च शशंसिरे ॥४५॥

पदच्छेद— निशम्य कर्म तत् शम्भोः देवदेवस्य मीढुषः ।
प्रजा दाक्षायणी ब्रह्मा वैकुण्ठः च शशंसिरे ॥

शब्दार्थ—

निशम्य	६.	सुन कर	प्रजा	७.	सम्पूर्ण प्रजा
कर्म	५.	अद्भुत कर्म	दाक्षायणी	८.	दक्षकन्या सती
तत्	४.	यह	ब्रह्मा	९.	ब्रह्मा जी
शम्भोः	३.	भगवान् शङ्कर का	वैकुण्ठः	११.	विष्णु भगवान् भी
देवदेवस्य	२.	देवाधिदेव	च	१०.	और
मीढुषः ।	१.	सब की कामनापूर्ण करने वाले	शशंसिरे ॥	१२.	उनकी प्रशंसा करने लगे

श्लोकार्थ—सबकी कामना पूर्ण करने वाले देवाधिदेव भगवान् शङ्कर का यह अद्भुत कर्म सुन कर सम्पूर्ण प्रजा, दक्षकन्या सती, ब्रह्मा जी और विष्णु भगवान् भी उनकी प्रशंसा करने लगे ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

प्रस्कन्नं पिबतः पाणेर्यत् किञ्चिज्जगृहुः स्म तत् ।

वृश्चिकाहिविषौषध्यो दन्दशूकाश्च येऽपरे ॥४६॥

पदच्छेद— प्रस्कन्नम् पिबतः प्राणेः यत् किञ्चित् जगृहुः स्म तत् ।
वृश्चिक अहि विष ओषध्यः दन्शूकाः च ये अपरे ॥

शब्दार्थ—

प्रस्कन्नम्	२.	गिरे हुये विषको	वृश्चिक अहि	७.	विच्छू-साँप
पिबतः	१.	पीते समय	विष	९.	विषैली
प्राणेः यत्	३.	प्राणियों ने	ओषध्यः	१२.	औषधियों ने ग्रहण कर लिया
किञ्चित्	४.	जो थोड़ा बहुत	दन्दशूकाः	१०.	जीवों ने
जगृहुः स्म	५.	प्राप्त किया	च	८.	और
तत् ।	६.	उसे पी लिया	ये अपरे ॥	११.	तथा अन्य

श्लोकार्थ—भगवान् शङ्कर के पीते समय गिरे हुये विष को प्राणियों ने जो थोड़ा बहुत प्राप्त किया उसे पी लिया । बिच्छू-साँप और विषैले जीवों ने तथा अन्य ओषधियों ने ग्रहण कर लिया ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
अष्टमे स्कन्धे अमृतमथने सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— पीते गरे वृषाङ्केण प्रीतास्तेऽमरदानवाः ।
ममन्थुस्तरसा सिन्धुं हविर्धानी ततोऽभवत् ॥१॥

पदच्छेद— पीते गरे वृषअङ्केण प्रीताः ते अमर दानवाः ।
ममन्थुः तरसा सिन्धुम् हविर्धानी ततः अभवत् ॥

शब्दार्थ—

पीते	५.	पी लेने पर	ममन्थुः	९.	मन्थन करने पर
गरे	४.	विष के	तरसा	७.	अत्यधिक उत्साह से
वृषअङ्केण	३.	शिव जी द्वारा	सिन्धुं	८.	समुद्र
प्रीताः	६.	प्रसन्न हो गये	हविर्धानी	११.	कामधेनु
ते अमर	१.	वे देव और	ततः	१०.	उससे
दानवाः ।	२.	दानव	अभवत् ॥	१२.	प्रकट हुई

श्लोकार्थ—वे देव और दानव शिव जी द्वारा विष के पी लेने पर प्रसन्न हो गये । अत्यधिक उत्साह से समुह मन्थन करने लगे । उससे काम धेनु प्रकट हुई ॥

द्वितीयः श्लोकः

तामग्निहोत्रीमृषयो जगृहुर्ब्रह्मवादिनः ।
यज्ञस्य देवयानस्य मेध्याय हविषे नृप ॥२॥

पदच्छेद— ताम् अग्निहोत्रीम् ऋषयः जगृहुः ब्रह्म वादिनः ।
यज्ञस्य देवयानस्य मेध्याय हविषे नृप ॥

शब्दार्थ—

ताम्	६.	उत्पन्न करने वाली काम धेनु को	यज्ञस्य	९.	यज्ञोपयोगी
अग्निहोत्रीम्	५.	अग्निहोत्र की सामग्री	देव यानस्य	८.	ब्रह्मलोक के मार्ग को
ऋषयः	४.	ऋषियों ने	मेध्याय	११.	घी दूध आदि सामग्री के लिये
जगृहुः	७.	ग्रहण किया	हविषे	१०.	हव्य
ब्रह्म	२.	ब्रह्म	नृप ॥	१.	हे राजन्
वादिनः ।	३.	वादी			

श्लोकार्थ—हे राजन् ! ब्रह्मवादी ऋषियों ने अग्निहोत्र की सामग्री उत्पन्न करने वाली उस कामधेनु को ब्रह्मलोक के मार्ग की यज्ञोपयोगी हव्य घी दूध आदि सामग्री के लिये ग्रहण किया ॥

तृतीयः श्लोकः

तत उच्चैःश्रवानाम हयोऽभूच्चन्द्रपाण्डुरः ।
तस्मिन्बलिः स्पृहां चक्रे नेन्द्र ईश्वरशिक्षया ॥३॥

पदच्छेद—
ततः उच्चैः श्रवाः नाम हयः अभूत् चन्द्र पाण्डुरः ।
तस्मिन् बलिः स्पृहाम् चक्रे न इन्द्रः ईश्वर शिक्षया ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	उसके बाद	तस्मिन्	९.	उसे लेने की
उच्चैः श्रवाः	२.	उच्चैः श्रवा	बलिः	८.	बलि ने
नाम	३.	नाम का	स्पृहाम्	१०.	इच्छा प्रकट
हयः	४.	घोड़ा	चक्रे	११.	की
अभूत्	५.	निकला वह	न इन्द्रः	१४.	इन्द्र ने इच्छा नहीं की
चन्द्र	६.	चन्द्रमा के समान	ईश्वर	१२.	भगवान् द्वारा
पाण्डुरः ।	७.	श्वेतवर्ण का था	शिक्षया ॥	१३.	सिखाये जाने के कारण

श्लोकार्थ—उसके बाद उच्चैः श्रवा नाम का घोड़ा निकला, वह चन्द्रमा के समान श्वेतवर्ण का था। बलि ने उसे लेने की इच्छा प्रकट की। भगवान् द्वारा सिखाये जाने के कारण इन्द्र ने इच्छा नहीं की ॥

चतुर्थः श्लोकः

तत ऐरावतो नाम वारणेन्द्रो विनिर्गतः ।
दन्तैश्चतुर्भिः श्वेताद्रेर्हरन्भगवतो महिम् ॥४॥

पदच्छेद—
ततः ऐरावतः नाम वारणेन्द्रः विनिर्गतः ।
दन्तैः चतुर्भिः श्वेत अद्रेः हरन् भगवतः महिम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	उसके बाद	चतुर्भिः	६.	चार
ऐरावतः	२.	ऐरावत	श्वेत	७.	श्वेत
नाम	३.	नाम का	अद्रेः	१०.	पर्वत कैलाश की
वारणेन्द्रः	४.	श्रेष्ठ हाथी	हरन्	१२.	मात करता था
विनिर्गतः ।	५.	निकला (जो)	भगवतः	९.	भगवान् शङ्कर के
दन्तैः	८.	दाँतो से युक्त था (जो)	महिम् ॥	११.	शोभा को भी

श्लोकार्थ—इसके बाद ऐरावत नाम का श्रेष्ठ हाथी निकला। जो चार श्वेत दाँतों से युक्त था। जो भगवान् शङ्कर के पर्वत कैलाश की शोभा को भी मात करता था ॥

पञ्चमः श्लोकः

कौस्तुभाख्यमभूद् रत्नं पद्मरागो महोदधेः ।
तस्मिन्हरिः स्पृहां चक्रे वक्षोऽलङ्करणे मणौ ॥५॥

पदच्छेद— कौस्तुभ आख्यम् अभूत् रत्नम् पद्मरागः महोदधेः ।
तस्मिन् हरिः स्पृहाम् चक्रे वक्षः अलङ्करणे मणौ ॥

शब्दार्थ—

कौस्तुभ	२.	कौस्तुभ	तस्मिन्	१२.	उसे
आख्यम्	३.	नामक	हरिः	११.	भगवान् श्रीहरि ने
अभूत्	६.	निकली	स्पृहाम्	१२.	लेने की इच्छा
रत्नम्	५.	मणि	चक्रे	१३.	प्रकट की
पद्मरागः	४.	पद्मराग	वक्षः	८.	हृदय पर
महोदधेः	१.	समुद्र से	अलङ्करणे	९.	धारण करने के लिये
			मणौ ॥	७.	मणि को

श्लोकार्थ—समुद्र से कौस्तुभ नामक पद्मरागमणि निकली । मणि को हृदय पर धारण करने के लिये उसे भगवान् श्रीहरि ने लेने की इच्छा प्रकट की ॥

षष्ठः श्लोकः

ततोऽभवत् पारिजातः सुरलोकविभूषणम् ।
पूरयत्यर्थिनो योऽर्थैः शश्वद् भुवि यथा भवान् ॥६॥

पदच्छेद— ततः अभवत् पारिजातः सुरलोक विभूषणम् ।
पूरयति अर्थिनः यः अर्थैः शश्वद् भुवि यथा भवान् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	इसके बाद	यः	६.	जो
अभवत्	५.	निकला	अर्थैः	८.	वस्तुओं के द्वारा
पारिजातः	४.	कल्पवृक्ष	शश्वद्	१२.	निरन्तर
सुरलोक	२.	स्वर्गलोक की	भुवि	११.	पृथ्वी पर
विभूषणम् ।	३.	शोभा बढ़ाने वाला	यथा	१०.	जैसे
पूरयति	९.	उसी प्रकार पूरी करता है	भवान् ॥	१३.	आप पूरी किया करते हैं
अर्थिनः	७.	याचकों की इच्छाओं को			

श्लोकार्थ—इसके बाद स्वर्गलोक की शोभा बढ़ाने वाला कल्पवृक्ष निकला जो याचकों की इच्छाओं को वस्तुओं के द्वारा उसी प्रकार पूरी करता है जैसे पृथ्वी पर आप पूरी किया करते हैं ॥

सप्तमः श्लोकः

ततश्चाप्सरसो जाता निष्ककण्ठ्यः सुवाससः ।
रमण्यः स्वर्गिणां वल्गुगतिलीलावलोकनैः ॥७॥

पदच्छेद— ततः च अप्सरसः जाताः निष्ककण्ठ्यः सुवाससः ।
रमण्यः स्वर्गिणाम् वल्गु गति लीला अवलोकनैः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तत्पश्चात्	रमण्यः	१२.	सुख देने वाली हुई
च	३.	और	स्वर्गिणाम्	११.	देवताओं को
अप्सरसः	५.	अप्सरायें	वल्गु	७.	वे अपनी मनोहर
जाताः	६.	प्रकट हुई	गति	८.	चाल
निष्ककण्ठ्यः	२.	गले में स्वर्णहार पहने	लीला	९.	विलास भरी
सुवाससः ।	४.	सुन्दर वस्त्रों वाली	अवलोकनैः ॥	१०	चितवन से

श्लोकार्थ—तत्पश्चात् गले में स्वर्णहार पहने और सुन्दर वस्त्रों वाली अप्सरायें प्रकट हुई । वे अपनी मनोहर चाल, विलास भरी चितवन से देवताओं को सुख देने वाली हुई ॥

अष्टमः श्लोकः

ततश्चाविरभूत् साक्षाच्छ्री रमा भगवत्परा ।
रञ्जयन्ती दिशः कान्त्या विद्युत् सौदामनी यथा ॥८॥

पदच्छेद— ततः च आविरभूत् साक्षात् श्रीः रमा भगवत् परा ।
रञ्जयन्ती दिशः कान्त्या विद्युत् सौदामनी यथा ॥

शब्दार्थ—

ततः	२.	इसके बाद	परा ।	५.	परायण
च	१.	और	रञ्जयन्ती	११.	सुशोभित कर रही थीं
आविरभूत्	८.	प्रकट हुई	दिशः	१०.	दिशाओं को उसी प्रकार
साक्षात्	६.	स्वयम्	कान्त्या	९.	वे अपनी कान्ति से
श्रीः	३.	शोभा की मूर्ति	विद्युत्	१३.	बिजली की
रमा	७.	लक्ष्मी देवी	सौदामनी	१४.	चमक जगमगा देती है
भगवत्	४.	भगवत्	यथा ॥	१२.	जैसे

श्लोकार्थ—और इसके बाद शोभा की मूर्ति भगवत्परायणा स्वयम् लक्ष्मी देवी प्रकट हुई । वे अपनी कान्ति से दिशाओं को उसी प्रकार सुशोभित कर रही थीं । जैसे बिजली की चमक जगमगा देती है ॥

नवमः श्लोकः

तस्यां चक्रुः स्पृहां सर्वे ससुरासुरमानवाः ।
रूपौदार्यवयोवर्णमहिमाक्षिप्तचेतसः ॥९॥

पदच्छेद— तस्याम् चक्रुः स्पृहाम् सर्वे ससुर असुर मानवाः ।
रूप औदार्य वयः वर्ण महिमा आक्षिप्त चेतसः ॥

शब्दार्थ—

तस्याम्	१२.	उसकी	रूप	१.	उसके सौन्दर्य
चक्रुः	१४.	करने लगे	औदार्य	२.	औदार्य
स्पृहाम्	१३.	इच्छा	वयः	३.	यौवन
सर्वे	११.	सब के सब	वर्ण	४.	रूप रंग तथा
ससुर	८.	वे देवता	महिमा	५.	महिमा से
असुर	९.	दैत्य तथा	आक्षिप्त	६.	आकृष्ट
मानवाः ।	१०.	मनुष्य	चेतसः ॥	७.	चित्तवाले

श्लोकार्थ—उसके सौन्दर्य, औदार्य, यौवन, रूप रंग तथा महिमा से आकृष्ट चित्त वाले वे देवता, दैत्य तथा मनुष्य सबके सब उसकी इच्छा करने लगे ।

दशमः श्लोकः

तस्या आसनमानिन्ये महेन्द्रो महदद्भुतम् ।
मूर्तिमत्यः सरिच्छ्रेष्ठा हेमकुम्भैर्जलं शुचि ॥१०॥

पदच्छेद— तस्याः आसनम् आनिन्ये महेन्द्रो महद् अद्भुतम् ।
मूर्तिमत्यः सरित् श्रेष्ठाः हेमकुम्भैः जलम् शुचि ॥

शब्दार्थ—

तस्याः	२.	उनके लिये	मूर्तिमत्यः	९.	मूर्तिमान् होकर
आसनम्	५.	आसन	सरित्	८.	नदियाँ
आनिन्ये	६.	ले आये	श्रेष्ठाः	७.	श्रेष्ठ
महेन्द्रः	१.	देवराज इन्द्र	हेमकुम्भैः	१०.	स्वर्णकलशों में
महत्	३.	अत्यन्त	जलम्	१२.	जल ले आई
अद्भुतम् ।	४.	विचित्र	शुचि ॥	११.	पवित्र

श्लोकार्थ—देवराज इन्द्र उनके लिये अत्यन्त विचित्र आसन ले आये । श्रेष्ठ नदियाँ मूर्तिमान् होकर स्वर्ण कलशों में पवित्र जल ले आईं ॥

एकादशः श्लोकः

आभिषेचनिका भूमिराहरत् सकलौषधीः ।
गावः पञ्च पवित्राणि वसन्तो मधुमाधवौ ॥११॥

पदच्छेद— आभिषेचनिका भूमिः आहरत् सकल ओषधीः ।
गावः पञ्च पवित्राणि वसन्तः मधुमाधवौ ॥

शब्दार्थ—

आभिषेचनिका	२.	अभिषेक के योग्य	गावः	६.	गौवों से
भूमिः	१.	पृथ्वी ने	पञ्च	७.	पञ्च
आहरत्	५.	दीं	पवित्राणि	८.	गव्य और
सकल	३.	समस्त	वसन्तः	९.	वसन्त ऋतु ने
ओषधीः ।	४.	ओषधियां	मधुमाधवौ ॥	१०.	चैत-वैशाख में होनेवाले फल-फूल दिये

श्लोकार्थ—पृथ्वी ने अभिषेक के योग्य समस्त ओषधियां दीं । गौवों ने पञ्च गव्य और वसन्त ऋतु ने चैत- वैशाखमें होनेवाले फल-फूल दिये ॥

द्वादशः श्लोकः

ऋषयः कल्पयाञ्चक्रुरभिषेकं यथाविधि ।
जगुर्भद्राणि गन्धर्वा नटयश्च ननृतुर्जगुः ॥१२॥

पदच्छेद— ऋषयः कल्पयाञ्चक्रुः अभिषेकम् यथा विधि ।
जगुः भद्राणि गन्धर्वाः नटयः च ननृतुः जगुः ॥

शब्दार्थ—

ऋषयः	१.	ऋषियों ने	जगुः	९.	आरम्भ किया
कल्पया	५.	सम्पन्न	भद्राणि	८.	मंगलमय संगीत
ञ्चक्रुः	६.	किया	गन्धर्वाः	७.	गन्धर्वों ने
अभिषेकं	४.	उनका अभिषेक	नटयः	१०.	नर्तकियां
यथा	३.	पूर्वक	च ननृतुः	११.	और नाच-नाचकर
विधि ।	२.	विधि	जगुः ॥	१२.	गाने लगीं

श्लोकार्थ—ऋषियों ने विधिपूर्वक उनका अभिषेक सम्पन्न किया । गन्धर्वों ने मंगलमय संगीत आरम्भ किया । और नर्तकियां नाच-नाच कर गाने लगीं ।

त्रयोदशः श्लोकः

मेघा मृदङ्गपणवमुरजानकगोमुखान् ।
व्यनादयञ्छङ्खवेणुवीणास्तुमुलनिःस्वनान् ॥१३॥

पदछेच्द— मेघाः मृदङ्ग पणव मुरज आनक गोमुखान् ।
व्यनादयन् शङ्ख वेणु वीणाः तुमुलनिःस्वनान् ॥

शब्दार्थ—

मेघा	१. बादल सदेह होकर	व्यनादयन्	१२. बजाने लगे
मृदङ्ग	२. मृदङ्ग	शङ्ख	७. शङ्ख
पणव	३. डमरू	वेणु	८. वेणु और
मुरज	४. ढोल	वीणाः	९. वीणा
आनक	५. नगारे	तुमुल	१०. बड़े जोर से
गोमुखान् ।	६. नरसिंगे	निःस्वनान् ॥	११. ध्वनि करते हुये

श्लोकार्थ—बादल सदेह होकर मृदंग, डमरू, ढोल, नगारे, नरसिंगे, शङ्ख, वेणु और वीणा को बड़े जोर से ध्वनि करते हुये बजाने लगे ।

चतुर्दशः श्लोकः

ततोऽभिषिषिचुर्देवीं श्रियं पद्मकरां सतीम् ।
दिगिभाः पूर्णकलशैः सूक्तवाक्यैर्द्विजेरितैः ॥१४॥

पदच्छेद— ततः अभिषिषिचुः देवीम् श्रियम् पद्मकराम् सतीम् ।
दिगिभाः पूर्णकलशैः सूक्त वाक्यैः द्विज ईरितैः ॥

शब्दार्थ

ततः	१. इसके बाद	दिगिभाः	६. दिग्गजों ने
अभिषिषिचुः	८. स्नान कराया	पूर्णकलशैः	७. जल से पूर्णकलशों से
देवीम्	५. देवी को	सूक्त	१०. वेदमन्त्रों और
श्रियम्	४. लक्ष्मी	वाक्यैः	११. मंगल वाक्यों के द्वारा
पद्मकराम्	२. हाथ में कमल लिये	द्विज	९. उस समय ब्राह्मणगण
सतीम् ।	३. भगवती	ईरितैः ॥	१२. पाठ कर रहे थे

श्लोकार्थ—इसके बाद हाथ में कमल लिये हुये भगवती लक्ष्मी देवी को दिग्गजों ने जल से पूर्णकलशों से स्नान कराया । उस समय ब्राह्मण गण वेद मन्त्रों और मंगल वाक्यों के द्वारा पाठ कर रहे थे ॥

पञ्चदशः श्लोकः

समुद्रः पीतकौशेयवाससी समुपाहरत् ।
वरुणः स्रजं वैजयन्तीं मधुना मत्तषट्पदाम् ॥१५॥

पदच्छेद— समुद्रः पीत कौशेय वाससी समुपाहरत् ।
वरुणः स्रजम् वैजयन्तीम् मधुना मत्तषट्पदाम् ॥

शब्दार्थ—

समुद्रः	१.	समुद्र ने	वरुणः	६.	वरुण ने
पीत	२.	पीले	स्रजम्	११.	माला समर्पित की
कौशेय	३.	रेशमी	वैजयन्तीम्	१०.	वैजयन्ती
वाससी	४.	वस्त्र	मधुना	७.	जिसकी सुगन्ध से
समुपाहरत् ।	५.	प्रदान किये (और)	मत्त	९.	मस्त हो रहे थे, ऐसी
			षट्पदाम् ॥	८.	भौंरे

श्लोकार्थ—समुद्र ने पीले रेशमी वस्त्र प्रदान किये । और वरुण ने जिसकी सुगन्ध से भौंरे मतवाले हो रहे थे ऐसी वैजयन्ती माला समर्पित की ॥

षोडशः श्लोकः

भूषणानि विचित्राणि विश्वकर्मा प्रजापतिः ।
हारं सरस्वती पद्ममजो नागाश्च कुण्डले ॥१६॥

पदच्छेद— भूषणानि विचित्राणि विश्वकर्मा प्रजापतिः ।
हारम् सरस्वती पद्मम् अजः नागाः च कुण्डले ॥

शब्दार्थ—

भूषणानि	४.	गहने	सरस्वती	५.	सरस्वती ने
विचित्राणि	३.	भाँति-भाँति के	पद्मम्	८.	कमल
विश्वकर्मा	२.	विश्वकर्मा ने	अजः	७.	ब्रह्मा जी ने
प्रजापतिः ।	१.	प्रजापति	नागाः च	९.	नागों ने
हारम्	६.	मोतियों का हार	कुण्डले ॥	१०.	दो कुण्डल प्रदान किये

श्लोकार्थ—प्रजापति विश्वकर्मा ने भाँति-भाँति के गहने, सरस्वती ने मोतियों का हार, ब्रह्मा जी ने कमल और नागों ने दो कुण्डल प्रदान किये ॥

सप्तदशः श्लोकः

ततः कृतस्वस्त्ययनोत्पलस्रजं नदद्द्विरेफां परिगृह्य पाणिना ।
चचाल वक्त्रं सुकपोलकुण्डलं सव्रीडहासं दधती सुशोभनम् ॥१७॥

पदच्छेद— ततः कृत स्वस्त्ययन उत्पलस्रजम् नदद् द्विरफाम् परिगृह्य पाणिना ।
चचाल वक्त्रम् सुकपोल कुण्डलम् सव्रीडहासम् दधती सुशोभनम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	इसके बाद	चचाल	१३.	हिल रहे थे
कृत	३.	कर चुकने पर	वक्त्रम्	१०.	तब उनके मुख के
स्वस्त्ययन	२.	ब्राह्मणों द्वारा मंगल पाठ	सुकपोल	११.	सुन्दर कपोलों पर
उत्पल	६.	कमलों की	कुण्डलम्	१२.	कुण्डल
स्रजम्	७.	माला	सव्रीड	१४.	लज्जा युक्त
नदद्	५.	गुञ्जार करते हुये	हासम्	१५.	उनकी हंसी
द्विरेफाम्	४.	भौंरों के	दधती	१८.	प्रतीत हो रही थी
परिगृह्य	९.	लेकर वे चलीं	सु	१६.	अत्यधिक
पाणिना ।	८.	हाथ में	शोभनम् ॥	१७.	शोभायमान

श्लोकार्थ—इसके बाद ब्राह्मणों द्वारा मंगल पाठ कर चुकने पर भौंरों के गुञ्जार करते हुए कमलों की माला हाथ में लेकर वे चलीं । तब उनके मुख के सुन्दर कपोलों पर कुण्डल हिल रहे थे । लज्जा युक्त उनकी हँसी अत्यधिक शोभायमान हो रही थी ॥

अष्टादशः श्लोकः

स्तनद्वयं चातिकृशोदरी समं निरन्तरं चन्दनकुङ्कुमोक्षितम् ।
ततस्ततो नूपुरवल्गुशिञ्जितैर्विसर्पती हेमलतेव सा बभौ ॥१८॥

पदच्छेद— स्तनद्वयं च अति कृशोदरी समम् निरन्तरम् चन्दनकुङ्कुम उक्षितम् ।
ततः ततः नूपुरवल्गु शिञ्जितैः विसर्पती हेमलता इव सा बभौ ॥

शब्दार्थ—

स्तनद्वयम्	६.	दोनों स्तनों के	ततः ततः	१३.	धीरे-धीरे
च	३.	और	नूपुर	१०.	नूपुरों की
अतिकृशोदरी	१.	अत्यन्त क्षीण कमर वाली	वल्गु	१२.	सुन्दर चाल से
समम्	७.	समान	शिञ्जितैः	११.	झन्कार से युक्त
निरन्तरम्	८.	सटे हुये होने के कारण	विसर्पती	१४.	चलती हुई
चन्दन	२.	चन्दन	हेमलता	१५.	सोने की लता के
कुङ्कुम	४.	केसर के	इव	१६.	समान
उक्षितम् ।	५.	लेप से युक्त	सा	९.	वह लक्ष्मी
			बभौ ॥	१७.	शोभायमान हो रही थी

श्लोकार्थ—अत्यन्त क्षीण कमर वाली, चन्दन और केशर के लेप से युक्त दोनों स्तनों के समान सटे हुये होने के कारण वह लक्ष्मी नूपुरों की झन्कार से युक्त सुन्दर चाल से धीरे-धीरे चलती हुई सोने की लता के समान शोभायमान हो रही थी ।

एकोनविंशः श्लोकः

विलोकयन्ती निरवद्यमात्मनः पदं ध्रुवं चाव्यभिचारिसद्गुणम् ।
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धचारणत्रैविष्टपेयादिषु नान्वविन्दत ॥१९॥

पदच्छेद— विलोकयन्ती निरवद्यम् आत्मनः पदम् ध्रुवम् च अव्यभिचारि सद् गुणम् ।
गन्धर्वयक्ष असुर सिद्ध चारण त्रैविष्टपेय आदिषु न अन्वविन्दत ॥

शब्दार्थ—

विलोकयन्ती	८.	खोजती हुई चली	गन्धर्वयक्ष	९.	गन्धर्व-यक्ष
निरवद्यम्	६.	दोष रहित	असुर	१०.	असुर
आत्मनः	१.	अपने लिये	सिद्ध	११.	सिद्ध
पदम्	७.	आश्रय को	चारण	१२.	चारण और
ध्रुवम्	२.	नित्य	त्रैविष्टपेय	१३.	देवता
च	३.	और	आदिषु	१४.	आदि में ऐसा
अव्यभिचारि	५.	नित्य युक्त	न	१५.	कोई नहीं
सद्गुणम् ।	४.	सद्गुणों से	अन्वविन्दत ॥	१६.	मिला

श्लोकार्थ—अपने लिये नित्य और सद्गुणों से नित्य युक्त, दोष रहित आश्रय को खोजती हुई चली । गन्धर्व, यक्ष, असुर, सिद्ध, चारण और देवता आदि में ऐसा कोई नहीं मिला ॥

विंशः श्लोकः

नूनं तपो यस्य न मन्युनिर्जयो ज्ञानं क्वचित् तच्च न सङ्गवर्जितम् ।
कश्चिन्महांस्तस्य न कामनिर्जयः स ईश्वरः किं परतोव्यपाश्रयः ॥२०॥

पदच्छेद— नूनम् तपः यस्य न मन्यु निर्जयः ज्ञानम् क्वचित् तत् च सङ्गवर्जितम् ।
कश्चित् महान् तस्य न काम निर्जयः सः ईश्वरः किम् परतः व्यपाश्रयः ॥

शब्दार्थ—

नूनम्	१.	निश्चित ही	कश्चित्	११.	कोई
तपः	३.	तपस्या है, उसने	महान्	१२.	महान् तो है पर
यस्य	२.	जिसके पास	तस्य	१३.	उसने
न	५.	नहीं पाई	न	१६.	नहीं पाई
मन्युनिर्जयः	४.	क्रोध पर विजय	काम	१४.	काम पर
ज्ञानम्	७.	ज्ञान तो है पर	निर्जयः	१५.	विजय
क्वचित्	६.	किसी किसी के पास	सः ईश्वरः	१७.	उसे ईश्वर ही
तत् च	८.	वह	किम्	१८.	कैसे कहा जाय जो
न	१०.	नहीं है	परतः	१९.	दूसरों का
सङ्गवर्जितम् ।	९.	आसक्ति से रहित	व्यपाश्रयः ॥	२०.	आश्रय लेता है

श्लोकार्थ—निश्चित ही जिसके पास तपस्या है उसने क्रोध पर विजय नहीं पाई । किसी-किसी के पास ज्ञान तो है पर वह आसक्ति से रहित नहीं है । कोई महान् तो है पर उसने काम पर विजय नहीं पाई । उसे ईश्वर ही कैसे कहा जाय जो दूसरों का आश्रय लेता है ॥

एकविंशः श्लोकः

धर्मः क्वचित् तत्र न भूतसौहृदं त्यागः क्वचित् तत्र न मुक्तिकारणम् ।
वीर्यं न पुंसोऽस्त्यजवेगनिष्कृतं न हि द्वितीयो गुणसङ्गवर्जितः ॥२१॥

पदच्छेद— धर्मः क्वचित् तत्र न भूत सौहृदम् त्यागः क्वचित् तत्र न मुक्तिकारणम् ।
वीर्यम् न पुंसः अस्तिअजवेग निष्कृतम् न हि द्वितीयः गुण सङ्गवर्जितः ॥

शब्दार्थ—

धर्मः	२.	धर्माचरण तो है, पर	मुक्तिकारणम्	९.	मुक्ति का कारण
क्वचित्	१.	किन्हीं में	वीर्यम्	११.	किन्हीं में वीरता तो है पर
तत्र	३.	उन में	न	१४.	नहीं है
न	५.	नहीं है	पुंसः अस्त्यज	१२.	वे मनुष्य काल के
भूत सौहृदम्	४.	प्राणियों से प्रेम का व्यवहार	वेग निष्कृतम्	१३.	वेग से बाहर
त्यागः	७.	त्याग तो है पर	न हि	१८.	मुझे अभीष्ट नहीं हैं
क्वचित्	६.	किन्हीं में	द्वितीयः	१५.	अन्य कुछ लोग
तत्र	८.	उनमें	गुण	१६.	गुणों की
न	१०.	नहीं है	सङ्गवर्जितः ॥	१७.	आसक्ति से रहित हैं पर

श्लोकार्थ— किन्हीं में धर्माचरण तो है पर उनमें प्राणियों से प्रेम का व्यवहार नहीं है । किन्हीं में त्याग तो है पर उनमें मुक्ति का कारण नहीं है । किन्हीं में वीरता तो है पर वे मनुष्य काल के वेगसे बाहर नहीं हैं । अन्य कुछ लोग गुणों की आसक्ति से रहित हैं । पर मुझे अभीष्ट नहीं हैं ॥

द्वाविंशः श्लोकः

क्वचिच्चिरायुर्न हि शीलमङ्गलं क्वचित् तदप्यस्ति न वेद्यमायुषः ।
यत्रोभयं कुत्र च सोऽप्यमङ्गलः सुमङ्गलः कश्चन काङ्क्षते हि माम् ॥२२॥

पदच्छेद—क्वचित् चिरायुः नहि शीलमङ्गम् क्वचित् तत् अपि अस्ति न वेद्यम् आयुषः ।
यत्र उभयम् कुत्र च सः अपि अमङ्गलः सुमङ्गलः कश्चन काङ्क्षते हि माम् ॥

शब्दार्थ—

क्वचित्	१.	कोई-कोई	यत्र	१०.	जहाँ
चिरायुः	२.	लम्बी आयु वाले हैं पर	उभयम्	१२.	ये दोनों हैं
नहि	४.	मेरे योग्य नहीं है	कुत्र	११.	कहीं
शीलमङ्गलम्	३.	उनका शील मङ्गल	च सः अपि	१३.	वे भी
क्वचित्	५.	किन्हीं में	अमङ्गलः	१४.	अमङ्गल वेष में रहते हैं
तत् अपि अस्ति	६.	शील तो है पर	सुमङ्गलः	१६.	मङ्गलमय गुणों से युक्त हैं
न	८.	नहीं	कश्चन	१५.	और जो कोई (भगवान् विष्णु)
वेद्यम्	९.	जानती	न काङ्क्षते	१८.	चाहते नहीं हैं
आयुषः	७.	मैं उनकी आयु ।	हि माम् ॥	१७.	वे मुझे

श्लोकार्थ—कोई कोई लम्बी आयु वाले हैं । पर उनका शील मङ्गल मेरे योग्य नहीं है । किन्हीं में शील तो है । पर मैं उनकी आयु नहीं जानती । जहाँ कहीं ये दोनों हैं वे भी अमङ्गल वेष में रहते हैं । और जो कोई भगवान् विष्णु मङ्गलमय गुणों से युक्त हैं वे मुझे चाहते नहीं हैं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

एवं विमृश्याव्यभिचारिसद्गुणैर्वरं निजैकाश्रयतयागुणाश्रयम् ।
वव्रे वरं सर्वगुणैरपेक्षितं रमा मुकुन्दं निरपेक्षमीप्सितम् ॥२३॥

पदच्छेद—एवम् विमृश्य अव्यभिचारि सत् गुणैः वरम् निज एक आश्रयतया गुणआश्रयम् ।
वव्रे वरम् सर्वगुणैः अपेक्षितम् रमा मुकुन्दम् निरपेक्षम् ईप्सितम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	वव्रे	१८. किया
विमृश्य	२. विचार करके	वरम्	१७. वरण
अव्यभिचारि	३. सदा रहने वाले	सर्व	८. समस्त
सत् गुणैः	४. सद् गुणों के	गुणैः	९. गुणों द्वारा
वरम्	१४. श्रेष्ठ आश्रय	अपेक्षितम्	१०. अपेक्षित पर
निज	१३. और अपने लिये	रमा	१६. लक्ष्मी जी ने
एक	५. एकमात्र	मुकुन्दम्	१५. श्री हरि को
आश्रयतया	६. आश्रय होने के कारण	निरपेक्षम्	११. किसी की अपेक्षा न रखने वाले
गुण आश्रयम् ॥	७. समस्त गुणों के आश्रय	ईप्सितम् ॥	१२. तथा अभीष्ट

श्लोकार्थ—इस प्रकार विचार करके सदा रहने वाले सद्गुणों के एक मात्र आश्रय होने के कारण समस्त गुणों के आश्रय, समस्त गुणो द्वारा अपेक्षित पर किसी की अपेक्षा न रखने वाले, तथा अभीष्ट और अपने लिये श्रेष्ठ आश्रय श्री हरि को लक्ष्मी जी ने वरण किया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

तस्यांसदेश उशतीं नवकञ्जमालां माद्यन्मधुव्रतवरूथगिरोपघुष्टाम् ।
तस्थौ निधाय निकटे तदुरः स्वधाम सव्रीडहासविकसन्नयनेन याता ॥२४॥

शब्दार्थ—

पदच्छेद— तस्य अंसदेश उशतीम् नवकञ्जमालाम् माद्यन् मधुव्रतवरूथगिरः उपघुष्टाम् ।
तस्थौ निधाय निकटे तदुरः स्वधाम सव्रीडहास विकसत् नयनेन याता ॥

तस्य	८. भगवान् के	तस्थौ	१२. खड़ी हो गई
अंसदेश	९. गले में	निधाय	१०. पहनाकर
उशतीम्	६. सुन्दर	निकटे	११. उनके पास
नवकञ्ज	५. नवीन कमलों की	तदुरः	१४. उनके हृदय को
मालाम्	७. माला	स्वधाम	१३. अपने निवास स्थान
माद्यन्	१. वे मतवाले	सव्रीडहास	१५. लज्जा और मुसकान तथा
मधुव्रतवरूथ	२. मधुकरों के समूह द्वारा	विकसत्	१६ प्रेम पूर्ण
गिरा	३. गुञ्जार की	नयनेन	१७. चितवन से
उपघुष्टाम् ।	४. जाती हुई	याता ॥	१८. देखने लगीं

श्लोकार्थ—वे मतवाले मधुकरों के समूह द्वारा गुञ्जार की जाती हुई नवीन कमलों की सुन्दर माला भगवान् के गले में पहनाकर उनके पास खड़ी हो गईं । अपने निवास स्थान उनके हृदय को लज्जा, मुसकान तथा प्रेम पूर्ण चितवन से देखने लगीं ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

तस्याः श्रियस्त्रिजगतो जनको जनन्या वक्षोनिवासमकरोत् परमं विभूतेः ।
श्रीः स्वाः प्रजाः सकरुणेन निरीक्षणेन यत्र स्थितैधयत साधिपतींस्त्रिलोकान् ॥२५॥

पदच्छेद— तस्याः श्रियः त्रिजगतः जनकः जनन्या वक्षः निवासम् अकरोत् परमम् विभूतेः ।
श्रीः स्वाः प्रजाः सकरुणेन निरीक्षणेन यत्र स्थिता एधयत सा अधीपतीन् त्रिलोकान् ॥

शब्दार्थ—

तस्याः	६.	उन	श्रीः	११.	लक्ष्मी जी ने
श्रियः	७.	लक्ष्मी जी को	स्वाः	१३.	अपनी
त्रिजगतः	१.	तीनों लोकों के	प्रजाः	१८.	प्रजा की
जनकः	२.	पिता भगवान् ने	सकरुणेन	१४.	करुणाभरी
जनन्याः	३.	जगज्जननी	निरीक्षणेन	१५.	चितवन से
वक्षः निवासम्	८.	अपने वक्षः स्थल में	यत्रस्थितः	१२.	वहाँ विराजमान होकर
अकरोत्	९.	निवास दिया	एधयत	१९.	अभिवृद्धि की
परमम्	४.	समस्त	सा	१०.	उन
विभूतेः ।	५.	सम्पत्तियों की अधिष्ठात्री देवी	अधिपतीन्	१७.	लोकपति और
			त्रिलोकान् ॥	१६.	तीनों लोक

श्लोकार्थ — तीनों लोकों के पिता भगवान् ने जगज्जननी समस्त, सम्पत्तियों की अधिष्ठात्री देवी उन लक्ष्मी जी को अपने वक्षः स्थल में निवास दिया । उन लक्ष्मी जी ने वहाँ विराजमान होकर अपनी करुणा भरी चितवन से तीनों लोक, लोकपति और प्रजा की अभिवृद्धि की ॥

षड्विंशः श्लोकः

शङ्खतूर्यमृदङ्गानां वादित्राणां पृथुः स्वनः ।
देवानुगानां सस्त्रीणां नृत्यतां गायतामभूत् ॥२६॥

पदच्छेद— शङ्खतूर्यमृदङ्गानाम् वादित्राणाम् पृथुः स्वनः ।
देव अनुगानाम् स्त्रीणाम् नृत्ययाम् गायताम् अभूत् ॥

शब्दार्थ—

शङ्ख	१.	उस समय शङ्ख	देवअनुगानाम्	६.	गन्धर्व
तूर्य	२.	तुरही	स्त्रीणाम्	७.	अप्सराओं के साथ
मृदङ्गानाम्	३.	मृदंग आदि	नृत्यताम्	८.	नाचने और
वादित्राणाम्	४.	बाजे	गायताम्	९.	गाने
पृथुःस्वनः ।	५.	उच्चस्वर से बजने लगे	अभूत् ॥	१०.	लगे

श्लोकार्थ — उस समय शङ्ख, तुरही, मृदंग आदि बाजे उच्चस्वर से बजने लगे । गन्धर्व, अप्सराओं के साथ नाचने और गाने लगे ॥

सप्तविंशः श्लोकः

ब्रह्मरुद्राङ्गिरोमुख्याः सर्वे विश्वसृजो विभुम् ।
ईडिरेऽवितथैर्मन्त्रैस्तल्लिङ्गैः पुष्पवर्षिणः ॥२७॥

पदच्छेद— ब्रह्म रुद्र अङ्गिरः मुख्याः सर्वे विश्वसृजः विभुम् ।
ईडिरे अवितथैः मन्त्रैः तत् लिङ्गैः पुष्प वर्षिणः ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्म	१.	ब्रह्मा	ईडिरे	१४.	स्तुति करने लगे
रुद्र	२.	रुद्र	अवितथैः	११.	यथार्थ वर्णन करने लगे
अङ्गिरः	३.	अङ्गिरा आदि	मन्त्रैः	१२.	मन्त्रों से
मुख्याः	४.	प्रमुख	तत्	१३.	उन की
सर्वे	५.	सभी	लिङ्गैः	१०.	गुणस्वरूप लीला आदि का
विश्वसृजः	६.	प्रजापति	पुष्प	७	पुष्प
विभुम् ।	९.	भगवान् के	वर्षिणः ॥	८.	वर्षा करते हुये

श्लोकार्थ—ब्रह्मा, रुद्र, अङ्गिरा आदि प्रमुख सभी प्रजापति पुष्प वर्षा करते हुये भगवान के गुण स्वरूप, लीला आदि का यथार्थ वर्णन करने लगे और मन्त्रों से उनकी स्तुति करने लगे ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

श्रिया विलोकिता देवाः सप्रजापतयः प्रजाः ।
शीलादिगुणसम्पन्ना लेभिरे निर्वृतिं पराम् ॥२८॥

पदच्छेद— श्रिया विलोकिताः देवाः सप्रजापतयः प्रजाः ।
शीलआदि गुण सम्पन्नाः लेभिरे निर्वृतिं पराम् ॥

शब्दार्थ—

श्रिया	४	लक्ष्मी जी की	आदि	७.	आदि
विलोकिताः	५	कृपा दृष्टि पाकर	गुण	८.	उत्तम गुणों से
देवाः	१.	देवता और	सम्पन्नाः	९.	सम्पन्न होकर
सप्रजापतयः	२.	प्रजापतियों सहित	लेभिरे	१२.	प्राप्त हो गये
प्रजाः	३.	प्रजा ने	निर्वृतिं	११.	शान्ति को
शील	६	शील	पराम् ॥	१०.	अत्यधिक

श्लोकार्थ—देवता और प्रजापतियों सहित प्रजा ने लक्ष्मी जी की कृपा दृष्टि पाकर शील, आदि उत्तम गुणों से सम्पन्न होकर अत्यधिक शान्ति को प्राप्त किया ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

निःसत्त्वा लोलुपा राजन् निरुद्योगा गतत्रपाः ।
यदा चोपेक्षिता लक्ष्म्या बभूवुर्दैत्यदानवाः ॥२९॥

पदच्छेद— नि:सत्त्वाः लोलुपाः राजन् निरुद्योगाः गतत्रपाः ।
यदा च उपेक्षिताः लक्ष्म्या बभूवबुः दैत्यदानवाः ॥

शब्दार्थ—

निःसत्त्वाः	७. निर्बल	**यदा**	२. जब
लोलुपाः	८. लोभी	**च**	५. और
राजन्	०. हे परीक्षित् !	**उपेक्षिताः**	६. उपेक्षा कर दी तब वे
निरुद्योगाः	११. उद्योग रहित	**लक्ष्म्या**	३. लक्ष्मी जी ने
गत	१०. हीन तथा	**बभूवुः**	१२ हो गये
त्रपाः ।	९. लज्जा	**दैत्य दानवाः ॥**	४. दैत्यों, दानवों की

श्लोकार्थ— हे परीक्षित् ! जब लक्ष्मी जी ने दैत्यों और दानवों की उपेक्षा कर दी । तब वे निर्बल, लोभी, लज्जा हीन तथा उद्योग रहित हो गये ॥

त्रिंशः श्लोकः

अथासीद् वारुणी देवी कन्या कमललोचना ।
असुरा जगृहुस्तां वै हरेरनुमतेन ते ॥३०॥

पदच्छेद— अथ आसीत् वारुणी देवी कन्या कमललोचना ।
असुराः जगृहुः ताम् वै हरेः अनुमतेन ते ॥

शब्दार्थ

अथ	१. इसके बाद	**असुराः**	११. दैत्यों ने
आसीत्	७. प्रकट हुई	**जगृहुः**	१४. प्राप्त कर लिया
वारुणी	५ वारुणी	**ताम्**	१३. उसे
देवी	६. देवी	**वै**	१२. निश्चित ही
कन्या	४ कन्या के रूप में	**हरेः**	८. भगवान् की
कमल	२. कमल	**अनुमतेन**	९. अनुमति से
लोचना ।	३. लोचना	**ते ॥**	१०. उन

श्लोकार्थ— इसके बाद कमल लोचना कन्या के रूप में वारुणी देवी प्रकट हुई । भगवान् की अनुमति से उन दैत्यों ने निश्चित ही उसे प्राप्त कर लिया ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

अथोदधेर्मथ्यमानात् काश्यपैरमृतार्थिभिः ।
उदतिष्ठन्महाराज पुरुषः परमाद्भुतः ॥३१॥

पदच्छेद— अथ उदधेः मथ्यमानात् काश्यपैः अमृत अर्थिभिः ।
उदतिष्ठन महाराज पुरुषः परम अद्भुतः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१. तदनन्तर	अर्थिभिः	४. इच्छा से
उदधेः	६. समुद्र	उदतिष्ठन्	१२. प्रकट हुआ
मथ्य	७. मन्थन	महाराज	२ महाराज
मानात्	८. किये जाने पर	पुरुषः	११. पुरुष
काश्यपैः	५. देवता और असुरों द्वारा	परम	९. एक अत्यन्त
अमृत	३. अमृत की	अद्भुतः ॥	१०. अलौकिक

श्लोकार्थ— तदनन्तर महाराज ! अमृत की इच्छा से देवता असुरों द्वारा समुद्र मन्थन किये जाने पर एक अत्यन्त अलौकिक पुरुष प्रकट हुआ ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

दीर्घपीवरदोर्दण्डः कम्बुग्रीवाऽरुणेक्षणः ।
श्यामलस्तरुणः स्रग्वी सर्वाभरणभूषितः ॥३२॥

पदच्छेद— दीर्घ पीवर दोः दण्डः कम्बुग्रीवः अरुण ईक्षणः ।
श्यामलः तरुणः स्रग्वी सर्व आभरण भूषितः ॥

शब्दार्थ—

दीर्घ	२. लम्बी और	श्यामलः	७. शरीर श्यामल वर्ण का
पीवर	३. मोटी थीं	तरुणः	८. और तरुण था
दोः दण्डः	१. उसकी भुजायें	स्रग्वी	९. गले में माला थी (तथा)
कम्बुग्रीवः	४. गला शङ्ख के समान	सर्व	१०. सभी अङ्ग
अरुण	६. लाल-लाल थे	आभरण	११. आभूषणों से
ईक्षणः ।	७. और नेत्र	भूषितः ॥	१२. सजे हुये थे

श्लोकार्थ— उसकी भुजायें लम्बी और मोटी थीं । गला शङ्ख के समान और नेत्र लाल-लाल थे । शरीर श्यामल वर्ण का और तरुण था । गले में माला थी । तथा सभी अङ्ग आभूषणों से सजे हुये थे ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

पीतवासा महोरस्कः सुमृष्टमणिकुण्डलः ।
स्निग्धकुञ्चितकेशान्तः सुभगः सिंहविक्रमः ॥३३॥

पदच्छेद— पीतवासाः महोरस्कः सुमृष्ट मणिकुण्डलः ।
स्निग्धः कुञ्चित केशअन्तः सुभगः सिंहविक्रमः ॥

शब्दार्थ—

पीतवासाः	१.	शरीर पर पीताम्बर	कुञ्चित	९.	घुँघराले
महोरस्कः	५.	चौड़ी छाती	केश	१०.	बालों से
सुमृष्ट	२.	कानों में चमकीले	अन्तः	११.	शोभित
मणि	३.	मणियों के	सुभगः	१२.	अनुपम सौन्दर्य शाली था
कुण्डलः ।	४.	कुण्डल	सिंह	६.	सिंह के समान
स्निग्ध	८.	चिकने और	विक्रमः ॥	७.	पराक्रम

श्लोकार्थ—शरीर पर पीताम्बर, कानों में मणियों के कुण्डल, चौड़ी छाती, सिंह के समान पराक्रम, चिकने और घुँघराले बालों से शोभित अनुपम सौन्दर्य शाली था ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

अमृतापूर्णकलशं बिभ्रद् वलयभूषितः ।
स वै भगवतः साक्षाद्विष्णोरंशांशसम्भवः ॥३४॥

पदच्छेद— अमृतअपूर्ण कलशम् बिभ्रद् वलय भूषितः ।
सः वै भगवतः साक्षात् विष्णोः अंशांश सम्भवः ॥

शब्दार्थ—

अमृत	३.	अमृत से	सः वै	७.	वह निश्चय ही
आपूर्ण	४.	भरा हुआ	भगवतः	९.	भगवान्
कलशम्	५.	कलश	साक्षात्	८.	साक्षात्
बिभ्रद्	६.	धारण किये हुये था	विष्णोः	१०.	विष्णु के
वलय	१.	वह कङ्कन से	अंशांश	११.	अंशांश
भूषितः	२.	सुशोभित हाथों में	सम्भवः ॥	१२.	अवतार थे ।

श्लोकार्थ—वह कङ्कन से सुशोभित हाथों में अमृत से भरा कलश धारण किये हुये था । वह निश्चय ही साक्षात् भगवान् विष्णु के अंशांश अवतार थे ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

धन्वन्तरिरिति ख्यात आयुर्वेददृगिज्यभाक् ।
तमालोक्यासुराः सर्वे कलशं चामृताभृतम् ॥३५॥

पदच्छेद— धन्वन्तरिः इति ख्यातः आयुर्वेद दृग् इज्यभाक् ।
तम् आलोक्य असुराः सर्वे कलशम् च अमृत आभृतम् ॥

शब्दार्थ—

धन्वन्तरिः	४.	धन्वन्तरि के	तम् अलोक्य	१.	और उन्हें देखा
इति	५.	नाम से	असुराः	८.	दैत्यों ने
ख्यात	६.	प्रसिद्ध हुये	सर्वे	७.	समस्त
आयुर्वेद	१	आयुर्वेद के	कलशम्	११.	कलश को
दृग्	२.	प्रवर्तक और	च अमृत	९.	अमृत से
इज्यभाक् ।	३.	यज्ञ-भोक्ता वे	आभृतम् ॥	१०.	भरे हुये

श्लोकार्थ—आयुर्वेद के प्रवर्तक और यज्ञ भोक्ता वे धन्वन्तरि के नाम से प्रसिद्ध हुये । समस्त दैत्यों ने अमृत से भरे हुये कलश को और उन्हें देखा ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

लिप्सन्तः सर्ववस्तूनि कलशं तरसाहरन् ।
नीयमानेऽसुरैस्तस्मिन्कलशेऽमृतभाजने ॥३६॥

पदच्छेद— लिप्सन्तः सर्ववस्तूनि कलशम् तरसा अहरन् ।
नीयमाने असुरैः तस्मिन् कलशे अमृत भाजने ॥

शब्दार्थ—

लिप्सन्तः	९.	इच्छा करने वाले वे	नीयमाने	१२.	ले जाने पर देवता दुःखी हुये
सर्व	१.	समुद्र से निकली हुयी समस्त	असुरैः	७.	असुरों के द्वारा
वस्तूनि	२.	वस्तुओं को	तस्मिन्	९.	उस
कलशम्	४.	कलश को	कलशे	१०.	कलश
तरसा	५.	अत्यन्त शीघ्रता से	अमृत	८.	अमृत से भरे हुये
अहरन् ।	६	बलात् छीन ले गये	भाजने ॥	११.	पात्र को छीन

श्लोकार्थ—समुद्र से निकली हुयी समस्त वस्तुओं की इच्छा करने वाले वे कलश को अत्यन्त शीघ्रता से छीन ले गये । असुरों के द्वारा अमृत से भरे हुये उस कलश पात्र को छीन ले जाने पर देवता दुःखी हुये ।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

विषण्णमनसो देवा हरिं शरणमाययुः ।
इति तद्दैन्यमालोक्य भगवान्भृत्यकामकृत् ।
मा खिद्यत मिथोऽर्थं वः साधयिष्ये स्वमायया ॥३७॥

पदच्छेद— विषण्ण मनसः देवाः हरिम् शरणम् आययुः ।
इति तत् दैन्यम् आलोक्य भगवान् भृत्यकामकृत् ।
मा खिद्यत मिथः अर्थम् वः साधयिष्ये स्वमायया ॥

शब्दार्थ—

विषण्ण	१.	विषादयुक्त	भृत्य	९.	भक्तों की
मनसः	२.	मन वाले	कामकृत्	१०.	इच्छा पूरी करने वाले
देवाःहरिम्	३.	देवगण भगवान् की	मा	१३.	मत करो
शरणम्	४.	शरण में	खिद्यत	१२.	खेद
आययुः ।	५.	आये	मिथः	१६	पारस्परिक
इति	६.	इस प्रकार	अर्थम्	१७.	प्रयोजन को
तत् दैन्यम्	७.	उनकी दीन-दशा	वः	१५.	आप लोगों के
आलोक्य	८	देखकर	साधयिष्ये	१८.	सिद्ध करूँगा
भगवान्	११.	भगवान् ने कहा	स्वमायया ॥	१४.	मैं अपनी योगमाया से

श्लोकार्थ—विषाद युक्त मन वाले देवगण भगवान् की शरण में आये । इस प्रकार उनकी दीन दशा देखकर भक्तों की इच्छा पूरी करने वाले भगवान् ने कहा खेद मत करो । मैं अपनी योगमाया से आप लोगों को पारस्परिक प्रयोजन को सिद्ध करूँगा ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

मिथः कलिरभूत्तेषां तदर्थे तर्षचेतसाम् ।
अहं पूर्वमहं पूर्वं न त्वं न त्वमिति प्रभो ॥३८॥

पदच्छेद— मिथः कलिः अभूत्तेषाम् तत् अर्थे तर्षचेतसाम् ।
अहम् पूर्वम् अहम् पूर्वम् न त्वम् न त्वम् इति प्रभो ॥

शब्दार्थ—

मिथः	१४.	परस्पर	अहम्	३.	मैं ही पिऊँगा
कलिः	१५.	झगड़ा	पूर्वम्	२.	पहले
अभूत्	१६.	होने लगा	अहम्	५.	मैं पिऊँगा
तेषाम्	११.	उन दैत्यों में	पूर्वम्	४.	पहले
तत्	१२.	उसके	न त्वम्	६.	तुम नहीं
अर्थे	१३.	लिये	न त्वम्	७.	तुम नहीं
तर्ष	९.	अमृत की कामना से	इति	८.	इस प्रकार
चेतसाम् ।	१०.	युक्त चित्त वाले	प्रभो ॥	१.	हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! पहले मैं पिऊँगा, पहले मैं पिऊँगा, तुम नहीं, तुम नहीं, इस प्रकार अमृत की कामना से युक्त चित्त वाले उन दैत्यों में उसके लिये परस्पर झगड़ा होने लगा ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

देवाः स्वं भागमर्हन्ति ये तुल्यायासहेतवः ।
सत्रयाग इवैतस्मिन्नेष धर्मः सनातनः ॥३९॥

पदच्छेद— देवाः स्वम् भागम् अर्हन्ति ये तुल्य आयासहेतवः ।
सत्रयाग इव एतस्मिन् एषः धर्मः सनातनः ॥

शब्दार्थ—

देवाः	१. देवता लोग भी	सत्र	२. सत्र
स्वम्	६. अपना	याग	३. याग
भागम्	७. भाग	इव	४. के समान
अर्हन्ति	८. चाहते हैं, क्योंकि	एतस्मिन्	५. इस अमृत में
ये तुल्य	९. वे भी समान	एष	१२. यही
आयास	१०. परिश्रम करके	धर्मः	१४. धर्म है
हेतवः ।	११. अमृतोपलब्धि में कारण हैं	सनातनः ॥	१३. सनातन

श्लोकार्थ—देवता लोग भी सत्रयाग के समान इस अमृत में अपना भाग चाहते हैं। क्योंकि वे भी समान परिश्रम करके अमृतोपलब्धि में कारण हैं। यही सनातन धर्म है ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

इति स्वान्प्रत्यषेधन्वै दैतेया जातमत्सराः ।
दुर्बलाः प्रबलान् राजन् गृहीतकलशान् मुहुः ॥४०॥

पदच्छेद— इति स्वान् प्रत्यषेधन्वै दैतेयाः जात मत्सराः ।
दुर्बलाः प्रबलान् राजन् गृहीत कलशान् मुहुः ॥

शब्दार्थ—

इति	२. इस प्रकार	दुर्बलाः	४. जो दुर्बल थे
स्वान्	७. अपने पक्ष के	प्रबलान्	१०. बलवान् दैत्यों को
प्रतिषेधन्वै	१२. रोकने लगे	राजन्	१. हे परीक्षित्
दैतेयाः	३. वे दैत्य	गृहीत	९. ग्रहण किये हुये
जात	६. कारण	कलशान्	८. कलश
मत्सराः ।	५ ईर्ष्या के	मुहुः ॥	११ बार-बार

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इस प्रकार वे दैत्य, जो दुर्बल थे, ईर्ष्या के कारण अपने पक्ष के कलश ग्रहण किये हुये बलवान् दैत्यों को बार-बार रोकने लगे ।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

एतस्मिन्नन्तरे विष्णुः सर्वोपायविदीश्वरः ।
योषिद्रूपमनिर्देश्यं दधार परमाद्भुतम् ॥४१॥

पदच्छेद— एतस्मिन् अन्तरे विष्णुः सर्वोपायवित् ईश्वरः ।
योषित्रूपम् अनिर्देश्यम् दधार परम अद्भुतम् ॥

शब्दार्थ—

एतस्मिन्	१. इसी	**योषित्**	८. स्त्री का
अन्तरे	२. बीच	**रूपम्**	९. रूप
विष्णुः	५. विष्णु ने	**अनिर्देश्यम्**	७. अवर्णनीय
सर्वोपायवित्	३. समस्त उपायों को	**दधार**	१०. धारण किया
ईश्वरः ।	४. जानने वाले भगवान्	**परमअद्भुतम् ॥**	६. अत्यन्त आश्चर्यमय

श्लोकार्थ—इसी बीच समस्त उपायों को जाननेवाले भगवान् विष्णु ने अत्यन्त आश्चर्यमय, अवर्णनीय स्त्री का रूप धारण किया ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

प्रेक्षणीयोत्पलश्यामं सर्वावयवसुन्दरम् ।
समानकर्णाभरणं सुकपोलोन्नसाननम् ॥४२॥

पदच्छेद— प्रेक्षणीय उत्पलश्यामम् सर्वावयवसुन्दरम् ।
समान कर्ण आभरणम् सुकपोल उन्नसाननम् ॥

शब्दार्थ—

प्रेक्षणीय	१२. देखने योग्य था	**समान**	७. बराबर और
उत्पल	१. शरीर नील कमल के समान	**कर्ण**	६. दोनों कान
श्यामम्	२. श्याम वर्ण का था (तथा)	**आभरणम्**	८. कर्ण फूल से सुशोभित थे
सर्व	३. समस्त	**सुकपोल**	९. सुन्दर कपोल
अवयव	४. अङ्ग	**उन्नस**	१० ऊँची नासिका युक्त
सुन्दरम् ।	५. अतिसुन्दर थे	**आननम् ॥**	११. सुन्दर मुख

श्लोकार्थ—शरीर नील कमल के समान श्याम वर्ण का था तथा समस्त अङ्ग अति सुन्दर थे। दोनों कान बराबर और कर्ण फूल से सुशोभित थे। सुन्दर कपोल ऊँची नासिका युक्त सुन्दर मुख देखने योग्य था ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

नवयौवननिर्वृत्तस्तनभारकृशोदरम् ।
मुखामोदानुरक्तालिझङ्कारोद्विग्नलोचनम् ॥४३॥

पदच्छेद— नव यौवन निर्वृत्तस्तनभार कृश उदरम् ।
मुख आमोद अनुरक्त अलिझङ्कार उद्विग्न लोचनम् ॥

शब्दार्थ

नव	१.	नयी	मुख	७.	मुख से निकली
यौवन	२.	जवानी के कारण	आमोद	८.	सुगन्ध से
निर्वृत्त	४.	उभरे हुये थे	अनुरक्त	९.	अनुरक्त
स्तन	३.	स्तन	अलिझङ्कारः	१०.	भौंरों की झन्कार से
भार	५	उन्हीं के भार से	उद्विग्न	१२.	घबराये हुये थे
कृशोदरम् ।	६.	कमर पतली हो गई थी	लोचनम् ॥	११.	उसके नेत्र

श्लोकार्थ—नयी जवानी के कारण स्तन उभरे हुये थे । उन्हीं के भार से कमर पतली हो गई थी । मुख से निकली सुगन्ध से अनुरक्त भौंरों की गुंन्जार से उसके नेत्र घबराये हुये थे ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

बिभ्रत् स्वकेशभारेण मालामुत्फुल्लमल्लिकाम् ।
सुग्रीवकण्ठाभरणं सुभुजाङ्गदभूषितम् ॥४४॥

पदच्छेद— बिभ्रत् स्वकेश भारेण मालाम् उत्फुल्ल मल्लिकाम् ।
सुग्रीवकण्ठ आभरणम् सुभुज अङ्गद भूषितम् ॥

शब्दार्थ—

बिभ्रत्	६.	गूंथ रखी थी	सुग्रीव	७.	सुन्दर गले में
स्वकेश	१.	अपने केश	कण्ठ	८.	कण्ठ के
भारेण	२.	पाशों में	आभरणम्	९.	आभूषण और
मालाम्	५.	माला	सुभुज	१०.	सुन्दर भुजाओं में
उत्फुल्ल	३	खिले हुये	अङ्गद	११.	बाजूबन्द
मल्लिकाम् ।	४.	बेले के पुष्पों की	भूषितम् ॥	१२.	सुशोभित थे ।

श्लोकार्थ—अपने केश पाशों में खिले हुए बेले के पुष्पों की माला गूंथ रखी थी । सुन्दर गले में कण्ठ के आभूषण और सुन्दर भुजाओं में बाजूबन्द सुशोभित थे ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

विरजाम्बरसंवीतनितम्बद्वीपशोभया ।
काञ्च्या प्रविलसद्वल्गुचलच्चरणनूपुरम् ॥४५॥

पदच्छेद— विरजअम्बर संवीत नितम्बद्वीप शोभया ।
काञ्च्या प्रविलसत् वल्गुचलत्चरणनूपुरम् ॥

शब्दार्थ—

विरज	१.	स्वच्छ	काञ्च्या	७.	करधनी
अम्बर	२.	साड़ी से	प्रविलसत्	८.	अनूठी छटा दिखा रही थी
संवीत	३.	ढकें	वल्गु	९.	सुंदर चाल के कारण
नितम्ब	४.	नितम्ब	चलत्	१०.	चंचल
द्वीप	५.	द्वीप पर	चरण	११.	चरणों में
शोभया ।	६.	शोभायमान	नूपुरम् ॥	१२.	नूपुर सुशोभित हो रहे थे ।

श्लोकार्थ—स्वच्छ स ड़ी से ढके नितम्बद्वीप पर शोभायमान करधनी अनूठी छटा दिखा रही थी । सुंदर चाल के कारण चंचल चरणों में नूपुर, सुशोभित हो रहे थे ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

सव्रीडस्मितविक्षिप्तभ्रूविलासावलोकनैः ।
दैत्ययूथपचेतःसु काममुद्दीपयन् मुहुः ॥४६॥

पदच्छेद— सव्रीडस्मित विक्षिप्त भ्रू विलास अवलोकनैः ।
दैत्य यूथप चेतःसु कामम् उद्दीपयन् मुहुः ॥

शब्दार्थ—

सव्रीड	१.	अपनी सलज्ज	दैत्य	७.	दैत्य
स्मित	२.	मुसकान	यूथप	८.	सेनापतियों के
विक्षिप्त	३.	नाचती हुई	चेतः सु	९.	मन में
भ्रू	४.	तिरछी भौंहें और	कामम्	११.	कामभाव को
विलास	५.	विलास भरी	उद्दीपयन्	१२.	उद्दीप्त करने लगे
अवलोकनैः ।	६.	चितवन से वे मोहिनी रूप धारी भगवान्	मुहुः ॥	१०.	बार-बार

श्लोकार्थ—अपनी सलज्ज मुसकान, नाचती हुई तिरछी तिरछी भौंहें और विलास भरी चितवन से वे मोहिनी रूपधारी भगवान् दैत्य सेनापतियों के मन में बार-बार काम भाव को उद्दीप्त करने लगे ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमे स्कन्धे
भगवन्मायोपलम्भनं नाम अष्टमेः अध्यायः ॥८॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

नवमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—तेऽन्योन्यतोऽसुराः पात्रं हरन्तस्त्यक्तसौहृदाः ।
क्षिपन्तो दस्युधर्माण आयान्तीं ददृशुः स्त्रियम् ॥१॥

पदच्छेद— ते अन्योन्यतः असुराः पात्रम् हरन्तः त्यक्त सौहृदाः ।
क्षिपन्तः दस्यु धर्माणः आयान्तीम् ददृशुः स्त्रियम् ॥

शब्दार्थ—

ते	१.	उन	क्षिपन्तः	१०.	करते हुये उन्होंने
अन्योन्यतः	३.	आपस के	दस्यु	८.	डाकुओं के समान
असुराः	२.	असुरों ने	धर्माणः	९.	व्यवहार
पात्रम्	६.	अमृत का कलश	आयान्तीम्	११.	आती हुई
हरन्तः	७.	छीनकर	ददृशुः	१३.	देखा
त्यक्त	५.	छोड़कर	स्त्रियम् ॥	१२.	सुन्दरी स्त्री को
सौहृदाः ।	४.	सद्भाव और प्रेम को			

श्लोकार्थ—उन असुरों ने आपस के सद्भाव और प्रेम को छोड़कर अमृत का कलस छीनकर डाकुओं के समान व्यवहार करते हुये, आती हुई सुन्दरी स्त्री को देखा ॥

द्वितीयः श्लोकः

अहो रूपमहो धाम अहो अस्या नवं वयः ।
इति ते तामभिद्रुत्य पप्रच्छुर्जातहृच्छयाः ॥२॥

पदच्छेद— अहो रूपम् अहो धाम अहो अस्याः नवम् वयः ।
इति ते ताम् अभिद्रुत्य पप्रच्छुः जात हृच्छयाः ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	कितना सुन्दर	इति	८.	ऐसा कहकर
रूपम्	२.	रूप है	ते	९.	दैत्यों ने
अहो	३.	कैसी	ताम्	१२.	उस स्त्री के पास
धाम	४.	अद्भुत छटा है	अभिद्रुत्य	१३.	दौड़कर
अहो	६.	कैसी	पप्रच्छुः	१४.	उससे पूछा
अस्याः	५.	इसकी	जात	११.	युक्त होकर
नवम् वयः ।	७.	नयी अवस्था है	हृच्छया ॥	१०.	काम-भाव से

श्लोकार्थ—कितना सुन्दर रूप है । कैसी अद्भुत छटा है । इसकी कैसी नयी अवस्था है । ऐसा कहकर दैत्यों ने काम-भाव से युक्त होकर उस स्त्री के पास दौड़कर उससे पूछा ॥

तृतीयः श्लोकः

का त्वं कञ्जपलाशाक्षि कुतो वा किं चिकीर्षसि ।
कस्यासि वद वामोरु मथ्नन्तीव मनांसि नः ॥३॥

पदच्छेद— का त्वम् कञ्जपलाशाक्षि कुतः वा किम् चिकीर्षसि ।
कस्य असि वद वामोरु मथ्नन्तीव मनांसि नः ॥

शब्दार्थ—

का	३.	कौन हो	कस्य	१३.	तुम किसकी
त्वम्	२.	तुम	असि	१४.	कन्या हो
कञ्जपलाशाक्षि	१.	हे कमलनयनी	वद	९.	बताओ
कुतः	४.	कहाँ से आई हों	वामोरु	८.	हे सुन्दरी !
वा	५.	अथवा	मथ्नन्तीव	१२.	क्षुब्ध करती हुई-सी
किम्	६.	क्या	मनांसि	११.	मनों को
चिकीर्षसि ।	७.	करना चाहती हो	नः ॥	१०.	हमारे

श्लोकार्थ— हे कमलनयनी तुम कौन हो, कहाँ से आई हो, अथवा क्या करना चाहती हो । हे सुन्दरी ! बताओ हमारे मनों को क्षुब्ध करतहुई-सी वाली तुम किसकी कन्या हो ।।

चतुर्थः श्लोकः

न वयं त्वामरैर्दैत्यैः सिद्धगन्धर्वचारणैः ।
नास्पृष्टपूर्वां जानीमोलोकेशैश्चकुतो नृभिः ॥४॥

पदच्छेद— न वयम् त्वा अमरैः दैत्यैः सिद्धगन्धर्वचारणैः ।
न अस्पृष्ट पूर्वाम् जानीमः लोकेशैः च कुतः नृभिः ॥

शब्दार्थ—

न	२.	नहीं	न	१३.	नहीं किया होगा
वयम्	१.	हम लोगों ने ही	अस्पृष्ट	१२.	स्पर्श तक
त्वा	३.	आपको	पूर्वाम्	११.	पहले
अमरैः	४.	देवता	जानीमः	१४	यह हम जानते हैं
दैत्यैः	५.	दैत्य	लोकेशैः	१०	लोकपालों ने भी
सिद्ध	६.	सिद्ध	च	९.	और
गन्धर्व	७.	गन्धर्व	कुतः	१६.	क्या गिनती
चारणैः ।	८.	चारण	नृभिः ॥	१५.	फिर मनुष्यों को

श्लोकार्थ—हम लोगों ने ही नहीं, आपको दैत्य, सिद्ध, गन्धर्व, चारण और लोकपालों ने भी पहले स्पर्श तक नहीं किया होगा । फिर मनुष्यों की क्या गिनती ।।

पञ्चमः श्लोकः

नूनं त्वं विधिना सुभ्रूः प्रेषितासि शरीरिणाम् ।
सर्वेन्द्रियमनः प्रीतिं विधातुं सघृणेन किम् ।।५।।

पदच्छेद— नूनं त्वम् विधिना सुभ्रूः प्रेषितासि शरीरिणाम् ।
सर्वइन्द्रिय मनः प्रीतिम् विधातुम् सघृणेन किम् ।।

शब्दार्थ—

नूनम्	२.	निश्चय ही	सर्व	५.	सम्पूर्ण
त्वम्	११.	तुम्हें	इन्द्रिय	६.	इन्द्रियों तथा
विधिना	३.	विधाता ने	मनः	७.	मन को
सुभ्रूः	१.	हे सुन्दरी !	प्रीतिम्	८.	तृप्त
प्रेषितासि	१२.	यहाँ भेजा है	विधातुम्	९.	करने के लिये
शरीरिणाम् ।	४.	शरीर धारियों को	सघृणेन किम् ।।	१०.	दया करके

श्लोकार्थ—हे सुन्दरी ! निश्चय ही विधाता ने शरीरधारियों को सम्पूर्ण इन्द्रियों तथा मन को तृप्त करने के लिये दया करके तुम्हें यहाँ भेजा है ।

षष्ठः श्लोकः

सा त्वं नः स्पर्धमानानामेकवस्तुनि मानिनि ।
ज्ञातीनां बद्धवैराणां शं विधत्स्व सुमध्यमे ।।६।।

पदच्छेद— सा त्वम् नः स्पर्धमानानाम् एक वस्तुनि मानिनि ।
ज्ञातीनाम् बद्धवैराणाम् शम् विधत्स्व सुमध्यमे ।।

शब्दार्थ—

सा	३.	ऐसी	ज्ञातीनाम्	७.	एक ही जाति वाले
त्वम्	४.	तुम	बद्ध	९.	बाँध लेने वाले
नः	१०.	हम में	वैराणाम्	८.	परस्पर वैर
स्पर्धमानानाम्	६.	झगड़ा करने वाले	शम्	११.	शान्ति
एकवस्तुनि	५.	एक वस्तु के लिये	विधत्स्व	१२.	स्थापित करो
मानिनि ।	१.	हे मानिनी !	सुमध्यमे ।।	२.	हे सुन्दरी !

श्लोकार्थ—हे मानिनी ! सुन्दरि ! ऐसी तुम एक वस्तु के लिये झगड़ा करने वाले, एक ही जाति वाले, परस्पर वैर बाँध लेने वाले हममें शान्ति स्थापित करो ।।

सप्तमः श्लोकः

वयं कश्यपदायादा भ्रातरः कृतपौरुषाः ।
विभजस्व यथान्यायं नैव भेदो यथा भवेत् ॥७॥

पदच्छेद— वयम् कश्यप दायादाः भ्रातरः कृत पौरुषाः ।
विभजस्व यथान्यायम् न एव भेदः यथा भवेत् ॥

शब्दार्थ—

वयम्	३.	हम लोग	विभजस्व	९.	बाँट दो
कश्यप	४.	कश्यप जी के	यथा	८.	पूर्वक अमृत हमें
दायादाः	५.	पुत्र होने के कारण	न्यायम्	७.	न्याय
भ्रातरः	६.	परस्पर भाई हैं	न एव	१२.	न ही
कृत	२.	करने वाले	भेदः	११.	झगड़ा
पौरुषाः ।	१.	अमृत के लिये पुरुषार्थ	यथा	१०.	जिससे हम में
			भवेत् ॥	१३.	हो

श्लोकार्थ—अमृत के लिये पुरुषार्थ करने वाले हम लोग कश्यप जी के पुत्र होने के कारण परस्पर भाई हैं । न्यायपूर्वक अमृत हमें बाँट दो जिससे हम में झगड़ा न हो ॥

अष्टमः श्लोकः

इत्युपामन्त्रितो दैत्यैर्मायायोषिद्वपुर्हरिः ।
प्रहस्य रुचिरापाङ्गैर्निरीक्षन्निदमब्रवीत् ॥८॥

पदच्छेद— इति उपामन्त्रितः दैत्यैः मायायोषित् वपुः हरिः ।
प्रहस्य रुचिर अपाङ्गैःनिरीक्षन् इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

इति	२.	इस प्रकार	प्रहस्य	७.	तनिक हँसकर
उपामन्त्रितः	३.	प्रार्थना करने पर	रुचिर	८.	तिरछी
दैत्यैः	१.	असुरों द्वारा	अपाङ्गैः	९.	चितवन से
मायायोषित्	४.	लीला से स्त्री	निरीक्षन्	१०.	उनकी ओर देखते हुये
वपुः	५.	वेष धारण करने वाले	इदम्	११.	यह
हरिः ।	६.	भगवान् ने	अब्रवीत् ॥	१२.	कहा

श्लोकार्थ—असुरों द्वारा इस प्रकार प्रार्थना करने पर लीला से स्त्री वेष धारण करने वाले भगवान् ने तनिक हँस कर तिरछी चितवन से उनकी ओर देखते हुये यह कहा ॥

नवमः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—कथं कश्यपदायादाः पुंश्चल्यां मयि सङ्गताः ।
विश्वासं पण्डितो जातु कामिनीषु न याति हि ॥९॥

पदच्छेद— कथम् कश्यपदायादाः पुंश्चल्याम् मयि सङ्गताः ।
विश्वासम् पण्डितः जातु कामिनीषु न याति हि ॥

शब्दार्थ—

कथम्	१.	किस प्रकार	विश्वासम्	१०	विश्वास
कश्यप	२.	कश्यप ऋषि के	पण्डितः	७.	विवेकी पुरुष
दायादाः	३.	पुत्र आपलोग	जातु	९.	कभी
पुंश्चल्याम्	५.	कुलटा पर	कामिनीषु	८.	स्वेच्छाचारिणी स्त्रियों को
मयि	४.	मुझ	न	११.	नहीं
सङ्गताः ।	६.	न्याय का भार डाल रहे हो	याति हि ॥	१२.	करते हैं

श्लोकार्थ—किस प्रकार ऋषि के पुत्र आप लोग मुझ कुलटा पर न्याय का भार डाल रहे हो । विवेकी पुरुष स्वेच्छाचारिणी स्त्रियों का कभी विश्वास नहीं करते हैं ॥

दशमः श्लोकः

सालावृकाणां स्त्रीणां च स्वैरिणीनां सुरद्विषः ।
सख्यान्याहुरनित्यानि नूत्नं नूत्नं विचिन्वताम् ॥१०॥

पदच्छेद— सालावृकाणाम् स्त्रीणाम् च स्वैरिणीनाम् सुरद्विषः ।
सख्यानि आहुः अनित्यानि नूत्नम् नूत्नम् विचिन्वताम् ॥

शब्दार्थ—

सालावृकाणाम्	२.	कुत्ते	सख्यानि	६.	मित्रता
स्त्रीणाम्	५.	स्त्रियों की	आहुः	८.	बताई गई है (क्योंकि वे)
च	३.	और	अनित्यानि	७.	स्थायी नहीं
स्वैरिणीनाम्	४.	व्यभिचारिणी	नूत्नम्-नूत्नम्	९	नये-नये शिकार
सुरद्विषः ।	१.	हे दैत्यों ।	विचिन्वताम् ॥	१०.	खोजते रहते हैं

श्लोकार्थ—हे दैत्यों ! कुत्ते और व्यभिचारिणी स्त्रियों की मित्रता स्थायी नहीं बतायी गई है । क्योंकि वे नये-नये शिकार खोजते रहते हैं ॥

एकादशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इति ते क्ष्वेलितैस्तस्या आश्वस्तमनसोऽसुराः ।
जहसुर्भावगम्भीरं ददुश्चामृतभाजनम् ॥११॥

पदच्छेद— इति ते क्ष्वेलितैः तस्याः आश्वस्त मनसः असुराः ।
जहसुः भाव गम्भीरम् ददुः च अमृत भाजनम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	जहसुः	१६. हंसकर
ते	४. उन	भाव	१०. भाव से
क्ष्वेलितैः	३. परिहासभरी वाणी से	गम्भीरम्	६. रहस्यमय
तस्याः	२. उस मोहिनी की	ददुः	१४. उसे दे दिया
आश्वस्त	७. विश्वास हो गया	च	८. और उन्होंने
मनसः	६. मन में और भी	अमृत	१२. अमृत का
असुराः ।	५. दैत्यों के	भाजनम् ॥	१३. पात्र

श्लोकार्थ—इस प्रकार उस मोहनी की परिहास भरी वाणी से उन दैत्यों के मन में विश्वास हो गया और उन्होंने रहस्यमय भाव से हंसकर अमृत का पात्र उसे दे दिया ।

द्वादशः श्लोकः

ततो गृहीत्वामृतभाजनं हरिर्बभाष ईषत्स्मितशोभया गिरा ।
यद्यभ्युपेतं क्व च साध्वसाधु वा कृतं मया वो विभजे सुधामिमाम् ॥१२॥

पदच्छेद— ततः गृहीत्वा अमृत भाजनम् हरिः बभाषे ईषत् स्मित शोभया गिरा ।
यदि अभ्युपेतम् क्व च साधु असाधु वा कृतम् मया वः विभजे सुधाम् इमाम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. तब	अभ्युपेतम्	१६. तुम्हें स्वीकार हो तो
गृहीत्वा	४. हाथ में लेकर	क्व च	१५. कुछ भी
अमृतभाजनम्	३. अमृत का कलश	साधु असाधु	१३. उचित-अनुचित
हरिः	२. भगवान् ने	वा	१४. अथवा
बभाषे	६. कहा	कृतम्	१२. किया गया
ईषत्	५. तनिक	मया	११. मेरे द्वारा
स्मित	६. मुस्कराते हुये	वः	१६. तुम लोगों में
शोभया	७. सुन्दर	विभजे	२०. बाँट सकतो हूँ
गिरा ।	८. वाणी से	सुधाम्	१८. अमृत को
यदि	१०. यदि	इमाम् ॥	१७. इस

श्लोकार्थ—भगवान् ने अमृत का कलश अपने हाथ में लेकर तनिक मुसकराते हुये सुन्दर वाणी से कहा यदि मेरे द्वारा किया गया उचित-अनुचित अथवा कुछ भी तुम्हें स्वीकार हो तो इस अमृत को तुम लोगों में बाँट सकता सकती हूँ ।।

त्रयोदशः श्लोकः

इत्यभिव्याहृतं तस्या आकर्ण्यासुरपुङ्गवाः ।
अप्रमाणविदस्तस्यास्तत् तथेत्यन्वमंसत ॥१३॥

पदच्छेद— इति अभिव्याहृतं तस्याः आकर्ण्य असुरपुङ्गवाः ।
अप्रमाण विदः तस्याः तत् तथा इति अन्वमंसत ॥

शब्दार्थ—

इति	४.	यह	अप्रमाण	८.	वास्तविक स्वरूप को
अभिव्याहृतम्	५.	मीठी बात	विदः	९.	न जानकर
तस्याः	३.	मोहिनी की	तस्याः	७.	उसके
आकर्ण्य	६.	सुनकर	तत्	१०.	उसे
असुर	२.	दैत्यों ने	तथा इति	११.	उसी रूप में
पुङ्गवाः ।	१.	बड़े-बड़े	अन्वमंसत ॥	१२.	स्वीकार कर लिया

श्लोकार्थ— बड़े-बड़े दैत्यों ने मोहिनी की यह मीठी बात सुनकर उसके वास्तविक स्वरूप को न जानकर उसे उसी रूप में स्वीकार कर लिया ॥

चतुर्दशः श्लोकः

अथोपोष्य कृतस्नाना हुत्वा च हविषानलम् ।
दत्त्वा गोविप्रभूतेभ्यः कृतस्वस्त्ययना द्विजैः ॥१४॥

पदच्छेद— अथ उपोष्य कृतस्नानाः हुत्वा च हविषा अनलम् ।
दत्त्वा गोविप्र भूतेभ्यः कृत स्वस्त्ययनाः द्विजैः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	इसके बाद	दत्त्वा	९.	वस्तुयें देकर
उपोष्य	२.	एक दिन का उपवास करके	गोविप्र	७.	गौ-ब्राह्मण तथा
कृतस्नानाः	३.	सबने स्नान किया	भूतेभ्यः	८.	समस्त प्राणियों को
हुत्वा च	६.	हवन किया और	कृत	१२.	कराया
हविषा	४.	हविष्य से	स्वस्त्ययनाः	११.	मंगल पाठ
अनलम् ।	५.	अग्नि में	द्विजैः ॥	१०.	ब्राह्मणों से

श्लोकार्थ— इसके बाद एक दिन उपवास करके सबने स्नान किया । हविष्य से अग्नि में हवन किया । और गौ-ब्राह्मण तथा समस्त प्राणियों को वस्तुयें देकर ब्राह्मणों से मङ्गल पाठ कराया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

यथोपजोषं वासांसि परिधायाहतानि ते ।
कुशेषु प्राविशन्सर्वे प्रागग्रेष्वभिभूषिताः ॥१५॥

पदच्छेद— यथा उपजोषम् वासांसि परिधाय अहतानि ते ।
कुशेषु प्राविशन् सर्वे प्राक्अग्रेषु अभिभूषिताः ॥

शब्दार्थ—

यथा	३. अनुसार	कुशेषु	११. कुशासनों पर
उपजोषम्	२. अपनी-अपनी रुचि	प्राविशन्	१२. बैठ गये
वासांसि	५. वस्त्र (तथा)	सर्वे	८. फिर वे सब
परिधाय	७. धारण किये	प्राक्	९. पूर्व की ओर
अहतानि	४. बिना सिले हुये	अग्रेषु	१०. अग्रभाग करके तथा
ते ।	१. उन्होंने	अभिभूषिताः ॥	६. आभूषण

श्लोकार्थ—उन्होंने अपनी-अपनी रुचि के अनुसार बिना सिले हुये वस्त्र तथा आभूषण धारण किये । तथा फिर वे सब पूर्व की ओर अग्रभाग वाले कुशासनों पर बैठ गये ॥

षोडशः श्लोकः

प्राङ्मुखेषूपविष्टेषु सुरेषु दितिजेषु च ।
धूपामोदितशालायां जुष्टायां माल्यदीपकैः ॥१६॥

पदच्छेद— प्राक्मुखेषु उपविष्टेषु सुरेषु दितिजेषु च ।
धूपामोदित शालायाम् जुष्टायाम् माल्यदीपकैः ॥

शब्दार्थ—

प्राक्	१०. पूर्व की ओर	धूप	४. धूप से
मुखेषु	११. मुँह करके	आमोदित	५. सुगन्धित
उपविष्टेषु	१२. बैठ गये	शालायाम्	८. भव्य भवन में
सुरेषु	१. जब देवता	जुष्टायाम्	९. एकत्रित होकर
दितिजेषु	३. दैत्य	माल्य	६. मालाओं और
च ।	२. और	दीपकैः ॥	७. दीपकों से सजे

श्लोकार्थ—जब देवता और दैत्य धूप से सुगन्धित मालाओं और दीपकों से सजे भव्य भवन में एकत्रित होकर पूर्व की ओर मुँह करके बैठ गये ॥

सप्तदशः श्लोकः

तस्यां नरेन्द्रकरभोरुरुशद्दुकूलश्रोणीतटालसगतिर्मदविह्वलाक्षी ।
सा कूजती कनकनूपुरशिञ्जितेन कुम्भस्तनी कलशपाणिरथाविवेश ॥१७॥

पदच्छेद— तस्याम् नरेन्द्र करभोरुः उशत् दुकूल श्रोणीतट अलसगतिः मदविह्वलाक्षी ।
सा कूजती कनक नूपुर शिञ्जितेन कुम्भ स्तनी कलश पाणिः अथ आविवेश ॥

शब्दार्थ—

तस्याम्	१७.	उस सभा भवन में	सा	९.	वह मोहिनी
नरेन्द्र	२.	हे राजन् !	कूजती	१२.	झंकृत करती हुई
करभोरुः	३.	गजशावक की सूंड के समान जंघा वाली	कनकनूपुर	१०.	स्वर्णनूपुर की
उशत्	८.	धारण किये हुये	शिञ्जितेन	११.	झंकार से सभा भवन को
दुकूल	७.	रेशमी साड़ी	कुम्भस्तनी	६.	कलश के समान स्तन वाली
श्रोणीतट	१५.	नितम्बों के भार के कारण	कलश	१३.	अमृत कलश को
अलसगति	१६.	मन्दगति से चलती हुई	पाणिः	१४.	हाथ में लिये हुये
मद	४.	मद के कारण	अथ	१.	तदनन्तर
विह्वलाक्षी ।	५.	विह्वल नेत्रों वाली	आविवेश ॥	१८.	प्रविष्ट हुई

श्लोकार्थ— तदनन्तर हे राजन् ! गजशावक की सूंड के समान जंघा वाली, मद के कारण विह्वल नेत्रों वाली, कलश के समान स्तनवाली, रेशमी साड़ी धारण किये हुये वह मोहिनी स्वर्ण नुपुर की झंकार से सभा भवन को झंकृत करती हुई अमृत कलश को हाथ में लिये हुये नितम्बों के भार के कारण मन्दगति से चलती हुई उस सभा भवन में प्रविष्ट हुई ॥

अष्टादशः श्लोकः

तां श्रीसखीं कनककुण्डलचारुकर्णनासाकपोलवदनां परदेवताख्याम् ।
संवीक्ष्य संमुमुहुरुत्स्मितवीक्षणेन देवासुरा विगलितस्तनपट्टिकान्ताम् ॥१८॥

पदच्छेद— ताम् श्री सखीम् कनक कुण्डल चारुकर्ण नासा कपोल वदनाम् परदेवता आख्याम् ।
संवीक्ष्य संमुमुहुः उत्स्मित वीक्षणेन देव असुराः विगलित स्तन पट्टिका अन्ताम् ॥

शब्दार्थ—

ताम्	१४. उस मोहिनी द्वारा	आख्याम् ।	१९. भगवान् मोहिनी रूप में
श्री	८. लक्ष्मी जी की	संवीक्ष्य	१७. देखे जाने पर
सखीम्	९. कोई सखी लग रहे थे	संमुमुहुः	१८. मोहित हो गये
कनककुण्डल	२. सोने के कुण्डल थे	उत्स्मित	१५. मुसकान भरी
चारु	५. सुन्दर थे	वीक्षणेन	१६. चितवन से
कर्ण	१. कानों में	देवअसुराः	१०. वे देव और असुर
नासाकपोल	३. उसकी नासिका, कपोल	विगलित	१३. खिसक जाने पर
वदनाम्	४. मुख बड़े ही	स्तन	११. स्तनों पर से
परदेवता	६. स्वयं पर देवता	पट्टिका अन्ताम् ॥	१२. साड़ी का अञ्चल

श्लोकार्थ—कानों में सोने के कुण्डल थे । उसकी नासिका, कपोल, मुख बड़े ही सुन्दर थे । स्वयं पर देवता भगवान् मोहनी रूप में लक्ष्मी जी की कोई सखी लग रहे थे । वे देव और असुर स्तनों पर से साड़ी का अञ्चल खिसक जाने पर उस मोहनी द्वारा मुसकान भरी चितवन से देखे जाने पर मोहित हो गये ॥

एकोनविंशः श्लोकः

असुराणां सुधादानं सर्पाणामिव दुर्नयम् ।
मत्वा जातिं नृशंसानां न तां व्यभजदच्युतः ॥१९॥

पदच्छेद— असुराणाम् सुधादानम् सर्पाणाम् इव दुर्नयम् ।
मत्वा जातिं नृशंसानाम् न ताम् व्यभजत् अच्युतः ॥

शब्दार्थ—

असुराणाम्	३.	असुरों को	मत्वा	२.	यह मानकर कि
सुधा	४.	अमृत	जातिं	९.	अतः जन्म से ही
दानम्	५.	देना	नृशंसानाम्	१०.	क्रूर
सर्पाणाम्	६.	सर्पों को दूध पिलाने के	न ताम्	११.	उन असुरों को अमृत नहीं
इव	७.	समान	व्यभजत्	१२.	दिया
दुर्नयम् ।	८.	अन्याय होगा	अच्युतः ।	१.	भगवान् ने

श्लोकार्थ—भगवान् ने यह मानकर कि असुरों को अमृत देना सर्पों को दूध पिलाने के समान अन्याय होगा अतः जन्म से ही क्रूर उन असुरों को अमृत नहीं दिया ॥

विंशः श्लोकः

कल्पयित्वा पृथक् पङ्क्तीरुभयेषां जगत्पतिः ।
तांश्चोपवेशयामास स्वेषु स्वेषु च पङ्क्तिषु ॥२०॥

पदच्छेद— कल्पयित्वा पृथक् पङ्क्तीः उभयेषाम् जगत् पतिः ।
तान् च उपवेशयामास स्वेषु स्वेषु च पङ्क्तिषु ॥

शब्दार्थ—

कल्पयित्वा	६.	बना दी	तान्	८.	उन्हें
पृथक्	४.	अलग-अलग	च	७.	और
पङ्क्तीः	५.	पंक्तियाँ	उपवेशयामास	१२.	बैठा दिया
उभयेषाम्	३.	देवता और असुरों की	स्वेषु	९.	अपनी
जगत्	१.	संसार के	स्वेषु च	१०.	अपनी
पतिः ।	२.	स्वामी भगवान् ने	पङ्क्तिषु ॥	११.	कतार में

श्लोकार्थ—संसार के स्वामी भगवान् ने देवता और असुरों की अलग-अलग पङ्क्तियाँ बना दीं और उन्हें अपनी-अपनी कतार में बैठा दिया ॥

एकविंशः श्लोकः

दैत्यान्गृहीतकलशो वञ्चयन्नुपसञ्चरैः ।
दूरस्थानू पाययामास जरामृत्युहरां सुधाम् ॥२१॥

पदच्छेद— दैत्यान् गृहीतकलशः वञ्चयन् उपसञ्चरैः ।
दूरस्थान् पाययामास जरामृत्यु हराम् सुधाम् ॥

शब्दार्थ—

दैत्यान्	४.	दैत्यों को	दूरस्थान्	६.	दूर बैठे देवताओं को
गृहीत	२.	हाथ में लिये हुये वे भगवान्	पाययामास	१०.	पिलाने लगे
कलशः	१.	कलश को	जरा-मृत्यु	७.	बुढ़ापा और मृत्यु का
वञ्चयन्	५.	मोहित करके	हराम्	८.	हरण कर लेने वाला
उपसञ्चरैः ।	३.	अपने हाव-भाव से	सुधाम् ॥	९.	अमृत

श्लोकार्थ—कलश को हाथ में लिये हुये वे भगवान् अपने हाव-भाव से दैत्यों को मोहित करके दूर बैठे देवताओं को बुढ़ापा और मृत्य का हरण कर लेने वाला अमृत पिलाने लगे ॥

द्वाविंशः श्लोकः

ते पालयन्तः समयमसुराः स्वकृतं नृप ।
तूष्णीमासन्कृतस्नेहाः स्त्रीविवादजुगुप्सया ॥२२॥

पदच्छेद— ते पालयन्तः समयम् असुराः स्वकृतम् नृप ।
तूष्णीम् आसन् कृतस्नेहाः स्त्री विवाद जुगुप्सया ॥

शब्दार्थ—

ते	२.	वे	तूष्णीम्	१३.	चुप ही
पालयन्तः	७.	पालन करते हुये	आसन्	१४.	बने रहे
समयम्	६.	प्रतिज्ञा का	कृत	९.	हो जाने के कारण
असुराः	३.	असुर	स्नेहाः	८.	उस स्त्री से स्नेह
स्व	४.	अपने द्वारा	स्त्री	१०.	स्त्री से
कृतम्	५.	की हुई	विवाद	११.	विवाद करने में
नृप ।	१.	हे राजन् !	जुगुप्सया ॥	१२.	निन्दा के भय से

श्लोकार्थ—हे राजन् ! वे असुर अपने द्वारा की हुई प्रतिज्ञा का पालन करते हुये उस स्त्री से स्नेह हो जाने के कारण स्त्री से विवाद करने में निन्दा के भय से चुप ही बने रहे ॥

त्रयविंशः श्लोकः

तस्यां कृतातिप्रणयाः प्रणयापायकातराः ।
बहुमानेन चाबद्धा नोचुः किञ्चन विप्रियम् ॥२३॥

पदच्छेद— तस्याम् कृत अति प्रणयाः प्रणय अपाय कातराः ।
बहुमानेन च आबद्धाः न ऊचुः किञ्चन विप्रियम् ॥

शब्दार्थ—

तस्याम	१.	उस मोहिनी में	बहुमानेन	६.	उससे प्राप्त सम्मान में
कृत	३.	हो जाने के कारण	च आबद्धाः	७.	बंधे होने के कारण
अतिप्रणयाः	२.	अधिक स्नेह	न ऊचुः	१०.	नहीं कही
प्रणय अपाय	४.	प्रेम सम्बन्ध टूटने के	किञ्चन	८.	उन्होंने कोई
कातराः ।	५.	भय से तथा	विप्रियम् ॥	९.	अप्रिय बात

श्लोकार्थ—उस मोहिनी में अधिक स्नेह हो जाने के कारण प्रेम सम्बन्ध टूटने के भय से तथा उससे प्राप्त सम्मान में बँधे होने के कारण उन्होंने कोई अप्रिय बात नहीं कही ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

देवलिङ्गप्रतिच्छन्नः स्वर्भानुर्देवसंसदि ।
प्रविष्टः सोममपिबच्चन्द्रार्काभ्यां च सूचितः ॥२४॥

पदच्छेद— देवलिङ्ग प्रतिच्छन्नः स्वर्भानुः देव संसदि ।
प्रविष्टः सोमम् अपिबत् चन्द्र अर्काभ्याम् च सूचितः ॥

शब्दार्थ—

देव	३.	देवताओं के	प्रविष्टः	५.	प्रवेश करके
लिङ्ग	४.	वेष में	सोमम्	७.	अमृत
प्रतिच्छन्नः	६.	छिपकर बैठे राहु ने	अपिबत्	८.	पी लिया
स्वर्भानुः	११.	अपने प्रकाश से	चन्द्र	९.	चन्द्रमा तथा
देव	१.	देवताओं की	अर्काभ्याम् च	१०.	सूर्य ने
संसदि ।	२.	पंक्ति में	सूचितः ॥	१२	उसे संकेतित कर दिया

श्लोकार्थ—देवताओं की पंक्ति में देवताओं के वेष में प्रवेश करके छिपकर बैठे हुये राहु ने अमृत पी लिया । चन्द्रमा तथा सूर्य ने अपने प्रकाश से उसे संकेतित कर दिया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

चक्रेण क्षुरधारेण जहार पिबतः शिरः।
हरिस्तस्य कबन्धस्तु सुधयाप्लावितोऽपतत् ॥२५॥

पदच्छेद— चक्रेण क्षुरधारेण जहार पिबतः शिरः।
हरिः तस्य कबन्धः तु सुधया आप्लावितः अपतत् ॥

शब्दार्थ—

चक्रेण	४. चक्र के द्वारा	हरिः	१. भगवान् ने
क्षुर	२. तीखी	तस्य	१०. उसका
धारेण	३. धार वाले	कबन्धः	११. धड़
जहार	७. काट दिया	सुधया	८. अमृत का
पिबतः	५. अमृत पीते समय ही	आप्लावितः	९. संसर्ग न होने से
शिरः।	६. उसका सिर	अपतत् ॥	१२. नीचे गिर गया

श्लोकार्थ—भगवान् ने तीखी धार वाले चक्र के द्वारा अमृत पीते समय ही उसका सिर काट दिया। अमृत का संसर्ग न होने से उसका धड़ नीचे गिर गया ॥

षड्विंशः श्लोकः

शिरस्त्वमरतां नीतमजो ग्रहमचीक्लृपत्।
यस्तु पर्वणि चन्द्रार्कावभिधावति वैरधीः ॥२६॥

पदच्छेद— शिरः अमरताम् नीतम् अजः ग्रहम् अचीक्लृपत्।
यः तु पर्वणि चन्द्र अर्कौ अभिधावति वैरधीः ॥

शब्दार्थ—

शिरः तु	१. परन्तु शिर	यः तु	७. जो
अमरताम	२. अमर	पर्वणि	८. पर्व के दिन
नीतम्	३. हो गया और	चन्द्र	९. चन्द्रमा और
अजः	४. ब्रह्मा जी ने	अर्कौ	१०. सूर्य पर
ग्रहम्	५. उसे ग्रह	अभिधावति	१२. आक्रमण किया करता है
अचीक्लृपत्।	६. बना दिया	वैरधीः ॥	११. वैर-बुद्धि के कारण

श्लोकार्थ—परन्तु शिर अमर हो गया और ब्रह्मा जी ने उसे ग्रह बना दिया जो पर्व के दिन चन्द्रमा और सूर्य पर वैर-बुद्धि के कारण आक्रमण करता है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

पीतप्रायेऽमृते देवैर्भगवाँल्लोकभावनः ।
पश्यतामसुरेन्द्राणां स्वं रूपं जगृहे हरिः ॥२७॥

पदच्छेद— पीतप्राये अमृते देवैः भगवान् लोक भावनः ।
पश्यताम् असुरेन्द्राणाम् स्वम् रूपम् जगृहे हरिः ॥

शब्दार्थ—

पीतप्राये	७. पी चुकने पर	पश्यताम्	९. सामने ही
अमृते	६. अमृत	असुरेन्द्राणाम्	८. बड़े-बड़े दैत्यों के
देवैः	५. देवताओं द्वारा	स्वम्	१०. अपना वास्तविक
भगवान्	३. भगवान्	रूपम्	११. रूप
लोक	१. समस्त संसार को	जगृहे	१२. धारण कर लिया
भावनः ।	२. जीवनदान देने वाले	हरिः ॥	४. परमात्मा विष्णु ने

श्लोकार्थ—समस्त संसार को जीवनदान देने वाले भगवान् परमात्मा विष्णु ने देवताओं द्वारा अमृत पी चुकने पर बड़े-बड़े दैत्यों के सामने ही अपना वास्तविक रूप धारण कर लिया ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

एवं सुरासुरगणाः समदेशकालहेत्वर्थकर्ममतयोऽपि फले विकल्पाः ।
तत्रामृतं सुरगणाः फलमञ्जसाऽऽपुर्यत्पादपङ्कजरजः श्रयणान्न दैत्याः ॥२८॥

पदच्छेद—एवम् सुरासुरगणाः समदेश-काल हेतु अर्थ कर्म मतयः अपि फले विकल्पाः ।
तत्र अमृतम् सुरगणाः फलम् अञ्जसा आपुः यत् पादपङ्कजरजः श्रयणात् न दैत्याः ॥

शब्दार्थ—

एवम् सुर	१. इस प्रकार देवता और	तत्र	१०. उनमें
असुर गणाः	२. दैत्य दोनों के द्वारा	अमृतम्	१२. अमृतरूप
समदेशकाल	३. समान देश काल	सुरगणाः	११. देव समुदाय ने
हेतु अर्थ	४. समान कारण और प्रयोजन	फलम्	१३. फल को
कर्म	५. के लिये कर्म करने पर	अञ्जसा आपुः	१४. सहज ही प्राप्त कर लिया
मतयः	६. समान बुद्धि से	यत्	१५. क्योंकि उन्होंने भगवान् के
अपि	७. भी	पादपङ्कजरजः	१६. चरण कमलों की धूल का
फले	८. फल में	श्रयणात्	१७. आश्रय लिया था (किन्तु)
विकल्पाः ।	९. भेद हो गया	न दैत्याः ॥	१८. दैत्यों ने नहीं लिया था ॥

श्लोकार्थ—इस प्रकार देवता और दैत्य दोनों के द्वारा समान देश, काल, समान कारण और प्रयोजन के लिये भी कर्म करने पर फल में भेद हो गया । उनमें देव-समुदाय ने अमृत रूप फल को सहज ही प्राप्त कर लिया । क्योंकि उन्होंने भगवान् के चरण कमलों की धूल का आश्रय लिया था । किन्तु दैत्यों ने नहीं लिया था ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

यद् युज्यतेऽसुवसुकर्ममनोवचोभिर्देहात्मजादिषु नृभिस्तदसत् पृथक्त्वात्।
तैरेव सद्भवति यत् क्रियतेऽपृथक्त्वात् सर्वस्य तद् भवति मूलनिषेचनं यत् ॥२९॥

पदच्छेद—

यत् युज्यते असुवसुकर्ममनः वचोभिः देह आत्मज आदिषु नृभिः तत् असत् पृथक्त्वात् ।
तैः एव सद्भवति यत् क्रियते अपृथक्त्वात् सर्वस्य तद् भवति मूलनिषेचनम् यत् ॥

शब्दार्थ—

यत्	७.	जो कर्म	तैः एव	११.	वही कर्म
युज्यते	८.	किया जाता है	सद्भवति	१२.	सार्थक होता है
असुवसु	१.	प्राण, धन	यत्	१३.	जो
कर्ममनः	२.	कर्म मन और	क्रियते	१५.	किया जाता है ।
वचोभिः	३.	वाणी आदि से	अपृथक्त्वात्	१४.	परमात्मा में अभेद बुद्धि से
देह आत्मज	४.	शरीर एवम्	सर्वस्य	१९.	सब
आदिषु	५.	पुत्र आदि के लिये	तत्	१८.	वह
नृभिः	६.	मनुष्यों के द्वारा	भवति	२०.	सबके लिए होता है
तत् असत्	१०.	वह व्यर्थ ही है	मूलनिषेचनम्	१७.	जड़ सींचने की भाँति
पृथक्त्वात् ।	९.	भेद-बुद्धि के कारण	यत् ॥	१६.	क्योंकि वृक्ष की

श्लोकार्थ—प्राण-धन-कर्म-मन और वाणी आदि से शरीर एवम् पुत्र आदि के लिये मनुष्यों के द्वारा जो कर्म किया जाता है, भेद बुद्धि के कारण वह व्यर्थ ही है । वही कर्म सार्थक होता है, जो परमात्मा में अभेद बुद्धि से किया जाता है । क्योंकि वृक्ष की जड़ सींचने की भाँति वह सब सबके लिए होता है ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमे स्कन्धे
अमृतमथने नवमः अध्यायः ॥९॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

नवमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

इति दानवदैतेया नाविन्दन्नमृतं नृप ।
युक्ताः कर्मणि यत्ताश्च वासुदेवपराङ्मुखाः ॥१॥

पदच्छेद—

इति दानवदैतेयाः न अविन्दन् अमृतम् नृप ।
युक्ताः कर्मणि यत्ताः च वासुदेव पराङ्मुखाः ॥

शब्दार्थ—

इति	२.	इस प्रकार	युक्ताः	७.	लगे रहे
दानव	३.	दानव और	कर्मणि	५.	समुद्र मन्थन रूप कार्य में
दैतेयाः	४.	दैत्य	यत्ताः	६.	प्रयत्न पूर्वक
न अविन्दत्	१२.	नहीं प्राप्ति हुई	च	८.	और
अमृतम्	११.	अमृत की	वासुदेव	९.	परमात्मा से
नृप ।	१.	हे राजन् !	पराङ्मुखाः ॥	१०.	विमुख होने के कारण उन्हें

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार दानव और दैत्य समुद्र मन्थन रूप कर्म में प्रयत्न पूर्वक लगे रहे और परमात्मा से विमुख होने के कारण उन्हें अमृत की प्राप्ति नहीं हुई ॥

द्वितीयः श्लोकः

साधयित्वामृतं राजन्पाययित्वा स्वकान्सुरान् ।
पश्यतां सर्वभूतानां ययौ गरुडवाहनः ॥२॥

पदच्छेद—

साधयित्वा अमृतम् राजन् पाययित्वा स्वकान् सुरान् ।
पश्यताम् सर्वभूतानां ययौ गरुड वाहनः ॥

शब्दार्थ—

साधयित्वा	३.	प्राप्त करके तथा उसे	पश्यताम्	९.	देखते-देखते]
अमृतम्	२.	भगवान् ने अमृत	सर्व	७.	सब
राजन्	१	हे राजन् !	भूतानाम्	८.	लोगों के
पाययित्वा	६.	पिलाकर	ययौ	१२.	वहाँ से चले गये
स्वकान्	४.	अपने निजजन	गरुड़	१०.	गरुड़ पर
सुरान् ।	५.	देवताओं को	वाहनः ॥	११.	सवार होकर

श्लोकार्थ—हे राजन् ! भगवान् ने अमृत प्राप्त करके अपने निजजन देवताओं को पिलाकर सब लोगों के देखते-देखते गरुड़पर सवार होकर वहाँ से चले गये ॥

तृतीयः श्लोकः

सपत्नानां परामृद्धिं दृष्ट्वा ते दितिनन्दनाः ।
अमृष्यमाणा उत्पेतुर्देवान्प्रत्युद्यतायुधाः ॥३॥

पदच्छेद—

सपत्नानाम् पराम् ऋद्धिम् दृष्ट्वा ते दितिनन्दनाः ।
अमृष्यमाणाः उत्पेतुः देवान् प्रति उद्यत आयुधाः ॥

शब्दार्थ—

सपत्नानाम्	३.	अपने शत्रुओं की	अमृष्यमाणाः	७.	उसे सहन न करते हुये
पराम्	४.	अत्यधिक	उत्पेतुः	१२.	आक्रमण कर दिया
ऋद्धिम्	५.	समृद्धि को	देवान्	१०.	देवताओं
दृष्ट्वा	६.	देखकर	प्रति	११.	पर
ते दिति	१.	उस दिति के	उद्यत	९.	उठाकर
नन्दनाः ।	२.	पुत्र दैत्यों ने	आयुधाः ॥	८.	हथियार

श्लोकार्थ—उस दिति के पुत्र दैत्यों ने अपने शत्रुओं की अत्यधिक समृद्धि को देखकर उसे सहन न करते हुये हथियार उठाकर देवताओं पर आक्रमण कर दिया ।

चतुर्थः श्लोकः

ततः सुरगणाः सर्वे सुधया पीतयैधिताः ।
प्रति संयुयुधुः शस्त्रैर्नारायणपदाश्रयाः ॥४॥

पदच्छेद—

ततः सुरगणाः सर्वे सुधया पीतया एधिताः ।
प्रति संयुयुधुः शस्त्रैः नारायण पद आश्रयाः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तत्पश्चात्	प्रतिसंयुयुधुः	११.	दैत्यों से भिड़ गये
सुरगणाः	६.	देवगण भी	शस्त्रैः	७.	शस्त्र ग्रहण करके
सर्वे	५.	वे सब	नारायण	८.	भगवान् के
सुधया	२.	अमृत	पद	९.	चरणों के
पीतया	३.	पीने के कारण	आश्रयाः ॥	१०.	आश्रित होकर
एधिताः ।	४.	समृद्धि को प्राप्त			

श्लोकार्थ—तत्पश्चात् अमृत पीने के कारण समृद्धि को प्राप्त वे सब देवगण भी शस्त्रग्रहण करके भगवान् के चरणों के आश्रित होकर दैत्यों से भिड़ गये ॥

पञ्चमः श्लोकः

तत्र दैवासुरो नाम रणः परमदारुणः ।
रोधस्युदन्वतो राजंस्तुमुलो रोमहर्षणः ॥५॥

पदच्छेद— तत्र दैव असुरः नाम रणः परम दारुणः ।
रोधसि उदन्वतः राजन् तुमुलः रोमहर्षणः ॥

शाब्दर्थं—

तत्र	८.	वही	रोधसि	३.	किनारे पर जो
दैव-असुर	९.	देवासुर संग्राम	उदन्वतः	२.	समुद्र के
नाम	१०.	नाम से प्रसिद्ध हुआ	राजन्	१.	हे राजन् !
रणः	७.	युद्ध हुआ	तुमुलः	४.	अत्यन्त भयंकर
परमदारुणः ।	६.	घमासान	रोमहर्षणः ॥	५.	रोमाञ्चकारी

श्लोकार्थं—हे राजन् ! समुद्र के किनारे पर जो अत्यन्त भयंकर रोमाञ्चकारी घमासान युद्ध हुआ । वही देवासुर नाम से प्रसिद्ध हुआ ॥

षष्ठः श्लोकः

तत्रान्योन्यं सपत्नास्ते संरब्धमनसो रणे ।
समासाद्यासिभिर्बाणैर्निजघ्नुर्विविधायुधैः ॥६॥

पदच्छेद— तत्र अन्योन्यम् सपत्नाः ते संरब्ध मनसः रणे ।
समासाद्य असिभिः बाणैः निजघ्नुः विविध आयुधैः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ पर	समासाद्य	८.	आमने-सामने होकर
अन्योन्यम्	२.	एक-दूसरे के	असिभिः	९.	तलवारों से
सपत्नाः	३.	प्रबलशत्रु	बाणैः	१०.	बाणों तथा
ते	७.	वे परस्पर	निजघ्नुः	१३.	प्रहार करने लगे
संरब्ध	५.	क्रोध से भरे हुये	विविध	११.	अनेक प्रकार के
मनसः	६.	मनवाले	आयुधैः ॥	१२.	अस्त्र-शस्त्रों से
रणे ।	४.	युद्ध में			

श्लोकार्थ—वहाँ पर एक दूसरे के प्रबलशत्रु, युद्ध में क्रोध से भरे हुये मन वाले वे परस्पर आमने-सामने होकर तलवारों से, बाणों से अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों से प्रहार करने लगे ॥

सप्तमः श्लोकः

शङ्खतूर्यमृदङ्गानां भेरीडमरिणां महान् ।
हस्त्यश्वरथपत्तीनां नदतां निस्वनोऽभवत् ॥७॥

पदच्छेद—

शङ्खतूर्यं मृदङ्गानाम् भेरी डमरिणाम् महान् ।
हस्ति अश्व रथ पत्तीनाम् नदताम् निस्वनः अभवत् ॥

शब्दार्थ—

शङ्ख	१.	शङ्ख	हस्ति	७.	हाथियों
तूर्यं	२.	तुरही	अश्व, रथ	८.	घोड़ों-रथों और
मृदङ्गानाम्	३.	मृदङ्ग	पत्तीनाम्	९.	पैदल सेना की
भेरी	४.	नगारे और	नदताम्	१०.	तीव्र ध्वनि से वहाँ
डमरिणाम्	५.	डमरू तथा	निस्वनः	११.	कोलाहल
महान् ।	६.	बड़े-बड़े	अभवत् ॥	१२.	मच गया

श्लोकार्थ—शङ्ख, तुरही; मृदङ्ग, नगारे और डमरू तथा बड़े-बड़े हाथियों, घोड़ों, रथों और पैदल सेना की तीव्र ध्वनि से वहाँ कोलाहल मंच गया ॥

अष्टमः श्लोकः

रथिनो रथिभिस्तत्र पत्तिभिः सह पत्तयः ।
हया हयैरिभाश्चेभैः समसज्जन्त संयुगे ॥८॥

पदच्छेद—

रथिनः रथिभिः तत्र पत्तिभिः सह पत्तयः ।
हयाः हयैः इभाः च इभैः सम् असज्जन्त संयुगे ॥

शब्दार्थ—

रथिनः	३.	रथ	हयाः	९.	घोड़े
रथिभिः	४.	रथियों के साथ	हयैः	८.	घोड़ों के साथ
तत्र	१.	वहाँ	इभाः च	११.	हाथी
पत्तिभिः	५.	पैदल के	इभैः	१०.	हाथियों के साथ
सह	६.	साथ	सम्असज्जन्त	१२.	भिड़ गये
पत्तयः ।	७.	पैदल	संयुगे ॥	२.	रणभूमि में

श्लोकार्थ—वहाँ रणभूमि में रथी रथियों के साथ, पैदल के साथ पैदल, घोड़ों के साथ घोड़े, हाथियों के साथ हाथी भिड़ गये ॥

नवमः श्लोकः

उष्ट्रैः केचिदिभैः केचिदपरे युयुधुः खरैः ।
केचिद् गौरमृगैर्ऋक्षैर्द्वीपिभिर्हरिभिर्भटाः ॥९॥

पदच्छेद—

उष्ट्रैः केचित् इभैः केचित् अपरे युयुधुः खरैः ।
केचित् गौरमृगैः ऋक्षैः द्वीपिभिः हरिभिः भटाः ॥

शब्दार्थ—

उष्ट्रैः	३.	ऊँटों पर	केचित्	७.	कुछ वीर
केचित् इभैः	१.	कुछ लोग हाथियों पर	गौरमृगैः	८.	गौर मृगों पर तथा अन्य
केचित्	२.	और कुछ वीर	ऋक्षैः	१०.	भालू
अपरे	४.	अन्य वीर	द्वीपिभिः	११.	बाघ और
युयुधुः	६.	लड़ रहे थे	हरिभिः	१२.	सिंहों पर चढ़कर लड़ रहे थे
खरैः ।	५.	गधों पर चढ़कर	भटाः ॥	९.	वीर

श्लोकार्थ—कुछ लोग हथियों पर और कुछ वीर ऊंटों पर अन्य वीर गधों पर चढ़कर लड़ रहे थे । कुछ वीर गौर मृगों पर तथा अन्य वीर भालू, बाघ और सिंहों पर चढ़कर लड़ रहे थे ॥

दशमः श्लोकः

गृध्रैः कङ्कैर्बकैरन्ये श्येनभासैस्तिमिङ्गिलैः ।
शरभैर्महिषैः खड्गैर्गोवृषैः गवयारुणैः ॥१०॥

पदच्छेद—

गृध्रैः कङ्कैः बकैः अन्ये श्येन भासैः तिमिङ्गिलैः ।
सरभैः महिषैः खड्गैः गोवृषैः गवय अरुणैः ॥

शब्दार्थ—

गृध्रैः	१.	कोई-कोई सैनिक गिद्धों पर	शरभैः	७.	शुरभ
कङ्कैः	२.	कङ्क	महिषैः	८.	भैंसे
बकैः अन्ये	३.	दूसरे बगुलों	खड्गैः	९.	गैंड़े
श्येन	४.	बाज और	गोवृषैः	१०.	बैल
भासैः	५.	भास पक्षियों पर चढ़े थे	गवय	११.	नील गाय और
तिमिङ्गिलैः ।	६.	बहुत से तिमिङ्गिल	अरुणैः ॥	१२.	जङ्गली साड़ों पर सवार थे

श्लोकार्थ—कोई-कोई सैनिक गिद्धों पर, कङ्क, बगुलों बाज और भास पक्षियों पर चढ़े थे । बहुत से तिमिङ्गिल, शरभ, भैंसे, गैंड़े, बैल, नील गाय और जङ्गली साड़ों पर सवार थे ॥

एकादशः श्लोकः

शिवाभिराखुभिः केचित्कृकलासैः शशैर्नरैः ।
बस्तैरेके कृष्णसारैर्हंसैरन्ये च सूकरैः ॥११॥

पदच्छेद—

शिवाभिः आखुभिः केचित् कृकलासैः शशैः नरैः ।
बस्तैः एके कृष्णसारैः हंसैः अन्ये च सूकरैः ॥

शब्दार्थ—

शिवाभिः	२. सियारिन	बस्तैः	८. बकरे तथा
आखुभिः	३. चूहे	एके	६. कुछ लोग
केचित्	१. कुछ लोग	कृष्णसारैः	९. कृष्णसार मृगों पर सवार थे
कृकलासैः	४. गिरगिट और	हंसैः	११. हंसों तथा
शशैः	५. खरहों पर सवार थे	अन्ये च	१०. अन्य कुछ
नरैः ।	७. मनुष्यों	सूकरैः ॥	१२. सूकरों पर सवार थे

श्लोकार्थ—कुछ लोग सियारिन, चूहे, गिरगिट और खरहों पर सवार थे । कुछ लोग, मनुष्यों, बकरे तथा कृष्णसार मृगों पर सवार थे ॥

द्वादशः श्लोकः

अन्ये जलस्थलखगैः सत्त्वैर्विकृतविग्रहैः ।
सेनयोरुभयो राजन्विविशुस्तेऽग्रतोऽग्रतः ॥१२॥

पदच्छेद—

अन्ये जल-स्थल खगैः सत्त्वैः विकृत विग्रहैः ।
सेनयोः उभयोः राजन् विविशुः ते अग्रतः अग्रतः ॥

शब्दार्थ—

अन्ये	२. दूसरे	सेनयोः	११. सेनाओं में
जल	४. जल	उभयोः	१०. दोनों
स्थल	५. स्थल और	राजन्	१. हे राजन् !
खगैः	६. आकाश में रहने वाले	विविशुः	१४. घुस गये
सत्त्वैः	९. प्राणियों पर चढ़कर	ते	३. वे दैत्य
विकृत	७. और भयंकर	अग्रतः	१२. आगे
विग्रहैः ।	८. शरीर वाले	अग्रतः ॥	१३. आगे

श्लोकार्थ— हे राजन् ! दूसरे वे दैत्य जल, स्थल और आकाश में रहने वाले और भयंकर शरीर वाले प्राणियों पर चढ़कर दोनों सेनाओं में आगे-आगे घुस गये ॥

त्रयोदशः श्लोकः

चित्रध्वजपटै राजन्नातपत्रैः सितामलैः ।
महाधनैर्वज्रदण्डैर्व्यजनैर्बार्हचामरैः ॥१३॥

पदच्छेद—

चित्रध्वजपटैः राजन् आतपत्रैः सित अमलैः ।
महाधनैः वज्रदण्डैः व्यजनैः बार्ह चामरैः ॥

शब्दार्थ—

चित्र	२.	रंग-विरंगी	महाधनैः	७.	रत्नों से जड़े हुये
ध्वजपटैः	३.	पताकाओं	वज्र	८.	मजबूत
राजन्	१.	हे राजन् ! वे सेनायें	दण्डैः	९.	दण्ड वाले
आतपत्रैः	६.	छत्रों	व्यजनैः	१०.	पंखों
सित	४.	श्वेत और	बार्ह	११.	मोर पंखों तथा
अमलैः ।	५.	निर्मल	चामरैः ॥	१२.	चंवरों से सुशोभित थीं

श्लोकार्थ—हे राजन्; वे सेनायें रंग-बिरंगी पताकाओं, श्वेत और निर्मल रत्नों से जड़े हुये मजबूत दण्ड वाले पंखों, मोर पंखों, तथा चंवरों से सुशोभित थीं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

वातोद्धतोत्तरोष्णीषैरर्चिर्भिर्वर्मभूषणैः ।
स्फुरद्भिर्विशदैः शस्त्रैः सुतरां सूर्यरश्मिभिः ॥१४॥

पदच्छेद—

वात उद्धत उत्तर उष्णीषैः अर्चिभिः वर्म भूषणैः ।
स्फुरद्भिः विशदैः शस्त्रैः सुतराम् सूर्यरश्मिभिः ॥

शब्दार्थ—

वात	१.	वे वायु से	स्फुरद्भिः	११.	दमकते हुये
उद्धत	२.	उड़ते हुये	विशदैः	१२.	उज्ज्वल
उत्तर	३.	दुपट्टों	शस्त्रैः	१३.	शस्त्रों से युक्त थीं
उष्णीषैः	४.	पगड़ी	सुतराम्	८.	अत्यन्त
अर्चिभिः	५.	कलंगी	सूर्य	९.	सूर्य की
वर्म	६.	कवच	अश्मिभिः ॥	१०.	किरणों से
भूषणैः ।	७.	आभूषण तथा			

श्लोकार्थ—वे वायु से उड़ते हुये दुपट्टों, पगड़ी, कलंगी, कवच, आभूषण तथा अत्यन्त सूर्य की किरणों से दमकते हुये उज्ज्वल शस्त्रों से युक्त थीं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

देवदानववीराणां ध्वजिन्यौ पाण्डुनन्दन ।
रेजतुर्वीरमालाभिर्यादसामिव सागरौ ॥१५॥

पदच्छेद—

देव दानव वीराणाम् ध्वजिन्यौ पाण्डुनन्दन ।
रेजतुः वीरमालाभिः यादसाम् इव सागरौ ॥

शब्दार्थ—

देव	३.	देवता और	**रेजतुः**	११.	सुशोभित हो रही थीं
दानव	४.	दानवों की	**वीर**	६.	वीरों की
वीराणाम्	२.	वीर	**मालाभिः**	७.	पंक्तियों के कारण
ध्वजिन्यौ	५.	सेनायें	**यादसाम्**	८.	जल जन्तुओं से भरे हुये
पाण्डुनन्दन !	१.	हे परीक्षित् !	**इव**	१०.	समान
			सागरौ ॥	९.	दो महासागरों के

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! वीर देवता और दानवों की सेनायें वीरों की पंक्तियों के कारण जल-जन्तुओं से भरे हुये दो महासागरों के समान सुशोभित हो रही थीं ॥

षोडशः श्लोकः

वैरोचनो बलिः संख्ये सोऽसुराणां चमूपतिः ।
यानं वैहायसं नाम कामगं मयनिर्मितम् ॥१६॥

पदच्छेद—

वैरोचनः बलिः संख्ये सः असुराणाम् चमूपतिः ।
यानम् वैहायसम् नाम कामगम् मय निर्मितम् ॥

शब्दार्थ—

वैरोचनः	४.	विरोचन पुत्र	**यानम्**	१०.	विमान पर सवार हुये
बलिः	५.	बलि	**वैहायसम्**	८.	वैहायस
संख्ये सः	१.	रणभूमि में वह	**नाम**	९.	नामक
असुराणाम्	२.	दैत्यों के	**कामगम्**	७.	इच्छानुसार चलने वाले
चमूपतिः ।	३.	सेनापति	**मयनिर्मितम् ॥**	६.	मयदानव के बनाये हुये

श्लोकार्थ—रणभूमि में वह दैत्यों के सेनापति विरोचन-पुत्र बलि मयदानव के बनाये हुये इच्छानुसार चलने वाले वैहायस नामक विमान पर सवार हुये ॥

सप्तदशः श्लोकः

सर्वसाङ्ग्रामिकोपेतं सर्वाश्चर्यमयं प्रभो ।
अप्रतर्क्यमनिर्देश्यं दृश्यमानमदर्शनम् ॥१७॥

पदच्छेद—

सर्व साङ्ग्रामिक उपेतम् सर्व आश्चर्य मयम् प्रभो ।
अप्रतर्क्यम् अनिर्देश्यम् दृश्यमानम् अदर्शनम् ॥

शब्दार्थ—

सर्व	२. युद्ध की समस्त	प्रभो ।	१. हे परीक्षित् !
साङ्ग्राभिक	३ सामग्रियों से	अप्रतर्क्यम्	७. वह तर्क से परे तथा
उपेतम्	४. युक्त वह	अनिर्देश्यम्	८. अनुमान से भी परे था
सर्व	५. समस्त	दृश्यमानम्	९. कभी दिखाई देता और
आश्चर्यमयम्	६. आश्चर्यों से युक्त था	अदर्शनम् ॥	१०. कभी नहीं दिखाई देता था

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! युद्ध को समस्त सामग्रियों से युक्त वह समस्त आश्चर्यों से युक्त था । वह तर्क से परे तथा अनुमान से भी परे था । कभी दिखाई देता और कभी नहीं दिखाई देता था ॥

अष्टादशः श्लोकः

आस्थितस्तद् विमानाग्र्यं सर्वानीकाधिपैर्वृतः ।
बालव्यजनछत्राग्र्यै रेजे चन्द्र इवोदये ॥१८॥

पदच्छेद—

आस्थितः तत् विमानाग्र्यम् सर्व अनीक अधिपैः वृतः ।
बालव्यजन छत्र अग्र्यैः रेजे चन्द्रः इव उदये ॥

शब्दार्थ—

आस्थितः	४. बैठे हुये	बाल	१३. बाल
तत्	१. उस	व्यजन	९. चंवर तथा
विमान	३. विमान पर	छत्र	११. छत्र से सुशोभित थे
अग्र्यम्	२. श्रेष्ठ	अग्र्यैः	१०. श्रेष्ठ
सर्व	५. समस्त	रेजे	१६. सुशोभित हो रहे थे
अनीक	६. सेना	चन्द्रः	१५. चन्द्रमा के
अधिपैः	७. पतियों से	इव	१४. समान
वृतः ।	८. घिरे हुये	उदये ॥	१२. उदयाचल पर स्थित

श्लोकार्थ—उस श्रेष्ठ विमान पर बैठे हुये समस्त सेनापतियों से घिरे हुये चंवर तथा श्रेष्ठ छत्र से सुशोभित थे । उदयाचल पर स्थित बाल चन्द्रमा के समान सुशोभित हो रहे थे ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तस्यासन्सर्वतो यानैर्यूथानां पतयोऽसुराः ।
नमुचिः शम्बरो बाणो विप्रचित्तिरयोमुखः ॥१९॥

पदच्छेद—

तस्य आसन् सर्वतः यानैः यूथानाम् पतयः असुराः ।
नमुचिः शम्बरः बाणः विप्रचित्तिः अयोमुखः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उनके	असुराः ।	११.	असुरगण
आसन्	१२.	थे	नमुचिः	६.	नमुचि
सर्वतः	२.	चारों ओर	शम्बरः	७.	शम्बर
यानैः	३.	अपने-अपने विमानों पर	बाणः	८.	बाण
यूथानाम्	४.	सेना की टुकड़ियों के	विप्रचित्तिः	९.	विप्रचित्ति
पतयः	५.	सेनापति	अयोमुखः ॥	१०.	अयोमुखआदि

श्लोकार्थ—उनके चारों ओर अपने-अपने विमानों पर सेना की टुकड़ियों के सेनापति नमुचि, शम्बर, बाण, विप्रचित्ति, अयोमुख आदि असुरगण थे ॥

विंशः श्लोकः

द्विमूर्धा कालनाभोऽथ प्रहेतिर्हेतिरिल्वलः ।
शकुनिर्भूतसंतापो वज्रदंष्ट्रो विरोचनः ॥२०॥

पदच्छेद—

द्विमूर्धा कालनाभः अथ प्रहेतिः हेतिः इल्वलः ।
शकुनिः भूतसंतापः वज्रदंष्ट्रः विरोचनः ॥

शब्दार्थ—

द्विमूर्धा	१.	द्विमूर्धा	शकुनिः	६.	शकुनि
कालनाभः	२.	कालनाभ	भूत	७.	भूत
अथ	१०.	तथा	सन्तापः	८.	सन्ताप
प्रहेतिः	३.	प्रहेति	वज्रदंष्ट्रः	९.	वज्रदंष्ट्र
हेति	४.	हेति	विरोचनः ॥	११.	विरोचन आदि थे
इल्वलः ।	५.	इल्वल			

श्लोकार्थ—द्विमूर्धा, कालनाभ, प्रहेति, हेति, इल्वल, शकुनि, भूतसन्ताप, वज्रदंष्ट्र तथा विरोचन आदि थे ॥

एकविंशः श्लोकः

हयग्रीवः शङ्कुशिराः कपिलो मेघदुन्दुभिः ।
तारकश्चक्रदृक् शुम्भो निशुम्भो जम्भ उत्कलः ॥२१॥

पदच्छेद—

हयग्रीवः शङ्कुशिराः कपिलः मेघ दुन्दुभिः ।
तारकः चक्र दृक् शुम्भः निशुम्भः जम्भः उत्कलः ॥

शब्दार्थ—

हयग्रीवः	१. हयग्रीव	चक्रदृक्	६. चक्राक्ष
शङ्कुशिराः	२. शङ्कुशिरा	शुम्भः	७. शुम्भः
कपिलः	३. कपिल	निशुम्भः	८. निशुम्भ
मेघदुन्दुभिः ।	४. मेघदुन्दुभि	जम्भः	९. जम्भ तथा
तारकः	५. तारक	उत्कलः ॥	१०. उत्कल आदि थे

श्लोकार्थ—हयग्रीव, शङ्कुशिरा, कपिल, मेघदुन्दुभि, तारक, चक्राक्ष, शुम्भ, निशुम्भ, जम्भ तथा उत्कल आदि थे ॥

द्वाविंशः श्लोकः

अरिष्टोऽरिष्टनेमिश्च मयश्च त्रिपुराधिपः ।
अन्ये पौलोमकालेया निवातकवचादयः ॥२२॥

पदच्छेद—

अरिष्टः अरिष्टनेमिः च मयः च त्रिपुर अधिपः ।
अन्ये पौलोम कालेयाः निवातकवच आदयः ॥

शब्दार्थ—

अरिष्टः	२. अरिष्ट	अन्ये	१. अन्य
अरिष्टनेमिः	३. अरिष्टनेमि	पौलोम	६. पौलोम
च	८. और	कालेयाः	७. कालेय
मयः च	५. मय	निवातकवच	९. निवात कवच
त्रिपुरअधिपः ।	४. त्रिपुराधिपति	आदयः ॥	१०. आदि थे ॥

श्लोकार्थ—अन्य अरिष्ट, अरिष्टनेमि, त्रिपुराधिपति, मय, पौलोम, कालेय और निवातकवच आदि थे ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

अलब्धभागाः सोमस्य केवलं क्लेशभागिनः ।
सर्वं एते रणमुखे बहुशो निर्जितामराः ॥२३॥

पदच्छेद—

अलब्धभागः सोमस्य, केवलम् क्लेशभागिनः ।
सर्वे एते रणमुखे बहुशः निर्जित अमराः ॥

शब्दार्थ—

अलब्ध	३.	नहीं प्राप्त हुआ	सर्वे	८.	सबके सबने
भागाः	२.	भाग इन्हें	एते	७.	इन
सोमस्य	१.	अमृत का	रणमुखे	९.	युद्ध के बीच
केवलम्	४.	केवल	बहुशः	१०.	अनेक बार
क्लेश	५.	समुद्र मन्थन का क्लेश ही	निर्जित	१२.	जीता था
भागिनः ।	६.	प्राप्त हुआ	अमराः ॥	११.	देवताओं को

श्लोकार्थ—अमृत का भाग इन्हें नहीं प्राप्त हुआ, केवल समुद्र मन्थन का क्लेश ही प्राप्त हुआ । इन सब के सबने युद्ध के बीच अनेक बार देवताओं को जीता था ।

चतुर्विंशः श्लोकः

सिंहनादान्विमुञ्चन्तः शङ्खान्दध्मुर्महारवान् ।
दृष्ट्वा सपत्नानुत्सिक्तान्बलभित् कुपितो भृशम् ॥२४॥

पदच्छेद—

सिंहनादान् विमुञ्चन्तः शङ्खान् दध्मुः महारवान् ।
दृष्ट्वा सपत्नान् उत्सिक्तान् बलभित् कुपितः भृशम् ॥

शब्दार्थ—

सिंहनादान्	३.	सिंहनाद	दृष्ट्वा	९.	देखकर
विमुञ्चन्तः	४.	करते हुये तथा	सपत्नान्	२.	अपने शत्रुओं को
शङ्खान्	६.	शङ्खों को	उत्सिक्तान्	८.	मदोन्मत्त
दध्मुः	७.	बजाते हुये	बलभित्	१.	इन्द्र
महारवान् ।	५.	घोर स्वर वाले	कुपितः	११.	क्रोधित हुआ
			भृशम् ॥	१०.	अत्यधिक

श्लोकार्थ—इन्द्र अपने शत्रुओं को सिंहनाद करते हुये तथा घोरस्वर वाले शङ्खों को बजाते हुये मदोन्मत्त देखकर अत्यन्त क्रोधित हुआ ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

ऐरावतं दिक्करिणमारूढः शुशुभे स्वराट् ।
यथा स्रवत्प्रस्रवणमुदयाद्रिमहर्पतिः ॥२५॥

पदच्छेद— ऐरावतम् दिक्करिणम् आरूढः शुशुभे स्वराट् ।
यथा स्रवत् प्रस्रवणम् उदय अद्रिम् अहर्पतिः ॥

शब्दार्थ—

ऐरावतम्	२.	ऐरावत नामक	यथा	६.	जैसे
दिक्करिणम्	३.	दिग्गज पर	स्रवत्	१०.	बह रहे हों
आरूढः	४.	सवार होकर	प्रस्रवणम्	९.	अनेक झरने
शुशुभे	५.	ऐसे सुशोभित हुये	उदय अद्रिम्	७.	उदयगिरि पर आरूढ
स्वराट्	१.	देवराज इन्द्र	अहर्पतिः ॥	८.	भगवान् सूर्य से

श्लोकार्थ— देवराज इन्द्र ऐरावत नामक दिग्गज पर सवार होकर ऐसे सुशोभित हुये। जैसे उदय गिरि पर आरूढ भगवान् सूर्य से अनेक झरने बह रहे हों ॥

षड्विंशः श्लोक

तस्यासन्सर्वतो देवा नानावाहध्वजायुधाः ।
लोकपालाः सह गणैर्वाय्वग्निवरुणादयः ॥२६॥

पदच्छेद— तस्य आसन् सर्वतः देवाः नाना ...
लोकपाला ...

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उन इन्द्र के
आसन्	१५.	थे
सर्वतः	२.	सब ओर
देवाः	७.	देवगण एवम्
नाना	३.	अनेक प्रकार ...
वाह	४.	अपने-अपने वा...
ध्वज	५.	ध्वज और
आयुधाः ।	६.	आयुधों से युक्त

श्लोकार्थ— उन इन्द्र के सब ओर अनेक ...
होकर देवगण एवम् अपने ...
हो लिये थे ॥

सप्तविंशः श्लोकः

तेऽन्योन्यमभिसंसृत्य क्षिपन्तो मर्मभिर्मिथः ।
आह्वयन्तो विशन्तोऽग्रे युयुधुर्द्वन्द्वयोधिनः ॥२७॥

पदच्छेद— ते अन्योन्यम् अभिसंसृत्य क्षिपन्तः मर्मभिः मिथः ।
आह्वयन्तः विशन्तः अग्रे युयुधुः द्वन्द्व योधिनः ॥

शब्दार्थ—

ते	१.	वे देव तथा असुर	आह्वयन्तः	७.	ललकारते हुये तथा
अन्योन्यम्	२.	परस्पर	विशन्तः	९.	बढ़ते हुये
अभिसंसृत्य	३.	आमने-सामने होकर	अग्रे	८.	आगे की ओर
क्षिपन्तः	६.	धिक्कारते हुये	युयुधुः	१२.	लड़ने लगे
मर्मभिः	४.	मर्मयुक्त वचनों से	द्वन्द्व	१०.	दो-दो
मिथः ।	५.	प्रतिद्वन्द्वी को	योधिनः ॥	११.	वीरों की जोड़ी बनाकर

श्लोकार्थ—वे देव तथा असुर परस्पर आमने-सामने होकर मर्म-युक्त वचनों से प्रतिद्वन्द्वी को धिक्कारते हुये, ललकारते हुये तथा आगे की ओर बढ़ते हुये दो-दो वीरों की जोड़ी बनाकर लड़ने लगे।

अष्टाविंशः श्लोकः

युयोध बलिरिन्द्रेण तारकेण गुहोऽस्यत ।
वरुणो हेतिनायुध्यन्मित्रो राजन्प्रहेतिना ॥२८॥

पदच्छेद— युयोध बलिः इन्द्रेण तारकेण गुहःऽस्यत ।
वरुणः हेतिना अयुध्यत् मित्रः राजन् प्रहेतिना ॥

[illegible]ार्थ—

[illegible]	४.	युद्ध करने लगे	वरुणः	८.	वरुण
[illegible]	२.	बलि	हेतिना	९.	हेति से और
[illegible]	३.	इन्द्र से	अयुध्यत्	१२.	युद्ध करने लगे
[illegible]	[illegible]	तारकासुर से	मित्रः	१०.	मित्र
[illegible]	[illegible]	स्वामिकार्तिकेय	राजन्	१.	हे परीक्षित् !
[illegible]	[illegible]	[illegible]ड़ गये	प्रहेतिना ॥	११.	प्रहेति से

[illegible] बलि इन्द्र से युद्ध करने लगे। स्वामिकार्तिकेय, तारकासुर से भिड़ गये। [illegible] मित्र, प्रहेति से युद्ध करने लगे ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

यमस्तु कालनाभेन विश्वकर्मा मयेन वै ।
शम्बरो युयुधे त्वष्ट्रा सवित्रा तु विरोचनः ॥२९॥

पदच्छेद— यमः तु कालनाभेन विश्वकर्मा मयेन वै ।
शम्बरः युयुधे त्वष्ट्रा सवित्रा तु विरोचनः ॥

शब्दार्थ—

यमः तु	२. यमराज	शम्बरः	६. शम्बरासुर
कालनाभेन	३. कालनाभ से	युयुधे	११. लड़ने लगे
विश्वकर्मा	४. विश्वकर्मा	त्वष्ट्रा	७. त्वष्टा से
मयेन	५. मय से	सवित्रा	९. सविता
वै ।	१. निश्चय ही	तु	८. तथा
		विरोचनः ॥	१०. विरोचन से

श्लोकार्थ — निश्चय ही यमराज, कालनाभ से विश्वकर्मा, मय से शम्बरासुर, त्वष्टा से तथा विरोचन सविता से लड़ने लगे ॥

त्रिंशः श्लोकः

अपराजितेन नमुचिरश्विनौ वृषपर्वणा ।
सूर्यो बलिसुतैर्देवो बाणज्येष्ठैः शतेन च ॥३०॥

पदच्छेद— अपराजितेन नमुचिरश्विनौ वृष पर्वणा ।
सूर्यो बलि सुतैः देवः बाण ज्येष्ठैः शतेन च ॥

शब्दार्थ

अपराजितेन	२. अपराजित से	बलि	७. बलि के
नमुचिः	१. नमुचि	सुतैः	१०. पुत्रों से युद्ध करने लगे
अश्विनौ	३. अश्विनीकुमार	देवः	६. देव
वृषपर्वणा ।	४. वृषपर्वा से	बाणज्येष्ठैः	८. बाण आदि
सूर्यः	५. सूर्य	शतेन च ॥	९. सौ

श्लोकार्थ—नमुचि, अपराजित से, अश्विनीकुमार, वृषपर्वा से, सूर्य देव बलि के बाण आदि सौ पुत्रों से युद्ध करने लगे

एकत्रिंशः श्लोकः

राहुणा च तथा सोमः पुलोम्ना युयुधेऽनिलः ।
निशुम्भशुम्भयोर्देवी भद्रकाली तरस्विनी ॥३१॥

पदच्छेद— राहुणा च तथा सोमः पुलोम्ना युयुधे अनिलः ।
निशुम्भ शुम्भयोः देवी भद्रकाली तरस्विनी ॥

शब्दार्थ—

राहुणा	१.	राहु के साथ	अनिलः ।	५.	वायु का
च	३.	और	निशुम्भ	१०.	निशुम्भ
तथा	९.	तथा	शुम्भयोः	११.	शुम्भ पर
सोमः	२	चन्द्रमा	देवी	८.	देवी
पुलोम्ना	४.	पुलोमा के साथ	भद्रकाली	७.	भद्रकाली
युयुधे	६.	युद्ध हुआ	तरस्विनी	१२.	झपट पड़ी

श्लोकार्थ—राहु के साथ चन्द्रमा और पुलोमा के साथ वायु का युद्ध हुआ । भद्रकाली देवी निशुम्भ तथा शुम्भ पर झपट पड़ी ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

वृषाकपिस्तु जम्भेन महिषेण विभावसुः ।
इल्वलैः सह वातापिर्ब्रह्मपुत्रैररिन्दम ॥३२॥

पदच्छेद— वृषाकपिस्तु जम्भेन महिषेण विभावसुः ।
इल्वलैः सह वातापिः ब्रह्म पुत्रैः अरिन्दम ॥

शब्दार्थ—

वृषाकपिः तु	२.	महादेव जी का	इल्वलः	९.	इल्वल का युद्ध होने लगा
जम्भेन	३.	जम्भासुर से	सह	७.	साथ
महिषेण	४.	महिषासुर से	वातापिः	८.	वातापि और
विभावसुः ।	५.	अग्निदेव का और	ब्रह्मपुत्रैः	६.	ब्रह्मा के पुत्र (मरीचि आदि के)
			अरिन्दम ॥	१०.	हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! महादेव जी का जम्भासुर से, महिषासुर से अग्निदेव का और ब्रह्मा के पुत्र मरीचि आदि के साथ वातापि और इल्वल का युद्ध होने लगा ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

कामदेवेन दुर्मर्ष उत्कलो मातृभिः सह ।
बृहस्पतिश्चोशनसा नरकेण शनैश्चरः ॥३३॥

पदच्छेद— कामदेवेन दुर्मर्षः उत्कलः मातृभिः सह ।
बृहस्पतिः च उशनसा नरकेण शनैश्चरः ॥

शब्दार्थ—

कामदेवेन	२.	कामदेव से	बृहस्पतिः	७.	बृहस्पति के साथ
दुर्मर्षः	१.	दुर्धर्ष की	च	८.	और
उत्कलः	३.	उत्कल की	उशनसा	६.	शुक्राचार्य की
मातृभिः	४.	मातृ गणों के	नरकेण	९.	नरकासुर की
सह ।	५.	साथ	शनैश्चरः ॥	१०.	शनैश्चर से लड़ाई होने लगी

श्लोकार्थ—दुर्धर्ष की कामदेव से, उत्कल की मातृगणों के साथ, शुक्राचार्य की बृहस्पति के साथ और नरकासुर की शनैश्चर से लड़ाई होने लगी ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

मरुतो निवातकवचैः कालेयैर्वसवोऽमराः ।
विश्वेदेवास्तु पौलोमै रुद्राः क्रोधवशैः सह ॥३४॥

पदच्छेद— मरुतः निवातकवचैः कालेयैः वसवः अमराः ।
विश्वेदेवाः तु पौलोमैः रुद्राः क्रोधवशैः सह ॥

शब्दार्थ—

मरुतः	२.	मरुद्गण	विश्वेदेवाः तु	७.	विश्वेदेवगण तथा
निवातकवचैः	१.	निवात कवचों के साथ	पौलोमैः	६.	पौलोमों के साथ
कालेयैः	३.	कालेयों के साथ	रुद्राः	१०.	रुद्रगणों का संग्राम होने लगा
वसवः	४.	वसुगण नामक	क्रोधवशैः	८.	क्रोधवशों के
अमराः ।	५.	देवताओं का	सह ॥	९.	साथ

श्लोकार्थ—निवात कवचों के साथ मरुद्गण, कालेयों के साथ वसुगण नामक देवताओं का, पौलोमों के साथ विश्वेदेवगण तथा क्रोधवशों के साथ रुद्रगणों का संग्राम होने लगा ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

त एवमाजावसुराः सुरेन्द्रा द्वन्द्वेन संहत्य च युध्यमानाः ।
अन्योन्यमासाद्य निजघ्नुरोजसा जिगीषवस्तीक्ष्णशरासितोमरैः ॥३५॥

पदच्छेद— त एवम् आजौ असुराः सुरेन्द्राः द्वन्द्वेन संहत्य च युध्यमानाः ।
अन्योन्यम् आसाद्य निजघ्नुः ओजसा जिगीषवः तीक्ष्णशर असि तोमरैः ॥

शब्दार्थ—

त एवम्	१.	इस प्रकार	अन्योन्यम्	९.	एक दूसरे से
आजौ	४.	रणभूमि में	आसाद्य	१०.	भिड़कर
असुराः	२.	असुर और	निजघ्नुः	१६.	प्रहार करने लगे
सुरेन्द्राः	३.	देवता	ओजसा	१२.	उत्साह पूर्वक
द्वन्द्वेन	५.	द्वन्द्व युद्ध	जिगीषवः	११.	विजय की इच्छा से
संहत्य	७.	सामूहिक आक्रमण द्वारा	तीक्ष्ण	१३.	तीखे
च	६.	और	शर-असि	१४.	बाण-तलवार और
युध्यमानाः।	८.	युद्ध करते हुये	तोमरैः ॥	१५.	भालों से

श्लोकार्थ—इस प्रकार असुर और देवता रणभूमि में द्वन्द्व युद्ध और सामूहिक आक्रमण द्वारा युद्ध करते हुये एक दूसरे से भिड़कर विजय की इच्छा से उत्साह पूर्वक तीखे, बाण, तलवार और भालों से प्रहार करने लगे ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

भुशुण्डिभिश्चक्रगदर्ष्टिपट्टिशैः शक्त्युल्मुकैः प्रासपरश्वधैरपि ।
निस्त्रिंशभल्लैः परिघैः समुद्गरैः सभिन्दिपालैश्च शिरांसि चिच्छिदुः ॥३६॥

पदच्छेद— भुशिण्डिभिः चक्रगद ऋष्टि पट्टिशैः शक्ति उल्मुकैः प्रास परश्वधैः अपि ।
निस्त्रिंभल्लैः परिघैः समुद्गरैः सभिन्दिपालैः च शिरांसि चिच्छिदुः ॥

शब्दार्थ—

भुशिण्डिभिः	१.	भुशुण्डि	निस्त्रिंश	९.	तलवार
चक्र, गद	२.	चक्र-गदा	भल्लैः	१०.	भाले
ऋष्टि	३.	ऋष्टि	परिघैः	११.	परिघ
पट्टिशैः	४.	पट्टिश	समुद्गरैः	१२.	मुद्गर
शक्ति	५.	शक्ति	सभिन्दिपालैः	१४.	भिन्दिपाल से
उल्मुकैः	६.	उल्मुक	च	१३	और
प्रास	७.	प्रास	शिरांसि	१६.	एक दूसरे का सिर
परश्वधैः	८.	फरसा	चिच्छिदुः ॥	१७	काटने लगे
अपि ।	१५.	भी वे			

श्लोकार्थ—भुशुण्डि, चक्र, गदा, ऋष्टि, पट्टिश, शक्ति, उल्मुक, प्रास, फरसा, तलवार, भाले, परिघ, मुद्गर और भिन्दिपाल से भी दू वेएकमरे का सिर काटने लगे ॥

सप्तत्रिंश श्लोकः

गजास्तुरङ्गाः सरथाः पदातयः सारोहवाहा विविधा विखण्डिताः ।
निकृत्तबाहूरुशिरोधराङ्घ्रयश्छिन्नध्वजेष्वासतनुत्रभूषणाः ॥३७॥

पदच्छेद — गजाः तुरङ्गाः सरथाः पदातयः सारोह वाहाः विविधाः विखण्डिताः ।
निकृत्त बाहु ऊरु शिरोधरा अङ्घ्रयः छिन्नध्वज इष्वास तनुत्र भूषणाः ॥

शब्दार्थ—

गजाः	२	हाथी	बाहु-ऊरु	८.	किसी की भुजा, जङ्घा
तुरङ्गाः	३.	घोड़े	शिरोधरा	९.	किसी की गरदन (और)
सरथाः	४.	रथों और	अङ्घ्रयः	१०.	किसी के पैर
पदातयः	५.	पैदलों सहित	छिन्न	१६.	छिन्न, भिन्न हो गये
सारोहवाहाः	१.	अपने सवारों के साथ	ध्वज	१२.	किसी की ध्वज ।
विविधाः	६.	अनेक प्रकार के वाहन	इष्वास	१३.	धनुष
विखण्डिताः ।	७.	छिन्न, भिन्न हो गये	तनुत्र	१४	कवच और
निकृत्त	११	कट गये	भूषणाः ॥	१५.	आभूषण

श्लोकार्थ—अपने सवारों के साथ हाथी, घोड़े, रथों और पैदलों सहित अनेक प्रकार के वाहन छिन्न-भिन्न हो गये । किसी की भुजा, जंघा, गरदन और किसी के पैर कट गये । किसी की ध्वजा, धनुष, कवच और आभूषण छिन्न-भिन्न हो गये ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

तेषां पदाघातरथाङ्गचूर्णितादायोधनादुल्बण उत्थितस्तदा ।
रेणुर्दिशः खं द्युमणिं च छादयन् न्यवर्ततासृक्स्रुतिभिः परिप्लुतात् ॥३८॥

पदच्छेद — तेषाम् पद आघात रथाङ्ग चूर्णितात् आयोधनात् उल्बणः उत्थितः तदा ।
रेणुः दिशः खम् द्युमणिम् च छादयन् न्यवर्तत असृक् स्रुतिभिः परिप्लुतात् ॥

शब्दार्थ—

तेषाम्	१.	उनके	रेणुः	९.	धूल
पद	२.	चरणों की	दिशः खम्	११.	दिशा-आकाश
आघात	३.	धमक और	द्युमणिम्	१३.	सूर्य को भी
रथाङ्ग	४.	रथ के पहियों की	च	१२.	और
चूर्णितात्	५.	रगड़ से पृथ्वी खुद गई	छादयन्	१४.	ढक दिया, किन्तु
आयोधनात्	६	रणभूमि से	न्यवर्तत	१८.	वही धूल जम गई
उल्बण	८.	ऐसी प्रचण्ड	असृक्	१५.	रक्त की
उत्थितः	१०.	उठी कि उसने	स्रुतिभिः	१६.	धारा से
तदा ।	७.	उस समय	परिप्लुतात् ॥	१७.	भूमि, आप्लावित होने पर

श्लोकार्थ—उनके चरणों की धमक और रथ के पहियों की रगड़ से पृथ्वी खुद गई । उस समय रणभूमि में ऐसी प्रचण्ड धूल उठी कि उसने दिशा, आकाश, सूर्य को भी ढक दिया । किन्तु रक्त की धारा से भूमि आप्लावित होने पर वही धूल जम गई ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

शिरोभिरुद्धूतकिरीटकुण्डलैः संरम्भदृग्भिः परिदष्टदच्छदैः ।
महाभुजैः साभरणैः सहायुधैः सा प्रास्तृता भूः करभोरुभिर्बभौ ॥ ३९॥

पदच्छेद— शिरोभिः उद्धूत किरीट कुण्डलैः संरम्भदृग्भिः परिदष्ट दच्छदैः ।
महाभुजैः साभरणैः सह आयुधैः सा प्रास्तृता भूः करभ ऊरुभिः बभौ ॥

शब्दार्थ—

शिरोभिः	२.	सिरों से	महाभुजैः	१२.	भुजाओं से और
उद्धूत	१.	कटे हुये	साभरणैः	११.	आभूषणों से युक्त
किरीट	३.	मुकुट (और)	सह	१०.	सहित तथा
कुण्डलैः	४.	कुण्डलों से	आयुधैः	९.	अस्त्र-शस्त्रों
संरम्भ	५.	क्रोधित	सा प्रास्तृता	१३.	वह विस्तृत
दृग्भिः	६.	दृष्टि से	भूः करभ	१४.	रणभूमि मोटी-मोटी
परिदष्ट	७.	चबाये हुये	ऊरुभिः	१५.	जंघाओं से
दच्छदैः ।	८.	होंठों से	बभौ ॥	१६.	अत्यधिक सुशोभित हो रही थी

श्लोकार्थ—कटे हुये सिरों से, मुकुट और कुण्डलों से क्रोधित दृष्टि से, चबाये हुये होंठों से, अस्त्र-शस्त्र सहित, आभूषणों से युक्त, भुजाओं से और वह विस्तृत रणभूमि मोटी-मोटी जंघाओं से अत्यधिक सुशोभित हो रही थी ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

कबन्धास्तत्र चोत्पेतुः पतितस्वशिरोऽक्षिभिः ।
उद्यतायुधदोर्दण्डैराधावन्तो भटान् मृधे ॥४०॥

पदच्छेद— कबन्धाः तत्र च उत्पेतुः पतित स्वशिरः अक्षिभिः ।
उद्यत आयुध दोर्दण्डैः आधावन्तः भटान् मृधे ॥

शब्दार्थ—

कबन्धाः	३.	बहुत से धड़ और शरीर	उद्यत	१०.	उठाकर
तत्र	१.	तब वहाँ	आयुध	९.	हथियार
च उत्पेतुः	४.	उछलने लगे	दोर्दण्डैः	८.	हाथों में
पतित	५.	कट कर गिरे हुये	आधावन्तः	१२.	दौड़ने लगे
स्वशिरः	६.	अपने सिरों के	भटान्	११.	वीरों की ओर
अक्षिभिः ।	७.	नेत्रों से देखकर	मृधे ॥	२.	रणभूमि में

श्लोकार्थ—तब वहाँ रणभूमि में बहुत से धड़ और शरीर उछलने लगे । कटकर गिरे हुये अपने सिरों के नेत्रों से देखकर हाथों में हथियार उठाकर वीरों की ओर दौड़ने लगे ।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

बलिर्महेन्द्रं दशभिस्त्रिभिरैरावतं शरैः ।
चतुर्भिश्चतुरो बाहानेकेनारोहमार्च्छयत् ॥४१॥

पदच्छेद— बलिः महेन्द्रम् दशभिः त्रिभिः ऐरावतम् शरैः ।
चतुर्भिः चतुरः बाहान् एकेन आरोहम् आर्च्छयत् ॥

शब्दार्थ—

बलिः	१.	राजा बलि ने	चतुर्भिः	७.	चार बाण
महेन्द्रम्	३.	इन्द्र पर	चतुरः	९.	चार चरण रक्षकों पर
दशभिः	२.	दश बाण	बाहान्	८.	ऐरावत के
त्रिभिः	४.	तीन	एकेन	१०.	और एक
ऐरावतम्	६.	ऐरावत पर	आरोहम्	११.	मुख्य महावत पर
शरैः ।	५.	बाण	आर्च्छयत् ॥	१२.	छोड़ा

श्लोकार्थ—राजा बलि ने दश बाण इन्द्रपर, तीन बाण ऐरावत पर, चार बाण ऐरावत के चार चरण रक्षकों पर और एक बाण मुख्य महावत पर छोड़ा ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

स तानापततः शक्रस्तावद्भिः शीघ्रविक्रमः ।
चिच्छेद निशितैर्भल्लैरसम्प्राप्तान्हसन्निव ॥४२॥

पदच्छेद— सः तान् आपततः शक्रः तावद्भिः शीघ्र विक्रमः ।
चिच्छेद निशितैः भल्लैः असम्प्राप्तान् हसन् इव ॥

शब्दार्थ—

सः	२.	उस बलि के	चिच्छेद	१२.	उन्हें काट डाला
तान्	३.	उन बाणों को	निशितैः	१०.	तीक्ष्ण
आपततः	४.	गिरते हुये देखकर	भल्लैः	११.	भल्ल नामक बाणों से
शक्रः	१.	इन्द्र ने	असम्प्राप्तान्	७.	उनके पहुँचने के पहले ही
तावद्भिः	५.	उतनी ही	हसन्	८.	हंसते
शीघ्रविक्रमः ।	६.	शीघ्रता और पराक्रम से	इव ॥	९.	हुये से

श्लोकार्थ—इन्द्र ने उस बलि के उन बाणों को गिरते हुये देखकर उतनी ही शीघ्रता से और पराक्रम से उनके पहुँचने के पहले ही हंसते हुये तीक्ष्ण भल्ल नामक बाणों से उन्हें काट डाला ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

तस्य कर्मोत्तमं वीक्ष्य दुर्मर्षः शक्तिमाददे ।
तां ज्वलन्तीं महोल्काभां हस्तस्थामच्छिनद्धरिः ॥४३॥

पदच्छेद— तस्य कर्म उत्तमम् वीक्ष्य दुर्मर्षः शक्तिम् आददे ।
ताम् ज्वलन्तीम् महोल्काभाम् हस्तस्थाम् अच्छिनत् हरिः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१. इन्द्र के	ताम्	१०. उस शक्ति को
कर्म	३. कर्म को	ज्वलन्तीम्	९. जलती हुई
उत्तमम्	२. इस उत्तम	महोल्काभाम्	८. बड़े भारी लूके के समान
वीक्ष्य	४. देखकर	हस्तस्थाम्	११. हाथ में लेते ही
दुर्मर्षः	५. क्रोधित होकर	अच्छिनत्	१३. काट दिया
शक्तिम्	६. बलि ने शक्ति	हरिः ॥	१२. इन्द्र ने
आददे ।	७. ग्रहण की		

श्लोकार्थ—इन्द्र के इस उत्तम कर्म को देखकर क्रोधित होकर बलि ने शक्ति ग्रहण की । बड़े भारी लूके के समान जलती हुई उस शक्ति को हाथ में लेते ही इन्द्र ने काट दिया ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

ततः शूलं ततः प्रासं ततस्तोमरमृष्टयः ।
यद् यच्छस्त्रं समादद्यात्सर्वं तदच्छिनद् विभुः ॥४४॥

पदच्छेद— ततः शूलम् ततः प्रासम् ततः तोमरम् ऋष्टयः ।
यत्-यत् शस्त्रम् समादद्यात् सर्वम् तत् अच्छिनत् विभुः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. इसके बाद	यत्-यत्	८. जो-जो
शूलम्	२. शूल	शस्त्रम्	९. शस्त्र
ततः	३. फिर	समादद्यात्	१०. वे हाथ में उठाते
प्रासम्	४. प्रास	सर्वम्	१३. सब को
ततः	५. तथा	तत्	१२. उन
तोमरम्	६. तोमर और	अच्छिनत्	१४. काट डालते
ऋष्टयः ।	७. शक्ति	विभुः ॥	११. इन्द्र

श्लोकार्थ—इसके बाद शूल फिर प्रास तथा तोमर और शक्ति जो-जो शस्त्र वे हाथ में उठाते, इन्द्र उन सबको काट डालते ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

ससर्जाथासुरीं मायामन्तर्धानगतोऽसुरः ।
ततः प्रादुरभूच्छैलः सुरानीकोपरि प्रभो ॥४५॥

पदच्छेद— ससर्ज अथ आसुरीम् मायाम् अन्तर्धान गतः असुरः ।
ततः प्रादुः अभूत् शैलः सुरअनीक उपरि प्रभो ॥

शब्दार्थ—

ससर्ज	४.	सृष्टि करके	ततः	८.	तब
अथ	१.	इसके बाद	प्रादुः	१३.	प्रकट
आसुरीम्	२.	आसुरी	अभूत्	१४.	हुआ
मायाम्	३.	माया की	शैलः	१२.	एक पर्वत
अन्तर्धान	६.	अन्तर्धान	सुरअनीक	१०.	देवताओं की सेना के
गतः	७.	हो गया	उपरि	११.	ऊपर
असुरः ।	५.	बलि	प्रभो ॥	९.	हे परीक्षित्

श्लोकार्थ—इसके बाद आसुरी माया की सृष्टि करके बलि अन्तर्धान हो गया । तब हे परीक्षित् ! देवताओं की सेना के ऊपर एक पर्वत प्रकट हुआ ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

ततो निपेतुस्तरवो दह्यमाना दवाग्निना ।
शिलाः सटङ्कशिखराश्चूर्णयन्त्यो द्विषद्बलम् ॥४६॥

पदच्छेद— ततः निपेतुः तरवः दह्यमानाः दवाग्निना ।
शिलाः सटङ्क शिखराः चूर्णयन्त्यः द्विषद्बलम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	उस पर्वत से	शिलाः	१०.	नुकीली शिलायें
निपेतुः	११.	गिरने लगे	सटङ्क	५.	टांकी जैसी तीखी धारवाले
तरवः	४	वृक्ष और	शिखराः	६.	शिखरोंके साथ
दह्यमाना	३.	जलते हुए	चूर्णयन्त्याः	९.	चकनाचूर करती हुई
दवाग्निना ।	२.	दावाग्नि से	द्विषद्	७.	देवताओं की
			बलम् ॥	८.	सेना को

श्लोकार्थ—उस पर्वत से जलते हुये वृक्ष और टांकी जैसी तीखी धारवाले शिखरों के साथ देवताओं की सेना को चकनाचूर करती हुई नुकीली शिलायें गिरने लगीं ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

महोरगाः समुत्पेतुर्दन्दशूकाः सवृश्चिकाः ।
सिंहव्याघ्रवराहाश्च मर्दयन्तो महागजान् ॥४७॥

पदच्छेद—

महोरगाः समुत्पेतुः दन्दशूकाः सवृश्चिकाः ।
सिंह व्याघ्र वराहाः च मर्दयन्तः महागजान् ॥

शब्दार्थ—

महोरगाः	१. बड़े-बड़े सांप	व्याघ्र	६. बाघ
समुत्पेतुः	४. उड़कर काटने लगे	वराहाः	८. सूअर
दन्दशूकाः	२. डांस	च	७. और
सवृश्चिकाः ।	३. बिच्छू	मर्दयन्तः	१०. फाड़ने लगे
सिंह	५. सिंह	महागजान् ॥	९. देवसेना के हाथियों को

श्लोकार्थ—बड़े-बड़े सांप, डांस, बिच्छू उड़कर काटने लगे । सिंह, व्याघ्र और सूअर देव सेना के हाथियों को फाड़ने लगे ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

यातुधान्यश्च शतशः शूलहस्ता विवाससः ।
छिन्धि भिन्धीति वादिन्यस्तथा रक्षोगणाः प्रभो ॥४८॥

पदच्छेद—

यातुधान्यः च शतशः शूलहस्ताः विवाससः ।
छिन्धि भिन्धि इति वादिन्यः तथा रक्षोगणाः प्रभो ॥

शब्दार्थ—

यातुधान्यः	१०. राक्षसियां	भिन्धि	५. मारो
च	११ और	इति	६. इस प्रकार
शतशः	८. सैंकड़ों	वादिन्यः	७. चिल्लाती हुई
शूलहस्ताः	३. हाथों में शूल लिये	तथा	१. तथा
विवाससः ।	९ नंग-धड़ंग	रक्षोगणाः	१२. राक्षस वहां प्रकट हो गये
छिन्धि	४. काटो	प्रभो ॥	२. हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—तथा हे परीक्षित् ! हाथों में शूल लिये काटो-मारो इस प्रकार चिल्लाती हुई सैंकड़ों नंग-धड़ंग राक्षसियां और राक्षस वहां प्रकट हो गये ॥

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

ततो महाघना व्योम्नि गम्भीरपरुषस्वनाः ।
अङ्गारान्मुमुचुर्वातैराहताः स्तनयित्नवः ॥४९॥

पदच्छेद—

ततः महाघनाः व्योम्नि गम्भीर परुषस्वनाः ।
अङ्गारान् मुमुचुः वातैः आहताः स्तनयित्नवः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. तत्पश्चात्	अङ्गारान्	९. अङ्गारों की
महाघनाः	५. बादल मंडराने लगे	मुमुचुः	१०. वर्षा करने लगे
व्योम्नि	२. आकाश में	वातैः	६. वे आँधी के
गम्भीर	३. गम्भीर और	आहताः	७. झकझोरने से
परुषस्वनाः ।	४. कठोर गर्जना करते हुये	स्तनयित्नवः ॥	८. तीव्र ध्वनि करते हुये

श्लोकार्थ—तत्पश्चात् आकाश में गम्भीर और कठोर गर्जना करते हुये बादल मंडराने लगे । वे आँधी के झकझोरने से तीव्र ध्वनि करते हुये अङ्गारों की वर्षा करने लगे ॥

पञ्चाशः श्लोकः

सृष्टो दैत्येन सुमहान्वह्निः श्वसनसारथिः ।
सांवर्तक इवात्युग्रो विबुधध्वजिनीमधाक् ॥५०॥

पदच्छेद—

सृष्टः दैत्येन सुमहान् वह्निः श्वसन सारथिः ।
सांवर्तकः इव अति उग्रः विबुधध्वजिनीम् अधाक् ॥

शब्दार्थ—

सृष्टः	२. उत्पन्न की गई	सांवर्तकः	३. प्रलय की अग्नि के
दैत्येन	१. दैत्यराज बलि के द्वारा	इव	४. समान
सुमहान्	५. भयानक	अतिउग्र	९. अत्यन्त तीव्र होती हुई
वह्निः	६ आग	विबुध	१०. देवताओं की
श्वसन	७. वायु की	ध्वजिनीम्	११. सेना को
सारथिः ।	८. सहायता से	अधाक् ॥	१२. जलाने लगी

श्लोकार्थ—दैत्यराज बलि के द्वारा उत्पन्न की गई प्रलय की अग्नि के समान भयानक आग वायु की सहायता से अत्यन्त तीव्र होती हुई देवताओं की सेना को जलाने लगी ॥

एकपञ्चाशः श्लोकः

ततः समुद्र उद्वेलः सर्वतः प्रत्यदृश्यत ।
प्रचण्डवातैरुद्धततरङ्गावर्तभीषणः ॥५१॥

पदच्छेद—

ततः समुद्रः उद्वेलः सर्वतः प्रत्यदृश्यत ।
प्रचण्डवातैः उद्धूततरङ्ग आवर्त भीषणः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. थोड़ी देर में	प्रचण्ड	२. प्रबल
समुद्र	७. समुद्र	वातैः	३. आँधी के थपेड़ों से
उद्वेलः	९. घेरता हुआ	उद्धूततरङ्ग	४. उठी हुई लहरों तथा
सर्वतः	८. देव सेना को सब ओर से	आवर्त	५. भँवरों से युक्त
प्रत्यदृश्यत ।	१०. दिखाई दिया	भीषणः ॥	६. भयानक

श्लोकार्थ—थोड़ी देर में प्रबल आँधी के थपेड़ों से उठी हुई लहरों तथा भँवरों से युक्त भयानक समुद्र देवसेना को चारों ओर से घेरता हुआ दिखाई दिया ॥

द्विपञ्चाशः श्लोकः

एवं दैत्यैर्महामायैरलक्ष्यगतिभीषणैः ।
सृज्यमानासु मायासु विषेदुः सुरसैनिकाः ॥५२॥

पदच्छेद—

एवम् दैत्यैः महामायैः अलक्ष्य गति भीषणैः ।
सृज्य मानासु मायासु विषेदुः सुर सैनिकाः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	सृज्यमानासु	७. सृष्टि किये जाने पर
दैत्यैः	३. दैत्यों के द्वारा	मायासु	६. प्रबल माया की
महामायैः	२. मायावी	विषेदुः	१०. बहुत दुःखी हो गये
अलक्ष्यगति	५. स्वयं अलक्षित हो जाने से सुर		८. वे देव
भीषणैः ।	४. भीषण और	सैनिकाः ॥	९. सैनिक

श्लोकार्थ—इस प्रकार मायावी दैत्यों के द्वारा भीषण और प्रबल माया की सृष्टि किये जाने पर और स्वयं अलक्षित हो जाने से वे देव सैनिक बहुत दुःखी हो गये ।

त्रिपञ्चाशः श्लोकः

न तत्प्रतिविधिं यत्र विदुरिन्द्रादयो नृप ।
ध्यातः प्रादुरभूत् तत्र भगवान्विश्वभावनः ॥५३॥

पदच्छेद— न तत् प्रति विधिम् यत्र विदुः इन्द्र आदयः नृप ।
ध्यातः प्रादुः अभूत् तत्र भगवान् विश्व भावनः ॥

शब्दार्थ—

न	६.	नहीं	ध्यातः	९.	उनके ध्यान करने पर
तत्	४.	जब उनका	प्रादुः	१४.	प्रकट
प्रतिविधिम्	५.	प्रतीकार करने की कोई विधि	अभूत्	१५.	हो गये
यत्र	८.	तब	तत्र	१३.	वहाँ
विदुः	७.	जान पाई	भगवान्	१२.	भगवान् श्री हरि
इन्द्र	२.	इन्द्र	विश्व	१०.	विश्व के
आदयः	३.	आदि देवताओं ने	भावनः ॥	११.	जीवन दाता
नृप ।	१.	हे परीक्षित् !			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इन्द्र आदि देवता ने जब उनका प्रतीकार करने की कोई विधि नहीं जान पाये तब उनके ध्यान करने पर विश्व के जीवन दाता भगवान् श्री हरि प्रकट हो गये ॥

चतुः पञ्चाशः श्लोकः

ततः सुपर्णांसकृताङ्घ्रिपल्लवः पिशङ्गवासा नवकञ्जलोचनः ।
अदृश्यताष्टायुधबाहुरुल्लसच्छ्रीकौस्तुभानर्घ्यकिरीटकुण्डलः ॥५४॥

पदच्छेद— ततः सुपर्ण अंसकृत अङ्घ्रि पल्लवः पिशङ्गवासाः नवकञ्जलोचनः ।
अदृश्यत अष्टायुधबाहुः उल्लसत् श्री कौस्तुभ अनर्घ्य किरीटकुण्डलः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तत्पश्चात्	अष्टायुध	९.	आठ आयुध
सुपर्ण अंस	२.	गरुड़ के कन्धे पर उनके	बाहुः	८.	आठ भुजाओं में
कृत	४.	विराजमान थे	उल्लसत्	१५.	उनकी छबि का
अङ्घ्रिपल्लवः	३.	चरण कमल	श्री	१४.	शोभा से युक्त
पिशङ्गवासाः	५.	वे पीले वस्त्रों से सज्जित थे	कौस्तुभ	१०.	गले में कौस्तुभमणि
नवकञ्ज	६.	नवीन कमल के समान	अनर्घ्य	११.	मस्तक पर अमूल्य
लोचनः ।	७.	उनके नेत्र थे	किरीट	१२.	मुकुट और
अदृश्यत	१६.	देवों ने दर्शन किया	कुण्डलः ॥	१३.	कानों में कुण्डलों की

श्लोकार्थ—तत्पश्चात् गरुड़ के कन्धे पर उनके चरण कमल विराजमान थे। वे पीले वस्त्रों से सज्जित थे। नवीन कमल के समान उनके नेत्र, आठ भुजाओं में आठ आयुध, गले में कौस्तुभमणि, मस्तक पर अमूल्य मुकुट और कानो में कुण्डलों की शोभा से युक्त उनकी छबि का देवों ने दर्शन किया।

पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

तस्मिन्प्रविष्टेऽसुरकूटकर्मजा माया विनेशुर्महिना महीयसः ।
स्वप्नो यथा हि प्रतिबोध आगते हरिस्मृतिः सर्वविपद्विमोक्षणम् ॥५५॥

पदच्छेद— तस्मिन् प्रविष्टे असुरकूटकर्मजा माया विनेशुः महिना महीयसः ।
स्वप्नः यथा हि प्रतिबोधे आगते हरि स्मृतिः सर्व विपद् विमोक्षणम् ॥

शब्दार्थ—

तस्मिन्	१.	उन परमात्मा के	स्वप्नः	१३.	स्वप्न विलीन हो जाता है
प्रविष्टे	२.	प्रकट हो जाने पर	यथाहि	१०.	जैसे
असुर	५.	असुरों की	प्रतिबोधे	११.	जाग
कूट	६.	कपट भरे	आगते	१२.	जाने पर
कर्मजा	७.	कर्मों से युक्त	हरि	१४.	वस्तुतः परमात्मा की
माया	८.	माया वैसे ही	स्मृतिः	१५.	स्मृति
विनेशुः	९.	विलीन हो गयी	सर्व	१६.	समस्त प्रकार की
महिना	४.	प्रभाव से	विपद्	१७.	विपत्तियों से
महीयसः ।	३.	उनके महान्	विमोक्षणम् ॥	१८.	छुटकारा देने वाली है

श्लोकार्थ—उन परमात्मा के प्रकट हो जाने पर उनके महान् प्रभाव से असुरों के कपट भरे कर्मों से युक्त माया वैसे ही विलीन हो गयी जैसे जाग जाने पर स्वप्न विलीन हो जाता है। वस्तुतः परमात्मा की स्मृति समस्त प्रकार की विपत्तियों से छुटकारा देने वाली है ।

षट्पञ्चाशः श्लोकः

दृष्ट्वा मृधे गरुडवाहमिभारिवाह आविध्य शूलमहिनोदथ कालनेमिः ।
तल्लीलया गरुडमूर्ध्नि पतद् गृहीत्वा तेनाहनन्नृप सवाहमरिं त्र्यधीशः ॥५६॥

पदच्छेद—दृष्ट्वा मृधे गरुड़वाहम् इभअरिवाह आविध्य शूलम् अहिनोत् अथ कालनेमिः ।
तत् लीलया गरुडमूर्ध्नि पतत् गृहीत्वा तेन आहनत् नृप सवाहम् अरिम् त्र्यधीशः ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	६.	देखकर	तत्	१४.	उसे
मृधे	५.	रणभूमि में	लीलया गरुड	१२.	लीला पूर्वक गरुड़ के
गरुड़वाहम्	४.	गरुड़ वाहन भगवान् को	मूर्ध्नि पतत्	१३.	मस्तक पर गिरते हुये
इभअरिवाह	२.	सिंहवाहन	गृहीत्वा तेन	१५.	पकड़कर उसी के द्वारा
आविध्य	७.	बैठे ही बैठे	आहनत्	१८.	मार दिया
शूलम्	९.	त्रिशूल का	नृप	१.	हे परीक्षित् !
अहिनोत्	१०.	प्रहार किया	सवाहम्	१७.	वाहन सहित
अथ	७.	उनके ऊपर	अरिम्	१६.	अपने शत्रु कालनेमि को
कालनेमिः ।	३.	कालनेमि ने	त्र्यधीशः ॥	११.	त्रिलोकी के स्वामी भगवान् ने

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! सिंह वाहन कालनेमि ने गरुड़वाहन भगवान् को रणभूमि में देखकर उनके ऊपर बैठे ही बैठे त्रिशूल का प्रहार किया । त्रिलोकी के स्वामी भगवान् ने लीला पूर्वक गरुड़ के मस्तक पर गिरते हुये उसे पकड़कर उसी के द्वारा अपने शत्रु कालनेमि को वाहन सहित मार डाला ॥

सप्तपञ्चाशः श्लोकः

माली सुमाल्यतिबलौ युधि पेततुर्यच्चक्रेण कृत्तशिरसावथ माल्यवांस्तम् ।
आहत्य तिग्मगदयाहनदण्डजेन्द्रं तावच्छिरोऽच्छिनदरेर्नदतोऽरिणाऽऽद्यः ॥५७

पदच्छेद—

माली सुमाली अतिबलौ युधि पेततुः यत् चक्रेण कृत्तशिरसौ अथ माल्यवान् तम् ।
आहत्य तिग्म गदया अहनत् अण्डजेन्द्रम् तावत् शिरः अच्छिनत् अरे नदतः अरिणा आद्यः ॥

शब्दार्थ—

माली, सुमाली	१.	माली और सुमाली	आहत्य	११.	प्रहार करके
अतिबलौ	२.	बड़े बलवान् थे (भगवान् ने)	तिग्मगदया	६.	प्रचंडगदा से
युधि पेततुः	७.	युद्ध में गिरा दिया	अहनत्	१३.	मारना चाहा
यत्	४.	उनके	अण्डजेन्द्रम्	१२.	गरुड़ को
चक्रेण	३.	अपने चक्र से	तावत्	१४.	तब-तक
कृत्त	६.	काटकर उन्हें	शिरः अच्छिनत्	१६.	सिर काट डाला
शिरसौ	५.	सिर	अरेः	१८.	माल्यवान् का
अथ माल्यवान्	८.	तब माल्यवान् ने	नदतः	१७.	गर्जना करते हुये
तम् ।	१०.	उस गरुड़ पर	अरिणा	१६.	चक्र से
			आद्यः ॥	१५.	(उसके शत्रु) भगवान् ने

श्लोकार्थं—माली और सुमाली बड़े बलवान् थे। भगवान् ने अपने चक्र से उनके शिर काटकर उन्हें युद्ध में गिरा दिया । तब माल्यवान् ने प्रचण्ड गदा से उस गरुड़ पर प्रहार करके गरुड़ को मारना चाहा । तब-तक उसके शत्रु भगवान् ने चक्र से, गर्जना करते हुये माल्यवान् का सिर काट डाला ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमे स्कन्धे
देवासुरसंग्रामे दशमः अध्यायः ॥१०॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

एकादशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

अथो सुराः प्रत्युपलब्धचेतसः परस्य पुंसः परयानुकम्पया ।
जघ्नुर्भृशं शक्रसमीरणादयस्तांस्तान्रणे यैरभिसंहताः पुरा ॥१॥

पदच्छेद—
अथो सुराः प्रत्युपलब्ध चेतसः परस्य पुंसः परया अनुकम्पया ।
जघ्नुः भृशम् शक्र समीरण आदयः तान्-तान् रणे यैः अभिसंहताः पुरा ॥

शब्दार्थ—

अथो	१.	तदनन्तर	भृशम्	१५.	अत्यधिक वेग से
सुराः	५.	देवताओं में	शक्रसमीरण	८.	इन्द्र और वायु
प्रत्युपलब्ध	७.	सञ्चार हुआ (तथा)	आदयः	९.	आदि देवगण
चेतसः	६.	चेतना तथा उत्साह का	तान्-तान्	१४.	उन-उन पर
परस्य पुंसः	२.	परम पुरुष भगवान् की	रणे	१०.	रणभूमि में
परया	३.	अत्यधिक	यैः	१२.	जिन-जिन दैत्यों से
अनुकम्पया	४.	कृपा के कारण	अभिसंहताः ।	१३.	आहत हुये थे
जघ्नुः	१६.	प्रहार करने लगे	पुरा ॥	११.	पहले

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! तदनन्तर परम पुरुष भगवान् की अत्यधिक कृपा के कारण देवताओं में चेतना तथा उत्साह का सञ्चार हुआ । तथा इन्द्र और वायु आदि देवगण रणभूमि में पहले जिन-जिन दैत्यों से आहत हुये थे उन-उन पर अत्यधिक वेग से प्रहार करने लगे ॥

द्वितीयः श्लोकः

वैरोचनाय संरब्धो भगवान्पाकशासनः ।
उदयच्छद् यदा वज्रं प्रजा हा हेति चुक्रुशुः ॥२॥

पदच्छेद—
वैरोचनाय संरब्धः भगवान् पाक शासनम् ।
उदयच्छत् यदा वज्रम् प्रजाः हाहा इति चुक्रुशुः ॥

शब्दार्थ—

वैरोचनाय	३.	बलि से	यदा	५.	जब उस पर
संरब्धः	४.	लड़ते-लड़ते	वज्रम्	६.	वज्र
भगवान्	१.	परम ऐश्वर्यशाली	प्रजा	८.	सारी प्रजा में
पाकशासनम् ।	२.	इन्द्र ने	हाहा इति	९.	हाहाकार
उदयच्छत्	७.	उठाया तब	चुक्रुशुः ॥	१०.	मच गया ॥

श्लोकार्थ—परम ऐश्वर्यशाली इन्द्र ने बलि से लड़ते-लड़ते जब उस पर वज्र उठाया तब सारी प्रजा में हाहाकार मच गया ॥

तृतीयः श्लोकः

वज्रपाणिस्तमाहेदं तिरस्कृत्य पुरः स्थितम् ।
मनस्विनं सुसम्पन्नं विचरन्तं महामृधे ॥३॥

पदच्छेद—

वज्रपाणिः तम् आह इदम् तिरस्कृत्य पुरः स्थितम् ।
मनस्विनम् सुसम्पन्नम् विचरन्तम् महामृधे ॥

शब्दार्थ—

वज्रपाणिः	७.	हाथ में वज्र लिये इन्द्र ने	मनस्विनम्	२.	बड़े उत्साही
तम्	९.	उस बलि से	सुसम्पन्नम्	१.	अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित
आह	११.	कहा	विचरन्तम्	५.	विचरण करते हुये बलि को
इदम्	१०.	इस प्रकार	महा	३.	विशाल
तिरस्कृत्य	८.	उसका तिरस्कार करके	मृधे ॥	४.	रणभूमि में
पुरः स्थितम् ।	६.	सामने स्थित होकर			

श्लोकार्थ—बड़े उत्साही, अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित, विशाल रणभूमि में विचरण करते हुये बलि को सामने स्थित होकर हाथ में वज्र लिये हुये इन्द्र ने उसका तिरस्कार करके उस बलि से इस प्रकार कहा ॥

चतुर्थः श्लोकः

नटवन्मूढ मायाभिर्मायेशान् नो जिगीषसि ।
जित्वा बालान् निबद्धाक्षान् नटो हरति तद्धनम् ॥४॥

पदच्छेद—

नट वत् मूढ मायाभिः मायेशान् नः जिगीषसि ।
जित्वा बालान् निबद्ध अक्षान् नटः हरति तत् धनम् ॥

शब्दार्थ—

नट	४.	नट के	जित्वा	१९.	जीतकर
वत्	५.	समान	बालान्	११.	बालकों को
मूढ	१.	रे मूर्ख	निबद्ध	१०.	बाँधकर
मायाभिः	६.	माया के द्वारा	अक्षान्	९.	आँखें
मायेशान्	३.	माया के स्वामियों को	नटः	८.	क्योंकि नट
नः	२.	हम	हरति	१४.	हरण कर लेता है
जिगीषसि ।	७.	तू जीतना चाहता है	तत् धनम् ॥	१३.	उनका धन

श्लोकार्थ—रे मूर्ख ! हम माया के स्वामियों को नट के समान माया के द्वारा तू जीतना चाहता है, क्योंकि नट आँखें बाँधकर बालकों को जीतकर उनका धन हरण कर लेता है ॥

पञ्चमः श्लोकः

आरुरुक्षन्ति मायाभिरुत्सिसृप्सन्ति ये दिवम् ।
तान्दस्यून्विधुनोम्यज्ञान्पूर्वस्माच्च पदादधः ॥५॥

पदच्छेद—

आरुरुक्षन्ति मायाभि उत्सिसृप्सन्ति ये दिवम् ।
तान् दस्यून् विधुनोमिः अज्ञान् पूर्वस्मात् च पदात् अधः ॥

शाब्दर्थं—

आरुरुक्षन्ति	४.	अधिकार चाहते हैं और	दस्यून्	८.	लुटेरे
मायाभिः	२.	माया के द्वारा	विधुनोमिः	१४.	पटक देता हूँ
उत्	५.	ऊपर के	अज्ञान्	९.	मूर्खों को
सिसृप्सन्ति	६.	लोकों में भी जाना चाहते हैं	पूर्वस्मात्	१०.	उनके पहले के
ये	१.	जो लोग	च	१२.	और
दिवम् ।	३.	स्वर्ग पर	पदात्	११.	स्थानों से भी
तान्	७.	उन	अधः ॥	१३.	नीचे

श्लोकार्थ—जो लोग माया के द्वारा स्वर्ग पर अधिकार चाहते हैं और ऊपर के लोकों में भी जाना जाहते हैं । उन लुटेरे मूर्खों को उनके पहले के स्थानों से भी नीचे पटक देता हूँ ॥

षष्ठः श्लोकः

सोऽहं दुर्मायिनस्तेऽद्य वज्रेण शतपर्वणः ।
शिरो हरिष्ये मन्दात्मन्घटस्व ज्ञातिभिः सह ॥६॥

पदच्छेद—

सः अहम् दुर्मायिनः ते अद्य वज्रेण शतपर्वणः ।
शिरः हरिष्ये मन्द आत्मन् घटस्व ज्ञातिभिः सह ॥

शब्दार्थ—

सः	२.	सो	शिरः	८.	सिर
अहम्	३.	मैं	हरिष्ये	९.	धड़ से अलग करता हूँ
दुर्मायिनः	१.	रे मायावी !	मन्द आत्मन्	१०.	ना समझ तू
ते	७.	तेरा	घटस्व	१३.	व्यवहार कर ले
अद्य	४.	आज	ज्ञातिभिः	११.	बन्धु-बान्धवों के
वज्रेण	६.	वज्र से	सह ॥	१२.	साथ
शतपर्वणः ॥	५.	अपने सौ धार वाले			

श्लोकार्थ—हे मायावी ! सो मैं आज अपने सौ धार वाले वज्र से तेरा सिर धड़ से अलग करता हूँ । ना समझ तू बन्धु-बान्धवों के साथ व्यवहार कर ले ॥

सप्तमः श्लोकः

बलिरुवाच— सङ्ग्रामे वर्तमानानां कालचोदितकर्मणाम् ।
कीर्तिर्जयोऽजयो मृत्युः सर्वेषां स्युरनुक्रमात् ॥७॥

पदच्छेद— सङ्ग्रामे वर्तमानानाम् कालचोदित कर्मणाम् ।
कीर्तिः जयः अजयः मृत्युः सर्वेषाम् स्युः अनुक्रमात् ॥

शब्दार्थ—

सङ्ग्रामे	४. युद्ध	जयः	८. जय
वर्तमानानाम्	५. करने वाले	अजयः	९. पराजय अथवा
काल	१. काल शक्ति की	मृत्युः	१०. मृत्यु
चोदित	२. प्रेरणा से	सर्वेषाम्	६. सबको
कर्मणाम् ।	३. कर्मों के अनुसार	स्युः	१२. मिलती ही है
कीर्तिः	७. यश	अनुक्रमात् ॥	११. क्रमानुसार

श्लोकार्थ—काल शक्ति की प्रेरणा से कर्मों के अनुसार युद्ध करने वाले सबको यश, जय, पराजय, अथवा मृत्यु क्रमानुसार मिलती है ॥

अष्टमः श्लोकः

तदिदं कालरशनं जनाः पश्यन्ति सूरयः ।
न हृष्यन्ति न शोचन्ति तत्र यूयमपण्डिताः ॥८॥

पदच्छेद— तत् इदम् काल रशनम् जनाः पश्यन्ति सूरयः ।
न हृष्यन्ति न शोचन्ति तत्र यूयम अपण्डिताः ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. इसी से	न	७. न तो
इदम्	३. इस जगत् को	हृष्यन्ति	८. प्रसन्न होते हैं
काल रशनम्	५. काल के अधीन	न शोचन्ति	९. न शोक करते हैं
जनाः	४. तथा लोगों को	तत्र	११. इस विषय में
पश्यन्ति	६. देखते हैं अतः	यूयम्	१०. आप लोग
सूरयः ।	२. ज्ञानी जन	अपण्डिताः ॥	१२. अनभिज्ञ हैं

श्लोकार्थ—इसी से ज्ञानीजन इस जगत् को तथा लोगों को काल के अधीन देखते हैं ! अतः न तो प्रसन्न होते हैं । न शोक करते हैं । आप लोग इस विषय में अनभिज्ञ हैं ।

नवमः श्लोकः

न वयं मन्यमानानामात्मानं तत्र साधनम् ।
गिरो वः साधुशोच्यानां गृह्णीमो मर्मताडनाः ॥९॥

पदच्छेद—

न वयम् मन्यमानानाम् आत्मानम् तत्र साधनम् ।
गिरः वः साधुशोच्यानाम् गृह्णीमः मर्मताडनाः ॥

शब्दार्थ—

न	१२. नहीं करते	गिरः	१०. वचनों को
वयम्	८. हम लोग तुम्हारे	वः	५. तुम लोग
मन्यमानानाम्	४. मानने वाले	साधु	६. महात्माओं की दृष्टि से
आत्मानम्	१. अपने को	शोच्यानाम्	७. शोचनीय हो
तत्र	२. जय-पराजय आदि का	गृह्णीमः	११. स्वीकार ही
साधनम् ।	३. कारण	मर्मताडनाः ॥	९. मर्म स्पर्शी

श्लोकार्थ—अपने को जय-पराजय आदि का कारण मानने वाले तुम लोग महात्माओं की दृष्टि से शोचनीय हो । हम लोग तुम्हारे मर्मस्पर्शी वचनों को स्वीकार ही नहीं करते ॥

दशमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्याक्षिप्य विभुं वीरो नाराचैर्वीरमर्दनः ।
आकर्णपूर्णैरहनदाक्षेपैराहतं पुनः ॥१०॥

पदच्छेद—

इति आक्षिप्य विभुम् वीरः नाराचैः वीरमर्दनः ।
आकर्ण पूर्णैः अहनत् आक्षेपैः आहतम् पुनः ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	आकर्ण	७. धनुष को कान तक
आक्षिप्य	६. फटकार कर	पूर्णैः	८. खींचकर बहुत से
विभुम्	५. इन्द्र को	अहनत्	१०. मारे तथा
वीरः	४. बलि ने	आक्षेपैः	११. आक्षेपों के द्वारा
नाराचैः	९. बाण	आहतम्	१३. प्रताडित किया
वीर	२. वीरों का मान	पुनः ॥	१२. बार-बार
मर्दनः ।	३. मर्दन करने वाले		

श्लोकार्थ—इस प्रकार वीरों का मान-मर्दन करने वाले बलि ने इन्द्र को फटकार कर धनुष को कान तक खींचकर बाण मारे । तथा आक्षेपों के द्वारा बार-बार प्रताडित किया ॥

एकादशः श्लोकः

एवं निराकृतो देवो वैरिणा तथ्यवादिना ।
नामृष्यत् तदधिक्षेपं तोत्राहत इव द्विपः ॥११॥

पदच्छेद— एवम् निराकृतः देवः वैरिणा तथ्य वादिना ।
न अमृष्यत् तत् अधिक्षेपम् तोत्र आहतः इव द्विपः ॥

शब्दार्थं—

एवम्	१. इस प्रकार	न अमृष्यत्	९. सहन न कर सके वे
निराकृतः	६. तिरस्कार होने पर	तत्	७. इन्द्र उनके
देवः	४. देव	अधिक्षेपम्	८. आक्षेप को
वैरिणा	५. शत्रु बलि द्वारा	तोत्र आहतः	१०. अंकुश से मारे गये
तथ्य	२. सत्य	इव	१२. समान हो गये ।
वादिना ।	३. वादी	द्विपः ॥	११. हाथी के

श्लोकार्थ—इस प्रकार सत्यवादी देव-शत्रु बलि के द्वारा तिरस्कार होने पर इन्द्र उनके आक्षेप को सहन न कर सके । वे अंकुश से मारे गये हाथी के समान हो गये ॥

द्वादशः श्लोकः

प्राहरत् कुलिशं तस्मा अमोघं परमर्दनः ।
सयानो न्यपतद् भूमौ छिन्नपक्ष इवाचलः ॥१२॥

पदच्छेद— प्राहरत् कुलिशम् तस्मै अमोघम् परमर्दनः ।
सयानः न्यपतत् भूमौ छिन्नपक्षः इव अचलः ॥

शब्दार्थं—

प्राहरत्	५. प्रहार किया उससे	सयानः	१०. विमान सहित
कुलिशम्	४. वज्र का	न्यपतत्	१२. गिर गये
तस्मै	२. उस बलि पर	भूमौ	११. पृथ्वी पर
अमोघम्	३. अपने अमोघ	छिन्नपक्षः	७. बलि पंख कटे हुए
परमर्दनः ।	१. शत्रुघाती इन्द्र ने	इव	९. समान
		अचलः ॥	८. पर्वत के

श्लोकार्थ—शत्रुघाती इन्द्र ने उस बलि पर अपने अमोघ वज्र का प्रहार किया । उससे बलि पंख कटे हुये पर्वत के समान विमान सहित पृथ्वी पर गिर पड़े ॥

त्रयोदशः श्लोकः

सखायं पतितं दृष्ट्वा जम्भो बलिसखः सुहृत् ।
अभ्ययात् सौहृदं सख्युर्हतस्यापि समाचरन् ॥१३॥

पदच्छेद— सखायम् पतितम् दृष्ट्वा जम्भः बलिसखः सुहृत् ।
अभ्ययात् सौहृदम् सख्युः हतस्य अपि समाचरन् ॥

शब्दार्थ—

सखायम्	५.	अपने मित्र को	अभ्ययात्	११.	बदला लेने के लिये
पतितम्	६.	गिरा हुआ	सौहृदम्	८.	अपने हितैषी तथा
दृष्ट्वा	७.	देखकर	सख्युः	९.	मित्र बलि को
जम्भः	४.	जम्भासुर	हतस्य	१०.	मारने का
बलि	१.	बलि के	अपि	१२.	भी
सखः	३.	घनिष्ठ मित्र	समाचरन् ॥	१३.	आ खड़ा हुआ
सुहृत् ।	२.	बड़े हितैषी			

श्लोकार्थ—बलि के बड़े हितैषी घनिष्ठ मित्र जम्भासुर ने अपने मित्र को गिरा हुआ देखकर अपने हितैषी तथा मित्र बलि को मारने का बदला लेने के लिये भी आ खड़ा हुआ ।

चतुर्दशः श्लोकः

स सिंहवाह आसाद्य गदामुद्यम्य रंहसा ।
जत्रावताडयच्छक्रं गजं च सुमहाबलः ॥१४॥

पदच्छेद— सः सिंहवाहः आसाद्य गदाम् उद्यम्य रंहसा ।
जत्रौ अवताडयत् शक्रम् गजम् च सुमहाबलः ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वह	जत्रौ	९.	हंसली पर
सिंहवाहः	२.	सिंह पर चढ़कर	अवताडयत्	१०.	प्रहार किया
आसाद्य	३.	इन्द्र के पास पहुँचा तथा	शक्रम्	८.	इन्द्र की
गदाम्	४.	अपनी गदा	गजम्	११.	ऐरावत पर
उद्यम्य	५.	उठाकर	च	१०.	और
रंहसा ।	६.	बड़े वेग से	सुमहाबलः ॥	७.	उस महाबली ने

श्लोकार्थ—वह सिंह पर चढ़कर इन्द्र के पास पहुँचा । तथा अपनी गदा उठाकर बड़े वेग से उस महाबली ने इन्द्र की हंसली पर और ऐरावत पर प्रहार किया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

गदाप्रहारव्यथितो भृशं विह्वलितो गजः ।
जानुभ्यां धरणीं स्पृष्ट्वा कश्मलं परमं ययौ ॥१५॥

पदच्छेद— गदा प्रहार व्यथितः भृशम् विह्वलितः गजः ।
जानुभ्याम् धरणीम् स्पृष्ट्वा कश्मलम् परमम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

गदा	१.	गदा की	जानुभ्याम्	७.	पैरों को
प्रहार	२.	चोट से	धरणीम्	८.	जमीन पर
व्यथितः	५.	पीड़ा हुई	स्पृष्ट्वा	९.	टेककर
भृशम्	४.	अत्यधिक	कश्मलम्	११.	मूर्च्छा को
विह्वलितः	६.	वह व्याकुल होकर	परमम्	१०.	पूर्णरूप से
गजः ।	३	ऐरावत को	ययौ ॥	१२.	प्राप्त गया

श्लोकार्थ—गदा की चोट से ऐरावत को अत्यधिक पीड़ा हुई । वह व्याकुल होकर पैरों को जमीन पर टेककर पूर्णरूप से मूर्च्छा को प्राप्त हो गया ॥

षोडशः श्लोकः

ततो रथो मातलिना हरिभिर्दशशतैर्वृतः ।
आनीतो द्विपमुत्सृज्य रथमारुरुहे विभुः ॥१६॥

पदच्छेद— ततः रथः मातलिना हरिभिः दश शतैः वृतः ।
आनीतः द्विपम् उत्सृज्य रथम् आरुरुहे विभुः ॥

शब्दार्थ

ततः	१.	उसी समय	आनीतः	७.	ले आया तब
रथः	६.	रथ	द्विपम्	९.	ऐरावत को
मातलिना	२.	मातलि	उत्सृज्य	१०.	छोड़कर
हरिभिः	४.	घोड़ों से	रथम्	११.	रथ पर
दशशतैः	३.	दस सौ	आरुरुहे	१२.	सवार हो गये
वृतः ।	५.	जुता हुआ	विभुः ॥	८.	इन्द्र

श्लोकार्थ—उसी समय मातलि दस सौ घोड़ों से जुता हुआ रथ ले आया । तब इन्द्र ऐरावत को छोड़कर रथ पर सवार हो गये ॥

सप्तदशः श्लोकः

तस्य तत् पूजयन् कर्म यन्तुर्दानवसत्तमः ।
शूलेन ज्वलता तं तु स्मयमानोऽहनन्मृधे । १७॥

पदच्छेद— तस्य तत् पूजयन् कर्म यन्तुः दानव सत्तमः ।
शूलेन ज्वलता तम् तु स्मयमानः अहनत् मृधे ॥

शब्दार्थ—

तस्य	४.	मातलि के	शूलेन	१२.	त्रिशूल का
तत्	५.	उस	ज्वलता	११.	जलते हुये
पूजयन्	७.	प्रशंसा की और	तम् तु	१०.	उसके ऊपर
कर्म	६.	कर्म की बड़ी	स्मयमानः	८.	हंसते हुये
यन्तुः	३.	सारथी	अहनत्	१३.	प्रहार किया
दानव	१.	दानव	मृधे ॥	९	रणभूमि में
सत्तमः ।	२.	श्रेष्ठ जम्भ ने			

श्लोकार्थ—दानव श्रेष्ठ जम्भ ने सारथी मातलि के उस कर्म की बड़ी प्रशंसा की । और हंसते हुये रणभूमि में उसके ऊपर जलते हुये त्रिशूल का प्रहार किया ॥

अष्टादशः श्लोकः

सेहे रुजं सुदुर्मर्षां सत्त्वमालम्ब्य मातलिः ।
इन्द्रो जम्भस्य संक्रुद्धो वज्रेणापाहरच्छिरः ॥१८॥

पदच्छेद— सेहे रुजम् सुदुर्मर्षाम् सत्त्वम् आलम्ब्य मातलिः ।
इन्द्रः जम्भस्य संक्रुद्धः वज्रेण अपाहरत् शिरः ॥

शब्दार्थ—

सेहे	६.	सह लिया तब	इन्द्रः	९.	इन्द्र ने
रुजम्	५.	पीड़ा को	जम्भस्य	१०.	जम्भासुर का
सुदुर्मर्षाम्	४.	इस कठिन	संक्रुद्धः	८.	क्रोधित होकर
सत्त्वम्	२.	धैर्य का	वज्रेण	९.	अपने वज्र से
आलम्ब्य	३.	सहारा लेकर	अपाहरत्	१२.	काट डाला
मातलिः ।	१.	मातलि ने	शिरः ॥	११.	सिर

श्लोकार्थ—मातलि ने धैर्य का सहारा लेकर इस कठिन पीड़ा को सह लिया । तब इन्द्र ने क्रोधित होकर अपने वज्र से जम्भासुर का सिर काट डाला ।

एकोनविंशः श्लोकः

जम्भं श्रुत्वा हतं तस्य ज्ञातयो नारदादृषेः ।
नमुचिश्च बलः पाकस्तत्रापेतुस्त्वरान्विताः ॥१९॥

पदच्छेद— जम्भम् श्रुत्वा हतम् तस्य ज्ञातयः नारदात् ऋषेः ।
नमुचिः च बलः पाकः तत्र आपेतुः त्वरान्विताः ॥

शब्दार्थ—

जम्भम्	३. जम्भासुर की		नमुचिः	८. नमुचि	
श्रुत्वा	५. सुनकर		च	१०. और	
हतम्	४. मृत्यु का समाचार		बलः	९. बल	
तस्य	६. उसके		पाकः	११. पाक	
ज्ञातयः	७. भाई-बन्धु		तत्र	१३. रण भूमि में	
नारदात्	२. नारद से		आपेतुः	१४. आ पहुँचे	
ऋषेः ।	१. देवर्षि		त्वरान्विताः ॥	१२. शीघ्रता पूर्वक	

श्लोकार्थ— देवर्षि नारद से जम्भासुर की मृत्यु का समाचार सुनकर उसके भाई-बन्धु नमुचि, बल और पाक शीघ्रता पूर्वक रणभूमि में आ पहुँचे ॥

विंशः श्लोकः

वचोभिः परुषैरिन्द्रमर्दयन्तोऽस्य मर्मसु ।
शरैरवाकिरन् मेघा धाराभिरिव पर्वतम् ॥२०॥

पदच्छेद— वचोभिः परुषैः इन्द्रम् अर्दयन्तः अस्य मर्मसु ।
शरैः अवाकिरन् मेघाः धाराभिः इव पर्वतम् ॥

शब्दार्थ—

वचोभिः	३. वाणी से	शरैः	११. बाण
परुषैः	१. अपनी कठोर	अवाकिरन्	१२. बरसाने लगे
इन्द्रम्	५. इन्द्र का	मेघाः	८. बादलों द्वारा की जाने वाली
अर्दयन्तः	६. अपमान करते हुये वे	धाराभिः	९. मूसलाधार वर्षा
अस्य	४. इस	इव	१०. के समान
मर्मसु ।	२. मर्मस्पर्शी	पर्वतम् ॥	७. पहाड़ पर

श्लोकार्थ— अपनी कठोर मर्म स्पर्शी वाणी से इन्द्र का अपमान करते हुये वे पहाड़ पर बादलों द्वारा की जाने वाली मूसलाधार वर्षा के समान बाण बरसाने लगे ॥

एकविंशः श्लोकः

हरीन्दशशतान्याजौ हर्यश्वस्य बलः शरैः ।
तावद्भिरर्दयामास युगपल्लघुहस्तवान् ॥२१॥

पदच्छेद—

हरीन् दशशतानि आजौ हर्यश्वस्य बलः शरैः ।
तावद्भिः अर्दयामास युगपत् लघु हस्तवान् ॥

शब्दार्थ—

हरीन्	९. घोड़ों को	शरैः ।	६. बाण चलाकर
दशशतानि	५. एक हजार	तावद्भिः	८. उतने ही (एक हज़ार)
आजौ	२. रणभूमि में	अर्दयामास	१०. घायल कर दिया
हर्यश्वस्य	७. इन्द्र के	युगपत्	४. एक साथ ही
बलः	१. बल ने	लघुहस्तवान् ॥	३. हस्तलाघव से

श्लोकार्थ—बल ने रणभूमि में हस्तलाघव से एक साथ ही एक हज़ार बाण चला कर इन्द्र के उतने ही हज़ार घोड़ों को घायल कर दिया ॥

द्वाविंशः श्लोकः

शताभ्यां मातलिं पाको रथं सावयवं पृथक् ।
सकृत्सन्धानमोक्षेण तदद्भुतमभूद् रणे ॥२२॥

पदच्छेद—

शताभ्याम् मातलिम् पाकः रथम् स अवयवम् पृथक् ।
सकृत् सन्धानमोक्षेण तत् अद्भुतम् अभूत् रणे ॥

शब्दार्थ—

शताभ्याम्	२. सौ बाणों से	सकृत्	९. एक बार ही
मातलिम्	३. मातलिको और	सन्धान्	१०. इतने बाण चढ़ाये और
पाकः	१. पाक ने	मोक्षेण	११. चलाने की
रथम्	५ रथ के	तत्	१२. यह
स	४. उस	अद्भुत	१३. विचित्र घटना
अवयवम्	७. अँगको छेद डाला	अभूत्	१४. हुई
पृथक् ।	६. एक-एक	रणे ।	८. युद्ध भूमि में

श्लोकार्थ—पाक ने सौ बाणों से मातलि को और उस रथ के एक-एक अंग को छेद डाला । युद्धभूमि में एक बार ही इतने बाण चढ़ाने और चलाने की यह अद्भुत घटना हुई ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

नमुचिः पञ्चदशभिः स्वर्णपुङ्खैर्महेषुभिः ।
आहत्य व्यनदत्संख्ये सतोय इव .तोयदः ॥२३॥

पदच्छेद—

नमुचिः पञ्चदशभिः स्वर्णपुङ्खैः महेषुभिः ।
आहत्य व्यनदत् संख्ये सतोयः इव तोयदः ॥

शब्दार्थ—

नमुचिः	१.	नमुचि	व्यनदत्	१०.	गरजने लगा
पञ्चदशभिः	३.	पन्द्रह	संख्ये	६.	रणभूमि में
स्वर्णपुङ्खैः	२.	सोने के पंखों वाले	सतोयः	७.	जल से भरे हुये
महेषुभिः ।	४.	बड़े-बड़े बाणों से	इव	९.	के समान
आहत्य	५.	इन्द्र को मारा । और वह	तोयदः ॥	८.	बादल

श्लोकार्थ—नमुचि ने सोने के पंखों वाले पन्द्रह बड़े-बड़े बाणों से इन्द्र को मारा । और वह रणभूमि में जल से भरे हुये बादल के समान गरजने लगा ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

सर्वतः शरकूटेन शक्रं सरथसारथिम् ।
छादयामासुरसुराः प्रावृट्सूर्यमिवाम्बुदाः ॥२४॥

पदच्छेद—

सर्वतः शरकूटेन शक्रम् सरथ सारथिम् ।
छादयामासुः असुराः प्रावृट् सूर्यम् इव अम्बुदाः ॥

शब्दार्थ—

सर्वतः	६.	संकल्पपूर्वक अपने	छादयामासुः	११.	ढक लिया
शरकूटेन	७.	शरसमूह से	असुराः	५.	असुरों ने
शक्रम्	८	इन्द्र को	प्रावृट्	१.	वर्षा कालीन
सरथ	९.	रथ और	सूर्यम्	३.	सूर्य के
सारथिम्	१०.	सारथी सहित	इव	४.	समान
			अम्बुदाः ॥	२.	बादलों के द्वारा

श्लोकार्थ—वर्षा कालीन बादलों के द्वारा सूर्य के समान असुरों ने संकल्प पूर्वक अपने शर-समूह से इन्द्र को रथ और सारथी सहित ढक लिया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

अलक्षयन्तस्तमतीव विह्वला विचुक्रुशुर्देवगणाः सहानुगाः ।
अनायकाः शत्रुबलेन निर्जिता वणिक्पथा भिन्ननवो यथार्णवे ॥२५॥

पदच्छेद— अलक्षयन्तः तम् अतीव विह्वलाः विचुक्रुशुः देवगणाः सहअनुगाः ।
अनायकाः शत्रुबलेन निर्जिताः वणिक् पथा भिन्ननवः यथा अर्णवे ॥

शब्दार्थ—

अलक्षयन्तः	२.	न दिखाई देने पर	अनायकाः	९.	सेनापति से हीन
तम्	१.	उस इन्द्र के	शत्रुबलेन	१०.	शत्रुसेना द्वारा
अतीव	६.	अत्यन्त	निर्जिताः	११.	पराजित वे
विह्वलाः	७.	व्याकुल होकर	वणिक्	१६.	व्यापारियों के
विचुक्रुशुः	८.	रोने चिल्लाने लगे	पथा	१३.	बीच
देवगणाः	५.	देवगण	भिन्न	१५.	टूट जाने से आकुल
सह	४.	सहित	नवः	१५.	नावके
अनुगाः ।	३.	अनुचरों के	यथा	१७.	समान हो गये
			अर्णवे ॥	१२.	समुद्र के

श्लोकार्थ—उस इन्द्र के न दिखाई देने पर अनुचरों के सहित देवगण अत्यन्त व्याकुल होकर रोने-चिल्लाने लगे। सेनापति से हीन शत्रुसेना द्वारा पराजित वे समुद्र के बीच नाव के टूट जाने से आकुल व्यापरियों के समान हो गये ॥

षड्विंशः श्लोकः

ततस्तुराषाडिषुबद्धपञ्जराद् विनिर्गतः साश्वरथध्वजाग्रणीः ।
बभौ दिशः खं पृथिवीं च रोचयन् स्वतेजसा सूर्य इव क्षपात्यये ॥२६॥

पदच्छेद— ततः तुराषाट् इषुबद्ध पञ्जराद विनिर्गतः साश्वरथ ध्वज अग्रणीः ।
बभौ दिशः खम् पृथिवीम् च रोचयन् स्वतेजसा सूर्य इव क्षपाअत्यये ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तत्पश्चात्	बभौ	१८.	सुशोभित हुये
तुराषाट्	२.	इन्द्र	दिशः खम्	११	दिशाओं, आकाश
इषुबद्ध	३.	बाणों द्वारा बनाये हुये	पृथिवीम्	१३.	पृथ्वी को
पञ्जरात्	४.	पिंजडे मे	च	१२.	और
विनिर्गतः	५.	वाहर निकलकर	रोचयन्	१४.	प्रकाशित करते हुये
स	९.	सहित	स्वतेजसा	१०.	अपने तेज से
अश्वरथ	६.	घोड़े-रथ	सूर्यः	१६.	सूर्य के
ध्वज	७.	ध्वजा और	इव	८.	समान
अग्रणीः ।	८.	सारथी	क्षपात्यये ॥	१५.	रात्रि समाप्त होने पर

श्लोकार्थ—तत्पश्चात् इन्द्र बाणों द्वारा बनाये हुये पिंजड़े से बाहर निकल कर घोड़े, रथ, ध्वजा और सारथी सहित अपने तेज से दिशाओं, आकाश और पृथ्वी को प्रकाशित करते हुये रात्रि समाप्त होने पर सूर्य के समान सुशोभित हुये ॥

सप्तविंशः श्लोकः

निरीक्ष्य पृतनां देवः परैरभ्यर्दितां रणे ।
उदयच्छद् रिपुं हन्तुं वज्रं वज्रधरो रुषा ॥२७॥

पदच्छेद—निरीक्ष्य पृतनां देवः परैःअभ्यर्दितां रणे ।
उदयच्छद् रिपुं हन्तुं वज्रं वज्रधरः रुषा ॥

शब्दार्थ—

निरीक्ष्य	७.	देखकर	उदयच्छद्	१२.	प्रहार किया
पृतनाम्	६.	सेना को	रिपुम्	८.	शत्रु को
देवः	५.	देव	हन्तुम्	६.	मारने के लिये
परैः	३.	शत्रुओं के द्वारा	वज्रम्	११.	वज्र का
अभ्यर्दिताम्	४.	रौंदी हुई	वज्रधरः	१.	वज्रधारी इन्द्र ने
रणे ।	२.	रणभूमि में	रुषा ॥	१०.	बड़े क्रोध से

श्लोकार्थ—वज्रधारी इन्द्र ने रणभूमि में शत्रुओं के द्वारा रौंदी हुई देव-सेना को देखकर शत्रु को मारने के लिये बड़े क्रोध से वज्रका प्रहार किया ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

स तेनैवाष्टधारेण शिरसी बलपाकयोः ।
ज्ञातीनां पश्यतां राजञ्जहार जनयन्भयम् ॥२८॥

पदच्छेद—सः तेन एव अष्टधारेण शिरसी बल पाकयोः ।
ज्ञातीनाम् पश्यताम् राजन् जहार जनयन् भयम् ॥

शब्दार्थ—

सः	२.	उस इन्द्र ने	ज्ञातीनाम्	५.	दैत्यों के भाई बन्धुओं को
तेन एव	३.	उस ही	पश्यताम्	८.	उनके सामने ही
अष्टधारेण	४.	आठधार वाले वज्र से	राजन्	१.	हे परीक्षित् !
शिरसी	११.	सिरों को	जहार	१२.	काट लिये
बल	६.	बल और	जनयन्	७.	भीत करते हुये
पाकयोः ।	१०.	पाक के	भयम् ॥	६.	भय

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उस इन्द्र ने उस ही आठधार वाले वज्र से दैत्यों के भाई-बन्धुओं को भयभीत करते हुये उनके सामने ही बल और पाक के सिरों को काट लिया ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

नमुचिस्तद्वधं दृष्ट्वा शोकामर्षरुषान्वितः ।
जिघांसुरिन्द्रं नृपते चकार परमोद्यमम् ॥२९॥

पदच्छेद— नमुचिस्तद्वधं दृष्ट्वा शोकामर्षरुषान्वितः ।
जिघांसुः इन्द्रम् नृपते चकार परमउद्यमम् ॥

शब्दार्थ—

नमुचिः	४.	नमुचि	जिघांसु	९.	मारने के लिये
तत्	२.	अपने भाइयों का	इन्द्रम्	८.	इन्द्र को
वधम् दृष्ट्वा	३.	वध देखकर	नृपते	१.	हे परीक्षित् !
शोक	५.	दुःख	चकार	१२.	किया
अमर्ष	६.	वैर और	परम्	१०.	उसने बहुत
रुषा अन्वितः ।	७.	क्रोध से भर गया	उद्यमम् ॥	११.	प्रयास

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! अपने भाइयों का वध देखकर नमुचि दुःख, वैर और क्रोध से भर गया । इन्द्र को मारने के लिये उसने बहुत प्रयास किया ॥

त्रिंशः श्लोकः

अश्मसारमयं शूलं घण्टावद्धेमभूषणम् ।
प्रगृह्याभ्यद्रवत् क्रुद्धो हतोऽसीति वितर्जयन् ।
प्राहिणोद् देवराजाय निनदन् मृगराडिव ॥३०॥

पदच्छेद— अश्म सारमयम् शूलम् घण्टावत् हेम भूषणम् ।
प्रगृह्य अभ्यद्रवत् क्रुद्धः हतः असि इति वितर्जयन् ।
प्राहिणोत् देवराजाय निनदन् मृगराट् इव ॥

शब्दार्थ—

अश्म	१.	लोहे के	हतः	१०.	मरे हुये
सारमयम्	२.	सार भाग से निर्मित	असि	११.	हो
शूलम्	६.	त्रिशूल को	इति	१२.	इस प्रकार
घण्टावत्	३.	घण्टों से युक्त	वितर्जयन्	१३.	ललकारते हुये
हेम	४.	स्वर्ण	प्राहिणोत्	१८.	चला दिया
भूषणम्	५.	विभूषित	देवराजाय	१६.	इन्द्र पर
प्रगृह्य	७.	पकड़कर वह	निनदन्	१७.	गरज कर उसे
अभ्यद्रवत्	९.	टूट पड़ा (और)	मृगराट्	१४.	सिंह के
क्रुद्धः ।	८.	क्रोधित होकर	इव ॥	१५.	समान

श्लोकार्थ—लोहे के सार भाग से निर्मित घण्टों से युक्त स्वर्ण विभूषित त्रिशूल को पकड़ कर वह क्रोधित होकर टूट पड़ा और मरे हुये हो इस प्रकार ललकारते हुये सिंह के समान इन्द्र पर गरज कर उसे चला दिया ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

तदापतद् गगनतले महाजवं विचिच्छिदे हरिरिषुभिः सहस्रधा ।
तमाहनन्नृप कुलिशेन कन्धरे रुषान्वितस्त्रिदशपतिः शिरो हरन् ॥३१॥

पदच्छेद— तदा अपतत् गगनतले महाजवम् विचिच्छिदे हरिः इषुभिः सहस्रधा ।
तम् आहनत् नृप कुलिशेन कन्धरे रुषा अन्वितः त्रिदशपतिः शिरः हरन् ॥

शब्दार्थ—

तदा	२.	तब	अहानत्	१८.	प्रहार किया
अपतत्	५.	गिरते हुये त्रिशूल के	नृप	१.	हे परीक्षित् !
गगनतले	६.	आकाश में ही	कुलिशेन	१७.	वज्र का
महाजवम्	४.	अत्यन्त वेग से	कन्धरे	१६.	गर्दन पर
विचिच्छिदे	९.	टुकड़े कर डाले	रुषा	११.	क्रोध से
हरिः	३.	इन्द्र ने	अन्वितः	१२.	युक्त होकर
इषुभिः	७.	अपने बाणों से	त्रिदशपतिः	१०.	इन्द्र ने
सहस्रधा	८.	हजारों	शिरः	१३.	उसका सिर
तम्	१५.	उसकी	हरन् ।	१४.	काट लेने के लिये

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! तब इन्द्र ने अत्यन्त वेग से गिरते हुये त्रिशूल के आकाश में ही अपने बाणों से हजारों टुकड़े कर दिये । इन्द्र ने क्रोध से युक्त होकर उसका सिर काट लेने के लिये उसकी गर्दन पर वज्र का प्रहार किया ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

न तस्य हि त्वचमपि वज्र ऊर्जितो बिभेद यः सुरपतिनाजसेरितः ।
तदद्भुतं परमतिवीर्यवृत्रभित् तिरस्कृतो नमुचिशिरोधरत्वचा ॥३२॥

पदच्छेद— न तस्य हि त्वचम् अपि वज्रः ऊर्जितः बिभेद यः सुरपतिना ओजसा ईरितः ।
तत् अद्भुतम् परम् अतिवीर्य वृत्रभित् तिरस्कृतः नमुचि शिरोधर त्वचा ॥

शब्दार्थ—

न तस्य	६.	नहीं उसकी	तत्	१०.	यह
हि त्वचम्	७.	त्वचा में	अद्भुतम्	१२.	आश्चर्य की बात है कि
अपि	८.	भी	परम्	११.	बड़े
वज्रः	५.	वज्र से	अतिवीर्य	१३.	महाबली
ऊर्जितः	४.	उस यशस्वी	वृत्रभित्	१४.	वृत्रासुर के टुकडे करने वाले वज्र का
बिभेद	९	खरोंच आयी	तिरस्कृतः	१८.	तिरस्कार कर दिया
यः सुरपतिना	१.	जिसे इन्द्र ने	नमुचि	१५.	नमुचि की
ओजसा	२.	बड़े वेग से	शिरोधर	१६.	गर्दन की
ईरितः ।	३.	चलाया था	त्वचा ॥	१७.	त्वचा ने

श्लोकार्थ—जिसे इन्द्र ने बड़े वेग से चलाया था उस यशस्वी वज्र से उसकी त्वचा में भी खरोंच नहीं आई । यह बड़े आश्चर्य की बात है कि महाबली वृत्रासुर के टुकड़े करने वाले वज्र का नमुचि की गर्दन की त्वचा ने तिरस्कार कर दिया ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तस्मादिन्द्रोऽबिभेच्छत्रोर्वज्रः प्रतिहतो यतः ।
किमिदं दैवयोगेन भूतं लोकविमोहनम् ॥३३॥

पदच्छेद— तस्मात् इन्द्रः अबिभेत् शत्रोः वज्रः प्रतिहतः यतः ।
किम् इदम् दैव योगेन भूतम् लोक विमोहनम् ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	५.	इसलिये	किम्	१३.	कौन सी घटना
इन्द्रः	६.	इन्द्र	इदम्	१२.	यह
अबिभेत्	७.	डर गये कि	दैव	८.	दैव
शत्रोः	२.	शत्रु पर	योगेन	९.	योग से
वज्रः	३.	वज्र	भूतम्	१४.	हुई
प्रतिहतः	४.	निष्फल गया	लोक	१०.	संसार भर को
यतः ।	१.	क्योंकि	विमोहनम् ॥	११.	संशय में डालने वाली

श्लोकार्थ—क्योंकि शत्रु पर वज्र निष्फल गया। इसलिये इन्द्र डर गये कि दैव योग से संसार भर को संशय में डालने वाली यह कौन सी घटना हुई ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

येन मे पूर्वमद्रीणां पक्षच्छेदः प्रजात्यये ।
कृतो निविशतां भारैः पतत्त्रैः पततां भुवि ॥३४॥

पदच्छेद— येन मे पूर्वम् अद्रीणाम् पक्ष छेदः प्रजा अत्यये ।
कृतः निविशताम् भारैः पतत्त्रैः पतताम् भुवि ॥

शब्दार्थ—

येन	११.	जिस वज्र से	कृतः	१०.	लिये
मे पूर्वम्	१.	मैंने पहले युग में	निविशताम्	६.	गिर पड़ने वाले
अद्रीणाम्	७.	पर्वतों के	भारैः	३.	भार के कारण
पक्षछेदः	१२.	पंख काट डाले थे	पतत्त्रैः	२.	पक्षी के
प्रजा	८.	प्रजा के	पतताम्	४.	उड़ते-उड़ते
अत्यये ।	९.	कल्याण के	भुवि ॥	५.	पृथ्वी पर

श्लोकार्थ—मैंने पहले युग में पक्षों के कारण उड़ते-उड़ते पृथ्वी पर गिर पड़ने वाले पर्वतों के, प्रजा के कल्याण के लिये जिस वज्र से पंख काट डाले थे ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

तपः सारमयं त्वाष्ट्रं वृत्रो येन विपाटितः ।
अन्ये चापि बलोपेताः सर्वास्त्रैरक्षतत्वचः ॥३५॥

पदच्छेद— तपः सारमयं त्वाष्ट्रं वृत्रः येन विपाटितः ।
अन्ये च अपि बलउपेताः सर्व अस्त्रैः अक्षत त्वचः ॥

शब्दार्थ—

तपः	३.	तपस्या का	च	७.	और
सारमयम्	४.	साररूप	अपि	८.	भी बहुत से
त्वाष्ट्रम्	२.	त्वष्टा की अन्य	बल	९.	बल
वृत्रः	५.	वृत्रासुर को तथा	उपेताः	१०.	वान्
येन	१.	मैंने जिस गदा से	सर्व अस्त्रैः	११.	जो सभी अस्त्र-शस्त्रों से
विपाटितः	१४.	काट डाला था	अक्षत	१२.	सुरक्षित
अन्ये	६.	अन्य	त्वचः ॥	१३.	त्वचा वाले थे उन्हें

श्लोकार्थ—मैंने त्वष्टा की तपस्या का साररूप वृत्रासुर को तथा अन्य और भी बहुत से बलवान्, जो सभी अस्त्र-शस्त्रों से सुरक्षित त्वचा वाले थे, उन्हें काट डाला था ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

सोऽयं प्रतिहतो वज्रो मया मुक्तोऽसुरेऽल्पके ।
नाहं तदाददे दण्डं ब्रह्मतेजोऽप्यकारणम् ॥३६॥

पदच्छेद— सः अयम् प्रतिहतः वज्रः मया मुक्तः असुरे अल्पके ।
न अहम् तत् आददे दण्डम् ब्रह्मतेजः अपि अकारणम् ॥

शब्दार्थ—

सः	४.	वही	न	१५.	नहीं
अयम्	५.	यह	अहम्	१२.	मैं
प्रतिहतः	११.	न मार सका । अतः	तत्	१३.	इस
वज्रः	६.	मेरा वज्र	आददे	१६.	ग्रहण करूँगा
मया	७.	मेरे द्वारा प्रहार	दण्डम्	१४.	वज्र को
मुक्तः	८.	करने पर	ब्रह्मतेजः	१.	भले ही ब्रह्मतेज
असुरे	१०.	असुर को	अपि	२.	भी
अल्पके ।	९.	तुच्छ	कारणम् ॥	३.	इसमें कारण हो, पर

श्लोकार्थ—भले ही ब्रह्मतेज भी इसमें कारण हो पर वही यह मेरा वज्र मेरे द्वारा प्रहार करने पर तुच्छ असुर को न मार सका । अतः मैं इस वज्र को को ग्रहण नहीं करूँगा ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

इति शक्रं विषीदन्तमाह वागशरीरिणी ।
नायं शुष्कैरथो नाद्रैर्वधमर्हति दानवः ॥३७॥

पदच्छेद— इति शक्रम् विषीदन्तम् आह वाक्अशरीरिणी ।
न अयम् शुष्कैः अथो न आर्द्रैः वधम् अर्हति दानवः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	शुष्कैः	९.	सूखी वस्तु से
शक्रम्	२.	इन्द्र के	अथो	१०.	और
विषीदन्तम्	३.	दुःखी होने पर	न	११.	न
आह	५.	कहा	आर्द्रैः	१२.	गीली वस्तु से ही
वाक्अशरीरिणी	४.	आकाशवाणी ने	वधम्	१३.	मारने
न	८.	न तो	अर्हति	१४.	योग्य है
अयम्	६.	यह	दानवः ॥	७.	दानव

श्लोकार्थ—इस प्रकार इन्द्र के दुःखी होने पर आकाशवाणी ने कहा यह न तो सूखी वस्तु से और न गीली वस्तु से ही मारने योग्य है ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

मयास्मै यद् वरो दत्तो मृत्युर्नैवार्द्रशुष्कयोः ।
अतोऽन्यश्चिन्तनीयस्ते उपायो मघवन् रिपोः ॥३८॥

पदच्छेद— मया अस्मै यत् वरः दत्तः मृत्युः नैव आर्द्र शुष्कयोः ।
अतः अन्यः चिन्तनीयः ते उपायः मघवन् रिपोः ॥

शब्दार्थ—

मया	१.	मेरे द्वारा	शुष्कयोः ।	४.	सूखी और
अस्मै	३.	इसे	अतः	१०.	अतः
यत्	२.	जो	अन्यः	१४.	कोई अन्य ही
वरः	८.	वरदान	चिन्तनीयः	१६.	सोचना होगा
दत्तः	९.	दिया गया है	ते	१३.	तुम्हें
मृत्युः	७.	मरने का	उपायः	१५.	उपाय
न एव	६.	वस्तु से न	मघवन्	११.	हे इन्द्र
आर्द्र	५.	गीली	रिपोः ॥	१२.	इस शत्रु को मारने के लिये

श्लोकार्थ—मेरे द्वारा जो इसे सूखी और गीली वस्तु से न मरने का वरदान दिया गया है। अतः हे इन्द्र ! इस शत्रु को मारने के लिये तुम्हें कोई अन्य ही उपाय सोचना होगा ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

तां दैवीं गिरमाकर्ण्य मघवान्सुसमाहितः ।
ध्यायन् फेनमथापश्यदुपायमुभयात्मकम् ॥३९॥

पदच्छेद— ताम् दैवीम् गिरम् आकर्ण्य मघवान् सुसमाहितः ।
ध्यायन् फेनम् अथ अपश्यत् उपायम् उभय आत्मकम् ॥

शब्दार्थ—

ताम्	२.	उस	ध्यायन्	८.	ध्यान करते हुये
दैवीम्	३.	दिव्य	फेनम्	१२	समुद्र फेन के रूप में
गिरम्	४.	आकाशवाणी को	अथ	१.	तब
आकर्ण्य	५.	सुन कर	अपश्यत्	१३.	सोचा
मघवान्	६.	इन्द्र ने	उपायम्	११.	उपाय
सुसमाहितः ।	७.	एकाग्रचित्त से	उभय	९.	दोनों ही
			आत्मकम् ॥	१०.	प्रकार का (गीला और सूखा)

श्लोकार्थ—तब उस दिव्य आकाशवाणी को सुनकर इन्द्र ने एकाग्रचित से ध्यान करते हुये दोनों ही प्रकार का गीला और सूखा उपाय समुद्र फेन के रूप में सोचा ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

न शुष्केण न चार्द्रेण जहार नमुचेः शिरः ।
तं तुष्टुवुर्मुनिगणा माल्यैश्चावाकिरन्विभुम् ॥४०॥

पदच्छेद— न शुष्केण न च आर्द्रेण जहार नमुचेः शिरः ।
तम् तुष्टुवुः मुनिगणाः माल्यैः च अवाकिरन् विभुम् ॥

शब्दार्थ

न शुष्केण	१.	न तो सूखे	तम्	११.	उन
न च	२.	न और	तुष्टुवुः	१३.	स्तुति करते हुये
आर्द्रेण	३.	गीले समुद्र फेन से	मुनिगणाः	१०.	तब मुनिगण
जहार	६.	काट डाला	माल्यैः	१४	मालाओं की
नमुचेः	४.	इन्द्र ने नमुचि का	च	९.	और
शिरः ।	५.	सिर	अवाकिरन्	१५.	वर्षा करने लगे
			विभुम् ॥	१२.	भगवान् इन्द्र की

श्लोकार्थ—न तो सूखे और न गीले समुद्र के फेन से इन्द्र ने नमुचि का सिर काट डाला । और तब मुनि-गण उन भगवान् इन्द्र की स्तुति करते हुये मालाओं की वर्षा करने लगे ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

गन्धर्वमुख्यौ जगतुर्विश्वावसुपरावसू ।
देवदुन्दुभयो नेदुर्नर्तक्यो ननृतुर्मुदा ॥४१॥

पदच्छेद— गन्धर्व मुख्यौ जगतुः विश्वावसु परावसू ।
देवदुन्दुभयः नेदुः नर्तक्यः ननृतुः मुदा ॥

शब्दार्थ—

गन्धर्व	१. गन्धर्व	देव	६. देवगण
मुख्यौ	२. शिरोमणि	दुन्दुभयः	७. दुन्दुभियां
जगतः	५. गान करने लगे	नेदुः	८. बजाने लगे और
विश्वावसु	३. विश्वावसु और	नर्तक्यः	९. नर्तकियाँ
परावसु ।	४. परावसु	ननृतुः	११. नाचने लगीं
		मुदा ॥	१०. आनन्द से

श्लोकार्थ—गन्धर्व शिरोमणि विश्वावसु और परावसु गान करने लगे । देवताओं, की दुन्दुभियां बजने लगीं और नर्तकियाँ आनन्द से नाचने लगीं

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

अन्येऽप्येवं प्रतिद्वन्द्वान्वाय्वग्निवरुणादयः ।
सूदयामासुरस्त्रौघैर्मृगान्केसरिणो यथा ॥४२॥

पदच्छेद— अन्ये अपि एवम् प्रति द्वन्द्वानां वायुअग्निवरुण आदयः ।
सूदयामासुः अस्त्रौघैः मृगान् केसरिणः यथा ॥

शब्दार्थ—

अन्ये	६. दूसरे देवों ने	आदयः ।	५. आदि
अपि	७. भी	सूदयामासुः	१०. वैसे ही मार गिराया
एवम्	१. इसी प्रकार	अस्त्रौघैः	८. अपने अस्त्र-शस्त्रों से
प्रतिद्वन्द्वान्	९. विपक्षियों को	मृगान्	१३. हरिनों को मार डालता है
वायु	२. वायु	केसरिणः	१२. सिंह
अग्नि	३. अग्नि	यथा ॥	११. जैसे
वरुण	४. वरुण		

श्लोकार्थ—इसी प्रकार वायु, अग्नि, वरुण आदि दूसरे देवों ने भी अपने अस्त्रों-शस्त्रों से विपक्षियों को वैसे ही मार गिराया जैसे सिंह हरिनों को मार डालता है ॥

त्रिंचत्वारिंशः श्लोकः

ब्रह्मणा प्रेषितो देवान्देवर्षिर्नारदो नृप ।
वारयामास विबुधान्दृष्ट्वा दानवसंक्षयम् ॥४३॥

पदच्छेद— ब्रह्मणा प्रेषितः देवान् देवर्षिः नारदः नृप ।
वारयामास विबुधान् दृष्ट्वा दानव संक्षयम् ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मणा	५. ब्रह्मा जी ने	वारयामास	११. लड़ने से रोक दिया
प्रेषितः	९. भेजा, तब उन्होंने	विबुधान्	१०. देवताओं को
देवान्	८. देवताओं के पास	दृष्ट्वा	४. देखकर
देवर्षिः	६. देवर्षि	दानव	२. दानवों का
नारदः	७. नारद	संक्षयम् ।	३. नाश होते
नृप ।	१. राजन्		

श्लोकार्थ—हे राजन् ! दानवों का नाश होते देखकर ब्रह्मा जी ने देवर्षि नारद को देवताओं के पास भेजा । तब उन्होंने देवताओं को लड़ने से रोक दिया ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

नारद उवाच—भवद्भिरमृतं प्राप्तं नारायणभुजाश्रयैः ।
श्रिया समेधिताः सर्व उपारमत विग्रहात् ॥४४॥

पदच्छेद— भवद्भिः अमृतम् प्राप्तम् नारायण भुज आश्रयैः ।
श्रिया समेधिताः सर्वे उपारमत विग्रहात् ॥

शब्दार्थ—

भवद्भिः	४. आपने	श्रिया	७. लक्ष्मी जी ने
अमृतम्	५. अमृत	समेधिताः	९. अभिवृद्धि की है
प्राप्तम्	६. प्राप्त किया है	सर्वे	८. आप सब की
नारायण	१. भगवान् की	उपारमत	११. बन्द कर दीजिये
भुज	२. भुजाओं की	विग्रहात् ॥	१०. आप युद्ध
आश्रयैः	३. छत्र-छाया में		

श्लोकार्थ—भगवान् की भुजाओं की छत्र-छाया में आपने अमृत प्राप्त किया है । लक्ष्मी जी ने आप सबकी अभिवृद्धि की है । आप युद्ध बन्द कर दीजिये ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—संयम्य मन्युसंरम्भं मानयन्तो मुनेर्वचः ।
उपगीयमानानुचरैर्ययुः सर्वे त्रिविष्टपम् ॥४५॥

पदच्छेद— संयम्य मन्यु संरम्भम् मानयन्तः मुनेः वचः ।
उपगीयमान अनुचरैः ययुः सर्वे त्रिविष्टपम् ॥

शब्दार्थ—

संयम्य	६.	शान्त कर लिया	उपगीयमान	११.	गान करने लगे
मन्यु	४.	उन्होंने क्रोध के	अनुचरैः	१०.	अनुचर उनका
संरम्भम्	५.	वेग को	ययुः	९.	चले गये
मानयन्तः	३.	स्वीकार करते हुये	सर्वे	७.	और सभी
मुनेः	१.	मुनि नारद के	त्रिविष्टपम् ॥	८.	स्वर्गलोक को
वचः ।	२.	वचनों को			

श्लोकार्थ— मुनि नारद के वचनों को स्वीकार करते हुये उन्होंने क्रोध के वेग को शान्त कर लिया। और सभी स्वर्गलोक को चले गये। अनुचर उनका गान करने लगे ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

येऽवशिष्टा रणे तस्मिन् नारदानुमतेन ते ।
बलिं विपन्नमादाय अस्तं गिरिमुपागमन् ॥४६॥

पदच्छेद— ये अवशिष्टाः रणे नारद अनुमतेन ते ।
बलिम् विपन्नम् आदाय अस्तम् गिरिम् उपागमन् ॥

शब्दार्थ—

ये	३.	जो दैत्य	बलिम्	९.	बलि को
अवशिष्टाः	४.	बचे	विपन्नम्	८.	घायल
रणे	२.	युद्ध में	आदाय	१०.	लेकर
तस्मिन्	१.	उस	अस्तम्	११.	अस्ताचल
नारद	६.	देवर्षि नारद की	गिरिम्	१२.	पर्वत की ओर
अनुमतेन	७.	सम्मति से	उपागमन् ॥	१३.	चले गये
ते ।	५.	वे सब			

श्लोकार्थ—उस युद्ध में जो दैत्य बचे, वे सब देवर्षि नारद की सम्मति से घायल बलि को लेकर अस्ताचल पर्वत की ओर चले गये ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

तत्राविनष्टावयवान् विद्यमानशिरोधरान् ।
उशना जीवयामास संजीविन्या स्वविद्यया ॥४७॥

पदच्छेद— अत्र अविनष्ट अवयवान् विद्यमान शिरोधरान् ।
उशना जीवयामास संजीविन्या स्व विद्यया ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ पर	उशना	२.	शुक्राचार्य ने
अविनष्ट	७.	नष्ट नहीं हुये थे	जीवयामास	१०.	उन्हें जीवित कर दिया
अवयवान्	६.	जिनके अंग	संजीविन्या	४.	संजीविनी
विद्यमान्	९.	नहीं कटे थे	स्व	३.	अपनी
शिरोधरान् ।	८.	और जिनके गरदन	विद्यया ॥	५.	विद्या से

श्लोकार्थ—वहाँ पर शुक्राचार्य ने अपनी संजीविनी विद्या से जिनके अंग नष्ट नहीं हुये थे और जिनके गरदन नहीं कटे थे, उन्हें जीवित कर दिया ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

बलिश्चोशनसा स्पृष्टः प्रत्यापन्नेन्द्रियस्मृतिः ।
पराजितोऽपि नाखिद्यल्लोकतत्त्वविचक्षणः ॥४८॥

पदच्छेद— बलिः च उशनसा स्पृष्टः प्रति आपन्न इन्द्रिय स्मृतिः ।
पराजितः अपि न अखिद्यत् लोकतत्त्व विचक्षणः ॥

शब्दार्थ—

बलिः	४.	बलि की	पराजितः	८.	वह पराजित होने पर
च	१.	और	अपि	९.	भी
उशनसा	२.	शुक्राचार्य के	न	१४.	नहीं हुआ
स्पृष्टः	३.	चरण का स्पर्श करते ही	अखिद्यत्	१३.	दुःखी
प्रति आपन्न	७.	संचार हो गया	लोक	१०.	संसार के
इन्द्रिय	५.	इन्द्रियों में	तत्त्व	११.	रहस्य को
स्मृतिः ।	६.	चेतना का	विचक्षणः ॥	१२.	जानने के कारण

श्लोकार्थ—और शुक्राचार्य के चरण का स्पर्श करते ही बलि की इन्द्रियों में चेतना का संचार हो गया । वह पराजित होने पर भी संसार के रहस्य को जानने के कारण दुःखी नहीं हुआ ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमे स्कन्धे
देवासुरसंग्रामे एकादशः अध्यायः ॥११॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

द्वादशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

वृषध्वजो निशम्येदं योषिद्रूपेण दानवान् ।

मोहयित्वा सुरगणान्हरिः सोममपाययत् ॥१॥

पदच्छेद— वृषध्वजः निशम्य इदम् योषित् रूपेण दानवान् ।
मोहयित्वा सुरगणान् हरिः सोमम् अपाययत् ॥

शब्दार्थ—

वृषध्वज	१.	शिव जी ने	मोहयित्वा	८.	मोहित करके
निशम्य	३.	सुनकर कि	सुर	९.	देव
इदम्	२.	यह	गणान्	१०.	गणों को
योषित्	५.	मोहिनी	हरिः	४.	श्रीहरि ने
रूपेण	६.	रूप बनाकर	सोमम्	११.	अमृत
दानवान् ।	७.	दैत्यों को	अपाययत् ॥	१२.	पिला दिया

श्लोकार्थ—शिवजी ने यह सुनकर कि श्री हरि ने मोहिनी रूप बना कर दैत्यों को मोहित करके देव गणों को अमृत पिला दिया ॥

द्वितीयः श्लोकः

वृषमारुह्य गिरिशः सर्वभूतगणैर्वृतः ।

सह देव्या ययौ द्रष्टुं यत्रास्ते मधुसूदनः ॥२॥

पदच्छेद— वृषम् आरुह्य गिरिशः सर्वभूत गणैः वृतः ।
सह देव्या ययौ द्रष्टुम् यत्र आस्ते मधुसूदनः ॥

शब्दार्थ—

वृषम्	३.	बैल पर	सह	२.	साथ
आरुह्य	४.	सवार होकर	देव्या	१.	तब सतीदेवी के
गिरिशः	५.	भगवान् शङ्कर	ययौ	११.	वहाँ गये
सर्व	६.	समस्त	द्रष्टुम्	१०.	उन्हें देखने के लिये
भूत	७.	भूत	यत्र	१२.	जहाँ
गणैः	८.	गणों से	आस्ते	१४.	निवास करते हैं
वृतः ।	९.	घिरे हुये	मधुसूदनः ॥	१३.	भगवान् मधुसूदन

श्लोकार्थ—तब सती देवी के साथ बैल पर सवार होकर भगवान् शङ्कर समस्त भूत गणों से घिरे हुये उन्हें देखने के लिये वहाँ गये जहाँ भगवान् मधुसूदन निवास करते हैं ॥

तृतीयः श्लोकः

सभाजितो भगवता सादरं सोमया भवः ।
सूपविष्ट उवाचेदं प्रतिपूज्य स्मयन्हरिम् ॥३॥

पदच्छेद— सभाजितः भगवता सादरम् सोमया भवः ।
सूपविष्टः उवाच इदम् प्रतिपूज्य स्मरन् हरिम् ॥

शब्दार्थ—

सभाजितः	५.	सत्कार किया	सूपविष्टः	६.	सुखपूर्वक बैठकर
भगवता	१.	भगवान् श्री हरि ने	उवाच	११.	कहा
सादरम्	२.	आदरपूर्वक	इदम्	१०.	कहा
सोमया	३.	उमा सहित	प्रतिपूज्य	८.	सम्मान करके
भवः ।	४.	शिवजी का	स्मयन्	९.	मुस्कराते हुये
			हरिम् ॥	७.	उन्होंने भी श्रीहरि का

श्लोकार्थ—भगवान् श्री हरि ने आदर पूर्वक उमा सहित शिवजी का सत्कार किया। सुख पूर्वक बैठकर उन्होंने भी श्री हरि का सम्मान करके मुसकराते हुये ऐसा कहा ॥

चतुर्थः श्लोकः

श्रीमहादेव उवाच—देवदेव जगद्व्यापिञ्जगदीश जगन्मय ।
सर्वेषामपि भावानां त्वमात्मा हेतुरीश्वरः ॥४॥

पदच्छेद— देवदेव जगत् व्यापिन् जगदीश जगन्मय ।
सर्वेषाम् अपि भावानाम् त्वम् आत्मा हेतुः ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

देवदेव	१.	हे देवों के आराध्य देव !	अपि	१२.	भी हैं
जगत्	२.	आप विश्व-	भावानाम्	७.	चराचर पदार्थों के
व्यापिन्	३.	व्यापी	त्वम्	८.	आप ही
जगदीश	४.	जगदीश्वर एवम्	आत्मा	११.	आत्मा
जगन्मय ।	५.	जगत्स्वरूप हैं	हेतुः	९.	मूल कारण
सर्वेषाम्	६.	समस्त	ईश्वरः ॥	१०.	ईश्वर और

श्लोकार्थ—हे देवों के आराध्य देव ! आप विश्व व्यापी जगदीश्वर एवम् जगत् स्वरूप हैं। समस्त चराचर पदार्थों के आप ही मूल कारण ईश्वर और आत्मा भी हैं

पञ्चमः श्लोकः

आद्यन्तावस्य　यन्मध्यमिदमन्यदहं　बहिः ।
यतोऽव्ययस्य नैतानि तत् सत्यं ब्रह्म चिद् भवान् ॥५॥

पदच्छेद— आदि अन्तौ अस्य यत् मध्यम् इदम् अन्यत् अहम् बहिः ।
यतः अव्ययस्य न एतानि तत् सत्यम् ब्रह्म चिद् भवान् ॥

शब्दार्थ—

आदि अन्तौ	२.	आदि-अन्त और	यतः	९.	क्योंकि
अस्य	१.	इस जगत् के	अव्ययस्य	१०.	अव्यय आत्मतत्त्व में,
यत्	४.	जिन आपसे होते हैं	न एतानि	११.	ये भेद नहीं है
मध्यम्	३.	मध्य	तत्	१३.	ऐसे
इदम्	५.	फिर भी ये	सत्यम्	१५.	सत्य
अन्यत्	६.	भिन्न हैं और	ब्रह्म	१६.	ब्रह्म तत्त्व हैं
अहम्	७.	आत्मतत्त्व भी	चित्त	१४.	चिन्मात्र
बहिः ।	८.	भिन्न ही है	भवान् ॥	१२.	आप

श्लोकार्थ—इस जगत् के आदि-अन्त और मध्य जिन आपसे होते हैं। फिर भी वे भिन्न हैं। और आत्म तत्त्व भी भिन्न ही है। क्योंकि अव्यय आत्म तत्त्व में ये भेद नहीं हैं आप ऐसे चिन्मात्र सत्य ब्रह्म तत्त्व हैं ॥

षष्ठः श्लोकः

तवैव चरणाम्भोजं श्रेयस्कामा निराशिषः ।
विसृज्योभयतः सङ्गं मुनयः समुपासते ॥६॥

पदच्छेद— तव एव चरण अम्भोजम् श्रेयस्कामाः निराशिषः ।
विसृज्य उभयतः सङ्गम् मुनयः समुपासते ॥

शब्दार्थ—

तव एव	७.	आपके ही	विसृज्य	६.	छोड़कर
चरण	८.	चरण	उभयतः	४.	दोनों लोकों की
अम्भोजम्	९.	कमलों की	सङ्गम्	५.	आसक्ति
श्रेयस्कामाः	१.	आत्मकल्याण चाहने वाले	मुनयः	३.	मुनि जन
निराशिषः ।	२.	निष्काम	समुपासते ॥	१०.	आराधना करते हैं

श्लोकार्थ—आत्म कल्याण चाहने वाले निष्काम मुनिजन दोनों लोकों की आसक्ति छोड़कर आपके ही चरण कमलों की आराधना करते हैं ॥

सप्तमः श्लोकः

त्वं ब्रह्म पूर्णममृतं विगुणं विशोकमानन्दमात्रमविकारमनन्यदन्यत् ।

विश्वस्य हेतुरुदयस्थितिसंयमानामात्मेश्वरश्च तदपेक्षतयानपेक्षः ॥७॥

पदच्छेद—त्वम् ब्रह्म पूर्णम् अमृतम् विगुणम् विशोकम् आनन्द मात्रम् अविकारम् अनन्यत् अन्यत् ।
विश्वस्य हेतुः उदयस्थिति संयमानाम् आत्मा ईश्वरः च तत् अपेक्षतया अनपेक्षः ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	१. आप	**विश्वस्य**	१०. आप विश्व की
ब्रह्म	७. ब्रह्म हैं	**हेतुः**	१३. मूल कारण हैं
पूर्णम्	६. पूर्ण	**उदयस्थिति**	११. उत्पत्ति-स्थिति और
अमृतम्	२. अमृत स्वरूप	**संयमानाम्**	१२. प्रलय के
विगुणम्	३. निर्गुण	**आत्मा**	१६. उनका स्वरूप तथा
विशोकम् आनन्द	४. शोक रहित केवल आनन्द	**ईश्वरः**	१७. स्वामी है, किन्तु
मात्रम् अविकारम्	५. स्वरूप निर्विकार	**च तत्**	१४. और जीवों की
अनन्यत्	८. जगत् आप में है, पर	**अपेक्षतया**	१५. अपेक्षा से
अन्यत्	९. आप जगत् से भिन्न हैं	**अनपेक्षः ॥**	१८. स्वयं अपेक्षा रहित हैं

श्लोकार्थ—आप अमृत स्वरूप, निर्गुण, शोक रहित, केवल आनन्द स्वरूप, निर्विकार, पूर्ण ब्रह्म हैं । जगत् आप में है पर आप जगत् से भिन्न हैं । आप विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के मूल कारण हैं । और जीवों की अपेक्षा से उनका स्वरूप तथा स्वामी हैं । किन्तु स्वयं अपेक्षा रहित है ॥

अष्टमः श्लोकः

एकस्त्वमेव सदसद् द्वयमद्वयं च स्वर्णं कृताकृतमिवेह न वस्तुभेदः ।
अज्ञानतस्त्वयि जनैर्विहितो विकल्पो यस्माद् गुणैर्व्यतिकरो निरुपाधिकस्य ॥८॥

पदच्छेद— एकः त्वमेव सद असत् द्वयम् अद्वयम् च स्वर्णम् कृत अकृतम् इव इह न वस्तु भेदः ।
अज्ञानतः त्वयि जनैः विहितः विकल्पः यस्मात् गुणैः व्यतिकरः निरुपाधिकस्य ॥

शब्दार्थ—

एकः त्वम्	१. एक आप	वस्तुभेदः ।	९. कोई तात्त्विक भेद
एव सद्	२. ही कार्य	अज्ञानतः	११. अज्ञान के कारण
असद् द्वयम्	३. कारण द्वैत	त्वयि जनैः	१२. आप में लोगों ने
अद्वयम्	५. अद्वैत हैं	विहितः	१४. कल्पित कर लिये हैं
च	४. और	विकल्पः	१३. भेद
स्वर्णम्	७. आभूषणों और	यस्मात्	१५. क्योंकि आपके
कृत	६. बने हुये	गुणैः	१७. गुणों के कारण
अकृतम् इव	८. मूल स्वर्ण के समान	व्यतिकरः	१८. भेद की प्रतीति हो रही है
इह न	१०. आप में नहीं हैं	निरुपाधिकस्य ॥	१६. उपाधि रहित होने पर भी

श्लोकार्थ—एक आप ही कार्य, कारण, द्वैत और अद्वैत हैं। बने हुये आभूषणों और मूल स्वर्ण के समान कोई तात्त्विक भेद आप में नहीं है। अज्ञान के कारण आप में लोगों ने भेद कल्पित कर लिये हैं। क्योंकि आपके उपाधि रहित होने पर भी गुणों के कारण भेद की प्रतीति हो रही है ॥

नवमः श्लोकः

त्वां ब्रह्म केचिदवयन्त्युत धर्ममेके एके परं सदसतोः पुरुषं परेशम् ।
अन्येऽवयन्ति नवशक्तियुतं परं त्वां केचिन्महापुरुषमव्ययमात्मतन्त्रम् ॥९॥

पदच्छेद— त्वाम् ब्रह्म केचित् अवयन्ति उत धर्मम् एके परम् सत्-असतोः पुरुषम् परेशम् ।
अन्ये अवयन्ति नवशक्ति युतम् परम् त्वाम् केचित् महापुरुषम् अव्ययम् आत्मतन्त्रम् ॥

शब्दार्थ—

त्वाम् ब्रह्म	२. आपको ब्रह्म	अन्ये	१०. अन्य कुछ लोग
केचित्	१. कुछ लोग	अवयन्ति	१४. मानते हैं
अवयन्ति उत	३. समझते हैं तो	नवशक्ति	१२. विमलादि नौशक्तियों से
धर्मम्	५. धर्म और	युतम् परम्	१३. युक्त परम पुरुष
एके	४. कुछ लोग	त्वाम्	११. आपको
एके	६. अन्य कुछ लोग	केचित्	१५. अन्य कुछ लोग
परम्	८. परे	महापुरुषम्	१८. पुरुष विशेष मानते हैं
सत्-असतोः	७. सत् और असत् से	अव्ययम्	१६. आपको अविनाशी
पुरुषम् परेशम् ।	९. परम पुरुष मानते हैं	आत्मतन्त्रम् ॥	१७. परम स्वतन्त्र

श्लोकार्थ—कुछ लोग आपको ब्रह्म समझते हैं । तो कुछ लोग धर्म और अन्य कुछ लोग सत् असत् से परे परम पुरुष मानते हैं । अन्य कुछ लोग आपको विमलादि नौशक्तियों से युक्त परम पुरुष मानते हैं । अन्य कुछ लोग आपको अविनाशी परम स्वतन्त्र पुरुष विशेष मानते हैं ॥

दशमः श्लोकः

नाहं परायुर्ऋषयो न मरीचिमुख्या जानन्ति यद्विरचितं खलु सत्त्वसर्गाः ।
यन्मायया मुषितचेतस ईश दैत्यमर्त्यादयः किमुत शश्वदभद्रवृत्ताः ॥१०॥

पदच्छेद— न अहम् परायुः ऋषयः न मरीचि मुख्याः जानन्ति यत् विरचितम् खलु सत्त्वसर्गाः ।
यत् मायया मुषितचेतसः ईश दैत्य मर्त्य आदयः किमुत शश्वद् अभद्र वृत्ताः ॥

शब्दार्थ—

न अहम्	३. न मैं	यत् मायया	१४. आपकी माया के द्वारा
परायुः	४. ब्रह्मा और	मुषित चेतसः	१५. चुराये गये चित्त वाले
ऋषयः	६. ऋषिगण	ईश	१. हे प्रभो !
न	९. रहस्य तक नहीं	दैत्य मर्त्यं	१६. दैत्यों और मनुष्यों
मरीचि मुख्याः	५. मरीचि आदि	आदयः	१७. आदि की तो
जानन्ति	१०. जानते हैं फिर	किमुत	१८. गिनती ही क्या है
यत् विरचितम्	७. आपके द्वारा निर्मित	शश्वद्	११. निरन्तर
खलु	२. निश्चित ही	अभद्र	१२. रजोगुणी और तमोगुणी
सत्त्वसर्गाः ।	८. आपकी रजोगुणी सृष्टिका	वृत्ताः ॥	१३. कर्म करने वाले

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! निश्चित ही न मैं, ब्रह्मा और मरीचि आदि ऋषिगण आपके द्वारा निर्मित आपकी रजोगुणी सृष्टि का रहस्य तक नहीं जानते हैं। फिर निरन्तर रजोगुणी और तमोगुणी कर्म करने वाले आपकी माया के द्वारा चुराये गये चित्त वाले दैत्यों और मनुष्यों आदि की तो गिनती ही क्या है ॥

एकादशः श्लोकः

स त्वं समीहितमदः स्थितिजन्मनाशं भूतेहितं च जगतो भवबन्धमोक्षौ।
वायुर्यथा विशति खं च चराचराख्यं सर्वं तदात्मकतयावगमोऽवरुन्त्से ॥११॥

पदच्छेद— सः त्वम् समीहितम् अदः स्थिति जन्म नाशम् भूत ईहितम् च जगतः भव बन्धमोक्षौ ।
वायुः यथा विशति खम् च चर अचर आख्यम् सर्वं तत् आत्मकतया अवगमः अवरुन्त्से ॥

शब्दार्थ—

सः त्वम्	१.	हे प्रभो ! आप	वायुः यथा	११.	वायु जैसे
समीहितम् अदः	२.	अपने द्वारा रचित इस	विशति	१३.	प्रवेश करता है वैसे ही
स्थिति, जन्म	४.	स्थिति-उत्पत्ति	खम्	१२.	आकाश में
नाशम्	६.	नाश तथा	च	१०.	और
भूत ईहितम्	७.	प्राणियों के कर्म तथा	चर-अचर	१६.	चर-अचर
च	५.	और	आख्यम् सर्वम्	१७.	नामक इस सबको
जगतः	३.	संसार को	तत् आत्मकतया	१४.	जगत् स्वरूप होने तथा
भवबन्ध	८.	संसार के बन्धन और	अवगमः	१५.	ज्ञान स्वरूप होने के कारण आप
मोक्षौ ।	९.	मोक्ष को जानते हैं	अवरुन्त्से ॥	१८	जानते हो ।

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आप अपने द्वारा रचित इस संसार को स्थिति-उत्पत्ति, नाश, प्राणियों के कर्म, संसार के बन्धन और मोक्ष को जानते हैं। और वायु जैसे आकाश में प्रवेश करता है। वैसे ही जगत् स्वरूप होने तथा ज्ञान स्वरूप होने के कारण आप चर-अचर नामक इस सब को जानते है ॥

द्वादशः श्लोकः

अवतारा मया दृष्टा रममाणस्य ते गुणैः ।
सोऽहं तद् द्रष्टुमिच्छामि यत् ते योषिद्वपुर्धृतम् ॥१२॥

पदच्छेद— अवताराः मया दृष्टाः रममाणस्य ते गुणैः ।
सः अहम् तत् द्रष्टुम् इच्छामि यत् ते योषित् वपुधृतम् ॥

शाब्दर्थ—

अवताराः	४.	अवतारों को	तत्	९.	आपके उस रूप को
मया	५.	मैंने	द्रष्टुम्	१०.	देखना
दृष्टाः	६.	देखा है	इच्छामि	११.	चाहता हूँ
रममाणस्य	२.	रमण करते हुये	यत्	१२.	जिसे
ते	३.	आपके द्वारा धारण किये	ते	१३.	आपने
गुणैः ।	१.	गुणों में	योषित्	१४.	स्त्री
सः	७.	सो	वपुः	१५.	रूप में
अहम्	८.	मैं	धृतम् ॥	१६.	धारण किया है

श्लोकार्थ—गुणों में रमण करते हुये आपके द्वारा धारण किये अवतारों को मैंने देखा है। सो मैं आपके उस रूप को देखना चाहता हूँ। जिसे आपने स्त्री रूप में धारण किया था।

त्रयोदशः श्लोकः

येन सम्मोहिता दैत्याः पायिताश्चामृतं सुराः ।
तद्दिदृक्षव आयाताः परं कौतूहलं हि नः ॥१३॥

पदच्छेद— येन सम्मोहिताः दैत्याः पायिताः च अमृतम् सुराः ।
तत् दिदृक्षवः आयाताः परम् कौतूहलम् हि नः ॥

शब्दार्थ—

येन	२.	जिससे	तत्	८.	उसी को
सम्मोहिताः	४.	मोहित करके	दिदृक्षवः	९.	देखने के लिये
दैत्याः	३.	दैत्यों को	आयाताः	१०.	हम आये हैं क्योंकि
पायिताः	७.	पिलाया	परम्	१३.	अत्यधिक
च	१.	और	कौतूहलम्	१४.	कौतूहल है
अमृतम्	६.	अमृत	हि	१२.	निश्चित ही
सुराः ।	५.	आपने देवों को	नः ॥	११.	हमारे मन में

श्लोकार्थ—और जिससे दैत्यों को मोहित करके आपने देवों को अमृत पिलाया, उसी को देखने के लिये हम आये हैं। क्योंकि हमारे मन में निश्चित ही अत्यधिक कौतूहल है ॥

चतुर्दशः श्लोकः

एवमभ्यर्थितो विष्णुर्भगवान् शूलपाणिना ।
प्रहस्य भावगम्भीरं गिरिशं प्रत्यभाषत ॥१४॥

पदच्छेद— एवम् अभ्यर्थितः विष्णुः भगवान् शूलपाणिना ।
प्रहस्य भाव गम्भीरम् गिरिशम् प्रत्यभाषत ॥

शब्दार्थ—

एवम्	४.	इस प्रकार	प्रहस्य	८.	हंसकर
अभ्यर्थितः	५.	प्रार्थना की तो वे	भाव	७.	भाव से
विष्णुः	३.	विष्णु भगवान् से	गम्भीरम्	६.	गम्भीर
भगवान्	१.	जब भगवान्	गिरिशम्	९.	शङ्कर जी से
शूलपाणिना ।	२.	शङ्कर ने	प्रत्यभाषत ॥	१०.	बोले

श्लोकार्थ—जब भगवान् शङ्कर ने विष्णु भगवान् से इस प्रकार प्रार्थना की तो वे गम्भीर भाव से हंसकर शङ्कर जी से बोले ॥

पञ्चदशः श्लोकः

कौतूहलाय दैत्यानां योषिद्वेषो मया कृतः।
पश्यता सुरकार्याणि गते पीयूषभाजने ॥१५॥

पदच्छेद— कौतूहलाय दैत्यानाम् योषित् वेषः मया कृतः।
पश्यता सुर कार्याणि गते पीयूष भाजने ॥

शब्दार्थ—

कौतूहलाय	८.	कौतूहल के लिये ही	पश्यता	६.	देखते हुये
दैत्यानाम्	७.	दैत्यों के	सुर	४.	देव
योषित्	१०.	स्त्री का	कार्याणि	५.	कार्य को
वेषः	११.	रूप	गते	३.	विषयक
मया	९.	मैंने	पीयूष	१.	अमृत
कृतः।	१२.	धारण किया था	भाजने॥	२.	कलश

श्लोकार्थ—अमृत कलश विषयक देव कार्य को देखते हुये दैत्यों के कौतूहल के लिये ही मैंने स्त्री का रूप धारण किया था॥

षोडशः श्लोकः

तत्तेऽहं दर्शयिष्यामि दिदृक्षोः सुरसत्तम।
कामिनां बहु मन्तव्यं संकल्पप्रभवोदयम् ॥१६॥

पदच्छेद— तत् ते अहम् दर्शयित्वा दिदृक्षोः सुरसत्तम।
कामिनाम् बहु मन्तव्यम् सङ्कल्प प्रभव उदयम् ॥

शब्दार्थ—

तत्	२.	वह रूप	कामिनाम्	७.	जो कामियों का
ते	५.	आपको	बहु	८.	अत्यन्त
अहम्	३.	मैं	मन्तव्यम्	९.	आदरणीय है (क्योंकि)
दर्शयित्वा	६.	दिखाऊँगा	सङ्कल्प	१०.	काम
दिदृक्षोः	४.	देखने की इच्छा वाले	प्रभव	११.	भाव को
सुरसत्तम।	१.	हे देव शिरोमणे !	उदयम्॥	१२.	उत्तेजित करने वाला है

श्लोकार्थ—हे देव शिरोमणे ! वह सब मैं देखने की इच्छा वाले आपको दिखाऊँगा। जो कामियों का अत्यन्त आदरणीय है। क्योंकि काम-भाव को उत्तेजित करने वाला है।

सप्तदशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इति ब्रुवाणो भगवांस्तत्रैवान्तरधीयत ।
सर्वतश्चारयंश्चक्षुर्भव आस्ते सहोमया ॥१७॥

पदच्छेद— इति ब्रुवाणः भगवान् तत्र एव अन्तरधीयत ।
सर्वतः चारयन् चक्षुः भवः आस्ते सह उमया ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	ऐसा	चारयन्	११.	दौड़ाते हुये
ब्रुवाणः	२.	कहते हुये	चक्षुः	१०.	दृष्टि
भगवान्	३.	भगवान् विष्णु	भवः	८.	भगवान् शङ्कर
तत्र एव	४.	वहीं	आस्ते	१२.	वहीं बैठे रहे
अन्तरधीयत ।	५.	अन्तर्ध्यान हो गये	सह	७.	साथ
सर्वतः	९.	सब ओर	उमया ॥	६.	तब सती जी के

श्लोकार्थ—ऐसा कहते हुये भगवान् शङ्कर वहीं अन्तर्धान हो गये। तब सती जी के साथ भगवान् शङ्कर सब ओर दृष्टि दौड़ाते हुये वहीं बैठे रहे।

अष्टादशः श्लोकः

ततो ददर्शोपवने वरस्त्रियं विचित्रपुष्पारुणपल्लवद्रुमे ।
विक्रीडतीं कन्दुकलीलया लसद् दुकूलपर्यस्तनितम्बमेखलाम् ॥१८॥

पदच्छेद— ततः ददर्श उपवने वरस्त्रियम् विचित्र पुष्प अरुण पल्लव द्रुमे ।
विक्रीडतीं कन्दुक लीलया लसत् दुकूल पर्यस्त नितम्ब मेखलाम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तत्पश्चात् उन्होंने	विक्रीडति	११.	खेल रही थी और
ददर्श	८.	देखा	कन्दुक	१०.	गेंद से
उपवने	६.	उपवन में	लीलया	९.	जो लीला पूर्वक
वरस्त्रियम्	७.	एक सुन्दर स्त्री को	लसत्	१६.	सुशोभित हो रही थी
विचित्र	२.	नाना प्रकार के	दुकूल	१२.	जिसके रेशमी साड़ी से
पुष्प अरुण	३.	पुष्पों और लाल-लाल	पर्यस्त	१३.	युक्त
पल्लव	४.	पल्लवों वाले	नितम्ब	१४.	नितम्बों पर
द्रुमे ।	५.	वृक्षों से युक्त	मेखलाम् ॥	१५.	करधनी

श्लोकार्थ—तत्पश्चात् उन्होने नाना प्रकार के पुष्पों और लाल-लाल पल्लवों वाले वृक्षों से युक्त उपवन में एक सुन्दर स्त्री को देखा, जो लीलापूर्वक गेंद से खेल रही थी और जिसके रेशमी साड़ी से युक्त नितम्बों पर करधनी सुशोभित हो रही थी ॥

एकोनविंशः श्लोकः

आवर्तनोद्वर्तनकम्पितस्तनप्रकृष्टहारोरुभरैः पदे पदे ।
प्रभज्यमानामिव मध्यतश्चलत् पदप्रवालं नयतीं ततस्ततः ॥१९॥

पदच्छेद— आवर्तन उद्वर्तन कम्पित स्तन प्रकृष्ट हार उरुभरैः पदेपदे ।
प्रभज्य मानाम् इव मध्यतः चलत् पद प्रवालम् नयतीम् ततः ततः ॥

शब्दार्थ—

आवर्तन	२. पकड़ने से	प्रभज्यमानाम्	११. टूटती-टूटती
उद्वर्तन	१. गेंद उछालने और	इव	१२. सी लगती थी । वह
कम्पित	३. हिलते हुये	मध्यतः	९. उसकी कमर
स्तन	४. स्तनों और	चलत्	८ चलते हुये
प्रकृष्ट	५. बड़े	पद	१४. चरणों से
हार	६. हार के	प्रवालम्	१३. पल्लव के समान
उरुभरैः	७. अत्यन्त भार के कारण	नयतीम्	१६. चल रही थी
पदे-पदे ।	१०. पग-पग पर	ततः ततः ॥	१५. इधर-उधर

श्लोकार्थ—गेंद उछालने और पकड़ने से हिलते हुये स्तनों और बड़े हार के अत्यन्त भार के कारण चलते हुये उसकी कमर पग-पग पर टूटती-टूटती सी लगती थी । वह लाल पल्लव के समान चरणों से इधर-उधर चल रही थी ।

विंशः श्लोकः

दिक्षु भ्रमत्कन्दुकचापलैर्भृशं प्रोद्विग्नतारायतलोललोचनाम् ।
स्वकर्णविभ्राजितकुण्डलोल्लसत् कपोलनीलालकमण्डितननाम् ॥२०॥

पदच्छेद— दिक्षु भ्रमत् कन्दुक चापलैः भृशम् प्रोद्विग्न तारा आयतलोल लोचनाम् ।
स्वकर्ण विभ्राजित कुण्डल उल्लसत् कपोलनील अलक मण्डित आननाम् ॥

शब्दार्थ —

दिक्षु	१. दिशाओं में	स्वकर्ण	१०. अपने कानों में धारण किये
भ्रमत्	२. जाते हुये	विभ्राजित	१८. बड़ा सुन्दर था
कन्दुक	३. गेंद की	कुण्डलः	१२. कुण्डलों से युक्त
चापलैः	४. चंचलता के कारण	उल्लसत्	११. हिलते हुये
भृशम्	८. अत्यन्त	कपोल	१३. उसके गालों पर आई हुई
प्रोद्विग्न	९. चंचल हो उठते थे	नील	१४. काली
तारा	७. तारे	अलक	१५. घुंघराली लटों से
आयतलोल	५. उसके चौड़े और लाल रंग के	मण्डित	१६. सुशोभित
लोचनाम् ।	६. नेत्रों में स्थित	आननाम् ॥	१७. उसका मुख

श्लोकार्थ—दिशाओं में जाते हुये गेंद की चंचलता के कारण उसके चौड़े और लाल रंग के नेत्रों में स्थित तारे अत्यन्त चंचल हो उठते थे । अपने कानों में धारण किये हिलते हुये कुण्डलों से युक्त उसके गालों पर आई हुई काली घुंघराली लटों से सुशोभित उसका मुख बड़ा सुन्दर था ॥

एकविंशः श्लोकः

श्लथद् दुकूलं कबरीं च विच्युतां सन्नह्यतीं वामकरेण वल्गुना ।
विनिघ्नतीमन्यकरेण कन्दुकं विमोहयन्तीं जगदात्ममायया ॥२१॥

पदच्छेद— **श्लथद दुकूलम् कबरीम् च विच्युताम् सन्नह्यतीम् वामकरेण वल्गुना ।**
विनिघ्नतीम् अन्यकरेण कन्दुकम् विमोहयन्तीम् जगत् आत्म मायया ॥

शब्दार्थ—

श्लथद्	१.	खुली हुई	**विनिघ्नतीम्**	१०.	उछालती हुई
दुकूलम्	२.	साड़ी	**अन्यकरेण**	८.	दाहिने हाथ से
कबरीम्	४.	वेणी को	**कन्दुकम्**	९.	गेंद को
च विच्युताम्	३.	और खुलती हुई	**विमोहयन्तीम्**	१४.	मोहित कर रही थी
सन्नह्यतीम्	७.	सम्हाल रही थी (तथा)	**जगत्**	११.	वह समस्त जगत् को
वामकरेण	६.	बायें हाथ से	**आत्म**	१२.	अपनी
वल्गुना ।	५.	अत्यन्त सुकुमार	**मायया ॥**	१३.	माया से

श्लोकार्थ—वह खुली हुई साड़ी और खुलती हुई वेणी को अत्यन्त सुकुमार बायें हाथ से सम्हाल रही थी । दाहिने हाथ से गेंद उछालती हुई वह समस्त जगत् को अपनी माया से मोहित कर रही थी ।

द्वाविंशः श्लोकः

तां वीक्ष्य देव इति कन्दुकलीलयेषद् व्रीडास्फुटस्मितविसृष्टकटाक्षमुष्टः ।
स्त्रीप्रेक्षणप्रतिसमीक्षणविह्वलात्मा नात्मानमन्तिक उमां स्वगणांश्च वेद ॥२२॥

पदच्छेद—**ताम् वीक्ष्य देव इति कन्दुकलीलया ईषत् व्रीडास्फुटस्मितविसृष्टकटाक्ष मुष्टः ।**
स्त्रीप्रेक्षण प्रति समीक्षणविह्वल आत्मा न आत्मानम् अन्तिके उमाम् स्वगणान् च वेद ॥

शब्दार्थ—

ताम्	३.	उसने	**मुष्टः ।**	१०.	चुरा लिया
वीक्ष्य	९.	देखकर (उनका मन)	**स्त्रीप्रेक्षण**	११.	मोहिनी को निहारने और
देव	८.	भगवान् शिवजी को	**प्रति समीक्षण**	१२.	उसके देखने से
इति कन्दुक	१.	इस प्रकार कन्दुक	**विह्वल आत्मा**	१३.	विह्वल हुये मनवाले शिवजी
लीलया	२.	क्रीडा करती हुई	**न आत्मानम्**	१४.	न तो स्वयं को
ईषत् व्रीडास्फुट	४.	तनिक सलज्जभाव से	**अन्तिकम्**	१५.	न पास बैठी सती जी को
स्मित	५.	मुसकरा कर	**स्वगणान्**	१७.	न अपने गणों को ही
विसृष्ट	७.	चितवन से	**च**	१६.	और
कटाक्ष	६.	तिरछी	**वेद ॥**	१८.	जान सके

श्लोकार्थ—इस प्रकार कन्दुक क्रीडा करती हुई उसने तनिक सलज्ज भाव से मुसकराकर तिरछी चितवन से भगवान् शिवजी को देखकर उनका मन चुरा लिया । मोहिनी को निहारने और उसके देखने से विह्वल हुये मन वाले शिवजी न तो स्वयं को, न पास बैठी सती को और न अपने गणों को ही जान सके ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

तस्याः कराग्रात् स तु कन्दुको यदा गतो विदूरं तमनुव्रजत्स्त्रियाः ।
वासः ससूत्रं लघु मारुतोऽहरद् भवस्य देवस्य किलानुपश्यतः ॥२३॥

पदच्छेद— तस्याः कराग्रात् सः तु कन्दुकः यदा गतः विदूरम् तम् अनुव्रजत् स्त्रियाः ।
वासः ससूत्रम् लघु मरुतः अहरत् भवस्य देवस्य किल अनुपश्यतः ॥

शब्दार्थ—

तस्याः	१.	उस मोहिनी के	वासः	१७.	साड़ी
कराग्रात्	२.	हाथ से	ससूत्रम्	१५.	करधनी सहित उसकी
सः तु कन्दुकः	३.	वह गेंद	लघु	१६.	झीनी
यदा	४.	जब उछल कर	मरुतः	१४.	वायु ने
गतः	६.	चली गई तो	अहरत्	१८.	ऊपर उठा दी
विदूरम्	५.	दूर	भवस्य	१२.	शङ्कर जी के
तम्	८.	उसका	देवस्य	११.	भगवान्
अनुव्रजत्	९.	पीछा करने लगी	किल	१०	तब निश्चय ही
स्त्रियाः ।	७.	वह स्त्री भी	अनुपश्यतः ॥	१३.	देखते-देखते

श्लोकार्थ—मोहिनी के हाथ से वह गेंद जब उछलकर दूर चली गई तो वह स्त्री भी उसका पीछा करने लगी । तब निश्चय ही भगवान् शङ्कर जी के देखते-देखते वायु ने करधनी सहित उसकी झीनी साड़ी ऊपर उठा दी ।।

चतुर्विंशः श्लोकः

एवं तां रुचिरापाङ्गीं दर्शनीयां मनोरमाम् ।
दृष्ट्वा तस्यां मनश्चक्रे विषज्जन्त्यां भवः किल ॥२४॥

पदच्छेद— एवम् ताम् रुचिर अपाङ्गीम् दर्शनीयाम् मनोरमाम् ।
दृष्ट्वा तस्याम् मनः चक्रे विषज्जन्त्याम् भवः किल ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	दृष्ट्वा	७.	देखकर
ताम्	६.	उस स्त्री को	तस्याम्	१२.	उसके प्रति खिंच
रुचिर	२.	रुचिकर	मनः	१०.	मन
अपाङ्गीम्	३.	अङ्ग-प्रत्यङ्ग वाली	चक्रे	१३.	गया
दर्शनीयाम्	४.	अति सुन्दर	विषज्जन्त्याम्	११.	आसक्त प्रतीत होती हुई
मनोरमाम्	५.	मनोरमा	भवः	९.	भगवान् शिवजी का
			किल ॥	८.	निश्चय ही

श्लोकार्थ—इस प्रकार रुचिकर अङ्ग-प्रत्यङ्ग वाली अति सुन्दर मनोरमा उस स्त्री को देखकर निश्चय ही भगवान् शिव जी का मन आसक्त प्रतीत होता हुआ उसके प्रति खिंच गया ।।

पञ्चविंशः श्लोकः

तयापहृतविज्ञानस्तत्कृतस्मरविह्वलः ।
भवान्या अपि पश्यन्त्या गतह्रीस्तत्पदं ययौ ॥२५॥

पदच्छेद— तया अपहृत विज्ञानः तत् कृत स्मर विह्वलः ।
भवान्याः अपि पश्यन्त्याः गतह्रीः तत्पदम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

तया	१.	उसने (शिवजी का)	भवान्याः	८.	भवानी के
अपहृत	३.	छीन लिया	अपि	१०.	भी
विज्ञानः	२.	विवेक	पश्यन्त्याः	९.	देखने पर
तत्	४.	वे उसके	गत	१२.	छोड़कर
कृत	५.	हाव-भाव से	ह्रीः	११.	लज्जा
स्मर	६.	कामातुर होकर	तत्पदम्	१३.	उसके पीछे-पीछे
विह्वलः ।	७.	विह्वल हो गये (और)	ययौ ॥	१४.	चल पड़े

श्लोकार्थ—उसने शिवजी का विवेक छीन लिया । वे उसके हाव-भाव से कामातुर होकर विह्वल हो गये । और भवानी के देखने पर भी लज्जा छोड़कर उसके पीछे चल पड़े ॥

षडविंशः श्लोकः

सा तमायान्तमालोक्य विवस्त्रा व्रीडिता भृशम् ।
निलीयमाना वृक्षेषु हसन्ती नान्वतिष्ठत ॥२६॥

पदच्छेद— सा तम् आयान्तम् आलोक्य विवस्त्रा व्रीडिता भृशम् ।
निलीयमाना वृक्षेषु हसन्ती न अन्वतिष्ठत् ॥

शब्दार्थ—

सा	१.	मोहिनी	भृशम् ।	६.	अत्यधिक
तम्	२.	उन्हें	निलीयमाना	१०.	छिपती हुई
आयान्तम्	३.	आते हुये	वृक्षेषु	९.	वृक्षों में
आलोक्य	४.	देखकर	हसन्ती	८.	वह हँसती हुई
विवस्त्रा	५.	वस्त्र हीन होने के कारण	न	११.	नहीं
व्रीडिता	७.	लज्जित हुई	अन्वतिष्ठत् ॥	१२.	एक जगह ठहरती थी ।

श्लोकार्थ—मोहिनी उन्हें आते हुये देखकर वस्त्रहीन होने के कारण अत्यधिक लज्जित हुई । वह हँसती हुई वृक्षों में छिपती हुई एक जगह नहीं ठहरती थी ॥

सप्तविंशः श्लोकः

तामन्वगच्छद् भगवान् भवः प्रमुषितेन्द्रियः ।

कामस्य च वशं नीतः करेणुमिव यूथपः ॥२७॥

पदच्छेद— ताम् अन्वगच्छत् भगवान् भवः प्रमुषित इन्द्रियः ।
कामस्य च वशम् नीतः करेणुम् इव यूथपः ॥

शब्दार्थ—

ताम्	१.	उसका	कामस्य	११.	वे काम के
अनुअगच्छत्	२.	पीछा करते हुये	च	७.	और
भगवान्	३.	भगवान्	वशम्नीतः	१२.	वश में हो गये
भवः	४.	शिव जी की	करेणुम्	८.	हथिनी के
प्रमुषित	६.	वश में नहीं रहीं	इव	१०.	समान
इन्द्रियः ।	५.	इन्द्रियाँ	यूथपः ॥	९.	पीछे लगे हाथी के

श्लोकार्थ—उसका पीछा करते हुये भगवान् शिव जी की इन्द्रियाँ वश में नहीं रहीं और हथिनी के पीछे लगे हाथी के समान वे काम के वश में हो गये ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

सोऽनुव्रज्यातिवेगेन गृहीत्वानिच्छतीं स्त्रियम् ।

केशबन्ध उपानीय बाहुभ्यां परिषस्वजे ॥२८॥

पदच्छेद— सः अनुव्रज्य अतिवेगेन गृहीत्वा अनिच्छतीम् स्त्रियम् ।
केशबन्धे उपानीय बाहुभ्याम् परिषस्वजे ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	उन्होंने	स्त्रियम् ।	७.	उसी स्त्री के
अनुव्रज्य	४.	उसका पीछा करके	केशबन्धे	५.	उसका जूड़ा
अति	२	अत्यन्त	उपानीय	९.	पास खींच कर
वेगेन	३.	वेग से	बाहुभ्याम्	१०.	उसे भुजाओं में भर कर
गृहीत्वा	६.	पकड़ कर	परिषस्वजे ॥	११.	आलिङ्गन किया
अनिच्छतीम्	८.	न चाहने पर भी			

श्लोकार्थ—उन्होंने अत्यन्त वेग से उसका पीछा करके उसका जूड़ा पकड़ कर उस स्त्री के न चाहने पर भी पास खींच कर उसे भुजाओं में भर कर आलिङ्गन किया ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

सोपगूढा भगवता करिणा करिणी यथा ।
इतस्ततः प्रसर्पन्ती विप्रकीर्णशिरोरुहा ॥२९॥

पदच्छेद— सा उपगूढा भगवता करिणा करिणी यथा ।
इतः ततः प्रसर्पन्ती विप्रकीर्ण शिरोरुहा ॥

शब्दार्थ—

सा	६.	वह	इतः	९.	इधर
उपगूढा	५.	आलिङ्गन की गई	ततः	१०.	उधर
भगवता	४.	शिव जी के द्वारा	प्रसर्पन्ती	११.	खिसकने लगी
करिणा	१.	हाथी के द्वारा	विप्रकीर्ण	८.	फैला कर
करिणी	२.	हथिनी के	शिरोरुहा ॥	७.	केशों को
यथा ।	३.	समान			

श्लोकार्थ—हाथी के द्वारा हथिनी के समान शिव जी के द्वारा आलिङ्गन की गई वह केशों को फैला कर इधर-उधर खिसकने लगी ॥

त्रिंशः श्लोकः

आत्मानं मोचयित्वाङ्ग सुरर्षभभुजान्तरात् ।
प्राद्रवत्सा पृथुश्रोणी माया देवविनिर्मिता ॥३०॥

पदच्छेद— आत्मानम् मोचयित्वा अङ्ग सुरर्षभ भुज अन्तरात् ।
प्राद्रवत् सा पृथुश्रोणी माया देव विनिर्मिता ॥

शब्दार्थ—

आत्मानम्	१०.	अपने को	प्राद्रवत्	१२.	भागना शुरू किया
मोचयित्वा	११.	छुड़ा कर	सा	५.	उस
अङ्ग	१.	हे राजन् !	पृथुश्रोणी	६.	स्थूल नितम्बों वाली स्त्री ने
सुरर्षभ	७.	शिव जी की	माया	४.	माया रूप
भुज	८.	भुजाओं के	देव	२.	भगवान् की
अन्तरात् ।	९.	बीच से	विनिर्मिता ॥	३.	रची हुई

श्लोकार्थ—हे राजन् ! भगवान् की रची हुई माया रूप, उस स्थूल नितम्बों वाली स्त्री ने शिव जी की भुजाओं के बीच से अपने को छुड़ा कर भागना शुरू किया ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

तस्यासौ पदवीं रुद्रो विष्णोरद्भुतकर्मणः ।
प्रत्यपद्यत कामेन वैरिणेव विनिर्जितः ॥३१॥

पदच्छेद— तस्य असौ पदवीम् रुद्रः विष्णोः अद्भुतकर्मणः ।
प्रतिअपद्यत कामेन वैरिणा इव विनिर्जितः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	२. उस	कर्मणः ।	५. कर्मा
असौ	३. मोहिनी वेषधारी	प्रतिअपद्यत	८. दौड़ने लगे
पदवीम्	७. पीछे-पीछे	कामेन	११. कामदेव ने उन्हें
रुद्रः	१. भगवान् शङ्कर भी	वैरिणा	१०. शत्रु
विष्णोः	६. भगवान् विष्णु के	इव	९. मानों
अद्भत	४. अद्भुत	विनिर्जितः ॥	१२. जीत लिया हो

श्लोकार्थ—भगवान् शङ्कर भी उस मोहिनी वेषधारी अद्भुत कर्मा भगवान् विष्णु के पीछे-पीछे दौड़ने लगे । मानों शत्रु कामदेव ने उन्हें जीत लिया हो ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

तस्यानुधावतो रेतश्चस्कन्दामोघरेतसः ।
शुष्मिणो यूथपस्येव वासितामनु धावतः ॥३२॥

पदच्छेद— तस्य अनुधावतः रेतः चस्कन्द अमोघ रेतसः ।
शुष्मिणः यूथपस्य इव वासिताम् अनु धावतः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	९. शिव जी का	शुष्मिणः	३. कामुक
अनुधावतः	६. पीछे दौड़ते हुये	यूथपस्य	४. हाथी के
रेतः	१०. वीर्य	इव	५. समानं (मोहिनी के)
चस्कन्द	११. स्खलित हो गया	वासिताम्	१. हथिनी के
अमोघ	७. अमोघ	अनुधावत ॥	२. पीछे दौड़ने वाले
रेतसः ।	८. वीर्य वाले		

श्लोकार्थ—हथिनी के पीछे दौड़ने वाले कामुक हाथी के समान मोहिनी के पीछे दौड़ते हुये अमोघ वीर्य वाले शिव जी का वीर्य स्खलित हो गया ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

यत्र यत्रापतन्मह्यां रेतस्तस्य महात्मनः ।
तानि रूप्यस्य हेम्नश्च क्षेत्राण्यासन्महीपते ॥३३॥

पदच्छेद— यत्र-यत्र अपतत् मह्याम् रेतः तस्य महात्मनः ।
तानि रूप्यस्य हेम्नः च क्षेत्राणि आसन् महीपते ॥

शब्दार्थ —

यत्र-यत्र	६. जहाँ-जहाँ	तानि	८.	वे स्थान
अपतत्	७. गिरा	रूप्यस्य	१०.	चाँदी की
मह्याम्	५. पृथ्वी पर	हेम्नः च	९.	सोने की और
रेतः	४. वीर्य	क्षेत्राणि	११.	खान
तस्य	२. उन	आसन्	१२.	बन गये
महात्मनः ।	३. भगवान् शङ्कर जी का	महीपते ॥	१.	हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उन भगवान् शङ्कर जी का वीर्य पृथ्वी पर जहाँ-जहाँ गिरा वे स्थान सोने और चाँदी की खान बन गये ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

सरित्सरस्सु शैलेषु वनेषूपवनेषु च ।
यत्र क्व चासन्नृषयस्तत्र संनिहितो हरः ॥३४॥

पदच्छेद— सरित् सरस्सु शैलेषु वनेषु उपवनेषु च ।
यत्र क्व च आसन् ऋषयः तत्र संनिहितः हरः ॥

शब्दार्थ—

सरित्	१. नदी	क्व	९.	कहीं
सरस्सु	२. सरोवर	च	७.	और
शैलेषु	३. पर्वत	आसन्	१४.	गये
वनेषु	४. वन	ऋषयः	१०.	ऋषि-मुनि
उपवनेषु	६. उपवन तथा	तत्र	१२.	वहाँ (मोहिनी के पीछे)
च	५. और	संनिहित	११.	निवास करते थे
यत्र	८. जहाँ	हरः ॥	१३.	शिव जी

श्लोकार्थ—नदी, सरोवर, पर्वत, वन और उपवन तथा और जहाँ कहीं ऋषि-मुनि निवास करते थे वहाँ मोहिनी के पीछे शिव जी गये ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

स्कन्ने रेतसि सोऽपश्यदात्मानं देवमायया।
जडीकृतं नृपश्रेष्ठ संन्यवर्तत कश्मलात् ॥३५॥

पदच्छेद— स्कन्ने रेतसि सः अपश्यत् आत्मानम् देवमायया।
जडीकृतम् नृप श्रेष्ठ संन्यवर्तत कश्मलात् ॥

शब्दार्थ—

स्कन्ने	७.	स्खलित हो जाने पर	मायया।	४.	माया से
रेतसि	६.	वीर्य	जडीकृतम्	५.	मोहित होने के कारण
सः	८.	उन्हें	नृप	२.	राजन्
अपश्यत्	१०.	स्मृति हुई (और)	श्रेष्ठ	१.	हे श्रेष्ठ !
आत्मानम्	९.	अपनी	संन्यवर्तत	१२.	अलग हो गये
देव	३.	भगवान् की	कश्मलात् ॥	११.	वे दुःखद प्रसङ्ग से

श्लोकार्थ—हे श्रेष्ठ राजन् ! भगवान् की माया से मोहित हो जाने के कारण वीर्य स्खलित हो जाने पर उन्हें अपनी स्मृति हुई और वे दुःखद प्रसङ्ग से अलग हो गये ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

अथावगतमाहात्म्य आत्मनो जगदात्मनः।
अपरिज्ञेयवीर्यस्य न मेने तदु हाद्भुतम् ॥३६॥

पदच्छेद— अथावगत माहात्म्यः आत्मनः जगत् आत्मनः।
अपरिज्ञेय वीर्यस्य न मेने तत् उ ह अद्भुतम् ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	अपरिज्ञेय	६.	और अपार
अवगत	८.	जान कर	वीर्यस्य	७.	शक्ति को
माहात्म्यः	११.	महिमा को	न	११.	नहीं
आत्मनः	२.	आत्मस्वरूप	मेने	१२.	हुआ
जगत्	३.	जगत् के	तत् उ ह	९.	उन्हें कोई
आत्मनः।	४.	आत्मा प्रभु की	अद्भुतम् ॥	१०.	आश्चर्य

श्लोकार्थ—तदनन्तर आत्मस्वरूप जगत् के आत्मा प्रभु की महिमा और अपार शक्ति को जानकर उन्हें कोई आश्चर्य नहीं हुआ ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

तमविक्लवमव्रीडमालक्ष्य मधुसूदनः ।
उवाच परमप्रीतो बिभ्रत्स्वां पौरुषीं तनुम् ॥३७॥

पदच्छेद— तम् अविक्लवम् अव्रीडम् आलक्ष्य मधुसूदनः ।
उवाच परमप्रीतः बिभ्रत् स्वाम् पौरुषीम् तनुम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	२.	उन्हें	उवाच	११.	कहा
अविक्लवम्	३.	विषाद रहित तथा	परमप्रीतः	१०.	अत्यन्त प्रेम पूर्वक
अव्रीडम्	४.	लज्जा रहित	बिभ्रत्	९.	धारण करके उनसे
आलक्ष्य	५.	देखकर	स्वाम्	६.	अपना
मधुसूदनः ।	१.	भगवान् मधुसूदन ने	पौरुषीम्	७.	पुरुष
			तनुम् ॥	८.	शरीर

श्लोकार्थ—भगवान् मधुसूदन ने उन्हें विषाद रहित तथा लज्जा रहित देखकर अपना पुरुष शरीर धारण करके अत्यन्त प्रेम पूर्वक कहा ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—दिष्ट्या त्वं विबुधश्रेष्ठ स्वां निष्ठामात्मना स्थितः ।
यन्मे स्त्रीरूपया स्वैरं मोहितोऽप्यङ्गमायया ॥३८॥

पदच्छेद— दिष्ट्या त्वम् विबुध श्रेष्ठ स्वाम् निष्ठाम् आत्मना स्थितः ।
यत् मे स्त्री रूपया स्वैरम् मोहितः अपि अङ्ग मायया ॥

शब्दार्थ—

दिष्ट्या	१२.	भाग्य से	यत्	४.	जो
त्वम्	३.	आप	मे	५.	मेरी
विबुध	१.	हे देव	स्त्री	६.	स्त्री
श्रेष्ठ	२.	शिरोमणि !	रूपया	७.	रूपिणी
स्वाम्	१३.	अपनी	स्वैरम्	९.	इच्छानुसार
निष्ठाम्	१४.	निष्ठा में	मोहितः	१०.	विमोहित होकर
आत्मना	१५.	स्वयं ही	अपि	११.	भी
स्थितः ।	१६.	स्थित हो गये हैं	अङ्ग मायया ॥	८.	प्रधान माया से

श्लोकार्थ—हे देवशिरोमणि ! आप जो मेरी स्त्री रूपिणी प्रधान माया से इच्छानुसार विमोहित होकर भी भाग्य से अपनी निष्ठा में स्वयं ही स्थित हो गये हैं ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

को नु मेऽतितरेन्मायां विषक्तस्त्वदृते पुमान् ।
तांस्तान्विसृजतीं भावान्दुस्तरामकृतात्मभिः ॥३९॥

पदच्छेद— कः नु मे अतितरेत् मायाम् विषक्तः त्वत् ऋते पुमान् ।
तान्-तान् विसृजतीम् भावान् दुस्तराम् अकृतात्मभिः ॥

शब्दार्थ—

कः	११.	भला कौन	तान्	१.	अनेक
नु मे	७.	मेरी	तान्	२.	प्रकार के
अतितरेत्	१३.	छूट सकता है	विसृजतीम्	४.	रचने वाली तथा
मायाम्	८.	माया के	भावान्	३.	हाव-भावों को
विषक्तः	९.	फंदे से	दुस्तराम्	६.	दुस्तर
त्वत् ऋते	१०.	आपके सिवाय	अकृतात्मभिः	५.	असंयत पुरुषों द्वारा
पुमान् ।	१२.	व्यक्ति			

श्लोकार्थ—अनेक प्रकार के हाव-भावों को रचने वाली तथा असंयत पुरुषों द्वारा दुस्तर मेरी माया के फन्दे से आपके सिवाय भला कौन व्यक्ति छूट सकता है ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

सेयं गुणमयी माया न त्वामभिभविष्यति ।
मया समेता कालेन कालरूपेण भागशः ॥४०॥

पदच्छेद— सा इयम् गुणमयी माया न त्वाम् अभिभविष्यति ।
मया समेता कालेन काल रूपेण भागशः ॥

शब्दार्थ—

सा इयम्	१.	ऐसी यह	मया	७.	क्योंकि मेरे
गुणमयी	२.	गुणमयी	समेता	१०.	सहित ही
माया	३.	माया	कालेन	८.	काल रूप कारण (मैं हूँ अतः)
न	५.	नहीं	काल	९.	काल
त्वाम्	४.	आपको	रूपेण	१०.	रूप
अभिभविष्यति ।	६.	कभी मोहित करेगी	भागशः ॥	१२.	वह सृष्टि करती है

श्लोकार्थ—ऐसी यह गुणमयी माया आपको कभी नहीं मोहित करेगी । क्योंकि काल रूप कारण मैं हूँ अतः कालरूप मेरे सहित वह सृष्टि करती है ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

एवं भगवता राजन् श्रीवत्साङ्केन सत्कृतः ।
आमन्त्र्य तं परिक्रम्य सगणः स्वालयं ययौ ॥४१॥

पदच्छेद— एवम् भगवता राजन् श्रीवत्स अङ्केन सत्कृतः ।
आमन्त्र्य तम् परिक्रम्य सगणः स्वालयम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२. इस प्रकार	आमन्त्र्य	७. उनसे बिदा लेकर
भगवता	५. विष्णु के द्वारा	तम्	८. उनकी
राजन्	१. हे परीक्षित् !	परिक्रम्य	९. परिक्रमा करके
श्रीवत्स	३. श्रीवत्सरूप	सगणः	१०. अपने गणों के सहित
अङ्केन	४. चिह्न से युक्त (भगवान्)	स्वालयम्	११. वे अपने निवास स्थान
सत्कृतः ।	६. सम्मानित होकर	ययौ ॥	१२. को चले गये

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इस प्रकार श्रीवत्सरूप चिह्न से युक्त भगवान् विष्णु के द्वारा सम्मानित होकर उनसे बिदा लेकर उनकी परिक्रमा करके अपने गणों के सहित वे अपने निवास स्थान को चले गये ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

आत्मांशभूतां तां मायां भवानीं भगवान्भवः ।
शंसतामृषिमुख्यानां प्रीत्याऽऽचष्टाथ भारत ॥४२॥

पदच्छेद— आत्मांश भूताम् ताम् मायाम् भवानीम् भगवान् भवः ।
शंसताम् ऋषि मुख्यानाम् प्रीत्या आचष्ट अथ भारत ॥

शब्दार्थ—

आत्मांश	८. अपने विष्णु रूप की	शंसताम्	६. सभा में
भूताम्	९. अंशभूता	ऋषि	५. ऋषियों की
ताम्	११. मोहिनी का	मुख्यानाम्	४. बड़े-बड़े
मायाम्	१०. मायामयी	प्रीत्या	१३. बड़े प्रेम से
भवानीम्	७. सती देवी से	आचष्ट	१४. वर्णन किया
भगवान्	२. भगवान्	अथ	१२. इस प्रकार
भवः ।	३. शङ्कर ने	भारत ॥	१. हे भरतवंशशिरोमणे !

श्लोकार्थ— हे भरतवंशशिरोमणे ! भगवान् शङ्कर ने बड़े बड़े ऋषियों की सभा में सती देवी से अपने विष्णुरूप की अंशभूता मायामयी मोहिनी का इस प्रकार बड़े प्रेम से वर्णन किया ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

अपि व्यपश्यस्त्वमजस्य मायां परस्य पुंसः परदेवतायाः ।
अहं कलानामृषभो विमुह्ये यथावशोऽन्ये किमुतास्वतन्त्राः ॥४३॥

पदच्छेद— अपि व्यपश्यः त्वम् अजस्य मायाम् परस्य पुंसः परदेवतायाः ।
अहम् कलानाम् ऋषभः विमुह्ये यथावशः अन्ये किमुत अस्वतन्त्राः ॥

शब्दार्थ—

अपि	७.	भी	अहम्	१२.	मैं स्वयं
व्यपश्यः	८.	देखा है	कलानाम्	१०.	कलाओं का
त्वम्	६.	हे देवी ! तुमने	ऋषभः	११.	स्वामी
अजस्य	१.	अजन्मा	विमुह्ये	१३.	मोहित हो गया
मायाम्	५.	माया को	यथावशः	९.	जिसके वश में होकर
परस्य	२.	परम	अन्ये	१४.	फिर अन्य
पुंसः	३.	पुरुष	किमुत	१६.	गिनती ही क्या है
परदेवतायाः ।	४.	परमेश्वर की	अस्वतन्त्राः ॥	१५.	पराधीन जीवों की

श्लोकार्थ—अजन्मा परम पुरुष परमेश्वर की माया को हे देवी ! तुमने भी देखा है । जिसके वश में होकर कलाओं का स्वामी मैं मोहित हो गया । फिर अन्य पराधीन जीवों की गिनती ही क्या है ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

यं मामपृच्छस्त्वमुपेत्य योगात् समासहस्रान्त उपारतं वै ।
स एष साक्षात् पुरुषः पुराणो न यत्र कालो विशते न वेदः ॥४४॥

पदच्छेद— यम् माम् अपृच्छः त्वम् उपेत्य योगात् समासहस्र अन्त उपारतम् वै ।
सः एषः साक्षात् पुरुषः पुराणः न यत्र कालः विशते न वेदः ॥

शब्दार्थ—

यम्	७.	जिसके बारे में	वै सः	१०.	निश्चय वही
माम्	५.	मेरे	एषः साक्षात्	११.	मैं साक्षात्
अपृच्छः	९.	पूछा था	पुरुषः	१३.	पुरुष हूँ
त्वम्	८.	तुमने	पुराणः	१२.	पुरातन
उपेत्य	६.	पास पहुँच कर	न	१६.	नहीं है (और)
योगात्	३.	समाधि	यत्र कालः	१४.	जहाँ काल का
समा	२.	वर्ष की	विशते	१५.	प्रवेश
सहस्र	१.	एक हजार	न	१८.	नहीं जानते
अन्त उपारतम् ।	४.	के अन्त में उठने पर	वेदः ॥	१७.	वेद (जिन्हें)

श्लोकार्थ—एक हजार वर्ष की समाधि के अन्त में उठने पर मेरे पास पहुँच कर जिसके बारे में तुमने पूछा था, निश्चय वही मैं पुरातन पुरुष हूँ । जहाँ काल का प्रवेश नहीं है । और वेद जिन्हें नहीं जानते ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

इति तेऽभिहितस्तात विक्रमः शार्ङ्गधन्वनः ।
सिन्धोर्निर्मथने येन धृतः पृष्ठे महाचलः ॥४५॥

पदच्छेद— इति ते अभिहितः तात विक्रमः शार्ङ्गधन्वनः ।
सिन्धोः निर्मथने येन धृतः पृष्ठे महाचलः ॥

शब्दार्थ—

इति	२.	इस प्रकार	सिन्धोः	८.	समुद्र
ते	३.	तुमसे	निर्मथने	९.	मन्थन के समय
अभिहितः	६.	वर्णन किया	येन	७.	जिन्होंने
तात	१.	हे परीक्षित् !	धृतः	१२.	धारण किया था
विक्रमः	५.	पराक्रम का	पृष्ठे	१०.	अपनी पीठ पर
शार्ङ्गधन्वनः ।	४.	भगवान् विष्णु के	महाचलः ।	११.	मंदराचल को

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इस प्रकार तुमसे भगवान् विष्णु के पराक्रम का वर्णन किया । जिन्होंने समुद्र मन्थन के समय अपनी पीठ पर मंदराचल को धारण किया था ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

एतन्मुहुः कीर्तयतोऽनुश्रृण्वतो न रिष्यते जातु समुद्यमः क्वचित् ।
यदुत्तमश्लोकगुणानुवर्णनं समस्तसंसारपरिश्रमापहम् ॥४६॥

पदच्छेद— एतत् मुहुः कीर्तयतः अनुश्रृण्वतः न रिष्यते जातु समुद्यमः क्वचित् ।
यत् उत्तमश्लोक गुण अनुवर्णनम् समस्त संसार परिश्रम अपहम् ॥

शब्दार्थ—

एतत्	१.	जो इसका	यत्	९.	क्योंकि
मुहुः	२.	बार-बार	उत्तमश्लोक	१०.	पवित्र कीर्ति भगवान् के
कीर्तयतः	३.	कीर्तन और	गुण	११.	गुणों का
अनुश्रृण्वतः	४.	श्रवण करता है	अनुवर्णनम्	१२.	गान
न रिष्यते	८.	नहीं निष्फल होता है	समस्त	१३.	समस्त
जातु	६.	कभी और	संसार	१४.	संसार के
समुद्यमः	५.	उसका उद्योग	परिश्रम	१५.	परिश्रम को
क्वचित् ।	७.	कहीं भी	अपहम् ॥	१६.	नष्ट कर देने वाला है

श्लोकार्थ—जो इसका बार-बार कीर्तन और श्रवण करता है, उसका उद्योग कभी और कहीं भी निष्फल नहीं होता है । क्योंकि पवित्र कीर्ति भगवान् के गुणों का गान समस्त संसार के परिश्रम को नष्ट कर देने वाला है ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

असदविषयमङ्घ्रिं भावगम्यं प्रपन्नानमृतममरवर्यानाशयत् सिन्धुमथ्यम् ।
कपटयुवतिवेषो मोहयन्यः सुरारींस्तमहमुपसृतानां कामपूरं नतोऽस्मि ॥४७॥

असत् अविषयम् अङ्घ्रि भावगम्यम् प्रपन्नान् अमृतम् अमरवर्यान् आशयत् सिन्धु मथ्यम् ।
कपट युवतिवेषः मोहयन् यः सुरारीन् तम् अहम् उपसृतानाम् कामपूरम् नतः अस्मि ॥

शब्दार्थ—

असत्	२.	असत् पुरुषों के लिये	कपट	१०.	माया से
अविषयम्	३.	अप्राप्तव्य हैं	युवति	११.	मोहिनी
अङ्घ्रिम्	१.	जिनके चरण कमल	वेषः	१२	रूप धारण करके
भावगम्यम्	४.	जो भक्ति भाव से प्राप्त होते हैं	मोहयन्	१४.	मोह लिया (और जो)
प्रपन्नान्	५.	जिन्होंने शरणागत	यः सुरारीन्	१३.	जिन्होंने शिवजी को
अमृतम्	८.	अमृत	तम् अहम्	१७.	उन भगवान् की मैं
अमरवर्यान्	६.	देवगणों को	उपसृतानाम्	१५.	शरणागतों की
आशयत्	९.	पान कराया	कामपूरम्	१६	कामना पूरी करने वाले हैं
सिन्धुमथ्यम् ।	७.	समुद्र मन्थन करके	नतः अस्मि ॥	१८.	शरण ग्रहण करता हूँ

श्लोकार्थ—जिनके चरण कमल असत् पुरुषों के लिये अप्राप्तव्य हैं । जो भक्ति-भाव से प्राप्त होते हैं । जिन्होंने शरणागत देवगणों को समुद्र मन्थन करके अमृत पान कराया । माया से मोहिनी रूप धारण करके जिन्होंने शिवजी को मोह लिया । और जो शरणागतों की कामना पूरी करने वाले हैं । उन भगवान् की मैं शरण ग्रहण करता हूँ ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायाम् अष्टमे स्कन्धे शंकरमोहनं नाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

त्रयोदशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

मनुर्विवस्वतः पुत्रः श्राद्धदेव इति श्रुतः ।
सप्तमो वर्तमानो यस्तदपत्यानि मे श्रृणु ॥१॥

पदच्छेद— मनुःविवस्वतः पुत्रः श्राद्धदेवः इति श्रुतः ।
सप्तमः वर्तमानः यः तत् अपत्यानि मे शृणु ॥

शब्दार्थ—

मनुः	७.	मनु हैं	सप्तमः	६.	सातवें (वैवस्वत)
विवस्वतः	१.	विवस्वान् के	वर्तमानः	९.	वर्तमान (मन्वन्तर है उनका कार्य काल है)
पुत्रः	२.	पुत्र	यः	८.	यह जो
श्राद्धदेवः	४.	श्राद्धदेव	तत्	१०.	उनकी
इति	५.	नाम के	अपत्यानि	११.	सन्तान का वर्णन
श्रुतः ।	३.	यशस्वी	मे शृणु ॥	१२.	मुझसे सुनो

श्लोकार्थ—विवस्वान् के पुत्र यशस्वी श्राद्धदेव नाम के सातवें मनु हैं। यह जो वर्तमान मन्वन्तर हैं, उनका कार्य-काल है। उनकी सन्तान का वर्णन मुझसे सुनो।

द्वितीयः श्लोकः

इक्ष्वाकुर्नभगश्चैव धृष्टः शर्यातिरेव च ।
नरिष्यन्तोऽथ नाभागः सप्तमो दिष्ट उच्यते ॥२॥

पदच्छेद— इक्ष्वाकुः नभगः च एव धृष्टः शर्यातिः एव च ।
नरिष्यन्त अथ नाभागः सप्तमः दिष्टः उच्यते ॥

शब्दार्थ—

इक्ष्वाकुः	१.	इक्ष्वाकु	नरिष्यन्तः	७.	नरिष्यन्त
नभगः	२.	नभग	अथ	८.	तथा
च एव	३.	और	नाभागः	९.	नाभाग और
धृष्टः	४.	धृष्ट	सप्तमः	१०.	सातवां पुत्र
शर्यातिः	५.	शर्याति	दिष्टः	११.	दिष्ट
एव च ।	६.	और	उच्यते ॥	१२.	कहा जाता है

श्लोकार्थ—उनके इक्ष्वाकु, नभग और धृष्ट, शर्याति और नरिष्यन्त तथा नाभाग और सातवां पुत्र दिष्ट कहा गया है ॥

तृतीयः श्लोकः

करूषश्च पृषध्रश्च दशमो वसुमान्स्मृतः ।
मनोर्वैवस्वतस्यैते दश पुत्राः परन्तप ॥३॥

पदच्छेद— करूषः च पृषध्रः च दशमः वसुमान् स्मृतः ।
मनोः वैवस्वतस्य एते दश पुत्राः परन्तप ॥

शब्दार्थ—

करूषः च	२. करूष और	मनोः	९. मनु के
पृषध्र	३. पृषध्र	वैवस्वतस्य	८. वैवस्वत
च	४. तथा	एते	१०. ये
दशमः	५. दसवां	दश	११. दश
वसुमान्	६. वसुमान्	पुत्राः	१२. पुत्र हैं
स्मृतः ।	७. कहा जाता है	परन्तप ॥	१. हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! करूष और पृषध्र तथा दसवां वसुमान् कहा जाता है । वैवस्वत मनु के ये दश पुत्र हैं ।

चतुर्थः श्लोकः

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः ।
अश्विनावृभवो राजन्निन्द्रस्तेषां पुरन्दरः ॥४॥

पदच्छेद— आदित्याः वसवः रुद्राः विश्वेदेवाः मरुद् गणाः ।
अश्विनौ ऋभवः राजन् इन्द्रः तेषाम् पुरन्दरः ॥

शब्दार्थ—

आदित्याः	२. आदित्य	अश्विनौ	८. अश्विनीकुमार
वसवः	३. वसु	ऋभवः	९. ऋभु
रुद्राः	४. रुद्र	राजन्	१. हे परीक्षित् !
विश्वेदेवाः	५. विश्वेदेव	इन्द्रः	१२. इन्द्र हैं
मरुद्	६. मरुद्	तेषाम्	१०. आदि का
गणाः ।	७. गण	पुरन्दरः ॥	११. पुरन्दर

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! आदित्य, वसु, रुद्र, विश्वेदेव, मरुद्गण, अश्विनीकुमार, ऋभु आदि का पुरन्दर इन्द्र हैं ॥

पञ्चमः श्लोकः

कश्यपोऽत्रिर्वसिष्ठश्च विश्वामित्रोऽथ गौतमः ।
जमदग्निर्भरद्वाज इति सप्तर्षयः स्मृताः ॥५॥

पदच्छेद— कश्यपः अत्रिः वसिष्ठः च विश्वामित्रः अथ गौतमः ।
जमदग्निः भरद्वाजः इति सप्तर्षयः स्मृताः ॥

शब्दार्थ—

कश्यपः	१. कश्यप	गौतमः ।	७. गौतम
अत्रिः	२. अत्रिः	जमदग्निः	८. जमदग्नि (और)
वशिष्ठः	३. वशिष्ठ	भरद्वाजः	९. भरद्वाज
च	४. और	इति	१०. ये
विश्वामित्रः	५. विश्वामित्र	सप्तर्षयः	११. सप्तर्षि
अथ	६. तथा	स्मृताः ।।	१२. कहे जाते हैं

श्लोकार्थ—कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ और विश्वामित्र तथा गौतम, जमदग्नि और भरद्वाज ये सप्तर्षि कहे जाते हैं ॥

षष्ठः श्लोकः

अत्रापि भगवज्जन्म कश्यपाददितेरभूत् ।
आदित्यानामवरजो विष्णुर्वामनरूपधृक् ॥६॥

पदच्छेद— अत्रअपि भगवत् जन्म कश्यपात् अदितेः अभूत् ।
आदित्यानाम् अवरजः विष्णुः वामन रूप धृक् ॥

शब्दार्थ—

अत्रअपि	१. इस मन्वन्तर में भी	आदित्यानाम्	४. आदित्यों के
भगवत्	९. भगवान्	अवरजः	५. छोटे भाई
जन्म	११. अवतार ग्रहण	विष्णुः	१०. विष्णु ने
कश्यपात्	२. कश्यप की पत्नी	वामन	६. वामन का
अदितेः	३. अदिति से	रूप	७. रूप
अभूत्	१२. किया था	धृक् ।।	८. धारण करके

श्लोकार्थ—इस मन्वन्तर में भी कश्यप की पत्नी अदिति से आदित्यों के छोटे भाई वामन का रूप धारण करके भगवान् विष्णु ने अवतार ग्रहण किया था ॥

सप्तमः श्लोकः

संक्षेपतो मयोक्तानि सप्त मन्वन्तराणि ते।
भविष्याण्यथ वक्ष्यामि विष्णोः शक्त्यान्वितानि च ॥७॥

पदच्छेद— संक्षेपतः मया उक्तानि सप्त मन्वन्तराणि ते।
भविष्याणि अथ वक्ष्यामि विष्णोः शक्त्या अन्वितानि च ॥

शब्दार्थ—

संक्षेपतः	१. संक्षेप से	भविष्याणि	११. अगले सात मन्वन्तरों का
मया	२. मैंने	अथ	८. अब
उक्तानि	६. सुनाया	वक्ष्यामि	१२ वर्णन करता हूँ
सप्त	३. सात	विष्णोः शक्त्या	९. भगवान् की शक्ति से
मन्वन्तराणि	४. मन्वन्तरों का वर्णन	अन्वितानि ॥	१०. युक्त
ते।	५. आपको	च	७. और

श्लोकार्थ—हे परीक्षित्! मैंने सात मन्वन्तरों का वर्णन आपको सुनाया। और अब भगवान् की शक्ति से युक्त अगले सात मन्वतरों का वर्णन करता हूँ ॥

अष्टमः श्लोकः

विवस्वतश्च द्वे जाये विश्वकर्मसुते उभे।
संज्ञा छाया च राजेन्द्र ये प्रागभिहिते तव ॥८॥

पदच्छेद— विवस्वतः च द्वे जाये विश्वकर्म सुते उभे।
संज्ञा छाया च राजेन्द्र ये प्राक् अभिहिते तव ॥

शब्दार्थ—

विवस्वतः च	६. विवस्वान् की	छाया	११. छाया थीं
द्वे	७. दो	च	१०. और
जाये	८. पत्नियाँ	राजेन्द्र	१. हे परीक्षित्
विश्वकर्म	१३. विश्वकर्मा की	ये	३. जिनके बारे में
सुते	१४. पुत्रियाँ थीं	प्राक्	४. पहले ही
उभे।	१२. दोनों ही	अभिहिते	५. बता चुका हूँ कि
संज्ञा	९. संज्ञा	तव ॥	२. आपको

श्लोकार्थ—हे परीक्षित्! आपको जिनके बारे में पहले ही बता चुका हूँ कि विवस्वान् की दो पत्नियाँ संज्ञा और छाया थीं। दोनों ही विश्वकर्मा की पुत्रियाँ थीं ॥

नवमः श्लोकः

तृतीयां वडवामेके तासां संज्ञासुतास्त्रयः ।
यमो यमी श्राद्धदेवश्छायायाश्च सुताञ्छृणु ॥९॥

पदच्छेद— तृतीयाम् वडवाम् एके तासाम् संज्ञा सुताः त्रयः ।
यमः यमी श्राद्धदेवः छायायाः च सुतान् शृणु ॥

शब्दार्थ—

तृतीयाम्	२. तीसरी पत्नी	यमः	८. यम
वडवाम्	३. वडवा बताते हैं	यमी	९. यमी
एके	१. कुछ लोग	श्राद्धदेवः	१०. श्राद्धदेव
तासाम्	४. उन सूर्य,-पत्नियों में	छायायाः	१२. अब छाया की
संज्ञा	५. संज्ञा से	च	१० और
सुताः	७. सन्तानें हुईं	सुतान्	१३. सन्तानों को
त्रयः ।	६. तीन	शृणु ॥	१४. सुनो

श्लोकार्थ—कुछ लोग तीसरी पत्नी वडवा बताते हैं। उन सूर्य-पत्नियों में संज्ञा से तीन सन्तानें हुईं। यम, यमी और श्राद्ध देव। अब छाया की सन्तानों को सुनो।

दशमः श्लोकः

सावर्णिस्तपती कन्या भार्या संवरणस्य या ।
शनैश्चरस्तृतीयोऽभूदश्विनौ वडवात्मजौ ॥१०॥

पदच्छेद— सावर्णिः तपती कन्या भार्या संवरणस्य या ।
शनैश्चरः तृतीयः अभूत् अश्विनौ वडवा आत्मजौ ॥

शब्दार्थ—

सावर्णिः	१. सावर्णि	शनैश्चरः	२. शनैश्चर और
तपती	४. तपती नाम की	तृतीयः	३. तीसरी
कन्या	५. कन्या	अभूत्	६. हुई
भार्या	९. पत्नी (बनी)	अश्विनौ	१२. दोनों अश्विनीकुमार हुये
संवरणस्य	८ संवरण की	वडवा	१०. वडवा के
या ।	७. जो	आत्मजौ ॥	११. दो पुत्र

श्लोकार्थ—सावर्णि, शनैश्चर और तीसरी तपती नाम की कन्या हुई जो संवरण की पत्नी बनी। वडवा के दो पुत्र दोनों अश्विनीकुमार हुये ॥

एकादशः श्लोकः

अष्टमेऽन्तर आयाते सावर्णिर्भविता मनुः ।
निर्मोकविरजस्काद्याः सावर्णितनया नृप ॥११॥

पदच्छेद— अष्टमे अन्तरे आयाते सावर्णिः भविता मनुः ।
निर्मोक विरजस्क आद्याः सावर्णि तनयाः नृप ॥

शब्दार्थ—

अष्टमे	२. आठवें	निर्मोक	१०. निर्मोक और
अन्तरे	३. मन्वन्तर के	विरजस्क	११. विरजस्क
आयाते	४. आने पर	आद्याः	१२. आदि होंगे
सावर्णिः	५. सावर्णि	सावर्णि	८. सावर्णि के
भविता	७. होंगे	तनयाः	९. पुत्र
मनुः ।	६. मनु	नृप ॥	१. हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! आठवें मन्वन्तर के आने पर सावर्णि मनु होंगे । सावर्णि के पुत्र निर्मोक और विरजस्क आदि होंगे ॥

द्वादशः श्लोकः

तत्र देवाः सुतपसो विरजा अमृतप्रभाः ।
तेषां विरोचनसुतो बलिरिन्द्रो भविष्यति ॥१२॥

पदच्छेद— तत्र देवाः सुतपसः विरजाः अमृतप्रभाः ।
तेषाम् विरोचन सुतः बलिः इन्द्रः भविष्यति ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१. उस समय	तेषाम्	६. उन देवताओं के
देवाः	५. देवगण होंगे	विरोचन	९. विरोचन के
सुतपसः	२. सुतपा	सुतः बलिः	१०. पुत्र बलि
विरजाः	३. विरज	इन्द्रः	७. इन्द्र
अमृतप्रभाः ।	४. अमृत प्रभा नामक	भविष्यति ॥	८. होंगे

श्लोकार्थ—उस समय सुतपा, विरज, अमृतप्रभा नामक देवगण होंगे । उन देवताओं के इन्द्र होंगे विरोचन के पुत्र बलि ॥

त्रयोदशः श्लोकः

दत्त्वेमां याचमानाय विष्णवे यः पदत्रयम् ।
राद्धमिन्द्रपदं हित्वा ततः सिद्धिमवाप्स्यति ॥१३॥

पदच्छेद— दत्त्वा इमाम् याचमानाय विष्णवे यः पदत्रयम् ।
राद्धम् इन्द्र पदम् हित्वा ततः सिद्धिम् अवाप्स्यति ॥

शब्दार्थ—

दत्त्वा	७.	देंगे और	राद्धम्	८.	ऐश्वर्यशाली
इमाम्	६.	पृथ्वी	इन्द्र	९.	इन्द्र
याचमानाय	२.	याचक 'भगवान्'	पदम्	१०.	पद को
विष्णवे	३.	विष्णु को	हित्वा	११.	छोड़ने
यः	१.	ये बलि	ततः	१२.	के बाद
पद	५.	पग	सिद्धिम्	१३.	परमसिद्धि को
त्रयम् ।	४.	तीन	अवाप्स्यति ॥	१४.	प्राप्त करेंगे

श्लोकार्थ—ये बलि याचक भगवान् विष्णु को तीन पग पृथ्वी देंगे और ऐश्वर्यशाली इन्द्र पद को छोड़ने के बाद परमसिद्धि को प्राप्त करेंगे ।

चतुर्दशः श्लोकः

योऽसौ भगवता बद्धः प्रीतेन सुतले पुनः ।
निवेशितोऽधिके स्वर्गादधुनाऽऽस्ते स्वराडिव ॥१४॥

पदच्छेद— यः असौ भगवता बद्धः प्रीतेन सुतले पुनः ।
निवेशितः अधिके स्वर्गात् अधुना आस्ते स्वराडिव ॥

शब्दार्थ—

यः असौ	१.	जिन्हें इन	निवेशितः	९.	राज्य दे दिया
भगवता	२.	भगवान् ने	अधिके	७.	श्रेष्ठ
बद्धः	३.	बांध दिया था	स्वर्गात्	६.	स्वर्ग से भी
प्रीतेन	५.	प्रसन्न होकर	अधुना	१०.	वे इस समय वहीं
सुतले	८.	सुतल लोक का	आस्ते	१३.	विराजमान हैं
पुनः ।	४.	बाद में	स्वराडिव ॥	१२.	इन्द्र के समान

श्लोकार्थ—जिन्हें इन भगवान् ने बांध दिया था । बाद में प्रसन्न होकर स्वर्ग से भी श्रेष्ठ सुतल लोक का राज्य दे दिया । वे इस समय वहीं इन्द्र के समान विराजमान हैं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

गालवो दीप्तिमान्रामो द्रोणपुत्रः कृपस्तथा ।
ऋष्यशृङ्गः पितास्माकं भगवान्बादरायणः ॥१५॥

पदच्छेद— गालवः दीप्तिमान् रामः द्रोणपुत्रः कृपः तथा ।
ऋष्यशृङ्गः पिता अस्माकम् भगवान् बादरायणः ॥

शब्दार्थ

गालवः	१. गालव	तथा ।	६. तथा
दीप्तिमान्	२. दीप्तिमान्	ऋष्यशृङ्गः	७. ऋष्यशृङ्ग (और)
रामः	३. परशुराम	पिता अस्माकम्	८. हमारे पिता
द्रोणपुत्रः	४. अश्वत्थामा	भगवान्	९. भगवान्
कृपः	५. कृपाचार्य	बादरायणः ॥	१०. व्यास (ये होंगे)

श्लोकार्थ—गालव, दीप्तिमान्, परशुराम, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, ऋष्यशृङ्ग और हमारे पिता भगवान् व्यास ये होंगे ॥

षोडशः श्लोकः

इमे सप्तर्षयस्तत्र भविष्यन्ति स्वयोगतः ।
इदानीमासते राजन् स्वे स्वे आश्रममण्डले ॥१६॥

पदच्छेद— इमे सप्तर्षयः तत्र भविष्यन्ति स्व योगतः ।
इदानीम् आसते राजन् स्वे स्वे आश्रम मण्डले ॥

शब्दार्थ—

इमे	३. ये	इदानीम्	६. इस समय ये लोग
सप्तर्षयः	४. सप्तर्षि	आसते	१२. स्थित हैं
तत्र	२. आठवें मन्वन्तर में	राजन्	१. हे राजन्
भविष्यन्ति	५. होंगे	स्वे-स्वे	९. अपने-अपने
स्व	७ अपने	आश्रम	१०. आश्रम
योगतः ।	८ योगबल से	मण्डले ॥	११. मण्डल में

श्लोकार्थ—हे राजन् ! आठवें मन्वन्तर में ये सप्तर्षि होंगे । इस समय ये लोग अपने योगबल से अपने-अपने आश्रम-मण्डल में स्थित हैं ॥

सप्तदशः श्लोकः

देवगुह्यात्सरस्वत्यां सार्वभौम इति प्रभुः ।
स्थानं पुरन्दराद्धृत्वा बलये दास्यतीश्वरः ॥१७॥

पदच्छेद— देवगुह्यात् सरस्वत्याम् सार्वभौम इति प्रभुः ।
स्थानम् पुरन्दरात् हृत्वा बलये दास्यति ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

देवगुह्यात्	१.	देवगुह्य की पत्नी	स्थानम्	८.	स्वर्ग का राजा
सरस्वत्याम्	२.	सरस्वती से	पुरन्दरात्	७.	इन्द्र से
सार्वभौम	३.	सार्वभौम	हृत्वा	९.	छीन कर
इति	४.	नामक	बलये	१०.	राजा बलि को
प्रभुः ।	५.	भगवान् का (अवतार होगा)	दास्यति	११.	देंगे
			ईश्वरः ॥	६.	ये ही प्रभु

श्लोकार्थ—देवगुह्य की पत्नी सरस्वती से सार्वभौम नामक भगवान् अवतार लेंगे। ये ही प्रभु इन्द्र से स्वर्ग का राज्य छीन कर राजा बलि को देंगे ॥

अष्टादशः श्लोकः

नवमो दक्षसावर्णिर्मनुर्वरुणसम्भवः ।
भूतकेतुर्दीप्तकेतुरित्याद्यास्तत्सुता नृप ॥१८॥

पदच्छेद— नवमः दक्षसावर्णिः मनुः वरुण सम्भवः ।
भूतकेतुः दीप्तकेतुः इति आद्याः तत् सुताः नृप ॥

शब्दार्थ—

नवमः	५.	नवें	दीप्तकेतुः	८.	दीप्तिकेतु
दक्षसावर्णि	४.	दक्षसावर्णि	इतिआद्याः	९.	इत्यादि
मनुः	६.	मनु होंगे	तत्	१०.	उनके
वरुण	२.	वरुण के	सुताः	११.	पुत्र होंगे
सम्भवः ।	३.	पुत्र	नृप ॥	७.	हे परीक्षित् !
भूतकेतुः	१.	भूतकेतु			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! वरुण के पुत्र दक्षसावर्णि नवें मनु होंगे। भूतकेतु, दीप्तकेतु इत्याद उनके पुत्र होंगे ॥

एकोनविंशः श्लोकः

पारा मरीचिगर्भाद्या देवा इन्द्रोऽद्भुतः स्मृतः ।
द्युतिमत्प्रमुखास्तत्र भविष्यन्त्यृषयस्ततः ॥१९॥

पदच्छेद— पाराः मरीचिगर्भआद्याः देवा इन्द्रः अद्भुतः स्मृतः ।
द्युतिमत् प्रमुखाः तत्र भविष्यन्ति ऋषयः ततः ॥

शब्दार्थ—

पाराः	१. पार	द्युतिमत्	९. द्युतिमान्
मरीचिगर्भ	२. मरीचिगर्भ	प्रमुखाः	१०. आदि प्रमुख
आद्यादेवाः	३. आदि देवताओं के गण तथा	तत्र	८. उस मन्वन्तर में
इन्द्रः	५. इन्द्र	भविष्यन्ति	१२. होंगे
अद्भुत	४. अद्भुत नाम के	ऋषयः	११. सप्तर्षि
स्मृतः ।	६. होंगे	ततः ॥	७. तब

श्लोकार्थ—पार मरीचिगर्भ आदि देवताओं के गण तथा अद्भुत नाम के इन्द्र होंगे । तब उस मन्वन्तर में द्युतिमान् आदि प्रमुख सप्तर्षि होंगे ॥

विंशः श्लोकः

आयुष्मतोऽम्बुधारायामृषभो भगवत्कला ।
भविता येन संराद्धां त्रिलोकीं भोक्ष्यतेऽद्भुतः ॥२०॥

पदच्छेद— आयुष्मतः अम्बुधारायाम् ऋषभः भगवत्कला ।
भविता येन संराद्धाम् त्रिलोकीम् भोक्ष्यते अद्भुतः ॥

शब्दार्थ—

आयुष्मतः	१. आयुष्मान् की पत्नी	भविता	६. होगा
अम्बुधारायाम्	२. अम्बुधारा से	येन	८. उन्हीं की
ऋषभः	३ ऋषभ के रूप में	संराद्धाम्	९. दी हुई
भगवत्	४. भगवान् का	त्रिलोकीम्	१०. त्रिलोकी का
कला ।	५. कलावतार	भोक्ष्यते	११. उपभोग करेंगे
		अद्भुतः ॥	७ अद्भुत नामक इन्द्र

श्लोकार्थ—आयुष्मान् की पत्नी अम्बुधारा से ऋषभ के रूप में भगवान् का कलावतार होगा । अद्भुत नामक इन्द्र उन्हीं की दी हुई त्रिलोकी का उपभोग करेंगे ॥

एकविंशः श्लोकः

दशमो ब्रह्मसावर्णिरुपश्लोकसुतो महान् ।
तत्सुता भूरिषेणाद्या हविष्मत्प्रमुखा द्विजाः ॥२१॥

पदच्छेद— दशमः ब्रह्मसावर्णिः उपश्लोक सुतः महान् ।
तत्सुताः भूरिषेण आद्याः हविष्मत् प्रमुखाः द्विजाः ॥

शब्दार्थ—

दशमः	१. दसवें मनु	तत्सुताः	८. उनके पुत्र होंगे
ब्रह्मसावर्णिः	५. ब्रह्मसावर्णि होंगे	भूरिषेण	६. भूरिषेण
उपश्लोक	२. उपश्लोक के	आद्याः	७. आदि
सुतः	३. पुत्र	हविष्मत्	९. हविष्मान्
महान् ।	४. गुणवान्	प्रमुखाः	१०. आदि प्रमुख
		द्विजाः ॥	११. ब्राह्मण होंगे

श्लोकार्थ—दसवें मनु उपश्लोक के पुत्र गुणवान् ब्रह्मसावर्णि होंगे । भूरिषेण आदि उनके पुत्र होंगे । हविष्मान् आदि प्रमुख ब्राह्मण होंगे ॥

द्वाविंशः श्लोकः

हविष्मान्सुकृतिः सत्यो जयो मूर्तिस्तदा द्विजाः ।
सुवासनविरुद्धाद्या देवाः शम्भुः सुरेश्वरः ॥२२॥

पदच्छेद— हविष्मान् सुकृतिः सत्यः जयः मूर्तिः तदा द्विजाः ।
सुवासन विरुद्ध आद्याः देवाः शम्भुः सुरेश्वरः ॥

शब्दार्थ—

हविष्मत्	१. हविष्मान्	सुवासन	७. सुवासन
सुकृतिः	२. सुकृति	विरुद्ध	८. विरुद्ध
सत्यः जयः	३. सत्य, जय	आद्याः	९. आदि
मूर्तिः	४. मूर्ति आदि	देवाः	१०. देवताओं के गण होंगे
तदा	५. उस मन्वन्तर में	शम्भुः	१२. शम्भु होंगे
द्विजाः ।	६. सप्तर्षि होंगे ।	सुरेश्वरः ॥	११. इन्द्र

श्लोकार्थ—हविष्मान्, सुकृति, सत्य, जय, मूर्ति उस मन्वन्तर में सप्तर्षि होंगे । सुवासन, विरुद्ध, आदि देवताओं के गण होंगे । इन्द्र शम्भु होंगे ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

विष्वक्सेनो विषूच्यां तु शम्भोः सख्यं करिष्यति ।
जातः स्वांशेन भगवान्गृहे विश्वसृजो विभुः ॥२३॥

पदच्छेद— विष्वक्सेनः विषूच्याम् तु शम्भोः सख्यम् करिष्यति ।
जातः स्वअंशेन भगवान् गृहे विश्वसृजः विभुः ॥

शब्दार्थ—

विष्वक्सेनः	६.	विष्वक्सेन के रूप में	स्व	७.	स्वयम् अपने
विषूच्याम् तु	३.	विषूचि से	अंशेन	८.	अंशावतार से अवतार
शम्भोः	१०.	शम्भु नामक इन्द्र से	भगवान्	४.	भगवान्
सख्यम्	११.	मित्रता	गृहे	२.	घर में
करिष्यति ।	१२.	करेंगे	विश्वसृजः	१.	विश्वसृज् के
जातः	९.	ग्रहण करके	विभुः ॥	५.	विष्णु

श्लोकार्थ—विश्वसृज् के घर में विषूचि से भगवान् विष्णु विष्वक्सेन के रूप में स्वयम् अपने अंशावतार से अवतार ग्रहण करेंगे, शम्भु नामक इन्द्र से मित्रता करेंगे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

मनुर्वै धर्मसावर्णिरेकादशम आत्मवान् ।
अनागतास्तत्सुताश्च सत्यधर्मादयो दश ॥२४॥

पदच्छेद— मनुः वै धर्मसावर्णिः एकादशमः आत्मवान् ।
अनागताः तत् सुताः च सत्यधर्म आदयः दश ॥

शब्दार्थ—

मनुः	३.	मनु	तत्	१०.	उनके
वै	१.	निश्चय ही	सुताः	१२.	पुत्र होंगे
धर्मसावर्णिः	५.	धर्मसावर्णि होंगे	च	६.	और
एकादशमः	२.	ग्यारहवें	सत्यधर्म	८.	सत्य, धर्म
आत्मवान्	४.	अत्यन्त संयमी	आदयः	९.	आदि
अनागताः	७.	भविष्य में	दश	११.	दस

श्लोकार्थ—निश्चय ही ग्यारवें मनु अत्यन्त संयमी धर्मसावर्णि होंगे । और भविष्य में सत्य, धर्म आदि उनके दस पुत्र होंगे ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

विहङ्गमाः कामगमा निर्वाणरुचयः सुराः ।
इन्द्रश्च वैधृतस्तेषामृषयश्चारुणादयः ॥२५॥

पदच्छेद— विहङ्गमाः कामगमाः निर्वाण रुचयः सुराः ।
इन्द्रः च वैधृतः तेषाम् ऋषयः च अरुण आदयः ॥

शब्दार्थ—

विहङ्गमाः	१. विहङ्गम	वैधृतः	११. वैधृत नाम के
कामगमाः	२. कामगम	तेषाम्	१०. उस मन्वर में
निर्वाणरुचयः	३. निर्वाणरुचि आदि	ऋषयः	८. सप्तर्षि होंगे
सुराः ।	४. देवताओं के गण होंगे	च	९. और
इन्द्रः	१२. इन्द्र होंगे	अरुण	६. अरुण
च	५. और	आदयः	७. आदि

श्लोकार्थ—विहङ्गम, कामगम, निर्वाणरुचि आदि देवताओं के गण होंगे और अरुण आदि सप्तर्षि होंगे । और उस मन्वन्तर के वैधृत नाम के इन्द्र होंगे ॥

षड्विंशः श्लोकः

आर्यकस्य सुतस्तत्र धर्मसेतुरिति स्मृतः ।
वैधृतायां हरेरंशस्त्रिलोकीं धारयिष्यति ॥२६॥

पदच्छेद— आर्यकस्य सुतः तत्र धर्मसेतुः इति स्मृतः ।
वैधृतायाम् हरेः अंशः त्रिलोकीम् धारयिष्यति ॥

शब्दार्थ—

आर्यकस्य	२. आर्यक की पत्नी	वैधृतायाम्	३. वैधृता के
सुतः	४. पुत्र	हरेः	६. भगवान् का
तत्र	१. वहाँ	अंशः	७. अंशावतार होगा
धर्मसेतुः इति	५. धर्मसेतु के रूप में	त्रिलोकीम्	९. (वे तब) त्रिलोकी की
स्मृतः ।	८. कहा गया है कि	धारयिष्यति ॥	१०. रक्षा करेंगे

श्लोकार्थ—वहाँ आर्यक की पत्नी वैधृता के पुत्र धर्मसेतु के रूप में भगवान् का अंशावतार होगा । कहा गया है कि वे तब त्रिलोकी की रक्षा करेंगे ॥

सप्तविंशः श्लोकः

भविता रुद्रसावर्णी राजन्द्वादशमो मनुः ।
देववानुपदेवश्च देवश्रेष्ठादयः सुताः ॥२७॥

पदच्छेद— भविता रुद्रसावर्णिः राजन् द्वादशमः मनुः ।
देववान् उपदेवः च देव श्रेष्ठ आदयः सुताः ॥

शब्दार्थ—

भविता	६. होंगे (उनके)	देववान्	७. देववान्
रुद्र	४. रुद्र	उपदेवः	८. उपदेव
सावर्णिः	५. सावर्णि	च	९. और
राजन्	१. हेपरीक्षित्!	देवश्रेष्ठ	१०. देवश्रेष्ठ
द्वादशमः	२. बारहवें	आदयः	११. आदि
मनुः ।	३. मनु	सुताः ॥	१२. पुत्र होंगे

श्लोकार्थ—हे परीक्षित्! बारहवें मनु रुद्रसावर्णि होंगे। उनके देववान्, उपदेव और देवश्रेष्ठ आदि पुत्र होंगे ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

ऋतधामा च तत्रेन्द्रो देवाश्च हरितादयः ।
ऋषयश्च तपोमूर्तिस्तपस्व्याग्नीध्रकादयः ॥२८॥

पदच्छेद— ऋतधामा च तत्र इन्द्रः देवाः च हरित आदयः ।
ऋषयः च तपोमूर्तिः तपस्वी आग्नीध्रक आदयः ॥

शब्दार्थ—

ऋतधामा	३. ऋतधामा नामक	आदयः ।	७. आदि
च	१. और	ऋषयः	१४. सप्तर्षि होंगे
तत्र	२. उस मन्वन्तर में	च	९. तथा
इन्द्रः	४. इन्द्र होंगे	तपोमूर्तिः	१०. तपोमूर्ति
देवाः	८. देवगण होंगे	तपस्वी	११. तपस्वी
च	५. और	आग्नीध्रक	१२. आग्नीध्रक
हरित	६. हरित	आदयः ॥	१३. आदि

श्लोकार्थ—और उस मन्वन्तर में ऋतधामा नामक इन्द्र होंगे। और हरित आदि देवगण होंगे। तथा तपोमूर्ति, तपस्वी, आग्नीध्रक आदि सप्तर्षि होंगे।

एकोनविंशः श्लोकः

स्वधामाख्यो हरेरंशः साधयिष्यति तन्मनोः ।
अन्तरं सत्यसहसः सूनृतायाः सुतो विभुः ॥२९॥

पदच्छेद— स्वधामा आख्यः हरेः अंशः साधयिष्यति तत् मनोः ।
अन्तरम् सत्यसहसः सूनृतायाः सुतः विभुः ॥

शब्दार्थ—

स्वधामा	४. स्वधामा	मनोः ।	१०. मनु के
आख्यः	५. नामक	अन्तरम्	११. अन्तर का
हरेः	३. भगवान् का	सत्यसहसः	१. सत्यसहा की पत्नी
अंशः	७. अंशावतार होगा	सूनृतायाः	२. सूनृता से
साधयिष्यति	१२. पालन करेंगे	सुतः	६. पुत्र रूप में
तत्	९. उसी रूप में	विभोः ॥	८. भगवान्

श्लोकार्थ—सत्यसहा की पत्नी सुनृता से भगवान् का स्वधामा नामक पुत्र रूप में अंशावतार होगा। भगवान् उसी रूप में उस मन्वन्तर का पालन करेंगे ॥

त्रिंशः श्लोकः

मनुस्त्रयोदशो भाव्यो देवसावर्णिरात्मवान् ।
चित्रसेनविचित्राद्या देवसावर्णिदेहजाः ॥३०॥

पदच्छेद— मनुः त्रयोदशः भाव्यः देवसावर्णिः आत्मवान् ।
चित्रसेन विचित्र आद्याः देवसावर्णि देहजाः ॥

शब्दार्थ—

मनुः	४. मनु	चित्रसेन	६. चित्रसेन
त्रयोदशः	३. तेरहवें	विचित्र	७. विचित्र
भाव्यः	५. होंगे	आद्याः	८. आदि
देवसावर्णिः	२. देवसावर्णि	देवसावर्णि	९. देवसावर्णि के
आत्मवान् ।	१. परम जितेन्द्रिय	देहजाः ॥	१०. पुत्र होंगे

श्लोकार्थ—परमजितेन्द्रिय देवसावर्णि तेरहवें मनु होंगे। चित्रसेन, विचित्र आदि देवसावर्णि के पुत्र होंगे।

एकत्रिंशः श्लोकः

देवाः सुकर्मसुत्रामसंज्ञा इन्द्रो दिवस्पतिः ।
निर्मोकतत्त्वदर्शाद्या भविष्यन्त्यृषयस्तदा ॥३१॥

पदच्छेद — देवाः सुकर्म सुत्रामसंज्ञाः इन्द्रः दिवस्पतिः ।
निर्मोक तत्त्वदर्श आद्याः भविष्यन्ति ऋषयः तदा ॥

शब्दार्थ

देवाः	४. देवगण होंगे	निर्मोक	८. निर्मोक और
सुकर्म	१. सुकर्म और	तत्त्वदर्श	९. तत्त्वदर्श
सुत्राम	२. सुत्राम	आद्याः	१०. आदि
संज्ञाः	३ नामक	भविष्यन्ति	१२. होंगे
इन्द्रः	६. इन्द्र होंगे	ऋषयः	११. सप्तर्षि
दिवस्पतिः ।	५. दिवस्पति	तदा ॥	७. उस समय

श्लोकार्थ—सुकर्म और सुत्राम नामक देवगण होंगे। दिवस्पति इन्द्र होंगे। उस समय निर्मोक और तत्त्वदर्श आदि सप्तर्षि होंगे ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

देवहोत्रस्य तनय उपहर्ता दिवस्पतेः ।
योगेश्वरो हरेरंशो बृहत्यां सम्भविष्यति ॥३२॥

पदच्छेद— देवहोत्रस्य तनयः उपहर्ता दिवस्पतेः ।
योगेश्वरः हरेः अंशः बृहत्याम् सम् भविष्यति ॥

शब्दार्थ—

देवहोत्रस्य	१. देवहोत्र की पत्नी	योगेश्वरः	३. योगेश्वर के रूप में
तनयः	७. पुत्र बन कर वे	हरेः	४ भगवान् का
उपहर्ता	९. इन्द्र पद देंगे	अंशः	५. अंशावतार
दिवस्पतेः ।	८. दिवस्पति को	बृहत्याम्	२. बृहती से
		सम्भविष्यति ॥	६. देंगे। (उनके)

श्लोकार्थ—देवहोत्र की पत्नी बृहती से योगेश्वर के रूप में भगवान् का अवतार होगा। उनके पुत्र बन कर वे दिवस्पति को इन्द्र पद देंगे ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

मनुर्वा इन्द्रसावर्णिश्चतुर्दशम एष्यति ।
उरुगम्भीरबुद्ध्याद्या इन्द्रसावर्णिवीर्यजाः ॥३३॥

पदच्छेद— मनुः वा इन्द्र सावर्णिः चतुर्दशमः एष्यति ।
उरु गम्भीर बुद्धि आद्याः इन्द्र सावर्णि वीर्यजाः ॥

शब्दार्थ—

मनुः	४.	मनु	उरु	६.	उरु
वा	१.	फिर	गम्भीरबुद्धि	७.	गम्भीरबुद्धि
इन्द्रसावर्णिः	२.	इन्द्रसावर्णि	आद्याः	८.	आदि
चतुर्दशमः	३.	चौदहवें	इन्द्रसावर्णि	९.	इन्द्रसावर्णि के
एष्यति	५.	होंगे	वीर्यजाः	१०.	पुत्र होंगे

श्लोकार्थ— फिर इन्द्रसावर्णि चौदहवें मनु होंगे। उरु, गम्भीरबुद्धि आदि इन्द्रसावर्णि के पुत्र होंगे ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

पवित्राश्चाक्षुषा देवाः शुचिरिन्द्रो भविष्यति ।
अग्निर्बाहुः शुचिः शुद्धो मागधाद्यास्तपस्विनः ॥३४॥

पदच्छेद— पवित्राः चाक्षुषाः देवाः शुचिः इन्द्रः भविष्यति ।
अग्निः बाहुः शुचिः शुद्धः मागध आद्याः तपस्विनः ॥

शब्दार्थ—

पवित्राः	१.	पवित्र	अग्निः बाहुः	७.	अग्नि, बाहु
चाक्षुषाः	२.	चाक्षुष आदि	शुचिः	८.	शुचि
देवाः	३.	देवगण होंगे	शुद्ध	९.	शुद्ध और
शुचिः	४.	शुचि	मागध	१०.	मागध
इन्द्रः	५.	इन्द्र	आद्याः	११.	आदि
भविष्यति ।	६.	होंगे	तपस्विनः ॥	१२.	सप्तर्षि होंगे

श्लोकार्थ— पवित्र, चाक्षुष आदि देवगण होंगे। शुचि इन्द्र होंगे। अग्नि, बाहु, शुचि, शुद्ध और मागध आदि सप्तर्षि होंगे ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

सत्रायणस्य तनयो बृहद्भानुस्तदा हरिः।
वितानायां महाराज क्रियातन्तून्वितायिता ॥३५॥

पदच्छेद— सत्रायणस्य तनयः बृहद्भानुः तदा हरिः।
वितानायाम् महाराज क्रियातन्तून् वितायिता ॥

शब्दार्थ—

सत्रायणस्य	३.	सत्रायण की पत्नी	वितानायाम्	४.	वितान के
तनयः	५.	पुत्र	महाराज	१.	हे परीक्षित् !
बृहद्भानुः	६.	बृहद्भानु के रूप में	क्रिया	८.	कर्म
तदा	२.	उस समय	तन्तून्	९.	काण्ड का
हरिः	७.	भगवान् का अवतार होगा।	वितायिता	१.	विस्तार करेंगे

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उस समय सत्रायण की पत्नी वितान के पुत्र बृहद्भानु के रूप में भगवान् का अवतार होगा। वे कर्मकाण्ड का विस्तार करेंगे ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

राजंश्चतुर्दशैतानि त्रिकालानुगतानि ते।
प्रोक्तान्येभिर्मितः कल्पो युगसाहस्रपर्ययः ॥३६॥

पदच्छेद— राजन् चतुर्दश एतानि त्रिकाल अनुगतानि ते।
प्रोक्तानि एभिः मितः कल्पः युगसाहस्रपर्ययः ॥

शब्दार्थ—

राजन्	१.	हे परीक्षित् !	प्रोक्तानि	७.	वर्णन किया
चतुर्दश	५.	चौदह मन्वन्तरों का	एभिः	८.	इन्हीं के द्वारा
एतानि	४.	इन	मितः	१३.	गणना होती है
त्रिकाल	२.	तीनों कालों में	कल्पः	११.	कल्प के
अनुगतानि	३.	चलने वाले	युग	१०.	चतुर्युगी वाले
ते	६.	तुम से	सहस्र	९.	एक सहस्र
			पर्ययः ॥	१२.	समय की

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! तीनों कालों में चलने वाले इन चौदह मन्वन्तरों का तुमसे वर्णन किया। इन्हीं के द्वारा एक सहस्र चतुर्युगी वाले कल्प के समय की गणना होती है।

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमे स्कन्धे
मन्वन्तरानुवर्णनं नाम त्रयोदशः अध्यायः ॥१३॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

चतुर्दशः अध्यायः

अष्टमः स्कन्धः

प्रथमः श्लोकः

राजोवाच— मन्वन्तरेषु भगवन्यथा मन्वादयस्त्विमे ।
यस्मिन्कर्मणि ये येन नियुक्तास्तद् वदस्व मे ॥१॥

पदच्छेद— मन्वन्तरेषु भगवन् यथा मन्वादयः तु इमे ।
यस्मिन् कर्मणि ये येन नियुक्ताः तत् वदस्व मे ॥

शब्दार्थ—

मन्वन्तरेषु	५.	मन्वन्तरों में	कर्मणि	८.	कार्य के लिये
भगवन्	१.	हे भगवान्	ये	६.	ये मनु आदि
यथा	४.	समान	येन	९.	जिसके द्वारा
मन्वादयः	३.	मनु आदि के	नियुक्ताः	१०.	नियुक्त किये गये हैं
तु इमे ।	२.	इन	तत्	११.	वह
यस्मिन्	७.	जिस	वदस्व मे ॥	१२.	मुझे बताइये

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! इन मनु आदि के समान मन्वन्तरों में ये मनु आदि जिस कार्य के लिये जिसके द्वारा नियुक्त किये गये हैं, वह मुझे बताइये ॥

द्वितीयः श्लोकः

ऋषिरुवाच— मनवो मनुपुत्राश्च मुनयश्च महीपते ।
इन्द्राः सुरगणाश्चैव सर्वे पुरुषशासनाः ॥२॥

पदच्छेद— मनवः मनु पुत्राः च मुनयः च महीपते ।
इन्द्राः सुरगणाः च एव सर्वे पुरुष शासनाः ॥

शब्दार्थ—

मनवः	२.	मनु	इन्द्राः	७.	इन्द्र आदि
मनु	३.	मनु के	सुरगणाः	८.	देवता गण ये
पुत्राः च	४.	पुत्र और	च एव	१०.	ही
मुनयः	५.	सप्तर्षि	सर्वे	९.	सभी
च	६.	और	पुरुष	११.	परम पुरुष परमात्मा द्वारा
महीपते ।	१.	हे परीक्षित् !	शासनाः ॥	१२.	शासित हैं

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! मनु, मनु-पुत्र और सप्तर्षि और इन्द्र आदि देवता गण ये सभी ही परम पुरुष परमात्मा द्वारा शासित हैं ॥

तृतीयः श्लोकः

यज्ञादयो याः कथिताः पौरुष्यस्तनवो नृप ।
मन्वादयो जगद्यात्रां नयन्त्याभिः प्रचोदिताः ॥३॥

पदच्छेद— यज्ञ आदयः याः कथिताः पौरुष्यः तनवः नृप ।
मनु आदयः जगत् यात्राम् नयन्ति आभिः प्रचोदिताः ॥

शब्दार्थ—

यज्ञ	३.	यज्ञ	मनु	१०.	मनु
आदयः	५.	आदि	आदयः	११.	आदि
याः	२.	(भगवान् के) जिन	जगत्	१२.	विश्व
कथिताः	७.	मैंने वर्णन किया है	यात्राम्	१३.	व्यवस्था का
पौरुष्यः	४.	पुरुष	नयन्ति	१४	संचालन करते हैं
तनवः	६.	अवतार शरीरों का	आभिः	८.	उन्हीं की
नृप ।	१.	हे परीक्षित् !	प्रचोदिताः ॥	९.	प्रेरणा से

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! भगवान् के जिन यज्ञ पुरुष आदि अवतार शरीरों का मैंने वर्णन किया है। उन्हीं की प्रेरणा से मनु आदि विश्व व्यवस्था का संचालन करते हैं।

चतुर्थः श्लोकः

चतुर्युगान्ते कालेन ग्रस्ताञ्छ्रुतिगणान्यथा ।
तपसा ऋषयोऽपश्यन्यतो धर्मः सनातनः ॥४॥

पदच्छेद— चतुर्युग अन्ते कालेन ग्रस्तान् श्रुति गणान् यथा ।
तपसा ऋषयः अपश्यन् यतः धर्मः सनातनः ॥

शब्दार्थ—

चतुर्युग	१.	चतुर्युगी के	तपसा	९.	तब तपस्या के द्वारा
अन्ते	२.	अन्त में	ऋषयः	८.	सप्तर्षिगण
कालेन	३.	समय के	अपश्यन्	१०.	साक्षात्कार करते हैं
ग्रस्तान्	४.	उलट-फेर से	यतः	११.	जिससे
श्रुति	७.	श्रुतियाँ (नष्टप्राय हो जाती हैं	धर्मः	१३.	धर्म (की रक्षा होती है)
गणान्	६.	समस्त	सनातनः ॥	१२.	सनातन
यथा ।	५.	जब			

श्लोकार्थ—चतुर्युगी के अन्त में समय के उलट-फेर से जब समस्त श्रुतियाँ नष्टप्राय हो जाती हैं, तब सप्तर्षि गण तपस्या के द्वारा साक्षात्कार करते हैं। जिससे सनातन धर्म की रक्षा होती है ॥

पञ्चमः श्लोकः

ततो धर्मं चतुश्पादं मनवो हरिणोदिताः ।
युक्ताः सञ्चारयन्त्यद्धा स्वे स्वे काले महीं नृप ॥५॥

पदच्छेद— ततः धर्मम् चतुष्पादम् मनवः हरिणा उदिताः ।
युक्ताः सञ्चारयन्ति अद्धा स्वे स्वे काले महीम् नृप ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तत्पश्चात्	युक्ताः	९.	बड़ी सावधानी से
धर्मम्	१२.	धर्म का	सञ्चारयन्ति	१३.	अनुष्ठान करवाते हैं
चतुष्पादम्	११.	चारों चरण से पूर्ण	अद्धा	३.	वस्तुतः
मनवः	६.	सबमनु	स्वे स्वे	७.	अपने-अपने
हरिणा	४.	भगवान् की	काले	८.	समय में
उदिताः	५.	प्रेरणा से	महीम्	१०.	पृथ्वी पर
			नृप ॥	२.	हे राजन्

श्लोकार्थ—तत्पश्चात् हे राजन् ! वस्तुतः भगवान् की प्रेरणा से सब मनु अपने-अपने समय में बड़ी सावधानी से चारों चरण से पूर्ण पृथ्वी पर धर्म का अनुष्ठान करवाते हैं ॥

षष्ठः श्लोकः

पालयन्ति प्रजापाला यावदन्तं विभागशः ।
यज्ञभागभुजो देवा ये च तत्रान्विताश्च तैः ॥६॥

पदच्छेद— पालयन्ति प्रजापालाः यावत् अन्तम् विभागशः ।
यज्ञभाग भुजः देवाः ये च तत्र अन्विताः च तैः ॥

शब्दार्थ—

पालयन्ति	५.	धर्म पालन करते हैं	भुजः	११.	भोग करने वाले
प्रजापालाः	४.	प्रजापालक (मनु पुत्र)	देवाः	१२.	देवगण भी (यज्ञभाग स्वीकार करते हैं)
यावत्	१.	जब-तक	ये च	६.	और जो
अन्तम्	२.	मन्वन्तर का अन्त नहीं होता	तत्र	७.	उस मन्वन्तर से
विभागशः	३.	विभाग करके	अन्विताः	८.	सम्बन्धित हैं
यज्ञभाग	१०.	यज्ञ के भाग का	च तैः	९.	वे

श्लोकार्थ—जब तक मन्वन्तर का अन्त नहीं होता, विभाग करके प्रजापालक मनु-पुत्र धर्म पालन करते हैं। और जो उस मन्वतर से सम्बन्धित हैं। वे यज्ञ के भाग का भोग करने वाले

सप्तमः श्लोकः

इन्द्रो भगवता दत्तां त्रैलोक्यश्रियमूर्जिताम् ।
भुञ्जानः पाति लोकांस्त्रीन् कामं लोके प्रवर्षति ॥७॥

पदच्छेद— इन्द्रः भगवता दत्ताम् त्रैलोक्य श्रियम् ऊर्जिताम् ।
भुञ्जानः पाति लोकान् त्रीन् कामम् लोके प्रवर्षति ॥

शब्दार्थ—

इन्द्रः	१. इन्द्र	भुञ्जानः	७. उपभोग और
भगवता	२. भगवान् की	पाति	११. पालन करते हैं (तथा)
दत्ताम्	३. दी हुई	लोकान्	१०. लोकोंका
त्रैलोक्य	४. त्रिलोकी की	त्रीन्	९. तीनों
श्रियम्	६. सम्पत्ति का	कामम्	१२. इच्छानुसार
ऊर्जिताम् ।	५. अतुल	लोके	८. संसार में
		प्रवर्षति ॥	१३. जल बरसाते हैं

श्लोकार्थ—इन्द्र भगवान् की दी हुई त्रिलोकी की अतुल सम्पत्ति का उपभोग और संसार में तीनों लोकों का पालन करते हैं तथा इच्छानुसार जल बरसाते हैं ।

अष्टमः श्लोकः

ज्ञानं चानुयुगं ब्रूते हरिः सिद्धस्वरूपधृक् ।
ऋषिरूपधरः कर्म योगं योगेशरूपधृक् ॥८॥

पदच्छेद— ज्ञानम् च अनुयुगम् ब्रूते हरिः सिद्ध स्वरूप धृक् ।
ऋषि रूप धरः कर्म योगम् योगेश रूप धृक् ॥

शब्दार्थ—

ज्ञानम्	५. ज्ञान का	ऋषि	७. याज्ञवल्क्यादि ऋषियों का
च	६. और	रूपधरः	८. रूप धारण करके
अनुयुगम्	२. युग-युग में	कर्म	९. कर्म का तथा
ब्रूते	१४. उपदेश करते हैं	योगम्	१३. योग का
हरिः	१. भगवान्	योगेश	१०. दत्तात्रेयादि योगेश्वरों का
सिद्ध	३. सिद्धों का	रूप	११. रूप
स्वरूपधृक् ।	४. रूप धारण करके	धृक् ॥	१२. धारण करके

श्लोकार्थ—भगवान् युग-युग में सिद्धों का रूप धारण करके ज्ञान का और याज्ञवल्क्य आदि ऋषियों का रूप धारण करके कर्म का तथा दत्तात्रेय आदि योगेश्वरों का रूप धारण करके योग का उपदेश करते हैं ।

नवमः श्लोकः

सर्गं प्रजेशरूपेण दस्यून्हन्यात् स्वराड्वपुः ।
कालरूपेण सर्वेषामभावाय पृथग्गुणः ॥९॥

पदच्छेद— सर्गम् प्रजेशरूपेण दस्यून् हन्यात् स्वराड्वपुः ।
कालरूपेण सर्वेषाम् अभावाय पृथक् गुणः ॥

शब्दार्थ—

सर्गम्	३. सृष्टि का विस्तार करते हैं	काल	९. काल
प्रजेश	१. वे प्रजापतियों के	रूपेण	१०. रूप में
रूपेण	२. रूप में	सर्वेषाम्	११. सब को
दस्यून्	५. लुटेरों का	अभावाय	१२. संसार की ओर ले जाते हैं
हन्यात्	६. वध करते हैं और	पृथक्	७. विभिन्न
स्वराड्वपुः ।	४. संसार के रूप में	गुणः ॥	८. गुणों को धारण करके

श्लोकार्थ—वे प्रजापतियों के रूप में सृष्टि का विस्तार करते हैं। संसार के रूप में लुटेरों का वध करते हैं। और विभिन्न गुणों को धारण करके कालरूप में सब को संसार की ओर ले जाते हैं ॥

दशमः श्लोकः

स्तूयमानो जनैरेभिर्मायया नामरूपया ।
विमोहितात्मभिर्नानादर्शनैर्न च दृश्यते ॥१०॥

पदच्छेद— स्तूयमानः जनैः एभिः मायया नामरूपया ।
विमोहितः आत्मभिः नाना दर्शनैः न च दृश्यते ॥

शब्दार्थ—

स्तूयमानः	९. भगवान् की महिमा गाते हैं	विमोहितः	५. विमूढ हो रही है
जनैः	४. प्राणियों की बुद्धि	आत्मभिः	१०. उनके स्वरूप को
एभिः	६. वे इन	नाना	७. नाना प्रकार के
मायया	३. माया से	दर्शनैः	८. दर्शन शास्त्रों के द्वारा
नाम	१. नाम और	न च	१०. नहीं
रूपया ।	२. रूप की	दृश्यते ॥	१२. देख पाते

श्लोकार्थ—नाम और रूप की माया से प्राणियों की बुद्धि विमूढ हो रही है। वे इन नाना प्रकार के दर्शन शास्त्रों के द्वारा उन भगवान् की महिमा गाते हैं। पर उनके स्वरूप को नहीं देख पाते ॥

एकादशः श्लोकः

एतत् कल्पविकल्पस्य प्रमाणं परिकीर्तितम् ।
यत्र मन्वन्तराण्याहुश्चतुर्दश पुराविदः ॥११॥

पदच्छेद— एतत् कल्प विकल्पस्य प्रमाणम् परिकीर्तितम् ।
यत्र मन्वन्तराणि आहुः चतुर्दश पुरा विदः ॥

शब्दार्थ —

एतत्	१.	इस प्रकार	यत्र	६.	इनमें (अवान्तर कल्प में)
कल्प	२.	महाकल्प और	मन्वन्तराणि	९.	मन्वन्तर
विकल्पस्य	३.	अवान्तर कल्प का	आहुः	१०.	बतलाये हैं
प्रमाणम्	४.	परिमाण	चतुर्दश	८.	चौदह
परिकीर्तितम् ।	५.	सुना दिया	पुरा विदः ॥	७.	पुरातत्त्व के विद्वानों ने

श्लोकार्थ —इस प्रकार महाकल्प और अवान्तर कल्प का परिमाण सुना दिया । इनमें अवान्तर कल्प में पुरातत्त्व के विद्वानों ने चौदह मन्वन्तर बतलाये हैं ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमे स्कन्धे चतुर्दशः अध्यायः ॥१४॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

पञ्चदशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

राजोवाच— बलेः पदत्रयं भूमेः कस्माद्धरिरयाचत ।
भूत्वेश्वरः कृपणवल्लब्धार्थोऽपि बबन्ध तम् ॥१॥

पदच्छेद— बलेः पद त्रयम् भूमेः कस्मात् हरिः अयाचत ।
भूत्वा ईश्वरः कृपणवत् लब्ध अर्थः अपि बबन्ध तम् ॥

शब्दार्थ—

बलेः	४.	बलि से	भूत्वा	३.	हो कर भी
पद	७.	पग	ईश्वरः	२.	ऐश्वर्यशाली
त्रयम्	६.	तीन	कृपणवत्	५.	दीन-हीन के समान
भूमेः	८.	पृथ्वी	लब्ध	१२.	प्राप्त हो जाने पर
कस्मात्	९.	क्यों	अर्थः	११.	फिर पृथ्वी के
हरिः	१.	श्री हरि ने	अपि	१३.	भी
अयाचत ।	१०.	माँगी	बबन्ध	१५.	क्यों बाँधा
			तम् ॥	१४.	उसे

श्लोकार्थ—श्री हरि ने ऐश्वर्यशाली हो कर भी बलि से दीन-हीन के समान तीन पग पृथ्वी क्यों माँगी ? फिर पृथ्वी के प्राप्त हो जाने पर भी उसे क्यों बाँधा ? ॥

द्वितीयः श्लोकः

एतद् वेदितुमिच्छामो महत् कौतूहलं हि नः ।
यज्ञेश्वरस्य पूर्णस्य बन्धनं चाप्यनागसः ॥२॥

पदच्छेद— एतद् वेदितुम् इच्छामः महत् कौतुहलं हि नः ।
यज्ञेश्वरस्य पूर्णस्य बन्धनम् च अपि अनागसः ॥

शब्दार्थ—

एतद्	१.	मैं इसे	यज्ञेश्वरस्य	८.	यज्ञेश्वर भगवान् के द्वारा
वेदितुम्	२.	जानना	पूर्णस्य	७.	परिपूर्ण
इच्छामः	३.	चाहता हूँ	बन्धनम्	११.	बन्धन कैसे हुआ
महत्	५.	अत्यधिक	च अपि	९	भी
कौतुहलं	६.	कौतुहल है	अनागसः ॥	१०.	निरपराध का
हि नः ।	४.	क्योंकि मुझे			

श्लोकार्थ—मैं इसे जानना चाहता हूँ। क्योंकि मुझे अत्यधिक कौतुहल है। परिपूर्ण यज्ञेश्वर भगवान् के द्वारा भी निरपराध का बन्धन कैसे हुआ ॥

तृतीयः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—

पराजितश्रीरसुभिश्च हापितो हीन्द्रेण राजन्भृगुभिः स जीवितः ।
सर्वात्मना तानभजद् भृगून्बलिः शिष्यो महात्मार्थनिवेदनेन ॥३॥

पदच्छेद— पराजित श्रीः असुभिः च हापितः हि इन्द्रेण राजन् भृगुभिः सः जीवितः ।
सर्वं आत्मना तान् अभजत् भृगून्बलिः शिष्यः महात्मा अर्थ निवेदनेन ॥

पराजित	३.	पराजित होने और	सर्व आत्मना	१७.	सब प्रकार से
श्रीः	४.	सम्पत्ति तथा	तान्	१४.	गुरु जी को
असुभिः च	५.	प्राणों के	अभजत्	१८.	उनकी सेवा की
हापितः	६.	चले जाने पर	भृगून्	१०.	शुक्राचार्य जी के
हि इन्द्रेण	२.	इन्द्र के द्वारा	बलिः	१३.	बलि ने
राजन्	१.	हे परीक्षित्	शिष्यः	११.	शिष्य
भृगुभिः	८.	शुक्राचार्य जी ने	महात्मा	१२.	महात्मा
सः	७.	उस बलि को	अर्थ	१५.	तन-मन-धन
जीवितः ।	९.	जीवित कर दिया	निवेदनेन ॥	१६.	निवेदित करके

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इन्द्र के द्वारा पराजित होने पर और सम्पत्ति तथा प्राणों के चले जाने पर उस बलि को शुक्राचार्य जी ने जीवित कर दिया । शुक्राचार्य जी के शिष्य बलि ने गुरु जी को तन-मन-धन विवेदित करके सब प्रकार से उनकी सेवा की ॥

चतुर्थः श्लोकः

तं ब्राह्मणा भृगवः प्रीयमाणा अयाजयन्विश्वजिता त्रिणाकम् ।
जिगीषमाणं विधिनाभिषिच्य महाभिषेकेण महानुभावाः ॥४॥

पदच्छेद— तं ब्राह्मणाः भृगवः प्रीयमाणाः अयाजयन्विश्वजिता त्रिणाकम् ।
जिगीषमाणम् विधिना अभिषिच्य महाभिषेकेण महानुभावः ॥

तम्	१	उस बलि पर	त्रिणाकम् ।	५.	स्वर्ग पर
ब्राह्मणाः	३.	ब्राह्मण	जिगीषमाणम्	६.	विजय प्राप्त करने की इच्छा वाले
भृगवः	२.	भृगुवंशी	विधिना	९.	विधि से
प्रीयमाणाः	४.	बहुत प्रसन्न हुये	अभिषिच्य	१०.	अभिषेक करके
अयाजयन्	१२.	यज्ञ कराया	महाभिषेकेण	८.	महाभिषेक की
विश्वजिता	११.	उनमे विश्वजित्	महानुभावः ॥	७.	महानुभाव बलि का

श्लोकार्थ—उस बलि पर भृगुवंशी ब्राह्मण बहुत ही प्रसन्न हुये । स्वर्ग पर विजय प्राप्त करने की इच्छा वाले महानुभाव बलि का महाभिषेक की विधि से अभिषेक करके उनसे विश्वजित् यज्ञ कराया ॥

पञ्चमः श्लोकः

ततो रथः काञ्चनपट्टनद्धो हयाश्च हर्यश्वतुरङ्गवर्णाः ।
ध्वजश्च सिंहेन विराजमानो हुताशनादास हविर्भिरिष्टात् ॥५॥

पदच्छेद— ततः रथः काञ्चन पट्टनद्धः हयाः च हर्यश्व तुरङ्ग वर्णाः ।
ध्वजः च सिंहेन विराजमानः हुताशनात् आस हविर्भिः इष्टात् ॥

शब्दार्थ—

ततः	८.	फिर	ध्वजः	१५.	ध्वजा
रथः	६.	रथ	च	१२.	और फिर
काञ्चन	४.	सोने की	सिंहेन	१३.	सिंह के चिह्न
पट्टनद्धः	५	चद्दर से मढ़ा हुआ	विराजमानः	१४.	से युक्त
हयाः	११.	घोड़े निकले	हुताशनात्	२.	अग्नि देवता की
च	७.	और	आस	१६.	निकली
हर्यश्व	९.	इन्द्र के	हविर्भिः	१.	हविष्यों के द्वारा
तुरङ्गवर्णाः।	१०.	घोड़ों जैसे रंग वाले	इष्टात् ॥	३.	पूजा करने पर (यज्ञ कुण्ड से)

श्लोकार्थ—हविष्यों के द्वारा अग्निदेवता की पूजा करने पर यज्ञ कुण्ड से सोने की चद्दर से मढ़ा हुआ रथ और फिर इन्द्र के घोड़ों जैसे रंग वाले घोड़े निकले। और फिर सिंह के चिह्न से युक्त ध्वजा निकली ॥

षष्ठः श्लोकः

धनुश्च दिव्यं पुरटोपनद्धं तूणावरिक्तौ कवचं च दिव्यम् ।
पितामहस्तस्य ददौ च मालामम्लानपुष्पां जलजं च शुक्रः ॥६॥

पदच्छेद— धनुः च दिव्यम् पुरट उपनद्धम् तूणौ अरिक्तौ कवचम् च दिव्यम् ।
पितामहः तस्य ददौ च मालाम् अम्लान पुष्पाम् जलजम् च शुक्रः ॥

शब्दार्थ—

धनुः च	४	धनुष और	पितामहः	११.	दादा प्रह्लाद जी ने
दिव्यम्	३.	दिव्य	तस्य	१२.	उन बलि को
पुरटः	१.	सोने से	ददौ	१६.	दी
उपनद्धम्	२.	मढ़ा हुआ	च	१०.	और
तूणौ	६.	दो तरकस	मालाम्	१५.	एक माला
अरिक्तौ	५.	खाली न होने वाले	अम्लान्	१३.	मलिन न होने वाली
कवचम्	९.	कवच प्रकट हुये	पुष्पाम्	१४	पुष्पों की
च	७.	और	जलजम्	१८.	एक शङ्ख दिया
दिव्यम् ।	८.	दिव्य	च शुक्रः ॥	१७.	और शुक्राचार्य ने

श्लोकार्थ—सोने से मढ़ा हुआ दिव्य धनुष और खाली न होने वाले दो तरकस और दिव्य कवच प्रकट हुये। और दादा प्रह्लाद जी ने उन बलि को मलिन न होने वाली पुष्पों की एक माला दी। और शुक्राचार्य ने एक शङ्ख दिया ॥

सप्तमः श्लोकः

एवं स विप्रार्जितयोधनार्थैस्तैः कल्पितस्वस्त्ययनोऽथ विप्रान् ।
प्रदक्षिणीकृत्य कृतप्रणामः प्रह्लादमामन्त्र्य नमश्चकार ॥७॥

पदच्छेद— एवम् स विप्र अर्जित योधनार्थः तैः कल्पित स्वस्त्ययनः अथ विप्रान् ।
प्रदक्षिणीकृत्य कृत प्रणामः प्रह्लादम् आमन्त्र्य नमः चकार ॥

शब्दार्थः—

एवम्	१. इस प्रकार	विप्रान् ।	१०. ब्राह्मणों की
सः	९ राजा बलि ने	प्रदक्षिणीकृत्य	११. प्रदक्षिणा करके
विप्र	२. ब्राह्मणों (की कृपा से)	कृत	१३. किया
अर्जित	४. प्राप्त करके	प्रणामः	१२. उन्हें प्रणाम
योधनार्थः	३. युद्ध सामग्री	प्रह्लादम्	१४. फिर प्रह्लाद जी से
तैः	६. उनके द्वारा	आमन्त्र्य	१५. बात चीत करके उन्हें
कल्पित	८. हा जाने पर	नमः	१६. नमस्कार
स्वस्त्ययन	७. स्वस्तिवाचन	चकार ॥	१७. किया
अथ	५. तथा ।		

श्लोकार्थः—इस प्रकार ब्राह्मणों की कृपा से युद्ध सामग्री प्राप्त करके तथा उनके द्वारा स्वस्ति वाचन हो जाने पर राजा बलि ने ब्राह्मणों की प्रदक्षिणा करके उन्हें प्रणाम किया । फिर प्रह्लाद जी से बात चीत करके उन्हें नमस्कार किया ।

अष्टमः श्लोकः

अथारुह्य रथं दिव्यं भृगुदत्तं महारथः ।
सुस्रग्धरोऽथ संनह्य धन्वी खड्गी धृतेषुधिः ॥८॥

पदच्छेद— अथ आरुह्य रथम् दिव्यम् भृगु दत्तम् महारथः ।
सुस्रक् धरः अथ संनह्य धन्वी खड्गी धृत इषुधिः ॥

शब्दार्थः—

अथ	१. तदनन्तर	सुस्रक्	३. सुन्दर माला
आरुह्य	१४. सवार होकर (सुशोभित हुये)	धरः	४. धारण करके
रथम्	१३. रथ पर	अथ	८. और
दिव्यम्	१२. दिव्य	संनह्य	९ कवच धारण करके
भृगु	१०. भृगुवंशी ब्राह्मणों द्वारा	धन्वी	५. धनुष
दत्तम्	११ दिये हुये	खड्गी	६. तलवार
महारथः ।	२. महारथी राजा बलि	धृतइषुधिः ॥	७. तरकस

श्लोकार्थः—तदन्तर महारथी राजा बलि सुन्दर माला धारण करके, धनुष, तलवार, तरकस और और कवच धारण करके भृगुवंशी ब्राह्मणों द्वारा दिये हुये दिव्य रथ पर सवार होकर सुशोभित हुये ॥

नवमः श्लोकः

हेमाङ्गदलसद्बाहुः स्फुरन्मकरकुण्डलः ।
रराज रथमारूढो धिष्ण्यस्थ इव हव्यवाट् ॥९॥

पदच्छेद— हेम अङ्गद लसत् बाहुः स्फुरत् मकर कुण्डलः ।
रराज रथम् आरूढः धिष्ण्यस्य इव हव्यवाट् ॥

शब्दार्थः—

हेम	१.	सोने के	रराज	१३.	सुशोभित हुये
अङ्गद	२.	बाजूबन्द से	रथम्	८.	रथ पर
लसत्	३.	सुशोभित	आरूढः	९.	सवार होकर
बाहुः	४.	भुजाओं और	धिष्ण्यस्य	१०.	अग्नि कुण्ड में स्थित
स्फुरत्	५.	जगमगाते	इव	१२.	समान
मकर	६.	मकराकृत	हव्यवाट् ॥	११.	प्रज्वलित अग्नि के
कुण्डल ।	७.	कुण्डलों वाले (वे)			

श्लोकार्थः—सोने के बाजूबन्द से सुशोभित भुजाओं और जगमगाते मकराकृत कुण्डलों वाले वे रथ पर सवार होकर अग्निकुण्ड में स्थित प्रज्वलित अग्नि के समान सुशोभित हुये ॥

दशमः श्लोकः

तुल्यैश्वर्यबलश्रीभिः स्वयूथैर्दैत्ययूथपैः ।
पिबद्भिरिव खं दृग्भिर्दहद्भिः परिधीनिव ॥१०॥

पदच्छेद— तुल्य ऐश्वर्य बल श्रीभिः स्वयूथैः दैत्य यूथपैः ।
पिबद्भिः इव खम् दृग्भिः दहद्भिः परिधीन् इव ॥

शब्दार्थः—

तुल्य	१.	उन्हीं के समान	पिबद्भिः	११.	पी रहे हों
ऐश्वर्य	२.	ऐश्वर्य	इव	८.	(ऐसे प्रतीत हो रहे थे) मानों
बल	३.	बल और	खम्	१०.	आकाश को
श्रीभिः	४.	विभूति वाले	दृग्भिः	९.	वे अपने नेत्रों से
स्वयूथैः	७.	अपनी सेनाओं सहित	दहद्भिः	१४.	जला रहे हों
दैत्य	५.	दैत्य	परिधीन्	१३.	दिशाओं को
यूथपैः ।	६.	सेनापति	इव ॥	१२.	जैसे

श्लोकार्थः— उन्हीं के समान ऐश्वर्य, बल और विभूति वाले दैत्य सेनापति अपनी सेनाओं सहित ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानों वे अपने नेत्रों से आकाश को पी रहे हों, जैसे दिशाओं को जला रहे हों ॥

एकादशः श्लोकः

वृतो विकर्षन् महतीमासुरीं ध्वजिनीं विभुः ।
ययाविन्द्रपुरीं स्वृद्धां कम्पयन्निव रोदसी ॥११॥

पदच्छेद— वृतः विकर्षन् महतीम् आसुरीम् ध्वजिनीम् विभुः ।
ययौ इन्द्रपुरीम् स्वृद्धाम् कम्पयन् इव रोदसी ॥

शब्दार्थ—

वृतः	५. युद्ध के ढंग से	ययौ	१२. चढ़ाई की
विकर्षन्	६. सञ्चालन करते हुये	इन्द्रपुरीम्	११. इन्द्रपुरी (अमरावती पर)
महतीम्	२. बहुत बड़ी	स्वृद्धाम्	१०. समृद्धिशाली
आसुरीम्	३. आसुरी	कम्पयन्	९. कंपाते हुये
ध्वजिनीम्	४. सेना को लेकर	इव	७. मानो
विभुः ।	१. राजा बलि ने	रोदसी ॥	८. अन्तरिक्ष को

श्लोकार्थ—राजा बलि ने बहुत बड़ी आसुरी सेना को लेकर युद्ध के ढंग से सञ्चालन करते हुये मानों अन्तरिक्ष को कंपाते हुये समृद्धिशाली इन्द्रपुरी अमरावती पर चढ़ाई की ॥

द्वादशः श्लोकः

रम्यामुपवनोद्यानैः श्रीमद्भिर्नन्दनादिभिः ।
कूजद्विहङ्गमिथुनैर्गायन्मत्तमधुव्रतैः ॥१२॥

पदच्छेद— रम्याम् उपवन उद्यानैः श्रीमद्भिः नन्दन आदिभिः ।
कूजत् विहङ्ग मिथुनैः गायन्मत्त मधुव्रतैः ॥

शब्दार्थ—

रम्याम्	२. रमणीय	कूजत्	९. कूजते रहते हैं और
उपवन	६. उपवन हैं	विहङ्ग	७. जहां पक्षियों के
उद्यानैः	५. उद्यान तथा	मिथुनैः	८. जोड़े
श्रीमद्भिः	१. अमरावती में शोभायुक्त	गायन्	१२. गुञ्जार करते रहते हैं
नन्दन	३. नन्दन	मत्त	१०. मतवाले
आदिभिः ।	४. आदि	मधुव्रतैः ॥	११. भौंरे

श्लोकार्थ—अमरावती में शोभायुक्त रमणीय नन्दन आदि उद्यान तथा उपवन हैं। जहां पक्षियों के जोड़े कूजते रहते हैं। और मतवाले भौंरे गुञ्जार करते रहते हैं ॥

त्रयोदशः श्लोकः

प्रवालफलपुष्पोरुभारशाखामरद्रुमैः ।
हंससारसचक्राह्वकारण्डवकुलाकुलाः ।
नलिन्यो यत्र क्रीडन्ति प्रमदाः सुरसेविताः ॥१३॥

पदच्छेद— प्रवाल फल पुष्प उरुभार शाखाद्रुमैः ।
हंस सारस चक्राह्व, कारण्डव कुल आकुलाः ॥
नलिन्यः यत्र क्रीडन्ति प्रमदाः सुर सेविताः ॥

शब्दार्थ—

प्रवाल	१.	नई कोंपोलों	कारण्डवकुल	११.	बत्तखों के
फल	३.	फलों के	कुल	१२.	समूह से
पुष्प	२.	फूलों	आकुलाः	१३.	भरे रहते हैं
उरुभार	४.	अत्यधिकभार से	नलिन्यः	७.	वहाँ के सरोवर
शाखा	६.	शाखायें (लदी रहती हैं)	यत्र	१४.	जहाँ
अमरद्रुमैः ।	५.	देववृक्षों (कल्पद्रुम वृक्षों की)	क्रीडन्ति	१८.	जल-क्रीड़ा करती हैं
हंस	८.	हंस	प्रमदाः	१७.	देवाङ्गनायें
सारस	९.	सारस	सुर	१५.	देवों द्वारा
चक्राह्व	१०.	चकवे और	सेविताः ॥	१६.	सम्मानित

श्लोकार्थ—नई कोंपलों, फूलों, फलों के अत्यधिक भार से देववृक्षों की शाखायें लदी रहती हैं। वहाँ के सरोवर हंस, सारस, चकवे और बत्तखों के समूह से भरे रहते हैं। जहाँ देवों द्वारा सम्मानित देवाङ्गनायें जल-कीड़ा करती हैं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

आकाशगङ्गया देव्या वृतां परिखभूतया ।
प्राकारेणाग्निवर्णेन, साट्टालेनोन्नतेन च ॥१४॥

पदच्छेद— आकाशगङ्गया देव्या वृताम् परिख भूतया ।
प्राकारेण अग्निवर्णेन साट्टालेन उन्नतेन च ॥

शब्दार्थ—

आकाश	२.	आकाश	प्राकारेण	९.	परकोटा है
गङ्गया	३.	गङ्गा ने	अग्नि	७.	उसमें अग्नि
देव्या	१.	ज्योतिर्मय	वर्णेन	८.	वर्ण का (सोने का)
वृतम्	६.	घेर रखा है	साट्टालेन	१२.	अट्टालिकायें हैं
परिखा	४.	उसे खाई के	उन्नतेन	११.	जहाँ ऊँची-ऊँची
भूतया ।	५.	समान	च ॥	१०.	और

श्लोकार्थ—ज्योतिर्मय आकाश गङ्गा ने उसे खाई के समान घेर रक्खा है। उसमें अग्निवर्ण का सोने का परकोटा है। और जहाँ ऊँचो-ऊँची अट्टालिकायें हैं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

रुक्मपट्टकपाटैश्च द्वारैः स्फटिकगोपुरैः ।
जुष्टां विभक्तप्रपथां विश्वकर्मविनिर्मिताम् ॥१५॥

पदच्छेद— रुक्म पट्ट कपाटैः च द्वारैः स्फटिक गोपुरैः ।
जुष्टाम् विभक्त प्रपथाम् विश्वकर्म विनिर्मिताम् ॥

शब्दार्थ—

रुक्म	२. सोने के	गोपुरैः ।	७. नगर के बाहरी फाटक हैं
पट्ट	३. बने	जुष्टाम्	१०. एक दूसरे से मिले हुये
कपाटैः	४. किवाड़ हैं	विभक्त	११. अलग-अलग
च	५. और	प्रपथाम्	१२. राजमार्ग हैं
द्वारैः	१. वहाँ दरवाजों पर	विश्वकर्म	८. विश्वकर्मा के द्वारा
स्फटिक	६. स्फटिक मणि के	विनिर्मिताम् ॥	९. बनाई गई उस नगरी में

श्लोकार्थ—वहाँ दरवाजों पर सोने के बने किवाड़ हैं। स्फटिक मणि के नगर के बाहरी फाटक हैं। विश्वकर्मा के द्वारा बनाई गई उस नगरी में एक दूसरे से मिले हुये अलग-अलग राजमार्ग हैं ॥

षोडशः श्लोकः

सभाचत्वररथ्याढ्यां विमानैर्न्यर्बुदैर्युताम् ।
शृङ्गाटकैर्मणिमयैर्वज्रविद्रुमवेदिभिः ॥१६॥

पदच्छेद— सभा चत्वर रथ्या आढ्याम् विमानैः न्यर्बुदैः युताम् ।
शृङ्गाटकैः मणिमयैः वज्र विद्रुम वेदिभिः ॥

शब्दार्थ—

सभा	१. सभा भवन	युताम् ।	७. युक्त
चत्वर	२. चबूतरे	शृङ्गाटकैः	९. बड़े-बड़े चौराहे तथा
रथ्या	३. रथ के चलने के	मणिमयैः	८. मणियों के
आढ्याम्	४. मार्गों से उत्पन्न	वज्र	१०. हीरे और
विमानैः	६. विमानों से	विद्रुम	११. मूंगे की
न्यर्बुदैः	५. दस करोड़	वेदिभिः ॥	१२. वेदियाँ वहाँ बनी हैं

श्लोकार्थ—सभा भवन, चबूतरे, रथ के चलने के मार्गों से उत्पन्न दस करोड़ विमानों से युक्त, मणियों के बड़े-बड़े चौराहे तथा हीरे और मूंगे की वेदियाँ वहाँ बनी हैं।

सप्तदशः श्लोकः

यत्र नित्यवयोरूपाः श्यामा विरजवाससः ।
भ्राजन्ते रूपवन्नार्यो ह्यर्चिर्भिरिव वह्नयः ॥१७॥

पदच्छेदः— यत्र नित्य वयोरूपाः श्यामाः विरज वाससः ।
भ्राजन्ते रूपवत् नार्यः हि अर्चिभिः इव वह्नयः ॥

शब्दार्थ—

यत्र	१.	जहाँ पर स्त्रियाँ	भ्राजन्ते	९.	ऐसी सुशोभित होती हैं
नित्य	२.	सदैव	रूपवत्	८.	अपने रूप की छटा से
वयोरूपाः	४.	अवस्था तथा रूपवती रहती हैं	नार्यः	७.	वे स्त्रियाँ
श्यामाः	३.	सोलह वर्ष की	हि अर्चिभिः	११.	अपनी ज्वालाओं से
विरज	५.	निर्मल	इव	१०.	जैसे
वाससः	६.	वस्त्र पहनकर	वह्नयः ॥	१२.	अग्नि होती है

श्लोकार्थ——जहाँ पर स्त्रियाँ सदैव सोलह वर्ष की अवस्था तथा रूपवती रहती हैं । निर्मल वस्त्र पहनकर वे स्त्रियाँ अपने रूप की छटा से ऐसी सुशोभित होती हैं जैसी ज्वालाओं से अग्नि होती है ॥

अष्टादशः श्लोकः

सुरस्त्रीकेशविभ्रष्टनवसौगन्धिकस्रजाम् ।
यत्रामोदमुपादाय मार्गं आवाति मारुतः ॥१८॥

पदच्छेद— सुर स्त्री केश विभ्रष्ट नव सौगन्धिक स्रजाम् ।
यत्र आमोदम् उपादाय मार्गे आवाति मारुतः ॥

शब्दार्थ—

सुरस्त्री	१.	देवस्त्रियों के	यत्र	९.	वहाँ के
केश	२.	जूड़े से	आमोदम्	७.	सुगन्ध को
विभ्रष्ट	३.	गिरे हुये	उपादाय	८.	लेकर
नव	४.	नवीन	मार्गे	१०.	मार्गों में
सौगन्धिक	५.	सौगन्धिक	आवाति	१२.	चलती रहती है
स्रजाम् ।	६.	पुष्पों की	मारुतः ॥	११.	मन्द-मन्द वायु

श्लोकार्थ——देवस्त्रियों के जूड़े से गिरे हुये नवीन सौगन्धिक पुष्पों की सुगन्ध को लेकर वहाँ के मार्गों में मन्द-मन्द वायु चलती रहती है ॥

एकोनविंशः श्लोकः

हेमजालाक्षनिर्गच्छद्धूमेनागुरुगन्धिना ।
पाण्डुरेण प्रतिच्छन्नमार्गे यान्ति सुरप्रियाः ॥१९॥

पदच्छेद— हेम्जालाक्ष निर्गच्छत्धूमेन अगुरु गन्धिना ।
पाण्डरेण प्रतिच्छन्न मार्गे यान्ति सुर प्रियाः ॥

शब्दार्थ—

हेम	१. सुनहली	पाण्डुरेण	५. सफेद
जालाक्ष	२. खिड़कियों में से	प्रतिच्छन्न	६. ढक लेता है
निर्गच्छत्	७. निकल-निकल कर	मार्गे	८. मार्ग को
धूमेन	६. धुआं	यान्ति	१२. जाती हैं
अगुरु	३. अगर की	सुर	१०. देव
गन्धिनी ।	४. सुगन्ध से युक्त	प्रियाः ॥	११. स्त्रियाँ उस मार्ग से

श्लोकार्थ—सुनहली खिड़कियों में से अगर की सुगन्ध से युक्त सफेद धुआँ निकल-निकल कर मार्ग को ढक लेता है। देवस्त्रियाँ उस मार्ग से जाती हैं ॥

विंशः श्लोकः

मुक्तावितानैर्मणिहेमकेतुभिर्नानापताकावलभीभिरावृताम् ।
शिखण्डिपारावतभृङ्गनादितां वैमानिकस्त्रीकलगीतमङ्गलाम् ॥२०॥

पदच्छेद— मुक्तावितानैः मणिहेमकेतुभिः नाना पताका वलभीभिः आवृताम् ।
शिखण्डि पारावत भृङ्ग नादिताम् वैमानिक स्त्री कलगीत मङ्गलाम् ॥

शब्दार्थ—

मुक्ता	१. वहाँ मोतियों से युक्त	शिखण्डि	९. मोर
वितानैः	२. चँदोवे हैं	पारावत	१०. कबूतर और
मणिहेम	३. मणिमय सोने की	भृङ्ग	११. भौंरे
केतुभिः	४. पताकायें हैं	नादिताम्	१२. कलगान करते हैं
नाना	६. अनेक प्रकार की	वैमानिक	१३. देवताओं की
पताका	७. पताकायें	स्त्रीकल	१४. स्त्रियों के मधुर
वलभीभिः	५. छज्जों पर	गीत	१५. संगीत से वहाँ
आवृताम् ।	८. लगी हुई हैं	मङ्गलाम् ॥	१६. मङ्गल छाया रहता है

श्लोकार्थ—वहाँ मोतियों से युक्त चंदोवे हैं। मणिमय सोने की पताकायें हैं। छज्जों पर अनेक प्रकार की पताकायें लगी हुई हैं। मोर, कबूतर और भौंरे कलगान करते हैं। देवताओं की स्त्रियों के मधुर संगीत से वहाँ मङ्गल छाया रहता है ॥

एकविंशः श्लोकः

मृदङ्गशङ्खानकदुन्दुभिस्वनैः सतालवीणामुरजर्ष्टिवेणुभिः ।
नृत्यैः सवाद्यैरुपदेवगीतकैर्मनोरमां स्वप्रभया जितप्रभाम् ॥२१॥

पदच्छेद— मृदङ्ग शङ्ख आनक दुन्दुभि स्वनैः सताल वीणा मुरज ऋष्टि वेणुभिः ।
नृत्यैः सवाद्यैः उपदेव गीतकैः मनोरमाम् स्वप्रभया जित प्रभाम् ॥

शब्दार्थ—

मृदङ्ग	१.	वहाँ पर मृदङ्ग	वेणुभिः ।	६.	वंशी
शङ्ख	२.	शङ्ख	नृत्यैः	११.	नृत्य और
आनक	३.	नगारे	सवाद्यैः	१२.	वाद्यों से युक्त
दुन्दुभि	४.	ढोल	उपदेव	१३.	गन्धर्वों के
स्वनैः	१०.	बजती रहती थीं	गीतकैः	१४.	गीतों से
सताल	९.	स्वर सहित	मनोरमाम्	१५.	मनोहर अमरावती
वीणा	५.	वीणा	स्वप्रभया	१६.	अपनी प्रभा से
मुरज	७.	मजीरे और	जित	१८.	जीत रही थी
ऋष्टि	८	ऋष्टियाँ	प्रभाम् ॥	१७.	प्रभा देवी को

श्लोकार्थ—वहाँ पर मृदङ्ग नगारे, शङ्ख, ढोल, वीणा, वंशी, मजीरे और ऋष्टियाँ स्वर सहित बजती रहती थीं । नृत्य और वाद्यों से युक्त गन्धर्वों के गीतों से मनोहर अमरावती अपनी अपनी प्रभा से प्रभा देवी को जीत रही थीं ॥

द्वाविंशः श्लोकः

यां न व्रजन्त्यधर्मिष्ठाः खला भूतद्रुहः शठाः ।
मानिनः कामिनो लुब्धा एभिर्हीना व्रजन्ति यत् ॥२२॥

पदच्छेद— याम् न व्रजन्ति अधर्मिष्ठाः खलाः भूतद्रुहः शठाः ।
मानिनः कामिनः लुब्धाः एभिः हीनाः व्रजन्ति यत् ॥

शब्दार्थ—

याम्	१.	उस पुरी में	मानिनः	६.	मानी
न	९.	नहीं	कामिनः	७.	कामी और
व्रजन्ति	१०.	जा सकते हैं	लुब्धाः	८.	लोभी
अधर्मिष्ठाः	२.	अधर्मी	एभिः	११.	इन दोषों से
खलाः	३.	दुष्ट	हीनाः	१२.	रहित व्यक्ति ही
भूतद्रुहः	४.	जीव द्रोही	व्रजन्ति	१४.	जाते हैं
शठाः ।	५.	ठग	यत् ॥	१३.	वहाँ

श्लोकार्थ—उस पुरी में अधर्मी, दुष्ट, जीवद्रोही, ठग, मानी, कामी और लोभी नहीं जा सकते हैं । इन दोषों से रहित व्यक्ति ही वहाँ जाते हैं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

तां देवधानीं स वरूथिनीपतिर्बहिः समन्ताद् रुरुधे पृतन्यया ।
आचार्यदत्तं जलजं महास्वनं दध्मौ प्रयुञ्जन्भयमिन्द्रयोषिताम् ॥२३॥

पदच्छेद—ताम् देवधानीम् सः वरुथिनी पतिः बहिः समन्तात् रुरुधे पृतन्यया ।
आचार्य दत्तम् जलजम् महास्वनम् दध्मौ प्रयुञ्जन् भयम् इन्द्र योषिताम् ॥

शब्दार्थ—

ताम्	५.	उस	आचार्य	१४.	शुक्राचार्य जी द्वारा
देवधानीम्	६.	अमरावती को	दत्तम्	१५.	दिया हुआ
सः	३.	राजा बलि ने	जलजम्	१६.	शङ्ख
वरुथिनी	१	असुरों की सेना के	महास्वनम्	१८.	अति तीव्र ध्वनि की
पतिः	२.	स्वामी	दध्मौ	१७.	बजाकर
बहिः	७.	बाहर की ओर	प्रयुञ्जन्	१३.	करते हुये
समन्तात्	८.	सब ओर से	भयम्	१२.	भयभीत
रुरुधे	९.	घेर लिया	इन्द्र	१०.	और इन्द्र
पृतन्यया ।	४.	अपनी बहुत बड़ी सेना से	योषिताम् ॥	११.	पत्नियों को

श्लोकार्थ—असुरों की सेना के स्वामी राजा बलि ने अपनी बहुत बड़ी सेना से उस अमरावती को बाहर की ओर सब ओर से घेर लिया । और इन्द्र-पत्नियों को भयभीत करते हुये शुक्राचार्य जी द्वारा दिया हुआ शङ्ख बजा कर अति तीव्र ध्वनि की ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

मघवांस्तमभिप्रेत्य बलेः परममुद्यमम् ।
सर्वदेवगणोपेतो गुरुमेतदुवाच ह ॥२४॥

पदच्छेद— मघवान् तम् अभिप्रेत्य बलेः परमम् उद्यमम् ।
सर्व देव गण उपेतः गुरुम् एतद् उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

मघवान्	१.	इन्द्र	सर्वदेव	७.	समस्तदेव
तम्	२.	उस	गण	८.	गणों
अभिप्रेत्य	६.	समझ कर	उपेतः	९.	सहित
बलेः	३.	राजा बलि की	गुरुम्	१०.	बृहस्पति जी के पास गये
परमम्	४.	बड़ी	एतद्	११.	और इस प्रकार
उद्यमम् ।	५.	युद्ध की तैयारी को	उवाच ह ॥	१२.	बोले

श्लोकार्थ—इन्द्र उस राजा की बड़ी युद्ध की तैयारी को समझ कर समस्त देवगणों सहित बृहस्पति जी के पास गये और इस प्रकार बोले ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

भगवन्नुद्यमो भूयान्बलेर्नः पूर्ववैरिणः ।
अविषह्यमिमं मन्ये केनासीत्तेजसोर्जितः ॥२५॥

पदच्छेद— भगवन् उद्यमः भूयान् बलेः नः पूर्व वैरिणः ।
अविषह्यम् इमम् मन्ये केन आसीत् तेजसा ऊर्जितः ॥

शब्दार्थ—

भगवन्	१.	हे भगवान् !	अविषह्यम्	९.	असह्य
उद्यमः	६.	बड़ी तैयारी	इमम्	८.	मैं इसे
भूयान्	७.	की है	मन्ये	१०.	मानता हूँ
बलेः	५.	बलि ने	केन	११.	किस कारण से
नः	२.	हमारे	आसीत्	१४.	गई है
पूर्व	३.	पुराने	तेजसा	१२.	इनकी शक्ति
वैरिणः ।	४.	वैरी	ऊर्जितः ॥	१३.	इतनी बढ़

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! हमारे पुराने वैरी बलि ने बड़ी तैयारी की है । मैं इसे असह्य मानता हूँ । पता नहीं किस कारण से इनकी शक्ति इतनी बढ़ गई है ॥

षड्विंशः श्लोकः

नैनं कश्चित् कुतो वापि प्रतिव्योढुमधीश्वरः ।
पिबन्निव मुखेनेदं लिहन्निव दिशो दश ।
दहन्निव दिशो दृग्भिः संवर्ताग्निरिवोत्थितः ॥२६॥

पदच्छेद— न एनम् कश्चित् कुतः वा अपि प्रतिव्योढुम् अधीश्वरः ।
पिबन् इव मुखेन इदम् लिहन् इव दिशः दश ।
दहन् इव दिशः दृग्भिः संवर्त अग्निः इव उत्थितः ॥

शब्दार्थ—

न	६.	नहीं है	लिहन्	१४.	चाट जायेगा
एनम्	२.	इसे	इव	१२.	मानों (जीभ से)
कश्चित् कुतः	३.	कोई किसी प्रकार से	दिशः दश	१३.	दशों दिशाओं को
वा अपि	१.	अथवा	दहन्	१८.	भस्म कर देगा
प्रतिव्योढुम्	४.	रोकने में भी	इव	१६.	मानों
अधीश्वरः	५.	समर्थ	दिशः	१७.	दिशाओं को
पिबन्	११.	पी रहा	दृग्भिः इव	१५.	नेत्रों से
इवमुखेन	९.	मानों मुख से	संवर्त अग्नि	७.	प्रलय की अग्नि के
इदम्	१०.	इस विश्व को	इव उत्थितः ॥	८.	समान बढ़ा हुआ बलि

श्लोकार्थ—अथवा इसे कोई किसी प्रकार से रोकने में भी समर्थ नहीं है । प्रलय की अग्नि के समान बढ़ा हुआ बलि मानों मुख से इस विश्व को पी रहा है । मानों जीभ से दशों दिशाओं को चाट जायेगा । मानों नेत्रों से दिशाओं को भस्म कर देगा ॥

सप्तविंशः श्लोकः

ब्रूहि कारणमेतस्य दुर्धर्षत्वस्य मद्रिपोः ।
ओजः सहो बलं तेजो यत एतत्समुद्यमः ॥२७॥

पदच्छेद— ब्रूहि कारणम् एतस्य दुर्धर्षत्वस्य मत् रिपोः ।
ओजः सहः बलम् तेजः यत एतत् समुद्यमः ॥

शब्दार्थ—

ब्रूहि	६.	बताइये	ओजः	७.	इसमें यह ओज
कारणम्	५.	कारण	सहः	९.	सामर्थ्य कहाँ से आई
एतस्य	३.	इस	बलम्तेजः	८.	बल तेज और
दुर्धर्षत्वस्य	४.	दुर्धर्षता का	यत्	१०.	जिससे
मत्	१.	मेरे	एतत्	११.	यह इतनी
रिपोः ।	२.	शत्रु की	समुद्यमः ॥	१२.	तैयारी करके आया है

श्लोकार्थ—मेरे शत्रु की इस दुर्धषता का कारण बताइये । इसमें यह ओज, बल, तेज और सामर्थ्य कहाँ से आयी । जिससे यह इतनी तैयारी करके आया है ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

गुरुरुवाच— जानामि मघवञ्छत्रोरुन्नतेरस्य कारणम् ।
शिष्यायोपभृतं तेजोभृगुभिर्ब्रह्मवादिभिः ॥२८॥

पदच्छेद— जानामि मघवन् शत्रोः उन्नतेः अस्य कारणम् ।
शिष्याय उपभृतम् तेजः भृगुभिः ब्रह्म वादिभिः ॥

शब्दार्थ—

जानामि	६.	जानता हूँ	शिष्याय	१०.	अपने शिष्य बलि में
मघवन्	१.	हे इन्द्र ! मैं	उपभृतम्	१२.	संचित कर दिया है
शत्रोः	३.	शत्रु की	तेजः	११.	तेज को
उन्नतेः	४.	उन्नति का	भृगुभिः	९.	भृगुवंशियों ने
अस्य	२.	तुम्हारे इस	ब्रह्म	७.	ब्रह्म
कारणम् ।	५.	कारण	वादिभिः ॥	८.	वादी

श्लोकार्थ—हे इन्द्र ! मैं तुम्हारे इस शत्रु की उन्नति का कारण जानता हूँ । ब्रह्मवादी भृगुवंशियों ने अपने शिष्य बलि में तेज को संचित कर दिया है ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

भवद्विधो भवान्वापि वर्जयित्वेश्वरं हरिम् ।
नास्य शक्तः पुरः स्थातुं कृतान्तस्य यथा जनाः ॥२९॥

पदच्छेद— भवत् विधः भवान् वा अपि वर्जयित्वा ईश्वरं हरिम् ।
न अस्य शक्तः पुरः स्थातुम् कृतान्तस्य यथा जनाः ॥

शब्दार्थ—

भवत्	६. तुम्हारे	न	१३. नहीं है
विधः	८. जैसा कोई	अस्य	९. इसके
भवान्	४. तुम	शक्तः	१२. समर्थ
वा	५. या	पुरः	१०. सामने (उसी प्रकार)
अपि	७. भी	स्थातुम्	११. स्थिर होने में
वर्जयित्वा	३. छोड़ कर	कृतान्तस्य	१५. काल के सामने
ईश्वरम्	१. सर्वशक्तिमान्	यथा	१४. जैसे
हरिम् ।	२. भगवान् को	जनाः ॥	१६. प्राणी (नहीं ठहर सकता है)

श्लोकार्थ—सर्वशक्तिमान् भगवान् को छोड़कर तुम या तुम्हारे जैसा कोई भी इसके सामने स्थिर होने में समर्थ नहीं है। जैसे काल के सामने प्राणी नहीं ठहर सकता है ॥

त्रिंशः श्लोकः

तस्मान्निलयमुत्सृज्य यूयं सर्वे त्रिविष्टपम् ।
यात कालं प्रतीक्षन्तो यतः शत्रोर्विपर्ययः ॥३०॥

पदच्छेद— तस्मात् निलयम् उत्सृज्य यूयम् सर्वे त्रिविष्टपम् ।
यात कालम् प्रतीक्षन्तः यतः शत्रोः विपर्ययः ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१. इसलिये	यात	७. जाओ (और)
निलयम्	६. कहीं छिप	कालम्	८. काल की
उत्सृज्य	५. छोड़ कर	प्रतीक्षन्तः	९. प्रतीक्षा करो
यूयम्	२. तुम	यतः	१०. जब-तक
सर्वे	३. सब लोग	शत्रोः	११. शत्रु का
त्रिविष्टपम् ।	४. स्वर्ग को	विपर्ययः ॥	१२. विपरीत समय आये

श्लोकार्थ—इसलिये तुम सब लोग स्वर्ग को छोड़ कर कहीं छिप जाओ। और काल की प्रतीक्षा करो। जब तक शत्रु का विपरीत समय आये ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

एष विप्रबलोदर्कः सम्प्रत्यूर्जितविक्रमः।
तेषामेवापमानेन सानुबन्धो विनङ्क्ष्यति ॥३१॥

पदच्छेद— एषः विप्रबल उदर्कः सम्प्रति ऊर्जित विक्रमः।
तेषाम् एव अपमानेन स अनुबन्धः विनङ्क्ष्यति ॥

शब्दार्थ—

एषः	२.	यह	विक्रमः।	७.	पराक्रम वाला है अतः
विप्र	३.	ब्राह्मणों के	तेषाम्	८.	उनका
बल	४.	तेज से	एव	९.	ही
उदर्कः	५.	उत्तरोत्तर	अपमानेन	१०.	अपमान करने पर
सम्प्रति	१.	इस समय	सः	११.	यह बलि
ऊर्जित	६.	बढ़े हुये	अनुबन्धः	१२.	परिवार सहित
			विनङ्क्ष्यति ॥	१३.	नष्ट हो जायगा

श्लोकार्थ—इस समय यह ब्राह्मणों के तेज से उत्तरोत्तर बढ़े हुये पराक्रम वाला है। उनका ही अपमान करने पर यह बलि परिवार सहित नष्ट हो जायेगा ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

एवं सुमन्त्रितार्थास्ते गुरुणार्थानुदर्शिना।
हित्वा त्रिविष्टपं जग्मुर्गीर्वाणाः कामरूपिणः ॥३२॥

पदच्छेद— एवम् सुमन्त्रित अर्थाः ते गुरुणा अर्थ अनुदर्शिना।
हित्वा त्रिविष्टपम् जग्मुः गीर्वाणाः काम रूपिणः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	५.	इस प्रकार	हित्वा	१२.	छोड़कर
सुमन्त्रित	६.	सलाह पाकर	त्रिविष्टपम्	११.	स्वर्ग को
अर्थाः	४.	प्रयोजन के विषय में	जग्मुः	१३.	चले गये
ते	७.	वे	गीर्वाणाः	८.	देवगण
गुरुणा	३.	बृहस्पति जी द्वारा	काम	९.	इच्छानुसार
अर्थ	१.	स्वार्थ के	रूपिणः ॥	१०.	रूप धारण करके
अनुदर्शिना।	२.	ज्ञाता			

श्लोकार्थ—स्वार्थ और परमार्थ के ज्ञाता बृहस्पति जी द्वारा प्रयोजन के विषय में इस प्रकार सलाह पाकर वे देवगण इच्छानुसार रूप धारण करके स्वर्ग को छोड़कर चले गये ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

देवेष्वथ निलीनेषु बलिर्वैरोचनः पुरीम् ।
देवधानीमधिष्ठाय वशं निन्ये जगत्त्रयम् ॥३३॥

पदच्छेद— देवेषु अथ निलीनेषु बलिः वैरोचनः पुरीम् ।
देवधानीम् अधिष्ठाय वशम् निन्ये जगत् त्रयम् ॥

शब्दार्थ—

देवेषु	२. देवताओं के	देवधानीम्	६. अमरावती
अथ	१. तदनन्तर	अधिष्ठाय	८. अधिकार कर
निलीनेषु	३. छिप जाने पर	वशम्	११. अपने अधीन
बलिः	५. बलि ने	निन्ये	१२. कर लिया
वैरोचनः	४. विरोचननन्दन	जगत्	१०. लोकों को
पुरीम् ।	७. पुरी पर	त्रयम् ॥	९. तीनों

श्लोकार्थ—तदनन्तर देवताओं के छिप जाने पर विरोचननन्दन बलि ने अमरावती पुरी पर अधिकार कर तीनों लोकों को अपने अधीन कर लिया ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

तं विश्वजयिनं शिष्यं भृगवः शिष्यवत्सलाः ।
शतेन हयमेधानामनुव्रतमयाजयन् ॥३४॥

पदच्छेद— तम् विश्व जयिनम् शिष्यम् भृगवः शिष्य वत्सलाः ।
शतेन हयमेधानाम् अनुव्रतम् अयाजयन् ॥

शब्दार्थ—

तम्	६. उस	वत्सलाः ।	२. प्रेमी
विश्वजयिनम्	५. विश्वविजयी होने पर	शतेन	८. सौ
शिष्यम्	४. शिष्य बलि के	हयमेधानाम्	९. अश्वमेध
भृगवः	३. भृगुवंशियों ने	अनुव्रतम्	७. अनुगत शिष्य से
शिष्य	१. शिष्य	अयाजयन् ॥	१०. यज्ञ करवाये

श्लोकार्थ—शिष्य प्रेमी भृगुवंशियों ने शिष्य बलि के विश्वविजयी होने पर उस अनुगत शिष्य से सौ अश्वमेध यज्ञ करवाये ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

ततस्तदनुभावेन भुवनत्रयविश्रुताम् ।
कीर्तिं दिक्षु वितन्वानः स रेजे उडुराडिव ॥३५॥

पदच्छेद— ततः तत् अनुभावेन भुवन त्रय विश्रुताम् ।
कीर्तिम् दिक्षु वितन्वानः सः रेजे उडुराडिव ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	कीर्तिम्	४.	उसकी कीर्ति
तत्	२.	उन यज्ञों के	दिक्षु	८.	दशों दिशाओं में
अनुभावेन	३.	प्रभाव से	वितन्वानः	९.	फैल गई (और)
भुवन	६.	लोकों मे	सः	१०.	वह
त्रय	५.	तीनों	रेजे	१२.	सुशोभित हुये
विश्रुताम्	७.	प्रसिद्ध होकर	उडुराडिव ॥	११.	नक्षत्रपति चन्द्रमा के समान

श्लोकार्थ—तदनन्तर उन यज्ञों के प्रभाव से उनकी कीर्ति तीनों लोकों में प्रसिद्ध होकर दशों दिशाओं में फैल गई। और वह नक्षत्रपति चन्द्रमा के समान सुशोभित हुये ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

बुभुजे च श्रियं स्वृद्धां द्विजदेवोपलम्भिताम् ।
कृतकृत्यमिवात्मानं मन्यमानो महामनाः ॥३६॥

पदच्छेद— बुभुजे च श्रियं स्वृद्धां द्विज देवोपलम्भिताम् ।
कृतकृत्यम् इव आत्मानम् मन्यमानः महामनाः ॥

शब्दार्थ—

बुभुजे	७.	उपभोग करने लगे	उपलम्भिताम् ।	३.	कृपा से प्राप्त
च	८.	और	कृतकृत्यम्	१०.	कृतकृत्य
श्रियम्	५.	राज्य लक्ष्मी का	इव	११.	सा
स्वृद्धाम्	४.	समृद्ध	आत्मानम्	९.	अपने को
द्विज	१.	ब्राह्मण और	मन्यमानः	१२.	मानने लगे
देव	२.	देवताओं की	महामनाः ॥	६.	बड़ी उदारता से

श्लोकार्थ—वे राजा बलि ब्राह्मण और देवताओं की कृपा से प्राप्त समृद्ध राज्यलक्ष्मी का बड़ी उदारता से उपभोग करने लगे। और अपने को कृतकृत्य-सा मानने लगे ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमेः स्कन्धे
पञ्चदशः अध्यायः ॥१५॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

षोडशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— एवं पुत्रेषु नष्टेषु देवमातादितिस्तदा।
हृते त्रिविष्टपे दैत्यैः पर्यतप्यदनाथवत् ॥१॥

पदच्छेद— एवम् पुत्रेषु नष्टेषु देवमाता अदितिः तदा।
हृते त्रिविष्टपे दैत्यैः पर्यतप्यत् अनाथवत् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	हृते	७.	अधिकार कर लेने पर
पुत्रेषु	३.	पुत्रों के	त्रिविष्टपे	६.	स्वर्ग पर
नष्टेषु	४.	अदृश्य हो जाने से (तथा)	दैत्यैः	५.	दैत्यों के द्वारा
देवमाता	८.	देवमाता	पर्यतप्यत्	१२.	दुःखी हो गईं
अदितिः	९.	अदिति	अनाथ	१०.	अनाथ के
तदा।	१.	उस समय	वत् ॥	११	समान

श्लोकार्थ—उस समय इस प्रकार पुत्रों के अदृश्य हो जाने से तथा दैत्यों के द्वारा स्वर्ग पर अधिकार कर लेने पर देवमाता अदिति अनाथ के समान दुःखी हो गईं ॥

द्वितीयः श्लोकः

एकदा कश्यपस्तस्या आश्रमं भगवानगात्।
निरुत्सवं निरानन्दं समाधेर्विरतश्चिरात् ॥२॥

पदच्छेद— एकदा कश्यपः तस्याः आश्रमम् भगवान् अगात्।
निरुत्सवम् निरानन्दम् समाधेः विरतः चिरात् ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१.	एकबार	निरुत्सवम्	१०.	वहाँ न उत्साह था
कश्यपः	६.	कश्यप मुनि	निरानन्दम्	११.	और न आनन्द था
तस्याः	७.	अदिति के	समाधेः	२.	समाधि के
आश्रमम्	८.	आश्रम पर	विरतः	३.	टूटने पर
भगवान्	५.	परम प्रभावशाली	चिरात् ॥	४.	बहुत दिनों बाद
अगात्	९.	आये			

श्लोकार्थ—एक बार समाधि के टूटने पर बहुत दिनों के बाद परम प्रभावशाली कश्यप मुनि अदिति के आश्रम पर आये। वहाँ न उत्साह था और न आनन्द था।

तृतीयः श्लोकः

स पत्नीं दीनवदनां कृतासनपरिग्रहः ।
सभाजितो यथान्यायमिदमाह कुरूद्वह ॥३॥

पदच्छेद— सः पत्नीम् दीनवदनाम् कृत आसन परिग्रहः ।
सभाजितः यथा न्यायम् इदम् आह कुरूद्वह ॥

शब्दार्थ—

सः	८. कश्यप जी	सभाजितः	७. सत्कृत होने पर
पत्नीम्	१०. अपनी पत्नी से	यथा	६. पूर्वक
दीनवदनाम्	९. उदास मुख वाली	न्यायम्	५. विधि
कृत	४. करने पर	इदम्	११. इस प्रकार
आसन	२. आसन	आह	१२. बोले
परिग्रहः ।	३. ग्रहण	कुरूद्वह ॥	१. हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! आसन ग्रहण कर लेने पर विधिपूर्वक सत्कृत होने पर कश्यप जी उदास मुख वाली अपनी पत्नी से इस प्रकार बोले ॥

चतुर्थः श्लोकः

अप्यभद्रं न विप्राणां भद्रे लोकेऽधुनाऽऽगतम् ।
न धर्मस्य न लोकस्य मृत्योश्छन्दानुवर्तिनः ॥४॥

पदच्छेद— अपि अभद्रम् न विप्राणाम् भद्रे लोके अधुना आगतम् ।
न धर्मस्य न लोकस्य मृत्योः छन्द अनुवर्तिनः ॥

शब्दार्थ—

अपि	११. तो	आगतम्	१३. आई है
अभद्रम्	१०. कोई विपत्ति		
न	१२. नहीं	न धर्मस्य	८. धर्म पर तथा
विप्राणाम्	९. ब्राह्मणों पर	न लोकस्य	७. लोगों और
भद्रे	१. हे कल्याणी !	मृत्योः	४. मृत्यु के
लोके	३. संसार में	छन्द	५. वश में
अधुना	२. इस समय	अनुवर्तिनः ॥	६. रहने वाले

श्लोकार्थ—हे कल्याणी ! इस समय संसार में मृत्यु के वश में रहने वाले लोगों और ब्राह्मणों पर कोई विपत्ति तो नहीं आई है ॥

पञ्चमः श्लोकः

अपि वाकुशलं किञ्चिद् गृहेषु गृहमेधिनि ।
धर्मस्यार्थस्य कामस्य यत्र योगो ह्ययोगिनाम् ॥५॥

पदच्छेद— अपि वा अकुशलम् किञ्चिद् गृहेषु गृह मेधिनि ।
धर्मस्य अर्थस्य कामस्य यत्र योगः हि अयोगिनाम् ॥

शब्दार्थ—

अपि	९.	भी	धर्मस्य	४.	धर्म
वा	१२.	नहीं हो रहा है	अर्थस्य	५.	अर्थ और
अकुशलम्	११.	विघ्न तो	कामस्य	६.	काम फल दायक
किञ्चिद्	१०.	कुछ	यत्र	१.	जहाँ
गृहेषु	८.	घरों में	योगो हि	३.	योग का फल मिलता है
गृहमेधिनि ।	७.	गृहस्थाश्रमी जनों के	अयोगिनाम् ॥	२.	अयोगियों को भी

श्लोकार्थ—जहाँ अयोगियों को भी योग का फल मिलता है। धर्म, अर्थ और काम फल दायक गृहस्थाश्रमी जनों के घरों में भी कुछ विघ्न तो नहीं हो रहा है ॥

षष्ठः श्लोकः

अपि वातिथयोऽभ्येत्य कुटुम्बासक्तया त्वया ।
गृहादपूजिता याताः प्रत्युत्थानेन वा क्वचित् ॥६॥

पदच्छेद— अपि वः अतिथयः अभ्येत्य कुटुम्ब आसक्तया त्वया ।
गृहाद् अपूजिताः याताः प्रत्युत्थानेन वा क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

अपि वा	१.	अथवा	गृहात्	११.	तुम्हारे घर से
अतिथयः	७.	अतिथिगण	अपूजिता	१०.	बिना सम्मान ही
अभ्येत्य	८.	आकर	याताः	१२.	लौट गये हों
कुटुम्ब	२.	परिवार में	प्रत्युत्थानेन	९.	तुम्हारे उठ कर
आसक्तया:	४.	आसक्ति के कारण यह चिन्ता है	वा	५.	अथवा
त्वया ।	३.	तुम्हारी	क्वचित् ॥	६.	कहीं

श्लोकार्थ—अथवा परिवार में तुम्हारी आसक्ति के कारण यह चिन्ता है। अथवा कहीं अतिथिगण आकर तुम्हारे उठ कर बिना सम्मान के ही तुम्हारे घर से लौट गये हों ॥

सप्तमः श्लोकः

गृहेषु येष्वतिथयो नार्चिताः सलिलैरपि ।
यदि निर्यान्ति ते नूनं फेरुराजगृहोपमाः ॥७॥

पदच्छेद— गृहेषु येषु अतिथयः न अर्चिताः सलिलैः अपि ।
यदि निर्यान्ति ते नूनम् फेरुराज गृह उपमाः ॥

शब्दार्थ—

गृहेषु	२. घरों में	यदि	८. यदि
येषु	१. जिन	निर्यान्ति	१०. वहाँ से चले जाते हैं
अतिथयः	३. अतिथियों का	ते	९. वे अतिथि
न	७. नहीं किया जाता	नूनम्	११. तो निश्चित ही ऐसे घर
अर्चिताः	६. सत्कार	फेरुराज	१२. गीदड़ों के
सलिलैः	४. जल से	गृह	१३. घर के
अपि ।	५. भी	उपमाः ॥	१४. समान हैं

श्लोकार्थ—जिन घरों में अतिथियों का जल से भी सत्कार नहीं किया जाता है। यदि वे अतिथि वहाँ से चले जाते हैं तो निश्चित ही ऐसे घर गीदड़ों के घर के समान हैं ॥

अष्टमः श्लोकः

अप्यग्नयस्तु वेलायां न हुता हविषा सति ।
त्वयोद्विग्नधिया भद्रे प्रोषिते मयि कर्हिचित् ॥८॥

पदच्छेद— अपि अग्नयः तु वेलायाम् न हुताः हविषा सति ।
त्वया उद्विग्नधिया भद्रे प्रोषिते मयि कर्हिचित् ॥

शब्दार्थ—

अपि	१०. भी	त्वया	५. तुम्हारा
अग्नयः	११. अग्नियों को	उद्विग्न	७. उद्विग्न होने के कारण
तु वेलायाम्	८. समय से	धिया	६. चित्त
न हुताः	१३. हवन न किया हो	भद्रे	१. हे प्रिये !
हविषा	१२. हविष्य से	प्रोषिते	४. बाहर चले जाने पर
सति ।	९. पतिव्रते ! तुमने	मयि	३. मेरे
		कर्हिचित् ॥	२. कभी

श्लोकार्थ—हे प्रिये ! कभी मेरे बाहर चले जाने पर तुम्हारा चित्त उद्विग्न होने के कारण समय से, पतिव्रते ! तुमने भी अग्नियों में हविष्य से हवन न किया हो ॥

नवमः श्लोकः

यत्पूजया कामदुघान्याति लोकान्गृहान्वितः ।
ब्राह्मणोऽग्निश्च वै विष्णोः सर्वदेवात्मनो मुखम् ॥९॥

पदच्छेद— यत् पूजया काम दुघान् याति लोकान् गृहान्वितः ।
ब्राह्मणः अग्निः च वै विष्णोः सर्वदेव आत्मनः मुखम् ॥

शब्दार्थ—

यत्	९.	जिनको	ब्राह्मणः	५.	ब्राह्मण
पूजया	१०.	पूजा करके	अग्निः	७.	अग्नि
काम	११.	समस्त कामनाओं को	च	६.	और
दुघान्	१२.	पूर्ण करने वाले	वै	१.	निश्चय ही (अग्नि)
याति	१४.	प्राप्त करते हैं	विष्णोः	३.	विष्णु भगवान् का
लोकान्	१३.	लोकों को	सर्वदेव आत्मनः	२.	सर्वदेवमय
गृहान्वितः ॥	८.	गृहस्थ पुरुष	मुखम् ॥	४.	मुख है

श्लोकार्थ—निश्चय ही अग्नि सर्वदेवमय विष्णु भगवान् का मुख है। ब्राह्मण और अग्नि, गृहस्थ पुरुष जिनकी पूजा करके समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाले लोकों को प्राप्त करते हैं ॥

दशमः श्लोकः

अपि सर्वे कुशलिनस्तव पुत्रा मनस्विनि ।
लक्षयेऽस्वस्थमात्मानं भवत्या लक्षणैरहम् ॥१०॥

पदच्छेद— अपि सर्वे कुशलिनः तव पुत्राः मनस्विनि ।
लक्षये अस्वस्थम् आत्मानं भवत्या लक्षणैः अहम् ॥

शब्दार्थ—

अपि	५.	भी	लक्षये	१२.	देख रहा हूँ
सर्वे	३.	सभी	अस्वस्थम्	११.	अस्वस्थ
कुशलिनः	६.	कुशल से तो हैं	आत्मानम्	१०.	तुम्हें
तव	२.	तुम्हारे	भवत्याः	८.	तुम्हारे
पुत्राः	४.	पुत्र	लक्षणैः	९.	लक्षणों से
मनस्विनि ।	१.	हे प्रिये !	अहम् ॥	७.	मैं

श्लोकार्थ—हे प्रिये ! तुम्हारे सभी पुत्र भी कुशल से तो हैं। मैं तुम्हारे लक्षणों से तुम्हें अस्वस्थ देख रहा हूँ ॥

एकादशः श्लोकः

अदितिरुवाच— भद्रं द्विजगवां ब्रह्मन्धर्मस्यास्य जनस्य च ।
त्रिवर्गस्य परं क्षेत्रं गृहमेधिन्गृहा इमे ॥११॥

पदच्छेद— भद्रम् द्विज गवाम् ब्रह्मन् धर्मस्य अस्य जनस्य च ।
त्रिवर्गस्य परम् क्षेत्रम् गृहमेधिन् गृहाः इमे ॥

शब्दार्थ—

भद्रम्	८.	सकुशल हैं	च ।	५.	और
द्विज	२.	ब्राह्मण	त्रिवर्गस्य	१२.	धर्म, अर्थ, काम का
गवाम्	३.	गौ	परम्	१३.	परम
ब्रह्मन्	१.	हे भगवन् !	क्षेत्रम्	१४.	सहायक
धर्मस्य	४.	धर्म	गृहमेधिन्	९.	हे स्वामी !
अस्य	६.	आप की यह	गृहाः	११.	गृहस्थाश्रम तो
जनस्य	७.	दासी	इमे ॥	१०.	यह

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! ब्राह्मण, गौ, धर्म और आपकी यह दासी सकुशल हैं । हे स्वामी ! यह गृहस्थाश्रम धर्म, अर्थ, काम का परम सहायक है ॥

द्वादशः श्लोकः

अग्नयोऽतिथयो भृत्या भिक्षवो ये च लिप्सवः ।
सर्वं भगवतो ब्रह्मन्ननुध्यानान्न रिष्यति ॥१२॥

पदच्छेद— अग्नयः अतिथयः भृत्याः भिक्षवः ये च लिप्सवः ।
सर्वम् भगवतः ब्रह्मन् अनु ध्यानात् न रिष्यति ॥

शब्दार्थ—

अग्नयः	५.	अग्नि	सर्वम्	११.	इन सब का मैंने
अतिथयः	६.	अतिथि	भगवतः	३.	आप के
भृत्याः	७.	सेवक	ब्रह्मन्	१.	हे प्रभो !
भिक्षया	९.	भिक्षा	अनु	२.	निरन्तर
ये च	८.	और जो	ध्यानात्	४.	चिन्तन के कारण
लिप्सवः ।	१०.	चाहने वाले हैं	न रिष्यति ॥	१२.	तिरस्कार नहीं किया है

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! निरन्तर आप के चिन्तन के कारण अग्नि, अतिथि, सेवक और जो भिक्षा चाहने वाले हैं इन सबका मैंने तिरस्कार नहीं किया है ॥

त्रयोदशः श्लोकः

को नु मे भगवन्कामो न सम्पद्येत मानसः ।
यस्या भवान्प्रजाध्यक्ष एवं धर्मान्प्रभाषते ॥१३॥

पदच्छेद— कः नु मे भगवान् कामः न सम्पद्येत मानसः ।
यस्याः भवान् प्रजाध्यक्षः एवम् धर्मान् प्रभाषते ॥

शब्दार्थ—

कः नु	१०.	कौन सी	यस्याः	९.	जिसे
मे	८.	मेरे	भवान्	३.	आप जैसे
भगवन्	१.	हे भगवन् !	प्रजाध्यक्षः	४.	प्रजापति
कामः	११.	कामना	एवम्	५.	इस प्रकार
न सम्पद्येत	१२.	पूरी न होगी	धर्मान्	६.	धर्म का
मानसः ।	९.	मन की	प्रभाषते ॥	७.	उपदेश करते हों तो

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! जिसे आप जैसे प्रजापति इस प्रकार धर्म का उपदेश करते हैं तो मेरे मन की कौन सी कामना पूरी न होगी ॥

चतुर्दशः श्लोकः

तवैव मारीच मनःशरीरजाः प्रजा इमाः सत्त्वरजस्तमोजुषः ।
समो भवांस्तास्वसुरादिषु प्रभो तथापि भक्तं भजते महेश्वरः ॥१४॥

पदच्छेद— तव एव मारीच मनः शरीरजाः प्रजाः इमाः सत्त्वरजः तमः जुषः ।
समः भवान् तासु असुर आदिषु प्रभो तथापि भक्तम् भजते महेश्वरः ॥

शब्दार्थ—

तव एव	८.	आपके ही	समः	१६.	समान हैं
मारीच	१.	हे आर्य पुत्र !	भवान्	१२.	आप
मनः	९.	संकल्प तथा	तासु	१३.	उन
शरीरजाः	१०.	शरीर से उत्पन्न हैं	असुर	१४.	असुर
प्रजाः	७.	समस्त प्रजायें	आदिषु	१५.	आदि के प्रति
इमाः	६.	यह	प्रभो	११.	हे प्रभो !
सत्त्व	२.	सत्त्वगुणी	तथापि	१७.	तथापि
रजः	३.	रजोगुणी और	भक्तम्	१९	भक्तों की
तमः	४.	तमोगुणी स्वभाव	भजते	२०	अभिलाषा पूरी करते हैं
जुषः ।	५.	से युक्त	महेश्वरः ॥	१८.	परमेश्वर

श्लोकार्थ—हे आर्यपुत्र ! सत्त्वगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी स्वभाव से युक्त यह समस्त प्रजायें आप के ही संकल्प तथा शरीर से उत्पन्न हैं। हे प्रभो ! आप उन असुर आदि के प्रति समान हैं। तथापि परमेश्वर भक्तों की अभिलाषा पूरी करते हैं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

तस्मादीश भजन्त्या मे श्रेयश्चिन्तय सुव्रत ।
हृतश्रियो हृतस्थानान्सपत्नैः पाहि नः प्रभो ॥१५॥

पदच्छेद— तस्मातृईश भजन्त्याः मे श्रेयः चिन्तय सुव्रत ।
हृत श्रियः हृत स्थानान् सपत्नैः पाहि नः प्रभो ॥

शब्दार्थ—

तस्मातृईश	१.	इसीलिये हे स्वामी	हृत	८.	हरण की गई
भजन्त्याः	३.	दासी के	श्रियः	९.	सम्पत्ति और
मे	२.	मुझ	हृतस्थानान्	१०.	स्थान वाले
श्रेयः	४.	कल्याण का	सपत्नैः	७.	शत्रुओं के द्वारा
चिन्तय	५.	विचार कीजिये	पाहि	१३	रक्षा कीजिये
सुव्रत ।	६.	हे मर्यादापालक !	नः	१२.	हम लोगों की
			प्रभो ॥	११.	हे प्रभो !

श्लोकार्थ— इसीलिये हे स्वामी ! मुझ दासी के कल्याण का विचार कीजिये । हे मर्यादापालक ! शत्रुओं के द्वारा हरण की गई सम्पत्ति और स्थान वाले हे प्रभो ! हम लोगों की रक्षा कीजिये ।

षोडशः श्लोकः

परैर्विवासिता साहं मग्ना व्यसनसागरे ।
ऐश्वर्यं श्रीर्यशः स्थानं हृतानि प्रबलैर्मम ॥१६॥

पदच्छेद— परैः विवासिता साहम् मग्ना व्यसन सागरे ।
ऐश्वर्यं श्रीः यशः स्थानम् हृतानि प्रबलैः मम ॥

शब्दार्थ—

परैः	२.	दैत्यों के द्वारा	ऐश्वर्यं	४.	एश्वर्य
विवासिता	९.	घर से निकाल देने के कारण	श्रीः	५.	धन
साहम्	१०.	वह मैं	यशः	६.	यश और
मग्ना	१३.	डूब रही हूँ	स्थानम्	७.	पद
व्यसन	११.	दुःख के	हृतानि	८.	छीन लेने तथा
सागरे ।	१२.	समुद्र में	प्रबलैः	१.	बलवान्
			मम ॥		

श्लोकार्थ— बलवान् दैत्यों के द्वारा मेरे एश्वर्य, धन, यश और पद छीन लेने तथा घर से निकाल देने के कारण वह मैं दुःख के समुद्र में डूब रही हूँ ॥

सप्तदश: श्लोक:

यथा तानि पुनः साधो प्रपद्येरन् ममात्मजाः ।
तथा विधेहि कल्याणं धिया कल्याणकृत्तम ॥१७॥

पदच्छेद— यथा तानि पुनः साधो प्रपद्येरन् मम आत्मजाः ।
तथा विधेहि कल्याणम् धिया कल्याणकृत्तम ॥

शब्दार्थ—

यथा	३.	जिस प्रकार	आत्मजाः ।	५.	पुत्र
तानि	६.	वे वस्तुयें	तथा	१०.	उसी प्रकार
पुनः	७.	फिर-से	विधेहि	१२.	करिये
साधो	२.	स्वामी !	कल्याणम्	११.	हमारा कल्याण
प्रपद्येरन्	८.	प्राप्त कर लें	धिया	९.	अपने संकल्प से
मम	४.	मेरे	कल्याणकृत्तम ॥	१.	हे परमहितैषी ।

श्लोकार्थ—हे परमहितैषी स्वामी ! जिस प्रकार मेरे पुत्र वे वस्तुयें फिर से प्राप्त करलें, अपने संकल्प से उसी प्रकार हमारा कल्याण करिये ॥

अष्टादश: श्लोक:

श्रीशुक उवाच—एवमभ्यर्थितोऽदित्या कस्तामाह स्मयन्निव ।
अहो मायाबलं विष्णोः स्नेहबद्धमिदं जगत् ॥१८॥

पदच्छेद— एवम् अभ्यर्थितः अदित्या कः ताम् आह स्मयन् इव ।
अहो माया बलम् विष्णोः स्नेह बद्धम् इदम् जगत् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	अहो	९.	आश्चर्य है
अभ्यर्थितः	३.	प्रार्थना करने पर	माया	११.	माया
अदित्या	१.	अदिति द्वारा	बलम्	१२.	बड़ी बलवान् है
कः	४.	कश्यप जी ने	विष्णोः	१०.	भगवान् की
ताम्	५.	उससे	स्नेह	१५.	स्नेह की रस्सी से
आह	८.	कहा	बद्धम्	१६.	बंधा है
स्मयन्	६.	विस्मित	इदम्	१३.	यह
इव ।	७.	से होकर	जगत् ॥	१४.	सारा संसार

श्लोकार्थ—अदिति द्वारा इस प्रकार प्रार्थना करने पर कश्यप जी ने उससे विस्मित-से होकर कहा—आश्चर्य है, भगवान् की माया बड़ी बलवान् है। यह सारा संसार स्नेह की रस्सी से बंधा है ॥

एकोनविंशः श्लोकः

क्व देहो भौतिकोऽनात्मा क्व चात्मा प्रकृतेः परः ।
कस्य के पतिपुत्राद्या मोह एव हि कारणम् ॥१९॥

पदच्छेद— क्व देहः भौतिकः अनात्मा क्व च आत्मा प्रकृतेः परः ।
कस्य के पति पुत्र आद्याः मोहः एव हि कारणम् ॥

शब्दार्थ—

क्व	१. कहाँ तो	कस्य	१२. किसके होते हैं
देहः	४. शरीर	के	११. कौन
भौतिकः	२. पाञ्चभौतिक	पति	९. पति
अनात्मा	३. अनात्मा	पुत्र	१०. पुत्र
क्व च	५. और कहाँ	आद्याः	११. आदि
आत्मा	८. आत्मा	मोहः	१४. इसमें मोह
प्रकृतेः	६. प्रकृति से	एव हि	१५. ही एक मात्र
परः ।	७ परे	कारणम् ॥	१६. कारण है

श्लोकार्थ—कहाँ तो पाञ्चभौतिक अनात्मा शरीर और कहाँ प्रकृति से परे आत्मा पति, पुत्र आदि किसके होते हैं। इसमें मोह ही एक मात्र कारण है ॥

विंशः श्लोकः

उपतिष्ठस्व पुरुषं भगवन्तं जनार्दनम् ।
सर्वभूतगुहावासं वासुदेवं जगद्गुरुम् ॥२०॥

पदच्छेद— उपतिष्ठस्व पुरुषम् भगवन्तम् जनार्दनम् ।
सर्वभूत गुहावासम् वासुदेवम् जगद् गुरुम् ॥

शब्दार्थ—

उपतिष्ठस्व	८. आराधना करो	सर्वभूत	१. सम्पूर्ण प्राणियों के
पुरुषम्	४. परम पुरुष	गुहावासम्	२. हृदय में विराजमान
भगवन्तम्	६. भगवान्	वासुदेवम्	७. वासुदेव की
जनार्दनम्	३. भक्तों के दुःख मिटाने वाले	जगद्गुरुम् ॥	५. जगद्गुरु

श्लोकार्थ—सम्पूर्ण प्राणियों के हृदय में विराजमान, भक्तों के दुःख दूर करने वाले, परम पुरुष, जगद्गुरु भगवान् वासुदेव की आराधना करो ॥

एकविंशः श्लोकः

स विधास्यति ते कामान्हरिर्दीनानुकम्पनः ।
अमोघा भगवद्भक्तिर्नेतरेति मतिर्मम ॥२१॥

पदच्छेद— स: विधास्यति ते कामान् हरिः दीन अनुकम्पनः ।
अमोघा भगवत् भक्तिः न इतरा इति मतिः मम ॥

शब्दार्थ—

सः	३.	वही	अमोघा	१०.	कभी व्यर्थ नहीं होती है
विधास्यति	७.	पूर्ण करेंगे	भगवत्	८.	क्योंकि भगवान् की
ते	५.	तुम्हारी	भक्तिः	९.	भक्ति
कामान्	६.	कामनायें	न इतरा	११.	और कोई उपाय नहीं
हरिः	४.	भगवान्	इति	१२.	है
दीनः	१.	दीनों पर	मतिः	१४.	दृढ़ विश्वास है
अनुकम्पनः ।	२.	दया करने वाले	मम	१३.	ऐसा मेरा

श्लोकार्थ—दीनों पर दया करने वाले वही भगवान् तुम्हारी कामनायें पूर्ण करेंगे। क्योंकि भगवान् की भक्ति कभी व्यर्थ नहीं होती है। और कोई उपाय नहीं है। ऐसा मेरा दृढ़ निश्चय है ॥

द्वाविंशः श्लोकः

अदितिरुवाच— **केनाहं विधिना ब्रह्मन्नुपस्थास्ये जगत्पतिम् ।**
यथा मे सत्यसङ्कल्पो विदध्यात् स मनोरथम् ॥२२॥

पदच्छेद— केन अहम् विधिना ब्रह्मन् उपस्थास्ये जगत्पतिम् ।
यथा मे सत्य सङ्कल्पः विदध्यात् सः मनोरथम् ॥

शब्दार्थ—

केन	५.	किस	यथा	८.	जिससे
अहम्	२.	मैं	मे	१२.	मेरा
विधिना	६.	विधि से	सत्य	१०.	सत्य
ब्रह्मन्	१.	हे भगवन् !	सङ्कल्पः	११.	सङ्कल्प प्रभु
उपास्थास्ये	७.	आराधना करूँ	विदध्यात्	१४.	पूर्ण करें
जगत्	३.	जगत् के	सः	९.	वे
पतिम्	४.	स्वामी परमात्मा की	मनोरथम् ॥	१३.	मनोरथ

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! मैं जगत् के स्वामी परमात्मा की किस विधि से आराधना करूँ। जिससे वे सत्य सङ्कल्प प्रभु मेरा मनोरथ पूर्ण करें ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

आदिश त्वं द्विजश्रेष्ठ विधिं तदुपधावनम् ।
आशु तुष्यति मे देवः सीदन्त्याः सह पुत्रकैः ॥२३॥

पदच्छेद— आदिश त्वम् द्विज श्रेष्ठ विधिम् तत् उपधावनम् ।
आशु तुष्यति मे देवः सीदन्त्याः सह पुत्रकैः ॥

शब्दार्थ—

आदिश	७. बताइये (जिससे)	आशु	१३. शीघ्र ही
त्वम्	३. आप मुझे	तुष्यति	१४. प्रसन्न हो जायें
द्विज	१. हे द्विज	मे	११. मुझ पर
श्रेष्ठ	२. श्रेष्ठ	देवः	१२. भगवान्
विधिम्	६. श्रेष्ठ विधि	सीदन्त्याः	१०. कष्ट प्राप्त करती हुई
तत्	५. वही	सह	९. साथ
उपधावनम् ।	४. आराधना की	पुत्रकैः ॥	८. पुत्रों के

श्लोकार्थ—हे द्विजश्रेष्ठ ! आप मुझे आराधना की वही श्रेष्ठ विधि बताइये । जिससे पुत्रों के साथ कष्ट प्राप्त करती हुई, मुझ पर भगवान् शीघ्र ही प्रसन्न हो जायें ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

कश्यप उवाच— **एतन्मे भगवान्पृष्टः प्रजाकामस्य पद्मजः ।**
यदाह ते प्रवक्ष्यामि व्रतं केशवतोषणम् ॥२४॥

पदच्छेद— एतत् मे भगवान् पृष्टः प्रजाकामस्य पद्मजः ।
यद् आह ते प्रवक्ष्यामि व्रतम् केशव तोषणम् ॥

शब्दार्थ—

एतत्	६. यही बात	यद्	८. उन्होंने जो
मे	३. मैंने भी	आह	९. कहा था
भगवान्	४. भगवान्	ते	१३. तुम्हें
पृष्टः	७. पूछी थी	प्रवक्ष्यामि	१४. बतलाता हूँ
प्रजा	१. सन्तान की	व्रतम्	१२. वही व्रत
कामस्य	२. कामना से	केशव	१०. भगवान् को
पद्मजः ।	५. ब्रह्मा जी से	तोषणम् ॥	११. प्रसन्न करने वाला

श्लोकार्थ—हे देवि ! सन्तान की कामना से मैंने भी भगवान् ब्रह्मा जी से वही बात पूछी थी । उन्होंने जो कहा था भगवान् को प्रसन्न करने वाला वही व्रत तुम्हें बतलाता हूँ ।

पञ्चविंशः श्लोकः

फाल्गुनस्यामले पक्षे द्वादशाहं पयोव्रतः ।
अर्चयेदरविन्दाक्षं भक्त्या परमयान्वितः ॥२५॥

पदच्छेद— फाल्गुनस्य अमले पक्षे द्वादशाहम् पयोव्रतः ।
अर्चयेत् अरविन्दाक्षम् भक्त्या परमया अन्वितः ॥

शब्दार्थ—

फाल्गुनस्य	१. फाल्गुन के	अर्चयेत्	१०. पूजा करे
अमले	२. शुक्ल	अरविन्दाक्षम्	९. कमल नयन प्रभु को
पक्षे	३. पक्ष में	भक्त्या	७. भक्ति
द्वादशाहम्	४. बारह दिनों तक	परमया	६. परम
पयोव्रतः ।	५. दूध पी कर रहे (और)	अन्वितः ॥	८. युक्त होकर

श्लोकार्थ—फाल्गुन के शुक्ल पक्ष में बारह दिन तक दूध पी कर रहे। और परम भक्ति हो कर कमल नयन प्रभु को पूजा करे ॥

षड्विंशः श्लोकः

सिनीवाल्यां मृदाऽऽलिप्य स्नायात् क्रोडविदीर्णया ।
यदि लभ्येत वै स्रोतस्येतं मन्त्रमुदीरयेत् ॥२६॥

पदच्छेद— सिनीवाल्याम् मृदा आलिप्य स्नायात् क्रोड विदीर्णया ।
यदि लभ्येत वै स्रोतसि एतम् मन्त्रम् उदीरयेत् ॥

शब्दार्थ—

सिनीवाल्याम्	१. अमावस्या के दिन	यदि	२. यदि
मृदा	६. मिट्टी से	लभ्येत	३. मिल सके तो
आलिप्य	७. शरीर मल कर	वै स्रोतसि	८. नदी में
स्नायात्	९. स्नान करे	मन्त्रम्	१०. तब यह मन्त्र
क्रोड	४. वन्य सुअर को	उदीरयेत् ॥	११. पढ़ना चाहिये
विदीर्णया ।	५. खोदी हुई		

श्लोकार्थ—अमावस्या के दिन यदि मिल सके तो वन्य सुअर को खोदी हुई मिट्टी से शरीर मल कर नदी में स्नान करे। तब यह मन्त्र पढ़ना चाहिये ॥

सप्तविंशः श्लोकः

त्वं देव्यादिवराहेण रसायाः स्थानमिच्छता ।
उद्धृतासि नमस्तुभ्यं पाप्मानं मे प्रणाशय ॥२७॥

पदच्छेद— त्वम् देवि आदि वराहेण रसायाः स्थानम् इच्छता ।
उद्धृतासि नमः तुभ्यम् पाप्मानम् मे प्रणाशय ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	७.	तुम्हारा	इच्छता ।	३.	देने की इच्छा से
देवि	१.	हे देवि !	उद्धृतासि	८.	उद्धार किया था
आदि	४.	आदि	नमःतुभ्यम्	९.	तुम्हें नमस्कार है तुम
वराहेण	५.	वाराह भगवान् ने	पाप्मानम्	११.	पापों को
रसायाः	६.	रसातल से	मे	१०.	मेरे
स्थानम्	२.	प्राणियों को स्थान	प्रणाशय ॥	१२.	नष्ट कर दो

श्लोकार्थ—हे देवि ! प्राणियों को स्थान देने की इच्छा से आदि वाराह भगवान् ने रसातल से तुम्हारा उद्धार किया था । तुम्हें नमस्कार है । तुम मेरे पापों को नष्ट कर दो ।

अष्टाविंशः श्लोकः

निर्वर्तितात्मनियमो देवमर्चेत् समाहितः ।
अर्चायां स्थण्डिले सूर्ये जले वह्नौ गुरावपि ॥२८॥

पदच्छेद— निर्वर्तित आत्म नियमः देवम् अर्चेत् समाहितः ।
अर्चायाम् स्थण्डिले सूर्ये जले वह्नौ गुरौ अपि ॥

शब्दार्थ—

निर्वर्तित	३.	पूरा करके	अर्चायाम्	५.	पूजा करते हुये
आत्म	१.	अपने	स्थण्डिले	६.	मूर्ति, वेदी
नियमः	२.	नित्य नियमों को	सूर्ये, जले	७.	सूर्य, जल
देवम्	११.	भगवान् की	वह्नौ	८.	अग्नि और
अर्चेत्	१२.	आराधना करे	गुरौ	९.	गुरु देव के
समाहितः ।	४.	एकाग्रचित्त से	अपि ॥	१०.	रूप में भी

श्लोकार्थ—अपने नित्य नियमों को पूरा करके एकाग्रचित्त से पूजा करते हुये मूर्ति, वेदी, सूर्य, जल, अग्नि और गुरु देव के रूप में भी भगवान् की आराधना करे ॥

एकोनविंशः श्लोकः

नमस्तुभ्यं भगवते पुरुषाय महीयसे।
सर्वभूतनिवासाय वासुदेवाय साक्षिणे ॥२९॥

पदच्छेद— नमः तुभ्यम् भगवते पुरुषाय महीयसे।
सर्व भूत निवासाय वासुदेवाय साक्षिणे ॥

शब्दार्थ—

नमः	१०. नमस्कार है	सर्व	३. समस्त
तुभ्यम्	९. आपको	भूत	४. प्राणी मात्र में
भगवते	८. भगवान्	निवासाय	५. निवास करने वाले
पुरुषाय	२. परम पुरुष	वासुदेवाय	७. वासुदेव
साक्षिणे।	१. हे सर्वशक्तिमान्	साक्षिणे ॥	६. सब के साक्षी

श्लोकार्थ—हे सर्व शक्तिमान्, परम, पुरुष, समस्त प्राणियों में निवास करने वाले, सब के साक्षी, वासुदेव भगवान्, आप को नमस्कार है ॥

त्रिंशः श्लोकः

नमोऽव्यक्ताय सूक्ष्माय प्रधानपुरुषाय च।
चतुर्विंशद्गुणज्ञाय गुणसंख्यानहेतवे ॥३०॥

पदच्छेद— नमः अव्यक्ताय सूक्ष्माय प्रधान पुरुषाय च।
चतुर्विंशत् गुणज्ञाय गुणसंख्यान हेतवे ॥

शब्दार्थ—

नमः	११. आप को नमस्कार है	चतुर्विंशत्	५. चौबीस
अव्यक्ताय	१. अव्यक्त स्वरूप	गुणज्ञाय	६. गुणों के जानकर
सूक्ष्माय	१. सूक्ष्म	गुण	८. गुणों की
प्रधान	३. प्रकृति	संख्यान	९. संख्या के
पुरुषाय	४. पुरुष के रूप में स्थित	हेतवे	१०. मूल कारण
च।	७. और		

श्लोकार्थ—और अव्यक्त स्वरूप, सूक्ष्म, प्रकृति पुरुष के रूप में स्थित, चौबीस गुणों के जानकार और गुणों की संख्या के मूल कारण आप को नमस्कार है ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

नमो द्विशीर्ष्णे त्रिपदे चतुःशृङ्गाय तन्तवे ।

सप्तहस्ताय यज्ञाय त्रयीविद्यात्मने नमः ॥३१॥

पदच्छेद— नमः द्विशीर्ष्णे त्रिपदे चतुः शृङ्गाय तन्तवे ।

सप्तहस्ताय यज्ञाय त्रयीविद्या आत्मने नमः ॥

शब्दार्थ—

नमः	५.	आप को नमस्कार है	सप्तहस्ताय	६.	सात छन्द रूप हाथ वाले
द्विशीर्ष्णे	१.	दो कर्म रूप सिर वाले	यज्ञाय	८.	यज्ञ
त्रिपदे	२.	तीन सवन रूप पाद वाले	त्रयीविद्या	७.	त्रयी विद्या तथा
चतुः शृङ्गाय	३.	चार वेद रूप सींग वाले	आत्मने	९.	स्वरूप
तन्तवे ।	४.	कर्म फल के विस्तारक	नमः ॥	१०.	आप को नमस्कार है

श्लोकार्थ—दो कर्म रूप सिर वाले, तीन सवन रूप पाद वाले, चार वेद रूप सींग वाले, कर्म फल के विस्तारक आप को नमस्कार है। सात छन्द रूप हाथ वाले त्रयी विद्या तथा यज्ञ स्वरूप आप को नमस्कार है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

नमः शिवाय रुद्राय नमः शक्तिधराय च ।

सर्वविद्याधिपतये भूतानां पतये नमः ॥३२॥

पदच्छेद— नमः शिवाय रुद्राय नमः शक्तिधराय च ।

सर्व विद्या अधिपतये भूतानाम्पतये नमः ॥

शब्दार्थ—

नमः	३.	आप को नमस्कार है	सर्व	८.	समस्त
शिवाय	१.	कल्याण स्वरूप	विद्या	९.	विद्याओं के
रुद्राय	२.	प्रलयंकर	अधिपतये	१०.	स्वामी और
नमः	६.	आप को नमस्कार है	भूतानाम्	११.	भूतों के
शक्ति	४.	हे शक्तियों को	पतये	१२.	स्वामी
धराय	५.	धारण करने वाले	नमः ॥	१३.	आप को नमस्कार है
च ।	७.	और			

श्लोकार्थ—कल्याण स्वरूप, प्रलय कर, आप को नमस्कार है। हे शक्तियों को धारण करने वाले और समस्त विद्याओं के स्वामी और भूतों के स्वामो ! आपको नमस्कार है।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

नमो हिरण्यगर्भाय प्राणाय जगदात्मने ।
योगैश्वर्यशरीराय नमस्ते योगहेतवे ॥३३॥

पदच्छेद— नमः हिरण्यगर्भाय प्राणाय जगत् आत्मने ।
योग ऐश्वर्यं शरीराय नमस्ते योग हेतवे ॥

शब्दार्थ—

नमः	५. आप को नमस्कार है	योगैश्वर्य	६. योग और ऐश्वर्य रूप
हिरण्यगर्भाय	४. हे हिरण्यगर्भ !	शरीराय	७. शरीर वाले
प्राणाय	१. सब के प्राण और	नमस्ते	१०. आप को नमस्कार है
जगत्	२. जगत् के	योग	८. योग के
आत्मने ।	३. स्वरूप	हेतवे ॥	९. कारण स्वरूप

श्लोकार्थ—सब के प्राण और जगत् के स्वरूप हे हिरण्यगर्भ ! आपको नमस्कार है। योग और ऐश्वर्य रूप शरीर वाले योग के कारण स्वरूप आपको नमस्कार है ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

नमस्त आदिदेवाय साक्षिभूताय ते नमः ।
नारायणाय ऋषये नराय हरये नमः ॥३४॥

पदच्छेद— नमः ते आदि देवाय साक्षिभूताय ते नमः ।
नारायणाय ऋषये नराय हरये नमः ॥

शब्दार्थ—

नमः	३. नमस्कार है	नमः ।	७. नमस्कार है
ते	२. आप को	नारायणाय	९. नारायण
आदिदेवाय	१. हे आदि देव !	ऋषये	१०. ऋषि के रूप में प्रकट
साक्षि	४. सब के साक्षी	नराय	८. नर
भूताय	५. स्वरूप	हरये	११. भगवान् आपको
ते	६. आपको	नमः ॥	१२. नमस्कार है

श्लोकार्थ—हे आदि देव ! आप को नमस्कार है। सब के साक्षी स्वरूप आपको नमस्कार है। नर नारायण ऋषि के रूप में प्रकट भगवान् आप को नमस्कार है ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

नमो मरकतश्यामवपुषेऽधिगतश्रिये ।
केशवाय नमस्तुभ्यं नमस्ते पीतवाससे ॥३५॥

पदच्छेद— नमः मरकत श्याम वपुषे अधिगत श्रिये ।
केशवाय नमः तुभ्यम् नमस्ते पीत वाससे ॥

शब्दार्थ—

नमः	६. आपको नमस्कार है	केशवाय	७. हे केशव !
मरकत	१. मरकत मणि के समान	नमः	९. नमस्कार है
श्याम	२. साँवले	तुभ्यम्	८. आपको
वपुषे	३. शरीर वाले	नमस्ते	१२. आपको नमस्कार है
अधिगत	५. युक्त भगवान्	पीत	१०. हे पीले
श्रिये ।	४. लक्ष्मी देवी से	वाससे ॥	११. वस्त्र धारण करने वाले

श्लोकार्थ—मरकत मणि के समान साँवले शरीर वाले, लक्ष्मी देवी से युक्त भगवान् आपको नमस्कार है। हे केशव ! आपको नमस्कार है। हे पीले वस्त्र धारण करने वाले ! आपको नमस्कार है ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

त्वं सर्ववरदः पुंसां वरेण्य वरदर्षभ ।
अतस्ते श्रेयसे धीराः पादरेणुमुपासते ॥३६॥

पदच्छेद— त्वम् सर्ववरदः पुंसाम् वरेण्य वरदर्षभ ।
अतः ते श्रेयसे धीराः पाद रेणुम् उपासते ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	१. आप	अतः	८. इसलिये
सर्व	२. समस्त	ते	११. आप के
वरदः	३. वर देने वाले	श्रेयसे	१०. अपने कल्याणार्थ
पुंसाम्	४. जीवों के एक मात्र	धीराः	९. धीर बुद्धि पुरुष
वरेण्य	५. वरणीय और	पाद	१२. चरणों की
वरद	६. वर देने वालों में	रेणुम्	१३. रज की
ऋषभ ॥	७. श्रेष्ठ हैं	उपासते ॥	१४. उपासना करते हैं

श्लोकार्थ—आप समस्त वर देने वाले जीवों के एकमात्र वरणीय और वर देने वालों में श्रेष्ठ हैं। इसलिये धीर बुद्धि पुरुष अपने कल्याणार्थ आप के चरणों के रज की उपासना करते हैं ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

अन्ववर्तन्त यं देवाः श्रीश्च तत्पादपद्मयोः ।
स्पृहयन्त इवामोदं भगवान्मे प्रसीदताम् ॥३७॥

पदच्छेद— अन्ववर्तन्त यम् देवाः श्रीः च तत् पाद पद्मयोः ।
स्पृहयन्तः इव आमोदम् भगवान् मे प्रसीदताम् ॥

शब्दार्थ—

अन्ववर्तन्त	११.	सेवा में लगी रहती हैं	पद्मयोः ।	३.	कमलों की
यम्	१.	जिनके	स्पृहयन्तः	६.	पाने की लालसा से
देवाः	७.	देवता	इव	४.	मानों
श्रीः	९.	स्वयं लक्ष्मी जी भी	आमोदम्	५.	सुगन्ध
च	८.	और	भगवान्	१२.	वे भगवान्
तत्	१०.	जिनकी	मे	१३.	मुझ पर
पाद	२.	चरण	प्रसीदताम् ॥	१४.	प्रसन्न

श्लोकार्थ—जिनके चरण कमलों की मानों सुगन्ध पाने की लालसा से देवता और स्वयम् लक्ष्मी जो भी जिनकी सेवा में लगी रहती हैं, वे भगवान् मुझ पर प्रसन्न हों ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

एतैर्मन्त्रैर्हृषीकेशमावाहनपुरस्कृतम् ।
अर्चयेच्छ्रद्धया युक्तः पाद्योपस्पर्शनादिभिः ॥३८॥

पदच्छेद— एतैः मन्त्रैः हृषीकेशम् आवाहन पुरस्कृतम् ।
अर्चयेत् श्रद्धया युक्तः पाद्य उपस्पर्शन आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

एतैः	४.	फिर इन	अर्चयेत्	११.	पूजा करे
मन्त्रैः	५.	मंत्रों से	श्रद्धया	६.	श्रद्धा
हृषीकेशम्	२.	हृषीकेश का	युक्तः	७.	पूर्वक
आवाहन	३.	आवाहन कर ले	पाद्य	८.	पाद्य
पुरस्कृतम् ।	१.	पहले	उपस्पर्शन	९.	आचमन
			आदिभिः ॥	१०.	आदि के साथ

श्लोकार्थ—पहले हृषीकेश का आवाहन कर ले । फिर इन मंत्रों से श्रद्धा पूर्वक पाद्य, आचमन आदि के साथ पूजा करे ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

अर्चित्वा गन्धमाल्याद्यैः पयसा स्नपयेत् विभुम् ।
वस्त्रोपवीताभरणपाद्योपस्पर्शनैस्ततः ।
गन्धधूपादिभिश्चार्चेद् द्वादशाक्षरविद्यया ॥३९॥

पदच्छेद— अर्चित्वा गन्ध माल्य आद्यैः पयसा स्नपयेद् विभुम् ।
वस्त्र उपवीत आभरण पाद्य उपस्पर्शनैः ततः ।
गन्ध धूप आदिभिः च अर्चेत् द्वादश अक्षर विद्यया ॥

शब्दार्थ—

अर्चित्वा	३. पूजा करके	उपस्पर्शनैः	११. आचमन
गन्धमाल्य	१. गन्धमाला	ततः ।	७. उसके बाद
आद्यैः	२. आदि से	गन्ध	१२. गन्ध
पयसा	५. दूध से	धूप	१३. धूप
स्नपयेद्	६. स्नान करावे	आदिभिः	१४. आदि से और
विभुम् ।	४. भगवान् को	अर्चेत्	१८. भगवान् की पूजा करे
वस्त्र उपवीत	८. वस्त्रयज्ञोपवीत	द्वादश	१५. द्वादश
आभरण	९. आभूषण	अक्षर	१६. अक्षर
पाद्यैः	१०. पाद्य	विद्यया ॥	१७. मन्त्र से

श्लोकार्थ—गन्ध, माला आदि से पूजा करके भगवान् को दूध से स्नान करावे । उसके बाद वस्त्र, यज्ञोपवीत, आभूषण, पाद्य, आचमन, गन्ध, धूप आदि से और द्वादश अक्षर मन्त्र से भगवान् की पूजा करे ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

शृतं पयसि नैवेद्यं शाल्यन्नं विभवे सति ।
ससर्पिः सगुडं दत्त्वा जुहुयान्मूलविद्यया ॥४०॥

पदच्छेद— शृतम् पयसि नैवेद्यम् शालि अन्नम् विभवे सति ।
सर्पिः सगुडम् दत्त्वा जुहुयात् मूल विद्यया ॥

शब्दार्थ—

शृतम्	४. पकाये हुये	सति ।	२. हो तो
पयसि	३. दूध से	ससर्पिः	५. घी और
नैवेद्यम्	९. नैवेद्य लगाये और	सगुडम्	६. गुड मिले हुये
शालि	७. शालि के	दत्त्वा	१०. इसी को लेकर
अन्नम्	८ चावल का	जुहुयात्	१२. हवन करे
विभवे	१. सामर्थ्य	मूल विद्यया ॥	११. द्वादशाक्षर मन्त्र के द्वारा

श्लोकार्थ—सामर्थ्य हो तो दूध से पकाये हुये घी और गुड मिले हुये शालि के चावल का नैवेद्य लगाये और इसी को लेकर द्वादशाक्षर मंत्र से हवन करे ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

निवेदितं तद् भक्ताय दद्याद् भुञ्जीत वा स्वयम् ।
दत्त्वाऽऽचमनमर्चित्वा ताम्बूलं च निवेदयेत् ॥४१॥

पदच्छेद— निवेदितम् तत् भक्ताय दद्यात् भुञ्जीत वा स्वयम् ।
दत्त्वा आचमनम् अर्चित्वा ताम्बूलम् च निवेदयेत् ॥

शब्दार्थ—

निवेदितम्	२. नैवेद्य को	दत्त्वा	९. देकर
तत्	१. उस	आचमनम्	८. आचमन
भक्ताय	३. भक्तों में	अर्चित्वा	१०. पूजा करे तथा
दद्यात्	४. बांट दे	ताम्बूलम्	११. ताम्बूल
भुञ्जीत	६. खा ले	च	७. और
वा स्वयम् ।	५ अथवा स्वयम्	निवेदयेत् ॥	१२. निवेदित करे

श्लोकार्थ—उस नैवेद्य को भक्तों में बांट दे । अथवा स्वयम् खा ले । और आचमन देकर पूजा करे । तथा ताम्बूल निवेदित करे ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

जपेदष्टोत्तरशतं स्तुवीत स्तुतिभिः प्रभुम् ।
कृत्वा प्रदक्षिणं भूमौ प्रणमेद् दण्डवन्मुदा ॥४२॥

पदच्छेद— जपेत् अष्टोत्तर शतम् स्तुवीत स्तुतिभिः प्रभुम् ।
कृत्वा प्रदक्षिणम् भूमौ प्रणमेद् दण्डवत् मुदा ॥

शब्दार्थ—

जपेत्	२. मन्त्र का जप करे	कृत्वा	७. कर के
अष्टोत्तरशतम्	१. एक सौ आठ बार	प्रदक्षिणम्	६. प्रदक्षिणा
स्तुवीत	५. स्तवन करे	भूमौ	८. पृथ्वी पर
स्तुतिभिः	३. स्तुतियों के द्वारा	प्रणमेद्	११. प्रणाम करे
प्रभुम् ।	४. भगवान् का	दण्डवत्	९. दण्ड के समान लोट कर
		मुदा ॥	१०. बड़े प्रेम से

श्लोकार्थ—एक सौ आठ बार मन्त्र का जप करे । स्तुतियों के द्वारा भगवान् का स्तवन करे । प्रदक्षिणा करके पृथ्वी पर दण्ड के समान लोट कर बड़े प्रेम से प्रणाम करे ।

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

कृत्वा शिरसि तच्छेषां देवमुद्वासयेत् ततः ।
द्व्यवरान्भोजयेद् विप्रान्पायसेन यथोचितम् ॥४३॥

पदच्छेद— कृत्वा शिरसि तत् शेषाम् देवम् उद्वासयेत् ततः ।
द्व्यवरान् भोजयेत् विप्रान् पायसेन यथा उचितम् ॥

शब्दार्थ—

कृत्वा	४.	लगा कर	द्व्यवरान्	८.	कम से कम दो श्रेष्ठ
शिरसि	३.	सिर से	भोजयेत्	१३.	भोजन करावे
तत्	१.	उस	विप्रान्	९.	ब्राह्मणों को
शेषाम्	२.	निर्माल्य को	पायसेन	१२.	खीर का
देवम्	५.	देवता का	यथा	११.	विधि से
उद्वासयेत्	६.	विसर्जन करे	उचितम् ॥	१०.	उचित
ततः ।	७.	फिर			

श्लोकार्थ—उस निर्माल्य को सिर से लगा कर देवता का विसर्जन करे । फिर कम से कम दो ब्राह्मणों को उचित विधि से खीर का भोजन करावे ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

भुञ्जीत तैरनुज्ञातः शेषं सेष्टः सभाजितैः ।
ब्रह्मचार्यथ तद्रात्र्यां श्वोभूते प्रथमेऽहनि ॥४४॥

पदच्छेद— भुञ्जीत तैः अनुज्ञातः शेषम् सेष्टः सभाजितैः ।
ब्रह्मचारीअथ तत् रात्र्याम् श्वोभूते प्रथमे अहनि ॥

शब्दार्थ—

भुञ्जीत	६.	ग्रहण करे	ब्रह्मचारीअथ	९.	ब्रह्मचर्य का पालन करे
तैः	१.	उन	तत्	७.	उस
अनुज्ञातः	३.	आज्ञा पा कर	रात्र्याम्	८.	रात्रि
शेषम्	४.	बचे हुये अन्न को	श्वोभूते	१०.	दूसरे
सेष्टः	५.	बन्धु जनों के साथ	प्रथमे	१२.	प्रातः काल ही उठे
सभाजितैः ।	२.	सत्कृत ब्राह्मणों से	अहनि ॥	११.	दिन

श्लोकार्थ—उन सत्कृत ब्राह्मणों से आज्ञा पाकर बचे हुये अन्न को बन्धुजनों के साथ ग्रहण करे । उस रात्रि ब्रह्मचर्य का पालन करे । दूसरे दिन प्रातः काल ही उठे ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

स्नातः शुचिर्यथोक्तेन विधिना सुसमाहितः ।
पयसा स्नापयित्वार्चेद् यावद्व्रतसमापनम् ॥४५॥

पदच्छेद— स्नातः शुचिः यथा उक्तेन विधिना सुसमाहितः ।
पयसा स्नापयित्वा अर्चेद् यावत् व्रत समापनम् ॥

शब्दार्थ—

स्नातः	१. स्नान करके	पयसा	१०. दूध से
शुचिः	२. पवित्र हो कर	स्नापयित्वा	११. स्नान करा कर
यथा	३. पहले	अर्चेत्	१२. भगवान् का पूजन करे
उक्तेन	४. बताई गई	यावत्	७. जब-तक
विधिना	५. विधि से	व्रत	८. व्रत
सुसमाहितः ।	६. एकाग्रचित होकर	समापनम् ॥	९. समाप्त हो

श्लोकार्थ—स्नान करके पवित्र होकर पहले बताई गई विधि से एकाग्रचित्त हो कर जब तक व्रत समाप्त न हो दूध से स्नान करा कर भगवान् का पूजन करे ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

पयोभक्षो व्रतमिदं चरेद् विष्णवर्चनादृतः ।
पूर्ववज्जुहुयादग्निं ब्राह्मणांश्चापि भोजयेत् ॥४६॥

पदच्छेद— पयः भक्षः व्रतम् इदम् चरेत् विष्णु अर्चन आदृतः ।
पूर्ववत् जुहुयात् अग्निम् ब्राह्मणान् च अपि भोजयेत् ॥

शब्दार्थ—

पयः भक्षः	४. केवल दूध पी कर	पूर्ववत्	८. पहले के समान
व्रतम्	६. व्रत	जुहुयात्	१०. हवन करना
इदम्	५. यह	अग्निम्	९. अग्नि में
चरेत्	७. करना चाहिये	ब्राह्मणान्	१२. ब्राह्मणों को
विष्णु	१. भगवान् की	च	११. और
अर्चन	२. पूजा में	अपि	१३. भी
आदृतः ।	३. आदर बुद्धि रखते हुये	भोजयेत् ॥	१४. भोजन कराना चाहिये

श्लोकार्थ—भगवान् की पूजा में आदर बुद्धि रखते हुये केवल दूध पी कर यह व्रत करना चाहिये । पहले के समान अग्नि में हवन करना और ब्राह्मणों को भी भोजन कराना चाहिये ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

एवं त्वहरहः कुर्याद् द्वादशाहं पयोव्रतः ।
हरेराराधनं होममर्हणं द्विजतर्पणम् ॥४७॥

पदच्छेद— एवम् तु अहरहः कुर्यात् द्वादशाहं पयोव्रतः ।
हरेः आराधनम् होमम् अर्हणम् द्विज तर्पणम् ॥

शब्दार्थ—

एवम् तु	१. इस प्रकार	हरेः	५. भगवान् की
अहरहः	४. प्रति दिन	आराधनम्	६. आराधना
कुर्यात्	११. कराता रहे	होमम्	७. होम
द्वादशाह	३. बारह दिन तक	अर्हणम्	८. पूजा और
पयोव्रतः ।	२. पयोव्रती रह कर	द्विज	९. ब्राह्मण
		तर्पणम् ॥	१०. भोजन

श्लोकार्थ—इस प्रकार पयोव्रती रह कर प्रतिदिन भगवान् की आराधना, होम-पूजा और ब्राह्मण भोजन कराता रहे ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

प्रतिपद्दिनमारभ्य यावच्छुक्लत्रयोदशी ।
ब्रह्मचर्यमधःस्वप्नं स्नानं त्रिषवणं चरेद् ॥४८॥

पदच्छेद— प्रतिपद् दिनम् आरभ्य यावत् शुक्ल त्रयोदशी ।
ब्रह्मचर्यम् अधः स्वप्नम् स्नानम् त्रिषवणम् चरेत् ॥

शब्दार्थ—

प्रतिपद्	१. फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा	ब्रह्मचर्यम्	७. ब्रह्मचर्य से रहे
दिनम्	२. के दिन	अधः	८. पृथ्वी पर
आरभ्य	३. से लेकर	स्वप्नम्	९. शयन करे
यावत्	६. पर्यन्त	स्नानम्	११. स्नान
शुक्ल	४. शुक्ल पक्ष की	त्रिषवणम्	१०. तीनों समय
त्रयोदशी ।	५. त्रयोदशी	चरेत् ॥	१२. करे

श्लोकार्थ—फाल्गुन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी पर्यन्त ब्रह्मचर्य से रहे। पृथ्वी पर शयन करे, तीनों समय स्नान करे ॥

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

वर्जयेदसदालापं भोगानुच्चावचांस्तथा ।
अहिंस्रः सर्वभूतानां वासुदेवपरायणः ॥४६॥

पदच्छेद — वर्जयेत् असत् आलापम् भोगान् उच्चावचान् तथा ।
अहिंसः सर्वभूतानाम् वासुदेव परायणः ॥

शब्दार्थ—

वर्जयेत्	६. छोड़ दे	तथा	३. तथा
असद्	१. मिथ्या	अहिंस्रः	८. हिंसा न करे
आलापम्	२. वार्तालाप	सर्वभूतानाम्	७. किसी भी प्राणी की
भोगान्	५. भोगों को	वासुदेव	९. भगवान् की
उच्चावचान्	४. छोटे-बड़े	परायणः ॥	१०. आराधना करता रहे

श्लोकार्थ—मिथ्या वार्तालाप तथा छोटे-बड़े भोगों को छोड़ दे । किसी भी प्राणी की हिंसा न करे । भगवान् की आराधना करता रहे ॥

पञ्चाशः श्लोकः

त्रयोदश्यामथो विष्णोः स्नपनं पञ्चकैर्विभोः ।
कारयेच्छास्त्रदृष्टेन विधिना विधिकोविदैः ॥५०॥

पदच्छेद— त्रयोदश्याम् अथो विष्णोः स्नपनम् पञ्चकैः विभोः ।
कारयेत् शास्त्र दृष्टेन विधिना विधि कोविदैः ॥

शब्दार्थ—

त्रयोदश्याम्	२. त्रयोदशी के दिन	कारयेत्	१२. करावे
अथो	१. तदनन्तर	शास्त्र	५. शास्त्र में
विष्णोः	९. विष्णु को	दृष्टेन	६. बताई गई
स्नपनम्	११. स्नान	विधिना	७. विधि से
पञ्चकैः	१०. पञ्चामृत से	विधि	३. विधि
विभोः ।	८. भगवान्	कोविदैः ॥	४. जानने वाले ब्राह्मणों द्वारा

श्लोकार्थ—तदनन्तर त्रयोदशी के दिन विधि जानने वाले ब्राह्मणों द्वारा शास्त्र में बताई गई विधि से भगवान् विष्णु को पञ्चामृत से स्नान करावे ॥

एकपञ्चाशः श्लोकः

पूजां च महतीं कुर्याद् वित्तशाठ्यविवर्जितः ।
चरुं निरूप्य पयसि शिपिविष्टाय विष्णवे ॥५१॥

पदच्छेद— पूजाम् च महतीम् कुर्यात् वित्त शाठ्य विर्वजितः ।
चरुम् निरूप्य पयसि शिपिविष्टाय विष्णवे ॥

शब्दार्थ:—

पूजाम्	५.	पूजा	चरुम्	९.	चरु (खीर)
च	७.	और	निरूप्य	१०.	पकाकर
महतीम्	४.	बहुत बड़ी	पयसि	८.	दूध में
कुर्यात्	६.	करनी चाहिये	शिपिविष्टाय	१२.	अर्पित करना चाहिये
वित्त	१.	धन का	विष्णवे ॥	११.	भगवान् विष्णु को
शाठ्य	२.	संकोच			
विर्वजितः ॥	३.	छोड़ कर			

श्लोकार्थ— धन का संकोच छोड़ कर बहुत बड़ी पूजा करनी चाहिये । और दूध में चरु पकाकर भगवान् विष्णु को अर्पित करना चाहिये ।

द्विपञ्चाशः श्लोकः

शृतेन तेन पुरुषं यजेत सुसमाहितः ।
नैवेद्यं चातिगुणवद् दद्यात्पुरुषतुष्टिदम् ॥५२॥

पदच्छेद— शृतेन तेन पुरुष यजेत सुसमाहितः ।
नैवेद्यम् च अति गुणवत् दद्यात् पुरुषम तुष्टिदम् ॥

शब्दार्थ:—

शृतेन	२.	पकाये हुये	च	६.	और
तेन	३.	उस चरु के द्वारा	अति	९.	अत्यन्त
पुरुषम्	४.	भगवान् का	गुणवत्	१०.	गुणयुक्त
यजेत	५.	यजन करना चाहिये	दद्यात्	१२.	अर्पित करना चाहिये
सुसमाहितः	१.	एकाग्र चित्त से	पुरुषम्	७.	भगवान् को
नैवेद्यम्	११.	नैवेद्य	तुष्टिदम् ॥	८.	प्रसन्न करने वाला

श्लोकार्थ— एकाग्रचित्त से पकाये हुये उस चरु के द्वारा भगवान् का यजन करना चाहिये । और भगवान् को प्रसन्न करने वाला अत्यन्त गुण युक्त नैवेद्य अर्पित करना चाहिये ॥

त्रिपञ्चाशः श्लोकः

आचार्यं ज्ञानसम्पन्नं वस्त्राभरणधेनुभिः ।
तोषयेदृत्विजश्चैव तद्विद्ध्याराधनं हरेः ॥५३॥

पदच्छेद— आचार्यम् ज्ञान सम्पन्नम् वस्त्र आभरण धेनुभिः ।
तोषयेत् ऋत्विजः च एव तत् विधि आराधनम् हरेः ॥

शब्दार्थ—

आचार्यम्	३. आचार्य	तोषयेत्	९. सन्तुष्ट करना चाहिये
ज्ञान	१. ज्ञान	ऋत्विजः	५. ऋत्विजों को
सम्पन्नम्	२. सम्पन्न	च एव	४. और
वस्त्र	६. वस्त्र	तत् विधि	१०. इस विधि को भी
आभरण	७. आभूषण और	आराधनम्	१२. आराधना मानना चाहिये
धेनुभिः ।	८. गौ (आदि देकर)	हरेः ॥	११. भगवान् की

श्लोकार्थ—ज्ञान सम्पन्न आचार्य और ऋत्विजों को वस्त्र आभूषण, आदि देकर सन्तुष्ट करना चाहिये । इस विधि को भी भगवान् की आराधना मानना चाहिये ॥

चतुःपञ्चाशः श्लोकः

भोजयेत् तान् गुणवता सदन्नेन शुचिस्मिते ।
अन्यांश्च ब्राह्मणाञ्छक्त्या ये च तत्र समागताः ॥५४॥

पदच्छेद— भोजयेत् ताम् गुणवता सद्अन्नेन शुचिस्मिते ।
अन्यान् च ब्राह्मणान् शक्त्या ये च तत्र समागताः ॥

शब्दार्थ—

भोजयेत्	६. भोजन कराना चाहिये	अन्यान् च	१०. उन
तान्	२. उन आचार्यादि को	ब्राह्मणान्	११. ब्राह्मणों को भी
गुणवता	३. गुण युक्त	शक्त्या	१२. यथा शक्ति (भोजन करायें)
सद्	४. शुद्ध सात्त्विक	ये च	७. और जो
अन्नेन	५. अन्न का बना	तत्र	८. वहाँ
शुचिस्मिते ।	१. हे प्रिये	समागताः ॥	९. आ जायें

श्लोकार्थ—हे प्रिये ! उन आचार्यादि को गुण युक्त शुद्ध सात्त्विक अन्न का बना भोजन कराना चाहिये । और जो वहाँ आ जायें, उन ब्राह्मणों को भी यथाशक्ति भोजन करायें ॥

पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

दक्षिणां गुरवे दद्यादृत्विग्भ्यश्च यथार्हतः ।
अन्नाद्येनाश्वपाकांश्च प्रीणयेत्समुपागतान् ॥५५॥

पदच्छेद— दक्षिणाम् गुरवे दद्यात् ऋत्विग्भ्यः च यथा अर्हतः ।
अन्न आद्येन अश्वपाकान् च प्रीणयेत् समुपागतान् ॥

शब्दार्थ—

दक्षिणाम्	५. दक्षिणा	अन्न	१०. अन्न
गुरवे	१. गुरु	आद्येन	११. आदि से
दद्यात्	६. देनी चाहिये	अश्वपाकान्	९. चाण्डाल आदि हों उन्हें
ऋत्विग्भ्यः	३. ऋत्विजों को	च	७. और जो
च	२. और	प्रीणयेत्	१२. सन्तुष्ट करना चाहिये
यथा अर्हतः ।	४. यथा योग्य	समुपागतान् ॥	८. आये हुये

श्लोकार्थ—गुरु और ऋत्विजों को यथा योग्य दक्षिणा देनी चाहिये । और जो आये हुये चाण्डाल आदि हों उन्हें अन्नादि से सन्तुष्ट करना चाहिये ॥

षटपञ्चाशः श्लोकः

भुक्तवत्सु च सर्वेषु दीनान्धकृपणेषु च ।
विष्णोस्तत्प्रीणनं विद्वान्भुञ्जीत सह बन्धुभिः ॥५६॥

पदच्छेद— भुक्तवत्सु च सर्वेषु दीन अन्ध कृपणेषु च ।
विष्णोः तत् प्रीणनम् विद्वान् भुञ्जीत सह बन्धुभिः ॥

शब्दार्थ—

भुक्तवत्सु	७. भोजन कर लेने पर	विष्णोः	९. भगवान् विष्णु की
च	१. और	तत्	८. उसे
सर्वेषु	६. सब के	प्रीणनम्	१०. प्रसन्नता
दीन	२. दीन	विद्वान्	११. समझ कर
अन्ध	३. अन्धे	भुञ्जीत	१४. स्वयम् भोजन करे
कृपणेषु	५. असमर्थ आदि	सह	१३. साथ
च ।	४. और	बन्धुभिः ॥	१२. बन्धु-बान्धवों के

श्लोकार्थ—और दीन-अन्धे और असमर्थ आदि सबके भोजन कर लेने पर उसे भगवान् विष्णु की प्रसन्नता समझ कर बन्धु-बान्धवों के साथ स्वयम् भोजन करे ।

सप्तपञ्चाश: श्लोकः

नृत्यवादित्रगीतैश्च स्तुतिभिः स्वस्तिवाचकैः ।
कारयेत्तत्कथाभिश्च पूजां भगवतोऽन्वहम् ॥५७॥

नृत्य वादित्र गीतैः च स्तुतिभिः स्वस्ति वाचकैः ।
कारयेत् तत् कथाभिः च पूजाम् भगवतः अन्वहम् ॥

शब्दार्थ—

नृत्य	२. नाच	कारयेत्	१४. कराये
वादित्र	४. बाजे-गाजे से	तत्	१०. उन श्रेष्ठ
गीतैः	३. गान	कथाभिः	११. भगवत्कथाओं से
च	७. और	च	६. और
स्तुतिभिः	८. स्तुति	पूजाम्	१३. पूजा
स्वस्ति	५. स्वस्ति	भगवतः	१२. भगवान् की
वाचकैः	६. वाचन	अन्वहम् ॥	१. प्रति दिन

श्लोकार्थ—प्रति दिन नाच, गान, बाजे-गाजे से स्वस्तिवाचन, स्तुति और उन श्रेष्ठ भगवत्कथाओं से भगवान् की पूजा कराये ॥

अष्टपञ्चाशः श्लोकः

एतत्पयोव्रतं नाम पुरुषाराधनं परम् ।
पितामहेनाभिहितं मया ते समुदाहृतम् ॥५८॥

एतत् पयोव्रतम् नाम पुरुष आराधनम् परम् ।
पितामहेन अभिहितम् मया ते समुदाहृतम् ॥

शब्दार्थ—

एतत्	१. यह	पितामहेन	७. ब्रह्मा जी द्वारा
पयोव्रतम्	२. पयोव्रत	अभिहितम्	८. बताया गया (यह व्रत)
नाम	३. नाम की	मया	९. मैंने
पुरुष	४. भगवान् की	ते	१०. तुम्हें
आराधनम्	६. आराधना है	समुदाहृतम् ॥	११. भली भाँति बता दिया
परम् ।	५. श्रेष्ठ		

श्लोकार्थ— यह पयोव्रत नाम की भगवान् की श्रेष्ठ आराधना है। ब्रह्मा जी द्वारा बताया गया यह व्रत मैंने तुम्हें भली-भाँति बता दिया ॥

एकोनषष्टितमः श्लोकः

त्वं चानेन महाभागे सम्यक्चीर्णेन केशवम् ।
आत्मना शुद्धभावेन नियतात्मा भजाऽव्ययम् ॥५९॥

पदच्छेद— त्वम् च अनेन महाभागे सम्यक् चीर्णेन केशवम् ।
आत्मना शुद्ध भावेन नियत आत्मा भज अव्ययम् ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	२. तुम	आत्मना	९. अपने अन्तः करण में
च	६. और	शुद्ध	१०. शुद्ध
अनेन	३. इस व्रत का	भावेन	११. भाव से
महाभागे	१. हे भाग्यशालिनी !	नियत	८. वश में करके
सम्यक्	४. भली भाँति	आत्मा	७. इन्द्रियों को
चीर्णेन	५. अनुष्ठान करके	भज	१४. आराधना
केशवम् ।	१३. भगवान् की	अव्ययम् ॥	१२. अविनाशी

श्लोकार्थ—हे भाग्यशालिनी ! तुम इस व्रत का भलीभाँति अनुष्ठान करके और इन्द्रियों को वश में करके अपने अन्तः करण में शुद्ध भाव से अविनाशी भगवान् की आराधना करो ॥

षष्टितमः श्लोकः

अयं वै सर्वयज्ञाख्यः सर्वव्रतमिति स्मृतम् ।
तपःसारमिदं भद्रे दानं चेश्वरतर्पणम् ॥६०॥

पदच्छेद— अयम् वै सर्वयज्ञ आख्यः सर्वव्रतम् इति स्मृतम् ।
तपः सारम् इदम् भद्रे दानम् च ईश्वर तर्पणम् ॥

शब्दार्थ—

अयम्	३. यह व्रत	तपः	१२. समस्त तपस्याओं का
वै	२. निश्चय ही	सारम्	१३. सार
सर्वयज्ञ	७. सर्वयज्ञ और	इदम्	११. यह
आख्यः	६. इसका नाम	भद्रे	१. हे कल्याणी ।
सर्वव्रतम्	८. सर्व व्रत	दानम्	१५. श्रेष्ठ दान है
इति	९. ऐसा	च	१४. और
स्मृतम् ।	१०. कहा गया है	ईश्वर	४. भगवान् को
		तर्पणम् ॥	५. सन्तुष्ट करने वाला है

श्लोकार्थ—हे कल्याणी ! निश्चय ही यह व्रत भगवान् को सन्तुष्ट करने वाला है । इसका नाम सर्वयज्ञ और सर्वव्रत ऐसा कहा गया है । यह तपस्याओं का सार और श्रेष्ठ दान है ॥

एकषष्टितमः श्लोकः

त एव नियमाः साक्षात्त एव च यमोत्तमाः ।
तपो दानं व्रतं यज्ञो येन तुष्यत्यधोक्षजः ॥६१॥

पदच्छेद— ते एव नियमाः साक्षात् ते एव च यमउत्तमाः ।
तपः दानम् व्रतम् यज्ञः येन तुष्यति अधोक्षजः ॥

शब्दार्थ—

ते एव	४.	वे ही	तपः	८.	वे ही तपस्या
नियमाः	६.	नियम हैं	दानम्	९.	दान और
साक्षात्	५.	सच्चे	व्रतम्	१०.	व्रत तथा
ते एव	७.	वे ही	यज्ञः	११.	यज्ञ हैं
च यम	९.	यम हैं	येन	१.	जिनसे
उत्तमाः ।	८.	उत्तम	तुष्यति	३.	प्रसन्न होते हैं
			अधोक्षजः ॥	२.	भगवान्

श्लोकार्थ—जिनसे भगवान् प्रसन्न हों, वे ही सच्चे नियम हैं। वे ही उत्तम यम हैं। वे ही तपस्या, व्रत, दान और यज्ञ हैं ॥

द्वाषष्टितमः श्लोकः

तस्मादेतद्व्रतं भद्रे प्रयता श्रद्धया चर ।
भगवान्परितुष्टस्ते वरानाशु विधास्यति ॥६२॥

पदच्छेद— तस्मात् एतत् व्रतम् भद्रे प्रयता श्रद्धया चर ।
भगवान् परितुष्टः ते वरान् आशु विधास्यति ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१.	इसलिये	भगवान्	८.	भगवान्
एतत्	५.	इस	परितुष्टः	११.	प्रसन्न होकर
व्रतम्	६.	व्रत का	ते	१०.	तुम पर
भद्रे	२.	हे देवि !	वरान्	१२.	तुम्हें वरदान
प्रयता	३.	संयम और	आशु	९.	शीघ्र ही
श्रद्धया	४.	श्रद्धा से तुम	विधास्यति ॥	१३.	देंगे
चर ।	७.	पालन करो			

श्लोकार्थ—इसलिये हे देवि ! संयम और श्रद्धा से तुम इस व्रत का पालन करो। भगवान् शीघ्र ही तुम पर प्रसन्न होकर तुम्हें वरदान देंगे ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमस्कन्धे
अदितिपयोव्रतकथनं नाम षोडशः अध्यायः ॥१६॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

सप्तदशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— इत्युक्ता सादिती राजन्स्वभर्त्रा कश्यपेन वै।
अन्वतिष्ठद् व्रतमिदं द्वादशाहमतन्द्रिता ॥१॥

पदच्छेद— इति उक्ता सा अदितिः राजन् स्वभर्त्रा कश्यपेन वै।
अन्वतिष्ठत् व्रतम् इदम् द्वादशाहम् अतन्द्रिता ॥

शब्दार्थ—

इति	५.	इस प्रकार	वै।	२.	निश्चय ही
उक्ता	६.	उपदेश पाकर	अन्वतिष्ठत्	१२.	अनुष्ठान किया
सा अदितिः	७.	उस अदित ने	व्रतम्	११.	व्रत का
राजन्	१.	हे परीक्षित् !	इदम्	१०.	इस
स्वभर्त्रा	३.	अपने पति	द्वादशाहम्	९.	बारह दिन तक
कश्यपेन	४.	कश्यप ऋषि के द्वारा	अतन्द्रिता ॥	८.	बड़ी सावधानी से

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! निश्चय ही अपने पति कश्यप ऋषि के द्वारा इस प्रकार उपदेश पाकर उस अदित ने बड़ी सावधानी से बारह दिनों तक इस व्रत का अनुष्ठान किया ॥

द्वितीयः श्लोकः

चिन्तयन्त्येकया बुद्ध्या महापुरुषमीश्वरम्।
प्रगृह्येन्द्रियदुष्टाश्वान्मनसा बुद्धिसारथिः ॥२॥

पदच्छेद— चिन्तयन्ती एकया बुद्ध्या महा पुरुषम् ईश्वरम्।
प्रगृह्य इन्द्रिय दुष्ट अश्वान् मनसा बुद्धि सारथिः ॥

शब्दार्थ—

चिन्तयन्ती	१२.	चिन्तन करती रही	प्रगृह्य	६.	अपने वश में कर लिया (और)
एकया	७.	एकनिष्ठ	इन्द्रिय	४.	इन्द्रिय रूप
बुद्ध्या	८	बुद्धि से वह	दुष्ट अश्वान्	५.	दुष्ट घोड़ों को
महा	१०	श्रेष्ठ	मनसा	३.	मन की लगाम से उसने
पुरुषम्	९.	पुरुषों में	बुद्धि	१.	बुद्धि को
ईश्वरम्।	११.	परमात्मा का	सारथिः ॥	२.	सारथि बना कर

श्लोकार्थ—बुद्धि को सारथि बना कर मन की लगाम से उसने इन्द्रिय रूप दुष्ट घोड़ों को अपने वश में कर लिया। और एकनिष्ठ बुद्धि से वह पुरुषों में श्रेष्ठ परमात्मा का चिन्तन करती रही ॥

तृतीयः श्लोकः

मनश्चैकाग्रया बुद्ध्या भगवत्यखिलात्मनि ।
वासुदेवे समाधाय चचार ह पयोव्रतम् ।।३।।

पदच्छेद— मनः च एकाग्रया बुद्ध्या भगवति अखिल आत्मनि ।
वासुदेवे समाधाय चचार ह पयोव्रतम् ।।

शब्दार्थ—

मनः	४. अपने मन को	आत्मनि ।	६. आत्मा
च	१. और उसने	वासुदेवे	८. वासुदेव में
एकाग्रया	२. एकाग्र	समाधाय	९. लगा कर
बुद्ध्या	३. बुद्धि से	चचार ह	११. अनुष्ठान किया
भगवति	७. भगवान्	पयोव्रतम् ।।	१०. पयोव्रत का
अखिल	५. सब की		

श्लोकार्थ—और उसने एकाग्र बुद्धि से अपने मन को सब की आत्मा भगवान् वासुदेव में लगा कर पयोव्रत का अनुष्ठान किया ।।

चतुर्थः श्लोकः

तस्याः प्रादुरभूत्तात भगवानादिपूरुषः ।
पीतवासाश्चतुर्बाहुः शङ्खचक्रगदाधरः ।।४।।

पदच्छेद— तस्याः प्रादुरभूत् तात भगवान् आदि पूरुषः ।
पीतवासाः चतुर्बाहुः शङ्ख चक्र गदा धरः ।।

शब्दार्थ—

तस्याः	१०. उसके सामने	पीतवासाः	६. पीताम्बरधारी
प्रादुरभूत्	११. प्रकट हुये	चतुर्बाहुः	२. चारों भुजाओं
तात	१. हे परीक्षित् !	शङ्ख	३. शङ्ख
भगवान्	९. परमात्मा	चक्र	४. चक्र
आदि	७. आदि	गदाधरः ।।	५. गदा (पद्म) धारण किये हुये
पूरुषः ।	८. पुरुष		

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! चारों भुजाओं में शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म धारण किये हुये, पीताम्बरधारी, आदि पुरुष परमात्मा उसके सामने प्रकट हुये ।।

पञ्चमः श्लोक

तं नेत्रगोचरं वीक्ष्य सहसोत्थाय सादरम् ।
ननाम भुवि कायेन दण्डवत् प्रीतिविह्वला ॥५॥

पदच्छेद— तम् नेत्र गोचरम् वीक्ष्य सहसा उत्थाय सादरम् ।
ननाम भुवि कायेन दण्डवत् प्रीति विह्वला ॥

शब्दार्थ—

तम्	२.	उन भगवान् को	ननाम	१३.	प्रणाम किया
नेत्र	३.	नेत्रों के	भुवि	१०.	पृथ्वी पर
गोचरम्	४.	सामने	कायेन	११.	शरीर से लोट कर
वीक्ष्य	५	देख कर	दण्डवत्	१२.	दण्डवत्
सहसा	१.	सहसा	प्रीति	८.	फिर प्रेम से
उत्थाय	७.	उठ खड़ी हुई	विह्वला	९.	विह्वल होकर
सादरम् ।	६.	अदिति सादर			

श्लोकार्थ—सहसा उन भगवान् को नेत्रों के सामने देखकर अदिति सादर उठ खड़ी हुई । फिर प्रेम से विह्वल होकर पृथ्वी पर शरीर से लोट कर दण्डवत् प्रणाम किया ॥

षष्ठः श्लोकः

सोत्थाय बद्धाञ्जलिरीडितुं स्थिता नोत्सेह आनन्दजलाकुलेक्षणा ।
बभूव तूष्णीं पुलकाकुलाकृतिस्तद्दर्शनात्युत्सवगात्रवेपथुः ॥६॥

पदच्छेद— सा उत्थाय बद्ध अञ्जलिः ईडितुम् स्थिता न उत्सेहे आनन्द जल आकुल ईक्षणा ।
बभूव तूष्णीम् पुलक आकुल आकृतिः तत् दर्शन अति उत्सव गात्र वेपथुः ॥

शब्दार्थ—

सा उत्थाय	१.	वह अदिति उठ कर	बभूव	१४.	हो गई
बद्ध	३.	जोड़ कर	तूष्णीम्	१३.	चुप
अञ्जलिः	२.	हाथ	पुलक	११.	पुलकावली से
ईडितुम्	४.	स्तुति करने के लिये	आकुल	१२.	परि पूर्ण होने के कारण वह
स्थिता	५.	खड़ी हुई परन्तु	आकृतिः	१०.	अङ्ग-अङ्ग
न उत्सेहे	९.	बोल न सकीं	तत् दर्शन	१५.	परमात्मा के दर्शन से
आनन्द	६.	आनन्द के	अति उत्सव	१६.	अत्यन्त आनन्द के कारण
जल आकुल	७.	आँसुओं से भरे हुये	गात्र	१७.	शरीर में
ईक्षणा ।	८.	नेत्रों के कारण	वेपथुः ॥	१८.	कम्पन होने लगा

श्लोकार्थ—वह अदिति उठ कर हाथ जोड़ कर स्तुति करने के लिये खड़ी हुई परन्तु आनन्द के आँसुओं से भरे हुये नेत्रों के कारण बोल न सकी । अङ्ग-अङ्ग पुलकावली से परिपूर्ण होने के कारण वह चुप हो गई । परमात्मा के दर्शन से शरीर में कम्पन होने लगा ॥

सप्तमः श्लोकः

प्रीत्या शनैर्गद्गदया गिरा हरिं तुष्टाव सा देव्यदितिः कुरूद्वह ।
उद्वीक्षती सा पिबतीव चक्षुषा रमापतिं यज्ञपतिं जगत्पतिम् ॥७॥

पदच्छेद— प्रीत्या शनैः गद्गदया गिरा हरिम् तुष्टाव सा देवी अदितिः कुरूद्वह ।
उद्वीक्षती सा पिबतीव चक्षुषा रमापतिम् यज्ञपतिम् जगत्पतिम् ॥

शब्दार्थ—

प्रीत्या	५.	प्रेम पूर्ण	कुरूद्वह ।	१.	हे परीक्षित !
शनैः	१६.	धीरे-धीरे	उद्वीक्षती	११.	इस प्रकार देख रही थीं
गदगदया	१४.	गद्गद	सा	२.	वह
गिरा	१५.	वाणी से	पिबतीव	१२.	मानों पी जायेंगी
हरिम्	१८.	भगवान् की (स्तुति की)	चक्षुषा	६.	नेत्रों से
तुष्टाव	१७.	बड़े प्रेम से	रमापतिम्	७.	लक्ष्मी पति
सा	१३.	फिर उसने	यज्ञपतिम्	१०.	यज्ञेश्वर भगवान् को
देवी	३.	देवी	जगत्	८.	विश्व
अदितिः	४.	अदिति	पतिम् ॥	९.	पति

श्लोकार्थ—हे परीक्षित ! वह देवी अदिति अपने प्रेम पूर्ण नेत्रों से लक्ष्मी पति, विश्व पति, यज्ञेश्वर भगवान् को इस प्रकार देख रही थीं मानों पी जायेंगी । फिर उसने गद्गदवाणी से धीरे-धीरे बड़े प्रेम से भगवान् की स्तुति की ॥

अष्टमः श्लोकः

अदितिरुवाच—यज्ञेश यज्ञपुरुषाच्युत तीर्थपाद तीर्थश्रवः श्रवणमङ्गलनामधेय ।
आपन्नलोकवृजिनोपशमोदयाद्य शं नः कृधीश भगवन्नसि दीननाथः ॥८॥

पदच्छेद— यज्ञेश यज्ञ पुरुष अच्युत तीर्थपाद तीर्थ श्रवः श्रवण मङ्गल नामधेय ।
आपन्न लोक वृजिन उपशम उदय आद्य शम् नः कृधि ईश भगवन् असि दीननाथः ॥

शब्दार्थ—

यज्ञेश	१.	हे यज्ञ के स्वामी	लोकवृजिन	१०	जनों की विपत्तियों का
यज्ञ पुरुष	२.	आप यज्ञ पुरुष हैं !	उपशम	११.	नाश करने के लिये
अच्युत	३.	हे अच्युत !	आदिपुरुष आद्य	१२.	आप का अवतार हुआ है
तीर्थ	५.	पवित्र करने वाले हैं	शम्	१७.	कल्याण
पाद	४.	आप के चरण	नः	१६.	अतः हमारा
तीर्थश्रवः	६.	हे पवित्र कीर्ति	कृधि ईश	१८.	कीजिये ईश !
श्रवण मङ्गल	८.	श्रवण कल्याण कारक हैं	भगवन्	१३.	हे भगवन् !
नामधेय ।	७.	आप के नामों का	असि	१५.	हैं
आपन्न	९.	दुःखी	दीननाथः ॥	१४.	आप तो दीनों के नाथ

श्लोकार्थ—हे यज्ञ के स्वामी ! आप यज्ञ पुरुष हैं । हे अच्युत ! आप के चरण पवित्र करने वाले हैं । हे पवित्र कीर्ति ! आपके नामों का श्रवण कल्याण कारक है । दुःखी जनों की विपत्तियों का नाश करने के लिये आपका अवतार हुआ है आदिपुरुष ! हे भगवन् ! आप तो दीनों के नाथ हैं । अतः हमारा कल्याण कीजिये ईश ! ॥

नवमः श्लोकः

विश्वाय विश्वभवनस्थितिसंयमाय स्वैरं गृहीतपुरुशक्तिगुणाय भूम्ने ।
स्वस्थाय शश्वदुपबृंहितपूर्णबोधव्यापादितात्मतमसे हरये नमस्ते ।।९।।

पदच्छेद—विश्वाय विश्व भवन स्थिति संयमाय स्वैरम् गृहीत पुरु शक्ति गुणाय भूम्ने ।
स्वस्थाय शश्वद् उपबृंहित पूर्णबोध व्यापादित आत्मतमसे हरये नमः ते ।।

शब्दार्थः—

विश्वाय	१.	हे विश्वरूप !	स्वस्थाय	११.	अपने स्वरूप में स्थित रहते हैं
विश्वभवन	२.	विश्व की उत्पत्ति	शश्वद्	१०.	आप सदा
स्थिति	३.	स्थिति और	उपबृंहित	१२.	बढ़ते हुये
संयमाय	४.	प्रलय के कारण	पूर्णबोध	१३.	पूर्ण बोध के द्वारा
स्वैरम्	६	आप स्वच्छन्दता से	व्यापादित	१६.	नष्ट करने वाले
गृहीत	९	स्वीकार करते हैं	आत्म	१४.	हृदय के
पुरु	७.	अनेक	तमसे	१५.	अन्धकार को
शक्ति गुणाय	८.	शक्ति और गुणों को	हरये	१७.	हे भगवन् !
भूम्ने ।	५.	हे विराट् स्वरूप !	नमः ते ।।	१८.	आप को नमस्कार है

श्लोकार्थ—हे विश्वस्वरूप ! विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के कारण आप हैं । हे विराट्स्वरूप ! आप स्वच्छन्दता से अनेक शक्ति और गुणों को स्वीकार करते हैं । आप सदा अपने स्वरूप में स्थित रहते हैं । पूर्ण बोध के द्वारा हृदय के अन्धकार को नष्ट करने वाले हे भगवन् ! आप को नमस्कार है ।।

दशमः श्लोकः

आयुः परं वपुरभीष्टमतुल्यलक्ष्मीर्द्योभूरसाः सकलयोगगुणास्त्रिवर्गः ।
ज्ञानं च केवलमनन्त भवन्ति तुष्टात् त्वत्तो नृणां किमु सपत्न जयादिराशीः ।।१०।।

पदच्छेद—आयुः परम् वपुः अभीष्टम् अतुल्य लक्ष्मीः द्योः भू रसाः सकल योग गुणाः त्रिवर्गः ।
ज्ञानं च केवलम् अनन्त भवन्ति तुष्टात् त्वत्तः नृणाम् किमु सपत्न जय आदिराशीः ।।

शब्दार्थः—

आयुः	६.	दीर्घ आयु	ज्ञानम्	१५.	ज्ञान तक प्राप्त हो जाता है
परम्	५.	ब्रह्मा जी की	च केवलम्	१४.	और केवल
वपुः	७.	वैसा ही शरीर	अनन्त	१.	हे प्रभो ! हे अनन्त
अभीष्टम्	८.	अभीष्ट वस्तु	भवन्ति	३.	हो जाने पर
अतुल्यलक्ष्मीः	९	अतुलित धन	तुष्टात् त्वत्तो	२.	आप के प्रसन्न
द्योः भू रसाः	१२	स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल	नृणाम्	४.	मनुष्यों को
सकलयोग	११.	समस्त योग की	किमु	१८.	कहना ही क्या है
गुणाः	१२.	सिद्धियाँ	सपत्न	१६.	फिर शत्रुओं पर
त्रिवर्गः ।	१३.	अर्थ, धर्म, काम	जयआदिराशीः ।।	१७.	जय आदि का तो

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! हे अनन्त ! आप के प्रसन्न हो जाने पर मनुष्यों को ब्रह्मा जी की दीर्घ आयु वैसा ही शरीर, अभीष्ट वस्तु, अतुलितधन, स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल, समस्त योग की सिद्धियाँ, अर्थ, धर्म, काम और केवल ज्ञान तक प्राप्त हो जाता है । फिर शत्रुओं पर जय आदि का तो कहना ही क्या है ।

एकादशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अदित्यैवं स्तुतो राजन्भगवान्पुष्करेक्षणः ।
क्षेत्रज्ञः सर्वभूतानामिति होवाच भारत ॥११॥

पदच्छेद— अदित्या एवम् स्तुतः राजन् भगवान् पुष्कर ईक्षणः ।
क्षेत्रज्ञः सर्व भूतानाम् इति ह उवाच भारत ॥

शब्दार्थ—

अदिति	२.	अदिति ने जब	क्षेत्रज्ञः	११.	हृदय में रहने वाले भगवान्
एवम्	६.	इस प्रकार	सर्व	९.	समस्त
स्तुतः	७.	स्तुति की	भूतानाम्	१०.	प्राणियों के
राजन्	१.	हे परीक्षित् !	इति	१२.	इस प्रकार
भगवान्	५.	भगवान् की	ह उवाच	१३.	बोले
पुष्कर	३.	कमल	भारत ॥	८.	तब हे राजन् !
ईक्षणः ।	४.	नयन			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! अदिति ने जब कमल नयन भगवान् की इस प्रकार स्तुति की तब हे राजन् ! समस्त प्राणियों के हृदय में रहने वाले भगवान् इस प्रकार बोले ॥

द्वादशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—देवमातर्भवत्या मे विज्ञातं चिरकाङ्क्षितम् ।
यत् सपत्नैर्हृतश्रीणां च्यावितानां स्वधामतः ॥१२॥

पदच्छेद— देवमातः भवत्याः मे विज्ञातम् चिरकाङ्क्षितम् ।
यत् सपत्नैः हृत श्रीणाम् च्यावितानाम् स्वधामतः ॥

शब्दार्थ—

देवमातः	१.	हे देवमाता !	यत्	७.	कि
भवत्याः	२.	तुम्हारी	सपत्नैः	८.	शत्रुओं ने तुम्हारे पुत्रों की
मे	५.	मैं	हृत	१०.	छीन कर
विज्ञातम्	६.	जानता हूँ	श्रीणाम्	९.	सम्पत्ति को
चिर	३.	चिर कालीन	च्यावितानाम्	१२.	निकाल दिया है
काङ्क्षितम् ।	४	अभिलाषा	स्वधामतः ॥	११.	उन्हें अपने घर से

श्लोकार्थ—हे देवमाता ! तुम्हारी चिर कालीन अभिलाषा को मैं जानता हूँ कि शत्रुओं ने तुम्हारे पुत्रों की सम्पत्ति छीन कर उन्हें घर से निकाल दिया है ।

त्रयोदशः श्लोकः

तान्विनिर्जित्य समरे दुर्मदानसुरर्षभान् ।
प्रतिलब्धजयश्रीभिः पुत्रैरिच्छस्युपासितुम् ॥१३॥

पदच्छेद— तान् विनिर्जित्य समरे दुर्मदान् असुर ऋषभान् ।
प्रतिलब्ध जय श्रीभिः पुत्रैः इच्छसि उपासितुम् ॥

शब्दार्थ—

तान्	२.	उन	प्रतिलब्ध	८.	प्राप्त करके
विनिर्जित्य	६.	जीत कर	जय श्रीभिः	७.	विजय लक्ष्मी
समरे	१.	युद्ध में	पुत्रैः	९.	तुम पुत्रों के साथ
दुर्मदान्	३.	मतवाले और	इच्छसि	११.	करना चाहती हो
असुर	५.	असुरों को	उपासितुम् ॥	१०.	मेरी उपासना
ऋषभान् ।	४.	बलवान्			

श्लोकार्थ—युद्ध में उन मतवाले बलवान् असुरों को जीत कर विजय लक्ष्मी प्राप्त करके उन पुत्रों के साथ मेरी उपासना करना चाहती हो ॥

चतुर्दशः श्लोकः

इन्द्रज्येष्ठैः स्वतनयैर्हतानां युधि विद्विषाम् ।
स्त्रियो रुदन्तीरासाद्य द्रष्टुमिच्छसि दुःखिताः ॥१४॥

पदच्छेद— इन्द्र ज्येष्ठैः स्वतनयैः हतानाम् युधि विद्विषाम् ।
स्त्रियः रुदन्तीः आसाद्य द्रष्टुम् इच्छसि दुःखिताः ॥

शब्दार्थ—

इन्द्र	१.	इन्द्र	स्त्रियः	१०.	स्त्रियों को
ज्येष्ठैः	२.	इत्यादि	रुदन्तीः	८.	रोती हुई
स्वतनयैः	३.	तुम्हारे पुत्र	आसाद्य	७.	तो वहाँ पहुँच कर
हतानाम्	६.	मार डालेंगे	द्रष्टुम्	११.	देखना
युधि	४.	जब युद्ध में	इच्छसि	१२.	चाहती हो
विद्विषाम् ।	५.	शत्रुओं को	दुःखिताः ॥	९.	दुःखी उनकी

श्लोकार्थ—इन्द्र इत्यादि तुम्हारे पुत्र जब युद्ध में शत्रुओं को मार डालेंगे तो वहाँ पहुँच कर रोती हुई दुःखी उनकी स्त्रियों को देखना चाहती हो ॥

पञ्चदशः श्लोकः

आत्मजान्सुसमृद्धांस्त्वं प्रत्याहृतयशः श्रियः ।
नाकपृष्ठमधिष्ठाय क्रीडतो द्रष्टुमिच्छसि ॥१५॥

पदच्छेद— आत्मजान् सुसमृद्धान् त्वम् प्रति आहृत यशः श्रियः ।
नाक पृष्ठम् अधिष्ठाय क्रीडतः द्रष्टुम् इच्छसि ॥

शब्दार्थ—

आत्मजान्	३. अपने पुत्रों को	श्रियः ।	६. ऐश्वर्य से
सुसमृद्धान्	२. समृद्धिशाली	नाकपृष्ठम्	८. स्वर्ग पर
त्वम्	१. तुम	अधिष्ठाय	९. अधिकार करके
प्रति	४. फिर से	क्रीडतः	१०. विहार करते हुये
आहृत	७. युक्त होकर	द्रष्टुम्	११. देखना
यशः	५. यश और	इच्छसि ॥	१२. चाहती हो

श्लोकार्थ—तुम समृद्धि शाली अपने पुत्रों को फिर से यश और ऐश्वर्य से युक्त होकर स्वर्ग पर अधिकार करके विहार करते हुये देखना चाहती हो ॥

षोडशः श्लोकः

प्रायोऽधुना तेऽसुरयूथनाथा अपारणीया इति देवि मे मतिः ।
यत्तेऽनुकूलेश्वरविप्रगुप्ता न विक्रमस्तत्र सुखं ददाति ॥१६॥

पदच्छेद— प्रायः अधुना ते असुर यूथनाथाः अपारणीयाः इति देवि मे मतिः ।
यत् ते अनुकूल ईश्वर विप्र गुप्ता न विक्रमः तत्र सुखम् ददाति ॥

शब्दार्थ—

प्रायः	३. प्रायः	यत्	१०. क्योंकि
अधुना	२. इस समय	ते	१३. वे
ते असुर	४. वे असुर	अनुकूल	१२. अनुकूलता के कारण
यूथनाथाः	५. सेनापति	ईश्वर विप्र	११. परमात्मा और ब्राह्मणों की
अपारणीयाः	६. अजय हैं	गुप्ताः	१४. रक्षित हैं
इति	७. ऐसा	न	१७. नहीं
देवि	१. हे देवि !	विक्रमः	१६. लड़ाई करने में
मे	८. मेरा	तत्र	१५. अतः उनसे
मतिः ।	९ निश्चय है	सुखम् ददाति ॥	१८. सुख मिलेगा

श्लोकार्थ—हे देवि ! इस समय प्रायः वे असुर सेनापति अजेय हैं । ऐसा मेरा निश्चय है । क्योंकि परमात्मा और ब्राह्मणों की अनुकूलता के कारण वे रक्षित हैं । अतः उनसे लड़ाई करने में सुख नहीं मिलेगा ॥

सप्तदशः श्लोकः

अथाप्युपायो मम देवि चिन्त्यः सन्तोषितस्य व्रतचर्यया ते ।
ममार्चनं नार्हति गन्तुमन्यथा श्रद्धानुरूपं फलहेतुकत्वात् ॥१७॥

पदच्छेद— अथ अपि उपायः मम देवि चिन्त्यः सन्तोषितस्य व्रत चर्यया ते ।
मम अर्चनम् न अर्हति गन्तुम् अन्यथा श्रद्धा अनुरूपम् फलहेतुकत्वात् ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	फिर	मम	१४.	मेरा
अपि	२.	भी	अर्चनम्	१५.	पूजन
उपायः	८.	उपाय	न अर्हति	१८.	योग्य नहीं है
मम	७.	मुझे	गन्तुम्	१७.	जाने
देवि	३.	हे देवि !	अन्यथा	१६.	कभी भी व्यर्थ
चिन्त्यः	९.	सोचना ही होगा (क्योंकि)	श्रद्धा	१०.	श्रद्धा के
सन्तोषितस्य	६.	सन्तुष्ट हुये	अनुरूपम्	११.	अनुसार
व्रतचर्यया	५.	व्रत के अनुष्ठान से	फल	१२.	फल देने वाला
ते ।	४.	तुम्हारे	हेतुकत्वात् ॥	१३.	होने के कारण

श्लोकार्थ—फिर भी हे देवि ! तुम्हारे व्रत के अनुष्ठान से सन्तुष्ट हुये मुझे उपाय सोचना ही होगा । क्योंकि श्रद्धा के अनुसार फल देने वाला होने के कारण मेरा पूजन कभी भी व्यर्थ जाने योग्य नहीं है ॥

अष्टादशः श्लोकः

त्वयार्चितश्चाहमपत्यगुप्तये पयोव्रतेनानुगुणं समीडितः ।
स्वांशेन पुत्रत्वमुपेत्य ते सुतान् गोप्तास्मि मारीचतपस्यधिष्ठितः ॥१८॥

पदच्छेद— त्वया अर्चितः च अहम् अपत्य गुप्तये पयोव्रतेन अनुगुणम् समीडितः ।
स्वअंशेन पुत्रत्वम् उपेत्य ते सुतान् गोप्ता अस्मि मारीचतपसि अधिष्ठितः ॥

शब्दार्थ—

त्वया	८.	तुम्हारे द्वारा	स्वअंशेन	१३.	अपने अंश से
अर्चितः	९.	पूजित हुआ हूँ	पुत्रत्वम्	१४.	तुम्हारा
च	१.	और	उपेत्य	१५.	बन कर
अहम्	२.	मैं	ते सुतान्	१६.	तुम्हारे पुत्रों की
अपत्य	३.	पुत्रों की	गोप्ता	१७.	रक्षा
गुप्तये	४.	रक्षा के लिये	अस्मि	१८.	करूँगा
पयोव्रतेन	५.	पयोव्रत से अथवा	मारीच	१०.	अतः कश्यप जी के
अनुगुणम्	७.	विधि पूर्वक	तपसि	११.	वीर्य में
समीडितः ।	६.	स्तुति आदि से	अधिष्ठितः ॥	१२.	स्थित होकर मैं

श्लोकार्थ—और मैं पुत्रों की रक्षा के लिये पयोव्रत से अथवा स्तुति आदि से विधि-पूर्वक तुम्हारे द्वारा पूजित हुआ हूँ अतः कश्यप जी के वीर्य में स्थित होकर मैं अपने अंश से तुम्हारा पुत्र बन कर तुम्हारे पुत्रों की रक्षा करूँगा ॥

एकोनविंशः श्लोकः

उपधाव पतिं भद्रे प्रजापतिमकल्मषम् ।
मां च भावयती पत्यावेवंरूपमवस्थितम् ॥१९॥

पदच्छेद— उपधाव पतिम् भद्रे प्रजापतिम् अकल्मषम् ।
माम् च भावयती पत्यौ एवम् रूपम् अवस्थितम् ॥

शब्दार्थ—

उपधाव	१२.	सेवा करो	च	८.	और
पतिम्	११.	कश्यप जी की	भावयती	७.	भावना करते हुये
भद्रे	१.	हे देवि !	पत्यौ	२.	अपने पति में
प्रजापतिम्	१०.	प्रजापति	एवम्	३.	इसी
अकल्मषम् ।	९.	निष्पाप	रूपम्	४.	रूप में
माम्	६.	मेरी	अवस्थितम् ॥	५.	स्थित

श्लोकार्थ—हे देवि ! अपने पति में इसी रूप में स्थित मेरी भावना करते हुये और निष्पाप कश्यप जी की सेवा करो ॥

विंशः श्लोकः

नैतत् परस्मा आख्येयं पृष्टयापि कथंचन ।
सर्वं सम्पद्यते देवि देवगुह्यं सुसंवृतम् ॥२०॥

पदच्छेद— न एतत् परस्मै आख्येयम् पृष्टया अपि कथंचन ।
सर्वम् सम्पद्यते देवि देव गुह्यम् सुसंवृतम् ॥

शब्दार्थ—

न	६.	मत	सर्वम्	११.	उतना ही
एतत्	४.	यह बात	सम्पद्यते	१२.	सफल होता है
परस्मै	५.	दूसरे को	देवि	१.	हे देवि !
आख्येयम्	७.	बतलाना	देव	८.	देवताओं का
पृष्टया अपि	३.	पूछने पर भी	गुह्यम्	९.	रहस्य
कथंचन ।	२.	किसी प्रकार	सुसंवृतम् ॥	१०.	जितना गुप्त होता है

श्लोकार्थ—हे देवि ! किसी प्रकार पूछने पर भी यह बात दूसरे को मत बतलाना । देवताओं का रहस्य जितना गुप्त होता है उतना ही सफल होता ॥

एकविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एतावदुक्त्वा भगवांस्तत्रैवान्तरधीयत ।
अदितिर्दुर्लभं लब्ध्वा हरेर्जन्मात्मनि प्रभोः ॥२१॥

पदच्छेद— एतावत् उक्त्वा भगवान् तत्र एव अन्तरधीयत ।
अदितिः दुर्लभम् लब्ध्वा हरेः जन्म आत्मनि प्रभोः ॥

शब्दार्थ—

एतावत्	१.	इतना	अदितिः	७.	अदिति
उक्त्वा	२.	कह कर	दुर्लभम्	१२.	अत्यन्त दुर्लभ बात
भगवान्	३.	भगवान्	लब्ध्वा	१३.	जान कर (प्रसन्न हो गयीं)
तत्र	४.	वहाँ पर	हरेः	१०.	परमात्मा के
एव	५.	ही	जन्म	११.	जन्म की
अन्तरधीयत ।	६.	अन्तर्ध्यान हो गये	आत्मनि	८.	अपने गर्भ से
			प्रभोः ॥	९.	स्वयं भगवान्

श्लोकार्थ—इतना कह कर भगवान् वहाँ पर ही अन्तर्ध्यान हो गये। अदिति अपने गर्भ से स्वयं भगवान् परमात्मा के जन्म की अत्यन्त दुर्लभ बात जान कर प्रसन्न हो गयीं ॥

द्वाविंशः श्लोकः

उपाधावत् पतिं भक्त्या परया कृतकृत्यवत् ।
स वै समाधियोगेन कश्यपस्तदबुध्यत ॥२२॥

पदच्छेद— उपाधावत् पतिम् भक्त्या परया कृत कृत्यवत् ।
सः वै समाधि योगेन कश्यपः तत् अबुध्यत ॥

शब्दार्थ—

उपाधावत्	६.	सेवा करने लगीं	सः	८.	उन
पतिम्	५.	पति की	वै	७.	निश्चय ही
भक्त्या	४.	वह प्रेम से	समाधि	१०.	समाधि
परया	१.	अत्यधिक	योगेन	११.	योग के द्वारा
कृत	२.	कृत	कश्यपः	९.	कश्यप ऋषि ने भी
कृत्यवत् ।	३.	कृत्यता का अनुभव करती हुई	तत्	१२.	इस रहस्य को
			अबुध्यत ॥	१३.	जान लिया

श्लोकार्थ—अत्यधिक कृतकृत्यता का अनुभव करती हुई वह प्रेम से पति की सेवा करने लगीं। निश्चय ही उन कश्यप ऋषि ने भी समाधि योग के द्वारा इस रहस्य को जान लिया ॥

त्रयोविंशः श्लोक

प्रविष्टमात्मनि हरेरंशं ह्यवितथेक्षणः ।
सोऽदित्यां वीर्यमाधत्त तपसा चिरसम्भृतम् ।
समाहितमना राजन्दारुण्यग्निं यथानिलः ॥२३॥

पदच्छेद— प्रविष्टम् आत्मनि हरेः अंशम् हि अवितथ ईक्षणः ।
सः अदित्याम् वीर्यम् आधत्त तपसा चिरसम्भृतम् ।
समाहित मनाः राजन् दारुणि अग्निम् यथा अनिलः ॥

शब्दार्थ —

प्रविष्टम्	४. प्रविष्ट जान कर	तपसा	१४ तपस्या के द्वारा
आत्मनि	३. अपने अन्दर	चिरसम्भृतम् ।	१५. चिरसंधृत
हरेः अंशम्	२. भगवान् के अंश को	समाहित	१२. समाहित
हि अवितथ	५. सत्य	मनाः	१३. चित्त से
ईक्षणः ।	६. दर्शी	राजन्	१. हे राजन् !
सः	७. उन कश्यप जी ने	दारुणि	९. काष्ठ में प्रविष्ट
अदित्याम्	१७. अदिति में	अग्निम्	१०. अग्नि के
वीर्यम्	१६. वीर्य का	यथा	११. समान
आधत्त	१८. आधान किया	अनिलः ॥	८. वायु के द्वारा

श्लोकार्थ—हे राजन् ! भगवान् के अंश को अपने अन्दर प्रविष्ट जान कर सत्यदर्शी उन कश्यप जी ने वायु के द्वारा काष्ठ में प्रविष्ट अग्नि के समान समाहित चित्त से तपस्या के द्वारा चिरसंधृत वीर्य का अदिति में आधान किया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

अदितेर्धिष्ठितं गर्भं भगवन्तं सनातनम् ।
हिरण्यगर्भो विज्ञाय समीडे गुह्यनामभिः ॥२४॥

पदच्छेद — अदितेः धिष्ठितम् गर्भम् भगवन्तम् सनातनम् ।
हिरण्यगर्भः विज्ञाय समीडे गुह्य नामभिः ॥

शब्दार्थ—

अदितेः	३. अदिति के	हिरण्यगर्भः	१. ब्रह्मा जी
धिष्ठितम्	७. आये हैं	विज्ञाय	२. यह जान कर की
गर्भम्	४. गर्भ में	समीडे	१०. स्तुति करने लगे
भगवन्तम्	६. भगवान्	गुह्य	८. भगवान् के गुप्त
सनातनम् ।	५. स्वयं अविनाशी	नामभिः ॥	९. नामों के द्वारा उनकी

श्लोकार्थ—ब्रह्मा जी यह जान कर कि अदिति के गर्भ में स्वयं अविनाशी भगवान् आये हैं, भगवान् के गुप्त नामों के द्वारा उनकी स्तुति करने लगे ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

ब्रह्मोवाच— जयोरुगाय भगवन्नुरुक्रम नमोऽस्तु ते।
नमो ब्रह्मण्यदेवाय त्रिगुणाय नमो नमः ॥२५॥

पदच्छेद— जयोरुगाय भगवन् उरुक्रम नमः अस्तु ते।
नमो ब्रह्मण्य देवाय त्रिगुणाय नमो नमः ॥

शब्दार्थ—

जयोरुगाय	२. आप की जय हो	नमः	९.	आप को नमस्कार है
भगवन्	१. हे कीर्ति के आश्रय भगवन्	ब्रह्मण्य	७.	ब्रह्मण्य
उरुक्रम	३. शक्तियों के अधिष्ठान	देवाय	८.	देव
नमः	५. नमस्कार	त्रिगुणाय	१०.	तीनों गुणों के नियामक
अस्तु	६. है	नमो	११.	आप को नमस्कार है
ते।	४. आप को	नमः ॥	१२.	नमस्कार है

श्लोकार्थ—हे कीर्ति के आश्रय! भगवन्! आपकी जय हो। शक्तियों के अधिष्ठान! आप को नमस्कार है। ब्रह्मण्यदेव! आपको नमस्कार है। तीनों गुणों के नियामक! आपको नमस्कार है। नमस्कार है।

षड्विंशः श्लोकः

नमस्ते पृश्निगर्भाय वेदगर्भाय वेधसे।
त्रिनाभाय त्रिपृष्ठाय शिपिविष्टाय विष्णवे ॥२६॥

पदच्छेद— नमः ते पृश्निगर्भाय वेदगर्भाय वेधसे।
त्रिनाभाय त्रिपृष्ठाय शिपि विष्टाय विष्णवे ॥

शब्दार्थ—

नमः	१२. नमस्कार है	त्रि	९.	तीनों लोक आप की
ते	११. आप को	नाभाय	१०.	नाभि में स्थित हैं
पृश्निगर्भाय	१. पृश्नि के पुत्र	त्रिपृष्ठाय	५.	तीनों लोकों से परे निवास करने वाले
वेद	२. वेद के ज्ञान को अपने	शिपि	६.	जीवों के
गर्भाय	३. अन्दर रखने वाले	विष्टाय	७.	अन्तः करण में वर्तमान
वेधसे।	४. सब के विधातः	विष्णवे ॥	८.	भगवान् विष्णु

श्लोकार्थ—पृश्नि के पुत्र, वेद के ज्ञान को अपने अन्दर रखने वाले, सब के विधातः, तीनों लोक से परे निवास करने वाले, जीवों के अन्तः करण में वर्तमान, भगवान् विष्णु, तीनों लोक आपकी नाभि में स्थित हैं। आपको नमस्कार है॥

सप्तविंशः श्लोकः

त्वमादिरन्तो भुवनस्य मध्यमनन्तशक्तिं पुरुषं यमाहुः ।
कालो भवानाक्षिपतीश विश्वं स्रोतो यथान्तःपतितं गभीरम् ॥२७॥

पदच्छेद— त्वम् आदिः अन्तः भुवनस्य मध्यम् अनन्त शक्तिम् पुरुषम् यम् आहुः ।
कालः भवान् आक्षिपति ईश विश्वम् स्रोतः यथा अन्तः पतितम् गभीरम् ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	६.	ऐसे आप	कालः	१७.	काल रूप से इस
आदिअन्तः	८.	आदि अन्त	भवान्	१६.	आप
भुवनस्य	७.	इस संसार के	आक्षिपति	१९.	सञ्चालन करते हैं
मध्यम्	९.	और मध्य हैं	ईश	१५.	हे परमात्मा !
अनन्त	१.	वेद अनन्त	विश्वम्	१८.	संसार का
शक्तिम्	२.	शक्ति	स्रोतः	१२.	स्रोत
पुरुषम्	३.	पुरुष के रूप में	यथा	१०.	जैसे
यम्	४.	जिन आप को	अन्तः	१३.	अपने भीतर
आहुः ।	५.	वर्णन करते हैं	पतितम्	१४.	पड़े हुये (तिनकों को बहा ले जाता है)
			गभीरम् ॥	११.	गहरा

श्लोकार्थ—वेद अनन्त शक्ति पुरुष के रूप में जिन आपका वर्णन करते हैं, ऐसे आप इस संसार के आदि अन्त और मध्य हैं। जैसे गहरा स्रोत अपने भीतर पड़े हुये तिनकों को बहा ले जाता है। वैसे ही हे परमात्मा ! आप काल रूप से इस संसार का सञ्चालन करते हैं ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

त्वं वै प्रजानां स्थिरजङ्गमानां प्रजापतीनामसि सम्भविष्णुः ।
दिवौकसां देव दिवश्च्युतानां परायणं नौरिव मज्जतोऽप्सु ॥२८॥

पदच्छेद— त्वम् वै प्रजानाम् स्थिर जङ्गमानाम् प्रजापतीनाम् असि सम्भविष्णुः ।
दिवौकसाम् देव दिवःच्युतानाम् परायणम् नौः इव मज्जतः अप्सु ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	२.	आप	दिवौकसाम्	१३.	देवताओं के लिये
वै	१.	निश्चय ही	देव	८.	हे देवाधिदेव !
प्रजानाम्	५.	प्रजा और	दिवःच्युतानाम्	१२.	स्वर्ग से भगाये हुये
स्थिर	४.	अचर	परायणम्	१४.	एक मात्र आश्रय हैं
जङ्गमानाम्	३.	चर	नौः इव	११.	नौका के समान आप
प्रजापतीनाम्	६.	प्रजापतियों को भी	मज्जतः	१०.	डूबते हुये का
असि सम्भविष्णुः ।	७.	उत्पन्न करने वाले हैं	अप्सु ॥	९.	जल में

श्लोकार्थ—निश्चय ही आप चर-अचर प्रजा और प्रजापतियों को भी उत्पन्न करने वाले हैं। हे देवाधिदेव ! जल में डूबते हुये को नौका के समान आप स्वर्ग से भगाये हुये देवताओं के लिये एक मात्र आश्रय हैं ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमस्कन्धे
वामनप्रादुर्भावे सप्तदशः अध्यायः ॥१७॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

अष्टादशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्थं विरिञ्चस्तुतकर्मवीर्यः प्रादुर्बभूवामृतभूरदित्याम् ।
चतुर्भुजः शङ्खगदाब्जचक्रः पिशङ्गवासा नलिनायतेक्षणः ॥१॥

पदच्छेद— इत्थम् विरिञ्च स्तुत कर्म वीर्यः प्रादुर्बभूव अमृत भूः अदित्याम् ।
चतुर्भुजः शङ्ख गदा अब्जचक्रः पिशङ्गवासाः नलिन आयत ईक्षणः ॥

शब्दार्थ—

इत्थम्	२.	जब इस प्रकार	चतुर्भुजः	१३.	चतुर्भुज स्वरूप में
विरिञ्च	१.	ब्रह्मा जी ने	शङ्ख	९.	वे शङ्ख
स्तुत	५.	स्तुति की	गदा	११.	गदा और
कर्म	४.	लीला की	अब्ज	१२.	पद्म धारण किये हुये
वीर्यः	३.	भगवान् की पवित्र	चक्रः	१०.	चक्र
प्रादुर्बभूव	८.	प्रकट हो गये	पिशङ्गवासाः	१४.	पीले वस्त्र धारण किये हुये
अमृतभूः	६.	तो अमृत स्वरूप परमात्मा	नलिन आयत	१५	कमल के समान चौड़े
अदित्याम् ।	७.	अदिति के सामने	ईक्षणः ।।	१६.	नेत्रों वाले प्रभु सुशोभित थे

श्लोकार्थ— ब्रह्मा जी ने जब इस प्रकार भगवान् की पवित्र लीला की स्तुति की तो अमृत स्वरूप परमात्मा अदिति के सामने प्रकट हो गये । वे शङ्ख, चक्र, गदा और पद्म धारण किये हुये चतुर्भुज स्वरूप में, पीले वस्त्र धारण किये हुये, कमल के समान चौड़े नेत्रों वाले, प्रभु सुशोभित थे ।।

द्वितीयः श्लोकः

श्यामावदातो झषराजकुण्डलत्विषोल्लसच्छ्रीवदनाम्बुजः पुमान् ।
श्रीवत्सवक्षा वलयाङ्गदोल्लसत्किरीटकाञ्चीगुणचारुनूपुरः ॥२॥

पदच्छेद— श्याम अवदातः झषराज कुण्डलत्विषः उल्लसत् श्रीवदनाम्बुजः पुमान् ।
श्रीवत्स वक्षाः वलय अङ्गद उल्लसत् किरीट काञ्ची गुण चारु नूपुरः ।।

शब्दार्थ—

श्याम	२.	श्याम वर्ण का शरीर था	श्रीवत्स	१०.	श्री वत्स का चिह्न
अवबातः	१.	विशुद्ध	वक्षाः	९.	वक्षः स्थल पर
झषराज	३.	मकराकृति	वलय	११.	हाथों में कंगन
कुण्डलत्विषः	४.	कुण्डलों की कान्ति से	अङ्गद	१२.	भुजाओं में बाजूबन्द
उल्लसत्	८.	उल्लसित हो रही थी	उल्लसत्	१६.	सुशोभित थे
श्रीः	७.	शोभा	किरीट	१३.	सिर पर किरीट
वदनाम्बुजः	६.	मुख कमल की	काञ्चीगुण	१४.	कमर में करधनी की लड़ियाँ
पुमान् ।	५.	उन भगवान् के	चारुनूपुरः ।।	१५.	चरणों में नूपुर

श्लोकार्थ—विशुद्ध श्याम वर्ण का शरीर था । मकराकृति कुण्डलों की कान्ति से उन भगवान् के मुख कमल की शोभा उल्लसित हो रही थी । वक्षः स्थल पर श्री वत्स का चिह्न, हाथों में कंगन, भुजाओं में बाजूबन्द, सिर पर किरीट, कमर में करधनी की लड़ियाँ, चरणों में नूपुर सुशोभित थे ।।

तृतीयः श्लोकः

मधुव्रतव्रातविघुष्टया स्वया विराजितः श्रीवनमालया हरिः ।
प्रजापतेर्वेश्मतमः स्वरोचिषा विनाशयन् कण्ठनिविष्टकौस्तुभः ॥३॥

पदच्छेद— मधुव्रत व्रात विघुष्टया स्वया विराजितः श्रीवनमालया हरिः ।
प्रजापतेः वेश्मतमः स्वरोचिषा विनाशयन् कण्ठ निविष्ट कौस्तुभः ॥

शब्दार्थ—

मधुव्रत	२.	भौंरों के	प्रजापतेः	१२.	प्रजापति कश्यप जी के
व्रात	३.	झुण्ड से	वेश्मतमः	१३.	घर का अन्धकार
विघुष्टया	४.	गुंजारित	स्वरोचिषा	११.	वे अपनी कान्ति से
स्वया	५.	अपनी स्वरूप भूत	विनाशयन्	१४.	नष्ट कर रहे थे
विराजितः	७.	पहने हुये थे	कण्ठ	८.	कण्ठ में
श्रीवनमालया	६.	वनमाला	निविष्ट	१०.	धारण किये हुये थे
हरिः ।	१.	भगवान्	कौस्तुभः ॥	९.	कौस्तुभ मणि

श्लोकार्थं—भगवान् भौंरों के झुण्ड से गुंजारित अपनी स्वरूप भूत वनमाला पहने हुये थे। कण्ठ में कौस्तुभ मणि धारण किये हुये थे। वे अपनी कान्ति से प्रजापति कश्यप के घर का अन्धकार नष्ट कर रहे थे ॥

चतुर्थः श्लोकः

दिशः प्रसेदुः सलिलाशयास्तदा प्रजाः प्रहृष्टा ऋतवो गुणान्विताः ।
द्यौरन्तरिक्षं क्षितिरग्निजिह्वा गावो द्विजाः संजहृषुर्नगाश्च ॥४॥

पदच्छेद— दिशः प्रसेदुः सलिल आशयाः तदा प्रजाः प्रहृष्टाः ऋतवः गुण अन्विताः ।
द्यौः अन्तरिक्षम् क्षितिः अग्निजिह्वा गावः द्विजाः संजहृषुः नगाः च ॥

शब्दार्थं—

दिशः प्रसेदुः	२.	दिशायें निर्मल हो गयीं	द्यौः	१०.	स्वर्ग लोक
सलिल	४.	जल स्वच्छ हो गया	अन्तरिक्षम्	११.	अन्तरिक्ष
आशयाः	३.	नदी, सरोवरों का	क्षितिः	१२.	पृथ्वी
तदा	१.	उस समय	अग्निजिह्वा	१३.	देवता
प्रजाः	५	प्रजायें	गावः	१४.	गौ
प्रहृष्टाः	६.	प्रसन्न हो गईं	द्विजाः	१५.	ब्रह्मा
ऋतवः	७.	ऋतुएँ	संजहृषुः	१८.	हर्ष का सञ्चार हो गया
गुण	८.	अपने-अपने गुणों से	नगाः	१७.	पर्वतों में
अन्विताः ।	९.	युक्त हो गयीं	च ॥	१६	और

श्लोकार्थ—उस समय दिशायें निर्मल हो गयीं। नदी सरोवरों का जल स्वच्छ हो गया। प्रजायें प्रसन्न हो गयीं। ऋतुयें अपने-अपने गुणों से युक्त हो गईं। स्वर्ग लोक, अन्तरिक्ष, पृथ्वी, देवता, गौ, ब्राह्मण और पृथ्वी में हर्ष का सञ्चार हो गया ॥

पञ्चमः श्लोकः

श्रोणायां श्रवणद्वादश्यां मुहूर्तेऽभिजिति प्रभुः ।
सर्वे नक्षत्रताराद्याश्चक्रुस्तज्जन्म दक्षिणम् ॥५॥

पदच्छेद— श्रोणायाम् श्रवण द्वादश्याम् मुहूर्ते अभिजिति प्रभुः ।
सर्वे नक्षत्र ताराद्याः चक्रुः तत् जन्म दक्षिणम् ॥

शब्दार्थ—

श्रोणायाम्	२.	चन्द्रमा के श्रवण नक्षत्र में होने से	सर्वे	७.	समस्त
श्रवण	३.	भाद्र पद शुक्ल	नक्षत्र	८.	नक्षत्र और
द्वादश्याम्	४.	द्वादशी के दिन	ताराद्याः	९.	तारागण
मुहूर्ते	६.	मुहूर्त में हुआ	चक्रुः	१२.	सूचित कर रहे थे
अभिजिति	५.	अभिजित् नामक	तत् जन्म	१०.	भगवान् के जन्म की
प्रभुः ।	१.	भगवान् का जन्म	दक्षिणम् ॥	११.	मंगलमयता को

श्लोकार्थ—भगवान् का जन्म चन्द्रमा के श्रवण नक्षत्र में होने से भाद्रपद शुक्ल द्वादशी के दिन अभिजित् नामक मुहूर्त में हुआ । समस्त नक्षत्र और तारागण भगवान् के जन्म की मंगलमयता को सूचित कर रहे थे ॥

षष्ठः श्लोकः

द्वादश्यां सवितातिष्ठन्मध्यंदिनगतो नृप ।
विजया नाम सा प्रोक्ता यस्यां जन्म विदुर्हरेः ॥६॥

पदच्छेदः— द्वादश्याम् सविता तिष्ठन् मध्यम् दिन गतः नृप ।
विजया नाम सा प्रोक्ता यस्याम् जन्म विदुः हरेः ॥

शब्दार्थ—

द्वादश्याम्	८.	द्वादशी	नाम	९.	नाम
सविता	१२.	सूर्य	सा	६.	उसका
तिष्ठन्	१४.	स्थित थे	प्रोक्ता	१०.	कहा गया
मध्यम्	१३.	आकाश के मध्य भाग में	यस्याम्	२.	जिस तिथि में
दिनगतः	११.	जन्म के दिन	जन्म	४.	जन्म
नृप ।	१.	हे परीक्षित् !	विदुः	५.	हुआ था
विजया	७.	विजया	हरेः ॥	३.	भगवान् का

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! जिस तिथि में भगवान् का जन्म हुआ था । उसका विजया द्वादशी नाम कहा गया है । जन्म के दिन सूर्य आकाश के मध्य भाग में स्थित थे ॥

सप्तमः श्लोकः

शङ्खदुन्दुभयो नेदुर्मृदङ्गपणवानकाः ।
चित्रवादित्रतूर्याणां निर्घोषस्तुमुलोऽभवत् ॥७॥

पदच्छेद— शङ्ख दुन्दुभयः नेदुः मृदङ्ग पणव आनकाः ।
चित्र वादित्र तूर्याणाम् निर्घोषः तुमुलः अभवत् ॥

शब्दार्थ—

शङ्ख	१.	भगवान् के जन्म के समय शङ्ख	चित्र	७.	इन तरह-तरह के
दुन्दुभयः	२.	ढोल	वादित्र	८.	बाजों और
नेदुः	६.	बजने लगे	तूर्याणाम्	९.	तुरहियों की
मृदङ्ग	३.	मृदङ्ग	निर्घोषः	११.	ध्वनि
पणव	४.	डफ और	तुमुलः	१०.	तुमुल
आनकाः ।	५.	नगाड़े	अभवत् ॥	१२.	होने लगी

श्लोकार्थ—भगवान् के जन्म के समय शङ्ख, ढोल, मृदङ्ग, डफ और नगाड़े बजने लगे । इन तरह-तरह के बाजों और तुरहियों की तुमुल ध्वनि होने लगी ॥

अष्टमः श्लोकः

प्रीताश्चाप्सरसोऽनृत्यन्गन्धर्वप्रवरा जगुः ।
तुष्टुवुर्मुनयो देवा मनवः पितरोऽग्नयः ॥८॥

पदच्छेद— प्रीताः च अप्सरसः अनृत्यन् गन्धर्व प्रवराः जगुः ।
तुष्टुवुः मुनयः देवाः मनवः पितरः अग्नयः ॥

शब्दार्थ—

प्रीताः	२.	प्रसन्न होकर	तुष्टुवुः	१३.	स्तुति करने लगे
च	४.	और	मुनयः	८.	मुनि
अप्सरसः	१.	अप्सरायें	देवाः	९.	देवता
अनृत्यन्	३.	नाचने लगीं	मनवः	१०.	मनु
गन्धर्व	६.	गन्धर्व	पितरः	११.	पितर और
प्रवराः	५.	श्रेष्ठ	अग्नयः ॥	१२.	अग्नि
जगुः ।	७.	गाने लगे			

श्लोकार्थ—अप्सरायें प्रसन्न हो कर नाचने लगीं । श्रेष्ठ गन्धर्व गाने लगे । मुनि, देवता, मनु, पितर और अग्नि स्तुति करने लगे ॥

नवमः श्लोकः

सिद्धविद्याधरगणाः सकिंपुरुषकिन्नराः ।
चारणा यक्षरक्षांसि सुपर्णा भुजगोत्तमाः ॥९॥

पदच्छेद— सिद्ध विद्याधर गणाः सकिम्पुरुष किन्नराः ।
चारणाः यक्ष रक्षांसि सुपर्णाः भुजग उत्तमाः ॥

शब्दार्थ—

सिद्ध	१. सिद्ध	चारणाः	६. चारण
विद्याधर	२. विद्याधरों के	यक्षरक्षांसि	७. यक्ष-राक्षस
गणाः	३. समूह	सुपर्णाः	८. पक्षी
सकिम्पुरुष	४. किम्पुरुष सहित	भुजग	१०. नाग गण (गान करने लगे)
किन्नराः	५. किन्नर	उत्तमाः ॥	९. मुख्य-मुख्य

श्लोकार्थ—सिद्ध, विद्याधरों के समूह, किम्पुरुष, सहित किन्नर, चारण, यक्ष, राक्षस, पक्षी, मुख्य-मुख्य नाग गण गाने लगे ॥

दशमः श्लोकः

गायन्तोऽतिप्रशंसन्तो नृत्यन्तो विबुधानुगाः ।
अदित्या आश्रमपदं कुसुमैः समवाकिरन् ॥१०॥

पदच्छेद— गायन्तः अति प्रशंसन्तः नृत्यन्तः विबुध अनुगाः ।
अदित्याः आश्रम पदम् कुसुमैः समवाकिरन् ॥

शब्दार्थ—

गायन्तः	३. गान करते हुये	अदित्याः	७. अदिति के
अति	५. अत्यधिक	आश्रम	८. आश्रम
प्रशंसन्तः	६. प्रशंसा करने	पदम्	९. स्थान पर
नृत्यन्तः	४. नृत्य करते हुये	कुसुमैः	१०. पुष्पों को
विबुध	१. देवताओं के		
अनुगाः ।	२. अनुचर	समवाकिरन् ॥	११. वर्षा करने लगे

श्लोकार्थ—देवताओं के अनुचर गान करते हुये, नृत्य करते हुये अत्यधिक प्रशंसा करने लगे । अदिति के आश्रम स्थान पर पुष्पों की वर्षा करने लगे ॥

एकादशः श्लोकः

दृष्ट्वादितिस्तं निजगर्भसम्भवं परं पुमांसं मुदमाप विस्मिता ।
गृहीतदेहं निजयोगमायया प्रजापतिश्चाह जयेति विस्मितः ॥११॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा अदितिः तम् निजगर्भ सम्भवम् परम् पुमांसम् मुदम् आप विस्मता ।
गृहीत देहम् निजयोगमायया प्रजापतिः च आह जय इति विस्मतः ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	६. देखा (तब)	गृहीत	१४. धारण किये परमात्मा को देख कर
अदितिः	१. अदिति ने	देहम्	१३. शरीर
तम्	२. जब	निजयोग	११. अपनी योग
निजगर्भ	४. अपने गर्भ से	मायया	१२. माया से
सम्भवम्	५. उत्पन्न हुआ	प्रजापतिः	१०. प्रजापति कश्यप जो भी
परम् पुमांसम्	३. परम पुरुष परमात्मा को	च आह	१८. कहने लगे
मुदम्	७. प्रसन्नता और	जय	१६. जय हो
आप	९. अनुभव किया	इति	१७. ऐसा
विस्मिता ।	८. आश्चर्य का	विस्मितः ॥	१५. आश्चर्य चकित होकर

श्लोकार्थ— अदिति ने जब परम पुरुष परमात्मा को अपने गर्भ से उत्पन्न हुआ देखा तब प्रसन्नता और आश्चर्य का अनुभव किया । प्रजापति कश्यप जी भी अपनी योग माया से शरीर धारण किये परमात्मा को देख कर आश्चर्य चकित हो कर जय हो, ऐसा कहने लगे ॥

द्वादशः श्लोकः

यत् तद् वपुर्भाति विभूषणायुधैरव्यक्तचिद् व्यक्तमधारयद्धरिः ।
बभूव तेनैव स वामनो वटुः संपश्यतोर्दिव्यगतिर्यथा नटः ॥१२॥

पदच्छेद— यत्तत् वपुः भाति विभूषण आयुधैः अव्यक्तचित् व्यक्तम् अधारयत् हरिः ।
बभूव तेन एव स वामनः वटुः सम्पश्यतः दिव्य गतिः यथा नटः ॥

शब्दार्थ—

यत्-तत्	६. जो दिव्य	बभूव	१८. धारण कर लिया
वपुः	८. शरीर	तेन एव	१०. उसी शरीर से
भाति	५. सुशोभित	सः	११. उन्होंने
विभूषण	३. आभूषण और	वामनः	१६. वामन
आयुधैः	४. आयुधों से	वटुः	१७. ब्रह्मचारी का शरीर
अव्यक्तचित्	१. व्यक्त और चित्स्वरूप	सम्पश्यतः	१२. अदिति के देखते-देखते
व्यक्तम्	७. व्यक्त	दिव्यगतिः	१३. दिव्य लीला से
अधारयत्	९. धारण किया था	यथा	१५. समान
हरिः ।	२. भगवान् ने	नटः ॥	१४. नट के

श्लोकार्थ—अव्यक्त और चित्स्वरूप भगवान् ने आभूषण और आयुधों से सुशोभित जो दिव्य व्यक्त शरीर धारण किया था, उसी शरीर से उन्होंने अदिति के देखते-देखते दिव्य लीला से नट के समान वामन ब्रह्मचारी का शरीर धारण कर लिया ॥

त्रयोदशः श्लोकः

तं वटुं वामनं दृष्ट्वा मोदमाना महर्षयः ।
कर्माणि कारयामासुः पुरस्कृत्य प्रजापतिम् ॥१३॥

पदच्छेद— तम् वटुम् वामनम् दृष्ट्वा मोदमाना महर्षयः ।
कर्माणि कारयामासुः पुरस्कृत्य प्रजापतिम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	भगवान् को	महर्षयः ।	५.	महर्षियों को
वटुम्	३.	ब्रह्मचारी के रूप में	कर्माणि	९.	उनके जात कर्मादि संस्कार
वामनम्	२.	वामन	कारयामासुः	१०.	करवाये
दृष्ट्वा	४.	देख कर	पुरस्कृत्य	८.	आगे करके
मोदमानाः	६.	बड़ा आनन्द हुआ (उन्होंने)	प्रजापतिम् ॥	७.	कश्यप प्रजापति को

श्लोकार्थ—भगवान् को वामन ब्रह्मचारी के रूप में देख कर महर्षियों को बड़ा आनन्द हुआ उन्होंने कश्यप प्रजापति को आगे करके उनके जात कर्मादि संस्कार करवाये ॥

चतुर्दशः श्लोकः

तस्योपनीयमानस्य साविर्त्री सविताब्रवीत् ।
बृहस्पतिर्ब्रह्मसूत्रं मेखलां कश्यपोऽददात् ॥१४॥

पदच्छेद— तस्य उपनीयमानस्य साविर्त्रीम् सविता अब्रवीत् ।
बृहस्पतिः ब्रह्मसूत्रम् मेखलाम् कश्यपः अददात् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उसके	बृहस्पतिः	६.	बृहस्पति जी ने
उपनीयमानस्य	२.	उपनयन के समय	ब्रह्मसूत्रम्	७.	यज्ञोपवीत और
साविर्त्रीम्	३.	गायत्री मन्त्र	मेखलाम्	९.	मेखला
सविता	४.	सविता देव ने	कश्यप	८.	कश्यप ने
अब्रवीत् ।	५.	कहा	अददात् ॥	१०.	दी

श्लोकार्थ—उनके उपनयन के समय गायत्री मन्त्र सविता देव ने कहा । बृहस्पति जी ने यज्ञोपवीत और मेखला कश्यप ने दी ॥

पञ्चदशः श्लोकः

ददौ कृष्णाजिनं भूमिर्दण्डं सोमो वनस्पतिः ।
कौपीनाच्छादनं माता द्यौश्छत्रं जगतः पतेः ॥१५॥

पदच्छेद— ददौ कृष्ण अजिनम् भूमिदण्डम् सोमः वनस्पतिः ।
कौपीन आच्छादनम् माता द्यौः छत्रम् जगतः पतेः ॥

शब्दार्थ—

ददौ	१४. दिया	कौपीन	८. कौपीन और
कृष्ण	२. कृष्ण	आच्छादनम्	९. कटि वस्त्र
अजिनम्	३. मृगचर्म	माता	७ माता अदिति ने
भूमिः	१. पृथ्वी ने	द्यौः	१०. आकाश के अभिमानी देवता ने
दण्डम्	६. दण्ड	छत्रम्	१३. छत्र
सोमः	५. चन्द्रमा ने	जगतः	११. जगत् के
वनस्पतिः ।	४. वन के स्वामी	पतेः ॥	१२. स्वामी परमात्मा

श्लोकार्थ—पृथ्वी ने कृष्ण मृगचर्म, वन के स्वामी चन्द्रमा ने दण्ड और माता अदिति ने कोपीन और कटि वस्त्र, आकाश के अभिमानी देवता ने जगत् के स्वामी परमात्मा को छत्र दिया ॥

षोडशः श्लोकः

कमण्डलुं वेदगर्भः कुशान्सप्तर्षयो ददुः ।
अक्षमालां महाराज सरस्वत्यव्ययात्मनः ॥१६॥

पदच्छेद— कमण्डलुम् वेदगर्भः कुशान् सप्तर्षयः ददुः ।
अक्षमालाम् महाराज सरस्वती अव्यय आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

कमण्डलुम्	५. कमण्डलु	अक्षमालाम्	९. रुद्राक्ष की माला
वेदगर्भः	४. ब्रह्मा जी ने	महाराज	१. हे परीक्षित् !
कुशान्	७. कुश और	सरस्वती	८. सरस्वती ने
सप्तर्षयः	६. सप्तर्षियों ने	अव्यय	२. अविनाशी
ददुः ।	१०. समर्पित की	आत्मनः ॥	३. प्रभु को

श्लोकार्थ—अविनाशी प्रभु को ब्रह्मा जी ने कमण्डलु, सप्तर्षियों ने कुश और सरस्वती ने रुद्राक्ष की माला समर्पित की ॥

सप्तदशः श्लोकः

तस्मा इत्युपनीताय यक्षराट् पात्रिकामदात् ।
भिक्षां भगवती साक्षादुमादादम्बिका सती ॥१७॥

पदच्छेद— तस्मै इति उपनीताय यक्षराट् पात्रिकाम् अदात् ।
भिक्षाम् भगवती साक्षात् उमा अदात् अम्बिका सती ॥

शब्दार्थ—

तस्मा	२.	जब उनका	भिक्षाम्	१२.	भिक्षा
इति	१.	इस प्रकार	भगवती	१०.	भगवती
उपनीताय	३.	उपनयन हुआ तो	साक्षात्	९.	स्वयं
यक्षराट्	४.	कुबेर ने	उमा	११.	उमा ने
पात्रिकाम्	५.	भिक्षा पात्र	अदात्	१३.	दी
अदात् ।	६.	दिया	अम्बिका	८.	जगज्जननी
			सती ॥	७.	सती शिरोमणि

श्लोकार्थ—इस प्रकार जब उनका उपनयन हुआ तो कुबेर ने भिक्षापात्र दिया । सती शिरोमणि जगज्जननी स्वयं भगवती उमा ने भिक्षा दी ।

अष्टादशः श्लोकः

स ब्रह्मवर्चसेनैवं सभां संभावितो वटुः ।
ब्रह्मर्षिगणसञ्जुष्टामत्यरोचत मारिषः ॥१८॥

पदच्छेद— सः ब्रह्मवर्चसेन एवम् सभाम् संभावितः वटुः ।
ब्रह्मर्षिगण सञ्जुष्टाम् अत्यरोचत मारिषः ॥

शब्दार्थ—

सः	२.	वे	वटुः ।	३.	वटुवेषधारी भगवान्
ब्रह्मवर्चसेन	५.	ब्रह्म तेज के कारण	ब्रह्मर्षिगण	७.	ब्रह्मर्षियों से
एवम्	१.	इस प्रकार	सञ्जुष्टाम्	८.	भरी हुई
सभाम्	९.	सभा में	अत्यरोचत	१०.	अत्यन्त शोभायमान हुये
सम्भावितम्	४.	सम्मानित होकर	मारिषः ॥	६.	श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—इस प्रकार वे वटु वेषधारी भगवान् सम्मानित हो कर ब्रह्म तेज के कारण श्रेष्ठ ब्रह्मर्षियों से भरी हुई सभा में अत्यन्त शोभाय मान हुये ॥

एकोनविंशः श्लोकः

समिद्धमाहितं वह्निं कृत्वा परिसमूहनम् ।
परिस्तीर्य समभ्यर्च्य समिद्भिरजुहोद् द्विजः ॥१९॥

पदच्छेद— समिद्धम् आहितम् वह्निम् कृत्वा परिसमूहनम् ।
परिस्तीर्य समभ्यर्च्य समिद्भिः अजुहोत् द्विजः ॥

शब्दार्थ—

समिद्धम्	३. प्रज्वलित	परिस्तीर्य	६. परिस्तरण		
आहितम्	२. स्थापित	समभ्यर्च्य	८. पूजा की और		
वह्निम्	४. अग्नि का कुशों से	समिद्भिः	९. समिधाओं से		
कृत्वा	७. करके	अजुहोत्	१०. हवन किया		
परिसमूहनम् ।	५. परिसमूहन और	द्विजः ॥	१. ब्रह्मचारी भगवान् ने		

श्लोकार्थ—ब्रह्मचारी भगवान् ने स्थापित प्रज्ज्वलित अग्नि का कुशों से परिसमूहन और परिस्तरण करके पूजा की और समिधाओं से हवन किया ॥

विंशः श्लोकः

श्रुत्वाश्वमेधैर्यजमानमूर्जितं बलिं भृगूणामुपकल्पितैस्ततः ।
जगाम तत्राखिलसारसंभृतो भारेण गां सन्नमयन्पदे पदे ॥२०॥

पदच्छेद—श्रुत्वा अश्वमेधैः यजमानम् ऊर्जितम् बलिम् भृगूणाम् उपकल्पितैः ततः ।
जगाम तत्र अखिल सार संभृतः भारेण गाम् सन्नमयन् पदे पदे ॥

शब्दार्थ—

श्रुत्वा	२. यह सुन कर कि	जगाम	१६. गये
अश्वमेधैः	८. अश्वमेधयज्ञ कर रहा है तो	तत्र	१५. वहाँ (यज्ञस्थलपर)
यजमानम्	६. यजमान	अखिल	९. समस्त
ऊर्जितम्	५. यशस्वी	सारसंभृतः	१०. शक्तियों से युक्त भगवान्
बलिम्	७. बलि	भारेण	११. अपने भार से
भृगूणाम्	३. भृगुवंशी ब्राह्मणों द्वारा	गाम्	१३. पृथ्वी को
उपकल्पितैः	४. प्रेरणा पाकर	सन्नमयन्	१४. झुकाये हुये
ततः ।	१. तदनन्तर	पदे-पदे ॥	१२. पग-पग पर

श्लोकार्थ—तदनन्तर यह सुन कर कि भृगुवंशी ब्राह्मणों द्वारा प्रेरणा पाकर यशस्वी यजमान बलि अश्वमेध यज्ञ कर रहा है, समस्त शक्तियों से युक्त भगवान् अपने भार से पग-पग पर पृथ्वी को झुकाते हुये वहाँ उस स्थान पर गये ॥

एकविंशः श्लोकः

तं नर्मदायास्तट उत्तरे बलेर्य ऋत्विजस्ते भृगुकच्छसंज्ञके ।
प्रवर्तयन्तो भृगवः क्रतूत्तमं व्यचक्षतारादुदितं यथा रविम् ॥२१॥

पदच्छेद— तम् नर्मदायाः तटे उत्तरे बलेः ये ऋत्विजः ते भृगुकच्छ संज्ञके ।
प्रवर्तयन्तः भृगवः क्रतूत्तमम् व्यचक्षत आरात् उदितम् यथा रविम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	६.	उस	प्रवर्तयन्तः	१२.	अनुष्ठान करा रहे थे
नर्मदायाः	१.	नर्मदा नदी के	भृगवः	९.	भृगुवंशी
तटे	३.	तट पर	क्रतूत्तमम्	११.	श्रेष्ठ यज्ञ का
उत्तरे	२.	उत्तर	व्यचक्षत	१७.	देखा
बलेः	७.	बलि से	आरात्	१३.	उन्होंने अति समीप में
ये ऋत्विजः	१०.	ऋत्विज	उदितम्	१४.	उदित होते हुये
ते	८.	वे	यथा	१६.	समान (वामन भगवान् को)
भृगुकच्छ	४.	भृगुकच्छ	रविम् ॥	१५.	सूर्य के
संज्ञके ।	५	नाम के स्थान में			

श्लोकार्थ—नर्मदा नदी के उत्तर तट पर भृगुकच्छ नाम के स्थान पर उस बलि से भृगुवंशी श्रेष्ठ यज्ञ का अनुष्ठान करा रहे थे । उन्होंने अति समीप में उदित होते हुये सूर्य के समान वामन भगवान् को देखा ॥

द्वाविंशः श्लोकः

त ऋत्विजो यजमानः सदस्या हतत्विषो वामनतेजसा नृप ।
सूर्यः किलायात्युत वा विभावसुः सनत्कुमारोऽथ दिदृक्षया क्रतोः ॥२२॥

पदच्छेद— ते ऋत्विजो यजमानः सदस्याः हतत्विषः वामनतेजसा नृप ।
सूर्यःकिल आयाति उत वा विभावसुः सनत्कुमारः अथ दिदृक्षया क्रतोः ॥

शब्दार्थ—

ते	४.	वे	सूर्यः	१२.	सूर्य
ऋत्विजः	५.	ऋत्विज	किल	९.	(वे सोचने लगे कि) निश्चय ही
यजमानः	६.	यजमान (और)	आयाति	१७.	आ रहे हैं
सदस्याः	७.	सदस्य सब	उत वा	१४.	अथवा
हतत्विषः	८.	निस्तेज हो गये	विभावसुः	१३.	अग्नि
वामन	२.	वामन भगवान् के	सनत्कुमार	१५.	सनतकुमार
तेजसा	३.	तेज से	अथ	१६	तो नहीं
नृप ।	१.	हे परीक्षित् !	दिदृक्षया	११.	देखने की इच्छा से
			क्रतोः ॥	१०.	यज्ञ

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! वामन भगवान् के तेज से वे ऋत्विज, यजमान और सदस्य सब निस्तेज हो गये । वे सोचने लगे कि निश्चय ही यज्ञ देखने की इच्छा से सूर्य, अग्नि अथवा सनत् कुमार तो नहीं आ रहे हैं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

इत्थं सशिष्येषु भृगुष्वनेकधा वितर्क्यमाणो भगवान्स वामनः।
छत्रं सदण्डं सजलं कमण्डलुं विवेश बिभ्रद्धयमेधवाटम् ॥२३॥

पदच्छेद— इत्थम् सशिष्येषु भृगुषु अनेकधा वितर्क्यमाणः भगवान् सः वामनः।
छत्रम् सदण्डम् सजलम् कमण्डलुम् विवेश बिभ्रत्हयमेध वाटम् ॥

शब्दार्थ—

इत्थम्	३.	इस प्रकार	छत्रम्	८.	छत्र
सशिष्येषु	२.	अपने शिष्यों सहित	सदण्डम्	९.	दण्ड और
भृगुषु	१.	भृगु पुत्र शुक्राचार्य	सजलम्	१०.	जल से भरा
अनेकधा	४.	अनेकों	कमण्डुलम्	११.	कमण्डल
वितर्क्यमाणः	५.	कल्पनायें कर रहे थे कि	विवेश	१५.	प्रवेश किया
भगवान्	८.	भगवान् ने	बिभ्रत्	१२.	धारण किये हुये
सः	६.	उन	हयमेध	१३.	अश्वमेध यज्ञ
वामनः।	७.	वामन	वाटम् ॥	१४.	मण्डप में

श्लोकार्थ—भृगुपुत्र शुक्राचार्य अपने शिष्यों सहित इस प्रकार अनेकों कल्पनायें कर रहे थे कि उन वामन भगवान् ने छत्र, दण्ड और जल से भरा कमण्डल धारण किये हुये अश्वमेध यज्ञ मण्डप में प्रवेश किया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

मौञ्ज्या मेखलया वीतमुपवीताजिनोत्तरम्।
जटिलं वामनं विप्रं मायामाणवकं हरिम् ॥२४॥

पदच्छेद— मौञ्ज्या मेखलया वीतम् उपवीत अजिन उत्तरम्।
जटिलम् वामनम् विप्रम् माया माणवकम् हरिम् ॥

शब्दार्थ—

मौञ्ज्या	१.	मूंज की	जटिलम्	८.	वे रहस्यमय
मेखलया	२.	मेखला	वामनम्	९.	वामन
वीतम्	३.	धारण किये हुये तथा	विप्रम्	१२.	ब्राह्मण वेष में प्रविष्ट हुये
उपवीत	४.	यज्ञोपवीत के समान	माया	७.	ऐसे माया से
अजिन	५.	धारण किया मृग चर्म ही	माणवकम्	१०.	ब्रह्मचारी
उत्तरम्।	६.	जिनका उत्तरीय था	हरिम् ॥	११.	भगवान्

श्लोकार्थ—मूंज की मेखला धारण किये हुये तथा यज्ञोपवीत के समान धारण किया मृग चर्म ही जिनका उत्तरीय था, ऐसे माया से वे रहस्यमय वामन ब्रह्मचारी भगवान् ब्राह्मण वेष में प्रविष्ट हुये ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

प्रविष्टं वीक्ष्य भृगवः सशिष्यास्ते सहाग्निभिः।
प्रत्यगृह्णन्समुत्थाय संक्षिप्तास्तस्य तेजसा ॥२५॥

पदच्छेद— प्रविष्टम् वीक्ष्य भृगवः सशिष्याः ते सह अग्निभिः।
प्रत्यगृह्णन् समुत्थाय संक्षिप्ताः तस्य तेजसा ॥

शब्दार्थ—

प्रविष्टम्	२. उन्हें प्रविष्ट हुआ	अग्निभिः।	५. अग्नियों के
वीक्ष्य	३. देख कर	प्रत्यगृह्णन्	९. उनका स्वागत किया
भृगवः	१ भृगुवंशी ब्राह्मण	समुत्थाय	८. उठ खड़े हुये और
सशिष्याः	४. अपने शिष्यों और	संक्षिप्ताः	१२. प्रभावित हो गये
ते	७. वे	तस्य	१०. वे उनके
सह	६. साथ	तेजसा ॥	११. तेज से

श्लोकार्थ—भृगुवंशी ब्राह्मण उन्हें प्रविष्ट हुआ देख कर अपने शिष्यों और अग्नियों के साथ वे उठ खड़े हुये और उनका स्वागत किया। वे उनके तेज से प्रभावित हो गये ॥

षड्विंशः श्लोकः

यजमानः प्रमुदितो दर्शनीयं मनोरमम्।
रूपानुरूपावयवं तस्मा आसनमाहरत् ॥२६॥

पदच्छेद— यजमानः प्रमुदितः दर्शनीयम् मनोरमम्।
रूप अनुरूप अवयवम् तस्मै आसनम् आहरत् ॥

शब्दार्थ—

यजमानः	१. यजमान बलि	अनुरूप	३. अनुरूप
प्रमुदितः	७. प्रसन्न हो गये और	अवयवम्	६. अंग-प्रत्यंग को देख कर
दर्शनीयम्	५. दर्शनीय	तस्मै	८. उनके लिये
मनोरमम्	४. मनोरम तथा	आसनम्	९. आसन
रूप	२. उनके लघुरूप के	आहरत् ॥	१० प्रदान किया

श्लोकार्थ—यजमान बलि उनके लघु रूप के अनुकूल मनोरम तथा दर्शनीय अंग-प्रत्यंग को देखकर प्रसन्न हो गये और उनके लिये आसन प्रदान किया ॥

सप्तविंशः श्लोकः

स्वागतेनाभिनन्द्याथ पादौ भगवतो बलिः ।
अवनिज्यार्चयामास मुक्तसङ्गमनोरमम् ॥२७॥

पदच्छेद— स्वागतेन अभिनन्द्य अथ पादौ भगवतः बलिः ।
अवनिज्य अर्चयामास मुक्तसङ्ग मनोरमम् ॥

शब्दार्थ—

स्वागतेन	१.	स्वागत वाणी से	अवनिज्य	७.	पखारा
अभिन्द्यअथ	२.	उनका अभिनन्दन करके	अर्चयामास	११.	भगवान् की पूजा
पादौ	६.	जल से पैरों को	मुक्त	९.	रहित महापुरुषों को
भगवतः	५.	भगवान् के	सङ्ग	८.	फिर आसक्ति
बलिः ।	३.	बलि ने	मनोरमम् ॥	१०.	मनोरम लगने

श्लोकार्थ—स्वागतवाणी से अभिनन्दन करके बलि ने भगवान् के जल से पैरों को पखारा । फिर आसक्ति रहित महापुरुषों को मनोरम लगने वाले भगवान् जी पूजा की ।

अष्टाविंशः श्लोकः

तत्पादशौचं जनकल्मषापहं स धर्मविन्मूर्ध्न्यदधात् सुमङ्गलम् ।
यद् देवदेवो गिरिशश्चन्द्रमौलिर्दधार मूर्ध्ना परया च भक्त्या ॥२८॥

पदच्छेद—तत् पाद शौचम् जनकल्मष अपहम् सः धर्मवित् मूर्ध्निअदधात् सुमङ्गलम् ।
यत् देवदेवः गिरिशः चन्द्रमौलिः दधार मूर्ध्ना परया च भक्त्या ॥

शब्दार्थ—

तत्	१.	उन प्रभु के	यत्	५.	जिसे
पादशौचम्	२.	चरणों का धोवन	देवदेवः	६.	देवाधिदेव
जनकल्मष	३.	लोगों के पापों को	गिरिशः	८.	भगवान् शंकर ने
अपहम्	४.	धोने वाला है	चन्द्रमौलिः	७.	चन्द्रमौलि
सः	१६.	बलि	दधार	१२.	धारण किया था
धर्मवित्	१५.	धर्मवेत्ता	मूर्ध्ना	११.	अपने सिर पर
मूर्ध्नि	१७.	अपने मस्तक पर	परया	९.	अत्यन्त
अदधात्	१८.	रख रहा है	च	१३.	और
सुमङ्गलम् ।	१४.	परम मंगल मय वही चरणामृत	भक्त्या ॥	१०.	भक्ति भाव से

श्लोकार्थ—उस प्रभु के चरणों का धोवन लोगों के पापों को धोने वाला है। जिसे देवाधिदेव चन्द्रमौलि भगवान् शंकर ने अत्यन्त भक्ति-भाव से अपने सिर पर धारण किया था। और परम मंगलमय वही चरणामृत धर्मवेत्ता बलि अपने मस्तक पर रख रहा है ॥

एकोनविंशः श्लोकः

बलिरुवाच— स्वागतं ते नमस्तुभ्यं ब्रह्मन्किं करवाम ते।
ब्रह्मर्षीणां तपःसाक्षान्मन्ये त्वाऽऽर्यं वपुर्धरम् ॥२६॥

पदच्छेद— स्वागतम् ते नमः तुभ्यम् ब्रह्मन् किम् करवाम ते।
ब्रह्म ऋषीणाम् तपः साक्षात् मन्ये त्वा आर्य वपुः धरम् ॥

शब्दार्थ—

स्वागतम्	३.	स्वागत है	ब्रह्म	१२.	ब्रह्म
ते	२.	आपका	ऋषीणाम्	१३.	ऋषियों की
नमः	५.	नमस्कार है	तपः	१४.	तपस्या ही
तुभ्यम्	४.	आप को	साक्षात्	११.	साक्षात्
ब्रह्मन्	१.	हे ब्राह्मण कुमार !	मन्ये	१०.	मैं ऐसा मानता हूँ कि
किम्	७.	क्या	त्वा	१५.	आप के रूप में
करवाम	८.	सेवा करूँ	आर्य	९.	हे आर्य !
ते।	६.	मैं आप की	वपुः धरम् ॥	१६.	शरीर धारण करके आयी है

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मकुमार ! आपका स्वागत है। आपको नमस्कार है। मैं आपकी क्या सेवा करूँ। हे आर्य ! मैं ऐसा मानता हूँ कि साक्षात् ब्रह्म ऋषियों की तपस्या ही आपके रूप में शरीर धारण करके आई है।।

त्रिंशः श्लोकः

अद्य नः पितरस्तृप्ता अद्य नः पावितं कुलम्।
अद्य स्विष्टः क्रतुरयं यद् भवानागतो गृहान् ॥३०॥

पदच्छेद— अद्य नः पितरः तृप्ताः अद्य नः पावितम् कुलम्।
अद्य स्विष्टः क्रतुरयम् यत् भवान् आगतः गृहान् ॥

शब्दार्थ—

अद्य	१.	आज	अद्य	८.	आज
नः	२.	हमारे	स्विष्टः	१०.	सफल हो गया
पितरः	३.	पितर	क्रतुरयम्	९.	मेरा यह यज्ञ
तृप्ताः	४.	तृप्त हो गये	यत्	११.	जो कि
अद्य नः	५.	आज हमारा	भवान्	१२.	आप स्वयं
पावितम्	७.	पवित्र हो गया	आगतः	१४.	आये हैं
कुलम्।	६.	वंश	गृहान् ॥	१३.	मेरे घर

श्लोकार्थ—आज हमारे पितर तृप्त हो गये। आज हमारा वंश पवित्र हो गया। आज मेरा यह यज्ञ सफल हो गया। जो कि आप स्वयं मेरे घर आये हैं।।

एकत्रिंशः श्लोकः

अद्याग्नयो मे सुहुता यथाविधि द्विजात्मज त्वच्चरणावनेजनैः ।
हतांहसो वार्भिरियं च भूरहो तथा पुनीता तनुभिः पदैस्तव ॥३१॥

पदच्छेद— अद्य अग्नयः मे सुहुताः यथा विधि द्विज आत्मज त्वत् चरण अवनेजनैः ।
हत अंहसः वार्भिः इयम् च भूः अहो तथा पुनीता तनुभिः पदैः तव ॥

शब्दार्थः—

अद्य	१४. आज मिल गया	हत	८. नष्ट हो गये
अग्नयः	१२. अग्नि में	अंहसः	७. सारे पाप
मे	६. मेरे	वार्भिः	२२. धोवन से
सुहुताः	१३. हवन करने का फल	इयम्	१७. यह
यथा	११. पूर्वक	च	९. और
विधि	१०. विधि	भूः	१८. पृथ्वी
द्विज	१. हे ब्राह्मण	अहो	१६. अहो !
आत्मज	२. कुमार !	तथा	१५. उसी प्रकार
त्वत्	३. आप के	पुनीता	२३. पवित्र हो गयी
चरण	४ पैर	तनुभिः	२०. छोटे-छोटे
अवनेजनैः ।	५. पखारने से	पदैः	२१. पैरों और इनके
		तव ॥	१९. आप के

श्लोकार्थ—हे ब्राह्मणकुमार ! आप के पैर पखारने से मेरे सारे पाप नष्ट हो गये। और विधि पूर्वक अग्नि में हवन करने का फल आज मिल गया। उसी प्रकार अहो यह पृथ्वी आप के छोटे-छोटे पैरों और इनके धोवन से पवित्र हो गयी ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

यद् यद् वटो वाञ्छसि तत्प्रतीच्छ मे त्वामर्थिनं विप्रसुतानुतर्कये ।
गां काञ्चनं गुणवद् धाम मृष्टं तथान्नपेयमुत वा विप्रकन्याम् ।
ग्रामान् समृद्धांस्तुरगान् गजान् वा रथांस्तथार्हत्तम सम्प्रतीच्छ ॥३२॥

पदच्छेद—यद् यद् वटो वाञ्छसि तत् प्रतीच्छ मे त्वाम् अर्थिनम् विप्र सुत अनुतर्कये ।
गाम् काञ्चनम् गुणवत् धाम मृष्टम् तथा अन्न पेयम् उत वा विप्र कन्याम् ।
ग्रामान् समृद्धान् तुरगान गजान् वा रथान् तथा अर्हत्तम सम्प्रतीच्छ ॥

शब्दार्थः—

यद्-यद्	१	जो-जो वस्तु	अन्न	१६.	अन्न
वटो	१.	हे ब्राह्मण कुमार	पेयम्	१७.	पीने की वस्तु
वाञ्छसि	३.	चाहते हो	उत वा	१८.	अथवा
तत्	४.	वह	विप्र	१९.	ब्राह्मण की
प्रतीच्छ मे	५.	मुझसे माँगों	कन्याम् ।	२०.	कन्या
त्वाम्	७.	आप	ग्रामान्	२२.	गाँव
अर्थिनम्	८.	याचक के	समृद्धान्	२१.	सम्पत्तियों से भरे
विप्र सुत	६.	हे विप्रसुत !	तुरगान्	२३.	घोड़े
अनुतर्कये	९.	बारे में सोचता हूँ	गजान्	२४.	हाथी
गाम्	१०.	कि गाय	वा	२५.	अथवा
काञ्चनम्	११.	सोना	रथान्	२६.	रथ
गुणवत्	१२.	सुसज्जित	तथा	१७.	तथा
धाम	१३.	घर	अर्हत्तम	१८.	उत्तमोत्तम वस्तुयें
मृष्टम्	१५.	मीठा	सम्प्रतीच्छ ॥	२९.	माँग लो
तथा	१४.	तथा			

श्लोकार्थ—हे ब्राह्मणकुमार ! जो वस्तु चाहते हो वह मुझसे माँगो । हे विप्रसुत ! आप याचक के बारे में सोचता हूँ कि गाय, सोना, सुसज्जित घर तथा मीठा अन्न, पीने की वस्तु अथवा ब्राह्मण की कन्या, सम्पत्तियों से भरे गाँव, घोड़े, हाथी अथवा रथ तथा उत्तमोत्तम वस्तुयें माँग लो ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमे स्कन्धे वामनप्रादुर्भावे बलिवामनसंवादे अष्टादशः अध्यायः ॥१८॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

एकोनविंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— इति वैरोचनेर्वाक्यं धर्मयुक्तं स सूनृतम् ।
निशम्य भगवान्प्रीतः प्रतिनन्द्येदमब्रवीत् ॥१॥

पदच्छेद— इति वैरोचनेः वाक्यम् धर्मयुक्तम् स सूनृतम् ।
निशम्य भगवान् प्रीतः प्रतिनन्द्य इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

इति	५. ये	निशम्य	७. सुन कर
वैरोचनेः	४. बलि के	भगवान्	८. वामन भगवान् ने
वाक्यम्	६. वचन	प्रीतः	९. प्रसन्न होकर
धर्म	१. धर्म भाव से	प्रतिनन्द्य	१०. उसका अभिनन्दन करके
युक्तम्	२. युक्त	इदम्	११. ऐसा
स सूनृतम् ।	३. मधुरता से भरे हुये	अब्रवीत् ॥	१२. कहा

श्लोकार्थ—धर्म भाव से युक्त, मधुरता से भरे हुये बलि के ये वचन सुन कर वामन भगवान् ने प्रसन्न हो कर उसका अभिनन्दन करके ऐसा कहा ॥

द्वितीयः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—वचस्तवैतज्जनदेव सूनृतं कुलोचितं धर्मयुतं यशस्करम् ।
यस्य प्रमाणं भृगवः सांपराये पितामहः कुलवृद्धः प्रशान्तः ॥२॥

पदच्छेद— वचः तव एतत् जनदेव सूनृतम् कुल उचितम् धर्मयुतम् यशस्करम् ।
यस्य प्रमाणम् भृगवः सांपराये पितामहः कुल वृद्धः प्रशान्तः ॥

शब्दार्थ—

वचः	४. वचन	यस्य	९. जिस
तव	२. आप के	प्रमाणम्	१६. प्रमाण मानते हैं
एतत्	३. ये	भृगवः	११. भृगु पुत्र शुक्राचार्य को
जनदेव	१. हे राजन् !	सांपराये	१०. परलोक के विषय में आप
सूनृतम्	८. अत्यन्त मधुर हैं	पितामहः	१५. पितामह प्रह्लाद जी की आज्ञा को
कुलोचितम्	५ कुल परम्परा के अनुसार	कुल	१२. और कुल
धर्मयुक्तम्	६. धर्मभाव से परिपूर्ण	वृद्धः	१३. वृद्ध
यशस्करम् ।	७. यश को बढ़ाने वाले तथा	प्रशान्तः ॥	१४. परम शान्त

श्लोकार्थ—हे राजन् ! आप के ये वचन कुल परम्परा के अनुसार, धर्म भाव से परिपूर्ण, यश को बढ़ाने वाले तथा अत्यन्त मधुर हैं। जिस परलोक के विषय में आप भृगुपुत्र शुक्राचार्य को और कुलवृद्ध, परमशान्त, पितामह प्रह्लाद जी को प्रमाण मानते हैं ॥

तृतीयः श्लोकः

न ह्येतस्मिन्कुले कश्चिन्निःसत्त्वः कृपणः पुमान् ।
प्रत्याख्याता प्रतिश्रुत्य यो वादाता द्विजातये ॥३॥

पदच्छेद— नहि एतस्मिन् कुले कश्चित् निःसत्त्वः कृपणः पुमान् ।
प्रत्यख्याता प्रतिश्रुत्य यः वाअदाता द्विजातये ॥

शब्दार्थ—

न हि	७	नहीं हुआ है	प्रत्याख्याता	१३	मुकर गया हो
एतस्मिन्	१.	आप के इस	प्रतिश्रुत्य	१२.	प्रतिज्ञा करके
कुले	२.	वंश में ऐसा	यः	८.	जिसने
कश्चित्	३.	कोई	वा	११.	अथवा जो
निःसत्त्वः	४.	धैर्य हीन और	अदाता	१०.	दान न दिया हो
कृपणः	५.	कृपण	द्विजातये ॥	९.	ब्राह्मण को
पुमान् ।	६.	पुरुष			

श्लोकार्थ— आप के इस वंश में ऐसा कोई धैर्य हीन और कृपण पुरुष नहीं हुआ है । जिसने ब्राह्मणों को दान न दिया हो अथवा जो प्रतिज्ञा करके मुकर गया हो ।।

चतुर्थः श्लोक

न सन्ति तीर्थे युधि चार्थिनार्थिताः पराङ्मुखा ये त्वमनस्विनो नृपाः ।
युष्मत्कुले यद्यशसामलेन प्रह्लाद उद्भाति यथोडुपः खे ॥४॥

पदच्छेद—न सन्ति तीर्थे युधि च अर्थिना अर्थिताः पराङ्मुखाः ये तु अमनस्विनः नृपाः ।
युष्मत् कुले यद् यशसा अमलेन प्रह्लादः उद्भाति यथा उडुपः खे ॥

शब्दार्थ—

न सन्ति	१२.	नहीं हुये हैं	युष्मत्	१०.	आप के
तीर्थे	१.	दान के अवसर पर	कुले	११.	वंश में
युधि	५.	युद्ध में शत्रु की ललकार सुनकर	यद्	१३.	क्योंकि
च	४.	और	यशसा	१६.	यश से
अर्थिनः	२	याचकों के	अमलेन	१५.	अपने निर्मल
अर्थिताः	३.	माँगने पर	प्रह्लादः	१४.	प्रह्लाद
पराङ्मुखाः	६.	मुँह मोड़ने वाले	उद्भाति	२०.	शोभायमान हो रहे हैं
ये तु	७.	कोई	यथा	१९.	समान
अमनस्विनः	८.	कायर	उडुपः	१८.	चन्द्रमा के
नृपाः ।	९.	राजा	खे ॥	१७.	आकाश में

श्लोकार्थ—दान के अवसर पर याचकों के माँगने पर और युद्ध में शत्रु की ललकार सुनकर मुँह मोड़ने वाले कायर राजा आप के वंश में नहीं हुये हैं । क्योंकि प्रह्लाद अपने निर्मल यश से आकाश में चन्द्रमा के समान सुशोभित हो रहे हैं ।।

पञ्चमः श्लोकः

यतो जातो हिरण्याक्षश्चरन्नेक इमां महीम् ।
प्रतिवीरं दिग्विजये नाविन्दत गदायुधः ॥५॥

पदच्छेद— यतः जातः हिरण्याक्षः चरन् एक इमाम् महीम् ।
प्रतिवीरम् दिग्विजये न अविन्दत गदा आयुधः ॥

शब्दार्थ—

यतः	१.	आप के जिस वंश में	प्रतिवीरम्	११.	कोई जोड़ का वीर
जातः	३.	उत्पन्न हुआ	दिग्विजय	४.	जिसके दिग्विजय के लिये
हिरण्याक्षः	२.	हिरण्याक्ष	न	१२.	नहीं
चरन्	१०.	घूमते हुये	अविन्दत	१३.	मिला
एक	७.	अकेले	गदा	५.	गदा रूपी
इमाम्	८.	इस	आयुधः ॥	६.	शस्त्र हाथ में लेकर निकलने पर
महीम् ।	९.	पृथ्वी पर			

श्लोकार्थ— आप के जिस वंश में हिरण्याक्ष उत्पन्न हुआ । जिसके दिग्विजय के लिए गदारूपी शस्त्र हाथ में लेकर निकलने पर अकेले इस पृथ्वी पर घूमते हुये कोई जोड़ का वीर नहीं मिला ॥

षष्ठः श्लोकः

यं विनिर्जित्य कृच्छ्रेण विष्णुःक्ष्मोद्धार आगतम् ।
नात्मानं जयिनं मेने तद्वीर्यं भूर्यनुस्मरन् ॥६॥

पदच्छेद— यम् विनिर्जित्य कृच्छ्रेण विष्णुः क्ष्मोद्धारे आगतम् ।
न आत्मानम् जयिनम् मेने तद् वीर्यम् भूरि अनुस्मरन् ॥

शब्दार्थ—

यम्	४.	जिस हिरण्याक्ष को	आत्मानम्	११.	उन्होंने अपने को
विनिर्जित्य	६.	जीत लेने पर भी	जयिनम्	१२.	विजयी
कृच्छ्रेण	५.	बड़ी कठिनाई से	मेने	१४.	माना
विष्णुः	१.	विष्णु भगवान् द्वारा	तद्	७.	उस हिरण्याक्ष के
क्ष्मोद्धारे	२.	पृथ्वी के उद्धार के	वीर्यम्	८.	पराक्रम का
आगतम् ।	३.	समय आये हुये	भूरि	९.	बार-बार
न	१३.	नहीं	अनुस्मरन् ॥	१०.	स्मरण करते हुये

श्लोकार्थ— विष्णु भगवान् द्वारा पृथ्वी के उद्धार के समय आये हुये जिस हिरण्याक्ष को बड़ी कठिनाई से जीत लेने पर भी उस हिरण्याक्ष के पराक्रम का बार-बार स्मरण करते हुये उन्होंने अपने को विजयी नहीं माना ॥

सप्तमः श्लोकः

निशम्य तद्वधं भ्राता हिरण्यकशिपुः पुरा ।
हन्तुं भ्रातृहणं क्रुद्धो जगाम निलयं हरेः ॥७॥

पदच्छेद— निशम्य तत् वधम् भ्राता हिरण्यकशिपुः पुरा ।
हन्तुम् भ्रातृहणम् क्रुद्धः जगाम निलयम् हरेः ॥

शब्दार्थ—

निशम्य	६. सुना तो	हन्तुम्	१०. उसे मारने के लिये (वह)
तत्	३. अपने उस	भ्रातृ	७. भाई को
वधम्	५. वध का समाचार	हणम्	८. मारने वाले पर
भ्राता	४. भाई हिरण्याक्ष के	क्रुद्धः	९. क्रुद्ध हो कर
हिरण्यकशिपुः	२. हिरण्यकशिपु ने	जगाम	१३. पहुँचा
पुरा ।	१. पहले जब	निलयम्	१२. निवासस्थान वैकुण्ठ धाम में
		हरेः ॥	११. भगवान् के

श्लोकार्थ—पहले जब हिरण्यकशिपु ने अपने उस भाई हिरण्याक्ष के वध का समाचार सुना तो भाई को मारने वाले पर क्रुद्ध हो कर उसे मारने के लिये वह भगवान् के निवासस्थान वैकुण्ठ धाम में पहुँचा ॥

अष्टमः श्लोकः

तमायान्तं समालोक्य शूलपाणिं कृतान्तवत् ।
चिन्तयामास कालज्ञो विष्णुर्मायाविनां वरः ॥८॥

पदच्छेद— तम् आयान्तम् समालोक्य शूलपाणिम् कृतान्तवत् ।
चिन्तयामास कालज्ञः विष्णुः मायाविनाम् वरः ॥

शब्दार्थ—

तमायान्तम्	८. आते हुये उसे	चिन्तयामास	१०. विचार किया
समालोक्य	९. देख कर	कालज्ञः	३. समय को जानने वाले
शूलपाणिम्	५. शूल हाथ में लेकर	विष्णुः	४. भगवान् विष्णु ने
कृतान्त	६. काल के	मायाविनाम्	१. माया रचने वालों में
वत् ।	७. समान	वरः ॥	२. श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—माया रचने वालों में श्रेष्ठ, समय को जानने वाले भगवान् विष्णु ने शूल हाथ में लेकर काल के समान आते हुये उसे देख कर विचार किया ॥

नवमः श्लोकः

यतो यतोऽहं तत्रासौ मृत्युः प्राणभृतामिव ।
अतोऽहमस्य हृदयं प्रवेक्ष्यामि पराग्दृशः ॥९॥

पदच्छेद— यतः यतः अहम् तत्र असौ मृत्युः प्राण भृताम् इव ।
अतः अहम् अस्य हृदयम् प्रवेक्ष्यामि पराक् दृशः ॥

शब्दार्थ—

यतः	५. जहाँ	इव ।	४. समान
यतः	६. जहाँ	अतः	१२. इसीलिये
अहम्	७. मैं जाऊँगा	अहम्	१३. मैं
तत्र	८. वहीं	अस्य	१४. इसके
असौ	९. यह जायेगा	हृदयम्	१५. हृदय में
मृत्युः	३. मृत्यु के	प्रवेक्ष्यामि	१६. प्रवेशकर जाऊँ
प्राण	१. प्राण	पराक्	१०. यह तो बाहर
भृताम्	२. धारियों के पीछे	दृशः ॥	११. देखने वाला है

श्लोकार्थ—प्राणधारियों के पीछे मृत्यु के समान जहाँ-जहाँ मैं जाऊँगा वहीं यह जायेगा । यह तो बाहर देखने वाला है । इसलिये मैं इसके हृदय में प्रवेश कर जाऊँ ॥

दशमः श्लोकः

एवं स निश्चित्य रिपोः शरीरमाधावतो निर्विविशेऽसुरेन्द्र ।
श्वासानिलान्तर्हितसूक्ष्मदेहस्तत्प्राणरन्ध्रेण विविग्नचेताः ॥१०॥

पदच्छेद— एवम् सः निश्चित्य रिपोः शरीरम् आधावतः निर्विविशे असुरेन्द्र ।
श्वास अनिल अन्तर्हित सूक्ष्मदेहः तत् प्राण रन्ध्रेण विविग्न चेताः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	३. ऐसा	श्वास	८. श्वास
सः	२. उन भगवान् ने	अनिल	९. वायु के रूप में
निश्चित्य	४. निश्चय करके	अन्तर्हित	१२. चलते हुये
रिपोः	१४. शत्रु के	सूक्ष्मदेहः	७. शरीर को सूक्ष्म बनाकर
शरीरम्	१५. शरीर में	तत्	१०. उसके
आधावतः	१३. आक्रमणकारी	प्राणरन्ध्रेण	११. नासिका मार्ग से
निर्विविशे	१६. प्रवेश किया	विविग्न	५. कम्पित
असुरेन्द्र	१. हे असुरशिरोमणे !	चेताः ॥	६. चित्त से

श्लोकार्थ—हे असुरशिरोमणि ! उन भगवान् ने ऐसा निश्चय करके कम्पित चित्त से शरीर को सूक्ष्म बना कर श्वास वायु के रूप में उसके नासिका मार्ग से चलते हुये आक्रमणकारी शत्रु के शरीर में प्रवेश किया ॥

एकादशः श्लोकः

स तन्निकेतं परिमृश्य शून्यमपश्यमानः कुपितो ननाद ।
क्ष्मां द्यां दिशः खं विवरान्समुद्रान् विष्णुं विचिन्वन् न ददर्श वीरः ॥११॥

पदच्छेद—सः तत् निकेतम् परिमृश्य शून्यम् अपश्यमानः कुपितः ननाद ।
क्ष्माम् द्याम् दिशः खम् विवरान् समुद्रान् विष्णुम् विचिन्वन् न ददर्श वीरः ॥

शब्दार्थ—

सः	१. उसने	क्ष्माम् द्याम्	९. पृथ्वी स्वर्ग
तत्	२. उन	दिशः खम्	१०. दिशा आकाश
निकेतम्	३. लोक को	विवरान्	११. पाताल और
परिमृश्य	५. जान कर	समुद्रान्	१२. समुद्र (सब जगह)
शून्यम्	४. शून्य	विष्णुम्	१५. भगवान् को
अपश्यमाना	६. उन्हें न देखते हुये	विचिन्वन्	१३. खोजने पर भी
कुपिताः	७. क्रोधित हो कर	न ददर्श	१६. नहीं पाया
ननाद	८. सिंह नाद किया	वीरः ॥	१४. उस वीर ने

श्लोकार्थ—उसने उन लोक को शून्य जान कर उन्हें न देखते हुये क्रोधित हो कर सिंह नाद किया । पृथ्वी, स्वर्ग, दिशा, आकाश, पाताल और समुद्र सब जगह खोजने पर भी उस वीर ने भगवान् को नहीं पाया ॥

द्वादशः श्लोकः

अपश्यन्निति होवाच मयान्विष्टमिदं जगत् ।
भ्रातृहा मे गतो नूनं यतो नावर्तते पुमान् ॥१२॥

पदच्छेद— अपश्यन् इति ह उवाच मया अन्विष्टम् इदम् जगत् ।
भ्रातृहा मे गतः नूनम् यतः न आवर्तते पुमान् ॥

शब्दार्थ—

अपश्यन्	१. उन भगवान् को न देखकर	भ्रातृहा	१०. भाई को मारने वाला
इति ह	२. वह दैत्य इस प्रकार	मे	९. मेरे
उवाच	३. बोला कि	गतः	११. वहाँ चला गया है
मया	४. मैंने	नूनम्	८. निश्चय ही
अन्विष्टम्	७. खोज लिया	यतः	१२. जहाँ से
इदम्	५. यह	न आवर्तते	१४. लौट कर नहीं आता है
जगत् ।	६. सारा संसार	पुमान् ॥	१३. व्यक्ति फिर

श्लोकार्थ—उन भगवान् को न देख कर वह दैत्य इस प्रकार बोला कि मैंने यह सारा संसार खोज लिया । निश्चय ही मेरे भाई को मारने वाला वहाँ चला गया है । जहाँ से व्यक्ति फिर लौट कर नहीं आता है ॥

त्रयोदशः श्लोकः

वैरानुबन्ध एतावानामृत्योरिह देहिनाम् ।
अज्ञानप्रभवो मन्युरहंमानोपबृंहितः ॥१३॥

पदच्छेद— वैर अनुबन्धः एतावान् आमृत्योः इह देहिनाम् ।
अज्ञान प्रभवः मन्युः अहम् मान उपबृंहितः ॥

शब्दार्थ—

वैर	१.	वैर का	अज्ञान	८.	अज्ञान से
अनुबन्धः	२.	कारण तो	प्रभवः	९.	उत्पन्न होता है और
एतावान्	३.	इतना ही है	मन्युः	७.	क्रोध
आमृत्योः	६.	मृत्यु न हो	अहम्	१०.	अहं
इह	४.	जब-तक इस संसार में	मानः	११.	भाव से
देहिनाम् ।	५.	देहधारियों की	उपबृंहितः ॥	१२.	बढ़ता है

श्लोकार्थ—वैर का कारण तो इतना ही है, जब-तक इस संसार में देह धारियों की मृत्यु न हो। क्रोध अज्ञान से उत्पन्न होता है ! और अहंभाव से बढ़ता है ॥

चतुर्दशः श्लोकः

पिता प्रह्लादपुत्रस्ते तद्विद्वान्द्विजवत्सलः ।
स्वमायुर्द्विजलिङ्गेभ्यो देवेभ्योऽदात् स याचितः ॥१४॥

पदच्छेद— पिता प्रह्लाद पुत्रः ते तत् विद्वान् द्विज वत्सलः ।
स्वम् आयुः द्विज लिङ्गेभ्यः देवेभ्यः अदात् स याचितः ॥

शब्दार्थ—

पिता	२.	पिता	स्वम्	१४.	उन्होंने अपनी
प्रह्लाद	३.	प्रह्लाद के	आयुः	१५.	आयु भी
पुत्रः	४.	पुत्र विरोचन	द्विज	९.	ब्राह्मणों का
ते	१.	आप के	लिङ्गेभ्यः	१०.	वेष बनाने वाले
तत्	५.	तो	देवेभ्यः	११.	देवताओं को
विद्वान्	६.	बड़े विद्वान् और	अदात्	१६.	दे डाली थी
द्विज	७.	ब्राह्मण	सः	१२.	उनके
वत्सलाः ।	८.	भक्त थे	याचितः ॥	१३.	माँगने पर

श्लोकार्थ—आप के पिता, प्रह्लाद के पुत्र विरोचन तो बड़े विद्वान् और ब्राह्मण भक्त थे। ब्राह्मणों का वेष बनाने वाले देवताओं को उनके माँगने पर उन्होंने अपनी आयु भी दे डाली थी।

पञ्चदशः श्लोकः

भवानाचरितान्धर्मानास्थितो गृहमेधिभिः ।
ब्राह्मणैः पूर्वजैः शूरैरन्यैश्चोद्दामकीर्तिभिः ॥१५॥

पदच्छेद— भवान् आचरितान् धर्मान् आस्थितः गृहमेधिभिः ।
ब्राह्मणैः पूर्वजैः शूरैः अन्यैः च उद्दाम कीर्तिभिः ॥

शब्दार्थ—

भवान्	१.	आप भी	पूर्वजैः	६.	पूर्वजों
आचरितान्	३.	आचरण करते हैं	शूरैः	११.	वीरों ने
धर्मान्	२.	उसी धर्म का	अन्यैः	८.	अन्य
आस्थितः	१२.	पालन किया	च	७.	और
गृहमेधिभिः ।	५.	गृहस्थजनों	उद्दाम	९.	अत्यधिक
ब्राह्मणैः	४.	जिसका ब्राह्मणों	कीर्तिभिः ॥	१०.	यशस्वी

श्लोकार्थ—आप भी उसी धर्म का आचरण करते हैं। जिसका ब्राह्मणों, गृहस्थ जनों, पूर्वजों और अन्य अत्यधिक यशस्वी वीरों ने पालन किया है।

षोडशः श्लोकः

तस्मात् त्वत्तो महीमीषद् वृणेऽहं वरदर्षभात् ।
पदानि त्रीणि दैत्येन्द्र संमितानि पदा मम ॥१६॥

पदच्छेद— तस्मात् त्वत्तः महीम् ईषत् वृणे अहम् वरदर्षभात् ।
पदानि त्रीणि दैत्येन्द्र संमितानि पदा मम ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	३.	इसी से	पदानि	१३.	पग (पृथ्वी चाहिये)
त्वत्तः	५.	आप से	त्रीणि	१२.	बस तीन
महीम्	७.	पृथ्वी	दैत्येन्द्र	२.	हे दैत्येन्द्र !
ईषत्	६.	थोड़ी सी	संमितानि	११.	नाप से
वृणे	८.	माँगता हूँ	पदा	१०	पैरों के
अहम्	४.	मैं	मम ॥	९.	मेरे
वरदर्षभात् ।	१.	वर देने वालों में श्रेष्ठ			

श्लोकार्थ—वर देने वालों में श्रेष्ठ हे दैत्येन्द्र ! इसी से मैं आप से थोड़ी सी पृथ्वी माँगता हूँ। मेरे पैरों को नाप बस तीन पग पृथ्वी चाहिये ॥

सप्तदशः श्लोकः

नान्यत् ते कामये राजन्वदान्याज्जगदीश्वरात् ।
नैनः प्राप्नोति वै विद्वान्यावदर्थप्रतिग्रहः ॥१७॥

पदच्छेद— न अन्यत् ते कामये राजन् वदान्यात् जगदीश्वरात् ।
न एनः प्राप्नोति वै विद्वान् यावत् अर्थ प्रतिग्रहः ॥

शब्दार्थ—

न	६.	नहीं	**न एनः**	१३.	पाप को नहीं
अन्यत्	५.	अन्य कुछ भी	**प्राप्नोति**	१४.	प्राप्त होता है
ते	४.	मैं तुमसे	**वै**	८.	निश्चय ही
कामये	७.	चाहता हूँ	**विद्वान्**	९.	विद्वान् व्यक्ति
राजन्	१.	हे राजन् !	**यावत्**	१०.	आवश्यकतानुसार
वदान्यात्	३.	उदार होने पर भी	**अर्थ**	११.	धन
जगदीश्वरात् ।	२.	जगत् के स्वामी और बड़े	**प्रतिग्रहः ॥**	१२.	स्वीकार करने से

श्लोकार्थ— हे राजन् ! जगत् के स्वामी और बड़े उदार होने पर भी मैं तुमसे अन्य कुछ भी नहीं चाहता हूँ । निश्चय ही विद्वान् व्यक्ति आवश्यकतानुसार धन स्वीकार करने से पाप को नहीं प्राप्त होता है ॥

अष्टादशः श्लोकः

बलिरुवाच— **अहो ब्राह्मणदायाद वाचस्ते वृद्धसंमताः ।**
त्वं बालो बालिशमतिः स्वार्थं प्रत्यबुधो यथा ॥१८॥

पदच्छेद— अहो ब्राह्मण दायाद वाचः ते वृद्ध संमताः ।
त्वम् बालः बालिशमतिः स्वार्थम् प्रति अबुधः यथा ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	अहो	**त्वम्**	८.	तुम तो
ब्राह्मण	२.	ब्राह्मण	**बालः**	९.	बालक ही हो
दायाद	३.	कुमार	**बालिश**	१०.	बच्चों जैसी ही
वाचः	५.	बातें तो	**मतिः**	११.	तुम्हारी बुद्धि है
ते	४.	तुम्हारी	**स्वार्थम्**	१२.	अतः स्वार्थ
वृद्ध	६.	वृद्धों	**प्रति अबुधः**	१३.	के प्रति तुम ना समझ
संमताः ।	७.	जैसी हैं	**यथा ॥**	१४.	जैसे हो

श्लोकार्थ— अहो ब्राह्मण कुमार ! तुम्हारी बातें तो वृद्धों जैसी हैं । तुम तो बालक ही हो । बच्चों जैसी ही तुम्हारी बुद्धि है । अतः स्वार्थ के प्रति तुम ना समझ जैसे हो ॥

एकोनविंशः श्लोकः

मां वचोभिः समाराध्य लोकानामेकमीश्वरम् ।
पदत्रयं वृणीते योऽबुद्धिमान् द्वीपदाशुषम् ॥१९॥

पदच्छेद— माम् वचोभिः समाराध्य लोकानाम् एकम् ईश्वरम् ।
पद त्रयम् वृणीते यः अबुद्धिमान् द्वीप दाशुषम् ॥

शब्दार्थ—

माम्	६.	मुझे	पद	११.	पग पृथ्वी
वचोभिः	७.	अपनी वाणी से	त्रयम्	१०.	तीन
समाराध्य	८.	प्रसन्न करके	वृणीते	१२.	माँगता है
लोकानाम्	३.	समस्त लोकों के	यः	९.	जो
एकम्	४.	एक मात्र	अबुद्धिमान्	१३.	क्या वह अबुद्धिमान् नहीं है
ईश्वरम् ।	५.	अधीश्वर	द्वीप	१.	द्वीप के द्वीप
			दाशुषम् ॥	२.	दान देने वाले

श्लोकार्थ—द्वीप के द्वीप दान करने वाले समस्त लोकों के एक मात्र अधीश्वर मुझे अपनी वाणी से प्रसन्न करके जो तीन पग पृथ्वी माँगता है, क्या वह अबुद्धिमान् नहीं है ।

विंशः श्लोकः

न पुमान् मामुपव्रज्य भूयो याचितुमर्हति ।
तस्माद् वृत्तिकरीं भूमिं वटो कामं प्रतीच्छ मे ॥२०॥

पदच्छेद— न पुमान् माम् उपव्रज्य भूयः याचितुम् अर्हति ।
तस्मात् वृत्ति करीम् भूमिम् वटो कामम् प्रतीच्छ मे ॥

शब्दार्थ—

न	८.	नहीं रखता है	तस्मात्	९.	इसलिये
पुमान्	४.	कोई व्यक्ति	वृत्ति	१०.	जीविका
माम्	२.	मेरे	करीम्	११.	चलाने के लिये
उपव्रज्य	३.	पास आकर	भूमिम्	१३.	भूमि
भूयः	५.	फिर	वटो	१.	हे ब्रह्मचारी जी
याचितुम्	६.	याचना की	कामम्	१२.	यथेच्छ
अर्हति ।	७.	योग्यता	प्रतीच्छ	१५.	माँग लो
			मे ॥	१४.	मुझ से

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मचारी जी ! मेरे पास आकर कोई व्यक्ति फिर याचना की योग्यता नहीं रखता है । इसलिये जीविका चलाने के लिये यथेच्छ भूमि मुझसे माँग लो ॥

एकविंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—यावन्तो विषयाः प्रेष्ठास्त्रिलोक्यामजितेन्द्रियम् ।
न शक्नुवन्ति ते सर्वे प्रतिपूरयितुं नृप ॥२१॥

पदच्छेद— यावन्तः विषयाः प्रेष्ठाः त्रिलोक्याम् अजित इन्द्रियम् ।
न शक्नुवन्ति ते सर्वे प्रतिपूरयितुम् नृप ॥

शब्दार्थ—

यावन्तः	३.	जितने	न	११.	नहीं
विषयाः	५.	विषय हैं	शक्नुवन्ति	१२.	कर सकते हैं
प्रेष्ठाः	४.	प्यारे-प्यारे	ते	६.	वे
त्रिलोक्याम्	२.	तीनों लोकों में	सर्वे	७.	सब के सब
अजित	९.	वश में न रखने वालों की	प्रतिपूरयितुम्	१०.	समस्याओं को पूरा
इन्द्रियम्	८	इन्द्रियों को	नृप ॥	१.	हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! तीनों लोकों में जितने प्यारे-प्यारे विषय हैं, वे सब के सब इन्द्रियों को वश में न रखने वालों की समस्याओं को पूरा नहीं कर सकते हैं ।

द्वाविंशः श्लोकः

त्रिभिः क्रमैरसंतुष्टो द्वीपेनापि न पूर्यते ।
नववर्षसमेतेन सप्तद्वीपवरेच्छया ॥२२॥

पदच्छेद— त्रिभिः क्रमैः असन्तुष्टः द्वीपेन अपि न पूर्यते ।
नववर्ष समेतेन सप्तद्वीप वरेच्छया ॥

शब्दार्थ—

त्रिभिः	१.	तीन	पूर्यते ।	६.	सन्तुष्ट
क्रमैः	२.	पग भूमि से	नव	८.	नौ
असन्तुष्टः	३.	असन्तुष्ट रहने वाला	वर्ष	९.	वर्ष से
द्वीपेन	४.	द्वीप मिलने पर	समेतेन	१०.	युक्त एक द्वीप मिलने पर
अपि	५.	भी	सप्तद्वीप	११.	सातों द्वीपों को
न	७.	नहीं होगा	वरेच्छया ॥	१२.	पाने की इच्छा होगी

श्लोकार्थ—तीन पग भूमि से असन्तुष्ट रहने वाला द्वीप मिलने पर भी सन्तुष्ट नहीं होगा । नौ वर्ष से युक्त एक द्वीप मिलने पर सातों द्वीपों को पान की इच्छा होगी ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

सप्तद्वीपाधिपतयो नृपा वैन्यगयादयः ।
अर्थैः कामैर्गता नान्तं तृष्णाया इति नः श्रुतम् ।।२३।।

पदच्छेद— सप्तद्वीप अधिपतयः नृपाः वैन्यगय आदयः ।
अर्थैः कामैः गताः न अन्तम् तृष्णायाः इति नः श्रुतम् ।।

शब्दार्थ—

सप्तद्वीप	८.	सातों द्वीपों के	कामैः	११.	भोग सामग्रियों से
अधिपतयः	९.	अधिपति होने पर भी	गताः	१३.	पार
नृपाः	७.	नरेश	न अन्तम्	१४.	नहीं पा सके
वैन्य	४.	पृथु	तृष्णायाः	१२.	तृष्णा का
गय	५.	गय	इति	२.	ऐसा
आदयः ।	६.	आदि	नः	१.	हमने
अर्थैः	१०.	उतने धन और	श्रुतम् ।।	३.	सुना है कि

श्लोकार्थ— ऐसा हमने सुना है कि पृथु, गय आदि नरेश सातों द्वीपों के अधिपति होने पर भी उतने धन और भोग सामग्रियों से तृष्णा का पार नहीं पा सके ।।

चतुर्विंशः श्लोकः

यदृच्छयोपपन्नेन संतुष्टो वर्तते सुखम् ।
नासंतुष्टस्त्रिभिर्लोकैरजितात्मोपसादितैः ।।२४।।

पदच्छेद— यदृच्छया उपपन्नेन सन्तुष्टः वर्तते सुखम् ।
न असन्तुष्ट तुष्टः त्रिभिः लोकैः अजितात्मा उपसादितैः ।।

शब्दार्थ—

यदृच्छया	१.	प्रारब्ध के अनुसार	न	११.	नहीं होता
उपपन्नेन	२.	प्राप्त हुये से	असतुष्टः	७	असन्तुष्ट व्यक्ति
सन्तुष्टः	३.	सन्तुष्ट रहने वाले ही	त्रिभिः	८.	तीनों
वर्तते	५.	प्राप्त करता है	लोकैः	९.	लोकों का
सुखम् ।	४.	सुख	अजितात्मा	६	इन्द्रियों को न जीतने वाला
			उपसादितैः ।।	१०.	राज्य मिलने पर भी सुखी

श्लोकार्थ— प्रारब्ध के अनुसार प्राप्त हुये से सन्तुष्ट रहने वाले ही सुख को प्राप्त करता है । इन्द्रियों को न जीतने वाला असन्तुष्ट व्यक्ति तीनों लोकों का राज्य मिलने पर नहीं भी सुखी होता है ।।

पञ्चविंशः श्लोकः

पुंसोऽयं संसृतेर्हेतुरसंतोषोऽर्थकामयोः ।
यदृच्छयोपपन्नेन संतोषो मुक्तये स्मृतः ॥२५॥

पुंसः अयम् संसृतेः हेतुः असंतोषः अर्थ कामयोः ।
यदृच्छया उपपन्नेन संतोषः मुक्तये स्मृतः ॥

शब्दार्थ—

पुंसः	४.	प्राणी के	कामयोः ।	२.	भोगों से
अयम्	५.	इस	यदृच्छया	८.	स्वेच्छा से
संसृतेः	६.	जन्म मृत्यु का	उपपन्नेन	९.	प्राप्त वस्तु से
हेतुः	७.	कारण है	असंतोषः	१०.	सन्तुष्ट रहना ही
असंतोषः	३.	सन्तुष्ट न होना ही	मुक्तये	११.	मुक्ति का
अर्थ	१.	धन और	स्मृतः ॥	१२.	कारण कहा गया है

श्लोकार्थ—धन और भोगों से सन्तुष्ट न होना ही प्राणी के इस जन्म और मृत्यु का कारण कहा गया है। स्वेच्छा से प्राप्त वस्तु से सन्तुष्ट रहना ही मुक्ति का कारण कहा गया है ॥

षड्विंशः श्लोकः

यदृच्छालाभतुष्टस्य तेजो विप्रस्य वर्धते ।
तत् प्रशाम्यत्यसंतोषादम्भसेवाशुशुक्षणिः ॥२६॥

यदृच्छा लाभ तुष्टस्य तेजः विप्रस्य वर्धते ।
तत् प्रशाम्यति असन्तोषात् अम्भसा इव आशुशुक्षणिः ॥

शब्दार्थ—

यदृच्छा	१.	स्वयं	तत्	७.	वही तेज
लाभ	२.	प्राप्त वस्तु से	प्रशाम्यति	१२.	शान्त हो जाता है
तुष्टस्य	३.	सन्तुष्ट रहने वाले	असंतोषात्	११.	असन्तोष से
तेजः	५.	तेज	अम्भसा	८.	जल से
विप्रस्य	४.	ब्राह्मण का	इव	१०.	के समान
वर्धते ।	६.	बढ़ता है	आशुशुक्षणिः ॥	९.	अग्नि

श्लोकार्थ—स्वयम् प्राप्त वस्तु से सन्तुष्ट रहने वाले ब्राह्मण का तेज बढ़ता है। वही तेज जल से अग्नि के समान असन्तोष से शान्त हो जाता है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

तस्मात् त्रीणि पदान्येव वृणे त्वद् वरदर्षभात् ।
एतावतैव सिद्धोऽहं वित्तं यावत्प्रयोजनम् ॥२७॥

पदच्छेद— तस्मात् त्रीणि पदानि एव वृणे त्वद् वरदर्षभात् ।
एतावान् एव सिद्धः अहम् वित्तम् यावत् प्रयोजनम् ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	३.	इसी कारण	एतावान्	९.	इतने से
त्रीणि	५.	तीन	एव	१०.	ही
पदानि	६.	पग पृथ्वी	सिद्ध	१२.	पूर्ण हो जाऊँगा
एव	७.	ही	अहम्	११.	मैं
वृणे	८.	माँग रहा हूँ	वित्तम्	१४.	धन की
त्वद्	४.	मैं तुमसे	यावत्	१३.	जितने
वरद	१.	हे वर देने वालों में	प्रयोजनम् ॥	१५.	आवश्यकता हो उतना-
ऋषभात् ।	२.	श्रेष्ठ बलि		१६.	(ही संग्रह करना चाहिये)

श्लोकार्थ—हे वर देने वालों में श्रेष्ठ बलि ! इसी कारण मैं तुमसे तीन पग पृथ्वी ही माँग रहा हूँ । इतने से ही मैं पूर्ण हो जाऊँगा । जितने धन की आवश्यकता हो उतना ही संग्रह करना चाहिये ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्युक्तः स हसन्नाह वाञ्छातः प्रतिगृह्यताम् ।
वामनाय महीं दातुं जग्राह जलभाजनम् ॥२८॥

पदच्छेद— इति उक्तः सः हसन् आह वाञ्छातः प्रतिगृह्यताम् ।
वामनाय महीं दातुम् जग्राह जल भाजनम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	उनके ऐसा	वामनाय	७.	उन्होंने वामन भगवान् को
उक्तः	२.	कहने पर	महीम्	८.	पृथ्वी
सः	३.	उस बलि ने	दातुम्	९.	देने के लिये
हसन् आह	४.	हँसते हुये कहा	जग्राह	१२.	उठाया
वाञ्छातः	५.	आप इच्छानुसार	जल	१०.	जल
प्रतिगृह्यताम् ।	६.	ग्रहण कीजिये	भाजनम् ॥	११.	पात्र

श्लोकार्थ—उनके ऐसा कहने पर उस बलि ने हँसते हुये कहा ! आप इच्छानुसार ग्रहण कीजिये । उन्होंने वामन भगवान् को देने के लिये जल का पात्र उठाया ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

विष्णवे क्ष्मां प्रदास्यन्तमुशना असुरेश्वरम् ।
जानंश्चिकीर्षितं विष्णोः शिष्यं प्राह विदांवरः ॥२९॥

पदच्छेद— विष्णवे क्ष्माम् प्रदास्यन्तम् उशना असुरेश्वरम् ।
जानन् चिकीर्षितम् विष्णोः शिष्यम् प्राह विदाम् वरः ॥

शब्दार्थ—

विष्णवे	७.	वामन भगवान् को	चिकीर्षितम्	५.	इच्छा को
क्ष्माम्	८.	पृथ्वी का	विष्णोः	४.	भगवान् विष्णु की
प्रदास्यन्तम्	९.	दान करने वाले	शिष्यम्	१०.	अपने शिष्य
उशनाः	३.	शुक्राचार्य जी ने	प्राह	१२.	कहा
असुरेश्वरम् ।	११.	दैत्येन्द्र बलि से	विदाम्	१.	जानकारों में
जानन्	६.	जानते हुये	वरः ॥	२.	श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—जानकारों में श्रेष्ठ शुक्राचार्य जी ने भगवान् विष्णु की इच्छा को जानते हुये वामन भगवान् को पृथ्वी का दान करने वाले अपने शिष्य दैत्येन्द्र बलि से कहा ॥

त्रिंशः श्लोकः

शुक्र उवाच— एष वैरोचने साक्षाद् भगवान्विष्णुरव्ययः ।
कश्यपाददितेर्जातो देवानां कार्यसाधकः ॥३०॥

पदच्छेद— एषः वैरोचने साक्षात् भगवान् विष्णुः अव्ययः ।
कश्यपाद् अदितेः जातेः देवानाम् कार्य साधकः ॥

शब्दार्थ—

एषः	२.	ये	कश्यपाद्	१०.	कश्यप ऋषि की पत्नी
वैरोचने	१.	हे विरोचनकुमार !	अदितेः	११.	अदिति से
साक्षात्	३.	स्वयं	जातः	१२.	उत्पन्न हुये हैं
भगवान्	५.	भगवान्	देवानाम्	७.	देवताओं का
विष्णुः	६.	विष्णु हैं	कार्य	८.	काम
अव्ययः ।	४.	अविनाशी	साधकः ॥	९.	बनाने के लिये

श्लोकार्थ—हे विरोचनकुमार ! ये अविनाशी भगवान् विष्णु हैं । देवताओं का काम बनाने के लिये कश्यप ऋषि की पत्नी अदिति से उत्पन्न हुये हैं ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

प्रतिश्रुतं त्वयैतस्मै यदनर्थमजानता ।
न साधु मन्ये दैत्यानां महानुपगतोऽनयः ॥३१॥

पदच्छेद— प्रतिश्रुतम् त्वया एतस्मै यद् अनर्थम् अजानता ।
न साधु मन्ये दैत्यानाम् महान् उपगतः अनयः ॥

शब्दार्थ—

प्रतिश्रुतम्	६.	प्रतिज्ञा की है	न साधु	७.	इसे मैं ठीक नहीं
त्वया	१.	तुमने	मन्ये	८.	मानता हूँ
एतस्मै	३.	इस	दैत्यानाम्	६.	इससे दैत्यों का
यद्	२.	जो	महान्	१०.	महान्
अनर्थम्	४.	अनर्थ को	उपगतः	१२.	होगा
अजानता	५.	न जानते हुये	अनयः ॥	११.	अन्याय

श्लोकार्थ—तुमने जो इस अनर्थ को नहीं जानते हुये प्रतिज्ञा की है, इसे मैं ठीक नहीं मानता हूँ। इससे दैत्यों का महान् अन्याय होगा ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

एष ते स्थानमैश्वर्यं श्रियं तेजो यशः श्रुतम् ।
दास्यत्याच्छिद्य शक्राय मायामाणवको हरिः ॥३२॥

पदच्छेद— एषः ते स्थानम् ऐश्वर्यम् श्रियम् तेजः यशः श्रुतम् ।
दास्यति आच्छिद्य शक्राय माया माणवकः हरिः ॥

शब्दार्थ—

एषः	३.	ये	श्रुतम् ।	१०.	विश्वविख्यात
ते	५.	तुम्हारा	दास्यति	१४.	दे देंगे
स्थानम्	६.	राज्य	आच्छिद्य	१२.	तुमसे छीन कर
ऐश्वर्यम्	७.	ऐश्वर्य	शक्राय	१३.	इन्द्र को
श्रियम्	८.	लक्ष्मी	माया	१.	अपनी माया से
तेजः	६.	तेज और	माणवकः	२.	ब्रह्मचारी वेश धारण करने वाले
यशः	११.	कीर्ति	हरिः ॥	४.	भगवान्

श्लोकार्थ—अपनी माया से ब्रह्मचारी वेष धारण करने वाले भगवान् तुम्हारा राज्य, ऐश्वर्य, लक्ष्मी, तेज और विश्वविख्यात कीर्ति तुमसे छीन कर इन्द्र को दे देंगे ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

त्रिभिः क्रमैरिमाँल्लोकान्विश्वकायः क्रमिष्यति ।
सर्वस्वं विष्णवे दत्त्वा मूढ वर्तिष्यसे कथम् ॥३३॥

पदच्छेद— त्रिभिः क्रमैः इमान् लोकान् विश्वकायः क्रमिष्यति ।
सर्वस्वम् विष्णवे दत्त्वा मूढ वर्तिष्यसे कथम् ॥

शब्दार्थ—

त्रिभिः	३.	तीन	सर्वस्वम्	८.	सब कुछ
क्रमैः	४.	पग में ही	विष्णवे	९.	विष्णु भगवान् को
इमान्	५.	सारे	दत्त्वा	१०.	देकर
लोकान्	६.	लोकों को	मूढ	१.	हे मूर्ख
विश्वकायः	२.	विश्वरूप से	वर्तिष्यसे	१२.	जीवन निर्वाह करोगे
क्रमिष्यति ।	७.	नाप लेंगे	कथम् ॥	११.	तुम कैसे

श्लोकार्थ— हे मूर्ख ! विश्वरूप से तीन पग में ही सारे लोकों को नाप लेंगे । सब कुछ विष्णु भगवान् को देकर तुम कैसे जीवन निर्वाह करोगे ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

क्रमतो गां पदैकेन द्वितीयेन दिवं विभोः ।
खं च कायेन महता तार्तीयस्य कुतो गतिः ॥३४॥

पदच्छेद— क्रमतः गाम् पदैकेन द्वितीयेन दिवम् विभोः ।
एवं च कायेन महता तार्तीयस्य कुतः गतिः ॥

शब्दार्थः—

क्रमतः	६.	नाप लेंगे	खम्	९.	आकाश भर जायेगा
गाम्	३.	पृथ्वी को और	च	१०.	और
पदैकेन	२.	एक पग में	कायेन	८.	शरीर से
द्वितीयेन	४.	दूसरे पग में	महता	७.	इनके विशाल
दिवम्	५.	स्वर्ग को	तार्तीयस्य	११.	फिर इनका तीसरा पैर
विभोः ।	१.	ये विश्वव्यापक भगवान् !	कुतः	१२.	कहाँ
			गतिः ॥	१३.	जायेगा

श्लोकार्थ— ये विश्वव्यापक भगवान् एक पग में पृथ्वी को और दूसरे पग में स्वर्ग को नाप लेंगे । इनके विशाल शरीर से आकाश भर जायेगा । और फिर इनका तीसरा पैर कहाँ जायेगा ॥

पञ्चत्रिंश. श्लोकः

निष्ठां ते नरके मन्ये ह्यप्रदातुः प्रतिश्रुतम् ।
प्रतिश्रुतस्य योऽनीशः प्रतिपादयितुं भवान् ।।३५।।

पदच्छेद— निष्ठाम् ते नरके मन्ये हि अप्रदातुः प्रतिश्रुतम् ।
प्रतिश्रुतस्य यः अनीशः प्रतिपादयितुम् भवान् ।।

शब्दार्थ—

निष्ठाम्	९.	स्थिति	प्रतिश्रुतस्य	५.	प्रतिज्ञा को
ते	८.	उससे मैं आपकी	यः	४.	जो
नरके	१०.	नरक में	अनीशः	७.	असामर्थ्य है
मन्ये	११.	मानता हूँ	प्रतिपादयितुम्	६.	पूरा करने की
हि अप्रदातुः	३.	पूरी न कर सकेंगे	भवान् ।।	१.	आप
प्रतिश्रुतम् ।	२.	प्रतिज्ञा			

श्लोकार्थ—आप प्रतिज्ञा पूरी न कर सकेंगे जो प्रतिज्ञा को पूरी करने की असामर्थ्य है उससे मैं आप की स्थिति नरक में मानता हूँ ।।

षट्त्रिंशः श्लोकः

न तद्दानं प्रशंसन्ति येन वृत्तिर्विपद्यते ।
दानं यज्ञस्तपः कर्म लोकेवृत्तिमतो यतः ।।३६।।

पदच्छेद— न तत् दानम् प्रशंसन्ति येन वृत्तिः विपद्यते ।
दानम् यज्ञः तपः कर्म लोके वृत्ति मतः यतः ।।

शब्दार्थ—

न तत्	४.	नहीं उस	यज्ञः	१०.	यज्ञ
दानम्	५.	दान की	तपः	११.	तप और
प्रशंसन्ति	६.	प्रशंसा करते हैं	कर्म	१२.	परोपकार कर्म
येन	१.	जिससे	लोके	८	संसार में
वृत्तिः	२.	जीविका	वृत्ति	१३.	जीविका से
विपद्यते ।	३.	छिन्न-भिन्न हो जाये	मतः	१४.	युक्त प्राणियों के लिये हैं
दानम्	९.	दान	यतः ।।	७.	क्योंकि

श्लोकार्थ—जिससे जीविका छिन्न-भिन्न हो जायें, उस दान की प्रशंसा नहीं करते हैं । क्योंकि संसार में दान, यज्ञ, तप और परोपकार कर्म जीविका से युक्त प्राणी के लिये हैं ।।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

धर्माय यशसेऽर्थाय कामाय स्वजनाय च ।
पञ्चधा विभजन्वित्तमिहामुत्र च मोदते ॥३७॥

पदच्छेद— धर्माय यशसे अर्थाय कामाय स्वजनाय च ।
पञ्चधा विभजन् वित्तम् इह अमुत्र च मोदते ॥

शब्दार्थ—

धर्माय	१.	धर्म	पञ्चधा	८.	इन पाँच भागों में
यशसे	२.	यश	विभजन्	९.	बाँटने वाला ही
अर्थाय	३.	धनार्जन	वित्तम्	७.	धन को
कामाय	४.	भोग	इह	१०.	इस लोक
स्वजनाय	६.	अपने स्वजनों के लिये	अमुत्र	१२.	परलोक
च ।	५.	और	च	११.	और
			मोदते ॥	१३.	सुखी होता है

श्लोकार्थ— धर्म, यश, धनार्जन, भोग और अपने स्वजनों के लिये धन को पाँच भागों में बाँटने वाला ही इस लोक और पर लोक में सुखी होता है ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

अत्रापि बह्वृचैर्गीतं शृणु मेऽसुरसत्तम ।
सत्यमोमिति यत् प्रोक्तं यन्नेत्याहानृतं हि तत् ॥३८॥

पदच्छेद— अत्र अपि बह्वृचैः गीतम् शृणु मे असुर सत्तम ।
सत्यम् ओमिति यत् प्रोक्तम् यत् न इति आह अनृतम् हि तत् ॥

शब्दार्थ—

अत्र	३.	इस विषय में	सत्यम्	११.	वह सत्य
अपि	४.	भी	ओमिति	१०.	स्वीकार करता है
बह्वृचैः	५.	बहुत सी ऋचाओं ने	यत्	९.	जो
गीतम्	६.	जो कुछ कहा है	प्रोक्तम्	१२.	कहा गया है
शृणु	८.	सुन	यत्	१३.	और जो
मे	७.	वह मुझसे	न इति	१४.	अस्वीकार करता है
असुर	१.	हे असुर !	आह	१६.	कहा गया है
सत्तम ।	२.	शिरोमणि !	अनृतम् हि तत् ॥	१५.	उसे ही मिथ्या

श्लोकार्थ— हे असुरशिरोमणि ! इस विषय में भी बहुत सी ऋचाओं ने जो कुछ कहा है वह मुझसे सुन, जो स्वीकार करता है वह सत्य कहा गया है । और जो अस्वीकार करता है उसे ही मिथ्या कहा गया है ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

सत्यं पुष्पफलं विद्यादात्मवृक्षस्य गीयते ।
वृक्षेऽजीवति तन्न स्यादनृतं मूलमात्मनः ॥३९॥

पदच्छेद— सत्यम् पुष्प फलम् विद्यात् आत्मवृक्षस्य गीयते ।
वृक्षे अजीवति तत् न स्यात् अनृतम् मूलम् आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

सत्यम्	१.	सत्य को	वृक्षे	८.	वृक्ष के
पुष्प	२.	पुष्प और	अजीवति	९.	न रहने पर
फलम्	३.	फल	तत् न	१०.	वे नहीं
विद्यात्	४.	समझना चाहिये	स्यात्	११.	रहते हैं
आत्म	५.	और शरीर को	अनृतम्	१२.	अतः इन्कार करना (न देना)
वृक्षस्य	६.	वृक्ष	मूलम्	१४.	मूल है
गीयते ।	७	कहा गया है	आत्मनः ॥	१३.	शरीर रूपी वृक्ष का

श्लोकार्थ—सत्य को पुष्प और फल समझना चाहिये । और शरीर को वृक्ष कहा गया है । वृक्ष के न रहने पर वे नहीं रहते हैं । अतः इन्कार करना (न देना) शरीर रूपी वृक्ष का मूल है ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

तद् यथा वृक्ष उन्मूलः शुष्यत्युद्वर्ततेऽचिरात् ।
एवं नष्टानृतः सद्य आत्मा शुष्येन्न संशयः ॥४०॥

पदच्छेद— तत् यथा वृक्षः उन्मूलः शुष्यति उद्वर्तते अचिरात् ।
एवम् नष्ट अनृतः सद्यः आत्मा शुष्येत् न संशयः ॥

शब्दार्थः—

तत्	३.	वह	एवम्	८.	इसी प्रकार
यथा	२.	जैसे	नष्ट	१०.	नष्ट हो जाने पर
वृक्षः	४.	वृक्ष	अनृतः	९.	अस्वीकार
उन्मूलः	१.	जड़ के न रहने पर	सद्यः	१२.	तत्काल
शुष्यति	५.	सूख कर	आत्मा	११.	शरीर भी
उद्वर्तते	७.	गिर जाता है	शुष्येत्	१३.	सूख जाता है
अचिरात् ।	६.	शीघ्र	न संशयः ॥	१४.	इसमें संशय नहीं है

श्लोकार्थ—जड़ के न रहने पर जैसे वह वृक्ष सूख कर शीघ्र ही गिर जाता है । इसी प्रकार अस्वीकार के नष्ट हो जाने पर शरीर भी तत्काल सूख जाता है, इसमें संशय नहीं है ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

परागू रिक्तमपूर्णं वा अक्षरं यत् तदोमिति ।
यत् किञ्चिदोमिति ब्रूयात् तेन रिच्येत वै पुमान् ।
भिक्षवे सर्वमोंकुर्वन्नालं कामेन चात्मने ॥४१॥

पदच्छेद— पराक् रिक्तम् अपूर्णम् वा अक्षरम् यत् तद् ओमिति ।
यत् किञ्चित् ओमिति ब्रूयात् तेन रिच्येत वै पुमान् ।
भिक्षवे सर्वम् ओम् कुर्वन् न अलम् कामेन च आत्मने ॥

शब्दार्थ—

पराक्	५. धन को दूर हटाता है	तेन	१४. उससे वह
रिक्तम्	८. धन से खाली कर देता है	रिच्येत	१६. धन से खाली हो जाता है
अपूर्णम्	७. अपूर्ण अर्थात्	वै	१३. निश्चय ही
वा	६. अथवा	पुमान् ।	१५. मनुष्य
अक्षरम्	३. वाक्य है	भिक्षवे	१८. याचक को
यत्	२. जो	सर्वम्ओम्	१९. सब कुछ देना
तत्	४. वही	कुर्वन्	२०. स्वीकार करने वाला
ओमिति ।	१. हाँ मैं दूंगा यह	न	२३. नहीं
यत्	९. जो	अलम्	२४. रख पाता है
किञ्चित्	१०. कोई	कामेन	२२. भोग की कोई सामग्री
ओमिति	११. हाँ मैं दूंगा ऐसा	च	१७. और
ब्रूयात्	१२. कहता है	आत्मने ॥	२१. अपने लिये

श्लोकार्थ—हे राजन् ! हाँ मैं दूंगा यह जो वाक्य है, वही धन को दूर हटाता है अथवा अपूर्ण अर्थात् धन से खाली कर देता है। जो कोई हाँ मैं दूंगा ऐसा कहता है। निश्चय ही उससे वह मनुष्य धन से खाली हो जाता है। और याचक को सब कुछ देना स्वीकार करने वाला अपने लिये भोग की कोई सामग्री नहीं रख पाता है॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

अथैतत् पूर्णमभ्यात्मं यच्च नेत्यनृतं वचः।
सर्वं नेत्यनृतं ब्रूयात् स दुष्कीर्तिः श्वसन्मृतः ॥४२॥

पदच्छेद— अथ एतत् पूर्णम् अभ्यात्मम् यत् च न इति अनृतम् वचः।
सर्वम् न इति अनृतम् ब्रूयात् सः दुष्कीर्तिः श्वसन् मृतः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	सर्वम्	९.	और जो सबसे
एतत्	६.	यह	न इति	११.	नहीं दूँगा ऐसा
पूर्णम्	८.	सुरक्षित तथा पूर्ण करने वाला है	अनृतम्	१०.	अस्वीकार करके
अभ्यात्मम्	७.	अपने धन को	ब्रूयात्	१२.	वाक्य बोलता है
यत् च	२.	जो कि	सः	१३.	उसकी
न इति	३.	नहीं दूँगा ऐसा	दुष्कीर्तिः	१४.	अपकीर्ति होती है और
अनृतम्	४.	अस्वीकारात्मक	श्वसन्	१५.	वह जीवित ही
वचः।	५.	वाक्य है	मृतः ॥	१६.	मृतक के समान है

श्लोकार्थ—तदन्तर जो कि नहीं दूँगा ऐसा अस्वीकारात्मक वाक्य है, यह अपने धन को सुरक्षित या पूर्ण करने वाला है। और जो सबसे अस्वीकार करके नहीं दूँगा ऐसा वाक्य बोलता है, उसकी अपकीर्ति होती है। और वह जीवित ही मृतक के समान है ॥

त्रियश्चत्वारिंशः श्लोकः

स्त्रीषु नर्मविवाहे च वृत्त्यर्थे प्राणसंकटे।
गोब्राह्मणार्थे हिंसायां नानृतं स्याज्जुगुप्सितम् ॥४३॥

पदच्छेद— स्त्रिषु नर्म विवाहे च वृत्ति अर्थे प्राण संकटे।
गो ब्राह्मण अर्थे हिंसायाम् न अनृतम् स्यात् जुगुप्सितम् ॥

शब्दार्थ—

स्त्रीषु	१.	स्त्रियों को प्रसन्न करते हुये	गो ब्राह्मण	७.	गो, ब्राह्मणों के
नर्मविवाहे	२.	परिहास में विवाह में,	अर्थे	८.	हित के लिये
च	६.	और	हिंसायाम्	९.	किसी को मृत्यु से बचने के लिये
वृत्ति अर्थे	३.	जीविका के लिये	न अनृतम्	१०.	असत्य भाषण नहीं
प्राण	४.	प्राणों पर	स्यात्	१२.	है
संकटे।	५.	संकट आने पर	जुगुप्सितम् ॥	११.	निन्दित

श्लोकार्थ—हे राजन्! स्त्रियों को प्रसन्न करते हुये, परिहास में, विवाह में, जीविका के लिये, प्राणों पर संकट आने पर और गो, ब्राह्मणों के हित के लिये, किसी को मृत्यु से बचाने के लिये असत्य भाषण निन्दित नहीं है ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमे स्कन्धे
वामनप्रादुर्भावे एकोनविंशः अध्यायः ॥१९॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

विंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— बलिरेवं गृहपतिः कुलाचार्येण भाषितः ।
तूष्णीं भूत्वा क्षणं राजन्नुवाचावहितो गुरुम् ॥१॥

पदच्छेद— बलिः एवम् गृहपतिः कुल आचार्येण भाषितः ।
तूष्णीम् भूत्वा क्षणम् राजन् उवाच अवहितः गुरुम् ॥

शब्दार्थ—

बलिः	७.	राजा बलि	तूष्णीम्	९.	चुप
एवम्	४.	इस प्रकार	भूत्वा	१०.	रह कर
गृहपतिः	६.	गृहस्थ	क्षणम्	८.	एक क्षण
कुल	२.	कुल	राजन्	१.	हे राजन् !
आचार्येण	३.	गुरु शुक्राचार्य के	उवाच	१३.	बोले
भाषितः ।	५.	कहने पर	अवहितः	११.	सावधानी पूर्वक
			गुरुम् ॥	१२.	शुक्राचार्य जी से

श्लोकार्थ—हे राजन् ! कुल गुरु शुक्राचार्य के इस प्रकार कहने पर गृहस्थ राजा बलि एक क्षण चुप रह कर सावधानी पूर्वक शुक्राचार्य जी से बोले ॥

द्वितीयः श्लोकः

बलिरुवाच— सत्यं भगवता प्रोक्तं धर्मोऽयं गृहमेधिनाम् ।
अर्थं कामं यशो वृत्तिं यो न बाधेत कर्हिचित् ॥२॥

पदच्छेद— सत्यम् भगवता प्रोक्तम्, धर्मः अयम् गृहमेधिनाम् ।
अर्थम् कामम् यशः वृत्तिम् यः न बाधेत कर्हिचित् ॥

शब्दार्थ—

सत्यम्	२.	सत्य ही	कामम्	९.	काम
भगवता	१.	ने भगवान्	यशः	१०.	यश और
प्रोक्तम्	३.	कहा है	वृत्तिम्	११.	आजीविका में
धर्मः	६.	धर्म है	यः	७.	जिससे
अयम्	५.	वही	न	१४.	न पड़े
गृहमेधिनाम् ।	४.	गृहस्थों का	बाधेत	१३.	बाधा
अर्थम्	८.	अर्थ	कर्हिचित् ॥	१२.	किसी प्रकार की

श्लोकार्थ—ने भगवान् सत्य ही कहा है । गृहस्थों का वही धर्म है । जिससे अर्थ, काम, यश और आजीविका में किसी प्रकार की बाधा न पड़े ॥

तृतीयः श्लोकः

स चाहं वित्तलोभेन प्रत्याचक्षे कथं द्विजम् ।
प्रतिश्रुत्य ददामीति प्राह्लादिः कितवो यथा ॥३॥

पदच्छेद— सः च अहम् वित्त लोभेन प्रति आचक्षे कथम् द्विजम् ।
प्रतिश्रुत्य ददामि प्राह्लादिः कितवः यथा ॥

शब्दार्थ—

सः	२.	उन्हीं प्रसिद्ध	द्विजम् ।	१०.	ब्राह्मण से
च	१.	और	प्रतिश्रुत्य	११.	प्रतिज्ञा करके
अहम्	४.	मैं	ददामि	९.	मैं दूंगा
वित्त	५.	धन के	इति	११.	ऐसी
लोभेन	६.	लोभ से	प्राह्लादिः	३.	प्रह्लाद जी का पौत्र
प्रतिआचक्षे	१४.	अस्वीकार कर दूँ	कितवः	७.	ठग के
कथम्	१३.	कैसे	यथा ॥	८.	समान

श्लोकार्थ—और उन्हीं प्रसिद्ध प्रह्लाद जी का पौत्र मैं धन के लोभ से ठग के समान मैं दूंगा, ब्राह्मण से ऐसी प्रतिज्ञा करके कैसे अस्वीकार कर दूँ ॥

चतुर्थः श्लोकः

नह्यसत्यात् परोऽधर्म इति होवाच भूरियम् ।
सर्वं सोढुमलं मन्ये ऋतेऽलीकपरं नरम् ॥४॥

पदच्छेद— नहि असत्यात् परः अधर्मः इति ह उवाच भूः इयम् ।
सर्वम् सोढुम् अलम् मन्ये ऋते अलीक परम् नरम् ॥

शब्दार्थ—

नहि	७.	नहीं है	सर्वम्	१२.	मैं सब कुछ
असत्यात्	४.	असत्य से	सोढुम् अलम्	१३.	सहने में अपने को समर्थ
परः	५.	बढ़ कर कोई	मन्ये	१४.	मानती हूँ
अधर्मः	६.	अधर्म	ऋते	११.	छोड़ कर
इति	२.	ऐसा	अलीक	८.	मिथ्या
ह उवाच	३	कहा है कि	परम्	९.	बोलने वाले
भूः इयम् ।	१.	इस पृथ्वी ने	नरम् ॥	१०.	व्यक्ति को

श्लोकार्थ—इस पृथ्वी ने ऐसा कहा है कि असत्य से बढ़ कर कोई अधर्म नहीं है। मिथ्या बोलने वाले व्यक्ति को छोड़ कर मैं सब कुछ सहने में अपने को समर्थ मानती हूँ ॥

पञ्चमः श्लोकः

नाहं बिभेमि निरयान्नाधन्यादसुखार्णवात् ।
न स्थानच्यवनान्मृत्योर्यथा विप्रप्रलम्भनात् ॥५॥

पदच्छेद— न अहम् बिभेमि निरयात् न अधन्यात् असुख अर्णवात् ।
न स्थान च्यवनात् मृत्योः यथा विप्र प्रलम्भनात् ॥

शब्दार्थ—

न	३.	नहीं	अर्णवात् ।	८.	समुद्र से और
अहम्	१.	मैं	न स्थान	९.	न राज्य के
बिभेमि	४.	डरता हूँ	च्यवनात्	१०.	नाश से और
निरयात्	२.	नरक से	मृत्योः	११.	न मृत्यु से ही डरता हूँ
न	५.	नहीं	यथा	१२.	जितना कि
अधन्यात्	६.	दरिद्रता के	विप्र	१३.	ब्राह्मण को
असुख	७.	दुःख के	प्रलम्भनात् ॥	१४.	धोखा देने से डरता हूँ

श्लोकार्थ—मैं नरक से नहीं डरता हूँ, नहीं दरिद्रता के दुःख के समुद्र से और न राज्य के नाश से और न मृत्यु से ही डरता हूँ, जितना कि ब्राह्मण को धोखा देने से डरता हूँ ॥

षष्ठः श्लोकः

यद् यद्धास्यति लोकेऽस्मिन्संपरेतं धनादिकम् ।
तस्य त्यागे निमित्तं किं विप्रस्तुष्येन्न तेन चेत् ॥६॥

पदच्छेद— यत् यत् हास्यति लोके अस्मिन् संपरेतम् धन आदिकम् ।
तस्य त्यागे निमित्तम् किम् विप्रः तुष्येत् न तेन चेत् ॥

शब्दार्थ—

यत्	४.	जो	तस्य	१३.	उनके
यत्	५.	जो	त्यागे	१४.	त्याग का
हास्यति	८.	साथ छोड़ देती है	निमित्तम्	१५.	प्रयोजन ही
लोके	२.	संसार में	किम्	१६.	क्या है
अस्मिन्	१.	इस	विप्रः	१०.	ब्राह्मण को
सम्परेतम्	३.	मर जाने के बाद	तुष्येत्	११.	सन्तुष्ट
धन	६.	धन	न	१२.	न किया गया तो
आदिकम् ।	७.	आदि वस्तुयें	तेन चेत् ॥	९.	यदि उनसे

श्लोकार्थ—इस संसार में मर जाने के बाद जो, जो धन आदि वस्तुयें साथ छोड़ देती हैं, यदि उनसे ब्राह्मण को सन्तुष्ट न किया गया तो उनके त्याग का प्रयोजन ही क्या है ॥

सप्तमः श्लोकः

श्रेयः कुर्वन्ति भूतानां साधवो दुस्त्यजासुभिः।
दध्यङ्शिबिप्रभृतयः को विकल्पो धरादिषु ॥७॥

पदच्छेद— श्रेयः कुर्वन्ति भूतानाम् साधवः दुस्त्यज असुभिः।
दध्यङ् शिबि प्रभृतयः कः विकल्पः धरा आदिषु ॥

शब्दार्थ—

श्रेयः	८.	कल्याण	दध्यङ्	२.	दधीचि
कुर्वन्ति	९.	करते हैं	शिबि	१.	शिबि
भूतानाम्	७.	जीवों का	प्रभृतयः	३.	आदि
साधवः	४.	महापुरुष	कः	१३.	क्या बात है
दुस्त्यज	५.	कठिनाई से त्यागने योग्य	विकल्पः	१२.	सोच-विचार करने की
असुभिः	६.	प्राणों के द्वारा भी	धरा	१०.	फिर पृथ्वी
			आदिषु ॥	११.	आदि के देने में

श्लोकार्थ—शिब, दधीचि आदि महा पुरुष कठिनाई से त्यागने योग्य प्राणों के द्वारा भी जीवों का कल्याण करते हैं। फिर पृथ्वी आदि के देने में सोच-विचार करने की क्या बात है ॥

अष्टमः श्लोकः

यैरियं बुभुजे ब्रह्मन्दैत्येन्द्रैरनिवर्तिभिः।
तेषां कालोऽग्रसील्लोकान् न यशोऽधिगतं भुवि ॥८॥

पदच्छेद— यैः इयम् बुभुजे ब्रह्मन् दैत्येन्द्रैः अनिवर्तिभिः।
तेषाम् कालः अग्रसीत् लोकान् न यशः अधिगतम् भुवि ॥

शब्दार्थ—

यैः	२.	जिन	तेषाम्	७.	उनके
इयम्	५.	इस पृथ्वी का पहले	कालः	९.	काल
बुभुजे	६.	भोग किया है	अग्रसीत्	१०.	खा गया
ब्रह्मन्	१.	हे ब्रह्मन्।	लोकान्	८.	लोक-परलोक तो
दैत्येन्द्रैः	४.	दैत्यराजों ने	न यशः	१३.	यश को नहीं खा सका
अनिवर्तिभिः।	३	पराक्रमी	अधिगतम्	१२.	प्राप्त किये हुये
			भुवि ॥	११.	लेकिन पृथ्वी पर

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन्! जिन पराक्रमी दैत्यराजों ने इस पृथ्वी का पहले भोग किया है उनके लोक-परलोक को तो काल खा गया। लेकिन पृथ्वी पर प्राप्त किये हुये यश को नहीं खा सका ॥

नवमः श्लोकः

सुलभा युधि विप्रर्षे ह्यनिवृत्तास्तनुत्यजः ।
न तथा तीर्थ आयाते श्रद्धया ये धनत्यजः ॥९॥

पदच्छेद— सुलभाः युधि विप्रर्षे हि अनिवृत्ताः तनु त्यजः ।
न तथा तीर्थे आयाते श्रद्धया ये धन त्यजः ॥

शब्दार्थ—

सुलभाः	६. लोग बहुत से हैं	तथा	७. पर वैसे ही
युधि	२. युद्ध में	तीर्थे	८. सत्पात्र के
विप्रर्षे	१. हे गुरुदेव !	आयाते	९. प्राप्त होने पर
हि अनिवृत्ताः	३. पीठ न दिखाकर	श्रद्धया	१०. श्रद्धापूर्वक
तनु	४. शरीर (प्राण)	ये	११. जो
त्यजः	५. त्यागने वाले	धन	१२. धन
न	१४. लोग नहीं हैं	त्यजः ॥	१३. दान करें (ऐसे)

श्लोकार्थ—हे गुरुदेव ! युद्ध में पीठ न दिखाकर शरीर प्राण त्यागने वाले लोग बहुत से हैं । वैसे ही सत्पात्र के प्राप्त होने पर श्रद्धापूर्वक जो धन दान करे ऐसे लोग नहीं हैं ॥

दशमः श्लोकः

मनस्विनः कारुणिकस्य शोभनं यदर्थिकामोपनयेन दुर्गतिः ।
कुतः पुनर्ब्रह्मविदां भवादृशां ततो बटोरस्य ददामि वाञ्छितम् ॥१०॥

पदच्छेद— मनस्विनः कारुणिकस्य शोभनम् यत् अर्थिकाम उपनयेन दुर्गतिः ।
कुतः पुनः ब्रह्मविदाम् भवादृशाम् ततः बटोः अस्य ददामि वाञ्छितम् ॥

शब्दार्थ—

मनस्विनः	२. उदार और	पुनः	८. फिर
कारुणिकस्य	३. करुणाशील पुरुष	ब्रह्म	१०. ब्रह्म
शोभनम्	७. यह उनके लिये शोभा की बात है	विदाम्	११. वेत्ता पुरुषों को तो दान की
यत्	१. यदि	भवादृशाम्	९. आप जैसे
अर्थिकाम	४. याचक की कामना को	ततः	१३. इसलिये मैं
उपनयेन	५. पूर्ण करके	बटोः अस्य	१४. इस ब्रह्मचारी की
दुर्गतिः ।	६ दुःख भोगते हैं तो	ददामि	१६. पूर्ण करूँगा
कुतः	१२. बात ही क्या है	वाञ्छितम् ॥	१५. अभिलाषा अवश्य ही

श्लोकार्थ—यदि उदार और करुणाशील पुरुष याचक की कामना को पूर्ण करके दुःख भोगते हैं तो यह उनके लिये शोभा की बात है । फिर आप जैसे ब्रह्मवेत्ता पुरुषों को तो दान की बात ही क्या है । इसलिये मैं इस ब्रह्मचारी की अभिलाषा अवश्य ही पूर्ण करूँगा ॥

एकादशः श्लोकः

यजन्ति यज्ञक्रतुभिर्यमादृता भवन्त आम्नायविधानकोविदाः ।
स एव विष्णुर्वरदोऽस्तु वा परो दास्याम्यमुष्मै क्षितिमीप्सितां मुने ॥११॥

पदच्छेद—यजन्ति यज्ञक्रतुभिः यम् आदृताः भवन्तः आम्नायविधान कोविदाः ।
स: एव विष्णुः वरदः अस्तु वा परः दास्यामि अमुष्मै क्षितिम् ईप्सितम् मुने ॥

शब्दार्थ—

यजन्ति	९. आराधना करते हैं	विष्णुः	१२. विष्णु
यज्ञक्रतुभिः	७. यज्ञ यागादि के द्वारा	वरदः	११. वरदानी
यम्	८. जिन प्रभु की	अस्तु	१३. इस रूप में है
आदृता	६. बड़े आदर से	वा परः	१४. या अन्य कोई हो
भवन्तः	५. आप लोग	दास्यामि	१८. अवश्य दान करूँगा
आम्नाय	२. वेद	अमुष्मै	१५. मैं इनको
विधान	३. विधि को	क्षितिम्	१७. पृथ्वी
कोविदाः	४. जानने वाले	ईप्सितम्	१६. इच्छानुसार
सः एव	१०. वे ही	मुने ॥	१. हे महर्षे !

श्लोकार्थ—हे महर्षे ! वेदविधि को जानने वाले आप लोग बड़े आदर से यज्ञ-यागादि के द्वारा जिन प्रभु की आराधना करते हैं, वे ही वरदानी विष्णु इस रूप में हैं या अन्य कोई हो मैं इनको इच्छानुसार पृथ्वी अवश्य दान करूँगा ॥

द्वादशः श्लोकः

यद्यप्यसावधर्मेण मां बध्नीयादनागसम् ।
तथाप्येनं न हिंसिष्ये भीतं ब्रह्मतनुं रिपुम् ॥१२॥

पदच्छेद— यत् अपि असौ अधर्मेण माम् बध्नीयात् अनागसम् ।
तथापि एनम् न हिंसिष्ये भीतम् ब्रह्म तनुम् रिपुम् ॥

शब्दार्थ—

यत्	१. यदि	तथापि एनम्	७. तब भी मैं इनका
अपि असौ	४. भी ये	न हिंसिष्ये	८. अनिष्ट नहीं चाहूँगा
अधर्मेण	५. अधर्म से	भीतम्	१०. भयभीत होकर इन्होंने
माम्	२. मुझे	ब्रह्म	११. ब्राह्मण का
बध्नीयात्	६. बाँध लेंगे	तनुम्	१२. शरीर धारण किया है
अनागसम् ।	३. निरपराध को	रिपुम् ॥	९. क्योंकि मेरे शत्रु होने पर भी

श्लोकार्थ—यदि मुझ निरपराध को भी ये अधर्म से बाँध लेंगे, तब भी मैं इनका अनिष्ट नहीं चाहूँगा । क्योंकि मेरे शत्रु होने पर भी भयभीत होकर इन्होंने ब्राह्मण का शरीर धारण किया है ॥

त्रयोदशः श्लोकः

एष वा उत्तमश्लोको न जिहासति यद् यशः ।
हत्वा मैनां हरेद् युद्धे शयीत निहतो मया ॥१३॥

पदच्छेद— एषः वा उत्तमश्लोकः न जिहासति यद् यशः ।
हत्वा मा एनाम् हरेत् युद्धे शयीत निहतः मया ॥

शब्दार्थ—

एषः	३.	यदि ये	हत्वा मा	६.	मारकर मुझे
वा	१.	अथवा	एनाम्	१०.	पृथ्वी को
उत्तमश्लोकः	२.	पवित्र कीर्ति विष्णु हैं तो	हरेत्	११.	छीन सकते हैं (कोई और है तो)
न	६.	नहीं	युद्धे	८.	युद्ध में
जिहासति	७.	खोना चाहेंगे	शयीत	१४.	रणभूमि में सो जायेंगे
यद्	४.	अपना	निहतः	१३.	मारे जाने पर
यशः ।	५.	यश	मया ॥	१२.	मेरे द्वारा

श्लोकार्थ—अथवा यदि ये पवित्र कीर्ति विष्णु हैं तो अपना यश नहीं खोना चाहेंगे । युद्ध में मुझे मार कर पृथ्वी को छीन सकते हैं । कोई और है तो मेरे द्वारा मारे जाने पर रणभूमि में सो जायेंगे ॥

चतुर्दशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— **एवमश्रद्धितं शिष्यमनादेशकरं गुरुः ।**
शशाप दैवप्रहितः सत्यसन्धं मनस्विनम् ॥१४॥

पदच्छेद— एवम् अश्रद्धितम् शिष्यम् अनादेशकरम् गुरुः ।
शशाप दैव प्रहितः सत्यसन्धम् मनस्विनम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	शशाप	८.	शाप दे दिया
अश्रद्धितम्	२.	अश्रद्धालु तथा	दैव	६.	दैव की
शिष्यम्	४.	शिष्य की	प्रहितः	७.	प्रेरणा से
अनादेशकरम्	३.	आज्ञाका उल्लंघन करने वाले	सत्यसन्धम्	९.	वे सत्य प्रतिज्ञ और
गुरुः ।	५.	गुरु शुक्राचार्य ने	मनस्विनम् ॥	१०.	उदार होने से शापके पात्र नहीं थे ।

श्लोकार्थ—इस प्रकार अश्रद्धालु तथा आज्ञा का उल्लंघन करने वाले शिष्य को गुरु शुक्राचार्य ने दैव की प्रेरणा से शाप दे दिया । वे सत्यप्रतिज्ञ और उदार होने से शाप के पात्र नहीं थे ॥

पञ्चदशः श्लोकः

दृढं पण्डितमान्यज्ञः स्तब्धोऽस्यस्मदुपेक्षया ।
मच्छासनातिगो यस्त्वमचिराद् भ्रश्यसे श्रियः ॥१५॥

पदच्छेद— दृढम् पण्डितमानी अज्ञः स्तब्धः असि अस्मत् उपेक्षया ।
मत् शासन अतिगः यः त्वम् अचिरात् भ्रश्यसे श्रियः ॥

शब्दार्थ—

दृढम्	१.	तू बहुत	मत्	९.	मेरी
पण्डितमानी	२.	अपने को विद्वान् मानने वाला	शासन	१०.	आज्ञा का
अज्ञः	३.	अज्ञानी है	अतिगः	११.	उल्लंघन कर रहा है तो
स्तब्धः	६.	तू गर्व	यः त्वम्	८.	तू जो
असि	७.	कर रहा है	अचिरात्	१२.	शीघ्र ही
अस्मत्	४.	मेरी	भ्रश्यसे	१४.	खो बैठेगा
उपेक्षा ।	५.	उपेक्षा करके	श्रियः ॥	१३.	अपनी लक्ष्मी

श्लोकार्थ— तू बहुत अपने को विद्वान् मानने वाला अज्ञानी है। मेरी उपेक्षा करके तू गर्व कर रहा है। तू जो मेरी आज्ञा का उल्लंघन कर रहा है तो शीघ्र ही अपनी लक्ष्मी खो बैठेगा ॥

षोडशः श्लोकः

एवं शप्तः स्वगुरुणा सत्यान्न चलितो महान् ।
वामनाय ददावेनामर्चित्वोदकपूर्वकम् ॥१६॥

पदच्छेद— एवम् शप्तः स्व गुरुणा सत्यात् न चलितः महान् ।
वामनाय ददौ एनाम् अर्चित्वा उदक पूर्वकम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	४.	इस प्रकार	महान् ।	१.	वे महान् राजा बलि
शप्तः	५.	शाप पाकर भी	वामनाय	९.	वामन भगवान् की
स्व	२.	अपने	ददौ	१४.	दान कर दिया
गुरुणा	३.	गुरु के द्वारा	एनाम्	१३.	पृथ्वी का
सत्यात्	६.	सत्य से	अर्चित्वा	१०.	पूजा करके
न	८.	नहीं हुये	उदक	११.	हाथ में जल
चलितः	७.	विचलित	पूर्वकम् ॥	१२.	लेकर

श्लोकार्थ— वे महान् राजा बलि अपने गुरु के द्वारा इस प्रकार शाप पाकर भी सत्य से विचलित नहीं हुये। वामन भगवान् की पूजा करके हाथ में जल लेकर पृथ्वी का दान कर दिया ॥

सप्तदशः श्लोकः

विन्ध्यावलिस्तदाऽऽगत्य पत्नी जालकमालिनी ।
आनिन्ये कलशं हैममवनेजन्यमपां भृतम् ॥१७॥

पदच्छेद— विंध्यावलिः तदा आगत्य पत्नी जालक मालिनी ।
आनिन्ये कलशम् हैमम् अवने जन्यम् अपाम् भृतम् ॥

शब्दार्थ—

विंध्यावलिः	५.	विन्ध्यावलि ने	आनिन्ये	१२.	लाकर दिया
तदा	१.	उसी समय	कलशम्	११.	कलश
आगत्य	६.	आकर	हैमम्	१०.	स्वर्ण
पत्नी	४.	बलि की पत्नी	अवनेजन्यम्	७.	भगवान् के चरण पखारने के लिये
जालक	२.	मोतियों के गहनों	अपाम्	८.	जल से
मालिनी ।	३.	सुसज्जित	भृतम् ॥	९.	भरा हुआ

श्लोकार्थ—उसी समय मोतियों के गहनों से सुसज्जित बलि की पत्नी विंध्यावलि ने आकर भगवान् के चरण पखारने के लिये जल से भरा हुआ स्वर्णकलश लाकर दिया ॥

अष्टादशः श्लोकः

यजमानः स्वयं तस्य श्रीमत् पादयुगं मुदा ।
अवनिज्यावहन्मूर्ध्नि तदपो विश्वपावनीः ॥१८॥

शब्दार्थ— यजमानः स्वयं तस्य श्रीमत् पाद युगम् मुदा ।
अवनिज्य आवहन् मूर्ध्नि तत् अपः विश्वपावनीः ॥

शब्दार्थ—

यजमानः	१.	यजमान बलि ने	अवनिज्य	८.	धोया
स्वयम्	७.	स्वयम्	आवहन्	१४.	चढ़ाया
तस्य	३.	उनके	मूर्ध्नि	१३.	अपने सिर पर
श्रीमत्	४.	सुन्दर-सुन्दर	तत्	९.	फिर वह
पाद	६.	चरणों को	अपः	१२.	जल
युगम्	५.	युगल	विश्व	१०	विश्व
मुदा ।	२.	बड़े प्रेम से	पावनीः ॥	११.	पावन

श्लोकार्थ— यजमान बलि ने बड़े प्रेम से उनके सुन्दर-सुन्दर युगल चरणों को धोया । फिर वह विश्व पावन जल अपने सिर पर चढ़ाया ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तदासुरेन्द्रं दिवि देवतागणा गन्धर्वविद्याधरसिद्धचारणाः ।
तत्कर्म सर्वेऽपि गृणन्त आर्जवं प्रसूनवर्षैर्ववृषुर्मुदान्विताः ॥१९॥

पदच्छेद— तदा असुरेन्द्रम् दिवि देवता गणाः गन्धर्व विद्याधर सिद्धचारणाः ।
तत् कर्म सर्वे अपि गृणन्तः आर्जवम् प्रसूनवर्षैः ववृषुः मुदान्विताः ॥

शब्दार्थ—

तदा	१.	उस समय	तत्	१२.	इस अलौकिक
असुरेन्द्रम्	११.	राजा बलि के	कर्म	१३.	कार्य की व
दिवि	२.	आकाश में स्थित	सर्वे	९.	सब
देवता	३.	देवता	अपि	१०.	ही
गणाः	४.	गण	गृणन्तः	१५.	प्रशंसा करते हुये
गन्धर्व	५.	गन्धर्व	आर्जवम्	१४.	सरलता की
विद्याधर	६.	विद्याधर	प्रसूनवर्षैः	१७.	दिव्य पुष्पों की
सिद्ध	७.	सिद्ध	ववृषुः	१८.	वर्षा करने लगे
चारणाः ।	८.	चारण	मुदान्विताः ॥	१६.	प्रसन्नता पूर्वक

श्लोकार्थ— उस समय आकाश में स्थित देवता गण, गन्धर्व, विद्याधर, सिद्ध, चारण सब ही राजा बलि के इस अलौकिक कार्य की व सरलता की प्रशंसा करते हुये प्रसन्नता पूर्वक दिव्य पुष्पों की वर्षा करने लगे ॥

विंशः श्लोकः

नेदुर्मुहुर्दुन्दुभयः सहस्रशो गन्धर्वकिंपुरुषकिन्नरा जगुः ।
मनस्विनानेन कृतं सुदुष्करं विद्वानदाद् यद् रिपवे जगत्त्रयम् ॥२०॥

पदच्छेद— नेदुः मुहुः दुन्दुभयः सहस्रशः गन्धर्व किम्पुरुष किन्नराः जगुः ।
मनस्विना अनेन कृतम् सुदुष्करम् विद्वान् अदात् यत् रिपवे जगत् त्रयम् ॥

शब्दार्थ—

नेदुः	४.	बजने लगीं	मनस्विना	१०.	उदार शिरोमणि
मुहुः	३.	बार-बार	अनेन	९.	इन
दुन्दुभयः	२.	दुन्दुभियां	कृतम्	१३.	काम किया है
सहस्रशः	१.	एक साथ हजारों	सुदुष्करम्	१२.	बड़ा कठिन
गन्धर्व	५.	गन्धर्व	विद्वान्	११.	विद्वान् बलि ने
किम्पुरुष	६.	किम्पुरुष और	अदात्	१६.	दान कर दिया
किन्नराः	७.	किन्नर	यत् रिपवे	१४.	जो अपने शत्रु को
जगुः ।	८.	गान करने लगे	जगत् त्रयम् ॥	१५.	तीनों लोकों का

श्लोकार्थ—एक साथ हजारों दुन्दुभियाँ बार-बार बजने लगीं । गन्धर्व, किम्पुरुष और किन्नर गान करने लगे कि इन उदार शिरोमणि विद्वान् बलि ने बड़ा कठिन काम किया है, जो अपने शत्रु को तीनों लोकों का दान कर दिया ।

एकविंशः श्लोकः

तद् वामनं रूपमवर्धताद्भुतं हरेरनन्तस्य गुणत्रयात्मकम् ।
भूः खं दिशो द्यौर्विवराः पयोधयस्तिर्यङ्नृदेवा ऋषयो यदासत ॥२१॥

पदच्छेद— तद् वामनम् रूपम् अवर्धत अद्भुतम् हरेः अनन्तस्य गुणत्रय आत्मकम् ।
भूः खम् दिशः द्यौः विवराः पयोधयः तिर्यङ् नृदेवाः ऋषयः यत् आसत ॥

शब्दार्थ—

तत्	६.	वह	भूः खम्	१०.	पृथ्वी-आकाश
वामनंरूपम्	७.	वामन रूप	दिशः द्यौः	११.	दिशाएँ-स्वर्ग
अवर्धत	८.	बढ़ने	विवराः पयोधयः	१२.	पाताल-समुद्र
अद्भुतम्	५.	अद्भुत	तिर्यङ्	१३.	पशु-पक्षी
हरेः	२.	भगवान् का	नृदेवाः	१४.	मनुष्य-देवता और
अनन्तस्य	१.	अनन्त	ऋषयः	१५.	ऋषि सब के सब
गुणत्रय	३.	त्रिगुण	यत्	९.	उसमें
आत्मकम् ।	४.	स्वरूप	आसत ॥	१६.	समा गये

श्लोकार्थ—अनन्त भगवान् का त्रिगुण स्वरूप अद्भुत वह वामन रूप बढ़ने लगा । उसमें पृथ्वी-आकाश-दिशाएँ, स्वर्ग, पाताल, समुद्र, पशु-पक्षी-मनुष्य-देवता और ऋषि सब के सब समा गये ॥

द्वाविंशः श्लोकः

काये बलिस्तस्य महाविभूतेः सहर्त्विगाचार्यसदस्य एतत् ।
ददर्श विश्वं त्रिगुणं गुणात्मके भूतेन्द्रियार्थाशयजीवयुक्तम् ॥२२॥

पदच्छेद— काये बलिः तस्य महा विभूतेः सह ऋत्विक् आचार्य सदस्यः एतत् ।
ददर्श विश्वम् त्रिगुणम् गुणात्मके भूतेन्द्रिय अर्थ आशय जीवयुक्तम् ॥

शब्दार्थ—

काये	८.	शरीर में	ददर्श	१६.	देखा
बलिः	४.	बलि ने	विश्वम्	१५.	जगत्
तस्य	६.	भगवान् के	त्रिगुणम्	७.	त्रिगुणात्मक
महाविभूतेः	५.	महान् ऐश्वर्यों के स्वामी	गुणात्मके	१४.	त्रिगुणात्मक
सह	३.	साथ	भूतेन्द्रिय	९.	पञ्चभूत-इन्द्रिय
ऋत्विक्	१.	ऋषियों	अर्थ	१०.	उनके विषय
आचार्य सदस्य	२.	आचार्यों और सदस्यों के	आशय	११.	अन्तः करण और
एतत् ।	१३.	यह	जीवयुक्तम् ॥	१२.	जीवों के साथ

श्लोकार्थ—ऋषियों, आचार्यों और सदस्यों के साथ बलि ने महान् ऐश्वर्यों के स्वामी भगवान् के त्रिगुणात्मक शरीर में पञ्चभूत इन्द्रिय, उनके विषय, अन्तः करण और जीवों के साथ यह त्रिगुणात्मक जगत् देखा ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

रसामचष्टाङ्घ्रितलेऽथ पादयोर्महीं महीध्रान्पुरुषस्य जङ्घयोः ।
पतत्त्रिणो जानुनि विश्वमूर्तेरूर्वोर्गणं मारुतमिन्द्रसेनः ॥२३॥

पदच्छेद— रसाम् अचष्ट अङ्घ्रितले अथ पादयोः महीम् महीध्रान् पुरुषस्य जङ्घयोः ।
पतत्त्रिणः जानुनि विश्व मूर्तेः ऊर्वोः गणम् मारुतम् इन्द्रसेनः ॥

शब्दार्थ—

रसाम्	७.	रसातल	पतत्त्रिणः	१२.	पक्षी और
अचष्ट	१६.	देखा	जानुनि	११.	घुटनों में
अङ्घ्रितले	६.	चरणतल में	विश्व	३.	विश्व
अथ	१.	तदनन्तर	मूर्तेः	४.	रूप
पादयोः महीम्	८.	चरणों में पृथ्वी	ऊर्वोः	१३.	जांघों में
महीध्रान्	१०.	पर्वत	गणम्	१५.	गणोंको
पुरुषस्य	५.	भगवान् के	मारुतम्	१४.	मरुत्
जङ्घयोः ।	९.	पिंडलियों में	इन्द्रसेनः ॥	२.	राजा बलि ने

श्लोकार्थ—तदनन्तर राजा बलि ने विश्वरूप भगवान् के चरणतल में रसातल, चरणों में पृथ्वी, पिंडलियों में पर्वत, घुटनों में पक्षी और जांघों में मरुत्गणों को देखा ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

संध्यां विभोर्वाससि गुह्य ऐक्षत् प्रजापतीञ्जघने आत्ममुख्यान् ।
नाभ्यां नभः कुक्षिषु सप्तसिन्धूनुरुक्रमस्योरसि चर्क्षमालाम् ॥२४॥

पदच्छेद— संध्याम् विभोः वाससि गुह्ये ऐक्षत् प्रजापतीन् जघने आत्ममुख्यान् ।
नाभ्याम् नभः कुक्षिषु सप्तसिन्धून् उरुक्रमस्य उरसि च ऋक्ष मालाम् ॥

शब्दार्थ—

संध्याम्	४.	सन्ध्या	नाभ्याम्	९.	नाभि में
विभोः	१.	भगवान् के	नभः	१०.	आकाश
वाससि	३.	वस्त्रों में	कुक्षिषु	११.	कोख में
गुह्ये	५.	गुह्य स्थानों में	सप्तसिन्धून्	१२.	सातों समुद्र
ऐक्षत्	१६.	देखे	उरुक्रमस्य	२.	विराट् रूप में
प्रजापतीन्	६.	प्रजापतिगण	उरसि च	१३.	वक्षः स्थल में और
जघने	७.	जघन स्थान में	ऋक्ष	१४.	नक्षत्र
आत्ममुख्यान् ।	८.	अपने सहित असुरगण	मालाम् ॥	१५.	समूह

श्लोकार्थ—भगवान् के विराट् रूप में वस्त्रों में सन्ध्या, गुह्य स्थानों में प्रजापति गण, जघन स्थान में अपने सहित असुरगण, नाभि में आकाश, कोख में सातों समुद्र और वक्षः स्थल में नक्षत्र समूह देखे ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

हृद्यङ्ग धर्मं स्तनयोर्मुरारेर्ऋतं च सत्यं च मनस्यथेन्दुम् ।
श्रियं च वक्षस्यरविन्दहस्तां कण्ठे च सामानि समस्तरेफान् ॥२५॥

पदच्छेद— हृदि अङ्ग धर्मम् स्तनयोः मुरारेः ऋतम् च सत्यम् च मनसि अथ इन्दुम् ।
श्रियम् च वक्षसि अरविन्द हस्ताम् कण्ठे च सामानि समस्त रेफान् ॥

शब्दार्थ—

हृदि	३.	हृदय में	श्रियम्	१२.	लक्ष्मी जी
अङ्ग	२.	शरीर में	च वक्षसि	१८.	और वक्षः स्थल पर
धर्मम्	४.	धर्म	अरविन्द	११.	कमल लिये हुये
स्तनयोः	५.	स्तनों में	हस्ताम्	१०.	हाथ में
मुरारेः	१.	भगवान् के	कण्ठे च	१३.	कण्ठ में और
ऋतम् च	६.	ऋत और	सामानि	१४.	सामवेद और
सत्यम् च	७.	सत्यवचन तथा	समस्त	१५.	सम्पूर्ण
मनसि अथइन्दुम् ।	८.	मन में चन्द्रमा	रेफान् ॥	१६.	शब्द समूह दीखे

श्लोकार्थ—भगवान् के शरीर में हृदय में धर्म, स्तनों में ऋत और सत्य वचन तथा मन में चन्द्रमा और वक्षः स्थल पर हाथ-में कमल लिये हुये लक्ष्मी जी और कण्ठ में सामवेद और सम्पूर्ण शब्द समूह दीखे ॥

षड्विंशः श्लोकः

इन्द्रप्रधानानमरान्भुजेषु तत्कर्णयोः ककुभो द्यौश्च मूर्ध्नि ।
केशेषु मेघाञ्छ्वसनं नासिकायामक्ष्णोश्च सूर्यं वदने च वह्निम् ॥२६॥

पदच्छेद— इन्द्र प्रधानान् अमरान् भुजेषु तत्कर्णयोः ककुभः द्यौः च मूर्ध्नि ।
केशेषु मेघान् श्वसनम् नासिकायाम् अक्ष्णोः च सूर्यम् वदने च वह्निम् ॥

शब्दार्थ—

इन्द्र	२.	इन्द्र आदि	केशेषु	९.	केशों में
प्रधानान्	३.	प्रधान	मेघान्	१०.	मेघमाला
अमरान्	४.	देवगण	श्वसनम्	१२.	वायु
भुजेषु तत्	१.	उनकी भुजाओं में	नासिकायाम्	११.	नासिका में
कर्णयोः	५.	कानों में	अक्ष्णोः च	१३.	नेत्रों में और
ककुभः	६.	दिशाएँ	सूर्यम्	१४.	सूर्य
द्यौः	८.	स्वर्ग	वदने च	१५.	मुख में और
च मूर्ध्नि ।	७.	और मस्तक में	वह्निम् ॥	१६.	अग्नि दिखाई पड़े

श्लोकार्थ—उनकी भुजाओं में इन्द्र आदि प्रधान देवगण, कानों में दिशायें और मस्तक में स्वर्ग, केशों में मेघमाला, नासिका में वायु, नेत्रों में सूर्य और मुख में अग्नि दिखाई पड़े ॥

सप्तविंशः श्लोकः

वाण्यां च छन्दांसि रसे जलेशं भ्रुवोर्निषेधं च विधिं च पक्ष्मसु ।
अहश्च रात्रिं च परस्य पुंसो मन्युं ललाटेऽधर एव लोभम् ॥२७॥

पदच्छेद— वाण्याम् च छन्दांसि रसे जलेशम् भ्रुवोः निषेधम् च विधिम् च पक्ष्मसु ।
अहः च रात्रिम् च परस्य पुंसः मन्युम् ललाटे अधरे एव लोभम् ॥

शब्दार्थ--

वाण्याम्	३. वाणी में	अहः च	११. दिन और
च छन्दांसि	४. और वेद	रात्रिम् च	१२. रात और
रसे	५. रसना में	परस्य	१. उन परम
जलेशम्	६. वरुण	पुंसः	२. पुरुष भगवान् की
भ्रुवोः	७. भौंहों में	मन्युम्	१४. क्रोध और
निषेधम्	९. निषेध	ललाटे	१३. ललाट में
च विधिम्	८. और विधि	अधर एव	१५. नीचे के ओठ में ही
च पक्ष्मसु ।	१०. और पलकों में	लोभम् ॥	१६. लोभ दिखाई दिया

श्लोकार्थ—उन परम पुरुष भगवान् की वाणी में वेद और रसना में वरुण, भौंहों में विधि और निषेध और पलकों में दिन और रात, ललाट में क्रोध और नीचे के ओठ में ही लोभ दिखाई दिया ।

अष्टाविंशः श्लोकः

स्पर्शे च कामं नृप रेतसोऽम्भः पृष्ठे त्वधर्मं क्रमणेषु यज्ञम् ।
छायासु मृत्युं हसिते च मायां तनूरुहेष्वोषधिजातयश्च ॥२८॥

पदच्छेद— स्पर्शे च कामम् नृप रेतसः अम्भः पृष्ठे तु अधर्मम् क्रमणेषु यज्ञम् ।
छायासु मृत्युम् हसिते च मायाम् तनूरुहेषु ओषधि जातयः च ॥

शब्दार्थ--

स्पर्शे	२. उनके स्पर्श में	छायासु	९. छाया में
च कामम्	३. काम और	मृत्युम्	१०. मृत्यु
नृप	१. हे परीक्षित् !	हसिते च	११. हंसी में
रेतसः	४. वीर्य में	मायाम्	१२. माया
अम्भः	५. जल	तनूरुहेषु	१३. शरीर के रोमों में
पृष्ठे तु अधर्मम्	६. पीठ में अधर्म	ओषधि	१५. औषधियों का
क्रमणेषु	७. पदविन्यास में	जातयः	१६. समूह देखा
यज्ञम् ।	८. यज्ञ	च ॥	१४. और

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उनके स्पर्श में काम और वीर्य में जल, पीठ में अधर्म, पदविन्यास में यज्ञ, छाया में मृत्यु, हंसी में माया और शरीर के रोमों में ओषधियों का समूह देखा ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

नदीश्च नाडीषु शिला नखेषु बुद्धावजं देवगणानृषींश्च ।
प्राणेषु गात्रे स्थिरजङ्गमानि सर्वाणि भूतानि ददर्श वीरः ॥२९॥

पदच्छेद— नदीः च नाडीषु शिला नखेषु बुद्धौ अजम् देव गणान् ऋषीन् च ।
प्राणेषु गात्रे स्थिर जङ्गमानि सर्वाणि भूतानि ददर्श वीरः ॥

शब्दार्थ—

नदीः च	३.	नदियाँ और	प्राणेषु	१०.	भगवान् की इन्द्रियों और
नाडीषु	२.	नाडियों में	गात्रे	११.	शरीर में
शिला	५.	शिलायें	स्थिर	१४.	अचर
नखेषु	४.	नखों में	जङ्गमानि	१३.	चर
बुद्धौ अजम्	६.	बुद्धि में ब्रह्मा	सर्वाणि	१२.	सभी
देव	७.	देवता	भूतानि	१५.	प्राणियों का
गणान्	९.	गण देखे	ददर्श	१६.	दर्शन किया
ऋषीन् च ।	८.	ऋषि और	वीरः ॥	१.	वीर शिरोमणि बलि ने उनकी

श्लोकार्थ—वीर शिरोमणि बलि ने उनकी नाड़ियों में नदियाँ और नखों में शिलायें, बुद्धि में ब्रह्मा, देवता और ऋषि गण देखे । भगवान् की इन्द्रियों और शरीर में सभी चर-अचर प्राणियों का दर्शन किया ॥

त्रिंशः श्लोकः

सर्वात्मनीदं भुवनं निरीक्ष्य सर्वेऽसुराः कश्मलमापुरङ्ग ।
सुदर्शनं चक्रमसह्यतेजो धनुश्च शार्ङ्गं स्तनयित्नुघोषम् ॥३०॥

पदच्छेद— सर्वात्मनि इदम् भुवनम् निरीक्ष्य सर्वे असुराः कश्मलम् आपुः अङ्ग ।
सुदर्शनम् चक्रम् असह्य तेजः धनुः च शार्ङ्गम् स्तनयित्नु घोषम् ॥

शब्दार्थ—

सर्वात्मनि	२.	सर्वात्मा भगवान् में	सुदर्शनम्	११.	सुदर्शन
इदम्	३.	यह	चक्रम्	१२.	चक्र
भुवनम्	४.	सम्पूर्ण जगत्	असह्य	१८.	असह्य
निरीक्ष्य	५.	देख कर	तेजः	१०.	तेजवाला
सर्वे	६.	सब देवता	धनुः च	१६.	धनुष वहाँ पर उपस्थित हो गये
असुराः	७.	दैत्य	शार्ङ्गम्	१५.	शार्ङ्ग
कश्मलम् आपुः	८.	भयभीत हो गये सभी	स्तनयित्नु	१३.	गरजते हुये मेघ के समान
अङ्ग ।	१.	हे परीक्षित् !	घोषम् ॥	१४.	टङ्कार करने वाला

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! सर्वात्मा भगवान् में यह सम्पूर्ण जगत् देख कर सब देवता, दैत्य भयभीत हो गये । सभी असह्य तेजवाला सुदर्शन चक्र, गरजते हुये मेघ के समान टङ्कार करने वाला शार्ङ्गधनुष वहाँ पर उपस्थित हो गये ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

पर्जन्यघोषो जलजः पाञ्चजन्यः कौमोदकी विष्णुगदा तरस्विनी ।
विद्याधरोऽसिः शतचन्द्रयुक्तस्तूणोत्तमावक्षयसायकौ च ॥३१॥

पदच्छेद— पर्जन्य घोषः जलजः पाञ्चजन्यः कौमोदकी विष्णु गदा तरस्विनी ।
विद्याधरः असिः शतचन्द्र युक्तः तूण उत्तमौ अक्षय सायकौ च ॥

शब्दार्थः—

पर्जन्य	१.	बादल की तरह	विद्याधरः	११.	विद्याधर नाम की
घोषः	२.	गम्भीर शब्द करने वाला	असिः	१२.	तलवार
जलजः	४.	शङ्ख	शतचन्द्र	९.	सौचन्द्राकार चिह्नों से
पाञ्चजन्यः	३.	पाञ्चजन्य	युक्तः	१०.	युक्त ढाल और
कौमोदकी	७.	कौमोदकी	तूण	१६.	तरकस दिखाई दिये
विष्णु	५.	विष्णु भगवान् की	उत्तमौ	१५.	दो श्रेष्ठ
गदा	८.	गदा	अक्षयसायकौ	१४.	अक्षय वाणों से भरे
तरस्विनी ।	६.	अत्यन्त वेगवती	च ॥	१३.	और

श्लोकार्थ—तथा बादल की तरह गम्भीर शब्द करने वाला पाञ्चजन्य शङ्ख, विष्णु भगवान् की अत्यन्त वेगशाली कौमोदकी गदा, सौ चन्द्राकार चिह्नों से युक्त ढाल, विद्याधर नाम की तलवार और अक्षय वाणों से भरे दो श्रेष्ठ तरकस दिखाई दिये ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

सुनन्दमुख्या उपतस्थुरीशं पार्षदमुख्याः सहलोकपालाः ।
स्फुरत्किरीटाङ्गदमीनकुण्डलश्रीवत्सरत्नोत्तममेखलाम्बरैः ॥३२॥

पदच्छेद— सुनन्द मुख्याः उपतस्थुः ईशम् पार्षद मुख्याः सह लोक पालाः ।
स्फुरत् किरीट अङ्गद मीनकुण्डल श्रीवत्सरत्न उत्तम मेखला अम्बरैः ॥

शब्दार्थः—

सुनन्द	४.	सुनन्द	स्फुरत्	१७.	शोभायमान हो रहा था
मुख्याः	५.	आदि	किरीट	९.	मस्तक पर मुकुट
उपतस्थुः	८.	उपस्थित हो गये (उन भगवान् के)	अङ्गद	१०.	बाहों में बाजूबन्द
ईशम्	३.	भगवान् के	मीन	११.	कानों में मकराकृत
पार्षद	७.	पार्षद गण	कुण्डल	१२.	कुण्डल
मुख्याः	६.	मुख्य	श्रीवत्स	१३.	वक्षः स्थल पर श्रीवत्स का चिह्न
सह	२.	सहित	रत्न उत्तम	१४.	गले में कौस्तुभमणि
लोकपालाः ।	१.	लोकपालों के	मेखला	१५.	कमर में मेखला
			अम्बरैः ॥	१६.	कंधे पर पीताम्बर

श्लोकार्थ—लोक पालों के सहित भगवान् के सुनन्द आदि मुख्य पार्षदगण उपस्थित हो गये । उन भगवान् के मस्तक पर मुकुट, बाँहों में बाजू बन्द, कानों में मकराकृत कुण्डल, वक्षः स्थल पर श्रीवत्स का चिह्नग, ले में कौस्तुभमणि, कमर में मेखला, कंधे पर पीताम्बर शोभायमान था ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

मधुव्रतस्रग्वनमालया वृतो रराज राजन्भगवानुरुक्रमः ।
क्षितिं पदैकेन बलेर्विचक्रमे नभः शरीरेण दिशश्च बाहुभिः ॥३३॥

पदच्छेद— मधुव्रतः स्रक्वनमालया वृतः रराज राजन् भगवान् उरुक्रमः ।
क्षितिम् पद एकेन बलेः विचक्रमे नभः शरीरेण दिशः च बाहुभिः ॥

शब्दार्थ—

मधुव्रत	४.	मधु के लोभी भौंरे से	क्षितिम्	१०.	समस्त पृथ्वी को
स्रक्	५.	घिरी हुई माला और	पद एकेन	११.	एक पग से
वनमालया	६.	वन माला को	बलेः	९.	उन्होंने बलि की
वृतः	७	धारण करके	विचक्रमे	१२.	नाप लिया
रराज	८	सुशोभित हो रहे थे	नभः	१३.	आकाश को
राजन्	१.	हे परीक्षित् !	शरीरेण	१४.	शरीर से
भगवान्	३.	भगवान्	दिशः च	१५.	और दिशाओं को
उरुक्रमः ।	२	विराट्	बाहुभिः ॥	१६.	भुजाओं से नाप लिया

श्लोकार्थ— हे परीक्षित् ! विराट् भगवान् मधु के लोभी भौंरों से घिरी हुई माला और वनमाला धारण करके सुशोभित रहे थे । उन्होंने बलि की समस्त पृथ्वी को एक पग से नाप लिया । आकाश को शरीर से और दिशाओं को भुजाओं से नाप लिया ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

पदं द्वितीयं क्रमतस्त्रिविष्टपं न वै तृतीयाय तदीयमण्वपि ।
उरुक्रमस्याङ्घ्रिरुपर्युपर्यथो महर्जनाभ्यां तपसः परं गतः ॥३४॥

पदच्छेद— पदम् द्वितीयम् क्रमतः त्रिविष्टपम् न वै तृतीयाय तदीयम् अण्वपि ।
उरुक्रमस्य अङ्घ्रिः उपरि उपरि अथो महर्जनाभ्याम् तपसा परम् गतः ॥

शब्दार्थ—

पदम्	२.	पग से उन्होंने	उरुक्रमस्य	१०.	विराट् भगवान् का वह
द्वितीयम्	१.	दूसरे	अङ्घ्रि	११.	दूसरा पैर
क्रमतः	४.	नाप लिया	उपरि उपरि	१२.	ऊपर-ऊपर जाता हुआ
त्रिविष्टपम्	३.	स्वर्ग को	अथो	९.	तदनन्तर
वै	८.	न बची	महर्जनाभ्याम्	१३.	महर्लोक, जनलोक और
तृतीयाय	५.	तीसरे पग के लिये	तपसा	१४.	तपलोक से भी
तदीयम्	६.	उस बलि की	परम्	१५.	ऊपर
अण्वपि ।	७.	तनिक भी वस्तु	गतः ॥	१६.	सत्यलोक में पहुँच गया

श्लोकार्थ— दूसरे पग से उन्होंने स्वर्ग को नाप लिया । तीसरे पग के लिये उस बलि की तनिक भी वस्तु न बची । तदनन्तर विराट् भगवान् का वह दूसरा पैर ऊपर-ऊपर जाता हुआ महर्लोक, जनलोक और तपलोक से भी ऊपर सत्यलोक में पहुँच गया ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमे स्कन्धे विश्वरूपदर्शनं नाम विंशः अध्यायः ॥२०॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

एकविंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

सत्यं समीक्ष्याब्जभवो नखेन्दुभिर्हतस्वधामद्युतिरावृतोऽभ्यगात् ।
मरीचिमिश्रा ऋषयो बृहद्व्रताः सनन्दनाद्या नरदेव योगिनः ॥१॥

पदच्छेद— सत्यम् समीक्ष्य अब्जभवः नखेन्दुभिः हतस्वधामद्युतिः आवृतः अभ्यगात् ।
मरीचि मिश्राः ऋषयः बृहद्व्रताः सनन्दन आद्याः नरदेव योगिनः ॥

शब्दार्थ—

सत्यम्	२.	भगवान् का चरणकमल जब	मरीचि	११.	मरीचि
समीक्ष्य	३.	सत्य लोक पहुँच गया तब	मिश्राः	१२.	आदि
अब्जभवः	४.	ब्रह्माजी को	ऋषयः	१३.	ऋषियों
नखेन्दुभिः	५.	उनके नखचन्द्र की	बृहद्व्रताः	१७.	नैष्ठिक ब्रह्मचारियों के साथ उन्होंने उनके चरणों की वन्दना की
हत	८.	फीकी लगने लगी वे	सनन्दन	१४.	सनन्दन
स्वधाम	७.	अपने लोक की आभा	आद्याः	१५.	आदि
द्युतिः	६.	छटा	नरदेव	१.	हे परीक्षित् !
आवृत	९.	स्वयं उसमें	योगिनः ॥	१६.	बड़े-बड़े योगियों और
अभ्यगात् ।	१०.	डूब से गये			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! भगवान् का चरणकमल जब सत्यलोक पहुँच गया तब ब्रह्माजी को उनके नखचन्द्र की छटा से अपने लोक की आभा फीकी लगने लगी । वे स्वयं उसमें डूब से गये । मरीचि आदि ऋषियों, सनन्दन आदि बड़े-बड़े योगियों और नैष्ठिक ब्रह्मचारियों के साथ उन्होंने उनके चरण की वन्दना की ॥

द्वितीयः श्लोकः

वेदोपवेदा नियमान्विता यमास्तर्केतिहासाङ्गपुराणसंहिताः ।
ये चापरे योगसमीरदीपितज्ञानाग्निना रन्धितकर्मकल्मषाः ।
ववन्दिरे यत्स्मरणानुभावतः स्वायम्भुवं धाम गता अकर्मकम् ॥२॥

पदच्छेद— **वेद उपवेदा नियम अन्विताः यमाः तर्क इतिहास अङ्ग पुराण संहिताः ।**
ये च अपरे योग समीर दीपित ज्ञानाग्निना रन्धित कर्म कल्मषाः ।
ववन्दिरे यत् स्मरण अनुभावतः स्वायम्भुवम् धाम गताः अकर्मकम् ॥

शब्दार्थ—

वेद	१.	वेद	**समीर**	१५.	वायु से
उपवेदाः	२.	उपवेद	**दीपित**	१७.	प्रज्वलित करके
नियम	३.	नियम	**ज्ञानाग्निना**	१६.	ज्ञानाग्नि को
अन्विताः	११.	युक्त होकर	**रन्धित**	२०.	भस्म कर चुके हैं,
यमाः	४.	यम	**कर्म**	१८.	कर्म
तर्क	५.	तर्क	**कल्मषाः ।**	१९.	मल को
इतिहास	६.	इतिहास	**ववन्दिरे**	२१.	सबने श्रीचरण की वन्दना की
अङ्ग	७.	वेदाङ्ग	**यत्**	२२.	इसी चरण कमल के
पुराण	८.	पुराण	**स्मरण**	२३.	स्मरण की
संहिताः ।	१०.	संहिताओं से	**अनुभावतः**	२४.	महिमा से ये सब
ये	१२.	जो	**स्वायम्भुवम्**	२६.	ब्रह्मा जी के
च	९.	और	**धाम**	२७.	धाम में
अपरे	१३.	अन्य लोग	**गताः**	२८.	पहुँचे हैं
योग	१४.	योग रूप	**अकर्मकम् ॥**	२५.	कर्म के द्वारा अप्राप्त

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! वेद, उपवेद, नियम, यम, तर्क, इतिहास, वेदाङ्ग, पुराण और संहिताओं से युक्त होकर जो अन्य लोग योग रूप वायु से ज्ञानाग्नि को प्रज्वलित करके कर्म मल को भस्म कर चुके हैं, उन सबने श्रीचरण की वन्दना की है। इसी चरण कमल के स्मरण की महिमा से सब कर्म के द्वारा अप्राप्य ब्रह्मा जी के धाम में पहुँचे हैं।

तृतीय श्लोकः

अथाङ्घ्रये प्रोन्नमिताय विष्णोरुपाहरत् पद्मभवोऽर्हणोदकम् ।
समर्च्य भक्त्याभ्यगृणाच्छुचिश्रवा यन्नाभिपङ्केरुहसंभवः स्वयम् ॥३॥

पदच्छेद— अथ अङ्घ्रये प्रोन्नमिताय विष्णोः उपाहरत् पद्मभवः अर्हण उदकम् ।
समर्च्य भक्त्या अभ्यगृणात् शुचिश्रवायत् नाभिपङ्केरुह संभवः स्वयम् ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	समर्च्य	१४.	पूजा करके
अङ्घ्रये	१०.	चरण का	भक्त्या	१५.	प्रेम और भक्ति पूर्वक
प्रोन्नमिताय	६.	ऊपर उठे हुये	अभ्यगृणात्	१६.	भगवान् की स्तुति की
विष्णोः	८.	भगवान् विष्णु के	शुचिश्रवा	२.	पवित्र कीर्ति वाले
उपाहरत्	१३.	पूजन प्रक्षालन किया	यत् नाभि	४.	जो भगवान् की नाभि
पद्मभवः	३.	ब्रह्मा जी	पङ्केरुह	५.	कमल से
अर्हण	११.	अर्घ्यं	संभवः	७.	उत्पन्न हुये हैं उन्होंने
उदकम् ।	१२.	पाद्य आदि से	स्वयम् ॥	६.	स्वयं

श्लोकार्थं—तदनन्तर पवित्र कीर्ति वाले ब्रह्मा जी जो भगवान् की नाभि कमल से स्वयम् उत्पन्न हुये हैं, उन्होंने भगवान् विष्णु के ऊपर उठे हुये चरण का अर्घ्यं, पाद्य आदि से पूजन-प्रक्षालन किया । पूजा करके प्रेम और भक्ति पूर्वक भगवान् की स्तुति की ॥

चतुर्थः श्लोकः

धातुः कमण्डलुजलं तदुरुक्रमस्य पादावनेजनपवित्रतया नरेन्द्र ।
स्वर्धुन्यभून्नभसि सा पतती निमार्ष्टि लोकत्रयं भगवतो विशदेव कीर्तिः॥४॥

पदच्छेद—धातुः कमण्डलु जलम् तत् उरुक्रमस्य पाद अवने जन पवित्रतया नरेन्द्र ।
स्वर्धुनि अभूत् नभसि सा पतती निमार्ष्टि लोक त्रयम् भगवतः विशदेव कीर्तिः ॥

शब्दार्थं—

धातु	१.	ब्रह्मा के	स्वर्धुनि	६.	गंगा जी के रूप में
कमण्डलु	३.	कमण्डल का	अभूत्	१०.	परिणत हो गया
जलम् तत्	४.	वही जल	नभसि सा	११.	जो आकाश मार्ग से
उरुक्रमस्य	५.	विश्वरूप भगवान् के	पतती	१२.	गिरती हुई
पाद	६.	पाँव	निमार्ष्टि	१४.	पवित्र करती है
अवनेजन	७	पखारने से	लोक त्रयम्	१३.	तीनों लोकों को
पवित्रतया	८.	पवित्र होने के कारण	भगवतः	१५.	ये भगवान् की
नरेन्द्र ।	१.	हे परीक्षित् !	विशदेव कीर्तिः ॥	१६	उज्ज्वल कीर्ति है

श्लोकार्थं—हे परीक्षित् ! ब्रह्मा के कमण्डलु का वही जल विश्वरूप भगवान् के पाँव पखारने से पवित्र होने के कारण गंगा जी के रूप में परिणत हो गया । जो आकाश मार्ग से गिरती हुई तीनों लोकों को पवित्र करती है । ये भगवान् की उज्ज्वल कीर्ति है ॥

पञ्चमः श्लोकः

ब्रह्मादयो लोकनाथाः स्वनाथाय समादृताः ।
सानुगा बलिमाजह्रुः संक्षिप्तात्मविभूतये ॥५॥

पदच्छेद— ब्रह्म आदयः लोकनाथाः स्वनाथाय समादृताः ।
सानुगाः बलिम् आजह्रुः संक्षिप्त आत्मविभूतये ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मा	४. ब्रह्मा	सानुगाः	८. अपने अनुचरों के साथ
आदयः	५. आदि	बलिम्	११. अनेक प्रकार की भेंटें
लोक	६. लोक	आजह्रुः	१२. समर्पित कीं
नाथाः	७. पालों ने	संक्षिप्त	३. छोटा कर लिया तो
स्वनाथाय	१०. अपने स्वामी को	आत्म	१. जब भगवान् ने
समादृताः ।	९. बड़े आदर-भाव से	विभूतये ॥	२. अपने स्वरूप को

श्लोकार्थ—जब भगवान् ने अपने स्वरूप को छोटा कर लिया तो ब्रह्मा आदि लोकपालों ने बड़े आदर-भाव से अपने स्वामी को अनेक प्रकार की भेंटें समर्पित कीं ।

षष्ठः श्लोकः

तोयैः समर्हणैः स्रग्भिर्दिव्यगन्धानुलेपनैः ।
धूपैर्दीपैः सुरभिभिर्लाजाक्षतफलाङ्कुरैः ॥६॥

पदच्छेद— तोयैः समर्हणैः स्रग्भिः दिव्य गन्ध अनुलेपनैः ।
धूपैः दीपैः सुरभिभिः लाजा अक्षत फल अङ्कुरैः ॥

शब्दार्थ—

तोयैः	१. उन्होंने जल	धूपैः दीपैः	८. धूप-दीप
समर्हणैः	२. उपहार	सुरभिभिः	७. सुगन्धित
स्रग्भिः	३. माला	लाजा	९. खील
दिव्य	४. दिव्य	अक्षत	१०. अक्षत
गन्ध	५. गन्धों से भरे	फल	११. फल और
अनुलेपनैः ।	६. अङ्गराग	अङ्कुरैः ॥	१२. अङ्कुर (दिये)

श्लोकार्थ—उन्होंने जल, उपहार, माला, दिव्य गन्धों से भरे अङ्गराग, सुगन्धित धूप-दीप, खील, अक्षत, फल और अङ्कुर दिये ॥

सप्तमः श्लोकः

स्तवनैर्जयशब्दैश्च तद्वीर्यमहिमाङ्कितैः ।
नृत्यवादित्रगीतैश्च शङ्खदुन्दुभिनिःस्वनैः ॥७॥

शब्दार्थ— स्तवनैः जय शब्दैः च तद्वीर्य महिमा अङ्कितैः ।
नृत्य वादित्र गीतैः च शङ्ख दुन्दुभि निःस्वनैः ॥

शब्दार्थ—

स्तवनैः	६.	स्तोत्र	नृत्यः	८.	नृत्य
जयशब्दैः	७	जयघोष	वादित्र	९.	बाजे-गाजे
च	३.	और	गीतैः	१०.	गान
तद्	१.	उनके	च	१२.	और
वीर्य	२.	प्रभाव	शङ्खः	११.	शङ्ख
महिमा	४.	महिमा से	दुन्दुभि	१३.	दुन्दुभि के
अङ्कितैः ।	५.	युक्त	निःस्वनैः ॥	१४.	शब्दों से (भगवान् की आराधना की)

श्लोकार्थ—उनके प्रभाव और महिमा से युक्त, स्तोत्र, जयघोष, नृत्य, बाजे-गाजे, गान-शङ्ख और दुन्दुभि के शब्दों से भगवान् की आराधना की ॥

अष्टमः श्लोकः

जाम्बवानृक्षराजस्तु भेरीशब्दैर्मनोजवः ।
विजयं दिक्षु सर्वासु महोत्सवमघोषयत् ॥८॥

पदच्छेद— जम्बवान् ऋक्ष राजः तु भेरी शब्दैः मनोजवः ।
विजयम् दिक्षु सर्वासु महोत्सवम् अघोषयत् ॥

शब्दार्थ—

जाम्बवान्	२.	जाम्बवान्	विजयम्	९.	विजय की
ऋक्षराजः	१.	उस समय ऋक्षराज	दिक्षु	५.	दिशाओं में
तु भेरी	६.	भेरी	सर्वासु	४.	सब
शब्दैः	७.	बजा-बजा कर	महोत्सवम्	८.	भगवान् की मंगलमय
मनोजवः ।	३.	मन के समान वेग से दौड़ कर	अघोषयत् ॥	१०.	घोषणा कर आये

श्लोकार्थ—उस समय ऋक्षराज जाम्बवान् मन के समान वेग से दौड़ कर सब दिशाओं में भेरी बजा-बजा कर विजय की घोषणा कर आये ॥

नवमः श्लोकः

महीं सर्वां हृतां दृष्ट्वा त्रिपदव्याजयाच्ञया ।

ऊचुः स्वभर्तुरसुरा दीक्षितस्यात्यमर्षिताः ॥९॥

पदच्छेद— महीम् सर्वाम् हृताम् दृष्ट्वा त्रिपद व्याजयाच्ञया ।
ऊचुः स्वभर्तुः असुराः दीक्षितस्य अति अमर्षिताः ॥

शब्दार्थ—

महीम्	५.	पृथ्वी को	ऊचुः	१४.	बोलना शुरू किया
सर्वान्	४.	समस्त	स्व	९.	अपने
हृताम्	६.	हरण किया हुआ	भर्तुः	१०.	स्वामी को
दृष्ट्वा	७.	देख कर	असुराः	८.	असुरों ने
त्रिपद	१.	तीन पग	दीक्षितस्य	११.	यज्ञ में दीक्षित देख कर
व्याज	३.	बहाने	अति	१२.	अत्यधिक
याच्ञया ।	२.	माँगने के	अमर्षिताः ॥	१३.	चिढ़कर

श्लोकार्थ—तीन पग माँगने के बहाने समस्त पृथ्वी को हरण किया हुआ देख कर असुरों ने अपने स्वामी को यज्ञ में दीक्षित देख कर अत्यधिक चिढ़ कर बोलना शुरू किया ॥

दशमः श्लोकः

न वा अयं ब्रह्मबन्धुर्विष्णुर्मायाविनां वरः ।

द्विजरूपप्रतिच्छन्नो देवकार्यं चिकीर्षति ॥१०॥

पदच्छेद— न वा अयम् ब्रह्मबन्धुः विष्णुः मायाविनाम् वरः ।
द्विजरूप प्रतिच्छन्नः देवकार्यम् चिकीर्षति ॥

शब्दार्थ—

न वा	३.	नहीं है	वरः ।	५.	श्रेष्ठ
अयम्	१.	ये	द्विजरूप	७.	ब्राह्मण के रूप में
ब्रह्मबन्धुः	२.	ब्राह्मण	प्रतिच्छन्नः	८.	छिप कर
विष्णुः	६.	भगवान् विष्णु हैं	देवकार्यम्	९.	देवताओं का काम
मायाविनाम्	४.	मायावियों में	चिकीर्षति ॥	१०.	करना चाहते हैं

श्लोकार्थ—ये ब्राह्मण नहीं है । मायावियों में श्रेष्ठ भगवान् विष्णु हैं । ब्राह्मण के रूप में छिप कर देवताओं का काम करना चाहते हैं ॥

एकादशः श्लोकः

अनेन याचमानेन शत्रुणा वटुरूपिणा ।
सर्वस्वं नो हृतं भर्तुर्न्यस्तदण्डस्य बर्हिषि ॥११॥

पदच्छेद— अनेन याचमानेन शत्रुणा वटुरूपिणा ।
सर्वस्वम् नः हृतम् भर्तुः न्यस्त दण्डस्य बर्हिषि ॥

शब्दार्थ—

अनेन	५.	इस	नः	१०.	हमारा
याचमानेन	६.	याचक	हृतम्	१२.	हरण कर लिया है
शत्रुणा	७.	शत्रु ने	भर्तुः	१.	जब हमारे स्वामी
वटु	८.	ब्रह्मचारी का	न्यस्त	४.	उपरत हो गये तो
रूपिणा ।	९.	वेष बनाकर	दण्डस्य	३.	दण्ड देने से
सर्वस्वम्	११.	सर्वस्व	बर्हिषि ॥	२.	यज्ञ में दीक्षित

श्लोकार्थ—जब हमारे स्वामी यज्ञ में दीक्षित दण्ड देने से उपरत हो गये तो इस याचक शत्रु ने ब्रह्मचारी का वेष बना कर हमारा सर्वस्व हरण कर लिया है ॥

द्वादशः श्लोकः

सत्यव्रतस्य सततं दीक्षितस्य विशेषतः ।
नानृतं भाषितुं शक्यं ब्रह्मण्यस्य दयावतः ॥१२॥

पदच्छेद— सत्यव्रतस्य सततम् दीक्षितस्य विशेषितः ।
न अनृतम् भाषितुम् शक्यम् ब्रह्मण्यस्य दयावतः ॥

शब्दार्थ—

सत्यव्रतस्य	२.	सत्यनिष्ठ होने पर भी	अनृतम्	७.	असत्य
सततम्	१.	निरन्तर	भाषितुम्	८.	बोलने में
दीक्षितस्य	३.	यज्ञ में दीक्षित होने से	शक्यम्	९.	समर्थ
विशेषतः	४.	विशेषतया सत्य बोलते हैं	ब्रह्मण्यस्य	५.	ब्राह्मणों के प्रति
न	१०.	नहीं हैं	दयावतः ॥	६.	दया-भाव होने से

श्लोकार्थ—तदनन्तर सत्यनिष्ठ होने पर भी यज्ञ में दीक्षित होने से विशेषतया सत्य बोलते हैं। ब्राह्मणों के प्रति दया-भाव होने से असत्य बोलने में समर्थ नहीं हैं ॥

त्रयोदशः श्लोकः

तस्मादस्य वधो धर्मो भर्तुः शुश्रूषणं च नः ।
इत्यायुधानि जगृहुर्बलेरनुचरासुराः ॥१३॥

पदच्छेद— तस्मात् अस्य वधः धर्मः भर्तुः शुश्रूषणम् च नः ।
इति आयुधानि जगृहुः बलेः अनुचर असुराः ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१. इसलिये	नः ।	५. हमारा
अस्य	३. इसका	इति	९. ऐसा सोचकर
वधः	४. वध करना ही	आयुधानि	१३. हथियार
धर्मः	६. धर्म है (इससे)	जगृहुः	१४. उठा लिये
भर्तुः	७. स्वामी की	बलेः	१०. बलि के
शुश्रूषणम् ।	८. सेवा भी हो जायेगी	अनुचर	११. अनुचर
च	१. और	असुराः ॥	१२. असुरों ने

श्लोकार्थ—और इसलिये इसका वध करना ही हमारा धर्म है। इससे स्वामी की सेवा भी हो जायेगी। ऐसा सोच कर बलि के अनुचर असुरों ने हथियार उठा लिये ॥

चतुर्दशः श्लोकः

ते सर्वे वामनं हन्तुं शूलपट्टिशपाणयः ।
अनिच्छतो बले राजन् प्राद्रवञ्जातमन्यवः ॥१४॥

पदच्छेद— ते सर्वे वामनम् हन्तुम् शूलपट्टिश पाणयः ।
अनिच्छतः बलेः राजन् प्राद्रवञ्जात मन्यवः ॥

शब्दार्थ—

ते	४. वे	अनिच्छतः	३. इच्छा न होने पर
सर्वे	५. सब	बलेः	२. राजा बलि की
वामनम्	११. वामन भगवान् को	राजन्	१. हे परीक्षित्
हन्तुम्	१२. मारने के लिये	प्राद्रवत्	१३. टूट पड़े
शूल	८. शूल	जात	७. उत्पन्न होने के कारण
पट्टिश	९. पट्टिश	मन्यवः ॥	६. क्रोध
पाणयः ।	१०. हाथ में ले लेकर		

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! राजा बलि की इच्छा न होने पर भी वे सब क्रोध उत्पन्न होने के कारण शूल, पट्टिश, हाथ में ले लेकर वामन भगवान् को मारने के लिये टूट पड़े ॥

पञ्चदशः श्लोकः

तानभिद्रवतो दृष्ट्वा दितिजानीकपान् नृप ।
प्रहस्यानुचरा विष्णोः प्रत्यषेधन्नुदायुधाः ॥१५॥

पदच्छेद— तान् अभिद्रवतः दृष्ट्वा दितिज अनीकपान् नृप ।
प्रहस्य अनुचराः विष्णोः प्रत्यषेधन् उदायुधाः ॥

शब्दार्थ—

तान्	१०.	उन्हें	प्रहस्य	८.	हंसते हुये
अभिद्रवतः	७.	दौड़ आ रहे हैं तब	अनुचराः	३.	पार्षदों ने
दृष्ट्वा	४.	देखा कि	विष्णोः	२.	जब विष्णु भगवान् के
दितिज	५.	दैत्यों के	प्रत्यषेधन्	११.	रोक दिया
अनीकपान्	६.	सेनापति	उदायुधाः ॥	९.	शस्त्र लेकर
नृप ।	१.	हे परीक्षित् !			

श्लोकार्थ— हे परीक्षित् ! जब विष्णु भगवान् के पार्षदों ने देखा कि दैत्यों के सेनापति दौड़ आ रहे हैं तब हंसते हुये शस्त्र लेकर उन्हें रोक दिया ॥

षोडशः श्लोकः

नन्दः सुनन्दोऽथ जयो विजयः प्रबलो बलः ।
कुमुदः कुमुदाक्षश्च विष्वक्सेनः पतत्त्रिराट् ॥१६॥

पदच्छेद— नन्दः सुनन्दः अथ जयः विजयः प्रबलः बलः ।
कुमुदः कुमुदाक्षः च विष्वक्सेनः पतत्त्रिराट् ॥

शब्दार्थ—

नन्दः	२.	नन्द	बलः ।	७.	बल
सुनन्दः	३.	सुनन्द	कुमुदः	८.	कुमुद
अथ	१.	तदनन्तर	कुमुदाक्षः	९.	कुमुदाक्ष
जयः	४.	जय	च	१०.	और
विजयः	५.	विजय	विष्वक्सेनः	१०.	विष्वक्सेन
प्रबलः	६.	प्रबल	पतत्त्रिराट् ॥	१२.	गरुड़ (लड़ने लगे)

श्लोकार्थ— तदनन्तर नन्द, सुनन्द, जय, विजय, प्रबल, बल, कुमुद, कुमुदाक्ष, विष्वक्सेन और गरुड़ लड़ने लगे ॥

सप्तदशः श्लोकः

जयन्तः श्रुतदेवश्च पुष्पदन्तोऽथ सात्वतः ।
सर्वे नागायुतप्राणाश्चमूं ते जघ्नुरासुरीम् ॥१७॥

पदच्छेद— जयन्तः श्रुतदेवः च पुष्पदन्तः अथ सात्वतः ।
सर्वे नाग अयुतप्राणाः चमूम् ते जघ्नुः आसुरीम् ॥

शब्दार्थ—

जयन्तः	२.	जयन्त	नाग	८.	हाथियों का
श्रुतदेवः	३.	श्रुतदेव	अयुत	७.	दस-दस हजार
च	४.	और	प्राणाः	९.	बल रखने वाले
पुष्पदन्तः	५.	पुष्पदन्त तथा	चमूम्	१३.	सेना
अथ	१.	तदनन्तर	ते	१०.	वे
सात्वतः ।	६.	सात्वत आदि	जघ्नुः	१४.	मारने लगे
सर्वे	११.	सब पार्षद	आसुरीम् ॥	१२.	असुरों की

श्लोकार्थ—तदनन्तर जयन्त, श्रुतदेव, और पुष्पदन्त तथा सात्वत आदि दस-दस हजार हाथियों का बल रखने वाले वे सब पार्षद असुरों की सेना को मारने लगे ॥

अष्टादशः श्लोकः

हन्यमानान् स्वकान् दृष्ट्वा पुरुषानुचरैर्बलिः ।
वारयामास संरब्धान् काव्यशापमनुस्मरन् ॥१८॥

पदच्छेद— हन्यमानान् स्वकान् दृष्ट्वा पुरुष अनुचरैः बलिः ।
वारयामास संरब्धान् काव्यशापम् अनुस्मरन् ॥

शब्दार्थ—

हन्यमानान्	५.	मारते हुये	वारयामास	११.	रोक दिया
स्वकान्	४.	अपने सैनिकों को	संरब्धान्	१०.	उन युद्ध करने वालों को
दृष्ट्वा	६.	देखकर	काव्य	७.	शुक्राचार्य जी के
पुरुष	२.	भगवान् के	शापम्	८.	शाप का
अनुचरैः	३.	पार्षदों द्वारा	अनुस्मरन् ॥	९.	स्मरण करते हुये
बलिः ।	१.	राजा बलि ने			

श्लोकार्थ—राजा बलि ने भगवान् के पार्षदों द्वारा अपने सैनिकों को मारते हुये देखकर शुक्राचार्य जी के शाप का स्मरण करते हुये उन युद्ध करने वालों को रोक दिया ॥

एकोनविंशः श्लोकः

हे विप्रचित्ते हे राहो हे नेमे श्रूयतां वचः ।
मा युध्यत निवर्तध्वं न नः कालोऽयमर्थकृत् ॥१९॥

पदच्छेद— हे विप्रचित्ते हे राहो हे नेमे श्रूयताम् वचः ।
मा युध्यत निवर्तध्वम् न नः कालः अयम् अर्थकृत् ॥

शब्दार्थ—

हे विप्रचित्ते	१. हे विप्रचित्ते	युध्यत	६. युद्ध
हे राहो	२. हे राहो	निवर्तध्वम्	८ लौट आओ
हे नेमे	३. हे नेमि मेरी	न	१३. नहीं है
श्रूयताम्	५. सुनो	नः	१०. हमारे
वचः ।	४. बात	कालः	११. अनुकूल समय
मा	७. मत करो	अयम्	९. यह
		अर्थकृत् ॥	११. कार्य के प्रयोजन के

श्लोकार्थ—हे विप्रचित्ते ! हे राहो । हे नेमि ! मेरी बात सुनो । युद्ध मत करो, लौट आओ । यह हमारे कार्य के प्रयोजन के अनुकूल समय नहीं है ॥

विंशः श्लोकः

यः प्रभुः सर्वभूतानां सुखदुःखोपपत्तये ।
तं नातिवर्तितुं दैत्याः पौरुषैरीश्वरः पुमान् ॥२०॥

पदच्छेद— यः प्रभुः सर्वभूतानाम् सुख दुःख उपपत्तये ।
तम् न अतिवर्तितुम् दैत्याः पौरुषैः ईश्वरः पुमान् ॥

शब्दार्थ—

यः	२. जो काल	तम्	९. उसे
प्रभुः	८ सामर्थ्य वाला है	न	१४. नहीं है
सर्व	३ समस्त	अतिवर्तितुम्	१३. दबाने में समर्थ
भूतानाम्	४ प्राणियों को	दैत्याः	१. हे दैत्यो ।
सुख	५. सुख और	पौरुषे	११. अपने पौरुष और
दुःख	६. दुख	ईश्वरः	१२. शक्ति से
उपपत्तये ।	७. प्राप्त कराने की	पुमान् ॥	१०. कोई व्यक्ति

श्लोकार्थ—हे दैत्यों ! जो काल समस्त प्राणियों को सुख और दुःख प्राप्त कराने की सामर्थ्य वाला है, उसे कोई व्यक्ति अपने पौरुष और शक्ति से दबाने में समर्थ नहीं है ॥

एकविंशः श्लोकः

यो नो भवाय प्रागासीदभवाय दिवौकसाम् ।
स एव भगवानद्य वर्तते तद्विपर्ययम् ॥२१॥

पदच्छेद— यः नः भवाय प्राक् आसीत् अभवाय दिवौकसाम् ।
स: एव भगवान् अद्य वर्तते तत् विपर्ययम् ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जो	**सः**	८.	वे
नः	३.	हमारी	**एव**	९.	ही
भवाय	४.	उन्नति और	**भगवान्**	१०.	काल भगवान्
प्राक्	२.	पहले	**अद्य**	११.	आज
आसीत्	७.	कारण हुये थे	**वर्तते**	१४.	व्यवहार कर रहे हैं
अभवाय	६.	अवनति के	**तत्**	१२.	उसके
दिवौकसाम् ।	५.	देवताओं की	**विपर्ययम् ॥**	१३.	विपरीत

श्लोकार्थ—जो पहले हमारी उन्नति और देवताओं की अवनति का कारण हुये थे । वे ही काल भगवान् आज उसके विपरीत व्यवहार कर रहे हैं ॥

द्वाविंशः श्लोकः

बलेन सचिवैर्बुद्ध्या दुर्गैर्मन्त्रौषधादिभिः ।
सामादिभिरुपायैश्च कालं नात्येति वै जनः ॥२२॥

पदच्छेद— बलेन सचिवैः बुद्धया दुर्गैः मन्त्र औषध आदिभिः ।
साम आदिभिः उपायैः च कालम् न अत्येति वै जनः ॥

शब्दार्थ—

बलेन	१.	बल	**साम**	९.	साम
सचिवैः	२.	मन्त्री	**आदिभिः**	१०.	आदि
बुद्धया	३.	बुद्धि	**उपायैः**	११.	उपायों के द्वारा
दुर्गैः	४.	दुर्ग	**च**	५.	और
मन्त्र	६.	मन्त्र	**कालम्**	१३.	काल पर
औषध	७.	ओषधि	**न**	१५.	नहीं पा सकता है ॥
आदिभिः ।	८.	आदि तथा	**अत्येति**	१४.	विजय
			वै जनः ॥	१२.	व्यक्ति

श्लोकार्थ—बल, मन्त्री, बुद्धि, दुर्ग, और मन्त्र, ओषधि आदि तथा साम आदि उपायों के द्वारा व्यक्ति काल पर विजय नहीं पा सकता है ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

भवद्भिर्निर्जिता ह्येते बहुशोऽनुचरा हरेः ।
दैवेनर्द्धैस्त एवाद्य युधि जित्वा नदन्ति नः ॥२३॥

पदच्छेद— भवद्भिः निर्जिताः हि एते बहुशः अनुचराः हरेः ।
दैवेन ऋद्धैः त एव अद्य युधि जित्वा नदन्ति नः ॥

शब्दार्थ—

भवद्भिः	१. आप लोगों ने	ऋद्धैः	९. समृद्धि पाकर
निर्जिताः	६. जीत लिया था पर	त एव	७. वे ही
हि एते	३. इन	अद्य	१०. आज
बहुशः	४. बहुत से	युधि	१२. युद्ध में
अनुचराः	५. सेवकों को	जित्वा	१३. जीतकर
हरेः ।	२. भगवान् के	नदन्ति	१४. सिंहनाद कर रहे हैं
दैवेन	८. दैवयोग से	नः ॥	११. हमें

श्लोकार्थ—आप लोगों ने भगवान् के इन बहुत से सेवकों को जीत लिया था । पर वे ही दैवयोग से समृद्धि पाकर आज हमें युद्ध में जीतकर सिंहनाद कर रहे हैं ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

एतान् वयं विजेष्यामो यदि दैवं प्रसीदति ।
तस्मात् कालं प्रतीक्षध्वं यो नोऽर्थत्वाय कल्पते ॥२४॥

पदच्छेद— एतान् वयम् विजेष्यामः यदि दैवम् प्रसीदति ।
तस्मात् कालम् प्रतीक्षध्वम् यः नः अर्थत्वाय कल्पते ॥

शब्दार्थ—

एतान्	५. इन्हें	तस्मात्	७. इसलिये उस
वयम्	४. हम लोग	कालम्	८. समय की
विजेष्यामः	६. जीत लेंगे	प्रतीक्षध्वम्	९. प्रतीक्षा करो
यदि	१. यदि	यः नः	१०. जो हमारी
दैवम्	२. दैव	अर्थत्वाय	११. कार्य सिद्धि के लिये
प्रसीदति ।	३. हम पर प्रसन्न होगा तो	कल्पते ।	१२. अनुकूल हो

श्लोकार्थ—यदि दैव हम पर प्रसन्न होगा तो हम लोग इन्हें जीत लेंगे । इसलिये समय की प्रतीक्षा करो । जो हमारी कार्य-सिद्धि के लिये अनुकूल हो ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—पत्युर्निगदितं श्रुत्वा दैत्यदानवयूथपाः ।
रसां निर्विविशू राजन् विष्णुपार्षदताडिताः ॥२५॥

पदच्छेद— पत्युः निगदितम् श्रुत्वा दैत्य दानव यूथपाः ।
रसाम् निर्विविशुः राजन् विष्णु पार्षद ताडिताः ॥

शब्दार्थ—

पत्युः	२.	अपने स्वामी बलि की	रसाम्	११.	रसातल में
निगदितम्	३.	बात	निर्विविशुः	१२.	प्रवेश कर गये
श्रुत्वा	४.	सुनकर	राजन्	१.	हे परीक्षित् !
दैत्य	६.	दैत्य	विष्णु	८.	भगवान् के
दानव	५.	दानव और	पार्षद	९.	पार्षदों के द्वारा
यूथपाः ।	७.	सेनापति	ताडिताः ॥	१०.	मारे जाते हुये

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! अपने स्वामी बलि की बात सुनकर दानव और दैत्य सेनापति भगवान् के पार्षदों के द्वारा मारे जाते हुये रसातल में प्रवेश कर गये ॥

षड्विंशः श्लोकः

अथ तार्क्ष्यसुतो ज्ञात्वा विराट् प्रभुचिकीर्षितम् ।
बबन्ध वारुणैः पाशैर्बलिं सौत्येऽहनि क्रतौ ॥२६॥

पदच्छेद— अथ तार्क्ष्य सुतः ज्ञात्वा विराट् प्रभु चिकीर्षितम् ।
बबन्ध वारुणैः पाशैः बलिम् सौत्ये अहनि क्रतौ ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	बबन्ध	९.	बाँध लिया
तार्क्ष्यसुतः	२.	पक्षिराज गरुड़ ने	वारुणैः पाशैः	७.	वरुण के पाशों से
ज्ञात्वा	६.	जानकर	बलिम्	८.	बलि को
विराट्	३.	विराट्	सौत्ये	१२.	सोमपान होने वाला था
प्रभु	४.	भगवान् की	अहनि	१०.	उस दिन
चिकीर्षितम् ।	५.	इच्छा	क्रतौ ॥	११.	यज्ञ में

श्लोकार्थ—तदनन्तर पक्षिराज गरुड़ ने विराट् भगवान् की इच्छा जानकर वरुण के पाशों से बलि को बाँध लिया, उस दिन यज्ञ में सोमपान होने वाला था ॥

सप्तविंशः श्लोकः

हाहाकारो महानासीद् रोदस्योः सर्वतोदिशम् ।
गृह्यमाणेऽसुरपतौ विष्णुना प्रभविष्णुना ॥२७॥

पदच्छेद— हाहाकारः महान् आसीत् रोदस्योः सर्वतो दिशम् ।
गृह्यमाणे असुरपतौ विष्णुना प्रभविष्णुना ॥

शब्दार्थ—

हाहाकारः	९. हाहाकार	गृह्यमाणे	४. बाँधे जाने पर
महान्	८. महान्	असुर	३. दैत्य
आसीत्	१०. होने लगा	पतौ	४. राजा बलि के
रोदस्योः	५. पृथ्वी और आकाश	विष्णुना	२. भगवान्
सर्वतो	६. सभी	प्रभविष्णुना ॥	१. सर्वशक्तिमान्
दिशम् ।	७. दिशाओं में		

श्लोकार्थ—सर्वशक्तिमान् भगवान् के द्वारा दैत्य राज बलि के बाँधे जाने पर पृथ्वी और आकाश सभी दिशाओं में महान् हाहाकार होने लगा ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

तं बद्धं वारुणैः पाशैर्भगवानाह वामनः ।
नष्टश्रियं स्थिरप्रज्ञमुदारयशसं नृप ॥२८॥

पदच्छेद— तम् बद्धम् वारुणैः पाशैः भगवान् आह वामनः ।
नष्ट श्रियम् स्थिर प्रज्ञम् उदार यशसम् नृप ॥

शब्दार्थ—

तम्	११. उन बलि से	नष्ट	६. नष्ट होने पर भी
बद्धम्	४. बँधे हुये	श्रियम्	५. सम्पत्ति के
वारुणैः	२. वरुण के	स्थिर	७. स्थिर
पाशैः	३. पाशों में	प्रज्ञम्	८. बुद्धि वाले तथा
भगवान्	१३ भगवान्	उदार	९. उदार
आह	१४. बोले	यशसम्	१०. कीर्ति वाले
वामनः ।	१२. वामन	नृप ॥	१. हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! वरुण के पाशों में बंधे हुये, सम्पत्ति के नष्ट होने पर भी स्थिर बुद्धि वाले तथा उदार कीर्ति वाले उन बलि से वामन भगवान् बोले ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

पदानि त्रीणि दत्तानि भूमेर्मह्यं त्वयासुर ।
द्वाभ्यां क्रान्ता मही सर्वा तृतीयमुपकल्पय ॥२९॥

पदच्छेद— पदानि त्रीणि दत्तानि भूमेः मह्यम् त्वया असुर ।
द्वाभ्याम् क्रान्ता मही सर्वा तृतीयम् उपकल्पय ॥

शब्दार्थ—

पदानि	६. पग	द्वाभ्याम्	८. दो पग से मैंने
त्रीणि	५. तीन	क्रान्ता	११. नाप ली (अब)
दत्तानि	७. दिये थे	मही	१०. पृथ्वी
भूमेः	४. पृथ्वी के	सर्वा	९. सारी
मह्यम्	३. मुझे	तृतीयम्	११. तीसरा पग
त्वया	२. तुमने	उपकल्पय ॥	१३. पूरा करो
असुर ।	१. हे असुर !		

श्लोकार्थ—हे असुर ! तुमने मुझे पृथ्वी के तीन पग दिये थे । दो पग से मैंने सारी पृथ्वी नाप ली । अब तीसरा पग पूरा करो ॥

त्रिंशः श्लोकः

यावद् तपत्यसौ गोभिर्यावदिन्दुः सहोडुभिः ।
यावद् वर्षति पर्जन्यस्तावती भूरियं तव ॥३०॥

पदच्छेद— यावत् तपति असौ गोभिः यावत्इन्दुः सह उडुभिः ।
यावत् वर्षति पर्जन्यः तावती भूःइयम् तव ॥

शब्दार्थ—

यावत्	१. जहाँ-तक	यावत	८. जहाँ-तक
तपति	३. गरमी पहुँचाता है	वर्षति	१०. बरसते हैं
असौ	२. यह सूर्य	पर्जन्यः	९. बादल
गोभिः	५. किरणें	तावती	११. उतनी
यावत्इन्दुः	४. जहाँ तक चन्द्रमा की	भूः इयम्	१२. यह पृथ्वी
सह	६. साथ	तव ॥	१३. तुम्हारी है
उडुभिः ।	७. नक्षत्रों के पहुँचती हैं		

श्लोकार्थ—जहाँ तक यह सूर्य गरमी पहुँचाता है । जहाँ तक चन्द्रमा की किरणें नक्षत्रों के साथ पहुँचती हैं । जहाँ-तक बादल बरसते हैं । उतनी यह पृथ्वी तुम्हारी है ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

पदैकेन मया क्रान्तो भूर्लोकः खं दिशस्तनोः ।
स्वर्लोकस्तु द्वितीयेन पश्यतस्ते स्वमात्मना ॥३१॥

पदच्छेद— पद एकेन मया क्रान्तः भूर्लोकः खम् दिशः तनोः ।
स्वर्लोकः तु द्वितीयेन पश्यतः ते स्वम् आत्मना ॥

शब्दार्थ—

पद	७.	पैर से	स्वर्लोकः	१४.	स्वर्गलोक को
एकेन	६.	एक	तु	१२.	तथा
मया	५.	मैंने	द्वितीयेन	१३.	दूसरे पैर
क्रान्तः	१५.	नाप लिया है	पश्यतः	४.	देखते-देखते
भूर्लोकः	८.	भूर्लोक	ते	१.	तुम्हारे
खम्	१०.	आकाश और	स्वम्	२.	स्वयं
दिशः	११.	दिशायें	आत्मना ॥	३.	अपने
तनोः ।	९.	शरीर से			

श्लोकार्थ— तुम्हारे स्वयम् अपने देखते-देखते मैंने एक पैर से भूर्लोक, शरीर से आकाश और दिशायें तथा दूसरे पैर से स्वर्ग लोक को नाप लिया है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

प्रतिश्रुतमदातुस्ते निरये वास इष्यते ।
विश त्वं निरयं तस्माद् गुरुणा चानुमोदितः ॥३२॥

पदच्छेद— प्रतिश्रुतम् अदातुस्ते निरये वास इष्यते ।
विश त्वम् निरयम् तस्मात् गुरुणा च अनुमोदितः ॥

शब्दार्थः—

प्रतिश्रुतम्	१.	प्रतिज्ञा करके	विश	१३.	प्रवेश करो
अदातुः	२.	न देने पर	त्वम्	११.	तुम
ते	३.	तुम्हारा	निरयम्	१२.	नरक में
निरये	४.	नरक में	तस्मात्	८.	इसलिये
वासः	५.	रहना	गुरुणा	९.	गुरु की
इष्यते ।	६.	निश्चित है	च	७.	और
			अनुमोदितः ॥	१०.	सम्मति होने के कारण

श्लोकार्थ— प्रतिज्ञा करके न देने पर तुम्हारा नरक में रहना निश्चित है। और इसीलिये गुरु की सम्मति होने के कारण तुम नरक में प्रवेश करो ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

वृथा मनोरथस्तस्य दूरे स्वर्गः पतत्यधः ।

प्रतिश्रुतस्यादानेन योऽर्थिनं विप्रलम्भते ॥३३॥

पदच्छेद— वृथा मनोरथः तस्य दूरे स्वर्गः पतति अधः ।
प्रतिश्रुतस्य अदानेन यः अर्थिनम् विप्रलम्भते ॥

शब्दार्थ—

वृथा	८.	व्यर्थ होते हैं	अधः ।	११.	वह नरक में
मनोरथः	७.	सारे मनोरथ	प्रतिश्रुतस्य	२.	याचक को देने की प्रतिज्ञा करके
तस्य	६.	उसके	अदानेन	३.	नहीं देता और
दूरे	१०.	दूर रहा (वह)	यः	१.	जो
स्वर्गः	९.	स्वर्ग तो	अर्थिनम्	४.	याचक को
पतति	१२.	गिरता है	विप्रलम्भते ॥	५.	धोखा देता है

श्लोकार्थ—जो याचक को देने की प्रतिज्ञा करके नहीं देता और याचक को धोखा देता है, उसके सारे मनोरथ व्यर्थ होते हैं। स्वर्ग तो दूर रहा वह नरक में गिरता है ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

विप्रलब्धो ददामीति त्वयाहं चाढ्यमानिना ।

तद् व्यलीकफलं भुङ्क्ष्व निरयं कतिचित् समाः ॥३४॥

पदच्छेद— विप्रलब्धः ददामि इति त्वया अहम् च आढ्यमानिना ।
तत् व्यलीक फलम् भुङ्क्ष्व निरयम् कतिचित् समाः ॥

शब्दार्थ—

विप्रलब्ध	६.	धोखा दिया है	तत्	८.	इसीलिये
ददामि	२.	दूंगा	व्यलीक	१२.	उस झूठ का
इति	३.	ऐसी प्रतिज्ञा करके	फलम्	१३.	फल
त्वया	४.	तुमने	भुङ्क्ष्व	१४.	भोगो
अहम्	५.	मुझे	निरयम्	११.	नरक में रहकर
च	७.	और	कतिचित्	९.	कुछ
आढ्यमानिनः ।	१.	घमंडी होने के कारण	समाः ॥	१०.	वर्षों तक

श्लोकार्थ—घमंडी होने के कारण दूंगा, ऐसी प्रतिज्ञा करके तुमने मुझे धोखा दिया है। और इसीलिये कुछ वर्षों तक नरक में रह कर उस झूठ का फल भोगो ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमे स्कन्धे
वामनप्रादुर्भावे एकोनविंशः अध्यायः ॥२१॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

द्वाविंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

शुक्र उवाच—एवं विप्रकृतो राजन् बलिर्भगवतासुरः ।
भिद्यमानोऽप्यभिन्नात्मा प्रत्याहाविक्लवं वचः ॥१॥

पदच्छेद— एवम् विप्रकृतः राजन् बलिः भगवता असुरः ।
भिद्यमानः अपि अभिन्न आत्मा प्रति आह अविक्लवम् वचः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	५.	इस प्रकार	भिद्यमानः	७.	तिरस्कृत होने पर
विप्रकृतः	६.	तिरस्कृत हुआ पर	अपि	८.	भी
राजन्	७.	हे परीक्षित् !	अभिन्न	१०.	अविचलित जैसी
बलिः	३.	बलि	आत्मा	६.	उन्होंने
भगवता	४.	भगवान् के द्वारा	प्रतिआह	१२.	कहा
असुरः	२.	असुरराज	अविक्लवम्	१०.	धैर्य पूर्वक
			वचः ॥	११.	वाणी में

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! असुरराज बलि भगवान् के द्वारा इस प्रकार तिरस्कृत हुआ पर तिरस्कृत होने पर भी उन्होंने धैर्य पूर्वक अविचलित जैसी वाणी में कहा ॥

द्वितीयः श्लोकः

बलिरुवाच—यद्युत्तमश्लोक भवान् ममेरितं वचो व्यलीकं सुरवर्य मन्यते ।
करोम्यृतं तन्न भवेत् प्रलम्भनं पदं तृतीयं कुरु शीर्ष्णि मे निजम् ॥२॥

पदच्छेद—यत् उत्तमश्लोक भवान् मम ईरितम् वचः व्यलीकम् सुरवर्य मन्यते ।
करोमि ऋतम् तत् न भवेत् प्रलम्भनम् पदम् तृतीयम् कुरु शीर्ष्णि मे निजम् ॥

शब्दार्थ—

यत्	२.	जो	करोमि	१०.	करता हूँ जिससे
उत्तमश्लोक	४.	पवित्र कीर्ति है (तो क्यों)	ऋतम् तत्	६.	मैं उसे सत्य
भवान्	३.	आपको	न भवेत्	१२.	न होगा
मम	५.	मेरी	प्रलम्भनम्	११.	आपको धोखा
ईरितम् वचः	६.	कही हुई बात को आप	पदम् तृतीयम्	१४.	तीसरे पैर को
व्यलीकम्	७.	मिथ्या	कुरु शीर्ष्णि	१६.	रख दीजिये सिर पर
सुरवर्य	१.	हे देवों के आराध्य !	मे	१५.	आप मेरे
मन्यते ।	८.	मानते हैं	निजम् ॥	१३.	अपने

श्लोकार्थ—हे देवों के आराध्य ! जो आपकी पवित्र कीर्ति है तो क्यों मेरी कही हुई बात को आप मिथ्या मानते हैं । मैं उसे सत्य करता हूँ । आपको धोखा न होगा । अपने तीसरे पैर को आप मेरे सिर पर रख दीजिये ॥

तृतीयः श्लोकः

बिभेमि नाहं निरयात् पदच्युतो न पाशबन्धाद् व्यसनाद् दुरत्ययात् ।
नैवार्थकृच्छ्राद् भवतो विनिग्रहादसाधुवादाद् भृशमुद्विजे यथा ॥३॥

पदच्छेद— बिभेमि न अहम् निरयात् पदच्युतः न पाशबन्धात् व्यसनात् दुरत्ययात् ।
न एव अर्थ कृच्छ्रात् भवतः विनिग्रहात् असाधु वादात् भृशम् उद्विजे यथा ॥

शब्दार्थ—

बिभेमि	४. डरता हूँ	न एव अर्थ	९. नहीं धन
न अहम्	१. नहीं मैं	कृच्छ्रात्	१०. हीन होने से डरता हूँ
निरयात्	२. नरक से या	भवतः	१४. आप की
पदच्युतः	३. राज्यहीन होने से	विनिग्रहात्	१५. अपकीर्ति से
न पाश	५. और न पाश में	असाधुवादात्	१३. असत्य वचन से और
बन्धात्	६. बँधने के	भृशम्	१२. अधिक
व्यसनात्	८. दुःख से डरता हूँ	उद्विजे	१६. डरता हूँ
दुरत्ययात् ।	७. अपार	यथा ॥	११. जितना कि

श्लोकार्थ—मैं नरक से या राज्यहीन होने से नहीं डरता हूँ। और न पाश में बँधने के अपार दुःख से डरता हूँ। नहीं धन हीन होने से डरता हूँ। जितना कि अधिक असत्य वचन से और आप की अपकीर्ति से डरता हूँ ॥

चतुर्थः श्लोकः

पुंसां श्लाघ्यतमं मन्ये दण्डमर्हत्तमार्पितम् ।
यं न माता पिता भ्राता सुहृदश्चादिशन्ति हि ॥४॥

पदच्छेद— पुंसाम् श्लाघ्यतमं मन्ये दण्डम् अर्हत्तम अर्पितम् ।
यम् न माता पिता भ्राता सुहृदः च आदिशन्ति हि ॥

शब्दार्थ—

पुंसाम्	२. जीव मात्र के लिये	यम् न	७ जिसे नहीं
श्लाघ्यतमम्	५. मैं प्रशंसनीय	माता-पिता	८. माता-पिता
मन्ये	६. मानता हूँ	भ्राता	९. भाई
दण्डम्	४. दण्ड को	सुहृदः	११. बन्धु
अर्हत्तम	१. पूज्य जनों के द्वारा	च	१०. और
अर्पितम् ।	३. दिये गये	आदिशन्ति हि ॥	१२. दे सकते हैं

श्लोकार्थ—पूज्यजनों के द्वारा जीवमात्र के लिये दिये गये दण्ड को मैं प्रशंसनीय मानता हूँ। जिसे माता-पिता-भाई और बन्धु नहीं दे सकते हैं ॥

पञ्चमः श्लोकः

त्वं नूनमसुराणां नः पारोक्ष्यः परमो गुरुः ।
यो नोऽनेकमदान्धानां विभ्रंशं चक्षुरादिशत् ॥५॥

पदच्छेद— त्वम् नूनम् असुराणाम् नः पारोक्ष्यः परमः गुरुः ।
यः नः अनेक मद अन्धानाम् विभ्रंशम् चक्षुः आदिशत् ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	१.	आप	यः नः	८.	जो हमें
नूनम्	२.	निश्चय ही	अनेक	९.	अनेक प्रकार के
असुराणात्	५.	असुरों के	मद	१०.	मदों से
नः	४.	हम	अन्धानाम्	११.	अन्धे लोगों से
पारोक्ष्यः	३.	छिपे रूप से	विभ्रंशम्	१२.	वे वस्तुयें छीन कर
परमः	६.	परम	चक्षुः	१३.	नेत्र दान
गुरुः ।	७.	गुरु हैं	आदिशत् ॥	१४.	करते हैं

श्लोकार्थ—आप निश्चय ही छिपे रूप से हम असुरों के परम गुरु हैं। जो हमें अनेक प्रकार के मदों से अन्धे लोगों से वे वस्तुयें छीन कर नेत्रदान करते हैं ॥

षष्ठः श्लोकः

यस्मिन् वैरानुबन्धेन रूढेन विबुधेतराः ।
बहवो लेभिरे सिद्धिं यामु हैकान्तयोगिनः ॥६॥

पदच्छेद— यस्मिन् वैर अनुबन्धेन रूढेन विबुधइतराः ।
बहवः लेभिरे सिद्धिम् याम् उ ह एकान्त योगिनः ॥

शब्दार्थ—

यस्मिन्	६.	वही सिद्धि	बहवः	७.	बहुत से
वैर	१०.	वैर	लेभिरे	५.	प्राप्त होती है
अनुबन्धेन	११.	भाव से प्राप्त हो जाती है	सिद्धिम्	४.	सिद्धि
रूढेन	९.	आप के साथ दृढ़	याम् उ ह	३.	जो
विबुधेतराः ।	८.	असुरों को	एकान्त	१.	अनन्य भाव से
			योगिनः ॥	२.	योग करने वालों को

श्लोकार्थ—अनन्य भाव से योग करने वालों को जो सिद्धि प्राप्त होती है। वही सिद्धि बहुत से असुरों को आप के साथ दृढ़ वैरभाव से प्राप्त हो जाती है ॥

सप्तमः श्लोकः

तेनाहं निगृहीतोऽस्मि भवता भूरिकर्मणा।
बद्धश्च वारुणैः पाशैर्नातिव्रीडे न च व्यथे ॥७॥

पदच्छेद— तेन अहम् निगृहीतः अस्मि भवता भूरि कर्मणा।
बद्धः च वारुणैः पाशैः न अति व्रीडे न च व्यथे ॥

शब्दार्थ—

तेन	१. इसलिये	बद्धः च	१०. बाँधा गया हूँ और
अहम्	५. मैं जो	वारुणैः	८. वरुण
निगृहीतः	६. दण्डित हो	पाशैः	९. पाश से
अस्मि	७. रहा हूँ	न	११. इसकी न तो
भवता	४. आपके द्वारा	अतिव्रीडे	१२. मुझे लज्जा है
भूरि	२. अनन्त !	न च	१३. और न
कर्मणा।	३. लीलाओं वाले	व्यथे।	१४. व्यथा ही है

श्लोकार्थ—इसलिये अनन्त ! लीलाओं वाले ! आपके द्वारा मैं जो दण्डित हो रहा हूँ और वरुण पाश से बाँधा गया हूँ, इसकी न तो मुझे लज्जा है और न व्यथा ही है ॥

अष्टमः श्लोकः

पितामहो मे भवदीयसंमतः प्रह्लाद आविष्कृतसाधुवादः।
भवद्विपक्षेण विचित्रवैशसं संप्रापितस्त्वत्परमः स्वपित्रा ॥८॥

पदच्छेद— पितामहः मे भवदीयसंमतः प्रह्लाद आविष्कृत साधुवादः।
भवत् विपक्षेण विचित्र वैशसम् संप्रापितः त्वत् परमः स्वपित्रा ॥

शब्दार्थ—

पितामहः	२. पितामह	भवत् विपक्षेण	९. आपसे विरोध के कारण
मे	१. मेरे	विचित्र	१०. (प्रह्लाद जी को) अनेक प्रकार के
भवदीय	६. वे आपके भक्तों में	वैशसम्	११. कष्ट
संमतः	७. श्रेष्ठ माने गये हैं	संप्रापितः	१२. दिये पर
प्रह्लादः	३. प्रह्लाद जी की	त्वत्	१३. वे आपके ही
आविष्कृत	५. संसार में प्रसिद्ध है	परमः	१४. परायण बने रहे
आधुवादः।	४. कीर्ति	स्वपित्रा ॥	८. पिता हिरण्यकशिपु ने उनके

श्लोकार्थ—मेरे पितामह प्रह्लाद जी की कीर्ति संसार में प्रसिद्ध है। वे आपके भक्तों में श्रेष्ठ माने गये हैं। उनके पिता हिरण्यक शिपु ने आपसे विरोध के कारण प्रह्लाद जी को अनेक प्रकार के कष्ट दिये पर वे आपके परायण ही बने रहे ॥

नवमः श्लोक

किमात्मनानेन जहाति योऽन्ततः किंरिक्थहारैः स्वजनाख्यदस्युभिः ।
किं जायया संसृतिहेतुभूतया मर्त्यस्य गेहैः किमिहायुषो व्ययः ॥९॥

पदच्छेद—किम् आत्मना अनेन जहाति यः अन्ततः किम् रिक्थहारैः स्वजन आख्य दस्युभिः ।
किम् जायया संसृति हेतु भूतया मर्त्यस्य गेहैः किम् इह आयुषः व्ययः ॥

शब्दार्थ—

किम् आत्मना	४.	शरीर से क्या प्रयोजन है	किम्	१२.	क्या लाभ है
अनेन	३.	ऐसे इस	जायया	११.	पत्नी से भी
जहाति	२.	साथ छोड़ देता है	संसृति	९.	जन्म-मरण रूप संसार की
यः अन्ततः	१.	जो अन्त में	हेतुभूतया	१०.	कारण भूत
किम्	८.	क्या प्रयोजन है	मर्त्यस्य गेहैः	१३.	मरणधर्मा व्यक्ति को घर से
रिक्थहारैः	५.	धन-सम्पत्ति लेने वाले पुत्रादि	किम्	१४	क्या प्रयोजन है
स्वजन	६.	स्वजन	इह	१५.	इस संसार में तो इनमें
आख्यदस्युभिः ।	७	नामक लुटेरों से भी	आयुषः व्ययः ॥	१६.	आयु क्षीण ही हो रही है

श्लोकार्थ—जो अन्त में साथ छोड़ देता है ? ऐसे शरीर से क्या प्रयोजन है ? धन-सम्पत्ति लेने वाले पुत्रादि स्वजन नामक लुटेरों से भी क्या प्रयोजन है ? जन्म-मरण रूप संसार की कारण भूत पत्नी से क्या लाभ है ? मरणधर्मा व्यक्ति को घर से क्या प्रयोजन है ? इस संसार में तो इनमें आयु क्षीण ही हो रही है ॥

दशमः श्लोकः

इत्थं स निश्चित्य पितामहो महानगाधबोधो भवतः पादपद्मम् ।
ध्रुवं प्रपेदे ह्यकुतोभयं जनाद् भीतः स्वपक्षक्षपणस्य सत्तमः ॥१०॥

पदच्छेद— इत्थम् स निश्चित्य पितामहः महान् अगाध बोधः भवतः पाद पद्मम् ।
ध्रुवम् प्रपेदे हि अकुतः भयम् जनाद् भीतः स्वपक्ष क्षपणस्य सत्तमः ॥

शब्दार्थ—

इत्थम्	५.	ऐसा	ध्रुवम्	१५.	निश्चित रूप से
सः	३.	उन	प्रपेदे	१६.	प्राप्त कर लिया
निश्चित्य	६	निश्चय करके	हि अकुतः	१३.	रहित
पितामहः	४.	मेरे पितामह ने	भयम्	१२.	भय
महान् अगाध	१	परम विरक्त अगाध	जनाद् भीतः	७.	संसार के लोगों से भयभीत होकर
बोधः	२	बोध सम्पन्न	स्वपक्ष	८.	उनके ही भाई बन्धुओं का
भवतः	११.	आप के	क्षपणस्य	९.	नाश करने वालों में
पाद पद्मम् ।	१४.	चरण कमलों को	सत्तमः ॥	१०.	श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—परम विरक्त, अगाध बोध सम्पन्न, उन मेरे पितामह ने ऐसा निश्चय करके संसार के लोगों से भयभीत होकर उनके ही भाई बन्धुओं का नाश करने वालों में श्रेष्ठ आपके भय-रहित चरण-कमलों को निश्चित रूप से प्राप्त कर लिया ॥

एकादशः श्लोकः

अथाहमप्यात्मरिपोस्तवान्तिकं दैवेन नीतः प्रसभं त्याजितश्रीः ।
इदं कृतान्तान्तिकवर्ति जीवितं यया ध्रुवं स्तब्धमतिर्न बुध्यते ॥११॥

पदच्छेद— अथ अहम् अपि आत्मरिपोः तव अन्तिकम् दैवेन नीतः प्रसभम् त्याजित श्रीः ।
इदम् कृतान्त अन्तिकवर्ति जीवितम् यया ध्रुवम् स्तब्ध मतिः न बुध्यते ॥

शब्दार्थ—

अथ	१. तदनन्तर	इदम्	१०. यह
अहम् अपि	२. मैं भी कृतान्त	कृतान्त	१२. मृत्यु के
आत्मरिपोः	७. अपने शत्रु	अन्तिकवर्ति	१३. निकट रहने वाले हैं
तव अन्तिकम्	८. आपके पास	जीवितम्	११. जीवन तो
दैवेन	३. विधाता के द्वारा	यया	१४. जिससे
नीतः	९. पहुँचा दिया गया हूँ	ध्रुवम्	१६. सत्यतत्त्व
प्रसभम्	६. बल पूर्वक	स्तब्धमतिः	१५. बुद्धि जड़ हो जाने के कारण
त्याजित	५. अलग करके	न	१८. नहीं आता
श्रीः ।	४. लक्ष्मी से	बुध्यते ॥	१७. समझ में

श्लोकार्थ— तदनन्तर मैं भी विधाता के द्वारा लक्ष्मी से अलग करके बलपूर्वक अपने शत्रु आपके पास पहुँचा दिया गया हूँ । यह जीवन तो मृत्यु के निकट रहने वाला है । जिससे बुद्धि जड़ हो जाने के कारण सत्य तत्त्व समझ में नहीं आता है ॥

द्वादशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—तस्येत्थं भाषमाणस्य प्रह्लादो भगवत्प्रियः ।
आजगाम कुरुश्रेष्ठ राकापतिरिवोत्थितः ॥१२॥

पदच्छेद— तस्य इत्थम् भाषमाणस्य प्रह्लादः भगवत् प्रियः ।
आजगाम कुरुश्रेष्ठ राकापतिः इव उत्थितः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	२. राजा बलि के	आजगाम	११. वहाँ आ पहुँचे
इत्थम्	३. इस प्रकार	कुरुश्रेष्ठ	१. हे परीक्षित् !
भाषमाणस्य	४. कहते-कहते ही	राकापतिः	९. चन्द्रमा
प्रह्लादः	७. प्रह्लाद	इव	१०. के समान
भगवत् ।	५. भगवान् के	उत्थितः ॥	८. उदय होते हुये
प्रियः	६. प्रेम पात्र		

श्लोकार्थ— हे परीक्षित ! राजा बलि के इस प्रकार कहते-कहते ही भगवान् के प्रेम-पात्र प्रह्लाद जी उदय होते हुये चन्द्रमा के समान वहाँ पर आ पहुँचे ॥

त्रयोदशः श्लोकः

तमिन्द्रसेनः स्वपितामहं श्रिया विराजमानं नलिनायतेक्षणम् ।
प्रांशुं पिशङ्गाम्बरमञ्जनत्विषं प्रलम्बबाहुं सुभगं समैक्षत ॥१३॥

पदच्छेद— तम् इन्द्रसेनः स्वपितामहम् श्रिया विराजमानम् नलिन आयत ईक्षणम् ।
प्रांशुं पिशङ्ग अम्बरम् अञ्जनत्विषम् प्रलम्ब बाहुम् सुभगम् समैक्षत ॥

शब्दार्थ—

तम्	१४.	उन	प्रांशुम्	१०.	ऊँचे और
इन्द्रसेनः	१.	राजा बलि ने	पिशङ्ग	१२.	पीत
स्वपितामहम्	१५.	अपने पितामह प्रह्लाद जी को	अम्बरम्	१३.	वस्त्र धारण किये हुये
श्रिया	२.	श्री	अञ्जनत्विषम्	११.	श्याम आभा से युक्त शरीर वाले
विराजमानम्	३.	सम्पन्न	प्रलम्ब	७.	लम्बी-लम्बी
नलिन	४.	कमल के समान	बाहुम्	८.	भुजाओं वाले
आयत	५.	चौड़े	सुभगम्	९.	सुन्दर
ईक्षणम् ।	६.	नेत्रों वाले	समैक्षत ॥	१६.	देखा

श्लोकार्थ—राजा बलि ने श्री सम्पन्न कमल समान चौड़े नेत्रों वाले, लम्बी-लम्बी भुजाओं वाले, सुन्दर ऊँचे और श्याम आभा से युक्त शरीर वाले, पीत वस्त्र धारण किये हुये उन अपने पितामह प्रह्लाद जी को देखा ।।

चतुर्दशः श्लोकः

तस्मै बलिर्वारुणपाशयन्त्रितः समर्हणं नोपजहार पूर्ववत् ।
ननाम मूर्ध्नाश्रुविलोललोचनः सव्रीडनीचीनमुखो बभूव ह ॥१४॥

पदच्छेद— तस्मै बलिः वारुण पाश यन्त्रितः सम् अर्हणम् न उपजहार पूर्ववत् ।
ननाम मूर्ध्ना अश्रुविलोललोचनः सव्रीडम् नीचीन मुखः बभूव ह ॥

शब्दार्थ—

तस्मै	२.	इस समय	ननाम	१५.	झुकाकर प्रणाम किया
बलिः	१.	बलि	मूर्ध्ना	१४.	उन्होंने सिर
वारुण	३.	वरुण के	अश्रुविलोल	१०.	आंसुओं से चंचल हो उठे
पाश	४.	पाश में	लोचनः	९.	उनके नेत्र
यन्त्रितः	५.	बँधे हुये थे अतः	सव्रीडनीचीन	१२.	लज्जा से नीचा
सम् अर्हणम्	७.	उनकी भली भाँति	मुखः	११.	मुख
न उपजहार	८.	पूजा न कर सके	बभूव ह ॥	१३.	हो गया
पूर्ववत् ।	६	पहले के समान			

श्लोकार्थ—बलि इस समय वरुण के पाश में बँधे हुये थे । अतः पहले के समान उनकी भली-भाँति पूजा न कर सके । उनके नेत्र आँसुओं से चंचल हो उठे, मुख लज्जा से नीचा हो गया । उन्होंने सिर झुका कर प्रणाम किया ।

पञ्चदशः श्लोकः

स तत्र हासीनमुदीक्ष्य सत्पतिं सुनन्दनन्दाद्यनुगैरुपासितम् ।
उपेत्य भूमौ शिरसा महामना ननाम मूर्ध्ना पुलकाश्रु विक्लवः ॥१५॥

पदच्छेद— सः तत्र ह आसीनम् उदीक्ष्य सत्पतिम् सुनन्द नन्द आदि अनुगैः उपासितम् ।
उपेत्य भूमौ शिरसा महामनाः ननाम मूर्ध्ना पुलक अश्रु विक्लवः ॥

शब्दार्थ—

सः तत्र	१.	उन्होंने वहाँ पर	उपेत्य	९.	उनके पास पहुँच कर
ह आसीनम्	७.	विराजमान	भूमौ	१४.	पृथ्वी पर रख कर
उदीक्ष्य	८.	देख कर तथा	शिरसा	१३.	सिर को
सत्पतिम्	६.	भक्त वत्सल भगवान् को	महामनाः	१२.	महापुरुष प्रह्लाद जी ने
सुनन्द	२.	सुनन्द	ननाम	१६.	प्रणाम किया
नन्द आदि	३.	नन्द आदि	मूर्ध्ना	१५.	मस्तक से उन्हें
अनुगैः	४.	पार्षदों द्वारा	पुलक	१०.	पुलकित शरीर तथा
उपासितम् ।	५.	सेवित	अश्रु विक्लवः ॥	११.	अश्रु परिपूर्ण नेत्रों से

श्लोकार्थ—उन्होंने वहाँ पर सुनन्द आदि पार्षदों द्वारा सेवित भक्त वत्सल भगवान् को विराजमान देख कर तथा उनके पास पहुँच कर पुलकित शरीर तथा अश्रु परिपूर्ण नेत्रों से महापुरुष प्रह्लाद जी ने सिर को पृथ्वी पर रख कर मस्तक से प्रणाम किया ।

षोडशः श्लोकः

प्रह्लाद उवाच—

त्वयैव दत्तं पदमैन्द्रमूर्जितं हृतं तदेवाद्य तथैव शोभनम् ।
मन्ये महानस्यकृतो ह्यनुग्रहो विभ्रंशितो यच्छ्रिय आत्ममोहनात् ॥१६॥

पदच्छेद— त्वया एव दत्तम् पदम् ऐन्द्रम् ऊर्जितम् हृतम् तत् एव अद्य तथैव शोभनम् ।
मन्ये महान् अस्य कृतः हि अनुग्रहः विभ्रंशितः यत् श्रियः आत्म मोहनात् ॥

शब्दार्थ—

त्वया एव	१.	अपने ही (बलि को)	मन्ये	१२.	मानता हूँ
दत्तम् पदम्	४.	पद दिया था	महान्	१०.	महान्
ऐन्द्रम्	३.	इन्द्र	अस्य कृतः	९.	मैं तो इसके लिये
ऊर्जितम्	२.	ऐश्वर्य पूर्ण	हि अनुग्रहः	११	कृपा ही
हृतम्	८.	छीन लिया है	विभ्रंशितः	१६.	अलग कर दिया है
तत् एव	५.	उसे ही	यत्	१३.	जो कि
अद्य तथैव	६.	आज उसी प्रकार	श्रियः	१५.	राज्य लक्ष्मी
शोभनम् ।	७	सुन्दरता पूर्वक	आत्ममोहनात् ॥	१४.	आत्मा को मोहित करने वाली

श्लोकार्थ—आपने ही बलि को ऐश्वर्य पूर्ण इन्द्र पद दिया था । उसे ही आज उसी प्रकार सुन्दरता पूर्वक छीन लिया है । मैं तो इसके लिये महान् कृपा ही मानता हूँ । जो कि आत्मा को मोहित करने वाली राज्य लक्ष्मी से उसे अलग कर दिया है ॥

सप्तदशः श्लोकः

यया हि विद्वानपि मुह्यते यतस्तत् को विचष्टे गतिमात्मनो यथा ।
तस्मै नमस्ते जगदीश्वराय वै नारायणायाखिललोकसाक्षिणे ॥१७॥

पदच्छेद— यया हि विद्वान् अपि मुह्यते यतः कः विचष्टे गतिम् आत्मनः यथा ।
तस्मै नमः ते जगदीश्वराय वै नारायणाय अखिललोक साक्षिणे ॥

शब्दार्थ—

यया हि	२.	जिस लक्ष्मी से	यथा	८.	भली भाँति
विद्वान् अपि	३.	विद्वान् भी	तस्मै	१०.	इसलिये
मुह्यते	४.	मोहित होते हैं	नमः	१६.	नमस्कार है
यतः	१.	क्योंकि	ते	१५.	आपको
तत्	५.	उसके रहते	जगदीश्वराय	१३.	जगत् के महान् ईश्वर
कः	७.	कौन	वै नारायणाय	१४.	नारायण देव
विचष्टे	९.	जान सकता है	अखिल	११.	समस्त
गतिम् आत्मनः ।	६.	अपने स्वरूप को	लोक साक्षिणे ॥	१२.	संसार के साक्षी

श्लोकार्थ—क्योंकि जिस लक्ष्मी से विद्वान् भी मोहित होते हैं । उसके रहते अपने स्वरूप को कौन भली-भाँति जान सकता है । इसलिये समस्त संसार के साक्षी जगत् के महान् ईश्वर नारायण देव आपको नमस्कार है ॥

अष्टादशः श्लोकः

तस्यानुशृण्वतो राजन् प्रह्लादस्य कृताञ्जलेः ।
हिरण्यगर्भो भगवानुवाच मधुसूदनम् ॥१८॥

पदच्छेद— तस्य अनुशृण्वतः राजन् प्रह्लादस्य कृत अञ्जलेः ।
हिरण्यगर्भः भगवान् उवाच मधु सूदनम् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	४.	उस	अञ्जलेः ।	२.	अञ्जलि
अनुशृण्वतः	६.	सुनते हुये ही	हिरण्यगर्भः	८.	ब्रह्मा जी ने
राजन्	१.	हे परीक्षित् !	भगवान्	७.	भगवान्
प्रह्लादस्य	५.	प्रह्लाद के	उवाच	१०.	कुछ कहना चाहा
कृत	३.	बाँध कर खड़े	मधुसूदनम् ॥	९.	वामन भगवान् से

श्लोकार्थ — हे परीक्षित् ! अञ्जलि बाँध कर खड़े हुये प्रह्लाद के सुनते हुये ही भगवान् ब्रह्मा जी ने वामन भगवान् से कुछ कहना चाहा ॥

एकोनविंशः श्लोकः

बद्धं वीक्ष्य पतिं साध्वी तत्पत्नी भयविह्वला ।
प्राञ्जलिः प्रणतोपेन्द्रं बभाषेऽवाङ्मुखी नृप ॥१९॥

पदच्छेद— बद्धम् वीक्ष्य पतिम् साध्वी तत् पत्नी भय विह्वला ।
प्राञ्जलिः प्रणत उपेन्द्रम् बभाषे अवाङ् मुखी नृप ॥

शब्दार्थ—

बद्धम् वीक्ष्य	६.	बँधा देख कर	प्राञ्जलिः	१०.	वह हाथ जोड कर
पतिम्	५.	अपने पति को	प्रणतः	९.	भगवान् को प्रणाम किया
साध्वी	३.	परम साध्वी	उपेन्द्रम्	१३.	भगवान् से
तत्	२.	उस बलि की	बभाषे	१४.	बोली
पत्नी	४.	पत्नी ने	अवाङ्	१२.	नीचा करके
भय	७.	भय से	मुखी	११.	मुँह
विह्वला ।	८.	विह्वल हो कर	नृप ॥	१.	परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उस बलि की परम साध्वी पत्नी ने अपने पति को बँधा देख कर भय से विह्वल होकर भगवान् को प्रणाम किया । वह हाथ जोड़ कर मुँह नीचा करके भगवान् से बोली ॥

विंशः श्लोकः

क्रीडार्थमात्मन इदं त्रिजगत् कृतं ते
स्वाम्यं तु तत्र कुधियोऽपर ईश कुर्युः ।
कर्तुः प्रभोस्तव किमस्यत आवहन्ति
त्यक्तह्रियस्त्वदवरोपितकर्तृवादाः ॥२०॥

पदच्छेद— क्रीडा अर्थम् कर्तुः आत्मनः इदम् त्रिजगत् कृतम् ते
स्वाम्यम् तु तत्र कुधियः अपर ईश कुर्युः ।
कर्तुः प्रभोस्तव किमस्यत आवहन्ति
त्यक्तह्रियस्त्वदवरोपितकर्तृवादाः ॥

शब्दार्थ—

क्रीडा अर्थम्	४.	क्रीडा के लिये ही	कर्तुः	१५.	जगत् के कर्ता
आत्मनः इदम्	३.	अपनी इस	प्रभोः	१.	हे प्रभो !
त्रिजगत् कृतम्	५.	तीनों लोकों की रचना की है	तव किम्	१७.	आप को क्या
ते	२.	आपने	अस्यत	१६.	पालक तथा संहर्ता
स्वाम्यम्	९.	अपने को स्वामी	आवहन्ति	१८.	अर्पित करेंगे
तु तत्र	६.	यहाँ पर	त्यक्तह्रियः	१४.	लज्जाहीन वे
कुधियः	८.	दुर्बुद्धिजन	त्वत्	११.	आपकी माया के
अपर ईश	७.	दूसरे कुछ ऐश्वर्यशाली	अवरोपित	१२.	आरोप से अपने को
कुर्युः ।	१०.	मानते हैं	कर्तृवादाः ॥	१३	कर्ता मानने वाले

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आपने अपनी इस क्रीड़ा के लिये ही तीनों लोकों की रचना की है । यहां पर दूसरे कुछ ऐश्वर्यशाली दुर्बुद्धि जन अपने को स्वामी मानते हैं । आपकी माया के आरोप से अपने को कर्ता मानने वाले लज्जाहीन वे जगत् के कर्ता, पालक तथा संहर्ता आपको क्या अर्पित करेंगे ॥

एकविंशः श्लोकः

ब्रह्मोवाच— भूतभावन भूतेश देवदेव जगन्मय ।
मुञ्चैनं हृतसर्वस्वं नायमर्हति निग्रहम् ॥२१॥

पदच्छेद— भूत भावन भूतेश देवदेव जगन्मय ।
मुञ्च एनम् हृत सर्वस्वम् न अयम् अर्हति निग्रहम् ॥

शब्दार्थ—

भूत	१.	समस्त प्राणियों के	एनम्	६.	आप इसे
भावन	२.	जीवन दाता	हृत सर्वस्वम्	८.	सर्वस्व हरण करने के बाद
भूतेश	३.	उनके स्वामी	न	१२.	नहीं है
देवदेव	४.	देवाधिदेव	अयम्	९.	यह
जगन्मय ।	५.	जगत्स्वरूप हे प्रभो !	अर्हति	११.	होने योग्य
मुञ्च	७.	छोड़ दीजिये	निग्रहम् ॥	१०.	दण्ड का पात्र

श्लोकार्थ—समस्त प्राणियों के जीवन दाता, उनके स्वामी, देवाधिदेव, जगत्स्वरूप, हे प्रभो, आप इसे छोड़ दीजिये । सर्वस्व हरण करने के बाद यह दण्ड का पात्र होने योग्य नहीं है ॥

द्वाविंशः श्लोकः

कृत्स्ना तेऽनेन दत्ता भूर्लोकाः कर्मार्जिताश्च ये ।
निवेदितं च सर्वस्वमात्माविक्लवया धिया ॥२२॥

पदच्छेद— कृत्स्ना ते अनेन दत्ता भूर्लोकाः कर्माजिताः च ये ।
निवेदितम् च सर्वस्वम् आत्मा अविक्लवया धिया ॥

शब्दार्थ—

कृत्स्ना	५.	सम्पूर्ण	ये ।	८.	जो
ते	४.	आपको	निवेदितम्	१४.	समर्पित कर दिया है
अनेन	३.	इन्होंने	च	११.	और
दत्ता	१०.	दान कर दिया है	सर्वस्वम्	१२.	सब कुछ (यहाँ तक कि)
भूर्लोक	६.	पृथ्वी लोक	आत्मा	१३.	आत्मा तक
कर्माजिताः	९.	पुण्य कर्मों से प्राप्त स्वर्गादि	अविक्लवया	१.	स्थिर
च	७	और	धिया ॥	२.	बुद्धि से

श्लोकार्थ—स्थिर बुद्धि से इन्होंने आपको सम्पूर्ण पृथ्वी लोक और जो पुण्य कर्मों से प्राप्त स्वर्गादि हैं दान कर दिया है । और सब कुछ यहाँ तक की आत्मा तक समर्पित कर दिया है ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

यत्पादयोरशठधीः सलिलं प्रदाय
दूर्वाङ्कुरैरपि विधाय सतीं सपर्याम्।
अप्युत्तमां गतिमसौ भजते त्रिलोकीं
दाश्वानविक्लवमनाः कथमार्तिमृच्छेत् ॥२३॥

पदच्छेद— यत्पादयोः अशठधीः सलिलम् प्रदाय दूर्वा अङ्कुरैः अपि विधाय सतीम् सपर्याम्। अपि उत्तमाम् गतिम् असौ भजते त्रिलोकीम् दाश्वान् अविक्लवमनाः कथम् आर्तिम् ऋच्छेत् ॥

शब्दार्थ—

यत्	१.	जो	उत्तमाम्	११.	उत्तम
पादयोः	३.	आप के चरणों में	गतिम्	१२.	गति को
अशठधीः	२.	बुद्धि वाला प्राणी	असौ	९.	वह
सलिलम् प्रदाय	४.	जल और अर्घ्य देकर	भजते	१३.	प्राप्त करता है फिर
दूर्वा अङ्कुरैः अपि	५	दूर्वादल से भी	त्रिलोकीम्	१५.	त्रिलोकी का
विधाय	८.	करता है	दाश्वान्	१६	दान करने वाला
सतीम्	६.	आप की सच्ची	अविक्लवमनाः	१४.	स्थिर मन से
सपर्याम्।	७.	पूजा	कथम् आर्तिम्	१७.	कैसे दुःख को
अपि	१०.	भी	ऋच्छेत् ॥	१८.	प्राप्त कर सकता है

श्लोकार्थ—जो शुद्ध बुद्धि वाला प्राणी आपके चरणों में जल और अर्घ्य देकर दूर्वादल से भी आपकी सच्ची पूजा करता है वह भी गति को प्राप्त करता है। फिर स्थिर मन से त्रिलोकी का दान करने वाला कैसे दुःख प्राप्त कर सकता है ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—ब्रह्मन् यमनुगृह्णामि तद्विशो विधुनोम्यहम्।
तन्मदः पुरुषः स्तब्धो लोकं मां चावमन्यते ॥२४॥

पदच्छेद— ब्रह्मन् यम् अनुगृह्णामि तद्विशो विधुनोति अहम्।
तत् मदः पुरुषः स्तब्धः लोकम् माम् च अवमन्यते ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मन्	१.	हे ब्रह्मा जी !	यत् मदः	७	जिस धन के मद से
यम्	३.	जिस पर	पुरुषः	९.	वह व्यक्ति
अनुगृह्णामि	४.	कृपा करता हूँ	स्तब्धः	८.	मतवाला होकर
तत् विशः	५.	उसका धन	लोकम्	१०.	संसार के लोगों का
विधुनोति	६.	छीन लेता हूँ	माम् च	११.	और मेरा
अहम्।	२.	मैं	अवमन्यते ॥	१२.	तिरस्कार करता है

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मा जी ! मैं जिस पर कृपा करता हूँ। उसका धन छीन लेता हूँ। जिस धन के मद से मतवाला होकर वह व्यक्ति संसार के लोगों का और मेरा तिरस्कार करता है ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

यदा कदाचिज्जीवात्मा संसरन् निजकर्मभिः ।
नानायोनिष्वनीशोऽयं पौरुषीं गतिमाव्रजेत् ॥२५॥

पदच्छेद— यदा कदाचित् जीवात्मा संसरन् निज कर्मभिः ।
नाना योनिषु अनोशः अयम् पौरुषीम् गतिम् आव्रजेत् ॥

शब्दार्थ—

यदा	८.	जब	नानायोनिषु	६.	नाना प्रकार की योनियों में
कदाचित्	९.	कभी	अनीशः	३.	विवश होकर
जीवात्मा	१.	जीवात्मा	अयम्	१.	यह
संसरन्	७.	भटकता हुआ	पौरुषीम्	१०.	मनुष्य का
निज	४.	अपने	गतिम्	११.	शरीर
कर्मभिः ।	५.	कर्मों के कारण	आव्रजेत् ॥	१२	प्राप्त करता है

श्लोकार्थ— यह जीवात्मा विवश होकर अपने कर्मों के कारण नाना प्रकार की योनियों में भटकता हुआ जब कभी मनुष्य का शरीर प्राप्त करता है ॥

षड्विंशः श्लोकः

जन्मकर्मवयोरूपविद्यैश्वर्यधनादिभिः ।
यद्यस्य न भवेत् स्तम्भस्तत्रायं मदनुग्रहः ॥२६॥

पदच्छेद— जन्म कर्म वयः रूप विद्या ऐश्वर्य धन आदिभिः ।
यदि अस्य न भवेत् स्तम्भः तत्र अयम् मद् अनुग्रहः ॥

शब्दार्थः—

जन्म	१.	कुलीनता	यदि	९.	यदि
कर्म	२.	कर्म	अस्य	१०.	इसको
वयः	३.	अवस्था	न	१२.	न
रूप	४.	रूप	भवेत्	१३.	होवे
विद्या	५.	विद्या	स्तम्भः	११.	घमण्ड
ऐश्वर्य	६	ऐश्वर्य	तत्र	१४.	तो
धन	७.	धन	अयम्	१५.	यह
आदिभिः ।	८.	आदि के कारण	मद् अनुग्रहः ॥	१६.	मेरी कृपा ही है

श्लोकार्थ— कुलीनता, कर्म, अवस्था, रूप, विद्या, ऐश्वर्य, धन, आदि के कारण यदि इसको घमण्ड न हो तो यह मेरी कृपा ही है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

मानस्तम्भनिमित्तानां जन्मादीनां समन्ततः ।
सर्वश्रेयः प्रतीपानां हन्त मुह्येन्न मत्परः ॥२७॥

पदच्छेद— मान स्तम्भ निमित्तानाम् जन्म आदीनाम् समन्ततः ।
सर्व श्रेयः प्रतीपानाम् हन्त मुह्येत् न मत् परः ॥

शब्दार्थ—

मानः	५. अभिमान और	सर्वश्रेयः	८. जो समस्त कल्याणों से
स्तम्भः	६. जड़ता आदि के	प्रतीपानाम्	९. वञ्चित करने वाले हैं
निमित्तानाम्	७. कारण हैं	हन्त	१. खेद की बात है कि
जन्म	२. कुलीनता	मुह्येत्	११. इनसे मोहित
आदीनाम्	३. आदि	न	१२. नहीं होता है
समन्ततः ।	४. अनेक कारण	मत् परः ॥	१०. मेरे परायण भक्त

श्लोकार्थ— खेद की बात है कि कुलीनता आदि अनेक कारण अभिमान और जड़ता आदि के कारण हैं। जो समस्त कल्याणों से वञ्चित करने वाले हैं। मेरे परायण भक्त इनमें मोहित नहीं होते हैं ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

एष दानवदैत्यानामग्रणीः कीर्तिवर्धनः ।
अजैषीदजयां मायां सीदन्नपि न मुह्यति ॥२८॥

पदच्छेद — एषः दानव दैत्यानाम् अग्रणीः कीर्ति वर्धनः ।
अजैषीत् अजयाम् मायाम् सीदन् अपि न मुह्यति ॥

शब्दार्थ—

एषः	१. यह बलि	अजैषीत्	९. जीत लिया है
दानव	२. दानव और	अजयाम्	७. इसने अजेय
दैत्यानाम्	३. दैत्य दोनों में ही	मायाम्	८. माया को भी
अग्रणीः	४. अग्रगण्य और	सीदन्	१०. इतना दुःख भोगने पर
कीर्तिः	५. उनकी कीर्ति को	अपि	११. भी यह
वर्धनः ।	६. बढ़ाने वाला है	न मुह्यति ॥	१२. मोहित नहीं हुआ है

श्लोकार्थ— यह बलि दानव और दैत्य दोनों में ही अग्रगण्य और उनकी कीर्ति को बढ़ाने वाला है। इसने अजेय माया को भी जीत लिया है। इतना दुःख भोगने पर भी मोहित नहीं हुआ है ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

क्षीणरिक्थश्च्युतः स्थानात् क्षिप्तो बद्धश्च शत्रुभिः ।
ज्ञातिभिश्च परित्यक्तो यातनामनुयापितः ॥२६॥

पदच्छेद— क्षीण रिक्थः च्युतः स्थानात् क्षिप्तः बद्धः च शत्रुभिः ।
ज्ञातिभिः च परित्यक्तः यातनाम् अनुयापितः ॥

शब्दार्थ—

क्षीण	२. क्षीण होने	च	६. और
रिक्थः	१. धन	शत्रुभिः ।	७. शत्रुओं द्वारा
च्युतः	४. अलग होने	ज्ञातिभिः च	९. और भाई बन्धुओं द्वारा
स्थानात्	३. राजपद से	परित्यक्तः	१०. छोड़ देने तथा
क्षिप्तः	५. आक्षेप किये जाने	यातनाम्	११. अनेक कष्टों से
बद्धः	८. बाँधे जाने	अनुभावितः ॥	१२. पीडित होने पर भी (यह स्थिर रहा)

श्लोकार्थ—धन क्षीण होने, राजपद से अलग होने, आक्षेप किये जाने और शत्रुओं द्वारा बांधे जाने और भाई-बन्धुओं द्वारा छोड़ देने तथा अनेक कष्टों से पीड़ित होने पर भी यह स्थिर रहा ॥

त्रिंशः श्लोकः

गुरुणा भर्त्सितः शप्तो जहौ सत्यं न सुव्रतः ।
छलैरुक्तो मया धर्मो नायं त्यजति सत्यवाक् ॥३०॥

पदच्छेद— गुरुणा भर्त्सितः शप्तः जहौ सत्यम् न सुव्रतः ।
छलैःउक्तः मया धर्मः न अयम् त्यजति सत्यवाक् ॥

शब्दार्थ—

गुरुणा	१. गुरु के द्वारा	छलैरुक्तः	९. छल पूर्वक उपदेश देने पर भी
भर्त्सितः	२. डाँटे जाने और	मया धर्मः	८. मेरे द्वारा धर्म का
शप्तः	३. शाप देने पर भी	न	१३. नहीं
जहौ	७. छोड़ा	अयम्	१०. इसने
सत्यम्	५. सत्य को	त्यजति	१४. छोड़ा
न	६ नहीं	सत्य	११. सत्य
सुव्रतः ।	४. दृढव्रती इसने	वाक् ॥	१२. वचन को

श्लोकार्थ—गुरु के द्वारा डाँटे जाने पर और शाप देने पर भी दृढ़व्रती इसने सत्य को नहीं छोड़ा । मेरे द्वारा धर्म का छल पूर्वक उपदेश देने पर भी इसने सत्य वचन को नहीं छोड़ा ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

एष मे प्रापितः स्थानं दुष्प्रापममरैरपि ।
सावर्णेरन्तरस्यायं भवितेन्द्रो मदाश्रयः ॥३१॥

पदच्छेद— एष मे प्रापितः स्थानम् दुष्प्रापम् अमरैः अपि ।
सावर्णेः अन्तरस्य अयम् भविता इन्द्रः मद् आश्रयः ॥

शब्दार्थ—

एषः	२.	इसे	सावर्णेः	८.	सावर्णि
मे	१.	मैंने	अन्तरस्य	९.	मन्वन्तर में
प्रापितः	७.	दिया	अयम्	१०.	यह
स्थानम्	६.	स्थान	भविता	१४.	होगा
दुष्प्रापम्	५.	कठिनाई से प्राप्त होने वाला	इन्द्रः	१३.	इन्द्र
अमरैः	३.	देवताओं को	मद्	११.	मेरा
अपि ।	४	भी	आश्रयः ॥	१२.	परम भक्त

श्लोकार्थ—मैंने इसे देवताओं को भी कठिनाई से प्राप्त होने वाला स्थान दिया है। सावर्णि मन्वन्तर में यह मेरा परमभक्त इन्द्र होगा ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

तावत् सुतलमध्यास्तां विश्वकर्मविनिर्मितम् ।
यत्राधयो व्याधयश्च क्लमस्तन्द्रा पराभवः ।
नोपसर्गा निवसतां संभवन्ति ममेक्षया ॥३२॥

पदच्छेद— तावत् सुतलम् अध्यास्ताम् विश्वकर्म विनिर्मितम् ।
यत् न आधयः व्याधयः च क्लमः तन्द्रा पराभवः ।
न उपसर्गाः निवसताम् संभवन्ति मम ईक्षया ॥

शब्दार्थ—

तावत्	१.	तब तक यह	क्लमः	१२.	थकावट
सुतलम्	४.	सुतल	तन्द्रा	१३.	तन्द्रा
अध्यास्ताम्	५.	लोक में रहे	पराभवः ।	१४.	पराजय और
विश्वकर्म	२.	विश्वकर्मा द्वारा	न उपसर्गाः	१५.	विघ्न नहीं
विनिर्मितम् ।	३.	बनाये हुये	निवसताम्	९	रहने पर
यत् न	८.	जहाँ	संभवन्ति	१६.	होते हैं
आधयः	१०.	मानसिक रोग	मम	६.	मेरी
व्याधयः च	११.	शारीरिक रोग और	ईक्षया ॥	७.	कृपा दृष्टि से

श्लोकार्थ—तब-तक यह विश्वकर्मा द्वारा बनाये हुये सुतल लोक में रहे। मेरी कृपा दृष्टि से जहाँ रहने पर मानसिक रोग, शारीरिक रोग और थकावट, तन्द्रा, पराजय और विघ्न नहीं होते हैं ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

इन्द्रसेन महाराज याहि भो भद्रमस्तु ते ।
सुतलं स्वर्गिभिः प्रार्थ्यं ज्ञातिभिः परिवारितः ॥३३॥

पदच्छेद— इन्द्रसेन महाराज याहि भो भद्रम् अस्तु ते ।
सुतलम् स्वर्गिभिः प्रार्थ्यम् ज्ञातिभिः परिवारितः ॥

शब्दार्थ—

इन्द्रसेन	३.	इन्द्रसेन !	ते	४.	तुम्हारा
महाराज	२.	महाराज	सुतलम्	११.	सुतललोक में
याहि	१२.	जाओ	स्वर्गिभिः	९.	देवताओं द्वारा
भो	१.	हे	प्रार्थ्यम्	१०	चाहे गये
भद्रम्	५.	कल्याण	ज्ञातिभिः	७.	तुम भाई बन्धुओं के
अस्तु	६.	हो	परिवारितः ॥	८.	साथ

श्लोकार्थ—हे महाराज इन्द्रसेन ! तुम्हारा कल्याण हो । तुम भाई बन्धुओं के साथ देवताओं द्वारा चाहे गये सुतललोक में जाओ ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

न त्वामभिभविष्यन्ति लोकेशाः किमुतापरे ।
त्वच्छासनातिगान् दैत्यांश्चक्रं मे सूदयिष्यति ॥३४॥

पदच्छेद— न त्वाम् अभिभविष्यन्ति लोकेशाः किमुत अपरे ।
त्वच्छासन अतिगान् दैत्याः चक्रम् मे सूदयिष्यति ॥

शब्दार्थ—

न	४.	नहीं कर सकेंगे	त्वच्छासन	७.	तुम्हारी आज्ञा का
त्वाम्	२.	तुम्हें	अतिगान्	८.	उल्लंघन करने वाले
अभिभविष्यन्ति	३.	पराजित	दैत्याः	९.	दैत्यों का
लोकेशाः	१.	बड़े-बड़े लोकपाल भी	चक्रम्	११.	चक्र
किमुत	६.	कहना ही क्या है	मे	१०.	मेरा
अपरे ।	५.	फिर अन्य लोगों का तो	सूदयिष्यति ॥	१२.	टुकड़े-टुकड़े कर देगा ।

श्लोकार्थ—बड़े-बड़े लोकपाल भी तुम्हें पराजित नहीं कर सकेंगे । फिर अन्य लोगों का तो कहना ही क्या है । तुम्हारी आज्ञा का उल्लंघन करने वाले दैत्यों का मेरा चक्र टुकड़े-टुकड़े कर देगा ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

रक्षिष्ये सर्वतोऽहं त्वां सानुगं सपरिच्छदम् ।
सदा सन्निहितं वीर तत्र मां द्रक्ष्यते भवान् ॥३५॥

पदच्छेद— रक्षिष्ये सर्वतः अहम् त्वाम् स अनुगम् सपरिच्छदम् ।
सदा सन्निहितम् वीर तत्र माम् द्रक्ष्यते भवान् ॥

शब्दार्थ—

रक्षिष्ये	६.	रक्षा करूँगा	सदासन्निहितम्	११.	सदैव अपने पास ही
सर्वतः	५.	सब प्रकार से	वीर	७.	हे वीरबलि !
अहम्	१.	मैं	तत्र	१०.	वहाँ
त्वाम्	२.	तुम्हारी	माम्	९.	मुझे
स अनुगम्	३.	तुम्हारे अनुचरों और	द्रक्ष्यते	१२.	देखोगे
सपरिच्छदम् ।	४.	भोग-सामग्री की भी	भवान् ॥	८.	तुम

श्लोकार्थ——मैं तुम्हारी तुम्हारे अनुचरों और भोग सामग्री की भी सब प्रकार से रक्षा करूँगा । हे वीर बलि ! तुम मुझे वहाँ सदैव अपने पास ही देखोगे ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

तत्र दानवदैत्यानां सङ्गात् ते भाव आसुरः ।
दृष्ट्वा मदनुभावं वै सद्यः कुण्ठो विनङ्क्ष्यति ॥३६॥

पदच्छेद— तत्र दानव दैत्यानाम् सङ्गात् ते भाव आसुरः ।
दृष्ट्वा मत् अनुभावम् वै सद्यः कुण्ठः विनङ्क्ष्यति ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ	दृष्ट्वा	११.	देख कर
दानव	२.	दानव और	मत्	९.	वह मेरे
दैत्यानाम्	३.	दैत्यों के	अनुभावम्	१०.	प्रभाव को
सङ्गात्	४.	संसर्ग से जो कुछ	वै	८.	निश्चय ही
ते	५.	तुम्हारा	सद्यः	१२.	तुरन्त
भाव	७.	भाव होगा	कुण्ठः	१३.	दब जायेगा और
आसुरः ।	६.	आसुर	विनङ्क्ष्यति ॥	१४.	नष्ट हो जायेगा

श्लोकार्थ——वहाँ दानव और दैत्यों के संसर्ग से जो कुछ तुम्हारा आसुर भाव होगा । निश्चय ही वह मेरे प्रभाव को देख कर तुरन्त दब जायेगा और नष्ट हो जायेगा ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमे स्कन्धे
वामनप्रादुर्भावे बलिवामन संवादो नाम द्वाविंशः अध्यायः ॥२२॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्
अष्टमः स्कन्धः
त्रयोविंशः अध्यायः
प्रथमः श्लोकः

श्रीशुकउवाच— इत्युक्तवन्तं पुरुषं पुरातनं
महानुभावोऽखिलसाधुसंमतः।
बद्धाञ्जलिर्बाष्पकलाकुलेक्षणो
भक्त्युद्गलो गद्गदया गिराब्रवीत् ॥१॥

पदच्छेद—इति उक्तवन्तम् पुरुषम् पुरातनम् महानुभावः अखिल साधु संमतः।
बद्ध अञ्जलिः बाष्प कला आकुल ईक्षणः भक्ति उद्गलः गद्गदया गिरा अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

इति	३.	इस प्रकार	बद्ध अञ्जलिः	१५.	वे हाथ जोड़कर
उक्तवन्तम्	४.	कहा तो	बाष्पकला	१०.	अश्रुविन्दु
पुरुषम्	२.	पुरुष भगवान् ने	आकुल	११.	छलक आये
पुरातनम्	१.	सनातन	ईक्षणः	९.	नेत्रों में
महानुभावः	८.	महानुभाव बलि के	भक्तिः	१२.	प्रेम के
अखिल	५.	समस्त	उद्गलः	१३.	उद्रेक से
साधु	६.	साधुओं के	गद्गदया गिरा	१४.	गद्गदवाणी से
संमतः।	७.	आदरणीय	अब्रवीत् ॥	१६.	बोले

श्लोकार्थ—सनातन पुरुष भगवान् ने इस प्रकार कहा तो समस्त साधुओं के आदरणीय महानुभाव-बलि के नेत्रों में अश्रुविन्दु छलक आये। प्रेम के उद्रेक से गद्गदवाणी से वे हाथ जोड़कर बोले ॥

द्वितीयः श्लोकः

बलिरुवाच—अहो प्रणामाय कृतः समुद्यमः प्रपन्नभक्तार्थविधौ समाहितः।
यल्लोकपालैस्त्वदनुग्रहोऽमरैरलब्धपूर्वोऽपसदेऽसुरेऽर्पितः ॥२॥

पदच्छेद—अहो प्रणामाय कृतः समुद्यमः प्रपन्न भक्तार्थ विधौ समाहितः।
यत् लोक पालैः त्वद् अनुग्रह अमरैः अलब्ध पूर्वः अपसदे असुरे अर्पितः ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	अहा	यत् लोकपालैः	९	जो बड़े-बड़े लोकपालों और
प्रणामाय	२.	मैंने तो प्रणाम की	त्वद् अनुग्रहः	८.	आपकी कृपा
कृतः समुद्यमः	३.	चेष्टा ही की है	अमरैः अलब्ध	१०.	देवताओं को नहीं प्राप्त हुई
प्रपन्न	४.	आपके शरणागत	पूर्वः	७.	पहले
भक्तार्थविधौ	५.	भक्तों को प्राप्त होने वाला फल	अपसदे	११.	वही मुझ नीच
समाहितः।	६.	मिल गया	असुरे अर्पितः ॥	१२.	असुर को प्राप्त हो गई।

श्लोकार्थ—अहा मैंने तो प्रणाम की चेष्टा ही की है। भक्तों को प्राप्त होने वाला फल मिल गया। पहले जो आपकी कृपा बड़े-बड़े लोकपालों और देवताओं को भी नहीं प्राप्त हुई, वही मुझ नीच असुर को प्राप्त हो गई ॥

तृतीयः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्युक्त्वा हरिमानम्य ब्रह्माणं सभवं ततः ।
विवेश सुतलं प्रीतो बलिर्मुक्तः सहासुरैः ॥३॥

पदच्छेद— इति उक्त्वा हरिम् आनम्य ब्रह्माणम् सभवम् ततः ।
विवेश सुतलम् प्रीतः बलिः मुक्तः सह असुरैः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	विवेश	१४.	चले गये
उक्त्वा	२.	कहते ही	सुतलम्	१३.	सुतल लोक में
हरिम्	५.	भगवान्	प्रीतः	१०.	बड़ी प्रसन्नता से
आनम्य	८.	प्रणाम करके	बलिः	३.	बलि
ब्रह्माणम्	६.	ब्रह्मा जी और	मुक्तः	४.	पाश मुक्त होकर
सभवम्	७.	शंकर जी को	सह	१२.	साथ
ततः ।	९.	तब	असुरैः ॥	११.	असुरों के

श्लोकार्थ—इस प्रकार कहते ही बलि पाश मुक्त होकर भगवान् ब्रह्मा जी और शंकर जी को प्रणाम करके तब बड़ी प्रसन्नता से असुरों के साथ सुतललोक को चले गये ॥

चतुर्थः श्लोकः

एवमिन्द्राय भगवान् प्रत्यानीय त्रिविष्टपम् ।
पूरयित्वादितेः काममशासत् सकलं जगत् ॥४॥

पदच्छेद— एवम् इन्द्राय भगवान् प्रत्यानीय त्रिविष्टपम् ।
पूरयित्वा अदितेः कामम् अशासत् सकलम् जगत् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	पूरयित्वा	८.	पूरी करके
इन्द्राय	५.	इन्द्र को दे दिया	अदितेः	६.	अदिति की
भगवान्	२.	भगवान् ने	कामम्	७.	कामना
प्रत्यानीय	४.	लेकर	अशासत्	११.	पालन करने लगे
त्रिविष्टपम् ।	३.	स्वर्ग का राज्य	सकलम्	९.	समस्त
			जगत् ॥	१०.	संसार का

श्लोकार्थ—इस प्रकार भगवान् ने स्वर्ग का राज्य लेकर इन्द्र को दे दिया । अदिति की कामना पूरी करके समस्त संसार का पालन करने लगे ॥

पञ्चमः श्लोकः

लब्धप्रसादं निर्मुक्तं पौत्रं वंशधरं बलिम् ।
निशाम्य भक्तिप्रवणः प्रह्लाद इदमब्रवीत् ॥५॥

पदच्छेद— लब्ध प्रसादम् निर्मुक्तम् पौत्रं वंशधरं बलिम् ।
निशाम्य भक्ति प्रवणः प्रह्लादः इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

लब्ध	७. प्राप्त	निशाम्य	८. देखकर
प्रसादम्	६. भगवान् की कृपा	भक्ति	९. भक्ति-भाव से
निर्मुक्तम्	५. तथा बन्धन से छूटा हुआ	प्रवणः	१०. युक्त होकर
पौत्रम्	३. पौत्र	प्रह्लादः	१. प्रह्लाद जी
वंशधरम्	२. अपने वंशधर	इदम्	११. ऐसा
बलिम् ।	४. राजा बलि को	अब्रवीत् ॥	१२. कहा

श्लोकार्थ—प्रह्लाद जी ने अपने वंशधर पौत्र राजा बलि को बन्धन से छूटा हुआ तथा भगवान् की कृपा प्राप्त देखकर भक्ति-भाव से युक्त होकर ऐसा कहा ॥

षष्ठः श्लोकः

प्रह्लाद उवाच—नेमं विरिञ्चो लभते प्रसादं न श्रीर्न शर्वः किमुतापरे ते ।
यन्नोऽसुराणामसि दुर्गपालो विश्वाभिवन्द्यैरपि वन्दिताङ्घ्रिः ॥६॥

पदच्छेद— न इमम् विरिञ्चः लभते प्रसादम् न श्रीः न शर्वः किमुत अपरे ते ।
यत् नः असुराणाम् असि दुर्गपालः विश्वअभिवन्द्यैः अपि वन्दित अङ्घ्रिः ॥

शब्दार्थ—

न	३. न तो	यत्	१४. जो कि
इमम्	१. यह	नः	१५. हम
विरिञ्चः	४. ब्रह्मा जो	असुराणाम्	१६. असुरों के
लभते	७. प्राप्त हुआ है	असि	१८. हो गये हैं
प्रसादम्	२. कृपाप्रसाद	दुर्गपालः	१७. दुर्गपाल
न श्रीः न	५. न लक्ष्मी जी और	विश्वअभिवन्द्यैः	१०. विश्ववन्द्य ब्रह्मा जो
शर्वः	६. न शंकर जी को ही	अपि	११. द्वारा भी
किमुत	९. बात ही क्या	वन्दित	१३. वन्दित
अपरे ते ।	८ फिर अन्य पुरुषों की तो	अङ्घ्रिः ॥	१२. चरण परमात्मा

श्लोकार्थ—यह कृपा प्रसाद न तो ब्रह्मा जी, न लक्ष्मी जी और न शंकर जी को ही प्राप्त हुआ है। फिर अन्य पुरुषों की तो बात ही क्या है। विश्ववंद्य ब्रह्मा जी द्वारा भी वन्दित चरण परमात्मा, जो की हम असुरों के दुर्गपाल हो गये है ॥

सप्तमः श्लोकः

यत्पादपद्ममकरन्दनिषेवणेन
ब्रह्मादयः शरणदाश्नुवते विभूतीः ।
कस्माद् वयं कुसृतयः खलयोनयस्ते
दाक्षिण्यदृष्टिपदवीं भवतः प्रणीताः ॥७॥

पदच्छेद—यत् पाद पद्म मकरन्द निषेवणेन ब्रह्मा आदयः शरणद अश्नुवते विभूतीः ।
कस्मात् वयम् कुसृतयः खलयोनयः ते दाक्षिण्य दृष्टि पदवीम् भवतः प्रणीताः ॥

शब्दार्थ—

यत्	१.	जिनके	कस्मात्	१५.	कैसे
पादपद्म	२.	चरण कमलों के	वयम्	९.	हम
मकरन्द	३.	मकरन्द रस का	कुसृतयः	१०.	कुमार्गगामी
निषेवणेन	४.	सेवन करने के कारण	खलयोनयः	११.	दुष्ट आपकी
ब्रह्मा आदयः	५.	ब्रह्मा आदि	दाक्षिण्यदृष्टि	१२.	कृपा दृष्टि के
शरणद	८.	हे शरणदाता !	पदवीम्	१३.	विषय बनकर
अश्नुवते	७.	प्राप्त करते हैं	भवतः	१४.	आपके कृपा पात्र
विभूतीः ।	६.	विभूतियाँ	प्रणीताः ॥	१६.	बन गये

श्लोकार्थ—जिनके चरण कमलों के मकरन्द रस का सेवन करने के कारण ब्रह्मा आदि विभूतियाँ प्राप्त करते हैं । हे शरणदाता ! हम कुमार्गगामी दुष्ट आपकी कृपा दृष्टि के विषय बनकर आपके कृपा-पात्र कैसे बन गये ?

अष्टमः श्लोकः

चित्रं तवेहितमहोऽमितयोगमाया-
लीलाविसृष्टभुवनस्य विशारदस्य ।
सर्वात्मनः समदृशो विषमः स्वभावो
भक्तिप्रियो यदसि कल्पतरुस्वभावः ॥८॥

पदच्छेद—चित्रम् तव ईहितम् अहो अमित योग माया लीला विसृष्ट भुवनस्य विशारदस्य ।
सर्वात्मनः समदृशः विषमः स्वभावः भक्तिप्रियः यदसि कल्पतरु स्वभावः ॥

शब्दार्थ—

चित्रम्	३.	बड़ी विलक्षण हैं	विशारदस्य ।	४.	आप सर्वज्ञ
तव ईहितम्	२.	आपकी लीलायें	सर्वात्मनः	५.	सर्वात्मा परमात्मा
अहो	१.	आश्चर्य है	समदृशः	११.	समदर्शी होने पर भी
अमित	६.	अचिन्त्य	विषमः	१३.	विपरीत
योगमाया	७.	योग माया की	स्वभावः	१४.	स्वभाव होने के कारण
लीला	८.	लीला से	भक्तिप्रियः	१६.	भक्तों से प्रेम करते हैं
विसृष्ट	१०.	रचना करते हैं	यदसि	१५.	जो कि आप
भुवनस्य	९.	समस्त संसार की	कल्पतरु स्वभावः ॥	१२.	कल्पवृक्ष के समान

श्लोकार्थ—आश्चर्य है ! आपकी लीलायें बड़ी विलक्षण हैं । आप सर्वज्ञ सर्वात्मा परमात्मा अचिन्त्य योगमाया की लीला से समस्त संसार की रचना करते हैं । समदर्शी होने पर भी विपरीत स्वभाव होने के कारण जो कि आपभक्तों से प्रेम करते हैं ॥

नवमः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच— वत्स प्रह्लाद भद्रं ते प्रयाहि सुतलालयम् ।
मोदमानः स्वपौत्रेण ज्ञातीनां सुखमावह ॥९॥

पदच्छेद— वत्स प्रह्लाद भद्रं ते प्रयाहि सुतल आलयम् ।
मोदमानः स्व पौत्रेण ज्ञातीनाम् सुखम् आवह ॥

शब्दार्थ—

वत्स	१. बेटा	मोदमानः	९. आनन्द पूर्वक रहकर
प्रह्लाद	२. प्रह्लाद	स्व	७. अपने
भद्रम् ते	३. तुम्हारा कल्याण हो	पौत्रेण	८. पौत्र के साथ
प्रयाहि	६. जाओ	ज्ञातीनाम्	१०. बन्धु-बान्धवों को
सुतल	४. तुम सुतल	सुखम्	११. सुख
आलयम् ।	५. लोक में	आवह ॥	१२. प्रदान करो

श्लोकार्थ—बेटा प्रह्लाद ! तुम्हारा कल्याण हो । तुम सुतल लोक में जाओ । अपने पौत्र के साथ आनन्दपूर्वक रहकर बन्धु-बान्धवों को सुख प्रदान करो ॥

दशमः श्लोकः

नित्यं द्रष्टासि मां तत्र गदापाणिमवस्थितम् ।
मद्दर्शनमहाह्लादध्वस्तकर्मनिबन्धनः॥ ॥१०॥

पदच्छेद— नित्यम् द्रष्टा असि माम् तत्र गदापाणिम् अवस्थितम् ।
मत् दर्शन महाआह्लादध्वस्त कर्म निबन्धनः ॥

शब्दार्थ—

नित्यम्	३. नित्य ही	मत्	८. मेरे
द्रष्टा असि	७. देखोगे	दर्शन	९. दर्शन के
माम्	२. मुझे	महा	१०. परम
तत्र	१. वहाँ तुम	आह्लाद	११. आनन्द के कारण
गदा	४. गदा	ध्वस्त	१४. छूट जायेंगे
पाणिम्	५ हाथ में लिये	कर्म	१२. तुम्हारे कर्म
अवस्थितम् ।	६. खड़ा	निबन्धनः ॥	१३. बन्धन

श्लोकार्थ—वहाँ तुम मुझे नित्य ही गदा हाथ में लिये खड़ा देखोगे । मेरे दर्शन के परम आनन्द के कारण तुम्हारे कर्म बन्धन छूट जायेंगे ॥

एकादशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच---आज्ञां भगवतो राजन्प्रह्लादो बलिना सह ।
बाढमित्यमलप्रज्ञो मूर्ध्न्याधाय कृताञ्जलिः ॥११॥

पदच्छेद— आज्ञाम् भगवतः राजन् प्रह्लादः बलिना सह ।
बाढम् इति अमलप्रज्ञः मूर्ध्नि आधाय कृत अञ्जलिः ॥

शब्दार्थ—

आज्ञाम्	८.	आज्ञा को	इति	१४.	ऐसा कहा
भगवतः	७.	भगवान् की	अमल	२.	विशुद्ध
राजन्	१.	हे परीक्षित् !	प्रज्ञः	३.	बुद्धि
प्रह्लादः	४.	प्रह्लाद जी ने	मूर्ध्नि	९.	मस्तक पर
बलिना	५.	बलि के	आधाय	१०.	चढ़ाकर
सह ।	६.	साथ	कृत	१२.	जोड़ कर
बाढम्	१३.	जो आज्ञा	अञ्जलिः ॥	११.	हाथ

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! विशुद्ध बुद्धि प्रह्लाद जी ने बलि के साथ भगवान् की आज्ञा को मस्तक पर चढ़ाकर हाथ जोड़कर जो आज्ञा ऐसा कहा ॥

द्वादशः श्लोकः

परिक्रम्यादिपुरुषं सर्वासुरचमूपतिः ।
प्रणतस्तदनुज्ञातः प्रविवेश महाबिलम् ॥१२॥

पदच्छेद— परिक्रम्य आदि पुरुषम् सर्वअसुर चमूपतिः ।
प्रणतः तत् अनुज्ञातः प्रविवेश महा बिलम् ॥

शब्दार्थ—

परिक्रम्य	५.	परिक्रमा करके और	प्रणतः	६.	प्रणाम करके तथा
आदि	३.	आदि	तत्	७.	उनसे
पुरुषम्	४.	पुरुष भगवान् की	अनुज्ञातः	८.	आज्ञा पाकर
सर्व असुर	१.	समस्त असुरों और	प्रविवेश	१०.	प्रवेश किया
चमूपतिः ।	२.	सेनापतियों के साथ	महाबिलम्	९.	सुतल लोक में

श्लोकार्थ—समस्त असुरों और सेनापतियों के साथ आदि पुरुष, भगवान् की परिक्रमा करके और प्रणाम करके उनसे आज्ञा पाकर सुतल लोक में प्रवेश किया ॥

त्रयोदशः श्लोकः

अथाहोशनसं राजन् हरिर्नारायणोऽन्तिके ।
आसीनमृत्विजां मध्ये सदसि ब्रह्मवादिनाम् ॥१३॥

पदच्छेद— अथ आह उशनसम् राजन् हरिः नारायणः अन्तिके ।
आसीनम् ऋत्विजाम् मध्ये सदसि ब्रह्म वादिनाम् ॥

शब्दार्थ—

अथ	२.	तदनन्तर	आसीनम्	११.	बैठे हुये
आह	१३.	कहा	ऋत्विजाम्	७.	ऋत्विजों को
उशनसम्	१२.	शुक्राचार्य से	मध्ये	६.	बीच में
राजन्	१.	हे परीक्षित् !	सदसि	८.	सभा के
हरिः	४.	श्री हरि ने	ब्रह्म	५.	ब्रह्म
नारायणः	३.	भगवान्	वादिनाम् ॥	७.	वादी
अन्तिके ।	१०.	अपने पास			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! तदनन्तर भगवान् श्रीहरि ने ब्रह्मवादी ऋत्विजों की सभा के बीच में अपने पास बैठे हुये शुक्राचार्य से कहा ।।

चतुर्दशः श्लोकः

ब्रह्मन् संतनु शिष्यस्य कर्मच्छिद्रं वितन्वतः ।
यत् तत् कर्मसु वैषम्यं ब्रह्मदृष्टं समं भवेत् ॥१४॥

पदच्छेद— ब्रह्मन् संतनु शिष्यस्य कर्मच्छिद्रम् वितन्वतः ।
यत् तत् कर्मसु वैषम्यम् ब्रह्मदृष्टम् समम् भवेत् ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मन्	१.	हे ब्रह्मन् !	यत्	७.	क्योंकि जो
संतनु	६.	पूर्ण कर दीजिये	तत्	६.	कुछ
शिष्यस्य	४.	शिष्य की	कर्मसु	८.	कर्मों में
कर्म	२.	कर्म	वैषम्यम्	१०.	भूल-चूक होती है वह
च्छिद्रम्	५	त्रुटियों को	ब्रह्मदृष्टम्	११.	ब्राह्मणों की कृपादृष्टि से
वितन्वतः ।	३.	सम्पादित करते हुये	समम्	१२.	ठीक
			भवेत् ॥	१३.	हो जाती है

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! कर्म सम्पादित करते हुये शिष्य की त्रुटियों को पूर्ण कर दीजिये, क्योंकि जो कर्मों में कुछ भूल-चूक होती है वह ब्राह्मणों की कृपादृष्टि से ठीक हो जाती है ।।

पञ्चदशः श्लोकः

शुक्र उवाच—कुतस्तत्कर्मवैषम्यं यस्य कर्मेश्वरो भवान्।
यज्ञेशो यज्ञपुरुषः सर्वभावेन पूजितः ॥१५॥

पदच्छेद— कुतः तत् कर्म वैषम्यम् यस्य कर्म ईश्वरः भवान्।
यज्ञेशः यज्ञ पुरुषः सर्व भावेन पूजितः ॥

शब्दार्थ—

कुतः	३. कैसे हो सकती है	यज्ञेशः	७. यज्ञेश्वर
तत् कर्म	१. उसके कर्म में	यज्ञ	५. यज्ञ
वैषम्यम्	२. कोई विषमता	पुरुषः	६. पुरुष
यस्य कर्म	४. जिसने अपने कर्म से	सर्व	१०. सब
ईश्वरः	९. परमात्मा की	भावेन	११. प्रकार से
भवान्।	८. आप	पूजितः ॥	१२. पूजा की है

श्लोकार्थ—उसके कर्म में कोई विषमता कैसे हो सकती है, जिसने अपने कर्म से यज्ञपुरुष, यज्ञेश्वर आप परमात्मा की सब प्रकार से पूजा की है ॥

षोडशः श्लोकः

मन्त्रतस्तन्त्रतश्छिद्रं देशकालार्हवस्तुतः।
सर्वं करोति निश्छिद्रं नामसंकीर्तनं तव ॥१६॥

पदच्छेद— मन्त्रतः तन्त्रतः छिद्रम् देश काल अर्ह वस्तुतः।
सर्वम् करोति निश्छिद्रम् नाम संकीर्तनम् तव ॥

शब्दार्थ—

मन्त्रतः	१. मन्त्रों की	सर्वम्	६. सारी
तन्त्रतः	२. अनुष्ठान पद्धति को	करोति	१२. कर देता है
छिद्रम्	७. भूलें	निश्छिद्रम्	११. पूरी
देशकाल	३. देश काल	नाम	९. नाम
अर्ह	४. पात्र और	संकीर्तनम्	१०. संकीर्तन
वस्तुतः।	५. वस्तु की	तव ॥	८. आपका

श्लोकार्थ—क्योंकि मन्त्रों की अनुष्ठान पद्धति को देश, काल, पात्र और वस्तु की सारी भूलें आपका नाम-संकीर्तन पूरी कर देता है ॥

सप्तदशः श्लोकः

तथापि वदतो भूमन् करिष्याम्यनुशासनम् ।
एतच्छ्रेयः परं पुंसां यत् तवाज्ञानुपालनम् ॥१७॥

पदच्छेद— तथा अपि वदतः भूमन् करिष्यामि अनुशासनम् ।
एतत् श्रेयः परम् पुंसाम् यत् तव आज्ञा अनुपालनम् ॥

शब्दार्थ—

तथा	१.	फिर	श्रेयः	१४.	कल्याण का साधन है
अपि	२.	भी	परम्	१३.	सबसे बड़ा
वदतः	४.	आपकी कही हुई	पुंसाम्	१२.	मनुष्य के लिये
भूमन्	३.	हे अनन्त !	यत्	७.	जो
करिष्यामि	६.	पालन करूँगा	तव	८.	आपकी
अनुशासनम्	५.	आज्ञा का मैं	आज्ञा	९.	आज्ञा का
एतत्	११.	यही	अनुपालनम् ॥	१०.	पालन करता है

श्लोकार्थ—फिर भी हे अनन्त ! आपकी कही हुई आज्ञा का मैं पालन करूँगा । जो आपकी आज्ञा का पालन करता है । यही मनुष्य के लिये सबसे बड़ा कल्याण का साधन है ॥

अष्टादशः श्लोकः

शुक्र उवाच—अभिनन्द्य हरेराज्ञामुशना भगवानिति ।
यज्ञच्छिद्रं समाधत्त बलेर्विप्रर्षिभिः सह ॥१८॥

पदच्छेद— अभिनन्द्य हरेः आज्ञाम् उशना भगवान् इति ।
यज्ञच्छिद्रम् समाधत्त बलेः विप्रर्षिभिः सह ॥

शब्दार्थ—

अभिनन्द्य	६.	स्वीकार करके	यज्ञ	१०.	यज्ञ की
हरेः	४.	श्री हरि की	छिद्रम्	११.	कमी को
आज्ञाम्	५.	आज्ञा	समाधत्त	१२.	पूरा कर दिया
उशना	३.	शुक्राचार्य जी ने	बलेः	९.	बलि के
भगवान्	२.	भगवान्	विप्रर्षिभिः	७.	ब्रह्मर्षियों के
इति ।	१.	इस प्रकार	सह ॥	८.	साथ

श्लोकार्थ—इस प्रकार भगवान् शुक्राचार्य जी ने श्री हरि की आज्ञा स्वीकार करके ब्रह्मर्षियों के साथ बलि के यज्ञ की कमी को पूरा कर दिया ॥

एकोनविंशः श्लोकः

एवं बलेर्महीं राजन् भिक्षित्वा वामनो हरिः ।
ददौ भ्रात्रे महेन्द्राय त्रिदिवं यत् परैर्हृतम् ॥१९॥

पदच्छेद— एवम् बलेः महीम् राजन् भिक्षित्वा वामनः हरिः ।
ददौ भ्रात्रे महेन्द्राय त्रिदिवम् यत् परैः हृतम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२. इस प्रकार	ददौ	११. दिया
बलेः	५. बलि से	भ्रात्रे	८. अपने बड़े भाई
महीम्	६. पृथ्वी को	महेन्द्राय	९. इन्द्र को
राजन्	१. हे परीक्षित् !	त्रिदिवम्	१०. स्वर्ग का राज्य
भिक्षित्वा	७. भिक्षा माँगकर	यत्	१२. जिसे
वामनः	३. वामन	परैः	१३. उनके शत्रुओं ने
हरिः ।	४. भगवान् ने	हृतम् ॥	१४. छीन लिया था

श्लोकार्थ — हे परीक्षित् ! इस प्रकार वामन भगवान् ने बलि से पृथ्वी को भिक्षा माँगकर अपने बड़े भाई इन्द्र को स्वर्ग का राज्य दिया, जिसे उनके शत्रुओं ने छीन लिया था ॥

विंशः श्लोकः

प्रजापतिपतिर्ब्रह्मा देवर्षिपितृभूमिपैः ।
दक्षभृग्वङ्गिरोमुख्यैः कुमारेण भवेन च ॥२०॥

पदच्छेद — प्रजापतिः पतिः ब्रह्मा देवर्षि पितृ भूमिपैः ।
दक्ष भृगु अङ्गिरस् मुख्यैः कुमारेण भवेन च ॥

शब्दार्थ—

प्रजापति	१. प्रजापतियों के	दक्ष	७. दक्ष
पतिः	२. स्वामी	भृगु	८. भृगु
ब्रह्मा	३. ब्रह्माजी से	अङ्गिरस्	९. अङ्गिरा
देवर्षि	४. देवर्षि	मुख्यैः	१०. आदि तथा
पितृ	५. पितर	कुमारेण	११. सनत्कुमार और
भूमिपैः	६. मनु	भवेन च ॥	१२. शंकर जी के साथ अभिषेक किया

श्लोकार्थ—प्रजापतियों के स्वामी ब्रह्माजी ने देवर्षि, पितर, मनु, दक्ष, भृगु, अङ्गिरा आदि तथा

एकविंशः श्लोकः

कश्यपस्यादितेः प्रीत्यै सर्वभूतभवाय च ।
लोकानां लोकपालानामकरोद् वामनं पतिम् ॥२१॥

पदच्छेद— कश्यपस्य अदितेः प्रीत्यै सर्वभूत भवाय च ।
लोकानाम् लोकपालानाम् अकरोद् वामनम् पतिम् ॥

शब्दार्थ—

कश्यपस्य	१. कश्यप एवम्	लोकानाम्	७. समस्त लोक और
अदितेः	२. अदिति की	लोकपालानाम्	८. लोकपालों के
प्रीत्यै	३. प्रसन्नता के लिये	अकरोद्	११. अभिषेक कर दिया
सर्वभूत	५. सम्पूर्ण प्राणियों के	वामन	१०. वामन भगवान् का
भवाय	६. अभ्युदय के लिये	पतिम् ॥	९. स्वामी के पद पर
च ।	४. और		

श्लोकार्थ—कश्यप एवम् अदिति की प्रसन्नता के लिये और सम्पूर्ण प्राणियों के अभ्युदय के लिये समस्त लोक और लोकपालों के स्वामी के पद पर वामन भगवान् का अभिषेक कर दिया ॥

द्वाविंशः श्लोकः

वेदानां सर्वदेवानां धर्मस्य यशसः श्रियः ।
मङ्गलानां व्रतानां च कल्पं स्वर्गापवर्गयोः ॥२२॥

पदच्छेद— वेदानाम् सर्व देवानाम् धर्मस्य यशसः श्रियः ।
मङ्गलानाम् व्रतानाम् च कल्पम् स्वर्गंअपवर्गयोः ॥

शब्दार्थ—

वेदानाम्	१. वेदों	मङ्गलानाम्	७. मङ्गल
सर्व	२. समस्त	व्रतानाम्	८. व्रत
देवानाम्	३. देव	च	११. और
धर्मस्य	४ धर्म	कल्पम्	१२. रक्षक बना दिया
यशसः	५. यश	स्वर्ग	९. स्वर्ग
श्रियः	६. लक्ष्मी	अपवर्गयोः ॥	११. अपवर्ग का

श्लोकार्थ—वेदों, समस्त देव-कर्म, यश, लक्ष्मी, मङ्गल, व्रत, स्वर्ग और अपवर्ग का रक्षक बना दिया ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

उपेन्द्रं कल्पयाञ्चक्रे पतिं सर्वविभूतये ।
तदा सर्वाणि भूतानि भृशं मुमुदिरे नृप ॥२३॥

पदच्छेद— उपेन्द्रम् कल्पयाम् चक्रे पतिम् सर्व विभूतये ।
तदा सर्वाणि भूतानि भृशम् मुमुदिरे नृप ॥

शब्दार्थ—

उपेन्द्रम्	४.	उन्हें उपेन्द्र	तदा	८.	तब
कल्पयाम्	५.	पद का	सर्वाणि	९.	समस्त
चक्रे	७.	बना दिया	भूतानि	१०.	प्राणियों को
पतिम्	६.	स्वामी	भृशम्	११.	अत्यधिक
सर्व	२.	सब	मुमुदिरे	१२	आनन्द हुआ
विभूतये ।	३.	प्राणियों के हित के लिये	नृप ॥	१.	हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! सब प्राणियों के हित के लिये उन्हें उपेन्द्र पद का स्वामी बना दिया । तब समस्त प्राणियों को अत्यधिक आनन्द हुआ ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

ततस्त्विन्द्रः पुरस्कृत्य देवयानेन वामनम् ।
लोकपालैर्दिवं निन्ये ब्रह्मणा चानुमोदितः ॥२४॥

पदच्छेद— ततः तु इन्द्रः पुरस्कृत्य देवयानेन वामनम् ।
लोकपालैः दिवम् निन्ये ब्रह्मणा च अनुमोदितः ॥

शब्दार्थ—

ततः	२.	इसके बाद	लोकपालैः	५.	लोकपालों के साथ
तु इन्द्रः	६.	इन्द्र ने	दिवम्	१०.	स्वर्ग लोक को
पुरस्कृत्य	८.	आगे करके	निन्ये	११.	ले गये
देवयानेन	९.	विमान पर बैठाकर	ब्रह्मणा	३.	ब्रह्मा जो को
वामनम् ।	७.	वामन भगवान् को	च	१.	और तब
			अनुमोदितः ॥	४.	अनुमति से

श्लोकार्थ—और तब इसके बाद ब्रह्मा जी की अनुमति से लोकपालों के साथ इन्द्र ने वामन भगवान् को आगे करके विमान पर बैठाकर स्वर्गलोक को ले गये ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

प्राप्य त्रिभुवनं चेन्द्र उपेन्द्रभुजपालितः ।

श्रिया परमया जुष्टो मुमुदे गतसाध्वसः ॥२५॥

पदच्छेद— प्राप्य त्रिभुवनं च इन्द्रः उपेन्द्र भुज पालितः ।
श्रिया परमया जुष्टः मुमुदे गत साध्वसः ॥

शब्दार्थ—

प्राप्य	६	पाकर	श्रिया	८.	ऐश्वर्य लक्ष्मी से
त्रिभुवनम्	२.	त्रिभुवन का राज्य	परमया	७.	सर्व श्रेष्ठ
च	३.	और	जुष्टः	९	सेवित होकर तथा
इन्द्रः	१.	इन्द्र ने	मुमुदे	१२.	आनन्दित हो गये
उपेन्द्र	४.	वामन भगवान् के	गत	११.	रहित होकर
भुजपालितः ।	५.	करकमलों की छाया	साध्वसः ॥	१०.	भय

श्लोकार्थ—इन्द्र ने त्रिभुवन का राज्य और वामन भगवान् के करकमलों की छाया पाकर सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्य लक्ष्मी सेवित होकर तथा भय रहित होकर आनन्दित हो गये ॥

षड्विंशः श्लोकः

ब्रह्मा शर्वः कुमारश्च भृग्वाद्या मुनयो नृप ।

पितरः सर्वभूतानि सिद्धा वैमानिकाश्च हि ॥२६॥

पदच्छेद— ब्रह्मा शर्वः कुमारः च भृगु आद्या मुनयः नृप ।
पितरः सर्व भूतानि सिद्धाः वैमानिकाः च ये ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मा	२.	ब्रह्मा	पितरः	८.	पितर
शर्वः	३.	शंकर	सर्व	९.	सारे
कुमारः	४.	कुमार	भूतानि	१०.	भूत
च	५.	और	सिद्धाः	११.	सिद्ध
भृगुआद्याः	६.	भृगु आदि	वैमानिकाः	१४.	विमानरोहो देवगण थे
मुनयः	७.	मुनि	च	१२.	और
नृप ।	१.	हे राजन् !	ये ॥	१३.	जो

श्लोकार्थ—हे राजन् ! ब्रह्मा, शंकर, सनत्कुमार और भृगु आदि मुनि, पितर, सारे भूत, सिद्ध और जो विमानरोही देव गण थे ॥

सप्तविंशः श्लोक

सुमहत् कर्म तद् विष्णोर्गायन्तः परमाद्भुतम् ।
धिष्ण्यानि स्वानि ते जग्मुरदितिं च शशंसिरे ॥२७।

पदच्छेद— सुमहत् कर्म तत् विष्णोः गायन्तः परमा अद्भुतम् ।
धिष्ण्यानि स्वानि ते जग्मुः अदितिम् च शशंसिरे ॥

शब्दार्थ—

सुमहत्	५.	महान्	धिष्ण्यानि	१०.	लोकों को
कर्म	६.	कर्मों का	स्वानि	९.	अपने-अपने
तत्	२.	उन	ते	८.	वे सब
विष्णोः	१.	भगवान् के	जग्मुः	११	चले गये
गायन्तः	७.	गान करते हुये	अदितिम्	१३.	अदिति की
परम	४.	अत्यन्त	च	१२.	और
अद्भुतम् ।	३.	अद्भुत एवम्	शशंसिरे ॥	१४.	प्रशंसा करने लगे

श्लोकार्थ—भगवान् के उन अद्भुत एवम् अत्यन्त महान् कर्मों का गान करते हुये वे सब अपने-अपने लोकों को चले गये और अदिति की प्रशंसा करने लगे ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

सर्वमेतन्मयाऽऽख्यातं भवतः कुलनन्दन ।
उरुक्रमस्य चरितं श्रोतॄणामघमोचनम् ॥२८॥

पदच्छेद— सर्वम् एतत् मया आख्यातम् भवतः कुलनन्दन ।
उरुक्रमस्य चरितम् श्रोतॄणाम् अघ मोचनम् ॥

शब्दार्थ—

सर्वम्	६.	सब	उरुक्रमस्य	४.	भगवान् की
एतत्	५.	यह	चरितम्	७.	लीला
मया	३.	मैंने	श्रोतॄणाम्	९.	जो श्रोताओं के
आख्यातम्	८.	सुना दी	अघ	१०.	समस्त पापों से
भवतः	२.	तुम्हें	मोचनम् ॥	११.	मुक्त कर देती है
कुलनन्दन ।	१.	हे परीक्षित !			

श्लोकार्थ— हे परीक्षित् ! तुम्हें मैंने भगवान् की यह सब लीला सुना दी, जो श्रोताओं को समस्त पापों से मुक्त कर देती है ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

पारं महिम्न उरु विक्रमतो गृणानो
यः पार्थिवानि विममे स रजांसि मर्त्यः ।
किं जायमान उत जात उपैति मर्त्य
इत्याह मन्त्रदृगृषिः पुरुषस्य यस्य ॥२९॥

पदच्छेद—पारम् महिम्नः उरु विक्रमतः गृणानः यः पार्थिवानि विममे स रजांसि मर्त्यः । किम् जायमानः उत जातः उपैति मर्त्यः इतिआह मन्त्र दृक् ऋषिभिः पुरुषस्य।यस्य ॥

शब्दार्थ —

पारम्	६. पार	जायमानः	२३. होगा जो
महिम्नः	५. महिमा का	उत	२२. या
उरु	१. अनेक बार	जातः	२१. उत्पन्न हुआ है
विक्रमतः	४. भगवान् विष्णु की	उपैति	२४. उनका पार पा सके
गृणानः	७. पाना चाहता है	मर्त्यः	२०. ऐसा व्यक्ति
यः	२. जो	इति	१७. ऐसा
पार्थिवानि	९. पृथ्वी के	आह	१८. कहा है कि
विममे	११. गिनवा चाहता हैं	मन्त्र	१२. मन्त्र
सः	८. वह	दृक्	१३. द्रष्टा
रजांसि	१०. परमाणुओं को	ऋषिभिः	१४. ऋषि वशिष्ठ ने
मर्त्यः ।	३. मनुष्य	पुरुषस्य	१६. परम पुरुष के बारे में
किम्	१९. क्या	यस्य ॥	१५. जिस

श्लोकार्थ—अनेक बार जो मनुष्य भगवान् विष्णु की महिमा का पार पाना चाहता है, वह पृथ्वी के परमाणुओं को गिनना चाहता है । मन्त्रद्रष्टा ऋषि वशिष्ठ ने जिस परम पुरुष के बारे में ऐसा कहा है कि क्या ऐसा व्यक्ति उत्पन्न हुआ है या होगा जो उनका पार पा सके ॥

त्रिंशः श्लोकः

य इदं देवदेवस्य हरेरद्भुतकर्मणः ।
अवतारानुचरितं शृण्वन् याति परां गतिम् ॥३०॥

पदच्छेद— य इदम् देव देवस्य हरेः अद्भुत कर्मणः ।
अवतार अनुचरितम् शृण्वन् याति पराम् गतिम् ॥

शब्दार्थ—

य इदम्	८. जो इस प्रकार	अवतार	६. अवतार
देव	१. देवताओं के	अनुचरितम्	७. चरितों का
देवस्य	२. आराध्यदेव	शृण्वन्	९. श्रवण करता है
हरेः	५. भगवान् वामन के	याति	१२. प्राप्त करता है
अद्भुत	३. अद्भुत	पराम्	१०. वह परम
कर्मणः ।	४. लीलाधारी	गतिम् ॥	११. गति को

श्लोकार्थ— देवताओं के आराध्यदेव अद्भुत लीलाधारी भगवान् वामन के अवतार चरित्रों का जो इस प्रकार श्रवण करता है, वह परम गति को प्राप्त करता है ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

क्रियमाणे कर्मणीदं दैवे पित्र्येऽथ मानुषे ।
यत्र यत्रानुकीर्त्येत तत् तेषां सुकृतं विदुः ॥३१॥

पदच्छेद— क्रियमाणे कर्मणिइदम् दैवे पित्र्ये अथ मानुषे ।
यत्र-यत्र अनुकीर्त्येत तत् तेषाम् सुकृतम् विदुः ॥

शब्दार्थ—

क्रियमाणे	६. अनुष्ठान करते समय	यत्र-यत्र	७. जहाँ-जहाँ इसका
कर्मणिइदम्	५. किसी कर्म का	अनुकीर्त्येत	८. कीर्तन होता है
दैवे	१. देव यज्ञ	तत्	१०. वह कर्म
पित्र्ये	२. पितृ यज्ञ	तेषाम्	९. उनका
अथ	३. और	सुकृतम्	११. सफल होता है
मानुषे ।	४. मनुष्य यज्ञ	विदुः ॥	१२. ऐसा विद्वान् लोग कहते हैं ॥

श्लोकार्थ— देवयज्ञ, पितृयज्ञ और मनुष्ययज्ञ किसी कर्म का अनुष्ठान करने समय जहाँ-जहाँ इसका कीर्तन होता है, उनका वह कर्म सफल होता है, ऐसा विद्वान् लोग कहते हैं ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां अष्टमेः स्कन्धेः वामन-अवतार चरिते त्रयोविंशः अध्यायः ॥२३॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

अष्टमः स्कन्धः

चतुर्विंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

राजोवाच— भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि हरेरद्भुतकर्मणः ।
अवतारकथामाद्यां मायामत्स्यविडम्बनम् ॥१॥

पदच्छेद— भगवन् श्रोतुम् इच्छामि हरेः अद्भुत कर्मणः ।
अवतार कथाम् आद्याम् माया मत्स्य विडम्बनम् ॥

शब्दार्थ—

भगवन्	१.	हे भगवान् ।	अवतार	९.	अवतार की
श्रोतुम्	११.	सुनना	कथाम्	१०.	कथा को
इच्छामि	१२.	चाहता हूँ	आद्याम्	८.	आदि
हरेः	५.	भगवान् की	माया	२.	योगमाया से
अद्भुत	६.	अद्भुत	मत्स्य	३.	मत्स्य
कर्मणः ।	७.	लीलाओं से युक्त	विडम्बनम् ॥	४.	अवतार धारण करने वाले

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! योगमाया से मत्स्य अवतार धारण करने वाले भगवान् की अद्भुत लीलाओं से युक्त आदि अवतार की कथा को सुनना चाहता हूँ ॥

द्वितीयः श्लोकः

यदर्थमदधाद् रूपं मात्स्यं लोकजुगुप्सितम् ।
तमःप्रकृति दुर्मर्षं कर्मग्रस्त इवेश्वरः ॥२॥

पदच्छेद— यत् अर्थम् अदधात् रूपम् मात्स्यम् लोक जुगुप्सितम् ।
तमः प्रकृति दुर्मर्षं कर्म ग्रस्त इव ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

यत्	१२.	किस	तमः	३.	तमोगुण
अर्थम्	१३.	प्रयोजन से	प्रकृति	४.	प्रधान
अदधात्	१४.	धारण किया	दुर्मर्षं	५.	असह्य
रूपम्	११.	रूप	कर्म ।	७.	कर्म बन्धन में
मात्स्यम्	१०.	मत्स्य का	ग्रस्तः	८.	बंधे जाव के
लोक	१.	लोक	इव	९.	समान
जुगुप्सितम् ।	२.	निन्दित	ईश्वरः ॥	६.	सर्व शक्तिमान होने पर भी

श्लोकार्थ—लोकनिन्दित, तमोगुण प्रधान, असह्यसर्वशक्तिमान् होने पर भी कर्म बन्धन में बंधे जीव के समान मत्स्य का रूप किस प्रयोजन से धारण किया ॥

तृतीयः श्लोकः

एतन्नो भगवन् सर्वं यथावद् वक्तुमर्हसि ।
उत्तमश्लोकचरितं सर्वलोकसुखावहम् ॥३॥

पदच्छेद— एतत् नः भगवन् सर्वम् यथावत् वक्तुम् अर्हसि ।
उत्तमश्लोक चरितम् सर्वलोक सुख आवहम् ॥

शब्दार्थ—

एतत्	७.	यह	अर्हसि ।	१२.	कृपा कीजिये
नः	९.	हमको	उत्तमश्लोक	२.	भगवान् का
भगवन्	१.	हे भगवन् !	चरितम्	३.	चरित्र
सर्वम्	८.	सब	सर्वलोक	४.	समस्त प्राणियों को
यथावत्	१०.	पूर्णरूप से	सुख	५.	सुख
वक्तुम्	११.	बताने को	आवहम् ॥	६.	देने वाला है

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! भगवान् का चरित्र समस्त प्राणियों को सुख देने वाला है । यह सब हमको बताने की कृपा कीजिये ॥

चतुर्थः श्लोकः

सूत उवाच— इत्युक्तो विष्णुरातेन भगवान् बादरायणिः ।
उवाच चरितं विष्णोर्मत्स्यरूपेण यत् कृतम् ॥४॥

पदच्छेद— इति उक्तः विष्णु रातेन भगवान् बादरायणिः ।
उवाच चरितम् विष्णोः मत्स्य रूपेण यत् कृतम् ॥

शब्दार्थ—

इति	३.	ऐसा	चरितम्	११.	वह सब चरित
उक्तः	४.	पूछे जाने पर	विष्णोः	५.	भगवान् विष्णु ने
विष्णुरातेन	१०.	विष्णु भगवान् का	मत्स्य	६	मत्स्य
भगवान्	१.	भगवान्	रूपेण	७.	रूप धारण करके
बादरायणिः	२.	शुकदेव जी से	यत्	८.	जो चरित्र
उवाच	१२.	वर्णन किया	कृतम् ॥	९.	किया था उन्होंने

श्लोकार्थ—भगवान् शुकदेव जी से ऐसा पूछे जाने पर भगवान् विष्णु ने मत्स्यरूप धारण करके जो चरित्र किया था, उन्होंने विष्णु भगवान् का वह सब चरित्र वर्णन किया ॥

पञ्चमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— गोविप्रसुरसाधूनां छन्दसामपि चेश्वरः ।
रक्षामिच्छंस्तनूर्धत्ते धर्मस्यार्थस्य चैव हि ॥५॥

पदच्छेद— गो विप्र सुर साधूनाम् छन्दसाम् अपि च ईश्वरः ।
रक्षामिच्छन् तनूः धत्ते धर्मस्य अर्थस्य च एव हि ॥

शब्दार्थ—

गो विप्र	३.	गौ ब्राह्मण	रक्षामिच्छन्	१०.	रक्षा के लिये
सुर	४.	देवता	तनूः	११.	शरीर
साधूनाम्	५.	साधु	धत्ते	१२.	धारण करते हैं
छन्दसाम्	६.	वेद	धर्मस्य	७.	धर्म
अपि	२.	भी	अर्थस्य	९.	अर्थ की
च ईश्वरः ।	१.	सर्वशक्तिमान् होने पर	च एव हि ॥	८.	और

श्लोकार्थ—सर्वशक्तिमान् होने पर भी गौ, ब्राह्मण, देवता, साधु, वेद, धर्म और अर्थ की रक्षा के लिये शरीर धारण करते हैं ॥

षष्ठः श्लोकः

उच्चावचेषु भूतेषु चरन् वायुरिवेश्वरः ।
नोच्चावचत्वं भजते निर्गुणत्वाद्धियो गुणैः ॥६॥

पदच्छेद— उच्चावचेषु भूतेषु चरन् वायुः इव ईश्वरः ।
नः उच्चावचत्वम् भजते निर्गुणत्वात् धियः गुणैः ॥

शब्दार्थ—

उच्चावचेषु	४.	ऊँचे-नीचे	न	११.	नहीं
भूतेषु	५.	सभी प्राणियों में	उच्चावचत्वम्	१०.	ऊँचे-नीचे
चरन्	६.	लीला करते हैं	भजते	१२.	होवे हैं
वायुः	२.	वायु के	निर्गुणत्वात्	७.	निर्गुण होने के कारण उनके
इव	३.	समान	धियः	८.	बुद्धि गत
ईश्वरः ।	१.	सर्वशक्तिमान् प्रभु	गुणैः ॥	९.	गुणों से

श्लोकार्थ—सर्वशक्तिमान् प्रभु वायु के समान ऊँचे-नीचे सभी प्राणियों में लीला करते हैं । निर्गुण होने के कारण उनके बुद्धिगत गुणों से ऊँचे-नीचे नहीं होवे हैं ॥

सप्तमः श्लोकः

आसीदतीतकल्पान्ते ब्राह्मो नैमित्तिको लयः ।
समुद्रोपप्लुतास्तत्र लोका भूरादयो नृप ॥७॥

पदच्छेद— आसीत् अतीत कल्प अन्ते ब्राह्मः नैमित्तिकः लयः ।
समुद्र उपप्लुताः तत्र लोकाः भूः आदयः नृप ॥

शब्दार्थ—

आसीत्	८.	था	समुद्र	१३	समुद्र में
अतीत	२.	पिछले	उपप्लुताः	१४	डूब गये थे
कल्प	३.	कल्प के	तत्र	९.	उस समय
अन्ते	४.	अन्त में	लोकाः	१२.	सारे लोक
ब्राह्मः	५.	ब्राह्म नामक	भूः	१०.	भूलोक
नैमित्तिकः	६.	नैमित्तिक	आदयः	११.	आदि
लयः ।	७.	प्रलय हुआ	नृप ॥	१.	हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! पिछले कल्प के अन्त में ब्राह्म नामक नैमित्तिक प्रलय हुआ था । उस समय भूलोक आदि सारे लोक समुद्र में डूब गये थे ॥

अष्टमः श्लोकः

कालेनागतनिद्रस्य धातुः शिशयिषोर्बली ।
मुखतो निःसृतान् वेदान् हयग्रीवोऽन्तिकेऽहरत् ॥८॥

पदच्छेद— कालेन आगत निद्रस्य धातुः शिशयिषोः बली ।
मुखतः निःसृतान् वेदान् हयग्रीवः अन्तिके अहरत् ॥

शब्दार्थ—

कालेन	१.	प्रलय काल में	मुखतः	६.	उनके मुख से
आगत	३.	आ जाने के कारण	निःसृतान्	७.	निकले हुये
निद्रस्य	२.	निद्रा	वेदान्	८.	वेदों को
धातुः	४.	ब्रह्मा जी	हयग्रीवः	१०.	हयग्रीव नामक
शिशयिषोः	५.	सोना चाहते थे	अन्तिके	९	उनके पास रहने वाले
बली ।	११.	दैत्य	अहरत् ॥	१२.	असुर ने चुरा लिया

श्लोकार्थ—प्रलय काल में निद्रा आ जाने के कारण ब्रह्मा जो सोना चाहते थे । उनके मुख से निकले हुये वेदों को उनके पास रहने वाले हयग्रीव नामक बली दैत्य असुर ने चुरा लिया ॥

नवमः श्लोकः

ज्ञात्वा तद् दानवेन्द्रस्य हयग्रीवस्य चेष्टितम् ।
दधार शफरीरूपं भगवान् हरिरीश्वरः ॥९॥

पदच्छेद— ज्ञात्वा तत् दानवेन्द्रस्य हयग्रीवस्य चेष्टितम् ।
दधार शफरीरूपम् भगवान् हरिः ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

ज्ञात्वा	८.	जानकर	दधार	९.	धारण किया
तत्	६.	यह	शफरीरूपम्	८.	मत्स्य अवतार
दानवेन्द्रस्य	४.	दानवराज	भगवान्	२.	भगवान्
हयग्रीवस्य	५.	हयग्रीव की	हरिः	३.	श्री हरि ने
चेष्टितम्	७.	चेष्टा	ईश्वरः ॥	१.	सर्वशक्तिमान्

श्लोकार्थ—सर्वशक्तिमान् भगवान् श्री हरि ने दानव राज हयग्रीव की यह चेष्टा जानकर मत्स्य अवतार धारण किया ॥

दशमः श्लोकः

तत्र राजऋषिः कश्चिन्नाम्ना सत्यव्रतो महान् ।
नारायणपरोऽतप्यत् तपः स सलिलाशनः ॥१०॥

पदच्छेद— तत्र राजऋषिः कश्चित् नाम्ना सत्यव्रतः महान् ।
नारायण परः अतप्यत् तपः सः सलिल अशनः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ पर	नारायण	६.	भगवत्
राजऋषिः	८.	राजर्षि थे	परः	७.	परायण
कश्चित्	४.	कोई	अतप्यत्	१२.	कर रहे थे
नाम्ना	३.	नाम के	तपः	११.	तपस्या
सत्यव्रतः	२.	सत्यव्रत	सः सलिल	९.	वे जल
महान् ।	५.	बड़े उदार	अशनः ॥	१०.	पीकर

श्लोकार्थ—वहाँ पर सत्यव्रत नाम के कोई बड़े उदार भगवत् परायण राजर्षि थे। वे जल पीकर तपस्या कर रहे थे ॥

एकादशः श्लोकः

योऽसावस्मिन् महाकल्पे तनयः स विवस्वतः ।
श्राद्धदेव इति ख्यातो मनुत्वे हरिणार्पितः ॥११॥

पदच्छेद— यः असौ अस्मिन् महाकल्पे तनयः स विवस्वतः ।
श्राद्धदेवः इति ख्यातः मनुत्वे हरिणा अर्पितः ॥

शब्दार्थ—

यः	१. जो	श्राद्धदेवः	७. श्राद्धदेव के
असौ	२. ये	इति	८. नाम से
अस्मिन्	३. वर्तमान	ख्यातः	९. विख्यात हुये
महाकल्पे	४. महाकल्प में	मनुत्वे	१३. वैवस्वत मनु
तनयः	६. पुत्र	हरिणा	१२. भगवान् ने
सः	१०. उन्हें	अर्पितः ॥	१४. बना दिया
विवस्वतः ।	५. विवस्वान् के		

श्लोकार्थ—जो वे वर्तमान महाकल्प में श्राद्धदेव के नाम से विख्यात हुये, उन्हें भगवान् ने वैवस्वत मनु बना दिया ॥

द्वादशः श्लोकः

एकदा कृतमालायां कुर्वतो जलतर्पणम् ।
तस्याञ्जल्युदके काचिच्छफर्येकाभ्यपद्यत ॥१२॥

पदच्छेद— एकदा कृतमाला यां कुर्वतः जल तर्पणम् ।
तस्य अञ्जलि उदके काचित् शफरी एका अभ्यपद्यत ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१. एक बार	तस्य	६. उनकी
कृतमालायाम्	२. कृतमाला नदी में	अञ्जलि	७. अञ्जलि के
कुर्वतः	५. करते समय	उदके	८. जल में
जल	३. जल	काचित्	९. कोई
तर्पणम् ।	४. तर्पण	शफरी एका	१०. एक मछली
		अभ्यपद्यत ॥	११. आ गई

श्लोकार्थ—एक बार कृतमाला नदी में जल तर्पण करते समय उनकी अञ्जलि के जल में कोई एक मछली आ गई ॥

त्रयोदशः श्लोकः

सत्यव्रतोऽञ्जलिगतां सह तोयेन भारत ।
उत्ससर्ज नदीतोये शफरीं द्रविडेश्वरः ॥१३॥

पदच्छेद— सत्यव्रतः अञ्जलि गतां सह तोयेन भारत ।
उत्ससर्ज नदी तोये शफरीम् द्रविड ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

सत्यव्रत	४. सत्यव्रत ने	उत्ससर्ज	१२. डाल दिया
अञ्जलिः	५. अपनी अञ्जलि में	नदी	१०. नदी के
गताम्	६. आई हुई	तोये	११. जल में
सह	९. साथ ही (फिर से)	शफरीम्	७. मछली को
तोयेन	८. जल के	द्रविड	२. द्रविड़ देश के
भारत ।	१. हे परीक्षित् !	ईश्वरः ॥	३. स्वामी

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! द्रविड़ देश के स्वामी सत्यव्रत ने अपनी अञ्जलि में आई हुई मछली को जल के साथ ही फिर से नदी के जल में डाल दिया ।

चतुर्दशः श्लोकः

तमाह सातिकरुणं महाकारुणिकं नृपम् ।
यादोभ्यो ज्ञातिघातिभ्यो दीनां मां दीनवत्सल ।
कथं विसृजसे राजन् भीतामस्मिन् सरिज्जले ॥१४॥

पदच्छेद— तम् आह सःअति करुणम् महाकारुणिकम् नृपम् ।
यादोभ्यः ज्ञाति घातिभ्यः दीनाम् माम् दीनवत्सल ।
कथम् विसृजसे राजन् भीताम् अस्मिन् सरित् जले ॥

शब्दार्थ—

तम् आह	४. उसने कहा	माम्	१३. मुझ
सःअतिकरुणम्	३. अत्यन्तकरुणा के साथ	दीनवत्सलः ।	५. हे दीन वत्सल !
महाकारुणिकम्	१. परम दयालु	कथम्	१५. क्यों
नृपम्	२. राजा से	विसृ-से	१६. डाल रहे हो
यादोभ्यः	११. हिंसक जीवों से	राजन्	६. राजन्
ज्ञाति	९. अपनी जाति वालों को	भीताम्	१४. भयभीत को
घातिभ्यः	१०. खाने वाले	अस्मिन्	७. इस
दीनाम्	१२. पीडित	सरित् जले ॥	८. नदी के जल में

श्लोकार्थ—परम दयालु राजा से अत्यन्त करुणा के साथ उसने कहा, हे दीनवत्सल राजन् ! इस नदी के जल में अपनी जाति वालों को खाने वाले हिंसक जीवों से पीडित मुझ भयभीत को क्यों डाल रहे हो ॥

पञ्चदशः श्लोकः

तमात्मनोऽनुग्रहार्थं प्रीत्या मत्स्यवपुर्धरम् ।
अजानन् रक्षणार्थाय शफर्याः स मनो दधे ॥१५॥

पदच्छेद— तम् आत्मनः अनुग्रहार्थम् प्रीत्या मत्स्य वपुः धरम् ।
अजानन् रक्षण अर्थाय शफर्याः सः मनः दधे ॥

शब्दार्थ—

तम्	७.	उन भगवान् को	अजानन्	८.	न जानते हुये
आत्मनः	१.	अपने पर	रक्षण	११.	रक्षा
अनुग्रहार्थम्	२.	कृपा करने के लिए	अर्थाय	१२.	करने के लिये
प्रीत्या	३.	प्रसन्न होकर	शफर्याः	१०.	मछली की
मत्स्य	४.	मत्स्य	सः	९.	उन्होंने
वपुः	५.	रूप	मनः	१३.	मन ही मन
धरम् ।	६.	धारण करने वाले	दधे ॥	१४.	निश्चय कर लिया

श्लोकार्थ—अपने पर कृपा करने के लिये प्रसन्न होकर मत्स्य रूप धारण करने वाले उन भगवान् को न जानते हुये उन्होंने मछली की रक्षा करने के लिये मन ही मन निश्चय कर लिया ॥

षोडशः श्लोकः

तस्या दीनतरं वाक्यमाश्रुत्य स महीपतिः ।
कलशाप्सु निधायैनां दयालुर्निन्य आश्रमम् ॥१६॥

पदच्छेद— तस्याः दीनतरम् वाक्यम् आश्रुत्य स महीपतिः ।
कलशाप्सु निधाय एनाम् दयालुः निन्ये आश्रमम् ॥

शब्दार्थ—

तस्याः	३.	उस मछली की	कलशाप्सु	९.	कलश के जल में
दीनतरम्	४.	दीनता भरी	निधाय	१०.	रख कर
वाक्यम्	५.	बात	एनाम्	८.	उसे
आश्रुत्य	६.	सुन कर	दयालुः	७.	बड़ी दया से
सः	१.	उस	निन्ये	१२.	ले आये
महीपतिः	२.	राजा ने	आश्रमम् ॥	११.	अपने आश्रम पर

श्लोकार्थ—उस राजा ने उस मछली की दीनता भरी बात सुन कर बड़ी दया से उसे कलश के जल में रख कर अपने आश्रम पर ले आये ॥

सप्तदशः श्लोकः

सा तु तत्रैकरात्रेण वर्धमाना कमण्डलौ ।
अलब्ध्वाऽऽत्मावकाशं वा इदमाह महीपतिम् ॥१७॥

पदच्छेद— सा तु तत्र एक रात्रेण वर्धमाना कमण्डलौ ।
अलब्ध्वा आत्म अवकाशम् वा इदम् आह महीपतिम् ॥

शब्दार्थ—

सा तु	१.	वह	अलब्ध्वा	९.	न पाकर
तत्र	२.	वहाँ पर	आत्म	७.	अपने लिये
एक	३.	एक	अवकाशम्	८.	स्थान
रात्रेण	४.	रात में ही	वा इदम्	११.	इस प्रकार
वर्धमाना	५.	इतनी बढ़ गई कि	आह	१२.	बोली
कमण्डलौ ।	६.	कमण्डलु में	महीपतिम् ॥	१०.	राजा से

श्लोकार्थ—वह वहाँ पर एक रात में ही इतनी बढ़ गई कि कमण्डलु में अपने लिये स्थान न पाकर राजा से इस प्रकार बोली ॥

अष्टादशः श्लोकः

नाहं कमण्डलावस्मिन् कृच्छ्रं वस्तुमिहोत्सहे ।
कल्पयौकः सुविपुलं यत्राहं निवसे सुखम् ॥१८॥

पदच्छेद— न अहम् कमण्डलौ अस्मिन् कृच्छ्रम् वस्तुम् इह उत्सहे ।
कल्पय ओकः सुविपुलम् यत्र अहम् निवसे सुखम् ॥

शब्दार्थ—

न अहम्	७.	नहीं मैं कर सकती	कल्पऔकः	९.	स्थान बताइये
कमण्डलौ	३.	कमण्डलु में	सुविपुलम्	८.	कोई बड़ा
अस्मिन्	२.	इस	यत्र	१०.	जहाँ
कृच्छ्रम्	६.	कष्ट पूर्वक भी	अहम्	११.	मैं
वस्तुम्	४.	वास करने का	निवसे	१३.	रह सकूँ
इह	१.	यहाँ	सुखम्	१२	सुख पूर्वक
उत्सहे ।	५.	उत्साह			

श्लोकार्थ—मैं यहाँ इस कमण्डलु में वास करने का उत्साह कष्ट पूर्वक भी नहीं कर सकती । कोई बड़ा स्थानबताइये, जहाँ मैं सुख पूर्वक रह सकूँ ॥

एकोनविंशः श्लोकः

स एनां तत आदाय न्यधादौदञ्चनोदके ।
तत्र क्षिप्ता मुहूर्तेन हस्तत्रयमवर्धत ॥१९॥

पदच्छेद— स: एनाम् तत: आदाय न्यधात् औदञ्चन उदके ।
तत्र क्षिप्ता मुहूर्तेन हस्त त्रयम् अवर्धत ॥

शब्दार्थ—

सः एनाम्	१.	उन्होंने उस मछली को	तत्र	७.	वहाँ
तत्	२.	वहाँ से	क्षिप्ता	८.	डालने पर
आदाय	३.	लेकर	मुहूर्तेन	९.	दो घड़ी में वह
न्यधात्	६.	रख दिया	हस्त	११.	हाथ
औदञ्चन	४.	मटके भर	त्रयम्	१०.	तीन
उदके ।	५.	जल में	अवर्धत ॥	१२.	बढ़ गई

श्लोकार्थ—उन्होंने उस मछली को वहाँ से लेकर मटके भर जल में रख दिया । वहाँ डालने पर दो घड़ी में ही वह तीन हाथ बढ़ गई ॥

विंशः श्लोकः

न म एतदलं राजन् सुखं वस्तुमुदञ्चनम् ।
पृथु देहि पदं मह्यं यत् त्वाहं शरणं गता ॥२०॥

पदच्छेद— न मे एतद् अलम् राजन् सुखम् वस्तुम् उदञ्चनम् ।
पृथु देहि पदम् मह्यम् यत् त्वा अहम् शरणम् गता ॥

शब्दार्थ—

न मे	४.	नहीं है मेरे लिये	पृथु	१२.	बड़ा सा
एतद्	२.	यह स्थान	देहि	१४.	दीजिये
अलम्	३.	पर्याप्त	पदम्	१३.	स्थान
राजन्	१.	हे राजन् !	मह्यम्	१०.	मेरे लिये कोई
सुखम्	६.	सुख पूर्वक	यत्त्वाम्	८.	क्योंकि आपकी मैं
वस्तुम्	७.	रहने योग्य नहीं है	शरणम्	९.	शरण में
उदञ्चनम् ।	५.	यह मटका	गता ॥	१०.	आई हूँ

श्लोकार्थ—हे राजन् ! यह स्थान मेरे लिये पर्याप्त नहीं है । यह मटका सुख पूर्वक रहने योग्य नहीं है । क्योंकि मैं आपकी शरण में आई हूँ । मेरे लिये कोई बड़ा सा स्थान बताइये ॥

एकविंशः श्लोकः

तत आदाय सा राज्ञा क्षिप्ता राजन् सरोवरे ।
तदावृत्यात्मना सोऽयं महामीनोऽन्ववर्धत ॥२१॥

पदच्छेद— तत: आदाय सा राज्ञा क्षिप्ता राजन् सरोवरे ।
तदा वृत्या आत्मना सः अयम् महामीनः अन्ववर्धत ॥

शब्दार्थ—

ततः	४. वहाँ से	तत्	८. उसे
आदाय	५. लेकर	आवृत्य	१०. ढककर
सा	३. उस मछली को	आत्मना	९. शरीर से
राज्ञा	२. राजा ने	सः अयम्	११. वही
क्षिप्ता	७. डाल दिया	महामीनः	१२ विशाल मछली
राजन्	१. हे परीक्षित् !	अन्ववर्धत ॥	१३. बढ़ने लगी
सरोवरे	६. सरोवर में		

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! राजा ने उस मछली को वहाँ से लेकर सरोवर में डाल दिया । उसे शरीर से ढककर वही विशाल मछली बढ़ने लगी ॥

द्वाविंशः श्लोकः

नैतन्मे स्वस्तये राजन्नुदकं सलिलौकसः ।
निधेहि रक्षायोगेन ह्रदे मामविदासिनि ॥२२॥

पदच्छेद— न एतन्मे स्वस्तये राजन् उदकम् सलिल ओकसः ।
निधेहि रक्षा योगेन ह्रदे माम् अविदासिनि ॥

शब्दार्थ—

न एतन्मे	६. रहने योग्य नहीं है यह	निधेहि	१२. रख दीजिये
स्वस्तये	५. सुख पूर्वक	रक्षा	७. मेरी रक्षा
राजन्	१. हे राजन् !	योगेन	८. करने के लिये
उदकम्	२. जल	ह्रदे	११. सरोवर में
सलिल	३. मुझ जल	माम्	९. मुझे
ओकसः ।	४. चर के लिये	अविदासिनि ॥	१०. अगाध

श्लोकार्थ—हे राजन् ! यह जल मुझ जल चर के लिये सुख पूर्वक रहने योग्य नहीं है । मेरी रक्षा करने के लिये मुझे अगाध सरोवर में रख दीजिये ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

इत्युक्तः सोऽनयन्मत्स्यं तत्र तत्राविदासिनि ।
जलाशये सम्मितं तं समुद्रे प्राक्षिपज्झषम् ॥२३॥

पदच्छेद— इति उक्तः सः अनयत् मत्स्यम् तत्र-तत्र अविदासिनि ।
जलाशये सम्मितम् तम् समुद्रे प्राक्षिपत् झषम् ॥

शब्दार्थ—

इति उक्तः	१.	इस प्रकार कहने पर	जलाशये	७.	जलाशय के
सः	२.	वे	सम्मितम्	८.	अनुसार बढ़ने वाले
अनयत्	६.	ले गये	तम्	९.	उस
मत्स्यम्	३.	उस मछली को	समुद्रे	११.	समुद्र में
तत्र-तत्र	४.	उन-उन	प्राक्षिपत्	१२.	छोड़ दिया
अविदासिनि ।	५.	अगाध जलाशयों में	झषम् ॥	१०	लीला मत्स्य को उन्होंने

श्लोकार्थ—इस प्रकार कहने पर वे उस मछली को उन-उन अगाध जलाशयों में ले गये । जलाशय के अनुसार बढ़ने वाले उस लीला मत्स्य को उन्होंने समुद्र में छोड़ दिया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

क्षिप्यमाणस्तमाहेदमिह मां मकरादयः ।
अदन्त्यतिबला वीर मां नेहोत्स्रष्टुमर्हसि ॥२४॥

पदच्छेद— क्षिप्यमाणः तम् आह इदम् इह माम् मकर आदयः ।
अदन्ति अतिबलाः वीर माम् न इह उत्स्रष्टुम् अर्हसि ॥

शब्दार्थ—

क्षिप्यमाणः	१.	समुद्र में डालते समय	अदन्ति	१२.	खा जायेंगे
तम्	२.	उसने सत्यव्रत से	अति	७.	अत्यन्त
आह	४.	कहा	बलाः	८.	बली
इदम्	३.	इस प्रकार	वीर	५.	हे वीर !
इह	६.	यहाँ	माम्	१३.	मुझे
माम्	११.	वे मुझे	न	१६.	नहीं है
मकर	९.	मकर	इह	१४.	यहाँ
आदयः ।	१०.	आदि रहते हैं	उत्स्रष्टुम् अर्हसि ॥	१५.	छोड़ना उचित

श्लोकार्थ—समुद्र में डालते समय उसने सत्यव्रत से इस प्रकार कहा —हे वीर ! यहाँ अत्यन्त बली मकर आदि रहते हैं । वे मुझे खा जायेंगे । मुझे यहाँ छोड़ना उचित नहीं है ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

एवं विमोहितस्तेन वदता वल्गुभारतीम् ।
तमाह को भवानस्मान् मत्स्यरूपेण मोहयन् ॥२५॥

पदच्छेद— एवम् विमोहितः तेन वदता वल्गु भारतीम् ।
तम् आह कः भवान् अस्मान् मत्स्यरूपेण मोहयन् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	आह	८.	कहा
विमोहितः	६.	मोहित हुये सत्यव्रतने	कः	१४.	कौन हैं
तेन	२.	उसके	भवान्	१३.	आप
वदता	५.	बोलने से	अस्मान्	११	हमें
वल्गु	३.	मधुर	मत्स्य	९.	मत्स्य
भारतीम् ।	४.	वाणी द्वारा	रूपेण	१०.	रूप धारण करके
तम्	७.	उन भगवान् से	मोहयन् ॥	१२.	मोहित करने वाले

श्लोकार्थ—इस प्रकार उनके मधुर वाणी द्वारा बोलने से मोहित हुये सत्यव्रत ने उन भगवान् से कहा—मत्स्य रूप धारण करके हमें मोहित करने वाले आप कौन हैं ॥

षड्विंशः श्लोकः

नैवंवीर्यो जलचरो दृष्टोऽस्माभिः श्रुतोऽपि च ।
यो भवान् योजनशतमह्नाभिव्यानशे सरः ॥२६॥

पदच्छेद— न एवम् वीर्यः जलचरः दृष्टः अस्माभिः श्रुतः अपि च ।
यः भवान् योजन शतम् अह्ना अभिव्यानशे सरः ॥

शब्दार्थ—

न	५.	नहीं	च ।	७.	और न
एवम्	१.	ऐसी	यः	१०.	जो
वीर्यः	२.	शक्ति वाला	भवान्	११.	आपने
जलचरः	३.	जलचर तो	योजन	१३.	योजन
दृष्टः	६	देखा	शतम्	१२.	सौ
अस्माभिः	४.	हमने	अह्ना	१४.	विस्तार वाले
श्रुतः	८.	सुना	अभिव्यानशे	१६.	सब ओर से व्याप्त कर लिया है
अपि	९.	भी है	सरः ॥	१५.	सरोवर को

श्लोकार्थ— ऐसी शक्ति वाला जलचर तो हमने नहीं देखा और न सुना भी है, जो आपने सौ योजन विस्तार वाले सरोवर को सब ओर से व्याप्त कर लिया है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

नूनं त्वं भगवान् साक्षाद्धरिर्नारायणोऽव्ययः ।
अनुग्रहाय भूतानां धत्से रूपं जलौकसाम् ॥२७॥

पदच्छेद— नूनम् त्वम् भगवान् साक्षात् हरिः नारायणः अव्ययः ।
अनुग्रहाय भूतानाम् धत्से रूपम् जल ओकसाम् ॥

शब्दार्थ—

नूनम्	१.	अवश्य ही	अनुग्रहाय	६.	अनुग्रह करने के लिये आपने
त्वम्	२.	आप	भूतानाम्	८.	जीवों पर
भगवान्	४.	सर्वशक्तिमान्	धत्से	१३.	धारण किया है
साक्षात्	३.	साक्षात्	रूपम्	१२.	रूप
हरिः	७.	श्री हरि हैं	जल	१०.	जल
नारायणः	५.	अन्तर्यामी	ओकसाम् ॥	११.	चर का

श्लोकार्थ—अवश्य ही आप साक्षात् सर्वशक्तिमान् अन्तर्यामी अविनाशी श्री हरि हैं। जीवों पर अनुग्रह करने के लिये आपने जलचर का रूप धारण किया है।

अष्टाविंशः श्लोकः

नमस्ते पुरुषश्रेष्ठ स्थित्युत्पत्त्यप्ययेश्वर ।
भक्तानां नः प्रपन्नानां मुख्यो ह्यात्मगतिर्विभो ॥२८॥

पदच्छेद— नमः ते पुरुष श्रेष्ठ स्थिति उत्पत्ति अप्यय ईश्वरः ।
भक्तानाम् नः प्रपन्नानाम् मुख्यः हि आत्म गतिः विभो ॥

शब्दार्थ—

नमः	७.	नमस्कार है	भक्तानाम्	११.	भक्तों के लिये
ते	६.	आपको	नः	९.	हम
पुरुषश्रेष्ठ	१.	हे पुरुषोत्तम !	प्रपन्नानाम्	१०.	शरणागत
स्थिति	३.	स्थिति और	मुख्यः	१२.	आप ही मुख्य
उत्पत्ति	२.	जगत् की उत्पत्ति	हि आत्म	१३.	आत्मा और
अप्ययः ।	४.	विनाश के	गतिः	१४.	आश्रय हैं
ईश्वरः ।	५.	स्वामी	विभो ॥	८.	हे प्रभो !

श्लोकार्थ—हे पुरुषोत्तम ! जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश के स्वामी आप को नमस्कार है। हे प्रभो ! हम शरणागत भक्तों के लिये आप ही मुख्य आत्मा और आश्रय हैं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

सर्वे लीलावतारास्ते भूतानां भूतिहेतवः ।
ज्ञातुमिच्छाम्यदो रूपम् यदर्थं भवता धृतम् ॥२९॥

पदच्छेद— सर्वे लीला अवताराः भूतानाम् भूति हेतवः ।
ज्ञातुम् इच्छामि अदः रूपम् यत् अर्थम् भवता धृतम् ॥

शब्दार्थ—

सर्वे	२.	सभी	ज्ञातुम्	१०.	जानना
लीला	३.	लीला	इच्छामि	११.	चाहता हूँ कि
अवताराः	४.	अवतार	अदः	८.	मैं इस
ते	१.	यद्यपि आपके	रूपम्	९.	रूप को
भूतानाम्	५.	प्राणियों के	यत् अर्थम्	१२.	किस प्रयोजन से
भूति	६.	अभ्युदय के	भवता	१३.	आपने इसे
हेतवः ।	७.	लिये होते हैं	धृतम् ॥	१४.	धारण किया है

श्लोकार्थ—यद्यपि आपके सभी लीला अवतार प्राणियों के अभ्युदय के लिये होते हैं । मैं इस रूप को जानना चाहता हूँ कि किस प्रयोजन से आपने इसे धारण किया है ॥

त्रिंशः श्लोकः

न तेऽरविन्दाक्ष पदोपसर्पणं मृषा भवेत् सर्वसुहृत्प्रियात्मनः ।
यथेतरेषां पृथगात्मनां सतामदीदृशो यद् वपुरद्भुतं हि नः ॥३०॥

पदच्छेद— न ते अरविन्दाक्ष पद उपसर्पणम् मृषा भवेत् सर्व सुहृत् प्रिय आत्मनः ।
यथा इतरेषाम् पृथक् आत्मनाम् सताम् अदीदृशः यत् वपुः अद्भुतम् हि नः ॥

शब्दार्थ—

न	११.	नहीं हो सकती	यथा	२.	जैसे
ते	७.	आपके	इतरेषाम्	५	अन्य
अरविन्दाक्ष	१.	हे कमल नयन !	पृथक्	४.	भिन्न
पद्	८.	चरणों की	आत्मनान्	३.	आत्मा से
उपसर्पणम्	९	शरण	सताम्	६.	सांसारिक पुरुषों का आश्रय व्यर्थ होता है उस प्रकार
मृषा	१०.	व्यर्थ	अदीदृशः	१९.	दर्शन दिया
भवेत्	१२.	क्योंकि	यत्	१६.	जो
सर्वसुहृत्	१३.	आप सबके अहैतुक प्रेमी	वपुः	१७.	रूप धारण करके आपने
प्रिय	१४.	परम प्रियतम	अद्भुत	२०.	वह अद्भुत है
आत्मनः ।	१५.	और आत्मा है	हि नः ॥	१८.	हमें दर्शन दिया है

श्लोकार्थ— हे कमल नयन ! जैसे आत्मा से भिन्न अन्य सांसारिक पुरुषों का आश्रय व्यर्थ होता है उस प्रकार आप के चरणों की शरण व्यर्थ नहीं हो सकती । क्योंकि आप सबके अहैतुक प्रेमी, परम प्रियतम और आत्मा हैं । जो रूप धारण करके आपने दर्शन दिया वह अद्भुत है ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— इति ब्रुवाणं नृपतिं जगत्पतिः
सत्यव्रतं मत्स्यवपुर्युगक्षये ।
विहर्तुकामः प्रलयार्णवेऽब्रवी-
च्चिकीर्षुरेकान्तजनप्रियः प्रियम् ॥३१॥

पदच्छेद— इति ब्रुवाणम् नृपतिम् जगत् पतिः सत्यव्रतम् मत्स्य वपुः युगक्षये ।
विहर्तु कामः प्रलय अर्णवे अब्रवीत् चिकीर्षुः एकान्त जन प्रियः प्रियम् ॥

शब्दार्थ—

इति	९.	इस प्रकार	विहर्तुकामः	१५.	विहार करने के लिये
ब्रुवाणम्	१०.	प्रार्थना करने पर	प्रलय	१३.	प्रलय कालीन
नृपतिम्	७.	राजा	अर्णवे	१४.	समुद्र में
जगत्पतिः	६.	जगत् पति भगवान् ने	अब्रवीत्	१६.	उनसे कहा
सत्यव्रतम्	८.	सत्यव्रत के	चिकीर्षुः	११.	उनका हित करने की इच्छा से
मत्स्य	४.	मत्स्य	एकान्त	१.	अनन्य
वपुः	५.	शरीर धारण करने वाले	जनप्रियः	२.	प्रेमी भक्तों पर
युगक्षये ।	१२.	कल्पान्त के	प्रियम् ॥	३.	प्रेम करने वाले

श्लोकार्थ—अनन्य प्रेमी भक्तों पर प्रेम करने वाले, मत्स्य शरीर धारण करने वाले, जगत्-पति भगवान् ने राजा सत्यव्रत के इस प्रकार प्रार्थना करने पर उनका हित करने की इच्छा से कल्पान्त के प्रलय कालीन समुद्र में विहार करने के लिये उनसे कहा ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—सप्तमेऽद्यतनादूर्ध्वमहन्येतदरिन्दम ।
निमङ्क्ष्यत्यप्ययाम्भोधौ त्रैलोक्यं भूर्भुवादिकम् ॥३२।

पदच्छेद— सप्तमे अद्यतनाद् ऊर्ध्वम् अहनि एतत् अरिन्दम ।
निमङ्क्ष्यति अप्यय अम्भोधौ त्रैलोक्यम् भूर्भुव आदिकम् ॥

शब्दार्थः—

सप्तमे	३.	सातवें	निमङ्क्ष्यति	१२.	डूब जायेंगे
अद्यतनाद्	२.	आज से	अप्यये	१०.	प्रलय के
ऊर्ध्वम्	५.	बाद	अम्भोधौ	११.	समुद्र में
अहनि	४.	दिन	त्रैलोक्यम्	९.	तीनों लोक
एतत्	६.	ये	भूर्भुवः	७.	भूर्भुव र्लोक
अरिन्दम ।	१.	हे सत्यव्रत !	आदिकम् ॥	८.	आदि

श्लोकार्थं—हे सत्यव्रत ! आज से सातवें दिन बाद ये भूर्भुवर्लोक आदि तीनों लोक प्रलय के समुद्र में डूब जायेंगे ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

त्रिलोक्यां लीयमानायां संवर्ताम्भसि वै तदा ।
उपस्थास्यति नौः काचिद् विशाला त्वां मयेरिता ॥३३॥

पदच्छेद— त्रिलोक्याम् लीयमानायाम् संवर्त अम्भसि वै तदा ।
उपस्थास्यति नौः काचित् विशाला त्वाम् मया ईरिता ॥

शब्दार्थ—

त्रिलोक्याम्	१. जब तीनों लोक	उपस्थास्यति	११. आयेगी
लीयमानायाम्	४. डूबने लगेंगे	नौः	१०. नौका
संवर्त	२. प्रलय कालीन	क्वचित्	८. कोई एक
अम्भसि	३. जलराशि में	विशाला	९. बहुत बड़ी
वै तदा ।	५. तब	त्वाम्	६. तुम्हारे पास
		मया ईरिता ॥	७. मेरी प्रेरणा से

श्लोकार्थ—जब तीनों लोक प्रलय कालीन जलराशि में डूबने लगेंगे तब तुम्हारे पास मेरी प्रेरणा से कोई एक बहुत बड़ी नौका आयेगी ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

त्वं तावदोषधीः सर्वा बीजान्युच्चावचानि च ।
सप्तर्षिभिः परिवृतः सर्वसत्त्वोपबृंहितः ॥३४॥

पदच्छेद— त्वम् तावत् ओषधीः सर्वाः बीजानि उच्चावचानि च ।
सप्तर्षिभिः परिवृतः सर्व सत्त्व उपबृंहितः ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	२. तुम	च	७. और
तावत्	१. उस समय	सप्तर्षिभिः	१०. सप्तर्षियों के
ओषधीः	४. औषधियों	परिवृतः	११. साथ
सर्वाः	३. समस्त	सर्व	८. समस्त
बीजानि	६. बीजों तथा	सत्त्व	९. धान्य को
उच्चावचानि	५. छोटे-बड़े	उपबृंहितः ॥	१२. रख लेना

श्लोकार्थ—उस समय तुम समस्त औषधियों छोटे-बड़े बीजों तथा और समस्त धान्य को सप्तर्षियों के साथ रख लेना ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

आरुह्य बृहतीं नावं विचरिष्यस्यविक्लवः ।
एकार्णवे निरालोके ऋषीणामेव वर्चसा ॥३५॥

पदच्छेद— आरुह्य बृहतीम् नावम् विचरिष्यसि अविक्लवः ।
एकार्णवे निरालोके ऋषीणाम् एव वर्चसा ॥

शब्दार्थ—

आरुह्य	९. चढ़ कर	एकार्णवे	२. एक मात्र महासागर में
बृहतीम्	७. उस बड़ी	निरालोके	१. प्रकाश रहित
नावम्	८. नाव पर	ऋषीणाम्	३. ऋषियों की
विचरिष्यसि	१०. विचरण करना	एव	५. के ही सहारे
अविक्लवः ।	६. व्याकुलता से रहित होकर तुम	वर्चसा ॥	४. दिव्य ज्योति

श्लोकार्थ—प्रकाश रहित एक मात्र महासागर में ऋषियों की दिव्य ज्योति के ही सहारे व्याकुलता से रहित होकर तुम उस बड़ी नाव पर चढ़ कर विचरण करना ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

दोधूयमानां तां नावं समीरेण बलीयसा ।
उपस्थितस्य मे शृङ्गे निबध्नीहि महाहिना ॥३६॥

पदच्छेद— दोधूयमानाम् ताम् नावम् समीरेण बलीयसा ।
उपस्थितस्य मे शृङ्गे निबध्नीहि महा अहिना ॥

शब्दार्थ—

दोधूयमानाम्	३. डगमगाती हुई	उपस्थितस्य	६. मेरे आ जाने पर
ताम्	४. उस	मे	९. मेरे
नावम्	५. नाव को तुम	शृङ्गे	१०. सींग में
समीरेण	२. आँधी के चलने से	निबध्नीहि	११. बाँध देना
बलीयसा ।	१. प्रचण्ड	महा	७. वासुकि
		अहिना ॥	८. नाग के द्वारा

श्लोकार्थ—प्रचण्ड आँधी के चलने से डगमगाती हुई उस नाव को तुम मेरे आ जाने पर वासुकि नाग के द्वारा मेरे सींग में बाँध देना ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

अहं त्वामृषिभिः साकं सहनावमुदन्वति ।
विकर्षन् विचरिष्यामि यावद् ब्राह्मी निशा प्रभो ॥३७॥

पदच्छेद— अहम् त्वाम् ऋषिभिः साकम् सह नावम् उदन्वति ।
विकर्षन् विचरिष्यामि यावत् ब्राह्मी निशा प्रभो ॥

शब्दार्थ—

अहम्	५.	तब-तक मैं	विकर्षन्	११.	खींचता हुआ
त्वाम्	८.	तुम्हें	विचरिष्यामि	१३.	विचरण करूँगा
ऋषिभिः	६.	ऋषियों के	यावत्	२.	जब-तक
साकम्	७.	साथ	ब्राह्मी	३.	ब्रह्मा जी की
सह	१०.	बैठा कर उसे	निशा	४.	रात रहेगी
नावम्	९.	नाव में	प्रभो ॥	१.	हे सत्यव्रत !
उदन्वति ।	१२.	समुद्र में			

श्लोकार्थ—हे सत्यव्रत ! जब-तक ब्रह्मा जी की रात रहेगी तब-तक मैं ऋषियों के साथ तुम्हें नाव में बैठा कर खींचता हुआ समुद्र में विचरण करूँगा ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

मदीयं महिमानं च परं ब्रह्मेति शब्दितम् ।
वेत्स्यस्यनुगृहीतं मे संप्रश्नैर्विवृतं हृदि ॥३८॥

पदच्छेद— मदीयम् महिमानम् च परम् ब्रह्म इति शब्दितम् ।
वेत्स्यसि अनुगृहीतम् मे संप्रश्नैः विवृतम् हृदि ॥

शब्दार्थ—

मदीयम्	४.	मेरी	वेत्स्यसि	९.	जान लोगे
महिमानम्	५.	वास्तविक महिमा को	अनुगृहीतम्	३.	अनुग्रह से
च	१०.	और वह	मे	२.	मेरे
परम्	६.	पर	संप्रश्नैः	१.	तुम्हारे प्रश्न करने पर
ब्रह्मेति	७.	ब्रह्म इस	विवृतम्	१२.	प्रकट हो जायेगी
शब्दितम् ।	८.	नाम से	हृदि ॥	११.	तुम्हारे हृदय में

श्लोकार्थ—तुम्हारे प्रश्न करने पर मेरे अनुग्रह से मेरी वास्तविक महिमा को परब्रह्म इस नाम से जान लोगे और वह तुम्हारे हृदय में प्रकट हो जायेगी ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

इत्थमादिश्य राजानं हरिरन्तरधीयत ।
सोऽन्ववैक्षत तं कालं यं हृषीकेश आदिशत् ।।३९।।

पदच्छेद— इत्थम् आदिश्य राजानम् हरिः अन्तरधीयत ।
सः अन्ववैक्षत तम् कालम् यम् हृषीकेशः आदिशत् ।।

शब्दार्थ—

इत्थम्	३.	इस प्रकार	सः	७.	वे राजा
आदिश्य	४.	आदेश देकर	अन्ववैक्षत	१०.	प्रतीक्षा करने लगे
राजानम्	२.	राजा सत्यव्रत को	तम्	८.	उस
हरिः	१.	भगवान्	कालम्	९.	समय को
अन्तर्	५.	अन्तर्ध्यान	यम्	११.	जिसके लिये
अधीयत ।	६.	हो गये	हृषीकेशः	१२	भगवान् ने
			आदिशत् ।।	१३.	आदेश दिया था

श्लोकार्थ—भगवान् राजा सत्यव्रत को इस प्रकार आदेश देकर अन्तर्ध्यान हो गये। वे राजा उस समय की प्रतीक्षा करने लगे जिसके लिये भगवान् ने आदेश दिया था ।।

चत्वारिंशः श्लोकः

आस्तीर्य दर्भान् प्राक्कूलान् राजर्षिः प्रागुदङ्मुखः ।
निषसाद हरेः पादौ चिन्तयन् मत्स्यरूपिणः ।।४०।।

पदच्छेद— आस्तीर्य दर्भान् प्राक् कूलान् राजर्षिः प्राक् उदङ्मुखः ।
निषसाद हरेः पादौ चिन्तयन् मत्स्य रूपिणः ।।

शब्दार्थ—

आस्तीर्य	३.	बिछा कर	निषसाद	७.	बैठ गये
दर्भान्	२.	कुशों को	हरेः	१०.	भगवान् के
प्राक्कूलान्	१.	पूर्व की ओर अग्रभाग करके	पादौ	११.	चरणों का
राजर्षिः	४.	राजर्षि सत्यव्रत	चिन्तयन्	१२.	चिन्तन करने लगे
प्राक्	५.	पूर्व	मत्स्य	८.	वे मत्स्य
उदङ्मुखः ।	६.	उत्तर मुख होकर	रूपिणः ।।	९.	रूपधारी

श्लोकार्थ—पूर्व की ओर अग्रभाग करके कुशों को बिछा कर राजर्षि सत्यव्रत पूर्व उत्तर मुख होकर बैठ गये। वे मत्स्य रूपधारी भगवान् के चरणों का चिन्तन करने लगे ।।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

ततः समुद्र उद्वेलः सर्वतः प्लावयन् महीम्।
वर्धमानो महामेघैर्वर्षद्भिः समदृश्यत ॥४१॥

पदच्छेद— ततः समुद्रः उद्वेलः सर्वतः प्लावयन् महीम्।
वर्धमानः महा मेघैः वर्षद्भिः समदृश्यत ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	इतने में ही	वर्धमानः	१०.	वह बढ़ता हुआ
समुद्रः	५.	समुद्र	महा	७.	भयंकर प्रलयकालीन
उद्वेलः	६.	बढ़ने लगा	मेघैः	८.	मेघों की
सर्वतः	३.	सब ओर	वर्षद्भिः	९.	वर्षा से
प्लावयन्	४.	डुबाता हुआ	समदृश्यत ॥	११.	दिखाई दिया
महीम्।	२.	पृथ्वी को			

श्लोकार्थ—इतने में ही पृथ्वी को सब ओर से डुबाता हुआ समुद्र बढ़ने लगा। भयंकर प्रलयकालीन मेघों की वर्षा से वह बढ़ता हुआ दिखाई दिया ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

ध्यायन् भगवदादेशं ददृशे नावमागताम्।
तामारुरोह विप्रेन्द्रैरादायोषधिवीरुधः ॥४२॥

पदच्छेद— ध्यायन् भगवत् आदेशम् ददृशे नावम् आगताम्।
ताम् आरुरोह विप्रेन्द्रैः आदाय ओषधि वीरुधः ॥

शब्दार्थ—

ध्यायन्	३.	स्मरण करते ही	ताम्	७.	उस पर वे
भगवत्	१.	भगवान् को	आरुरोह	१२.	सवार हो गये
उपदेशम्	२.	आज्ञा का	विप्रेन्द्रैः	११.	सप्तर्षियों के साथ
ददृशे	६.	दिखाई दी	आदाय	१०.	लेकर
नावम्	५.	नौका	ओषधि	८.	ओषधि-धान्य तथा
आगतम्	४.	आई हुई	वीरुधः ॥	९.	बीजों को

श्लोकार्थ—भगवान् की आज्ञा का स्मरण करते हुये आयी हुई नौका दिखाई दी। उस पर वे ओषधि-धान्य तथा बीजों को लेकर सप्तर्षियों के साथ सवार हो गये ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

तमूचुर्मुनयः प्रीता राजन् ध्यायस्व केशवम् ।
स वै नः संकटादस्मादविता शं विधास्यति ।।४३।।

पदच्छेद— तम् ऊचुः मुनयः प्रीताः राजन् ध्यायस्व केशवम् ।
स: वै नः संकटात् अस्मात् अविता शम् विधास्यति ।।

शब्दार्थ—

तम् ऊचुः	३.	राजा से कहा	सः वै	७.	वे ही
मुनयः	१.	सप्तर्षियों ने	नः	१०.	हमारी
प्रीताः	२.	बड़े प्रेम से	संकटात्	९.	संकट से
राजन्	४.	हे राजन् !	अस्मात्	८.	इस
ध्यायस्व	६.	ध्यान करो	अविता	११.	रक्षा करके
केशवम् ।	५.	भगवान् का	शम्	१२.	हमारा कल्याण
			विधास्यति ।।	१३.	करेंगे

श्लोकार्थ—सप्तर्षियों ने बड़े प्रेम से राजा से कहा । हे राजन् ! भगवान् का ध्यान करो । वे ही इस संकट से हमारी रक्षा करके कल्याण करेंगे ।।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

सोऽनुध्यातस्ततो राज्ञा प्रादुरासीन्महार्णवे ।
एकशृङ्गधरो मत्स्यो हैमो नियुतयोजनः ।।४४।।

पदच्छेद— सः अनुध्यातः ततः राज्ञा प्रादुः आसीत् महार्णवे ।
एक शृङ्गधरः मत्स्यः हैमः नियुत योजनः ।।

शब्दार्थ—

सः	२.	उनकी आज्ञा से	महार्णवे ।	५.	उस महासागर में
अनुध्यातः	४.	ध्यान करने से	एक	८.	एक
ततः	१.	तब	शृङ्गधरः	९.	सींग वाली
राज्ञा	३.	राजा से	मत्स्यः	१०.	मछली
प्रादुः	११.	प्रकट	हैमः	६.	स्वर्ण के समान देदीप्यमान
आसीत्	१२.	हुई	नियुतयोजनः ।।	७.	चार लाख कोश विस्तृत शरीर वाली

श्लोकार्थ—तब उनकी आज्ञा से राजा के ध्यान करने से उस महासागर में स्वर्ण के समान देदीप्यमान चार लाख कोश विस्तृत शरीर वाली मछली प्रकट हुई ।।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

निबध्य नावं तच्छृङ्गे यथोक्तो हरिणा पुरा ।
वरत्रेणाहिना तुष्टस्तुष्टाव मधुसूदनम् ॥४५॥

पदच्छेद— निबध्य नावम् तत् शृङ्गे यथा उक्तः हरिणा पुरा ।
वरत्रेण अहिना तुष्टः तुष्टाव मधुसूदनम् ॥

शब्दार्थ—

निबध्य	९.	बाँध दी गई	पुरा ।	२.	पहले
नावम्	५.	वह नौका	वरत्रेण	६.	वासुकि
तत्	४.	उसके अनुसार	अहिना	७.	नाग के द्वारा
शृङ्गे	८.	भगवान् के सींग में	तुष्टः	१०.	सत्यव्रत ने प्रसन्न होकर
यथाउक्तः	३.	जैसी आज्ञा थी	तुष्टाव	१२.	स्तुति की
हरिणा	१.	भगवान् ने	मधुसूदनम् ॥	११.	भगवान् की

श्लोकार्थ—भगवान् ने पहले जैसी आज्ञा की थी उसके अनुसार वह नौका वासुकि नाग के द्वारा भगवान् के सींग में बाँध दी गयी । सत्यव्रत ने प्रसन्न होकर भगवान् की स्तुति की ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

अनाद्यविद्योपहतात्मसंविदस्तन्मूलसंसारपरिश्रमातुराः ।
यदृच्छयेहोपसृता यमाप्नुयुर्विमुक्तिदो नः परमो गुरुर्भवान् ॥४६॥

पदच्छेद—अनादि अविद्या उपहत आत्म संविदः तत् मूल संसार परिश्रम आतुराः ।
यदृच्छया इह उपसृताः यम् आप्नुयुः विमुक्तिदः नः परमः गुरुः भवान् ॥

शब्दार्थ—

अनादि	३.	अनादि	यदृच्छया	९.	जब अनायास ही वे
अविद्या	४.	अविद्या से	इह उपसृताः	१०.	आपकी शरण में पहुँच कर
उपहत	५.	ढक गया है	यम्	११.	आप को
आत्म	१.	लोगों का आत्म	आप्नुयुः	१२.	प्राप्त कर लेते हैं अतः
संविदः	२.	ज्ञान	विमुक्तिदः	१४.	कर्म बन्धन से छुड़ाने वाले
तत् मूल	६.	इसी कारण से	नः	१३.	हमें
संसार परिश्रम	७	संसार के क्लेशों से	परमः	१५	परम
आतुराः ।	८.	पीडित हैं	गुरुः भवान् ॥	१६.	गुरु तो आप ही हैं

श्लोकार्थ—लोगों का आत्म ज्ञान अनादि अविद्या से ढक गया है । इस कारण से संसार के क्लेशों से पीड़ित हैं । जब अनायास ही वे आप की शरण में पहुँच कर आप को प्राप्त कर लेते हैं । अतः हमें कर्म बन्धन से छुड़ाने वाले परम गुरु तो आप ही हैं ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

जनोऽबुधोऽयं निजकर्मबन्धनः सुखेच्छया कर्म समीहतेऽसुखम् ।
यत्सेवया तां विधुनोत्यसन्मतिं ग्रन्थिं स भिन्द्याद्धृदयं स नो गुरुः ॥४७॥

पदच्छेद— जनः अबुधः अयम् निजकर्म बन्धनः सुख इच्छया कर्म समीहते असुखम् ।
यत् सेवया ताम् विधुनोति असन्मतिम् ग्रन्थिम् स भिन्द्यात् हृदयम् सः नः गुरुः ॥

शब्दार्थ—

जनः	२.	जीव	ताम्	६.	उसका
अबुधः अयम्	१.	यह अज्ञानी	विधुनोति	११.	नष्ट हो गया है
निजकर्म	३.	अपने ही कर्मों से	असन्मतिम्	१०.	अज्ञान
बन्धनः	४.	बंधा हुआ	ग्रन्थिम्	१५.	गाँठ
सुख इच्छया	५.	सुख की इच्छा से	सः	१२.	वे ही
कर्म समीहिते	७.	कर्मों का अनुष्ठान करता है	भिन्द्यात्	१६.	काट दें
असुखम् ।	६.	दुःखप्रद	हृदयम्	१४	मेरे हृदय की
यत् सेवया	८.	जिनकी सेवा से	सः नः गुरुः ॥	१३.	हमारे परम गुरु

श्लोकार्थ—यह अज्ञानी जीव अपने ही कर्मों से बँधकर सुख की इच्छा से दुःखप्रद कर्मों का अनुष्ठान करता है। जिनकी सेवा से उसका अज्ञान नष्ट हो जाता है। वे ही हमारे परम गुरु मेरे हृदय की गाँठ काट दें ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

यत्सेवयाग्नेरिव रुद्ररोदनं पुमान् विजह्यान्मलमात्मनस्तमः ।
भजेत वर्णं निजमेष सोऽव्ययो भूयात् स ईशः परमो गुरोर्गुरुः ॥४८॥

पदच्छेद यत् सेवया अग्नेः इव रुद्ररोदनम् पुमान् विजह्यात् मलम् आत्मनः तमः ।
भजेत वर्णम् निजम् एषः सः अव्ययः भूयात् सः ईशः परमः गुरोः गुरुः ॥

शब्दार्थ—

यत् सेवया	१.	जिन आपकी सेवा से	भजेत वर्णम्	१०.	स्वरूप को प्राप्त कर लेता है
अग्नेः	३.	अग्नि में	निजम् एषः	९.	और वह अपने
इव	५.	समान	सः अव्ययः	११.	वही अविनाशी
रुद्ररोदनम्	४.	सोने-चाँदी के	भूयात्	१६.	बनें
पुमान्	२.	मनुष्य	सः	१५.	वे हमारे भी गुरु
विजह्यात्	८.	त्याग देता है	ईशः	११.	परमात्मा
मलम्	७.	मल को	परमः गुरोः	१३.	गुरु के भी
आत्मनः तमः ।	६.	अपने मन के अज्ञान रूप	गुरुः ॥	१४.	परम गुरु हैं

श्लोकार्थ—जिन आपकी सेवा से मनुष्य अग्नि में सोने-चाँदी के समान अपने मन के अज्ञान रूप मल को त्याग देता है और वह अपने स्वरूप को प्राप्त कर लेता है, वही अविनाशी परमात्मा गुरु के परम भी गुरु हैं। वे हमारे भी गुरु बनें ॥

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

न यत्प्रसादायुतभागलेशमन्ये च देवा गुरवो जनाः स्वयम् ।
कर्तुं समेताः प्रभवन्ति पुंसस्तमीश्वरं त्वां शरणं प्रपद्ये ॥४९॥

पदच्छेद— न यत् प्रसाद अयुत भागलेशम् अन्ये च देवाः गुरवः जनाः स्वयम् ।
कर्तुम् समेताः प्रभवन्ति पुंसः तम् ईश्वरम् त्वाम् शरणम् प्रपद्ये ॥

शब्दार्थ--

न यत्	७. आप की	कर्तुम्	११. बराबरी करने में
प्रसाद	८. कृपा से	समेताः	५. मिलकर भी
अयुत	९. दस हजारवें	प्रभवन्ति	१२. समर्थ नहीं हैं
भागलेश	१०. अंश के अंश की	पुंसः	६. मनुष्य पर कृपा करें तो भी
अन्ये	३. संसार के दूसरे	तम् ईश्वरम्	१३. ऐसे सर्वशक्तिमान्
च	२ और	त्वाम्	१४. परमात्मा मैं आप की
देवाः गुरवः	१. देवता, गुरु	शरणम्	१५. शरण
जनास्वयम् ।	४. जीव आदि स्वतंत्र रूप से	प्रपद्ये ॥	१६. ग्रहण करता हूँ

श्लोकार्थ--देवता, गुरु और संसार के दूसरे जीव आदि स्वतंत्र रूप से मिल कर भी मनुष्य पर कृपा करें तो भी आप की कृपा के दस हजारवें अंश के अंश की बराबरी करने में समर्थ नहीं हैं । ऐसे सर्वशक्तिमान् परमात्मा ! मैं आपकी शरण ग्रहण करता हूँ ॥

पञ्चाशः श्लोकः

अचक्षुरन्धस्य यथाग्रणीः कृतस्तथा जनस्याविदुषोऽबुधो गुरुः ।
त्वमर्कदृक् सर्वदृशां समीक्षणो वृतो गुरुर्नः स्वगतिं बुभुत्सताम् ॥५०॥

पदच्छेद— अचक्षुः अन्धस्य यथा अग्रणीः कृतः तथा जनस्य अविदुषः अबुधः गुरुः ।
त्वम् अर्क दृक् सर्वदृशाम् समीक्षणः वृतः गुरुः नः स्वगतिम् बुभुत्सताम् ॥

प्रह्लाद उवाच—

अचक्षुः	२. अन्धा	त्वम् अर्क	९. आप सूर्य के समान
अन्धस्य	३. अन्धे को	दृक्	१०. स्वयं प्रकाश और
यथा	१. जैसे	सर्वदृशाम्	११. समस्त इन्द्रियों के
अग्रणीः कृतः	४. पथप्रदर्शक बना ले	समीक्षणः	१२. प्रेरक हैं
तथा	५. उसी प्रकार	वृतः	१६. वरण करते हैं
जनस्य अविदुषः	७. अज्ञानी मनुष्य को ही	गुरुः	१५. आप को अपना गुरु
अबुधः	६ अज्ञानी मनुष्य	नः स्वगतिम्	१३. अतः हम आत्मतत्त्व के
गुरुः ।	८. अपना गुरु बनाते हैं	बुभुत्सताम् ॥	१४. जिज्ञासु

श्लोकार्थ--जैसे अन्धा अन्धे को अपना पथप्रदर्शक बना ले । उसी प्रकार अज्ञानी मनुष्य अज्ञानी मनुष्य को ही अपना गुरु बनाते हैं । आप सूर्य के समान स्वयं प्रकाश और समस्त इन्द्रियों के प्रेरक हैं । अतः हम आत्मतत्त्व के जिज्ञासु आप को अपना गुरु वरण करते हैं ॥

एकपञ्चाशः श्लोकः

जनो जनस्यादिशतेऽसतीं मतिं यया प्रपद्येत दुरत्ययं तमः।
त्वं त्वव्ययं ज्ञानममोघमञ्जसा प्रपद्यते येन जनो निजं पदम् ॥५१॥

पदच्छेद— जनः जनस्य आदिशते असतीम् मतिम् यया प्रपद्येत दुरत्ययम् तमः।
त्वम् तु अव्ययम् ज्ञानम् अमोघम् अञ्जसा प्रपद्यते येन जनः निजम् पदम् ॥

शब्दार्थ—

जनः	१.	अज्ञानी मनुष्य	त्वम् तु अव्ययम्	९.	परन्तु आप उस अविनाशी
जनस्य	२.	अज्ञानियों को	ज्ञानम्	११.	ज्ञान का उपदेश करते हैं
आदिशते	४.	उपदेश करता है	अमोघम्	१०.	और अमोघ
असतीम् मतिम्	३.	जिस असत् ज्ञान का	अञ्जसा	१३	अनायास ही
यया	५.	उसके द्वारा वे	प्रपद्यते	१६.	प्राप्त कर लेता है
प्रपद्येत	८.	प्राप्त करते हैं	येन जनः	१२.	जिससे मनुष्य
दुरत्ययम्	६.	संसार रूप घोर	निजम्	१४.	अपने
तमः।	७.	अन्धकार को	पदम् ॥	१५.	वास्तविक स्वरूप को

श्लोकार्थ—अज्ञानी मनुष्य अज्ञानियों को जिस असत् ज्ञान का उपदेश करता है, उसके द्वारा वे संसार रूप घोर अन्धकार को प्राप्त करते हैं। परन्तु आप उस अविनाशी और अमोघ ज्ञान का उपदेश करते हैं, जिससे मनुष्य अनायास ही अपने वास्तविक स्वरूप को प्राप्त कर लेता है ॥

द्विपञ्चाशः श्लोकः

त्वं सर्वलोकस्य सुहृत् प्रियेश्वरो ह्यात्मा गुरुर्ज्ञानमभीष्टसिद्धिः।
तथापि लोको न भवन्तमन्धधीर्जानाति सन्तं हृदि बद्धकामः ॥५२॥

पदच्छेद – त्वम् सर्व लोकस्य सुहृत् प्रियईश्वरः हि आत्मा गुरुः ज्ञानम् अभीष्ट सिद्धिः।
तथापि लोकः न भवन्तम् अन्धधीः जानाति सन्तम् हृदि बद्धकामः ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	१.	आप	तथापि	९.	फिर भी
सर्वलोकस्य	२.	समस्त संसार	लोकः	१२.	लोग
सुहृत्	३.	सुहृत्	न भवन्तम्	१५.	आप को नहीं
प्रियईश्वरः	४.	प्रियतम, ईश्वर	अन्धधीः	११.	अन्ध-बुद्धि
हि आत्मा	५.	और आत्मा हैं	जानाति	१६.	जानते हैं
गुरु ज्ञानम्	६.	गुरु ज्ञान और	सन्तम्	१४.	विराजमान
अभीष्ट	७.	अभीष्ट की	हृदि	१३.	हृदय में
सिद्धिः।	८.	सिद्धि भी आपका स्वरूप है	बद्धकामः ॥	१०.	कामनाओं के बन्धन में जकड़े हुये

श्लोकार्थ—आप समस्त संसार के सुहृत्, प्रियतम, ईश्वर और आत्मा हैं गुरु ज्ञान और अभीष्ट की सिद्धि भी आपका स्वरूप है। फिर भी कामनाओं के बन्धन में जकड़े हुये अन्ध बुद्धि लोग हृदय में विराजमान आपको नहीं जानते हैं ॥

त्रिपञ्चाशः श्लोकः

तं त्वामहं देववरं वरेण्यं प्रपद्य ईशं प्रतिबोधनाय ।
छिन्ध्यर्थदीपैर्भगवन् वचोभिर्ग्रन्थीन् हृदय्यान् विवृणु स्वमोकः ॥५३॥

पदच्छेद—तम् त्वाम् अहम् देववरम् वरेण्यं प्रपद्ये ईशम् प्रतिबोधनाय ।
छिन्धि अर्थदीपैः भगवन् वचोभिः ग्रन्थीन् हृदय्यान् हृदयान् विवृणु स्वमोकः ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	ऐसे	छिन्धि	१४.	काट डालिये और
त्वाम्	७.	आप की	अर्थदीपैः	१०.	परमार्थ को प्रकाशित करने वाली
अहम्	६.	मैं	भगवन्	९.	हे भगवन् !
देववरम्	२.	देवताओं के भी	वचोभिः	११.	अपनी वाणी के द्वारा
वरेण्यम्	३.	आराध्यदेव	ग्रन्थीन्	१३.	ग्रन्थि
प्रपद्य	८.	शरण में आया हूँ	हृदय्यान्	१२.	मेरे हृदय की
ईशम्	४.	परमेश्वर	विवृणु	१६.	प्रकाशित कीजिये
प्रतिबोधनाय ।	५.	ज्ञान प्राप्त करने के लिये	स्वमोकः ॥	१५.	अपने स्वरूप को

श्लोकार्थ—ऐसे देवताओं के भी आराध्य देव परमेश्वर ज्ञान प्राप्त करने के लिये मैं आपकी शरण में आया हूँ । हे भगवन् ! परमार्थ को प्रकाशित करने वाली अपनी वाणी के द्वारा मेरे हृदय की ग्रन्थि को काट डालिये और अपने स्वरूप को प्रकट कीजिये ॥

चतुःपञ्चाशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्युक्तवन्तं नृपतिं भगवानादिपूरुषः ।
मत्स्यरूपी महाम्भोधौ विहरंस्तत्त्वमब्रवीत् ॥५४॥

पदच्छेद— इति उक्तवन्तम् नृपतिम् भगवान् आदि पूरुषः ।
मत्स्य रूपी महाम्भोधो विहरन् तत्त्वम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

इति	२.	इस प्रकार	मत्स्यरूपी	४.	मत्स्यरूपधारी
उक्तवन्तम्	३.	प्रार्थना करने पर	महाम्भोधौ	७.	प्रलय के समुद्र में
नृपतिम्	१.	राजा सत्यव्रत के	विहरन्	८.	बिहार करते हुये
भगवान्	६.	परमात्मा ने	तत्त्वम्	९.	आत्म तत्त्व का
आदि पूरुषः ।	५.	आदिपुरुष	अब्रवीत् ॥	१०.	उपदेश किया

श्लोकार्थ—राजा सत्यव्रत के इस प्रकार प्रार्थना करने पर मत्स्यरूपधारी आदिपुरुष परमात्मा ने प्रलय के समुद्र में विहार करते हुये आत्मतत्त्व का उपदेश किया ॥

पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

पुराणसंहितां दिव्यां सांख्ययोगक्रियावतीम् ।
सत्यव्रतस्य राजर्षेरात्मगुह्यमशेषतः ॥५५॥

पदच्छेद— पुराण संहिताम् दिव्याम् सांख्य योग क्रियावतीम् ।
सत्यव्रतस्य राजर्षिः आत्म गुह्यम् अशेषतः ॥

शब्दार्थ—

पुराण	९.	पुराण 'मत्स्य पुराण' की	सत्यव्रतस्य	७.	सत्यव्रत को
संहिताम्	१०.	संहिता का उपदेश किया	राजर्षिः	६.	राजर्षि
दिव्याम्	८.	दिव्य	आत्म	४.	आत्म
सांख्ययोग	१.	ज्ञान, भक्ति और	गुह्यम्	५.	स्वरूप के रहस्य का
क्रियावतीम् ।	२.	कर्म योग से परिपूर्ण	अशेषतः ॥	३.	सम्पूर्ण

श्लोकार्थ—ज्ञान, भक्ति और कर्मयोग से परिपूर्ण सम्पूर्ण आत्म स्वरूप के रहस्य का राजर्षि सत्यव्रत को दिव्य पुराण 'मत्स्य पुराण' की संहिता का उपदेश किया ॥

षट्पञ्चाशः श्लोकः

अश्रौषीदृषिभिः साकमात्मतत्त्वमसंशयम् ।
नाव्यासीनो भगवता प्रोक्तं ब्रह्म सनातनम् ॥५६॥

पदच्छेद— अश्रौषीत् ऋषिभिः साकम् आत्म तत्त्वम् असंशयम् ।
नावि आसीनः भगवता प्रोक्तम् ब्रह्म सनातनम् ॥

शब्दार्थ—

अश्रौषीत्	११.	श्रवण किया	नावि	३.	नाव में
ऋषिभिः	१.	सत्य व्रत ने ऋषियों के	आसीनः	४.	बैठे हुये
साकम्	२.	साथ	भगवता	६.	भगवान् के द्वारा
आत्मतत्त्वम्	१०.	आत्मतत्त्व का	प्रोक्तम्	७.	कहा गया
असंशयम् ।	५.	सन्देह रहित होकर	ब्रह्म	९.	ब्रह्म स्वरूप
			सनातनम् ॥	८.	सनातन

श्लोकार्थ— सत्यव्रत ने ऋषियों के साथ नाव में बैठे हुये सन्देह रहित होकर भगवान् के द्वारा कहे गये सनातन ब्रह्म स्वरूप आत्मतत्त्व का श्रवण किया ॥

सप्तपञ्चाशः श्लोकः

अतीतप्रलयापाय उत्थिताय स वेधसे ।
हत्वासुरं हयग्रीवं वेदान् प्रत्याहरद्धरिः ॥५७॥

पदच्छेद— अतीत प्रलयापाय उत्थिताय सः वेधसे ।
हत्वा असुरम् हयग्रीवम् वेदान् प्रत्याहरत् हरिः ॥

शब्दार्थ—

अतीत	१.	पिछले	हत्वा	९.	मार कर
प्रलयापाय	२.	प्रलय का अन्त हो जाने पर	असुरम्	८.	असुर को
उत्थिताय	५.	जग जाने पर	हयग्रीवम्	७.	हयग्रीव
सः	३.	उन	वेदान्	१०.	वेदों को
वेधसे ।	४.	ब्रह्मा जी के	प्रत्याहरत्	११.	छीन कर ब्रह्मा जी को दे दिया
			हरिः ॥	६.	भगवान् ने

श्लोकार्थ—पिछले प्रलय का अन्त हो जाने पर उन ब्रह्मा जी के जग जाने पर भगवान् ने हयग्रीव असुर को मारकर वेद छीन कर ब्रह्मा जी को दे दिये ॥

अष्टपञ्चाशः श्लोकः

स तु सत्यव्रतो राजा ज्ञानविज्ञानसंयुतः ।
विष्णोः प्रसादात् कल्पेऽस्मिन्नासीद् वैवस्वतो मनुः ॥५८॥

पदच्छेद— सः तु सत्यव्रतः राजा ज्ञान विज्ञान संयुतः ।
विष्णोः प्रसादात् कल्पे अस्मिन् आसीत् वैवस्वतः मनुः ॥

शब्दार्थ—

सः तु	३.	वे	विष्णोः	१.	भगवान् की
सत्यव्रतः	५.	सत्यव्रत	प्रसादात्	२.	कृपा से
राजा	४.	राजा	कल्पे	१०.	कल्प में
ज्ञान	६.	ज्ञान और	अस्मिन्	९.	इस
विज्ञान	७.	विज्ञान से	आसीत्	१३.	हुये
संयुतः ।	८.	संयुक्त होकर	वैवस्वतः	११.	वैवस्वत
			मनुः ॥	१२.	मनु

श्लोकार्थ—भगवान् की कृपा से वे राजा सत्यव्रत ज्ञान और विज्ञान से संयुक्त होकर इस कल्प में वैवस्वत मनु हुये ॥

एकोनषष्टितमः श्लोकः

सत्यव्रतस्य राजर्षेर्मायामत्स्यस्य शार्ङ्गिणः ।
संवादं महदाख्यानं श्रुत्वा मुच्येत किल्बिषात् ॥५६॥

पदच्छेद— सत्यव्रतस्य संवादम् राजर्षेः माया मत्स्यस्य शार्ङ्गिणः ।
संवादम् महद् आख्यानम् श्रुत्वा मुच्येत किल्बिषात् ॥

शब्दार्थ—

सत्यव्रतस्य	५. सत्यव्रत का	संवादम्	६. यह संवाद
राजर्षेः	४. राजर्षि	महद्	७. एवं श्रेष्ठ
माया	१. अपनी योग माया से	आख्यानम्	८. आख्यान
मत्स्यस्य	२. मत्स्य रूप धारण करने वाले	श्रुत्वा	९. सुन कर मनुष्य
शार्ङ्गिणः ।	३. विष्णु भगवान् और	मुच्येत	११ मुक्त हो जाता है
		किल्बिषात् ॥	१०. समस्त पापों से

श्लोकार्थ—अपनी योग माया से मत्स्य रूप धारण करने वाले विष्णु भगवान् और राजर्षि सत्यव्रत का यह संवाद एवं श्रेष्ठ आख्यान सुन कर मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है ॥

षष्टितमः श्लोकः

अवतारो हरेर्योऽयं कीर्तयेदन्वहं नरः ।
सङ्कल्पास्तस्य सिध्यन्ति स याति परमां गतिम् ॥६०॥

पदच्छेद— अवतारः हरेः यः अयम् कीर्तयेत् अन्वहम् नरः ।
संकल्पाः तस्य सिध्यन्ति सः याति परमाम् गतिम् ॥

शब्दार्थ—

अवतारः	५. अवतार का	संकल्पाः	९. सारे संकल्प
हरेः	३. भगवान् के	तस्य	८. उसके
यः	१. जो	सिध्यन्ति	१०. सिद्ध हो जाते हैं
अयम्	४. इस	सः	११. और
कीर्तयेत्	७. कीर्तन करता है	याति	१४. प्राप्त करता है
अन्वहम्	६. प्रति दिन	परमाम्	१२. परम
नरः	२. मनुष्य	गतिम् ॥	१३. गति को

श्लोकार्थ—जो मनुष्य भगवान् के इस अवतार का प्रतिदिन कीर्तन करता है उसके सारे संकल्प सिद्ध हो जाते हैं । और वह परम गति को प्राप्त करता है ॥

एकषष्टितमः श्लोकः

प्रलयपयसि धातुः सुप्तशक्तेर्मुखेभ्यः
श्रुतिगणमपनीतं प्रत्युपादत्त हत्वा ।
दितिजमकथयद् यो ब्रह्म सत्यव्रतानां
तमहमखिलहेतुं जिह्ममीनं नतोऽस्मि ॥६१॥

पदच्छेद—
प्रलय पयसि धातुः सुप्त शक्तेः मुखेभ्यः
श्रुति गणम् अपनीतम् प्रत्युपादत्त हत्वा ।
दितिजम् अकथयत् यः ब्रह्म सत्यव्रतानाम्
तम् अहम् अखिल हेतुम् जिह्ममीनम् नतः अस्मि ॥

शब्दार्थ—

प्रलय	१.	प्रलय कालीन	दितिजम्	१४.	सप्तर्षियों को
पयसि	२.	समुद्र में	अकथयत्	१६.	उपदेश दिया
धातुः	३.	ब्रह्मा जी के	यः	१२.	जिन्होंने
सुप्त	४.	सो जाने तथा	ब्रह्म	१५.	ब्रह्म तत्त्व का
शक्तेः	५.	उनकी शक्ति लुप्त हो जाने पर	सत्यव्रतानाम्	१३.	सत्यव्रत और
मुखेभ्यः	६.	उनके मुख से निकली हुई	तम्	२०.	उन
श्रुति	७.	श्रुतियों के	अहम्	१७.	मैं
गणम्	८.	समूह को	अखिल	१८.	समस्त जगत् के
अपनीतम्	९.	चुराकर (हयग्रीव पाताल ले गया था)	हेतुम्	१९.	कारण
प्रत्युपादत्त	११.	वे श्रुतियाँ (ब्रह्मा जी को लौटा दीं)	जिह्ममीनम्	२१.	लीलामत्स्य भगवान् को
हत्वा ।	१०.	(भगवान् ने) उसे मार कर	नतः अस्मि ॥	२२.	प्रणाम करता हूँ

श्लोकार्थ— प्रलय कालीन समुद्र में ब्रह्मा जी के सो जाने तथा उनकी शक्ति लुप्त हो जाने पर उनके मुख से निकली हुई श्रुतियों के समूह को चुरा कर हयग्रीव पाताल ले गया था । भगवान् ने उसे मार कर वे श्रुतियाँ ब्रह्मा जी को लौटा दीं । जिन्होंने सत्यव्रत और सप्तर्षियों को ब्रह्मतत्त्व का उपदेश दिया । मैं समस्त जगत् के कारण उन लीला मत्स्य भगवान् को प्रणाम करता हूँ ।

श्रीमद्भागवते महापुराणे वैयासिक्यामष्टादशपारमहंस्यां संहितायां अष्टमे स्कन्धे
मत्स्यावतारचरित्रअनुवर्णनं नाम चतुर्विंशः अध्यायः ।.२४।

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य

नवमः स्कन्धः



शेषाशेषमुखव्याख्याचातुर्यं त्वेकवक्त्रतः ।
दधानमद्भुतं वन्दे परमानन्दमाधवम् ।।

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

प्रथमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

राजोवाच— मन्वन्तराणि सर्वाणि त्वयोक्तानि श्रुतानि मे ।
वीर्याण्यनन्तवीर्यस्य हरेस्तत्र कृतानि च ॥१॥

पदच्छेद— मन्वन्तराणि सर्वाणि त्वया उक्तानि श्रुतानि मे ।
वीर्याणि अनन्त वीर्यस्य हरेः तत्र कृतानि च ॥

शब्दार्थ—

मन्वन्तराणि	४.	मन्वन्तरों को	वीर्याणि	१०.	पराक्रमों को
सर्वाणि	३.	सब	अनन्त	९.	अनन्त
त्वया	१.	आपके द्वारा	वीर्यस्य	७.	शक्तिशाली
उक्तानि	२.	कहे गये	हरेः	८.	भगवान् के
श्रुतानि	१२.	सुन लिया	तत्र कृतानि	६.	उनमें किये गये
मे ।	११.	मैंने	च ॥	५.	और

श्लोकार्थ—आप के द्वारा कहे गये सब मन्वतरों को और उनमें किये गये शक्ति-शाली भगवान् के अनन्त पराक्रमों को मैंने सुन लिया ॥

द्वितीयः श्लोकः

योऽसौ सत्यव्रतो नाम राजर्षिर्द्रविडेश्वरः ।
ज्ञानं योऽतीतकल्पान्ते लेभे पुरुषसेवया ॥२॥

पदच्छेद— यः असौ सत्यव्रतः नाम राजर्षिः द्रविड ईश्वरः ।
ज्ञानम् यः अतीत कल्प अन्ते लेभे पुरुष सेवया ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जो	ज्ञानम्	१३.	ज्ञान को
असौ	२.	वे	यः अतीत	८.	उन्होंने बीते हुये
सत्यव्रतः	३.	सत्यव्रत	कल्प	९.	कल्प के
नाम	४.	नाम के	अन्ते	१०.	अन्त में
राजर्षिः	७.	राजर्षि हुये	लेभे	१४.	प्राप्त किया
द्रविड	५.	द्रविड देश के	पुरुष	११.	भगवान् हरि की
ईश्वरः ।	६.	स्वामी	सेवया ॥	१२.	सेवा से

श्लोकार्थ—जो वे सत्यव्रत नाम के द्रविड देश के, स्वामी राजर्षि हुये, उन्होंने बीते हुये कल्प के अन्त में भगवान् हरि की सेवा से ज्ञान को प्राप्त किया ॥

तृतीयः श्लोकः

स वै विवस्वतः पुत्रो मनुरासीदिति श्रुतम् ।

त्वत्तस्तस्य सुताश्चोक्ता इक्ष्वाकुप्रमुखा नृपाः ॥३॥

पदच्छेद— सः वै विवस्वतः पुत्रः मनुः आसीत् इति श्रुतम् ।
त्वत्तः तस्य सुताः च उक्ताः इक्ष्वाकु प्रमुखाः नृपाः ॥

शब्दार्थ—

सः वै	१.	वे (राजा सत्यव्रत)	त्वत्तः	७.	आप से
विवस्वतः	२.	विवस्वान् के	तस्य	१०.	उन मनु के
पुत्रः	३.	पुत्र	सुताः	११.	पुत्र
मनुः	४.	मनु	च	९.	और
आसीत्	५.	हुए	उक्ताः	१५.	वर्णन किया
इति	६.	यह	इक्ष्वाकु	१२.	इक्ष्वाकु
श्रुतम् ।	८.	सुना है	प्रमुखाः	१३.	आदि
			नृपाः ॥	१४.	राजाओं का भी आपने

श्लोकार्थ— वे राजा सत्यव्रत विवस्वान् के पुत्र मनु हुए, यह आप से सुना है। और उन मनु के पुत्र इक्ष्वाकु आदि राजाओं का भी आप ने वर्णन किया है ॥

चतुर्थः श्लोकः

तेषां वंशं पृथग् ब्रह्मन् वंश्यानुचरितानि च ।

कीर्तयस्व महाभाग नित्यं शुश्रूषतां हि नः ॥४॥

पदच्छेद— तेषाम् वंशम् पृथक् ब्रह्मन् वंश्य अनुचरितानि च ।
कीर्तयस्व महाभाग नित्यम् शुश्रूषताम् हि नः ॥

शब्दार्थ—

तेषाम्	६.	उनके	च	८.	और
वंशम्	७.	वंशों को	कीर्तयस्व	१२.	वर्णन कीजिये
पृथक्	११.	अलग-अलग	महाभाग	२.	हे महाभाग !
ब्रह्मन्	१.	हे ब्रह्मन् !	नित्यम्	३.	सर्वदा
वंश्य	९.	वंश में होने वालों का भी	शुश्रूषताम्	४.	सुनने के इच्छुक
अनुचरितानि ।	१०.	चरित्र	हि नः ॥	५.	हमें

श्लोकार्थ— हे ब्रह्मन् ! हे महाभाग ! सर्वदा सुनने के इच्छुक हमें उनके वंशों को और वंश में होने वालों का भी चरित्र अलग-अलग वर्णन कीजिये ॥

पञ्चमः श्लोकः

ये भूता ये भविष्याश्च भवन्त्यद्यतनाश्च ये ।
तेषां नः पुण्यकीर्तीनां सर्वेषां वद विक्रमान् ॥५॥

पदच्छेद— ये भूताः ये भविष्याः च भवन्ति अद्यतनाः च ये ।
तेषाम् नः पुण्य कीर्तीनाम् सर्वेषाम् वद विक्रमान् ॥

शब्दार्थ—

ये भूताः	१. जो हो चुके हैं	तेषाम्	८. उन
ये	२. जो	नः	१३. हमें
भविष्याः	३. होने वाले हैं	पुण्य	१०. पवित्र
च	४. और	कीर्तीनाम्	११. कीर्ति वालों के
भवन्ति	७. विद्यमान हैं	सर्वेषाम्	९. सब
अद्यतनाः	६. इस समय	वद	१४. बताइये
च ये ।	५. जो	विक्रमान् ॥	१२. पराक्रमों को

श्लोकार्थ—जो हो चुके हैं और जो होने वाले हैं, और जो इस समय विद्यमान हैं, उन पवित्र कीर्तिवालों के पराक्रमों को हमें बताइये ॥

षष्ठः श्लोकः

एवं परीक्षिता राज्ञा सदसि ब्रह्मवादिनाम् ।
पृष्टः प्रोवाच भगवाञ्छुकः परमधर्मवित् ॥६॥

पदच्छेद— एवम् परीक्षिता राज्ञा सदसि ब्रह्म वादिनाम् ।
पृष्टः प्रोवाच भगवान् शुकः परम धर्मवित् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	४. इस प्रकार	पृष्टः	७. पूछने पर
परीक्षिता	६. परीक्षित् के	प्रोवाच	१२. कहा
राज्ञा	५. राजा	भगवान्	१०. भगवान्
सदसि	३. सभा में	शुकः	११. शुकदेव जी ने
ब्रह्म	१. ब्रह्म	परम्	८. परम
वादिनाम् ।	२. वादियों की	धर्मवित् ॥	९. धर्म के ज्ञाता

श्लोकार्थ—ब्रह्मवादियों की सभा में इस प्रकार राजा परीक्षित् के पूछने पर परम धर्म के ज्ञाता भगवान् शुकदेव जी ने कहा ॥

सप्तमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— श्रूयतां मानवो वंशः प्राचुर्येण परंतप ।
न शक्यते विस्तरतो वक्तुं वर्षशतैरपि ॥७॥

पदच्छेद— श्रूयताम् मानवः वंशः प्राचुर्येण परंतप ।
न शक्यते विस्तरतः वक्तुम् वर्ष शतैः अपि ॥

शब्दार्थ—

श्रूयताम्	५. सुनो	न शक्यते	११. नहीं किया जा सकता है
मानवः	२. मनु के	विस्तरतः	६. विस्तार से तो
वंशः	३. वंश का वर्णन	वक्तुम्	१०. वर्णन
प्राचुर्येण	४. संक्षेप से	वर्ष	८. वर्षों में
परंतप ।	१. हे राजा परीक्षित् !	शतैः	७ सैकड़ों
अपि ॥	९. भी		

श्लोकार्थ—हे राजा परीक्षित् ! मनु के वंश का वर्णन संक्षेप से सुनो । विस्तार से तो सैकड़ों वर्षों में भी वर्णन नहीं किया जा सकता है ॥

अष्टमः श्लोकः

परावरेषां भूतानामात्मा यः पुरुषः परः ।
सः एवासीदिदं विश्वं कल्पान्तेऽन्यन्न किंचन ॥८॥

पदच्छेद— पर अवरेषाम् भूतानाम् आत्मा यः पुरुषः परः ।
सः एव आसीत् इदम् विश्वम् कल्पान्ते अन्यत् न किंचन ॥

शब्दार्थ—

पर	३. बड़े	सः	७. वह
अवरेषाम्	४. छोटे (सभी)	एव	८. ही
भूतानाम्	५ प्राणियों के	आसीत्	१०. थे
आत्मा	६. आत्मा है	इदम्	११. यह
यः	१. जो	विश्वम्	१२. संसार (तथा)
पुरुषः	३. परमात्मा	कल्पान्ते	९. प्रलय के अन्त में
परः ।	२. परम पुरुष	अन्यत्	१३. दूसरा
		न किंचन ॥	१४. नहीं था कुछ भी

श्लोकार्थ—जो परम पुरुष परमात्मा छोटे-बड़े सभी प्राणियों के आत्मा हैं, वे ही प्रलय के अन्त में थे । यह संसार तथा दूसरा कुछ भी नहीं था ॥

नवमः श्लोक

तस्य नाभेः समभवत् पद्मकोशो हिरण्मयः ।
तस्मिञ्जज्ञे महाराज स्वयम्भूश्चतुराननः ॥९॥

पदच्छेद— तस्यनाभेः समभवत् पद्मकोशः हिरण्मयः ।
तस्मिन् जज्ञे महाराज स्वयम् भूः चतुराननः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१. उन परमात्मा की	तस्मिन्	७. उसी में
नाभेः	३. नाभि से	जज्ञे	१०. उत्पन्न हुए
समभवत्	६. प्रकठ हुआ	महाराज	२. महाराज !
पद्मकोशः	५. कमल कोश	स्वयम्भूः	८. स्वयं होने वाले
हिरण्मयः ।	४. सुवर्णमय	चतुराननः ॥	९. चतुर्मुख ब्रह्मा

श्लोकार्थ—हे महाराज ! उन परमात्मा की नाभि से सुवर्णमय कमलकोश प्रकट हुआ । उसी में स्वयं प्रकट होने वाले चतुर्मुख ब्रह्मा उत्पन्न हुए ॥

दशमः श्लोकः

मरीचिर्मनसस्तस्य जज्ञे तस्यापि कश्यपः ।
दाक्षायण्यां ततोऽदित्यां विवस्वानभवत् सुतः ॥१०॥

पदच्छेद— मरीचिः मनसः तस्य जज्ञे तस्य अपि कश्यपः ।
दाक्षायण्याम् ततः अदित्याम् विवस्वान् अभवत् सुतः ॥

शब्दार्थ—

मरीचिः	३. मरीचि	दाक्षायण्याम्	९. दक्ष की पुत्री
मनसः	२. मन से	ततः	८. उन कश्यप से
तस्य	१. उन ब्रह्मा के	अदित्याम्	१०. अदिति से
जज्ञे	४. उत्पन्न हुए	विवस्वान्	११. सूर्य
तस्य	५. उन मरीचि के	अभवत्	१३. हुए
अपि	६. भी (पुत्र)	सुतः ॥	१२. पुत्र
कश्यपः ।	७ कश्यप हुए		

श्लोकार्थ—उन ब्रह्मा के मन से मरीचि उत्पन्न हुए । उन मरीचि के भी पुत्र कश्यप हुए, उन कश्यप से दक्ष की पुत्री अदिति में विवस्वान् (सूर्य) पुत्र हुये ॥

एकादशः श्लोकः

ततो मनुः श्राद्धदेवः संज्ञायामास भारत ।
श्रद्धायां जनयामास दश पुत्रान् स आत्मवान् ॥११॥

पदच्छेद— ततः मनुः श्राद्धदेवः संज्ञायाम् आस भारत ।
श्रद्धायाम् जनयामास दश पुत्रान् सः आत्मवान् ॥

शब्दार्थ—

ततः	२.	उन सूर्य से	श्रद्धायाम्	८.	श्रद्धा से
मनुः	४.	मनु	जनयामास	११.	उत्पन्न किया
श्राद्धदेवः	३.	श्राद्धदेव नाम के	दश	९.	दश
संज्ञायाम् आस	५.	संज्ञा से उत्पन्न हुए	पुत्रान्	१०.	पुत्रों को
भारत ।	१.	हे परीक्षित् !	सः	६.	उन
			आत्मवान् ॥	७.	मनस्वी (श्राद्धदेव ने)

श्लोकार्थ—हे परीक्षित ! उन सूर्य से श्राद्ध देव नाम के मनु संज्ञा से उत्पन्न हुए । मनस्वी श्राद्धदेव ने श्रद्धा से दस पुत्रों को उत्पन्न किया ॥

द्वादशः श्लोकः

इक्ष्वाकुनृगशर्यातिदिष्टधृष्टकरूषकान् ।
नरिष्यन्तं पृषध्रं च नभगं च कविं विभुः ॥१२॥

पदच्छेद— इक्ष्वाकु नृग शर्याति दिष्ट धृष्ट करूषकान् ।
नरिष्यन्तम् पृषध्रम् च नभगम् च कविं विभुः ॥

शब्दार्थ—

इक्ष्वाकु	२.	इक्ष्वाकु	नरिष्यन्तम्	८.	नरिष्यन्त
नृग	३.	नृग	पृषध्रम्	९.	पृषध्र
शर्याति	४.	शर्याति	च	७.	और
दिष्ट धृष्ट	५.	दिष्ट धृष्ट	नभगम्	१०.	नभग
करूषकान् ।	६.	करूषक	च कविं	११.	और कवि को (उत्पन्न किया)
			विभुः ॥	१.	मनु के

श्लोकार्थ—मनु के इक्ष्वाकु, नृग, शर्याति, दिष्ट, धृष्ट, करूषक, नरिष्यन्त, पृषध्र, नभग और कवि को उत्पन्न किया ॥

त्रयोदशः श्लोकः

अप्रजस्य मनोः पूर्वं वसिष्ठो भगवान् किल।
मित्रावरुणयोरिष्टिं प्रजार्थमकरोत् प्रभुः ॥१३॥

पदच्छेद— अप्रजस्य मनोः पूर्वम् वसिष्ठः भगवान् किल।
मित्रावरुणयोः इष्टिम् प्रजार्थम् अकरोत् प्रभुः ॥

शब्दार्थ—

अप्रजस्य	१. सन्तान हीन	मित्रावरुणयोः	९. मित्रावरुण का
मनोः	२. वैवस्वत मनु के	इष्टिम्	१०. यज्ञ
पूर्वम्	४. पूर्व	प्रजार्थम्	३. सन्तान के लिए
वसिष्ठः	८. वशिष्ठ ने	अकरोत्	११ कराया था
भगवान्	७ भगवान्	प्रभुः ॥	६. समर्थ
किल।	५. काल में		

श्लोकार्थ—सन्तान हीन वैवस्वत मनु के सन्तान के लिए पूर्व काल में समर्थ भगवान् वशिष्ठ ने मित्रावरुण का यज्ञ कराया था ॥

चतुर्दशः श्लोकः

तत्र श्रद्धा मनोः पत्नी होतारं समयाचत।
दुहित्रर्थमुपागम्य प्रणिपत्य पयोव्रता ॥१४॥

पदच्छेद— तत्र श्रद्धा मनोः पत्नी होतारम् समयाचत।
दुहितृ अर्थम् उपागम्य प्रणिपत्य पयोव्रता ॥

शब्दार्थ—

तत्र	५. वहाँ	समयाचत।	१०. याचना की
श्रद्धा	२. श्रद्धानाम की	दुहितृ अर्थम्	९. पुत्री के लिए
मनोः	३. मनु की	उपागम्य	७. पास जाकर (और)
पत्नी	४. पत्नी ने	प्रणिपत्य	८ प्रणाम करके
होतारम्	६. होता के	पयोव्रता ॥	१. केवल दूध पीकर रहने वाली

श्लोकार्थ—केवल दूध पीकर रहने वाली श्रद्धा नाम की मनु की पत्नी ने वहाँ होता के पास जाकर और प्रणाम करके पुत्री के लिए याचना की ॥

पञ्चदशः श्लोकः

प्रेषितोऽध्वर्युणा होता ध्यायंस्तत् सुसमाहितः।
हविषि व्यचरत् तेन वषट्कारं गृणन्द्विजः ॥१५।

पदच्छेद— प्रेषितः अध्वर्युणा होता ध्यायन् तत् सुसमाहितः।
हविषि व्यचरत् तेन वषट्कारम् गृणन् द्विजः ॥

शब्दार्थ—

प्रेषितः	३. प्रेरणा से	हविषि	११. यज्ञ कुण्ड में
अध्वर्युणा	२. अध्वर्यु की	व्यचरत्	१२. आहुति दी
होता	४. होता	तेन	१. इस
ध्यायन्	७. स्मरण करते हुए	वषट्कारम्	९. वषट्कार का
तत्	६. उस श्रद्धा के वचन का	गृणन्	१० उच्चारण करते हुए
सुसमाहितः।	८. एकाग्रचित से	द्विजः ॥	५. ब्राह्मण ने

श्लोकार्थ—उस अध्वर्यु की प्रेरणा से होता ब्राह्मण ने उस श्रद्धा के वचन का स्मरण करते हुए एकाग्र चित्त से वषट्कार का उच्चारण करके यज्ञ कुण्ड में आहुति दी ॥

षोडशः श्लोक

होतुस्तद्व्यभिचारेण कन्येला नाम साभवत्।
तां विलोक्य मनुः प्राह नातिहृष्टमना गुरुम् ॥१६॥

पदच्छेद— होतुः तत् व्यभिचारेण कन्या इला नाम सा अभवत्।
ताम् विलोक्य मनुः प्राह न अतिहृष्ट मनाः गुरुम् ॥

शब्दार्थ—

होतुः	२. होता के	ताम्	८. उसे
तत्	१. उस	विलोक्य	९. देख कर
व्यभिचारेण	३. विपरीत कर्म से	मनुः	१०. मनु
कन्या	६. कन्या	प्राह	१५ बोले
इला	४. इला	न	१३. नहीं हुए
नाम	५. नाम की	अति	११. बहुत
सा अभवत्	७. वह हुई	हृष्टमनाः	१२. प्रसन्नचित्त
		गुरुम् ॥	१४. और गुरु से

श्लोकार्थ—उस होता के विपरीत कर्म से इला नाम की वह कन्या हुई। उसे देख कर मनु बहुत प्रसन्न चित्त नहीं हुए और गुरु से बोले ॥

सप्तदशः श्लोकः

भगवन् किमिदं जातं कर्म वो ब्रह्मवादिनाम् ।
विपर्ययमहो कष्टं मैवं स्याद् ब्रह्मविक्रिया ॥१७॥

पदच्छेद— भगवन्किम् इदम् जातम् कर्म वः ब्रह्मवादिनाम् ।
विपर्ययम् अहो कष्टम् मा एवम् स्यात् ब्रह्म विक्रिया ॥

शब्दार्थ—

भगवन्	१. हे भगवन् !	विपर्ययम्	५. विपरीत
किम्	७. क्यों	अहो कष्टम्	९. यह दुःख की बात है कि
इदम्	४. यह	मा एवम्	१३. नहीं इस प्रकार
जातम्	८. हुआ	स्यात्	१४. होना चाहिए
कर्म	६. कर्म	ब्रह्म	१०. वेद
वः	३. आप लोगों का	विक्रिया ॥	१२. विपरीत फल
ब्रह्मवादिनाम् ।	२. ब्रह्मवादी		

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! ब्रह्मवादी आप लोगों का यह विपरीत कर्म क्यों हुआ ? यह दुःख की बात है। वेद का इस प्रकार विपरीत फल नहीं होना चाहिए ॥

अष्टादशः श्लोकः

यूयं मन्त्रविदो युक्तास्तपसा दग्धकिल्बिषाः ।
कुतः संकल्पवैषम्यमनृतं विबुधेष्विव ॥१८॥

पदच्छेद— यूयम् मन्त्र विदः युक्ताः तपसा दग्ध किल्बिषाः ।
कुतः संकल्प वैषम्यं अनृतम् विबुधेषु इव ॥

शब्दार्थ—

यूयम्	१. आप लोग तो	कुतः	१३. कैसे हुआ
मन्त्र	३. मन्त्र	संकल्प	११. संकल्प का
विदः	४. वेत्ता है	वैषम्यम्	१२. उलटा फल
युक्ताः	२. पूर्ण	अनृतम्	९. असत्य के
तपसा	५. तपस्या से	विबुधेषु	८. देवताओं में
दग्ध	७. जल चुके हैं	इव ॥	१०. समान (आप के)
किल्बिषाः ।	६. आपके पाप		

श्लोकार्थ—आप लोग तो पूर्ण मन्त्रवेत्ता हैं, तपस्या से आपके पाप जल चुके हैं। देवताओं में असत्य के समान आपके संकल्प का उलटा फल कैसे हुआ ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तन्निशम्य वचस्तस्य भगवान् प्रपितामहः ।
होतुर्व्यतिक्रमं ज्ञात्वा बभाषे रविनन्दनम् ॥१९॥

पदच्छेद— तत् निशम्य वचः तस्य भगवान् प्रपितामहः ।
होतुः व्यतिक्रमम् ज्ञात्वा बभाषे रवि नन्दनम् ॥

शब्दार्थ—

तत्	२.	वह	होतुः	७.	होता का
निशम्य	४.	सुनकर	व्यतिक्रमम्	८.	विपरीत संकल्प
वचः	३.	वचन	ज्ञात्वा	९.	जान कर
तस्य	१.	उनका	बभाषे	१२.	कहा
भगवान्	५.	भगवान्	रवि	१०.	सूर्य
प्रपितामहः ।	६.	वशिष्ठ ने	नन्दनम् ॥	११.	पुत्र (वैवस्वत मनु से)

श्लोकार्थ—उनका वह वचन सुनकर भगवान् वशिष्ठ ने होता का विपरीत संकल्प जानकर सूर्य पुत्र वैवस्वत मनु से कहा ॥

विंशः श्लोकः

एतत् संकल्पवैषम्यं होतुस्ते व्यभिचारतः ।
तथापि साधयिष्ये ते सुप्रजस्त्वम् स्वतेजसा ॥२०॥

पदच्छेद— एतत् संकल्प वैषम्यम् होतुः ते व्यभिचारतः ।
तथापि साधयिष्ये ते सुप्रजास्त्वम् स्वतेजसा ॥

शब्दार्थ—

एतत्	१.	इस	तथापि	७.	तब भी मैं
संकल्प	२.	संकल्प का	साधयिष्ये	११	बना दूँगा
वैषम्यम्	३.	विपरीत होना	ते	९.	आपकी सन्तान को
होतुः	५	होता के	सुप्रजास्त्वम्	१०.	उत्तम पुत्र
ते	४.	आपके	स्वतेजसा ॥	८	अपने तेज से
व्यभिचारतः ।	६.	विपरीत संकल्प के कारण हुआ है ।			

श्लोकार्थ—इस संकल्प का विपरीत होना आपके होता के विपरीत संकल्प के कारण हुआ है । तब भी मैं अपने तेज से आपकी सन्तान को उत्तम पुत्र बना दूँगा ॥

एकविंशः श्लोकः

एवं व्यवसितो राजन् भगवान् स महायशाः ।
अस्तौषीदादिपुरुषमिलायाः पुंस्त्वकाम्यया ॥२१॥

पदच्छेद— एवम् व्यवसितः राजन् भगवान् सः महायशाः ।
अस्तौषीत् आदि पुरुषम् इलायाः पुंस्त्वकाम्यया ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	अस्तौषीत्	१२.	स्तुति की
व्यवसितः	३.	निश्चय करके	आदि	१०.	आदि पुरुष
राजन्	१.	हे परीक्षित्	पुरुषम्	११.	भगवान् नारायण को
भगवान्	५.	भगवान्	इलायाः	७.	इला को
सः	६.	वशिष्ठ ने	पुंस्त्व	८.	पुरुष
महायशाः ।	४.	महायशस्वी	काम्यया ॥	९.	बना देने के लिए

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इस प्रकार निश्चय करके महान् यशस्वी भगवान् वशिष्ठ ने इला को पुरुष बना देने के लिए आदि पुरुष भगवान् नारायण की स्तुति की ॥

द्वाविंशः श्लोकः

तस्मै कामवरं तुष्टो भगवान् हरिरीश्वरः ।
ददाविलाभवत् तेन सुद्युम्नः पुरुषर्षभः ॥२२॥

पदच्छेद— तस्मै कामवरम् तुष्टः भगवान् हरिः ईश्वरः ।
ददौ इला अभवत् तेन सुद्युम्नः पुरुषर्षभः ॥

शब्दार्थ—

तस्मै	१.	उन वशिष्ठ को	ददौ इला	७.	दिया इला
कामवरम्	६.	इच्छानुसार वरदान	अभवत्	११.	हो गई
तुष्टः	५.	सन्तुष्ट होकर	तेन	८.	उससे
भगवान्	३.	भगवान्	सुद्युम्नः	९.	सुद्युम्न नाम का
हरिः	४.	हरि ने	पुरुर्षभः ॥	१०.	श्रेष्ठ पुरुष
ईश्वरः ।	२.	सर्वशक्तिमान्			

श्लोकार्थ—उन वशिष्ठ को सर्वशक्तिमान् भगवान् श्री हरि ने सन्तुष्ट होकर इच्छानुसार वरदान दिया । उससे इला सुद्युम्न नामक श्रेष्ठ पुरुष हो गई ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

स एकदा महाराज विचरन् मृगयां वने ।
वृतः कतिपयामात्यैरश्वमारुह्य सैन्धवम् ॥२३॥

पदच्छेद— सः एकदा महाराज विचरन् मृगयाम् वने ।
वृतः कतिपय अमात्यैः अश्वम् आरुह्य सैन्धवम् ॥

शब्दार्थ—

सः	३.	वे सुद्युम्न	वृतः	६.	साथ ले करके
एकदा	२.	एक बार	कतिपय	४.	कुछ
महाराज	१.	हे महाराज !	अमात्यैः	५.	मन्त्रियों को
विचरन्	६.	खेलने के लिए	अश्वम्	११.	घोड़े पर
मृगयाम्	८.	शिकार	आरुह्य	१२.	चढ़ कर गये
वने ।	७.	वन में	सैन्धवम् ॥	१०.	सिन्धु देश के

श्लोकार्थ—हे महाराज ! एक बार वे सुद्युम्न कुछ मन्त्रियों को साथ ले कर वन में शिकार खेलने के लिए सिन्धु देश के घोड़े पर चढ़ कर गये ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

प्रगृह्य रुचिरम् चापम् शरांश्च परमाद्भुतान् ।
दंशितोऽनुमृगं वीरो जगाम दिशमुत्तराम् ॥२४॥

पदच्छेद— प्रगृह्य रुचिरम् चापम् शरान् च परमअद्भुतान् ।
दंशितः अनुमृगम् वीरः जगाम दिशम् उत्तराम् ॥

शब्दार्थ—

प्रगृह्य	८.	लेकर	दंशितः	२.	कवच पहन कर
रुचिरम्	३.	सुन्दर	अनुमृगम्	६.	हिरणों का पीछा करते हुए
चापम्	४.	धनुष	वीरः	१.	वे सुद्युम्न
शरान्	७.	बाण	जगाम	१२.	चले गये
च	५.	और	दिशम्	११.	दिशा में
परमअद्भुतान् ।	६.	अत्यन्त अद्भुत	उत्तराम् ॥	१०.	उत्तर

श्लोकार्थ—सुद्युम्न सुन्दर कवच पहन कर धनुष और अत्यन्त अद्भुत बाण लेकर हिरणों का पीछा करते हुए उत्तर दिशा में चले गये ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

स कुमारो वनं मेरोरधस्तात् प्रविवेश ह ।
यत्रास्ते भगवाञ्छर्वो रममाणः सहोमया ॥२५॥

पदच्छेद— स: कुमार: वनम् मेरो: अधस्तात् प्रविवेश ह ।
यत्र आस्ते भगवान् शर्व: रममाण: सह उमया ॥

शब्दार्थ—

स:	१.	वे	यत्र	७.	जहाँ
कुमार:	२.	सुद्युम्न	आस्ते	१३.	कर रहे थे
वनम्	५.	वन में	भगवान्	८.	भगवान्
मेरो:	३.	मेरु पर्वत की	शर्व:	९.	शंकर
अधस्तात्	४.	तलहटी के	रममाण:	१२.	विहार
प्रविवेश ।	६.	प्रविष्ट हो गये	सह	११.	साथ
			उमया ॥	१०.	पार्वती के

श्लोकार्थ—वे सुद्युम्न मेरु पर्वत की तलहटी के वन में प्रविष्ट हो गये । जहाँ भगवान् शंकर पार्वती के साथ विहार कर रहे थे ॥

षड्विंशः श्लोकः

तस्मिन् प्रविष्ट एवासौ सुद्युम्नः परवीरहा ।
अपश्यत् स्त्रियमात्मानमश्वं च वडवां नृप ॥२६॥

पदच्छेद— तस्मिन् प्रविष्टः एव असौ सुद्युम्नः परवीरहा ।
अपश्यत् स्त्रियम् आत्मानम् अश्वम् च वडवाम् नृप ॥

शब्दार्थ—

तस्मिन्	२.	उस वन में	अपश्यत्	१३.	देखा
प्रविष्टः	३.	प्रवेश करते	स्त्रियम्	९.	स्त्री के रूप में
एव	४.	ही	आत्मानम्	८.	अपने को
असौ	५.	उन	अश्वम्	११.	घोड़े को
सुद्युम्नः	७.	सुद्युम्न ने	च	१०.	और
परवीरहा ।	६.	वीरवर	वडवाम्	१२.	घोड़ी के रूप में
			नृप ॥	१.	हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उस वन में प्रवेश करते ही उस वीरवर सुद्युम्न ने अपने को स्त्री रूप में और घोड़े को घोड़ी के रूप में देखा ॥

सप्तविंशः श्लोकः

तथा तदनुगाः सर्वे आत्मलिङ्गविपर्ययम् ।
दृष्ट्वा विमनसोऽभूवन् वीक्षमाणाः परस्परम् ॥२७॥

पदच्छेद— तथा तत् अनुगाः सर्वे आत्मलिङ्ग विपर्ययम् ।
दृष्ट्वा विमनसः अभूवन् वीक्षमाणाः परस्परम् ॥

शब्दार्थ—

तथा	१. उसी प्रकार	दृष्ट्वा	७. देख कर
तत्	२. उनके	विमनसः	१०. उदास
अनुगाः	४. अनुचर	अभूवन्	११. हो गये
सर्वे	३. सभी	वीक्षमाणाः	९. देखते हुए
आत्मलिङ्ग	५. अपने को	परस्परम् ॥	८. एक दूसरे को
विपर्ययम् ।	६. स्त्री रूप में		

श्लोकार्थ—उसी प्रकार उनके सभी अनुचर अपने को स्त्री रूप में देख कर एक दूसरे को देखते हुए उदास हो गये ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

राजोवाच— कथमेवंगुणो देशः केन वा भगवन् कृतः ।
प्रश्नमेनं समाचक्ष्व परं कौतूहलं हि नः ॥२८॥

पदच्छेद— कथम् एवम् गुणः देशः केन वा भगवन् कृतः ।
प्रश्नम् एनम् समाचक्ष्व परम् कौतूहलम् हि नः ॥

शब्दार्थ—

कथम्	४. कैसे	प्रश्नम्	१०. प्रश्न का
एवम्	२. इस प्रकार के	एनम्	९. इस
गुणः	३. गुण से युक्त	समाचक्ष्व	११. समाधान कीजिए
देशः	५. यह भूखण्ड हो गया	परम्	१४. बड़ा
केन	७. किसने (ऐसा)	कौतूहलम्	१५. कौतूहल हो रहा है
वा	६. अथवा	हि	१२. क्योंकि
भगवन्	१ हे भगवन् !	नः ॥	१३. हमें
कृतः ॥	८. बना दिया		

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! इस प्रकार के गुण से युक्त कैसे यह भूखण्ड हो गया ? अथवा किसने ऐसा बना दिया है ? इस प्रश्न का समाधान कीजिए । क्योंकि हमें बड़ा कौतूहल हो रहा है ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

एकदा गिरिशं द्रष्टुमृषयस्तत्र सुव्रताः ।
दिशो वितिमिराभासाः कुर्वन्तः समुपागमन् ॥२९॥

पदच्छेद— एकदा गिरिशम् द्रष्टुम् ऋषयः तत्र सुव्रताः ।
दिशः वितिमिर आभासाः कुर्वन्तः सम् उपागमन् ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१.	एक बार	दिशः	७.	दिशाओं का
गिरिशम्	२.	भगवान् शंकर का	वितिमिर	८.	अन्धकार मिटाकर
द्रष्टुम्	३.	दर्शन करने के लिए	आभासाः	९.	प्रकाशित
ऋषयः	६.	ऋषिगण	कुर्वन्तः	१०.	करते हुए (उस वन में)
तत्र	४.	वहाँ	समुपागमन् ॥	११.	आये
सुव्रताः ।	५.	बड़े व्रतधारी			

श्लोकार्थ— एक बार भगवान् शंकर का दर्शन करने के लिए वहाँ बड़े व्रतधारी ऋषिगण दिशाओं का अन्धकार मिटा कर प्रकाशित करते हुए उस वन में आये ॥

त्रिंशः श्लोकः

तान् विलोक्याम्बिका देवी विवासा व्रीडिता भृशम् ।
भर्तुरङ्कात् समुत्थाय नीवीमाश्वथ पर्यधात् ॥३०॥

पदच्छेद— तान् विलोक्य अम्बिका देवी विवासा व्रीडिता भृशम् ।
भर्तुः अङ्कात् समुत्थाय नीवीम् आशु अथ पर्यधात् ॥

शब्दार्थ—

तान्	१.	उन ऋषियों को	भृशम्	६.	अत्यन्त
विलोक्य	२.	देख कर	भर्तुः	८.	स्वामी की
अम्बिका	४.	पार्वती	अङ्कात् समुत्थाय	९.	गोद से उठ कर
देवी	५.	देवी	नीवीम्	११.	वस्त्र
विवासा	३.	वस्त्र विहीन	आशु अथ	१०.	शीघ्र
व्रीडिता ।	७.	लज्जित हुई (तथा)	पर्यधात् ॥	१२.	धारण कर लिया

श्लोकार्थ—उन ऋषियों को देख कर वस्त्र विहीन पार्वती देवी अत्यन्त लज्जित हुई । तथा स्वामी की गोद से उठ कर शीघ्र ही वस्त्र धारण कर लिया ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

ऋषयोऽपि तयोर्वीक्ष्य प्रसङ्गं रममाणयोः ।
निवृत्ताः प्रययुस्तस्मान्नरनारायणाश्रमम् ॥३१॥

पदच्छेद— ऋषयः अपि तयोः वीक्ष्य प्रसङ्गम् रममाणयोः ।
निवृत्ताः प्रययुः तस्मात् नर नारायण आश्रमम् ॥

शब्दार्थ—

ऋषयः	१.	ऋषिगण	निवृत्ताः	८.	लौट कर
अपि	२.	भी	प्रययुः	१२.	चले गये
तयोः	४.	उन दोनों का	तस्मात्	७.	उस वन से
वीक्ष्य	६.	देख कर	नर	९.	नर
प्रसङ्गम्	५.	विहार	नारायण	१०.	नारायण के
रममाणयोः ।	३	रमण करते हुए	आश्रमम् ॥	११.	आश्रम में

श्लोकार्थ—ऋषिगण भी रमण करते हुए उन दोनों का विहार देख कर उस वन से लौट कर नर-नारायण के आश्रम में चले गये ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

तदिदं भगवानाह प्रियायाः प्रियकाम्यया ।
स्थानं यः प्रविशेदेतत् स वै योषिद् भवेदिति ॥३२॥

पदच्छेद— तत् इदम् भगवान् आह प्रियायाः प्रिय काम्यया ।
स्थानम् यः प्रविशेत् एतत् सः वै योषित् भवेत् इति ॥

शब्दार्थ—

तत्	१.	उस समय	स्थानम्	११.	स्थान में
इदम्	६.	यह	यः	९.	जो पुरुष
भगवान्	२.	भगवान् शंकर ने	प्रविशेत्	१२.	प्रवेश करेगा
आह	७.	कहा	एतत्	१०.	इस
प्रियायाः	३.	पार्वती के	सः वै	१३.	वह निश्चित रूप से
प्रिय	४.	प्रिय (कार्य)	योषित्	१४.	स्त्री
काम्यया ।	५.	करने की इच्छा से	भवेत्	१५.	हो जायेगा
			इति ॥	८.	कि

श्लोकार्थ—उस समय भगवान् शंकर ने पार्वती के प्रिय कार्य करने की इच्छा से यह कहा कि जो पुरुष इस स्थान में प्रवेश करेगा, वह निश्चित रूप से स्त्री हो जायेगा ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तत् ऊर्ध्वं वनं तद् वै पुरुषा वर्जयन्ति हि।
साचानुचर संयुक्ता विचचार वनाद् वनम् ॥३३॥

पदच्छेद— तत् ऊर्ध्वम् वनम् तद्वै पुरुषाः वर्जयन्ति हि।
साच अनुचर संयुक्ता विचचार वनात् वनम् ॥

शब्दार्थ—

तत्	१.	उसके	साच	८.	वह सुद्युम्न अपने और
ऊर्ध्वम्	२.	बाद	अनुचर	९.	सेवकों के
वनम्	५.	बन को	संयुक्ता	१०.	साथ
तद्	४.	उस	विचचार	१३.	विचरण करने लगे
वै	६.	निश्चित रूप से	वनात्	११.	एक वन से दूसरे
पुरुषाः	३.	पुरुष गण	वनम् ॥	१२.	वन में
वर्जयन्ति हि।	७.	त्याग देते हैं			

श्लोकार्थ—उसके बाद से पुरुष गण उस वन को निश्चित रूप से त्याग बैठे हैं। और (वह स्त्री सुद्युम्न) अपने सेवकों के साथ एक वन से दूसरे वन में विचरण करने लगा ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

अथ तामाश्रमाभ्याशे चरन्तीं प्रमदोत्तमाम्।
स्त्रीभिः परिवृतां वीक्ष्य चकमे भगवान् बुधः ॥३४॥

पदच्छेद— अथ ताम् आश्रम अभ्याशे चरन्तीम् प्रमदा उत्तमाम्।
स्त्रीभिः परिवृताम् वीक्ष्य चकमे भगवान् बुधः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	स्त्रीभिः	८.	स्त्रियों से
ताम्	४.	उस स्त्री को	परिवृताम्	९.	घिरी हुई
आश्रम	५.	आश्रम के	वीक्ष्य	१०.	देख कर
अभ्याशे	६.	समीप	चकमे	१३.	इच्छा की
चरन्तीम्	७.	विचरण करती हुई (तथा)	भगवान्	११.	भगवान्
प्रमादा	२.	स्त्रियों में	बुधः ॥	१२.	बुध ने (उसकी)
उत्तमान्।	३.	श्रेष्ठ			

श्लोकार्थ—तदनन्तर स्त्रियों में श्रेष्ठ उस स्त्री को आश्रम के समीप विचरण करती हुई तथा स्त्रियों से घिरी हुई देख कर भगवान् बुध ने उसकी इच्छा की ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

सापि तम् चकमे सुभ्रूः सोमराजसुतं पतिम् ।
स तस्यां जनयामास पुरूरवसमात्मजम् ॥३५॥

पदच्छेद— सा अपि तम् चकमे सुभ्रूः सोमराज सुतम् पतिम् ।
सः तस्याम् जनयामास पुरुरवसम् आत्मजम् ॥

शब्दार्थ—

सा	१. उस	पतिम्	७. पतिरूप में
अपि	३. भी	सः	६. उस बुध ने
तम्	६. उस बुध को	तस्याम्	१०. उस सुन्दरी से
चकमे	८. पाना चाहा	जनयामास	१३. उत्पन्न किया
सुभ्रूः	२. सुन्दर भौहों वाली स्त्री	पुरुरवसम्	११. पुरुरवा नाम के
सोमराज	४. चन्द्रमा के	आत्मजम् ॥	१२. पुत्र को
सुतम् ।	५. पुत्र		

श्लोकार्थ—उस सुन्दर भौहों वाली स्त्री भी चन्द्रमा के पुत्र उस बुध को पति रूप में पाना चाहा । उस बुध ने उस सुन्दरी से पुरुरवा नाम के पुत्र को उत्पन्न किया ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

एवं स्त्रीत्वमनुप्राप्तः सुद्युम्नो मानवो नृपः ।
सस्मार स्वकुलाचार्यं वसिष्ठमिति शुश्रुम ॥३६॥

पदच्छेद— एवम् स्त्रीत्वम् अनुप्राप्तः सुद्युम्नः मानवः नृपः ।
सस्मार स्वकुल आचार्यम् वसिष्ठम् इति शुश्रुम ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	सस्मार	११. स्मरण किया
स्त्री	२. स्त्री	स्वकुल	८. अपने कुल
त्वम्	३. रूप में	आचार्यम्	६. गुरु
अनुप्राप्तः	४. परिणत	वसिष्ठम्	१०. वशिष्ठ मुनि का
सुद्युम्नः	७. सुद्युम्न ने	इति	१२. ऐसा हमने
मानवः	५. मनुपुत्र	शुश्रुम ॥	१३. सुना है
नृपः ।	६. राजा		

श्लोकार्थ—इस प्रकार स्त्री रूप में परिणत मनुपुत्र राजा सुद्युम्न ने अपने कुलगुरु वशिष्ठ मुनि का स्मरण किया, ऐसा हमने सुना है ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

स तस्य तां दशां दृष्ट्वा कृपया भृशपीडितः ।
सुद्युम्नस्याशयन् पुंस्त्वमुपाधावत शङ्करम् ॥३७॥

पदच्छेद— सः तस्य ताम् दशाम् दृष्ट्वा कृपया भृश पीडितः ।
सुद्युम्नस्य आशयन् पुंस्त्वम् उपाधावत शंकरम् ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वे	पीडितः	८.	दुःखी होकर
तस्य	२.	उस सुद्युम्न की	सुद्युम्नस्य	९.	सुद्युम्न को
ताम्	३.	उस	आशयन्	११.	बना देने के लिए
दशाम्	४.	दशा को	पुंस्त्वम्	१०.	पुरुष
दृष्ट्वा	५.	देख कर	उपाधावत	१३.	पास गये।
कृपया	६.	कृपावश	शङ्करम् ॥	१२.	शङ्कर जी के
भृश ।	७.	अत्यंत			

श्लोकार्थ— वे उस सुद्युम्न की उस दशा को देख कर कृपावश अत्यंत दुःखी होकर सुद्युम्न को पुरुष बना देने के लिए शङ्कर जी के पास गये ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

तुष्टस्तस्मै स भगवानृषये प्रियमावहन् ।
स्वां च वाचमृतां कुर्वन्निदमाह विशांपते ॥३८॥

पदच्छेद— तुष्टः तस्मै सः भगवान् ऋषये प्रियम् आवहन् ।
स्वाम् च वाचम् ऋताम् कुर्वन् इदम् आह विशाम्पते ॥

शब्दार्थ—

तुष्टः	५.	प्रसन्न होकर	स्वाम्	१०.	अपनी
तस्मै	४.	उन पर	च	९.	और
सः	२.	वे	वाचम्	११.	वाणी को
भगवान्	३.	भगवान् शङ्कर	ऋताम्	१२.	सत्य
ऋषये	६.	ऋषि का	कुर्वन्	१३.	करते हुए
प्रियम्	७.	प्रिय	इदम्	१४.	यह
आवहन् ।	८.	करने के लिए	आह	१५.	बोले
			विशाम्पते ॥	१.	हे राजा परीक्षित् ।

श्लोकार्थ— हे राजा परीक्षित् ! वे भगवान् शङ्कर उन पर प्रसन्न होकर ऋषि का प्रिय करने के लिए और अपनी वाणी को सत्य करते हुए यह बोले ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

मासं पुमान् स भविता मासं स्त्री तव गोत्रजः ।
इत्थं व्यवस्थया कामं सुद्युम्नोऽवतु मेदिनीम् ॥३९॥

पदच्छेद— मासम् पुमान् सः भविता मासम् स्त्री तव गोत्रजः ।
इत्थम् व्यवस्थया कामम् सुद्युम्नः अवतु मेदिनीम् ॥

शब्दार्थ—

मासम्	३.	एक मास तक	इत्थम्	८.	इस प्रकार की
पुमान्	४.	पुरुष	व्यवस्थया	९.	व्यवस्था से
सः	१.	वह	कामम्	११.	इच्छानुसार
भविता	५.	रहेगा (और)	सुद्युम्नः	१०.	सुद्युम्न
मासम्	६.	एक मास तक	अवतु	१३.	पालन करे
स्त्री	७.	स्त्री	मेदिनीम् ॥	१२.	पृथ्वी का
तव गोत्रजः ।	२.	तुम्हारा यजमान			

श्लोकार्थ——वह तुम्हारा यजमान एक मास तक पुरुष और एक मास तक स्त्री रहेगा। इस प्रकार की व्यवस्था से सुद्युम्न इच्छानुसार पृथ्वी का पालन करे ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

आचार्यानुग्रहात् कामं लब्ध्वा पुंस्त्वं व्यवस्थया ।
पालयामास जगतीं नाभ्यनन्दन् स्म तं प्रजाः ॥४०॥

पदच्छेद— आचार्य अनुग्रहात् कामम् लब्ध्वा पुंस्त्वम् व्यवस्थया ।
पालयामास जगतीम् न अभ्यनन्दन् स्म तम् प्रजाः ॥

शब्दार्थ—

आचार्य	१.	गुरु की	पालयामास	८.	पालन करने लगे (किन्तु)
अनुग्रहात्	२.	कृपा से	जगतीम्	७.	पृथ्वी का
कामम्	५.	इच्छानुसार	न अभ्यनन्दन्	११.	नहीं अभिनन्दन
लब्ध्वा	६.	प्राप्त करके	स्म	१२.	करती थी
पुंस्त्वम्	४.	पुरुषत्व को	तम्	१०	उनका
व्यवस्थया ।	३.	व्यवस्थापूर्वक	प्रजाः ॥	९.	प्रजायें

श्लोकार्थ——गुरु की कृपा से व्यवस्थापूर्वक पुरुषत्व को इच्छानुसार प्राप्त करके पृथ्वी का पालन करने लगे। किन्तु प्रजायें उनका अभिनन्दन नहीं करती थीं ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

तस्योत्कलो गयो राजन् विमलश्च सुतास्त्रयः ।
दक्षिणापथराजानो बभूवुर्धर्मवत्सलाः ॥४१॥

पदच्छेद— तस्य उत्कलः गयः राजन् विमलः च सुताः त्रयः ।
दक्षिणा पथ राजानः बभूवुः धर्म वत्सलाः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	२.	उस सुद्युम्न के	सुतास्त्रयः	८.	पुत्र तीन
उत्कलः	३.	उत्कल	दक्षिणा	९.	दक्षिणा
गयः	४.	गय	पथराजानः	१०.	पथ के राजा
राजन्	१.	हे राजन् !	बभूवुः	१४.	हुए
विमलः	६.	विमल नामक	धर्म	११.	धर्म
च ।	५.	और	वत्सलाः ॥	१२.	प्रेमी

श्लोकार्थ— हे राजन् ! उस सुद्युम्न के उत्कल, गय और विमल नामक तीन पुत्र दक्षिणापथ के धर्म प्रेमी राजा हुए ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

ततः परिणते काले प्रतिष्ठानपतिः प्रभुः ।
पुरूरवस उत्सृज्य गां पुत्राय गतो वनम् ॥४२॥

पदच्छेद— ततः परिणते काले प्रतिष्ठान पतिः प्रभुः ।
पुरूरवसे उत्सृज्य गाम् पुत्राय गतः वनम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	पुरूरवसे	८.	पुरूरवा को
परिणते	२.	वृद्धावस्था के	उत्सृज्य	१०.	सौंपकर
काले	३.	आने पर	गाम्	९.	पृथ्वी
प्रतिष्ठान	४.	प्रतिष्ठान पुर (झूसी के)	पुत्राय	७.	पुत्र
पतिः	६.	स्वामी (सुद्युम्न)	गतः	१२.	चले गये
प्रभुः ।	५.	समर्थ	वनम् ॥	११.	वन को

श्लोकार्थ— तदनन्तर वृद्धावस्था के आने पर प्रतिष्ठान पुर के (झूसी के) समर्थ स्वामी सुद्युम्न पुत्र पुरूरवा को पृथ्वी सौंपकर वन को चले गये ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे श्लोपाख्याने
प्रथमः अध्यायः ॥१॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

द्वितीयः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुकउवाच— एवंगतेऽथ सुद्युम्ने मनुर्वैवस्वतः सुते ।
पुत्रकामस्तपस्तेपे यमुनायां शतं समाः ॥१॥

पदच्छेद— एवम् गते अथ सुद्युम्ने मनुः वैवस्वतः सुते ।
पुत्रकामः तपः तेपे यमुनायाम् शतम् समाः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	पुत्रकामः	८.	पुत्र की कामना से
गते	५.	चले जाने पर	तपः	१२.	तपस्या
अथ	१.	तदनन्तर	तेपे	१३.	की
सुद्युम्ने	४.	सुद्यम्न के	यमुनायाम्	११.	यमुना में
मनुः	७.	मनु ने	शतम्	९.	सौ
वैवस्वतः	६.	वैवस्वत	समाः ॥	१०.	वर्षों तक
सुते ।	३.	पुत्र			

श्लोकार्थ— तदनन्तर इस प्रकार पुत्र सुद्युम्न के चले जाने पर वैवस्वत मनु के पुत्र की कामना से सौ वर्षों तक यमुना में तपस्या की ॥

द्वितीयः श्लोकः

ततोऽयजन्मनुर्देवमपत्यार्थं हरिं प्रभुम् ।
इक्ष्वाकुपूर्वजान् पुत्राँल्लेभे स्वसदृशान् दश ॥२॥

पदच्छेद— ततः अयजत् मनुः देवम् अपत्यार्थम् हरिम् प्रभुम् ।
इक्ष्वाकु पूर्वजान् पुत्रान् लेभे स्वसदृशान् दश ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	उसके बाद	इक्ष्वाकु	१२.	इक्ष्वाकु
अयजत्	७.	आराधना की (और)	पूर्वजान्	१३.	सबसे बड़े थे ।
मनुः	२.	मनु ने	पुत्रान्	१०.	पुत्रों को
देवम्	५.	भगवान्	लेभे	११.	प्राप्त किया (जिसमें)
अपत्यार्थम्	३.	सन्तान के लिए	स्वसदृशान्	८.	अपने समान
हरिम्	६.	हरि की	दश ॥	९	दस
प्रभुम् ।	४.	सर्व समर्थ			

श्लोकार्थ—उसके बाद मनु ने सन्तान के लिए सर्व समर्थ भगवान् हरि की आराधना की और अपने समान दस पुत्रों को प्राप्त किया, जिनमें इक्ष्वाकु सबसे बड़े थे ॥

तृतीयः श्लोकः

पृषध्रस्तु मनोः पुत्रो गोपालः गुरुणा कृतः ।
पालयामास गा यत्तो रात्र्यां वीरासनव्रतः ॥३॥

पदच्छेद— पृषध्रः तु मनोः पुत्रः गोपालः गुरुणा कृतः ।
पालयामास गाः यत्तः रात्र्याम् वीरासन व्रतः ॥

शब्दार्थ—

पृषध्रः तु	३	पृषध्र हुआ (जिसे)	पालयामास	११.	रक्षा करता था
मनोः	१.	मनु का	गाः	११.	गायों की
पुत्रः	२.	पुत्र	यत्तः	१०.	सावधान होकर
गोपालः	५.	गोरक्षक	रात्र्याम्	७.	रात्रि में
गुरुणा	४.	गुरु वशिष्ठ ने	वीरासन	८	वीरासन से बैठने का
कृतः ।	६.	बनाया था (वह)	व्रतः ॥	९.	व्रत लेकर

श्लोकार्थ—मनु का पुत्र पृषध्र हुआ । जिसे गुरु वशिष्ठ ने गोरक्षक बनाया था । वह रात्रि में वीरासन से बैठने का व्रत लेकर सावधान होकर गायों की रक्षा करता था ॥

चतुर्थः श्लोकः

एकदा प्राविशद् गोष्ठं शार्दूलो निशि वर्षति ।
शयाना गाव उत्थाय भीतास्ता बभ्रमुर्व्रजे ॥४॥

पदच्छेद— एकदा प्राविशत् गोष्ठम् शार्दूलः निशि वर्षति ।
शयानाः गावः उत्थाय भीताः ताः बभ्रमुः व्रजे ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१.	एक बार	शयानाः	७.	सोई हुई
प्राविशत्	६.	घुस आया (जिससे)	गावः	८.	गायें
गोष्ठम्	४.	गोशाला में	उत्थाय	९.	उठ कर
शार्दूलः	५.	बाघ	भीताः	१०.	भयभीत हो गयीं (और)
निशि	३.	रात्रि में	ताः	११.	वे
वर्षति ।	२.	बरसात के समय	बभ्रमुः ॥	११.	इधर-उधर भागने लगीं
			व्रजे	१२.	गोशाला में

श्लोकार्थ—एक बार बरसात के समय रात्रि में गोशाला में बाघ घुस आया । जिससे सोई हुई गायें उठ कर भयभीत हो गईं और वे गोशाला में इधर-उधर भागने लगीं ॥

पञ्चमः श्लोकः

एकां जग्राह बलवान् सा चुक्रोश भयातुरा ।
तस्यास्तत् क्रन्दितं श्रुत्वा पृषध्रोऽभिससार ह ।५।।

पदच्छेद— एकाम् जग्राह बलवान् सा चुक्रोश भय आतुरा ।
तस्याः तत् क्रन्दितम् श्रुत्वा पृषध्रः अभिससार ह ।।

शब्दार्थ—

एकाम्	२.	एक गाय को	तस्याः	८.	उसका
जग्राह	३.	पकड़ लिया	तत्	९.	वह
बलवान्	१.	बलवान् बाघ ने	क्रन्दितम्	१०.	चिल्लाना
सा	४.	वह गाय	श्रुत्वा	११.	सुन कर
चुक्रोश	७.	चिल्लाने लगी	पृषध्रः	१२.	पृषध्र (गाय के पास)
भय	५.	भय से	अभिससार	१३.	दौड़ आया
आतुरा ।	६.	व्याकुल होकर	ह ।।	१४.	कर

श्लोकार्थ— बलवान् बाघ ने एक गाय को पकड़ लिया । वह गाय भय से व्याकुल होकर चिल्लाने लगी । उसका वह चिल्लाना सुन कर पृषध्र गाय के पास दौड़ कर आया ।।

षष्ठः श्लोकः

खड्गमादाय तरसा प्रलीनोडुगणे निशि ।
अजानन्नहनद् बभ्रोः शिरः शार्दूलशङ्कया ।।६।।

पदच्छेद— खड्गम् आदाय तरसा प्रलीनः उडुगणे निशि ।
अजानन् अहनत् बभ्रोः शिरः शार्दूल शङ्कया ।।

शब्दार्थ—

खड्गम्	४.	तलवार	अजानन्	९.	अनजान में
आदाय	५.	लेकर	अहनत्	१२.	काट दिया
तरसा	६.	वेग से	बभ्रोः	१०.	गाय का
प्रलीनः	१.	छिपे हुए	शिरः	११.	सिर
उडुगणे	२.	तारागण वाली	शार्दूल	७.	बाघ की
निशि ।	३.	रात्रि में	शङ्कया ।।	८.	आशङ्का से (उसने)

श्लोकार्थ—छिपे हुए तारागण वाली रात्रि में तलवार लेकर वेग से बाघ की आशङ्का से उसने अनजान में गाय का सिर काट दिया ।।

सप्तमः श्लोकः

व्याघ्रोऽपि वृक्णश्रवणो निस्त्रिंशाग्राहतस्ततः ।
निश्चक्राम भृशं भीतो रक्तं पथि समुत्सृजन् ॥७॥

पदच्छेद— व्याघ्रः अपि वृक्ण श्रवणः निस्त्रिंश अग्र, आहतः ततः ।
निःचक्राम भृशम् भीतः रक्तम् पथि समुत्सृजन् ॥

शब्दार्थ—

व्याघ्रः	५. बाघ	ततः ।	१. तब
अपि	६. भी	निःचक्राम	१४. निकल भागा
वृक्ण	८. कट जाने से	भृशम्	९ अत्यन्त
श्रवणः	७. कान के	भीतः	१०. भयभीत होकर
निस्त्रिंश	२. तलवार के	रक्तम्	१२. रक्त
अग्र	३. अग्रभाग से	पथि	११. रास्ते में
आहत	४. आहत होकर	सम् उत्सृजन् ॥	१३. गिराता हुआ

श्लोकार्थ—तब तलवार के अग्रभाग से आहत होकर बाघ भी कान के कट जाने से अत्यन्त भयभीत होकर रास्ते में रक्त गिराता हुआ निकल भागा ॥

अष्टमः श्लोकः

मन्यमानो हतं व्याघ्रं पृषध्रः परवीरहा ।
अद्राक्षीत् स्वहतां बभ्रुं व्युष्टायां निशि दुःखितः ॥८॥

पदच्छेद— मन्यमानः हतम् व्याघ्रम् पृषध्रः परवीरहा ।
अद्राक्षीत् स्वहताम् बभ्रुम् व्युष्टायां निशि दुःखितः ॥

शब्दार्थ

मन्यमानः	५. जान कर	अद्राक्षीत्	१०. देखा (इस से वह)
हतम्	४. मारा गया	स्वहताम्	८. अपने द्वारा मारी गई
व्याघ्रम्	३. बाघ को	बभ्रुम्	९. गाय को
पृषध्रः	२. पृषध्र ने	व्युष्टायां	६. बीतने पर
परवीरहा ।	१. शत्रु दमन	निशि	७. रात्रि के
		दुःखितः ॥	११. दुःखी हुआ

श्लोकार्थ—शत्रुदमन पृषध्र ने बाघ को मारा गया जान कर रात्रि के बीतने पर अपने द्वारा मारी गयी गाय को देखा । इससे वह दुःखी हो गया ॥

नवमः श्लोकः

तं शशाप कुलाचार्यः कृतागसमकामतः ।
न क्षत्रबन्धुः शूद्रस्त्वं कर्मणा भवितामुना ॥९॥

पदच्छेद— तम् शशाप कुलाचार्यः कृत आगसम् अकामतः ।
न क्षत्र बन्धुः शूद्रः त्वम् कर्मणा भविता अमुना ॥

शब्दार्थ—

तम्	५.	उसे	न	११.	नहीं (रहोगे)
शशाप	६.	शाप दे दिया कि)	क्षत्रबन्धुः	१०.	क्षत्रिय
कुलाचार्यः	१.	कुल पुरोहित वशिष्ठ ने	शूद्रः	१२.	शूद्र
कृत	४.	किये जाने पर	त्वम्	७.	तुम
आगसम्	३.	अपराध	कर्मणा	९.	कर्म से
अकामतः ।	२.	बिना इच्छा के भी	भविता	१३.	हो जाओगे
			अमुना ॥	८.	इस

श्लोकार्थ—कुल पुरोहित वशिष्ठ ने बिना इच्छा के भी अपराध किये जाने पर उसे शाप दे दिया, कि तुम इस कर्म से क्षत्रिय नहीं रहोगे शूद्र हो जाओगे ॥

दशमः श्लोकः

एवं शप्तस्तु गुरुणा प्रत्यगृह्णात् कृताञ्जलिः ।
अधारयद् व्रतं वीर ऊर्ध्वरेता मुनिप्रियम् ॥१०॥

पदच्छेद— एवम् शप्तः तु गुरुणा प्रति अगृह्णात् कृत अञ्जलिः ।
अधारयत् व्रतम् वीर ऊर्ध्वरेताः मुनि प्रियम् ॥

शब्दार्थः—

एवम्	१.	इस प्रकार	अधारयत्	१३.	धारण कर लिया
शप्तः तु	३.	शाप दिये जाने पर (उसने)	व्रतम्	१२	व्रत को
गुरुणा	२.	गुरु के द्वारा	वीर	८.	वीर पृषध्र ने
प्रति	६.	स्वीकार	ऊर्ध्वरेताः	९.	नैष्ठिक ब्रह्मचारी होकर
अगृह्णात्	७.	कर लिया	मुनि	१०.	मुनियों को
कृत	५.	बाँध कर	प्रियम् ।	११.	प्रिय लगने वाले
अञ्जलिः ।	४.	अञ्जलि			

श्लोकार्थ—इस प्रकार गुरु के द्वारा शाप दिये जाने पर उसने अञ्जलि बाँध कर स्वीकार कर लिया। वीर पृषध्र ने नैष्ठिक ब्रह्मचारी होकर मुनियों को प्रिय लगने वाले व्रत को धारण किया ॥

एकादशः श्लोकः

वासुदेवे भगवति सर्वात्मनि परेऽमले ।
एकान्तित्वं गतो भक्त्या सर्वभूतसुहृत्समः ॥११॥

पदच्छेद— वासुदेवे भगवति सर्व आत्मनि परे अमले ।
एकान्ति त्वम् गतः भक्त्या सर्व भूत सुहृत् समः ॥

शब्दार्थ—

वासुदेवे	९. वासुदेव में	एकान्तित्वम्	११. अनन्य प्रेम को
भगवति	८. भगवान्	गतः	१२. प्राप्त कर लिया
सर्व	४. सब के	भक्त्या	१०. भक्ति से
आत्मनि	५. आत्मा	सर्वभूत	१. सभी प्राणियों के
परे	६. परम	सुहृत्	२. मित्र
अमले ।	७. निर्मल	समः ॥	३. समान भाव से युक्त

श्लोकार्थ—सभी प्राणियों के मित्र, समान भाव से युक्त, सब के आत्मा, परम निर्मल भगवान् वासुदेव में भक्ति से अनन्य प्रेम को प्राप्त किया ॥

द्वादशः श्लोकः

विमुक्तसङ्गः शान्तात्मा संयताक्षोऽपरिग्रहः ।
यदृच्छयोपपन्नेन कल्पयन् वृत्तिमात्मनः ॥१२॥

पदच्छेद— विमुक्त सङ्गः शान्त आत्मा संयत अक्षः अपरिग्रहः ।
यदृच्छया उपपन्नेन कल्पयन् वृत्तिम् आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

विमुक्त	२. रहित	अपरिग्रहः	५. भोगों को त्यागने वाले
सङ्गः	१. सङ्ग से	यदृच्छया	८. अपने आप
शान्त	३. शान्त	उपपन्नेन	९. प्राप्त वस्तु से
आत्मा	४. आत्मा वाले	कल्पयन्	१२. कर लेते थे
संयत	७. वश में (रखने वाले)	वृत्तिम्	११. जीवन निर्वाह
अक्षः ।	६. इन्द्रियों को	आत्मनः	१०. अपना

श्लोकार्थ—सङ्ग से रहित, शान्त आत्मा वाले, भोगों को त्यागने वाले, इन्द्रियों को वश में रखने वाले अपने आप प्राप्त वस्तु से अपना जीवन निर्वाह कर लेते थे ॥

त्रयोदशः श्लोक

आत्मन्यात्मानमाधाय ज्ञानतृप्तः समाहितः ।
विचचार महीमेतां जडान्धबधिराकृतिः ॥१३॥

पदच्छेद— आत्मनि आत्मानम् आधाय ज्ञान तृप्तः समाहितः ।
विचचार महीम् एताम् जड अन्ध बधिर आकृतिः ॥

शब्दार्थ—

आत्मनि	३.	परमात्मा में	महीम्	११.	पृथ्वी पर
आत्मानम्	४.	मन को	एताम्	१०.	इस
आधाय	५.	स्थिर करके	जड	६.	जड़
ज्ञानतृप्तः	१.	ज्ञान से सन्तुष्ट	अन्ध	७.	अन्धे (और)
समाहितः	२.	समाधि में स्थिर होकर	बधिर	८.	बहरे के समान (वह पृषध्र)
विचचार ।	१२.	विचरण करते थे	आकृतिः ॥	९.	स्वरूप बना कर

श्लोकार्थ—ज्ञान से सन्तुष्ट, समाधि में स्थिर होकर परमात्मा में मन को स्थिर करके जड़ अन्धे और बहरे के समान वह पृषध्र स्वरूप बना कर इस पृथ्वी पर विचरण करते थे ॥

चर्तुदशः श्लोकः

एवं वृत्तो वनं गत्वा दृष्ट्वा दावाग्निमुत्थितम् ।
तेनोपयुक्तकरणो ब्रह्म प्राप परं मुनिः ॥१४॥

पदच्छेद— एवम् वृत्तः वनम् गत्वा दृष्ट्वा दावाग्निम् उत्थितम् ।
तेन उपयुक्त करणः ब्रह्म प्राप परम् मुनिः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	तेन	८.	उसमें
वृत्तः	२.	आचरण करता हुआ	उपयुक्त	१०.	जला कर
वनम्	३.	वन में	करणः	९.	इन्द्रियों को
गत्वा	४.	जा कर	ब्रह्म	१३.	परमात्मा को
दृष्ट्वा	७.	देख कर	प्राप	१४.	प्राप्त हो गया
दावाग्निम्	५.	दावाग्नि को	परम्	१२.	परब्रह्म
उत्थितम् ।	६.	धधकती हुई	मुनिः ॥	११.	वह मुनि (पृषध्र)

श्लोकार्थ—इस प्रकार आचरण करता हुआ वन में जाकर दावाग्नि को धधकती हुई देख कर उसमें इन्द्रियों को जलाकर वह पृषध्र मुनि परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त हो गया ॥

पञ्चदशः श्लोक

कविः कनीयान् विषयेषु निःस्पृहो विसृज्य राज्यं सह बन्धुभिर्वनम् ।
निवेश्य चित्ते पुरुषं स्वरोचिषं विवेश कैशोरवयाः परं गतः ॥१५॥

पदच्छेद— कविः कनीयान् विषयेषु निःस्पृहः विसृज्य राज्यम् सह बन्धुभिः वनम् ।
निवेश्य चित्ते पुरुषम् स्वरोचिषम् विवेश कैशोरवयाः परम् गतः ॥

शब्दार्थ—

कविः	२. कवि नाम का	निवेश्य	१४. स्थापित करके
कनीयान्	१. मनु का सबसे छोटा पुत्र	चित्ते	११. अपने चित्त में
विषयेषु	३. विषयों से	पुरुषम्	१३. परमात्मा को
निःस्पृह	४. निःस्पृह होकर	स्वरोचिषम्	१२. स्वयं प्रकाश
विसृज्य	६. छोड़ कर	विवेश	१०. प्रविष्ट हो गया (वह)
राज्यम्	५. राज्य को	कैशोरवयाः	१५ किशोर अवस्था में ही
सह	८. साथ	परम्	१६. परम
बन्धुभिः	७. भाइयों के	गतः ॥	१७. पद को प्राप्त हो गया
वनम् ।	९. वन में		

श्लोकार्थ—मनु का सब से छोटा पुत्र कवि नाम का, विषय भोगों से निःस्पृह होकर राज्य को छोड़कर भाइयों के साथ वन में प्रविष्ट हो गया । वह अपने चित्त में स्वयं प्रकाश परमात्मा को स्थापित करके किशोरावस्था में ही परम पद को प्राप्त हो गया ।

षोडशः श्लोकः

करूषान्मानवादासन् कारूषाः क्षत्रजातयः ।
उत्तरापथगोप्तारो ब्रह्मण्या धर्मवत्सलाः ॥१६॥

पदच्छेद— करूषान् मानवात् आसन् कारूषाः क्षत्र जातयः ।
उत्तरापथ गोप्तारः ब्रह्मण्याः धर्म वत्सलाः ॥

शब्दार्थ—

करूषान्	२. करूष से	उत्तरापथ	९. उत्तरापथ के
मानवात्	१. मनु पुत्र	गोप्तारः	१०. रक्षक थे
आसन्	५. उत्पन्न हुये (वे)	ब्रह्मण्याः	६. ब्राह्मण भक्त
कारूषाः	३. कारूष नामक	धर्म	७. धर्म
क्षत्र	४. क्षत्रिय	वत्सलाः ॥	८. प्रेमी (और)
जातयः ।			

श्लोकार्थ—मनुपुत्र करूष से कारूष नामक क्षत्रिय उत्पन्न हुए । वे ब्राह्मण भक्त धर्मप्रेमी और उत्तरापथ के रक्षक थे ॥

सप्तदशः श्लोकः

धृष्टाद् धार्ष्टमभूत् क्षत्रं ब्रह्मभूयं गतं क्षितौ ।
नृगस्य वंशः सुमतिर्भूतज्योतिस्ततो वसुः ॥१७॥

पदच्छेद— धृष्टात् धार्ष्टम् अभूत् क्षत्रम् ब्रह्मभूयम् गतम् क्षितौ ।
नृगस्य वंशः सुमतिः भूतज्योतिः ततः वसुः ॥

शब्दार्थ—

धृष्टात्	१. मनु पुत्र धृष्ट से	नृगस्य	८. नृग का
धार्ष्टम्	२. धार्ष्ट नामक	वंशः	९. पुत्र
अभूत्	४. हुये (वे)	सुमतिः	१०. सुमति हुआ (उससे)
क्षत्रम्	३. क्षत्रिय	भूतज्योतिः	११. भूत ज्योति और
ब्रह्मभूयम्	६. ब्राह्मणत्व को	ततः	१२. उससे
गतम्	७. प्राप्त हुए	वसुः ॥	१३. वसु हुआ
क्षितौ ।	५. पृथ्वी पर		

श्लोकार्थ—मनु पुत्र धृष्ट से धार्ष्ट नामक क्षत्रिय हुए । वे पृथ्वी पर ब्राह्मणत्व को प्राप्त हुए । नृग का पुत्र सुमति हुआ । उससे भूतज्योति और उससे वसु हुआ ॥

अष्टादशः श्लोकः

वसोः प्रतीकस्तत्पुत्र ओघवानोघवत्पिता ।
कन्या चौघवती नाम सुदर्शन उवाह ताम् ॥१८॥

पदच्छेद— वसोः प्रतीकः तत् पुत्रः ओघवान् ओघवत्पिता ।
कन्या च ओघवती नाम सुदर्शनः उवाह ताम् ॥

शब्दार्थ—

वसोः	१. वसु का पुत्र	कन्या	१०. एक कन्या थी
प्रतीकः	२. प्रतीक	च	७. और उसकी
तत्	३. उसका	ओघवती	८. ओघवती
पुत्रः	४. पुत्र	नाम	९. नाम की
ओघवान्	५. ओघवान् (उसका)	सुदर्शनः	११. सुदर्शन ने
ओघवत्पिता	६. पुत्र भी ओघवान् ही	उवाह	१३. विवाह किया
		ताम्	१२. उससे

श्लोकार्थ—वसु का पुत्र प्रतीक, उसका पुत्र ओघवान् उसका पुत्र भी ओघवान् ही था और उसकी ओघवती नाम की एक कन्या थी । उससे सुदर्शन ने विवाह किया ॥

एकोनविंशः श्लोकः

चित्रसेनो नरिष्यन्तादृक्षस्तस्य सुतोऽभवत् ।
तस्य मीढ्वांस्ततः कूर्च इन्द्रसेनस्तु तत्सुतः ॥१९॥

पदच्छेद— चित्रसेनः नरिष्यन्तात् ऋक्षः तस्य सुतः अभवत् ।
तस्य मीढ्वान् ततः कूर्चः इन्द्रसेनः तु तत् सुतः ॥

शब्दार्थ—

चित्रसेनः	२.	चित्रसेन	तस्य	६.	उसका
नरिष्यन्तात्	१.	नरिष्यन्त से	मीढ्वान्	७.	मीढ्वान्
ऋक्षः	५.	ऋक्ष	ततः	८.	उससे
तस्य	३.	उसका	कूर्चः	९.	कूर्च और
सुतः	४.	पुत्र	इन्द्रसेनः	१२.	इन्द्रसेन
अभवत् ।	१३.	हुआ	तु तत्	१०.	उसका
			सुतः ॥	११.	पुत्र

श्लोकार्थ—मनुपुत्र नरिष्यन्त से चित्रसेन, उसका पुत्र ऋक्ष हुआ, उसका मीढ्वान्, उससे कूर्च और उसका पुत्र इन्द्रसेन हुआ ॥

विंशः श्लोकः

वीतिहोत्रस्त्विन्द्रसेनात् तस्य सत्यश्रवा अभूत् ।
उरुश्रवाः सुतस्तस्य देवदत्तस्ततोऽभवत् ॥२०॥

पदच्छेद— वीतिहोत्रः तु इन्द्रसेनात् तस्य सत्यश्रवाः अभूत् ।
उरुश्रवाः सुतः तस्य देवदत्तः ततः अभवत् ॥

शब्दार्थ—

वीतिहोत्रः	२	वीतिहोत्र	उरुश्रवाः	८.	उरुश्रवा
तु इन्द्रसेनात्	१.	इन्द्रसेन से	सुतः	७	पुत्र
तस्य	३.	उससे	तस्य	६.	उसका
सत्यश्रवाः	४.	सत्यश्रवा	देवदत्तः	१०.	देवदत्त
अभूत् ।	५.	हुआ	ततः	९.	उससे
			अभवत् ॥	११.	हुआ

श्लोकार्थ—इन्द्रसेन से वीतिहोत्र, उससे सत्यश्रवा हुआ । उसका पुत्र उरुश्रवा और उससे देवदत्त हुआ ॥

एकविंशः श्लोकः

ततोऽग्निवेश्यो भगवानग्निः स्वयमभूत् सुतः ।
कानीन इति विख्यातो जातूकर्ण्यो महानृषिः ॥२१॥

पदच्छेद— ततः अग्निवेश्यः भगवान् अग्निः स्वयम् अभूत् सुतः ।
कानीनः इति विख्यातः जातूकर्ण्यः महान् ऋषिः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	उस देवदत्त के	कानीनः	८.	कानीन
अग्निवेश्यः	३.	अग्निवेश्य थे (जो)	इति	९.	इस नाम से
भगवान्	५.	भगवान्	विख्यातः	१०.	प्रसिद्ध (और)
अग्निः	६.	अग्निदेव ही	जातूकर्ण्यः	११.	जातूकर्ण्य नाम के
स्वयम्	४	स्वयम्	महान्	१२.	महान्
अभूत्	७.	थे (वे)	ऋषिः ॥	१३.	ऋषि थे
सुतः ।	२.	पुत्र			

श्लोकार्थ—उस देवदत्त के पुत्र अग्निवेश्य थे, जो स्वयं भगवान् अग्निदेव ही थे । वे कानीन इस नाम से प्रसिद्ध और जातूकर्ण्य नाम के महान् ऋषि हुए ।

द्वाविंशः श्लोकः

ततो ब्रह्मकुलं जातमाग्निवेश्यायनं नृप ।
नरिष्यन्तान्वयः प्रोक्तो दिष्टवंशमतः शृणु ॥२२॥

पदच्छेद— ततः ब्रह्मकुलम् जातम् अग्निवेश्यायनम् नृप ।
नरिष्यन्त अन्वयः प्रोक्तः दिष्ट वंशम् अतः शृणु ॥

ततः	२.	उससे	नरिष्यन्त	६.	नरिष्यन्त का
ब्रह्मकुलम्	४.	ब्राह्मणवंश	अन्वयः	७.	वंश
जातम्	५.	हुआ	प्रोक्तः	८.	बता दिया
अग्निवेश्यायनम्	३.	अग्निवेश्यायन	दिष्टः	९.	दिष्ट का
नृप ।	१.	हे राजन् !	वंशम् अतः	११.	अब वंश
			शृणु ॥	१२.	सुनो

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उससे अग्निवेश्यायन नामक ब्राह्मणवंश हुआ । नरिष्यन्त का वंश बता दिया । अब दिष्ट का वंश सुनो ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

नाभागो दिष्टपुत्रोऽन्यः कर्मणा वैश्यतां गतः ।
भलन्दनः सुतस्तस्य वत्सप्रीतिर्भलन्दनात् ॥२३॥

पदच्छेद— नाभागः दिष्ट पुत्रः अन्यः कर्मणा वैश्यताम् गतः ।
भलन्दनः सुतः तस्य वत्स प्रीतिः भलन्दनात् ॥

शब्दार्थ—

नाभागः	३.	नाभाग हुआ	गतः ।	७.	गया था
दिष्ट	१.	दिष्ट का	भलन्दनः	१०.	भलन्दन हुआ
पुत्रः	२.	पुत्र	सुतः	६.	पुत्र
अन्यः	४.	यह दूसरा (नाभाग) है जो अपने	तस्य	८.	उसका
कर्मणा	५.	कर्म से	वत्सप्रीतिः	१२.	वत्सप्रीति हुआ
वैश्यताम्	६.	वैश्य हो	भलन्दनात् ॥	११.	भलन्दन से

श्लोकार्थ—दिष्ट का पुत्र नाभाग हुआ । यह दूसरा (नाभाग) जो अपने कर्म से वैश्य हो गया । उसका पुत्र भलन्दन हुआ । भलन्दन से वत्सप्रीति हुआ ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

वत्सप्रीतेः सुतः प्रांशुस्तत्सुतं प्रमतिं विदुः ।
खनित्रः प्रमतेस्तस्माच्चाक्षुषोऽथ विविंशतिः ॥२४॥

पदच्छेद— वत्स प्रीतेः सुतः प्रांशुः तत् सुतम् प्रमतिम् विदुः ।
खनित्रः प्रमतेः तस्मात् चाक्षुषः अथ विविंशतिः ॥

शब्दार्थ—

वत्स	१.	वत्स	विदुः	८.	कहते हैं
प्रीतेः	२.	प्रीति का	खनित्रः	१०.	खनित्र
सुतः	३.	पुत्र	प्रमतेः	६.	प्रमति से
प्रांशुः	४.	प्रांशु हुआ	तस्मात्	११.	उससे
तत्	५.	उसके	चाक्षुषः	१२.	चाक्षुष
सुतम्	६.	पुत्र को	अथ	१३.	और उससे
प्रमतिम् ।	७.	प्रमति	विविंशतिः ॥	१४.	विविंशति हुआ

श्लोकार्थ—वत्स प्रीति का पुत्र प्रांशु हुआ । उसके पुत्र को प्रमति कहते हैं । प्रमति से खनित्र, उससे चाक्षुष और उससे विविंशति हुआ ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

विविंशतिसुतो रम्भः खनिनेत्रोऽस्य धार्मिकः ।
करन्धमो महाराज तस्यासीदात्मजो नृप ॥२५॥

पदच्छेद— विविंशति सुतः रम्भः खनिनेत्रः अस्य धार्मिकः ।
करन्धमः महाराज तस्य आसीत् आत्मजः नृप ॥

शब्दार्थ—

विविंशतिः	२. विविंशति का	करन्धमः	११. करन्धम
सुतः	३. पुत्र	महाराज	१. हे महाराज
रम्भः	४ रम्भ हुआ	तस्य	९. उसका
खनिनेत्रः	७ खनिनेत्र हुआ	आसीत्	१२. हुआ
अस्य	५. उसका	आत्मजः	१०. पुत्र
धार्मिकः ।	६. धार्मिक पुत्र	नृप ॥	८. हे राजन्

श्लोकार्थ—हे महाराज ! विविंशति का पुत्र रम्भ हुआ, उसका धार्मिक पुत्र खनिनेत्र हुआ । हे महाराज ! उसका पुत्र करन्धम हुआ ॥

षड्विंशः श्लोकः

तस्यावीक्षित् सुतो यस्य मरुत्तश्चक्रवर्त्यभूत् ।
संवर्तोऽयाजयद् यं वै महायोग्यङ्गिरःसुतः ॥२६॥

पदच्छेद— तस्य अवीक्षित् सुतः यस्य मरुत्तः चक्रवर्ती अभूत् ।
संवर्तः अयाजयत् यम् वै महायोगी अङ्गिरः सुतः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१. उस करन्धम का	संवर्तः	१२. संवर्त ऋषि ने
अवीक्षित्	३. अवीक्षित् हुआ	अयाजयत्	१४. यज्ञ कराया था
सुतः	२. पुत्र	यम्	८. जिससे
यस्य	४. उसका पुत्र	वै	१३. निश्चित ही
मरुत्तः	५. मरुत्त	महायोगी	९. महायोगी
चक्रवर्ती	६. चक्रवर्ती राजा	अङ्गिरः	१०. अंगिरा के
अभूत् ।	७. हुआ	सुतः ॥	११. पुत्र

श्लोकार्थ—उस करन्धम का पुत्र अवीक्षित् हुआ जिसका पुत्र मरुत्त चक्रवर्ती राजा हुआ । जिससे महायोगी अंगिरा पुत्र संवर्तक ऋषि ने निश्चित ही यज्ञ कराया था ॥

सप्तविंशः श्लोक

मरुत्तस्य यथा यज्ञो न तथान्यस्य कश्चन।
सर्वं हिरण्मयं त्वासीद् यत् किञ्चिच्चास्य शोभनम् ॥२७॥

पदच्छेद— मरुत्तस्य यथा यज्ञः न तथा अन्यस्य कश्चन।
सर्वम् हिरण्मयम् तु आसीत् यत् किञ्चित् च अस्य शोभनम् ॥

शब्दार्थ—

मरुत्तस्य	२. मरुत्त का	सर्वम्	८. उसमें सभी पात्र
यथा	१. जैसा	हिरण्मयम्	९. सोने के
यज्ञः	३. यज्ञ हुआ	तु आसीत्	१०. बने थे
न	७. नहीं हुआ	यत्	१२. जो
तथा	४. वैसा	किञ्चित्	१३. कुछ था सब
अन्यस्य	६. दूसरे का	च अस्य	११. और उस यज्ञ का
कश्चन।	५. किसी	शोभनम् ॥	१४. सुन्दर था

श्लोकार्थ— जैसा मरुत्त का यज्ञ हुआ वैसा किसी दूसरे का नहीं हुआ। उसमें सभी पात्र सोने के बने थे। और जो कुछ था सब सुन्दर था ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

अमाद्यदिन्द्रः सोमेन दक्षिणाभिर्द्विजातयः।
मरुतः परिवेष्टारो विश्वेदेवाः सभासदः ॥२८॥

पदच्छेद— अमाद्यत् इन्द्रः सोमेन दक्षिणाभिः द्विजातयः।
मरुतः परिवेष्टारः विश्वेदेवाः सभा सदः ॥

शब्दार्थ—

अमाद्यत्	३. मतवाले हो गये थे	मरुतः	६. उनमें मरुद् गण
इन्द्रः	१. इन्द्र	परिवेष्टारः	७. परोसने वाले थे
सोमेन	२. सोमपान से	विश्वेदेवाः	८. विश्वेदेव
दक्षिणाभिः	५. दक्षिणाओं से तृप्त हो गये	सभासदः ॥	९. सभासद् थे
द्विजातयः।	४. ब्राह्मण		

श्लोकार्थ— इन्द्र सोमपान से मतवाले हो गये थे। ब्राह्मण दक्षिणा से तृप्त हो गये थे। उसमें मरुद् गण परोसने वाले थे। और विश्वेदेव सभासद थे ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

मरुत्तस्य दमः पुत्रस्तस्यासीद् राज्यवर्धनः।
सुधृतिस्तत्सुतो जज्ञे सौधृतेयो नरः सुतः ॥२९॥

पदच्छेद— मरुत्तस्य दमः पुत्रः तस्य आसीत् राज्य वर्धनः।
सुधृतिः तत् सुतः जज्ञे सौधृतेयः नरः सुतः ॥

शब्दार्थ—

मरुत्तस्य	१. मरुत्त के	सुधृतिः	९. सुधृति
दमः	३. दम था	तत्	७. उसका
पुत्रः	२. पुत्र का नाम	सुतः	८. पुत्र
तस्य	४. उसका पुत्र	जज्ञे	१०. उत्पन्न हुआ और
आसीत्	५. था	सौधृतेयः	११. सुधृति का
राज्यवर्धनः	६. राज्यवर्धन	नरः	१३. नर हुआ
		सुतः	१२. पुत्र

श्लोकार्थ—मरुत्त के पुत्र का नाम दम था। उसका पुत्र था राज्यवर्धन, उसका पुत्र सुधृति उत्पन्न हुआ और सुधृति का पुत्र नर हुआ ॥

त्रिंशः श्लोकः

तत्सुतः केवलस्तस्माद् बन्धुमान् वेगवांस्ततः।
बन्धुस्तस्याभवद् यस्य तृणबिन्दुर्महीपतिः ॥३०॥

पदच्छेद— तत् सुतः केवलः तस्मात् बन्धुमान् वेगवान् ततः।
बन्धुः तस्य अभवत् यस्य तृणबिन्दुः मही पतिः ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. उस नर का	बन्धुः	९. बन्धु
सुतः	२. पुत्र	तस्य	८. उससे
केवलः	३. केवल	अभवत्	१४. उत्पन्न हुआ
तस्मात्	४. उससे	यस्य	१०. जिसका पुत्र
बन्धुमान्	५. बन्धुमान्	तृणबिन्दुः	१३. तृणबिन्दु नाम का
वेगवान्	७. वेगवान्	मही	११. पृथ्वी का
ततः।	६. उससे	पतिः ॥	१२. राजा

श्लोकार्थ—उस नर का पुत्र केवल, उससे बन्धुमान्, उससे वेगवान्, उससे बन्धु, जिसका पुत्र पृथ्वी का राजा तृणबिन्दु नाम का उत्पन्न हुआ ॥

एकत्रिंश श्लोकः

तं भेजेऽलम्बुषा देवी भजनीयगुणालयम् ।
वराप्सरा यतः पुत्राः कन्या चेडविडाभवत् ॥३१॥

पदच्छेद— तम् भेजे अलम्बुषा देवी भजनीय गुण आलयम् ।
वर अप्सरा यतः पुत्राः कन्या च इडविडा अभवत् ॥

शब्दार्थ—

तम्	४.	उस राजा तृण बिन्दु का	वर	६.	श्रेष्ठ
भेजे	९.	वरण किया	अप्सरा	५.	अप्सराओं में
अलम्बुषा	७.	अलम्बुषा	यतः	१०.	जिससे
देवी	८.	देवी ने	पुत्राः	११.	अनेक पुत्र
भजनीय	१.	गान करने योग्य	कन्या	१३.	कन्या
गुण	२.	गुणों के	च इडविडा	१२.	और इडविडा नाम की
आलयम् ।	३.	गृह रूप	अभवत् ॥	१४.	हुई

श्लोकार्थ—गान करने योग्य गुणों के गृह रूप उस राजा तृण बिन्दु का अप्सराओं में श्रेष्ठ अलम्बुषा देवी ने वरण किया। जिससे अनेक पुत्र और इडविडा नाम की कन्या हुई ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

तस्यामुत्पादयामास विश्रवा धनदं सुतम् ।
प्रादाय विद्यां परमामृषियोगेश्वरात् पितुः ॥३२॥

पदच्छेद— तस्याम् उत्पादयामास विश्रवाः धनदम् सुतम् ।
प्रादाय विद्याम् परमाम् ऋषि योगश्वरात् पितुः ॥

शब्दार्थ—

तस्याम्	८.	उस (इडविडा से)	प्रादाय	७.	प्राप्त करके
उत्पादयामास	११.	उत्पन्न किया	विद्याम्	६.	विद्या को
विश्रवाः	२.	विश्रवा ने (अपने)	परमाम्	५.	उत्तम
धनदम्	९.	कुबेर	ऋषिः	१.	मुनिवर
सुतम्	१०.	पुत्र को	योगेश्वरात्	३.	योगेश्वर
			पितुः ॥	४.	पिता से

श्लोकार्थ—मुनिवर विश्रवा ने योगेश्वर पिता से उत्तम विद्या को प्राप्त करके उस इडविडा से कुबेर पुत्र को उत्पन्न किया ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

विशालः शून्यबन्धुश्च धूम्रकेतुश्च तत्सुताः ।
विशालो वंशकृद् राजा वैशालीं निर्ममे पुरीम् ॥३३॥

पदच्छेद— विशालः शून्य बन्धुः च धूम्रकेतुः च तत् सुताः ।
विशालः वंशकृत् राजा वैशालीम् निर्ममे पुरीम् ॥

शब्दार्थ—

विशालः	२. विशाल	विशालः	९. विशाल के
शून्य	३. शून्य	वंशकृत्	१०. वंश को बढ़ाने वाला हुआ
बन्धुः च	४. बन्धु और	राजा	८. राजा (उसने)
धूम्रकेतुः	५. धूम्र केतु नाम के तीन	वैशालीम्	११. वैशाली नाम की
च	७. और जो	निर्ममे	१३. बसायी
तत्	१. उन राजा के	पुरीम् ॥	१२. नगरी
सुताः ।	६. पुत्र हुए		

श्लोकार्थ—उन राजा के विशाल, शून्यबन्धु और धूम्रकेतु नाम के तीन पुत्र हुए । और जो राजा विशाल के वंश को बढ़ाने वाला हुआ, उसने वैशाली नाम की नगरी बसायी ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

हेमचन्द्रः सुतस्तस्य धूम्राक्षस्तस्य चात्मजः ।
तत्पुत्रात् संयमादासीत् कृशाश्वः सहदेवजः ॥३४॥

पदच्छेद— हेमचन्द्रः सुतः तस्य धूम्राक्षः तस्य च आत्मजः ।
तत् पुत्रात् संयमात् आसीत् कृशाश्वः सहदेवजः ॥

शब्दार्थ—

हेमचन्द्रः	३. हेम चन्द्र	तत्	८. उससे
सुतः	२. पुत्र	पुत्रात्	१०. पुत्र
तस्य	१. उसका	संयमात्	९. संयम नामक
धूम्राक्षः	७. धूम्राक्ष हुआ	आसीत्	११. हुआ (उससे)
तस्य	५. उसका	कृशाश्वः	१२ कृशाश्व के
च	४. और	सह	१३. साथ
आत्मजः ।	६ पुत्र	देवजः ॥	१४. देवज उत्पन्न हुआ।

श्लोकार्थ—उसका पुत्र हेमचन्द्र और उसका पुत्र धूम्राक्ष हुआ । उससे संयम नामक पुत्र हुआ । उससे कृशाश्व के साथ देवज पुत्र उत्पन्न हुआ ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

कृशाश्वात् सोमदत्तोऽभूद् योऽश्वमेधैरिडस्पतिम् ।
इष्ट्वा पुरुषमापाग्र्यां गतिं योगेश्वराश्रितः ॥३५॥

पदच्छेद— कृशाश्वात् सोमदत्तः अभूत् यः अश्वमेधैः इडस्पतिम् ।
इष्ट्वा पुरुषम् आपाग्र्या गतिम् योगेश्वर आश्रितः ॥

शब्दार्थ—

कृशाश्वात्	१.	कृशाश्व से	इष्ट्वा	८.	आराधना करके
सोमदत्तः	२.	सोमदत्त	पुरुषम्	७.	भगवान् की
अभूत्	३.	हुआ	आपाग्र्या	११.	उत्तम
यः	४.	जिसने	गतिम्	१२.	गति को प्राप्त किया
अश्वमेधैः	५.	अश्वमेध यज्ञों से	योगेश्वर	९.	योगी राजों का
इडस्पतिम् ।	६.	यज्ञ पति	आश्रितः ॥	१०	आश्रय लेकर

श्लोकार्थ—कृशाश्व से सोमदत्त हुआ। जिसने अश्वमेध यज्ञों से यज्ञपति भगवान् की आराधना करके योगिराजों का आश्रय लेकर उत्तम गति को प्राप्त किया ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

सौमदत्तिस्तु सुमतिस्तत्सुतो जनमेजयः ।
एते वैशालभूपालास्तृणबिन्दोर्यशोधराः ॥३६॥

पदच्छेद— सौमदत्तिःतु सुमतिः तत् सुतः जनमेजयः ।
एते वैशाल भूपालाः तृणबिन्दोः यशोधराः ॥

शब्दार्थ—

सोमदत्तिः	१.	सोमदत्त का पुत्र	एते	६.	ये सब
तु सुमतिः	२.	सुमति हुआ	वैशाल	९.	विशाल वंशीय
तत्	३.	उसका	भूपालाः	१०.	राजा हुए
सुतः	४.	पुत्र	तृणबिन्दोः	७	तृण बिन्दु के
जनमेजयः ।	५.	जनमेय हुआ	यशोधराः ॥	८.	यश को बढ़ाने वाले

श्लोकार्थ—सोमदत्त का पुत्र सुमति हुआ। उसका पुत्र जनमेजय हुआ। ये सब तृणबिन्दु के वंश को बढ़ाने वाले विशाल वंशीय राजा हुये ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे
द्वितीयः अध्यायः ॥२॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

तृतीयः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— शर्यातिर्मानवो राजा ब्रह्मिष्ठः स बभूव ह।
यो वा अङ्गिरसां सत्रे द्वितीयमह ऊचिवान् ॥१॥

पदच्छेद— शर्यातिः मानवः राजा ब्रह्मिष्ठः स बभूव ह।
यः वै अङ्गिरसाम् सत्रे द्वितीयम् अहः ऊचिवान् ॥

शब्दार्थ—

शर्यातिः	४.	शर्याति	यः	७.	जिन्होंने
मानवः	३.	मनु हुए	वै	८.	निश्चित ही
राजा	२.	राजा	अङ्गिरसाम्	९.	अङ्गिरा गोत्र वाले ऋषियों के
ब्रह्मिष्ठः	५.	वेदों के जानकार	सत्रे	१०.	यज्ञ में
सः	१.	वे	द्वितीयम् अहः	११.	दूसरे दिन का कर्म
बभूव ह।	६.	हुये	ऊचिवान् ॥	१२.	बतलाया था

श्लोकार्थ—वे राजा मनु पुत्र शर्याति वेदों के जानकार हुए। जिन्होंने निश्चित ही अङ्गिरा गोत्र वाले ऋषियों के यज्ञ में दूसरे दिन का कर्म बतलाया था ॥

द्वितीयः श्लोकः

सुकन्या नाम तस्यासीत् कन्या कमललोचना।
तया सार्धं वनगतो ह्यगमच्च्यवनाश्रमम् ॥२॥

पदच्छेद— सुकन्या नाम तस्य आसीत् कन्या कमल लोचना।
तया सार्धम् वन गतः हि अगमत् च्यवन आश्रमम् ॥

शब्दार्थ—

सुकन्या	४.	सुकन्या	तया	८.	उसके
नाम	५.	नाम की	सार्धम्	९.	साथ
तस्य	१.	उनकी	वन	१०.	वन में
आसीत्	७.	थी	गतः	११	जाकर (वे)
कन्या	६.	कन्या	हिअगमत्	१४.	पहुँचे
कमल	२.	कमल के समान	च्यवन	१२.	च्यवन ऋषि के
लोचना।	३.	नेत्रों वाली	आश्रमम् ॥	१३.	आश्रम में

श्लोकार्थ—उनकी कमल के समान नेत्रों वाली सुकन्या नाम की कन्या थी। उसके साथ वन में जाकर वे च्यवन ऋषि के आश्रम में पहुँचे ॥

तृतीयः श्लोकः

सा सखीभिः परिवृता विचिन्वत्यङ्घ्रिपान् वने ।
वल्मीकरन्ध्रे ददृशे खद्योते इव ज्योतिषी ॥३॥

पदच्छेद— सा सखीभिः परिवृता विचिन्वती अङ्घ्रिपान् वने ।
वल्मीक रन्ध्रे ददृशे खद्योते इव ज्योतिषी ॥

शब्दार्थ—

सा	१ वह कन्या	वल्मीक	७. वामी के
सखीभिः	२. सखियों से	रन्ध्रे	८. छिद्र में
परिवृता	३. घिरी हुई	ददृशे	१२. देखा
विचिन्वती	६. देखती हुई (घूम रही थी) उसने	खद्योते	९. जुगनू के
अङ्घ्रिपान्	५. वृक्षों को	इव	१०. समान
वने ।	४. वन में	ज्योतिषी ॥	११. दो ज्योतियों को

श्लोकार्थ— वह कन्या सखियों से घिरी हुई वन में वृक्षों को देखती हुई घूम रही थी। उसने वामी के छेद में जुगनू के समान दो ज्योतियों को देखा ॥

चतुर्थः श्लोकः

ते दैवचोदिता बाला ज्योतिषी कण्टकेन वै ।
अविध्यन्मुग्धभावेन सुस्रावासृक् ततो बहु ॥४॥

पदच्छेद— ते दैव चोदिता बाला ज्योतिषी कण्टकेन वै ।
अविध्यत् मुग्ध भावेन सुस्राव असृक् ततः बहु ॥

शब्दार्थ—

ते	७. उन	अविध्यत्	१९. वेध दिया
दैव	१. भाग्य से	मुग्ध	४. भोलेपन
चोदिता	२. प्रेरित	भावेन	५. के कारण
बाला	३. कन्या ने	सुस्राव	१३. बहने लगा
ज्योतिषी	८. ज्योतियों को	असृक्	१२. रक्त
कण्टकेन	६. काँटे से	ततः	१०. उन ज्योतियों से
		बहु ॥	११. बहुत

श्लोकार्थ— भाग्य से प्रेरित कन्या ने भोलेपन के कारण काँटे से उन ज्योतियों को वेध दिया। उन ज्योतियों से बहुत रक्त बहने लगा ॥

पञ्चमः श्लोकः

शकृन्मूत्रनिरोधोऽभूत् सैनिकानां च तत्क्षणात् ।
राजर्षिस्तमुपालक्ष्य पुरुषान् विस्मितोऽब्रवीत् ॥५॥

पदच्छेद— शकृत् मूत्र निरोधः अभूत् सैनिकानाम् च तत् क्षणात् ।
राजर्षिः तम् उपालक्ष्य पुरुषान् विस्मितः अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

शकृत्	५.	मल	क्षणात्	३.	काल
मूत्र	६.	मूत्र	राजर्षिः	९.	राजर्षिशर्याति ने
निरोधः	७.	रुक	तम्	१०.	उसको
अभूत्	८.	गया	उपालक्ष्य	११.	देखकर
सैनिकानाम्	१२.	सैनिकों का	पुरुषान्	१२.	सैनिकों से
च	१.	और	विस्मितः	१३.	आश्चर्यचकित होकर
तत् ।	२.	तत्	अब्रवीत् ॥	१४.	कहा

श्लोकार्थ— और तत्काल सैनिकों का मलमूत्र रुक गया । राजर्षिशर्याति ने उसको देखकर सैनिकों से आश्चर्य चकित होकर कहा ॥

षष्ठः श्लोकः

अप्यभद्रं न युष्माभिर्भार्गवस्य विचेष्टितम् ।
व्यक्तं केनापि नस्तस्य कृतमाश्रमदूषणम् ॥६॥

पदच्छेद— अपि अभद्रम् न युष्माभिः भार्गवस्य विचेष्टितम् ।
व्यक्तम् केन अपि नः तस्य कृतम् आश्रम दूषणम् ॥

शब्दार्थ—

अपि	१.	क्या	व्यक्तम्	७.	स्पष्ट है कि
अभद्रम्	४.	अनुचित	केन अपि	९.	किसी ने भी
न	६.	नहीं किया है	नः तस्य	८.	हम लोगों में से उन ऋषि के
युष्माभिः	२.	तुम लोगों ने	कृतम्	१३.	किया है
भार्गवस्य	३.	च्यवनऋषि के प्रति	आश्रम	११.	आश्रम को
विचेष्टितम् ।	५.	व्यवहार तो	दूषणम् ॥	१२.	दूषित

श्लोकार्थ— क्या तुम लोगों ने च्यवन ऋषि के प्रति अनुचित व्यवहार तो नहीं किया है ? स्पष्ट है कि हम लोगों में से किसी ने भी उन ऋषि के आश्रम को दूषित किया है ॥

सप्तमः श्लोकः

सुकन्या प्राह पितरं भीता किञ्चित् कृतं मया ।
द्वे ज्योतिषी अजानन्त्या निर्भिन्ने कण्टकेन वै ॥७॥

पदच्छेद— सुकन्या प्राह पितरम् भीता किञ्चित् कृतम् मया ।
द्वे ज्योतिषी अजानन्त्या निर्भिन्ने कण्टकेन वै ॥

शब्दार्थ—

सुकन्या	१. सुकन्या ने	मया	५. मैंने
प्राह	४. कहा (कि)	द्वे	९. दो
पितरम्	३. पिता से	ज्योतिषी	१०. ज्योतियों को
भीता	२. डरते-डरते	अजानन्त्या	८. न जानती हुई (मैंने)
किञ्चित्	६. कुछ (अपराध)	निर्भिन्ने	१२. बेध दिया है
कृतम् ।	७. किया है	कण्टकेन वै ॥	११. काँटे से

श्लोकार्थ— सुकन्या ने डरते-डरते पिता से कहा कि मैंने कुछ अपराध किया है । न जानती हुई मैंने दो ज्योतियों को काँटे से बेध दिया है ॥

अष्टमः श्लोकः

दुहितुस्तद् वचः श्रुत्वा शर्यातिर्जातसाध्वसः ।
मुनिं प्रसादयामास वल्मीकान्तर्हितं शनैः ॥८॥

पदच्छेद— दुहितुः तत् वचः श्रुत्वा शर्यातिः जात साध्वसः ।
मुनिम् प्रसादयामास वल्मीक अन्तर्हितम् शनैः ॥

शब्दार्थ—

दुहितुः	१. कन्या का	मुनिम्	९. मुनिको
तत्	२. वह	प्रसादयामास	११. प्रसन्न किया
वचः	३. वचन	वल्मीक	७. वल्मीक के
श्रुत्वा	४. सुनकर	अन्तर्हितम्	८. भीतर छिपे हुए
शर्यातिः	६. राजा शर्यातिने	शनैः ॥	१०. धीरे-धीरे
जातसाध्वसः ।	५. भयभीत होकर		

श्लोकार्थ— कन्या का यह वचन सुनकर भयभीत होकर राजा शर्याति ने वल्मीक के भीतर छिपे हुए मुनि को धीरे-धीरे प्रसन्न किया ॥

नवमः श्लोकः

तदभिप्रायमाज्ञाय प्रादाद् दुहितरं मुनेः ।
कृच्छ्रान्मुक्तस्तमामन्त्र्य पुरं प्रायात् समाहितः ॥९॥

पदच्छेद— तत् अभिप्रायम् आज्ञाय प्रादात् दुहितरम् मुनेः ।
कृच्छ्रात् मुक्तः तम् आमन्त्र्य पुरम् प्रायात् समाहितः ॥

शब्दार्थ—

तत्	१.	उनका	कृच्छ्रात्	७.	कष्ट से
अभिप्रायम्	२.	अभिप्राय	मुक्तः	८.	मुक्त होकर
आज्ञाय	३.	जानकर	तम्	९.	उनसे
प्रादात्	६.	दे दी (और)	आमन्त्र्य	१०.	विदा लेकर
दुहितरम्	५	पुत्री	पुरम्	१२.	नगर को
मुनेः ।	४.	मुनि को (अपनी)	प्रायात्	१३.	चले गये
			समाहितः ॥	११	सावधानी से

श्लोकार्थ—उनका अभिप्राय जानकर मुनि को अपनी पुत्री दे दी और कष्ट से मुक्त होकर उनसे विदा लेकर सावधानी से नगर को चले गये ॥

दशमः श्लोकः

सुकन्या च्यवनं प्राप्य पतिं परमकोपनम् ।
प्रीणयामास चित्तज्ञा अप्रमत्तानुवृत्तिभिः ॥१०॥

पदच्छेद— सुकन्या च्यवनं प्राप्य पतिम् परम कोपनम् ।
प्रीणयामास चित्तज्ञा अप्रमत्त अनुवृत्तिभिः ॥

शब्दार्थ—

सुकन्या	१.	सुकन्या	कोपनम्	३.	क्रोधी
च्यवन	४.	च्यवन को	प्रीणयामास	१०.	प्रसन्न करने लगी
प्राप्य	६.	प्राप्त करके	चित्तज्ञा	७.	मन की बात जानती हुई तथा
पतिम्	५.	पति के रूप में	अप्रमत्त	८.	सावधान होकर
परम ।	२.	अत्यन्त	अनुवृत्तिभिः ॥	९.	अनुसरण करती हुई वह मुनि को

श्लोकार्थ—सुकन्या अत्यन्त क्रोधी च्यवन को पति के रूप में प्राप्त करके मन की बात जानती हुई तथा सावधान होकर अनुसरण करती हुई वह मुनि को प्रसन्न करने लगी ॥

एकादशः श्लोकः

कस्यचित् त्वथ कालस्य नासत्यावाश्रमागतौ ।
तौ पूजयित्वा प्रोवाच वयो मे दत्तमीश्वरौ ॥११॥

पदच्छेद— कस्यचित् तु अथ कालस्य नासत्यौ आश्रम आगतौ ।
तौ पूजयित्वा प्रोवाच वयः मे दत्तम् ईश्वरौ ॥

शब्दार्थ—

कस्यचित्	१. कुछ	तौ	७. उन दोनों का
तु अथ	३. बीत जाने पर	पूजयित्वा	८. पूजन करके (ऋषि ने)
कालस्य	२. समय	प्रोवाच	६. कहा कि (आप दोनों)
नासत्यौ	४. अश्विनी कुमार	वयः	११ अवस्था और रूप
आश्रम	५. आश्रम पर	मे	१०. मुझे
आगतौ ।	६. आये	दत्तम्	१२. दीजिये
		ईश्वरौ ॥	१०. समर्थ हैं (अतः)

श्लोकार्थ—कुछ समय बीत जाने पर अश्विनी कुमार आश्रम पर आये । उन दोनों का पूजन करके ऋषि ने कहा कि आप दोनों समर्थ हैं । अतः मुझे अवस्था और रूप दीजिये ॥

द्वादशः श्लोकः

ग्रहं ग्रहीष्ये सोमस्य यज्ञे वामप्यसोमपोः ।
क्रियतां मे वयो रूपं प्रमदानां यदीप्सितम् ॥१२॥

पदच्छेद— ग्रहम् ग्रहीष्ये सोमस्य यज्ञे वाम् अपि असोमपोः ।
क्रियताम् मे वयः रूपम् प्रमदानाम् यत् ईप्सितम् ॥

शब्दार्थ—

ग्रहम्	६ भाग	क्रियताम्	११. कर दीजिये
ग्रहीष्ये	७. दिला दूँगा (आप)	मे	८. मेरी
सोमस्य	५. सोमरस का	वयः	६. अवस्था और
यज्ञे	४. यज्ञ में	रूपम्	१०. सौन्दर्य को ऐसा
वाम्	२. आप दोनों को	प्रमदानाम्	१३. स्त्रियों को
अपि	३. भी (मैं)	यत्	१२. जो
असोमपोः ।	१. सोमपान के अनधिकारी	ईप्सितम् ॥	१४. अभीष्ट हो

श्लोकार्थ—सोमरस के अनधिकारी आप दोनों को भी मैं यज्ञ में सोमरस का भाग दिला दूँगा । आप मेरी अवस्था और सौन्दर्य को ऐसा कर दीजिये जो स्त्रियों को अभीष्ट हो ।

त्रयोदशः श्लोकः

बाढमित्यूचतुर्विप्रमभिनन्द्य भिषक्तमौ ।
निमज्जतां भवानस्मिन् ह्रदे सिद्धविनिर्मिते ॥१३॥

पदच्छेद — बाढम् इति ऊचतुः विप्रम् अभिनन्द्य भिषक्तमौ ।
निमज्जताम् भवान् अस्मिन् ह्रदे सिद्ध विनिर्मिते ॥

शब्दार्थ——

बाढम्	४	ठीक है (यह कह कर)	निमज्जताम्	१२.	स्नान कीजिये
इति	५.	इस प्रकार	भवान्	११.	आप
ऊचतुः	६.	कहा (कि)	अस्मिन्	९.	इस
विप्रम्	२.	ब्राह्मण च्यवन का	ह्रदे	१०.	कुण्ड में
अभिनन्द्य	३.	अभिनन्दन करके	सिद्ध	७.	सिद्धों के द्वारा
भिषक्तमौ ।	१.	श्रेष्ठ वैद्य अश्विनी कुमारों ने	विनिर्मिते ॥	८.	बनाये हुए

श्लोकार्थ—श्रेष्ठ वैद्य अश्विनी कुमारों ने ब्राह्मण च्यवन का अभिनन्दन करके ठीक है यह कह कर इस प्रकार कहा कि सिद्धों के द्वारा बनाये हुए इस कुण्ड में आप स्नान कीजिये ॥

चतुर्दशः श्लोकः

इत्युक्त्वा जरया ग्रस्तदेहो धमनिसन्ततः ।
ह्रदं प्रवेशितोऽश्विभ्यां वलीपलितविप्रियः ॥१४॥

पदच्छेद— इति उक्त्वा जरया ग्रस्त देहः धमनि सन्ततः ।
ह्रदम् प्रवेशितः अश्विभ्याम् वली पलित विप्रियः ॥

शब्दार्थ——

इति	१.	इस प्रकार	ह्रदम्	१३.	कुण्ड में
उक्त्वा	२.	कह कर	प्रवेशितः	१४.	प्रवेश करा दिया
जरया	३.	बुढ़ापे से	अश्विभ्याम्	१२.	अश्विनी कुमारों ने
ग्रस्त	४	ग्रस्त	वली	९.	झुर्रियाँ पड़ने तथा
देहः	५	शरीर वाले (और)	पलित	१०.	बाल पकने से
धमनि	७.	नसों वाले	विप्रियः ॥	११.	भद्दे दिखाई देने वाले मुनि को
सन्ततः ।	६.	दिखाई पड़ती हुई			

श्लोकार्थ—इस प्रकार कह कर बुढ़ापे से ग्रस्त शरीर वाले, दिखाई पड़ती हुई नसों वाले और झुर्रियाँ पड़ने तथा बाल पकने से भद्दे दिखाई देने वाले मुनि को अश्विनी कुमारों ने कुण्ड में प्रवेश करा दिया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

पुरुषास्त्रय उत्तस्थुरपीच्या वनिताप्रियाः ।
पद्मस्रजः कुण्डलिनस्तुल्यरूपाः सुवाससः ॥१५॥

पदच्छेद— पुरुषाः त्रयः उत्तस्थुः अपीच्याः वनिता प्रियाः ।
पद्मस्रजः कुण्डलिनः तुल्य रूपा सुवाससः ॥

शब्दार्थ—

पुरुषाः	१०.	पुरुष (कुण्ड से)	पद्मस्रजः	४.	कमल की माला और
त्रयः	९.	तीन	कुण्डलिनः	५.	कुण्डल पहने
उत्तस्थुः	११.	बाहर निकले	तुल्य	६.	समान
अपीच्याः	१.	सुन्दर और	रूपाः	७	रूप वाले (और)
वनिता	२.	स्त्रियों को	सुवाससः ॥	८.	सुन्दर वस्त्र धारण किये हुए
प्रियाः ।	३.	प्रिय लगने वाले			

श्लोकार्थ—सुन्दर और स्त्रियों को प्रिय लगने वाले, कमल की माला तथा कुण्डल पहने समान रूप वाले और सुन्दर वस्त्र धारण किये हुए तीन पुरुष कुण्ड से बाहर निकले ॥

षोडशः श्लोकः

तान् निरीक्ष्य वरारोहा सरूपान् सूर्यवर्चसः ।
अजानती पतिं साध्वी अश्विनौ शरणं ययौ ॥१६॥

पदच्छेद— तान् . निरीक्ष्य वरारोहा सरूपान् सूर्यवर्चसः ।
अजानती पतिम् साध्वी अश्विनौ शरणम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

तान्	४.	उन (तीन पुरुषों को)	अजानती	९.	न पहचान कर
निरीक्ष्य	५.	देख कर	पतिम्	८.	पति को
वरारोहा	६.	सुन्दरी (और)	साध्वी	७.	पतिव्रता कन्या
सरूपान्	१.	एक समान रूप वाले	अश्विनौ	१०	अश्विनी कुमारों की
सूर्य	२.	और सूर्य के समान	शरणम्	११.	शरण में
वर्चसः ।	३.	तेजस्वी	ययौ ॥	१२.	गई

श्लोकार्थ—एक समान रूप वाले और सूर्य के समान तेजस्वी उन तीन पुरुषों को देखकर सुन्दरी और पतिव्रता सुकन्या पति को न पहचानकर अश्विनी कुमारों की शरण में गई ॥

सप्तदशः श्लोकः

दर्शयित्वा पतिं तस्यै पातिव्रत्येन तोषितौ ।
ऋषिमामन्त्र्य ययतुर्विमानेन त्रिविष्टपम् ॥१७॥

पदच्छेद— दर्शयित्वा पतिम् तस्यै पातिव्रत्येन तोषितौ ।
ऋषिम् आमन्त्र्य ययतुः विमानेन त्रिविष्टपम् ॥

शब्दार्थ—

दर्शयित्वा	५. दिखा कर	ऋषिम्	६. च्यवन ऋषि से
पतिम्	४. उसे पति को	आमन्त्र्य	७. आज्ञा लेकर
तस्यै	१. उस सुकन्या के	ययतुः	१०. चले गये
पातिव्रत्येन	२. पतिव्रत धर्म से	विमानेन	८. विमान से
तोषितौ ।	३. प्रसन्न हुए अश्विनी कुमार	त्रिविष्टपम् ॥	९. स्वर्ग को

श्लोकार्थ—उस कन्या के पतिव्रत धर्म से प्रसन्न हुए अश्विनीकुमारों ने उसे पति को दिखा कर च्यवन ऋषि से आज्ञा लेकर विमान से स्वर्ग को चले गये ॥

अष्टादशः श्लोकः

यक्ष्यमाणोऽथ शर्यातिश्च्यवनस्याश्रमं गतः ।
ददर्श दुहितुः पार्श्वे पुरुषं सूर्यवर्चसम् ॥१८॥

पदच्छेद— यक्ष्यमाणः अथ शर्यातिः च्यवनस्य आश्रमम् गतः ।
ददर्श दुहितुः पार्श्वे पुरुषम् सूर्यवर्चसम् ॥

शब्दार्थ—

यक्ष्यमाणः	२. यज्ञ करने की इच्छा से	ददर्श	११. देखा
अथ	१. तदनन्तर	दुहितुः	७. पुत्री के
शर्यातिः	३. राजा शर्याति	पार्श्वे	८. बगल में
च्यवनस्य	४. च्यवन के	पुरुषम्	१०. पुरुष को (बैठे)
आश्रमम्	५. आश्रम में	सूर्यवर्चसम् ॥	९. सूर्य के समान तेजस्वी एक
गतः ।	६. गये (वहाँ)		

श्लोकार्थ—तदनन्तर यज्ञ करने की इच्छा से राजा शर्याति च्यवन के आश्रम में गये । वहाँ पुत्री के बगल में सूर्य के समान तेजस्वी एक पुरुष को बैठे देखा ॥

एकोनविंशः श्लोकः

राजा दुहितरं प्राह कृतपादाभिवन्दनाम् ।
आशिषश्चाप्रयुञ्जानो नातिप्रीतमना इव ॥१९॥

पदच्छेद— राजा दुहितरम् प्राह कृत पाद अभिवन्दनाम् ।
आशिषः च अप्रयुञ्जानः न अति प्रीतमनाः इव ॥

शब्दार्थ—

राजा	११.	राजा ने	आशिषः	५.	आशीर्वाद
दुहितरम्	४.	पुत्री को	च	७.	और
प्राह	१२.	कहा	अप्रयुञ्जानः	६.	न देते हुए
कृत	३.	कर चुकी हुई	न अति	८.	न बहुत
पाद	१.	चरणों की	प्रीतमनाः	९.	प्रसन्न चित्त होवे हुए
अभिवन्दनाम् ।	२.	वन्दना	इव ॥	१०.	समान

श्लोकार्थ—चरणों की वन्दना कर चुकी हुई पुत्री को आशीर्वाद न देते हुए बहुत प्रसन्न चित्त न होवे हुए के समान राजा ने कहा ॥

विंशः श्लोकः

चिकीर्षितं ते किमिदं पतिस्त्वया प्रलम्भितो लोकनमस्कृतो मुनिः ।
यत् त्वं जराग्रस्तमसत्यसम्मतं विहाय जारं भजसेऽमुमध्वगम् ॥२०॥

पदच्छेद— चिकीर्षितम् ते किम् इदम् पतिः त्वया प्रलम्भितः लोक नमस्कृतः मुनिः ।
यत् त्वं जरा ग्रस्तम् असत्य सम्मतम् विहाय जारम् भजसे अमुम् अध्वगम् ॥

शब्दार्थ—

चिकीर्षितम्	४.	इच्छा की जो	यत्	११.	जो कि
ते	२.	तूने	त्वम्	१२.	तूने
किम्	३.	क्या करने की	जरा	१३.	बुढ़ापे से
इदम्	१.	यह	ग्रस्तम्	१४.	ग्रस्त और
पतिः	९.	पति को	असत्य	१५.	मिथ्या
त्वया	५.	तूने	सम्मतम्	१६.	समझ कर
प्रलम्भितः	१०.	धोखा दिया	विहाय	१७.	छोड़ दिया
लोक	६.	संसार के	जारम्	२०.	व्यभिचारी पुरुष की
नमस्कृतः	७.	वन्दनीय	भजसे	२१.	सेवा कर रही है
मुनिः	८.	मुनि	अमुम्	१८.	इस
			अध्वगम्	१९.	राह चलते

श्लोकार्थ— यह तूने क्या करने की इच्छा की जो तूने संसार के वन्दनीय मुनि पति को धोखा दिया, जो कि तूने बुढ़ापे से ग्रस्त और मिथ्या समझ कर छोड़ दिया। इस राह चलते व्यभिचारी पुरुष की सेवा कर रही है ॥

एकविंशः श्लोकः

कथं मतिस्तेऽवगतान्यथा सतां कुलप्रसूते कुलदूषणं त्विदम् ।
बिभर्षि जारं यदपत्रपा कुलं पितुश्च भर्तुश्च नयस्यधस्तमः ॥२१॥

पदच्छेद— कथम् मतिः ते अवगता अन्यथा सताम् कुल प्रसूते कुल दूषणम् तु इदम् ।
बिभर्षि जारम् यत् अपत्रपा कुलम् पितुः च भर्तुः च नयसि अधः तमः ॥

शब्दार्थ—

कथम्	७.	कैसे	बिभर्षि	१४.	सेवा कर रही है
मतिः	६.	बुद्धि	जारम्	१३.	जार पुरुष की
ते	४.	तुझे	यत्	११.	जो तू
अवगता	८.	प्राप्त हुई	अपत्रपा	१२.	निर्लज्ज होकर
अन्यथा	५.	विपरीत	कुलम्	१९.	कुल को
सताम्	१.	सज्जनों के	पितुः	१६.	पिता के
कुल	२.	वंश में	च	१५.	और
प्रसूते	३	उत्पन्न हुई (कन्ये)	भर्तुः	१८	स्वामी के
कुलदूषणम्	१०.	कलंङ्क लगाने वाला है	च	१७.	और
तु इदम्	९	तेरा यह कार्य	नयसि ॥	२१.	ले जा रही है
			अधः तमः	२०.	नरक में

श्लोकार्थ— सज्जनों के वंश में उत्पन्न हुई तुझे विपरीत बुद्धि कैसे उत्पन्न हुई। तेरा यह कार्य वंश में कलङ्क लगाने वाला है। जो तू निर्लज्ज होकर जार पुरुष की सेवा कर रही है। और पिता के और स्वामी के कुल को नरक में ले जा रही है ॥

द्वाविंशः श्लोकः

एवं ब्रुवाणं पितरं स्मयमाना शुचिस्मिता ।
उवाच तात जामाता तवैष भृगुनन्दनः ॥२२॥

पदच्छेद— एवम् ब्रुवाणम् पितरम् स्मयमाना शुचिस्मिता ।
उवाच तात जामाता तव एषः भृगुनन्दनः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	उवाच	६.	कहा कि
ब्रुवाणम्	२	कहते हुए	तात	७.	हे पिता जी !
पितरम्	३.	पिता से	जामाता	९.	जामाता
स्मयमाना	५.	मुस्करा कर	तव एषः	८.	आप ही के ये
शुचिस्मिता ।	४.	पवित्र मुस्कान वाली सुकन्या ने	भृगुनन्दनः ॥	१०.	भृगु पुत्र च्यवन हैं

श्लोकार्थ— इस प्रकार कहते हुए पिता से पवित्र मुसकान वाली सुकन्या ने मुस्करा कर कहा कि हे पिता जी ! ये आपके ही जामाता भृगुपुत्र च्यवन हैं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

शशंस पित्रे तत् सर्वं वयोरूपाभिलम्भनम् ।
विस्मितः परमप्रीतस्तनयां परिषस्वजे ॥२३॥

पदच्छेद— शशंस पित्रे तत् सर्वम् वयः रूप अभिलम्भनम् ।
विस्मितः परम प्रीतः तनयाम् परिषस्वजे ॥

शब्दार्थ—

शशंस	७. कहा	अभिलम्भनम् ।	३. प्राप्ति का
पित्रे	६. पिता से	विस्मितः	८. (राजा ने) आश्चर्य चकित और
तत्	४. वह	परम	९. अत्यन्त
सर्वम्	५. सब वृत्तान्त	प्रीतः	१०. प्रसन्नता से
वयः	१. अवस्था (और)	तनयाम्	११. पुत्री का
रूप	२. सौन्दर्य की	परिषस्वजे	१२. आलिङ्गन किया

श्लोकार्थ—अवस्था और सौन्दर्य प्राप्ति का वह सब वृत्तान्त पिता से कहा। राजा ने आश्चर्य चकित होकर और अत्यन्त प्रसन्नता से पुत्री का आलिङ्गन किया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

सोमेन याजयन् वीरं ग्रहं सोमस्य चाग्रहीत् ।
असोमपोरप्यश्विनोश्च्यवनः स्वेन तेजसा ॥२४॥

पदच्छेद— सोमेन याजयन् वीरम् ग्रहम् सोमस्य च अग्रहीत् ।
असोमपोः अपि अश्विनोः च्यवनः स्वेन तेजसा ॥

शब्दार्थ—

सोमेन	२. सोम यज्ञ का	असोमपोः	७. सोमपान का अधिकारी न होने पर
याजयन्	३. अनुष्ठान कराते हुए	अपि	८. भी
वीरम्	१. राजा शर्याति को	अश्विनोः	९. अश्विनो कुमारों को
ग्रहम्	११. भाग	च्यवनः	४. च्यवन ऋषि ने
सोमस्य	१०. सोमपान का	स्वेन	५. अपने
च अग्रहीत् ॥	१२. दिलाया	तेजसा ॥	६. प्रभाव से

श्लोकार्थ— राजा शर्याति को सोम यज्ञ का अनुष्ठान कराते हुए च्यवन ऋषि ने अपने प्रभाव से सोमपान का अधिकारी न होने पर भी अश्विनीकुमारों को सोमपान का भाग दिलाया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

हन्तुं तमाददे वज्रं सद्योमन्युरमर्षितः ।
सवज्रं स्तम्भयामास भुजमिन्द्रस्य भार्गवः ॥२५॥

पदच्छेद— हन्तुम् तम् आददे वज्रम् सद्यः मन्युः अमर्षितः ।
सवज्रम् स्तम्भयामास भुजम् इन्द्रस्य भार्गवः ॥

शब्दार्थ—

हन्तुम्	२.	मारने के लिए	अमर्षितः	५.	असहनशील (इन्द्र ने)
तम्	१.	उन शर्याति को	सवज्रम्	११.	वज्र सहित
आददे	७.	उठाया	स्तम्भयामास	१२.	स्तम्भित कर दिया
वज्रम्	६.	वज्र को	भुजम्	१०.	हाथ को
सद्यः	३.	तत्काल	इन्द्रस्य	९.	इन्द्र के
मन्युः ।	४.	क्रोधित होने वाले	भार्गवः ॥	८.	भृगुवंशी च्यवन ऋषि ने

श्लोकार्थ—उन शर्याति को मारने के लिए तत्काल क्रोधित होने वाले असहनशील इन्द्र ने वज्र को उठाया । भृगुवंशी च्यवन ऋषि ने इन्द्र के हाथ को वज्र सहित स्तम्भित कर दिया ॥

षड्विंशः श्लोकः

अन्वजानंस्ततः सर्वे ग्रहं सोमस्य चाश्विनोः ।
भिषजाविति यत् पूर्वं सोमाहुत्या बहिष्कृतौ ॥२६॥

पदच्छेद— अनु अजानन् ततः सर्वे ग्रहम् सोमस्य च अश्विनोः ।
भिषजौ इति यत् पूर्वम् सोमस्य आहुत्या बहिष्कृतौ ॥

शब्दार्थः—

अनुअजानन्	६.	स्वीकार कर लिया	भिषजौ	९.	वैद्य हैं
ततः	१.	उसके बाद	इति	१०.	यह जानकर इन्हें
सर्वे	२.	सभी (देवताओं ने)	यत्	७.	जो
ग्रहम्	५.	भाग देना	पूर्वम्	८.	पहले ये
सोमस्य च	४.	सोमपान का	सोम	११.	सोमरस को
अश्विनोः ।	३.	अश्विनीकुमारों के	आहुत्या	१२.	आहुति से
			बहिष्कृतौ ॥	१३.	अलग कर दिया था

श्लोकार्थ—उसके बाद सभी देवताओं ने अश्विनीकुमारों को सोमपान का भाग देना स्वीकार कर लिया । जो पहले ये वैद्य हैं यह जानकर इन्हें सोमरस की आहुति से अलग कर दिया था ॥

सप्तविंशः श्लोकः

उत्तानबर्हिरानर्तो भूरिषेण इति त्रयः ।
शर्यातेरभवन् पुत्रा आनर्ताद् रेवतोऽभवत् ।।२७।।

पदच्छेद— उत्तानबर्हिः आनर्तः भूरिषेण इति त्रयः ।
शर्यातिः अभवन् पुत्राः आनर्तात् रेवतः अभवत् ।।

शब्दार्थ—

उत्तानबर्हिः	१.	उत्तानबर्हि	शर्यातेः	६.	शर्याति के
आनर्तः	२.	आनर्त और	अभवन्	८.	हुए
भूरिषेणः	३.	भूरिषेण	पुत्राः	७.	पुत्र
इति	४.	ये	आनर्तात्	९.	आनर्त से
त्रयः।	५.	तीन	रेवतः	१०.	रेवत
			अभवन् ।।	११.	हुए

श्लोकार्थ—उत्तानबर्हि, आनंत और भूरिषेण ये तीन शर्याति के पुत्र हुए । आनर्त से रेवत हुए ।।

अष्टाविंशः श्लोकः

सोऽन्तःसमुद्रे नगरीं विनिर्माय कुशस्थलीम् ।
आस्थितोऽभुङ्क्त विषयानानर्तादीनरिन्दम ।।२८।।

पदच्छेद— सः अन्तः समुद्रे नगरीम् विनिर्माय कुशस्थलीम् ।
आस्थितः अभुङ्क्त विषयान् आनर्त आदीन् अरिन्दम ।।

शब्दार्थ—

सः	२.	उन रेवत ने	आस्थितः	८.	रहने लगे (उन्होंने)
अन्तः	४.	अन्दर	अभुङ्क्त	११.	उपभोग किया
समुद्रे	३.	समुद्र के	विषयान् आनर्त	१०.	राज्यों का आनर्त
नगरीम्	६.	नगरी	आदीन्	९.	आदि
विनिर्माय	७.	बसा कर	अरिन्दन	१.	हे शत्रुदमनकारी परीक्षित् !
कुशस्थलीम्	५	कुशस्थली नाम की			

श्लोकार्थ—हे शत्रुदमनकारी ! परीक्षित् ! उन रेवत ने समुद्र के अन्दर कुशस्थली नाम की नगरी बसा कर रहने लगे । उन्होंने आनर्त आदि राज्यों का उपभोग किया ।।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

तस्य पुत्रशतं जज्ञे ककुद्मिज्येष्ठमुत्तमम् ।
ककुद्मी रेवतीं कन्यां स्वामादाय विभुं गतः ॥२९॥

पदच्छेद— तस्य पुत्रशतम् जज्ञे ककुद्मि ज्येष्ठम् उत्तमम् ।
ककुद्मी रेवतीम् कन्याम् स्वाम् आदाय विभुम् गतः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उन रेवत के	ककुद्मी	८.	ककुद्मी
पुत्र	३.	पुत्र	रेवतीम्	११.	रेवती को
शतम्	२.	सौ	कन्याम्	१०.	कन्या
जज्ञे	४.	उत्पन्न हुए (जिनमें)	स्वाम्	९.	अपनी
ककुद्मि	५.	ककुद्मी	आदाय	१२.	लेकर
ज्येष्ठम्	७.	जेष्ठ थे (वे)	विभुम्	१३.	ब्रह्मा जी के पास
उत्तमम् ।	६.	श्रेष्ठ और	गतः ॥	१४.	गये

श्लोकार्थ — उन रेवत के सौ पुत्र उत्पन्न हुए। जिनमें ककुद्मी श्रेष्ठ और जेष्ठ थे। कुकुद्मी अपनी अपनी कन्या रेवती को लेकर ब्रह्मा जी के पास गये ॥

त्रिंशः श्लोकः

कन्यावरं परिप्रष्टुं ब्रह्मलोकमपावृतम् ।
आवर्तमाने गान्धर्वे स्थितोऽलब्धक्षणः क्षणम् ॥३०॥

पदच्छेद— कन्यावरम् परिप्रष्टुम् ब्रह्म लोकम् अपावृतम् ।
आवर्तमाने गान्धर्वे स्थितः अलब्धक्षणः क्षणम् ॥

शब्दार्थ—

कन्या	१.	कन्या के	आवर्तमाने	८.	संगीत होने के कारण
वरम्	२.	वर को	गान्धर्वे	७.	गान्धर्व
परिप्रष्टुम्	३.	पूछने के लिए	स्थितः	११.	ठहर गये
ब्रह्म	५	ब्रह्म	अलब्धक्षणः	९.	अवसर न पाने से कुछ
लोकम्	६.	लोक में गये (वहाँ पर)	क्षणम् ॥	१०.	क्षण
अपावृतम् ।	४.	बिना रोक-टोक			

श्लोकार्थ—कन्या के वर को पूछने के लिए वे बिना रोक-टोक ब्रह्म लोक में गये। वहाँ पर गान्धर्व संगीत होने के कारण अवसर न पाने से कुछ क्षण ठहर गये।

एकत्रिंशः श्लोकः

तदन्त आद्यमानम्य स्वाभिप्रायं न्यवेदयत् ।
तच्छ्रुत्वा भगवान् ब्रह्मा प्रहस्य तमुवाच ह ॥३१॥

पदच्छेद— तदन्ते आद्यम् आनम्य स्व अभिप्रायम् न्यवेदयत् ।
तत् श्रुत्वा भगवान् ब्रह्मा प्रहस्य तम् उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

तदन्ते	१.	उस संगीत के समाप्त हो जाने पर	श्रुत्वा	७.	बात सुनकर
आद्यम्	२.	ब्रह्मा जी को	भगवान्	८.	भगवान्
आनम्य स्व	३.	प्रणाम करके उन्होंने अपना	ब्रह्मा	९.	ब्रह्मा ने
अभिप्रायम्	४	अभिप्राय	प्रहस्य	१०.	हँस कर
न्यवेदयत्	५.	निवेदन किया	तम्	११.	उनसे
तत् ।	६.	उनको	उवाच ह ॥	१२.	कहा

श्लोकार्थ—उस संगीत के समाप्त हो जाने पर ब्रह्मा जी को प्रणाम करके उन्होंने अपना अभिप्राय निवेदन किया । उनकी बात सुनकर भगवान् ब्रह्मा ने हँसकर उनसे कहा ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

अहो राजन् निरुद्धास्ते कालेन हृदि ये कृताः ।
तत्पुत्रपौत्रनप्तॄणां गोत्राणि च न शृण्महे ॥३२॥

पदच्छेद— अहो राजन् निरुद्धाः ते कालेन हृदि ये कृताः ।
तत् पुत्र पौत्र नप्तॄणाम् गोत्राणि च न शृण्महे ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	अरे	तत्	१०.	उनके
राजन्	२.	महाराज	पुत्र	११.	पुत्र
निरुद्धाः	८.	चले गये	पौत्र	१२.	पौत्र और
ते	६.	वे राजा	नप्तॄणाम्	१३.	नातियों के
कालेन	७.	काल के गाल में	गोत्राणि	१४.	गोत्रों को भी
हृदि	४	हृदय में	च न	१५.	नहीं
ये	३.	जिनको आपने	शृण्महे ॥	१६.	सुन रहे हैं
कृताः ।	५.	सोचा था			

श्लोकार्थ—अरे महराज ! जिनको आपने सोचा था, वे राजा काल के गाल में चले गये । और उनके पुत्र, पौत्र तथा नातियों के गोत्रों को भी नहीं सुन रहे हैं ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

कालोऽभियातस्त्रिणवचतुर्युगविकल्पितः ।

तद् गच्छ देवदेवांशो बलदेवो महाबलः ॥३३॥

पदच्छेद— कालः अभियातः त्रिणव चतुर्युग विकल्पितः ।
तद् गच्छ देव देव अंशः बलदेवः महाबलः ॥

शब्दार्थ—

कालः	४.	समय	तद्	६.	इसलिए
अभियातः	५.	बीत चुका है	गच्छ	७.	जाओ
त्रिणव	१.	इस समय तीन नौ (सत्ताईस)	देव	८.	विष्णु के
चतुर्युग	२.	चतुर्युगी	देवअंशः	९.	अंशावतार
विकल्पितः ।	३.	समूह का	बलदेवः	११.	बलदेव जी (पृथ्वी पर हैं)
			महाबलः ॥	१०.	महान् बलवान्

श्लोकार्थ—इस समय (तीन नौ) सत्ताईस चतुर्युगी समूह का समय बीत चुका है। इसलिए जाओ विष्णु के अंशावतार महान् बलवान् बलदेव जी पृथ्वी पर हैं। उन्हें ये कन्या दे दो।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

कन्यारत्नमिदं राजन् नररत्नाय देहि भोः ।

भुवो भारावताराय भगवान् भूतभावनः ॥३४॥

पदच्छेद— कन्या रत्नम् इदम् राजन् नररत्नाय देहि भोः ।
भुवः भारअवताराय भगवान् भूत भावनः ॥

शब्दार्थ

कन्या	५.	कन्या को	भोः ।	१.	हे
रत्नम्	४.	श्रेष्ठ	भुवः	११.	पृथ्वी के
इदम्	३.	इस	भारावताराय	१२	भार को उतारने के लिए अवतीर्ण हुये हैं
राजन्	२.	राजन् !	भगवान्	१०.	भगवान् (बलदेव जी)
नररत्नाय	६.	पुरुषों में श्रेष्ठ (बलदेव जी को)	भूत	८.	प्राणियों के
देहि	७.	दे दीजिये	भावनः	९.	जीवन सर्वस्व

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस श्रेष्ठ कन्या को पुरुषों में श्रेष्ठ बलदेव जी को दे दीजिये। वे प्राणियों के जीवन सर्वस्व भगवान् बलदेव जी पृथ्वी के भार को उतारने के लिए अवतीर्ण हुए हैं॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

अवतीर्णो निजांशेन पुण्यश्रवणकीर्तनः ।
इत्यादिष्टोऽभिवन्द्याजं नृपः स्वपुरमागतः ।
त्यक्तं पुण्यजनत्रासाद् भ्रातृभिर्दिक्ष्ववस्थितैः ॥३५॥

पदच्छेद— अवतीर्णः निजअंशेन पुण्य श्रवण कीर्तनः ।
इति आदिष्टः अभिवंद्य अजम् नृपः स्वपुरम् आगतः ।
त्यक्तम् पुण्यजन त्रासात् भ्रातृभिः दिक्षु अवस्थितैः ॥

शब्दार्थः—

अवतीर्णः	५. अवतीर्ण	नृपः	६. राजा ककुद्मी
निज	३. अपने	स्वपुरम्	११. अपने नगर में
अंशेन	४. अंश से	आगतः	१२. आ गये (जिसे)
पुण्य	१. पवित्र	त्यक्तम्	१७. त्याग दिया था (और)
श्रवण	२. यश वाले	पुण्यजन	१४. यक्षों के
कीर्तनः	१०. और	त्रासात्	१५. भय से (उनके)
इति	७. इस प्रकार	भ्रातृभिः	१६. वंशजों ने
आदिष्टः	९. आदेश पाकर	दिक्षुः	१८. दिशाओं में इधर-उधर
अभिवंद्य	१०. वन्दना करके	अवस्थितैः ॥	१९. रह रहे हैं
अजम् ।	८. ब्रह्मा जी का		

श्लोकार्थ—पवित्र यश वाले अपने अंश से अवतीर्ण राजा ककुद्मी इस प्रकार ब्रह्मा जी का आदेश पाकर और वन्दना करके अपने नगर में आ गये । जिसे यक्षों के भय से उनके वंशजों ने त्याग दिया था और दिशाओं में इधर-उधर रह रहे थे ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

सुतां दत्त्वानवद्याङ्गीं बलाय बलशालिने ।
बदर्याख्यं गतो राजा तप्तुं नारायणाश्रमम् ॥३६॥

पदच्छेद— सुताम् दत्त्वा अनवद्य अङ्गीम बलाय बलशालिने ।
बदरीआख्यम् गतः राजा तप्तुम् नारायण आश्रमम् ॥

शब्दार्थ—

सुताम्	४. पुत्री	बदरी आख्यम्	८. बदरी नामक
दत्त्वा	७. देकर	गतः	१२. चले गये
अनवद्य	२. अनिन्द्य	राजा	१. वे राजा ककुद्मी
अङ्गीम्	३. सुन्दरी	तप्तुम्	११. तपस्या करने के लिए
बलाय	६. बलदेव जी को	नारायण	९. नर-नारायण के
बलशालिने	५. बलशाली	आश्रमम्	१०. आश्रम में

श्लोकार्थ—वे राजा ककुद्मी अनिन्द्य सुन्दरी पुत्री बलशाली बलदेव जी को देकर बदरी नामक नर नारायण के आश्रम में तपस्या करने के लिए चले गये ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे
तृतीयः अध्यायः ॥३॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

चतुर्थः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—नाभागो नभगापत्यं यं ततं भ्रातरः कविम्।
यविष्ठं व्यभजन् दायं ब्रह्मचारिणमागतम् ॥१॥

पदच्छेद— नाभागः नभग अपत्यम् यम् ततम् भ्रातरः कविम्।
यविष्ठम् व्यभजन् दायम् ब्रह्मचारिणम् आगतम् ॥

शब्दार्थ—

नाभागः	३. नाभाग था	कविम्	५. विद्वान् (और)
नभग	१ नभग का	यविष्ठम्	८. सबसे छोटे
अपत्यम्	२. पुत्र	व्यभजन्	१२. दिया
यम्	४. जिस (नाभाग को)	दायम्	११. हिस्से में
ततम्	१० पिता को	ब्रह्मचारिणम	६. ब्रह्मचारी होकर
भ्रातरः।	९. भाइयों ने केवल	आगतम्॥	७. आने पर

श्लोकार्थ—नभग का पुत्र नाभाग था। जिस नाभाग को विद्वान् और ब्रह्मचारी होकर आने पर सबसे छोटे भाइयों ने केवल पिता को हिस्से में दिया था॥

द्वितीयः श्लोकः

भ्रातरोऽभाङ्क्त किं मह्यं भजाम पितरं तव।
त्वां ममार्यास्तताभाङ्क्षुर्मा पुत्रक तदादृथाः ॥२॥

पदच्छेद— भ्रातरः अभाङ्क्त किम् मह्यम् भजाम पितरम् तव।
त्वाम् मम आर्याः तत अभाङ्क्षुः मा पुत्रक तत् आदृथाः ॥

शब्दार्थ—

भ्रातरः	१. उनसे पूछा भाइयों	त्वाम्	११. आपको
अभाङ्क्त	४. हिस्से में दिया है	मम	९. मुझे
किम्	३. क्या	आर्याः	१०. भाइयों ने
मह्यम्	२. मुझे	तत	८. हे तात ! पिता जी
भजाम	७. देते हैं	अभाङ्क्षुः	१२. दिया है
पितरम्	६. पिता को	मा	१५. मत
तव।	५. तुम्हें	पुत्रक	१३. हे पुत्र !
		तत् आदृथाः॥	१४. उसकी बातों को मानो

श्लोकार्थ—उसने पूछा भाइयों ! मुझे क्या हिस्से में दिया है ? तुम्हें पिता को देते हैं। हे तात पिता जी ! मुझे भाइयों ने आपको दिया है। हे पुत्र ! उनकी बातों को मत मानो॥

तृतीयः श्लोकः

इमे अङ्गिरसः सत्रमासतेऽद्य सुमेधसः ।
षष्ठं षष्ठमुपेत्याहः कवे मुह्यन्ति कर्मणि ॥३॥

पदच्छेद— इमे अङ्गिरसः सत्रम् आसते अद्य सुमेधसः ।
षष्ठम् षष्ठम् उपेत्य अहः कवे मुह्यन्ति कर्मणि ॥

शब्दार्थ—

इमे	२.	ये	षष्ठम्	७.	प्रत्येक
अङ्गिरसः	३.	आङ्गिरस गोत्रीय	षष्ठम्	८.	छठवें
सत्रम्	५.	यज्ञ	उपेत्य	१०.	आकर
आसते	६.	कर रहे हैं	अहः	९.	दिन
अद्य	४.	इस समय	कवे	१.	हे विद्वान् पुत्र !
सुमेधसः ।	३.	बुद्धिमान् ब्राह्मण	मुह्यन्ति	१२.	भूल कर बैठते हैं
			कर्मणि ॥	११.	अपने कर्म में

श्लोकार्थ—हे विद्वान् पुत्र ! आङ्गिरस गोत्रीय बुद्धिमान् ब्राह्मण इस समय यज्ञ कर रहे हैं। प्रत्येक छठवें दिन आकर अपने कर्म में भूल कर बैठते हैं ॥

चतुर्थः श्लोकः

तांस्त्वं शंसय सूक्ते द्वे वैश्वदेवे महात्मनः ।
ते स्वर्यन्तो धनं सत्रपरिशेषितमात्मनः ॥४॥

पदच्छेद— तान् त्वम् शंसय सूक्ते द्वे वैश्वदेवे महात्मनः ।
ते स्वर्यन्तः धनम् सत्र परिशोषितम् आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

तान्	२.	उन	ते	८.	वे
त्वम्	१.	तुम	स्वर्यन्तः	९.	स्वर्ग जाते समय
शंसय	७.	बता दो	धनम्	१३.	धन को (तुम्हें दे देंगे)
सूक्ते	६.	सूक्त (उनको)	सत्र	११.	यज्ञ से
द्वे	५.	दो	परिशेषितम्	१२	बचे हुए
वैश्वदेवे	४.	वैश्वदेव से सम्बन्धित	आत्मनः ॥	१०.	अपने
महात्मनः ।	३.	महात्माओं के पास जाकर			

श्लोकार्थ—तुम उन महात्माओं के पास जाकर वैश्वदेव सम्बन्धी दो सूक्त उनको बता दो। वे स्वर्ग जाते समय अपने यज्ञ से बचे धन को तुम्हे दे देंगे ॥

पञ्चमः श्लोकः

दास्यन्ति तेऽथ तान् गच्छ तथा स कृतवान् यथा ।
तस्मै दत्त्वा ययुः स्वर्गं ते सत्रपरिशेषितम् ॥५॥

पदच्छेद— दास्यन्ति ते अथ तान् गच्छ तथा सः कृतवान् यथा ।
तस्मै दत्त्वा ययुः स्वर्गम् ते सत्र परिशेषितम् ॥

शब्दार्थ—

दास्यन्ति	२.	दे देंगे	यथा	६.	जैसा (पिता ने कहा था)
ते	१.	वे तुम्हें	तस्मै	११.	उसे
अथ	५.	तदनन्तर	दत्त्वा	१४.	देकर
तान्	३.	उनके पास	ययुः	१६.	चले गये
गच्छ	४.	जाओ	स्वर्गम्	१५.	स्वर्ग को
तथा	७.	उसी प्रकार	ते	१०.	वे (ब्राह्मण)
सः	६.	उसने	सत्र	१२.	यज्ञ से
कृतवान् ।	८.	किया	परिशेषितम् ॥	१३.	बचा हुआ

श्लोकार्थ—वे तुम्हें दे देंगे। उनके पास जाओ। तदनन्तर उसने उसी प्रकार किया जैसा कि पिता ने कहा था। वे ब्राह्मण उसे यज्ञ से बचा हुआ धन देकर स्वर्ग को चले गये ॥

षष्ठः श्लोकः

तं कश्चित् स्वीकरिष्यन्तं पुरुषः कृष्णदर्शनः ।
उवाचोत्तरतोऽभ्येत्य ममेदं वास्तुकं वसु ॥६॥

पदच्छेद— तम् कश्चित् स्वीकरिष्यन्तं पुरुषः कृष्ण दर्शनः ।
उवाच उत्तरतः अभ्येत्य मम इदम् वास्तुकम् वसु ॥

शब्दार्थ—

तम्	८.	उससे	उवाच	६.	कहा (कि)
कश्चित्	५.	किसी	उत्तरतः	१.	उत्तर दिशा से
स्वीकरिष्यन्तम्	७.	धन स्वीकार करते हुए	अभ्येत्य	२.	आकर
पुरुषः	६.	पुरुष ने	मम	१३.	मेरा (है)
कृष्ण	४.	काले	इदम्	१०.	यह (यज्ञ से)
दर्शनः ।	३.	देखने में	वास्तुकम्	११.	बचा हुआ
			वसु ॥	१२.	धन

श्लोकार्थ—उत्तर दिशा से आकर देखने में काले किसी पुरुष ने धन स्वीकार करते हुए उससे कहा कि यह यज्ञ में बचा हुआ धन मेरा है ॥

सप्तमः श्लोकः

ममेदमृषिभिर्दत्तमिति तर्हि स्म मानवः ।
स्यान्नौ ते पितरि प्रश्नः पृष्टवान् पितरं तथा ॥७॥

पदच्छेद— मम इदम् ऋषिभिः दत्तम् इति तर्हि स्म मानवः ।
स्यात् नौ ते पितरि प्रश्नः पृष्टवान् पितरम् तथा ॥

शब्दार्थ—

मम	५.	मेरा है	स्यात्	१०.	हो सकता है इसलिए
इदम्	४.	यह	नौ	९.	हम दोनों का यह
ऋषिभिः	१.	नाभाग ने कहा ये ऋषियों ने (मुझे)	ते	११.	तुम्हारे
दत्तम्	२.	दिया है	पितरि	१२.	पिता से
इति	३.	इसलिए	प्रश्नः	१३.	पूछा जाय
तर्हि	६.	तब	पृष्टवान्	१६.	पूछा
स्म	७.	उस (काले)	पितरम्	१५.	पिता से जाकर
मानवः ।	८.	पुरुष ने कहा	तथा ॥	१४.	इस प्रकार (उसने)

श्लोकार्थ—(नाभाग ने कहा) यह ऋषियों ने मुझे दिया है। इसलिए यह मेरा है। तब उस काले पुरुष ने कहा। हम दोनों का यह हो सकता है। इसलिए तुम्हारे पिता से पूछा जाय। इस प्रकार उसने पिता से जाकर पूछा ॥

अष्टमः श्लोकः

यज्ञवास्तुगतं सर्वमुच्छिष्टमृषयः क्वचित् ।
चक्रुर्विभागं रुद्राय स देवः सर्वमर्हति ॥८॥

पदच्छेद— यज्ञ वास्तु गतम् सर्वम् उच्छिष्टम् ऋषयः क्वचित् ।
चक्रुः विभागम् रुद्राय सः देवः सर्वम् अर्हति ॥

शब्दार्थ—

यज्ञ	३.	यज्ञ	चक्रुः	१०.	दिया (इस लिए)
वास्तु	४.	भूमि	विभागम्	९.	हिस्से में
गतम्	५.	में	रुद्राय	८.	रुद्र के
सर्वम्	७.	सब कुछ	सः	११.	वे
उच्छिष्टम्	६.	बचा हुआ	देवः	१२.	देवता
ऋषयः	१.	ऋषियों ने	सर्वम्	१३.	सारा
क्वचित् ।	२.	कहीं पर (दक्ष की)	अर्हति ॥	१४.	पाने योग्य है

श्लोकार्थ—(उसके पिता ने कहा) ऋषियों ने कहीं पर दक्ष की यज्ञ भूमि में बचा हुआ सब कुछ रुद्र के हिस्से में दे दिया था। इसलिए वे देवता सारा धन पाने योग्य है ॥

नवमः श्लोकः

नाभागस्तं प्रणम्याह तवेश किल वास्तुकम् ।
इत्याह मे पिता ब्रह्मञ्छिरसा त्वां प्रसादये ॥९॥

पदच्छेद— नाभागः तम् प्रणम्य आह तव ईश किल वास्तुकम् ।
इति आह मे पिता ब्रह्मन् शिरसा त्वाम् प्रसादये ॥

शब्दार्थ—

नाभागः	१.	नाभागने (लौट कर)	इति	९.	ऐसा
तम्	२.	उनको	आह	११.	कहा है
प्रणम्य	३.	प्रणाम करके	मे पिता	१०.	मेरे पिता ने
आह	४.	कहा	ब्रह्मन्	११.	हे ब्रह्मन् !
तव ईश	८.	आपका है प्रभो	शिरसा	१३.	शिर झुका कर मैं
किल	७.	निश्चित ही	त्वाम्	१४.	आपको
वास्तुकम् ।	६.	यज्ञ से बचा हुआ धन	प्रसादये ॥	१५.	प्रसन्न करता हूँ

श्लोकार्थ— नाभागने लौट कर उनको प्रणाम करके कहा यज्ञ से बचा हुआ धन निश्चित ही आपका है । प्रभो ! ऐसा मेरे पिता ने कहा है । हे ब्रह्मन् ! सिर झुका कर मैं आपको प्रणाम करता हूँ ॥

दशमः श्लोकः

यत् ते पितावदद् धर्मं त्वं च सत्यं प्रभाषसे ।
ददामि ते मन्त्रदृशे ज्ञानं ब्रह्म सनातनम् ॥१०॥

पदच्छेद— यत् ते पिता अवदत् धर्मम् त्वम् च सत्यम् प्रभाषसे ।
ददामि ते मन्त्रदृशे ज्ञानम् ब्रह्म सनातनम् ॥

शब्दार्थ—

यत्	१.	जो	प्रभाषसे	८.	बोल रहे हो
ते	२.	तुम्हारे	ददामि	१४.	देता हूँ
पिता अवदत्	३.	पिता ने कहा है	ते	१०.	तुम्हें
धर्मम्	४.	वह धर्म के अनुकूल है	मन्त्रदृशे	९.	मन्त्रों का अर्थ जानने वाले
त्वम्	६.	तुम भी	ज्ञानम्	१३.	ज्ञान
च	५.	और	ब्रह्म	१२.	ब्रह्म का
सत्यम् ।	७.	सत्य	सनातनम् ॥	११.	सनातन

श्लोकार्थ—जो तुम्हारे पिता ने कहा है, वह धर्मानुकूल है और तुम भी सत्य बोल रहे हो । मन्त्रों का अर्थ जानने वाले तुम्हें सनातन ब्रह्म का ज्ञान देता हूँ ॥

एकादशः श्लोकः

गृहाण द्रविणं दत्तं मत्सत्रे परिशेषितम् ।
इत्युक्त्वान्तर्हितो रुद्रो भगवान् सत्यवत्सलः ।।११।।

पदच्छेद— गृहाण द्रविणम् दत्तम् मत् सत्रे परिशेषितम् ।
इति उक्त्वा अन्तर्हितः रुद्रः भगवान् सत्यवत्सलः ।।

शब्दार्थ—

गृहाण	५. स्वीकार करो (वह धन)	इति	६. इस प्रकार
द्रविणम्	४. धन को	उक्त्वा	७. कह कर
दत्तम्	३. दिये हुए उस	अन्तर्हितः	११. अन्तर्धान हो गये
मत् सत्रे	१. मेरा जो यज्ञ में	रुद्रः	१०. शंकर
परिशेषितम् ।	२. बचा हुआ अंश है	भगवान्	९. भगवान्
		सत्यवत्सलः ।।	८. सत्य प्रेमी

श्लोकार्थ—यज्ञ में बचा हुआ मेरा जो अंश है वह धन मैं तुम्हे देता हूँ। दिये हुए उस धन को स्वीकार करो। इस प्रकार कह कर सत्य प्रेमी भगवान् शंकर अन्तर्धान हो गये ।।

द्वादश श्लोकः

य एतत् संस्मरेत् प्रातः सायं च सुसमाहितः ।
कविर्भवति मन्त्रज्ञो गतिं चैव तथाऽऽत्मनः ।।१२।।

पदच्छेद— यः एतत् संस्मरेत् प्रातः सायम् च सुसमाहितः ।
कविः भवति मन्त्रज्ञः गतिम् च एव तथा आत्मनः ।।

शब्दार्थ—

यः	१. जो	कविः	९. कवि
एतत्	६. इस	भवति	१०. होता है
संस्मरेत्	७. आख्यान का स्मरण करता है	मन्त्रज्ञः	८. मन्त्र को जानने वाला
प्रातः	३. प्रातः	गतिम्	१३. स्वरूप को
सायम्	५. सायं काल	च एव	१४. भी (जान लेता है)
च	४ और	तथा	११. उसी प्रकार
सुसमाहितः ।	२. एकाग्रचित होकर	आत्मनः ।।	१२. अपने

श्लोकार्थ—जो एकाग्रचित्त होकर प्रातः और सायंकाल इस आख्यान का स्मरण करता है, वह मन्त्र को जानने वाला कवि होता है। उसी प्रकार अपने स्वरूप को भी जान लेता है ।।

त्रयोदशः श्लोकः

नाभागादम्बरीषोऽभून्महाभागवतः कृती ।
नास्पृशद् ब्रह्मशापोऽपि यं न प्रतिहतः क्वचित् ॥१३॥

पदच्छेद— नाभागात् अम्बरीषः अभूत् महा भागवतः कृती ।
न अस्पृशत् ब्रह्म शापः अपिः यम् न प्रतिहतः क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

नाभागात्	१.	नाभाग के पुत्र	न अस्पृशत्	१३.	नहीं स्पर्श कर सका
अम्बरीषः	२.	अम्बरीष	ब्रह्म	६.	ब्रह्म
अभूत्	६.	हुए	शापः	१०.	शाप
महा	३.	महान्	अपिः	११.	भी
भागवतः	४.	भगवत् भक्त (और)	यम	१२.	जिनका
कृती ।	५.	धर्मात्मा	न प्रतिहतः	८.	नहीं रोका जा सकने वाला
			क्वचित् ॥	७.	कहीं भी

श्लोकार्थ—नाभाग के पुत्र अम्बरीष महान भगवत भक्त और धर्मात्मा हुए । कहीं भी नहीं रोका जा सकने वाला ब्रह्म शाप भी जिनका स्पर्श नहीं कर सका ॥

चतुर्दशः श्लोकः

राजोवाच— भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि राजर्षेस्तस्य धीमतः ।
न प्राभूद् यत्र निर्मुक्तो ब्रह्मदण्डो दुरत्ययः ॥१४॥

पदच्छेद— भगवन् श्रोतुम् इच्छामि राजर्षे तस्य धीमतः ।
न प्राभूत् यत्र निर्मुक्तः ब्रह्मदण्डः दुरत्ययः ॥

शब्दार्थ—

भगवन्	१.	हे भगवन् ! मैं	न	११.	नहीं बिगाड़ने में
श्रोतुम्	५.	सुनने की	प्राभूत्	१२.	समर्थ हो सका
इच्छामि	६.	इच्छा करता हूँ ।	यत्र	१०.	जिनका कुछ
राजर्षेः	४.	राजर्षि का चरित	निर्मुक्तः	८.	छोड़ा गया
तस्य	२.	उस	ब्रह्मदण्डः	९.	ब्रह्म दण्ड भी
धीमतः ।	३.	बुद्धिमान्	दुरत्ययः ॥	७.	न टाला जाने वाला

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! मैं उन बुद्धिमान् राजर्षि अम्बरीष का चरित्र सुनने की इच्छा करता हूँ । न टाला जाने वाला छोड़ा गया ब्रह्म दण्ड भी जिनका कुछ बिगाड़ने में समर्थ नहीं हो सका ॥

पञ्चदशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अम्बरीषो महाभागः सप्तद्वीपवतीं महीम् ।
अव्ययां च श्रियं लब्ध्वा विभवं चातुलं भुवि ॥१५॥

पदच्छेद— अम्बरीषः महाभागः सप्तद्वीपवतीम् महीम् ।
अव्ययाम् च श्रियम् लब्ध्वा विभवम् च अतुलम् भुवि ॥

शब्दार्थ—

अम्बरीषः	२.	अम्बरीष को	अव्ययाम्	७.	अचल
महाभागः	१.	महाभाग्यवान्	च श्रियम्	६.	और सम्पत्ति
सप्तद्वीप	३.	सातों द्वीप	लब्ध्वा	१२.	प्राप्त करके अभिमान नहीं हुआ
वतीम्	४.	वाली	विभवम्	११.	ऐश्वर्य
महीम् ।	५.	पृथ्वी	च अतुलम्	१०.	और अतुलनीय
			भुवि ॥	९.	पृथ्वी पर

श्लोकार्थ—महाभाग्यवान् अम्बरीष को सातों द्वीप वाली पृथ्वी, अचल सम्पत्ति और पृथ्वी पर अतुलनीय ऐश्वर्य प्राप्त करके भी अभिमान नहीं हुआ ॥

षोडशः श्लोकः

मेनेऽतिदुर्लभं पुंसां सर्वं तत् स्वप्नसंस्तुतम् ।
विद्वान् विभवनिर्वाणं तमो विशति यत् पुमान् ॥१६॥

पदच्छेद— मेने अति दुर्लभम् पुंसाम् सर्वम् तत् स्वप्न संस्तुतम् ।
विद्वान् विभव निर्वाणम् तमः विशति यत् पुमान् ॥

शब्दार्थ—

मेने	९.	समझते थे	विद्वान्	१.	वे विद्वान् अम्बरीष
अति	३.	अत्यन्त	विभव	११.	धन के
दुर्लभम्	४.	दुर्लभ	निर्वाणम्	१२.	लोभ के कारण
पुंसाम्	२.	मनुष्यों के लिए	तमः	१४.	नरक में
सर्वम्	६.	सब वस्तु को	विशति	१५.	प्रवेश करता है
तत्	५.	उस	यत्	१०.	जिस
स्वप्न	७.	स्वप्न के	पुमान् ॥	१३.	मनुष्य
संस्तुतम् ।	८.	समान			

श्लोकार्थ—वे विद्वान् अम्बरीष मनुष्यों के लिए अत्यन्त दुर्लभ उस सब वस्तु को स्वप्न के समान समझते थे । जिस धन के लोभ के कारण मनुष्य नरक में प्रवेश करता है ॥

सप्तदशः श्लोकः

वासुदेवे भगवति तद्भक्तेषु च साधुषु ।
प्राप्तो भावं परं विश्वं येनेदं लोष्टवत् स्मृतम् ॥१७॥

पदच्छेद— वासुदेवे भगवति तत् भक्तेषु च साधुषु ।
प्राप्तः भावम् परम् विश्वम् येन इदम् लोष्टवत् स्मृतम् ॥

शब्दार्थ—

वासुदेवे	२. श्रीकृष्ण में	भावम्	८. प्रेम
भगवति	१. भगवान्	परम्	७. उन्हें परम
तत्	३. उनके	विश्वम्	१२. संसार को
भक्तेषु	४. भक्तों में	येन	१०. जिसके कारण
च	५. और	इदम्	११. यह सब (उन्हें)
साधुषु	६. महात्माओं में	लोष्टवत्	१३. मिट्टी के ढेले के समान
प्राप्तः ।	९. प्राप्त था	स्मृतम् ॥	१४. जान पड़ता था

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण में उनके भक्तों के और महात्माओं में उन्हें परम प्रेम प्राप्त था । जिसके कारण यह सब उन्हें मिट्टी के ढेले के समान जान पड़ता था ॥

अष्टादशः श्लोकः

स वै मनः कृष्णपदारविन्दयोर्वचांसि वैकुण्ठगुणानुवर्णने ।
करौ हरेर्मन्दिरमार्जनादिषु श्रुतिं चकाराच्युतसत्कथोदये ॥१८॥

पदच्छेद— सः वै मनः कृष्ण पद अरविन्दयोः वचांसि वैकुण्ठ गुण अनुवर्णने ।
करौ हरेः मन्दिर मार्जन आदिषु श्रुतिम् चकार अच्युत सत्कथा उदये ॥

शब्दार्थ—

सः	१. उन्होंने	करौ	११. हाथों को
वै	३. निश्चित रूप से	हरेः	१२. भगवान् के
मनः	२. मन को	मन्दिर	१३. मन्दिर को
कृष्ण	४. श्रीकृष्ण के	मार्जन	१४. साफ सुथरा करने
पद	५. चरण	आदिषु	१५. आदि में (और)
अरविन्दयोः	६. कमलों में	श्रुतिम्	१६. कान को
वचांसि	७. वाणी को	चकार	२०. लगा रखा था
वैकुण्ठ	८. भगवान् के	अच्युत	१७. श्रीकृष्ण की
गुण	९. गुणों के	सत्कथा	१८. मङ्गलमयी कथा के
अनुवर्णने ।	१०. वर्णन में	उदये ॥	१९. सुनने में

श्लोकार्थ—उन्होंने निश्चित रूप से मन को श्रीकृष्ण के चरण कमलों में, वाणी को भगवान् के गुणों के वर्णन में, हाथों को भगवान् के मन्दिर को साफ सुथरा करने आदि में और कान को श्रीकृष्ण की मङ्गलमयी कथा को सुनने में लगा रखा था ॥

एकोनविंश श्लोकः

मुकुन्दलिङ्गालयदर्शने दृशौ तद्भृत्यगात्रस्पर्शेऽङ्गसङ्गमम् ।
घ्राणं च तत्पादसरोजसौरभे श्रीमत्तुलस्या रसनां तदर्पिते ॥१९॥

पदच्छेद— मुकुन्द लिङ्गालय दर्शने दृशौ तत् भृत्य गात्र स्पर्श अङ्ग संगमम् ।
घ्राणम् च तत्पाद सरोज सौरभे श्रीमत् तुलस्याः रसनाम् तत् अर्पिते ॥

शब्दार्थ—

मुकुन्द	२. श्रीकृष्ण की	घ्राणम्	१५. नासिका को
लिङ्गालय	३. प्रतिमा और मन्दिर के	च तत्पाद	१०. उनके चरण
दर्शने	४. देखने में	सरोज	११. कमलों पर चढ़ी
दृशौ	१. नेत्रों को	सौरभे	१४. सुगन्धि में
तत्	५. भगवान् के	श्रीमत्	१२. शोभायमान
भृत्य	६. दास के	तुलस्याः	१३. तुलसी की
गात्र	७. शरीर के	रसनाम्	१८ जिह्वा को (लगाते थे)
स्पर्श	८. स्पर्श करने में	तत्	१६. उन भगवान् के
अङ्गसंगमम् ।	९. अपने अङ्गों को	अर्पिते ॥	१७. समर्पित प्रसाद में

श्लोकार्थ—नेत्रों को श्रीकृष्ण की प्रतिमा और मन्दिर के देखने में, भगवान के दास के शरीर के स्पर्श करने में अपने अङ्गों को, उनके चरण कमलों पर चढ़ी शोभायमान तुलसी की सुगन्धि में नासिका को और उन भगवान् के समर्पित प्रसाद में जिह्वा को लगाते थे ॥

विंशः श्लोकः

पादौ हरेः क्षेत्रपदानुसर्पणे शिरो हृषीकेशपदाभिवन्दने ।
कामं च दास्ये न तु कामकाम्यया यथोत्तमश्लोकजनाश्रया रतिः ॥२०॥

पदच्छेद— पादौ हरेः क्षेत्रपद अनु सर्पणे शिरः हृषीकेश पद अभिवन्दने ।
कामम् च दास्ये न तु काम काम्यया यथा उत्तम श्लोक जनाश्रया रतिः ॥

शब्दार्थ—

पादौ	१. पैरों को	च	९. और
हरेः	२. भगवान् के	दास्ये	११. भगवान् की सेवा में लगा दिया था।
क्षेत्रपद	३. क्षेत्र की पैदल	न तु	१४. नहीं लगाया था
अनुसर्पणे	४. यात्रा करने में	काम	१२. भोगने की
शिरः	५. मस्तक को	काम्यया	१३. इच्छा से
हृषीकेश	६. श्रीकृष्ण	यथा	१५. जिससे कि
पद	७. चरणों की	उत्तमश्लोक	१६. भगवान् के
अभिवन्दने	८. वन्दना करने में।	जन आश्रया	१७. भक्तों का
कामम् ।	१० भोग पदार्थों को	रतिः ॥	१८. प्रेम प्राप्त हो

श्लोकार्थ—पैरों को भगवान् के क्षेत्र की पैदल यात्रा करने में, मस्तक को श्रीकृष्ण के चरणों की वन्दना करने में और भोग पदार्थों को भगवान् की सेवा में (लगा दिया था) भोगने की इच्छा से नहीं लगाया था, जिससे कि भगवान् के भक्तों का प्रेम प्राप्त हो ॥

एकविंशः श्लोकः

एवं सदा कर्मकलापमात्मनः परेऽधियज्ञे भगवत्यधोक्षजे ।
सर्वात्मभावं विदधन्महीमिमां तन्निष्ठविप्राभिहितः शशास ह ॥

पदच्छेद— एवम् सदा कर्म कलापम् आत्मनः परे अधियज्ञे भगवति अधोक्षजे ।
सर्व आत्मभावम् विदधत् महीम् इमाम् तत् निष्ठ विप्र अभिहितः शशास ह ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार (राजा अम्बरीष)	सर्व	११.	सम्पूर्ण
सदा	२.	हमेशा	आत्मभावम्	१०.	अपने भाव से
कर्म	४.	कर्म	विदधत्	१२.	लगा कर
कलापम्	५.	समूह को	महीम्	१४.	पृथ्वी का
आत्मनः	३.	अपने	इमाम्	१३.	इस
परे	९.	परमात्मा में	तत् निष्ठ	१५.	भगवान् में निष्ठा र
अधियज्ञे	७.	यज्ञ पुरुष	विप्र	१६.	ब्राह्मणों के
भगवति	८.	भगवान्	अभिहितः	१७.	आदेशानुसार
अधोक्षजे ।	६.	इन्द्रियातीत	शशास ह ॥	१८.	शासन करते थे

श्लोकार्थ—इस प्रकार (राजा अम्बरीष) हमेशा अपने कर्म समूह को इन्द्रियातीत, यज्ञ पुरुष, परमात्मा मे अपने सम्पूर्ण भाव से लगाकर इस पृथ्वी का भगवान् में निष्ठा र ब्राह्मणों के आदेशानुसार शासन करते थे ॥

द्वाविंशः श्लोकः

ईजेऽश्वमेधैरधियज्ञमीश्वरं महाविभूत्योपचिताङ्गदक्षिणैः ।
ततैर्वसिष्ठासितगौतमादिभिर्धन्वन्यभिस्रोतमसौ सरस्वतीम् ॥२२

पदच्छेद— ईजे अश्वमेधैः अधियज्ञम् ईश्वरम् महाविभूत्या उपचित अङ्ग दक्षिणैः ।
ततैः वसिष्ठ असित गौतम आदिभिः धन्वनि अभिस्रोतम् असौ सरस्वतीम् ॥

शब्दार्थ—

ईजे	१६.	आराधना की थी	वसिष्ठ	५.	वशिष्ठ
अश्वमेधैः	१३.	अश्वमेध यज्ञों के द्वारा	असित	६.	असित
अधियज्ञम्	१५.	यज्ञपति	गौतम	७.	गौतम
ईश्वरम्	१४.	भगवान् की	आदिभिः	८.	आदि आचार्यों के
महाविभूत्या	९.	महान् ऐश्वर्य के कारण	धन्वनि	१.	धन्व नामक देश
उपचितअङ्ग	१०.	सर्वाङ्ग परिपूर्ण	अभिस्रोतम्	४.	धारा के सामने
दक्षिणैः	११.	दक्षिणा वाले	असौ	२.	उन्होंने
ततैः ।	१२.	विस्तृत	सरस्वतीम् ॥	३.	सरस्वती नदी की

श्लोकार्थ—धन्व नामक देश में उन्होंने सरस्वती नदी की धारा के सामने वशिष्ठ, असित आदि आचार्यों के द्वारा महान् ऐश्वर्य के कारण सर्वाङ्ग परिपूर्ण दक्षिणा वाले अश्वमेध यज्ञों के द्वारा भगवान् यज्ञ पति की आराधना की थी ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

यस्य क्रतुषु गीर्वाणैः सदस्या ऋत्विजो जनाः ।
तुल्यरूपाश्चानिमिषा व्यदृश्यन्त सुवाससः ॥२३॥

पदच्छेद— यस्य क्रतुषु गीर्वाणैः सदस्याः ऋत्विजः जनाः ।
तुल्य रूपाः च अनिमिषाः व्यदृश्यन्त सुवाससः ॥

शब्दार्थ—

यस्य	१.	जिनके	तुल्य	७.	समान
क्रतुषु	२.	यज्ञों में	रूपाः	८.	रूप वाले
गीर्वाणैः	३.	देवताओं के साथ बैठे हुए	च	१०.	और
सदस्याः	४.	सदस्य और	अनिमिषाः	११.	निर्निमेष
ऋत्विजः	५.	होता	व्यदृश्यन्त	१२.	दिखाई पड़ते थे
जनाः ।	६.	लोग	सुवाससः ॥	९.	सुन्दर वस्त्र वाले

श्लोकार्थ—जिनके यज्ञों में देवताओं के साथ (बैठे हुए) सदस्य और होता लोग समान रूप वाले, सुन्दर वस्त्र वाले और निर्निमेष दिखाई पड़ते थे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

स्वर्गो न प्रार्थितो यस्य मनुजैरमरप्रियः ।
शृण्वद्भिरुपगायद्भिरुत्तमश्लोकचेष्टितम् ॥२४॥

पदच्छेद— स्वर्गो न प्रार्थितः यस्य मनुजैः अमर प्रियः ।
शृण्वद्भिः उपगायद्भिः उत्तम श्लोक चेष्टितम् ॥

शब्दार्थ—

स्वर्गः	१०.	स्वर्ग की भी	प्रियः	९.	प्रिय
न	११.	नहीं	शृण्वद्भिः	७.	सुनते हुए
प्रार्थितः	१२.	इच्छा करती थी	उपगायद्भिः	६.	गाते हुए और
यस्य	१.	जिनकी	उत्तम	३.	भगवान्
मनुजैः	२.	प्रजा	श्लोक	४.	श्रीकृष्ण की
अमर ।	८.	देवताओं के	चेष्टितम् ॥	५.	लीलाओं को

श्लोकार्थ—जिनकी प्रजा भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं को गाते हुए और सुनते हुए देवताओं के प्रिय स्वर्ग की भी इच्छा नहीं करती थी ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

समर्द्धयन्ति तान् कामाः स्वाराज्यपरिभाविताः ।
दुर्लभा नापि सिद्धानां मुकुन्दं हृदि पश्यतः ॥२५॥

पदच्छेद— समर्द्धयन्ति तान् कामाः स्वाराज्य परिभाविताः ।
दुर्लभाः न अपि सिद्धानाम् मुकुन्दम् हृदि पश्यतः ॥

शब्दार्थ —

समर्द्धयन्ति	१३.	हर्षित कर पाती थीं	न	१२.	नहीं
तान्	४.	उन्हें	अपि	८.	भी
कामाः	११	भोग सामग्रियाँ	सिद्धानाम्	७.	सिद्धों के लिए
स्वाराज्य	५.	अपने आत्मानन्द के सामने	मुकुन्द	२.	भगवान् श्रीकृष्ण को
परिभाविताः ।	६	तुच्छ प्रतीत होने वाली	हृदि	१.	हृदय में
दुर्लभाः	१०.	दुर्लभ	पश्यतः ॥	३.	देखते हुए

श्लोकार्थ—हृदय में भगवान् श्रीकृष्ण को देखते हुए उन्हें अपने आत्मानन्द के सामने तुच्छ प्रतीत होने वाली सिद्धों के लिये भी दुर्लभ भोग-सामग्रियाँ हर्षित नहीं कर पाती थी ॥

षड्विंशः श्लोकः

स इत्थं भक्तियोगेन तपोयुक्तेन पार्थिवः ।
स्वधर्मेण हरिं प्रीणन् सङ्गान् सर्वाञ्छनैर्जहौ ॥२६॥

पदच्छेद— सः इत्थम् भक्ति योगेन तपः युक्तेन पार्थिवः ।
स्वधर्मेण हरिम् प्रीणन् सङ्गान् सर्वान् शनैः जहौ ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	उस	स्वधर्मेण	८.	अपने धर्म के द्वारा
इत्थम्	३.	इस प्रकार	हरिम्	९.	भगवान् को
भक्ति	६.	भक्ति	प्रीणन्	१०.	प्रसन्न करते हुए
योगेन	७.	योग और	सङ्गान्	१२.	आसक्तियों को
तपः	४.	तपस्या से	सर्वान् शनैः	११.	सब प्रकार की धीरे-धीरे
युक्तेन	५.	युक्त	जहौ ॥	१३.	त्याग कर दिया
पार्थिवः ।	२.	राजा ने			

श्लोकार्थ—उन राजा ने इस प्रकार तपस्या से युक्त भक्ति, योग और अपने धर्म के द्वारा भगवान् को प्रसन्न करते हुये धीरे-धीरे सब प्रकार की आसक्तियों का त्याग कर दिया ॥

सप्तविंशः श्लोकः

गृहेषु दारेषु सुतेषु बन्धुषु द्विपोत्तमस्यन्दनवाजिपत्तिषु ।
अक्षय्यरत्नाभरणायुधादिष्वनन्तकोशेष्वकरोदसन्मतिम् ॥२७॥

पदच्छेद—गृहेषु दारेषु सुतेषु बन्धुषु द्विप उत्तम स्यन्दन वाजि पत्तिषु ।
अक्षय्य रत्न आभरण आयुध आदिषु अनन्त कोशेषु अकरोत् असन्मतिम् ॥

शब्दार्थ —

गृहेषु	१. घर	अक्षय्य	१०. अक्षय
दारेषु	२. स्त्री	रत्न	११. रत्न
सुतेषु	३. पुत्र	आभरण	१२. आभूषण
बन्धुषु	४. भाई-बन्धु	आयुध	१३. अस्त्रशस्त्र
द्विप	५. हाथी	आदिषु	१४. आदि वस्तुओं को (तथा)
उत्तम	६. श्रेष्ठ	अनन्त	१५. कभी समाप्त न होने वाले
स्यन्दन	७. रथ	कोशेषु	१६. खजाने को
वाजि	८. घोड़े	अकरोत्	१७. समझने लगा
पत्तिषु ।	९. पैदल सेना	असन्मतिम् ॥	१८. असत्य

श्लोकार्थ—घर में स्त्री, पुत्र, भाई, बन्धु, हाथी, श्रेष्ठ रथ, घोड़े, पैदल सेना, अक्षय रत्न, आभूषण, अस्त्र-शस्त्र, आदि वस्तुओं को तथा कभी समाप्त न होने वाले खजाने को असत्य समझने लगे ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

तस्मा अदाद्धरिश्चक्रं प्रत्यनीकभयावहम् ।
एकान्तभक्तिभावेन प्रीतो भृत्याभिरक्षणम् ॥२८॥

पदच्छेद— तस्मै अदात् हरिः चक्रम् प्रत्यनीक भयावहम् ।
एकान्त भक्ति भावेन प्रीतः भृत्य अभिरक्षणम् ॥

शब्दार्थ—

तस्मै	१३. उन राजा अम्बरीष को	एकान्त	१. अनन्य
अदात्	१२. दे दिया	भक्ति	२. भक्ति
हरिः	५. श्री हरि ने	भावेन	३. भाव से
चक्रम्	१०. चक्र	प्रीतः	४. प्रसन्न
प्रत्यनीक	६. शत्रुओं को	भृत्य	८. अपने भक्त की
भयावहम् ।	७. भयभीत करने वाला (तथा)	अभिरक्षणम् ॥	९. रक्षा करने वाला

श्लोकार्थ—अनन्य भक्ति भाव से प्रसन्न श्री हरि ने शत्रुओं को भयभीत करने वाला तथा अपने भक्त की रक्षा करने वाला चक्र उन राजा अम्बरीष को दे दिया ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

आरिराधयिषुः कृष्णं महिष्या तुल्यशीलया।
युक्तः सांवत्सरं वीरो दधार द्वादशीव्रतम् ॥२९॥

पदच्छेद— आरिराधयिषुः कृष्णम् महिष्या तुल्य शीलया।
युक्तः सांवत्सरम् वीरः दधार द्वादशीव्रतम् ॥

शब्दार्थ—

आरिराधयिषुः	२.	आराधना के इच्छुक	युक्तः	७.	साथ
कृष्णम्	१.	भगवान् श्री कृष्ण की	सांवत्सरम्	८.	एकवर्ष तक
महिष्या	६.	रानी के	वीरः	३.	वीर राजा अम्बरीष ने
तुल्य	४.	समान	दधार	१०.	धारण किया
शीलया।	५.	स्वभाववाली	द्वादशीव्रतम् ॥	९.	द्वादशी प्रधान (एकादशी) व्रत को

श्लोकार्थ—भगवान् श्री कृष्ण की आराधना के इच्छुक वीर राजा ने समान स्वभाव वाली रानी के साथ एक वर्ष तक द्वादशी प्रधान एकादशी व्रत को धारण किया ॥

त्रिंशः श्लोकः

व्रतान्ते कार्तिके मासि त्रिरात्रं समुपोषितः।
स्नातः कदाचित् कालिन्द्यां हरिं मधुवनेऽर्चयत् ॥३०॥

पदच्छेद— व्रतान्ते कार्तिके मासि त्रिरात्रम् सम् उपोषितः।
स्नातः कदाचित् कालिन्द्याम् हरिम् मधुवने अर्चयत् ॥

शब्दार्थ—

व्रतान्ते	३.	व्रत की समाप्ति पर	स्नातः	८.	स्नान करके
कार्तिके	१.	कार्तिक	कदाचित्	६.	एक दिन
मासि	२.	मास में	कालिन्द्याम्	७.	यमुना में
त्रिरात्रम्	४.	तीन रात्रि	हरिम्	१०.	भगवान् श्रीकृष्ण की
सम् उपोषितः।	५.	उपवास किया	मधुवने	९.	मधुवन में
			अर्चयत् ॥	११.	अर्चना की

श्लोकार्थ—कार्तिक मास में व्रत की समाप्ति पर तीन रात्रि उपवास किया। एक दिन यमुना में स्नान करके मधुवन में भगवान् श्रीकृष्ण की अर्चना की ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

महाभिषेकविधिना सर्वोपस्करसम्पदा ।
अभिषिच्याम्बराकल्पैर्गन्धमाल्यार्हणादिभिः ॥३१॥

पदच्छेद— महाभिषेक विधिना सर्व उपस्कर सम्पदा ।
अभिषिच्य अम्बराकल्पैः गन्ध माल्य अर्हण आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

महाभिषेक	१. (उन्होंने) महाभिषेक की	अभिषिच्य	६. अभिषेक करके
विधिना	२. विधि से	अम्बराकल्पैः	७. वस्त्र आभूषणों से
सर्व	३. सब प्रकार की	गन्ध	८. गन्ध चन्दन
उपस्कर	४. सामग्री और	माल्य	९. माला
सम्पदा ।	५. सम्पत्ति के द्वारा	अर्हण	१०. अर्घ्य
		आदिभिः ॥	११. आदि के द्वारा पूजा की

श्लोकार्थ— उन्होंने महाभिषेक की विधि से सब प्रकार की सामग्री और सम्पत्तियों के द्वारा अभिषेक करके वस्त्र, आभूषण, चन्दन, गन्ध, माला, अर्घ्य आदि के द्वारा भगवान् की पूजा की ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

तद्गतान्तरभावेन पूजयामास केशवम् ।
ब्राह्मणांश्च महाभागान् सिद्धार्थानपि भक्तितः ॥३२॥

पदच्छेद— तत् गत अन्तर भावेन पूजयामास केशवम् ।
ब्राह्मणान् च महा भागान् सिद्धार्थान् अपि भक्तितः ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. भगवान् में	ब्राह्मणान्	१०. ब्राह्मणों का
गत	२. लगे हुए	च	७. और
अन्तर	३. आन्तरिक	महाभागान्	८. महाभाग्यवान् (एवम्)
भावेन	४. भाव से	सिद्धार्थान्	९. सिद्ध कामनाओं वाले
पूजयामास	६ पूजन किया	अपि	११. भी
केशवम् ।	५. भगवान् श्रीकृष्ण का	भक्तितः ॥	१२. भक्ति से पूजन किया

श्लोकार्थ— भगवान् में लगे हुए आन्तरिक भाव से भगवान् श्रीकृष्ण का पूजन किया और महाभाग्यवान् सिद्ध कामनाओं वाले ब्राह्मणों का भी भक्तिभाव से पूजन किया ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

गवां रुक्मविषाणीनां रूप्याङ्घ्रीणां सुवाससाम् ।
पयःशीलवयोरूपवत्सोपस्करसम्पदाम् ॥३३॥

पदच्छेद— गवाम् रुक्म विषाणीनां रूप्य अङ्घ्रीणाम् सुवाससाम् ।
पयः शील वयोरूप वत्स उपस्कर सम्पदाम् ॥

शब्दार्थ—

गवाम्	१२.	गौएँ दीं	पयः	६.	दूध देने वाली
रुक्म	१.	सोने से	शील	७.	शील स्वभाव वाली
विषाणीनाम्	२.	मढ़े सींग वाली	वयोरूप	८.	अवस्था-सुन्दरता और
रूप्य	३.	चाँदी से	वत्स	९.	बछड़े से युक्त तथा
अङ्घ्रीणाम्	४.	मढ़े खुर वाली	उपस्कर	१०.	दुहने की
सुवाससाम् ।	५.	उत्तम वस्त्र ओढ़े हुए	सम्पदाम् ॥	११.	सामग्रियों सहित

श्लोकार्थ—सोने से मढ़े सींग वाली, चाँदी से मढ़े खुर वाली, उत्तम वस्त्र ओढ़े हुए, दूध देने वाली, शील स्वभाव वाली, अवस्था-सुन्दरता, और बछड़े से युक्त तथा दुहने की सामग्रियों गौएँ दीं ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

प्राहिणोत् साधु विप्रेभ्यो गृहेषु न्यर्बुदानि षट् ।
भोजयित्वा द्विजानग्रे स्वाद्वन्नं गुणवत्तमम् ॥३४॥

पदच्छेद— प्राहिणोत् साधु विप्रेभ्यः गृहेषु न्यर्बुदानि षट् ।
भोजयित्वा द्विजान् अग्रे स्वादु अन्नम् गुणवत्तमम् ॥

शब्दार्थ—

प्राहिणोत्	११.	गायों को भेज दिया	भोजयित्वा	६.	भोजन कराकर
साधु	७.	साधु और	द्विजान्	२.	ब्राह्मणों को
विप्रेभ्यः	८.	ब्राह्मणों के	अग्रे	१.	पहले
गृहेषु	९.	घर में	स्वादु अन्नम्	३.	स्वादिष्ठ और
न्यर्बुदानि षट् ।	१०.	साठ करोड़	गुणवत्तमम् ॥	४.	अत्यन्त गुणकारी

श्लोकार्थ—पहले ब्राह्मणों को स्वादिष्ठ और अत्यन्त गुणकारी भोजन कराकर साधु और ब्राह्मणों के घर में साठ करोड़ गायों को भेज दिया ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

लब्धकामैरनुज्ञातः पारणायोपचक्रमे ।
तस्य तर्ह्यतिथिः साक्षाद् दुर्वासा भगवानभूत् ॥३५॥

पदच्छेद— लब्धकामैः अनुज्ञातः पारणाय उपचक्रमे ।
तस्य तर्हि अतिथिः साक्षात् दुर्वासाः भगवान् अभूत् ॥

शब्दार्थ—

लब्ध	१. पूर्ण	तर्हि	६. उस समय
कामैः	२. कामना करने वाले ब्राह्मणों से	अतिथिः	८. अतिथि रूप में
अनुज्ञातः	३. अनुमति लेकर राजा ने	साक्षात्	९. साक्षात्
पारणाय	४. पारण करने की	दुर्वासाः	११. दुर्वासा
उपचक्रमे	५. तैयारी की	भगवान्	१०. भगवान्
तस्य ।	७. उनके	अभूत् ॥	१२. पधारे

श्लोकार्थ—पूर्ण कामना करने वाले ब्राह्मणों से राजा ने अनुमति लेकर पारण करने की तैयारी की । उस समय उनके अतिथि रूप में साक्षात् भगवान् दुर्वासा पधारे ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

तमानर्चातिथिं भूपः प्रत्युत्थानासनार्हणैः ।
ययाचेऽभ्यवहाराय पादमूलमुपागतः ॥३६॥

पदच्छेद— तम् आनर्च अतिथिम् भूपः प्रति उत्थान आसन अर्हणैः ।
ययाचे अभ्यवहाराय पाद मूलम् उपागतः ॥

शब्दार्थ—

तम्	१. उन दुर्वासा	आसन	५. आसन देकर
आनर्च	७. पूजन किया और	अर्हणैः	६. अनेक सामग्रियों से
अतिथिम्	२. अतिथि का	ययाचे	११. प्रार्थना की
भूपः	३. राजा ने	अभ्यवहाराय	१०. भोजन के लिए
प्रति उत्थान ।	४. खड़े होकर	पादमूलम्	८. चरणों में
		उपागतः ॥	९ प्रणाम करके

श्लोकार्थ— उन दुर्वासा अतिथि का राजा ने खड़े होकर आसन देकर अनेक सामग्रियों से पूजन किया और चरणों में प्रणाम करके भोजन के लिए प्रार्थना की ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

प्रतिनन्द्य स तद्याच्ञां कर्तुमावश्यकं गतः ।
निममज्ज बृहद् ध्यायन् कालिन्दीसलिले शुभे ॥३७॥

पदच्छेद— प्रतिनन्द्य सः तत् याच्ञाम् कर्तुम् आवश्यकम् गतः ।
निममज्ज बृहद् ध्यायन् कालिन्दी सलिले शुभे ॥

शब्दार्थ—

प्रतिनन्द्य	३. अभिनन्दन करके	निममज्ज	१३. स्नान करने लगे
सः	४. वे	बृहद्	११. पर ब्रह्म का
तत्	१. उनकी	ध्यायन्	१२. ध्यान करते हुए
याच्ञाम्	२. प्रार्थना का	कालिन्दी	८. यमुना जी के
कर्तुम्	६. करने के लिए	सलिले	१०. जल में
आवश्यकम्	५. आवश्यक कार्य	शुभे ॥	९. पवित्र
गतः ।	७. चले गये (तथा)		

श्लोकार्थ—उनकी प्रार्थना का अभिनन्दन करके वे आवश्यक कार्य करने के लिए चले गये तथा यमुना जी के पवित्र जल में पर ब्रह्म का ध्यान करते हुए स्नान करने लगे ॥

अष्टत्रिंशः श्लोकः

मुहूर्तार्धावशिष्टायां द्वादश्यां पारणं प्रति ।
चिन्तयामास धर्मज्ञो द्विजैस्तद्धर्मसङ्कटे ॥३८॥

पदच्छेद— मुहूर्त अर्ध अशिष्टायाम् द्वादश्याम् पारणम् प्रति ।
चिन्तयामास धर्मज्ञः द्विजैः तत् धर्म संकटे ॥

शब्दार्थ—

मुहूर्त	२. दो घड़ी का	चिन्तयामास	११. परामर्श करने लगे
अर्ध	३. आधा (एक घड़ी)	धर्मज्ञः	६. धर्म के जानकार राजा
अवशिष्टायाम्	५. शेष रह जाने पर	द्विजैः	१०. ब्राह्मणों के साथ
द्वादश्याम्	४. द्वादशी के	तत्	७. उस
पारणम् प्रति ।	१. पारण के लिए	धर्म	८. धर्म
		सङ्कटे ।	९. संकट के समय

श्लोकार्थ—पारण के लिए दो घड़ी की आधी एक घड़ी शेष द्वादशी रह जाने पर धर्म के जानकार राजा उस धर्म संकट के समय ब्राह्मणों के साथ परामर्श करने लगे ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

ब्राह्मणातिक्रमे दोषो द्वादश्यां यदपारणे ।
यत् कृत्वा साधु मे भूयादधर्मो वा न मां स्पृशेत् ॥३९॥

पदच्छेद— ब्राह्मण अतिक्रमेः दोषः द्वादश्याम् यत् अपारणे ।
यत् कृत्वा साधु मे भूयात् अधर्मः वा न माम् स्पृशेत् ॥

शब्दार्थ—

ब्राह्मण	१.	ब्राह्मण को	कृत्वा	८.	करके
अतिक्रमेः	२.	बिना भोजन कराये स्वयं खा लेना	साधु	१०.	कल्याण
दोषः	३.	दोष है तथा	मे	९.	मेरा
द्वादश्याम्	४.	द्वादशी में	भूयात्	११.	हो
यत्	६.	दोष है	अधर्मः	१४.	पाप
अपारणे	५.	पारण करने पर भी	वा न	१२.	अथवा न
यत् ।	७.	जिसे	माम्	१३.	मुझे
			स्पृशेत् ॥	१५.	स्पर्श करे (उसे बताइये)

श्लोकार्थ— ब्राह्मणों को बिना भोजन कराये स्वयं खा लेना दोष है और द्वादशी में पारण न करने में भी दोष है । जिसे करके मेरा कल्याण हो अथवा मुझे पाप न स्पर्श करे उसे बताइये ।।

चत्वारिंशः श्लोकः

अम्भसा केवलेनाथ करिष्ये व्रतपारणम् ।
प्राहुरब्भक्षणं विप्रा ह्यशितं नाशितं च तत् ॥४०॥

अम्भसा केवलेन अथ करिष्ये व्रत पारणम् ।
प्राहुः अब्भक्षणम् विप्राः हि अशितम् न अशितम् च तत् ॥

शब्दार्थ—

अम्भसा	३.	जल से (मैं)	प्राहुः	८.	कहते हैं कि
केवलेन	२.	केवल	अब्भक्षणम्	९.	जल पीना
अथ	१.	तदनन्तर	विप्राः	७	ब्राह्मण लोग
करिष्ये	६.	करूँगा (क्योंकि)	हि अशितम्	१०.	भोजन करना भी है
व्रत	४.	व्रत का	च न अशितम्	१२.	न भोजन करना भी है
पारणम् ।	५.	पारण	च तत् ॥	११.	और वह

श्लोकार्थ— तदनन्तर केवल जल से मैं व्रत पारण करूँगा । क्योंकि ब्राह्मण लोग कहते हैं कि जल पीना भोजन करना भी है और वह न करना भी है ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

इत्यपः प्राश्य राजर्षिश्चिन्तयन् मनसाच्युतम् ।
प्रत्यचष्ट कुरुश्रेष्ठ द्विजागमनमेव सः ॥४१॥

पदच्छेद— इति अपः प्राश्य राजर्षिः चिन्तयन् मनसा अच्युतम् ।
प्रत्यचष्ट कुरुश्रेष्ठ द्विज आगमनम् एव सः ॥

शब्दार्थ—

इति	२.	ऐसा निश्चय करके	प्रत्यचष्ट	१३.	प्रतीक्षा करने लगे
अपः	५.	जल	कुरुश्रेष्ठ	१.	हे परीक्षित् !
प्राश्य	६.	पीकर	द्विज	१०.	ब्राह्मण के
राजर्षिः	४.	राजर्षि अम्बरीष	आगमनम्	११.	आने की
चिन्तयन्	९.	चिन्तन करते हुए	एव	१२.	ही
मनसा	७.	मन से	सः ॥	३.	वे
अच्युतम् ।	८.	भगवान् श्रीकृष्ण का			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! ऐसा निश्चय करके वे राजर्षि अम्बरीष जल पीकर मन से भगवान् श्रीकृष्ण का चिन्तन करते हुए ब्राह्मण के आने की ही प्रतीक्षा करने लगे ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

दुर्वासा यमुनाकूलात् कृतावश्यक आगतः ।
राज्ञाभिनन्दितस्तस्य बुबुधे चेष्टितं धिया ॥४२॥

पदच्छेद— दुर्वासाः यमुनाकूलात् कृत आवश्यक आगतः ।
राज्ञा अभिनन्दितः तस्य बुबुधे चेष्टितम् धिया ॥

शब्दार्थ—

दुर्वासाः	१.	दुर्वासा ऋषि	राज्ञा	७.	राजा ने (उनका)
यमुना	४.	यमुना के	अभिनन्दितः	८.	अभिनन्दन किया उन्होंने
कूलात्	५.	तट से	तस्य	९.	उन राजा के
कृत	३.	कार्य से निवृत्त होकर	बुबुधे	१२.	जान लिया
आवश्यक	२.	आवश्यक	चेष्टितम्	१०.	अभिप्राय को
आगतः ।	६.	आये	धिया ॥	११.	बुद्धि से

श्लोकार्थ—दुर्वासा ऋषि आवश्यक कार्य से निवृत्त होकर यमुना के तट से आये । राजा ने उनका अभिनन्दन किया । उन्होंने उन राजा के अभिप्राय को अपनी बुद्धि से जान लिया ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

मन्युना प्रचलद्गात्रो भ्रुकुटीकुटिलाननः ।
बुभुक्षितश्च सुतरां कृताञ्जलिमभाषत ॥४३॥

पदच्छेद— मन्युना प्रचलद् गात्रः भ्रुकुटी कुटिल आननः ।
बुभुक्षितः च सुतराम् कृत अञ्जलिम् अभाषत ॥

शब्दार्थ—

मन्युना	१.	क्रोध से	बुभुक्षितः	९.	भूखे मुनि ने
प्रचलद्	२.	काँपते	च	७.	और
गात्रः	३.	शरीर	सुतराम्	८.	अत्यन्त
भ्रुकुटी	४.	भौंहों के	कृत	११.	बाँधे हुए
कुटिल	५.	चढ़ जाने से विकट	अञ्जलिम्	१०.	अञ्जलि
आननः ।	६.	मुख	अभाषत ॥	१२.	(राजा से) कहा

श्लोकार्थ—क्रोध से काँपते हुए शरीर, भौंहों के चढ़ जाने से विकट मुख और अत्यन्त भूखे मुनि ने अञ्जलि बाँधे खड़े राजा से कहा ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

अहो अस्य नृशंसस्य श्रियोन्मत्तस्य पश्यत ।
धर्मव्यतिक्रमं विष्णोरभक्तस्येशमानिनः ॥४४॥

पदच्छेद— अहो अस्य नृशंसस्य श्रियाउन्मत्तस्य पश्यत ।
धर्म व्यतिक्रमम् विष्णोः अभक्तस्य ईश मानिनः ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	अहो खेद है कि	धर्म	९.	धर्म का
अस्य	८.	इस राजा का	व्यतिक्रमम्	१०.	उल्लंघन न करना
नृशंसस्य	२.	क्रूर	विष्णोः	५.	भगवान् के
श्रियः	३.	धन से	अभक्तस्य	६.	अभक्त (अपने को)
उन्मत्तस्य	४.	मतवाले	ईश	७.	समर्थ
पश्यत ।	११.	देखो	मानिनः ॥	८.	मानने वाले

श्लोकार्थ—अहो खेद है कि क्रूर, धन से मतवाले, भगवान् के अभक्त और अपने को समर्थ मानने वाले इस राजा का धर्म का उल्लंघन करना देखो ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोक

यो मामतिथिमायातमातिथ्येन निमन्त्र्य च।
अदत्त्वा भुक्तवांस्तस्य सद्यस्ते दर्शये फलम् ॥४५॥

पदच्छेद— यः माम् अतिथिम् आयातम् आतिथ्येन निमन्त्र्य च।
अदत्वा भुक्तवान् तस्य सद्यः ते दर्शये फलम् ॥

शब्दार्थ—

यः	१. जो	अदत्वा	८. बिना भोजन कराये (स्वयं)
माम्	३. मुझे	भुक्तवान्	९. खा लिया
अतिथिम्	४. अतिथि को	तस्य	१०. उसका
आयातम्	२. आये हुए	सद्यः ते	११. तत्काल तुझे
आतिथ्येन	५. अतिथि सत्कार के लिए	दर्शये	१३. दिखाता हूँ
निमन्त्र्य च।	६. निमन्त्रण देकर और	फलम् ॥	११. फल

श्लोकार्थ—जो आये हुये मुझ अतिथि को अतिथि सत्कार के लिये निमन्त्रण देकर और बिना भोजन कराये स्वयं खा लिया। उसका फल तुझे तत्काल दिखाता हूँ॥

षटचत्वारिंशः श्लोकः

एवं ब्रुवाण उत्कृत्य जटां रोषविदीपितः।
तया स निर्ममे तस्मै कृत्यां कालानलोपमाम् ॥४६॥

पदच्छेद— एवम् ब्रुवाणः उत्कृत्य जटाम् रोष विदीपितः।
तया सः निर्ममे तस्मै कृत्याम् कालानल उपमाम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	तया	८. उस जटा से
ब्रुवाणः	२. कहते हुये और	सः	७. उन्होंने
उत्कृत्य	६. उखाड़ कर	निर्ममे	१३. उत्पन्न की
जटाम्	५. अपनी एक जटा को	तस्मै	९. उस राजा को मारने के लिये
रोष	३. क्रोध से	कृत्याम्	१२. कृत्या
विदीपितः।	४. जलते हुये	कालानल	१०. प्रलय काल की अग्नि के
		उपमाम् ॥	११. समान

श्लोकार्थ—इस प्रकार कहते हुए और क्रोध से जलते हुये अपनी एक जटा को उखाड़ कर उन्होंने उस जटा से उस राजा को मारने के लिये प्रलय काल की अग्नि के समान कृत्या उत्पन्न की॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

तामापतन्तीं ज्वलतीमसिहस्तां पदा भुवम् ।
वेपयन्तीं समुद्वीक्ष्य न चचाल पदान्नृपः ॥४७॥

पदच्छेद— ताम् आपतन्तीम् ज्वलतीम् असि हस्ताम् पदा भुवम् ।
वेपयन्तीम् समुद्वीक्ष्य न चचाल पदात् नृपः ॥

शब्दार्थ—

ताम्	८. उसे	भुवम् ।	५. पृथ्वी को
आपतन्तीम्	७. आक्रमण करती हुई	वेपयन्तीम्	६. कंपाती हुई और
ज्वलतीम्	१. जलती हुई	समुद्वीक्ष्य	९. देख कर
असि	३. तलवार लिये	न चचाल	१२. नहीं विचलित हुये
हस्ताम्	२. हाथ में	पदात्	११. एक पग भी
पदा	४. पैरों से	नृपः ।	१०. राजा

श्लोकार्थ—जलती हुई, हाथ में तलवार लिये हुई, पैरों से पृथ्वी को कंपाती हुई और आक्रमण करती हुई उसे देख कर राजा एक पग भी विचलित नहीं हुये ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

प्राग्दिष्टं भृत्यरक्षायां पुरुषेण महात्मना ।
ददाह कृत्यां तां चक्रं क्रुद्धाहिमिव पावकः ॥४८॥

पदच्छेद— प्राक् दिष्टम् भृत्य रक्षायाम् पुरुषेण महात्मना ।
ददाह कृत्याम् ताम् चक्रम् क्रुद्ध अहिम् इव पावकः ॥

शब्दार्थ—

प्राक्	५. पहले से ही	ददाह	१०. जला दिया
दिष्टम्	६. नियुक्त	कृत्याम्	९. कृत्या को उसी प्रकार
भृत्य	३. सेवक की	ताम्	८. उस
रक्षायाम्	४. रक्षा के लिये	चक्रम्	७. सुदर्शन चक्र ने
पुरुषेण	१. परम पुरुष	क्रुद्ध	१२. क्रोधित
महात्मना ।	२. परमात्मा के द्वारा	अहिम्	१३. सांप को (जगा देती है)
		इव पावकः ॥	११. जैसे अग्नि

श्लोकार्थ—परम पुरुष परमात्मा के द्वारा सेवक की रक्षा के लिए पहले से ही नियुक्त सुदर्शन चक्र ने उस कृत्या को उसी प्रकार जला दिया जैसे अग्नि क्रोधित सांप को जला देती है ॥

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

तदभिद्रवदुद्वीक्ष्य स्वप्रयासं च निष्फलम् ।
दुर्वासा दुद्रुवे भीतो दिक्षु प्राणपरीप्सया ॥४९॥

पदच्छेद— तत् अभिद्रवत् उद्वीक्ष्य स्व प्रयासम् च निष्फलम् ।
दुर्वासाः दुद्रुवे भीतः दिक्षु प्राण परीप्सया ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. उसे	दुर्वासाः	८. दुर्वासा ऋषि
अभिद्रवत्	२. अपनी ओर आते हुए	दुद्रुवे	१३. भागने लगे
उद्वीक्ष्य	७. देख कर	भीतः	९. डर कर
स्व	४. अपने	दिक्षु	१२. दिशाओं में
प्रयासम्	५. प्रयास को	प्राण	१०. प्राण
च	३. और	परीप्सया ॥	११. बचाने के लिये
निष्फलम् ।	६. निष्फल		

श्लोकार्थ—उसे अपनी ओर आते हुए और अपने प्रयास को निष्फल देख कर दुर्वासा ऋषि डर कर प्राण बचाने के लिये दिशाओं में भागने लगे ॥

पञ्चाशत्तमः श्लोकः

तमन्वधावद् भगवद्रथाङ्गं दावाग्निरुद्धूतशिखो यथाहिम्।
तथानुषक्तं मुनिरीक्षमाणो गुहां विविक्षुः प्रससार मेरोः ॥५०॥

पदच्छेद— तम् अन्वधावत् भगवत् रथाङ्गम् दावाग्निः उद्धूतशिखः यथा अहिम् ।
तथा अनुषक्तम् मुनिः ईक्षमाणः गुहाम् विविक्षुः प्रससार मेरोः ॥

शब्दार्थ—

तम्	३. उनके	तथ अनुषक्तम्	८. उसी प्रकार पीछे आते हुये चक्र को
अन्वधावत्	४. पीछे उसी प्रकार दौड़ने लगा	मुनिः	१०. मुनि दुर्वासा
भगवत्	१. भगवान् का	ईक्षमाणः	९. देख कर
रथाङ्गम्	२. चक्र	गुहाम्	१२. गुफा में
दावाग्निः	७. वन की अग्नि (दौड़ती है)	विविक्षुः	१३. प्रवेश करने के लिए
उद्धूतशिखः	६. ऊँची लपटों वाला	प्रससार	१४. दौड़ पड़े
यथा अहिम् ।	५. जिस प्रकार सांप के पीछे	मेरोः ॥	११. मेरु पर्वत की

श्लोकार्थ—भगवान् का चक्र उनके पीछे उसी प्रकार दौड़ने लगा जिस प्रकार ऊँची लपटों वाली वन की अग्नि । उसी प्रकार पीछे आते हुए चक्र को देख कर मुनि दुर्वासा मेरु पर्वत की गुफा में प्रवेश करने के लिए दौड़ पड़े ॥

एकपञ्चाशत्तम श्लोकः

दिशो नभः क्ष्मां विवरान् समुद्राँल्लोकान् सपालांस्त्रिदिवं गतः सः ।
यतो यतो धावति तत्र तत्र सुदर्शनं दुष्प्रसहं ददर्श ॥५१॥

पदच्छेद— दिशः नभः क्ष्माम् विवरान् समुद्रान् लोकान् सपालान् त्रिदिवम् गतः सः ।
यतः यतः धावति तत्र तत्र सुदर्शनम् दुष्प्रसहम् ददर्श ॥

शब्दार्थ—

दिशः	२.	(वे दुर्वासा मुनि) दिशा	त्रिदिवम्	९.	स्वर्ग में
नभः	३.	आकाश	गतः सः	१०.	गये
क्ष्माम्	४.	पृथ्वी	यतः यतः	११.	जहाँ जहाँ
विवरान्	५.	पाताल	धावति	१२	दौड़ कर
समुद्रान्	६.	समुद्र	तत्र तत्र	१३.	वहीं वहीं
लोकान्	८.	लोक और	सुदर्शनम्	१५.	सुदर्शन चक्र को
सपालान्	७.	लोकपाल सहित	दुष्प्रसहम्	१४.	असह्य तेज वाले
			ददर्श ॥	१६.	देखा

श्लोकार्थ—वे दुर्वासा मुनि दिशा, आकाश, पृथ्वी, पाताल, समुद्र, लोकपाल सहित लोक और स्वर्ग में जहाँ जहाँ दौड़कर गये, वहीं वहीं असह्य तेज वाले सुदर्शन चक्र को देखा ।।

द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

अलब्धनाथः स यदा कुतश्चित् संत्रस्तचित्तोऽरणमेषमाणः ।
देवं विरिञ्चं समगाद् विधातस्त्राह्यात्मयोनेऽजिततेजसो माम् ॥५२॥

पदच्छेद— अलब्धनाथः सः यदा कुतश्चित् संत्रस्तचितः अरणम् एषमाणः ।
देवम् विरिञ्चम् समगात विधातः त्राहि आत्मयोने अजित तेज सः माम् ॥

शब्दार्थ—

अलब्धनाथः	२.	रक्षक न मिलने पर	विरिञ्चम्	९.	ब्रह्मा के
सः यदा	३.	वे दुर्वासा	समागत	१०.	पास गये (और बोले)
कुतश्चित	१.	कहीं से भी	विधातः	१२.	ब्रह्मा जी
संत्रस्त	४.	अत्यन्त भयभीत	त्राहि	१६.	बचाइये
चितः	५.	चित्त होकर	आत्मयोने	११.	आत्मयोने
अरणम्	६.	शरण	अजित	१४.	अजेय
एषमाणः ।	७.	ढूंढ़ते हुए	तेजसः	१५	तेज वाले चक्र से
देवम्	८.	देवशिरोमणि	माम् ॥	१३.	मुझे

श्लोकार्थ—कहीं से भी रक्षक न मिलने पर वे दुर्वासा अत्यन्त भयभीत चित्त होकर शरण ढूंढ़ते हुए देव शिरोमणि ब्रह्मा के पास गये और बोले-आत्मयोने ब्रह्मा जी मुझे अजेय तेज वाले चक्र से बचाइये ।।

त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

ब्रह्मोवाच—स्थानं मदीयं सहविश्वमेतत् क्रीडावसाने द्विपरार्धसंज्ञे ।
भ्रूभङ्गमात्रेण हि संदिधक्षोः कालात्मनो यस्य तिरोभविष्यति ॥५३॥

पदच्छेद— स्थानम् मदीयम् सह विश्वम् एतत् क्रीडा अवसाने द्विपरार्ध संज्ञे ।
भ्रूभङ्ग मात्रेण हि संदिधक्षोः काल आत्मनः यस्य तिरो भविष्यति ॥

शब्दार्थ—

स्थानम्	१५.	स्थान भी	संज्ञे ।	२.	नामक
मदीयम्	१४.	मेरा	भ्रूभङ्ग	९.	भौंहों के टेढ़ी करने
सह	१२.	साथ	मात्रेण हि	१०.	मात्र से
विश्वम्	११.	संसार के	संदिधक्षोः	५.	जलाने के इच्छुक
एतत्	१३.	यह	काल	६.	काल
क्रीडा	३.	लीला के	आत्मनः	७.	स्वरूप
अवसाने	४.	अन्त में	यस्य	८.	जिस भगवान् के
द्विपरार्ध	१.	दो परार्ध	तिरोभविष्यति ॥	१६.	लीन हो जायेंगे

श्लोकार्थ—दो परार्ध नामक लीला के अन्त में जलाने के इच्छुक काल स्वरूप जिस भगवान् के भौंहों के टेढ़ी करने मात्र से संसार के साथ यह मेरा स्थान भी लीन हो जायेगा ॥

चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

अहं भवो दक्षभृगुप्रधानाः प्रजेशभूतेशसुरेशमुख्याः ।
सर्वे वयं यन्नियमं प्रपन्ना मूर्ध्न्यर्पितं लोकहितं वहामः ॥५४॥

पदच्छेद— अहम् भवः दक्ष भृगु प्रधानाः प्रजेश भूतेश सुरेश मुख्याः ।
सर्वे वयम् यत् नियमम् प्रपन्नाः मूर्ध्नि अर्पितम् लोक हितम् वहामः ॥

शब्दार्थ—

अहम्	१.	मैं	सर्वे	१०.	सब (तथा)
भवः	२.	शंकर जी	वयम्	११.	हम लोग
दक्ष	३.	दक्ष	यत्	१२.	जिनके (बनाये)
भृगु	४.	भृगु	नियमम्	१३.	नियमों में
प्रधानाः	५.	आदि	प्रपन्नाः	१४.	बँधे हुए हैं (तथा)
प्रजेश	६.	प्रजापति	मूर्ध्नि	१६.	शिरोधार्य करके
भूतेश	७.	भूतेश्वर	अर्पितम्	१५.	जिसकी आज्ञा को
सुरेश	८.	देवेश्वर	लोकहितम्	१७.	संसार का कल्याण
मुख्याः ।	९.	आदि	वहामः ॥	१८.	करते हैं

श्लोकार्थ—मैं, शंकर जी, दक्ष, भृगु आदि प्रजापति, भूतेश्वर आदि सब तथा हम लोग जिनके बनाये नियमों में बंधे हुए है तथा जिनकी आज्ञा को शिरोधार्य करके संसार का कल्याण करते हैं ॥

पञ्चपञ्चाशत्तमः श्लोकः

प्रत्याख्यातो विरिञ्चेन विष्णुचक्रोपतापितः ।
दुर्वासाः शरणं यातः शर्वं कैलासवासिनम् ॥५५॥

पदच्छेद— प्रति आख्यातः विरिञ्चेन विष्णु चक्र उपतापितः ।
दुर्वासाः शरणम् यातः शर्व कैलाश वासिनम् ॥

शब्दार्थ—

प्रति आख्यातः	१.	अस्वीकार कर दिये जाने पर	दुर्वासाः	६.	दुर्वासा ऋषि
विरिञ्चेन	१.	ब्रह्मा के द्वारा	शरणम्	१०.	शरण में
विष्णु	३.	भगवान् के	यातः	११.	गये
चक्र	४.	चक्र से	शर्वं	९.	शंकर जी की
उपतापितः ।	५.	सन्तप्त	कैलास	७.	कैलास
			वासिनम् ॥	८.	वासी

श्लोकार्थ—ब्रह्मा के द्वारा अस्वीकार कर दिये जाने पर भगवान् के चक्र से सन्तप्त दुर्वासा ऋषि कैलासवासी शंकर की शरण में गये ॥

षट्पञ्चाशत्तमः श्लोकः

श्रीरुद्र उवाच—वयं न तात प्रभवाम भूम्नि यस्मिन् परेऽन्येऽप्यजजीवकोशाः ।
भवन्ति काले न भवन्ति हीदृशाः सहस्रशो यत्र वयं भ्रमामः ॥५६॥

पदच्छेद— वयम् न तात प्रभवाम भूम्नि यस्मिन् परे अन्ये अपि अज जीव कोशाः ।
भवन्ति काले न भवन्ति हि ईदृशाः सहस्रशः यत्र वयम् भ्रमामः ॥

शब्दार्थ—

वयम्	५.	हम	कोशाः ।	११.	ब्रह्माण्ड
न	६.	कुछ नहीं करने की	भवन्ति	१३.	उत्पन्न होते हैं (और)
तात	१.	हे तात दुर्वासा	काले	१२.	समय पर
प्रभवामः	७.	सामर्थ्य रखते हैं (जिनमें)	न	१४.	विलीन
भूम्नि	३.	अनन्त	भवन्ति हि	१५.	हो जाते हैं (तथा)
यस्मिन्	२.	उन	ईदृशाः	१८.	हजारों
परे	४.	परमेश्वर के सम्बन्ध में	सहस्रशः	१९.	जैसे
अन्ये	८.	दूसरे	यत्र	१६.	जिनमें
अपि	९.	भी	वयम्	१७.	हमारे
अजजीव	१०.	ब्रह्मा जैसे जीव (और)	भ्रमामः ॥	२०.	चक्कर काटते रहते हैं

श्लोकार्थ—हे तात ! दुर्वासा ! उन अनन्त परमेश्वर के सम्बन्ध में हम कुछ भी करने की सामर्थ्य नहीं रखते है । जिनमें दूसरे भी ब्रह्मा जैसे जीव और ब्रह्माण्ड समय पर उत्पन्न होते हैं और विलीन हो जाते हैं । तथा जिनमें हमारे जैसे हजारों चक्कर काटते रहते हैं ॥

सप्तपञ्चाशत्तमः श्लोकः

अहं सनत्कुमारश्च नारदो भगवानजः।
कपिलोऽपान्तरतमो देवलो धर्म आसुरिः ॥५७॥

पदच्छेद — अहम् सनत्कुमारः च नारदः भगवान् अजः।
कपिलः अपान्तरतमः देवलः धर्म आसुरिः ॥

शब्दार्थ--

अहम्	१. मैं	कपिलः	६. कपिल
सनत्कुमारः	२. सनत्कुमार	अपान्तरतमः	७. अपान्तरतम
च नारदः	३. और नारद	देवलः	८. देवल
भगवान्	४. भगवान्	धर्म	९. धर्म और
अजः।	५. ब्रह्मा	आसुरिः ॥	१०. आसुरि जिनकी माया को नहीं जानते हैं।

श्लोकार्थ—मैं, सनत्कुमार और नारद भगवान् ब्रह्मा, कपिल अपान्तरतम, देवल, धर्म और आसुरि जिनकी माया को नहीं जानते है ॥

अष्टपञ्चाशत्तमः श्लोकः

मरीचिप्रमुखाश्चान्ये सिद्धेशाः पारदर्शनाः।
विदाम न वयं सर्वे यन्मायां माययाऽऽवृताः ॥५८॥

पदच्छेद— मरीचि प्रमुखाः च अन्ये सिद्धेशाः पारदर्शनाः।
विदामः न वयम् सर्वे यत् मायाम् मायया आवृताः ॥

शब्दार्थ—

मरीचि	१. मरीचि	विदामः	१३. जानते हैं क्योंकि
च	३. और	न	१२. नहीं
प्रमुखाः	२. आदि	वयम्	८. हम
च	७. तथा	सर्वे	९. सब
अन्ये	४. दूसरे	यत्	१०. जिनकी
सिद्धेशाः	६. सिद्धेश्वर	मायाम्	११. माया को
पारदर्शनाः।	५ सर्वज्ञ	मायया	१४. माया से
		आवृताः ॥	१५. घिरे हुए हैं

श्लोकार्थ—मरीचि आदि और दूसरे सर्वज्ञ दिद्धेश्वर तथा हम सब जिनकी माया को नहीं जानते है। क्योंकि माया से घिरे हुए हैं ॥

एकोनषष्टितमः श्लोकः

तस्य विश्वेश्वरस्येदं शस्त्रं दुर्विषहं हि नः ।
तमेव शरणं याहि हरिस्ते शं विधास्यति ॥५९॥

पदच्छेद— तस्य विश्वेश्वरस्य इदम् शस्त्रम् दुर्विषहम् हि नः ।
तम् एव शरणम् याहि हरिः ते शम् विधास्यति ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१. उन	तम् एव	८. उन्हीं की
विश्वेश्वरस्य	२. विश्वेश्वर भगवान् का	शरणम्	९. शरण में
इदम्	३. यह	याहि	१०. जाओ
शस्त्रम्	४. शस्त्र	हरिः	१२. हरि ही
दुर्विषहम्	७. असह्य है	ते	११. वे
हि	६. निश्चित ही	शम्	१३. कल्याण
नः	५. हमारे लिए	विधास्यति ॥	१४. करेंगे

श्लोकार्थ—उन विश्वेश्वर भगवान् का यह शस्त्र हमारे लिये निश्चित ही असह्य है । उन्हीं की शरण में जाओ । वे हरि ही कल्याण करेंगे ॥

षष्टितमः श्लोकः

ततो निराशो दुर्वासाः पदं भगवतो ययौ ।
वैकुण्ठाख्यं यदध्यास्ते श्रीनिवासः श्रिया सह ॥६०॥

पदच्छेद— ततः निराशः दुर्वासाः पदम् भगवतः ययौ ।
वैकुण्ठ आख्यम् यत् अध्यास्ते श्री निवासः श्रिया सह ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. वहाँ से	वैकुण्ठ	५. वैकुण्ठ
निराशः	२. निराश होकर	आख्यम्	६. नामक
दुर्वासाः	३. दुर्वासा	यत्	९. जहाँ
पदम्	७. धाम में	अध्यास्ते	१३ रहते हैं
भगवतः	४. भगवान् के	श्रीनिवासः	१०. लक्ष्मी पति भगवान्
ययौ ।	८. गये	श्रिया	११. लक्ष्मी के
		सह ॥	१२. साथ

श्लोकार्थ—वहाँ से निराश होकर दुर्वासा भगवान् के वैकुण्ठ नामक धाम में गये । जहाँ लक्ष्मी पति भगवान् लक्ष्मी के साथ रहते हैं ॥

एकषष्टितमः श्लोकः

संदह्यमानोऽजितशस्त्रवह्निना तत्पादमूले पतितः सवेपथुः ।
आहाच्युतानन्त सदीप्सित प्रभो कृतागसं माव हि विश्वभावन ॥६१॥

पदच्छेद—संदह्यमानः अजित शस्त्र वह्निना तत् पादमूले पतितः स वेपथुः ।
आह अच्युत अनन्त सत् ईप्सित प्रभो कृत आगसम् मा अव हि विश्वभावन ॥

शब्दार्थ —

संदह्यमानः	४.	जलते हुये	आह अच्युत	९.	बोले हे अच्युत !
अजित	१.	वे दुर्वासा ऋषि भगवान् के	अनन्त	१०.	हे अनन्त !
शस्त्र	२.	शस्त्र की	सत् ईप्सित	११.	हे सज्जनों के अभीष्ट !
वह्निना	३.	अग्नि से	प्रभो	१२.	हे प्रभो !
तत्	५.	उनके	कृत	१५	करने वाले
पाद मूले	६.	चरणों पर	आगसम्	१४.	अपराध
पतितः	७	गिर पड़े और	मा अव हि	१६.	मुझे बचाइए
स वेपथुः ।	८	कांपते हुये	विश्वभावन ॥	१३.	हे विश्व के जीवन दाता !

श्लोकार्थ—वे दुर्वासा ऋषि भगवान् के शस्त्र की अग्नि से जलते हुये उनके चरणों पर गिर पड़े और कांपते हुये बोले हे अच्युत ! हे अनन्त ! हे सज्जनों के अभीष्ट ! हे प्रभो ! हे विश्व के जीवन दाता ! अपराध करने वाले मुझे बचाइए ॥

द्विषष्टितमः श्लोकः

अजानता ते परमानुभावं कृतं मयाघं भवतः प्रियाणाम् ।
विधेहि तस्यापचितिं विधातर्मुच्येत यन्नाम्न्युदिते नारकोऽपि ॥६२॥

पदच्छेद— अजानता ते परम अनुभावम् कृतम् मया अघम् भवतः प्रियाणाम् ।
विधेहि तस्य अपचितिम् विधातः मुच्येत यत् नाम्नि उदिते नारकः अपि ॥

शब्दार्थ—

अजानता	४.	न जानने के कारण	विधेहि	१३.	कीजिये (क्योंकि)
ते	१.	आपके	तस्य	११.	उससे (मुझे बचाने का)
परम	२.	परम	अपचितिम्	१२	उपाय
अनुभावम्	३.	प्रभाव	विधातः	१०.	हे विधाता !
कृतम्	९	किया है	मुच्येत	१८.	मुक्त हो जाता है
मया	५.	मैंने	यत्	१४.	जिन (आपके)
अघम्	८.	अपराध	नाम्नि	१५.	नाम के
भवतः	६.	आपके	उदिते	१६.	उच्चारण के
प्रियाणाम् ।	७.	प्रिय भक्त का	नारकः अपि ॥	१७.	नारकी जीव भी

श्लोकार्थ—आप के परम प्रभाव को न जानने के कारण मैंने आपके प्रिय भक्त का अपराध किया है । हे विधाता ! उससे मुझे बचाने का उपाय कीजिये । क्योंकि जिन आपके नाम के उच्चारण से नारकी जीव भी मुक्त हो जाता है ॥

त्रिषष्टितमः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच— अहं भक्तपराधीनो ह्यस्वतन्त्र इव द्विज ।
साधुभिर्ग्रस्तहृदयो भक्तैर्भक्तजनप्रियः ॥६३॥

पदच्छेद— अहम् भक्त पराधीनः हि अस्वतन्त्रः इव द्विज ।
साधुभिः ग्रस्त हृदयः भक्तैः भक्तजन प्रियः ॥

शब्दार्थ—

अहम्	८	मैं	साधुभिः	३.	साधुओं के द्वारा
भक्त	११.	भक्तों के	ग्रस्त	४.	ग्रसित
पराधीनः	१२.	अधीन हूँ	हृदयः	५.	हृदय वाला (तथा)
हि अस्वतन्त्रः	९.	पराधीन के	भक्तैः	२.	भक्त
इव	१०.	समान	भक्तजन	६.	भक्त जनों का
द्विज ।	१.	हे ब्राह्मण देव !	प्रियः ॥	७.	प्यारा

श्लोकार्थ—हे ब्राह्मण देव ! भक्त साधुओं के द्वारा ग्रसित हृदय वाला तथा भक्त जनों का प्यारा मैं पराधीव के समान भक्तों के अधीन हूँ ॥

चतुःषष्टितमः श्लोकः

नाहमात्मानमाशासे मद्भक्तैः साधुभिर्विना ।
श्रियं चात्यन्तिकीं ब्रह्मन् येषां गतिरहं परा ॥६४॥

पदच्छेद— न अहम् आत्मानम् आशासे मत् भक्तैः साधुभिः विना ।
श्रियम् च आत्यन्तिकीम् ब्रह्मन् येषाम् गतिः अहम् परा ॥

शब्दार्थ—

न अहम्	१४.	नहीं मैं	श्रियम्	१३.	लक्ष्मी को
आत्मानम्	१०.	अपने आप को	च	११.	और
आशासे	१५.	चाहता हूँ	आत्यन्तिकीम्	१२.	अर्धांगिनी
मत्	७.	अपने	ब्रह्मन्	१.	हे ब्रह्मन् !
भक्तैः	८.	भक्तों को	येषाम्	२.	जिन भक्तों का
साधुभिः	६.	साधु स्वभाव	गतिः	४.	आश्रय हूँ (उन)
विना ।	९.	छोड़ कर	अहम् परा ॥	३.	मैं परम

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! जिन भक्तों का मैं परम आश्रय हूँ, उन साधु स्वभाव अपने भक्तों को छोड़ कर मैं अपने आप को और अर्धांगिनी लक्ष्मी को भी नहीं चाहता हूँ ॥

पञ्चषष्टितमः श्लोकः

ये दारागारपुत्राप्तान् प्राणान् वित्तमिमं परम् ।
हित्वा मां शरणं याताः कथं तांस्त्यक्तुमुत्सहे ॥६५॥

पदच्छेद— ये दारागार पुत्र आप्तान् प्राणान् वित्तम् इमम् परम् ।
हित्वा माम् शरणम् याताः कथम् तान् त्यक्तुम् उत्सहे ॥

शब्दार्थ—

ये	१.	जो (भक्त)	हित्वा	९.	छोड़ कर
दारागार	२.	स्त्री	माम्	१०.	मेरी
पुत्र	३.	पुत्र	शरणम्	११.	शरण में
आप्तान्	४.	घर	याताः	१२.	आ गये हैं
प्राणान्	५.	प्राण	कथम्	१४.	कैसे
वित्तम्	६.	धन	तान्	१३.	उन्हें
इमम्	७.	इस लोक (और)	त्यक्तुम्	१५.	छोड़ने का
परम् ।	८.	परलोक को	उत्सहे ॥	१६.	साहस कर सकता हूँ ।

श्लोकार्थ—जो भक्त स्त्री, पुत्र, घर, प्राण, धन इस लोक और परलोक को छोड़ कर मेरी शरण में आ गये हैं। उन्हें कैसे छोड़ने का साहस कर सकता हूँ ॥

षट्षष्टितमः श्लोकः

मयि निर्बद्धहृदयाः साधवः समदर्शनाः ।
वशीकुर्वन्ति मां भक्त्या सत्स्त्रियः सत्पतिं यथा ॥६६॥

पदच्छेद— मयि निर्बद्ध हृदयाः साधवः सम दर्शनाः ।
वशी कुर्वन्ति माम् भक्त्या सत् स्त्रियः सत्पतिम् यथा ॥

शब्दार्थ—

मयि	७.	मुझ में	कुर्वन्ति	६.	कर लेती हैं (वैसे ही)
निर्बद्ध	९.	बाँध रखने वाले	माम्	१३.	मुझे (वश में कर लेता है)
हृदयाः	८.	हृदय को	भक्त्या	१२.	भक्ति के द्वारा
साधवः	११.	साधु भक्त	सत्	२.	सती
समदर्शनाः ।	१०.	समदर्शी	स्त्रियः	३.	स्त्री
वशी	५.	वश में	सत्पतिम्	४.	सदाचारी पति को
			यथा ॥	१.	जैसे

श्लोकार्थ—जैसे सती स्त्री सदाचारी पति को वश में कर लेती है वैसे ही मुझ में हृदय को बाँध रखने वाले समदर्शी साधु भक्त भक्ति के द्वारा मुझे वश में कर लेते हैं ॥

सप्तषष्टितमः श्लोकः

मत्सेवया प्रतीतं च सालोक्यादिचतुष्टयम् ।
नेच्छन्ति सेवया पूर्णाः कुतोऽन्यत् कालविद्रुतम् ॥६७॥

पदच्छेद— मत्सेवया प्रतीतम् च सालोक्य आदि चतुष्टयम् ।
न इच्छन्ति सेवया पूर्णाः कुतः अन्यत् काल विद्रुतम् ॥

शब्दार्थः—

मत्	३.	मेरी	न इच्छन्ति	९.	नहीं चाहते हैं
सेवया	४.	सेवा से	सेवया	१.	सेवा से
प्रतीतम्	५.	प्राप्त	पूर्णः	२.	परिपूर्ण (भक्त)
च	१०.	और	कुतः	१४.	क्यों चाहेंगे
सालोक्य	६.	सालोक्य	अन्यत्	१३.	दूसरी वस्तु को
आदि	७.	आदि	काल	११.	समय से
चतुष्टयम् ।	८.	चार प्रकार के मोक्ष को भी	विद्रुतम् ॥	१२.	नष्ट हो जाने वाली

श्लोकार्थ—सेवा से परिपूर्ण भक्त मेरी सेवा से प्राप्त सालोक्य आदि चार प्रकार के मोक्ष को भी नहीं चाहते हैं। और समय से नष्ट हो जाने वाली दूसरी वस्तु को क्या चाहेगें ? ॥

अष्टषष्टितमः श्लोकः

साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वहम् ।
मदन्यत् ते न जानन्ति नाहं तेभ्यो मनागपि ॥६८॥

पदच्छेद— साधवः हृदयम् मह्यम् साधूनाम् हृदयम् तु अहम् ।
मत् अन्यत् ते न जानन्ति न अहम् तेभ्यः मनाक् अपि ॥

शब्दार्थ

साधवः	१.	साधु भक्त	अन्यत्	९.	अलावा कुछ भी
हृदयम्	३.	हृदय हैं (और)	ते	७.	वे
मह्यम्	२.	मेरे	न जानन्ति	१०.	नहीं जानते हैं और
साधूनाम्	४.	साधुओं का	न अहम्	११.	न मैं
हृदयम्	५.	हृदय	तेभ्यः	१२.	उनके अतिरिक्त
तु अहम् ।	६.	मैं हूँ	मनाक्	१५.	कुछ
मत्	८.	मेरे	अपि ॥	१४.	भी जानता हूँ ।

श्लोकार्थ—साधु भक्त मेरे हृदय हैं और साधुओं का हृदय मैं हूँ। वे मेरे अलावा कुछ भी नहीं जानते हैं। और न मैं उनके अतिरिक्त कुछ भी जानता हूँ ॥

एकोनसप्ततितमः श्लोकः

उपायं कथयिष्यामि तव विप्र शृणुष्व तत् ।
अयं ह्यात्माभिचारस्ते यतस्तं यातु वै भवान् ।
साधुषु प्रहितं तेजः प्रहर्तुः कुरुतेऽशिवम् ॥६९॥

पदच्छेद— उपायम् कथयिष्यामि तव विप्र शृणुष्व तत् ।
अयम् हि आत्म अभिचारः ते यतः तम् यातु वै भवान् ।
साधुषु प्रहितम् तेजः प्रहर्तुः कुरुते अशिवम् ॥

शब्दार्थ—

उपायम्	३. उपाय	यतः तम्	१०. जिससे हुआ है उसके पास
कथयिष्यामि	४. कहता हूँ	यातु वै	१३. जाइये निश्चित रूप से
तव	२. तुम	भवान्	१२. आप
विप्र	१. हे विप्र	साधुषु	१४. साधु के प्रति
शृणुष्व	६. सुनो	प्रहितम्	१५. भेजा गया
तत्	५ वह	तेजः	१६. तेज
अयम्	७. यह	प्रहर्तुः	१७. प्रहार करने वाले का ही
हि आत्म	८. आप का	कुरुते	१९. करता है
अभिचारः ते	९. अनिष्ट	अशिवम् ॥	१८. अमङ्गल

श्लोकार्थ— हे विप्र ! तुमसे उपाय कहता हूँ । वह सुनो । यह आपका अनिष्ट जिससे हुआ है निश्चित ही आप उसके पास जाइये । साधुओं के प्रति भेजा गया तेज प्रहार करने वालों का ही अमङ्गल करता है ॥

सप्ततितमः श्लोकः

तपो विद्या च विप्राणां निःश्रेयसकरे उभे ।
ते एव दुर्विनीतस्य कल्पेते कर्तुरन्यथा ॥७०॥

पदच्छेद— तपः विद्या च विप्राणाम् निःश्रेयस करे उभे ।
ते एव दुर्विनीतस्य कल्पेते कर्तुः अन्यथा ॥

शब्दार्थ—

तपः	१. तपस्या	ते	८. वे
विद्या	३. विद्या	एव	९. ही दोनों
च	२. और	दुर्विनीतस्य	१०. उद्दण्ड
विप्राणाम्	५. ब्राह्मणों का	कल्पेते	१३. फल देती हैं
निःश्रेयस	६. कल्याण	कर्तुः	११. कर्ता को
करे	७. करने वाली है	अन्यथा ॥	१२. विपरीत
उभे ।	४. दोनों		

श्लोकार्थ— तपस्या और विद्या दोनों ब्राह्मणों का कल्याण करने वाली है । वे ही दोनों उद्दण्ड कर्ता को विपरीत फल देती हैं ॥

एकसप्ततितमः श्लोक

ब्रह्मंस्तद् गच्छ भद्रं ते नाभागतनयं नृपम् ।
क्षमापय महाभागं ततः शान्तिर्भविष्यति ॥७१॥

पदच्छेद— ब्रह्मन् तत् गच्छ भद्रम् ते नाभाग तनयम् नृपम् ।
क्षमापय महाभागम् ततः शान्तिः भविष्यति ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मन्	१.	हे ब्रह्मन् !	नृपम् ।	८.	राजा अम्बरीष से
तत्	२.	इसलिये तुम	क्षमापय	९.	क्षमा मांगो
गच्छ	३.	जाओ	महाभागम्	५.	महान् भाग्यशाली
भद्रम्	५.	कल्याण हो	ततः	१०.	उससे तुम्हें
ते	४.	तुम्हारा	शान्तिः	११.	शान्ति
नाभाग	६.	नाभाग के	भविष्यति	१२.	प्राप्त होगी
तनयम् ॥	७.	पुत्र			

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! इसलिये तुम जाओ । तुम्हारा कल्याण हो । महाभाग्यशाली नाभाग के पुत्र राजा अम्बरीष से क्षमा मांगो । उससे तुम्हें शान्ति प्राप्त होगी ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्ध
अम्बरीषचरिते चतुर्थः अध्यायः ॥४॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

पञ्चमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं भगवताऽऽदिष्टो दुर्वासाश्चक्रतापितः ।
अम्बरीषमुपावृत्य तत्पादौ दुःखितोऽग्रहीत् ॥१॥

पदच्छेद— एवम् भगवता आदिष्टः दुर्वासाः चक्र तापितः ।
अम्बरीषम् उपावृत्य तत् पादौ दुःखितः अग्रहीत् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	अम्बरीषम्	७.	राजा अम्बरीष के
भगवता	२.	भगवान् के	उपावृत्य	८.	पास आकर
आदिष्टः	३.	आदेश देने पर	तत्	१०.	उनके
दुर्वासाः	६.	दुर्वासा ऋषि ने	पादौ	११.	पैरों को
चक्र	४.	चक्र से	दुःखितः	९.	दुःखी होकर
तापितः ।	५.	तपाये गये	अग्रहीत् ॥	१२.	पकड़ लिया

श्लोकार्थ—इस प्रकार भगवान् के आदेश देने पर चक्र से तपाये गये दुर्वासा ऋषि ने राजा अम्बरीष के पास जाकर दुःखी होकर उनके पैरों को पकड़ लिया ॥

द्वितीयः श्लोकः

तस्य सोद्यमनं वीक्ष्य पादस्पर्शविलज्जितः ।
अस्तावीत् तद्धरेरस्त्रं कृपया पीडितो भृशम् ॥२॥

पदच्छेद— तस्य सः उद्यमनम् वीक्ष्य पाद स्पर्श विलज्जितः ।
अस्तावीत् तत् हरेः अस्त्रम् कृपया पीडितः भृशम् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उनकी	अस्तावीत्	११.	स्तुति करने लगे (तथा)
सः	७.	वे	तत्	८.	उस
उद्यमनम्	२.	चेष्टा	हरेः	९.	भगवान् के
वीक्ष्य	३.	देख कर (और)	अस्त्रम्	१०.	अस्त्र को
पाद	४.	पैर	कृपया	१२.	दयावश
स्पर्श	५.	पकड़ने से	पीडितः	१४.	दुःखी (हो रहे थे)
विलज्जितः ।	६.	लज्जित होकर	भृशम् ॥	१३.	अत्यन्त

श्लोकार्थ—उनकी चेष्टा देख कर और पैर पकड़ने से लज्जित होकर वे राजा अम्बरीष उस भगवान् के अस्त्र की स्तुति करने लगे तथा दयावश अत्यन्त दुःखी हो रहे थे ॥

तृतीयः श्लोकः

अम्बरीष उवाच—त्वमग्निर्भगवान् सूर्यस्त्वं सोमो ज्योतिषां पतिः ।
त्वमापस्त्वं क्षितिर्व्योम वायुर्मात्रेन्द्रियाणि च ॥३॥

पदच्छेद— त्वम् अग्निः भगवान् सूर्यः त्वम् सोमः ज्योतिषाम् पतिः ।
त्वम् आपः त्वम् क्षितिः व्योम वायुः मात्रा इन्द्रियाणि च ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	१.	आप	त्वम्	९.	आप
अग्निः	२.	अग्नि	आपः	१०.	जल
भगवान्	३.	भगवान्	त्वम् क्षितिः	११.	आप पृथ्वी
सूर्यः	४.	सूर्य	व्योम	१२.	आकाश
त्वम्	५.	आप	वायुः	१३.	वायु
सोमः	८.	चन्द्रमा	मात्रा	१४.	एवं तन्मात्रा
ज्योतिषाम्	६.	नक्षत्र मण्डल के	इन्द्रियाणि	१६.	इन्द्रियाँ हैं
पतिः ।	७.	स्वामी	च ॥	१५.	और

श्लोकार्थ—आप अग्नि, भगवान् सूर्य, आप नक्षत्र मण्डल के स्वामी चन्द्रमा, आप जल, आप पृथ्वी, आकाश, वायु एवम् तन्मात्रा और इन्द्रियाँ हैं ॥

चतुर्थः श्लोकः

सुदर्शन नमस्तुभ्यं सहस्राराच्युतप्रिय ।
सर्वास्त्रघातिन् विप्राय स्वस्ति भूया इडस्पते ॥४॥

पदच्छेद— सुदर्शन नमः तुभ्यम् सहस्र अरः अच्युत प्रिय ।
सर्व अस्त्र घातिन् विप्राय स्वस्ति भूयाः इडस्पते ॥

शब्दार्थ—

सुदर्शन	१.	हे सुदर्शन चक्र !	अस्त्र	७.	अस्त्रों को
नमः तुभ्यम्	२.	नमस्कार है आपको	घातिन्	८.	नष्ट करने वाले
सहस्र अर	३.	हजार अरों वाले	विप्राय	१०.	विप्र का
अच्युत	४.	हे भगवान् के	स्वस्ति	११.	कल्याण
प्रिय ।	५.	प्रिय	भूयाः	१२	कीजिये
सर्व	६.	सब	इडस्पते ॥	९.	हे पृथ्वी के रक्षक !

श्लोकार्थ—हे सुदर्शन चक्र ! आपको नमस्कार है । हे हजार अरों वाले ! हे भगवान् के प्रिय ! सब अस्त्रों को नष्ट करने वाले ! हे पृथ्वी के रक्षक ! विप्र का कल्याण कीजिये ॥

पञ्चम श्लोकः

त्वं धर्मस्त्वमृतं सत्यं त्वं यज्ञोऽखिलयज्ञभुक् ।
त्वं लोकपालः सर्वात्मा त्वं तेजः पौरुषं परम् ॥५॥

पदच्छेद— त्वम् धर्मः त्वम् ऋतम् सत्यम् त्वम् यज्ञः अखिल यज्ञ भुक् ।
त्वम् लोकपालः सर्व आत्मा त्वम् तेजः पौरुषम् परम् ॥

शब्दार्थ—

त्वम् धर्मः	१.	आप धर्म	त्वम्	९.	आप
त्वम्	२.	आप	लोकपालः	१०.	लोकपाल
ऋतम्	३.	मधुर	सर्व	१२.	सब की
सत्यम्	४.	सत्य	आत्मा	१३.	आत्मा (और)
त्वम्	५.	आप	त्वम्	११.	आप
यज्ञः	६.	यज्ञ	तेजः	१६.	तेज हैं
अखिल	७.	समस्त	पौरुषम्	१४.	परमात्मा के
यज्ञभुक् ।	८.	यज्ञों के भोक्ता हैं	परम् ॥	१५.	श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—आप धर्म, आप मधुर सत्य, आप यज्ञ, आप समस्त यज्ञों के भोक्ता हैं । आप लोक-पाल, आप सब की आत्मा और परमात्मा के श्रेष्ठ तेज हैं ॥

षष्ठः श्लोकः

नमः सुनाभाखिलधर्मसेतवे ह्यधर्मशीलासुरधूमकेतवे ।
त्रैलोक्यगोपाय विशुद्धवर्चसे मनोजवायाद्भुतकर्मणे गृणे ॥६॥

पदच्छेद— नमः सुनाभ अखिल धर्म सेतवे हि अधर्मशील असुरधूमकेतवे ।
त्रैलोक्य गोपाय विशुद्ध वर्चसे मनोजवाय अद्भुत कर्मणे गृणे ॥

शब्दार्थ—

नमः	१९.	नमस्कार करता हूँ	केतवे ।	९.	स्वरूप
सुनाभ	१.	सुन्दर अरों वाले	त्रैलोक्य	१०.	तीनों लोक को
अखिल	२.	समस्त	गोपाय	११.	रक्षा के लिये
धर्म	३.	धर्मों के	विशुद्ध	१२.	शुद्ध
सेतवे	४.	रक्षक	वर्चसे	१३.	तेज वाले
हि अधर्म	५.	अधर्म	मनोजवाय	१४.	मन के समान वेग वाले
शीलः	६	स्वभाव वाले	अद्भुत	१५.	और अद्भुत
असुर	७.	असुरों के लिये	कर्मणे	१६.	कर्म करने वाले की
धूम	८.	अग्नि	गृणे ॥	१८.	मैं स्तुति करता हूँ और

श्लोकार्थ—सुन्दर अरों वाले, समस्त धर्मों के रक्षक, अधर्म स्वभाव वाले असुरों के लिए अग्नि स्वरूप, तीनों लोक की रक्षा के लिये शुद्ध तेज वाले, मन के समान वेग वाले और अद्भुत कर्म करने वाले की मैं स्तुति करता हूँ और नमस्कार करता हूँ ॥

सप्तमः श्लोकः

त्वत्तेजसा धर्ममयेन संहृतं तमः प्रकाशश्च धृतो महात्मनाम् ।
दुरत्ययस्ते महिमा गिरां पते त्वद्रूपमेतत् सदसत् परावरम् ॥७॥

पदच्छेद— त्वत् तेजसा धर्म मयेन संहृतम् तमः प्रकाशः च धृतः महात्मनाम् ।
दुरत्ययः ते महिमा गिराम् पते त्वत् रूपम् एतत् सत् असत् परावरम् ॥

शब्दार्थ—

त्वत्	२.	आपके	दुरत्ययः	१३.	अपरम्पार है
तेजसा	५.	तेज से	ते	११.	आप की
धर्म	३.	धर्म	महिमा	१२.	महिमा
मयेन	४.	मय	गिराम्पते	१.	हे वेदवाणी के पति !
संहृतम्	७.	संहार होता है (और)	त्वत्	१४.	आपका
तमः	६.	अन्धकार का	रूपम्	१६.	रूप
प्रकाशः च	९.	प्रकाश की	एतत्	१५.	यह
धृतः	१०	रक्षा (होती है)	सत् असत्	१७	कार्य-करणात्मक और
महात्मनाम् ।	८.	महापुरुषों के	परावरम् ॥	१८.	छोटे-बड़े के भेद भाव से रहित है

श्लोकार्थ—हे वेदवाणी के पति ! आप के धर्म मय तेज से अन्धकार का संहार होता है । और महापुरुषों के प्रकाश की रक्षा होती है । आपकी महिमा अपरम्पार है । आपका यह रूप कार्य कारणात्मक और छोटे-बड़े के भेद भाव से रहित है ॥

अष्टमः श्लोकः

यदा विसृष्टस्त्वमनञ्जनेन वै बलं प्रविष्टोऽजित दैत्यदानवम् ।
बाहूदरोर्वङ्घ्रिशिरोधराणि वृश्चन्नजस्रं प्रधने विराजसे ॥८॥

पदच्छेद— यदा विसृष्टः त्वम् अञ्जनेन वै बलं प्रविष्टः अजित दैत्य दानवम् ।
बाहु उदर ऊरु अङ्घ्रि शिरोधराणि वृश्चन् अजस्रम् प्रधने विराजसे ॥

शब्दार्थ—

यदा	२.	जब युद्ध में	दानवम्	८.	दानवों की
विसृष्टः	५.	छोड़े जाते हैं (तब)	बाहु	११.	उनकी बाँह
त्वम्	४.	आप	उदर ऊरु	१२.	पेट जंघा
अञ्जनेन	३.	भगवान् के द्वारा	अङ्घ्रि	१३.	पैर
वै	६	निश्चित ही	शिरोधराणि	१४.	गर्दनों को
बलम्	९.	सेना में	वृश्चन्	१६.	काटते हुये
प्रविष्टः	१०.	प्रविष्ट होकर	अजस्रम्	१५.	निरन्तर
अजित	१.	अजेय !	प्रधने	१७.	युद्ध में
दैत्य ।	७.	दैत्य और	विराजसे ॥	१८.	शोभायमान होते हैं

श्लोकार्थ—हे अजेय ! जब युद्ध में भगवान् के द्वारा आप छोड़े जाते हैं तब निश्चित ही दैत्य और दानवों की सेना में प्रविष्ट होकर उनकी बाँह, पेट, जंघा, पैर और गरदनों को निरन्तर काटते हुए युद्ध में शोभायमान होते हैं ॥

नवमः श्लोकः

स त्वं जगत्त्राण खलप्रहाणये निरूपितः सर्वसहो गदाभृता ।
विप्रस्य चास्मत्कुलदैवहेतवे विधेहि भद्रं तदनुग्रहो हि नः ॥९॥

पदच्छेद— सः त्वम् जगत् त्राण खल प्रहाणये निरूपितः सर्व सहः गदा भृता ।
विप्रस्य च अस्मत् कुल दैव हेतवे विधेहि भद्रम् तत् अनुग्रहः हि नः ॥

शब्दार्थ—

सः	५.	वे	विप्रस्य	१५.	ब्राह्मण दुर्वासा का
त्वम्	६	आप	च	११.	और
जगत्	१.	हे संसार के	अस्मत्	१२.	हमारे
त्राण	२.	रक्षक	कुल	१३.	वंश के
खल	७.	दुष्टों का	दैवहेतवे	१४.	भाग्योदय के लिये
प्रहाणये	८.	संहार करने के लिये	विधेहि	१७.	कीजिये
निरूपितः	१०.	नियुक्त किये गये हैं	भद्रम्	१६.	कल्याण
सर्व	३.	सब कुछ	तत्	१८.	यही
सहः	४.	सहने वाले	अनुग्रह	२०.	कृपा होगी
गदाभृता ।	९.	भगवान् के द्वारा	हि नः ॥	१९.	हमारे ऊपर आपकी

श्लोकार्थ—हे संसार के रक्षक ! सब कुछ सहने वाले वे आप दुष्टों का संहार करने के लिये भगवान् के द्वारा नियुक्त किये गये हैं। और हमारे वंश के भाग्योदय के लिये ब्राह्मण दुर्वासा का कल्याण कीजिये। यही हमारे ऊपर आपकी कृपा होगी ॥

दशमः श्लोकः

यद्यस्ति दत्तमिष्टं वा स्वधर्मो वा स्वनुष्ठितः ।
कुलं नो विप्रदैवं चेद् द्विजो भवतु विज्वरः ॥१०॥

पदच्छेद— यदि अस्ति दत्तम् इष्टम् वा स्वधर्मः वा सु अनुष्ठितः ।
कुलम् नः विप्र दैवम् चेत् द्विजः भवतु विज्वरः ॥

शब्दार्थ—

यदि	१.	यदि (मैंने)	कुलम्	११.	वंश
अस्ति	३.	है	नः	१०.	हमारा
दत्तम्	२.	दान दिया	विप्र	१२.	ब्राह्मण को
इष्टम्	५.	यज्ञ किया है	दैवम्	१३.	देवता समझता है
वा	४.	अथवा	चेत्	१४.	तो
स्वधर्मः	७.	अपने धर्म का	द्विजः	१५.	ब्राह्मण
वा	६.	अथवा	भवतु	१७.	हो जाय
सु	८.	सुन्दर रीति से	विज्वरः ॥	१६.	सन्ताप से रहित
अनुष्ठितः ।	९.	अनुष्ठान किया है (और)			

श्लोकार्थ—यदि मैंने दान दिया है अथवा यज्ञ किया है, अथवा अपने धर्म का सुन्दर रीति से अनुष्ठान किया है। और हमारा वंश ब्राह्मण को देवता समझता है। तो ब्राह्मण सन्ताप से रहित हो जाय ॥

एकादशः श्लोकः

यदि नो भगवान् प्रीत एकः सर्वगुणाश्रयः ।
सर्वभूतात्मभावेन द्विजो भवतु विज्वरः ॥११॥

पदच्छेद— यदि नः भगवान् प्रीतः एकः सर्वगुण आश्रयः ।
सर्वभूत आत्म भावेन द्विजः भवतु विज्वरः ॥

शब्दार्थ—

यदि	५. यदि	सर्वभूत	८. सभी प्राणियों को
नः	६. हम पर	आत्म	९. आत्म
भगवान्	४. भगवान्	भावेन	१०. भाव से (देखा है तो)
प्रीतः	७. प्रसन्न हैं (और मैंने)	द्विजः	११. ब्राह्मण
एकः	२. एक मात्र	भवतु	१३ हो जाय
सर्वगुण	१. समस्त गुणों के	विज्वरः ॥	१२. संताप से रहित
आश्रयः ।	३. आश्रय		

श्लोकार्थ—समस्त गुणों के एकमात्र आश्रय भगवान् यदि हम पर प्रसन्न हैं और मैंने सभी प्राणियों को आत्मभाव से देखा है तो ब्राह्मण सन्ताप से रहित हो जाय ॥

द्वादशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इति संस्तुवतो राज्ञो विष्णुचक्रं सुदर्शनम् ।
अशाम्यत् सर्वतो विप्रं प्रदहद् राजयाच्ञया ॥१२॥

पदच्छेद— इति संस्तुवतः राज्ञः विष्णु चक्रम् सुदर्शनम् ।
अशाम्यत् सर्वतः विप्रम् प्रदहत् राजयाच्ञया ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	अशाम्यत्	११. शान्त हो गया
संस्तुवतः	३. स्तुति करने पर	सर्वतः	५. चारों ओर से
राज्ञः	२. राजा के	विप्रम्	४. ब्राह्मण को
विष्णु	७. विष्णु भगवान् का	प्रदहत्	६. जलाने वाला वह
चक्रम्	९. चक्र	राजयाच्ञया ॥	१०. राजा की प्रार्थना से
सुदर्शनम् ।	८. सुदर्शन		

श्लोकार्थ—इस प्रकार राजा के स्तुति करने पर ब्राह्मण को चारों ओर से जलाने वाला वह विष्णु भगवान् का सुदर्शन चक्र राजा की प्रार्थना से शान्त हो गया ॥

त्रयोदशः श्लोकः

स मुक्तोऽस्त्राग्नितापेन दुर्वासाः स्वस्तिमांस्ततः ।
प्रशशंस तमुर्वीशं युञ्जानः परमाशिषः ॥१३॥

पदच्छेद— सः मुक्तः अस्त्र अग्नि तापेन दुर्वासाः स्वस्ति मान् ततः ।
प्रशशंस तम् उर्वीशम् युञ्जानः परम आशिषः ॥

शब्दार्थ—

सः	४.	वे	ततः ।	८.	तब
मुक्तः	६.	मुक्त होकर	प्रशशंस	१४.	प्रशंसा करने लगे
अस्त्र	१.	अस्त्र की	तम्	९.	उस
अग्नि	२.	अग्नि के	उर्वीशम्	१०.	राजा अम्बरीष को
तापेन	३.	ताप से	युञ्जानः	१३.	देते हुए
दुर्वासा	५.	दुर्वासा ऋषि	परम	११.	उत्तम
स्वस्तिमान्	७.	स्वस्थचित्त	आशिषः ॥	१२.	आशीर्वाद

श्लोकार्थ— अस्त्र की अग्नि के ताप से दुर्वासा ऋषि स्वस्थ चित्त हो गये । तब उस राजा अम्बरीष को उत्तम आशीर्वाद देते हुये प्रशंसा करने लगे ॥

चतुर्दशः श्लोकः

दुर्वासा उवाच— अहो अनन्तदासानां महत्त्वं दृष्टमद्य मे ।
कृतागसोऽपि यद् राजन् मङ्गलानि समीहसे ॥१४॥

पदच्छेद— अहो अनन्त दासानाम् महत्त्वम् दृष्टम् अद्य मे ।
कृत आगसः अपि यत् राजन् मङ्गलानि समीहसे ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	आश्चर्य है कि	कृत	१०.	करने पर
अनन्त	२.	भगवान् के	आगसः	९.	अपराध के
दासानाम्	३.	दासों का	अपि	११.	भी मेरी
महत्त्वम्	४.	महत्त्व	यत्	७.	जो
दृष्टम्	७.	देखा	राजन्	८.	हे राजन् !
अद्य	५.	आज	मङ्गलानि	१२.	मङ्गल कामना
मे ।	६.	मैंने	समीहसे ॥	१३.	कर रहे हैं ।

श्लोकार्थ—आश्चर्य है कि भगवान् के दासों का महत्त्व आज मैंने देखा ! जो हे राजन् ! अपराध करने पर भी मेरी मङ्गल कामना कर रहे हैं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

दुष्करः को नु साधूनां दुस्त्यजो वा महात्मनाम् ।
यैः संगृहीतो भगवान् सात्वतामृषभो हरिः ॥१५॥

पदच्छेद— दुष्करः कः नु साधूनाम् दुस्त्यजः वा महात्मनाम् ।
यैः संगृहीतः भगवान् सात्वताम् ऋषभः हरिः ॥

शब्दार्थः—

दुष्करः	९. कठिन है	यैः	१. जिन्होंने
कः नुः	८. क्या	संगृहीतः	६. पकड़ लिया है (उन)
साधूनाम्	७. साधुओं के लिये	भगवान्	४. भगवान्
दुस्त्यजः	१२. कौन सी वस्तु त्यागने योग्य नहीं है	सात्वताम्	२. भक्त वत्सलों में
वा	१०. अथवा	ऋषभः	३. श्रेष्ठ
महात्मनाम् ।	११. उन महात्माओं के लिये	हरिः ॥	५. श्री हरि के चरणों को

श्लोकार्थ—जिन्होंने भक्त वत्सलों में श्रेष्ठ भगवान् श्री हरि के चरणों को पकड़ लिया है, उन साधुओं के लिये क्या कठिन है । अथवा महात्माओं के लिये कौन सी वस्तु त्यागने योग्य नहीं है ॥

षोडशः श्लोकः

यन्नामश्रुतिमात्रेण पुमान् भवति निर्मलः ।
तस्य तीर्थपदः किं वा दासानामवशिष्यते ॥१६॥

पदच्छेद— यत् नाम श्रुति मात्रेण पुमान् भवति निर्मलः ।
तस्य तीर्थ पदः किं वा दासानाम् अवशिष्यते ॥

शब्दार्थ—

यत्	१. जिनके	निर्मलः ।	६. निर्मल
नाम	२. नामों के	तस्य	८. उन
श्रुति	३. श्रवण	तीर्थपदः	९. भगवान् के
मात्रेण	४. मात्र से	किं वा	११. कौन सा
पुमान्	५. मनुष्य	दासानाम्	१०. दासों के लिये
भवति	७. हो जाता है ।	अवशिष्यते ॥	१२. कर्तव्य शेष रह जाता है

श्लोकार्थ—जिनके नामों के श्रवण मात्र से मनुष्य निर्मल हो जाता है, उन भगवान् के दासों के लिये कौन सा कर्तव्य शेष रह जाता है ॥

सप्तदशः श्लोकः

राजन्ननुगृहीतोऽहं त्वयातिकरुणात्मना ।
मदघं पृष्ठतः कृत्वा प्राणा यन्मेऽभिरक्षिताः ॥१७॥

पदच्छेद— राजन् अनुगृहीतः अहम् त्वया अतिकरुण आत्मना ।
मत् अघम् पृष्ठतः कृत्वा प्राणाः यत् मे अभिरक्षिताः ॥

शब्दार्थ—

राजन्	१. हे राजन् !	यत्	७. जो मेरे
अनुगृहीतः	६. कृपा की है (और)	अघम्	८. अपराध को
अहम्	५. मुझ पर	पृष्ठतः	९. भुला
त्वया	४. आपने	कृत्वा	१०. करके
अतिकरुण	२. करुण भाव से	प्राणाः	१२. प्राणों की
आत्मना ।	३. पूर्ण हृदय वाले	मे	११. मेरे
		अभिरक्षिताः ॥	१३. रक्षा की है

श्लोकार्थ—हे राजन् ! करुण भाव से पूर्ण हृदय वाले आपने मुझ पर कृपा की है । जो मेरे अपराध को भुला कर मेरे प्राणों की रक्षा की है ॥

अष्टादशः श्लोकः

राजा तमकृताहारः प्रत्यागमनकाङ्क्षया ।
चरणावुपसंगृह्य प्रसाद्य समभोजयत् ॥१८॥

पदच्छेद— राजा तम् अकृत आहारः प्रति आगमन काङ्क्षया ।
चरणौ उपसंगृह्य प्रसाद्य समभोजयत् ॥

शब्दार्थ—

राजा	६. राजा ने	काङ्क्षया ।	३. आकांक्षा से
तम्	१. उन मुनि के	चरणौ	८. चरण
अकृत	४. बिना	उपसंगृह्य	९. पकड़ कर और उनको
अहारः	५. भोजन किये	प्रसाद्य	१०. प्रसन्न करके
प्रति	७. उनके	समभोजयत् ॥	११. भली भाँति भोजन कराया
आगमन ।	२. लौटने की		

श्लोकार्थ—उन मुनि के लौटने की आकांक्षा से बिना भोजन किये राजा ने उनके चरण पकड़ कर और उनको प्रसन्न करके भली भाँति भोजन कराया ॥

एकोनविंश श्लोकः

सोऽशित्वाऽऽदृतमानीतमातिथ्यं सार्वकामिकम् ।

तृप्तात्मा नृपतिं प्राह भुज्यतामिति सादरम् ॥१९॥

पदच्छेद— सः अशित्वा आदृतम् आनीतम् आतिथ्यम् सार्व कामिकम् ।
तृप्त आत्मा नृपतिम् प्राह भुज्यताम् इति सादरम् ॥

शब्दार्थ—

सः	७.	वे दुर्वासा ऋषि	तृप्त	८.	तृप्त
अशित्वा	६.	खा करके	आत्मा	९.	आत्मा हो गये (और)
आदृतम्	२.	आदर पूर्वक	नृपतिम्	१०.	राजा से
आनीतम्	४.	आयी हुई	प्राह	१४.	कहा
आतिथ्यम्	१	आतिथ्य के योग्य	भुज्यताम्	११.	भोजन कीजिये
सार्व	३.	सर्व प्रकार की	इति	१२.	ऐसा
कामिकम् ।	५.	भोजन सामग्री को	सादरम् ॥	१३.	आदर के साथ

श्लोकार्थ—अतिथि के योग्य, आदर पूर्वक, सब प्रकार की आई हुई भोजन सामग्री को खा कर वे दुर्वासा ऋषि तृप्तात्मा हो गये। और राजा से भोजन कीजिये ऐसा आदर के साथ कहा ॥

विंशः श्लोकः

प्रीतोऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि तव भागवतस्य वै ।

दर्शनस्पर्शनालापैरातिथ्येनात्ममेधसा ॥२०॥

पदच्छेद— प्रीतः अस्मि अनुगृहीतः अस्मि तव भागवतस्य वै ।
दर्शन स्पर्शन आलापः आतिथ्येन आत्म मेधसा ॥

शब्दार्थ—

प्रीतः	८.	मैं प्रसन्न	दर्शन	३.	दर्शन
अस्मि	९.	हूँ और	स्पर्शन	४.	स्पर्श
अनुगृहीतः	१०.	अनुगृहीत	आलापैः	५.	बात चीत (और)
अस्मि	११	हो गया हूँ	आतिथ्येन	७.	अतिथि सत्कार से
तव	२.	आप के	आत्म	६.	मन को
भागवतस्य वै ।	१.	हे राजन् ! भगवद्भक्त	मेधसा ॥	७.	भगवान् की ओर लगाने वाला

श्लोकार्थ—हे राजन् ! भगवद्भक्त आपके दर्शन, स्पर्श बात चीत और आतिथ्य सत्कार से मन को भगवान् की ओर लगाने वाला मैं प्रसन्न हूँ और अनुगृहीत हो गया हूँ ॥

एकविंशः श्लोकः

कर्मावदातमेतत् ते गायन्ति स्वः स्त्रियो मुहुः ।
कीर्तिं परमपुण्यां च कीर्तयिष्यति भूरियम् ॥२१॥

पदच्छेद— कर्म अवदातम् एतत् ते गायन्ति स्वः स्त्रियः मुहुः ।
कीर्तिम् परम् पुण्याम् च कीर्तयिष्यति भूः इयम् ॥

शब्दार्थ—

कर्म	४.	चरित्र का	मुहुः	७.	बार-बार
अवदातम्	३.	उज्ज्वल	कीर्तिम्	१३.	कीर्ति का
एतत्	२.	इस	परम	११.	परम
ते	१.	आपके	पुण्याम्	१२.	पवित्र
गायन्ति	८.	गान करेंगी	च	९.	और
स्वः	५.	स्वर्ग की	कीर्तयिष्यति	१४.	कीर्तन करेगी
स्त्रियः ।	६.	अप्सरायें	भूः इयम् ॥	१०.	यह पृथ्वी (आपकी)

श्लोकार्थ—आपके इस उज्ज्वल चरित्र का स्वर्ग की अप्सरायें बार-बार गान करेंगी और यह पृथ्वी आप की परम पवित्र कीर्ति का कीर्तन करेगी ॥

द्वाविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— एवं संकीर्त्य राजानं दुर्वासाः परितोषितः ।
ययौ विहायसाऽऽमन्त्र्य ब्रह्मलोकमहैतुकम् ॥२२॥

पदच्छेद— एवम् संकीर्त्य राजानं दुर्वासाः परितोषितः ।
ययौ विहायसा आमन्त्र्य ब्रह्म लोकम् अहैतुकम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	ययौ	१०.	चले गये
संकीर्त्य	४.	प्रशंसा करके (और)	विहायसा	७.	आकाश मार्ग से
राजानम्	३.	राजा की	आमन्त्र्य	६.	विदा लेकर
दुर्वासाः	२.	दुर्वासा ऋषि	ब्रह्मलोकम्	९.	ब्रह्मलोक को
परितोषितः ।	५.	सन्तुष्ट होकर तथा	अहैतुकम् ॥	८.	निष्काम कर्म से प्राप्त होने वाले

श्लोकार्थ—इस प्रकार दुर्वासा ऋषि जी राजा की प्रशंसा करके और सन्तुष्ट होकर तथा विदा लेकर आकाश मार्ग से निष्काम कर्म से प्राप्त होने वाले ब्रह्मलोक को चले गये ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

संवत्सरोऽत्यगात् तावद् यावता नागतो गतः ।
मुनिस्तद्दर्शनाकाङ्क्षो राजाऽब्भक्षो बभूव ह ॥

पदच्छेद— संवत्सरः अत्यगात् तावत् यावता न आगतः गतः ।
मुनिः तत् दर्शन आकाङ्क्षः राजा अब्भक्षः बभूव ह ॥

शब्दार्थ—

संवत्सरः	६. एक वर्ष	मुनिः	२. मुनि
अत्यगात्	७. बीत गया	तत्	८. उनके
तावत्	५. तब तक	दर्शन	९. दर्शन की
यावता	१. जब-तक	आकाङ्क्षा	१०. इच्छा रखने वाले
न आगतः	३. नहीं आये (और)	राजा	११. राजा (तब तक)
गतः ।	४. गये	अब्भक्षः बभूव ह ॥	१२. जल पीकर ही रहे

श्लोकार्थ—जब तक मुनि नहीं आये और गये तब तक एक वर्ष बीत गया । उनके दर्शन की इच्छा रखने वाले राजा तब तक जल पीकर ही रहे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

गते च दुर्वाससि सोऽम्बरीषो द्विजोपयोगातिपवित्रमाहरत् ।
ऋषेर्विमोक्षं व्यसनं च बुद्ध्वा मेने स्ववीर्यं च परानुभावम् ॥२४॥

पदच्छेद— गते च दुर्वाससि सः अम्बरीषः द्विज उपयोग अतिपवित्रम् आहरत् ।
ऋषेः विमोक्षम् व्यसनम् च बुद्ध्वा मेने स्ववीर्यम् च परानुभावम् ॥

शब्दार्थ—

गते	३. चले जाने पर	ऋषेः	१०. ऋषि के
च	१. और	विमोक्षम्	११. मुक्ति
दुर्वाससि	२ दुर्वासा के	व्यसनम्	१३. संकट
सः	४. उन राजा	च	१२. और
अम्बरीषः	५. अम्बरीष ने	बुद्ध्वा	१४. जान कर
द्विज	६. ब्राह्मण के	मेने	१८. समझा
उपयोग	७. भोजन से बचे	स्ववीर्यं च	१५. अपने पराक्रम को
अतिपवित्रम्	८. अति पवित्र भोजन	परानुभावम् ॥	१६. परमात्मा की महिमा
आहरत् ।	९. अन्न		

श्लोकार्थ—और दुर्वासा के चले जाने पर अम्बरीष ने ब्राह्मण के भोजन से बचे अति पवित्र अन्न का भोजन किया । ऋषि की मुक्ति और संकट को जान कर अपने पराक्रम को परमात्मा की महिमा समझा ॥

पञ्चविंश श्लोकः

एवंविधानेकगुणः स राजा परात्मनि ब्रह्मणि वासुदेवे ।
क्रियाकलापैः समुवाह भक्तिं ययाऽऽविरिञ्च्यान् निरयांश्चकार ॥२५॥

पदच्छेद—एवम् विध अनेक गुणः सः राजा परात्मनि ब्रह्मणि वासुदेवे ।
क्रियाकलापैः सम् उवाह भक्तिम् यया आविरिञ्च्यान् निरयान् चकार ॥

शब्दार्थ—

एवम् विध	१. इस प्रकार के	क्रिया	९. कर्म
अनेक	२. अनेक	कलापैः	१०. समूहों से
गुणः	३. गुणों से युक्त	सम उवाह	१२. बढ़ाया
सः	४. उस	भक्तिम्	११. भक्ति को
राजा	५. राजा ने	यया	१३. जिसके प्रभाव से वे
परात्मनि	७. परमात्मा	आविरिञ्च्यान्	१४. ब्रह्मलोक तक के भोगों को
ब्रह्मणि	६. पर ब्रह्म	निरयान्	१५. नरक के समान
वासुदेवे ।	८ भगवान् श्रीकृष्ण में	चकार ॥	१६. समझने लगे

श्लोकार्थ—इस प्रकार अनेक गुणों से युक्त उस राजा ने पर ब्रह्म परमात्मा भगवान् श्रीकृष्ण में कर्म समूहों से भक्ति को बढ़ाया । जिसके प्रभाव से वे ब्रह्म लोक तक के भोगों को नरक के समान समझने लगे ॥

षड्विंशः श्लोकः

अथाम्बरीषस्तनयेषु राज्यं समानशीलेषु विसृज्य धीरः ।
वनं विवेशात्मनि वासुदेवे मनो दधद् ध्वस्तगुणप्रवाहः ॥२६॥

पदच्छेद—　अथ अम्बरीषः तनयेषु राज्यम् समान शीलेषु विसृज्य धीरः ।
वनम् विवेश आत्मनि वासुदेवे मनः दधत् ध्वस्त गुण प्रवाहः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१. तदनन्तर	वनम्	९. वन में
अम्बरीषः	३. अम्बरीष	विवेश	१०. चले गये (और)
तनयेषु	६. पुत्रों पर	आत्मनि	११. आत्म स्वरूप
राज्यम्	७. राज्य का भार	वासुदेवे	१२. वासुदेव भगवान् में
समान	४. समान	मनः	१३. मन को
शीलेषु	५. स्वभाव वाले	दधत्	१४. लगाकर
विसृज्य	८. सौंप कर	ध्वस्त	१६. नष्ट कर दिया
धीरः ।	२. धीर	गुण प्रवाहः ॥	१५. गुणों के प्रभाव को

श्लोकार्थ—तदनन्तर धीर अम्बरीष समान स्वभाव वाले पुत्रों पर राज्य का भार सौंप कर वन में चले गये और आत्म स्वरूप वासुदेव भगवान् में मन को लगा कर गुणों के प्रभाव को नष्ट कर दिया ॥

सप्तविंशः श्लोकः

इत्येतत् पुण्यमाख्यानमम्बरीषस्य भूपतेः ।
संकीर्तयन्ननुध्यायन् भक्तो भगवतो भवेत् ॥२७॥

पदच्छेद— इति एतत् पुण्यम् आख्यानम् अम्बरीषस्य भूपतेः ।
संकीर्तनम् अनुध्यायन् भक्तः भगवतः भवेत् ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	संकीर्तनम्	७. कीर्तन तथा
एतत्	२. ये	अनुध्यायन्	८. ध्यान करने से मनुष्य
पुण्यम्	५. पवित्र	भक्तः	१०. भक्त
आख्यानम्	६. आख्यान	भगवतः	९. भगवान्
अम्बरीषस्य	४. अम्बरीष का	भवेत् ॥	११. हो जाता है
भूपतेः ।	३. राजा		

श्लोकार्थ—इस प्रकार से राजा अम्बरीष के पवित्र आख्यान का कीर्तन तथा ध्यान करने से मनुष्य भगवान् का भक्त हो जाता है ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे
अम्बरीष-चरित्रं नाम पञ्चमः अध्यायः ॥५॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

षष्ठः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच---विरूपः केतुमाञ्छम्भुरम्बरीषसुतास्त्रयः ।

विरूपात् पृषदश्वोऽभूत् तत्पुत्रस्तु रथीतरः ॥१॥

पदच्छेद— विरूपः केतुमान् शम्भुः अम्बरीष सुताः त्रयः ।
विरूपात् पृषदश्वः अभूत् तत् पुत्रस्तु रथीतरः ॥

शब्दार्थ—

विरूपः	४. विरूप	विरूपात्	७. विरूप से
केतुमान्	५. केतुमान्	पृषदश्वः	८. पृषदश्व और
शम्भुः	६. शम्भु थे	अभूत्	१२. हुआ
अम्बरीष	१. अम्बरीष के	तत्	९. उसका
सुताः	३. पुत्र	पुत्रस्तु	१०. पुत्र
त्रयः ।	२. तीन	रथीतरः ॥	११. रथीतर

श्लोकार्थ—राजा अम्बरीष के तीन पुत्र विरूप, केतुमान् और शम्भु थे । विरूप से पृषदश्व और उसका पुत्र रथीतर हुआ ॥

द्वितीयः श्लोकः

रथीतरस्याप्रजस्य भार्यायां तन्तवेऽर्थितः ।

अङ्गिरा जनयामास ब्रह्मवर्चस्विनः सुतान् ॥२॥

पदच्छेद— रथीतरस्य अप्रजस्य भार्यायाम् तन्तवे अर्थितः ।
अङ्गिराः जनयामास ब्रह्मवर्चस्विनः सुतान् ॥

शब्दार्थ—

रथीतरस्य	२. रथीतर की	अङ्गिराः	६. अङ्गिरा ने
अप्रजस्य	१. सन्तान हीन	जनयामास	९. उत्पन्न किया
भार्यायाम्	३. पत्नी में	ब्रह्मवर्चस्विनः	७ ब्रह्म तेज सम्पन्न
तन्तवे	४. वंश परम्परा चलाने के लिये	सुतान् ॥	८. पुत्रों को
अर्थितः ।	५. प्रार्थना किये जाने पर		

श्लोकार्थ—सन्तान हीन रथीतर की पत्नी में वंश परम्परा चलाने के लिये प्रार्थना किये जाने पर अङ्गिरा ने ब्रह्म तेज से सम्पन्न पुत्रों को उत्पन्न किया ॥

तृतीयः श्लोकः

एते क्षेत्रे प्रसूता वै पुनस्त्वाङ्गिरसाः स्मृताः ।
रथीतराणां प्रवराः क्षत्रोपेता द्विजातयः ॥३॥

पदच्छेद— एते क्षेत्रे प्रसूताः वै पुनः तु आङ्गिरसाः स्मृताः ।
रथीतराणाम् प्रवराः क्षत्र उपेताः द्विजातयः ॥

शब्दार्थ—

एते	५.	ये	स्मृताः	७.	गोत्र के कहलाये
क्षेत्रे	१.	रथीतर की भार्या से	रथीतराणाम्	८.	रथीतर वंशियों के
प्रसूताः	३.	उत्पन्न हुये थे	प्रवराः	९.	सर्वश्रेष्ठ पुरुष होने से
वै	१.	निश्चित ही	क्षत्र	१०.	ये क्षत्रोपेत
पुनःतु	४.	फिर भी	उपेताः	११.	ब्राह्मण क्षत्रिय
आङ्गिरसाः ।	६.	आङ्गिरस	द्विजातयः ॥	१२.	और ब्राह्मण दोनों कहलाये

श्लोकार्थ— निश्चित ही रथीतर की भार्या से उत्पन्न हुए थे । फिर भी आङ्गिरस गोत्र के कहलाये । रथीतर वंशियों के श्रेष्ठ पुरुष होने से ये क्षत्रोपेत ब्राह्मण (क्षत्रिय और ब्राह्मण दोनों) कहलाये ॥

चतुर्थः श्लोकः

क्षुवतस्तु मनोर्जज्ञे इक्ष्वाकुर्घ्राणतः सुतः ।
तस्य पुत्रशतज्येष्ठा विकुक्षिनिमिदण्डकाः ॥४॥

पदच्छेद— क्षुवतस्तु मनोः जज्ञे इक्ष्वाकुः घ्राणतः सुतः ।
तस्य पुत्र शत ज्येष्ठाः विकुक्षि निमि दण्डकाः ॥

शब्दार्थ—

क्षुवतस्तु	२.	छींकने पर (उनकी)	तस्य	७	उनके
मनोः	१.	मनु के	पुत्र	९.	पुत्रों में
जज्ञे	६.	उत्पन्न हुआ	शत	८.	सौ
इक्ष्वाकुः	४.	इक्ष्वाकु नामक	ज्येष्ठाः	१३.	ज्येष्ठ थे
घ्राणतः	३.	नासिका से	विकुक्षि	१०.	विकुक्षि
सुतः ।	५.	पुत्र	निमि	११.	निमि और
			दण्डकाः ॥	१२.	दण्ड

श्लोकार्थ— मनु के छींकने पर उनकी नासिका से इक्ष्वाकु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ । उसके सौ पुत्रों में विकुक्षि, निमि और दण्डक ज्येष्ठ थे ॥

पञ्चमः श्लोकः

तेषां पुरस्तादभवन्नार्यावर्ते नृपा नृप ।
पञ्चविंशतिः पश्चाच्च त्रयो मध्ये परेऽन्यतः ॥५॥

पदच्छेद— तेषाम् पुरस्तात् अभवन् आर्यावर्ते नृपाः नृप ।
पञ्चविंशतिः पश्चात् च त्रयः मध्ये परे अन्यतः ॥

शब्दार्थ—

तेषाम्	२. उनके पुत्र	पञ्चविंशतिः	५. पचीस और
पुरस्तात्	४. पूर्वभाग के	पश्चात् च	६. पश्चिम भाग के भीम पच्चीस तथा
अभवन्	१२. हुए	त्रयः	८. तीन
आर्यावर्ते	३. आर्यावर्त के	मध्ये	७. मध्य भाग के
नृपाः ।	११. राजा	परे	९. और शेष
नृप ।	१. हे राजा परीक्षित् !	अन्यतः ॥	१०. अन्य दिशाओं के

श्लोकार्थ—हे राजा परीक्षित् ! उनके पुत्र आर्यावर्त के पूर्वभाग के पच्चीस और पश्चिम भाग के भी पचीस तथा मध्य भाग के तीन और शेष अन्य दिशाओं के राजा हुए ॥

षष्ठः श्लोकः

स एकदाष्टकाश्राद्धे इक्ष्वाकुः सुतमादिशत् ।
मांसमानीयतां मेध्यं विकुक्षे गच्छ माचिरम् ॥६॥

पदच्छेद— सः एकदा अष्टका श्राद्धे इक्ष्वाकुः सुतम् आदिशत् ।
मांसम् आनीयताम् मेध्यम् विकुक्षे गच्छ मा चिरम् ॥

शब्दार्थ—

सः	४. उन	मांसम्	१२. मांस
एकदा	१. एक बार	आनीयताम्	१३. ले आओ
अष्टका	२. अष्टका	मेध्यम्	११. पवित्र
श्राद्धे	३. श्राद्ध के समय	विकुक्षे	८. हे विकुक्षे !
इक्ष्वाकुः	५. इक्ष्वाकु ने	गच्छ	१०. जाओ (और)
सुतम्	६. पुत्र को	मा चिरम् ॥	९. शीघ्र
आदिशत् ।	७. आदेश दिया कि		

श्लोकार्थ—एक बार अष्टका श्राद्ध के समय उन इक्ष्वाकु ने पुत्र को आदेश दिया कि हे विकुक्षे ! शीघ्र जाओ, और पवित्र मांस ले आओ ॥

सप्तमः श्लोकः

तथेति सवनं गत्वा मृगान् हत्वा क्रियार्हणान् ।
श्रान्तो बुभुक्षितो वीरः शशं चाददपस्मृतिः ॥७॥

पदच्छेद— तथा इति सः वनम् गत्वा मृगान् हत्वा क्रिया अर्हणान् ।
श्रान्तः बुभुक्षितः वीरः शशम् च आदत् अपस्मृतिः ॥

शब्दार्थ—

तथा	१. बहुत अच्छा	अर्हणान्	७. योग्य
इति	२. ऐसा कहकर	श्रान्तः	१०. थके
सः	३. उसने	बुभुक्षितः	१२. भूखे होने से
वनम्	४. वन में	वीरः	१३. वीर विकुक्षि ने
गत्वा	५. जाकर	शशम्	१५. एक खरगोश को
मृगान्	८. मृगों को	च	११. और
हत्वा	९. मारा	आदत्	१६. खा लिया
क्रिया।	६. श्राद्ध के	अपस्मृतिः ॥	१४. भूल से

श्लोकार्थ—बहुत अच्छा ऐसा कहकर उसने वन में जाकर श्राद्ध के योग्य मृगों को मारा। थके और भूखे होने से वीर विकुक्षि ने भूल से एक खरगोश को खा लिया।

अष्टमः श्लोकः

शेषं निवेदयामास पित्रे तेन च तद्गुरुः ।
चोदितः प्रोक्षणायाह दुष्टमेतदकर्मकम् ॥८॥

पदच्छेद— शेषं निवेदयामास पित्रे तेन च तत् गुरुः ।
चोदितः प्रोक्षणाय आह दुष्टम् एतत् अकर्मकम् ॥

शब्दार्थ—

शेषम्	२. बचा हुआ मांस	चोदितः	९. प्रेरित किया (तब गुरु ने)
निवेदयामास	४. दे दिया	प्रोक्षणाय	८. शुद्ध करने के लिये
पित्रे	३. पिता को	आह	१०. कहा
तेन	१. उसने	दुष्टम्	१२. दूषित (एवम्)
च	५. और	एतत्	११. यह मांस
तत्	६. उन्होंने	अकर्मकम् ॥	१३. श्राद्ध के अयोग्य है
गुरुः।	७. गुरु को		

श्लोकार्थ—उसने बचा हुआ मांस पिता को दे दिया उन्होंने शुद्ध करने के लिए गुरु को प्रेरित किया। तब गुरु ने कहा—यह मांस दूषित है श्राद्ध के अयोग्य है ॥

नवमः श्लोकः

ज्ञात्वा पुत्रस्य तत् कर्म गुरुणाभिहितं नृपः ।
देशान्निःसारयामास सुतं त्यक्तविधिं रुषा ॥९॥

पदच्छेद— ज्ञात्वा पुत्रस्य तत् कर्म गुरुणा अभिहितम् नृपाः ।
देशात् निः सारयामास सुतम् त्यक्तविधिम् रुषा ॥

शब्दार्थ—

ज्ञात्वा	७. जान कर	देशात्	१२. देश से
पुत्रस्य	४. पुत्र का	निःसारयामास	१३. निकाल दिया
तत्	५. वह	सुतम्	१०. पुत्र को
कर्म	६. कर्म	त्यक्त	९. उल्लंघन करने वाले
गुरुणा	१. गुरु के	विधिम्	८. विधि का
अभिहितम्	२. कहने पर	रुषा ॥	११. क्रोध के कारण
नृपाः ।	३. राजा ने		

श्लोकार्थ—गुरु के कहने पर राजा ने पुत्र का वह कर्म जान कर विधि का उल्लंघन करने वाले पुत्र को क्रोध के कारण देश से निकाल दिया ॥

दशमः श्लोकः

स तु विप्रेण संवादं जापकेन समाचरन् ।
त्यक्त्वा कलेवरं योगी स तेनावाप यत् परम् ॥१०॥

पदच्छेद— सः तु विप्रेण संवादम् जापकेन समाचरन् ।
त्यक्त्वा कलेवरम् योगी सः तेन अवाप यत् परम् ॥

शब्दार्थ—

सः	१. उस राजा इक्ष्वाकु	कलेवरम्	९. शरीर को
तु	२. ने	योगी	८. योगी राजा ने
विप्रेण	४. ब्राह्मण वशिष्ठ के साथ	सः	७. उस
संवादम्	५ योग विषय में बात	तेन	११. उपदेश के द्वारा
जापकेन	३. जप करने वाले	अवाप	१३. प्राप्त किया
समाचरन्	६. की और	यत्	१२. परमपद को
त्यक्त्वा ।	१०. छोड़ कर	परम् ॥	

श्लोकार्थ—उस राजा इक्ष्वाकु ने जप करने वाले ब्राह्मण वशिष्ठ के साथ योग विषय में बात की और उस योगी राजा ने शरीर छोड़ कर उपदेश के द्वारा परमपद को प्राप्त किया ॥

एकादशः श्लोकः

पितर्युपरतेऽभ्येत्य विकुक्षिः पृथिवीमिमाम् ।
शासदीजे हरिं यज्ञैः शशाद इति विश्रुतः ॥११॥

पदच्छेद— पितरि उपरते अभ्येत्य विकुक्षिः पृथिवीम् इमाम् ।
शासत् ईजे हरिम् यज्ञैः शशाद इति विश्रुतः ॥

शब्दार्थ—

पितरि	१. पिता के	**शासत्**	७. शासन करने लगा
उपरते	२. मर जाने पर	**ईजे**	१०. आराधना की
अभ्येत्य	४. लौट (आया और)	**हरिम्**	९. भगवान् हरि की
विकुक्षिः	३. विकुक्षि	**यज्ञैः**	८. उसने यज्ञों के द्वारा
पृथिवीम्	६. पृथ्वी का	**शशाद**	११. और शशाद (खरगोश खाने वाला)
इमाम् ।	५. इस	**इति**	१२. इस नाम से
		विश्रुतः ॥	१३. प्रसिद्ध हो गया

श्लोकार्थ— पिता के मर जाने पर विकुक्षि लौट आया और इस पृथ्वी का शासन करने लगा । उसने यज्ञों के द्वारा भगवान् हरि की आराधना की और शशाद (खरगोश खाने वाला) इस नाम से प्रसिद्ध हो गया ॥

द्वादशः श्लोकः

पुरञ्जयस्तस्य सुत इन्द्रवाह इतीरितः ।
ककुत्स्थ इति चाप्युक्तः शृणु नामानि कर्मभिः ॥१२॥

पदच्छेद— पुरञ्जयः तस्य सुतः इन्द्रवाह इति ईरितः ।
ककुत्स्थ इति च अपि उक्तः शृणु नामानि कर्मभिः ॥

शब्दार्थ—

पुरञ्जयः	३. पुरञ्जय हुआ जो	**ककुत्स्थ**	७. ककुत्स्थ
तस्य	१. उस (विकुक्षि का)	**इति च**	६. वह और
सुतः	२. पुत्र	**अपि युक्तः**	८. भी कहलाया (उसके)
इन्द्रवाह	४. इन्द्रवाह	**शृणु**	११. सुनो
इति ईरितः ।	५. इस नाम से प्रसिद्ध हुआ	**नामानि**	१०. नामों के
		कर्मभिः ॥	९. कर्मों के कारण होने वाले

श्लोकार्थ— उस विकुक्षि का पुत्र पुरञ्जय हुआ जो इन्द्रवाह इस नाम से प्रसिद्ध हुआ और वह ककुत्स्थ भी कहलाया । उसके कर्मों के कारण होने वाले नामों को सुनो ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

कृतान्त आसीत् समरो देवानां सह दानवैः ।
पार्ष्णिग्राहो वृतो वीरो देवैर्दैत्यपराजितैः ॥१३॥

पदच्छेद— कृतान्ते आसीत् समरः देवानाम् सह दानवैः ।
पार्ष्णिग्राहः वृतः वीरः देवैः दैत्य पराजितैः ॥

शब्दार्थ—

कृतान्ते	१. सत्युग के अन्त में	पार्ष्णिग्राहः	११. सहायक
आसीत्	६. हुआ था	वृतः	१२. बनाया
समरः	५. संग्राम	वीरः	१०. वीर (पुरञ्जय को अपना)
देवानाम्	२. देवताओं का	देवैः	९. देवताओं ने
सह	४. साथ	दैत्य	७. दैत्यों से
दानवैः ।	३. दानवों के	पराजितैः ॥	८. हारे हुए

श्लोकार्थ—सत्ययुग के अन्त में देवताओं का दानवों के साथ संग्राम हुआ था । दैत्यों से हारे हुए देवताओं ने वीर पुरञ्जय को अपना सहायक बनाया ॥

त्रिंशः श्लोकः

वचनाद् देवदेवस्य विष्णोर्विश्वात्मनः प्रभोः ।
वाहनत्वे वृतस्तस्य बभूवेन्द्रो महावृषः ॥१४॥

पदच्छेद— वचनात् देव देवस्य विष्णोः विश्व आत्मनः प्रभोः ।
वाहनत्वे वृतः तस्य बभूव इन्द्रः महावृषः ॥

शब्दार्थ—

वचनात्	६. कहने से	वाहनत्वे	९. वाहन बनना
देव	४. देवता	वृतः	१० स्वीकर करके
देवस्य	३. देवताओं के	तस्य	८. उसका
विष्णोः	५. विष्णु के	बभूव	१२. धारण किया
विश्व	१. विश्वात्मा	इन्द्रः	७. इन्द्र ने
आत्मनः		महावृषः ॥	११. महान् वृषभ रूप को
प्रभोः ।	२. प्रभु एवम्		

श्लोकार्थ—विश्वात्मा प्रभु एवम् देवताओं के देवता विष्णु के कहने से इन्द्र ने उसका वाहन बनना स्वीकार करके महान् वृषभ रूप को धारण किया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

स संनद्धो धनुर्दिव्यमादाय विशिखाञ्छितान् ।
स्तूयमानः समारुह्य युयुत्सुः ककुदि स्थितः ॥१५॥

पदच्छेद— सः संनद्धः धनुः दिव्यम् आदाय विशिखान् शितान् ।
स्तूयमानः सम् आरुह्य युयुत्सुः ककुदि स्थितः ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वे (राजा पुरञ्जय)	स्तूयमानः	८.	देवताओं द्वारा स्तुति किये जाते हुए
संनद्धः	२.	तैयार हो कर	सम् आरुह्य	१०.	बैल पर चढ़ कर
धनुः	४.	धनुष और	युयुत्सुः	९.	युद्ध करने की इच्छा से
दिव्यम्	३.	दिव्य	ककुदि	११.	ककुद् के पास
आदाय	७.	लेकर	स्थितः	१२.	बैठ गये
विशिखान्	६.	बाण			
शितान् ।	५.	तीखे			

श्लोकार्थ—वे राजा पुरञ्जय तैयार होकर दिव्य धनुष और तीखे बाण लेकर देवताओं द्वारा स्तुति किये जाते हुए युद्ध करने की इच्छा से बैल पर चढ़ कर ककुद् के पास बैठ गये ॥

षोडशः श्लोकः

तैजसाऽऽप्यायितो विष्णोः पुरुषस्य परात्मनः ।
प्रतीच्यां दिशि दैत्यानां न्यरुणत् त्रिदशैः पुरम् ॥१६॥

पदच्छेद— तेजसा आप्यायितः विष्णोः पुरुषस्य पर आत्मनः ।
प्रतीच्याम् दिशि दैत्यानाम् न्यरुणत् त्रिदशैः पुरम् ॥

शब्दार्थ—

तेजसा	४.	तेज से	प्रतीच्याम्	७.	पश्चिम
आप्यायितः	५.	बढ़े हुये (उसने)	दिशि	८.	दिशा में
विष्णोः	३.	विष्णु के	दैत्यानाम्	९.	दैत्यों के
पुरुषस्य	१.	परम पुरुष	न्यरुणत्	११.	घेर लिये
पर आत्मनः ।	२.	परमात्मा	त्रिदशैः	६.	देवताओं को साथ लेकर
			पुरम् ॥	१०.	नगर को

श्लोकार्थ—परम पुरुष परमात्मा विष्णु के तेज से बढ़े हुए उसने देवताओं को साथ लेकर पश्चिम दिशा में दैत्यों के नगर को घेर लिया ॥

सप्तदशः श्लोकः

तैस्तस्य चाभूत् प्रधनं तुमुलं लोमहर्षणम् ।
यमाय भल्लैरनयद् दैत्यान् येऽभिययुर्मृधे ॥१७॥

पदच्छेद— तैः तस्य च अभूत् प्रधनम् तुमुलम् लोमहर्षणम् ।
यमाय भल्लैः अनयत् दैत्यान् ये अभि ययुः मृधे ॥

शब्दार्थ—

तैः	२. उन दैत्यों के साथ	भल्लैः	१३. भालों से (मारकर)
तस्य	३. उसका	अनयत्	१५. भेज दिया
च	१. और	दैत्यान्	१२. दैत्यों को
अभूत्	७. हुआ	ये	८. जो
प्रधनम्	६. संग्राम	अभि	१०. उसके
तुमुलम्	४. भयंकर	ययुः	११. सामने आये (उन)
लोमहर्षणम्	५. रोमाञ्चकारी	मृधे ॥	९. संग्राम में
यमाय ।	१४. यमराज के पास		

श्लोकार्थ—और उन दैत्यों के साथ उसका भयंकर रोमाञ्चकारी संग्राम हुआ । संग्राम में जो उसके सामने आये उन दैत्यों को भालों से मारकर यमराज के पास भेज दिया ॥

अष्टादशः श्लोकः

तस्येषुपाताभिमुखं युगान्ताग्निमिवोल्बणम् ।
विसृज्य दुद्रुवुर्दैत्या हन्यमानाः स्वमालयम् ॥१८॥

पदच्छेद— तस्य इषुपात अभि मुखम् युगान्त अग्निम् इव उल्बणम् ।
विसृज्य दुद्रुवुः दैत्याः हन्यमानाः स्वम् आलयम् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	५. उसके	विसृज्य	१०. छोड़कर
इषुपात	६. बाणों को (गिरते देखकर)	दुद्रुवुः	१३. भाग गये
अभिमुखम्	७. सामने	दैत्याः	९. दैत्यगण (युद्ध भूमि को)
युगान्त	१. प्रलयकाल की	हन्यमानाः	८. मारे जाते हुये
अग्निम्	२. अग्नि के	स्वम्	११. अपने
इव	३. समान	आलयम् ॥	१२. घरों में
उल्बणम् ।	४. भयानक		

श्लोकार्थ—प्रलय काल की अग्नि के समान भयानक उसके बाणों को सामने गिरते देख कर मारे जाते हुए दैत्यगण युद्ध भूमि को छोड़ कर अपने घरों में भाग गये ॥

एकोनविंशः श्लोकः

जित्वा पुरं धनं सर्वं सश्रीकं वज्रपाणये।
प्रत्ययच्छत् स राजर्षिरिति नामभिराहृतः ॥१९॥

पदच्छेद— जित्वा पुरम् धनम् सर्वम् सश्रीकम् वज्रपाणये।
प्रत्ययच्छत् सः राजर्षिः इति नामभिः आहृतः ॥

शब्दार्थ—

जित्वा	६. जीत कर	प्रत्ययच्छत्	८. दे दिया और
पुरम्	२. नगर	सः	१. उस
धनम्	३. धन (और)	राजर्षिः	२. राजर्षि पुरञ्जय ने
सर्वम्	५. सब कुछ	इति	९. इसलिये वह (इन्द्रवाह आदि)
सश्रीकम्	४. ऐश्वर्य सहित	नामभिः	१०. अनेक नामों से
वज्रपाणये।	७. इन्द्र को	आहृतः ॥	११. कहा जाने लगा

श्लोकार्थ—उस राजा पुरञ्जय ने नगर, धन और ऐश्वर्य सहित जीत कर इन्द्र को दे दिया। इसलिए वह इन्द्रवाह आदि अनेक नामों से कहा जाने लगा ॥

विंशः श्लोकः

पुरञ्जयस्य पुत्रोऽभूदनेनास्तत्सुतः पृथुः।
विश्वरन्धिस्ततश्चन्द्रो युवनाश्वश्च तत्सुतः ॥२०॥

पदच्छेद— पुरञ्जयस्य पुत्रः अभूत् अनेनाः तत्सुतः पृथुः।
विश्वरन्धिः ततः चन्द्रः युवनाश्वः च तत् सुतः ॥

शब्दार्थ—

पुरञ्जयस्य	१. पुरञ्जय का	विश्वरन्धिः	८. विश्वरन्धि
पुत्रः	२. पुत्र	ततः	७. उससे
अभूत्	४. हुआ	चन्द्रः	९. उससे चन्द्र (और)
अनेनाः	३. अनेना	युवनाश्व	१२. युवनाश्व हुआ
तत्सुतः	५. उसका पुत्र	तत्	१०. उसका
पृथुः।	६. पृथु	सुतः ॥	११. पुत्र

श्लोकार्थ—पुरञ्जय का पुत्र अनेना हुआ, उसका पुत्र पृथु, उससे विश्वरन्धि, उससे चन्द्र और उसका पुत्र युवनाश्व हुआ ॥

एकविंशः श्लोकः

शावस्तस्तत्सुतो येन शावस्ती निर्ममे पुरी ।
बृहदश्वस्तु शावस्तिस्ततः कुवलयाश्वकः ॥२१॥

पदच्छेद— शावस्तः तत् सुतः येन शावस्ती निर्ममे पुरी ।
बृहदश्वः तु शावस्तिः ततः कुवलयाश्वकः ॥

शब्दार्थ—

शावस्तः	३.	शावस्त हुआ	पुरी	६.	पुरी
तत्	१.	उसका	बृहदश्वः तु	९.	बृहदश्व (और)
सुतः	२.	पुत्र	शावस्तिः	८.	शावस्त का पुत्र
येन	४.	जिसने	ततः	१०.	उसका पुत्र
शावस्ती	५.	शावस्ती नाम की	कुवलयाश्वकः ॥	११.	कुवलयाश्व हुआ
निर्ममे ।	७.	बसाई			

श्लोकार्थ—उसका पुत्र शावस्त हुआ, जिसने शावस्ती नाम की पुरी बसाई । शावस्त का पुत्र बृहदश्व और उसका पुत्र कुवलयाश्व हुआ ॥

द्वाविंशः श्लोकः

यः प्रियार्थमुतङ्कस्य धुन्धुनामासुरं बली ।
सुतानामेकविंशत्या सहस्रैरहनद् वृतः ॥२२॥

पदच्छेद— यः प्रियार्थम् उतङ्कस्य धुन्धुनाम् असुरम्बली ।
सुतानाम् एक विंशत्या सहस्रैः अहनत् [वृतः ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जिस	सुतानाम्	७.	पुत्रों से
प्रियार्थम्	४.	प्रसन्न करने के लिए	एकविंशत्या	५.	अपने इक्कीस
उतङ्कस्य	३.	उतङ्कमुनि को	सहस्रैः	६.	हजार
धुन्धुनाम	९.	धुन्धु नामक	अहनत्	११.	मार डाला
असुरम्	१०.	असुर को	वृतः ॥	८.	घिर कर
बली ।	२.	बलवान् कुवलयाश्व ने			

श्लोकार्थ—जिस बलवान् कुवलयाश्व ने उतङ्क मुनि को प्रसन्न करने के लिये अपने इक्कीस हजार पुत्रों से घिर कर धुन्धु नामक असुर को मार डाला ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

धुन्धुमार इति ख्यातस्तत्सुतास्ते च जज्वलुः ।
धुन्धोर्मुखाग्निना सर्वे त्रय एवावशेषिताः ॥२३॥

पदच्छेद— धुन्धुमार इति ख्यातः तत् सुताः ते च जज्वलुः ।
धुन्धोः मुख अग्निना सर्वे त्रयः एव अवशेषिताः ॥

शब्दार्थ—

धुन्धुमारः	१.	वह धुन्धुमार	धुन्धोः	७.	धुन्धु के
इति	२.	इस नाम से	मुख	८.	मुख की
ख्यातः	३.	प्रसिद्ध हो गया	अग्निना	९.	अग्नि से
तत्	४.	उसके	सर्वे	५.	सब ही
सुताः ते	६.	पुत्र वे	त्रयः	१२.	तीन
च	११.	और	एव	१३.	ही
जज्वलुः ।	१०.	जल गये (केवल)	अवशेषिताः ॥	१४.	बचे

श्लोकार्थ—वह धुन्धुमार इस नाम से प्रसिद्ध हो गया। उसके वे सब ही पुत्र धुन्धु के मुख की आग्न से जल गये। और केवल तीन ही बचे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

दृढाश्वः कपिलाश्वश्च भद्राश्व इति भारत ।
दृढाश्वपुत्रो हर्यश्वो निकुम्भस्तत्सुतः स्मृतः ॥२४॥

पदच्छेद— दृढाश्वः कपिलाश्वः च भद्राश्वः इति भारत ।
दृढाश्व पुत्रः हर्यश्वः निकुम्भः तत् सुतः स्मृतः ॥

शब्दार्थ—

दृढाश्वः	२.	दृढाश्व	दृढाश्व	७.	दृढाश्व का
कपिलाश्वः	३.	कपिलाश्व	पुत्रः	८.	पुत्र
च	४.	और	हर्यश्वः	९.	हर्यश्व और
भद्राश्वः	५.	भद्राश्व	निकुम्भः	१२.	निकुम्भ
इति	६.	ये (तीन बचे)	तत्	१०.	उसका
भारत ।	१.	हे परीक्षित् !	सुतः	११.	पुत्र
			स्मृतः ॥	१३.	कहलाया

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! दृढाश्व, कपिलाश्व और भद्राश्व ये तीन ही बचे। दृढाश्व का पुत्र हर्यश्व और उसका पुत्र निकुम्भ कहलाया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

बर्हणाश्वो निकुम्भस्य कृशाश्वोऽथास्य सेनजित् ।
युवनाश्वोऽभवत् तस्य सोऽनपत्यो वनं गतः ॥२५॥

पदच्छेद— बर्हणाश्वः निकुम्भस्य कृशाश्वः अथ अस्य सेनजित् ।
युवनाश्वः अभवत् तस्य सः अनपत्यः वनम् गतः ॥

शब्दार्थ—

बर्हणाश्वः	२. बर्हणाश्व उसका पुत्र	युवनाश्वः	८. युवनाश्व
निकुम्भस्य	१. निकुम्भ का पुत्र	अभवत्	९. हुआ
कृशाश्वः	३. कृशाश्व	तस्य	७. उसका पुत्र
अथ	४. और	सः	१०. वह
अस्य	५. उसका पुत्र	अनपत्यः	११. सन्तान हीन होने से
सेनजित् ।	६. सेनजित् हुआ (और)	वनम्	१२. वन में
		गतः ॥	१३. चला गया

श्लोकार्थ—निकुम्भ का पुत्र बर्हणाश्व, उसका पुत्र कृशाश्व और उसका पुत्र सेनजित् हुआ। और उसका पुत्र युवनाश्व हुआ। वह सन्तानहीन होने से वन में चला गया ॥

षड्विंशः श्लोकः

भार्याशतेन निर्विण्ण ऋषयोऽस्य कृपालवः ।
इष्टिं स्म वर्तयाञ्चक्रुरैन्द्रीं ते सुसमाहिताः ॥२६॥

पदच्छेद — भार्याशतेन निर्विण्णः ऋषयः अस्य कृपालवः ।
इष्टिं स्म वर्तयान् चक्रुः ऐन्द्रीम् ते सुसमाहिताः ॥

शब्दार्थ—

भार्या	२. पत्नियों के साथ	इष्टिं स्म	१०. यज्ञ
शतेन	१. अपनी सौ	वर्तयान् चक्रुः	११. कराया
निर्विण्णः	३. दुःखी होकर वन में चला गया	ऐन्द्रीम्	९. इन्द्र देवता का
ऋषयः	७. ऋषिगणों ने	ते	६. उन
अस्य	४. वहाँ पर उसके ऊपर	सुसमाहिताः ॥	८. एकाग्रचित्त होकर
कृपालवः ।	५. कृपा करके		

श्लोकार्थ—अपनी सौ पत्नियों के साथ दुःखी होकर वन में चला गया। वहाँ पर उसके ऊपर कृपा करके उन ऋषि गणों ने एकाग्रचित्त होकर इन्द्र देवता का यज्ञ कराया ॥

सप्तविंशः श्लोकः

राजा तद् यज्ञसदनं प्रविष्टो निशि तर्षितः ।
दृष्ट्वा शयानान् विप्रांस्तान् पपौ मन्त्रजलं स्वयम् ॥२७॥

पदच्छेद— राजा तत् यज्ञ सदनम् प्रविष्टः निशि तर्षितः ।
दृष्ट्वा शयानान् विप्रान् तान् पपौ मंत्रजलम् स्वयम् ॥

शब्दार्थ—

राजा	१. राजा	दृष्ट्वा	६. देख कर
तत्	४. उस	शयानान्	८. सोते हुए
यज्ञ सदनम्	५. यज्ञशाला में	विप्रान् तान्	७. ब्राह्मणों को उन
प्रविष्टः	६. गया (वहाँ)	पपौ	१२. पी लिया
निशि	२. रात्रि में	मन्त्रजलम्	१०. अभिमंत्रित जल को
तर्षितः ।	३. प्यासा होकर	स्वयम् ॥	११. अपने आप

श्लोकार्थ—राजा रात्रि में प्यासा होकर उस यज्ञशाला में गया। वहाँ उन ब्राह्मणों को सोते हुए देखकर उस अभिमन्त्रित जल को अपने आप पी लिया ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

उत्थितास्ते निशाम्याथ व्युदकं कलशं प्रभो ।
पप्रच्छुः कस्य कर्मेदं पीतं पुंसवनं जलम् ॥२८॥

पदच्छेद— उत्थिताः ते निशाम्य अथ व्युदकम् कलशम् प्रभो ।
पप्रच्छुः कस्य कर्म इदम् पीतम् पुंसवनम् जलम् ॥

शब्दार्थ—

उत्थिताः	३. उठने पर	पप्रच्छुः	८. पूछा
ते	४. उन ब्राह्मणों ने	कस्य	१०. किसका
निशाम्य	७. देखकर	कर्म	११. कर्म है (कि)
अथ	२. तदनन्तर	इदम्	९. यह
व्युदकम्	५. जल रहित	पीतम्	१४. पी लिया है
कलशम्	६. कलश को	पुंसवनम्	१२. पुत्र उत्पन्न करने वाले
प्रभो ।	१. हे परीक्षित् !	जलम् ॥	१३. जल को

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! तदन्तर उठने पर उन ब्राह्मणों ने जल रहित कलश को देखकर पूछा—यह किसका कर्म है कि पुत्र उत्पन्न करने वाले जल को पी लिया है ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

राज्ञा पीतं विदित्वाथ ईश्वरप्रहितेन ते ।
ईश्वराय नमश्चक्रुरहो दैवबलं बलम् ॥२९॥

पदच्छेद— राज्ञा पीतम् विदित्वा अथ ईश्वर प्रहितेन ते ।
ईश्वराय नमः चक्रुः अहो दैवबलम् बलम् ॥

शब्दार्थ—

राज्ञा	५. राजा के द्वारा	ईश्वराय	८. ईश्वर को
पीतम्	६. पिये हुए जल को	नमः	९. नमस्कार
विदित्वा	७. जान कर	चक्रुः	१०. किया (और कहा)
अथ	१. तदनन्तर	अहो	११. अहो धन्य है
ईश्वर	३. ईश्वर की	दैवबलम्	१२. ईश्वर का बल ही
प्रहितेन	४. प्रेरणा से	बलम् ॥	१३. वास्तव में बल है
ते ।	२. उन्होंने		

श्लोकार्थ—तदनन्तर उन्होंने ईश्वर की प्रेरणा से राजा के द्वारा पिये हुए जल को जानकर ईश्वर को नमस्कार किया—और कहा अहो धन्य है ईश्वर का बल ही वास्तव में बल है ॥

त्रिंशः श्लोकः

ततः काल उपावृत्ते कुक्षिं निर्भिद्य दक्षिणम् ।
युवनाश्वस्य तनयश्चक्रवर्ती जजान ह ॥३०॥

पदच्छेद— ततः काले उपावृत्ते कुक्षिम् निर्भिद्य दक्षिणम् ।
युवनाश्वस्य तनयः चक्रवर्ती जजान ह ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. तदनन्तर	दक्षिणाम्	५. दाहिनी
काले	२. समय	युवनाश्वस्य	४. युवनाश्व की
उपावृत्ते	३. आ जाने पर	तनयः	९. पुत्र
कुक्षिम्	६. कोख को	चक्रवर्ती	८. चक्रवर्ती
निर्भिद्य	७. फाड़ कर	जजान ह ॥	१० उत्पन्न हुआ

श्लोकार्थ—तदनन्तर समय आ जाने पर युवनाश्व की दाहिनी कोख को फाड़कर चक्रवर्ती पुत्र उत्पन्न हुआ ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

कं धास्यति कुमारोऽयं स्तन्यं रोरूयते भृशम् ।
मां धाता वत्स मा रोदीरितीन्द्रो देशिनीमदात् ॥३१॥

पदच्छेद— कम् धास्यति कुमारः अयम् स्तन्यम् रोरूयते भृशम् ।
माम् धाता वत्स मा रोदीः इति इन्द्रः देशिनीम् अदात् ॥

शब्दार्थ—

कम्	५.	किसका	माम्	८.	मेरा
धास्यति	७.	पियेगा	धाता	९.	पियेगा
कुमारः	२.	बालक	वत्स	१०.	बेटा
अयम्	१.	यह	मा	११.	मत
स्तन्यम्	६.	दूध	रोदीः इति	१२.	रो इस प्रकार कह कर
रोरूयते	४.	रो रहा है	इन्द्रः	१३.	इन्द्र ने अपनी
भृशम् ।	३.	बहुत	देशिनीम्	१४.	तर्जनी अंगुली उसके
			अदात् ॥	१५.	मुख में लगा दी

श्लोकार्थ—यह बालक बहुत रो रहा है । किसका दूध पियेगा । मेरा पियेगा । बेटा मत रो । इस प्रकार कह कर इन्द्र ने अपनी तर्जनी अंगुली उसके मुख में लगा दी ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

न ममार पिता तस्य विप्रदेवप्रसादतः ।
युवनाश्वोऽथ तत्रैव तपसा सिद्धिमन्वगात् ॥३२॥

पदच्छेद— न ममार पिता तस्य विप्रदेव प्रसादतः ।
युवनाश्वः अथ तत्र एव तपसा सिद्धिम् अन्वगात् ॥

शब्दार्थ—

न	६.	नहीं	युवनाश्वः	३.	युवनाश्व
ममार	७.	मरा	अथ	८.	तथा
पिता	२.	पिता	तत्र एव	९.	वहीं
तस्य	१.	उसका	तपसा	१०.	तपस्या के द्वारा
विप्रदेव	४.	ब्राह्मण और देवता की	सिद्धिम्	११.	सिद्धि को
प्रसादतः ।	५.	कृपा से	अन्वगात् ॥	१२.	प्राप्त हो गया

श्लोकार्थ—उसका पिता युवनाश्व ब्राह्मण और देवताओं की कृपा से नहीं मरा । तथा वहीं तपस्या के द्वारा सिद्धि को प्राप्त हो गया ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

त्रसद्दस्युरितीन्द्रोऽङ्ग विदधे नाम तस्य वै ।
यस्मात् त्रसन्ति ह्युद्विग्ना दस्यवो रावणादयः ॥३३॥

पदच्छेद— त्रसद्दस्युः इति इन्द्र अङ्ग विदधे नाम तस्य वै ।
यस्मात् त्रसन्ति हि उद्विग्नाः दस्यवः रावण आदयः ॥

शब्दार्थ—

त्रसद्दस्युः	५.	त्रसद्दस्यु	वै	८.	निश्चित ही
इति	६.	यह	यस्मात्	९.	उससे
इन्द्रः	२.	इन्द्र ने	त्रसन्ति	१४.	डरते रहते थे
अङ्ग	१.	हे परीक्षित् !	हि उद्विग्नाः	१३.	उद्विग्न होकर
विदधे	७.	रखा	दस्यवः	१२.	लुटेरे
नाम	४.	नाम	रावण	१०.	रावण
तस्य ।	३.	उस बालक का	आदयः ॥	११.	आदि

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इन्द्र ने उस बालक का नाम त्रसद्दस्यु यह रखा । निश्चित ही उससे रावण आदि लुटेरे उद्विग्न होकर डरते रहते थे ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

यौवनाश्वोऽथ मान्धाता चक्रवर्त्यवनीं प्रभुः ।
सप्तद्वीपवतीमेकः शशासाच्युततेजसा ॥३४॥

पदच्छेद— यौवनाश्वः अथ मान्धाता चक्रवर्ती अवनीम् प्रभुः ।
सप्तद्वीपवतीम् एकः शशास अच्युत तेजसा ॥

शब्दार्थ—

यौवनाश्वः	२.	युवनाश्व के पुत्र	सप्तद्वीप	९.	सातद्वीपों
अथ	१.	तदनन्तर	वतीम्	१०.	वाली
मान्धाता	३.	मान्धाता ने	एकः	८.	अकेले ही
चक्रवर्ती	४.	चक्रवर्ती	शशास	१२.	शासन किया
अवनीम्	११.	पृथ्वी का	अच्युत	६.	भगवान् श्रीकृष्ण के
प्रभुः ।	५.	राजा होकर	तेजसा ॥	७.	तेज से

श्लोकार्थ—तदनन्तर युवनाश्व के पुत्र मान्धाता ने चक्रवर्ती राजा होकर भगवान् श्रीकृष्ण के तेज से अकेले ही सात द्वीपों वाली पृथ्वी का शासन किया ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

ईजे च यज्ञं क्रतुभिरात्मविद् भूरिदक्षिणैः ।
सर्वदेवमयं देवं सर्वात्मकमतीन्द्रियम् ॥३५॥

पदच्छेद— ईजे च यज्ञम् क्रतुभिः आत्मवित् भूरि दक्षिणैः ।
सर्वदेव मयम् देवम् सर्व आत्मकम् अतीन्द्रियम् ॥

शब्दार्थ—

ईजे	१३.	आराधना की	सर्वदेव	६.	सर्वदेव
च	८.	और	मयम्	७.	मय
यज्ञम्	५.	यज्ञ स्वरूप	देवम्	१२.	भगवान् की
क्रतुभिः	४.	यज्ञों के द्वारा	सर्व	९.	सब की
आत्मवित्	१.	आत्मज्ञानी मान्धाता ने	आत्मकम्	१०.	आत्मा
भूरि	२.	बड़ी-बड़ी	अतीन्द्रियम् ॥	११.	इन्द्रियातीत
दक्षिणैः ।	३.	दक्षिणावाले			

श्लोकार्थ—आत्मज्ञानी मान्धाता ने बड़ी-बड़ी दक्षिणावाले यज्ञों के द्वारा यज्ञ स्वरूप सर्वदेवमय और सबकी आत्मा इन्द्रियातीत भगवान् की आराधना की ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

द्रव्यं मन्त्रो विधिर्यज्ञो यजमानस्तथर्त्विजः ।
धर्मो देशश्च कालश्च सर्वमेतद् यदात्मकम् ॥३६॥

पदच्छेद— द्रव्यम् मन्त्रः विधिः यज्ञः यजमानः तथा ऋत्विजः ।
धर्मः देशः च कालः च सर्वम् एतत् यत् आत्मकम् ॥

शब्दार्थ—

द्रव्यम्	१.	द्रव्य सामग्री	धर्मः	८.	धर्म
मन्त्रः	२.	मन्त्र	देशः	९.	देश
विधिः	३.	विधि-विधान	च	१०.	और
यज्ञः	४.	यज्ञ	कालः च	११.	काल
यजमानः	५.	यजमान	सर्वम्	१३.	सब
तथा	६.	तथा	एतत्	१२.	यह
ऋत्विजः ।	७.	ऋत्विज	यत्	१४.	जिनका
			आत्मकम् ॥	१५.	स्वरूप है

श्लोकार्थ—द्रव्य, सामग्री, मन्त्र, विधि-विधान, यज्ञ, यजमान, तथा ऋत्विज, धर्म देश और काल यह सब जिनका स्वरूप है ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

यावत् सूर्यं उदेति स्म यावच्च प्रतितिष्ठति ।
सर्वं तद् यौवनाश्वस्य मान्धातुः क्षेत्रमुच्यते ॥३७॥

पदच्छेद— यावत् सूर्यः उदेति स्म यावत् च प्रतितिष्ठति ।
सर्वम् तत् यौवनाश्वस्य मान्धातुः क्षेत्रम् उच्यते ॥

शब्दार्थ—

यावत्	१.	जहाँ से	सर्वम्	८.	सब (भूभाग)
सूर्यः	२	सूर्य का	तत्	७.	वह
उदेति	३	उदय	यौवनाश्वस्य	९.	युवनाश्व के पुत्र
स्म	४.	होता है	मान्धातुः	१०.	मान्धाताका
यावत् च	५.	और जहाँ	क्षेत्रम्	११.	क्षेत्र
प्रतितिष्ठति ।	६.	अस्त होता है	उच्यते ॥	१२.	कहलाता था

श्लोकार्थ—जहाँ से सूर्य का उदय होता है, और जहाँ अस्त होता है, वह सब भू भा ग युवनाश्व के पुत्र मान्धाता का क्षेत्र कहलाता था ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

शशबिन्दोर्दुहितरि बिन्दुमत्यामधान्नृपः ।
पुरुकुत्समम्बरीषं मुचुकुन्दं च योगिनम् ।
तेषां स्वसारः पञ्चाशत् सौभरिं वव्रिरे पतिम् ॥३८॥

पदच्छेद— शशबिन्दोः दुहितरि बिन्दुमत्याम् अधात् नृपः । पुरुकुत्सम् अम्बरीषं मुचुकुन्दं । च योगिनम् । तेषाम् स्वसारः पञ्चाशत् सौभरिम् वव्रिरे पतिम् ॥

शब्दार्थ—

शशबिन्दोः	२.	शशबिन्दु की	च	७.	और
दुहितरि	३.	पुत्री	योगिनम्	८.	योगी
बिन्दुमत्याम्	४.	बिन्दुमती में	तेषाम्	११.	उनकी
अधात्	१०.	उत्पन्न किया	स्वसारः	१३.	बहनों ने
नृपः	१.	राजा ने	पञ्चाशत्	१२.	पचास
पुरुकुत्सम्	५	पुरुकुत्स	सौभरिम्	१४.	सौभरि ऋषि को
अम्बरीषम्	६.	अम्बरीष	वव्रिरे	१६.	वरण किया
मुचुकुन्दम् ।	९	मुचुकुन्द को	पतिम् ॥	१५.	पति के रूप में

श्लोकार्थ—राजा मान्धाता ने शशबिन्दु की पुत्री बिन्दुमती से पुरुकुत्स, अम्बरीष और योगी मुचुकुन्द को उत्पन्न किया । उनकी पचास बहिनों ने सौभरि ऋषि को पति के रूप में वरण किया ॥

एकोनचत्वारिंश श्लोक

यमुनान्तर्जले मग्नस्तप्यमानः परंतपः ।
निर्वृतिं मीनराजस्य वीक्ष्य मैथुनधर्मिणः ॥३९॥

पदच्छेद— यमुना अन्तर्जले मग्नः तप्यमानः परंतपः ।
निर्वृतिं मीन राजस्य वीक्ष्य मैथुन धर्मिणः ॥

शब्दार्थ—

यमुना	१.	यमुना के	निर्वृतिं	१०.	सुख को
अन्तर्जले	२.	जल के अन्दर	मीन	८.	मत्स्य
मग्नः	३.	डूबकर	राजस्य	९.	राज के
तप्यमानः	५.	तपस्या कर रहे थे	वीक्ष्य	११.	देखा
परंतपः ।	४.	परम तपस्वी (सौभरि)	मैथुन	६.	उन्होंने मैथुन
			धर्मिणः ॥	७.	धर्म में

श्लोकार्थ—यमुना जल के अन्दर डूबकर परमतपस्वी सौभरि तपस्या कर रहे थे । उन्होंने मैथुन धर्म में लगे हुए मत्स्यराज के सुख को देखा ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

जातस्पृहो नृपं विप्रः कन्यामेकामयाचत ।
सोऽप्याह गृह्यतां ब्रह्मन् कामं कन्या स्वयंवरे ॥४०॥

पदच्छेद— जात स्पृहः नृपम् विप्रः कन्याम् एकाम् अयाचत ।
सः अपि आह गृह्यताम् ब्रह्मन् कामम् कन्या स्वयंवरे ॥

शब्दार्थ—

जात	१.	काम के	सः अपि	८.	उस राजा ने भी
स्पृहः	२.	इच्छुक	आह	९.	कहा
नृपम्	४.	राजा से	गृह्यताम्	१४.	वरण कीजिये
विप्रः	३.	ब्राह्मण ने	ब्रह्मन्	१०.	हे ब्रह्मन्
कन्याम्	६.	कन्या को	कामम्	१२.	इच्छानुसार
एकाम्	५.	एक	कन्या	१३.	कन्या का
अयाचत ।	७.	याचना की	स्वयंवरे ॥	११.	स्वयंवर में

श्लोकार्थ—काम के इच्छुक ब्राह्मण ने राजा से एक कन्या की याचना की । उस राजा ने कहा हे ब्रह्मन् ! स्वयंवर में इच्छानुसार कन्या को वरण कीजिये ॥

एकचत्वारिंशः श्लोक

स विचिन्त्याप्रियं स्त्रीणां जरठोऽयमसंमतः ।
वलीपलित एजत्क इत्यहं प्रत्युदाहृतः ॥४१॥

पदच्छेद— सः विचिन्त्य अप्रियम् स्त्रीणाम् जरठः अयम् असम्मतः ।
वली पलितः एजत्कः इति अहम् प्रति उदाहृतः ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	उन सौभरि मुनि ने	वली	६.	झुर्रियों और
विचिन्त्य	३.	सोचा कि	पलितः	७.	पके बालों से युक्त
अप्रियम्	२.	राजा की अप्रिय बात (जानकर)	एजत्कः	८.	कांपते हुए शरीर वाला है
स्त्रीणाम्	९.	स्त्रियों के लिए	इति	१२.	ऐसा
जरठः	५.	बुड्ढा	अहम्	११.	मुझे
अयम्	४.	यह	प्रतिउदाहृतः ॥	१३.	उत्तर दिया है
असम्मतः ।	१०.	नापसन्द होगा (इसलिये)			

श्लोकार्थ—उन सौभरि मुनि ने (राजा की) अप्रिय बात जानकर सोचा कि यह बुड्ढा झुर्रियों, पके बालों से युक्त तथा कांपते हुए शरीर वाला है स्त्रियों के लिए नापसन्द होगा । इसलिये मुझे ऐसा उत्तर दिया है ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

साधयिष्ये तथाऽऽत्मानं सुरस्त्रीणामपीप्सितम् ।
किं पुनर्मनुजेन्द्राणामिति व्यवसितः प्रभुः ॥४२॥

पदच्छेद— साधयिष्ये तथा आत्मानम् सुरस्त्रीणाम् अपि ईप्सितम् ।
किम् पुनः मनुज इन्द्राणाम् इति व्यवसितः प्रभुः ॥

शब्दार्थ—

साधयिष्ये	३.	बनाऊँगा (कि)	पुनः	६.	फिर
तथा	२.	ऐसा	मनुज	७.	राजा कन्याओं के
आत्मानम्	१.	मैं अपने को	इन्द्राणाम्	८.	लिए तो बात ही
सुरस्त्रीणाम्	४.	देवस्त्रियाँ	इति	११.	ऐसा
अपि ईप्सितम्	५	भी (मुझे) चाहेगी	व्यवसितः	१२.	निश्चय किया
किम् ।	९.	क्या है	प्रभुः ॥	१०.	समर्थ सौभरि ने

श्लोकार्थ—मैं अपने को ऐसा बनाऊँगा कि देवस्त्रियाँ भी मुझे चाहेंगी । फिर राज-कन्याओं के लिए तो बात ही क्या है । समर्थ सौभरि ने ऐसा निश्चय किया ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

मुनिः प्रवेशितः क्षत्त्रा कन्यान्तःपुरमृद्धिमत् ।
वृतश्च राजकन्याभिरेकः पञ्चाशता वरः ॥४३॥

पदच्छेद— मुनिः प्रवेशितः क्षत्त्रा कन्या अन्तः पुरम् ऋद्धिमत् ।
वृतः च राजकन्याभिः एकः पञ्चाशता वरः ॥

शब्दार्थ—

मुनिः	२.	मुनि को	वृतः च	११.	वरण किया और
प्रवेशितः	६.	पहुँचा दिया	राजकन्याभिः	८.	राजकन्याओं ने
क्षत्त्रा	१.	रक्षकों ने	एकः	९.	एक ही
कन्या	४.	कन्याओं के	पञ्चाशता	७.	उन पचासों
अन्तः पुरम्	५.	महल में	वरः ॥	१०.	सौभरि मुनि को पति रूप में
ऋद्धिमत् ।	३.	वैभव शाली			

श्लोकार्थ—उन रक्षकों ने सौभरि मुनि को वैभवशाली कन्याओं के महल में पहुँचा दिया । उन पचासों राजकन्याओं ने एक ही सौभरि मुनि को पति के रूप में वरण किया ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

तासां कलिरभूद् भूयांस्तदर्थेऽपोह्य सौहृदम् ।
ममानुरूपो नायं व इति तद्गतचेतसाम् ॥४४॥

पदच्छेद— तासाम् कलिः अभूत् भूयान् तत् अर्थे अपोह्य सौहृदम् ।
मम अनुरूपः न अयम् वः इति तत् गत चेतसाम् ॥

शब्दार्थ—

तासाम्	५.	उन राजकन्याओं ने	मम	१३.	मेरे
कलिः	११.	झगड़ा	अनुरूपः	१५.	योग्य है
अभूत्	१२.	होने लगा (कि)	न अयम्	१६.	नहीं है यह
भूयान्	१०.	बहुत	वः	१४.	तुम्हारे योग्य
तत्	६	उनके	इति	१.	उन मुनि में
अर्थे	७.	लिए (आपस के)	तत्	२.	इस प्रकार
अपोह्य	९.	हटाकर	गत	३.	आसक्त
सौहृदम् ।	८.	प्रेम भाव को	चेतसाम् ॥	४.	चित्तवाली

श्लोकार्थ—इस प्रकार उन मुनि में आसक्त चित्तवाली उन राजकन्याओं में उनके लिये आपस के प्रेम-भाव को हटाकर बहुत झगड़ा होने लगा कि यह मेरे योग्य है तुम्हारे योग्य नहीं है ॥

पञ्चचत्वारिंश श्लोकः

स बह्वृचस्ताभिरपारणीयतपः श्रियानर्घ्यपरिच्छदेषु ।
गृहेषु नानोपवनामलाम्भः सरस्सु सौगन्धिककाननेषु ॥४५॥

पदच्छेद— सः बह्वृचः ताभिः अपारणीय तपः श्रिया अनर्घ्य अपरिच्छदेषु ।
गृहेषु नाना उपवन अमल अम्भः सरस्सु सौगन्धिक काननेषु ॥

शब्दार्थ—

सः	२.	वह सौभरि ऋषि	गृहेषु	१५.	घरों में
बह्वृचः	१.	ऋग्वेदी	नाना	८.	अनेक
ताभिः	१६	उन कन्यायों के साथ विहार करने लगे	उपवन	९.	बगीचों
अपारणीय	३.	अपार	अमल	१०.	निर्मल
तपः	४.	तपस्या के	अम्भः	११.	जलवाले
श्रिया	५.	प्रभाव से	सरस्सु	१२.	सरोवरों तथा
अनर्घ्य	६.	बहुमूल्य	सौगन्धिक	१३.	सुगन्धित पुष्पों वाले
अपरिच्छदेषु ।	७.	सामग्रियों से युक्त	काननेषु ॥	१४.	वनों से युक्त

श्लोकार्थ—ऋग्वेदी उन सौभरि ऋषि ने अपार तपस्या के प्रभाव से बहुमूल्य सामग्रियों से युक्त अनेक बगीचों, निर्मल जलाशयों, सरोवरों तथा सुगन्धित पुष्पों वाले वनों से युक्त घरों में उन कन्यायों के साथ विहार करने लगे ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

महार्हशय्यासनवस्त्रभूषणस्नानानुलेपाभ्यवहारमाल्यकैः ।
स्वलङ्कृतस्त्रीपुरुषेषु नित्यदा रेमेऽनुगायद्द्विजभृङ्गवन्दिषु ॥४६॥

पदच्छेद— महार्ह शय्या आसन वस्त्र भूषण स्नान अनुलेप अभ्यवहार माल्यकैः ।
सु अलङ्कृत स्त्री पुरुषेषु नित्यदा रेमे अनुगायत् द्विजभृङ्ग वन्दिषु ॥

शब्दार्थ—

महार्ह	१.	बहुमूल्य	सु	१०.	अच्छी तरह
शय्या	२.	शय्या	अलङ्कृत	११.	अलंकार धारण किये हुए
आसन	३.	आसन	स्त्री	१२.	स्त्री
वस्त्र	४.	वस्त्र	पुरुषेषु	१३.	पुरुषों से युक्त (तथा)
भूषण	५.	आभूषण	नित्यदा	१७.	सर्वदा
स्नान	६.	स्नान	रेमे	१८.	रमण करते थे
अनुलेप	७.	अनुलेपन	अनुगायत्	१४.	गायन करते हुए
अभ्यवहार	८.	सुस्वादु भोजन	द्विजभृङ्ग	१५.	पक्षियों भौंरों और
माल्यकैः ।	९.	पुष्पमालाओं के द्वारा सौरभि	वन्दिषु ॥	१६.	वन्दी जनों से सुशोभित घरों में

श्लोकार्थ—बहुमूल्य शय्या, आसन, वस्त्र, आभूषण, स्नान, अनुलेप, सुस्वादु भोजन और पुष्पमालाओं के द्वारा अच्छी तरह अलंकार धारण किये हुये स्त्री-पुरुषों से युक्त तथा सर्वदा गायन करते हुए पक्षियों भौंरों और वन्दीजनों से सुशोभित घरों में रमण करते थे ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

यद्गार्हस्थ्यं तु संवीक्ष्य सप्तद्वीपवतीपतिः ।
विस्मितः स्तम्भमजहात् सार्वभौमश्रियान्वितम् ॥४७॥

पदच्छेद— यत् गार्हस्थ्यम् संवीक्ष्य सप्त द्वीपवती पतिः ।
विस्मितः स्तम्भम् अजहात् सार्वभौम श्रिया अन्वितम् ॥

शब्दार्थ—

यत्	१.	जिनकी	विस्मितः	८.	आश्चर्य चकित होकर
गार्हस्थ्यम्	२.	गृहस्थी के सुख को	स्तम्भम्	१२.	गर्व को
संवीक्ष्य	३.	देखकर	अजहात्	१३.	त्याग दिया
सप्त	४.	सात	सार्वभौम	९.	चक्रवर्ती राजा की
द्वीपवती	५.	द्वीपों वाली पृथ्वी,	श्रिया	१०.	लक्ष्मी से
पतिः ।	६.	स्वामी (मान्धाता ने)	अन्वितम् ॥	११.	युक्त होने के

श्लोकार्थ—जिनकी गृहस्थी के सुख को देखकर सात द्वीपों वाली पृथ्वी के स्वामी मान्धाता ने आश्चर्य-चकित होकर चक्रवर्ती राजा की लक्ष्मी से युक्त होने के गर्व को त्याग दिया ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

एवं गृहेष्वभिरतो विषयान् विविधैः सुखैः ।
सेवमानो न चातुष्यदाज्यस्तोकैरिवानलः ॥४८॥

पदच्छेद— एवम् गृहेषु अभिरतः विषयान् विविधैः सुखैः ।
सेवमानः न च अतुष्यत् आज्य स्तोकैः इव अनलः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	सेवमानः	७.	सेवन करते हुए
गृहेषु	२.	घर में	न च	८.	नहीं और
अभिरतः	३.	आसक्त होकर	अतुष्यत्	९.	सन्तुष्ट हुए
विषयान्	६.	विषयों का	आज्य	११.	घी की
विविधैः	४.	अनेक प्रकार के	स्तोकैः	१२.	बूंदों से
सुखैः ।	५.	सुखों से	इव	१०.	जैसे
			अनलः ॥	१३.	अग्नि (तृप्त नहीं होता है)

श्लोकार्थ—इस प्रकार घर में आसक्त होकर अनेक प्रकार के सुखों से विषयों का सेवन करते हुए सन्तुष्ट नहीं हुए, जैसे घी की बूंदों से अग्नि तृप्त नहीं होती है ॥

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

स कदाचिदुपासीन आत्मापह्नवमात्मनः ।
ददर्श बह्वृचाचार्यो मीनसङ्गसमुत्थितम् ॥४९॥

पदच्छेद— सः कदाचित् उपासीनः आत्मा अपह्नवम् आत्मनः ।
ददर्श बह्वृच आचार्यः मीन सङ्ग समुत्थितम् ॥

शब्दार्थ—

सः	५.	उन सौभरि ऋषि ने	ददर्श	१२.	देखा
कदाचित्	१.	किसी समय	बह्वृच	३.	ऋग्वेद के
उपासीनः	२.	बैठे हुए	आचार्यः	४.	आचार्य
आत्मा	९.	अपनी	मीन	६.	मछली के
अपह्नवम्	११.	पतन	सङ्ग	७.	सङ्ग से
आत्मनः ।	१०.	आत्मा का	समुत्थितम् ॥	८.	उत्पन्न

श्लोकार्थ—किसी समय बैठे हुए ऋग्वेद के आचार्य उन सौभरि ऋषि ने मछली के संग से उत्पन्न आत्मा का पतन देखा ।

पञ्चाशत्तमः श्लोकः

अहो इमं पश्यत मे विनाशं तपस्विनः सच्चरितव्रतस्य ।
अन्तर्जले वारिचरप्रसङ्गात् प्रच्यावितं ब्रह्म चिरं धृतं यत् ॥५०॥

पदच्छेद— अहो इमम् पश्यत मे विनाशम् तपस्विनः सच्चरित व्रतस्य ।
अन्तर्जले वारिचर प्रसङ्गात् प्रच्यावितम् ब्रह्म चिरम् धृतम् यत् ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	बड़े खेद है (कि)	अन्तर्जले	९.	जल के अन्दर
इमम्	६.	इस	वारिचर	१०.	मछली के
पश्यत	८.	देखो	प्रसङ्गात्	१२.	प्रसङ्ग से (मैंने अपने)
मे	५.	मेरे	प्रच्यावितम्	१३.	नष्ट कर दिया
विनाशम्	७.	विनाश को	ब्रह्म	११.	ब्रह्म तेज को
तपस्विनः	२.	तपस्वी	चिरम्	१५.	चिरकाल से
सच्चरित	३.	सदाचारी	धृतम्	१६.	धारण किया था
व्रतस्य ।	४.	व्रतों का पालन करने वाले	यत् ॥	१४.	जिसे

श्लोकार्थ—तपस्वी, सदाचारी, व्रतों का पालन करने वाले मेरे इस विनाश को देखो । जल के अन्दर मछली के प्रसङ्ग से मैंने अपने ब्रह्म तेज को नष्ट कर दिया, जिसे चिरकाल से धारण किया था ॥

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

सङ्गं त्यजेत मिथुनव्रतिनां मुमुक्षुः
सर्वात्मना न विसृजेद् बहिरिन्द्रियाणि ।
एकश्चरन् रहसि चित्तमनन्त ईशे
युञ्जीत तद्व्रतिषु साधुषु चेत् प्रसङ्गः ॥५१॥

पदच्छेद — सङ्गं त्यजेत मिथुन व्रतिनाम् मुमुक्षुः सर्वं आत्मना न विसृजेत् बहिः इन्द्रियाणि । एकः चरन् रहसि चित्तम् अनन्ते ईशे युञ्जीत तत् व्रतिषु साधुषु चेत् प्रसङ्गः ॥

शब्दार्थ—

सङ्गं	४. सङ्ग	एकः चरन्	११. अकेला ही रहता हुआ
त्यजेत	५. त्याग दे	रहसि	१२. एकान्त में
मिथुन	२. भोगी	चित्तम्	१४. मन को
व्रतिनाम्	३. प्राणियों का	अनन्ते ईशे	१३. अनन्त भगवान् में
मुमुक्षुः	१. मोक्षका इच्छुक व्यक्ति	युञ्जीत	१५. लगा दें
सर्वं	६. सब	तत्	१८. उो भगवान् के
आत्मना	९. प्रकार से	व्रतिषु	१९. प्रेमी
विसृजेत्	१०. छोड़े	साधुषु	२०. महात्माओं का करे
बहिः	८. बाहर	चेत्	१६. यदि
इन्द्रियाणि ।	७. इन्द्रियों को	प्रसङ्गः ॥	१७. सङ्ग करे

श्लोकार्थ—मोक्षका इच्छुक व्यक्ति भोगी प्राणियों का सङ्ग त्याग दे। सब प्रकार से इन्द्रियों को बाहर न छोड़े। अकेला ही रहता हुआ एकान्त में मन को लगा दे। यदि संग करे तो भगवान् के प्रेमी महात्माओं का करे ॥

द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

एकस्तपस्व्यहमथाम्भसि मत्स्यसङ्गात्
पञ्चाशदासमुत पञ्चसहस्रसर्गः ।
नान्तं व्रजाम्युभयकृत्यमनोरथानां
मायागुणैर्हृतमतिर्विषयेऽर्थभावः ॥५२॥

पदच्छेद—एकः तपस्वी अहम् अथ अम्भसि मत्स्य सङ्गात् पञ्चाशत् आसम् उत पञ्चसहस्र सर्गः ।
न अन्तम् व्रजामि उभय कृत्य मनोरथानाम् माया गुणैः हृतमतिः विषये अर्थ भावः ॥

शब्दार्थ—

एकः	१.	अकेला	न अन्तम्	१७.	नहीं अन्त
तपस्वी अहम्	२.	तपस्या में लीन था मैं	व्रजामि	१८.	पा रहा हूँ
अथ अम्भसि	३.	तदनन्तर जल में	उभय कृत्य	१५.	लोक और परलोक में
मत्स्य सङ्गात्	४.	मछली का संग होने से	मनोरथानाम्	१६.	मनोरथों का
पञ्चाशत्	५.	पचास	मायागुणैः	१०.	माया के गुणों के द्वारा
आसम्	६.	हो गया	हृतमतिः	११.	अपहरण की गई बुद्धि वाला और
उत	७.	फिर	विषये	१२.	विषयों में
पञ्चसहस्र	९.	पांच हजार	अर्थ	१३.	सत्य
सर्गः ।	८.	सन्तानों के रूप में हो गया	भावः ॥	१४.	बुद्धि समझने वाला मैं

श्लोकार्थ—मैं अकेला तपस्या में लीन था। तदनन्तर जल में मछली का सङ्ग होने से पचास हो गया। फिर सन्तान के रूप में पांच हजार हो गया। माया के गुणों के द्वारा अपहरण की गई बुद्धि वाला और विषयों में सत्य बुद्धि समझने वाला मैं लोक और परलोक में मनोरथों का अन्त नहीं पा रहा हूँ॥

त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

एवं वसन् गृहे कालं विरक्तो न्यासमास्थितः ।
वनं जगामानुययुस्तत्पत्न्यः पतिदेवताः ॥५३॥

पदच्छेद— एवम् वसन् गृहे कालम् विरक्तः न्यासम् आस्थितः ।
वनम् जगाम अनुययुः तत् पत्न्यः पति देवताः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	वनम्	८.	वन में
वसन्	४.	रहते हुए (उन्होंने)	जगाम	९.	चले गये
गृहे	३.	घर में	अनुययुः	१४.	अनुसरण किया
कालम्	२.	कुछ समय तक	तत्	१२.	उनकी
विरक्तः	५.	विरक्त होकर	पत्न्यः	१३.	पत्नियों ने (उनका)
न्यासम्	६.	संन्यास	पति	१०.	पति को ही
आस्थितः ।	७.	ले लिया (और)	देवताः ॥	११.	देवता मानने वाली

श्लोकार्थ—इस प्रकार कुछ समय तक घर में रहते हुए उन्होंने विरक्त होकर संयास ले लिया और वन में चले गये । पति को ही देवता मानने वाली उनकी पत्नियों ने भी उनका अनुसरण किया ॥

चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

तत्र तप्त्वा तपस्तीक्ष्णमात्मकर्शनमात्मवान् ।
सहैवाग्निभिरात्मानं युयोज परमात्मनि ॥५४॥

पदच्छेद— तत्र तप्त्वा तपः तीक्ष्णम् आत्मकर्शनम् आत्मवान् ।
सह एव अग्निभिः आत्मानम् युयोज परम आत्मनि ॥

शब्दार्थ—

तत्र	२.	वहां वन में जाकर	आत्मवान्	१.	संयमी सौभरि (मुनि ने)
तप्त्वा	५.	करके	सह एव	९.	साथ ही
तपः	४.	तपस्या	अग्निभिः	८.	अग्नियों के
तीक्ष्णम्	३.	घोर	आत्मानम्	१०.	अपने आप को
आत्म	६.	शरीर को	युयोज	१२.	लीन कर दिया
कर्शनम् ।	७.	सुखा दिया (और)	परम आत्मनि ॥	११.	परमात्मा में

श्लोकार्थ—संयमी सौभरि मुनि ने वहां वन में जाकर घोर तपस्या करके शरीर को सुखा दिया और अग्नियों के साथ अपने आपको परमात्मा में लीन कर दिया ॥

पञ्चपञ्चाशत्तम श्लोकः

ताः स्वपत्युर्महाराज निरीक्ष्याध्यात्मिकीं गतिम् ।
अन्वीयुस्तत्प्रभावेण अग्निं शान्तमिवार्चिषः ॥५५॥

पदच्छेद— ताः स्वपत्युः महाराज निरीक्ष्य अध्यात्मिकीम् गतिम् ।
अन्वीयुः तत् प्रभावेण अग्निम् शान्तम् इव अर्चिषः ॥

शब्दार्थ—

ताः	२.	वे रानियाँ भी	अन्वीयुः	९.	सती होकर उनमें लीन हो गयीं
स्वपत्युः	३.	अपने पति की	तत्	७.	उनके
महाराज	१.	हे महाराज !	प्रभावेण	८.	प्रभाव से
निरीक्ष्य	६.	देखकर	अग्निम्	१२.	अग्नि में
आध्यात्मिकीम्	४.	आध्यात्मिक	शान्तम्	१३.	शान्त हो जाती हैं ।
गतिम् ।	५.	गति को	इव	१०.	जैसे
			अर्चिषः ।	११.	ज्वालायें

श्लोकार्थ—हे महाराज परीक्षित् ! वे रानियाँ भी अपने पति की आध्यात्मिक गति को देखकर उनके प्रभाव से सती होकर उनमें लीन हो गयीं जैसे ज्वालायें अग्नि में शान्त हो जाती हैं ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे
सौभर्याख्याने षष्ठः अध्यायः ॥६॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

सप्तमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—मान्धातुः पुत्रप्रवरो योऽम्बरीषः प्रकीर्तितः।
पितामहेन प्रवृतो यौवनाश्वश्च तत्सुतः।
हारीतस्तस्य पुत्रोऽभून्मान्धातृप्रवरा इमे ॥१॥

पदच्छेद— मान्धातुः पुत्र प्रवरः यः अम्बरीषः प्रकीर्तितः।
पितामहेन प्रवृतः यौवनाश्वः च तत् सुतः।
हारीतः तस्य पुत्रः अभूत् मान्धातृ प्रवराः इमे ॥

शब्दार्थः—

मान्धातुः	१.	मान्धाता के	च तत्	९.	और उनका
पुत्र	२.	पुत्रों में	सुतः।	१०.	पुत्र
प्रवरः	३.	सबसे श्रेष्ठ	हारीतः	१४.	हारीत
यः	४.	जो	तस्य	१२.	उसका
अम्बरीषः	५.	अम्बरीष	पुत्रः	१३.	पुत्र
प्रकीर्तितः	६.	कहे गये हैं (उन्हें)	अभूत्	१५.	हुआ
पितामहेन	७.	उनके दादा (युवनाश्व के)	मान्धातृ	११.	मान्धाता के
प्रवृतः	८.	पुत्र रूप में स्वीकार कर लिया।	प्रवराः	१८.	वंश में अन्य गोत्रों के चलाने वाले हुए
यौवनाश्वः	११.	यौवनाश्व हुआ	इमे ॥	१६.	यह

श्लोकार्थ—मान्धाता के पुत्रों में सबसे श्रेष्ठ जो अम्बरीष कहे गये हैं, उन्हें उनके दादा युवनाश्व के रूप में स्वीकार कर लिया। और उनका पुत्र यौवनाश्व हुआ। उसका पुत्र हारीत हुआ। यह मान्धाता के वंश में अन्य गोत्रों के चलाने वाले हुये ॥

द्वितीयः श्लोकः

नर्मदा भ्रातृभिर्दत्ता पुरुकुत्साय योरगैः।
तया रसातलं नीतो भुजगेन्द्रप्रयुक्तया ॥२॥

पदच्छेद— नर्मदा भ्रातृभिः दत्ता पुरुकुत्साय या उरगैः।
तया रसातलम् नीतः भुजगेन्द्र प्रयुक्तया ॥

शब्दार्थ—

नर्मदा	२.	नर्मदा को	उरगैः।	३.	नाग
भ्रातृभिः	४.	भाइयों ने	तया	७.	वह नर्मदा
दत्ता	६.	दिया था	रसातलम् नीतः	१०.	रसातल में ले गई
पुरुकुत्साय	५.	पुरुकुत्स को	भुजगेन्द्र	८.	नागराज वासुकि की
या	१.	जिस	प्रयुक्तया ॥	९.	आज्ञा से (अपने पति को)

श्लोकार्थ—जिस नर्मदा को नागभाइयों ने पुरुकुत्स को दिया था, वह नर्मदा नागराज वासुकि की आज्ञा से अपने पति को रसातल में ले गई ॥

तृतीयः श्लोकः

गन्धर्वानवधीत् तत्र वध्यान् वै विष्णुशक्तिधृक् ।
नागाल्लब्धवरः सर्पादभयं स्मरतामिदम् ॥३॥

पदच्छेद— गन्धर्वान् अवधीत् तत्र वध्यान् वै विष्णु शक्ति धृक् ।
नागात् लब्धवरः सर्पाद् अभयम् स्मरताम् इदम् ॥

शब्दार्थ—

गन्धर्वान्	५. गन्धर्वो को	नागात्	७. नागों से
अवधीत्	६. मार डाला (और)	लब्धवरः	८. वरदान को प्राप्त किया
तत्र	१. उन्होंने वहाँ पाताल में	सर्पाद् अभयम्	११. सर्पों से निर्भय हो जायेगा
वध्यान् वै	४. वध करने योग्य	स्मरताम्	१०. स्मरण करेगा वह
विष्णु	२. भगवान् की	इदम् ॥	९. जो इस प्रसङ्ग का
शक्तिधृक् ।	३. शक्ति से सम्पन्न होकर		

श्लोकार्थ—उन्होंने वहाँ पाताल में भगवान् की शक्ति से सम्पन्न होकर वध करने योग्य गन्धर्वों को मार डाला। और नागों से वरदान को प्राप्त किया। जो इस प्रसङ्ग का स्मरण करेगा, वह नागों से निर्भय हो जायेगा ॥

चतुर्थः श्लोकः

त्रसद्दस्युः पौरुकुत्सो योऽनरण्यस्य देहकृत् ।
हर्यश्वस्तत्सुतस्तस्मादरुणोऽथ त्रिबन्धनः ॥४॥

पदच्छेद— त्रसद्दस्युः पौरुकुत्सः यः अनरण्यस्य देहकृत् ।
हर्यश्वः तत्सुतः तस्मात् अरुणः अथ त्रिबन्धनः ॥

शब्दार्थ—

त्रसद्दस्युः	२. त्रसद्दस्यु हुआ	हर्यश्व	८. हर्यश्व
पौरुकुत्सः	१. पुरुकुत्स का पुत्र	तत्सुतः	७. उसका पुत्र
यः	३. जो	तस्मात्	९. उससे
अनरण्यस्य	४. अनरण्य का	अरुणः	१०. अरुण
देह	५. पिता	अथ	११. और उससे
कृत् ।	६. हुआ	त्रिबन्धनः ॥	१२. त्रिबन्धन हुआ

श्लोकार्थ—पुरुकुत्स का पुत्र त्रसद्दस्यु हुआ, जो अनरण्य का पिता हुआ। उसका पुत्र हर्यश्व, उससे अरुण और उससे त्रिबन्धन हुआ ॥

पञ्चमः श्लोकः

तस्य सत्यव्रतः पुत्रस्त्रिशङ्कुरिति विश्रुतः ।
प्राप्तश्चाण्डालतां शापाद् गुरोः कौशिकतेजसा ॥५॥

पदच्छेद— तस्य सत्यव्रतः पुत्रः त्रिङ्शकुः इति विश्रुतः ।
प्राप्तः चाण्डालताम् शापात् गुरोः कौशिक तेजसा ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१. उसका	प्राप्तः	१०. प्राप्त हुआ (वह)
सत्यव्रतः	३. सत्यव्रत हुआ (जो)	चाण्डालताम्	९. चाण्डालता को
पुत्रः	२. पुत्र	शापात्	८. शाप से
त्रिशङ्कुः	४. त्रिशङ्कु	गुरोः	७. गुरु के
इति	५. इस नाम से	कौशिक	११. विश्वामित्र के
विश्रुतः ।	६. प्रसिद्ध हुआ	तेजसा ॥	१२. प्रभाव से (स्वर्ग में गया)

श्लोकार्थ—उसका पुत्र त्रिशङ्कु इस नाम से प्रसिद्ध हुआ । जो गुरु के शाप से चाण्डालता को प्राप्त हुआ । वह विश्वामित्र के प्रभाव से (स्वर्ग में गया)

षष्ठः श्लोकः

सशरीरो गतः स्वर्गमद्यापि दिवि दृश्यते ।
पातितोऽवाक् शिरा देवैस्तेनैव स्तम्भितो बलात् ॥६॥

पदच्छेद— सशरीरः गतः स्वर्गम् अद्य अपि दिवि दृश्यते ।
पातितः अवाक् शिराः देवैः तेन एव स्तम्भितः बलात् ॥

शब्दार्थ—

सशरीरः	१. वह शरीर सहित	अवाक्	८. नीचे को
गतः	३. चला गया (जो)	शिरः	९. शिर किये हुए
स्वर्गम्	२. स्वर्ग में	देवैः	७. देवताओं के द्वारा
अद्य	४. आज	तेन	११. विश्वामित्र ने
अपि दिवि	५. भी आकाश में	एव	१२. ही (उसे अपने)
दृश्यते ।	६. दिखाई पड़ता है (वह)	स्तम्भितः	१४. स्थिर कर दिया
पतितः	१०. गिरा दिया गया	बलात् ॥	१३. तपोबल से (आकाश में)

श्लोकार्थ—वह स्वर्ग में सशरीर चला गया । जो आज भी आकाश में दिखाई पड़ता है । वह देवताओं के द्वारा नीचे को शिर करके गिरा दिया गया । विश्वामित्र ने उसे अपने तपोबल से आकाश में स्थिर कर दिया ॥

सप्तमः श्लोकः

त्रैशङ्कवो हरिश्चन्द्रो विश्वामित्रवसिष्ठयोः ।
यन्निमित्तमभूद् युद्धं पक्षिणोर्बहुवार्षिकम् ॥७॥

पदच्छेद— त्रैशङ्कवः हरिश्चन्द्रः विश्वामित्र वसिष्ठयोः ।
यत् निमित्तम् अभूत् युद्धम् पक्षिणोः बहुवार्षिकम् ॥

शब्दार्थ—

त्रैशङ्कवः	१. त्रिशङ्कु के पुत्र	निमित्तम्	४. कारण
हरिश्चन्द्रः	२. हरिश्चन्द्र थे	अभूत्	१०. हुआ
विश्वामित्र	५. विश्वामित्र और	युद्धम्	९. युद्ध
वसिष्ठयोः ।	६. वशिष्ठ का	पक्षिणोः	८. पक्षी के रूप में
यत्	३. जिनके	बहुवार्षिकम् ॥	७. बहुत वर्षों तक

श्लोकार्थ—त्रिशङ्कु के पुत्र हरिश्चन्द्र थे। जिनके कारण विश्वामित्र और वशिष्ठ का बहुत वर्षों तक पक्षी के रूप में युद्ध हुआ ॥

अष्टमः श्लोकः

सोऽनपत्यो विषण्णात्मा नारदस्योपदेशतः ।
वरुणं शरणं यातः पुत्रो मे जायतां प्रभो ॥८॥

पदच्छेद— सः अनपत्यः विषण्ण आत्मा नारदस्य उपदेशतः ।
वरुणम् शरणम् यातः पुत्रः मे जायताम् प्रभो ॥

शब्दार्थ—

सः	१. वे हरिश्चन्द्र	वरुणम्	७. वरुण देवता की
अनपत्यः	२. सन्तान रहित होने से	शरणम्	८. शरण में
विषण्ण	३. उदास	यातः	९. गये (और बोले)
आत्मा	४. मन रहते थे	पुत्रः	१२. पुत्र
नारदस्य	५. नारद के	मे	११. मुझे
उपदेशतः ।	६. उपदेश से	जायताम्	१३. प्राप्त हो
		प्रभो ॥	१०. हे प्रभो !

श्लोकार्थ—वे हरिश्चन्द्र सन्तान रहित होने से उदास मन रहते थे। नारद के उपदेश से वरुण देवता की शरण में गये और बोले हे—प्रभो ! मुझे पुत्र प्राप्त हो ॥

नवमः श्लोकः

यदि वीरो महाराज तेनैव त्वां यजे इति ।
तथेति वरुणेनास्य पुत्रो जातस्तु रोहितः ॥९॥

पदच्छेद— यदि वीरः महाराज तेन एव त्वाम् यजे इति ।
तथा इति वरुणेन अस्य पुत्रः जातः तु रोहितः ॥

शब्दार्थ—

यदि	२.	यदि	इति ।	८.	ऐसा कहा
वीरः	३.	वीर (पुत्र होगा तो)	तथा इति	१०.	अच्छा ऐसा ही हो
महाराज	१.	हे महाराज !	वरुणेन	९.	वरुण बोले
तेन	४.	उस	अस्य	११.	उस हरिश्चन्द्र को
एव	५.	ही से	पुत्रः	१३.	पुत्र
त्वाम्	६.	तुम्हारा	जातः तु	१४.	उत्पन्न हुआ
यजे	७.	यजन करूंगा (राजा ने)	रोहितः ॥	१२.	रोहित नाम का

श्लोकार्थ—हे महाराज ! यदि वीर पुत्र होगा तो उसी से तुम्हारा यजन करूंगा (राजा ने) ऐसा कहा । वरुण बोले—अच्छा ऐसा ही हो । उस राजा हरिश्चन्द्र को रोहित नामका पुत्र उत्पन्न हुआ ॥

दशमः श्लोकः

जातः सुतो ह्यनेनाङ्ग मां यजस्वेति सोऽब्रवीत् ।
यदा पशुर्निर्दशः स्यादथ मेध्यो भवेदिति ॥१०॥

पदच्छेद— जातः सुतः हि अनेन अङ्ग माम् यजस्व इति सः अब्रवीत् ।
यदा पशुः निर्दशः स्यात् अथ मेध्यः भवेत् इति ॥

शब्दार्थ—

जातः	४.	उत्पन्न हो गया	यदा	१०.	हरिश्चन्द्र ने कहा जब
सुतः	३.	पुत्र	पशुः	११.	यज्ञ पशु (रोहित)
हि अनेन	६.	इस लिए इस से	निर्दशः	१२.	दस दिनों से अधिक का
अङ्ग	५.	हे महाराज !	स्यात्	१३.	हो जायेगा
माम्	७.	मेरा	अथ	१४.	तब
यजस्व इति	८.	यजन करो	मेध्यः	१५.	पवित्र
सः	१.	उस वरुण ने	भवेत्	१६.	होगा
अब्रवीत् ।	२.	कहा	इति ॥	९.	इस पर हरिश्चन्द्र ने

श्लोकार्थ—उस वरुण ने कहा—पुत्र उत्पन्न हो गया । हे महाराज ! इससे मेरा यजन करो । इस पर हरिश्चन्द्र ने कहा—जब यज्ञ पशु दस दिनों से अधिक का हो जायेगा तब पवित्र होगा ॥

एकादशः श्लोकः

निर्दशे च स आगत्य यजस्वेत्याह सोऽब्रवीत् ।
दन्ताः पशोर्यज्जायेरन्नथ मेध्यो भवेदिति ॥११॥

पदच्छेद— निर्दशे च सः आगत्य यजस्व इति आह सः अब्रवीत् ।
दन्ताः पशोः यत् जायेरन् अथ मेध्यः भवेत् इति ॥

शब्दार्थ—

निर्दशे	२.	दस दिनों से अधिक होने पर	अब्रवीत् ।	१०.	कहा कि
च	१.	और	दन्ताः	१२.	दाँत
सः	३.	वरुण ने	पशोः	११.	जब पशु के
आगत्य	४.	आकर	यत् जायेरन्	१३.	उत्पन्न हो जायेंगे
यजस्व	५.	यजन करो	अथ	१४.	तब
इति	६.	इस प्रकार	मेध्यः	१५.	पवित्र
आह	७.	कहा	भवेत्	१६.	होगा
सः	८	उस राजा ने उनसे	इति ॥	९.	ऐसा

श्लोकार्थ—और दस दिनों से अधिक होने पर वरुण ने आकर यजन करो इस प्रकार कहा । उस राजा ने उनसे ऐसा कहा कि जब पशु के दाँत उत्पन्न हो जायेंगे तब पवित्र होगा ।

द्वादशः श्लोकः

जाता दन्ता यजस्वेति स प्रत्याहाथ सोऽब्रवीत् ।
यदा पतन्त्यस्य दन्ता अथ मेध्यो भवेदिति ॥१२॥

जाताः दन्ताः यजस्व इति सः प्रत्याह अथ सः अब्रवीत् ।
यदा पतन्त्यस्य दन्ता अथ मेध्यः भवेत् इति ॥

शब्दार्थ—

जाताः	२.	उत्पन्न हो जाने पर	यदा	८.	जब (दूध के)
दन्ताः	१.	दाँत	पतन्तिअस्य	१०.	गिर जायेंगे
यजस्व इति	४.	यजन करो ऐसा	दन्ताः	९	दाँत
सः	३	उस वरुण ने	अथ	११.	तब
प्रत्याह अथ	५	आकर कहा तब	मेध्यः	१३.	पवित्र
सः	६.	उस राजा ने उनसे	भवेत्	१४	होगा
अब्रवीत् ।	७.	कहा कि	इति ॥	१२.	यह

श्लोकार्थ—दाँत उत्पन्न हो जाने पर वरुण ने यजन करो ऐसा आकर कहा । तब उस राजा ने उनसे कहा कि जब दूध के दाँत गिर जायेंगे तब यह पवित्र होगा ॥

त्रयोदशः श्लोकः

पशोर्निपतिता दन्ता यजस्वेत्याह सोऽब्रवीत् ।
यदा पशोः पुनर्दन्ता जायन्तेऽथ पशुः शुचिः ॥१३॥

पदच्छेद— पशोः निपतिता दन्ता यजस्व इति आह सः अब्रवीत् ।
यदा पशोः पुनः दन्ता जायन्ते अथ पशुः शुचिः ॥

शब्दार्थ—

पशोः	१. जब यज्ञ पशु के	यदा	८. जब
निपतिताः	३. गिर गये (तब)	पशोः	९. इस पशु के
दन्ताः	२. दाँत	पुनः	१०. फिर से
यजस्व इति	४. वरुण ने आकर यज्ञ करो ऐसा	दन्ताः	११. दाँत
आह	५. कहा	जायन्ते	१२. आ जायेंगे
सः	६. वह राजा	अथ	१३. तब
अब्रवीत् ।	७ बोला	पशुः शुचिः ॥	१४. यह पशु पवित्र होगा

श्लोकार्थ—जब उस पशु के दाँत गिर गये । तब वरुण ने आकर यज्ञ करो ऐसा कहा । वह राजा बोला—जब इस यज्ञ पशु के फिर से दाँत आ जायेंगे तब यह पशु पवित्र होगा ॥

चतुर्दशः श्लोकः

पुनर्जाता यजस्वेति स प्रत्याहाथ सोऽब्रवीत् ।
साम्नाहिको यदा राजन् राजन्योऽथ पशुः शुचिः ॥१४॥

पदच्छेद— पुनः जाता यजस्व इति सः प्रत्याह अथ सः अब्रवीत् ।
साम्नाहिकः यदा राजन् राजन्यः अथ पशुः शुचिः ॥

शब्दार्थ—

पुनः	१. फिर से दाँत	साम्नाहिकः	१०. कवच धारण करेगा
जाता	२. उग आने पर	यदा	९. जब
यजस्वेति	५. यज्ञ करो	राजन्	८. हे वरुण जी !
सः	३. उस वरुण ने आकर	राजन्यः	१२. क्षत्रिय
प्रत्याह	४. कहा कि	अथ	११. तब
अथ	६. तदनन्तर	पशुः	१३. पशु
सः अब्रवीत् ।	७. वह राजा बोला	शुचिः ॥	१४. शुद्ध होगा

श्लोकार्थ—फिर से दाँत उग आने पर उस वरुण ने आकर कहा कि यज्ञ करो । तदनन्तर वह राजा बोला—हे वरुण जी ! जब कवच धारण करेगा तब क्षत्रिय पशु शुद्ध होगा ॥

पञ्चदशः श्लोकः

इति पुत्रानुरागेण स्नेहयन्त्रितचेतसा ।
कालं वञ्चयता तं तमुक्तो देवस्तमैक्षत ॥१५॥

पदच्छेद— इति पुत्र अनुरागेण स्नेह यन्त्रित चेतसा ।
कालम् वञ्चयता तम् तम् उक्तः देवः तम् ऐक्षत ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	कालम्	७.	समय को
पुत्र	१.	पुत्र के	वञ्चयता	८.	टालते हुए
अनुरागेण	३.	प्रेम के कारण	तम्	९.	जो
स्नेह	४.	स्नेह रूपी	तम्	१०.	जो समय
यन्त्रित	५	यन्त्र में जकड़े हुए	उक्तः	११.	बताते
चेतसा ।	६.	चित्त वाले (राजा ने)	देवः तम्	१२.	उसकी वरुण देवता
			ऐक्षत ॥	१३.	प्रतीक्षा करते थे

श्लोकार्थ — इस प्रकार पुत्र के प्रेम के कारण स्नेह रूपी यन्त्र में जकड़े हुए चित्त वाले राजा समय को टालते हुए जो जो समय बताते उसकी वरुण देवता प्रतीक्षा करते ॥

षोडशः श्लोकः

रोहितस्तदभिज्ञाय पितुः कर्म चिकीर्षितम् ।
प्राणप्रेप्सुर्धनुष्पाणिररण्यं प्रत्यपद्यत ॥१६॥

पदच्छेद — रोहितः तत् अभिज्ञाय पितुः कर्म चिकीर्षितम् ।
प्राण प्रेप्सुः धनुष्पाणिः अरण्यम् प्रत्यपद्यत ॥

शब्दार्थ —

रोहितः	१.	रोहित	प्राण	७.	प्राण
तत्	३.	उस	प्रेप्सुः	८.	बचाने की इच्छा से
अभिज्ञाय	६.	जानकर	धनुष्पाणिः	९.	धनुष लेकर हाथ में
पितुः	२.	पिता के	अरण्यम्	१०.	वन में
कर्म	४.	कर्म को	प्रति	११.	चला
चिकीर्षितम् ।	५.	जो वह करना चाहते थे	अपद्यत ॥	१२.	गया

श्लोकार्थ—रोहित पिता के उस कर्म को जो वह करना चाहते थे, जानकर प्राण बचाने की इच्छा से हाथ में धनुष लेकर वन में चला गया ॥

सप्तदश श्लोकः

पितरं वरुणग्रस्तं श्रुत्वा जातमहोदरम् ।
रोहितो ग्राममेयाय तमिन्द्रः प्रत्यषेधत ॥१७॥

पदच्छेद— पितरम् वरुण ग्रस्तम् श्रुत्वा जात महोदरम् ।
रोहितः ग्रामम् एयाय तम् इन्द्रः प्रत्यषेधत ॥

शब्दार्थ—

पितरम्	१. पिता को	रोहितः	७. रोहित
वरुण	२. वरुण के द्वारा	ग्रामम्	८. नगर की ओर
ग्रस्तम्	३. पीड़ित	एयाय	९. चल पड़ा
श्रुत्वा	६. सुनकर	तम्	१०. उसे
जात	५. व्याधि से युक्त	इन्द्रः	११. इन्द्र ने
महोदरम् ।	४. जलोधर	प्रत्यषेधत ॥	१२. रोक दिया

श्लोकार्थ— पिता को वरुण के द्वारा पीड़ित, जलोधर व्याधि से युक्त सुनकर रोहित नगर की ओर चल पड़ा। उसे इन्द्र ने रोक दिया ॥

अष्टादशः श्लोकः

भूमेः पर्यटनं पुण्यं तीर्थक्षेत्रनिषेवणैः ।
रोहितायादिशच्छक्रः सोऽप्यरण्येऽवसत् समाम् ॥१८॥

पदच्छेद— भूमेः पर्यटनम् पुण्यम् तीर्थ क्षेत्र निषेवणैः ।
रोहिताय आदिशत् शक्रः सः अपि अरण्ये अवसत् समाम् ॥

शब्दार्थ—

भूमेः	८. पृथ्वी का	रोहिताय	२. रोहित को
पर्यटनम्	९. भ्रमण करो	आदिशत्	३. आदेश दिया कि
पुण्यम्	४. पवित्र	शक्रः	१. इन्द्र ने
तीर्थ	५. तीर्थों और	सः अपि	१०. वे रोहित भी
क्षेत्र	६. क्षेत्रों का	अरण्ये	१२. वन में ही
निषेवणैः ।	७. सेवन करते हुए	अवसत्	१३. रह गये
		समाम् ॥	११. एक वर्ष तक

श्लोकार्थ— इन्द्र ने रोहित को आदेश दिया कि पवित्र तीर्थों और क्षेत्रों का सेवन करते हुए पृथ्वी का भ्रमण करो। रोहित भी एक वर्ष तक वन में ही रह गये ॥

एकोनविंशः श्लोकः

एवं द्वितीये तृतीये चतुर्थे पञ्चमे तथा ।
अभ्येत्याभ्येत्य स्थविरो विप्रो भूत्वाऽऽह वृत्रहा ॥१९॥

पदच्छेद— एवम् द्वितीये तृतीये चतुर्थे पञ्चमे तथा ।
अभ्येत्य अभ्येत्य स्थविरः विप्रः भूत्वा आह वृत्रहा ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	अभ्येत्य	७. आ
द्वितीये	२. दूसरे	अभ्येत्य	८. आकर
तृतीये	३. तीसरे	स्थविरः	९. वृद्ध
चतुर्थे	४. चौथे	विप्रः	१०. ब्राह्मण
पञ्चमे	६. पाँचवें (वर्ष भी)	भूत्वा	११. होकर
तथा ।	५. तथा	आह	१३. कहा
		वृत्रहा ॥	१२. इन्द्र ने

श्लोकार्थ—इस प्रकार दूसरे तीसरे चौथे तथा पाँचवे वर्ष भी आ आकर वृद्ध ब्राह्मण होकर इन्द्र ने कहा ॥

विंशः श्लोकः

षष्ठं संवत्सरं तत्र चरित्वा रोहितः पुरीम् ।
उपव्रजन्नजीगर्तादक्रीणान्मध्यमं सुतम् ॥२०॥

पदच्छेद— षष्ठम् संवत्सरम् तत्र चरित्वा रोहितः पुरीम् ।
उपव्रजन् अजीगर्तात् अक्रीणात् मध्यमम् सुतम् ॥

शब्दार्थ—

षष्ठम्	१. छठे	उपव्रजन्	६. लौटते हुए
संवत्सरम्	२. वर्ष	अजीगर्तात्	८. अजीगर्त से उनके
तत्र	३. वहाँ वन में	अक्रीणात्	११. खरीद लिया
चरित्वा	४. रह कर	मध्यमम्	९. मँझले
रोहितः	७. रोहित ने	सुतम् ॥	१०. पुत्र शुनः शेप को
पुरीम् ।	५. नगर को		

श्लोकार्थ—छठे वर्ष वहाँ वन में रहकर नगर को लौटते हुए रोहित ने अजीगर्त से उनके मँझले पुत्र शुनः शेप को खरीद लिया ॥

एकविंशः श्लोकः

शुनःशेपं पशुं पित्रे प्रदाय समवन्दत ।
ततः पुरुषमेधेन हरिश्चन्द्रो महायशाः ॥२१॥

पदच्छेद— शुनः शेपम् पशुम् पित्रे प्रदाय समवन्दत ।
ततः पुरुष मेधेन हरिश्चन्द्रः महायशाः ॥

शब्दार्थ—

शुनः शेपम्	१.	उस शुनः शेप रूपी	ततः	६.	तदनन्तर
पशुम्	२.	पशु को	पुरुष	९.	पुरुष
पित्रे	३.	पिता को	मेधेन	१०.	मेध यज्ञ किया
प्रदाय	४.	देकर	हरिश्चन्द्रः	८.	हरिश्चन्द्र ने
समवन्दत ।	५.	प्रणाम किया	महायशाः ॥	७.	महायशस्वी

श्लोकार्थ—उस शुनः शेप रूपी पशु को पिता को देकर प्रणाम किया । तदनन्तर महायशस्वी हरिश्चन्द्र ने पुरुष मेध यज्ञ किया ॥

द्वाविंशः श्लोकः

मुक्तोदरोऽयजद् देवान् वरुणादीन् महत्कथः ।
विश्वामित्रोऽभवत् तस्मिन् होता चाध्वर्युरात्मवान् ॥२२॥

पदच्छेद— मुक्त उदरः अयजत् देवान् वरुण आदीन् महत् कथः ।
विश्वामित्रः अभवत् तस्मिन् होता च अध्वर्युः आत्मवान् ॥

शब्दार्थ—

मुक्त	४.	छूट कर	विश्वामित्रः	१०.	विश्वामित्र
उदरः	३.	महोदर रोग से	अभवत्	१२.	हुए
अयजत्	८.	यजन किया	तस्मिन्	९.	उस यज्ञ में
देवान्	७.	देवताओं का	होता	११.	होता
वरुण	५.	वरुण	च	१३.	और
आदीन्	६.	आदि	अध्वर्युः	१५.	अध्वर्यु हुए
महत्	१.	श्रेष्ठ	आत्मवान् ॥	१४.	संयमी (जमदग्नि)
कथः ।	२.	चरित्र वाले (राजा हरिश्चन्द्र ने)			

श्लोकार्थ—श्रेष्ठ चरित्र वाले राजा हरिश्चन्द्र ने महोदर रोग से छूट कर वरुण आदि देवताओं का यजन किया । उस यज्ञ में विश्वामित्र होता हुए । और संयमी (जमदग्नि) अध्वर्यु हुए ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

जमदग्निरभूद् ब्रह्मा वसिष्ठोऽयास्यसामगः ।
तस्मै तुष्टो ददाविन्द्रः शातकौम्भमयं रथम् ॥२३॥

पदच्छेद— जमदग्निः अभूत् ब्रह्मा वसिष्ठः अयास्यसामगः ।
तस्मै तुष्टः ददौ इन्द्रः शातकौम्भ मयम् रथम् ॥

शब्दार्थ—

जमदग्निः	१. जमदग्नि अध्वर्यु		तस्मै	९. उस राजा को	
अभूत्	२. हुए		तुष्टः	८. प्रसन्न होकर	
ब्रह्मा	४. ब्रह्मा		ददौ	१२. दिया	
वसिष्ठः	३. वसिष्ठ हुए		इन्द्रः	७. इन्द्र ने	
अयास्य	५. अयास्य मुनि		शातकौम्भमयम्	१०. एक सुवर्णमय	
सामगः ।	६. सामगान करने वाले उद्गाता हुए		रथम् ॥	११. रथ	

श्लोकार्थ—जमदग्नि अध्वर्यु हुए । ब्रह्मा वसिष्ठ हुए । अयास्य मुनि सामगान करने वाले उद्गाता हुए । इन्द्र ने प्रसन्न होकर उस राजा को एक सुवर्णमय रथ दिया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

शुनःशेपस्य माहात्म्यमुपरिष्टात् प्रचक्ष्यते ।
सत्यसारां धृतिं दृष्ट्वा सभार्यस्य च भूपतेः ॥२४॥

पदच्छेद— शुनः शेपस्य माहात्म्यम् उपरिष्टात् प्रचक्ष्यते ।
सत्य साराम् धृतिम् दृष्ट्वा सभार्यस्य च भूपतेः ॥

शब्दार्थ—

शुनः शेपस्य	१. शुनः शेप का	साराम्	८. तत्त्व वाले
माहात्म्यम्	२. माहात्म्य	धृतिम्	९. धैर्य को
उपरिष्टात्	३. आगे चल कर	दृष्ट्वा	१०. देखकर (मुनि प्रसन्न हुए)
प्रचक्ष्यते ।	४. बतायेंगे	सभार्यस्य	५. पत्नी सहित
सत्य	७. सत्य रूप	च भूपतेः ॥	६. राजा हरिश्चन्द्र के

श्लोकार्थ—शुनः शेप का माहात्म्य आगे चल कर बतायेंगे । पत्नी सहित राजा हरिश्चन्द्र के सत्यरूप तत्त्व वाले धैर्य को देखकर विश्वामित्र मुनि प्रसन्न हुए ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

विश्वामित्रो भृशं प्रीतो ददावविहतां गतिम् ।
मनः पृथिव्यां तामद्भिस्तेजसापोऽनिलेन तत् ॥२५॥

पदच्छेद— विश्वामित्रः भृशम् प्रीतः ददौ अविहताम् गतिम् ।
मनः पृथिव्याम् ताम् अद्भिः तेजसा अपः अनिलेन तत् ॥

शब्दार्थ—

विश्वामित्रः	१. विश्वामित्र ने	मनः	७.	अपने मन को
भृशम्	२. अत्यन्त	पृथिव्याम्	८.	पृथ्वी में
प्रीतः	३. प्रसन्न होकर	ताम् अद्भिः	९.	उस पृथ्वी को जल में
ददौ	६. दिया (तब राजा ने)	तेजसा	११.	अग्नि में (और)
अविहताम्	४. अविनाशी	अपः	१०.	जल को
गतिम् ।	५. ज्ञान का उपदेश	अनिलेन	१३.	वायु में (लीन किया)
		तत् ॥	१२.	अग्नि को

श्लोकार्थ—विश्वामित्र ने अत्यन्त प्रसन्न होकर अविनाशी ज्ञान का उपदेश दिया । तब राजा ने अपने मन को पृथ्वी में, उस पृथ्वी को जल में, जल को अग्नि में और अग्नि को वायु में लीन किया ॥

षड्विंशः श्लोकः

खे वायुं धारयंस्तच्च भूतादौ तं महात्मनि ।
तस्मिञ्ज्ञानकलां ध्यात्वा तयाज्ञानं विनिर्दहन् ॥२६॥

पदच्छेद— खे वायुम् धारयन् तत् च भूत आदौ तम् महात्मनि ।
तस्मिन् ज्ञान कलाम् ध्यात्वा तया ज्ञानम् विनिर्दहन् ॥

शब्दार्थ—

खे	२. आकाश में	तस्मिन्	९.	उसमें
वायुम्	१. वायुम् को	ज्ञान	१०.	ज्ञान
धारय	३. स्थिर करके	कलाम्	११.	कला का
तत्	४. उस आकाश को	ध्यात्वा	१२.	ध्यान करके
च	८. और	तया	१३.	उससे
भूत आदौ	५. अहंकार में	ज्ञानम्	१४.	अज्ञान को
तम्	६. और उस अहंकार को	विनिर्दहन् ॥	१५.	जला दिया
महात्मनि ।	७. महत्तत्त्व में लीन किया			

श्लोकार्थ—वायु को आकाश में स्थिर करके उस आकाश को अहंकार में और उस अहंकार को महत्तत्त्व में लीन किया। और उसमें ज्ञान कला का ध्यान करके उससे अज्ञान को जला दिया ॥

सप्तविंशः श्लोकः

हित्वा तां स्वेन भावेन निर्वाणसुखसंविदा ।
अनिर्देश्याप्रतर्क्येण तस्थौ विध्वस्तबन्धनः ॥२७॥

पदच्छेद— हित्वा ताम् स्वेन भावेन निर्वाण सुख संविदा ।
अनिर्देश्य अप्रतर्क्येण तस्थौ विध्वस्त बन्धनः ॥

शब्दार्थ—

हित्वा	७.	छोड़कर	संविदा ।	३.	अनुभव से
ताम्	६.	उस ज्ञान कला को	अनिर्देश्य	८.	न बताने योग्य
स्वेन	४.	अपने	अप्रतर्क्येण	९.	न अनुमान करने योग्य स्वरूप में
भावेन	५.	भाव के द्वारा	तस्थौ	१२.	स्थित हो गये
निर्वाण	१.	निर्वाण	विध्वस्त	११.	मुक्त होकर
सुख	२.	सुख के	बन्धनः ॥	१०.	बन्धनों से

श्लोकार्थ—निर्वाण सुख के अनुभव से अपने भाव के द्वारा उस ज्ञान कला को छोड़कर न बताने योग्य और न अनुभव करने योग्य स्वरूप में बन्धनों से मुक्त होकर स्थित हो गये ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे हरिश्चन्द्र-उपाख्यानं नाम सप्तमः अध्यायः ॥७॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

अष्टमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

हरितो रोहितसुतश्चम्पस्तस्माद् विनिर्मिता ।
चम्पापुरी सुदेवोऽतो विजयो यस्य चात्मजः ॥१॥

पदच्छेद— हरितः रोहित सुतः चम्पः तस्मात् विनिर्मिता ।
चम्पापुरी सुदेवः अतः विजयः यस्य च आत्मजः ॥

शब्दार्थ—

हरितः	३.	हरित था	चम्पापुरी	६.	(उसने) चम्पापुरी नाम की नगरी
रोहित	१.	रोहित का	सुदेवः	९.	सुदेव हुआ
सुतः	२.	पुत्र	अतः	८.	उससे
चम्पः	५.	चम्प हुआ	विजयः	१३.	विजय हुआ
तस्मात्	४.	उससे	यस्य	११.	उसका
विनिर्मिता ।	७.	बसाई	च	१०.	और
			आत्मजः ॥	१२.	पुत्र

श्लोकार्थ—रोहित का पुत्र हरित था । उससे चम्प हुआ । उसने चम्पापुरी नाम की नगरी बसाई । उससे सुदेव हुआ और उसका पुत्र विजय हुआ ॥

द्वितीयः श्लोकः

भरुकस्तत्सुतस्तस्माद् वृकस्तस्यापि बाहुकः ।
सोऽरिभिर्हृतभू राजा सभार्यो वनमाविशत् ॥२॥

पदच्छेद— भरुकः तत् सुतः तस्मात् वृकः तस्य अपि बाहुकः ।
सः अरिभिः हृतभूः राजा सभार्यः वनम् आविशत् ॥

शब्दार्थ—

भरुकः	३.	भरुक हुआ	सः	९.	उससे
तत्	१.	उसका	अरिभिः	१०.	शत्रुओं ने
सुतः	२.	पुत्र	हृतभूः	११.	छीन लिया राज्य को
तस्मात्	४.	उससे	राजा	१२.	वह राजा
वृकः	५.	वृक हुआ	सभार्यः	१३.	पत्नी के साथ
तस्य	६.	उसका	वनम्	१४.	वन में
अपि	७.	भी पुत्र	आविशत्	१५.	चला गया
बाहुकः ।	८.	बाहुक हुआ			

श्लोकार्थ—उसका पुत्र भरुक हुआ । उससे वृक हुआ । उसका भी पुत्र बाहुक हुआ । उससे शत्रुओं ने राज्य छीन लिया । वह राजा पत्नी के साथ वन में चला गया ॥

तृतीय श्लोकः

वृद्धं तं पञ्चतां प्राप्तं महिष्यनु मरिष्यती ।
और्वेण जानताऽऽत्मानं प्रजावन्तं निवारिता ॥३॥

पदच्छेद— वृद्धम् तम् पञ्चताम् प्राप्तम् महिषी अनुमरिष्यती ।
और्वेण जानता आत्मानम् प्रजावन्तम् निवारिता ॥

शब्दार्थ—

वृद्धम्	२.	वृद्ध	मरिष्यती ।	७.	होने के लिए तैयार हुई (किन्तु)
तम्	१.	उस राजा को	और्वेण	८.	और्व मुनि ने
पञ्चताम्	३.	मृत्यु को	जानता	११.	जानकर
प्राप्तम्	४.	प्राप्त हो जाने पर	आत्मानम्	९.	उस रानी को
महिषी	५.	रानी	प्रजावन्तम्	१०.	गर्भवती
अनु	६.	सती	निवारिता ॥	१२.	सती होने से रोक दिया

श्लोकार्थ—उस वृद्ध राजा के मृत्यु को प्राप्त हो जाने पर रानी सती होने के लिए तैयार हुई। किन्तु मुनि ने उस रानी को गर्भवती जानकर सती होने से रोक दिया ॥

चतुर्थः श्लोकः

आज्ञायास्यै सपत्नीभिर्गरो दत्तोऽन्धसा सह ।
सह तेनैव संजातः सगराख्यो महायशाः ॥४॥

पदच्छेद— आज्ञाय अस्यै सपत्नीभिः गरः दत्तः अन्धसा सह ।
सह तेन एव संजातः सगर आख्यः महायशाः ॥

शब्दार्थ—

आज्ञाय	२.	जानकर	सह	९.	साथ
अस्यै	१.	उसे गर्भवती	तेन एव	८.	उसी विष के
सपत्नीभिः	३.	सौतों ने	संजातः	१३.	उत्पन्न हुआ
गरः	६.	विष	सगर	११.	सगर
दत्तः	७.	दे दिया	आख्यः	१२.	नामक पुत्र
अन्धसः	४.	भोजन के	महायशाः ॥	१०.	महायशस्वी
सह ।	५.	साथ			

श्लोकार्थ—उसे गर्भवती जानकर सौतों ने भोजन के साथ विष दे दिया। उसी विष के साथ महायशस्वी सगर नामक पुत्र उत्पन्न हुआ ॥

पञ्चमः श्लोकः

सगरश्चक्रवर्त्यासीत् सागरो यत्सुतैः कृतः ।
यस्तालजङ्घान् यवनाञ्छकान् हैहयबर्बरान् ॥५॥

पदच्छेद— सगरः चक्रवर्ती आसीत् सागरः यत् सुतैः कृतः ।
यः ताल जङ्घान् यवनान् शकान् है हय बर्बरान् ॥

शब्दार्थ—

सगरः	१.	सगर	यः	८.	जिन्होंने
चक्रवर्ती	२.	चक्रवर्ती राजा	तालजङ्घान्	९.	तालजङ्घ
आसीत्	३.	हुए	यवनान्	१०.	यवन
सागरः	६.	समुद्र	शकान्	११.	शक
यत्	४.	जिसके	हैहय	१२.	हैहय और
सुतैः	५.	पुत्रों ने	बर्बरान्	१३.	बर्बर जाति के लोगों को विरूप बना दिया
कृतः ।	७.	बना दिया (और)			

श्लोकार्थ—सगर चक्रवर्ती राजा हुए । जिनके पुत्रों ने समुद्र बना दिया । और जिन्होंने तालजङ्घ यवन, शक, हैहय और बर्बर जाति के लोगों को विरूप बना दिया ॥

षष्ठः श्लोकः

नावधीद् गुरुवाक्येन चक्रे विकृतवेषिणः ।
मुण्डाञ्छ्मश्रुधरान् कांश्चिन्मुक्तकेशार्धमुण्डितान् ॥६॥

पदच्छेद— नावधीद् गुरु वाक्येन चक्रे विकृत वेषिणः ।
मुण्डान्श्मश्रु धरान् कांश्चित् मुक्त केश अर्धमुण्डितान् ॥

शब्दार्थ—

न	३.	नहीं	मुण्डान्	८.	मुंड़वा दिये कुछ को
अवधीत्	४.	वध किया (किन्तु)	श्मश्रुधरान्	९.	डाढ़ी मूछ रखाये कुछ को
गुरु	१.	गुरु के	कांश्चित्	७.	कुछ को
वाक्येन	२.	कहने से (उन्होंने)	मुक्त	१०.	खुले
चक्रे	६.	बना दिया उनका	केश	११.	बालों वाला बना दिया
विकृत वेषिणः ।	५.	विरूप	अर्धमुण्डितान् ॥	१२.	कुछ को आधा मुंड़वा दिया

श्लोकार्थ—गुरु के कहने से उन्होंने उनका वध नहीं किया । किन्तु विरूप बना दिया । कुछ को मुंड़वा दिया, कुछ को दाढ़ी मूछ रखवा दिया, कुछ को खुले बालों वाला बना दिया, और कुछ को आधा मुंड़वा दिया ॥

सप्तमः श्लोकः

अनन्तर्वाससः कांश्चिदबहिर्वाससोऽपरान् ।
सोऽश्वमेधैरयजत सर्ववेदसुरात्मकम् ॥७॥

पदच्छेद— अनन्तः वाससः कश्चित् अबहिः वाससः अपरान् ।
सः अश्वमेधैः अयजत सर्ववेदसुरआत्मकम् ॥

शब्दार्थ—

अनन्तः	३.	ओढ़ने की ही आज्ञा दी	सः	७.	उन राजा सगर ने
वाससः	२.	वस्त्र	अश्वमेधैः	८.	अश्वमेधों द्वारा
कांश्चित्	१.	कुछ को	अयजत्	१२.	आराधना की
अबहिः	६.	पहनने मात्र की	सर्ववेद	९.	सम्पूर्ण वेद
वाससः	५.	वस्त्र	सुर	१०.	देवतामय और
अपरान् ।	४.	दूसरों को	आत्मकम् ॥	११.	आत्मस्वरूप भगवान् की

श्लोकार्थ— कुछ को वस्त्र ओढ़ने की ही आज्ञा दी, और दूसरों को वस्त्र पहनने मात्र की । उन राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञों द्वारा सम्पूर्ण वेदमय, देवतामय और आत्म स्वरूप भगवान् की आराधना की ॥

अष्टमः श्लोकः

और्वोपदिष्टयोगेन हरिमात्मानमीश्वरम् ।
तस्योत्सृष्टं पशुं यज्ञे जहाराश्वं पुरन्दरः ॥८॥

पदच्छेद— और्व उपदिष्ट योगेन हरिम् आत्मानम् ईश्वरम् ।
तस्य उत्सृष्टम् पशुम् यज्ञे जहार अश्वम् पुरन्दरः ॥

शब्दार्थ—

और्व	१.	और्व मुनि के	तस्य	७.	उन राजा के
उपदिष्ट	२.	उपदेश के	उत्सृष्टम्	९.	छोड़े हुए
योगेन	३.	अनुसार	पशुम्	१०.	पशु
हरिम्	६.	भगवान् हरि की आराधना को	यज्ञे	८.	यज्ञ में
आत्मानम्	४.	आत्मस्वरूप	जहार	१२.	चुरा लिया
ईश्वरम् ।	५.	सर्वशक्तिमान्	अश्वम् पुरन्दरः ॥	११.	घोड़े को इन्द्र ने

श्लोकार्थ— और्व मुनि के उपदेशनुसार आत्मस्वरूप सर्वशक्तिमान् भगवान् की आराधना की । उन राजा सगर के यज्ञ में छोड़े गये पशु (घोड़े) को इन्द्र ने चुरा लिया ॥

नवमः श्लोकः

सुमत्यास्तनया दृप्ताः पितुरादेशकारिणः ।
हयमन्वेषमाणास्ते समन्तान्न्यखनन् महीम् ॥९॥

पदच्छेद— सुमत्याः तनयाः दृप्ताः पितुः आदेश कारिणः ।
हयम् अन्वेषमाणाः ते समन्तात् न्यखनन् महीम् ॥

शब्दार्थ—

सुमत्याः	१.	रानी सुमति के	हयम्	८.	घोड़े को
तनयाः	७.	पुत्रों ने	अन्वेषमाणाः	१०.	ढूंढ़ते हुए
दृप्ताः	५.	अभिमानी	ते	६.	उन
पितुः	२.	पिता के	समन्तात्	९.	चारों ओर
आदेश	३.	आज्ञा	न्यखनन्	१२.	खोद डाला
कारिणः ।	४.	कारी	महीम् ॥	११.	पृथ्वी को

श्लोकार्थ—रानी सुमति के पिता के, आज्ञाकारी अभिमानी उन पुत्रों ने घोड़े को चारो ओर ढूढ़ते हुए पृथ्वी को खोद डाला ॥

दशमः श्लोकः

प्रागुदीच्यां दिशि हयं ददृशुः कपिलान्तिके ।
एष वाजिहरश्चौर आस्ते मीलितलोचनः ॥१०॥

पदच्छेद— प्राक् उदीच्याम् दिशि हयम् ददृशुः कपिलअन्तिके ।
एषः वाजि हरः चौरः आस्ते मीलित लोचनः ॥

शब्दार्थ—

प्राक्	१.	पूर्व और	एषः	१०.	यह
उदीच्याम्	२.	उत्तर	वाजि	११.	घोड़े का
दिशि	३.	दिशा में	हरः	१२.	हरण करने वाला
हयम्	६.	घोड़े को	चौरः	१३.	चोर
ददृशुः	७.	देखा	आस्ते	१४.	है (ऐसा वे कहने लगे)
कपिल	४.	कपिल मुनि के	मीलित	९.	मूंदे हुए
अन्तिके ॥	५.	पास	लोचनः ।	८.	आंख

श्लोकार्थ—पूर्व और उत्तर दिशा में कपिल मुनि के पास घोड़े को देखा । आंख मूंदे हुए यह घोड़े का हरण करने वाला चोर है (ऐसा वे कहने लगे) ॥

एकादशः श्लोकः

हन्यतां हन्यतां पाप इति षष्टिसहस्रिणः ।
गदायुधा अभिययुरुन्मिमेष तदा मुनिः ॥११॥

पदच्छेद— हन्यताम् हन्यताम् पापः इति षष्टि सहस्रिणः ।
उदायुधाः अभिययुः उन्मिमेष तदा मुनिः ॥

शब्दार्थ—

हन्यताम्	३.	इसे मार डालो	उदायुधाः	७.	शस्त्र उठाकर
हन्यताम्	४.	मार डालो	अभिययुः	८.	उनकी ओर दौड़े
पापः	२.	पापी है इस प्रकार कहते हुए	उन्मिमेष	११.	पलकें खोलीं
इति	१.	ये	तदा	९.	तब
षष्टि	५.	साठ	मुनिः ॥	१०.	कपिल मुनि ने
सहस्रिणः ।	६.	हजार सगर पुत्र			

श्लोकार्थ—यह पापी है । (इसे) मार डालो इस प्रकार कहते हुए साठ हजार सगर-पुत्र शस्त्र उठाकर उन कपिल मुनि की ओर दौड़े । तब कपिल मुनि ने पल के खोलीं ॥

द्वादशः श्लोकः

स्वशरीराग्निना तावन्महेन्द्रहृतचेतसः ।
महद्व्यतिक्रमहता भस्मसादभवन् क्षणात् ॥१२॥

पदच्छेद— स्वशरीर अग्निना तावत् महेन्द्र हृत चेतसः ।
महद् व्यतिक्रम हता भस्मसात् अभवन् क्षणात् ॥

शब्दार्थ—

स्वशरीर	८	अपने शरीर की	महद्	५.	महापुरुष का
अग्निना	९.	अग्नि से	व्यतिक्रम	६.	तिरस्कार करने से
तावत्	१.	उस समय	हताः	७.	मारे गये (और)
महेन्द्र	२.	इन्द्र के द्वारा	भस्मसात्	११.	भस्म
हृत	३.	हरण किये गये (सगर पुत्र)	अभवन्	१२.	हो गये
चेतसः ।	४.	चित्त वाले	क्षणात् ॥	१०.	क्षण भर में

श्लोकार्थ—उस समय इन्द्र के द्वारा हरण किये गये चित्त वाले सगर पुत्र महापुरुष का तिरस्कार करने से मारे गये । और अपने शरीर की अग्नि से ही क्षण भर में भस्म हो गये ॥

त्रयोदशः श्लोकः

न साधुबादो मुनिकोपभर्जिता नृपेन्द्रपुत्रा इति सत्त्वधामनि ।
कथं तमो रोषमयं विभाव्यते जगत्पवित्रात्मनि खे रजो भुवः ॥१३।

पदच्छेद— न साधुवादः मुनिकोपभर्जिताः नृपेन्द्र पुत्राः इति सत्त्वधामनि ।
कथम् तमः रोषमयम् विभाव्यते जगत् पवित्र आत्मनि खे रजः भुवः ॥

शब्दार्थ—

न	८.	नहीं है	तमः	१३.	तमोगुण की
साधुवादः	७.	उचित कहना	रोषमय	१२.	क्रोधरूपी
मुनिकोप	१.	मुनि के क्रोध से	विभाव्यते	१५.	सम्भावना की जा सकती है
भर्जिताः	४.	जल गये	जगत्	९.	संसार के
नृपेन्द्र	२.	राजा के	पवित्र	१०.	पवित्रकारक
पुत्राः	३.	पुत्र	आत्मनि	११.	शरीर में
इति	५.	यह	खे	१६.	क्योंकि आकाश में
सत्त्वधामनि।	६.	सत्त्वगुण के आश्रय मुनि के सम्बन्ध में	रजः	१८.	धूल की सम्भावना नहीं की जा सकती
कथम्	१४.	कैसे	भुवः॥	१७.	पृथ्वी की

श्लोकार्थ— मुनि के क्रोध से राजा के पुत्र जल गये। यह सत्त्वगुण के आश्रय मुनि के सम्बन्ध में कहना उचित नहीं है। संसार के पवित्र कारक शरीर में क्रोध रूपी तमोगुण की कैसे सम्भावना की जा सकती है। क्योंकि आकाश में पृथ्वी की धूल की सम्भावना नहीं की जा सकती ॥

चतुर्दशः श्लोकः

यस्येरिता सांख्यमयी दृढेह नौर्यया मुमुक्षुस्तरते दुरत्ययम् ।
भवार्णवं मृत्युपथं विपश्चितः परात्मभूतस्य कथं पृथङ्मतिः ।।१४।।

पदच्छेद— यस्य ईरिता सांख्यमयी दृढा इह नौः यया मुमुक्षुः तरते दुरत्ययम् ।
भव अर्णवम् मृत्यु पथम् विपश्चितः परात्मभूतस्य कथम् पृथक् मतिः ।।

शब्दार्थ—

यस्य	१. जिन्होंने	अर्णवम्	११. सागर को
ईरिता	५. कही है	मृत्यु	७. मृत्यु के
सांख्यम्	२. सांख्यशास्त्ररूपी	पथम्	८. मार्ग
दृढा इह	३. मजबूत इस संसार में	विपश्चितः	१३. ऐसे विद्वान् को
नौःयया	४. नौका जिससे	परात्म	१४. परमात्मा के
मुमुक्षुः	६. मोक्ष का इच्छुक व्यक्ति	भूतस्य	१५. स्वरूप मुनि में
तरते	१२. पार कर जाती है	कथम्	१८. कैसे हो सकती है
दुरत्ययम् ।	९. अत्यन्त कठिन	पृथक्	१६. भेद
भव	१०. संसार	मतिः ।।	१७. बुद्धि

श्लोकार्थ—जिन्होंने सांख्यशास्त्र रूपी मजबूत नौका कही है । जिससे इस संसार में मोक्ष का इच्छुक व्यक्ति मृत्यु के मार्ग, अत्यन्त कठिन संसार सागर को पार कर जाता है । विद्वान् परमात्मा के स्वरूप मुनि में भेद बुद्धि कैसे हो सकती है ।।

पञ्चदशः श्लोकः

योऽसमञ्जस इत्युक्तः स केशिन्या नृपात्मजः ।
तस्य पुत्रोंऽशुमान् नाम पितामहहिते रतः ॥१५॥

पदच्छेद— यः असमञ्जसः इति उक्तः सः केशिन्याः नृप आत्मजः ।
तस्य पुत्रः अंशुमान् नाम पितामह हिते रतः ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जो	तस्य	८.	उसका
असमञ्जस	२.	असमञ्जस	पुत्रः	९.	पुत्र
इति	३.	इस नाम से	अंशुमान्	१०.	अंशुमान्
उक्तः	४.	कहा गया है	नाम	११.	नाम का था
सः	५.	वह	पितामह	१२.	जो दादा के
केशिन्याः	६.	केशिनी से उत्पन्न	हिते	१३.	हित में
नृप आत्मजः ।	७.	राजकुमार था	रतः ॥	१४.	लगा रहता था

श्लोकार्थ—जो असमञ्जस इस नाम से कहा गया है वह केशिनी से उत्पन्न राजकुमार था । उसका पुत्र अंशुमान् नाम का था, जो दादा के हित में लगा रहता था ॥

षोडशः श्लोकः

असमञ्जस आत्मानं दर्शयन्नसमञ्जसम् ।
जातिस्मरः पुरा सङ्गाद् योगी योगाद् विचालितः ॥१६॥

पदच्छेद— असमञ्जसः आत्मानम् दर्शयन् असमञ्जसम् ।
जातिस्मरः पुरा सङ्गात् योगी योगात् विचालितः ॥

शब्दार्थ—

असमञ्जसः	१.	असमञ्जस	जातिस्मरः	५.	पूर्व जन्म का स्मरण रखने वाला
आत्मानम्	२.	अपने को	पुरासङ्गात्	७.	पूर्व जन्म में संग दोष के कारण
दर्शयन्	४.	दिखाता हुआ	योगी	६.	योगी था
असमञ्जसम् ।	३.	असंग के रूप	योगात्	८.	योग से
			विचालितः ॥	९.	विचलित हो गया था

श्लोकार्थ—असमंजस अपने को असंग के रूप में दिखाता था । पूर्व जन्म का स्मरण रखने वाला योगी था । पूर्व जन्म में संग दोष के कारण योग से विचलित हो गया था ॥

सप्तदशः श्लोकः

आचरन् गर्हितं लोके ज्ञातीनां कर्म विप्रियम् ।
सरय्वां क्रीडतो बालान् प्रास्यदुद्वेजयञ्जनम् ॥१७॥

पदच्छेद— आचरन् गर्हितम् लोके ज्ञातीनाम् कर्म विप्रियम् ।
सरय्वाम् क्रीडतः बलान् प्रास्यत् उद्वेजयन् जनम् ॥

शब्दार्थ—

आचरन्	६.	आचरण करता हुआ	सरय्वाम्	११.	सरयू नदी में
गर्हितम्	४.	निन्दित	क्रीडतः	९.	तथा खेलते हुए
लोके	१.	संसार में	बालान्	१०.	बालकों को
ज्ञातीनाम्	२.	भाई बन्धुओं के लिए	प्रास्यत्	१२.	फेंक देता था
कर्म	५.	कर्म का	उद्वेजयन्	८.	उद्विग्न करता हुआ
विप्रियम् ।	३.	अप्रिय और	जनम् ॥	७.	लोगों को

श्लोकार्थ—संसार में भाई-बन्धुओं के लिए अप्रिय और निन्दित आचरण करता हुआ, लोगों को उद्विग्न करता हुआ तथा खेलते हुए, बालकों को सरयू में फेंक देता था ॥

अष्टादश. श्लोकः

एवंवृत्तः परित्यक्तः पित्रा स्नेहमपोह्य वै ।
योगैश्वर्येण बालांस्तान् दर्शयित्वा ततो ययौ ॥१८॥

पदच्छेद— एवम् वृत्तः परित्यक्तः पित्रा स्नेहम् अपोह्य वै ।
योगैश्वर्येण बालान् तान् दर्शयित्वा ततः ययौ ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार का	योगैश्वर्येण	७.	(तब) अपने योग के बल से
वृत्तः	२.	आचरण करने वाला वह और	बालान्	९.	बालकों को
परित्यक्तः	६.	त्याग दिया गया	तान्	८.	उन
पित्रा	३.	पिता के द्वारा	दर्शयित्वा	१०.	दिखाकर
स्नेहम्	४.	स्नेह को	ततः	११.	(वह) वहाँ से
अपोह्य वै ।	५.	छोड़ कर निश्चित रूप से	ययौ ॥	१२.	चला गया

श्लोकार्थ—इस प्रकार का आचरण करने वाला वह पिता के द्वारा स्नेह छोड़ कर निश्चित रूप से त्याग दिया गया । (तब) अपने योग बल से उन बालकों को दिखाकर (वह) वहाँ से चला गया ॥

एकोनविंश: श्लोक:

अयोध्यावासिनः सर्वे बालकान् पुनरागतान् ।
दृष्ट्वा विसिस्मिरे राजन् राजा चाप्यन्वतप्यत ॥१९॥

पदच्छेद— अयोध्या वासिनः सर्वे बालकान् पुनः आगतान् ।
दृष्ट्वा विसिस्मिरे राजन् राजा च अपि अन्व तप्यत ॥

शब्दार्थ—

अयोध्या	२. अयोध्या (पुनः)	दृष्ट्वा	७. देखकर
वासिनः	३. वासी	विसिस्मिरे	८. आश्चर्य करने लगे
सर्वे	१. सब	राजन्	९. हे राजन् !
बालकान्	६. बालकों को	राजा	११. राजा
पुनः	४. फिर	च अपि	१०. और भी
आगतान् ।	५. आये हुए	अन्वतप्यत ॥	१२. पश्चात्ताप करने लगा

श्लोकार्थ – सब अयोध्यावासी पुनः आये हुए बालकों को देखकर आश्चर्य करने लगे । । हे राजन् ! राजा भी पश्चात्ताप करने लगा ॥

विंशः श्लोकः

अंशुमांश्चोदितो राज्ञा तुरङ्गान्वेषणे ययौ ।
पितृव्यखातानुपथं भस्मान्ति ददृशे हयम् ॥२०॥

पदच्छेद— अंशुमान् चोदितः राज्ञा तुरङ्ग अन्वेषणे ययौ ।
पितृव्यखात अनुपथम् भस्मान्ति ददृशे हयम् ॥

शब्दार्थ—

अंशुमान्	३. अंशुमान्	पितृव्यखात	७. चाचाओं के खोदे हुए
चोदितः	२. प्रेरित किये जाने पर	अनुपथम्	८. समुद्र के किनारे चलकर
राज्ञा	१. राजा के द्वारा	भस्मान्ति	९. भस्म के पास
तुरङ्ग	४. घोड़े की	ददृशे	११. देखा
अन्वेषणे	५. खोज में	हयम् ॥	१०. घोड़े के
ययौ ।	६. गया (और)		

श्लोकार्थ—राजा के द्वारा प्रेरित किये जाने पर अंशुमान् घोड़े की खोज में गया । और चाचाओं के खोदे हुए समुद्र के किनारे किनारे चलकर भस्म के पास घोड़े को देखा ॥

एकविंशः श्लोकः

तत्रासीनं मुनिं वीक्ष्य कपिलाख्यमधोक्षजम् ।
अस्तौत् समाहितमनाः प्राञ्जलिः प्रणतो महान् ॥२१॥

पदच्छेद— तत्र आसीनम् मुनिम् वीक्ष्य कपिल आख्यम् अधोक्षजम् ।
अस्तौत् समाहित मनाः प्राञ्जलिः प्रणतः महान् ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ	अधोक्षजम् ।	२.	भगवान्
आसीनम्	६.	बैठे हुए	अस्तौत्	१३.	स्तुति करने लगा
मुनिम्	५.	मुनि को	समाहितमनाः	९.	एकाग्रचित्त होकर
वीक्ष्य	७.	देखकर	प्राञ्जलिः	११.	हाथ जोड़ कर
कपिल	३.	कपिल	प्रणतः	१२.	प्रणाम करके
आख्यम्	४.	नामक	महान् ॥	८.	विशाल हृदय वाला अंशुमान्

श्लोकार्थ—वहाँ भगवान् कपिल नामक मुनि को बैठे हुए देखकर विशाल हृदय वाला अंशुमान् एकाग्रचित्त होकर हाथ जोड़कर प्रणाम करके स्तुति करने लगा ॥

द्वाविंशः श्लोकः

अंशुमानुवाच—न पश्यति त्वां परमात्मनोऽजनो
न बुध्यतेऽद्यापि समाधियुक्तिभिः ।
कुतोऽपरे तस्य मनःशरीरधी-
विसर्गसृष्टा वयमप्रकाशाः ॥२२॥

पदच्छेद— न पश्यति त्वाम् परमात्मनः अजनः न बुध्यते अद्य अपि समाधि युक्तिभिः ।
कुतः अपरे तस्य मनः शरीरधी विसर्ग सृष्टाः वयम् अप्रकाशाः ॥

शब्दार्थ—

न	८.	नहीं	युक्तिभिः ।	५.	युक्तियों के द्वारा ।
पश्यति	९.	देखते है (और)	कुतः	२०.	कैसे (समझ सकते है)
त्वाम्	२.	आपको	अपरे	१२.	दूसरे
परमात्मनः	१.	आत्मा से परे	तस्य	१३.	उनके
अजनः	३.	अजन्मा ब्रह्माजी	मनः	१४.	मन
न	१०.	नहीं	शरीर	१५.	शरीर और
बुध्यते	११.	जानते हैं	धी	१६.	बुद्धि से
अद्य	६.	आज	विसर्गसृष्टाः	१७.	होने वाली सृष्टि के द्वारा रचे गये
अपि	७.	भी	वयम्	१९.	हम लोग
समाधि	४.	समाधि और	अप्रकाशाः ॥	१८.	अज्ञानी

श्लोकार्थ—आत्मा से परे आपको अजन्मा ब्रह्माजी समाधि और युक्तियों के द्वारा आज भी नहीं देखते है और नहीं जानते हैं । दूसरे उनके मन शरीर और बुद्धि से होने वाली सृष्टि के द्वारा रचे गये अज्ञानी हम लोग कैसे समझ सकते हैं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

ये देहभाजस्त्रिगुणप्रधाना गुणान् विपश्यन्त्युत वा तमश्च ।
यन्मायया मोहितचेतसस्ते विदुः स्वसंस्थं न बहिःप्रकाशाः ॥२३॥

पदच्छेद— ये देहभाजः त्रिगुण प्रधानाः गुणान् विपश्यन्ति उत वा तमः च ।
यन्मायया मोहित चेतसः ते विदुः स्वसंस्थम् न बहिः प्रकाशाः ॥

शब्दार्थ—

ये	१.	जो	यन्मायया	५.	जिनकी माया से
देहभाजः	२.	शरीरधारी	मोहित	६.	मोहित
त्रिगुण	३.	तीन गुण (सत्त्व रज और तम)	चेतसः	७.	चित्त वाले
प्रधानाः	४.	प्रधान हैं	ते	८.	वे
गुणान्	९.	गुणों को	विदुः	१७.	जानते हैं
विपश्यन्ति	१३.	देखते है	स्वसंस्थम्	१५.	अपने में स्थित आपको
उतवा	१०.	या	न	१६.	नहीं
तमः	११.	अज्ञान को	बहिः प्रकाशः॥	१४.	बहिर्मुख होने के कारण
च।	१२	ही			

श्लोकार्थ—जो शरीरधारी तीन गुण सत्त्व रज और तम प्रधान हैं जिन की माया से मोहित चित्त वाले वे गुणों को या अज्ञान को ही देखते हैं तथा बहिर्मुख होने के कारण अपने स्थित आपको नहीं जानते हैं ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

तं त्वामहं ज्ञानघनं स्वभावप्रध्वस्तमायागुणभेदमोहैः ।
सनन्दनाद्यैर्मुनिभिर्विभाव्यं कथं हि मूढः परिभावयामि ॥२४॥

पदच्छेद— तम् त्वाम् अहम् ज्ञानघनम् स्वभाव प्रध्वस्त माया गुण भेद मोहैः ।
सनन्दन आद्यैः मुनिभिः विभाव्यम् कथम् हि मूढः परिभावयामि ॥

शब्दार्थ—

तम्	११.	उस	भेद	३.	होने वाले भेद भावको (और)
त्वाम्	१२.	आपका	मोहैः।	४.	अज्ञान को
अहम्	१४.	मैं	सनन्दन	७.	सनन्दन
ज्ञानघनम्	१३.	ज्ञान स्वरूप	आद्यैः	८.	आदि
स्वभाव	५.	स्वभाव से	मुनिभिः	९.	मुनियों के द्वारा
प्रध्वस्त	६.	नष्ट करने वाले	विभाव्यम्	१०.	चिन्तन करने योग्य
माया	१.	माया के	कथम्	१६.	कैसे
गुण	२.	गुणों के द्वारा	हि मूढः	१५.	मूर्ख
			परिभावयामि ॥	१७.	चिन्तन करूँ

श्लोकार्थ—माया के गुणों के द्वारा होने वाले भेद-भाव को और अज्ञान को स्वभाव से नष्ट करने वाले सनन्दनादि मुनियों के द्वारा चिन्तन करने योग्य उस ज्ञान स्वरूप आपका मैं मूर्ख कैसे चिन्तन करूँ ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

प्रशान्तमायागुणकर्मलिङ्गमनामरूपं सदसद्विमुक्तम् ।
ज्ञानोपदेशाय गृहीतदेहं नमामहे त्वां पुरुषं पुराणम् ॥२५॥

पदच्छेद— प्रशान्त माया गुण कर्म लिङ्गम् अनाम रूपम् सद् असद् विमुक्तम् ।
ज्ञान उपदेशाय गृहीत देहम् नमामहे त्वाम् पुरुषम् पुराणम् ॥

शब्दार्थ—

प्रशान्त	५.	रहित	विमुक्तम्	१०.	मुक्त
माया	१.	माया	ज्ञान	११.	ज्ञान के
गुण	२.	गुण और	उपदेशाय	१२.	उपदेश के लिए
कर्म	३.	कर्म के द्वारा	गृहीत	१४.	धारण करने वाले
लिङ्गम्	४.	शरीर से	देहम्	१३	शरीर को
अनाम	६.	नाम	नमामहे	१८.	नमस्कार करते है
रूपम्	७.	रूप से हीन	त्वाम्	१७.	आपको
सद्	८.	कार्य	पुरुषम्	१५.	पुरुष
असत् ।	९.	कारण से	पुराणम् ॥	१६.	पुराण

श्लोकार्थ—माया, गुण और कर्म के द्वारा शरीर से रहित, नाम रूप से हीन, कार्य-कारण से मुक्त, ज्ञान के उपदेश के लिए शरीर को धारण करने वाले पुराण पुरुष आपको नमस्कार है ॥

षड्विंशः श्लोकः

त्वन्मायारचिते लोके वस्तुबुद्ध्या गृहादिषु ।
भ्रमन्ति कामलोभेर्ष्यामोहविभ्रान्तचेतसः ॥२६॥

पदच्छेद— त्वत् माया रचिते लोके वस्तु बुद्ध्या गृह आदिषु ।
भ्रमन्ति काम लोभ ईर्ष्या विभ्रान्त चेतसः ॥

शब्दार्थ—

त्वत्	१.	आपकी	आदिषु ।	१३.	आदि में
माया	२.	माया द्वारा	भ्रमन्ति	१४.	भटकते रहते है
रचिते	३.	रचे गये	काम	५.	काम
लोके	४.	संसार में	लोभ ईर्ष्या	६.	लोभ ईर्ष्या
वस्तु	१०.	सत्य	मोह	७.	मोह से
बुद्ध्या	११.	बुद्धि समझकर	विभ्रान्त	८.	भ्रान्त
गृह	१२.	घर	चेतसा ॥	९.	चित्त वाले लोग

श्लोकार्थ—आपकी माया द्वारा रचे गये संसार में काम, लोभ, ईर्ष्या, मोह से भ्रान्त चित्त वाले लोग सत्य समझकर घर आदि में भटकते रहते है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

अद्य नः सर्वभूतात्मन् कामकर्मेन्द्रियाशयः ।
मोहपाशो दृढश्छिन्नो भगवंस्तव दर्शनात् ॥२७॥

पदच्छेद— अद्य नः सर्वभूत आत्मन् काम कर्मेन्द्रिय आशयः ।
मोहः पाशः दृढः छिन्नः भगवन् तव दर्शनात् ॥

शब्दार्थ—

अद्य	८.	आज	मोह	१०.	मोह रूपी
नः	९.	हमारा	पाशः	१२.	पाश
सर्व	२.	सभी	दृढः	११	मजबूत
भूत	३.	प्राणियों के	छिन्नः	१५.	कट गया
आत्मन्	४.	आत्मा	भगवन्	१	हे भगवन् !
काम	५.	काम	तव	१३.	आपके
कर्मेन्द्रिय	६.	कर्म और इन्द्रियों को	दर्शनात् ॥	१४.	दर्शन से
आशयः ।	७.	जीवन देने वाला			

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! सभी प्राणियों को आत्मा काम, कर्म और इन्द्रियो को जीवन देने वाले आज हमारा मोह रूपी मजबूत पाश आपके दर्शन से कट गया ।।

अष्टाविंशः श्लोकः

इत्थंगीतानुभावस्तं भगवान् कपिलो मुनिः ।
अंशुमन्तमुवाचेदमनुगृह्य धिया नृप ॥२८॥

पदच्छेद— इत्थम् गीत अनुभावः तम् भगवान् कपिलः मुनिः ।
अंशुमन्तम् उवाच इदम् अनुगृह्य धिया नृप ॥

शब्दार्थ—

इत्थम्	२.	इस प्रकार	अंशुमन्तम्	९.	अंशुमान् से अपनी
गीत	४.	गायन करने पर	उवाच	१३.	कहा
अनुभावः	३.	प्रभाव का	इदम्	१२.	यह
तम्	८.	उस	अनुगृह्य	११.	कृपा करके
भगवान्	५.	भगवान्	धिया	१०.	बुद्धि के द्वारा
कपिलः	६.	कपिल	नृप ॥	१.	हे राजन्
मुनिः ।	७.	मुनि ने			

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार प्रभाव का गायन करने पर भगवान् कपिल मुनि ने उस अंशुमान् से अपनी बुद्धि के द्वारा कृपा करके यह कहा ।।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

अश्वोऽयं नीयतां वत्स पितामहपशुस्तव ।
इमे च पितरो दग्धा गङ्गाम्भोऽर्हन्ति नेतरत् ॥२९॥

पदच्छेद— अश्वः अयम् नीयताम् वत्स पितामह पशुः तव ।
इमे च पितरः दग्धाः गङ्गा अम्भः अर्हन्ति न इतरत् ॥

शब्दार्थ—

अश्वः	६.	घोड़ा है इसे	इमे	९.	इन तुम्हारे
अयम्	२.	यह	च	८	और
नीयताम्	७.	ले जाओ	पितरः	११.	चाचाओं का
वत्स	१.	हे बेटा !	दग्धाः	१०.	जले हुए
पितामह	४.	पितामह का	गङ्गा	१२.	गंगा
पशुः	५.	यज्ञ पशु	अम्भः	१३.	जल से
तव ।	३	तुम्हारे	अर्हन्ति	१४.	उद्धार हो सकता है
			न इतरत् ॥	१५.	नहीं दूसरा है उपाय

श्लोकार्थ—हे बेटा ! यह तुम्हारे पितामह का यज्ञ पशु घोड़ा है । इसे ले जाओ । और इन तुम्हारे जले हुए चाचाओं का गंगा जल से उद्धार हो सकता है । दूसरा उपाय नहीं है ॥

त्रिंशः श्लोकः

तं परिक्रम्य शिरसा प्रसाद्य हयमानयत् ।
सगरस्तेन पशुना क्रतुशेषं समापयत् ॥३०॥

पदच्छेद— तम् परिक्रम्य शिरसा प्रसाद्य हयमानयत् ।
सगरः तेन पशुना क्रतु शेषम् समापयत् ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	उन महर्षि की	सगरः	६.	सगर ने
परिक्रम्य	२.	परिक्रमा करके	तेन	७.	उस
शिरसा	३.	शिर से	पशुना	९.	घोड़े से
प्रसाद्य	४.	प्रणाम किया और	क्रतु	८.	यज्ञ के
हयमानयत् ।	५.	घोड़े को ले आये	शेषम्	१०.	शेष क्रिया
			समापयत् ॥	११.	सम्पन्न की

श्लोकार्थ—उन ऋषि की परिक्रमा करके शिर से प्रणाम किया और घोड़े को ले आये । सगर ने उस यज्ञ के घोड़े से शेष क्रिया सम्पन्न की ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

राज्यमंशुमति न्यस्य निःस्पृहो मुक्तबन्धनः।
और्वोपदिष्टमार्गेण लेभे गतिमनुत्तमाम् ॥३१॥

पदच्छेद— राज्यम् अंशुमति न्यस्य निः स्पृहः मुक्त बन्धनः।
और्वः उपदिष्ट मार्गेण लेभे गतिम् अनुत्तमाम् ॥

शब्दार्थ—

राज्यम्	२.	राज्य	और्व	७.	और्व ऋषि के
अंशुमति	१.	अंशुमान् को	उपदिष्ट	८.	बताये हुए
न्यस्य	३.	सौंपकर (राजा सगर)	मार्गेण	९.	मार्ग से
निःस्पृहः	४.	स्पृहारहित (और)	लेभे	१२.	प्राप्त को
मुक्त	६.	मुक्त होकर	गतिम्	११.	गति
बन्धनः।	५.	बन्धन	अनुत्तमाम् ॥	१०.	अतिउत्तम

श्लोकार्थ——अंशुमान् को राज्य सौंपकर राजा सगर स्पृहारहित और बन्धन मुक्त होकर और्व ऋषि के बताये हुए मार्ग से अति उत्तम गति प्राप्त की ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे
सौभर्याख्याने अष्टमः अध्यायः ॥८॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

नवमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अंशुमांश्च तपस्तेपे गङ्गानयनकाम्यया ।
कालं महान्तं नाशक्नोत् ततः कालेन संस्थितः ॥१॥

पदच्छेद— अंशुमान् च तपः तेपे गङ्गा आनयन काम्यया ।
कालम् महान्तम् न अशक्नोत् ततः कालेन संस्थितः ॥

शब्दार्थ—

अंशुमान्	२.	अंशुमान् ने	कालम्	७.	समय तक
च	१.	और	महान्तम्	६.	बहुत
तपः	८.	तपस्या	न अशक्नोत्	१०.	नहीं समर्थ हुए
तेपे	९.	को (किन्तु वे)	ततः	११.	उसके बाद
गङ्गा	३.	गङ्गा जी को	कालेन	१२.	समय पर
आनयन	४.	लाने को	संस्थितः ॥	१३.	वे मृत्यु को प्राप्त हो गये
काम्यया ।	५.	कामना से			

श्लोकार्थ—अंशुमान् ने गङ्गा जी को लाने की कामना से बहुत समय तक तपस्या की । किन्तु वे गंगा को लाने में नहीं समर्थ हुए । उसके बाद समय पर वे मृत्यु को प्राप्त हो गये ॥

द्वितीयः श्लोकः

दिलीपस्तत्सुतस्तद्वदशक्तः कालमेयिवान् ।
भगीरथस्तस्य पुत्रस्तेपे स सुमहत् तपः ॥२॥

पदच्छेद— दिलीपः तत् सुतः तद्वत् अशक्तः कालम् एयिवान् ।
भगीरथः तस्य पुत्रः तेपे सः सुमहत् तपः ॥

शब्दार्थ—

दिलीपः	३.	दिलीप था (वह भी)	भगीरथः	१०.	भगीरथ थे
तत्	१.	उनका	तस्य	८.	उनके
सुतः	२.	पुत्र	पुत्रः	९.	पुत्र
तद्वत्	४.	उन्हीं के समान	तेपे	१४.	की
अशक्तः	५.	असमर्थ रहे	सः	११.	उन्होंने
कालम्	६.	समय पर	सुमहत्	१२.	बड़ी
एयिवान् ।	७.	उनकी भी मृत्यु हो गयी	तपः ॥	१३.	तपस्या

श्लोकार्थ—उनका पुत्र दिलीप था । वह भी उन्हीं के समान असमर्थ रहे । समय पर उनकी भी मृत्यु हो गयी । उनके पुत्र भगीरथ थे । उन्होने बड़ी तपस्या की ॥

तृतीयः श्लोकः

दर्शयामास तं देवी प्रसन्ना वरदास्मि ते ।
इत्युक्तः स्वमभिप्रायं शशंसावनतो नृपः ॥३॥

पदच्छेद— दर्शयामास तम् देवी प्रसन्ना वरदा अस्मि ते ।
इति, उक्तः स्वम् अभिप्रायम् शशंस अवनतः नृपः ॥

शब्दार्थ—

दर्शयामास	३. दर्शन दिया	इति	८. इस प्रकार उनके
तम्	२. उन्हें	उक्तः	९. कहने पर
देवी	१. देवी गंगा जी ने	स्वम्	११. अपना
प्रसन्ना	४. और प्रसन्न होकर कहा	अभिप्रायम्	१२. अभिप्राय को
वरदा	६. वर देने आई	शशंस	१४. प्रकट किया
अस्मि	७. हूँ	अवनतः	१३. नम्रता से
ते ।	५. मैं तुम्हें	नृपः ॥	१०. राजा भगीरथ ने

श्लोकार्थ—देवी गंगा जी ने उन्हें दर्शन दिया और प्रसन्न होकर कहा मैं तुम्हें वर देने आई हूँ इस प्रकार उनके कहने पर राजा भगीरथ ने अपना अभिप्राय नम्रता से प्रकट किया ॥

चतुर्थः श्लोकः

कोऽपि धारयिता वेगं पतन्त्या मे महीतले ।
अन्यथा भूतलं भित्त्वा नृप यास्ये रसातलम् ॥४॥

पदच्छेद— कः अपि धारयिता वेगम् पतन्त्याः मे महीतले ।
अन्यथा भूतलम् भित्त्वा नृप यास्ये रसातलम् ॥

शब्दार्थ—

कः	५. कोई	अन्यथा	८. अन्यथा
अपि	६. भी	भूतलम्	१०. (मैं) पृथ्वी को
धारयित्वा	७. धारण करने वाला (होना चाहिए)	भित्त्वा	११. फोड़कर
वेगम्	४. वेग को	नृप	९. हे राजन्
पतन्त्याः	२. गिरती हुई	यास्ये	१३. चली जाऊँगी
मे	३. मेरे	रसातलम् ॥	१२. रसातल को
महीतले ।	१. पृथ्वी पर		

श्लोकार्थ—पृथ्वी पर गिरती हुई मेरे वेग को भी कोई धारण करने वाला होना चाहिए, अन्यथा हे राजन् ! मैं पृथ्वी को फोड़कर रसातल को चली जाऊँगी ॥

पञ्चमः श्लोकः

किं चाहं न भुवं यास्ये नरा मय्यामृजन्त्यघम् ।
मृजामि तदघं कुत्र राजंस्तत्र विचिन्त्यताम् ॥५॥

पदच्छेद— किम् च अहम् न भुवम् यास्ये नराः मयि आमृजन्ति अघम् ।
मृजामि तत् अघम् कुत्र राजन् तत्र विचिन्त्यताम् ॥

शब्दार्थ—

किम्	१. और	आमृजन्ति	१०. धोयेंगे (फिर)
च	२. भी	अघम्	९. पाप
अहम्	३. मैं	मृजामि	१४. धोऊँगी
न	५ नहीं	तत्	११. मैं उस
भुवम्	४. पृथ्वी पर	अघम्	१२. पाप को
यास्ये	६. जाऊँगी (क्योंकि),	कुत्र	१३. कहाँ
नराः	७. मनुष्य	राजन्	१५. हे राजन् !
मयि	८. मुझमें अपना	तत्र	१६. इस विषय में
		विचिन्त्यताम् ॥	१७. सोच विचार करो

श्लोकार्थ—और भी मैं पृथ्वी पर नहीं जाऊँगी । क्योंकि मनुष्य मुझ में अपना पाप धोयेंगें । फिर मैं उस पाप को कहाँ धोऊँगी ? हे राजन् ! इस विषय में सोच विचार करें ॥

षष्ठः श्लोकः

भगीरथ उवाच—साधवो न्यासिनः शान्ता ब्रह्मिष्ठा लोकपावनाः ।
हरन्त्यघं तेऽङ्गसङ्गात् तेष्वास्ते ह्यघभिद्धरिः ॥६॥

पदच्छेद— साधवः न्यासिनः शान्ताः ब्रह्मिष्ठाः लोक पावनाः ।
हरन्ति अघम् ते अङ्ग सङ्गात् तेषु आस्ते हि अघभित् हरिः ॥

शब्दार्थ—

साधवः	५. साधु	अघम्	९. पाप को
न्यासिनः	६. संन्यासी	ते अङ्ग	८. आपके
शान्ताः	१. शान्त	अङ्गसङ्गात्	७. अपने अङ्ग स्पर्श से
ब्रह्मिष्ठाः	२. ब्रह्मनिष्ठ	तेषु	११. उनमें
लोक	३. लोकों को	आस्ते	१४. रहते है
पावनाः ।	४. पवित्र करने वाले	हि अघभित्	१२. पापनाशक
हरन्ति	१०. हरेगें (क्योंकि)	हरिः ॥	१३. हरि भगवान्

श्लोकार्थ—शान्त, ब्रह्मनिष्ठ, लोकों को पवित्र करने वाले, साधु-संन्यासी अपने अङ्ग स्पर्श से आपके पाप को हरेगें, क्योंकि उनमें पापनाशक हरि भगवान् रहते हैं ॥

सप्तमः श्लोकः

धारयिष्यति ते वेगं रुद्रस्त्वात्मा शरीरिणाम् ।
यस्मिन्नोतमिदं प्रोतं विश्वं शाटीव तन्तुषु ॥७॥

पदच्छेद— धारयिष्यति ते वेगम् रुद्रस्तु आत्मा शरीरिणाम् ।
यस्मिन् ओतम् इदम् प्रोतम् विश्वम् शाटी इव तन्तुषु ॥

शब्दार्थ—

धारयिष्यति	५.	धारण करेगें	ओतम्	९.	ओत
ते वेगम्	४.	आपके वेग को	इदम्	७	यह
रुद्रस्तु	३.	रुद्र	प्रोतम्	१०.	प्रोत है
आत्मा	२.	आत्मा	विश्वम्	८.	संसार
शरीरिणाम् ।	१.	प्राणियों को	शाटी	१२.	साड़ी
यस्मिन्	६.	जिन रुद्र में	इव तन्तुषु ॥	११.	जैसे धागे में ओते प्रोत है

श्लोकार्थ—प्राणियों के आत्मा रुद्र आपके वेग को धारण करेगें, जिन रुद्र में यह संसार ओत प्रोत है, जैसे साड़ी धागे में ओत-प्रोत है ॥

अष्टमः श्लोकः

इत्युक्त्वा स नृपो देवं तपसातोषयच्छिवम् ।
कालेनाल्पीयसा राजंस्तस्येशः समतुष्यत ॥८॥

पदच्छेद— इति उक्त्वा सः नृपः देवम् तपसा अतोषयत् शिवम् ।
कालेन अल्पीयसा राजन् तस्य ईशः समतुष्यत ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	शिवम् ।	७.	शिव को
उक्त्वा	२.	कह कर	कालेन	११.	समय में
सः	३.	उस	अल्पीयसा	१०.	थोड़े ही
नृपः	४.	राजा ने	राजन्	९.	हे राजन् !
देवम्	६.	भगवान्	तस्य	१३.	उनके ऊपर
तपसा	५.	तपस्या से	ईशः	१२.	महादेव
अतोषयत्	८.	सन्तुष्ट किया	समतुष्यत ॥	१४.	प्रसन्न हो गये

श्लोकार्थ—इस प्रकार कह कर उस राजा ने तपस्या से भगवान् शिव को सन्तुष्ट किया । हे राजन् ! थोड़े ही समय में महादेव उनके ऊपर प्रसन्न हो गये ॥

नवमः श्लोकः

तथेति राज्ञाभिहितं सर्वलोकहितः शिवः ।
दधारावहितो गङ्गां पादपूतजलां हरेः ॥९॥

पदच्छेद— तथा इति राज्ञा अभिहितम् सर्वलोकहितः शिवः ।
दधार अवहितः गङ्गाम् पाद पूत जलाम् हरेः ॥

शब्दार्थ—

तथा	६. अच्छा	दधार	१४. धारण किया
इति	७. ऐसा कह कर	अवहितः	१३. सावधान होकर
राज्ञा	१. राजा की	गङ्गाम्	१२. गंगा को
अभिहितम्	२. कही हुई बात पर	पाद	९. चरण से
सर्वलोक	३. सभी लोकों के	पूत	१०. पवित्र
हितः	४. हित करने वाले	जलाम्	११. जल वाली
शिवः ।	५. भगवान् शिव ने	हरेः ॥	८. भगवान् हरि के

श्लोकार्थ—राजा की कही हुई बात पर सभी लोकों के हित करने वाले भगवान् शिव ने अच्छा ऐसा कहकर भगवान् हरि के चरण से पवित्र जल वाली गंगा को सावधान होकर धारण किया ॥

दशमः श्लोकः

भगीरथः स राजर्षिर्निन्ये भुवनपावनीम् ।
यत्र स्वपितॄणां देहा भस्मीभूताः स्म शेरते ॥१०॥

पदच्छेद— भगीरथः सः राजर्षिः निन्ये भुवनपावनीम् ।
यत्र स्वपितॄणां देहाः भस्मीभूताः स्म शेरते ॥

शब्दार्थ—

भगीरथः	३. भगीरथ	यत्र	७. जहाँ
सः	१. वे	स्वपितॄणाम्	८. उनके पितरों के
राजर्षिः	२. राजर्षि	देहाः	९. शरीर
निन्ये	६. ले गये	भस्मी	१०. राख
भुवन	४. भुवन	भूताः	११. बनकर
पावनीम् ।	५. पावनी (गंगाजी को वहाँ पर)	स्म	१३. थे
		शेरते ॥	१२. पड़े हुए

श्लोकार्थ—वे राजर्षि भगीरथ भुवन पावनी गंगा जी को वहाँ पर ले गये, जहाँ उनके पितरों के शरीर राख बनकर पड़े हुए थे ॥

एकादशः श्लोकः

रथेन वायुवेगेन प्रयान्तमनुधावती ।
देशान् पुनन्ती निर्दग्धानासिञ्चत् सगरात्मजान् ।।११।।

पदच्छेद— रथेन वायुवेगेन प्रयान्तम् अनु धावती ।
देशान् पुनन्ती निर्दग्धान् आसिञ्चत् सगर आत्मजान् ।।

शब्दार्थ—

रथेन	३.	रथ से	देशान्	७.	देशों को
वायु	१.	वायु के समान	पुनन्ती	८.	पवित्र करती हुई (गंगा जी ने)
वेगेन	२.	वेग वाले	निर्दग्धान्	९.	जले हुए
प्रयान्तम्	४.	जाते हुए (राजा के)	आसिञ्चत्	१२.	भिगो दिया
अनु	५.	पीछे-पीछे	सगर	१०.	सगर के
धावती ।	६.	दौड़ती हुई (और)	आत्मजान् ।।	११.	पुत्रों को

श्लोकार्थ—वायु के समान वेग वाले रथ से जाते हुए राजा के पीछे दौड़ती हुई और देशों को पवित्र करती हुई गंगा जी ने जले हुए सगर के पुत्रों को भिगो दिया ।।

द्वादशः श्लोकः

यज्जलस्पर्शमात्रेण ब्रह्मदण्डहता अपि ।
सगरात्मजा दिवं जग्मुः केवलं देहभस्मभिः ।।१२।।

पदच्छेद— यत् जल स्पर्श मात्रेण ब्रह्मदण्डहताः अपि ।
सगर आत्मजाः दिवम् जग्मुः केवलम् देहभस्मभिः ।।

शब्दार्थ—

यत्	४.	जिन (गंगाजी के)	सगर	११.	सगर के
जल	५.	जल के	आत्मजाः	१२.	पुत्र
स्पर्श	६.	स्पर्श	दिवम्	१३.	स्वर्ग को
मात्रेण	७.	मात्र से	जग्मुः	१४.	चले गये
ब्रह्मदण्ड	८.	ब्रह्मदण्ड से	केवलम्	१.	केवल
हताः	९.	मारे जाने पर	देह	२.	शरीर की
अपि ।	१०.	भी	भस्मभिः ।।	३.	राख के साथ

श्लोकार्थ—केवल शरीर की राख के साथ जिन गंगा जी के जल के स्पर्श मात्रा से ब्रह्मदण्ड से मारे जाने पर भी सगर के पुत्र स्वर्ग को चले गये ।।

त्रयोदशः श्लोकः

भस्मीभूताङ्गसङ्गेन स्वर्याताः सगरात्मजाः ।
किं पुनः श्रद्धया देवीं ये सेवन्ते धृतव्रताः ॥१३॥

पदच्छेद— भस्मीभूत अङ्ग सङ्गेन स्वर्याताः सगर आत्मजाः ।
किम् पुनः श्रद्धया देवीम् ये सेवन्ते धृतव्रताः ॥

शब्दार्थ—

भस्मीभूत	१. राख बने		किम्	१३. क्या (कहना है)
अङ्ग	२. शरीर को		पुनः	७. फिर
सङ्गेन	३ गंगा जल का सङ्ग होने से		श्रद्धया	१०. श्रद्धा से
स्वर्याताः	६. स्वर्ग को चले गये		देवीम्	११. गंगा जी का
सगर	४. सगर के		ये	८. जो
आत्मजाः ।	५. पुत्र		सेवन्ते	१२. सेवन करते हैं उनका
			धृतव्रताः ॥	९. व्रत धारण करके

श्लोकार्थ—राख बने शरीर का गंगाजल का सङ्ग होने से सगर के पुत्र स्वर्ग को चले गये । फिर जो व्रत धारण करके श्रद्धा से गंगा जी का सेवन करते हैं, उनका क्या कहना है ॥

चतुर्दशः श्लोकः

न ह्येतत् परमाश्चर्यं स्वर्धुन्या यदिहोदितम् ।
अनन्तचरणाम्भोजप्रसूताया भवच्छिदः ॥१४॥

पदच्छेद— न हि एतत् परम आश्चर्यम् स्वर्धुन्याः यत् इह उदितम् ।
अनन्त चरण अम्भोज प्रसूतायाः भव छिदः ॥

शब्दार्थ—

न हि	७. नहीं है		उदितम्	३. कहा गया है
एतत्	४. यह		अनन्त	८. अनन्त भगवान के
परम	५. परम		चरण	९. चरण
आश्चर्यम्	६. आश्चर्य की बात		अम्भोज	१०. कमलों से
स्वर्धुन्या	१. गंगा जी के सम्बन्ध में		प्रसूताया	११. उत्पन्न (गंगाजी)
यत् इह	२. जो यहाँ		भव	१२. संसार
			छिदः	१३. बन्धन को काटने वाली हैं

श्लोकार्थ—गंगा जी के सम्बन्ध में जो यहाँ कहा गया है वह परम आश्चर्य की बात नहीं है। अनन्त भगवान् के चरण कमलों से उत्पन्न गंगा जी संसार-बन्धन को काटने वाली हैं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

संनिवेश्य मनो यस्मिञ्छ्रद्धया मुनयोऽमलाः ।
त्रैगुण्यं दुस्त्यजं हित्वा सद्यो यातास्तदात्मताम् ॥१५॥

पदच्छेद— संनिवेश्य मनः यस्मिन् श्रद्धया मुनयः अमलाः ।
त्रैगुण्यम् दुस्त्यजम् हित्वा सद्यः याताः तद् आत्मताम् ॥

शब्दार्थ—

संनिवेश्य	४. लगाकर	त्रैगुण्यम्	८. तीनों गुणों को
मनः	३. मन को	दुस्त्यजम्	७. कठिनाई से त्यागने योग्य
यस्मिन्	१. जिनमें	हित्वा	९. छोड़कर
श्रद्धया	२. श्रद्धा से	सद्यः	१० तत्काल
मुनयः	५. मुनिजन	याताः	१३. प्राप्त हो जाते हैं
अमलाः ।	६. निर्मल हो जाते हैं (और)	तद्	११. उनके
		आत्मताम् ॥	१२. स्वरूप को

श्लोकार्थ—जिनमें श्रद्धा से मन को लगाकर मुनिजन निर्मल हो जाते हैं। और कठिनाई से त्यागने योग्य तीनों गुणों को छोड़कर तत्काल उनके स्वरूप को प्राप्त हो जाते हैं ॥

षोडशः श्लोकः

श्रुतो भगीरथाज्जज्ञे तस्य नाभोऽपरोऽभवत् ।
सिन्धुद्वीपस्ततस्तस्मादयुतायुस्ततोऽभवत् ॥१६॥

पदच्छेद— श्रुतः भगीरथात् जज्ञे तस्य नाभः अपरः अभवत् ।
सिन्धुद्वीपः ततः तस्मात् अयुतायुः ततः अभवत् ॥

शब्दार्थ—

श्रुतः	२. श्रुत	सिन्धुद्वीपः	९. सिन्धुद्वीप
भगीरथात्	१. भगीरथ से	ततः	८. उससे
जज्ञे	३. उत्पन्न हुआ	तस्मात्	१०. उससे
तस्य	४. उसका पुत्र	अयुतायुः	११. अयुतायु
नाभः	५. नाभ था	ततः	१२. उससे ऋतुपर्ण
अपरः	६. जो दूसरा नाभ	अभवत् ॥	१३. हुआ
अभवत् ।	७. था		

श्लोकार्थ—भगीरथ से श्रुत उत्पन्न हुआ। उसका पुत्र नाभ था जो दूसरा नाभ था। उससे सिन्धुद्वीप, उससे अयुतायु और उससे ऋतुपर्ण हुआ ॥

सप्तदशः श्लोकः

ऋतुपर्णो नलसखो योऽश्वविद्यामयान्नलात् ।
दत्त्वाक्षहृदयं चास्मै सर्वकामस्तु तत्सुतः ॥१७॥

पदच्छेद— ऋतुपर्णः नलसखः यः अश्वविद्याम् अयात् नलात् ।
दत्त्वा अक्ष हृदयम् च अस्मै सर्वकामः तु तत्सुतः ॥

शब्दार्थ—

ऋतुपर्णः	१.	ऋतुपर्ण	दत्त्वा	१०.	दिया था
नलसखः	२.	नल का मित्र था	अक्ष	८.	पासे के खेल का
यः	३	जिसने	हृदयम्	९.	रहस्य
अश्वविद्या	४.	घोड़े की विद्या को	च अस्मै	७.	उन नल को
अयात्	६.	प्राप्त किया था	सर्वकामः	११.	सर्वकाम
नलात्	५	नल से	तु तत्सुतः ॥	१२.	उसका पुत्र हुआ

श्लोकार्थ— ऋतुपर्ण नल का मित्र था । जिसने नल से घोड़े की विद्या को प्राप्त किया था । उन नल को पासे के खेल का रहस्य दिया था । उसका पुत्र सर्वकाम हुआ ॥

अष्टादशः श्लोकः

ततः सुदासस्तत्पुत्रो मदयन्तीपतिर्नृप ।
आहुर्मित्रसहं यं वै कल्माषाङ्घ्रिमुत क्वचित् ।
वसिष्ठशापाद् रक्षोऽभूदनपत्यः स्वकर्मणा ॥१८॥

पदच्छेद— ततः सुदासः तत्पुत्रः मदयन्ती पतिः नृप । आहुः मित्र सहम् यम् वै ।
कल्माषअङ्घ्रिम् उत क्वचित् वशिष्ठशापात् रक्षः अभूत् अनपत्यः स्वकर्मणा ॥

शब्दार्थ—

ततः	२.	उनसे			
सुदासः	३.	सुदास	कल्माषअङ्घ्रिम्	११.	कल्माषपाद भी कहते है
तत्पुत्रः	४.	उनका पुत्र	उत क्वचित्	१०.	कहीं
मदयन्ती	५.	मदयन्ती	वशिष्ठ	१२.	वशिष्ठ के
पतिः	६.	पति (सौदास हुआ)	शापात्	१३.	शाप से
नृप	१.	हे राजन् !	रक्षः	१४.	राक्षस
आहुः	९.	कहते हैं	अभूत्	१५.	हो गया था (और)
मित्रसहम्	८.	मित्र सह भी	अनपत्यः	१७.	सन्तान रहित था
यम् वै ।	७.	जिसे	स्वकर्मणा ॥	१६.	अपने कर्मों के कारण

श्लोकार्थ— हे राजन् ! उनसे सुदास हुआ, उनका पुत्र मदयन्ती-पति सौदास था । जिसे मित्रसह भी कहते है । कहीं कल्माषपाद भी कहते है । वह वशिष्ठ के शाप से राक्षस हो गया था । और अपने कर्मों के कारण सन्तान रहित था ॥

एकोनविंशः श्लोकः

राजोवाच—किं निमित्तो गुरोः शापः सौदासस्य महात्मनः ।
एतद् वेदितुमिच्छामः कथ्यतां न रहो यदि ॥१९॥

पदच्छेद— किम् निमित्तः गुरोः शापः सौदासस्य महात्मनः ।
एतत् वेदितुम् इच्छामः कथ्यताम् न रहः यदि ॥

शब्दार्थ—

किम्	१.	किस	एतत्	७.	यह (हम)
निमित्तः	२.	कारण	वेदितुम्	८.	जानना
गुरोः	३.	गुरु का	इच्छामः	९.	चाहते हैं
शापः	४.	शाप	कथ्यताम्	१३.	कहिये
सौदासस्य	६	सौदास को हुआ	न	११.	नहीं
महात्मनः ।	५.	महात्मा	रहः	१०.	गोपनीय
			यदि ॥	१२.	हो तो

श्लोकार्थ—किस कारण गुरु का शाप महात्मा सौदास को हुआ । यह हम जानना चाहते हैं, गोपनीय नहीं हो तो कहिये ॥

विंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— सौदासो मृगयां किञ्चिच्चरन् रक्षो जघान ह ।
मुमोच भ्रातरं सोऽथ गतः प्रतिचिकीर्षया ॥२०॥

पदच्छेद— सौदासः मृगयाम् किञ्चित् चरन् रक्षः जघान ह ।
मुमोच भ्रातरम् सः अथ गतः प्रतिचिकीर्षया ॥

शब्दार्थ—

सौदासः	३.	सौदास ने	मुमोच	८.	छोड़ दिया था
मृगयाम्	१.	शिकार	भ्रातरम्	७.	भाई को
किञ्चित्	४.	किसी	सः	१०.	वह (उसका भाई)
चरन्	२.	खेलते हुये	अथ	९.	तदनन्तर
रक्षः	५.	राक्षस को	गतः	१२.	राजा के पास गया
जघान ह ।	६.	मार दिया और उसके	प्रतिचिकीर्षया ॥	११.	बदला लेने की इच्छा से

श्लोकार्थ—शिकार खेलते हुए सौदास ने किसी राक्षस को मार दिया । और उसके भाई को छोड़ दिया था । तदनन्तर वह उसका भाई बदला लेने की इच्छा से राजा के पास गया ॥

एकविंशः श्लोकः

स चिन्तयन्नघं राज्ञः सूदरूपधरो गृहे।
गुरवे भोक्तुकामाय पक्त्वा निन्ये नरामिषम् ॥२१॥

पदच्छेद— सः चिन्तयन् अघम् राज्ञः सूद रूपधरः गृहे।
गुरवे भोक्तु कामाय पक्त्वा निन्ये नर आमिषम् ॥

शब्दार्थ—

सः	१. वह	गुरवे	१०. गुरु के लिए
चिन्तयन्	४. चिन्तन करते हुए उसके	भोक्तु	८. भोजन
अघम्	३. पाप का	कामाय	९. करने के इच्छुक
राज्ञः	२. राजा के	पक्त्वा	१३. पकाकर
सूद	६. रसोइये का	निन्ये	१४. ले आया
रूपधरः	७. रूप धारण करके	नर	११. मनुष्य का
गृहे।	५. घर में	आमिषम् ॥	१२. माँस

श्लोकार्थ—वह राजा के पाप का चिन्तन करते हुए उसके घर में रसोइये का रूप धारण करके भोजन करने के इच्छुक गुरु के लिए मनुष्य का माँस पकाकर ले आया ॥

द्वाविंशः श्लोकः

परिवेक्ष्यमाणं भगवान् विलोक्याभक्ष्यमञ्जसा।
राजानमशपत् क्रुद्धो रक्षो ह्येवं भविष्यसि ॥२२॥

पदच्छेद— परिवेक्ष्यमाणम् भगवान् विलोक्य अभक्ष्यम् अञ्जसा।
राजानम् अशपत् क्रुद्धः रक्षः हि एवम् भविष्यसि ॥

शब्दार्थ—

परिवेक्ष्यमाणम्	१. परोसी जाने वाली	राजानम्	७. राजा को
भगवान्	४. भगवान् वसिष्ठ ने	अशपत्	८. शाप दे दिया (किन्तु)
विलोक्य	३. देखकर	क्रुद्धः	५. क्रोधित होकर
अभक्ष्यम्	२. अखाद्यवस्तु को	रक्षः	१०. राक्षस
अञ्जसा।	६. शीघ्र ही	हि एवम्	९. ऐसा ही
		भविष्यसि ॥	११. हो जायेगा

श्लोकार्थ—परोसी जाने वाली अखाद्य वस्तु को देखकर भगवान् वशिष्ठ ने क्रोधित होकर शीघ्र ही राजा को शाप दे दिया। किन्तु ऐसा ही राक्षस हो जायेगा ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

रक्षः कृतं तद् विदित्वा चक्रे द्वादशवार्षिकम् ।
सोऽप्यपोऽञ्जलिनाऽऽदाय गुरुं शप्तुं समुद्यतः ॥२३॥

पदच्छेद— रक्षः कृतम् तत् विदित्वा चक्रे द्वादश वार्षिकम् ।
सः अपि अपः अञ्जलिना आदाय गुरुं शप्तुम् समुद्यतः ॥

शब्दार्थ—

रक्षः	१.	राक्षस का	सः	८.	वह राजा
कृतम्	२.	किया हुआ	अपि अपः	९.	भी जल
तत्	३.	वह कार्य	अञ्जलिना	१०.	अञ्जलि में
विदित्वा	४.	जानकर (उस शाप को वसिष्ठ ने)	आदाय	१२.	लेकर
चक्रे	७.	कर दिया	गुरुम्	१३.	गुरु को
द्वादश	५.	बारह	शप्तुम्	१४.	शाप देने के लिए
वार्षिकम् ।	६.	वर्ष तक होने वाला	समुद्यतः ॥	१५.	तैयार हो गया

श्लोकार्थ—राक्षस का किया हुआ वह कार्य जानकर वसिष्ठ ने उस शाप को बारह वर्ष तक होने वाला कर दिया । वह राजा भी जल अञ्जलि में लेकर गुरु को शाप देने के लिए तैयार हो गया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

वारितो मदयन्त्यापो रुशतीः पादयोर्जहौ ।
दिशः खमवनीं सर्वं पश्यञ्जीवमयं नृपः ॥२४॥

पदच्छेद— वारितः मदयन्त्या आपः रुशतीः पादयोः जहौ ।
दिशः खम् अवनीम् सर्वम् पश्यन् जीवमयम् नृपः ॥

शब्दार्थ—

वारितः	३.	रोक दिया (तब)	खम् अवनीम्	७.	आकाश पृथ्वी
मदयन्त्या आपः	१.	मदयन्ती ने जल को	सर्वम्	८.	सब को
रुशतीः	२.	छोड़े जाने वाले उस	पश्यन्	११.	देखते हुए (उस जल को अपने)
पादयोः	१२.	पैरों पर	जीव	९.	जीव
जहौ ।	१३.	छोड़ दिया	मयम्	१०.	मय
दिशः	६.	दिशाओं	नृपः ॥	४.	राजा ने

श्लोकार्थ—मदयन्ती ने छोड़े जाने वाले उस जल को रोक दिया । राजा ने दिशाओं, आकाश, पृथ्वी सब को जीव मय देखते हुए उस जल को अपने पैरों पर छोड़ लिया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

राक्षसं भावमापन्नः पादे कल्माषतां गतः ।
व्यवायकाले ददृशे वनौकोदम्पती द्विजौ ॥२५॥

पदच्छेद— राक्षसम् भावम् आपन्नः पादे कल्माषताम् गतः ।
व्यवाय काले ददृशे वनौको दम्पती द्विजः ॥

शब्दार्थ—

राक्षसम्	१.	राक्षस	व्यवाय	७.	मैथुन
भावम्	२.	भाव को	काले	८.	काल में
आपन्नः	३.	प्राप्त हुये (राजा के)	ददृशे	१२.	देखा
पादे	४.	दोनों पैर	वनौको :	९.	वनवासी
कल्माषताम्	५.	काले	दम्पती	११.	दम्पति को
गतः ।	६.	पड़ गये (उसने)	द्विजः ॥	१०.	ब्राह्मण

श्लोकार्थ—राक्षस भाव को प्राप्त हुए राजा के दोनों पैर काले पड़ गये। उसने मैथुन काल में बनवासी ब्राह्मण दम्पति को देखा ॥

षड्विंशः श्लोकः

क्षुधार्तो जगृहे विप्रं तत्पत्न्याहाकृतार्थवत् ।
न भवान् राक्षसः साक्षादिक्ष्वाकूणां महारथः ॥२६॥

पदच्छेद— क्षुधार्तः जगृहे विप्रम् तत् पत्नी आह अकृत अर्थवत् ।
न भवान् राक्षसः साक्षात् इक्ष्वाकूणाम् महारथः ॥

शब्दार्थ—

क्षुधार्तः	१.	भूख से पीड़ित होकर (उसने)	अर्थवत् ।	५.	कामना वाली
जगृहे	३	पकड़ लिया	न	११.	नहीं है
विप्रम्	२.	ब्राह्मण को	भवान्	९.	आप
तत्	६.	उस ब्राह्मण की	राक्षसः	१०.	राक्षस
पत्नी	७.	पत्नी ने	साक्षात्	१२.	साक्षात्
आह	८.	कहा	इक्ष्वाकूणाम्	१३.	इक्ष्वाकुवंश के
अकृत	४.	अपूर्ण	महारथः ॥	१४.	महारथी हैं

श्लोकार्थ—भूख से पीड़ित होकर उसने ब्राह्मण को पकड़ लिया। अपूर्ण कामना वाली पत्नी ने कहा आप राक्षस नहीं हैं, इक्ष्वाकुवंश के महारथी हैं ॥

सप्तविंशः श्लोकः

मदयन्त्याः पतिर्वीर नाधर्मं कर्तुमर्हसि ।
देहि मेऽपत्यकामाया अकृतार्थं पतिं द्विजम् ॥२७॥

पदच्छेद— मदयन्त्याः पतिः वीरः न अधर्मम् कर्तुम् अर्हसि ।
देहि मे अपत्य कामायाः अकृतार्थम् पतिम् द्विजम् ॥

शब्दार्थ—

मदयन्त्याः	२.	मदयन्ती के	देहि	१४.	दे दीजिये
पतिः	३.	पति है	मे	१०.	मुझे
वीरः	१.	हे वीर ! आप	अपत्य	८.	सन्तान की
न	७.	नहीं है	कामायाः	९.	इच्छुक
अधर्मम्	४.	अधर्म	अकृतार्थम्	११.	अपूर्ण कामना वाले
कर्तुम्	५.	करने के	पतिम्	१३.	पति को
अर्हसि ।	६.	योग्य	द्विजम् ॥	१२.	ब्राह्मण

श्लोकार्थ—हे वीर ! आप मदयन्ती के पति है अधर्म करने के योग्य नहीं है, सन्तान की इच्छुक मुझे अपूर्ण कामना वाले ब्राह्मण पति को दे दीजिये ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

देहोऽयं मानुषो राजन् पुरुषस्याखिलार्थदः ।
तस्मादस्य वधो वीर सर्वार्थवध उच्यते ॥२८॥

पदच्छेद— देहः अयम् मानुषः राजन् पुरुषस्य अखिल अर्थदः ।
तस्मात् अस्य वधः वीर सर्वार्थ वधः उच्यते ॥

शब्दार्थ—

देहः	४.	शरीर	तस्मात्	९.	इस लिए
अयम्	२.	यह	अस्य	१०.	इसका
मानुषः	३.	मनुष्य का	वधः	११.	वध
राजन्	१.	हे राजन्	वीर	८.	हे वीर
पुरुषस्य	६.	पुरुषार्थों को	सर्वार्थ	१२.	सभी पुरुषार्थों की
अखिल	५.	सम्पूर्ण	वधः	१३.	हत्या
अर्थदः ।	७.	देने वाला है	उच्यते ॥	१४.	कहा गया है

श्लोकार्थ—हे राजन् ! यह मनुष्य का शरीर सम्पूर्ण पुरुषार्थों को देने वाला है । हे वीर ! इसलिए इसका वध सभी पुरुषार्थों की हत्या कहा गया है ॥

एकोनत्रिंश: श्लोक:

एष हि ब्राह्मणो विद्वांस्तपःशीलगुणान्वितः ।
आरिराधयिषुर्ब्रह्म महापुरुषसंज्ञितम् ।
सर्वभूतात्मभावेन भूतेष्वन्तर्हितं गुणैः ॥२९॥

पदच्छेद— एषः हि ब्राह्मणः विद्वान् तपः शील गुण अन्वितः ।
आरिराधयिषुः ब्रह्म महापुरुषसंज्ञितम् ।
सर्वभूत आत्म भावेन भूतेषु अन्तर्हितम् गुणैः ॥

शब्दार्थ—

एषः	२. यह	महापुरुष	९. महान् पुरुष
हि	१. निश्चित ही	संज्ञितम्	१०. नामधारी
ब्राह्मणः	३. ब्राह्मण	सर्व	११. सभी
विद्वान्	४. विद्वान्	भूत	१२. प्राणियों के
तपः	५. तपस्या	आत्म	१३. आत्म
शील	६. शील और	भावेन	१४. स्वरूप होने पर भी
गुण	७. गुणों से	भूतेषु	१६. प्राणियों में
अन्वितः	८. युक्त (तथा)	अन्तर्हितम्	१७. छिपे हुए
आरिराधयिषुः	१९. आराधना करने का इच्छुक है	गुणैः ।	१५. गुणों के द्वारा
ब्रह्म ॥	१८. ब्रह्म की		

श्लोकार्थ— निश्चित ही यह ब्राह्मण विद्वान, तपस्वी, शील और गुणों से युक्त महान् पुरुष नामधारी तथा सभी प्राणियों के आत्मा स्वरूप होने पर भी गुणों के द्वारा प्राणियों में छिपे हुए ब्रह्म की आराधना करने का इच्छुक है ॥

त्रिंशः श्लोकः

सोऽयं ब्रह्मर्षिवर्यस्ते राजर्षिप्रवराद् विभो ।
कथमर्हति धर्मज्ञ वधं पितुरिवात्मजः ॥३०॥

पदच्छेद— सः अयम् ब्रह्मर्षिवर्यः ते राजर्षि प्रवरात् विभो ।
कथम् अर्हति धर्मज्ञ वधम् पितुः इव आत्मजः ॥

शब्दार्थ—

सः अयम्	३. ऐसा यह	कथम्	११. कैसे हो (सकता है) क्योंकि
ब्रह्मर्षि	४. ब्रह्मर्षियों में	अर्हति	१०. योग्य
वर्यः	५. श्रेष्ठ ब्राह्मण	धर्मज्ञ	२. हे धर्मज्ञ
ते	८. आपके द्वारा	वधम्	९. वध
राजर्षि	६. राजर्षियों में	पितुः	१३. पिता का
प्रवरात्	७. श्रेष्ठ	इव	१४. उचित नहीं है
विभो ।	१. हे प्रभो !	आत्मजः ॥	१५. पुत्र द्वारा

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! हे धर्मज्ञ ! ऐसा यह ब्रह्मर्षियों में श्रेष्ठ ब्राह्मण राजर्षियों में श्रेष्ठ आपके द्वारा वध करने के योग्य कैसे हो सकता है । क्योंकि पुत्र द्वारा पिता का वध उचित नहीं है ॥

एकत्रिंशः श्लोक

तस्य साधोरपापस्य भ्रूणस्य ब्रह्मवादिनः ।
कथं वधं यथा बभ्रोर्मन्यते सन्मतो भवान् ॥३१॥

पदच्छेद— तस्य साधोः अपापस्य भ्रूणस्य ब्रह्म वादिनः ।
कथम् वधम् यथा बभ्रोः मन्यते सन्मतः भवान् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उस	कथम्	१०.	कैसे
साधोः	२.	साधु	वधम्	९.	वध
अपापस्य	३.	निरपराध	यथा	८.	जैसे का
भ्रूणस्य	४.	श्रोत्रिय	बभ्रोः	७.	गाय
ब्रह्म	५.	ब्रह्म	मन्यते	१३.	मानते हैं
वादिनः ।	६.	वेत्ता और	सन्मतः	१२.	ठीक
			भवान् ॥	११.	आप

श्लोकार्थ—उस साधु निरपराध, श्रोत्रिय ब्रह्मवेत्ता और गाय जैसे का वध कैसे आप ठीक मानते हैं ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

यद्ययं क्रियते भक्षस्तर्हि मां खाद पूर्वतः ।
न जीविष्ये विना येन क्षणं च मृतकं यथा ॥३२॥

पदच्छेद— यदि अयम् क्रियते भक्षः तर्हि माम् खाद पूर्वतः ।
न जीविष्ये विना येन क्षणम् च मृतकम् यथा ॥

शब्दार्थ—

यदि	१.	यदि	न	१२.	नहीं
अयम्	२.	इसका	जीविष्ये	१३.	जीऊँगी
क्रियते	४.	करना ही चाहते हैं	विना	१०.	बिना मैं
भक्षः	३.	भक्षण	येन	९.	इसके
तर्हि	५.	तो	क्षणम्	११.	एक क्षण भर भी
माम्	७.	मुझे	च	१४.	और
खाद	८.	खा लीजिये (क्योंकि)	मृतकम्	१५.	मृतक के
पूर्वतः ।	६.	पहले	यथा ॥	१६.	समान (हो जाऊँगी)

श्लोकार्थ—यदि इसका भक्षण करना ही चाहते हो तो पहले मुझे खा लीजिये। क्योंकि इसके बिना मैं एक क्षण भर भी नहीं जीऊँगी और मृतक के समान हो जाऊँगी ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

एवं करुणभाषिण्या विलपन्त्या अनाथवत् ।
व्याघ्रः पशुमिवाखादत् सौदासः शापमोहितः ॥३३॥

पदच्छेद— एवम् करुण भाषिण्या विलपन्त्या अनाथ वत् ।
व्याघ्रः पशुम् इव अखादत् सौदासः शापमोहितः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	व्याघ्रः	११.	बाघ
करुण	२.	करुणवाणी में	पशुम्	१२.	पशु को
भाषिण्या	३.	बोलती हुई	इव	१०.	जैसे
विलपन्त्या	६.	विलाप करती हुई	अखादत्	१३.	खा जाता है
अनाथ	४.	और अनाथ के	सौदासः	९.	सौदास ने (खा डाला)
वत् ।	५.	समान	शाप	७.	शाप से
			मोहितः ॥	८.	मोहित

श्लोकार्थ—इस प्रकार करुण वाणी में बोलती हुई और अनाथ के समान विलाप करती हुई उसके पति को शाप से मोहित सौदास ने खा डाला, जैसे बाघ पशु को खा जाता है ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

ब्राह्मणी वीक्ष्य दिधिषुं पुरुषादेन भक्षितम् ।
शोचन्त्यात्मानमुर्वीशमशपत् कुपिता सती ॥३४॥

पदच्छेद— ब्राह्मणी वीक्ष्य दिधिषुम् पुरुष आदेन भक्षितम् ।
शोचन्त्या आत्मानम् उर्वीशम् अशपत् कुपिता सती ॥

शब्दार्थ—

ब्राह्मणी	८.	ब्राह्मणी ने	शोचन्त्या	६.	शोक करती हुई
वीक्ष्य	४.	देखकर	आत्मानम्	५.	अपने लिए
दिधिषुम्	१.	गर्भाधान के लिए उद्यत पति को	उर्वीशम्	१०.	राजा को
पुरुष आदेन	२.	राक्षस के द्वारा	अशपत्	११.	शाप दे दिया
भक्षितम् ।	३	खाये हुए	कुपिता	९.	कुपित होकर
			सती ॥	७.	सती

श्लोकार्थ—गर्भाधान के लिये उद्यत पति को राक्षस के द्वारा खाये हुए देखकर अपने लिए शोक करती हुई सती ब्राह्मणी ने कुपित होकर राजा को शाप दे दिया ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

यस्मान्मे भक्षितः पाप कामार्तायाः पतिस्त्वया ।
तवापि मृत्युराधानादकृतप्रज्ञ दर्शितः ॥३५॥

पदच्छेद— यस्मात् मे भक्षितः पाप कामार्तायाः पतिः त्वया ।
तव अपि मृत्युः आधानात् अकृत प्रज्ञ दर्शितः ॥

शब्दार्थ—

यस्मात्	२.	जिस लिए	त्वया ।	३.	तूने
मे	५.	मेरे	तव अपि	८.	तेरी भी
भक्षितः	७.	खा लिया (अतः)	मृत्युः	९.	मृत्यु
पाप	१.	रे पापी	आधानात्	१०.	गर्भाधान करने से ही होगी
कामार्तायाः	४.	काम से पीड़ित	अकृत प्रज्ञ	११.	मूर्ख
पतिः	६.	पति को	दर्शितः ॥	१२.	येतु से बता दिया

श्लोकार्थ—रे पापी जिस लिए तूने काम से पीड़ित मेरे पति को खा लिया है । अतः तेरी भी मृत्यु गर्भाधान करने से ही होगी । रे मूर्ख ! यह तुझे बता दिया है ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

एवं मित्रसहं शप्त्वा पतिलोकपरायणा ।
तदस्थीनि समिद्धेऽग्नौ प्रास्य भर्तुर्गतिं गता ॥३६॥

पदच्छेद— एवम् मित्र सहम् शप्त्वा पति लोक परायणा ।
तत् अस्थीनि समिद्धे अग्नौ प्रास्य भर्तुः गतिम् गता ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	अस्थीनि	८.	हड्डियों को
मित्रसहम्	२.	मित्र सह राजा को	समिद्धे	९.	जलती हुई
शप्त्वा	३.	शाप देकर	अग्नौ	१०.	अग्नि में
पति	४.	पति के	प्रास्य	११.	डालकर
लोक	५.	लोक को	भर्तुः	१२	स्वामी
परायणा ।	६.	चाहने वाली वह ब्राह्मणी	गतिम्	१३.	गति को
तत्	७.	उस पति की	गता	१४.	प्राप्त हो गयी

श्लोकार्थ—इस प्रकार मित्रसह राजा को शाप देकर पति के लोक को चाहने वाली वह ब्राह्मणी उस पति की हड्डियों को जलती हुई अग्नि में डालकर स्वामी की गति को प्राप्त हो गयी ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

विशापो द्वादशाब्दान्ते मैथुनाय समुद्यतः ।
विज्ञाय ब्राह्मणीशापं महिष्या स निवारितः ॥३७॥

पदच्छेद— विशापः द्वादशअब्दअन्ते मैथुनाय समुद्यतः ।
विज्ञाय ब्राह्मणी शापम् महिष्या सः निवारितः ॥

शब्दार्थ—

विशापः	३.	शाप रहित होकर (राजाजब)	विज्ञाय	६.	जानकर
द्वादश	१.	बारह	ब्राह्मणी	७.	ब्रह्मणी के
अब्दअन्ते	२.	वर्ष की समाप्ति पर	शापम्	८.	शाप को
मैथुनाय	४.	मैथुन के लिए	महिष्या	६.	रानी ने
समुद्यतः ।	५.	उद्यत हुआ (तब)	सः	१०.	उसे
			निवारितः ॥	११.	रोक दिया

श्लोकार्थ— बारह वर्ष की समाप्ति पर शाप रहित होकर राजा जब मैथुन के लिए उद्यत हुआ । तब रानी ने ब्राह्मणी के शाप को जानकर उसे रोक दिया ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

तत ऊर्ध्वं स तत्याज स्त्रीसुखं कर्मणाप्रजाः ।
वसिष्ठस्तदनुज्ञातो मदयन्त्यां प्रजामधात् ॥३८॥

पदच्छेद— ततः ऊर्ध्वम् सः तत्याज स्त्री सुखम् कर्मणा अप्रजाः ।
वशिष्ठः तत् अनुज्ञातः मदयन्त्याम् प्रजाम् अधात् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	उसके	अप्रजाः ।	८.	सन्तान हीन हो गया (तब)
ऊर्ध्वम्	२.	बाद	वशिष्ठः	११.	वशिष्ठ ने
सः	३.	उस राजा ने	तत्	६.	उसकी
तत्याज	६.	त्याग दिया	अनुज्ञातः	१०.	आज्ञा से
स्त्री	४.	स्त्री	मदयन्त्याम्	१२.	मदयन्ती में
सुखम्	५.	सुख को	प्रजाम्	१३.	गर्भाधान
कर्मणा	७.	कर्म के फल स्वरूप	अधात् ॥	१४.	कराया

श्लोकार्थ— उसके बाद उस राजा ने स्त्री-सुख को त्याग दिया । वह कर्म के फल स्वरूप सन्तान हीन हो गया । तब उसकी आज्ञा से वसिष्ठ ने मदयन्ती को गर्भाधान कराया ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

सा वै सप्त समा गर्भमबिभ्रन्न व्यजायत ।
जघ्नेऽश्मनोदरं तस्याः सोऽश्मकस्तेन कथ्यते ॥३९॥

पदच्छेद— सा वै सप्त समाः गर्भम् अबिभ्रत् न व्यजायत ।
जघ्ने अश्मना उदरम् तस्याः सः अश्मकः तेन कथ्यते ॥

शब्दार्थ—

सा वै	१.	उस (मदयन्ती ने)	जघ्ने	१०.	आघात किया
सप्त	२.	सात	अश्मना	९.	पत्थर से
समाः	३.	वर्ष तक	उदरम्	८.	पेट पर
गर्भम्	४.	गर्भ को	तस्याः	७.	तब वसिष्ठ ने उसने
अबिभ्रत्	५.	धारण किया (किन्तु)	सः अश्मकः	१२.	वह बालक अश्मक
न व्यजायत ।	६.	नहीं सन्तान हुई	तेन	११.	उससे
			कथ्यते ॥	१३.	कहलाया

श्लोकार्थ—उस मदयन्ती ने सात वर्ष तक गर्भ को धारण किया । किन्तु सन्तान नहीं हुई । तब वशिष्ठ ने पेट पर पत्थर से आघात किया । उससे वह बालक अश्मक कहलाया ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

अश्मकान्मूलको जज्ञे यः स्त्रीभिः परिरक्षितः ।
नारीकवच इत्युक्तो निःक्षत्रे मूलकोऽभवत् ॥४०॥

पदच्छेद— अश्मकात् मूलकः जज्ञे यः स्त्रीभिः परिरक्षितः ।
नारीकवचः इति उक्तः निःक्षत्रे मूलकः अभवत् ॥

शब्दार्थ—

अश्मकात्	१.	अश्मक से	नारीकवचः	८.	वह नारी कवच भी
मूलकः	२.	मूलक	इति	७.	इसी से
जज्ञे	३.	उत्पन्न हुआ	उक्तः	९.	कहलाया
यः	४.	जिसकी	निःक्षत्रे	१०.	पृथ्वी के क्षत्रियहीन हो जाने पर
स्त्रीभिः	५.	स्त्रियों ने	मूलकः	११.	मूलक
परिरक्षितः ।	६.	रक्षा की	अभवत् ॥	१२.	क्षत्रिय वंश को चलाने वाला हुआ

श्लोकार्थ—अश्मक से मूलक उत्पन्न हुआ । जिसकी स्त्रियों ने रक्षा की । इसी से वह नारी कवच भी कहलाया । पृथ्वी के क्षत्रिय विहोन हो जाने पर मूलक क्षत्रिय वंश को चलाने वाला हुआ ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

ततो दशरथस्तस्मात् पुत्र ऐडविडस्ततः ।
राजा विश्वसहो यस्य खट्वाङ्गश्चक्रवर्त्यभूत् ॥४१॥

पदच्छेद— ततः दशरथः तस्मात् पुत्रः ऐडविडः ततः ।
राजा विश्वसहः यस्य खट्वाङ्गः चक्रवर्ती अभूत् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	उससे	राजा	८	राजा उत्पन्न हुआ
दशरथः	२.	दशरथ हुए	विश्वसहः	७.	बिश्वसह
तस्मात्	३.	उससे	यस्य	९.	जिसका पुत्र
पुत्रः	५.	पुत्र उत्पन्न हुआ	खट्वाङ्गः	१०.	खट्वाङ्ग
ऐडविडः	४.	ऐडविड नामक	चक्रवर्ती	११.	चक्रवर्ती राजा
ततः ।	६.	उससे	अभूत् ॥	१२.	हुआ

श्लोकार्थ—उससे दशरथ हुए। उससे एडविड नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। उससे विश्वसह राजा उत्पन्न हुआ। जिसका पुत्र खट्वाङ्ग चक्रवर्ती राजा हुआ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

यो देवैरर्थितो दैत्यानवधीद् युधि दुर्जयः ।
मुहूर्तमायुर्ज्ञात्वैत्य स्वपुरं संदधे मनः ॥४२॥

पदच्छेद— यः देवैः अर्थितः दैत्यान् अवधीत् युधि दुर्जयः ।
मुहूर्तम् आयुः ज्ञात्वा एत्य स्वपुरम् संदधे मनः ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जिस	मुहूर्तम्	८	दो घड़ी
देवैः	३.	देवताओं के	आयुः	९.	अपनी शेष आयु को
अर्थितः	४.	प्रार्थना करने पर	ज्ञात्वा	१०.	जानकर
दैत्यान	६.	दैत्यों का	एत्य	१२.	आकर
अवधीत्	७.	वध किया था (और)	स्वपुरम्	११.	अपने नगर में
युधि	५.	युद्ध में	संदधे	१४.	भगवान् में लगा दिया
दुर्जयः ।	२.	अजेय (खट्वाङ्ग राजा ने)	मनः ॥	१३.	मन को

श्लोकार्थ—जिस अजेय खट्वाङ्ग राजा ने देवताओं के प्रार्थना करने पर युद्ध में दैत्यों का वध किया था और दो घड़ी शेष आयु को जान कर अपने नगर में आकर मन को भगवान् में लगा दिया॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

न मे ब्रह्मकुलात् प्राणाः कुलदैवान्न चात्मजाः ।

न श्रियो न मही राज्यं न दाराश्चातिवल्लभाः ॥४३॥

पदच्छेद— न मे ब्रह्म कुलात् प्राणाः कुल दैवात् न च आत्मजाः ।
न श्रियः न मही राज्यम् न दाराः च अति वल्लभाः ॥

शब्दार्थ—

न मे	६. नहीं मुझे	न	१०. नहीं
ब्रह्म	३. ब्राह्मण	श्रियः	११. लक्ष्मी
कुलात्	४. वंश से (बढ़कर)	न मही	१२. न पृथ्वी
प्राणाः	७. प्राण	राज्यम्	१३. न राज्य
कुल	१. कुल के	न दाराः	१५. न स्त्री ही है
दैवात्	२. इष्ट देव	च अति	१४. और
न च	८. नहीं और	वल्लभाः ॥	५. प्रिय
आत्मजाः ।	९. पुत्र		

श्लोकार्थ— कुल के इष्ट देव ब्राह्मण वंश से बढ़कर प्रिय मुझे नहीं प्राण, न पुत्र, न लक्ष्मी, न पृथ्वी, न राज्य और न स्त्री ही है ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

न बाल्येऽपि मतिर्मह्यमधर्मे रमते क्वचित् ।

नापश्यमुत्तमश्लोकादन्यत् किञ्चन वस्त्वहम् ॥४४॥

पदच्छेद— न बाल्ये अपि मतिः मह्यम् अधर्मे रमते क्वचित् ।
न अपश्यम् उत्तमश्लोकात् अन्यत् किञ्चन वस्तु अहम् ॥

शब्दार्थ—

न	७. नहीं	क्वचित् ।	५. किसी
बाल्ये	१. बचपन में	न अपश्यम्	१४. नहीं देखा
अपि	२. भी	उत्तमश्लोकात्	९. भगवान् से
मतिः	४. बुद्धि	अन्यत्	१०. भिन्न
मह्यम्	३. मेरी	किञ्चन	११. किसी
अधर्मे	६. अधर्म में	वस्तु	१२. वस्तु को भी
रमते	८. गई (और)	अहम् ॥	१३. मैंने

श्लोकार्थ—बचपन में भी मेरी बुद्धि किसी अधर्म में नहीं गई और भगवान् से भिन्न किसी वस्तु को भी मैंने नहीं देखा ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

देवैः कामवरो दत्तो मह्यं त्रिभुवनेश्वरैः ।
न वृणे तदहं कामं भूतभावनभावनः ॥४५॥

पदच्छेद— देवैः कामवरः दत्तः मह्यम् त्रिभुवन ईश्वरैः ।
न वृणे तम् अहम् कामम् भूत भावन भावनः ॥

शब्दार्थ—

देवैः	३.	देवताओं ने	न	१०.	नहीं
कामवरः	५.	इच्छानुसार वरदान	वृणे	११.	चाहता हूँ (सभी)
दत्तः	६.	दिया (किन्तु)	तम्	८.	उस
मह्यम्	४.	मुझे	अहम्	७.	मैं
त्रिभुवन	१.	तीनों लोक के	कामम्	९.	कामना को
ईश्वरैः ।	२.	ईश्वर	भूत भावन	१२.	प्राणियों के जीवन दाता
			भावनः ॥	१३.	भगवान् हैं

श्लोकार्थ—तीनों लोको के ईश्वर देवताओं ने मुझे इच्छानुसार वरदान दिया । किन्तु मैं उस कामना को नहीं चाहता हूँ । सभी प्राणियों के जीवनदाता भगवान् है ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

ये विक्षिप्तेन्द्रियधियो देवास्ते स्वहृदि स्थितम् ।
न विन्दन्ति प्रियं शश्वदात्मानं किमुतापरे ॥४६॥

पदच्छेद— ये विक्षिप्त इन्द्रिय धियः देवाः ते स्वहृदि स्थितम् ।
न विन्दन्ति प्रियम् शश्वत् आत्मानम् किमुत अपरे ॥

शब्दार्थ—

ये	१.	जो	न	१२.	नहीं
विक्षिप्त	२.	चञ्चल	विन्दन्ति	१३.	जानते हैं (फिर)
इन्द्रिय	३.	इन्द्रिय (और)	प्रियम्	१०.	प्रिय
धियः	४.	बुद्धि वाले	शश्वत्	९.	सर्वदा
देवाः	५.	देवता हैं	आत्मानम्	११.	आत्मस्वरूप भगवान् को
ते	६.	वे	किमुत	१५.	क्या जाने
स्वहृदि	७.	अपने हृदय में	अपरे ॥	१४.	दूसरे
स्थितम् ।	८.	विराजमान			

श्लोकार्थ—जो चञ्चल इन्द्रिय और बुद्धि वाले देवता हैं । वे अपने हृदय में विराजमान सर्वदा प्रिय आत्मस्वरूप भगवान् को नहीं जानते हैं । फिर दूसरे क्या जाने ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

अथेशमायारचितेषु सङ्गं गुणेषु गन्धर्वपुरोपमेषु ।
रूढं प्रकृत्याऽऽत्मनि विश्वकर्तुर्भावेन हित्वा तमहं प्रपद्ये ॥४७॥

पदच्छेद— अथ ईश माया रचितेषु सङ्गम् गुणेषु गन्धर्वपुर उपमेषु ।
रूढम् प्रकृत्या आत्मनि विश्वकर्तुः भावेन हित्वा तम् अहम् प्रपद्ये ॥

शब्दार्थ—

अथ	१	तदनन्तर	रूढम्	१२.	लीन विषयों को
ईश	२	ईश्वर को	प्रकृत्या	१०.	प्रकृति के द्वारा
माया	३	माया से	आत्मनि	११.	मन में
रचितेषु	४.	रचे गये	विश्वकर्तुः	१३.	भगवान् की
सङ्गम्	९.	आसक्ति को (तथा)	भावेन	१४	भावना से
गुणेषु	८	गुणों में	हित्वा	१५	छोड़कर
गन्धर्व	५	गन्धर्व	तम्	१७.	उनकी
पुर	६.	नगरों के	अहम्	१६.	मैं
उपमेषु ।	७	समान	प्रपद्ये ॥		शरण लेता हूँ

श्लोकार्थ—तदनन्तर ईश्वर की माया से रचे गये गन्धर्व नगरों के समान गुणों में आसक्ति को तथा प्रकृति के द्वारा मन में लीन विषयों को भगवान् की भावना से छोड़कर मैं उनकी शरण लेता हूँ ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

इति व्यवसितो बुद्ध्या नारायणगृहीतया ।
हित्वान्यभावमज्ञानं ततः स्वं भावमाश्रितः ॥४८॥

पदच्छेद— इति व्यवसितः बुद्ध्या नारायण गृहीतया ।
हित्वा अन्य भावम् अज्ञानम् ततः स्वयम् भावम् आश्रितः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	अन्य भावम्	७.	अनात्मा पदार्थों में आत्मभाव को
व्यवसितः	५.	निश्चय करके	अज्ञानम्	६.	अज्ञान मूलक
बुद्ध्या	४.	बुद्धि से	ततः	९.	तब वे
नारायण	२.	भगवान् में	स्वयम्	१०.	अपने
गृहीतया ।	३.	लगी हुई	भावम्	११.	स्वरूप में
हित्वा	८	छोड़कर	आश्रितः ॥	१२.	स्थित हो गये

श्लोकार्थ—इस प्रकार भगवान् में लगी हुई बुद्धि से निश्चय करके अज्ञान मूलक अनात्मा पदार्थों में आत्मभाव को छोड़कर तब वे अपने स्वरूप में स्थित हो गये ॥

एकानपञ्चाशत्तमः श्लोकः

यत् तद् ब्रह्म परं सूक्ष्ममशून्यं शून्यकल्पितम् ।
भगवान् वासुदेवेति यं गृणन्ति हि सात्वताः ॥४९॥

पदच्छेद— यत् तद् ब्रह्म परम् सूक्ष्मम् अशून्यम् शून्य कल्पितम् ।
भगवान् वासुदेव इति यम् गृणन्ति हि सात्वताः ॥

शब्दार्थ—

यत्	१. जो	कल्पितम् ।	८. समान है
तद्	२. वह	भगवान्	११. भगवान्
ब्रह्म	४. ब्रह्म स्वरूप	वासुदेव इति	१२. वासुदेव ऐसा
परम	३. पर	यम्	९. जिन्हें
सूक्ष्मम्	५. सूक्ष्म	गृणन्ति	१३. कहते है
अशून्यम्	६. शून्य से रहित	सात्वताः	१०. भक्त जन
शून्य	७. शून्य के		

श्लोकार्थ—जो वह पर ब्रह्मस्वरूप, सूक्ष्म, शून्य से रहित तथा शून्य के समान है, जिन्हें भक्तजन भगवान् वासुदेव ऐसा कहते हैं ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे
सूर्यवंशानुवर्णने नवमः अध्यायः ॥९॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

दशमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

शुक उवाच— खट्वाङ्गाद् दीर्घबाहुश्च रघुस्तस्मात् पृथुश्रवाः ।
अजस्ततो महाराजस्तस्माद् दशरथोऽभवत् ॥१॥

पदच्छेद— खट्वाङ्गात् दीर्घबाहुः च रघुः तस्मात् पृथुश्रवाः ।
अजः ततः महाराजः तस्मात् दशरथः अभवत् ॥

शब्दार्थ—

खट्वाङ्गात्	१. खट्वाङ्ग से	अजः	८. अज
दीर्घबाहुः	२. दीर्घबाहु	ततः	७. उनसे
च	३. और	महाराजः	१०. महाराज
रघुः	६. रघु हुये	तस्मात्	९. उनसे
तस्मात्	४. उससे	दशरथः	११. दशरथ
पृथुश्रवाः ।	५. परम यशस्वी	अभवत् ॥	१२. हुये

श्लोकार्थ—खट्वाङ्ग से दीर्घबाहु और उससे परमयशस्वी रघु हुये । उनसे अज, उनसे महाराज दशरथ हुये ॥

द्वितीय श्लोकः

तस्यापि भगवानेष साक्षाद् ब्रह्ममयो हरिः ।
अंशांशेन चतुर्धागात् पुत्रत्वं प्रार्थितः सुरैः ।
रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्ना इति संज्ञया ॥२॥

पदच्छेद— तस्य अपि भगवान् एषः साक्षात् ब्रह्ममयः हरिः ।
अंश अंशेन चतुर्धा अगात् पुत्रत्वम् प्रार्थितः सुरैः ।
राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न इति संज्ञया ॥

शब्दार्थ—

तस्य अपि	१.	उन दशरथ के भी	पुत्र	१७	पुत्र
भगवान्	५.	भगवान्	त्वम्	१६.	उनके
एषः	२.	ये	प्रार्थितः	८	प्रार्थना करने पर (अपने)
साक्षात्	३.	साक्षात्	सुरैः ।	७.	देवताओं के द्वारा
ब्रह्ममयः	४.	ब्रह्ममय	राम	११.	राम
हरिः	६.	विष्णु	लक्ष्मण	१२.	लक्ष्मण
अंश-अंशेन	९.	अंश के अंश से	भरत	१३.	भरत और
चतुर्धा	१०.	चार रूप धारण करके	शत्रुघ्न	१४.	शत्रुघ्न
अगात्	१८.	हुये	इति संज्ञया ॥	१५.	इस नाम से

श्लोकार्थ—उन दशरथ के भी ये साक्षात् ब्रह्ममय भगवान् विष्णु देवताओं के द्वारा प्रार्थना करने पर अपने अंश के अंश से चाररूप धारण करके राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न इस नाम से उनके पुत्र हुये ॥

तृतीयः श्लोकः

तस्यानुचरितं राजन्नृषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ।
श्रुतं हि वर्णितं भूरि त्वया सीतापतेर्मुहुः ॥३॥

पदच्छेद— तस्य अनुचरितम् राजन् ऋषिभिः तत्त्वदर्शिभिः ।
श्रुतम् हि वर्णितम् भूरि त्वया सीतापतेः मुहुः ॥

शब्दार्थः—

तस्य	२.	उन	श्रुतम् हि	१०.	सुना है
अनुचरितम्	४.	चरित्र का	वर्णितम् भूरि	७.	अधिक वर्णन किया है
राजन्	१.	हे राजन् !	त्वया	८.	आपने
ऋषिभिः	६.	महर्षियों ने	सीतापतेः	३.	सीतापति राम के
तत्त्वदर्शिभिः ।	५.	तत्त्व दर्शी	मुहुः ॥	९.	बार-बार

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उन सीतापति राम के चरित्र का तत्त्वदर्शी महर्षियों में अधिक वर्णन किया है । और आपने बार-बार सुना है ॥

चतुर्थः श्लोकः

गुर्वर्थे त्यक्तराज्यो व्यचरदनुवनं पद्मपद्भ्यां प्रियायाः
पाणिस्पर्शाक्षमाभ्यां मृजितपथरुजो यो हरीन्द्रानुजाभ्याम् ।
वैरूप्याच्छूर्पणख्याः प्रियविरहरुषाऽऽरोपितभ्रूविजृम्भ-
त्रस्ताब्धिर्बद्धसेतुः खलदवदहनः कोसलेन्द्रोऽवतान्नः ॥४॥

पदच्छेद— गुरु अर्थे त्यक्त राज्यः व्यचरत् अनुवनम् पद्मपद्भ्याम् प्रियायाः
पाणि स्पर्श क्षमाभ्याम् मृजित पथरुजः यः हरीन्द्र अनुजाभ्याम् ॥
वैरूप्यात् शूर्पणख्याः प्रिय विरहरुषा आरोपितभ्रू विजृम्भ
त्रस्त अब्धिः बद्ध सेतुः खल दवदहनः कोसलेन्द्रः अवतात् नः ॥

शब्दार्थ—

गुरु अर्थे	१.	गुरु के लिये	वैरूप्यात्	१८.	विरूप कर देने के कारण
त्यक्त	३.	छोड़ दिया (और)	शूर्पणख्याः	१७.	शूर्पणखा को
राज्यः	२.	राज्य को	प्रिय	१९.	प्रियतमा के
व्यचरत्	११.	घूमते रहे	विरह	२०.	वियोगजन्य
अनुवनम्	१०.	वन-वन	रुषा	२१.	क्रोध से (उनकी
पद्म	९.	कमलों से	आरोपित	२३.	तन गई (जिससे)
पद्भ्याम्	८.	चरण	भ्रूविजृम्भ	२२.	भ्रकुटि
प्रियायाः ।	४.	प्रिया जानकी के	त्रस्त	२४.	डरे हुये
पाणि	५.	हाथों के	अब्धिः	२५.	समुद्र पर
स्पर्श	६.	स्पर्श को	बद्धसेतुः	२६.	पुल बाँध कर
अक्षमाभ्याम्	७.	सहने में असमर्थ	खल	२७.	दुष्ट राक्षसों को
मृजित	१४.	थकावट को	दव	२८.	दवाग्नि के समान
पथरुजः	१३.	मार्ग की	दहनाः	२९.	दग्ध कर दिया
यः	१२.	जिनके	कौसलेन्द्रः	३०.	वे कौसलेन्द्र भगवान् राम
हरीन्द्र	१५.	हनुमान् और	अवतात्	३२.	रक्षा करें
अनुजाभ्याम् ।	१६.	लक्ष्मण जी (मिटा देते थे)	नः ॥	३१.	हमारी

श्लोकार्थ—गुरु के लिये राज्य को छोड़ दिया और प्रिया जानकी के हाथों के स्पर्श को सहने में असमर्थ चरण कमलों से वन-वन घूमते रहे । जिनके मार्ग को थकावट को हनुमान् और लक्ष्मण जी मिटा देते थे । शूर्पणखा को विरूप करने के कारण प्रियतमा के वियोगजन्य क्रोध से उनकी भ्रुकुटी तन गई । जिससे डरे हुये समुद्र पर पुल बाँध कर दुष्ट राक्षसों को दवाग्नि के समान दग्ध कर दिया । वे कौसलेन्द्र भगवान् राम हमारी रक्षा करें ॥

पञ्चमः श्लोकः

विश्वामित्राध्वरे येन मारीचाद्या निशाचराः ।
पश्यतो लक्ष्मणस्यैव हता नैर्ऋतपुङ्गवाः ॥५॥

पदच्छेद— विश्वामित्र अध्वरे येन मारीच आद्याः निशाचराः ।
पश्यतः लक्ष्मणस्य एव हताः नैर्ऋत पुङ्गवाः ॥

शब्दार्थ—

विश्वामित्र	१.	विश्वामित्र के	पश्यतः	८.	देखते-देखते
अध्वरे	२.	यज्ञ में	लक्ष्मणस्य	७.	लक्ष्मण के
येन	३.	जिन्होंने	एव	९.	ही
मारीच	४.	मारीच	हताः	१२.	मार दिया
आद्याः	५.	आदि	नैर्ऋत	११.	राक्षसों को
निशाचराः ।	६.	राक्षसों को (तथा)	पुङ्गवाः ॥	१०.	बड़े-बड़े

श्लोकार्थ—विश्वामित्र के यज्ञ में जिन्होंने मारीच आदि राक्षसों को तथा लक्ष्मण के देखते-देखते ही बड़े-बड़े राक्षसों को मार दिया ॥

षष्ठः श्लोकः

यो लोकवीरसमितौ धनुरैशमुग्रं सीतास्वयंवरगृहे त्रिशतोपनीतम् ।
आदाय बालगजलील इवेक्षुयष्टिं सज्जीकृतं नृप विकृष्य बभञ्ज मध्ये ॥६॥

पदच्छेद— यः लोकवीर समितौ धनुः ऐशम् उग्रम् सीता स्वयंवर गृहे त्रिशत उपनीतम् ।
आदाय बाल गजलीलः इव इक्षु यष्टिम् सज्जी कृतम् नृप विकृष्य बभञ्ज मध्ये ॥

शब्दार्थ—

यः	२.	जिन्होंने	बाल	२०	बच्चा
लोकवीर	३.	संसार के वीरों की	गजलीलः	१९	हाथी का
समितौ	४.	सभा में	इव	१८.	जैसे खेल-खेल में
धनुः	११.	धनुष को	इक्षु	२१.	गन्ने
ऐशम्	९.	शंकर के	यष्टिम्	२२.	डंडे को (तोड़ देता है)
उग्रम्	१०.	भयंकर	सज्जी	१३.	उस पर डोरी
सीता	५.	सीता के	कृतम्	१४.	चढ़ाकर (तथा)
स्वयंवर गृहे	६.	स्वयंवर के घर में	नृप	१.	हे राजन् !
त्रिशत	७.	तीन सौ वीरों के द्वारा	विकृष्य	१५.	खींचकर
उपनीतम् ।	८.	लाये गये	बभञ्ज	१७.	टुकड़े कर दिये
आदाय	१२.	उठाकर	मध्ये ॥	१६.	बीच से उसी तरह उसके

श्लोकार्थ—हे राजन् ! जिन्होंने संसार के वीरों की सभा में सीता के स्वयंवर के घर में तीन सौ वीरों के द्वारा लाये गये शंकर के भयंकर धनुष को उठाकर, उस पर डोरी चढ़ाकर तथा खींचकर बीच से उसी तरह उसके टुकड़े कर दिये, जैसे खेल-खेल में हाथी का बच्चा गन्ने के डण्डे को तोड़ देता है ॥

सप्तमः श्लोकः

जित्वानुरूपगुणशीलवयोऽङ्गरूपां सीताभिधां श्रियमुरस्यभिलब्धमानाम् ।
मार्गे व्रजन् भृगुपतेर्व्यनयत् प्ररूढं दर्पं महीमकृत यस्त्रिरराजबीजाम् ॥७॥

पदच्छेद— जित्वा अनुरूप गुणशील वयः अङ्गरूपाम् सीताभिधाम् श्रियम् उरसि अभिलब्ध मानाम् ।
मार्गे व्रजन्भृगुपते व्यनयत् प्ररूढम् दर्पम् महीम् अकृत यः त्रि अराजबीजाम् ॥

शब्दार्थ—

जित्वा	९.	जीतकर	मार्गे व्रजन	१०.	मार्ग में जाते हुए
अनुरूपगुण	१	अपने समान गुण	भृगुपते	११.	परशु राम जी के
शीलवय	२	शील अवस्था	व्यनयत्	१३.	दूर कर दिया
अङ्गरूपाम्	३	शरीर और रूपवाली (तथा)	प्ररूढम् दर्पम्	१२.	बढ़े हुए गर्व को
सीताभिधाम्	७.	सीता नामक	महीम्	१६.	पृथ्वी को
श्रियम्	८	लक्ष्मी को	अकृत	१८.	कर दिया था
उरसि	४	वक्षः स्थल पर	यः	१४.	जिन्होंने
अभिलब्ध	६.	प्राप्त करने वाली	त्रिः	१५.	तीन (सात इक्कीस) बार
मानाम् ।	५.	सम्मान	अराजबीजाम् ॥	१७.	राजाओं के बीज से रहित

श्लोकार्थ—जिन्होंने अपने समान गुणशील, अवस्था, शरीर और रूपवाली तथा वक्ष स्थल पर सम्मान प्राप्त करने वाली सीता नामक लक्ष्मी को जीतकर मार्ग में जाते हुए परशुरामजी के बढ़े हुए गर्व को दूर कर दिया, जिन्होंने तीन (सात इक्कीस) बार पृथ्वी को राजाओं के बीज से रहित कर दिया था ॥

अष्टमः श्लोकः

यः सत्यपाशपरिवीतपितुर्निदेशं स्त्रैणस्य चापि शिरसा जगृहे सभार्यः ।
राज्यं श्रियं प्रणयिनः सुहृदो निवासं त्यक्त्वा ययौ वनमसूनिव मुक्तसङ्गः ॥८॥

पदच्छेद— यः सत्य पाशपरिवीत पितुः निदेशम् स्त्रैणस्य च अपि शिरसा जगृहे सभार्यः ।
राज्यम् श्रियम् प्रणयिनः सुहृदः निवासम् त्यक्त्वा ययौ वनम् असून् इव मुक्तसङ्गः ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जिन्होंने	राज्यम् श्रियम्	११.	रूप लक्ष्मी
सत्यपाश	४	सत्यरूपी पाश में	प्रणयिनः	१२.	प्रेमी
परिवीतपितुः	५.	बंधे हुए पिता की	सुहृदः	१३.	मित्र
निदेशम्	६.	आज्ञा को	निवासम्	१४.	भवन इत्यादि को
स्त्रैणस्य	२.	स्त्रीभक्त होने पर	त्यक्त्वा	१५.	त्यागकर
च अपि	३	भी	ययौ	१८.	चले गये
शिरसा	८	शिर झुकाकर	वनम्	१७.	वन में
जगृहे	९.	ग्रहण किया और	असून् इव	१०.	प्राणों के समान (प्रिय)
सभार्यः ।	७.	पत्नी सहित	मुक्तसङ्गः ॥	१६.	आसक्ति रहित होकर

श्लोकार्थ—जिन्होंने स्त्रीभक्त होने पर भी सत्यरूपी पाश में बंधे हुए पिता की आज्ञा को पत्नी सहित सिर झुकाकर, ग्रहण किया । और प्राणों के समान प्रिय राज्य लक्ष्मी, प्रेमी, मित्र, भवन इत्यादि को त्यागकर आसक्ति रहित होकर वन में चले गये ॥

नवमः श्लोक

रक्षःस्वसुर्व्यकृत रूपमशुद्धबुद्धेस्तस्याः खरत्रिशिरदूषणमुख्यबन्धून् ।
जघ्ने चतुर्दशसहस्रमपारणीयकोदण्डपाणिरटमान उवास कृच्छ्रम् ॥९॥

पदच्छेद— रक्षः स्वसुः व्यकृत रूपम् अशुद्धबुद्धेः तस्याः खर त्रिशिर दूषण मुख्य बन्धून् ।
जघ्ने चतुर्दश सहस्रम् अपारणीय कोदण्ड पाणिः अटमानः उवास कृच्छ्रम् ॥

शब्दार्थ—

रक्षः	३.	राक्षस	बन्धून् ।	१२.	भाइयों को
स्वसुः	४.	बहन शूर्पणखा के	जघ्ने	१३.	मार दिया (तथा)
व्यकृत	६.	विरूप कर दिया	चतुर्दश	८.	चौदह
रूपम्	५.	रूप को	सहस्र	९.	हजार
अशुद्ध	१.	कलुषित	अपारणीय	१४.	दुर्लंघ्य
बुद्धेः	२.	बुद्धिवाली	कोदण्डपाणिः	१५.	धनुष को हाथ में लिए हुए
तस्याः	७.	उसके	अटमानः	१७	विचरते हुए (वन में)
खरत्रिशिर	१०.	खरत्रिशिर	उवास	१८.	निवास करने लगे
दूषणमुख्य	११	दूषणादि प्रधान	कृच्छ्रम् ॥	१६.	कठिनाई से

श्लोकार्थ—कलुषित बुद्धिवाली राक्षस की बहन शूर्पणखा के रूप को विरूप कर दिया । उसके चौदह हजार खरदूषण और त्रिशिर आदि प्रधान भाइयों को मार दिया तथा दुर्लंघ्य धनुष को हाथ में लिए कठिनाई से विचरते हुए निवास करने लगे ॥

दशमः श्लोकः

सीताकथाश्रवणदीपितहृच्छयेन सृष्टं विलोक्य नृपते दशकन्धरेण ।
जघ्नेऽद्भुतैणवपुषाऽऽश्रमतोऽपकृष्टो मारीचमाशु विशिखेन यथा कमुग्रः ॥१०॥

पदच्छेद—सीता कथा श्रवण दीपित हृच्छयेन सृष्टम् विलोक्य नृपते दशकन्धरेण ।
जघ्ने अद्भुत ऐण वपुषा आश्रमतः अपकृष्टः मारीचम् आशु विशिखेन यथा कम् उग्रः ॥

शब्दार्थ—

सीता	२.	सीता की	जघ्ने	१७	मार दिया
कथा	३	कथा को	अद्भुतऐण	१०.	अद्भुत मृग
श्रवण	४.	सुनकर	वपुषा	११.	शरीर के द्वारा
दीपित	५.	प्रदीप्त	आश्रमतः	१२.	आश्रम से
हृच्छयेन	६.	काम वासना वाले	अपकृष्टः	१३.	दूर ले गये हुए (राम ने)
सृष्टम्	८.	भेजे गये मारीच को	मारीचम्	१४	मारीच को
विलोक्य	९.	देखकर	आशु	१५	शीघ्र
नृपते	१.	हे राजन् !	विशिखेन	१६	बाण से
दशकन्धरेण ।	७.	रावण के द्वारा	यथा	१८.	जैसे
			कमुग्रः ॥	१९.	वीरभद्र ने दक्ष प्रजापति को (मार दिया था)

श्लोकार्थ—हे राजन् ! सीता की कथा सुनकर प्रदीप्त काम वासना वाले रावण के द्वारा भेजे गये मारीच को देखकर अद्भुत मृगशरीर के द्वारा आश्रम से दूर ले गये हुए राम ने मारीच को शीघ्र बाण से मार दिया । जैसे वीर भद्र ने दक्ष प्रजापति को मार दिया था ॥

एकादशः श्लोकः

रक्षोऽधमेन वृकवद् विपिनेऽसमक्षं वैदेहराजदुहितर्यपयापितायाम् ।
भ्रात्रा वने कृपणवत् प्रियया वियुक्तः स्त्रीसङ्गिनां गतिमिति प्रथयंश्चचार ॥११॥

पदच्छेद—रक्षः अधमेन वृकवत् विपिने असमक्षम् वैदेहराज दुहितरि अपयापितायाम् ।
भ्रात्रा वने कृपणवत् प्रियया वियुक्तः स्त्री सङ्गिनाम् गतिम् इति प्रथयन् चचार ॥

शब्दार्थ—

रक्षः	२.	राक्षस के द्वारा	वने	११.	वन में
अधमेन	१.	अधम	कृपणवत्	१२.	दीन के समान
वृकवत्	३.	भेड़िये के समान	प्रियया	१३.	प्रिया से
विपिने	४.	जङ्गल में	वियुक्तः	१४.	अलग होकर
असमक्षम्	५	परोक्ष में	स्त्री	१५.	स्त्रियों में
वैदेहराज	६.	विदेहनन्दिनी	सङ्गिनाम्	१६.	आसक्ति रखने वालों की
दुहितरि	७.	सीता का	गतिम्	१७.	यह गति होती है
अपया	८	अपहरण	इति	१८.	इस की
पितायाम् ।	९.	कर लिए जाने पर	प्रथयन्	१९.	शिक्षा देते हुए वन में
भ्रात्रा	१०.	भाई के साथ	चचार ॥	२०.	घूमने लगे

श्लोकार्थ—अधम राक्षस के द्वारा भेड़िये के समान जङ्गल में परोक्ष में विदेहनन्दिनी सीता का अपहरण कर लिए जाने पर भाई के साथ वन में दीन के समान प्रिया से अलग होकर स्त्रियों में आसक्ति रखने वालों की यह गति होती है इसकी शिक्षा देते हुए वन में घूमने लगे ॥

द्वादशः श्लोकः

दग्ध्वाऽऽत्मकृत्यहतकृत्यमहन् कबन्धं सख्यं विधाय कपिभिर्दयितागतिं तैः ।
बुद्ध्वाथ वालिनि हते प्लवगेन्द्र सैन्यैर्वेलामगात् स मनुजोऽजभवार्चिताङ्घ्रिः १२

पदच्छेद—दग्ध्वा आत्मकृत्य हतकृत्यम् अहन् कबन्धम् सख्यम् विधाय कपिभिः दयिता गतिम् तैः ।
बुद्ध्वा अथ वालिनि हते प्लवगेन्द्र सैन्यैः वेलाम् अगात् सः मनुजः अज भव अर्चित अङ्घ्रिः ॥

शब्दार्थ—

दग्ध्वा	३.	दाह संस्कार करके	बुद्ध्वा अथ	१०.	जानकर तदनन्तर
आत्मकृत्य	१	भगवान् की सेवा रूप कर्म से	वालिनि हते	११.	वाली को मार कर
हतकृत्यम्	२.	नष्ट कर्म बन्धन वाले जटायु का	प्लवगेन्द्र सैन्यैः	१२.	वानर राज की सेना के साथ
अहन्	५.	मार दिया (और)	वेलाम् अगात्	१८.	समुद्र तट पर पहुँचे
कबन्धम्	४.	कबन्धासुर को	सः मनुजः	१७.	वे मनुष्यावतार राम
सख्यम् विधाय	७.	मित्रता करके	अज	१३.	ब्रह्मा और
कपिभिः	६.	वानरों से	भव	१४.	शंकर के द्वारा
दयिता गतिम्	९.	प्रिया सीता का समाचार	अर्चित	१५.	पूजित
तैः ।	८.	उन वानरों द्वारा	अङ्घ्रिः ॥	१६.	चरण वाले

श्लोकार्थ—भगवान् सेवा रूप कर्म से नष्ट कर्म बन्धन वाले जटायु का दाह संस्कार करके कबन्धासुर को मार दिया। और वानरो से मित्रता करके उन वानरों द्वारा प्रिया सीता का समाचार जानकर तदनन्तर वाली को मार कर वानरराज की सेना के साथ ब्रह्मा और शंकर के द्वारा पूजित चरण वाले वे मनुष्यावतार राम समुद्र तट पर पहुँचे ॥

त्रयोदशः श्लोकः

यद्रोषविभ्रमविवृत्तकटाक्षपात-संभ्रान्तनक्रमकरो भयगीर्णघोषः ।
सिन्धुः शिरस्यर्हणं परिगृह्य रूपी पादारविन्दमुपगम्य बभाष एतत् ॥१३॥

पदच्छेद— यत् रोष विभ्रम विवृत्त कटाक्ष पात संभ्रान्त नक्र मकरः भय गीर्णं घोषः ।
सिन्धुः शिरसि अर्हणम् परिगृह्य रूपी पाद अरविन्दम् उपगम्य बभाषे एतत् ॥

शब्दार्थ—					
यत् रोष	१.	जिनके क्रोध की	सिन्धुः	७.	समुद्र
विभ्रम विवृत्त	२.	लीला पूर्वक उग्र एवम्	शिरसि	१२.	मस्तक पर
कटाक्ष	३.	टेढ़ी नजर से	अर्हणम्	१३.	भेंट की वस्तुयें
पात	४	देखने पर	परिगृह्य	१४.	लेकर
संभ्रान्तनक्र	५.	व्याकुल नाक तथा	रूपी	११.	मनुष्य रूप धारण करके
मकरः	६.	मगर वाला	पाद अरविन्दम्	१५.	चरण कमलों में
भय	८.	भय से	उपगम्य	१६.	आकर
गीर्ण	१०.	त्याग कर	बभाषे	१८.	कहने लगा
घोषः ।	९.	गर्जना की	एतत् ॥	१७.	इस प्रकार

श्लोकार्थ—जिनके क्रोध की लीला पूर्वक उग्र एवं टेढी नजर से देखने पर व्याकुल नाक तथा मगर वाला समुद्र भय से गर्जना को त्याग कर मनुष्य रूप धारण करके मस्तक पर भेंट की वस्तुयें लेकर चरण कमलों में आकर इस प्रकार कहने लगा ॥

चतुर्दशः श्लोकः

न त्वां वयं जडधियो नु विदाम भूमन् कूटस्थमादिपुरुषं जगतामधीशम् ।
यत्सत्त्वतः सुरगणा रजसः प्रजेशा मन्योश्च भूतपतयः स भवान् गुणेशः ॥१४॥

पदच्छेद— न त्वाम् वयम् जड धियः नु विदाम भूमन् कूटस्थम् आदि पुरुषम् जगताम् अधीशम् ।
यत् सत्त्वतः सुरगणाः रजसः प्रजेशाः मन्योः च भूतपतयः सः भवान् गुणेशः ॥

शब्दार्थ—					
न	८.	नहीं	यत्सत्त्वतः	१०.	जिनके सत्त्वगुण से
त्वाम्	४.	आपको	सुरगणाः	११.	देव वृन्द
वयम्	६.	हम लोग	रजसः प्रजेशाः	१२.	रजोगुण से प्रजापति
जडधियः	५.	जड़ बुद्धि	मन्योः	१४.	तमोगुण से
नु	७.	निश्चित रूप से	च	१३.	और
विदाम	९.	जानते हैं	भूतपतयः	१५.	रुद्रगण उत्पन्न होते हैं
भूमन् कूटस्थम्	१.	हे अनन्त निश्चल रहने वाले	सः	१६.	वे
आदि पुरुषम्	२.	आदि पुरुष	भवान्	१७.	आप
जगताम् अधीशम् ।	३.	संसार के स्वामी	गुणेशः ॥	१८.	गुणों के स्वामी

श्लोकार्थ—हे अनन्त ! निश्चल रहने वाले आदि पुरुष संसार के स्वामी आपको जड बुद्धि हम लोग निश्चित रूप से नहीं जानते हैं । जिनके सत्त्वगुण से देववृन्द, रजोगुण से प्रजापति और तमोगुण से रुद्रगण उत्पन्न होते हैं, वे आप गुणों के स्वामी हैं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

कामं प्रयाहि जहि विश्रसोऽवमेहं त्रैलोक्यरावणमवाप्नुहि वीर पत्नीम् ।
बध्नीहि सेतुमिह ते यशसो वितत्यै गायन्ति दिग्विजयिनो यमुपेत्य भूपाः ।१५।

पदच्छेद— कामम् प्रयाहि जहि विश्रवसः अवमेहम् त्रैलोक्य रावणम् अवाप्नुहि वीर पत्नीम् ।
बध्नीहि सेतुम् इह ते यशसः वितत्यै गायन्ति दिग्विजयिनः यम् उपेत्य भूपाः ॥

शब्दार्थ—

कामम्	२.	इच्छानुसार	बध्नीहि	१२.	बांध दीजिये
प्रयाहि	३.	पार कर जाइये	सेतुम्	११.	पुल
जहि	७	मार डालिये (और)	इह	१०.	यहाँ (मुझ पर)
विश्रवसः अवमेहम्	४.	विश्रवा के कुपुत्र	ते यशसः	१४.	आपके यश को
त्रैलोक्य	५.	तीनों लोकों को रुलाने वाले	वितत्यै	१५.	फैलाने के लिये
रावणम्	६.	रावण को	गायन्ति	१८.	(आपका) यशोगान करेंगे
अवाप्नुहि	९.	प्राप्त कीजिये	दिग्विजयिनः	१६.	दिग्विजय करने वाले
वीर	१.	हे वीर !	यम् उपेत्य	१३	जिसको पाकर
पत्नीम्	८.	पत्नी को	भूपाः	१७.	राजा लोग

श्लोकार्थ— हे वीर ! इच्छानुसार पार कर जाइये और विश्रवा के कुपुत्र, तीनों लोकों, रुलाने वाले रावण को मार डालिये । पत्नी को प्राप्त कीजिये । यहाँ मुझ पर पुल बाँध दीजिये जिसको पार कर आपके यश को फैलाने के लिए दिग्विजय करने वाले राजा लोग आपके यश का गायन करेंगे ॥

षोडशः श्लोकः

बद्ध्वोदधौ रघुपतिर्विविधाद्रिकूटैः सेतुं कपीन्द्रकरकम्पितभूरुहाङ्गैः ।
सुग्रीवनीलहनुमत्प्रमुखैरनीकैर्लङ्कां विभीषणदृशाऽऽविशदग्रदग्धाम् ॥१६॥

पदच्छेद—बद्ध्वा उदधौरघुपतिम् विविध अद्रि कूटैः सेतुम् कपीन्द्रकर कम्पित भूरुह अङ्गैः ।
सुग्रीवनील हनुमत् प्रमुखैः अनीकैः लङ्काम् विभीषण दृशा अविशत् उग्रदग्धाम् ॥

शब्दार्थ—

बद्ध्वा	९.	बाँधकर	सुग्रीवनील	१०.	सुग्रीव नल
उदधौ	७.	समुद्र में	हनुमत्	११.	हनुमान आदि
रघुपतिम् विविध	१.	राम ने अनेक प्रकार के	प्रमुखैः	१२.	प्रमुख वीरो और
अद्रि कूटैः	२.	पहाड़ों के समूह से (और)	अनीकैः	१३.	सेना के साथ
सेतुम्	८.	पुल को	लङ्काम्	१७.	लङ्का में
कपीन्द्रकर	३.	बानरों के हाथों से	विभीषण	१४	विभीषण की
कम्पित	४.	उखाड़े गये	दृशा	१५.	सलाह से
भूरुह	५.	वृक्षों को	अविशत्	१८.	प्रवेश किया
अङ्गैः ।	६	समूह से	उग्रदग्धाम् ॥	१६.	पहले जलाई गयी

श्लोकार्थ— राम ने अनेक प्रकार के पहाड़ों के समूह से और वानरों के हाथों से उखाड़े गये वृक्षों के समूह से समुद्र पर पुल बाँध कर सुग्रीव, नल, हनुमान् आदि प्रमुख वीरों और सेना के साथ विभीषण की सलाह से पहले जलायी गयी लङ्का में प्रवेश किया ॥

सप्तदशः श्लोक

सा वानरेन्द्रबलरुद्धविहारकोष्ठ-श्रीद्वारगोपुरसदोवलभीविटङ्का ।
निर्भज्यमानधिषणध्वजहेमकुम्भशृङ्गाटका गजकुलैर्ह्रदिनीव घूर्णा ॥१७॥

पदच्छेद— सा वानरेन्द्र बल रुद्ध विहार कोष्ठ श्रीद्वार गोपुर सदोवलभी विटङ्का ।
निर्भज्यमाना धिषण ध्वज हेम कुम्भ शृङ्गाटका गजकुलैः ह्रदिजइव घूर्णा ॥

शब्दार्थ—

सा	८	उस (लङ्का को)	निर्भज्यमाना	१५.	तोड़ डाला मानों
वानरेन्द्र बल	१.	वानर राज की सेना ने	धिषण	१०.	वेदियां
रुद्ध	९.	घेर लिया	ध्वज	११.	ध्वजायें
विहार	२.	खेलने के स्थान	हेम	१२.	सोने के
कोष्ठ	३.	अन्न का गोदाम	कुम्भ	१३.	कलश और
श्रीद्वार	४.	खजाने	शृङ्गाटका	१४.	चौराहे के
गोपुर	५.	गोपुर फाटक	गजकुलैः	१६.	हाथियों के झुण्ड ने
सदोवलभी	६.	सभा भवन, छज्जे	ह्रदिनइव	१७	नदी को
विटङ्का ।	७.	पक्षियों के रहने का स्थान	घूर्णा ॥	१८	मथ डाला हो

श्लोकार्थ—वानर राज की सेना ने खेलने का स्थान, अन्न का गोदाम, खजाने, गोपुर, फाटक, सभा, भवन, छज्जे, और पक्षियों के रहने के स्थान सहित उस लङ्का को घेर लिया । वेदियाँ, ध्वजायें, सोने के कलश और चौराहों को तोड़ डाला मानो हाथियों के झुण्ड ने नदी को मथ डाला हो ॥

अष्टादशः श्लोकः

रक्षःपतिस्तदवलोक्य निकुम्भकुम्भधूम्राक्षदुर्मुखसुरान्तनरान्तकादीन् ।
पुत्रं प्रहस्तमतिकायविकम्पनादीन् सर्वानुगान् समहिनोदथ कुम्भकर्णम् ॥१८॥

पदच्छेद—रक्षः पतिः तत् तत् अवलोक्य निकुम्भकुम्भ धूम्राक्ष दुर्मुख सुरान्त नरान्तक आदीन् ।
पुत्रम् प्रहस्तम् अतिकाय विकम्पन आदीन् सर्व अनुगान् सम्अहिनोत् अथ कुम्भकर्णम् ॥

शब्दार्थ –

रक्षः	१.	राक्षसों के	पुत्रम्	१५.	पुत्र मेघनाद
पतिः	२.	स्वामी रावण ने	प्रहस्तम्	१०	प्रहस्त
तत् अवलोक्य	३.	वह देख कर	अतिकाय	११.	अतिकाय
निकुम्भकुम्भ	४.	निकुम्भ कुम्भ	विकम्पन	१२.	विकम्पन
धूम्राक्ष	५.	धूम्राक्ष	आदीन्सर्व	१३	आदि सभी
दुर्मुख	६.	दुर्मुख	अनुगान्	१४.	अनुचरों को तथा
सुरान्त	७	सुरान्त	सम्अहिनोत	१८	भेजा
नरान्तक	८.	नारान्तक	अथ	१६.	तदनन्तर
आदीन् ।	९.	आदि	कुम्भकर्णम् ॥	१७.	कुम्भकर्ण को भी

श्लोकार्थ—राक्षसों के स्वामी रावण ने वह देखकर निकुम्भ, कुम्भ, धूम्राक्ष, दुर्मुख, सुरान्त, नाराग्तक, आदि प्रहस्त अतिकाय आदि सभी अनुचरों को तथा पुत्र मेघनाद तदन्तर कुम्भकर्ण को भी भेजा ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तां यातुधानपृतनामसिशूलचापप्रासर्ष्टिशक्तिशरतोमरखड्गदुर्गाम् ।

सुग्रीवलक्ष्मणमरुत्सुतगन्धमादनीलाङ्गदर्क्षपनसादिभिरन्वितोऽगात् ॥१९॥

पदच्छेद— ताम् यातुधान पृतनाम् असिशूल चाप प्रास ऋष्टि शक्ति शर तोमर खड्ग दुर्गाम् ।
सुग्रीव लक्ष्मण मरुत् सुत गन्धमाद नील अंगद ऋक्षपनस आदिभिः अन्वितः अगात् ॥

शब्दार्थ—

ताम् यातुधान	८.	उस राक्षसों की	सुग्रीव लक्ष्मण	१०.	सुग्रीव लक्ष्मण
पृतनाम्	९.	सेना का (राम ने)	मरुत् सुत	११.	वायु पुत्र हनुमान्
असि शूल	१	तलवार त्रिशूल	गन्धमाद	१२	गन्धमाद
चाप	२.	धनुष	नील	१३.	नील
प्रासऋष्टि	३.	भाला, ऋष्टि	अङ्गद	१४.	अङ्गद
शक्तिशर	४.	शक्ति बाण	ऋक्ष	१५.	जाम्बवान् (और)
तोमर	५	भाले	पनस आदिभिः	१६.	पनस आदि को
खड्ग	६	खड्ग आदि से	अन्विता	१७.	साथ लेकर
दुर्गाम् ।	७	दुर्गम	अगात् ॥	१८	सामना किया

श्लोकार्थ— तलवार, त्रिशूल, धनुष, ऋष्टि, भाला, शक्ति, बाण, भाले, खड्ग आदि से दुर्गम उस राक्षसों की सेना का राम ने सुग्रीव, लक्ष्मण, वायु पुत्र हनुमान्, गन्धमाद, नील, अङ्गद, जाम्बवान् और पनस आदि को साथ लेकर सामना किया ॥

विंशः श्लोकः

तेऽनीकपा रघुपतेरभिपत्य सर्वे द्वन्द्वं वरूथमिभपत्तिरथाश्वयोधैः ।

जघ्नुर्द्रुमैर्गिरिगदेषुभिरङ्गदाद्याः सीताभिमर्शहतमङ्गलरावणेशान् ॥२०॥

पदच्छेद— ते अनीकपाः रघुपतेः अभिपत्य सर्वे द्वन्द्वम् वरूथम् इभ पत्ति रथ अश्वयोधैः ।
जघ्नुः द्रुमैः गिरि गदा इषुभिः अङ्गद आद्याः सीता अभिमर्श हत मङ्गल रावणेशान् ॥

शब्दार्थ—

ते	१.	वे	जघ्नुः	१३.	मारने लगे
अनीकपाः	३.	सेनापति	द्रुमैः गिरि	११.	वृक्षों, पर्वतों
रघुपतेः	४.	राम के	गदा इषुभिः	१२.	गदा और बाणों से उन्हें
अभिपत्य	५.	सामने आकर	अङ्गद आद्याः	१०.	अङ्गद आदि
सर्वे	२.	सभी	सीता	१५.	सीता के
द्वन्द्वम्	८.	द्वन्द्व	अभिमर्श	१६.	स्पर्श के कारण
वरूथम्	९.	युद्ध करने लगे	हत	१८.	नष्ट हो गया था
इभपत्ति	६.	हाथी, पैदल	मङ्गल	१७.	मङ्गल
रथ अश्वयोधैः ।	७.	रथ, घोड़े और योद्धाओं के साथ	रावणेशान् ॥	१४.	जिनके स्वामी रावण का

श्लोकार्थ— वे सभी सेनापति राम के सामने आकर हाथी, घोड़े, रथ और योद्धाओं के साथ द्वन्द्व युद्ध करने लगे । और अंगद आदि वृक्षों, पर्वतों, गदा और बाणों से उन्हें मारने लगे, जिनके स्वामी रावण का सीता के स्पर्श के कारण मङ्गल नष्ट हो गया था ॥

एकविंशः श्लोकः

रक्षःपतिः स्वबलनष्टिमवेक्ष्य रुष्ट आरुह्य यानकमथाभिससार रामम् ।
स्वःस्यन्दने द्युमति मातलिनोपनीते विभ्राजमानमहनन्निशितैः क्षुरप्रैः ॥२१॥

पदच्छेद— रक्षः पतिः स्वबल नष्टिम् अवेक्ष्य रुष्टः आरुह्य यानकम् अथ अभिससार रामम् ।
स्वः स्यन्दने द्युमतिमातलिना उपनीते विभ्राजमानम् अहनत् निशितैः क्षुरप्रैः ॥

शब्दार्थ—

रक्षः पतिः	१.	राक्षसराज रावण	स्वः	१२.	स्वर्ग के
स्वबल	२.	अपनी सेना का	स्यन्दने	१४.	रथ पर
नष्टिम् अवेक्ष्य	३.	नाश देखकर	द्युमति	१३.	चमकीले
रुष्टः	४.	क्रुद्ध होकर	मातलिना	१०.	इन्द्र के सारथि मातलि के द्वारा
आरुह्य	६.	चढ़कर	उपनीते	११.	लाये गये
यानकम्	५.	विमान पर	विभ्राजमानम्	१५.	विराजमान राम के ऊपर
अथ	७.	तथा	अहनत्	१८	प्रहार करने लगा
अभिससार	८.	सामने आया (और)	निशितैः	१६	तीक्ष्ण
रामम्	९.	राम के	क्षुरप्रैः ॥	१७.	बाणों से

श्लोकार्थ— राक्षस राज रावण अपनी सेना का नाश देखकर क्रुद्ध होकर विमान पर चढ़कर राम के सामने आया और इन्द्र के सारथि मातलि के द्वारा लाये स्वर्ग के चलकीले रथ पर विराजमान राम के ऊपर तीक्ष्ण बाणों से प्रहार करने लगा ॥

द्वाविंशः श्लोक

रामस्तमाह पुरुषादपुरीष यन्नः कान्तासमक्षमसतापहृता श्ववत् ते ।
त्यक्तत्रपस्य फलमद्य जुगुप्सितस्य यच्छामि काल इव कर्तुरलङ्घ्यवीर्यः ।२२।

पदच्छेद—रामः तम् आह पुरुषाद पुरीष यन्नः कान्ता असमक्षम् असता अपहृता श्ववत् ते ।
त्यक्तत्रपस्य फलम् अद्य जुगुप्सितस्य यच्छामि कालः इव कर्तुः अलङ्घ्य वीर्यः ॥

शब्दार्थ—

रामःतम्	१.	राम ने उससे	त्यक्तत्रपस्य	१०	निर्लज्ज
आह	२.	कहा	फलम्	१९.	फल
पुरुषाद	४.	राक्षस	अद्य	१३.	आज मैं
पुरीष	३.	रे नीच	जुगुप्सितस्य	११.	निन्दनीय कर्म करने वाले
यन्नः	५.	जो हमारी	यच्छामि	२०.	देता हूँ
कान्ता असमक्षम्	७	प्रिया को मेरी अनुपस्थिति में	कालः	१७.	काल के
असता	६.	दुष्ट तूने	इव	१८	समान
अपहृता	९.	अपहरण कर लिया	कर्तुः	१६.	करने वाले
श्ववत्	८.	कुत्ते के समान	अलङ्घ्य	१४	दुर्लंघ्य
ते ।	१२.	तुझे	वीर्यः ॥	१५.	पराक्रम

श्लोकार्थ—राम ने उससे कहा—रे नीच राक्षस ! जो दुष्ट तूने हमारी प्रिया को मेरी अनुपस्थिति में कुत्ते के समान अपहरण कर लिया । निर्लज्ज और निन्दनीय कर्म करने वाले तुझे आज मैं दुर्लंघ्य पराक्रम वाले काल के समान फल देता हूँ ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

एवं क्षिपन् धनुषि संधितमुत्ससर्ज बाणं स वज्रमिव तद्धृदयं बिभेद।
सोऽसृग् वमन् दशमुखैर्न्यपतद् विमानाद्धाहेति जल्पति जने सुकृतीव रिक्तः॥२३

पदच्छेद- एवम क्षिपन् धनुषि संधितम् उत्ससर्ज बाणम् सः वज्रम् इव तत् हृदयम् बिभेद।
सः असृक् वमन् दशमुखैः न्यपतत् विमानात् हाहेति जल्पति जने सुकृतीव रिक्तः॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	बिभेद	१२.	विदीर्ण कर दिया
क्षिपन्	२.	रावण को फटकारते हुए	सः	१३.	वह रावण
धनुषि	३.	धनुष पर	असृक्	१५.	रक्त
संधितम्	५.	चढ़ाकर	वमन्	१६.	गिराता
उत्ससर्ज	६	छोड़ दिया	दशमुखैः	१४.	दशों मुखों से
बाणम्	४.	बाण	न्यपतत्	१८.	गिर पड़ा
सः	७.	उस बाण ने	विमानात्	१७.	विमान से
वज्रम्	८	वज्र के	हाहेति	२२.	हाय-हाय करके
इव	९.	समान	जल्पति	२३.	चिल्लाने लगे
तत्	१०.	उसके	जने	२१.	लोग
हृदयम्	११.	हृदय को	सुकृतीव	१९.	जैसे पुण्यात्मा लोग
			रिक्तः॥	२०.	भोग पूरा होने पर स्वर्ग से गिर पड़ते हैं

श्लोकार्थ—इस प्रकार रावण को फटकारते हुए धनुष पर बाण चढ़ाकर छोड़ दिया। उस बाण ने वज्र के समान उसके हृदय को विदीर्ण कर दिया। वह रावण दशों मुखों से रक्त गिराता हुआ विमान से गिर पड़ा। जैसे पुण्यात्मा लोग भोग पूरा होने पर स्वर्ग से गिर पड़ते है। उस समय लोग हाय-हाय करके चिल्लाने लगे॥

चतुर्विंशः श्लोकः

ततो निष्क्रम्य लङ्काया यातुधान्यः सहस्रशः।
मन्दोदर्या समं तस्मिन् प्ररुदत्य उपाद्रवन्॥२४॥

पदच्छेद— ततः निष्क्रम्य लङ्कायाः यातुधान्यः सहस्रशः।
मन्दोदर्या समम् तस्मिन् प्ररुदत्यः उपाद्रवन्॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	मन्दोदर्या	६.	मन्दोदरी के
निष्क्रम्य	५	निकल कर	समम्	७	साथ
लङ्कायाः	४.	लङ्का से	तस्मिन्	९.	उस रणभूमि में
यातुधान्यः	३.	राक्षसियाँ	प्ररुदत्यः	८.	रोती हुई
सहस्रशः।	२.	हजारों	उपाद्रवन्॥	१०.	आईं

श्लोकार्थ—तदनन्तर हजारों राक्षसियाँ लङ्का से निकल कर मन्दोदरी के साथ रोती हुई उस रणभूमि में आईं॥

पञ्चविंशः श्लोकः

स्वान् स्वान् बन्धून् परिष्वज्य लक्ष्मणेषुभिरर्दितान् ।
रुरुदुः सुस्वरं दीना घ्नन्त्य आत्मानमात्मना ॥२५॥

पदच्छेद— स्वान् स्वान् बन्धून् परिष्वज्य लक्ष्मण इषुभिः अर्दितान् ।
रुरुदुः सुस्वरम् दीनाः घ्नन्त्यः आत्मानम् आत्मना ॥

शब्दार्थ—

स्वान्	३. अपने	रुरुदुः	१२. विलाप करने लगीं
स्वान्	४. अपने	सुस्वरम्	११. ऊँचे स्वर से
बन्धून्	५. बन्धुओं को	दीनाः	१०. दीन होकर
परिष्वज्य	६. हृदय में लगा कर	घ्नन्त्यः	९. पीटती हुई
लक्ष्मण इषुभिः	१. लक्ष्मण के बाणों से	आत्मानम्	७. अपने से
अर्दितान् ।	२. पीड़ित	आत्मना ॥	८. अपने को

श्लोकार्थ—लक्ष्मण के बाणों से पीड़ित अपने अपने बन्धुओं को हृदय से लगाकर अपने से अपने को पीटती हुई दीन होकर ऊँचे स्वर से विलाप करने लगीं ॥

षड्विंशः श्लोकः

हा हताः स्म वयं नाथ लोकरावण रावण ।
कं यायाच्छरणं लङ्का त्वद्विहीना परार्दिता ॥२६॥

पदच्छेद— हा हताः स्म वयम् नाथ लोक रावण रावण ।
कम् यायात् शरणम् लङ्का त्वत् विहीना पर अर्दिता ॥

शब्दार्थ—

हा	१. हाय	कम्	१३. किसकी
हताः	३. मारी	यायात्	१५. जायेगी
स्म	४. गईं	शरणम्	१४. शरण में
वयम्	२. हम	लङ्का	१२. यह लङ्का
नाथ	५. हे नाथ	त्वत्	८. आप से
लोकरावण	६. लोकों को रुलाने वाले	विहीना	९. रहित तथा
रावण ।	७. हे रावण !	पर	१०. दूसरे से
		अर्दिता ॥	११. पीड़ित होकर

श्लोकार्थ—हाय हम मारी गईं । हे नाथ ! लोकों को रुलाने वाले हे रावण ! आपसे रहित तथा दूसरे से पीड़ित होकर यह लङ्का किसकी शरण में जायेगी ॥

सप्तविंशः श्लोकः

नैवं वेद महाभाग भवान् कामवशं गतः।
तेजोऽनुभावं सीताया येन नीतो दशामिमाम् ॥ २७॥

पदच्छेद— न एवम् वेद महाभाग भवान् काम वशम् गतः।
तेजः अनुभावम् सीतायाः येन नीतः दशाम् इमाम् ॥

शब्दार्थ—

न	१०.	नहीं	तेजः	७.	तेज के
एवम्	६.	इस प्रकार	अनुभावम्	८.	प्रभाव को
वेद	११.	जाना	सीतायाः	६.	सीता के
महाभाग	१.	हे महाभाग !	येन	१२.	जिस कारण
भवान्	२.	आप	नीतः	१५.	प्राप्त हो गये
काम	३.	काम के	दशाम्	१४.	दशाको
वशम्	४	वश में हो	इमाम् ॥	१३.	इस
गतः।	५	जाने से			

श्लोकार्थ— हे महाभाग ! आपने काम के वश में हो जाने से सीता के तेज के प्रभाव को इस प्रकार नहीं जाना। जिस कारण इस दशा को प्राप्त हो गये ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

कृतैषा विधवा लङ्का वयं च कुलनन्दन।
देहः कृतोऽन्नं गृध्राणामात्मा नरकहेतवे ॥२८॥

पदच्छेद— कृता एषा विधवा लङ्का वयम् च कुल नन्दन।
देहः कृतः अन्नम् गृध्राणाम् आत्मा नरक हेतवे ॥

शब्दार्थ—

कृता	७.	कर दिया (तथा)	देहः	८.	शरीर को
एषा	२.	इस	कृतः	१४.	बना दिया
विधवा	६.	विधवा	अन्नम्	१०.	भोजन (और)
लङ्का	३.	लङ्का को	गृध्राणाम्	६.	गीधों का
वयम्	५.	हम सब को	आत्मा	११.	आत्मा को
च	४	और	नरक	१२.	नरक का
कुलनन्दन।	१.	हे कुल को आनन्दित करने वाले रावण (आपने)	हेतवे ॥	१३.	अधिकारी

श्लोकार्थ—हे कुल को आनन्दित करने वाले रावण ! अपने इस लङ्का को और हम सबको विधवा कर दिया। तथा शरीर को गीधों का भोजन और आत्मा को नरक का अधिकारी बना दिया ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— स्वानां विभीषणश्चक्रे कोसलेन्द्रानुमोदितः।
पितृमेधविधानेन यदुक्तं साम्परायिकम् ॥२९॥

पदच्छेद— स्वानाम् विभीषणः चक्रे कोसलेन्द्र अनुमोदितः।
पितृमेध विधानेन यत् उक्तम् साम्परायिकम् ॥

शब्दार्थ—

स्वानाम्	४.	अपने जनों का	पितृमेध	५.	पितृयज्ञकी
विभीषणः	३.	विभीषण ने	विधानेन	६.	विधि से
चक्रे	१०.	किया	यत्	७.	जिस प्रकार
कोसलेन्द्र	१.	राम की	उक्तम्	८.	कहा गया है उस प्रकार
अनुमोदितः।	२.	आज्ञा से	साम्परायिकम् ॥	९.	अन्त्येष्टिकर्म

श्लोकार्थ—राम की आज्ञा से विभीषण ने अपने जनों का पितृयज्ञ की विधि से जिस प्रकार कहा गया है उस प्रकार अन्त्येष्टि कर्म किया ॥

त्रिंशः श्लोकः

ततो ददर्श भगवानशोकवनिकाश्रमे।
क्षामां स्वविरहव्याधिं शिंशपामूलमास्थिताम् ॥३०॥

पदच्छेद— ततः ददर्श भगवान् अशोक वनिका आश्रमे।
क्षामाम् स्व विरह व्याधिम् शिंशपा मूलम् आस्थिताम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	क्षामाम्	६.	क्षीण और
ददर्श	१३.	देखा	स्व	७.	अपने
भगवान्	२.	भगवान् ने	विरह	८.	विरह से
अशोक	३.	अशोक	व्याधिम्	९.	पीड़ित
वनिका	४.	वाटिका के	शिंशपा	१०.	शिंशपा वृक्ष के
आश्रमे।	५.	आश्रम में	मूलम्	११.	नीचे
			आस्थिताम् ॥	१२.	बैठी हुई सीता को

श्लोकार्थ—तदनन्तर भगवान् ने अशोक वाटिका के आश्रम में क्षीण और अपने विरह से पीड़ित शिंशपा वृक्ष के नीचे बैठी हुई सीता को देखा ॥

एकत्रिंशः श्लोक

रामः प्रियतमां भार्यां दीनां वीक्ष्यान्वकम्पत ।
आत्मसंदर्शनाह्लादविकसन्मुखपङ्कजाम् ॥३१॥

पदच्छेद— रामः प्रियतमाम् भार्याम् दीनाम् वीक्ष्य अनु अकम्पत ।
आत्म संदर्शन आह्लाद विकसत् मुख पङ्कजाम् ॥

शब्दार्थ—

रामः	१. राम ने	आत्म	२. अपने
प्रियतमाम्	८. अत्यन्त प्रिय	संदर्शन	३. दर्शन के
भार्याम्	९. पत्नी को	आह्लाद	४. आह्लाद से
दीनाम्	१०. दीन अवस्था में	विकसत्	५. खिले हुए
वीक्ष्य	११. देखकर	मुख	६. मुख
अनुअकम्पत	१२. कृपा की	पङ्कजाम् ॥	७. कमलवाली

श्लोकार्थ—राम ने अपने दर्शन के आह्लाद से खिले हुए मुख कमल वाली अत्यन्त प्रिय पत्नी को दीन अवस्था में देखकर कृपा की ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

आरोप्यारुरुहे यानं भ्रातृभ्यां हनुमद्युतः ।
विभीषणाय भगवान् दत्त्वा रक्षोगणेशताम् ॥३२॥

पदच्छेद— आरोप्य आरुरुहे यानम् भ्रातृभ्याम् हनुमत् युतः ।
विभीषणाय भगवान् दत्त्वा रक्षोगण ईशताम् ॥

शब्दार्थ—

आरोप्य	७. चढ़ाकर	विभीषणाय	२. विभीषण को
आरुरुहे	११. चढ़ गये	भगवान्	१. भगवान् राम ने
यानम्	६. सीता को विमान में	दत्त्वा	५. दे दिया
भ्रातृभ्याम्	८. भाई लक्ष्मण और सुग्रीव तथा	रक्षोगण	३. राक्षस गणों का
हनुमत्	९. हनुमान् के	ईशताम् ॥	४. स्वामित्व
युतः ।	१०. साथ स्वयम् भी		

श्लोकार्थ—भगवान् राम ने विभीषण को राक्षस गणों का स्वामित्व दे दिया । सीता को विमान में चढ़ाकर भाई लक्ष्मण और सुग्रीव तथा हनुमान् के साथ स्वयम् भी चढ़ गये ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

लङ्कामायुश्च कल्पान्तं ययौ चीर्णव्रतः पुरीम् ।
अवकीर्यमाणः कुसुमैर्लोकपालार्पितैः पथि ॥३३॥

पदच्छेद— लङ्काम् आयुः च कल्पान्तम् ययौ चीर्णव्रतः पुरीम् ।
अवकीर्यमाणः कुसुमैः लोकपाल अर्पितैः पथि ॥

शब्दार्थ—

लङ्काम्	४. लङ्का देकर	पुरीम् ।	६. अपनी पुरी को
आयुः	२. आयु	अवकीर्यमाणः	१२. वर्षा होने लगी
च	३. और	कुसुमैः	११. पुष्पों की (उन पर)
कल्पान्तम्	१. विभीषण को एक कल्प की	लोकपाल	९. लोकपालों के द्वारा
ययौ	७. चल पड़े (और)	अर्पितैः	१०. समर्पित
चीर्णव्रतः	५. व्रत को पूर्ण करके	पथि ॥	८. रास्ते में

श्लोकार्थ—विभीषण को एक कल्प की आयु और लङ्का देकर व्रत को पूर्ण करके अपनी पुरी को चल पड़े । और रास्ते में लोकपालों के द्वारा समर्पित पुष्पों की वर्षा उन पर होने लगी ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

उपगीयमानचरितः शतधृत्यादिभिर्मुदा ।
गोमूत्रयावकं श्रुत्वा भ्रातरं वल्कलाम्बरम् ॥३४॥

पदच्छेद— उपगीयमान चरितः शतधृति आदिभिः मुदा ।
गोमूत्रयावकम् श्रुत्वा भ्रातरम् वल्कल अम्बरम् ॥

शब्दार्थ—

उपगीयमान	५. गान कर रहे थे	गोमूत्र	८. गोमूत्र में
चरितः	४. उनके चरित्र का	यावकम्	९. पकाया हुआ जो का दलिया खाते है और
शतधृति	१. ब्रह्मा	श्रुत्वा	७. सुना कि
आदिभिः	२. आदि	भ्रातरम्	६. भाई भरत के बारे में
मुदा ।	३. प्रसन्न होकर	वल्कल	१०. वल्कल
		अम्बरम् ॥	११. धारण करते है

श्लोकार्थ—ब्रह्मा आदि प्रसन्न होकर उनके चरित्र का गान कर रहे थे । उन्होंने भाई भरत के बारे में सुना कि वे गोमूत्र में पकाया हुआ जो का दलिया ही खाते है और वल्कल धारण करते हैं ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

महाकारुणिकोऽतप्यज्जटिलं स्थण्डिलेशयम् ।
भरतः प्राप्तमाकर्ण्यं पौरामात्यपुरोहितैः ॥३५॥

पदच्छेद— महा कारुणिकः अतप्यत् जटिलम् स्थण्डिलेशयम् ।
भरतः प्राप्तम् आकर्ण्यं पौर अमात्य पुरोहितैः ॥

शब्दार्थ—

महा	१.	अत्यन्त	भरतः	६.	भरत भी
कारुणिकः	२.	दयाशील भगवान्	प्राप्तम्	७.	भगवान् को आये
अतप्यत्	५.	दुःखी हुए	आकर्ण्य	८.	सुनकर
जटिलम्	३.	जटाधारी और	पौरअमात्य	९.	नगर वासियों मंत्रियों और
स्थण्डिलेशयम् ।	४.	पृथ्वी पर सोने वाले भरत के बारे में	पुरोहितैः ॥	१०.	पुरोहितों के साथ चल पड़े

श्लोकार्थ—अत्यन्त दयाशील भगवान् जटाधारी और पृथ्वी पर सोने वाले भरत के बारे में दुःखी हुए। भरत भी भगवान् को आये सुनकर नगर वासियों, मंत्रियों और पुरोहितों के साथ चल पड़े ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

पादुके शिरसि न्यस्य रामं प्रत्युद्यतोऽग्रजम् ।
नन्दिग्रामात् स्वशिबिराद् गीतवादित्रनिः स्वनैः ॥३६ ।

पदच्छेद— पादुके शिरसि न्यस्य रामम् प्रति उद्यतः अग्रजम् ।
नन्दिग्रामात् स्व शिबिरात् गीतवादित्र निःस्वनैः ॥

शब्दार्थ—

पादुके	४.	पादुकाओं को	नन्दि	९.	नन्दि
शिरसि	५.	सिर पर	ग्रामात्	१०.	ग्राम से
न्यस्य	६.	रखकर	स्व	७.	अपने
रामम्	२.	राम की	शिबिरात्	८.	शिबिर
प्रति	३.	अगवानी करने के लिए	गीत	११.	गाने
उद्यतः	१४.	चल पड़े	वादित्र	१२.	बजाने की
अग्रजम् ।	१.	अपने बड़े भाई	निःस्वनैः ॥	१३	ध्वनि के साथ

श्लोकार्थ—अपने बड़े भाई राम की अगवानी करने के लिए पादुकाओं को सिर पर रखकर अपने शिबिर नन्दि ग्राम से गाने बजाने की ध्वनि के साथ चल पड़े ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

ब्रह्मघोषेण च मुहुः पठद्भिर्ब्रह्मवादिभिः ।
स्वर्णकक्षपताकाभिर्हैमैश्चित्रध्वजै रथैः ॥३७॥

पदच्छेद— ब्रह्म घोषेण च मुहुः पठद्भिः ब्रह्म वादिभिः ।
स्वर्ण कक्ष पताकाभिः हैमैः चित्र ध्वजैः रथैः ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्म	५. वेद मंत्रों के	वादिभिः ।	२. वादियों द्वारा
घोषेण	६. शब्दों से	स्वर्णकक्ष	८. सुनहरी कामदार
च	७. और	पताकाभिः	९. पताकाओं से
मुहुः	३. बार-बार	हैमैः	१०. स्वर्ण से मढ़ी हुई
पठद्भिः	४. उच्चारण किये जाते हुए	चित्रध्वजैः	११. रंग बिरंगी ध्वजाओं से सजे
ब्रह्म	१. ब्रह्म	रथैः ॥	१२. रथों के द्वारा चलने लगे

श्लोकार्थ—ब्रह्म वादियों द्वारा बार बार किये जाते हुये वेद मंत्रों के शब्दों से और सुनहरी कामदार पताकाओं से स्वर्ण से मढ़ी हुई रंगबिरंगी ध्वजाओं से सजे रथों के द्वारा चलने लगे ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

सदश्वै रुक्मसन्नाहैर्भटैः पुरटवर्मभिः ।
श्रेणीभिर्वारमुख्याभिर्भृत्यैश्चैव पदानुगैः ॥३८॥

पदच्छेद— सदश्वैः रुक्म सन्नाहैः भटैः पुरटवर्मभिः ।
श्रेणीभिः वार मुख्याभिः भृत्यैः च एव पद अनुगैः ॥

शब्दार्थ—

सदश्वैः	३. उत्तम घोड़ों	श्रेणीभिः	७. सेठ साहुकारों
रुक्म	४. सोने के	वारमुख्याभिः	८. श्रेष्ठ वेश्याओं
सन्नाहैः	५. कवच पहने हुए	भृत्यैः	१२ सेवकों के साथ चलने लगे
भटैः	६. सैनिकों	च एव	९. और
पुरट	१. सोने के	पद	१०. पैदल
वर्मभिः ।	२. साज से सजे हुए	अनुगैः ॥	११. चलने वाले

श्लोकार्थ—सोने के साज से सजे हुए उत्तम घोड़ों, सोने के कवच पहने हुए सैनिकों, सेठ साहुकारों, श्रेष्ठ वेश्याओं और पैदल चलने वाले सेवकों के साथ चलने लगे ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

पारमेष्ठ्यान्युपादाय पण्यान्युच्चावचानि च ।
पादयोर्न्यपतत् प्रेम्णा प्रक्लिन्नहृदयेक्षणः ॥३९॥

पदच्छेद— पारमेष्ठ्यानि उपादाय पण्यानि उच्चावचानि च ।
पादयोः न्यपतत् प्रेम्णा प्रक्लिन्न हृदय ईक्षणः ॥

शब्दार्थ—

पारमेष्ठ्यानि	१.	महाराजाओं के योग्य	पादयोः	१०.	चरणों में
उपादाय	४.	लेकर	न्यपतत्	११.	गिर पड़े
पण्यानि	३.	वस्तुओं को	प्रेम्णा	९.	प्रेम से (भगवान् के)
उच्चावचानि	२.	छोटी बड़ी	प्रक्लिन्न	५.	आर्द्र
च ।	७.	और	हृदय	६.	हृदय
			ईक्षणः ॥	८.	नेत्र वाले (भरत जी)

श्लोकार्थ—महाराजाओं के योग्य छोटी बड़ी वस्तुओं को लेकर आर्द्र हृदय और नेत्र वाले भरत जी प्रेम से भगवान् के चरणों में गिर पड़े ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

पादुके न्यस्य पुरतः प्राञ्जलिर्बाष्पलोचनः ।
तमाश्लिष्य चिरं दोर्भ्यां स्नापयन् नेत्रजैर्जलैः ॥४०॥

पदच्छेद— पादुके न्यस्य पुरतः प्राञ्जलिः बाष्प लोचनः ।
तम् आश्लिष्य चिरम् दोर्भ्याम् स्नापयन् नेत्रजैः जलैः ॥

शब्दार्थ—

पादुके	४.	खड़ाऊ	तम्	७.	उन्हें (राम ने)
न्यस्य	५.	रखकर	आश्लिष्य	१०.	आलिङ्गन करके
पुरतः	६.	सामने (खड़े हो गये)	चिरम्	९.	देर तक
प्राञ्जलिः	३.	हाथ जोड़ कर	दोर्भ्याम्	८.	दोनों हाथों से
बाष्प	२.	आंसू बहाते हुए	स्नापयन्	१३	नहला दिया
लोचनः ।	१.	(भरत जी) नेत्रों से	नेत्रजैः	११.	नेत्रों के
			जलैः ॥	१२.	जल से

श्लोकार्थ—भरत जी नेत्रों से आंसू बहाते हुए हाथ जोड़कर खड़ाऊँ रखकर सामने खड़े हो गये । उन्हें राम ने दोनों हाथों से देर तक आलिङ्गन करके नेत्रों के जल से नहला दिया ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

रामो लक्ष्मणसीताभ्यां विप्रेभ्यो येऽर्हसत्तमाः ।
तेभ्यः स्वयं नमश्चक्रे प्रजाभिश्च नमस्कृतः ॥४१॥

पदच्छेद— राम: लक्ष्मण सीताभ्याम् विप्रेभ्यः ये अर्ह सत्तमाः ।
तेभ्यः स्वयम् नमः चक्रे प्रजाभिः च नमस्कृतः ॥

शब्दार्थ—

रामः	१. राम ने	तेभ्यः	७. उन्हें
लक्ष्मण	२. लक्ष्मण और	स्वयम्	८ स्वयम्
सीताभ्याम्	३. सीता के साथ	नमः	९. नमस्कार
विप्रेभ्यः	४. ब्राह्मणों को और	चक्रे	१०. किया
ये	५. जो	प्रजाभिः	१२. प्रजाओं ने (भी उनको)
अर्हसत्तमाः ।	६. श्रेष्ठ गुरुजन थे	च	११. फिर
		नमस्कृतः ॥	१३. नमस्कार किया

श्लोकार्थ—राम ने लक्ष्मण और सीता के साथ ब्राह्मणों को और जो श्रेष्ठ गुरुजन थे उन्हें स्वयम् नमस्कार किया । फिर प्रजाओं ने भी उनको नमस्कार किया ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

धुन्वन्त उत्तरासङ्गान् पतिं वीक्ष्य चिरागतम् ।
उत्तराः कोसला माल्यैः किरन्तो ननृतुर्मुदा ॥४२॥

पदच्छेद— धुन्वन्तः उत्तरा सङ्गान् पतिम् वीक्ष्य चिरागतम् ।
उत्तराः कोसलाः माल्यैः किरन्तः ननृतुः मुदा ॥

शब्दार्थ—

धुन्वन्तः	७. हिलाते हुए और	उत्तराः	१. उत्तर
उत्तरा सङ्गाम्	६. दुपट्टों को	कोसलाः	२. कोसल देश की (प्रजा ने)
पतिम्	४ स्वामी को	माल्यैः	८. मालाओं की
वीक्ष्य	५. देखकर	किरन्तः	९. वर्षा करते हुए
चिरागतम् ।	३. बहुत दिनों के बाद आये हुए	ननृतुः	११. नाचने लगी
		मुदा ॥	१०. आनन्द से

श्लोकार्थं—उत्तर कोसल देश की प्रजा ने बहुत दिनों के बाद आये हुए स्वामी को देखकर दुपट्टों को हिलाते हुए और मालाओं की वर्षा करते हुए आनन्द से नाचने लगी ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोक

पादुके भरतोऽगृह्णाच्चामरव्यजनोत्तमे ।
विभीषणः ससुग्रीवः श्वेतच्छत्रं मरुत्सुतः ॥४३॥

पदच्छेद— पादुके भरतः अगृह्णात् चामर व्यजन उत्तमे ।
विभीषणः ससुग्रीवः श्वेतच्छत्रम् मरुत् सुतः ॥

शब्दार्थ—

पादुके	२.	पादुकायें	विभीषणः	५.	विभीषण ने
भरतः	१	भरत ने भगवान् की	ससुग्रीवः	४.	सुग्रीव सहित
अगृह्णात्	३.	उठा ली	श्वेत	११.	सफेद
चामर	७.	चँवर और	छत्रम्	१२.	छत्र (उठा लिया)
व्यजन	८.	पंखा	मरुत्	९.	वायु
उत्तमे ।	६.	श्रेष्ठ	सुतः ॥	१०.	पुत्र हनुमान् ने

श्लोकार्थ—भरत ने भगवान् की पादुकायें उठा लीं, श्रेष्ठ चँवर और पंखा सुग्रीव सहित विभीषण ने और सफेद छत्र वायु-पुत्र हनुमान् ने उठा लिया ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

धनुर्निषङ्गाञ्छत्रुघ्नः सीता तीर्थकमण्डलुम् ।
अबिभ्रदङ्गदः खड्गं हैमं चर्मर्क्षराण् नृप ॥४४॥

पदच्छेद— धनुः निषङ्गान् शत्रुघ्नः सीता तीर्थ कमण्डलुम् ।
अबिभ्रद् अङ्गदः खड्गम् हैमम् चर्म ऋक्षराट् नृप ॥

शब्दार्थ—

धनुः	३.	धनुष (और)	अबिभ्रद्	१२.	धारण किया
निषङ्गान्	४.	तरकस को	अङ्गदः	८.	अङ्गद ने
शत्रुघ्नः	२.	शत्रुघ्न	खड्गम्	१०.	तलवार को
सीता	५.	सीता ने	हैमम्	९.	सोने की
तीर्थ	६.	तीर्थों के जल से भरा	चर्म	११.	ऋक्षराज ने ढाल को
कमण्डलुम् ।	७.	कमण्डुल को	नृप ॥	१.	हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! शत्रुघ्न ने धनुष और तरकस को, सीता ने तीर्थों के जल से भरे कमण्डलु को अङ्गद ने सोने की तलवार को और जाम्बवान् ने ढाल को धारण किया ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

पुष्पकस्थोऽन्वितः स्त्रीभिः स्तूयमानश्च बन्दिभिः ।
विरेजे भगवान् राजन् ग्रहैश्चन्द्र इवोदितः ॥४५॥

पदच्छेद— पुष्पकस्थः अन्वितः स्त्रीभिः स्तूयमानः च बन्दिभिः ।
विरेजे भगवान् राजन् ग्रहैः चन्द्रः इव उदितः ॥

शब्दार्थ—

पुष्पकस्थः	२. पुष्पक पर विराजमान	**विरेजे**	१०. शोभायमान हुए
अन्वितः	४. युक्त	**भगवान्**	९. भगवान् राम ऐसे
स्त्रीभिः	३. स्त्रियों से	**राजन्**	१. हे राजन् !
स्तूयमानः	७. स्तुति किये जाते हुए	**ग्रहैः**	१२. ग्रहों के साथ
च	५. और	**चन्द्रः**	१३. चन्द्रमा
बन्दिभिः ।	६. वन्दियों से	**इव**	११. मानो
		उदितः ॥	१४. उदित हुआ हो

श्लोकार्थ—हे राजन् ! पुष्पक पर विराजमान स्त्रियों से युक्त और वन्दियों से स्तुति किये जाते हुए भगवान् राम ऐसे शोभायमान हुए मानों ग्रहों के साथ चन्द्रमा उदित हुआ हो ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

भ्रातृभिर्नन्दितः सोऽपि सोत्सवां प्राविशत् पुरीम् ।
प्रविश्य राजभवनं गुरुपत्नीः स्वमातरम् ॥४६॥

पदच्छेद— भ्रातृभिः नन्दितः सः अपि स उत्सवाम् प्राविशत् पुरीम् ।
प्रविश्य राज भवनम् गुरुपत्नीः स्व मातरम् ॥

शब्दार्थ—

भ्रातृभिः	३. भाइयों के द्वारा	**प्रविश्य**	१०. प्रवेश करके
नन्दितः	४. अभिनन्दन किये जाने पर	**राज**	८. राज
सः	१. उन भगवान् राम ने	**भवनम्**	९. भवन में
अपि	२ भी	**गुरु**	११. गुरु
स उत्सवाम्	५. उत्सव से युक्त	**पत्नीः**	१२. पत्नियों (और)
प्राविशत्	७. प्रवेश किया	**स्व**	१३ अपनी
पुरीम् ।	६. नगर में	**मातरम् ॥**	१४. माताओं को (प्रणाम किया)

श्लोकार्थ—उन भगवान् राम ने भी भाइयों के द्वारा अभिनन्दन किये जाने पर आनन्दोत्सव से युक्त नगर में प्रवेश किया । राजभवन में प्रवेश करके गुरु-पत्नियों और अपनी माताओं को प्रणाम किया ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

गुरून् वयस्यावरजान् पूजितः प्रत्यपूजयत् ।
वैदेही लक्ष्मणश्चैव यथावत् समुपेयतुः ॥४७॥

पदच्छेद— गुरून् वयस्य अवरजान् पूजितः प्रति अपूजयत् ।
वैदेही लक्ष्मणः च एव यथावत् सम् उपेयतुः ॥

शब्दार्थ—

गुरून्	२.	गुरु	वैदेही	६.	सीता
वयस्य	३.	मित्र और	लक्ष्मण	८	लक्ष्मण ने भी
अवरजान्	४.	छोटों का	च	७.	और
पूजितः	१.	सम्मानित राम ने	एव यथावत्	९.	यथा योग्य
प्रतिअपूजयत् ।	५.	सम्मान किया	सम् उपेयतुः ॥	१०.	व्यवहार किया

श्लोकार्थ—सम्मानित राम ने गुरु, मित्र और छोटों का सम्मान किया । सीता और लक्ष्मण ने भी यथा योग्य व्यवहार किया ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

पुत्रान् स्वमातरस्तास्तु प्राणांस्तन्व इवोत्थिताः ।
आरोप्याङ्केऽभिषिञ्चन्त्यो बाष्पौघैर्विजहुः शुचः ॥४८॥

पदच्छेद— पुत्रान् स्वमातरः ताः तु प्राणान् तन्व इव उत्थिताः ।
आरोप्य अङ्के अभिषिञ्चन्त्यः बाष्प ओघैः विजहुः शुचः ॥

शब्दार्थ—

पुत्रान्	३.	पुत्रों को (देखकर)	आरोप्य	९.	बैठाकर
स्वमातरः	२.	अपनी मातायें	अङ्के	८.	गोद में
ताः तु	१.	उस समय	अभिषिञ्चन्त्यः	१२.	अभिषेक किया और
प्राणान्	५.	प्राण सञ्चार हो जाने के	बाष्प	१०.	आँसुओं की
तन्व	४.	शरीर में	ओघैः	११.	धारा से उनका
इव	६.	समान	विजहुः	१४.	त्याग दिया
उत्थिताः	७	उठ खड़ी हुई (और)	शुचिः ॥	१३.	विरह जनित शोक को

श्लोकार्थ—उस समय वे मातायें अपने पुत्रों को देखकर शरीर में प्राण सञ्चार हो जाने के समान खड़ी हुई, और गोद में बिठाकर आँसुओं की धारा से उनका अभिषेक किया और विरह जनित शोक को त्याग दिया ॥

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

जटा निर्मुच्य विधिवत् कुलवृद्धैः समं गुरुः ।
अभ्यषिञ्चद् यथैवेन्द्रं चतुःसिन्धुजलादिभिः ॥४९॥

पदच्छेद— जटाः निर्मुच्य विधिवत् कुल वृद्धैः समम् गुरुः ।
अभ्यषिञ्चत् यथैव इन्द्रम् चतुः सिन्धु जल आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

जटाः	६. जटाओं को	अभ्यषिञ्चत्	१२. उनका अभिषेक किया
निर्मुच्य	७. उतरवाकर	यथैव	१३. जिस प्रकार (बृहस्पति ने)
विधिवत्	५. विधिपूर्वक	इन्द्रम्	१४. इन्द्र का किया था
कुल	१. कुल के	चतुः	८. चारों
वृद्धैः	२. वृद्धों के	सिन्धु	९. समुद्रों के
समम्	३. साथ	जल	१०. जल
गुरुः ।	४. गुरु वशिष्ठ ने	आदिभिः ॥	११. आदि से

श्लोकार्थ— कुल के वृद्धों के साथ गुरु वशिष्ठ ने विधि पूर्वक जटाओं को उतरवाकर चारों समुद्रों के जल आदि से उनका अभिषेक किया, जिस प्रकार बृहस्पति ने इन्द्र का किया था ॥

पञ्चाशत्तमः श्लोकः

एवं कृतशिरःस्नानः सुवासाः स्रग्व्यलङ्कृतः ।
स्वलङ्कृतैः सुवासोभिर्भ्रातृभिर्भार्यया बभौ ॥५०॥

पदच्छेद— एवम् कृत शिरः स्नानः सुवासाः स्रग्वी अलङ्कृतः ।
सु अलङ्कृतैः सुवासोभिः भ्रातृभिः भार्यया बभौ ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	सु	८. अच्छी प्रकार
कृत	४. करके	अलङ्कृतैः	९. आभूषित किये हुये
शिरः	२. सिर से	सुवासोभिः	१०. सुन्दर वस्त्र पहने
स्नानः	३. स्नान	भ्रातृभिः	११. भाइयों के (तथा)
सुवासाः	५. सुन्दर वस्त्र	भार्यया	१२. पत्नी के साथ
स्रग्वी	६. पुष्पमालायें और	बभौ ॥	१३. शोभायमान हुये
अलङ्कृतः ।	७. अलंकार धारण करके		

श्लोकार्थ— इस प्रकार सिर से स्नान करके सुन्दर वस्त्र, पुष्प-मालायें और अलंकार धारण करके अच्छी प्रकार आभूषित किये हुये तथा सुन्दर वस्त्र पहने हुए भाइयों तथा पत्नी के साथ शोभायमान हुये ॥

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

अग्रहीदासनं भ्रात्रा प्रणिपत्य प्रसादितः ।
प्रजाः स्वधर्मनिरता वर्णाश्रमगुणान्विताः ।
जुगोप पितृवद् रामो मेनिरे पितरं च तम् ॥५१॥

पदच्छेद— अग्रहीत् आसनम् भ्रात्रा प्रणिपत्य प्रसादितः ।
प्रजाः स्वधर्म निरताः वर्णाश्रम गुणअन्विताः ॥
जुगोप पितृवद् रामः मेनिरे पितरम् च तत् ॥

शब्दार्थ—

अग्रहीत्	५.	ग्रहण किया (और)	गुण	९.	गुणों से
आसनम्	४.	राजसिंहासन	अन्विताः ।	१०.	युक्त
भ्रात्रा	१.	भाई (भरत के द्वारा)	जुगोप	१३.	पालन करने लगे
प्रणिपत्य	२	प्रणाम करके	पितृवत्	१२.	पिता के समान
प्रसादितः ।	३.	प्रसन्न किये गये (राम ने)	रामः	१५.	उन राम को
प्रजाः	११.	प्रजाओं का	मेनिरे	१८.	मानने लगीं
स्वधर्म	६.	अपने धर्म में	पितरम्	१७.	पिता
निरताः	७.	तत्पर (तथा)	च	१४.	और
वर्णाश्रम	८	वर्ण और आश्रम के	तत् ॥	१६.	प्रजा भी

श्लोकार्थ—भाई भरत के द्वारा प्रणाम करके प्रसन्न किये गये राम ने राजसिंहासन ग्रहण किया । और अपने धर्म में तत्पर तथा वर्ण और आश्रम के गुणों से युक्त प्रजाओं का पालन करने लगे । और उन राम को प्रजा भी पिता मानने लगी ॥

द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

त्रेतायां वर्तमानायां कालः कृतसमोऽभवत् ।
रामे राजनि धर्मज्ञे सर्वभूतसुखावहे ॥५२॥

पदच्छेद— त्रेतायां वर्तमानायां कालः कृतसमोऽभवत् ।
रामे राजनि धर्मज्ञे सर्वभूत सुख आवहे ॥

शब्दार्थ—

त्रेतायाम्	६.	त्रेता युग के	रामे राजनि	५	राम के राजा रहते
वर्तमानायाम्	७.	वर्तमान रहते हुये	धर्मज्ञे	४.	धर्म के जानने वाले
कालः	८.	समय भी	सर्वभूत	१.	सभी प्राणियों को
कृतसमः	९.	कृत युग के समान	सुख	२.	सुख
अभवत् ।	१०.	मालूम होता था	आवहे ॥	३.	देने वाले (तथा)

श्लोकार्थ—सभी प्राणियों को सुख देने वाले तथा धर्म के जानने वाले राम के राजा रहते त्रेता युग के वर्तमान रहने पर भी समय कृत युग के समान मालूम होता था ॥

त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

वनानि नद्यो गिरयो वर्षाणि द्वीपसिन्धवः ।
सर्वे कामदुघा आसन् प्रजानां भरतर्षभ ॥५३॥

पदच्छेद— वनानि नद्यः गिरयः वर्षाणि द्वीप सिन्धवः ।
सर्वे कामदुघाः आसन् प्रजानाम् भरतर्षभ ॥

शब्दार्थ—

वनानि	२.	वन	सर्वे	८.	सभी
नद्यः	३.	नदियाँ	कामदुघा	१०	कामनाओं को पूर्ण करने वाले
गिरयः	४.	पर्वत	आसन्	११.	थे
वर्षाणि	५.	वर्ष	प्रजानाम्	९.	प्रजाओं की
द्वीप	६.	द्वीप और	भरतर्षभ ॥	१.	हे परीक्षित् !
सिन्धवः ।	७.	समुद्र			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! वन, नदियाँ, पर्वत, वर्ष, द्वीप और समुद्र सभी प्रजाओं की कामनाओं को पूर्ण करने वाले थे ॥

चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

नाधिव्याधिजराग्लानिदुःखशोकभयक्लमाः ।
मृत्युश्चानिच्छतां नासीद् रामे राजन्यधोक्षजे ॥५४॥

पदच्छेद— न अधिव्याधि जराग्लानि दुःख शोक भय क्लमाः ।
मृत्युः च अनिच्छताम् न आसीत् रामे राजनि अधोक्षजे ॥

शब्दार्थ—

आधि	४.	नहीं होती थी मानसिक रोग	मृत्युः	१५.	मृत्यु भी
व्याधि	५.	शारीरिक रोग	च	१३.	और
जरा	६.	बुढ़ापा	अनिच्छताम्	१४.	न चाहने वालों को
ग्लानि	७.	दुर्बलता	न आसीत्	१६.	नहीं होती थी
दुःख	८.	दुःख	रामे	२.	राम के
शोक	९.	शोक	राजनि	३.	राजा होने पर प्रजाओं
भय	१०.	भय	अधोक्षजे ॥	१.	भगवान्
क्लमः ।	११.	थकावट			

श्लोकार्थ—भगवान् राम के राजा होने पर प्रजाओं को मानसिक और शारीरिक रोग, बुढ़ापा दुर्बलता, दुःख, भय, थकावट नहीं होती थी। और न चाहने वाले की मृत्यु भी नहीं होती थी ॥

पञ्चपञ्चाशत्तमः श्लोकः

एकपत्नीव्रतधरो राजर्षिचरितः शुचिः ।
स्वधर्मं गृहमेधीयं शिक्षयन् स्वयमाचरत् ॥५५॥

पदच्छेद— एकपत्नी व्रत धरः राजर्षि चरितः शुचिः ।
स्वधर्मम् गृहमेधीयम् शिक्षयन् स्वयम् आचरत् ॥

शब्दार्थ—

एकपत्नी	४. एकपत्नी का	स्व	८. अपने
व्रत	५. व्रत	धर्मम्	९. धर्म की
धरः	६. धारण करने वाले भगवान् राम	गृहमेधीयम्	७. गृहस्थोचित
राजर्षि	१. राजर्षि के	शिक्षयन्	१०. शिक्षा देते हुये
चरितः	३. चरित्र वाले तथा	स्वयम्	११. स्वयम् भी
शुचिः ।	२. पवित्र	आचरत् ॥	१२. आचरण करते थे

श्लोकार्थ— राजर्षि के पवित्र चरित्र वाले तथा एक पत्नी का व्रत धारण करने वाले भगवान् राम गृहस्थोचित अपने धर्म की शिक्षा देते हुये स्वयम् भी आचरण करते थे ॥

षट्पञ्चाशत्तमः श्लोकः

प्रेम्णानुवृत्त्या शीलेन प्रश्रयावनता सती ।
धिया ह्रिया च भावज्ञा भर्तुः सीताहरन्मनः ॥५६॥

पदच्छेद— प्रेम्णा अनुवृत्त्या शीलेन प्रश्रय अवनता सती ।
धिया ह्रिया च भावज्ञा भर्तुः सीता अहरत् मनः ॥

प्रेम्णा	६. प्रेम से	ह्रिया	११. लज्जा आदि द्वारा
अनुवृत्त्या	७. सेवा से	च	१०. और
शीलेन	८. शील से (तथा)	भावज्ञा	१. भाव को जानने वाली
प्रश्रय	२. विनम्रता से	भर्तुः	१२ स्वामी के
अवनता	३ झुकी हुई	सीता	५. सीता
सती ।	४. पतिव्रता	अहरत्	१४. हर लिया
धिया	९. बुद्धि	मनः	१३. मन को

श्लोकार्थ—उनके भाव को जानने वाली, विनम्रता से झुकी हुई, पतिव्रता सीता ने प्रेम, सेवा और शील से तथा बुद्धि और लज्जा आदि के द्वारा स्वामी के मन को हर लिया ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे
रामचरित्रे दशमः अध्यायः ॥१०॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

एकादशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— भगवानात्मनाऽऽत्मानं राम उत्तमकल्पकैः ।
सर्वदेवमयं देवमीज आचार्यवान् मखैः ॥१॥

पदच्छेद— भगवान् आत्मना आत्मानम् रामः उत्तमकल्पकैः ।
सर्व देवमयम् देवम् ईजे आचार्यवान् मखैः ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	१.	भगवान्	सर्व	७.	सभी
आत्मना	१०.	अपने से	देवमयम्	८.	देवस्वरूप
आत्मानम्	११.	अपनी आत्मा का	देवम्	९.	प्रकाशमान
रामः	२.	राम ने	ईजे	१२.	यजन किया
उत्तम	४.	उत्तम	आचार्यवान्	३.	गुरु वशिष्ठ को आचार्य बनाकर
कल्पकैः	५.	सामग्रियों से युक्त	मखैः	६.	यज्ञों के द्वारा

श्लोकार्थ——भगवान् राम ने गुरु वशिष्ठ को आचार्य बनाकर उत्तम सामग्रियों से युक्त यज्ञों के द्वारा सभी देवस्वरूप, प्रकाशमान अपने से अपनी आत्मा का यजन किया ॥

द्वितीयः श्लोकः

होत्रेऽददाद् दिशं प्राचीं ब्रह्मणे दक्षिणां प्रभुः ।
अध्वर्यवे प्रतीचीं च उदीचीं सामगाय सः ॥२॥

पदच्छेद— होत्रे अददात् दिशम् प्राचीम् ब्रह्मणे दक्षिणाम् प्रभुः ।
अध्वर्यवे प्रतीचीम् च उदीचीम् सामगाय सः ॥

शब्दार्थ—

होत्रे	३.	होता को	अध्वर्यवे	८.	अध्वर्यु को
अददात्	१४.	दी	प्रतीचीम्	९.	पश्चिम दिशा
दिशम्	५.	दिशा	च	१०.	और
प्राचीम्	४.	पूर्व	उदीचीम्	१२.	उत्तर दिशा
ब्रह्मणे	६.	ब्रह्मा को	सामगाय	११.	सामगान करने वाले उद्गाता को
दक्षिणाम्	७.	दक्षिण दिशा	सः	१.	उन
प्रभुः	२.	भगवान् राम ने			

श्लोकार्थ——उन भगवान् राम ने होता को पूर्व दिशा, ब्रह्मा को दक्षिण दिशा, अध्वर्यु को पश्चिम दिशा और सामगान करने वाले उद्गाता को उत्तर दिशा दी ॥

तृतीय श्लोक

आचार्याय ददौ शेषां यावती भूस्तदन्तरा ।
मन्यमान इदं कृत्स्नं ब्राह्मणोऽर्हति निःस्पृहः ॥३॥

पदच्छेद— आचार्याय ददौ शेषाम् यावती भूः तत् अन्तरा ।
मन्यमानः इदम् कृत्स्नम् ब्राह्मणः अर्हति निः स्पृहः ॥

शब्दार्थ—

आचार्याय	१. आचार्य को	मन्यमानः	९. मानते थे कि
ददौ	७. दे दी (यह)	इदम्	८. और यह
शेषाम्	६. शेष बची थी	कृत्स्नम्	१०. सम्पूर्ण (भूमण्डल का)
यावती	४. जितनी	ब्राह्मणः	१३. ब्राह्मण ही है
भूः	५. भूमि	अर्हति	११. अधिकारी
तत्	२. उनके	निः स्पृहः	१२. कामना रहित
अन्तरा	३. बीच की		

श्लोकार्थ—आचार्य को उनके बीच की जितनी भूमि बची थी दे दी। क्योंकि यह मानते थे कि सम्पूर्ण भूमण्डल का अधिकारी कामना रहित ब्राह्मण ही है ॥

चतुर्थः श्लोकः

इत्ययं तदलङ्कारवासोभ्यामवशेषितः ।
तथा राज्ञ्यपि वैदेही सौमङ्गल्यावशेषिता ॥४॥

पदच्छेद— इति अयम् तत् अलङ्कार वासोभ्याम् अवशेषिता ।
तथा राज्ञी अपि वैदेही सौमङ्गल्य अवशेषिता ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	तथा राज्ञी	७. उसी प्रकार महारानी
अयम्	२. उन भगवान् राम ने	अपि	९ भी
तत्	३. अपने पास	वैदेही	८. सीता के
अलङ्कार	४. आभूषण	सौमङ्गल्य	१०. माङ्गलिक वस्त्रादि ही
वासोभ्याम्	५. वस्त्र ही	अवशेषिता	११. बचे रहे
अवशेषिता	६. बचा रखे		

श्लोकार्थ—इस प्रकार उन भगवान् राम ने अपने पास आभूषण और वस्त्र ही बचा रखे। उसी प्रकार महारानी सीता के भी माङ्गलिक वस्त्रादि ही बचे रहे ॥

पञ्चमः श्लोकः

ते तु ब्रह्मण्यदेवस्य वात्सल्यं वीक्ष्य संस्तुतम् ।
प्रीताः क्लिन्नधियस्तस्मै प्रत्यर्प्येदं बभाषिरे ॥५॥

पदच्छेद— ते तु ब्रह्मण्य देवस्य वात्सल्यम् वीक्ष्य संस्तुतम् ।
प्रीताः क्लिन्न धियः तस्मै प्रति अर्प्य इदम् बभाषिरे ॥

शब्दार्थ—

ते तु	६. उन ब्राह्मणों ने	प्रीताः	७. प्रसन्न एवम्
ब्रह्मण्य	१. ब्राह्मणों के	क्लिन्न	८. प्रेम से
देवस्य	२. भक्त (भगवान् के)	धियः	९. द्रवित होकर
वात्सल्यम्	४. स्नेह को	तस्मै	१०. उनको
वीक्ष्य	५. देखकर	प्रति अर्प्य	१२. लौटाकर
संस्तुतम् ।	३. अत्यन्त	इदम्	११. यह भूमण्डल
		बभाषिरे ॥	१३. कहा

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों के भक्त भगवान् के अत्यन्त स्नेह को देख कर उन ब्राह्मणों ने प्रसन्न एवम् प्रेम से द्रवित होकर उनको यह भूमण्डल लौटा कर कहा ॥

षष्ठः श्लोकः

अप्रत्तं नस्त्वया किं नु भगवन् भुवनेश्वर ।
यन्नोऽन्तर्हृदयं विश्य तमो हंसि स्वरोचिषा ॥६॥

पदच्छेद— अप्रत्तम् नः त्वया किम् नु भगवन् भुवनेश्वर ।
यत् नः अन्तः हृदयम् विश्य तमः हंसि स्वरोचिषा ॥

शब्दार्थ—

अप्रत्तम्	६. नहीं दिया	नः	८. हमारे
नः त्वया	४. हमें अपने	अन्तः	१०. भीतर
किम् नु	५. क्या	हृदयम्	९. हृदय के
भगवन्	१. हे भगवान् !	विश्य	११. प्रवेश करके
भुवनेश्वर	२. हे भुवनपति !	तमः	१३. अज्ञानान्धकार को
यत् ।	७. जो	हंसि	१४. नष्ट कर रहे हैं
		स्वरोचिषा ॥	१२. अपनी ज्योति से

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! हे भुवनपति ! आपने हमें क्या नहीं दिया । जो हमारे हृदय के भीतर प्रवेश करके अपनी ज्योति से अज्ञानान्धकार को नष्ट कर रहे हैं ॥

सप्तमः श्लोकः

नमो ब्रह्मण्यदेवाय रामायाकुण्ठमेधसे ।
उत्तमश्लोकधुर्याय न्यस्तदण्डार्पिताङ्घ्रये ॥७॥

पदच्छेद— नमः ब्रह्मण्य देवाय रामाय अकुण्ठ मेधसे ।
उत्तमश्लोक धुर्याय न्यस्त दण्ड अर्पित अङ्घ्रये ॥

शब्दार्थ—

नमः	११.	नमस्कार है	उत्तमश्लोक	५.	पवित्र कीर्ति वालों में
ब्रह्मण्य	१.	ब्राह्मणों के	धुर्याय	६.	श्रेष्ठ
देवाय	२.	परम भक्त	न्यस्तदण्ड	७	महात्माओं को (अपने)
रामाय	१०.	राम को	अर्पित	९.	देने वाले भगवान्
अकुण्ठ	३.	अनन्त	अङ्घ्रये ।	८.	चरण कमल
मेधसे ॥	४.	ज्ञान वाले			

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों के परमभक्त, अनन्त ज्ञान वाले, पवित्र कीर्ति वालों में श्रेष्ठ, महात्माओं को अपने चरण कमल देने वाले भगवान् राम को नमस्कार है ॥

अष्टमः श्लोकः

कदाचिल्लोकजिज्ञासुर्गूढो रात्र्यामलक्षितः ।
चरन् वाचोऽश्रृणोद् रामो भार्यामुद्दिश्य कस्यचित् ॥८॥

पदच्छेद— कदाचित् लोक जिज्ञासुः गूढः रात्र्याम् अलक्षितः ।
चरन् वाचः अश्रृणोत् रामः भार्याम् उद्दिश्य कस्यचित् ॥

शब्दार्थ—

कदाचित्	१.	किसी समय	चरन्	७	घूमते हुए
लोक	२.	प्रजा की	वाचः	१२.	बात
जिज्ञासुः	३.	स्थिति जानने के लिये	अश्रृणोत्	१३.	सुनी
गूढः	५.	छिपकर	रामः	८.	राम ने
रात्र्याम्	४.	रात्रि में	भार्याम्	९.	सीता के
अलक्षितः	६.	बिना बताये	उद्दिश्य	१०.	सम्बन्ध में
			कस्यचित् ॥	११.	किसी की

श्लोकार्थ—किसी समय प्रजा की स्थिति जानने के लिए रात्रि में छिपकर बिना बताये घूमते हुए राम ने सीता के सम्बन्ध में किसी की बात सुनी ॥

नवमः श्लोकः

नाहं बिभर्मि त्वां दुष्टामसतीं परवेश्मगाम्।
स्त्रीलोभी बिभृयात् सीतां रामो नाहं भजे पुनः ॥९॥

पदच्छेद— न अहम् बिभर्मि त्वाम् दुष्टाम् असतीम् परवेश्म गाम्।
स्त्री लोभी बिभृयात् सीताम् रामः न अहम् भजे पुनः ॥

शब्दार्थः—

न अहम्	७. नहीं मैं	स्त्री लोभी	९. स्त्री-लोभी
बिभर्मि	८. रख सकता हूँ	बिभृयात्	१२. रखें
त्वाम्	५. तुझे	सीताम्	११. सीता को
दुष्टाम्	१. दुष्टा	रामः	१०. राम (भले ही)
असतीम्	२. कुलटा (एवम्)	न अहम्	१५. नहीं मैं
परवेश्म	३. दूसरे घर में	भजे	१६. रख सकता
गाम्।	४ रहने वाली	पुनः ॥	१३. लेकिन (तुझे)

श्लोकार्थ—दुष्टा कुलटा एवम् दूसरे के घर में रहने वाली तुझे मैं नहीं रख सकता हूँ। स्त्री-लोभी राम भले ही सीता को रखे। लेकिन तुझे मैं नहीं रख सकता ॥

दशमः श्लोकः

इति लोकाद् बहुमुखाद् दुराराध्यादसंविदः।
पत्या भीतेन सा त्यक्ता प्राप्ता प्राचेतसाश्रमम् ॥१०॥

पदच्छेद— इति लोकात् बहु मुखात् दुराराध्यात् असंविदः।
पत्या भीतेन सा त्यक्ता प्राप्ता प्राचेतस आश्रमम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	पत्या	८. पति के द्वारा
लोकात्	६. संसार से	भीतेन	७. डरे हुये
बहु	४. बहुत	सा	१०. वह सीता
मुखात्	५. मुख वाले	त्यक्ता	९. त्यागी जाने पर
दुराराध्यात्	२. कठिनाई से प्रसन्न करनेयोग्य	प्राप्ता	१३ पहुँचा दी गई
संविदः।	३. अज्ञानी (और)	प्राचेतसः	११. वाल्मीकि के
		आश्रमम् ॥	१२. आश्रम में

श्लोकार्थ—इस प्रकार कठिनाई से प्रसन्न करने योग्य, अज्ञानी और बहुत मुख वाले संसार से डरे हुये पति के द्वारा त्यागी जाने पर वह सीता वाल्मीकि के आश्रम में पहूँचा दी गयी ॥

एकादशः श्लोकः

अन्तर्वत्न्यागते काले यमौ सा सुषुवे सुतौ ।
कुशो लव इति ख्यातौ तयोश्चक्रे क्रिया मुनिः ॥११॥

पदच्छेद— अन्तर्वत्नी आगते काले यमौ सा सुषुवे सुतौ ।
कुशः लवः इति ख्यातौ तयोः चक्रे क्रिया मुनिः ॥

शब्दार्थ—

अन्तर्वत्नी	१. गर्भवती	कुशः	५ कुश (और)
आगते	४. आने पर	लवः	६ लव
काले	३. समय	इति	७. इस नाम से
यमौ	६. जुड़वाँ	ख्यातौ	८. प्रसिद्ध
सा	२. उस सीता ने	तयोः	१३. दोनों के
सुषुवे	११. उत्पन्न किया	चक्रे	१५ किये
सुतौ ।	१०. दो पुत्रों को	क्रिया	१४. जातकर्मादि संस्कार
		मुनिः ॥	१२. वाल्मीकि मुनि उन

श्लोकार्थ—गर्भवती उस सीता ने समय आने पर कुश और लव इस नाम से प्रसिद्ध जुड़वाँ दो पुत्रों को उत्पन्न किया । वाल्मीकि मुनि ने उन दोनों के जात कर्मादि संस्कार किये ॥

द्वादशः श्लोकः

अङ्गदश्चित्रकेतुश्च लक्ष्मणस्यात्मजौ स्मृतौ ।
तक्षः पुष्कल इत्यास्तां भरतस्य महीपते ॥१२॥

पदच्छेद— अङ्गदः चित्रकेतुः च लक्ष्मणस्य आत्मजौ स्मृतौ ।
तक्षः पुष्कलः इति आस्ताम् भरतस्य महीपते ॥

शब्दार्थ—

अङ्गदः	१. अङ्गद	तक्षः	७. तक्ष और
चित्रकेतुः	३. चित्रकेतु	पुष्कलः	८. पुष्कल
च	२. और	इति	९. यह दो
लक्ष्मणस्य	४. लक्ष्मण के	आस्ताम्	११. पुत्र हुए
आत्मजौ	५. पुत्र	भरतस्य	१०. भरत के
स्मृतौ ।	६. कहे गये हैं	महीपते ॥	१२. हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! अङ्गद और चित्रकेतु लक्ष्मण के पुत्र कहे गये हैं । तक्ष और पुष्कल यह दो भरत के पुत्र हुए ॥

त्रयोदशः श्लोकः

सुबाहुः श्रुतसेनश्च शत्रुघ्नस्य बभूवतुः ।
गन्धर्वान् कोटिशो जघ्ने भरतो विजये दिशाम् ॥१३॥

पदच्छेद— सुबाहुः श्रुतसेनः च शत्रुघ्नस्य बभूवतुः ।
गन्धर्वान् कोटिशः जघ्ने भरतः विजये दिशाम् ॥

शब्दार्थ—

सुबाहुः	२. सुबाहु	गन्धर्वान्	१०. गन्धर्वों के
श्रुतसेनः	४ श्रुतसेन	कोटिशः	९. करोड़ों
च	३. और	जघ्ने	११. मार दिया
शत्रुघ्नस्य	१. शत्रुघ्न के दो पुत्र	भरतः	६. भरत ने
बभूवतुः ।	५. हुये	विजये	८. विजय करते समय
		दिशाम् ॥	७. दिशाओं की

श्लोकार्थ—शत्रुघ्न के दो पुत्र सुबाहु और श्रुतसेन हुये । भरत ने दिशाओं की विजय करते समय करोड़ो गन्धर्वों को मार दिया ॥

चतुर्दशः श्लोकः

तदीयं धनमानीय सर्वं राज्ञे न्यवेदयत् ।
शत्रुघ्नश्च मधोः पुत्रं लवणं नाम राक्षसम् ।
हत्वा मधुवने चक्रे मथुरां नाम वै पुरीम् ॥१४॥

पदच्छेद— तदीयम् धनम् आनीय सर्वम् राज्ञे न्यवेदयत् ।
शत्रुघ्नश्च मधोः पुत्रम् लवणम् नाम राक्षसम् ।
हत्वा मधुवने चक्रे मथुराम् नाम वै पुरीम् ॥

शब्दार्थ—

तदीयम्	१. उसका	लवणम्	९ लवण
धनम् आनीय	३. धन लाकर	नाम	१०. नामक
सर्वम्	२ सब	राक्षसम्	११ राक्षस को
राज्ञे	४. राजा राम को	हत्वा	१२. मारकर
न्यवेदयत्	५. दे दिया	मधुवने	१३. मधुवन में
शत्रुघ्नश्च	६. शत्रुघ्न ने भी	चक्रे	१७ बसाई
मधोः	७. मधु के	मथुराम्	१४. मथुरा
पुत्रम् ।	८. पुत्र	नाम	१५. नाम की
		वै पुरीम् ॥	१६ नगरी

श्लोकार्थ—उनका सब धन लाकर राजा राम को दे दिया । शत्रुघ्न ने भी मधु के पुत्र लवण नामक राक्षस को मार कर मधुवन में मथुरा नाम की नगरी बसायी ॥

पञ्चदशः श्लोकः

मुनौ निक्षिप्य तनयौ सीता भर्त्रा विवासिता ।
ध्यायन्ती रामचरणौ विवरं प्रविवेश ह ॥१५॥

पदच्छेद— मुनौ निक्षिप्य तनयौ सीता भर्त्रा विवासिता ।
ध्यायन्ती रामचरणौ विवरम् प्रविवेश ह ॥

शब्दार्थ—

मुनौ	४.	वाल्मीकि मुनि को अपने	ध्यायन्ती	९.	ध्यान करती हुई
निक्षिप्य	६.	सौंपकर	राम	७.	राम के
तनयौ	५.	दोनों पुत्रों को	चरणौ	८.	चरणों का
सीता	३.	सीता	विवरम्	१०.	पृथ्वी के बिल में
भर्त्रा	१.	पति के द्वारा	प्रविवेश ह ।	११.	प्रवेश कर गईं
विवासिता ॥	२.	निर्वासित			

श्लोकार्थ—पति के द्वारा निर्वासित सीता वाल्मीकि मुनि को अपने दोनों पुत्रों को सौंपकर राम के चरणों का ध्यान करती हुई पृथ्वी के बिल में प्रवेश कर गईं ॥

षोडशः श्लोकः

तच्छ्रुत्वा भगवान् रामो रुन्धन्नपि धिया शुचः ।
स्मरंस्तस्या गुणांस्तांस्तान्नाशक्नोद् रोद्धुमीश्वरः ॥१६॥

पदच्छेद— तत् श्रुत्वा भगवान् रामः रुन्धन् अपि धिया शुचः ।
स्मरन् तस्याः गुणान् तान्-तान् न अशक्नोत् रोद्धुम् ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

तत्	१.	वह	स्मरन्	१२.	स्मरण करते हुए
श्रुत्वा	२.	सुनकर	तस्याः	९.	उनके
भगवान्	३.	भगवान्	गुणान्	११.	गुणों को
रामः	४.	राम	तान्-तान्	१०.	उन-उन
रुन्धन्	७.	रोकते हुए	न अशक्नोत्	१४.	नहीं सके
अपि	८.	भी	रोद्धुम्	१५.	रोक
धिया	५.	बुद्धि से	ईश्वरः	१३.	समर्थ होने पर भी
शुचः ॥	६.	शोक को			

श्लोकार्थ—वह सुनकर भगवान् राम बुद्धि से शोक को रोकते हुए भी उनके उन-उन गुणों का स्मरण करते हुए समर्थ होने पर भी नहीं रोक सके ॥

सप्दश श्लोक

स्त्रीपुंप्रसङ्ग एतादृक्सर्वत्र त्रासमावहः ।
अपीश्वराणां किमुत ग्राम्यस्य गृहचेतसः ॥१७॥

पदच्छेद— स्त्री पुं प्रसङ्गः एतादृक् सर्वत्र त्रासम् आवहः ।
अपिईश्वराणाम् किमुत ग्राम्यस्य गृह चेतसः ॥

शब्दार्थ—

स्त्री पुं	१.	स्त्री और पुरुष	अपिईश्वराणाम्	७.	समर्थों के लिये भी ऐसा ही है
प्रसङ्गः	२.	का सम्बन्ध	किमुत	८.	फिर क्या कहना है
एतादृक्	३.	ऐसा ही	ग्राम्यस्य	११.	विषयी पुरुषों के लिये
सर्वत्र	४.	सब जगह	गृह	६.	घर में
त्रासम्	५.	दुःख	चेतसः ।	१०.	आसक्त
आवहः ॥	६.	दायी है			

श्लोकार्थ—स्त्री और पुरुष का सम्बन्ध ऐसा ही सब जगह दुःखदायी है। समर्थों के लिये भी ऐसा ही है। फिर घर में आसक्त विषयी पुरुषों के लिये क्या कहना है ॥

अष्टादशः श्लोकः

तत ऊर्ध्वं ब्रह्मचर्यं धारयन्नजुहोत् प्रभुः ।
त्रयोदशाब्दसाहस्रमग्निहोत्रमखण्डितम् ॥१८॥

पदच्छेद— ततः ऊर्ध्वं ब्रह्मचर्यम् धारयन् अजुहोत् प्रभुः ।
त्रयोदश अब्द साहस्रम् अग्निहोत्रम् अखण्डितम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	इसके	त्रयोदश	६.	तेरह
ऊर्ध्वं	२.	बाद	अब्द	८.	वर्ष तक
ब्रह्मचर्यम्	३.	ब्रह्मचर्य व्रत को	साहस्रम्	७.	हजार
धारयन्	४.	धारण करके	अग्निहोत्रम्	११.	अग्निहोत्र में
अजुहोत्	१०.	हवन किया	अखण्डितम् ।	६.	अखण्ड
प्रभुः ॥	५.	भगवान् राम ने			

श्लोकार्थ—इसके बाद ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करके भगवान् राम ने तेरह हजार वर्ष तक अखण्ड अग्नि होत्र में हवन किया ॥

एकोनविंश श्लोक

स्मरतां हृदि विन्यस्य विद्धं दण्डककण्टकैः ।

स्वपादपल्लवं राम आत्मज्योतिरगात् ततः ॥१९॥

पदच्छेद— स्मरताम् हृदि विन्यस्य विद्धम् दण्डक कण्टकैः ।
स्वपादपल्लवं राम आत्मज्योतिः अगात् ततः ॥

शब्दार्थ—

स्मरताम्	७.	स्मरण करने वाले भक्तों के	स्वपाद	५.	अपने चरण
हृदि	८.	हृदय में	पल्लव	६.	कमल को
विन्यस्य	९.	रखकर	राम	११.	राम (अपने धाम को)
विद्धम्	४.	विंधे गये	आत्मज्योतिः	१०.	स्वयं प्रकाश
दण्डक	२.	दण्डक वन के	अगात्	१२.	चले गये
कण्टकैः ।	३.	कांटों से	ततः ॥	१.	तदनन्तर

श्लोकार्थ—तदनन्तर दण्डकवन के काटों से विंधे गये अपने चरण कमल को स्मरण करने वाले भक्तों के हृदय में रखकर स्वयं प्रकाश राम अपने धाम को चले गये ॥

विंशः श्लोकः

नेदं यशो रघुपतेः सुरयाच्ञयाऽऽत्तलीलातनोरधिकसाम्यविमुक्तधाम्नः ।

रक्षोवधो जलधिबन्धनमस्त्रपूगैः किं तस्य शत्रुहनने कपयः सहायाः ॥२०॥

पदच्छेद— न इदम् यशः रघुपतेः सुरयाच्ञया आत्त लीला तनोः अधिक साम्यविमुक्त धाम्नः ।
रक्षः वधः जलधिबन्धनम् अस्त्रपूगैः किम् तस्य शत्रु हनने कपयः सहायाः ॥

शब्दार्थ—

न	१८.	नहीं है	रक्षः	१२.	राक्षस का
इदम्	१६.	यह	वधः	१३.	वध करना
यशः	१७.	यश की बात	जलधि	१४.	समुद्र को
रघुपतेः	९.	भगवान् राम के लिए	बन्धनम्	१५.	बाँधना
सुरयाच्ञया	१.	देवताओं की प्रार्थना से	अस्त्र	१०.	अस्त्र
आत्त	४.	धारण करने वाले (तथा)	पूगैः	११.	समूहों से
लीला	२.	लीला	किम्	२३.	क्या
तनोः	३.	शरीर	तस्य	२२.	उनको
अधिक	५.	अधिक और	शत्रु	१९.	शत्रुओं को
साम्य	६.	समान	हनने	२०.	मारने
विमुक्त	८.	परास्त करने वाले	कपयः	२१.	बन्दर
धाम्नः ।	७	तेज वालों को	सहायाः ॥	२४.	सहायता करेंगे

श्लोकार्थ—देवताओं की प्रार्थना से लीला शरीर धारण करने वाले तथा अधिक और समान तेज वालों को परास्त करने वाले भगवान् राम के लिए अस्त्र-समूहों से राक्षस का वध करना और समुद्र को बाँधना यह कोई यश की बात नहीं है। भला शत्रुओं को मारने में बन्दर उनकी क्या सहायता करेंगे ॥

एकविंशः श्लोकः

यस्यामलं नृपसदस्सु यशोऽधुनापि गायन्त्यघघ्नमृषयो दिगिभेन्द्रपट्टम् ।
तं नाकपालवसुपालकिरीटजुष्टपादाम्बुजं रघुपतिं शरणं प्रपद्ये ॥२१॥

पदच्छेद—यस्य अमलम् नृप सदस्सु यशः अधुना अपि गायन्ति अघघ्नम् ऋषयः दिग् इभ इन्द्र पट्टम् ।
तम् नाकपाल वसुपाल किरीट जुष्ट पाद अम्बुजम् रघुपतिम् शरणम् प्रपद्ये ॥

शब्दार्थ—

यस्य	३.	जिनका	पट्टम्	१२.	उज्ज्वल बनाने वाला है
अमलम्	५.	निर्मल	तम्	१३.	उन
नृप	१.	राज	नाकपाल	१४.	देवताओं और
सदस्सु	२.	सभाओं में	वसुपाल	१५	पृथ्वी के राजा के
यशः	६.	यश का	किरीट	१६.	मुकुटों से
अधुना	७.	आज	जुष्ट	१७.	सेवित
अपि	८.	भी	पाद	१८.	चरण
गायन्ति	१०.	गायन करते हैं (जो)	अम्बुजम्	१९.	कमल वाले
अघघ्नम्	४.	पापनाशक	रघुपतिम्	२०.	रघुपति राम की
ऋषयः	९.	ऋषिगण	शरणम्	२१.	शरण
दिग्-इभ इन्द्र ।	११.	दिशाओं के गण राजों	प्रपद्ये ।	२२.	ग्रहण करता हूँ

श्लोकार्थ—राज सभाओं में जिनका पाप नाशक निर्मल यश का आज भी ऋषिगण गायन करते हैं और जो दिशाओं के गणराजों को भी उज्ज्वल बनाने वाला है, उन देवताओं और पृथ्वी के राजाओं के मुकुटों से सेवित चरण कमल वाले रघुपति राम की शरण ग्रहण करता हूँ ॥

द्वाविंशः श्लोकः

स यैः स्पृष्टोऽभिदृष्टो वा संविष्टोऽनुगतोऽपि वा ।
कोसलास्ते ययुः स्थानं यत्र गच्छन्ति योगिनः ॥२२॥

पदच्छेद— सः यैः स्पृष्टः अभिदृष्टः वा संविष्टः अनुगतः अपि वा ।
कोसलाः ते ययुः स्थानम् यत्र गच्छन्ति योगिनः ॥

शब्दार्थ—

सः	२.	उन राम का	वा	७.	या
यैः	१.	जिन्होंने	कोसलाः	१०.	कोशल देश के निवासी
स्पृष्टः	३.	स्पर्श किया	ते	९.	वे
अभिदृष्टः	५	दर्शन किया	ययुः	१३.	गये
वा	४.	अथवा	स्थानम्	१२.	उस स्थान को
संविष्टः	६.	साथ किया	यत्र	१४.	जहाँ
अनुगतः	८.	अनुगमन किया	गच्छन्ति	१६.	जाते हैं
अपि	११.	भी	योगिनः	१५.	योगी जन

श्लोकार्थ—जिन्होंने उन राम का स्पर्श किया, दर्शन किया अथवा साथ किया या अनुगमन किया, वे कोशल देश निवासी भी उस स्थान को गये, जहाँ योगीजन जाते हैं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

पुरुषो रामचरितं श्रवणैरुपधारयन् ।
आनृशंस्यपरो राजन् कर्मबन्धैर्विमुच्यते ॥२३॥

पदच्छेद— पुरुषः राम चरितं श्रवणैः उपधारयन् ।
आनृशंस्य परः राजन् कर्मबन्धैः विमुच्यते ॥

शब्दार्थ—

पुरुषः	२.	जो पुरुष	आनृशंस्य	७.	सरलता को
राम	४.	राम के	परः	८.	प्राप्त करके
चरितम्	५.	चरित को	राजन्	१.	हे राजन् !
श्रवणैः	३.	कानों से	कर्म	९	कर्म
उपधारयन् ।	६.	सुनता है (वह)	बन्धैः	१०.	बन्धन से
			विमुच्यते ॥	११.	मुक्त हो जाता है

श्लोकार्थ—हे राजन् ! जो पुरुष कानों से राम के चरित्र को सुनता है, वह सरलता को प्राप्त करके कर्म बन्धन से मुक्त हो जाता है ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

राजोवाच—कथं स भगवान् रामो भ्रातॄन् वा स्वयमात्मनः ।
तस्मिन् वा तेऽन्ववर्तन्त प्रजाः पौराश्च ईश्वरे ॥२४॥

पदच्छेद— कथम् सः भगवान् रामः भ्रातॄन् वा स्वयम् आत्मनः ।
तस्मिन् वा ते अन्ववर्तन्त प्रजाः पौराः च ईश्वरे ॥

शब्दार्थ—

कथम्	७.	किस प्रकार का व्यवहार करते थे	तस्मिन्	१५.	उन राम के प्रति
सः	१.	वे	वा	१२.	अथवा
भगवान्	२.	भगवान्	ते	९.	वे (भाई)
रामः	३.	राम	अन्ववर्तन्त	१६.	बर्ताव करते थे
भ्रातॄन्	६.	भाइयों के साथ	प्रजाः	१७.	प्रजाजन
वा	८.	अथवा	पौराः	१३.	नगरवासो
स्वयम्	४.	स्वयम्	च	१०.	और
आत्मनः	५.	अपने	ईश्वरे	१४.	प्रभु

श्लोकार्थ—वे भगवान् राम स्वयम् अपने भाइयों के साथ किस प्रकार व्यवहार करते थे अथवा वे भाई, प्रजाजन अथवा नगरवासो प्रभु उन राम के साथ कैसा बर्ताव करते थे ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

श्रीशुक वाच— अथादिशद् दिग्विजये भ्रातॄंस्त्रिभुवनेश्वरः ।
आत्मानं दर्शयन् स्वानां पुरीमैक्षत सानुगः ॥२५॥

पदच्छेद— अथ आदिशत् दिग्विजये भ्रातॄन् त्रिभुवनेश्वरः ।
आत्मानम् दर्शयन् स्वानाम् पुरीम् ऐक्षत स अनुगः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	आत्मानम्	८.	अपना
आदिशत्	६.	आदेश दिया (और)	दर्शयन्	९.	दर्शन देते हुये
दिग्विजये	५.	दिग्विजय करने के लिये	स्वानाम्	७.	अपने जनों को
भ्रातॄन्	४.	भाइयों को	पुरीम्	१२.	नगरी की
त्रि	२.	तीनों	ऐक्षत	१३.	देख भाल करने लगे
भुवनेश्वरः ।	३.	लोकों के पति राम ने	सः	१०.	वे भगवान् राम
			अनुगः ।	११.	अनुचरों के साथ

श्लोकार्थ—तदनन्तर तीनों लोकों के पति राम ने भाइयों को दिग्विजय करने के लिये आदेश दिया । और अपने जनों को अपना दर्शन देते हुये वे भगवान् राम अनुचरों के साथ नगरी की देख भाल करने लगे ॥

षड्विंशः श्लोकः

आसिक्तमार्गां गन्धोदैः करिणां मदशीकरैः ।
स्वामिनं प्राप्तमालोक्य मत्तां वा सुतरामिव ॥२६॥

पदच्छेद— आसिक्त मार्गाम् गन्ध उदैः करिणाम् मद शीकरैः ।
स्वामिनम् प्राप्तम् आलोक्य मत्ताम् वा सुतराम् इव ॥

शब्दार्थ—

आसिक्त	७.	सींचे गये	स्वामिनम्	९.	स्वामी को
मार्गाम्	८.	मार्ग वाली (अयोध्या)	प्राप्तम्	१०.	आये हुये
गन्ध	१.	सुगन्धित	आलोक्य	११.	देख कर
उदैः	२.	जल से	मत्ताम्	१४.	मतवाली हो गयी है
करिणाम्	४.	हाथियों के	वा	३.	अथवा
मद	५.	मद	सुतराम्	१३.	अत्यन्त
शीकरैः ।	६.	कणों से	इव ॥	१२.	मानों

श्लोकार्थ—सुगन्धित जल से अथवा हाथियों के मदकणों से सींचे गये मार्ग वाली वह अयोध्या स्वामी को आये हुये देख कर मानों अत्यन्त मतवाली हो गयी है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

प्रासादगोपुरसभाचैत्यदेवगृहादिषु ।
विन्यस्तहेमकलशैः पताकाभिश्च मण्डिताम् ॥२७॥

पदच्छेद— प्रासाद गोपुर सभा चैत्य देवगृह आदिषु ।
विन्यस्त हेम कलशैः पताकाभिः च मण्डिताम् ॥

शब्दार्थ—

प्रासाद	१.	महल	विन्यस्त	९.	रखे हुए थे
गोपुर	२.	फाटक	हेम	७	सोने के
सभा	३.	सभाभवन	कलशैः	८.	कलश
चैत्य	४.	विहार स्थल और	पताकाभिः	११.	पताकाओं से
देवगृह	५.	देवालय	च	१०.	और वह नगरी
आदिषु ।	६	आदि में	मण्डिताम् ॥	१२.	विभूषित थीं

श्लोकार्थ——महल, फाटक, सभाभवन, विहार स्थल और देवालय आदि में सोने के कलश रखे हुए थे और वह नगरी पताकाओं से विभूषित थी ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

पूगैः सवृन्तै रम्भाभिः पट्टिकाभिः सुवाससाम् ।
आदर्शैरंशुकैः स्रग्भिः कृतकौतुकतोरणाम् ॥२८॥

पदच्छेद— पूगैः सवृन्तैः रम्भाभिः पट्टिकाभिः सुवाससाम् ।
आदर्शैः अंशुकैः स्रग्भिः कृत कौतुक तोरणाम् ॥

शब्दार्थ—

पूगैः	२.	सुपारी	आदर्शैः	६.	दर्पणों
सवृन्तैः	१.	डंठल सहित	अंशुकैः	७.	वस्त्रों
रम्भाभिः	३.	केले के खम्भे	स्रग्भिः	८.	मालाओं
पट्टिकाभिः	५.	पट्टों	कृत	११.	सजी हुई थी
सुवाससाम् ।	४.	सुन्दर वस्त्रों	कौतुक	९.	चित्रकारी और
			तोरणाम् ॥	१०.	बंदनवारों से

श्लोकार्थ——वह नगरी डंठल सहित सुपारी, केले के खम्भों, सुन्दर वस्त्रों, पट्टों, दर्पणों, वस्त्रों, मालाओं, चित्रकारी और बन्दनवारों से सजी हुई थी ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

तमुपेयुस्तत्र तत्र पौरा अर्हणपाणयः ।
आशिषो युयुजुर्देव पाहीमां प्राक् त्वयोद्धृताम् ॥२९॥

पदच्छेद— तम् उपेयुः तत्र तत्र पौराः अर्हण पाणयः ।
आशिषः युयुजुः देव पाहि इमाम् प्राक् त्वया उद्धृताम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	६.	उन भगवान् राम के	आशिषः	८.	आशीर्वाद देते हुये
उपेयुः	७.	पास आते (और)	युयुजुः	९.	प्रार्थना करते
तत्र	१.	वहाँ	देव	१०.	हे महाराज
तत्र	२.	वहाँ	पाहिइमाम्	१४.	पालन कीजिये इस पृथ्वी का
पौराः	३.	नगरवासी	प्राक्	११	पहले
अर्हण	५.	भेंटें लेकर	त्वया	१२.	आपके ही द्वारा
पाणयः ।	४.	हाथों में	उद्धृताम् ॥	१३	उद्धार की गयी

श्लोकार्थ—वहाँ वहाँ नगर वासी हाथों में भेंटें ले लेकर उन भगवान् के पास आते और आशीर्वाद देते हुये प्रार्थना करते कि हे महाराज ! पहले आपके ही द्वारा उद्धार की गयी इस पृथ्वी का पालन कीजिये ॥

त्रिंशः श्लोकः

ततः प्रजा वीक्ष्य पतिं चिरागतं दिदृक्षयोत्सृष्टगृहाः स्त्रियो नराः ।
आरुह्य हर्म्याण्यरविन्दलोचनमतृप्तनेत्राः कुसुमैरवाकिरन् ॥३०॥

पदच्छेद— ततः प्रजाः वीक्ष्य पतिम् चिरागतम् दिदृक्षया उत्सृष्ट गृहाः स्त्रियः नराः ।
आरुह्य हर्म्याणि अरविन्द लोचनम् अतृप्त नेत्राः कुसुमैः अवाकिरन् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	नराः	१०.	पुरुष
प्रजाः	२.	प्रजाजन	आरुह्य	१२	चढ़कर
वीक्ष्य	५.	देख कर	हर्म्याणि	११.	ऊँची नीची अटारियों पर
पतिम्	४.	स्वामी को	अरविन्द	१३.	कमल
चिरागतम्	३.	चिरकाल के बाद आये हुये	लोचनम्	१४.	नयन भगवान् को
दिदृक्षया	६.	दर्शन की इच्छा से	अतृप्त	१५.	अतृप्त
उत्सृष्ट	८.	छोड़ कर	नेत्राः	१६.	नेत्रों से (देखते हुये)
गृहाः	७	घर को	कुसुमैः	१७.	फूलों को
स्त्रियः ।	९	स्त्री और	अवाकिरन् ॥	१८.	वर्षा करने लगे ।

श्लोकार्थ— तदनन्तर प्रजाजन चिरकाल के बाद आये हुये स्वामी को देख कर दर्शन की इच्छा से घर को छोड़ कर स्त्री और पुरुष ऊँची नीची अटारियों पर चढ़ कर कमल नयन भगवान् को अतृप्त नेत्रों से देखते हुये फूलों की वर्षा करने लगे ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

अथ प्रविष्टः स्वगृहं जुष्टं स्वैः पूर्वराजभिः ।
अनन्ताखिलकोशाढ्यमनर्घ्योरुपरिच्छदम् ॥३१॥

पदच्छेद— अथ प्रविष्टः स्वगृहम् जुष्टम् स्वैः पूर्वराजभिः ।
अनन्त अखिल कोश आढ्यम् अनर्घ्य उरुपरिच्छदम् ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	अनन्त	५.	अनन्त एवम्
प्रविष्टः	१३.	प्रविष्ट	अखिल	६.	सम्पूर्ण
स्वगृहम्	१२.	अपने घर में	कोष	७.	खजानों से
जुष्टम्	४.	सेवित	आढ्यम्	८.	भरे हुए (तथा)
स्वैः	२	अपने	अनर्घ्य	९.	बहु मूल्य और
पूर्वराजभिः ।	३.	पहले के राजाओं द्वारा	उरु	१०.	बहुत
			परिच्छदम् ॥	११.	सामग्रियों से युक्त

श्लोकार्थ—तदनन्तर अपने पहले राजाओं के द्वारा सेवित, अनन्त एवम् सम्पूर्ण खजाने से भरे हुए तथा बहुमूल्य बहुत सामग्रियों से युक्त अपने घर में प्रविष्ट हो जाते थे ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

विद्रुमोदुम्बरद्वारैर्वैदुर्यस्तम्भपङ्क्तिभिः ।
स्थलैर्मारकतैः स्वच्छैर्भ्राजत्स्फटिकभित्तिभिः ॥३२॥

पदच्छेद— विद्रुम उदुम्बर द्वारैः वैदूर्य स्तम्भ पङ्क्तिभिः ।
स्थलैः मारकतैः स्वच्छैः भात स्फटिक भित्तिभिः ॥

शब्दार्थ—

विद्रुम	१.	मूंगा और	स्थलैः	१०.	फर्शों से (और)
उदुम्बर	२.	उदुम्बर के	मारकतैः	७.	मरकतमणि की
द्वारैः	३.	दरवाजों से	स्वच्छैः	८.	निर्मल
वैदूर्य	४.	वैदूर्यमणि के	भात	९.	चमकीले
स्तम्भ	५	खम्भों की	स्फटिक	११.	स्फटिक मणि की
पङ्क्तिभिः ।	६.	पङ्क्तियों से	भित्तिभिः ॥	१२.	दीवारों से (सुसज्जित था)

श्लोकार्थ – मूंगे और उदुम्बर के दरवाजों से वैदूर्य मणि के खम्भों की पङ्क्तियों से मरकत मणि की निर्मल चमकीले फर्शों से और स्फटिक मणि की दीवारों से वह महल सुसज्जित था ॥

त्रयस्त्रिंश श्लोकः

चित्रस्रग्भिः पट्टिकाभिर्वासोमणिगणांशुकैः ।
मुक्ताफलैश्चिदुल्लासैः कान्तकामोपपत्तिभिः ॥३३॥

पदच्छेद— चित्र स्रग्भिः पट्टिकाभिः वासः मणि गण अंशुकैः ।
मुक्ताफलैः चित् उल्लासैः कान्तकाम उपपत्तिभिः ॥

शब्दार्थ—

चित्र	१.	रंगबिरंगी	अंशुकैः	४.	सूक्ष्म
स्रग्भिः	२.	मालाओं	मुक्ताफलैः	१०.	मोतियों एवम्
पट्टिकाभिः	३.	पताकाओं और	चित्	८.	शुद्ध चेतन के समान
वासः	५.	वस्त्रों से	उल्लासैः	९.	उज्ज्वल
मणि	६.	मणि	कान्तकाम	११.	सुन्दर सुन्दर भोग
गणान्	७.	समूहों से तथा	उपपत्तिभिः	१२.	सामग्रियों से (सुसज्जित था)

श्लोकार्थ—रंगबिरंगी मालाओं, पताकाओं और सूक्ष्म वस्त्रों से मणि, समूहों से तथा शुद्ध चेतन के समान उज्ज्वल मोतियों एवम् सुन्दर-सुन्दर भोग-सामग्रियों से वह महल सुसज्जित था ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

धूपदीपैः सुरभिभिर्मण्डितं पुष्पमण्डनैः ।
स्त्रीपुम्भिः सुरसंकाशैर्जुष्टं भूषणभूषणैः ॥३४॥

पदच्छेद— धूपदीपैः सुरभिभिः मण्डितम् पुष्प मण्डनैः ।
स्त्री पुम्भिः सुरसंकाशैः जुष्टम् भूषण भूषणैः ॥

शब्दार्थ—

धूपदीपैः	२.	धूप-दीपों से (तथा)	स्त्री	९.	स्त्री
सुरभिभिः	१.	सुगन्धित	पुम्भिः	१०.	पुरुषों मे
मण्डितम्	५.	सुसज्जित था और	सुरसंकाशैः	८.	देवताओं के समान
पुष्प	३.	पुष्पों के	जुष्टम्	११	सेवित था
मण्डनैः	४.	गहनों से	भूषण	६.	आभूषणों को भी
			भूषणैः ॥	७.	शोभित करने वाले

श्लोकार्थ— सुगन्धित धूप दीपों से (तथा) पुष्पों के गहनों से सुसज्जित था । और आभूषणों को भी भूषित करने वाले देवताओं के समान स्त्री-पुरुषों से सेवित था ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

तस्मिन् स भगवान् रामः स्निग्धया प्रिययेष्टया ।
रेमे स्वारामधीराणामृषभः सीतया किल ॥३५॥

पदच्छेद— तस्मिन् सः भगवान् रामः स्निग्धया प्रियया इष्टया ।
रेमे स्वाराम धीराणाम् ऋषभः सीतया किल ॥

शब्दार्थ—

तस्मिन्	२.	उस महल में	**रेमे**	१३.	विहार करते थे
सः	६.	वे	**स्वाराम**	३.	आत्माराम (और)
भगवान्	७.	भगवान्	**धीराणाम्**	४.	जितेन्द्रिय पुरुषों में
रामः	८.	राम	**ऋषभः**	५.	श्रेष्ठ
स्निग्धया	१०.	प्रेममयी	**सीतया**	१२.	सीता के साथ
प्रियया	११.	पत्नी	**किल ।**	१.	ऐसा कहा है कि
इष्टया ॥	९.	प्राण प्रिया			

श्लोकार्थ— ऐसा कहा जाता है कि उस महल में आत्माराम और जितेन्द्रिय पुरुषों में श्रेष्ठ वे भगवान् राम प्राणप्रिया, प्रेममयी, पत्नी सीता के साथ विहार करते थे ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

बुभुजे च यथाकालं कामान् धर्ममपीडयन् ।
वर्षपूगान् बहून् नृणामभिध्याताङ्घ्रिपल्लवः ॥३६॥

पदच्छेद— बुभुजे च यथा कालम् कामान् धर्मम् अपीडयन् ।
वर्ष पूगान् बहून् नृणाम् अभिध्यात अङ्घ्रिपल्लवः ॥

शब्दार्थ—

बुभुजे	१३.	भोग करते रहे	**वर्ष**	६.	वर्षों के
च	१४.	भी	**पूगान्**	७.	समूह तक
यथा	११.	अनुसार	**बहून्**	५.	बहुत
कालम्	१०	समय के	**नृणाम्**	१.	मनुष्यों के द्वारा
कामान्	१२.	भोगों का	**अभिध्यात**	२.	ध्यान किये जाते हुये
धर्मम्	८.	धर्म का	**अङ्घ्रि**	३.	चरण
अपीडयन् ।	९.	पालन करते हुये	**पल्लवः ॥**	४.	कमल वाले वे भगवान् राम

श्लोकार्थ— और मनुष्यों के द्वारा ध्यान किये जाते हुये चरण कमल वाले वे भगवान् राम बहुत वर्षों के समूह तक धर्म का पालन करते हुये समय के अनुसार भोग भी करते रहे ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे
श्रीरामोपाख्याने एकादशः अध्यायः ॥११॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

द्वादशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—कुशस्य चातिथिस्तस्मान्निषधस्तत्सुतो नभः ।
पुण्डरीकोऽथ तत्पुत्रः क्षेमधन्वाभवत्ततः ॥१॥

पदच्छेद— कुशस्य च अतिथिः तस्मात् निषधः तत् सुतः नभः ।
पुण्डरीकः अथ तत् पुत्रः क्षेम धन्वा अभवत् ततः ॥

शब्दार्थ—

कुशस्य	२.	कुश के पुत्र	नभः ।	८.	नभ
च	१.	और	पुण्डरीकः	१०.	पुण्डरीक
अतिथिः	३.	अतिथि	अथ	९.	उनसे
तस्मात्	४.	उनसे	तत्	११.	उनके
निषधः	५.	निषध	पुत्रः	१२.	पुत्र
तत्	६.	उनका	क्षेमधन्वा	१३.	क्षेमधन्वा
सुतः	७.	पुत्र	अभवत् ततः ॥	१४.	हुए

श्लोकार्थ—कुश के पुत्र अतिथि, उनसे निषध, उनके पुत्र नभ, उनसे पुण्डरीक और उनके पुत्र क्षेमधन्वा हुए ॥

द्वितीयः श्लोकः

देवानीकस्ततोऽनीहः पारियात्रोऽथ तत्सुतः ।
ततो बलस्थलस्तस्माद् वज्रनाभोऽर्कसंभवः ॥२॥

पदच्छेद— देवानीकः ततः अनीहः पारियात्रः अथ तत् सुतः ।
ततः बल स्थलः तस्मात् वज्रनाभः अर्क संभवः ॥

शब्दार्थ—

देवानीकः	१.	उनसे देवानीक	ततः	८.	उनसे
ततः	२.	उनसे	बलस्थलः	९.	बलस्थल और
अनीहः	३.	अनीह	तस्मात्	१०.	उनके
परियात्र	७.	पारियात्र हुए	वज्रनाभः	११.	वज्रनाभ हुए (जिनमें)
अथ	४.	तदनन्तर	अर्क	१२.	सूर्य का
तत्	५.	उनके	संभवः ॥	१३.	अंश था
सुतः ।	६.	पुत्र			

श्लोकार्थ—उनमे देवानीक, उनसे अनीह, तदनन्तर उनके पुत्र पारियात्र हुए । उनसे बलस्थल और उनसे वज्रनाभ हुए, जिनमें सूर्य का अंश था ।

तृतीयः श्लोकः

खगणस्तत्सुतस्तस्माद् विधृतिश्चाभवत् सुतः ।
ततो हिरण्यनाभोऽभूद् योगाचार्यस्तु जैमिनेः ॥३॥

पदच्छेद— खगणः तत्सुतः तस्मात् विधृतिः च अभवत् सुतः ।
ततः हिरण्यनाभः अभूत् योगाचार्यः तु जैमिनेः ॥

शब्दार्थ—

खगणः	२. खगण	ततः	८. उनके
तत्सुतः	१ उनके पुत्र	हिरण्यनाभः	९. हिरण्यनाभ
तस्मात्	४. उनके	अभूत्	१०. हुये
विधृतिः	६. विधृति	योगाचार्यः	१३. योगचार्य थे
च	३. और	तु	११. जो
अभवत्	७. हुये	जैमिनेः ।	१२. जैमिनि के शिष्य
सुतः ॥	५ पुत्र		

श्लोकार्थ—उनके पुत्र खगण और उनके पुत्र वैधृति हुये । उनके हिरण्यनाभ हुये । जो जैमिनि के शिष्य योगाचार्य थे ॥

चतुर्थः श्लोकः

शिष्यः कौसल्य आध्यात्मं याज्ञवल्क्योऽध्यगाद् यतः ।
योगं महोदयमृषिर्हृदयग्रन्थिभेदकम् ॥४॥

पदच्छेद— शिष्यः कौसल्यः आध्यात्मम् याज्ञवल्क्यः अध्यगात् यतः ।
योगम् महोदयम् ऋषिः हृदय ग्रन्थि भेदकम् ॥

शब्दार्थ —

शिष्यः	१. जिनके शिष्य होकर	योगम्	११. योग की
कौसल्यः	२ कोसल देश के निवासी	महोदयम्	९. परम सिद्धि दायक
आध्यात्मम्	१०. अध्यात्म	ऋषिः	५. ऋषि ने
याज्ञवल्क्यः	३. याज्ञवल्क्य	हृदय	६. हृदय की
अध्यगात्	१२ शिक्षा ग्रहण की थी	ग्रन्थि	७. गाँठ को
यतः ।	४. जिनसे	भेदकम् ॥	८. काटने वाले

श्लोकार्थ—जिनके शिष्य होकर कोसल देश के निवासी याज्ञवल्क्य ऋषि ने हृदय की गाँठ को काटने वाले परम सिद्धि दायक अध्यात्म योग की शिक्षा ग्रहण की थी ॥

पञ्चमः श्लोकः

पुष्यो हिरण्यनाभस्य ध्रुवसन्धिस्ततोऽभवत् ।
सुदर्शनोऽथाग्निवर्णः शीघ्रस्तस्य मरुः सुतः ॥५॥

पदच्छेद पुष्यः हिरण्यनाभस्य ध्रुवसन्धिः ततः अभवत् ।
सुदर्शनः अथ अग्निवर्णः शीघ्रः तस्य मरुः सुतः ॥

शब्दार्थ—

पुष्यः	२. पुष्य	अथ	५. तदनन्तर
हिरण्यनाभस्य	१. हिरण्यनाभ के पुत्र	अग्निवर्णः	७. अग्निवर्ण (उनसे)
ध्रुवसन्धिः	४. ध्रुवसन्धि	शीघ्रः	८. शीघ्र
ततः	३. उनसे	तस्य	९. उनका
अभवत्	१२. हुये ।	मरुः	११. मरु
सुदर्शनः ।	६. सुदर्शन (उनसे)	सुतः ॥	१०. पुत्र

श्लोकार्थ—हिरण्यनाभ के पुत्र पुष्य, उनसे ध्रुवसन्धि, तदनन्तर सुदर्शन, उनसे अग्निवर्ण, उनसे शीघ्र और उनका पुत्र मरु हुआ ॥

षष्ठ श्लोकः

योऽसावास्ते योगसिद्धः कलापग्राममाश्रितः ।
कलेरन्ते सूर्यवंशं नष्टं भावयिता पुनः ॥६॥

पदच्छेद— यः असौ आस्ते योगसिद्धः कलापग्रामम् आश्रितः ।
कलेः अन्ते सूर्य वंशम् नष्टम् भावयिता पुनः ॥

शब्दार्थ—

यः	१. जो (मरु)	कलेः	९. कलियुग के
असौ	८. वे	अन्ते	१०. अन्त में
आस्ते	७. है	सूर्य	११. सूर्य
योग	२. योग की	वंशम्	१२. वंश के
सिद्धः	३. साधना से युक्त होकर	नष्टम्	१३. नष्ट हो जाने पर
कलाप	४. कलाप	भावयिता	१५. चलायेंगे
ग्रामम्	५. ग्राम में	पुनः ।	१४. फिर से उसे
आश्रितः ॥	६. विद्यमान		

श्लोकार्थ—जो मरु योग की साधना से युक्त होकर कलाप ग्राम में विद्यमान है । वे कलियुग के अन्त में सूर्य वंश के नष्ट हो जाने पर फिर से उसे चलायेंगे ॥

सप्तमः श्लोकः

तस्मात् प्रसुश्रुतस्तस्य सन्धिस्तस्याप्यमर्षणः ।
महस्वांस्तत्सुतस्तस्माद् विश्वसाह्वोऽन्वजायत ॥७॥

पदच्छेद— तस्मात् प्रसुश्रुतः तस्य सन्धिः तस्य अपि अमर्षणः ।
महस्वान् तत सुतः तस्मात् विश्वसाह्वः अन्वजायत ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१. उनसे	**महस्वान्**	१०. महस्वान्
प्रसुश्रुतः	२. प्रसुश्रुत	**तत्**	८. उनके
तस्य	३. उनके	**सुतः**	९. पुत्र
सन्धिः	४. सन्धि	**तस्मात्**	११. उनसे
तस्य	५. उनके	**विश्वसाह्वः**	१२. विश्वसाह्व
अपि	६. भी	**अन्वजायत ।**	१३. उत्पन्न हुए
अमर्षणः ॥	७. अमर्षण		

श्लोकार्थ—उनसे प्रसुश्रुत, उनके सन्धि, उनके भी अमर्षण, उनके पुत्र महस्वान् और उनसे विश्वसाह्व उत्पन्न हुए ॥

अष्टमः श्लोकः

ततः प्रसेनजित् तस्मात् तक्षको भविता पुनः ।
ततो बृहद्बलो यस्तु पित्रा ते समरे हतः ॥८॥

पदच्छेद— ततः प्रसेनजित् तस्मात् तक्षकः भविता पुनः ।
ततः बृहद्बलः यः तु पित्रा ते समरे हतः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. उनके	**ततः**	७. उनसे
प्रसेनजित्	२. प्रसेनजित्	**बृहद्बलः**	८. बृहद्बल
तस्मात्	३. उनसे	**यः तुः**	१०. जिसे
तक्षकः	४. तक्षक	**पित्रा**	९. पिता ने
भविता	५. हुए	**ते**	११. तुम्हारे
पुनः ।	६. फिर	**समरे**	१२. युद्ध में
		हतः ॥	१३. मार दिया था

श्लोकार्थ—उनके प्रसेनजित्, उनसे तक्षक हुए । फिर उनसे बृहद्बल, जिन्हें तुम्हारे पिता ने युद्ध में मार दिया था ॥

नवमः श्लोकः

एते हीक्ष्वाकुभूपाला अतीताः शृण्वनागतान् ।
बृहद्बलस्य भविता पुत्रो नाम बृहद्रणः ॥९॥

पदच्छेद— एते हि इक्ष्वाकु भूपाला अतीताः शृणु अनागतान् ।
बृहद्बलस्य भविता पुत्रः नाम बृहद्रणः ॥

शब्दार्थ—

एते	१.	ये	अनागतान्	६.	आने वाले के विषय में
हि	२.	ही	बृहद्बलस्य	८.	बृहद्बल का
इक्ष्वाकु	३.	इक्ष्वाकुवंश के	भविता	१२.	होगा
भूपालाः	४.	राजा	पुत्रः	९.	पुत्र
अतीताः	५.	हो चुके हैं (अब)	नाम	११.	नाम का
शृणु ।	७.	सुनो	बृहद्रणः	१०	बृहद्रण

श्लोकार्थ—ये ही इक्ष्वाकु वंश के राजा हो चुके हैं । अब आने वालों के विषय में सुनो । बृहद्बल का पुत्र बृहद्रण नाम का होगा ॥

दशमः श्लोकः

उरुक्रियस्ततस्तस्य वत्सवृद्धो भविष्यति ।
प्रतिव्योमस्ततो भानुर्दिवाको वाहिनीपतिः ॥१०॥

पदच्छेद— उरुक्रियः ततः तस्य वत्स वृद्धो भविष्यति ।
प्रतिव्योमः ततः भानुः दिवाकः वाहिनी पतिः ॥

शब्दार्थ—

उरुक्रियः	२.	उरुक्रिय	प्रतिव्योमः	६.	प्रतिव्योम (उनसे)
ततः	१.	उनके	ततः	५.	उनसे
तस्य	३	उनके	भानुः	७.	भानुः (उसका पुत्र)
वत्स वृद्धो	४.	वत्सवृद्ध	दिवाकः	९.	दिवाक
भविष्यति ।	१०.	होगा	वाहिनी पतिः ।	८.	सेनापति

श्लोकार्थ—उनके उरुक्रिय, उनके वत्सवृद्ध, उनसे प्रतिव्योम, उनसे भानु, उनके पुत्र सेनापति दिवाक होंगे ॥

एकादशः श्लोकः

सहदेवस्ततो वीरो बृहदश्वोऽथ भानुमान् ।

प्रतीकाश्वो भानुमतः सुप्रतीकोऽथ तत्सुतः ॥११॥

पदच्छेद— सहदेवः ततः वीरः बृहदश्वः अथ भानुमान् ।
प्रतीकाश्वः भानुमतः सुप्रतीकः अथ तत् सुतः ॥

शब्दार्थ—

सहदेवः	३. सहदेव	प्रतीकाश्वः	८. प्रतीकाश्व
ततः	१. उसका	भानुमतः	७. भानुमान् का पुत्र
वीरः	२. वीर	सुप्रतीकः	१२. सुप्रतीक (होगा)
बृहदश्वः	५. बृहदश्व (उससे)	अथ	९. और
अथ	४. तथा उससे	तत्	१०. उसका
भानुमान् ।	६. भानुमान्	सुतः ॥	११. पुत्र

श्लोकार्थ— उसका वीर सहदेव तथा उससे बृहदश्व, उससे भानुमान्, भानुमान् का पुत्र प्रतीकाश्व और उसका पुत्र सुप्रतीक होगा ॥

द्वादशः श्लोकः

भविता मरुदेवोऽथ सुनक्षत्रोऽथ पुष्करः ।

तस्यान्तरिक्षस्तत्पुत्रः सुतपास्तदमित्रजित् ॥१२॥

पदच्छेद— भविता मरुदेवः अथ सुनक्षत्रः अथ पुष्करः ।
तस्य अन्तरिक्षः तत्पुत्रः सुतपाः तत् अमित्रजित् ॥

शब्दार्थ—

भविता	१२. होगा	तस्य	६. उसका
मरुदेवः	२ मरुदेव	अन्तरिक्षः	७. अन्तरिक्ष
अथ	१. उससे	तत्सुतः	८. उसका पुत्र
सुनक्षत्रः	४. सुनक्षत्र	सुतपाः	९. सुतपा और
अथ	३. उससे	तत्	१०. उसका पुत्र
पुष्करः ।	५. पुष्कर	अमित्रजित् ॥	११. अमित्रजित्

श्लोकार्थ— उससे मरुदेव, उससे सुनक्षत्र, उससे पुष्कर, उसका अन्तरिक्ष, उसका पुत्र सुतपा और उसका अमित्रजित् होगा ॥

त्रयोदशः श्लोकः

बृहद्राजस्तु तस्यापि बर्हिस्तस्मात् कृतञ्जयः ।
रणञ्जयस्तस्य सुतः सञ्जयो भविता ततः ॥१३॥

पदच्छेद— बृहद्राजस्तु तस्य अपि बर्हिः तस्मात् कृतञ्जयः ।
रणञ्जयः तस्य सुतः सञ्जयः भविता ततः ॥

शब्दार्थ—

बृहद्राजस्तु	२. बृहद्राजपुत्र(उसका पुत्र)	रणञ्जयः	८. रणञ्जय (और)
तस्य	१. उसका	तस्य	६. उसका
बर्हिः	३. बर्हि	सुतः	७. पुत्र
तस्मात्	४. उसका पुत्र	सञ्जयः	१०. संजय
कृतञ्जयः ।	५. कृतञ्जय	भविता	११ होगा
		ततः ॥	९. उसका

श्लोकार्थ—उसका पुत्र बृहद्राज, उसका पुत्र बर्हि, उसका पुत्र कृतञ्जय, उसका पुत्र रणञ्जय और उसका संजय होगा ॥

चतुर्दशः श्लोकः

तस्माच्छाक्योऽथ शुद्धोदो लाङ्गलस्तत्सुतः स्मृतः ।
ततः प्रसेनजित् तस्मात् क्षुद्रकौ भविता ततः ॥१४॥

पदच्छेद— तस्मात् शाक्यः अथ शुद्धोदः लाङ्गलः तत् सुतः स्मृतः ।
ततः प्रसेनजित् तस्मात् क्षुद्रकः भविता ततः ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१. उसके	स्मृतः	८. कहलायेगा
शाक्यः	२. शाक्य	ततः	९. उससे
अथ	३. उससे	प्रसेनजित्	१०. प्रसेनजित्
शुद्धोदः	४. शुद्धोद	तस्मात्	१२. उससे
लाङ्गलः	७. लाङ्गल	क्षुद्रकः	१३. क्षुद्रक
तत्	५. उसका	भविता	१४. होगा
सुतः ।	६. पुत्र	ततः ॥	१२. उसका पुत्र

श्लोकार्थ—उसके शाक्य, उससे शुद्धोद, उसका पुत्र लाङ्गल कहलायेगा । उससे प्रसेनजित, उसका पुत्र क्षुद्रक होगा ।

पञ्चदशः श्लोकः

रणको भविता तस्मात् सुरथस्तनयस्ततः ।
सुमित्रो नाम निष्ठान्त एते बार्हद्बलान्वयाः ॥१५॥

पदच्छेद— रणकः भविता तस्मात् सुरथः तनयः ततः ।
सुमित्रः नाम निठान्त एते बार्हद्बल अन्वयाः ॥

शब्दार्थ—

रणकः	२. रणक	सुमित्रः	८. सुमित्र
भविता	३. होगा	नाम	९. नामक पुत्र होगा
तस्मात्	१. उनसे	निष्ठान्त	७. वंश के अन्त में
सुरथः	५. सुरथ	एते	१०. ये सब
तनयः	६. पुत्र होगा	बार्हद्बल	११. बृहद्बल के
ततः ।	४. उससे	अन्वयाः ॥	१२. वंशधर होंगे

श्लोकार्थ—उससे रणक होगा । उससे सुरथ पुत्र होगा । वंश के अन्त में सुमित्र नामक पुत्र होगा । ये सब बृहद्बल के वंशधर होंगे ॥

षोडशः श्लोकः

इक्ष्वाकूणामयं वंशः सुमित्रान्तो भविष्यति ।
यतस्तं प्राप्य राजानं संस्थां प्राप्स्यति वै कलौ ॥१६॥

पदच्छेद— इक्ष्वाकूणाम् अयम् वंशः सुमित्र अन्तः भविष्यति ।
यतः तम् प्राप्य राजानम् संस्थाम् प्राप्स्यति वै कलौ ॥

शब्दार्थ—

इक्ष्वाकूणाम्	१. इक्ष्वाकु का	तम्	८. उसे
अयम्	२. यह	प्राप्य	१०. पाकर (यह वंश)
वंशः	३. वंश	राजानम्	९. राजा के रूप में
सुमित्र	४. सुमित्र	संस्थाम्	१३. समाप्ति को
अन्तः	५. तक ही	प्राप्स्यति	१४. प्राप्त हो जायेगा
भविष्यति।	६. होगा	वै	११. निश्चित रूप से
यतः	७. क्योंकि	कलौ ॥	१२. कलियुग में

श्लोकार्थ—इक्ष्वाकु का यह वंश सुमित्र तक ही होगा । क्योंकि उसे राजा के रूप में पाकर यह वंश निश्चित रूप से कलियुग में समाप्ति को प्राप्त हो जायेगा ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे
इक्ष्वाकुवंशवर्णनं नाम द्वादशः अध्याय ॥१२॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

त्रयोदशः अध्यायः

प्रथम: श्लोकः

श्रीशुक उवाच— निमिरिक्ष्वाकुतनयो वसिष्ठमवृतर्त्विजम् ।
आरभ्य सत्रं सोऽप्याह शक्रेण प्राग्वृतोऽस्मि भोः ॥१॥

पदच्छेद— निमिः इक्ष्वाकु तनयः वसिष्ठम् अवृत ऋत्विजम् ।
आरभ्य सत्रम् सः अपि आह शक्रेण प्राक्वृतः अस्मि भोः ॥

शब्दार्थ—

निमिः	३.	निमि (थे उन्होंने)	सत्रम्	४.	यज्ञ
इक्ष्वाकु	१.	इक्ष्वाकु के	सः	९.	उन वसिष्ठ ने
तनयः	२.	पुत्र	अपि	१०.	भी
वसिष्ठम्	६.	वसिष्ठ को	आह	११.	कहा
अवृत	८.	वरण किया	शक्रेण	१३.	इन्द्र
ऋत्विजम्	७.	ऋत्विज के रूप में	प्राक्वृतः	१५.	पहले वरण कर चुके थे
आरभ्य ।	५.	आरम्भ करके	अस्मि	१४.	मुझे
			भोः ॥	१२.	हे राजन्

श्लोकार्थ—इक्ष्वाकु के पुत्र निमि थे । उन्होंने यज्ञ आरम्भ करके वसिष्ठ को ऋत्विज के रूप में वरण किया । उन वसिष्ठ ने भी कहा हे राजन् ! इन्द्र मुझे पहले वरण कर चुके है ॥

द्वितीयः श्लोकः

तं निर्वर्त्यागमिष्यामि तावन्मां प्रतिपालय ।
तूष्णीमासीद् गृहपतिः सोऽपीन्द्रस्याकरोन्मखम् ॥२॥

पदच्छेद— तम् निर्वर्त्य अगमिष्यामि तावत् माम् प्रतिपालय ।
तूष्णीम् आसीत् गृहपतिः अपि इन्द्रस्य अकरोत् मखम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	उनका	आसीत्	८.	हो गये
निर्वर्त्य	२.	यज्ञ कराकर	गृहपतिः	६.	वे राजा निमि
अगमिष्यामि	३.	आऊँगा	सः	९.	वे वसिष्ठ
तावत् माम्	४.	तब-तक मेरी	अपिइन्द्रस्य	१०.	भी इन्द्र का
प्रतिपालय	५.	प्रतीक्षा करना	अकरोत्	१२.	कराने चले गये
तूष्णीम् ।	७.	चुप	मखम् ॥	११.	यज्ञ

श्लोकार्थ—उनका यज्ञ कराकर आऊँगा, तब-तक मेरी प्रतीक्षा करना । यह सुन कर वे राजा निमि चुप हो गये । वे वसिष्ठ भी इन्द्र का यज्ञ कराने चले गये ॥

तृतीय श्लोकः

निमिश्चलमिदं विद्वान् सत्रमारभतात्मवान् ।
ऋत्विग्भिरपरैस्तावन्नागमद् यावता गुरुः ॥३॥

पदच्छेद— निमिः चलम् इदम् विद्वान् सत्रम् आरभत आत्मवान् ।
ऋत्विग्भिः अपरैः तावत् न आगमत् यावता गुरुः ॥

शब्दार्थ—

निमिः	३.	निमि ने (यह सोचकर कि)	ऋत्विग्भिः	७.	ऋत्विजों के द्वारा
चलम्	५.	क्षण भंगुर है	अपरैः	६.	दूसरे
इदम्	४.	यह (जीवन)	तावत्	११.	तब-तक के लिए नहीं
विद्वान्	२.	विद्वान् राजा	न आगमत्	१०.	नहीं लौट आये
सत्रम्	१२.	यज्ञ	यावता	८.	जब तक
आरभत	१३.	आरम्भ कर दिया	गुरुः ।	९.	गुरु वसिष्ठ
आत्मवान् ॥	१.	विचारवान्			

श्लोकार्थ—विचारवान् विद्वान् राजा निमि ने यह सोचकर कि यह जीवन क्षण भंगुर है दूसरे ऋत्विजों के द्वारा जब-तक गुरु वसिष्ठ नहीं लौट आये तब-तक के लिए यज्ञ आरम्भ कर दिया ॥

चतुर्थः श्लोकः

शिष्यव्यतिक्रमं वीक्ष्य निर्वर्त्य गुरुरागतः ।
अशपत् पततादु देहो निमेः पण्डितमानिनः ॥४॥

पदच्छेद— शिष्य व्यतिक्रमम् वीक्ष्य निर्वर्त्य गुरुः आगतः ।
अशपत् पततात् देहः निमेः पण्डित मानिनः ॥

शब्दार्थ—

शिष्य	५.	शिष्य ने	अशपत्	७.	शाप दे दिया कि
व्यतिक्रमम्	६.	मेरी बात नहीं मानी (इसलिए)	पततात्	१२.	गिर जाये
वीक्ष्य	४.	देखा कि	देहः	११.	शरीर
निर्वर्त्य	१.	लौटकर	निमेः	१०.	निमि का
गुरुः	३.	गुरु वसिष्ठ ने	पण्डित	८.	अपने को पण्डित
आगतः ।	२.	आये हुए	मानिनः ॥	९.	मानने वाले

श्लोकार्थ—लौटकर आये हुए गुरु वसिष्ठ ने देखा कि शिष्य ने मेरी बात नहीं मानी, इसलिए शाप दे दिया कि अपने को पण्डित मानने वाले निमि का शरीर गिर जाये ॥

पञ्चम श्लोकः

निमिः प्रतिददौ शापं गुरवेऽधर्मवर्तिने ।
तवापि पतताद् देहो लोभाद् धर्ममजानतः ॥५॥

पदच्छेद— निमिः प्रतिददौ शापम् गुरवे अधर्म वर्तिने ।
तव अपि पतताद् देहः लोभात् धर्मम् अजानतः ॥

शब्दार्थ—

निमिः	१.	निमि ने भी	तव	१०.	आपका
प्रतिददौ	५.	बदले में	अपि	११.	भी
शापम्	६.	शाप दे दिया (कि)	पतताद्	१३.	गिर पड़े
गुरवे	४.	गुरु वसिष्ठ को	देहः	१२.	शरीर
अधर्म	२.	अधर्म	लोभात्	७.	लोभ के कारण
वर्तिने	३.	करने वाले	धर्मम् ।	८.	धर्म को
			अजानतः ॥	९.	न जानते हुए

श्लोकार्थ—निमि ने भी अधर्म करने वाले गुरु वशिष्ठ को बदले में शाप दे दिया कि लोभ के कारण धर्म को न जानते हुये आपका भी शरीर गिर पड़े ॥

षष्ठः श्लोकः

इत्युत्ससर्ज स्वं देहं निमिरध्यात्मकोविदः ।
मित्रावरुणयोर्जज्ञे उर्वश्यां प्रपितामहः ॥६॥

शब्दार्थ—

पदच्छेद— इति उत्ससर्ज स्वम् देहम् निमिः अध्यात्म कोविदः ।
मित्रावरुणयोः जज्ञे उर्वश्याम् प्रपितामहः ॥

इति	१.	यह कह कर	कोविदः	३.	निपुण
उत्ससर्ज	७.	त्याग दिया (तथा)	मित्रावरुणयोः	८.	मित्रावरुण से
स्वम्	५.	अपने	जज्ञे	११.	उत्पन्न हुए
देहम्	६.	शरीर को	उर्वश्याम्	९.	उर्वशी में
निमिः	४.	निमि ने	प्रपितामहः ।	१०.	वसिष्ठ जी
अध्यात्म ॥	२.	आत्मविद्या में			

श्लोकार्थ—यह कह कर आत्म विद्या में निपुण निमि ने अपने शरीर को त्याग दिया । तथा मित्रावरुण से उर्वशी में वसिष्ठ जी उत्पन्न हुये ॥

सप्तमः श्लोकः

गन्धवस्तुषु तद्देहं निधाय मुनिसत्तमाः ।
समाप्ते सत्रयागेऽथ देवानूचुः समागतान् ॥७॥

पदच्छेद— गन्ध वस्तुषु तत् देहम् निधाय मुनि सत्तमाः ।
समाप्ते सत्रयागे अथ देवान् ऊचुः समागतान् ॥

शब्दार्थ—

गन्ध	३. सुगन्धित	समाप्ते	१०. समाप्ति होने पर
वस्तुषु	४. वस्तुओं में	सत्रयागे	९. यज्ञ की
तत्	५. उन निमि का	अथ	८. अनन्तर
देहम्	६. शरीर	देवान्	१२. देवताओं से
निधाय	७. रखकर	ऊचुः	१३. कहा
मुनि	२. मुनियों ने	समागतान् ।	११. आये हुए
सत्तमाः ॥	१. श्रेष्ठ		

श्लोकार्थ—श्रेष्ठ मुनियों ने सुगन्धित वस्तुओं में उन निमि का शरीर रखकर अनन्तर यज्ञ की समाप्ति होने पर आये हुए देवताओं से कहा ॥

अष्टमः श्लोक

राज्ञो जीवतु देहोऽयं प्रसन्नाः प्रभवो यदि ।
तथेत्युक्ते निमिः प्राह मा भून्मे देहबन्धनम् ॥८॥

पदच्छेद— राज्ञः जीवतु देहः अयम् प्रसन्नाः प्रभवः यदि ।
तथा इति उक्ते निमिः प्राह मा भूत् मे देह बन्धनम् ॥

शब्दार्थ—

राज्ञः	५. राजा का	तथा	८. अच्छा ऐसा ही है
जीवतु	७. जीवित हो जाये	इति	९. यह
देहः	६. शरीर	उक्ते	१०. कहने पर
अयम्	४. यह	निमिः	११. निमिने
प्रसन्नाः	३. प्रसन्न हैं तो	प्राह	१२. कहा
प्रभवः	२. समर्थ आप लोग	मा	१५. न
यदि ।	१. यदि	भूत् मे	१६. हो मुझे
		देहबन्धनम् ॥	१४. शरीर का बन्धन

श्लोकार्थ—यदि समर्थ आप लोग प्रसन्न हैं तो यह राजा का शरीर जीवित हो जाये। अच्छा, ऐसा ही हो, यह कहने पर निमि ने कहा—मुझे शरीर का बन्धन न हो ॥

नवमः श्लोकः

यस्य योगं न वाञ्छन्ति वियोगभयकातराः ।
भजन्ति चरणाम्भोजं मुनयो हरिमेधसः ॥६॥

पदच्छेद— यस्य योगम् न वाञ्छन्ति वियोग भय कातराः ।
भजन्ति चरण अम्भोजम् मुनयः हरि मेधसः ॥

शब्दार्थः—

यस्य	७.	उस शरीर का	भजन्ति	१३.	भजन करते रहते है
योगम्	८.	सम्बन्ध	चरण	११.	चरण
न	६.	नहीं	अम्भोजम्	१२.	कमल का
वाञ्छन्ति	१०.	चाहते हैं और वे भगवान् के	मुनयः	३.	मुनिजन
वियोग	४.	वियोग के	हरि	१.	भगवान् में
भय	५.	भय से	मेधसः	२.	बुद्धि को लगाने वाले
कातराः	६.	अधीर होकर			

श्लोकार्थ— भगवान् में बुद्धि को लगाने वाले मुनि जन वियोग के भय से अधीर होकर उस शरीर का सम्बन्ध नहीं चाहते हैं और वे भगवान् के चरण कमल का भजन करते रहते हैं ॥

दशमः श्लोकः

देहं नावरुरुत्सेऽहं दुःखशोकभयावहम् ।
सर्वत्रास्य यतो मृत्युर्मत्स्यानामुदके यथा ॥१०॥

पदच्छेद— देहम् न अवरुरुत्से अहम् दुःख शोक भयावहम् ।
सर्वत्र अस्य यतः मृत्युः मत्स्यानाम् उदके यथा ॥

शब्दार्थ—

देहम्	४.	शरीर को	सर्वत्र	१०.	सब जगह
न	६.	नहीं	अस्य	९	इस शरीर के लिए
अवरुरुत्से	७.	धारण करना चाहता	यतः	८.	जिस लिए
अहम्	५.	मैं	मृत्युः	११.	मृत्यु का अवसर है
दुःख	१.	दुख	मत्स्यानाम्	१४.	मछलियों के लिए है
शोक	२.	शोक और	उदके	१३.	जल में
भयावहम् ।	३.	भय को देने वाले	यथा ॥	१२.	जैसे

श्लोकार्थ—दुःख, शोक और भय को देने वाले शरीर को मैं नहीं धारण करना चाहता हूँ । जिस लिए इस शरीर के लिए सब जगह मृत्यु का अवसर है, जैसे जल में मछलियों के लिए है ॥

एकादशः श्लोकः

देवा ऊचुः—विदेह उष्यतां कामं लोचनेषु शरीरिणाम् ।
उन्मेषणनिमेषाभ्यां लक्षितोऽध्यात्मसंस्थितः ॥११॥

पदच्छेद— विदेह उष्यताम् कामम् लोचनेषु शरीरिणाम् ।
उन्मेषण निमेषाभ्याम् लक्षितः अध्यात्म संस्थितः ॥

शब्दार्थ—

विदेह	१. हे विदेह	उन्मेषण	६. पलक उठने और
उष्यताम्	५. निवास करें	निमेषाभ्याम्	७. गिरने से
कामम्	२. अपनी इच्छानुसार	लक्षितः	१०. अस्तित्वका पता चलेगा
लोचनेषु	४. नेत्रों में	अध्यात्म	८. आत्मा का
शरीरिणाम् ।	३. प्राणियों के	संस्थितः ॥	९. चिन्तन करते हुए आपके

श्लोकार्थ— हे विदेह ! अपनी इच्छानुसार प्राणियों के नेत्रों में निवास करें । पलक उठने और गिरने से आत्मा का चिन्तन करते हुए आपके अस्तित्व का पता चलेगा ॥

द्वादशः श्लोकः

अराजकभयं नृणां मन्यमाना महर्षयः ।
देहं ममन्थुः स्म निमेः कुमारः समजायत ॥१२॥

पदच्छेद— अराजक भयम् नृणाम् मन्यमानाः महर्षयः ।
देहम् ममन्थुः स्म निमेः कुमारः समजायत ॥

शब्दार्थ—

अराजक	२. अराजकता का	देहम्	७. शरीर का
भयम्	३. भय	ममन्थुः	८. मन्थन किया
नृणाम्	१. मनुष्यों के लिए	स्म	९. जिससे
मन्यमानाः	४. मानते हुए	निमेः	६. निमि के
महर्षयः	५. महर्षियों ने	कुमारः ।	१०. एक कुमार
		समजायत ॥	११. उत्पन्न हुआ

श्लोकार्थ—मनुष्यों के लिए अराजकता का भय मानते हुए महर्षियों ने निमि के शरीर का मन्थन किया, जिससे एक कुमार उत्पन्न हुआ ॥

त्रयोदशः श्लोकः

जन्मना जनकः सोऽभूद् वैदेहस्तु विदेहजः ।
मिथिलो मथनाज्जातो मिथिला येन निर्मिता ॥१३॥

पदच्छेद— जन्मना जनकः सः अभूत् वैदेहः विदेहजः ।
मिथिलः मथनात् जातः मिथिला येन निर्मिता ॥

शब्दार्थ—

जन्मना	१. जन्म लेने के कारण	मिथिलः	९. मिथिल हुए
जनकः	३. जनक	मथनात्	७. मथने से
सः	२. वे	जातः	८. उत्पन्न होने के कारण
अभूत्	४. हुए	मिथिला	११. मिथिला नगरी
वैदेहः	६. वैदेह नाम पड़ा	येन	१०. जिन्होंने
विदेहजः ।	५. विदेह से उत्पन्न होने से	निर्मिता ।	१२. बसाई

श्लोकार्थ—जन्म लेने के कारण वे जनक हुए । विदेह से उत्पन्न होने से वैदेह नाम पड़ा । मथने से उत्पन्न होने के कारण मिथिल हुए । जिन्होंने मिथिला नगरी बसाई ।

चतुर्दशः श्लोकः

तस्मादुदावसुस्तस्य पुत्रोऽभून्नन्दिवर्धनः ।
ततः सुकेतुस्तस्यापि देवरातो महीपते ॥१४॥

पदच्छेद— तस्मात् उदावसुः तस्य पुत्रः अभूत् नन्दि वर्धनः ।
ततः सुकेतुः तस्य अपि देवरातः महीपते ॥

शब्दार्थ--

तस्मात्	२. उसका पुत्र	ततः	७. उनका
उदावसुः	३. उदावसु हुआ	सुकेतुः	८. सुकेतु और
तस्य	४. उसका	तस्य	९ उसका
पुत्रः	५. पुत्र	अपि	१२ भी
अभूत्	१२. हुआ	देवरातः	११. देवरात
नन्दिवर्धनः ।	६. नन्दिवर्धन	महीपते ॥	१. हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उसका पुत्र उदावसु हुआ । उसका नन्दिवर्धन, उसका सुकेतु और उसका भी देवरात हुआ ॥

पञ्चदशः श्लोकः

तस्माद् बृहद्रथस्तस्य महावीर्यः सुधृत्पिता ।
सुधृतेर्धृष्टकेतुर्वै हर्यश्वोऽथ मरुस्ततः ॥१५॥

पदच्छेद— तस्मात् बृहद्रथः तस्य महावीर्यः सुधृत्पिता ।
सुधृतेः धृष्टकेतुः वै हर्यश्वः अथ मरुः ततः ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१. उनसे	धृष्टकेतुः	८. धृष्टकेतु उसका
बृहद्रथः	२. बृहद्रथ	वै	७. निश्चित रूप से
तस्य	३. उनसे	हर्यश्वः	९. हर्यश्व
महावीर्यः	४. महावीर्य	अथ	१०. अनन्तर
सुधृत्पिता	५. सुधृत् का पिता था	मरुः	१२. मरु हुए
सुधृतेः ।	६. सुधृति के	ततः ॥	११. उनसे

श्लोकार्थ—उससे बृहद्रथ, उससे महावीर्य जो सुधृत् का पिता था । सुधृति के निश्चित रूप से धृष्टकेतु, उसका हर्यश्व, अनन्तर मरु हुए ॥

षोडशः श्लोकः

मरोः प्रतीपकस्तस्माज्जातः कृतिरथो यतः ।
देवमीढस्तस्य सुतो विश्रुतोऽथ महाधृतिः ॥१६॥

पदच्छेद— मरोः प्रतीपकः तस्मात् जातः कृतिरथः यतः ।
देवमीढः तस्य सुतः विश्रुतः अथ महाधृतिः ॥

शब्दार्थ—

मरोः	१. मरु से	देवमीढः	६. देवमीढ
प्रतीपकः	२. प्रतीपक	तस्य	७. उनके
तस्मात्	३ उनसे	सुतः	८. पुत्र
जातः	१२. उत्पन्न हुए	विश्रुतः	९. विश्रुत
कृतिरथः	४. कृतिरथ	अथ	१०. अनन्तर
यतः ।	५. जिनसे	महाधृतिः ॥	११. महाधृति

श्लोकार्थ—मरु से प्रतीपक, उनसे कृतिरथ, जिनसे देवमीढ, उनके पुत्र विश्रुत; अनन्तर महाधृति उत्पन्न हुए ॥

सप्तदशः श्लोकः

कृतिरातस्ततस्तस्मान्महारोमाथ तत्सुतः।
स्वर्णरोमा सुतस्तस्य ह्रस्वरोमा व्यजायत ॥१७॥

पदच्छेद— कृतिरातः ततः तस्मात् महारोमाः अथ तत् सुतः।
स्वर्णरोमा सुतः तस्य ह्रस्वरोमा व्यजायत ॥

शब्दार्थ—

कृतिरातः	२. कृतिरात	सुतः	७. पुत्र
ततः	१. उनसे	स्वर्णरोमा	८. स्वर्णरोमा
तस्मात्	३. उनसे	सुतः	१०. पुत्र
महारोमा	४. महारोमा	तस्य	९. उनके
अथ	५. अनन्तर	ह्रस्वरोमा	११. ह्रस्वरोमा
तत्।	६ उनके	व्यजायत॥	१२. उत्पन्न हुए

श्लोकार्थ—उनसे कृतिरात, उनसे महारोमा; अनन्तर उनके पुत्र स्वर्णरोमा, उनके पुत्र ह्रस्वरोमा उत्पन्न हुए ॥

अष्टादशः श्लोकः

ततः सीरध्वजो जज्ञे यज्ञार्थं कर्षतो महीम्।
सीता सीराग्रतो जाता तस्मात् सीरध्वजः स्मृतः ॥१८॥

पदच्छेद— ततः सीर ध्वजः जज्ञे यज्ञार्थं कर्षतः महीम्।
सीता सीर अग्रतः जाता तस्मात् सीर ध्वजः स्मृतः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. उनसे	सीता	९. सीता
सीरध्वजः	२. सीरध्वज	सीर	७. हल के
जज्ञे	३. उत्पन्न हुए	अग्रतः	८. अग्रभाग से (फाल से)
यज्ञार्थं	४. उनके द्वारा यज्ञ के लिए	जाता	१०. उत्पन्न हुई
कर्षतः	६. जोतते समय	तस्मात्	११. इसलिए
महीम्।	५. पृथ्वी को	सीरध्वजः	१२. वे सीरध्वज
		स्मृतः॥	१३. कहे गये

श्लोकार्थ—उनसे सीरध्वज उत्पन्न हुए। (उनके द्वारा) यज्ञ के लिए पृथ्वी को जोतते समय हल के अग्रभाग (फाल) से सीता उत्पन्न हुई। इसलिए सीरध्वज कहे गये ॥

एकोनविंशः श्लोकः

कुशध्वजस्तस्य पुत्रस्ततो धर्मध्वजो नृपः ।
धर्मध्वजस्य द्वौ पुत्रौ कृतध्वजमितध्वजौ ॥१९॥

पदच्छेद— कुशध्वजः तस्य पुत्रः ततः धर्मध्वजः नृपः ।
धर्मध्वजस्य द्वौ पुत्रौ कृतध्वज मितध्वजौ ॥

शब्दार्थ—

कुशध्वजः	३	कुशध्वज	धर्मध्वजस्य	७.	धर्मध्वज के
तस्य	१.	उनके	द्वौ	८.	दो
पुत्रः	२	पुत्र	पुत्रौ	९.	पुत्र
ततः	४.	उनसे	कृतध्वज	१०.	कृतध्वज और
धर्मध्वजः	५.	धर्मध्वज नाम के	मितध्वजौ ।	११.	मितध्वज हुए
नृपः ॥	६.	राजा हुये			

श्लोकार्थ— उनके पुत्र कुशध्वज, उनसे धर्मध्वज नाम के राजा हुये । धर्मध्वज के दो पुत्र कृतध्वज और मितध्वज हुये ।

विंशः श्लोकः

कृतध्वजात् केशिध्वजः खाण्डिक्यस्तु मितध्वजात् ।
कृतध्वजसुतो राजन्नात्मविद्याविशारदः ॥२०॥

पदच्छेद— कृतध्वजात् केशिध्वजः खाण्डिक्यः तु मितध्वजात् ।
कृतध्वज सुतः राजन् आत्मविद्या विशारदः ॥

शब्दार्थ—

कृतध्वजात्	१	कृतध्वज से	कृतध्वज	६.	कृतध्वज के
केशिध्वजः	२.	केशिध्वज और	सुतः	७.	पुत्र
खाण्डिक्यः तु	४.	खाण्डिक्य हुये	राजन्	४.	हे राजन् !
मितध्वजात् ।	३.	मितध्वज से	आत्मविद्या	८.	आत्मविद्या
			विशारदः ॥	९.	निपुण हुये

श्लोकार्थ—कृतध्वज से केशिध्वज और मितध्वज से खाण्डिक्य हुये । हे राजन् ! कृतध्वज के पुत्र आत्मविद्या में निपुण हुये ।

एकविंशः श्लोकः

खाण्डिक्यः कर्मतत्त्वज्ञो भीतः केशिध्वजाद् द्रुतः ।
भानुमांस्तस्य पुत्रोऽभूच्छतद्युम्नस्तु तत्सुतः ॥२१॥

पदच्छेद— खाण्डिक्यः कर्म तत्त्वज्ञः भीतः केशिध्वजात् द्रुतः ।
भानुमान् तस्य पुत्रः अभूत, शतद्युम्नः तु तत्सुतः ॥

शब्दार्थ—

खाण्डिक्यः	१.	खाण्डिक्य	भानुमान्	८.	भानुमान्
कर्मतत्त्वज्ञः	२.	कर्मकाण्ड के विशेष जानकार थे	तस्य	६.	उनका
भीतः	४.	डर कर	पुत्रः	७.	पुत्र
केशिध्वजात्	३.	वे केशिध्वज से	अभूत्	११.	हुआ
द्रुतः ।	५.	भाग गये	शतद्युम्नः	१०.	शतद्युम्न
			तत्सुतः ॥	९.	और उनका पुत्र

श्लोकार्थ—खाण्डिक्य कर्मकाण्ड के विशेष जानकार थे । वे केशिध्वज से डर कर भाग गये । उनका पुत्र भानुमान् और उनका पुत्र शतद्युम्न हुआ ॥

द्वाविंशः श्लोकः

शुचिस्तत्तनयस्तस्मात् सनद्वाजस्ततोऽभवत् ।
ऊर्ध्वकेतुः सनद्वाजादजोऽथ पुरुजित्सुतः ॥२२॥

पदच्छेद— शुचिः तत् तनयः तस्मात् सनद्वाजः ततः अभवत् ।
ऊर्ध्वकेतुः सनद्वाजात् अजः अथ पुरुजित् सुतः ॥

शब्दार्थ—

शुचिः	३.	शुचि	ऊर्ध्वकेतुः	७.	ऊर्ध्वकेतु उनका
तत्	१.	उनका	सनद्वाजात्	६.	सनद्वाज से
तनयः	२.	पुत्र	अजः	९.	अज
तस्मात्	४.	उनका	अथ	१०.	अनन्तर उनका
सनद्वाजः	५.	सनद्वाज	पुरुजित्	१२.	पुरुजित् नाम का
ततः	८.	उन	सुतः ।	११.	पुत्र
अभवत् ॥	१३.	हुआ			

श्लोकार्थ—उनका पुत्र शुचि, उनका सनद्वाज, उन सनद्वाज से ऊर्ध्वकेतु, उनका अज, अनन्तर उनका पुत्र पुरुजित् नाम का हुआ ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

अरिष्टनेमिस्तस्यापि श्रुतायुस्तत्सुपार्श्वकः ।
ततश्चित्ररथो यस्य क्षेमधिर्मिथिलाधिपः ॥२३॥

पदच्छेद— अरिष्टनेमिः तस्य अपि श्रुतायुः तत् सुपार्श्वकः ।
ततः चित्ररथः यस्य क्षेमधिः मिथिला अधिपः ॥

शब्दार्थ—

अरिष्टनेमिः	३. अरिष्टनेमि	ततः	७. उनका
तस्य	१. उनका	चित्ररथः	८. चित्ररथ
अपि	२. भी	यस्य	९. जिनका
श्रुतायुः	५. श्रुतायु उनका	क्षेमधिः	१२. क्षेमधि हुआ
तत्	४. उनका	मिथिला	१०. मिथिला
सुपार्श्वकः ।	६. सुपार्श्वक	अधिपः ॥	११. पति

श्लोकार्थ--उनका भी अरिष्टनेमि, उनका श्रुतायु, उनका सुपार्श्वक, उनका चित्ररथ, उनका मिथिलापति क्षेमधि हुआ ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

तस्मात् समरथस्तस्य सुतः सत्यरथस्ततः ।
आसीदुपगुरुस्तस्मादुपगुप्तोऽग्निसंभवः ॥२४॥

पदच्छेद— तस्मात् समरथः तस्य सुतः सत्यरथः ततः ।
आसीत् उपगुरुः तस्मात् उपगुप्तः अग्नि सम्भवः ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१. क्षेमधि से	आसीत्	८. हुआ
समरथः	२. समरथ	उपगुरुः	७. उपगुरु
तस्य	३. उसका	तस्मात्	९. उसका
सुतः	४. पुत्र	उपगुप्तः	१०. उपगुप्त हुआ
सत्यरथः	५. सत्यरथ	अग्नि	११. जिसमें अग्नि का
ततः ।	६. उसका	सम्भवः ॥	१२. अंश था

श्लोकार्थ--क्षेमधि के समरथ, उसका पुत्र सत्यरथ, उसका उपगुरु, उसका उपगुप्त हुआ। जिसमें अग्नि का अंश था ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

वस्वनन्तोऽथ तत्पुत्रो युयुधो यत् सुभाषणः ।
श्रुतस्ततो जयस्तस्माद् विजयोऽस्मादृतः सुतः ॥२५॥

पदच्छेद— वस्वनन्तः अथ तत् पुत्रः युयुधः यत् सुभाषणः ।
श्रुतः ततः जयः तस्मात् विजयः अस्मात् ऋतः सुतः ॥

शब्दार्थ—

वस्वनन्तः	२.	वस्वनन्त हुआ	श्रुतः	९.	श्रुत
अथ	१.	अनन्तर	ततः	८.	उसका
तत्	३.	उसका	जयः	११.	जय (उसके)
पुत्रः	४.	पुत्र	तस्मात्	१०.	उसका
युयुधः	५.	युयुध	विजयः	१२.	विजय
यत्	६.	उसका	अस्मात् ऋतः	१३.	उसका ऋत नामक
सुभाषणः ।	७.	सुभाषण	सुतः ॥	१४.	पुत्र हुआ

श्लोकार्थ—अनन्तर वस्वनन्त हुआ । उसका पुत्र युयुध, उसका सुभाषण, उसका श्रुत, उसका जय, उसका विजय, उसका ऋत नामक पुत्र हुआ ॥

षड्विंशः श्लोकः

शुनकस्तत्सुतो जज्ञे वीतहव्यो धृतिस्ततः ।
बहुलाश्वो धृतेस्तस्य कृतिरस्य महावशी ॥२६॥

पदच्छेद— शुनकः तत् सुतः जज्ञे वीतहव्यः धृतिः ततः ।
बहुलाश्वः धृतेः तस्य कृतिः अस्य महावशी ॥

शब्दार्थ—

शुनकः	३.	शुनक	ततः	६.	उसका
तत्	१.	उसका	बहुलाश्वः	९.	बहुलाश्व
सुतः	२.	पुत्र	धृतेः	८.	धृति का
जज्ञे	४.	उत्पन्न हुआ उसका	तस्य	१०.	उसका
वीतहव्यः	५.	वीतहव्य	कृतिः अस्य	११.	कृति उसका
धृतिः ।	७.	धृति	महावशी ॥	१२.	महावशी पुत्र हुआ

श्लोकार्थ—उसका पुत्र शनक उत्पन्न हुआ । उसका वीतहव्य, उसका धृति, धृति का बहुलाश्व, उसका कृति और उसका महावशी पुत्र हुआ ॥

सप्तविंशः श्लोकः

एते वै मैथिला राजन्नात्मविद्याविशारदः ।
योगेश्वरप्रसादेन द्वन्द्वैर्मुक्ता गृहेष्वपि ॥२७॥

पदच्छेद— एते वै मैथिलाः राजन् आत्मविद्या विशारदाः ।
योगेश्वर प्रसादेन द्वन्द्वैः मुक्ताः गृहेषु अपि ॥

शब्दार्थ—

एते	३.	ये	योगेश्वर	७	योगेश्वर याज्ञवल्क्य
वै	२.	निश्चितरूप से	प्रसादेन	८.	कृपा से (ये राजा)
मैथिलाः	४.	मिथिला के राजा	द्वन्द्वैः	११.	सुख दुःखादि से
राजन्	१.	हे राजन्	मुक्ता	१२	मुक्त हो गये थे
आत्मविद्या	५.	आत्मविद्या में	गृहेषु	९.	घर में रहते हुए
विशारदाः ।	६	निपुण थे	अपि ॥	१०.	भी

श्लोकार्थ—हे राजन् ! निश्चित रूप से मिथिला के राजा आत्मविद्या में निपुण थे । योगेश्वर याज्ञवल्क्य की कृपा से ये राजा घर में रहते हुए भी सुख-दुःखादि से मुक्त हो गये थे ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे निमिवंशवर्णनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

चतुर्दशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अथातः श्रूयतां राजन् वंशः सोमस्य पावनः ।
यस्मिन्नैलादयो भूपाः कीर्त्यन्ते पुण्यकीर्तयः ॥१॥

पदच्छेद— अथ अतः श्रूयताम् राजन् वंशः सोमस्य पावनः ।
यस्मिन् ऐल आदयः भूपाः कीर्त्यन्ते पुण्यकीर्तयः ॥

शब्दार्थ—

अथ अतः	२.	अब इसके बाद	यस्मिन्	७.	जिस वंश में
श्रूयताम्	६.	सुनिये	ऐल	८.	पुरूरवा
राजन्	१.	हे राजन् !	आदयः	९	आदि
वंशः	५.	वंश का वर्णन	भूपाः	१२.	राजाओं का
सोमस्य	३.	चन्द्रमा के	कीर्त्यन्ते	१३.	कीर्तन किया जाता है
पावनः ।	४.	पवित्र	पुण्य	१०.	पवित्र
			कीर्तयः ॥	११.	कीर्ति वाले

श्लोकार्थ—हे राजन् ! अब इसके बाद पवित्र चन्द्रमा के वंश का वर्णन सुनिये । जिस वंश में पुरूरवा आदि पवित्र कीर्ति वाले राजाओं का कीर्तन किया जाता है ॥

द्वितीयः श्लोकः

सहस्रशिरसः पुंसो नाभिह्रदसरोरुहात् ।
जातस्यासीत् सुतो धातुरत्रिः पितृसमो गुणैः ॥२॥

पदच्छेद— सहस्र शिरसः पुंसः नाभि ह्रद सरोरुहात् ।
जातस्य आसीत् सुतः धातुः अत्रिः पितृसमः गुणैः ॥

शब्दार्थ—

सहस्र	१.	हजारों	जातस्य	७.	उत्पन्न
शिरसः	२.	सिर वाले	आसीत्	११.	हुये
पुंसः	३.	विराट् पुरुष के	सुतः	९.	पुत्र
नाभि	४	नाभि	धातुः	८.	ब्रह्मा के
ह्रद	५.	सरोवर के	अत्रिः	१०.	अत्रि मुनि
सरोरुहात् ।	६.	कमल से	पितृसमः	१३.	पिता के समान थे
			गुणैः ॥	१२.	जो गुणों में

श्लोकार्थ—हजारों सिर वाले विराट् पुरुष के नाभि-सरोवर के कमल से उत्पन्न ब्रह्मा के पुत्र अत्रिमुनि हुये, जो गुणों में पिता के समान थे ॥

तृतीयः श्लोकः

तस्य दृग्भ्योऽभवत् पुत्रः सोमोऽमृतमयः किल ।
विप्रौषध्युडुगणानां ब्रह्मणा कल्पितः पतिः ॥३॥

पदच्छेद— तस्य दृग्भ्यः अभवत् पुत्रः सोमः अमृतमयः किल ।
विप्र ओषधि उडुगणानाम् ब्रह्मणा कल्पितः पतिः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	२.	उन अत्रि के	विप्र	९.	ब्राह्मण
दृग्भ्यः	३.	नेत्रों से	ओषधि	१०.	ओषधि और
अभवत्	७.	हुये (जिन्हें)	उडुगणानाम्	११.	नक्षत्र समूहों का
पुत्रः	६.	पुत्र	ब्रह्मणा	८	ब्रह्मा ने
सोमः	५.	चन्द्रमा	कल्पितः	१३.	बनाया
अमृतमयः	४.	अमृतमय	पतिः ।	१२.	स्वामी
किल ॥	१.	ऐसा कहा जाता है कि			

श्लोकार्थ—ऐसा कहा जाता है कि उन अत्रि के नेत्रों से अमृतमय चन्द्रमा पुत्र हुये, जिन्हें ब्रह्मा ने ब्राह्मण, ओषधि और नक्षत्र समूह का स्वामी बनाया ॥

चतुर्थः श्लोकः

सोऽयजद् राजसूयेन विजित्य भुवनत्रयम् ।
पत्नीं बृहस्पतेर्दर्पात् तारां नामाहरद् बलात् ॥४॥

पदच्छेद— सः अयजत् राजसूयेन विजित्य भुवनत्रयम् ।
पत्नीम् बृहस्पतेः दर्पात् ताराम् नामअहरत् बलात् ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	उन चन्द्रमा ने	पत्नीम्	११.	पत्नी को
अयजत्	६.	यज्ञ किया (और)	बृहस्पतेः	८.	बृहस्पति की
राजसूयेन	५.	राजसूय	दर्पात्	७.	घमण्ड के कारण
विजित्य	४.	जीतकर	ताराम्	९.	तारा
भुवन	३.	लोक को	नामअहरत्	१०.	नामक हरण कर लिया
त्रयम् ।	२	तीनों	बलात् ।	१२.	बल पूर्वक

श्लोकार्थ—उस चन्द्रमा ने तीनों लोक को जीतकर राजसूय यज्ञ किया और घमंड के कारण बृहस्पति की तारा नामक पत्नी को बलपूर्वक हरण कर लिया ॥

पञ्चमः श्लोकः

यदा स देवगुरुणा याचितोऽभीक्ष्णशो मदात् ।
नात्यजत् तत्कृते जज्ञे सुरदानवविग्रहः ॥५॥

पदच्छेद— यदा स देवगुरुणा याचितः अभीक्ष्णशः मदात् ।
न अत्यजत् तत्कृते जज्ञे सुर दानव विग्रहः ॥

शब्दार्थ—

यदा	१. जब	न	७. नहीं
सः	२. उन्होंने	अत्यजत्	८. लौटाया
देवगुरुणा	३. देवगुरु के	तत्कृते	९. तब उसके लिये
याचितः	५. याचना करने पर भी	जज्ञे	१३. छिड़ गया
अभीक्ष्णशः	४. बार-बार	सुर	१०. देवता और
मदात् ।	६. मद के कारण तारा को	दानव	११. दानवों में
		विग्रहः ॥	१२. युद्ध

श्लोकार्थ—जब उन्होंने देवगुरु बृहस्पति के बार-बार याचना करने पर भी मद के कारण तारा को नही लौटाया, तब उसके लिये देवता और दानवों में युद्ध छिड़ गया ॥

षष्ठः श्लोकः

शुक्रो बृहस्पतेर्द्वेषादग्रहीत् सासुरोडुपम् ।
हरो गुरुसुतं स्नेहात् सर्वभूतगणावृतः ॥६॥

पदच्छेद— शुक्रः बृहस्पतेः द्वेषात् अग्रहीत् स असुर उडुपम् ।
हरः गुरु सुतम् स्नेहात् सर्वभूत गण आवृतः ॥

शब्दार्थ—

शुक्रः	१. शुक्राचार्य ने	हरः	७. शंकर ने
बृहस्पतेः	२. बृहस्पति के	गुरुसुतम्	१२. अंगिरा के पुत्र बृहस्पति का
द्वेषात्	३. द्वेष के कारण	स्नेहात्	८. स्नेह वश (पक्ष ले लिया)
अग्रहीत्	६. पक्ष ले लिया	सर्व	९. सभी
स असुर	४. असुरों के साथ	भूत	१०. भूत
उडुपम् ।	५. चन्द्रमा का	गण आवृतः ॥	११. गणों के साथ

श्लोकार्थ— शुक्राचार्य ने बृहस्पति के द्वेष के कारण असुरों के साथ चन्द्रमा का पक्ष ले लिया शंकर जी ने स्नेह वश सभी भूत गणों के साथ अंगिरा के पुत्र बृहस्पति का पक्ष ले लिया ॥

सप्तम श्लोकः

सर्वदेवगणोपेतो महेन्द्रो गुरुमन्वयात् ।

सुरासुरविनाशोऽभूत् समरस्तारकामयः ।।७।।

पदच्छेद— सर्व देवगणः उपेतः महेन्द्रः गुरुम् अन्वयात् ।
सुर असुर विनाशः अभूत् समरः तारकामयः ।।

शब्दार्थ—

सर्व	२. सभी	सुर	८. इस प्रकार देवता और
देवगणः	३. देवताओं से	असुर	९. दानवों का
उपेतः	४. युक्त होकर	विनाशः	१०. संहार करने वाला
महेन्द्रः	१. देवराज इन्द्र ने	अभूत्	१२. हुआ
गुरुम्	५. बृहस्पति का	समरः	११. युद्ध
अन्वयात् ।	६. पक्ष लिया	तारकामयः ।।	७. तारा के निमित्त

श्लोकार्थ—तारा के निमित देवराज इन्द्र ने सभी देवताओं से युक्त होकर बृहस्पति का पक्ष लिया। इस प्रकार देवता और दानवों का संहार करने वाला युद्ध हुआ ।।

अष्टमः श्लोकः

निवेदितोऽथाङ्गिरसा सोमं निर्भर्त्स्य विश्वकृत् ।

तारां स्वभर्त्रे प्रायच्छदन्तर्वत्नीमवैत् पतिः ।।८।।

पदच्छेद— निवेदितः अथ अङ्गिरसा सोमम् निर्भर्त्स्य विश्वकृत् ।
ताराम् स्वभर्त्रे प्रायच्छत् अन्तर्वत्नीम् अवैत् पतिः ।।

शब्दार्थ—

निवेदितः	३. निवेदन करने पर	ताराम्	७. तारा को
अथ	१. तदनन्तर	स्वभर्त्रे	८. उसके पति बृहस्पति के
अङ्गिरसा	२. अंगिरा ऋषि के	प्रायच्छत्	९. सुपुर्द कर दिया
सोमम्	५. चन्द्रमा की	अन्तर्वत्नीम्	११ गर्भवती
निर्भर्त्स्य	६. भर्त्सना करके	अवैत्	१२. जाना
विश्वकृत् ।	४. ब्रह्मा ने	पतिः ।।	१०. पति ने उसको

श्लोकार्थ— तदनन्तर अंगिरा ऋषि के निवेदन करने पर ब्रह्मा ने चन्द्रमा की भर्त्सना करके तारा को उसके पति बृहस्पति के सुपुर्द कर दिया। पति ने उसको गर्भवती जाना ।।

नवमः श्लोकः

त्यज त्यजाशु दुष्प्रज्ञे मत्क्षेत्रादाहितं परैः ।
नाहं त्वां भस्मसात् कुर्यां स्त्रियं सान्तानिकः सति ॥९॥

पदच्छेद— त्यज त्यज आशु दुष्प्रज्ञे मत् क्षेत्रात् आहितम् परैः ।
नाहम् त्वाम् भस्मसात् कुर्याम् स्त्रियम् सान्तानिकः सति ॥

शब्दार्थ—

त्यज	८. त्याग दे	परैः	४. दूसरे के
त्यज	७. त्याग दे	नाहम्	१५. नहीं मैं
आशु	६. शीघ्र	त्वाम्	१७. तुझे
दुष्प्रज्ञे	१ अरे दुर्बुद्धि	भस्मसात् कुर्याम्	१६. जलाऊँगा
मत्	२. मेरे	स्त्रियम्	१४. स्त्री को
क्षेत्रात्	३. क्षेत्र से	सान्तानिकः	१० सन्तान चाहने वाला
आहितम् ।	५. डाले हुये गर्भ को	सति ॥	९. हे सती

श्लोकार्थ—अरी दुर्बुद्धे, मेरे क्षेत्र से दूसरे के डाले हुये गर्भ को शीघ्र त्याग दे, त्याग दे । हे सती ! संतान चाहने वाला मैं तुझ स्त्री को नहीं जलाऊँगा ॥

दशमः श्लोकः

तत्याज व्रीडिता तारा कुमारं कनकप्रभम् ।
स्पृहामाङ्गिरसश्चक्रे कुमारे सोम एव च ॥१०॥

पदच्छेद— तत्याज व्रीडिता तारा कुमारम् कनक प्रभम् ।
स्पृहाम् आङ्गिरसः चक्रे कुमारे सोमः एव च ॥

शब्दार्थ—

तत्याज	६. त्याग दिया	स्पृहाम्	१२. इच्छा
व्रीडिता	१. लज्जित	आङ्गिरसः	७. बृहस्पति
तारा	२. तारा ने	चक्रे	१३. प्रकट की
कुमारम्	५. कुमार को	कुमारे	११. बालक के लिये
कनक	३ सोने के	सोमः	९. चन्द्रमा ने
प्रभम् ।	४. समान	एव	१०. भी उस
		च ॥	८ और

श्लोकार्थ—लज्जित तारा ने सोने के समान कुमार को त्याग दिया । बृहस्पति ने और चन्द्रमा ने भी उस बालक के लिये इच्छा प्रकट की ॥

एकादशः श्लोकः

ममायं न तवेत्युच्चैस्तस्मिन् विवदमानयोः ।
पप्रच्छुर्ऋषयो देवा नैवोचे व्रीडिता तु सा ॥११॥

पदच्छेद— मम अयम् न तव इति उच्चैः तस्मिन् विवद मानयोः ।
पप्रच्छुः ऋषयः देवाः न एव ऊचे व्रीडिता तु सा ॥

शब्दार्थ—

मम	२. मेरा है	पप्रच्छुः	११. पूछा किन्तु
अयम्	१. यह	ऋषयः	११. ऋषियों ने (तारा से)
न	४. नहीं है	देवाः	१०. देवता और
तव	३. तुम्हारा	न	१५. नहीं
इति	५. इस प्रकार	एव	१६. ही
उच्चैः	७. उच्च स्वर से	ऊचे	१७. बताया
तस्मिन्	६. उस बालक के लिये	व्रीडिता	१३. लज्जित
विवद	८. झगड़ा	तु सा ॥	१४. उस तारा ने
मानयोः ॥	९. करने लगे		

श्लोकार्थ—यह मेरा है, तुम्हारा नहीं है इस प्रकार उस बालक के लिये उच्च स्वर से झगड़ा करने लगे। देवता और ऋषियों ने तारा से पूछा। किन्तु लज्जित उस तारा ने नहीं ही बताया ॥

द्वादशः श्लोकः

कुमारो मातरं प्राह कुपितोऽलीकलज्जया ।
किं न वोचस्यसद्वृत्ते आत्मावद्यं वदाशु मे ॥१२॥

पदच्छेद— कुमारो मातरम् प्राह कुपितः अलीक लज्जया ।
किम् न वोचसि असद् वृत्ते आत्मअवद्यम् वद आशु मे ॥

शब्दार्थ—

कुमारः	४. कुमार ने	न	९. नहीं
मातरम्	५. माता से	वोचसि	१०. कहती हो
प्राह	६. कहा	असद् वृत्ते	७ हे दुष्टे !
कुपितः	३. क्रुद्ध होकर	आत्म	११. अपना
अलीक	१. झूठी	अवद्यम्	१२. निन्दित कर्म
लज्जया	२. लज्जा से	वद	१५. बताओ
किम् ।	८. क्यों	आशु	१३ शीघ्र
		मे ॥	१४ मुझे

श्लोकार्थ—झूठी लज्जा से क्रुद्ध होकर कुमार ने माता से कहा—हे दुष्टे ! क्यों नहीं बताती हो ? अपना निन्दित कर्म मुझे शीघ्र बताओ ॥

त्रयोदशः श्लोकः

ब्रह्मा तां रह आहूय समप्राक्षीच्च सान्त्वयन् ।
सोमस्येत्याह शनकैः सोमस्तं तावदग्रहीत् ॥१३॥

पदच्छेद— ब्रह्मा ताम् रहः आहूय सम् अप्राक्षीत् च सान्त्वयन् ।
सोमस्य इति आह शनकैः सोमः तम् तावत् अग्रहीत् ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मा	१.	ब्रह्मा ने	सोमस्य	९.	चन्द्रमा का है यह
ताम्	२.	उस तारा को	इति	८.	उसने
रहः	३.	एकान्त में	आह	११.	कहा
आहूय	४.	बुलाकर	शनकैः	१०.	धीरे से
सम्अप्राक्षीत्	७.	पूछा	सोमः	१३.	चन्द्रमा ने
च	५.	और	तम्	१४.	उस बालक को
सान्त्वयन् ।	६.	सान्त्वना देते हुए	तावत्	१२.	तब
			अग्रहीत् ॥	१५.	ले लिया

श्लोकार्थ—ब्रह्मा ने उस तारा को एकान्त में बुलाकर सान्त्वना देते हुए पूछा । और उसने धीरे से कहा यह चन्द्रमा का है । तब चन्द्रमा ने उस बालक को ले लिया ॥

चतुर्दशः श्लोकः

तस्यात्मयोनिरकृत बुध इत्यभिधां नृप ।
बुद्ध्या गम्भीरया येन पुत्रेणापोडुराण्मुदम् ॥१४॥

पदच्छेद— तस्य आत्मयोनिः अकृत बुधः इति अभिधाम् नृप ।
बुद्ध्या गम्भीरया येन पुत्रेण आप उडुराड् मुदम् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	५.	उस बालक का	बुद्ध्या	४.	बुद्धि के कारण
आत्मयोनिः	२.	ब्रह्मा ने	गम्भीरया	३.	गम्भीर
अकृत	९.	रखा	येन	१०.	जिस
बुधः	६.	बुध	पुत्रेण	११.	पुत्र से
इति	७.	यह	आप	१४.	प्राप्त हुआ
अभिधाम्	८.	नाम	उडुराड्	१२.	चन्द्रमा को
नृप ।	१.	हे राजन् !	मुदम् ॥	१३.	हर्ष

श्लोकार्थ—हे राजन् ! ब्रह्मा ने गम्भीर बुद्धि के कारण उस बालक का बुध यह नाम रखा । जिस पुत्र से चन्द्रमा को हर्ष प्राप्त हुआ ॥

पञ्चदशः श्लोकः

ततः पुरूरवा जज्ञे इलायां य उदाहृतः ।
तस्य रूपगुणौदार्यशीलद्रविणविक्रमान् ॥१५॥

पदच्छेद— ततः पुरूरवाः जज्ञे इलायाम् यः उदाहृतः ।
तस्य रूप गुण औदार्य शील द्रविण विक्रमान् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. उस बुध से	तस्य	७. उस पुरूरवा के
पुरूरवाः	३. पुरूरवा	रूप	८. रूप
जज्ञे	४. उत्पन्न हुआ	गुण	९. गुण
इलायाम्	२. इला नाम की पत्नी में	औदार्य	१०. उदारता
यः	५. जिसे मैं पहले	शील	११. शील
उदाहृतः ।	६. बता चुका हूँ	द्रविण	१२. धन और
		विक्रमान् ॥	१३. पराक्रमों का (देवर्षि नारद इन्द्र की सभा में बखान कर रहे थे)

श्लोकार्थ—उस बुध से इला नाम की पत्नी में पुरूरवा उत्पन्न हुआ। जिसे मैं पहले बता चुका हूँ। उस पुरूरवा के रूप, गुण, उदारता, शील, धन और पराक्रमों का देवर्षि नारद इन्द्र की सभा में बखान कर रहे थे ॥

षोडशः श्लोकः

श्रुत्वोर्वशीन्द्रभवने गीयमानान् सुरर्षिणा ।
तदन्तिकमुपेयाय देवी स्मरशरार्दिता ॥१६॥

श्रुत्वा उर्वशी इन्द्रभवने गीयमानान् सुर ऋषिणा ।
तदन्तिकम् उपेयाय देवी स्मर शर अर्दिता ॥

शब्दार्थ—

श्रुत्वा	५. पुरूरवा के गुणों को सुनकर	तदन्तिकम्	११. उस पुरूरवा के पास
उर्वशी	१०. उर्वशी	उपेयाय	१२. आई
इन्द्रभवने	१. इन्द्र के भवन में	देवी	९. देवाङ्गना
गीयमानान्	४ गाये जाते हुए	स्मर	६. काम देव के
सुर	२. देवर्षि	शर	७. बाण से
ऋषिणा ।	३. नारद के द्वारा	अर्दिता ॥	८. पीड़ित

श्लोकार्थ—इन्द्र के भवन में देवर्षि नारद के द्वारा गाये जाते हुए पुरूरवा के गुणों को सुनकर काम देव के बाण से पीड़ित देवाङ्गना उर्वशी पुरूरवा के पास आई ॥

सप्तदशः श्लोकः

मित्रावरुणयोः शापादापन्ना नरलोकताम् ।
निशम्य पुरुषश्रेष्ठं कन्दर्पमिव रूपिणम् ।
धृतिं विष्टभ्य ललना उपतस्थे तदन्तिके ॥१७॥

पदच्छेद— मित्रावरुणयोः शापात् आपन्ना नरलोकताम् ।
निशम्य पुरुष श्रेष्ठम् कन्दर्पम् इव रूपिणम् ।
धृतिम् विष्टभ्य ललना उपतस्थे तत् अन्तिके ॥

शब्दार्थ--

मित्रावरुणयोः	१. मित्रावरुण के	कन्दर्पम्	७. कामदेव के
शापात्	२. शाप से	इव	८. समान
आपन्ना	४. प्राप्त हुई उर्वशी	रूपिणम्	९. सुन्दर
नरलोकताम्	३. मृत्युलोक को	धृतिम् विष्टभ्य	११. धैर्य धारण करके
निशम्य	१०. सुनकर	ललना	१२. देवांगना
पुरुष	५. पुरूरवा को पुरुषों में	उपतस्थे	१४. उपस्थित हो गई
श्रेष्ठम् ।	६. श्रेष्ठ	तत् अन्तिके ॥	१३. उस पुरूरवा के पास

श्लोकार्थ--मित्रावरुण के शाप से मृत्यु लोक को प्राप्त हुई उर्वशी पुरूरवा को पुरुषों में श्रेष्ठ तथा कामदेव के समान सुन्दर सुनकर धैर्य धारण करके देवांगना उस (पुरूरवा) के पास उपस्थित हो गयी ॥

अष्टादशः श्लोकः

स तां विलोक्य नृपतिर्हर्षेणोत्फुल्ललोचनः ।
उवाच श्लक्ष्णया वाचा देवीं हृष्टतनूरुहः ॥१८॥

पदच्छेद— सः ताम् विलोक्य नृपतिः हर्षेण उत्फुल्ल लोचनः ।
उवाच श्लक्ष्णया वाचा देवीम् हृष्ट तनू रुहः ॥

शब्दार्थ—

सः	१०. उस	उवाच	१४. कहा
ताम्	१. उस	श्लक्ष्णया	१२. मीठी
विलोक्य	३. देखकर	वाचा	१३. वाणी से
नृपतिः	१०. राजा ने	देवीम्	२. देवांगना को
हर्षेण	४. आनन्द से	हृष्ट	७. रोमाञ्चित
उत्फुल्ल	५. विकसित	तनू	८. शरीर
लोचनः ।	६. नेत्र वाले एवं	रुहः ॥	९. वाले

श्लोकार्थ— उस देवांगना (उर्वशी) को देखकर आनन्द से विकसित नेत्र वाले एवं रोमाञ्चित शरीर वाले उस राजा ने मीठी वाणी से कहा ॥

एकोनविंश श्लोकः

राजोवाच— स्वागतं ते वरारोहे आस्यतां करवाम किम् ।
संरमस्व मया साकं रतिर्नौ शाश्वतीः समाः ॥१६॥

पदच्छेद— स्वागतम् ते वरारोहे आस्यताम् करवाम किम् ।
संरमस्व मया साकम् रतिः नौ शाश्वतीः समाः ॥

शब्दार्थ—

स्वागतम्	३. स्वागत है	संरमस्व	६. विहार करो
ते	२. तुम्हारा	मया	७. मेरे
वरारोहे	१. हे सुन्दरी !	साकम्	८. साथ
आस्यताम्	४. बैठो	रतिः	११. विहार
करवाम	६. करूँ	नौ	१०. हम दोनों का
किम् ।	५. तुम्हारी क्या सेवा	शाश्वतीः	१२. निरन्तर
		समाः ॥	१३. वर्षों तक चलता रहे

श्लोकार्थ—हे सुन्दरी ! तुम्हारा स्वागत है । बैठो । तुम्हारी क्या सेवा करूँ ? मेरे साथ विहार करो । हम दोनों का विहार निरन्तर वर्षों तक चलता रहे ॥

विंशः श्लोकः

उर्वश्युवाच— कस्यास्त्वयि न सज्जेत मनो दृष्टिश्च सुन्दर ।
यदङ्गान्तरमासाद्य च्यवते ह रिरंसया ॥२०॥

पदच्छेद— कस्याः त्वयि न सज्जेत मनः दृष्टिः च सुन्दर ।
यत् अङ्ग अन्तरम् आसाद्य च्यवते ह रिरंसया ॥

शब्दार्थ—

कस्याः	२. किस स्त्री का	यत्	६. जिस आपके
त्वयि	६. आप में	अङ्ग	१०. अङ्गों का
न	८. नहीं	अन्तरम्	११. सामीप्य
सज्जेत	७. आसक्त हो	आसाद्य	१२. प्राप्त करके
मनः	३. मन	च्यवते ह	१४. मेरा मन धैर्य खो बैठा है
दृष्टिः	५. दृष्टि	रिरंसया ।	१३. रमण की इच्छा से
च	४. और		
सुन्दर ॥	१. हे सुन्दर राजन् !		

श्लोकार्थ—हे सुन्दर राजन् ! किस स्त्री का मन और दृष्टि आप में आसक्त नहीं होगा, जिस आपके अङ्गों का सामीप्य प्राप्त करके रमण की इच्छा से मेरा मन धैर्य खो बैठा है ॥

एकविंशः श्लोकः

एतावुरणकौ राजन् न्यासौ रक्षस्व मानद ।
संरंस्ये भवता साकं श्लाघ्यः स्त्रीणां वरः स्मृतः ॥२१॥

पदच्छेद— एतौ उरणकौ राजन् न्यासौ रक्षस्व मानद ।
संरंस्ये भवता साकम् श्लाघ्यः स्त्रीणाम् वरः स्मृतः ॥

शब्दार्थ—

एतौ	३. इन दोनों	संरंस्ये	९. विहार करूँगी
उरणकौ	४. भेड़ के बच्चों का	भवता	७. आपके
राजन्	२. हे राजन् !	साकम्	८. साथ
न्यासौ	५. धरोहर के रूप में	श्लाघ्यः	१०. प्रशंसनीय गुणों से युक्त
रक्षस्व	६. रखिये	स्त्रीणाम्	१२. स्त्रियों के लिये
मानद ।	१. मान देने वाले	वरः	११. पति
		स्मृतः ॥	१३. कहा गया है

श्लोकार्थ—मान देने वाले हे राजन् ! इन दोनों भेड़ के बच्चों को धरोहर के रूप में रखिये । आपके साथ विहार करूँगी । प्रशंसनीय गुणों से युक्त पति स्त्रियों के लिए कहा गया है ॥

द्वाविंशः श्लोकः

घृतं मे वीर भक्ष्यं स्यान्नेक्षे त्वान्यत्र मैथुनात् ।
विवाससं तत् तथेति प्रतिपेदे महामनाः ॥२२॥

पदच्छेद— घृतम् मे वीर भक्ष्यम् स्यात् न ईक्षे त्वा अन्यत्र मैथुनात् ।
विवाससम् तत् तथा इति प्रतिपेदे महा मनाः ॥

शब्दार्थ—

घृतम्	४. घी ही	मैथुनात्	७. मैथुन के अतिरिक्त
मे	२. मेरा	विवाससम्	९. वस्त्र हीन
वीर	१. हे वीर !	तत्	११. वह
भक्ष्यम्	३. भोजन	तथा	१२. ऐसा ही होगा
स्यात्	५. होगा	इति	१५. यह
न ईक्षे	१०. नहीं देखूँ	प्रतिपेदे	१६. स्वीकार कर लिया
त्वा	६. तुमको	महा	१३. महा
अन्यत्र ।	८. दूसरी जगह	मनाः ॥	१४. मनस्वी पुरूरवा ने

श्लोकार्थ—हे वीर मेरा भोजन घी ही होगा । तुमको दूसरी जगह मैथुन के अतिरिक्त वस्त्र हीन देखूँ । वह ऐसा ही होगा, महा मनस्वी पुरूरवा ने यह स्वीकार कर लिया ॥

त्रयोविंशः श्लोक.

अहो रूपमहो भावो नरलोकविमोहनम् ।
को न सेवेत मनुजो देवीं त्वां स्वयमागताम् ॥२३॥

पदच्छेद— अहो रूपम् अहो भावः नरलोक विमोहनम् ।
कः न सेवेत मनुजः देवीम् त्वाम् स्वयम् आगताम् ॥

शब्दार्थ—

अहो	२. आश्चर्यजनक है	न सेवेत	१२. नहीं सेवन करेगा
रूपम्	१. तुम्हारा सौन्दर्य	मनुजः	७. मनुष्य
अहो भावः	३. तुम्हारा भाव अद्भुत है	देवीम्	११. देवी का
नरलोक	४. मनुष्य लोक को	त्वाम्	१०. तुम जैसी
विमोहनम्	५. मोहित करने वाला है	स्वयम्	८. स्वयम्
कः ।	६. कौन	आगताम् ॥	९. आई

श्लोकार्थ—तुम्हारा सौन्दर्य आश्चर्यजनक है । तुम्हारा भाव अद्भुत है । मनुष्य लोक को मोहित करने वाला है । कौन मनुष्य स्वयम् आई हुई तुम जैसी देवी का सेवन नहीं करेगा ?

चतुर्विंशः श्लोकः

तया स पुरुषश्रेष्ठो रमयन्त्या यथार्हतः ।
रेमे सुरविहारेषु कामं चैत्ररथादिषु ॥२४॥

पदच्छेद— तया सः पुरुष श्रेष्ठः रमयन्त्या यथा अर्हतः ।
रेमे सुर विहारेषु कामम् चैत्ररथ आदिषु ॥

शब्दार्थ—

तया	७. उस उर्वशी के साथ	रेमे	११. रमण करने लगा
सः	३. वह पुरूरवा	सुर	८. देवताओं के
पुरुष	१. पुरुषों में	विहारेषु	९. विहार स्थलों में
श्रेष्ठः	२. श्रेष्ठ	कामम्	१०. इच्छापूर्वक
रमयन्त्या	६. रमण करती हुई	चैत्ररथ	६. चैत्ररथ
यथा ।	४. यथा	आदिषु	७. आदि
अर्हतः ॥	५ योग्य		

श्लोकार्थ—पुरुषों में श्रेष्ठ वह पुरूरवा यथा-योग्य रमण करती हुई उस उर्वशी के साथ चैत्ररथ आदि देवताओं के विहार स्थलों में इच्छापूर्वक रमण करने लगा ॥

पञ्चविंश श्लोकः

रममाणस्तया देव्या पद्मकिञ्जल्कगन्धया ।
तन्मुखामोदमुषितो मुमुदेऽहर्गणान् बहून् ॥२५॥

पदच्छेद— रममाणः तया देव्या पद्म किञ्जल्क गन्धया ।
तद् मुख आमोद मुषितः मुमुदेः अहः गणान् बहून् ॥

शब्दार्थ—

रममाणः तया	५. रमण करते हुए राजा ने उस	आमोद	८. सुगन्ध से		
देव्या	४. देवी के साथ	मुषितः	९. विभोर होकर		
पद्मकिञ्जल्क	१. कमल केसर की सी	मुमुदे	१३. विहार किया		
गन्धया	२. सुगन्ध वाली	अहः	११. वर्षों		
तद्	६. उसके	गणान्	१२. तक		
मुख ।	७. मुख की	बहून् ॥	१०. बहुत		

श्लोकार्थ—कमल केसर की-सी सुगन्ध वाली उस देवी उर्वशी के साथ रमण करते हुए राजा ने उसके मुखकी सुगन्ध से विभोर होकर बहुत वर्षों तक विहार किया ॥

षड्विंशः श्लोकः

अपश्यन्नुर्वशीमिन्द्रो गन्धर्वान् समचोदयत् ।
उर्वशीरहितं मह्यमास्थानं नातिशोभते ॥२६॥

पदच्छेद— अपश्यन् उर्वशीम् इन्द्रः गन्धर्वान् समअचोदयत् ।
उर्वशी रहितम् मह्यम् आस्थानम् न अति शोभते ॥

शब्दार्थ—

अपश्यन्	२. नहीं देखते हुए	उर्वशी	६. उर्वशी से
उर्वशीम्	१ उर्वशी को	रहितम्	७. रहित
इन्द्रः	३ इन्द्र ने	मह्यम्	८. मुझे
गन्धर्वान्	४. गन्धर्वों को (उसे लाने के लिए)	आस्थानम्	९. स्वर्ग
समअचोदयत् ।	५. भेजा (और कहा)	न अति	१०. नहीं
		शोभते ॥	११. अच्छा लगता है

श्लोकार्थ—उर्वशी को नहीं देखते हुए इन्द्र ने गन्धर्वों को उसे लाने के लिए भेजा और कहा—उर्वशी से रहित मुझे स्वर्ग नहीं अच्छा लगता है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

ते उपेत्य महारात्रे तमसि प्रत्युपस्थिते ।
उर्वश्या उरणौ जह्रुर्न्यस्तौ राजनि जायया ॥२७॥

पदच्छेद— ते उपेत्य महारात्रे तमसि प्रति उपस्थिते ।
उर्वश्याः उरणौ जह्रुः न्यस्तौ राजनि जायया ॥

शब्दार्थ—

ते	१.	वे गन्धर्व	उर्वश्या	६.	उर्वशी के
उपेत्य	५.	जाकर	उरणौ	७.	दोनों भेड़ों को
महारात्रे	२.	आधीरात में	जह्रुः	८.	हरण कर लिया (जिन्हें)
तमसि	३.	अन्धकार	न्यस्तौ	११.	धरोहर रखा था
प्रतिउपस्थिते ।	४.	छा जाने पर वहाँ	राजनि	१०.	राजा के पास
			जायया ॥	९.	पत्नी ने

श्लोकार्थ—वे गन्धर्व आधीरात में अन्धकार छा जाने पर वहाँ जाकर उर्वशी के दोनों भेड़ों को हरण कर लिया जिन्हें पत्नी ने राजा के पास धरोहर रखा था ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

निशम्याक्रन्दितं देवी पुत्रयोर्नीयमानयोः ।
हतास्म्यहं कुनाथेन नपुंसा वीरमानिना ॥२८॥

पदच्छेद— निशम्य आक्रन्दितम् देवी पुत्रयोः नीयमानयोः ।
हता अस्मि अहम् कुनाथेन नपुंसा वीर मानिना ॥

शब्दार्थ—

निशम्य	४.	सुनकर	अस्मि	१२.	गई
आक्रन्दितम्	३	चिल्लाहट	अहम्	१०.	मैं
देवी	५.	देवी उर्वशी ने कहा	कुनाथेन	९.	बुरे पति के द्वारा
पुत्रयोः	२.	पुत्रों की	नपुंसा	६.	कायर और
नीयमानयोः	१.	लिये जाते हुए	वीर	७.	अपने को वीर
हता ।	११.	मारी	मानिना ॥	८.	मानने वाले

श्लोकार्थ—लिये जाते हुए पुत्रों की चिल्लाहट सुनकर देवी उर्वशी ने कहा कायर और अपने को वीर मानने वाले बुरे पति के द्वारा मैं मारी गई ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

यद्विश्रम्भादहं नष्टा हृतापत्या च दस्युभिः ।
यः शेते निशि संत्रस्तो यथा नारी दिवा पुमान् ॥२९॥

पदच्छेद— यत् विश्रम्भात् अहम् नष्टा हृत अपत्या च दस्युभिः ।
यः शेते निशि संत्रस्तः यथा नारी दिवा पुमान् ॥

शब्दार्थ—

यत्	१.	जिसके	यतः	९.	जो
विश्रम्भात्	२.	विश्वास से	शेते	१६.	सोता है
अहम्	३.	मैं	निशि	१२.	रात में
नष्टा	४.	नष्ट हो गयी	संत्रस्तः	१३.	डर कर
हृत	८.	लूट लिये गये	यथा	१५.	समान
अपत्या	७.	मेरे बच्चे	नारी	१४.	स्त्री के
च	५.	और जो	दिवा	१०.	दिन में
दस्युभिः ।	६.	लुटेरों के द्वारा	पुमान् ॥	११.	पुरुष रहता है और

श्लोकार्थ—जिसके विश्वास से मैं नष्ट हो गयी । तथा लुटेरों के द्वारा मेरे बच्चे लूट लिये गये और जो दिन में पुरुष रहता है तथा रात में डर कर स्त्री के समान सोता है ॥

त्रिंशः श्लोकः

इति वाक्सायकैर्विद्धः प्रतोत्त्रैरिव कुञ्जरः ।
निशि निस्त्रिंशमादाय विवस्त्रोऽभ्यद्रवद् रुषा ॥३०॥

पदच्छेद— इति वाक्सायकैः विद्धः प्रतोत्त्रैः इव कुञ्जरः ।
निशि निस्त्रिंशम् आदाय विवस्त्रः अभ्यद्रवत् रुषा ॥

शब्दार्थ—

इति	५.	इस प्रकार	निशि	८.	रात में
वाक्	६.	वाणी रूपी	निस्त्रिंशम्	९.	तलवार
सायकैः	७.	बाणों से बिंधकर राजा	आदाय	१०.	लेकर
विद्धः	२.	बिंधे हुए	विवस्त्रः	१२.	बिना वस्त्र के ही
प्रतोत्त्रैः	१.	अंकुशों से	अभ्यद्रवत्	१३.	दौड़ पड़ा
इव	४.	समान	रुषा ।	११.	क्रोध से
कुञ्जरः ॥	३.	हाथी के			

श्लोकार्थ—अंकुशों से बिंधे हुए हाथी के समान इस प्रकार वाणी रूपी बाणों से बिंधकर राजा रात में तलवार लेकर क्रोध से बिना वस्त्र के ही दौड़ पड़ा ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

ते विसृज्योरणौ तत्र व्यद्योतन्त स्म विद्युतः ।
आदाय मेषावायान्तं नग्नमैक्षत सा पतिम् ॥३१॥

पदच्छेद— ते विसृज्य उरणौ तत्र व्यद्योतन्त स्म विद्युतः ।
आदाय मेषौ आयान्तम् नग्नम् ऐक्षत सा पतिम् ॥

शब्दार्थ—

ते	१.	वे गन्धर्व	आदाय	९.	लेकर
विसृज्य	३.	छोड़कर (चले गये)	मेषौ	८.	भेड़ों को
उरणौ	२.	भेड़ का	आयान्तम्	१०.	आते हुए
तत्र	४.	वहाँ	नग्नम्	११.	नंगे
व्यद्योतन्त	६.	चमकने	ऐक्षत	१४.	देख लिया
स्म	७.	लगीं (तब)	सा	१३.	उस उर्वशी ने
विद्युतः ।	५.	बिजलियाँ	पतिम् ॥	१२.	पति को

श्लोकार्थ—वे गन्धर्व भेड़ों को छोड़कर चले गये। वहाँ बिजलियाँ चमकने लगीं। तब भेड़ों को लेकर आते हुए नंगे पति को उस उर्वशी ने देख लिया ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

ऐलोऽपि शयने जायामपश्यन् विमना इव ।
तच्चित्तो विह्वलः शोचन् बभ्रामोन्मत्तवन्महीम् ॥३२॥

पदच्छेद— ऐलः अपि शयने जायाम् अपश्यन् विमनाः इव ।
तत् चित्तः विह्वलः शोचन् बभ्राम उन्मत्त वत् महीम ॥

शब्दार्थ—

ऐलः	१.	पुरूरवा	तत्	८.	और उसी में
अपि	२.	भी	चित्तः	९.	मन को लगाये हुए
शयने	३.	शय्यापर	विह्वलः	१०.	आतुर होकर
जायाम्	४.	पत्नी को	शोचन्	११.	शोक करते हुए
अपश्यन्	५.	न देखते हुए	बभ्राम	१५.	घूमने लगे
विमनाः	६.	उदास के	उन्मत्त	१२.	पागल के
इव ।	७.	समान हो गये	वत्	१३.	समान
			महीम् ॥	१४.	पृथ्वी पर

श्लोकार्थ—पुरूरवा भी शय्यापर पत्नी को न देखते हुए उदास के समान हो गये और उसी में मन को लगाये हुए आतुर होकर शोक करते हुए पागल के समान पृथ्वी पर घूमने लगे ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

स तां वीक्ष्य कुरुक्षेत्रे सरस्वत्यां च तत्सखीः ।
पञ्च प्रहृष्टवदनाः प्राह सूक्तं पुरूरवाः ॥३३॥

पदच्छेद— सः ताम् वीक्ष्य कुरुक्षेत्रे सरस्वत्याम् च तत् सखीः ।
पञ्च प्रहृष्ट वदनाः प्राह सूक्तम् पुरूरवाः ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	उस पुरूरवा ने	सखीः	१०.	सखियों से
ताम्	२.	उर्वशी को	पञ्च	६.	पाँच
वीक्ष्य	५.	देखकर	प्रहृष्ट	७.	प्रसन्न
कुरुक्षेत्रे	३.	कुरुक्षेत्र में	वदनाः	८.	मुखवाली
सरस्वत्याम् च	४.	सरस्वती नदी के तट पर	प्राह	१३.	कहा
तत् ॥	६.	और उसकी	सूक्तम्	१२.	मीठी वाणी में
			पुरूरवाः ॥	११.	पुरूरवा ने

श्लोकार्थ—उस पुरूरवा ने उर्वशी को कुरुक्षेत्र में सरस्वती नदी के तट पर देखकर और उसकी पाँच सखियों से पुरूरवा ने मीठी वाणी में कहा ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

अहो जाये तिष्ठ तिष्ठ घोरे न त्यक्तुमर्हसि ।
मां त्वमद्याप्यनिर्वृत्य वचांसि कृणवावहै ॥३४॥

पदच्छेद— अहो जाये तिष्ठ तिष्ठ घोरे न त्यक्तुम् अर्हसि ।
माम् त्वम् अद्य अपि अनिर्वृत्य वचांसि कृणवावहै ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	अहा	माम्	९.	मुझे
जाये	२.	प्रिये	त्वम्	८.	तुम
तिष्ठ	३.	ठहर जाओ	अद्य	६.	आज
तिष्ठ	४.	ठहर जाओ	अपि	७.	भी
घोरे	५.	हे निष्ठुरे !	अनिर्वृत्य	१०.	बिना सुख दिये
न	११.	नहीं	वचांसि	१४	हम दोनों बातें
त्यक्तुम्	१२.	त्यागने	कृणवावहै ।	१५	कुछ कर लें
अर्हसि ॥	१३.	योग्य हो (आओ)			

श्लोकार्थ—अहा प्रिये, ठहर जाओ, ठहर जाओ । हे निष्ठुरे ! आज भी तुम मुझे बिना सुख दिये नहीं त्यागने योग्य हो । आओ, हम दोनों कुछ बातें कर लें ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

सुदेहोऽयं पतत्यत्र देवि दूरं हृतस्त्वया ।
खादन्त्येनं वृका गृध्रास्त्वत्प्रसादस्य नास्पदम् ॥३५॥

पदच्छेद— सुदेहः अयम् पतति अत्र देवि दूरम् हृतः त्वया ।
खादन्ति एनम् वृकाः गृध्राः त्वत् प्रसादस्य न आस्पदम् ॥

शब्दार्थ—

सुदेहः	३.	सुन्दर शरीर	खादन्ति	१६.	खा जायेगा
अयम्	२.	यह	एनम्	१३.	इस शरीर को
पतति	५.	गिर रहा है (क्योंकि)	वृकाः	१४.	भेड़िये और
अत्र	४.	यहाँ	गृध्राः	१५.	गीध
देवि	१.	हे देवी	त्वत्	९.	तुम्हारी
दूरम्	७.	दूर	प्रसादस्य	१०.	प्रसन्नता का यह
हृतः	८.	फेंक दिया है	न	१२.	नहीं है (इस लिए)
त्वया ।	६.	तुमने (इसे)	आस्पदम् ॥	११.	स्थान

श्लोकार्थ—यह सुन्दर शरीर यहाँ गिर रहा है, क्योंकि तुमने इसे दूर फेंक दिया है। तुम्हारी प्रसन्नता का यह स्थान नहीं है। इस लिए इस शरीर को भेड़िये और गीध खा जायेंगे ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

उर्वश्युवाच— मा मृथाः पुरुषोऽसि त्वं मा स्म त्वाद्युर्वृका इमे ।
क्वापि सख्यं न वै स्त्रीणां वृकाणां हृदयं यथा ॥३६॥

पदच्छेद— मा मृथाः पुरुषः असि त्वम् मा स्म त्वा अद्युः वृकाः इमे ।
क्वापि सख्यं न वै स्त्रीणाम् वृकाणाम् हृदयम् यथा ॥

शब्दार्थ—

मा	४.	मत	क्वापि	११.	कहीं भी
मृथाः	५.	मरो	सख्यम्	१२.	मित्रता
पुरुषः	२.	पुरुष	न वै	१३.	नहीं होती
असि	३.	हो	स्त्रीणाम्	१०.	स्त्रियों की
त्वम्	१.	तुम	वृकाणाम्	१५.	भेड़िये के
मा स्म	९.	नहीं	हृदयम्	१४.	उनका हृदय के
अद्युः	८.	तुम्हें खाये	यथा ।	१६.	समान होता है
वृकाः इमे ॥	७.	भेड़िये ये			

श्लोकार्थ—हे राजन्! तुम पुरुष हो। मत मरो! ये भेड़िये तुम्हें नहीं खायेंगे स्त्रियों की कहीं भी मित्रता नहीं होती। उनका हृदय भेड़िये के समान होता है ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

स्त्रियो ह्यकरुणाः क्रूरा दुर्मर्षाः प्रियसाहसाः ।
घ्नन्त्यल्पार्थेऽपि विश्रब्धं पतिं भ्रातरमप्युत ॥३७॥

पदच्छेद— स्त्रियः हि अकरुणाः क्रूराः दुर्मर्षाः प्रिय साहसाः ।
घ्नन्ति अल्प अर्थे अपि विश्रब्धम् पतिम् भ्रातरम् अपि उत ॥

शब्दार्थ—

स्त्रियः हि	५.	स्त्रियाँ	अल्प	६.	थोड़े
अकरुणाः	१.	दयाशून्य	अर्थे	७.	धन के लिए
क्रूराः	२.	कठोर	अपि	८.	भी
दुर्मर्षाः	३.	असहनशील	विश्रब्धम्	९.	विश्वासी
प्रियसाहसाः	४.	साहसी	पतिम्	१०.	पति
घ्नन्ति ।	१४.	मार देती है	भ्रातरम्	१२.	भाई को
			अपि	१३.	भी
			उत ॥	११.	अथवा

श्लोकार्थ—दयाशून्य, कठोर असहनशील, साहसी, स्त्रियाँ थोड़े धन के लिए भी विश्वासी पति अथवा भाई को मार देती है ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

विधायालीकविश्रम्भमज्ञेषु त्यक्तसौहृदाः ।
नवं नवमभीप्सन्त्यः पुंश्चल्यः स्वैरवृत्तयः ॥३८॥

पदच्छेद— विधाय अलीक विश्रम्भम् अज्ञेषु त्यक्त सौहृदाः ।
नवम् नवम् अभीप्सन्त्यः पुंश्चल्यः स्वैर वृत्तयः ॥

शब्दार्थ—

विधाय	५.	दिलाकर	नवम्	८.	नये
अलीक	३.	झूंठा	नवम्	९.	नये पुरुषों को
विश्रम्भम्	४.	विश्वास	अभीप्सन्त्यः	१०.	चाहती हुई
अज्ञेषु	१.	अनजान	पुंश्चल्यः	११.	कुलटा स्त्रियाँ
त्यक्त	७.	त्याग देने वाली	स्वैर	१२.	स्वच्छन्द
सौहृदाः	६.	बन्धुओं को भी	वृत्तयः ॥	१३.	विचरण करने वाली होती है

श्लोकार्थ—अनजान मनुष्यों को झूठा विश्वास दिलाकर बन्धुओं को भी त्याग देने वाली तथा नये नये पुरुषों को चाहती हुई कुलटा स्त्रियाँ स्वच्छन्द विचरण करने वाली होती हैं ॥

एकानचत्वारिंशः श्लोकः

संवत्सरान्ते हि भावनेकरात्रं मयेश्वर ।
वत्स्यत्यपत्यानि च ते भविष्यन्त्यपराणि भोः ॥३९॥

पदच्छेद— संवत्सरान्ते हि भवान् एक रात्रम् मया ईश्वर ।
वत्स्यति अपत्यानि च ते भविष्यन्ति अपराणि भोः ॥

शब्दार्थ—

संवत्सरान्ते	३.	वर्ष के अन्त में	वत्स्यति	८.	वास करेंगे
हि	५.	निश्चित रूप से	अपत्यानि	१२.	सन्तानें
भवान्	४.	आप	च ते	११.	भी आपको
एकरात्रम्	६.	एक रात	भविष्यन्ति	१३.	होगी
मया ईश्वर ।	७.	मेरे साथ साथ महाराज	अपराणि	१०.	दूसरी
			भोः ॥	१.	हे

श्लोकार्थ—हे महाराज ! वर्ष के अन्त में आप निश्चित रूप से एकरात मेरे साथ वास करेंगे । आपको दूसरी भी सन्तानें होंगी ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

अन्तर्वत्नीमुपालक्ष्य देवीं स प्रययौ पुरम् ।
पुनस्तत्र गतोऽब्दान्ते उर्वशी वीरमातरम् ॥४०॥

पदच्छेद— अन्तः पत्नीम् उपालक्ष्य देवीम् सः प्रययौ पुरम् ।
पुनः तत्र गतः अब्दान्ते उर्वशीम् वीर मातरम् ॥

शब्दार्थ—

अन्तः वत्नीम्	२.	गर्भवती	पुनः	७.	फिर
उपालक्ष्य	३.	देखकर	तत्र	८.	वहाँ
देवीम्	१.	उर्वशी को	गतः	१३.	गये
सः	४.	वे राजा पुरूरवा अपने	अब्दान्ते	९.	एक वर्ष के अन्त में
प्रययौ	६.	चले गये	उर्वशीम्	१२.	उर्वशी के पास
पुरम् ।	५.	नगर को	वीर	१०.	एक पुत्र की
			मातरम् ॥	११.	माता

श्लोकार्थ—उर्वशी को गर्भवती देखकर वे राजा पुरूरवा अपने नगर को चले गये । फिर वहाँ एक वर्ष के अन्त में एक पुत्र की माता उर्वशी के पास गये ॥

एकचत्वारिंश श्लोकः

उपलभ्य मुदा युक्तः समुवास तया निशाम् ।
अथैनमुर्वशी प्राह कृपणं विरहातुरम् ॥४१॥

पदच्छेद— उपलभ्य मुदा युक्तः सम् उवास तया निशाम् ।
अथ एनम् उर्वशी प्राह कृपणम् विरह आतुरम् ॥

शब्दार्थ—

उपलभ्य	१.	उर्वशी को पाकर	अथ	७.	तदनन्तर
मुदा	२.	हर्ष से	एनम्	११.	उस राजा से
युक्तः	३.	युक्त होकर	उर्वशी	१२.	उर्वशी ने
सम् उवास	६.	निवास किया	प्राह	१३.	कहा
तया	५.	उसके पास	कृपणम्	१०.	दीन
निशाम् ।	४.	रात में	विरह	८.	वियोग से
			आतुरम् ॥	९.	दुःखी

श्लोकार्थ—उर्वशी को पाकर हर्ष से युक्त होकर रात में उसके साथ निवास किया । वियोग से दुःखी दीन उस राजा से उर्वशी ने कहा ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

गन्धर्वानुपधावेमांस्तुभ्यं दास्यन्ति मामिति ।
तस्य संस्तुवतस्तुष्टा अग्निस्थालीं ददुर्नृप ।
उर्वशीं मन्यमानस्तां सोऽबुध्यत चरन् वने ॥४२॥

पदच्छेद— गन्धर्वान् उपधाव इमान् तुभ्यम् दास्यन्ति माम् इति ।
तस्य संस्तुवतः तुष्टा अग्नि स्थालीम् ददुः नृप ।
उर्वशीम् मन्यमानः ताम् सः अबुध्यत चरन् वने ॥

शब्दार्थ—

गन्धर्वान्	२.	गन्धर्वों के पास	स्थालीम्	१२.	स्थाली
उपधाव इमान्	३.	जाओ इन	ददुः	१३.	दे दी
तुभ्यम्	४.	तुम्हें वह	नृप	१.	हे राजन् !
दास्यन्ति	६.	दे देंगे	उर्वशीम्	१६.	उर्वशी
माम्	५.	मुझे	मन्यमानः	१८.	मानता हुआ
इति	७.	इसके वाद	ताम्	१५.	उस स्थाली को
तस्य	९.	उस राजा के ऊपर	सः	१४.	उस राजा पुरूरवा ने
संस्तुवतः	८.	स्तुति करते हुए	अबुध्यत	१७.	समझा (और यह)
तुष्टाः	१०.	प्रसन्न हो गये और	चरन्	२०.	विचरण करने लगा
अग्नि	११.	एक अग्नि	वने	१९.	वन में

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इन गन्धर्वो के पास जाओ । तुम्हें वह मुझे दे देगें । उसके बाद स्तुति करते हुए उस राजा के ऊपर गन्धर्व प्रसन्न हो गये । और एक अग्निस्थाली दे दी । उस राजा पुरूरवा ने उस स्थाली को उर्वशी समझा । और यह मानता हुआ वन में विचरण करने लगा ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

स्थालीं न्यस्य वने गत्वा गृहानाध्यायतो निशि ।
त्रेतायां संप्रवृत्तायां मनसि त्र्य्यवर्तत ॥४३॥

पदच्छेद— स्थालीम् न्यस्य वने गत्वा गृहान् आध्यायतः निशि ।
त्रेतायाम् संप्रवृत्तायाम् मनसि त्रयी अवर्तत ॥

शब्दार्थ—

स्थालीम्	१. उस स्थाली को	निशि	६. रात में उर्वशी का
न्यस्य	३. रखकर	त्रेतायाम्	८. त्रेता युग के
वने	२. वन में	संप्रवृत्तायाम्	९. प्रारम्भ में
गत्वा	५. जाकर (राजा)	मनसि	१०. राजा के मन में
गृहान्	४. घर को	त्रयी	११. तीनों वेद
आध्यायतः	७. ध्यान करते रहे (तथा)	अवर्तत	१२. प्रकट हुए

श्लोकार्थ—उस स्थाली को वन में रखकर घर को जाकर राजा पुरूरवा रात में उर्वशी का ध्यान करते रहे। तथा त्रेतायुग के प्रारम्भ में राजा के मन में तीनों वेद प्रकट हुए।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

स्थालीस्थानं गतोऽश्वत्थं शमीगर्भं विलक्ष्य सः ।
तेन द्वे अरणी कृत्वा उर्वशीलोककाम्यया ॥४४॥

पदच्छेद— स्थाली स्थानम् गतः अश्वत्थम् शमीगर्भम् विलक्ष्य सः ।
तेन द्वे अरणी कृत्वा उर्वशी लोक काम्यया ॥

शब्दार्थ—

स्थाली	२. स्थाली के	तेन	९. उससे
स्थानम्	३. स्थान पर	द्वे	१३. दो
गतः	४. जाने पर	अरणी	१४. मन्थन काष्ठ
अश्वत्थम्	५. पीपल को	कृत्वा	१५. बनाये
शमी	६. शमी वृक्ष के	उर्वशी	१०. उर्वशी
गर्भम्	७. कोटर में	लोक	११. लोक की
विलक्ष्य	८. देखकर	काम्यया	१२. कामना करते हुए
सः	१. उस राजा ने		

श्लोकार्थ—उस राजा ने स्थाली के स्थान पर जाने पर पीपल को शमी वृक्ष के कोटर में देखकर उससे उर्वशी लोक की कामना करते हुए दो मन्थन काष्ठ बनाये।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

उर्वशीं मन्त्रतो ध्यायन्नधरारणिमुत्तराम् ।
आत्मानमुभयोर्मध्ये तत् यत् प्रजननं प्रभुः ॥४५॥

पदच्छेद— उर्वशीम् मन्त्रतः ध्यायन् अधर अरणिम् उत्तराम् ।
आत्मानम् उभयोः मध्ये यत् तत् प्रजननम् प्रभुः ॥

शब्दार्थ—

उर्वशीम्	३.	उर्वशी और	आत्मानम्	५.	पुरूरवा तथा
मन्त्रतः	१२.	मन्त्र से	उभयोः	६.	दोनों के
ध्यायन्	१३.	ध्यान करते हुए	मध्ये	७.	बीच में
अधर	१.	नीचे की	यत्	८.	जो काष्ठ था
अरणिम्	२.	अरणि को	तत्	९.	उसको
उत्तराम्	४.	ऊपर की अरणि को	प्रजननम्	१०.	पुत्र रूप में समझकर
			प्रभुः	११.	राजा ने

श्लोकार्थ—नीचे की अरणि को उर्वशी और ऊपर की अरणि को पुरूरवा तथा दोनों के बीच में जो काष्ठ था उसको पुत्र रूप में समझकर राजा ने मन्त्र से ध्यान करते हुए मन्थन किया ।

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

तस्य निर्मन्थनाज्जातो जातवेदा विभावसुः ।
त्रय्या स विद्यया राज्ञा पुत्रत्वे कल्पितस्त्रिवृत् ॥४६॥

पदच्छेद— तस्य निर्मन्थनात् जातः जातवेदाः विभावसुः ।
त्रय्या सः विद्यया राज्ञा पुत्रत्वे कल्पितः त्रिवृत् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उसके	सः	६.	उस
निर्मन्थनात्	२.	मन्थन से	विद्यया	९.	विद्या से
जातः	५.	उत्पन्न हुआ	राज्ञा	७.	राजाने
जातवेदाः	३.	जातवेदा नामक	पुत्रत्वे	११.	पुत्र के रूप में
विभावसुः	४.	अग्नि	कल्पितः	१२.	स्वीकार कर लिया
त्रय्याः	८.	तीनों वेद की	त्रिवृत्	१०.	तीन भागों में विभक्त तीन अग्नियों को

श्लोकार्थ—उसके मन्थन से जातवेदा नामक अग्नि उत्पन्न हुयी । उस राजा ने तीनों वेद की विद्या से तीन भागों में विभक्त तीन अग्नियों को पुत्र के रूप में स्वीकार कर लिया ।

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

तेनायजत यज्ञेशं भगवन्तमधोक्षजम् ।
उर्वशीलोकमन्विच्छन् सर्वदेवमयं हरिम् ॥४७॥

पदच्छेद— तेन अयजत यज्ञेशम् भगवन्तम् अधोक्षजम् ।
उर्वशीलोकम् अन्विच्छन् सर्वं देवमयम् हरिम् ॥

शब्दार्थ—

तेन	४.	उन तीनों अग्नि के द्वारा	उर्वशी	१.	उर्वशी
अयजत	११.	यजन किया	लोकम्	२.	लोक की
यज्ञेशम्	५.	यज्ञपति	अन्विच्छन्	३.	इच्छा से
भगवन्तम्	९.	भगवान्	सर्वं	७.	सर्व
अधोक्षजम्	६.	इन्द्रियातीत	देवमयम्	८.	देवस्वरूप
			हरिम्	१०.	हरि का

श्लोकार्थ—उर्वशी-लोक की इच्छा से राजा ने उन तीनों अग्नियों के द्वारा यज्ञपति, इन्द्रियातीत, सर्व देवस्वरूप भगवान् श्री हरि का ध्यान किया ।

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

एक एव पुरा वेदः प्रणवः सर्ववाङ्मयः ।
देवो नारायणो नान्य एकोऽग्निर्वर्ण एव च ॥४८॥

पदच्छेद— एकः एव पुरा वेदः प्रणवः सर्वं वाङ्मयः ।
देवः नारायणः न अन्यः एकः अग्निः वर्णः एव च ॥

शब्दार्थ—

एकः	२.	एक	देवः	८.	देवता
एव	३.	ही	नारायणः	९.	नारायण ही थे
पुरा	१.	पूर्वकाल में (सत्ययुग में)	न अन्यः	१०.	नहीं दूसरा था
वेदः	४.	वेद	एकः	१२.	एक
प्रणवः	७.	प्रणव ही था	अग्नि वर्णः	११.	अग्नि और वर्ण भी
सर्वं	५.	सम्पूर्ण	एव च	१३	ही था
वाङ्मयः	६.	वाणी रूप में			

श्लोकार्थ—पूर्वकाल में (सत्ययुग में) एक ही वेद सम्पूर्ण वाणीरूप में प्रणव ही था । देवता नारायण ही थे । दूसरा नहीं था । अग्नि और वर्ण भी एक ही था ।

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

पुरूरवस एवासीत् त्रयी त्रेतामुखे नृप ।
अग्निना प्रजया राजा लोकं गान्धर्वमेयिवान् ॥४९॥

पदच्छेद— पुरूरवसः एव आसीत् त्रयी त्रेतामुखे नृप ।
अग्निना प्रजया राजा लोकम् गान्धर्वम् एयिवान् ॥

शब्दार्थ—

पुरूरवसः	३. पुरूरवा से	**अग्निना**	८. अग्नि रूप
एव	४. ही	**प्रजया**	९. सन्तान से
आसीत्	६. हुए	**राजा**	७. राजा पुरूरवा ने
त्रयी	५. तीनों वेद प्रकट	**लोकम्**	११. लोक को
त्रेतामुखे	२. त्रेता के प्रारम्भ में	**गान्धर्वम्**	१०. गन्धर्व
नृप	१. हे राजन् ! परीक्षित्	**एयिवान्**	१२. प्राप्त किया

श्लोकार्थ— हे राजन् ! परीक्षित् ! त्रेता के प्रारम्भ में पुरूरवा से ही तीनों वेद प्रकट हुये । राजा पुरूरवा ने अग्निरूप सन्तान से गन्धर्व लोक को प्राप्त किया ।

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमस्कन्धे
ऐलोपाख्याने चतुर्दशः अध्यायः ॥१४॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

पञ्चदशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— ऐलस्य चोर्वशीगर्भात् षडासन्नात्मजा नृप ।
आयुः श्रुतायुः सत्यायू रयोऽथ विजयो जयः ॥१॥

पदच्छेद— ऐलस्य च उर्वशी गर्भात् षड् आसन् आत्मजाः नृप ।
आयुः श्रुतायुः सत्यायुः रयः अथ विजयः जयः ॥

शब्दार्थ—

ऐलस्य च	२.	पुरूरवा के	आयुः	८.	आयु
च	१५.	और	श्रुतायुः	९.	श्रुतायु
उर्वशी	३.	उर्वशी के	सत्यायुः	१०.	सत्यायु
गर्भात्	४.	गर्भ से	रयः	११.	रय
षड्	५.	छः	अथ	१३.	और
आसन्	७.	हुये	विजयः	१४.	विजय
आत्मजाः	६.	पुत्र	जयः	१२.	जय
नृप	१.	हे राजन् !			

श्लोकार्थ—हे राजन् ! पुरूरवा के उर्वशी के गर्भ से छः पुत्र हुये—आयु, श्रुतायु, सत्यायु, रय, जय, और विजय ॥

द्वितीयः श्लोकः

श्रुतायोर्वसुमान् पुत्रः सत्यायोश्च श्रुतञ्जयः ।
रयस्य सुत एकश्च जयस्य तनयोऽमितः ॥२॥

पदच्छेद— श्रुतायोः वसुमान् पुत्रः सत्यायोः च श्रुतञ्जयः ।
रयस्य सुतः एकः च जयस्य तनयः अमितः ॥

शब्दार्थ—

श्रुतायोः	१.	श्रुतायु का	रयस्य	७.	रय का
वसुमान्	२.	वसुमान् हुआ	सुतः	८.	पुत्र
पुत्रः	३.	पुत्र	एकः	९.	एक
सत्यायोः	५.	सत्यायु का	च	१०.	और
च	४.	और	जयस्य	११.	जय का
श्रुतञ्जयः	६.	श्रुतञ्जय	तनयः	१२.	पुत्र
			अमितः	१३.	अमित हुआ

श्लोकार्थ—श्रुतायु का पुत्र वसुमान् हुआ, और सत्यायु का श्रुतञ्जय, रयका पुत्र एक और जय का पुत्र अमित हुआ ॥

तृतीयः श्लोकः

भीमस्तु विजयस्याथ काञ्चनो होत्रकस्ततः ।
तस्य जह्नुः सुतो गङ्गां गण्डूषीकृत्य योऽपिबत् ।
जह्नोस्तु पूरुस्तत्पुत्रो बलाकश्चात्मजोऽजकः ॥३॥

पदच्छेद— भीमः तु विजयस्य अथ काञ्चनः होत्रकः ततः ।
तस्य जह्नुः सुतः गङ्गाम् कण्डूषीकृत्य यः अपिबत् ।
जह्नोः तु पूरुः तत्पुत्रः बलाकः च आत्मजः अजकः ॥

शब्दार्थ—

भीमः तु	३.	भीम हुआ, भीम का काञ्चन,	गण्डूषीकृत्य	९.	अञ्जलि में लेकर
विजयस्य	२.	विजय का पुत्र	यः अपिबत्	१०.	पी गये थे
अथ	१.	तदनन्तर	जह्नोः	११.	जह्नु का पुत्र
काञ्चनः	४.	काञ्चन का	पुरुः	१२.	पुरु
होत्रकः ततः	५.	होत्रक फिर	तत्पुत्रः	१३.	उसका पुत्र
तस्य जह्नुः	६.	उसका जह्नु हुआ	बलाकः	१४.	बलाक
सुतः	७.	पुत्र	च आत्मजः	१५.	और उसका पुत्र
गङ्गाम् ।	८.	जो गङ्गा को	अजकः ॥	१६	अजक हुआ

श्लोकार्थ—तदनन्तर विजय का पुत्र भीम हुआ, भीम का काञ्चन, काञ्चन का होत्रक, फिर उसका पुत्र जह्नु हुआ। जो गङ्गा को अञ्जलि में लेकर पी गये थे। जह्नु का पुत्र पुरु, उसका पुत्र बलाक और उसका पुत्र अजक हुआ ॥

चतुर्थः श्लोकः

ततः कुशः कुशस्यापि कुशाम्बुस्तनयो वसुः ।
कुशनाभश्च चत्वारो गाधिरासीत् कुशाम्बुजः ॥४॥

पदच्छेद— ततः कुशः कुशस्य अपि कुशाम्बुः तनयः वसुः ।
कुशनाभः च चत्वारः गाधिः आसीत् कुश अम्बुजः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर उससे	कुशनाभः	९.	कुशनाभ
कुशः	२.	कुश	च	८.	और
कुशस्य	३.	कुश के	चत्वारः	१०.	चार पुत्र हुए और
अपि	४.	भी	गाधिः	१२.	गाधि
कुशाम्बुः	५.	कुशाम्बु	आसीत्	१४.	हुए
तनयः	६.	तनय	कुश	११.	कुशाम्बु से
वसुः ।	७.	वसु	अम्बुजः ॥	१३.	उत्पन्न

श्लोकार्थ—तदनन्तर उससे कुश, कुश के भी कुशाम्बु, तनय वसु और कुशनाभ ये चार पुत्र हुए और कुशाम्बु से गाधि उत्पन्न हुए ॥

पञ्चमः श्लोकः

तस्य सत्यवतीं कन्यामृचीकोऽयाचत द्विजः ।
वरं विसदृशं मत्वा गाधिर्भार्गवमब्रवीत् ॥५॥

पदच्छेद— तस्य सत्यवतीम् कन्याम् ऋचीकः अयाचत द्विजः ।
वरम् विसदृशम् मत्वा गाधिः भार्गवम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१. उन गाधि के	वरम्	७. वर को
सत्यवतीम्	२. सत्यवती नामक	विसदृशम्	८. अयोग्य
कन्याम्	३. एक कन्या थी	मत्वा	९. मानकर
ऋचीकः	५. (उसकी) ऋचीक नामक	गाधिः	१०. गाधि ने
अयाचत	६ याचना की	भार्गवम्	११. ऋचीक से
द्विजः ।	४. ब्राह्मण ने	अब्रवीत् ॥	१२. कहा

श्लोकार्थ——उन गाधि के सत्यवती नामक एक कन्या थी । उस कन्या को ऋचीक नामक ब्राह्मण ने याचना की । वर को अयोग्य मानकर गाधि ने ऋचीक मुनि से कहा ॥

षष्ठः श्लोकः

एकतः श्यामकर्णानां हयानां चन्द्रवर्चसाम् ।
सहस्रं दीयतां शुल्कं कन्यायाः कुशिका वयम् ॥६॥

पदच्छेद— एकतः श्यामकर्णानाम् हयानाम् चन्द्रवर्चसाम् ।
सहस्रम् दीयताम् शुल्कं कन्यायाः कुशिकाः वयम् ॥

शब्दार्थ—

एकतः	५. एक ओर	सहस्रम्	९. एक हजार
श्यामकर्णानाम्	६. श्याम कर्ण वाले तथा	दीयताम्	११. दीजिये
हयानाम्	१०. घोड़े	शुल्कम्	४. शुल्क के रूप में
चन्द्र	७. चन्द्रमा के	कन्यायाः	३. कन्या के
वर्चसाम् ।	८. समान उज्ज्वल	कुशिकाः	२. कुशिक वंश के हैं अतः
		वयम् ॥	१. हम

श्लोकार्थ——हम कुशिक वंश के हैं अतः कन्या के शुल्क के रूप में एक ओर श्याम कर्ण वाले तथा चन्द्रमा के समान उज्ज्वल एक हजार घोड़े लाकर दीजिये ॥

सप्तम श्लोकः

इत्युक्तस्तन्मतं ज्ञात्वा गतः स वरुणान्तिकम् ।
आनीय दत्त्वा तानश्वानुपयेमे वराननाम् ॥७॥

पदच्छेद— इति उक्तः तन्मतम् ज्ञात्वा गतः सः वरुण अन्तिकम् ।
आनीय दत्त्वा तान् अश्वान् उपयेमे वराननाम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१. ऐसा	अन्तिकम्	७. पास
उक्तः	२. कहने पर	आनीय	११. लाकर
तन्मतम्	३. उनका आशय	दत्त्वा	१२. राजा को देकर
ज्ञात्वा	४. जानकर	तान्	९. उन
गतः	८. गये (और)	अश्वान्	१०. घोड़ों को
सः	५. वे ऋचीक मुनि	उपयेमे	१४. विवाह कर लिया
वरुण ।	६. वरुण के	वराननाम् ॥	१३. उत्तम मुखवाली कन्या से

श्लोकार्थ—ऐसा कहने पर उनका आशय जानकर वे ऋचीक मुनि वरुण के पास गये। और उन घोड़ों को लाकर राजा को देकर उत्तम मुख वाली कन्या से विवाह कर लिया ॥

अष्टमः श्लोकः

स ऋषिः प्रार्थितः पत्न्या श्वश्र्वा चापत्यकाङ्क्षया ।
श्रपयित्वोभयैर्मन्त्रैश्चरुं स्नातुं गतो मुनिः ॥८॥

पदच्छेद— सः ऋषिः प्रार्थितः पत्न्या श्वश्र्वा च अपत्य काम्यया ।
श्रपयित्वा उभयैः मन्त्रैः चरुम् स्नातुम् गतः मुनिः ॥

शब्दार्थ—

सः	७. वे	श्रपयित्वा	१३. पकाकर
ऋषिः	८. ऋचीक	उभयैः	१०. दोनों प्रकार के
प्रार्थितः	६. प्रार्थना किये जाने पर	मन्त्रैः	११. मन्त्रों से
पत्न्या	३. पत्नी और	चरुम्	१२. चरु को
श्वश्र्वा	५. सास के द्वारा	स्नातुम्	१४. स्नान करने
च	४. और	गतः	१५. चले गये
अपत्य	१. पुत्र	मुनिः ॥	९. मुनि
काम्यया ।	२. प्राप्ति की कामना से		

श्लोकार्थ—पुत्र प्राप्ति की कामना से पत्नी और सास के द्वारा प्रार्थना किये जाने पर वे ऋचीक मुनि दोनों प्रकार के मन्त्रों से चरु को पकाकर स्नान करने चले गये ॥

नवमः श्लोकः

तावत् सत्यवती मात्रा स्वचरुं याचिता सती ।
श्रेष्ठं मत्वा तयायच्छन्मात्रे मातुरदत् स्वयम् ॥९॥

पदच्छेद— तावत् सत्यवती मात्रा स्व चरुम् याचिता सती ।
श्रेष्ठम् मत्वा तया अयच्छत् मात्रे मातुः अदत् स्वयम् ॥

शब्दार्थः—

तावत्	१. तब-तक	श्रेष्ठम्	८. श्रेष्ठ
सत्यवती	३. सत्यवती ने	मत्वा	९. मानकर
मात्रा	५. माता द्वारा (उसके)	तया	४. उस
स्व	६. अपने	अयच्छत्	१२. दे दिया (और)
चरुम्	७. चरु को	मात्रे	११. माता को
याचिता	१०. माँगने पर	मातुः	१३. माता का
सती ।	२. सती	अदत्	१५. खा लिया
		स्वयम् ॥	१४. अपने आप

श्लोकार्थ—तब-तक सती सत्यवती ने उस माता के द्वारा (उसके) अपने चरु को श्रेष्ठ मानकर माँगने पर माता को दे दिया और माता का चरु अपने आप खा लिया ॥

दशमः श्लोकः

तद् विज्ञाय मुनिः प्राह पत्नीं कष्टमकारषीः ।
घोरो दण्डधरः पुत्रो भ्राता ते ब्रह्मवित्तमः ॥१०॥

पदच्छेद— तत् विज्ञाय मुनिः प्राह पत्नीम् कष्टम् अकारषीः ।
घोरः दण्डधरः पुत्रः भ्राता ते ब्रह्म वित्तमः ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. उसे	घोरः	९. घोर
विज्ञाय	२. जानकर	दण्डधरः	१०. दण्ड देने वाला होगा (और)
मुनिः	३. मुनि ऋचीक ने	पुत्रः	८. तुम्हारा पुत्र
प्राह	५. कहा	भ्राता	१२. भाई
पत्नीम्	४. पत्नी से	ते	११. तुम्हारा
कष्टम्	६. तुमने अनर्थ	ब्रह्म	१३. ब्रह्म
अकारषीः ।	७. कर डाला (अब)	वित्तमः ॥	१४. वेत्ताओं में श्रेष्ठ होगा ।

श्लोकार्थ—उसे जानकर मुनि ऋचीक ने पत्नी से कहा तुमने अनर्थ कर डाला । अब तुम्हारा पुत्र घोर दण्ड देनेवाला होगा । और तुम्हारा भाई ब्रह्मवेत्ताओं में श्रेष्ठ होगा ॥

एकादशः श्लोकः

प्रसादितः सत्यवत्या मैवं भूदिति भार्गवः ।
अथ तर्हि भवेत् पौत्रो जमदग्निस्ततोऽभवत् ॥११॥

पदच्छेद— प्रसादितः सत्यवत्या मा एवम् भूत् इति भार्गवः ।
अथ तर्हि भवेत् पौत्रः जमदग्निः ततः अभवत् ॥

शब्दार्थ—

प्रसादितः	२.	प्रसन्न किये जाने पर	अथ	६.	अच्छा
सत्यवत्या	१.	सत्यवती के द्वारा	तर्हिभवेत्	७.	तब तुम्हारा होगा
मा एवम्	३.	ऐसा नहीं होना चाहिए	पौत्रः	८.	पौत्र ऐसा
भूतइति	४.	यह कहने पर	जमदग्निः	१०.	जमदग्नि
भार्गवः ।	५.	ऋचीक मुनि ने कहा	ततः	९.	उससे
			अभवत् ॥	११.	उत्पन्न हुए

श्लोकार्थ—सत्यवती के द्वारा प्रसन्न किये जाने पर ऐसा नहीं होना चाहिए यह कहने पर ऋचीक मुनि ने कहा अच्छा तब तुम्हारा पौत्र ऐसा होगा । उससे जमदग्नि उत्पन्न हुए ॥

द्वादशः श्लोकः

सा चाभूत् सुमहापुण्या कौशिकी लोकपावनी ।
रेणोः सुतां रेणुकां वै जमदग्निरुवाह याम् ॥१२॥

पदच्छेद— सा च अभूत् सुमहा पुण्या कौशिकी लोक पावनी ।
रेणोः सुताम् रेणुकाम् वै जमदग्निः उवाह याम् ॥

शब्दार्थ—

सा	२.	वे सत्यवती	रेणोः	८.	रेणु मुनि की
च	१.	और	सुताम्	९.	पुत्री
अभूत्	७.	हुई	रेणुकाम्	१०.	रेणुका थी
सुमहापुण्या	६.	परमपुण्यमयी नदी	वै	११.	उन
कौशिकी	५.	कौशिकी नाम की	जमदग्निः	१२.	जमदग्नि से
लोक	३.	लोकों को	उवाह	१४.	विवाह किया
पावनी ।	४.	पवित्र करनेवाली	याम् ॥	१३.	जिससे

श्लोकार्थ—और वह सत्यवती लोकों को पवित्र करने वाली कौशिकी नाम की परम पुण्य नदी हुई । रेणु मुनि की पुत्री रेणुका थी । उन जमदग्नि ने जिससे विवाह किया ॥

त्रयोदशः श्लोकः

तस्यां वै भार्गवऋषेः सुता वसुमदादयः ।
यवीयाञ्जज्ञ एतेषां राम इत्यभिविश्रुतः ॥१३॥

पदच्छेद— तस्याम् वै भार्गव ऋषेः सुताः वसुमद् आदयः ।
यवीयान् जज्ञे एतेषाम् रामः इति अभिविश्रुतः ॥

शब्दार्थ—

तस्याम्	२. उस रेणुका के गर्भ से	यवीयान्	१२. सबसे छोटे
वै	१. निश्चित ही	जज्ञे	१४. उत्पन्न हुए
भार्गव	३. जमदग्नि	एतेषाम्	८. उनमें
ऋषेः	४. ऋषि के	रामः	११. परशुराम
सुताः	७. पुत्र हुए	इति	१२. इस नाम से
वसुमद्	५. वसुमान्	अभिविश्रुतः ॥	१३. प्रसिद्ध पुत्र हुए
आदयः ।	६. आदि		

श्लोकार्थ—निश्चित ही उस रेणुका के गर्भ से वसुमान् आदि पुत्र हुए। उनमें सबसे छोटे परशुराम इस नाम से प्रसिद्ध पुत्र हुए ॥

चतुर्दशः श्लोकः

यमाहुर्वासुदेवांशं हैहयानां कुलान्तकम् ।
त्रिःसप्तकृत्वो य इमां चक्रे निःक्षत्रियां महीम् ॥१४॥

पदच्छेद— यम् आहुः वासुदेव अंशम् हैहयानाम् कुल अन्तकम् ।
त्रिः सप्त कृत्वः यः इमाम् चक्रे निःक्षत्रियाम् महीम् ॥

शब्दार्थ—

यम्	१. जिन परशुराम को	त्रिः सप्तकृत्वः	११. तीन, सात इक्कीस बार
आहुः	७. कहा गया है	यः	८. और जिन्होंने
वासुदेव	२. भगवान् के	इमाम्	९. इस
अंशम्	३. अंश से उत्पन्न	चक्रे	१३. कर दिया था
हैहयानाम्	४. हैहय	निःक्षत्रियाम्	१२. क्षत्रिय रहित
कुल	५. वंश का	महीम् ॥	१०. पृथ्वी को
अन्तकम् ।	६. नाश करने वाला भी		

श्लोकार्थ—जिन परशुराम को भगवान् के अंश से उत्पन्न तथा हैहय वंश का नाश करने वाला कहा गया है। और जिन्होंने इस पृथ्वी को तीन, सात इक्कीस बार क्षत्रिय रहित कर दिया था ॥

पञ्चदशः श्लोकः

दुष्टं क्षत्रं भुवो भारमब्रह्मण्यमनीनशत् ।
रजस्तमोवृतमहन् फल्गुन्यपि कृतेंऽहसि ॥१५॥

पदच्छेद— दुष्टम् क्षत्रम् भुवः भारम् अब्रह्मण्यम् अनीनशत् ।
रजः तमः वृतम् अहन् फल्गुनि अपि कृते अंहसि ॥

शब्दार्थ—

दुष्टम्	१.	दुष्ट	रजः तमः	५.	रजोगुण तमोगुण से
क्षत्रम्	७.	क्षत्रियों का	वृतम्	६.	युक्त
भुवः	२.	पृथ्वी के	अहन्	१२.	मार दिया
भारम्	३.	भारस्वरूप	फल्गुनि	९.	थोड़ा सा
अब्रह्मण्यम्	४.	ब्राह्मणों के अभक्त	अपि	११	भी
अनीनशत् ।	८.	नाश कर दिया	कृतेअंहसि ॥	१०.	करने पर अपराध

श्लोकार्थ— दुष्ट, पृथ्वी के भार स्वरूप, ब्राह्मणों के अभक्त और रजोगुण तथा तमो गुण से युक्त क्षत्रियों का थोड़ा सा अपराध करने पर भी मार दिया ॥

षोडशः श्लोकः

राजोवाच—किं तदंहो भगवतो राजन्यैरजितात्मभिः ।
कृतं येन कुलं नष्टं क्षत्रियाणामभीक्ष्णशः ॥१६॥

पदच्छेद— किम् तत् अंहः भगवतः राजन्यैः अजित आत्मभिः ।
कृतम् येन कुलम् नष्टम् क्षत्रियाणाम् अभीक्ष्णशः ॥

शब्दार्थ—

किम्	५.	कौन सा	कृतम्	८.	किया था ।
तत्	६.	वह	येन	९.	जिस कारण (उन्होंने)
अंहः	७	अपराध	कुलम्	११.	वंश का
भगवतः	४.	भगवान् परशुराम का	नष्टम्	१३.	संहार किया
राजन्यैः	३.	क्षत्रियों ने	क्षत्रियाणाम्	१०.	क्षत्रियों के
अजित	१.	अजित	अभीक्ष्णशः ॥	१२.	बार-बार
आत्मभिः ॥	२.	इन्द्रिय			

श्लोकार्थ—अजितेन्द्रिय क्षत्रियों ने भगवान् परशुराम का कौन सा वह अपराध किया था । जिस कारण उन्होंने क्षत्रियों के वंश का बार-बार संहार किया ॥

सप्तदशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—हैहयानामधिपतिरर्जुनः क्षत्रियर्षभः ।
दत्तं नारायणस्यांशमाराध्य परिकर्मभिः ॥१७॥

पदच्छेद— हैहयानाम् अधिपतिः अर्जुन क्षत्रिय ऋषभः ।
दत्तम् नारायणस्य अंशम् आराध्य परिकर्मभिः ॥

शब्दार्थ—

हैहयानाम्	१. हैहयों के	दत्तम्	८. दत्तात्रेय की
अधिपतिः	२. स्वामी	नारायणस्य	६. नारायण के
अर्जुनः	५. अर्जुन ने	अंशम्	७. अंश से उत्पन्न
क्षत्रिय	३. क्षत्रियों में	आराध्य	१०. आराधना की
ऋषभः ।	४. श्रेष्ठ	परिकर्मभिः ॥	९. सेवा शुश्रूषा के द्वारा

श्लोकार्थ—हैहयों के स्वामी; क्षत्रियों में श्रेष्ठ अर्जुन ने नारायण के अंश से उत्पन्न दत्तात्रेय की सेवा शुश्रूषा के द्वारा आराधना की ॥

अष्टादशः श्लोकः

बाहून् दशशतं लेभे दुर्धर्षत्वमरातिषु ।
अव्याहतेन्द्रियौजः श्रीतेजोवीर्ययशोबलम् ॥१८॥

पदच्छेद— बाहून् दशशतम् लेभे दुर्धर्षत्वम् अरातिषु ।
अव्याहत इन्द्रिय ओजः श्रीतेजः वीर्य यशः बलम् ॥

शब्दार्थ—

बाहून्	२. बाँहें	इन्द्रिय	६. इन्द्रियों का
दशशतम्	१. उन्होंने दस सौ (एक हजार)	ओजः	७. बल
लेभे	१३. प्राप्त किया	श्री	८. सम्पत्ति
दुर्धर्ष	४. पराजित न होना	तेजः	९. तेज
त्वम् अरातिषु	३. शत्रुओं से	वीर्य	१०. वीरता
अव्याहत ।	५. अबाध	यशः	११. यश और
		बलम् ॥	१२. बल

श्लोकार्थ—उन्होंने उनसे एक हजार बांहें, शत्रुओं से पराजित न होना, अबाध इन्द्रियों का बल, सम्पत्ति, तेज, वीरता, यश और बल प्राप्त किये ॥

एकोनविंशः श्लोकः

योगेश्वरत्वमैश्वर्यं गुणा यत्राणिमादयः ।
चचाराव्याहतगतिर्लोकेषु पवनो यथा ॥१९॥

पदच्छेद— योगेश्वर त्वम् ऐश्वर्यम् गुणाः यत्र अणिमादयः ।
चचार अव्याहत गतिः लोकेषु पवनः यथा ॥

शब्दार्थ—

योगेश्वरत्वम्	१.	वह योगेश्वर हो गया और ऐसा	चचार	११.	विचरण करने लगा
ऐश्वर्यम्	२.	ऐश्वर्य	अव्याहत	९.	निर्बाध
गुणाः	५.	गुण हैं	गतिः	१०.	गति से
यत्र	३.	जिसमें	लोकेषु	६.	संसार में
अणिमादयः ।	४.	अणिमायादि	पवनः	७.	वायु के
			यथा ॥	८.	समान

श्लोकार्थ—वह योगेश्वर हो गया और ऐसा ऐश्वर्य प्राप्त किया । जिसमें अणिमा आदि गुण हैं । तव वह संसार में वायु के सनान निर्बाध गति से विचरण करने लगा ॥

विंशः श्लोकः

स्त्रीरत्नैरावृतः क्रीडन् रेवाम्भसि मदोत्कटः ।
वैजयन्तीं स्रजं बिभ्रद् रुरोध सरितं भुजैः ॥२०॥

पदच्छेद— स्त्री रत्नैः आवृतः क्रीडन् रेवा अम्भसि मद उत्कटः ।
वैजयन्तीम् स्रजम् बिभ्रद् रुरोध सरितम् भुजैः ॥

शब्दार्थ—

स्त्री	६.	स्त्रियों के	वैजयन्तीम्	१.	(एक बार सहस्रार्जुन) वैजयन्ती
रत्नैः	५.	उत्तम	स्रजम्	२.	माला को
आवृतः	७.	साथ	बिभ्रद्	३.	धारण करके
क्रीडन्	१०.	क्रीडा करते हुए	रुरोध	१३.	रोक दिया
रेवा	८.	नर्मदा के	सरितम्	१२.	नदी के प्रवाह को
अम्भसि	९.	जल में	भुजैः ॥	११.	हाथों से
मद उत्कटः ।	४.	मदोन्मत्त होकर			

श्लोकार्थ—एक बार सहस्रार्जुन वैजयन्ती माला को धारण करके मदोन्मत्त होकर उत्तम स्त्रियों के साथ नर्मदा के जल में क्रीडा करते हुए हाथों से नदी के प्रवाह को रोक दिया ॥

एकविंशः श्लोकः

विप्लावितं स्वशिबिरं प्रतिस्रोतः सरिज्जलैः ।
नामृष्यत् तस्य तद् वीर्यं वीरमानी दशाननः ॥२१॥

पदच्छेद — विप्लावितम् स्वशिबिरम् प्रति स्रोतः सरित् जलैः ।
न अमृष्यत् तस्य तत् वीर्यम् वीरमानी दशाननः ॥

शब्दार्थ—

विप्लावितम्	५.	बहाये जाते हुए देखकर	न अमृष्यत्	११.	नहीं सहन किया
स्वशिबिरम्	४.	अपने शिविर को	तस्य	८.	उसका
प्रतिस्रोतः	३.	अनेक प्रवाहों से	तत्	९.	वह
सरित्	१.	नदी के	वीर्यम्	१०.	पराक्रम
जलैः ।	२.	जल के	वीरमानी	६.	अपने को वीर मानने वाले
			दशाननः ॥	७.	रावण ने

श्लोकार्थ—नदी के जल के अनेक प्रवाहों से अपने शिविर को बहाये जाते हुए देखकर अपने को वीर मानने वाले रावण ने उसका वह पराक्रम नहीं सहन किया ॥

द्वाविंशः श्लोकः

गृहीतो लीलया स्त्रीणां समक्षं कृतकिल्बिषः ।
माहिष्मत्यां संनिरुद्धो मुक्तो येन कपिर्यथा ॥२२॥

पदच्छेद— गृहीतः लीलया स्त्रीणाम् समक्षम् कृत किल्बिषः ।
माहिष्मत्याम् संनिरुद्धः मुक्तः येन कपिः यथा ॥

शब्दार्थ—

गृहीतः	६.	पकड़ लिया (और)	माहिष्मत्याम्	९.	माहिष्मती पुरी में लाकर
लीलया	५.	लीला पूर्वक	संनिरुद्धः	१०.	बन्द कर दिया तथा
स्त्रीणाम्	१.	स्त्रियों के	मुक्तः	१२.	छोड़ दिया
समक्षम्	२.	सामने	येन	११.	जिसे पुलस्त्य ऋषि के कहने पर
कृत	४.	करने वाले (उस रावण को)	कपिः	७.	बन्दर के
किल्बिषः	३.	अपराध	यथा ॥	८.	समान

श्लोकार्थ—स्त्रियों के सामने अपराध करने वाले उस रावण को लीला पूर्वक पकड़ लिया और बन्दर के समान माहिष्मतीपुरी में लाकर बंद कर दिया तथा जिसे पुलस्त्य ऋषि के कहने पर छोड़ दिया ।

त्रयोविंशः श्लोकः

स एकदा तु मृगयां विचरन् विपिने वने ।
यदृच्छयाऽऽश्रमपदं जमदग्नेरुपाविशत् ॥२३॥

पदच्छेद— सः एकदा तु मृगयाम् विचरन् विपिने वने ।
यदृच्छया आश्रम पदम् जमदग्नेः उपाविशत् ॥

शब्दार्थ—

सः	१. वह	यदृच्छया	७. दैव वश
एकदा	२. एक बार	आश्रम	९. आश्रम
तु मृगयाम्	५. शिकार	पदम्	१०. पर
विचरन्	६. खेलते हुये	जमदग्नेः	८. जमदग्नि के
विपिने	३. घोर	उपाविशत् ।	११. पहुँच गया
वने ॥	४. जंगल में		

श्लोकार्थ—वह एक बार घोर जङ्गल में शिकार खेलते हुये दैववश जमदग्नि के आश्रम पर पहुँच गया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

तस्मै स नरदेवाय मुनिरर्हणमाहरत् ।
ससैन्यामात्यवाहाय हविष्मत्या तपोधनः ॥२४॥

पदच्छेद— तस्मै सः नरदेवाय मुनिः अर्हणम् आहरत् ।
ससैन्य अमात्य वाहाय हविष्मत्या तपोधनः ॥

शब्दार्थ—

तस्मै	१. उस सहस्रबाहु	ससैन्य	७. सेना सहित
सः	३. उन	अमात्य	८. मंत्री
नरदेवाय	२. राजा का	वाहाय	९. वाहनों के
मुनिः	५. मुनि ने	हविष्मत्या	६. कामधेनु के प्रभाव से
अर्हणम्	१०. सत्कार	तपोधनः ।	४. तपस्वी
आहरत् ।	११. किया		

श्लोकार्थ—उस सहस्रबाहु राजा का तपस्वी मुनि ने कामधेनु के प्रभाव से सेना, मंत्री और वाहनों के सहित सत्कार किया ॥

पञ्चविंश श्लोकः

स वीरस्तत्र तद् दृष्ट्वा आत्मैश्वर्यातिशायनम् ।
तन्नाद्रियताग्निहोत्र्यां साभिलाषः स हैहयः ।।२५।।

पदच्छेद— सः वीरः तत्र तत् दृष्ट्वा आत्म ऐश्वर्य अतिशायनम् ।
तत् न आद्रियत अग्नि होत्र्याम् साभिलाषः सः हैहयः ।।

शब्दार्थ—

सः	१. उस	अतिशायनम्	७. बढ़ा चढ़ा
वीरः	२. वीर ने	तत् न	९. उसका नहीं
तत्र	३. वहाँ	आद्रियत	१०. आदर किया (किन्तु)
तत्	४. उनके ऐश्वर्य को	अग्निहोत्र्याम्	१३. कामधेनु की
दृष्ट्वा	८. देख कर	साभिलाषः	१४. अभिलाषा हो गयी
आत्म	५. अपने	सः	११. उस
ऐश्वर्य	६. ऐश्वर्य से	हैहयः ।।	१२. राजा को

श्लोकार्थ—उस वीर ने वहाँ उनके ऐश्वर्य को अपने से बढ़ा-चढ़ा देखकर उसका आदर नहीं किया । किन्तु उस राजा को कामधेनु की अभिलाषा हो गयी ।।

षड्विंशः श्लोकः

हविर्धानीमृषेर्दर्पान्नरान् हर्तुमचोदयत् ।
ते च माहिष्मतीं निन्युः सवत्सां क्रन्दतीं बलात् ।।२६।।

पदच्छेद— हविर्धानीम् ऋषेः दर्पात् नरान् हर्तुम् अचोदयत् ।
ते च माहिष्मतीम् निन्युः सवत्साम् क्रन्दतीम् बलात् ।।

शब्दार्थ—

हविर्धानीम्	३. कामधेनु को	ते च	७. वे लोग
ऋषेः	२. मुनि की	माहिष्मतीम्	११. माहिष्मती नगरी
दर्पात्	१. घमंड के कारण राजा ने	निन्युः	१२. गये
नरान्	५. सेवकों को	सवत्साम्	८. बछड़े के साथ
हर्तुम्	४. हरण करने के लिये	क्रन्दतीम्	९. क्रन्दन करती हुई गाय को
अचोदयत् ।	६. प्रेरित किया	बलात् ।।	१०. बल पूर्वक

श्लोकार्थ—घमंड के कारण राजा ने मुनि की कामधेनु को हरण करने के लिये सेवकों को प्रेरित किया । वे लोग बछड़े के साथ क्रन्दन करती हुई गाय को माहिष्मती नगरी ले गये ।।

सप्तविंशः श्लोकः

अथ राजनि निर्याते राम आश्रम आगतः ।
श्रुत्वा तत् तस्य दौरात्म्यं चुक्रोधाहिरिवाहतः ॥२७॥

पदच्छेद— अथ राजनि निर्याते रामः आश्रमे आगतः ।
श्रुत्वा तत् तस्य दौरात्म्यम् चुक्रोध अहिः इव आहतः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	तत्	८.	वह
राजनि	२.	राजा के	तस्य	७.	उसकी
निर्याते	३.	चले जाने पर	दौरात्म्यम्	९.	दुष्टता
रामः	४.	परशुराम	चुक्रोध	१४.	क्रोध से तिलमिला उठे
आश्रमे	५.	आश्रम पर	अहिः	१२.	साँप के
आगतः	६.	आये और (उन्होंने)	इव	१३.	समान
श्रुत्वा ।	१०.	सुनकर	आहतः ॥	११.	चोट खाये हुए

श्लोकार्थ— तदनन्तर राजा के चले जाने पर परशुराम आश्रम पर आये । और उन्होंने उसकी वह दुष्टता सुनकर चोट खाये हुए साँप के समान क्रोध से तिलमिला उठे ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

घोरमादाय परशुं सतूणं चर्म कार्मुकम् ।
अन्वधावत दुर्धर्षो मृगेन्द्र इव यूथपम् ॥२८॥

पदच्छेद— घोरम् आदाय परशुम् सतूणम् चर्म कार्मुकम् ।
अन्वधावत दुर्धर्षः मृगेन्द्रः इव यूथपम् ॥

शब्दार्थ—

घोरम्	१.	परशुराम भयंकर	कार्मुकम्	५.	धनुष
आदाय	६.	लेकर (उसके)	अन्वधावत्	७.	पीछे दौड़ पड़े
परशुम्	२.	फरसा	दुर्धर्षः	९.	किसी से न दबने वाला
सतूणम्	३.	तरकस सहित	मृगेन्द्रः	१०.	सिंह
चर्म	४.	ढाल और	इव ।	८.	जैसे
			यूथपम् ॥	११.	हाथी पर टूट पड़े

श्लोकार्थ— परशुराम ने भयंकर फरसा, तरकस सहित ढाल और धनुष लेकर उसके पीछे दौड़ पड़े । जैसे किसी से न दबने वाला सिंह हाथी पर टूट पड़े ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

तमापतन्तं भृगुवर्यमोजसा धनुर्धरं बाणपरश्वधायुधम् ।
ऐणेयचर्माम्बरमर्कधामभिर्युतं जटाभिर्ददृशे पुरीं विशन् ॥२९॥

पदच्छेद— तम् आ पतन्तम् भृगुवर्यम् ओजसा धनुर्धरम् बाण परश्वध आयुधम् ।
ऐणेय चर्म अम्बरम् अर्क धामभिः युतम् जटाभिः ददृशे पुरीं विशन् ॥

शब्दार्थ—

तम्	१३	उन	ऐणेयचर्म	५.	मृग चर्म रूपी
आपतन्तम्	१२.	आते हुए	अम्बरम्	६.	वस्त्र धारण किये
भृगुवर्यम्	१४.	परशुराम को	अर्क	७.	सूर्य रूपी
ओजसा	११.	बड़े वेग से	धामभिः	८.	किरणों के समान
धनुर्धरम्	१.	धनुर्धारी	युतम्	१०.	युक्त
बाण	२.	बाण और	जटाभिः	९.	जटाओं से
परश्वधम्	३.	फरसा रूपी	ददृशे	१६.	देखा
आयुधम् ।	४.	अस्त्र लिये हुए	पुरीं विशन् ॥	१५.	नगर में प्रवेश करते हुए

श्लोकार्थ—धनुर्धारी बाण और फरसा रूपी अस्त्र लिये हुए, मृगचर्म रूपी वस्त्र धारण किये, सूर्य की किरणों के समान जटाओं से युक्त और बड़े वेग से आते हुए उन परशुराम को नगर में प्रवेश करते हुए सहस्रार्जुन ने देखा ॥

त्रिंशः श्लोकः

अचोदयद्धस्तिरथाश्वपत्तिभिर्गदासिबाणर्ष्टिशतघ्निशक्तिभिः ।
अक्षौहिणीः सप्तदशातिभीषणास्ता राम एको भगवानसूदयत् ॥३०॥

पदच्छेद— अचोदयत् हस्तिरथ अश्वपत्तिभिः गदासिबाण ऋष्टिशतघ्नि शक्तिभिः ।
अक्षौहिणीः सप्तदश अति भीषणाःताः रामः एकः भगवान् असूदयत् ॥

शब्दार्थ—

अचोदयत्	१०.	भेजा	सप्तदश	७.	सत्रह
हस्ति रथ	१.	राजा सहस्रार्जुन ने हाथी रथ	दैः		
अश्वपत्तिभिः	२.	घोड़े पैदल	अतिभीषणाःताः	६.	अत्यन्त भयंकर उस सेना को
ऋष्टिशतघ्नि	४.	ऋष्टि शतघ्नी और	रामः	१२.	परशुराम
गदाअसि बाण	३.	गदा, तलवार, बाणयुक्त	एकः	१३.	अकेले ही
शक्तिभिः ।	५.	शक्ति आदि अस्त्रोंसे	भगवान्	११.	भगवान्
अक्षौहिणीः	८.	अक्षौहिणी सेना को	असूदयत् ।	१४	नष्ट कर दिया

श्लोकार्थ—राजा सहस्रार्जुन ने हाथी, रथ, घोड़े, पैदल, गदा, बाण तलवार, ऋष्टि, शतघ्नी और अस्त्रों से युक्त, अत्यन्त भयंकर उस सत्रह अक्षौहिणी सेना को भेजा । उस सेना को भगवान् परशुराम ने अकेले ही नष्ट कर दिया ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

यतो यतोऽसौ प्रहरत्परश्वधो मनोऽनिलौजाः परचक्रसूदनः ।
ततस्ततश्छिन्नभुजोरुकन्धरा निपेतुरुर्व्यां हतसूतवाहनाः ॥३१॥

पदच्छेद— यतः यतः असौ प्रहरत् परश्वधः मनः अनिलओजाः परचक्र सूदनः ।
ततः ततः छिन्नभुज ऊरु कन्धराः निपेतुः उर्व्यां हत सूत वाहनाः ॥

शब्दार्थ—

यतः	५.	जहाँ	ततः ततः	९.	वहाँ-वहाँ
यतः	६.	जहाँ	छिन्न	१०.	कटी हुई
असौ	४.	वे परशुराम	भुज ऊरु	११.	बाहें जाघें
प्रहरत्	८.	प्रहार करते थे	कन्धराः	१२.	कन्धे वाले वीर
परश्वधः	७.	फरसे का	निपेतुः	१६.	गिर पड़ते थे
मनः	१.	मन और	उर्व्याम्	१५.	पृथ्वी पर
अनिलओजाः	२.	वायु के समान गति वाले	हत	१४.	नष्ट होकर
परचक्रसूदनः ।	३.	शत्रु सेना को नष्ट करने वाले	सूतवाहनाः ॥	१३.	सारथी और वाहनों के साथ

श्लोकार्थ—मन और वायु की गति के समान गति वाले, शत्रु सेना को नष्ट करने वाले वे परशुराम जहाँ-जहाँ फरसे का प्रहार करते थे, वहाँ-वहाँ कटी हुई बाँहे, जाँघें वाले वीर सारथी और वाहनों के साथ नष्ट होकर पृथ्वी पर गिर पड़ते थे ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

दृष्ट्वा स्वसैन्यं रुधिरौघकर्दमे रणाजिरे रामकुठारसायकैः ।
विवृक्णचर्मध्वजचापविग्रहं निपातितं हैहय आपतद् रुषा ॥३२॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा ससैन्यम रुधिर ओघ कर्दमे रणाजिरे राम कुठार सायकैः ।
विवृक्ण चर्मध्वज चाप विग्रहन् निपातितम् हैहय आपतत् रुषा ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	१२.	देखकर	विवृक्ण	३	कटे हुए
स्वसैन्यम	६	अपने सैनिकों को	चर्मध्वज	४	ढाल ध्वजा
रुधिर	७.	रक्त मे	चापविग्रहम्	५	बाण और शरीर वाले
ओघ	८.	लथ-पथ हो	निपातितम्	११	गिरे हुए
कर्दमे	१०.	कीचड़ में	हैहय	१३.	सहस्रार्जुन
रणाजिरे	९.	रण भूमि की	आपतत्	१५.	टूट पड़ा
रामकुठार	१	परशुराम के फरसे और	रुषा	१४.	क्रोध से उन पर
सायकैः ॥	२.	बाणों से			

श्लोकार्थ—परशुराम के फरसे और बाणों से कटे हुए ढाल, ध्वजा, बाण और शरीर वाले अपने सैनिकों को रक्त से लथ-पथ हो रण भूमि की कीचड़ में गिरे हुए देखकर सहस्रार्जुन क्रोध से उन परशुराम पर टूट पड़ा ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

अथार्जुनः पञ्चशतेषु बाहुभिर्धनुःषु बाणान् युगपत् स सन्दधे ।
रामाय रामोऽस्त्रभृतां समग्रणीस्तान्येकधन्वेषुभिराच्छिनत् समम् ॥३३॥

पदच्छेद— अथ अर्जुनः पञ्चशतेषु बाहुभिः धनुःषु बाणान् युगपत् सः सन्दधे ।
रामाय रामः अस्त्र भृताम् समग्रणीः तान् एकधन्वेषुभिः आच्छिनत् समम् ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	रामाय	१०.	परशुराम पर (छोड़ा)
अर्जुनः	३.	सहस्रार्जुन ने	रामः	१३.	परशुराम ने
पञ्चशतेषु	४.	पाँच सौ	अस्त्रभृताम्	११.	अस्त्रधारियों में
बाहुभिः	५.	बाँहों से	समग्रणीः	१२.	सर्वश्रेष्ठ
धनुःषु	६	धनुषों पर	तानि	१५.	उन सब बाणों को
बाणान्	८.	बाणों को	एकधन्वेषुभिः	१४.	एक ही धनुष के बाणों से
युगपत्	७.	एक साथ	आच्छिनत्	१७.	काट दिया
सः	२.	वह	समम् ॥	१६.	एक साथ ही
सन्दधे ।	९.	चढ़ाया (और)			

श्लोकार्थ—तदनन्तर उस सहस्रार्जुन ने पाँच बाहों में धनुषों पर एक साथ बाणों को चढ़ाया और परशुराम पर छोड़ा । अस्त्र धारियों में सर्वश्रेष्ठ परशुराम ने एक ही धनुष के बाणों से उन सब बाणों को एक साथ ही काट दिया ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

पुनः स्वहस्तैरचलान् मृधेऽङ्घ्रिपानुत्क्षिप्य वेगादभिधावतो युधि ।
भुजान् कुठारेण कठोरनेमिना चिच्छेद रामः प्रसभं त्वहेरिव ॥३४॥

पदच्छेद— पुनः स्वहस्तैः अचलान् मृधे अङ्घ्रिपान् उत्क्षिप्य वेगात् अभिधावतः युधि ।
भुजान् कुठारेण कठोर नेमिना चिच्छेद रामः प्रसभम् तु अहेः इव ॥

शब्दार्थ—

पुनः	१.	फिर सहस्रार्जुन	युधि	९.	युद्ध में परशुराम पर
स्व	३	अपने	भुजान्	१७.	उसकी भुजाओं को
हस्तैः	४.	हाथों से	कुठारेण	१५.	फरसे से
अचलान्	५.	पर्वतों को	कठोर	१३.	तीखी
मृधे	२.	युद्ध भूमि में	नेमिना	१४.	धारवाले
अङ्घ्रिपान्	६.	वृक्षों को	चिच्छेद	९.	काट दिया
उत्क्षिप्य	७.	उखाड़कर	रामः	१२.	परशुराम ने
वेगात्	८.	बडे वेग से	प्रसभम्	१८.	फुर्ती के साथ
अभिधावतः ।	१०.	झपटा किन्तु	अहेः	१६.	साँप के
			इव ॥	१७.	समान

श्लोकार्थ—फिर सहस्रार्जुन युद्ध भूमि में अपने हाथों से पर्वतों एवं वृक्षों को उखाड़कर बड़े वेग से युद्ध में परशुराम पर झपटा । किन्तु परशुराम ने तीखी धार वाले फरसे से साँप के समान उसकी भुजाओं को फुर्ती के साथ काट दिया ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

कृत्तबाहोः शिरस्तस्य गिरेः शृङ्गमिवाहरत् ।
हते पितरि तत्पुत्रा अयुतं दुद्रुवुर्भयात् ॥३५॥

पदच्छेद— कृत्त बाहोः शिरः तस्य गिरेः शृङ्गम् इव आहरत् ।
हते पितरि तत् पुत्राः अयुतम् दुद्रुवुः भयात् ॥

शब्दार्थ—

कृत्त	२.	कट जाने पर	हते	१०	मार दिये जाने पर
बाहोः	१.	बाँहें	पितरि	९.	पिता के
शिरः	७.	सिर को	तत्	११.	उसके
तस्य	६.	उसको	पुत्राः	१३.	पुत्र
गिरेः	३.	पहाड़ की	अयुतम्	१२.	दस हजार
शृङ्गम्	४.	चोटी के	दुद्रुवुः	१५.	भाग गये
इव	५.	समान	भयात् ॥	१४.	डर कर
आहरत् ।	८.	काट दिया			

श्लोकार्थ—बाँहें कट जाने पर पहाड़ की चोटी के समान उसके सिर को काट दिया । पिता के मार दिये जाने पर उसके दस हजार पुत्र डर कर भाग गये ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

अग्निहोत्रीमुपावर्त्य सवत्सां परवीरहा ।
समुपेत्याश्रमं पित्रे परिक्लिष्टां समर्पयत् ॥३६॥

पदच्छेद— अग्निहोत्रीम् उपावर्त्य सवत्साम् पर वीरहा ।
समुपेत्य आश्रमम् पित्रे परिक्लिष्टाम् समर्पयत् ॥

शब्दार्थ—

अग्निहोत्रीम्	२.	कामधेनु को	समुपेत्य	८.	आकर
उपावर्त्य	४.	लौटाकर	आश्रमम्	७.	आश्रम में
सवत्साम्	३.	बछड़े सहित	पित्रे	९.	पिता को
पर	५.	शत्रु	परिक्लिष्टाम्	१.	दुःखी
वीरहा ।	६.	वीरों को मारने वाले परशुराम ने	समर्पयत् ॥	१०.	सौंप दिया

श्लोकार्थ—दुःखी कामधेनु को बछड़े सहित लौटाकर शत्रु वीरों को मारने वाले परशुराम ने आश्रम में आकर पिता को सौंप दिया ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

स्वकर्म तत्कृतं रामः पित्रे भ्रातृभ्य एव च ।
वर्णयामास तच्छ्रुत्वा जमदग्निरभाषत ।।३७।।

पदच्छेद— स्वकर्म तत्कृतम् रामः पित्रे भ्रातृभ्यः एव च ।
वर्णयामास तत् श्रुत्वा जमदग्निः अभाषत ।।

शब्दार्थ—

स्वकर्म	३. वह कर्म	वर्णयामास	७. कह सुनाया
तत्कृतम्	२. अपना किया	तत्	८. वह
रामः	१. परशुराम ने	श्रुत्वा	९. सुनकर
पित्रे	४. पिता को	जमदग्निः	१०. जमदग्नि ने
भ्रातृभ्यः	६. भाइयों को	अभाषत ।।	११. कहा
एव च ।	५. और		

श्लोकार्थ—परशुराम ने अपना किया वह कर्म पिता को और भाइयों को कह सुनाया । वह सुनकर जमदग्नि ने कहा ।।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

राम राम महाबाहो भवान् पापमकारषीत् ।
अवधीन्नरदेवं यत् सर्वदेवमयं वृथा ।।३८।।

पदच्छेद— राम राम महाबाहो भवान् पापम् अकारषीत् ।
अवधीत् नरदेवम् यत् सर्वदेव मयम् वृथा ।।

शब्दार्थ—

राम राम	२. हे परशुराम	अवधीत्	११. मार दिया
महाबाहो	१. हे महापराक्रमी	नरदेवम्	९. राजा को
भवान्	३. आपने	यत्	६. जो कि
पापम्	४. पाप	सर्वदेव	७. सभी देवों के
अकारषीत् ।	५. किया है	मयम्	८. स्वरूप
		वृथा ।।	१०. व्यर्थ ही

श्लोकार्थ—हे महापराक्रमी परशुराम ! आपने पाप किया है, जो कि सभी देवों के स्वरूप राजा को व्यर्थ ही मार दिया ।।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

वयं हि ब्राह्मणास्तात क्षमयार्हणतां गताः ।
यया लोकगुरुर्देवः पारमेष्ठ्यमगात् पदम् ॥३९॥

पदच्छेद— वयम् हि ब्राह्मणाः तात क्षमया अर्हणताम् गताः ।
यया लोक गुरुदेवः पारमेष्ठ्यम् अगात् पदम् ॥

शब्दार्थ—

वयम्	२.	हम	यया	८.	जिस क्षमा से
हि	४.	निश्चित रूप से	लोक	९.	लोकों के
ब्राह्मणाः	३.	ब्राह्मण	गुरुदेवः	१०.	गुरु देवता ब्रह्मा जी ने
तात	१.	हे बेटा	पारमेष्ठ्यम्	११.	ब्रह्म
क्षमया	५.	क्षमा के प्रभाव से ही	अगात्	१३.	प्राप्त किया है
अर्हणताम्	६.	पूजनीय	पदम् ॥	१२.	पद को
गताः ।	७.	हुये हैं			

श्लोकार्थ—हे बेटे ! हम ब्राह्मण निश्चित रूप से क्षमा के प्रभाव से ही पूजनीय हुये हैं । जिस क्षमा से लोकों के गुरु देवता ब्रह्मा जी ने ब्रह्म पद को प्राप्त किया है ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

क्षमया रोचते लक्ष्मीर्ब्राह्मी सौरी यथा प्रभा ।
क्षमिणामाशु भगवांस्तुष्यते हरिरीश्वरः ॥४०॥

पदच्छेद— क्षमया रोचते लक्ष्मीः ब्राह्मी सौरी यथा प्रभा ।
क्षमिणाम् आशु भगवान् तुष्यते हरिः ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

क्षमया	१.	क्षमा के प्रभाव से	क्षमिणाम्	८.	क्षमावानों पर
रोचते	७.	चमक उठती है	आशु	१२.	शीघ्र
लक्ष्मीः	३.	शोभा	भगवान्	१०.	भगवान्
ब्राह्मी	२.	ब्राह्मणों की	तुष्यते	१३.	प्रसन्न होते हैं
सौरी	४.	सूर्य की	हरिः	११.	हरि
यथा	६.	समान	ईश्वरः ॥	९.	सर्वशक्तिमान्
प्रभा ।	५.	कान्ति के			

श्लोकार्थ—क्षमा के प्रभाव से ब्राह्मणों की शोभा सूर्य की कान्ति के समान चमक उठती है । क्षमावानों पर सर्वशक्तिमान् भगवान् हरि शीघ्र प्रसन्न होते हैं ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

राज्ञो मूर्धाभिषिक्तस्य वधो ब्रह्मवधाद् गुरुः ।
तीर्थसंसेवया चांहो जह्यङ्गाच्युतचेतनः ॥४१॥

पदच्छेद— राज्ञः मूर्धा अभिषिक्तस्य वधः ब्रह्मवधात् गुरुः ।
तीर्थ संसेवया च अहं जहि अङ्ग अच्युत चेतनः ॥

शब्दार्थ—

राज्ञः	२. राजा का	संसेवया च	१०. सेवन के द्वारा
मूर्धाभिषिक्तस्य	३. सार्वभौम	अंहः	११. पाप को
वधः	४. वध	जहि	१२. धो डालो
ब्रह्मवधात्	५. ब्राह्मण के वध से	अङ्ग	१. बेटा
गुरुः	६. बढ़ कर है	अच्युत	७. भगवान् का
तीर्थं	९. तीर्थों के	चेतनः	८. स्मरण करते हुये

श्लोकार्थ—बेटा, सार्वभौम राजा का वध, ब्राह्मण के वध से बढ़ कर है। भगवान् का स्मरण करते हुये तीर्थों के सेवन के द्वारा पाप को धो डालो ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे
पञ्चदशोऽध्यायः ॥१५॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

षोडशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—पित्रोपशिक्षितो रामस्तथेति कुरुनन्दन ।
संवत्सरं तीर्थयात्रां चरित्वाऽऽश्रममाव्रजत् ॥१॥

पदच्छेद— पित्रा उपशिक्षितः रामः तथा इति कुरुनन्दन ।
संवत्सरम् तीर्थयात्राम् चरित्वा आश्रमम् आव्रजत् ॥

शब्दार्थ—

पित्रा	२.	पिता के द्वारा	कुरुनन्दन	१.	हे परीक्षित् !
उपशिक्षितः	३.	शिक्षा दी जाने पर	संवत्सरम्	७.	एक वर्ष तक
रामः	४.	परशुराम	तीर्थयात्राम्	८.	तीर्थ यात्रा
तथा	६.	तथा	चरित्वा	९.	करके
इति	५.	जो आज्ञा कह कर	आश्रमम् ।	१०.	आश्रम पर
			आव्रजत् ॥	११.	लौट आये

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! पिता के द्वारा शिक्षा दी जाने पर परशुराम जो आज्ञा कह कर तथा एक वर्ष तक तीर्थ यात्रा करके आश्रम पर लौट आये ।।

द्वितीयः श्लोकः

कदाचिद् रेणुका याता गङ्गायां पद्ममालिनम् ।
गन्धर्वराजं क्रीडन्तमप्सरोभिरपश्यत ॥२॥

पदच्छेद— कदाचित् रेणुका याता गङ्गायाम् पद्ममालिनम् ।
गन्धर्व राजम् क्रीडन्तम् अप्सरोभिः अपश्यत ॥

शब्दार्थ—

कदाचित्	१.	किसी समय	गन्धर्व	७.	गन्धर्व
रेणुका	२.	रेणुका ने	राजम्	८.	राज को
याता	४.	गई हुई	क्रीडन्तम्	१०.	क्रीडा करते हुये
गङ्गायाम्	३.	गङ्गा के तट पर	अप्सरोभिः	९.	अप्सराओं के साथ
पद्म	५.	पद्म	अपश्यत ।	११	देखा
मालिनम् ।।	६.	मालाधारी			

श्लोकार्थ—किसी समय रेणुका ने गङ्गा के तट पर गई हुई पद्ममालाधारी गन्धर्वराज को अप्सराओं के साथ क्रीडा करते हुए देखा ।।

तृतीयः श्लोकः

विलोकयन्ती क्रीडन्तमुदकार्थं नदीं गता ।
होमवेलां न सस्मार किञ्चिच्चित्ररथस्पृहा ॥३॥

पदच्छेद— विलोकयन्ती क्रीडन्तम् उदकार्थम् नदीम् गता ।
होमवेलाम् न सस्मार किञ्चित् चित्ररथ स्पृहा ॥

शब्दार्थ—

विलोकयन्ती	५. देखती हुई	होमवेलाम्	६. हवन के समय का
क्रीडन्तम्	४. क्रीडा करते हुए गन्धर्व राज को	न	७. नहीं
उदकार्थम्	१. जल लाने के लिए	सस्मार	८. स्मरण किया (और)
नदीम्	२. नदी तट पर	किञ्चित्	९. थोड़ी सी
गता	३. गई हुई उस रेणुका ने	चित्ररथ ।	१०. चित्ररथ के प्रति
		स्पृहा ॥	११. उनकी अभिलाषा हो गई

श्लोकार्थ—जल लाने के लिए नदी तट पर गई हुई उस रेणुका ने क्रीडा करते हुये गन्धर्वराज को देखती हुई हवन के समय का स्मरण नहीं किया। और थोड़ी सी चित्र रथ के प्रति उनकी अभिलाषा भी हो आयी ॥

चतुर्थः श्लोकः

कालात्ययं तं विलोक्य मुनेः शापविशङ्किता ।
आगत्य कलशं तस्थौ पुरोधाय कृताञ्जलिः ॥४॥

पदच्छेद— काल अत्ययम् तम् विलोक्य मुनेः शाप विशङ्किता ।
आगत्य कलशम् तस्थौ पुरोधाय कृत अञ्जलिः ॥

शब्दार्थ—

काल	१. समय	आगत्य	८. आश्रम में आकर
अत्ययम्	२. बीत गया	कलशम्	९. कलश को
तम्	३. यह	तस्थौ	१०. रखकर
विलोक्य	४. जानकर	पुरोधाय	१३. सामने
मुनेः	५. मुनि के	कृत	१२. जोड़कर खड़ी हो गयी
शाप	६. शाप से	अञ्जलिः ।	११. हाथ
विशङ्किता ॥	७. भयभीत होकर		

श्लोकार्थ—समय बीत गया यह जानकर मुनि के शाप से भयभीत होकर आश्रम में आकर कलश को रखकर सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो गयी ॥

पञ्चमः श्लोकः

व्यभिचारं मुनिर्ज्ञात्वा पत्न्याः प्रकुपितोऽब्रवीत् ।
घ्नतैनां पुत्रकाः पापामित्युक्तास्ते न चक्रिरे ॥५॥

पदच्छेद— व्यभिचारम् मुनिः ज्ञात्वा पत्न्याः प्रकुपितः अब्रवीत् ।
घ्नत एनाम् पुत्रकाः पापाम् इति उक्ताः ते न चक्रिरे ॥

शब्दार्थ—

व्यभिचारम्	२.	मानसिक व्यभिचार	घ्नत	१०.	मार डालो
मुनिः	४.	मुनि	एनाम्	८.	इस
ज्ञात्वा	३.	जानकर	पुत्रकाः	७.	हे पुत्रो !
पत्न्याः	१.	पत्नी का	पापाम्	९.	पापिनी को
प्रकुपितः	५.	क्रुद्ध होकर	इति उक्ताःते	११.	यह कहे जाने पर उन्होंने
अब्रवीत् ।	६.	बोले	न चक्रिरे ॥	१२.	नहीं ऐसा किया

श्लोकार्थ—पत्नी का मानसिक व्यभिचार जानकर मुनि क्रुद्ध होकर बोले । हे पुत्रो ! इस पापिनी को मार डालो । यह कहे जाने पर उन्होंने ऐसा नहीं किया ॥

षष्ठः श्लोकः

रामः सञ्चोदितः पित्रा भ्रातॄन् मात्रा सहावधीत् ।
प्रभावज्ञो मुनेः सम्यक् समाधेस्तपसश्च सः ॥६॥

पदच्छेद— रामः सञ्चोदितः पित्रा भ्रातॄन् मात्रा सह अवधीत् ।
प्रभावज्ञः मुनेः सम्यक् समाधेः तपसः च सः ॥

शब्दार्थ—

रामः	३.	परशुराम ने	प्रभावज्ञः	१३.	प्रभाव को
सञ्चोदितः	२.	आदेश दिये जाने पर	मुनेः	९.	मुनि की
पित्रा	१	पिता के द्वारा	सम्यक्	१४	अच्छी तरह जानते थे
भ्रातॄन्	६.	भाइयों को	समाधेः	१०.	समाधि
मात्रा	४.	माता	तपसः	१२.	तपस्या के
सह	५.	सहित	च	११.	और
अवधीत् ।	७.	मार डाला	सः ॥	८.	वे (परशुराम)

श्लोकार्थ—पिता के द्वारा आदेश दिये जाने पर परशुराम ने माता सहित भाइयों को मार डाला । वे परशुराम मुनि की समाधि और तपस्या के प्रभाव को अच्छी तरह जानते थे ॥

सप्तमः श्लोकः

वरेणच्छन्दयामास प्रीतः सत्यवतीसुतः ।
वव्रे हतानां रामोऽपि जीवितं चास्मृतिं वधे ॥७॥

पदच्छेद— वरेण छन्दयामास प्रीतः सत्यवती सुतः ।
वव्रे हतानाम् रामः अपि जीवितम् च अस्मृतिम् वधे ॥

शब्दार्थ—

वरेण	४. वरदान	हतानाम्	६. मरे हुये (भाई मातादि)
छन्दयामास	५. दिया	रामः	६. परशुराम ने
प्रीतः	३. प्रसन्न होकर	अपि	७. भी
सत्यवती	१. सत्यवती	जीवितम् च	१०. जीवित हो जाय और उन्हें
सुतः	२. पुत्र (जमदग्नि ने)	अस्मृतिम्	१२. स्मरण न रहे
वव्रे ।	८. वरदान माँगा कि	वधे ॥	११. वध का

श्लोकार्थ—सत्यवती-पुत्र जमदग्नि ने प्रसन्न होकर वरदान दिया । परशुराम ने भी वरदान माँगा कि मरे हुये भाई, माता आदि जीवित हो जाँय और उन्हें वध का स्मरण न रहे ॥

अष्टमः श्लोकः

उत्तस्थुस्ते कुशलिनो निद्रापाय इवाञ्जसा ।
पितुर्विद्वांस्तपोवीर्यं रामश्चक्रे सुहृद्वधम् ॥८॥

पदच्छेद— उत्तस्थुः ते कुशलिनः निद्रापाये इव अञ्जसा ।
पितुः विद्वान् तपः वीर्यम् रामः चक्रे सुहृद्वधम् ॥

शब्दार्थ—

उत्तस्थुः	६. उठ खड़े हुये	पितुः	७. पिता के
ते	१. वे	विद्वान्	१०. जानने वाले
कुशलिनः	३. कुशल पूर्वक	तपः	८. तपस्या का
निद्रापाये	४. निद्रा टूट जाने के	वीर्यम्	६. बल
इव	५. समान	रामः	११. परशुराम ने
अञ्जसा	२. शीघ्र ही	चक्रे ।	१३. किया था
		सुहृद्वधम् ॥	१२. बन्धुओं का वध

श्लोकार्थ—वे शीघ्र ही कुशल पूर्वक निद्रा टूट जाने के समान उठ खड़े हुए । पिता की तपस्या का बल जानने वाले परशुराम ने बन्धुओं का वध किया था ॥

नवमः श्लोकः

येऽर्जुनस्य सुता राजन् स्मरन्तः स्वपितुर्वधम् ।
रामवीर्यपराभूता लेभिरे शर्म न क्वचित् ॥९॥

पदच्छेद— ये अर्जुनस्य सुताः राजन् स्मरन्तः स्वपितुः वधम् ।
राम वीर्य पराभूताः लेभिरे शर्म न क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

ये	२.	जो	राम	८.	परशुराम के
अर्जुनस्य	३.	अर्जुन के	वीर्य	९.	बल से
सुताः	४.	पुत्र भाग गये थे	पराभूता	१०.	पराजित हो गये थे ।
राजन्	१.	हे राजन्	लेभिरे	१४.	प्राप्त हुई
स्मरन्तः	७.	स्मरण करते हुए	शर्म	१२.	शान्ति
स्वपितुः	५.	वे अपने पिता के	न	१३.	नहीं
वधम् ।	६.	वध का	क्वचित् ॥	११.	उन्हें कहीं भी

श्लोकार्थ—हे राजन् ! जो अर्जुन के पुत्र भाग गये थे, वे पिता के वध का स्मरण करते हुये परशुराम के बल से पराजित हो गये थे । उन्हें कहीं भी शान्ति नहीं प्राप्त हुई ॥

दशमः श्लोकः

एकदाऽऽश्रमतो रामे सभ्रातरि वनं गते ।
वैरं सिसाधयिषवो लब्धच्छिद्रा उपागमन् ॥१०॥

पदच्छेद— एकदा आश्रमतः रामे सभ्रातरि वनम् गते ।
वैरम् सिसाधयिषवः लब्ध छिद्राः उपागमन् ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१.	एक बार	वैरम्	७.	वैर
आश्रमतः	४.	आश्रम से	सिसाधयिषवः	८.	साधने के लिये अर्जुन के पुत्र
रामे	३.	परशुराम के	लब्ध	१०.	पाकर
सभ्रातरि	२.	भाइयों के साथ	छिद्राः	९.	अवसर
वनम्	५.	वन में	आगमन् ।	११.	वहाँ आ पहुँचे
गते ॥	६.	चले जाने पर			

श्लोकार्थ—एक बार भाइयों के साथ परशुराम के आश्रम से वन में चले जाने पर वैर साधने के लिये वे अर्जुन के पुत्र अवसर पाकर वहाँ आ पहुँचे ॥

एकादशः श्लोकः

दृष्ट्वाऽग्न्यगार आसीनमावेशितधियं मुनिम् ।
भगवत्युत्तमश्लोके जघ्नुस्ते पापनिश्चयाः ॥११॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा अग्न्यगारे आसीनम् आवेशित धियम् मुनिम् ।
भगवति उत्तमश्लोके जघ्नुः ते पाप निश्चयाः ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	८. देखकर	भगवति	४. भगवान् में
अग्न्यगारे	१. अग्निशाला में	उत्तमश्लोके	३. पवित्र कीर्ति वाले
आसीनम्	२. बैठे हुये (और)	जघ्नुः	११. मार डाला
आवेशित	६. लगाये हुये	ते	१०. उन्होंने उनको
धियम्	५. मन को	पाप	८. पाप पूर्ण
मुनिम् ।	७. मुनि को	निश्चयाः ॥	६. निश्चय करने वाले

श्लोकार्थ—अग्निशाला में बैठे हुये और पवित्र कीर्ति वाले भगवान् में मन को लगाये हुये मुनि को देखकर पाप पूर्ण निश्चय करने वाले उन्होने उनको मार डाला ॥

द्वादशः श्लोकः

याच्यमानाः कृपणया राममात्रातिदारुणाः ।
प्रसह्य शिर उत्कृत्य निन्युस्ते क्षत्रबन्धवः ॥१२॥

पदच्छेद— याच्यमानाः कृपणया राममात्रा अति दारुणाः ।
प्रसह्य शिरः उत्कृत्य निन्युः ते क्षत्रबन्धवः ॥

शब्दार्थ—

याच्यमानाः	३. याचना किये जाने पर भी	प्रसह्य	८. बल पूर्वक (मुनि के)
कृपणया	१. दीन	शिरः	६. सिर को
राममात्रा	२. परशुराम की माता रेणुका के द्वारा	उत्कृत्य	१०. काट कर
अति	५. अत्यन्त	निन्युः	११. ले गये
दारुणा ।	६. भयंकर	ते	४. वे
		क्षत्रबन्धवः ॥	७. अधम क्षत्रिय

श्लोकार्थ—दीन परशुराम की माता रेणुका के द्वारा याचना किये जाने पर भी वे अत्यन्त भयंकर अधम क्षत्रिय बलपूर्वक मुनि के सिर को काट कर ले गये ॥

त्रयोदश: श्लोक:

रेणुका दुःखशोकार्ता निघ्नन्त्याऽऽत्मानमात्मना ।
राम रामेहि तातेति विचुक्रोशोच्चकैः सती ॥१३॥

पदच्छेद— रेणुका दुःख शोकार्ता निघ्नन्ती आत्मानम् आत्मना ।
राम राम एहि तात इति विचुक्रोश उच्चकैः सती ॥

शब्दार्थ—

रेणुका	२.	रेणुका	राम	९.	परशुराम
दुःख	३.	दुःख और	राम एहि	१०.	परशुराम
शोकार्ता	४.	शोक से व्याकुल होकर	तात इति	८.	बेटा आओ
निघ्नन्ती	७.	छाती पीटती हुई	इति	११	इस प्रकार
आत्मानम्	६.	अपनी	विचुक्रोश	१३.	जोर-जोर से विलाप करने लगी
आत्मना ।	५.	अपने से	उच्चकः	१२.	ऊँचे स्वर से
			सती ॥	१.	सती

श्लोकार्थ—सती रेणुका दुःख और शोक से व्याकुल होकर अपने हाथों से अपनी छाती पीटती हुई बेटा परशुराम, परशुराम ! आओ । इस प्रकार जोर-जोर से ऊँचे स्वर से विलाप करने लगी ॥

चतुर्दशः श्लोक:

तदुपश्रुत्य दूरस्थो हा रामेत्यार्तवत्स्वनम् ।
त्वरयाऽऽश्रममासाद्य ददृशे पितरं हतम् ॥१४॥

पदच्छेद— तद् उपश्रुत्य दूरस्थः हा राम इति आर्तवत् स्वनम् ।
त्वरया आश्रमम् आसाद्य ददृशे पितरम् हतम् ॥

शब्दार्थ—

तद्	१.	वह	स्वनम्	७.	शब्द
उपश्रुत्य	८.	सुनकर	त्वरया	९.	शीघ्रता से
दूरस्थः	२.	दूर में स्थित परशुराम ने	आश्रमम्	१०.	आश्रम पर
हा	४.	हा	आसाद्य	११.	पहुँचकर
राम इति	३.	राम इस प्रकार	ददृशे	१४.	देखा
आर्तवत् ।	६.	दीनता से भरा	पितरम्	१२.	पिता को
			हतम् ॥	१३.	मरा हुआ

श्लोकार्थ—वह दूर में स्थित परशुराम ने हा राम इस प्रकार दीनता से भरा शब्द सुनकर शीघ्रता से आश्रम पर पहुँच कर पिता को मरा हुआ देखा ॥

पञ्चदशः श्लोकः

तद् दुःखरोषामर्षार्तिशोकवेगविमोहितः ।
हा तात साधो धर्मिष्ठ त्यक्त्वास्मान् स्वर्गतो भवान् ॥१५॥

पदच्छेद — तत् दुःख रोष अमर्ष आर्ति शोक वेग विमोहितः ।
हा तात् साधो धर्मिष्ठ त्यक्त्वा अस्मान् स्वर्गतः भवान् ॥

शब्दार्थ—

तत	१. उस समय	हा तात	८. हाय पिता जी
दुःख	२ दुःख	साधो	९. साधु
रोष	३. क्रोध	धर्मिष्ठ	१०. धर्मिष्ठ
अमर्ष	४. असहनशीलता	त्यक्त्वा	१२ छोड़कर
आर्तिशोक	५. पीडा शोक के	अस्मान्	११. हम लोगों को
वेग	६. वेग से	स्वर्गतः	१४. स्वर्ग चले गये
विमोहितः	७. सुध-बुध खोकर (परशुराम जी)	भवान्	१३. आप

श्लोकार्थ—उस समय दुःख, क्रोध, असहनशीलता, पीडा शोक के वेग से सुध-बुध खोकर वे परशुराम जो विलाप करने लगे कि हाय पिता जो साधु धर्मिष्ठ ! हम लोगों को छोड़कर आप स्वर्ग चले गये ॥

षोडशः श्लोकः

विलप्यैवं पितुर्देहं निधाय भ्रातृषु स्वयम् ।
प्रगृह्य परशुं रामः क्षत्रान्ताय मनो दधे ॥१६॥

पदच्छेद— विलप्य एवम् पितुः देहम् निधाय भ्रातृषु स्वयम् ।
प्रगृह्य परशुम् रामः क्षत्र अन्ताय मनः दधे ॥

शब्दार्थ—

विलप्य	२. विलाप करके	प्रगृह्य	१०. लेकर
एवम्	१. इस प्रकार	परशुम्	९. फरसा
पितुः	३. पिता का	रामः	८. परशुराम ने
देहम्	४. शरीर	क्षत्र	११. क्षत्रियों का
निधाय	६. सौंपकर	अन्ताय	१२. संहार करने का
भ्रातृषु	५. भाइयों को	मनः	१३. मन में
स्वयम्	७. स्वयम्	दधे	१४. निश्चय किया

श्लोकार्थ—इस प्रकार विलाप करके पिता का शरीर भाइयों को सौंपकर स्वयम् परशुराम ने फरसा लेकर क्षत्रियों का संहार करने का मन में निश्चय किया ॥

सप्तदशः श्लोकः

गत्वा माहिष्मतीं रामो ब्रह्मघ्नविहतश्रियम् ।
तेषां स शीर्षभी राजन् मध्ये चक्रे महागिरिम् ॥१७॥

पदच्छेद— गत्वा माहिष्मतीम् रामः ब्रह्मघ्न विहत श्रियम् ।
तेषाम् सः शीर्षभिः राजन् मध्ये चक्रे महागिरिम् ॥

शब्दार्थ—

गत्वा	८.	जाकर	तेषाम्	९.	उन सहस्रार्जुन के पुत्रों के
माहिष्मतीम्	७.	माहिष्मतीपुरी में	सः	२.	उन
रामः	३.	परशुराम ने	शीर्षभिः	१०.	सिरों से (नगर के)
ब्रह्मघ्न	४.	ब्राह्मण की हत्या से	राजन्	१.	हे राजन् !
विहत	५.	नष्ट	मध्ये	११.	बीचो-बीच
श्रियम् ।	६.	श्रीवाली	चक्रे	१३	खड़ा कर दिया
			महागिरिम् ॥	१२.	एक बड़ा भारी पर्वत

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उन परशुराम ने ब्राह्मण की हत्या से नष्ट श्रीवाली माहिष्मती पुरी में जाकर उन सहस्रार्जुन के पुत्रों के सिरों से नगर के बीचो-बीच एक बड़ा भारी पर्वत खड़ा कर दिया ॥

अष्टादशः श्लोकः

तद्रक्तेन नदीं घोरामब्रह्मण्यभयावहाम् ।
हेतुं कृत्वा पितृवधं क्षत्रेऽमङ्गलकारिणि ॥१८॥

पदच्छेद— तत् रक्तेन नदीम् घोराम् अब्रह्मण्यभयावहाम् ।
हेतुम् कृत्वा पितृ वधम् क्षत्रे अमङ्गलकारिणि ॥

शब्दार्थ—

तत्	८.	उनके	हेतुम्	६.	निमित्त
रक्तेन	९.	रक्त से	कृत्वा	७.	बनाकर
नदीम्	१३.	नदी बना दी	पितृ	४.	पिता के
घोराम्	१०.	भयंकर	वधम्	५.	वध को
अब्रह्मण्य	११.	ब्राह्मण द्रोहियों के लिए	क्षत्रे	३.	क्षत्रियों के लिए
भयावहाम् ।	१२.	भयावह	अमङ्गल	१.	अमङ्गल
			कारिणि ॥	२.	करने वाले

श्लोकार्थ—अमङ्गल करने वाले क्षत्रियों के लिए पिता के वध को निमित्त बनाकर उनके रक्त से भयंकर ब्राह्मणद्रोहियों के लिए भयावह नदी बना दी ॥

एकोनविंशः श्लोकः

त्रिःसप्तकृत्वः पृथिवीं कृत्वा निःक्षत्रियां प्रभुः ।
समन्तपञ्चके चक्रे शोणितोदान् ह्रदान् नृप ॥१६॥

पदच्छेद— त्रिःसप्त कृत्वः पृथ्वीम् कृत्वा निःक्षत्रियाम् प्रभुः ।
समन्तपञ्चके चक्रे शोणित उदान् ह्रदान् नृप ॥

शब्दार्थ—

त्रिःसप्तकृत्वः	३.	तीन सात इक्कीस बार	समन्तपञ्चके	७.	(कुरुक्षेत्र के) समन्त पञ्चक में
पृथ्वीम्	४.	पृथ्वी को	चक्रे	११.	बना दिये
कृत्वा	६.	करके	शोणित	८.	रक्त के
निःक्षत्रियाम्	५.	क्षत्रियों से रहित	उदान्	९.	जल से भरे हुए (पाँच)
प्रभुः	२.	भगवान् परशुराम ने	ह्रदान् ।	१०.	तालाब
			नृप ॥	१.	हे राजन !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! भगवान् परशुराम ने (तीन सात) इक्कीस बार पृथ्वी को क्षत्रियों से रहित करके कुरुक्षेत्र के समन्त पञ्चक में रक्त के जल से भरे हुए पाँच तालाब बना दिये ॥

विंशः श्लोकः

पितुः कायेन सन्धाय शिर आदाय बर्हिषि ।
सर्वदेवमयं देवमात्मानमयजन्मखैः ॥२०॥

पदच्छेद— पितुः कायेन सन्धाय शिरः आदाय बर्हिषि ।
सर्वं देव मयम् देवम् आत्मानम् अयजन्मखैः ॥

शब्दार्थ—

पितुः	१.	(परशुराम ने) पिता के	सर्व	७.	सभी
कायेन	२.	शरीर से	देवमयम्	८.	देवमय
सन्धाय	४.	जोड़ कर	देवम्	१०.	भगवान् का
शिरः	३.	मस्तक को	आत्मानम्	९.	आत्म स्वरूप
आदाय	६.	रखकर	अयजन्	१२.	यजन किया
बर्हिषि ।	५.	कुशा पर	मखैः ॥	११.	यज्ञों द्वारा

श्लोकार्थ—परशुराम ने पिता के शरीर से मस्तक को जोड़कर कुशा पर रख कर सभी देवमय आत्मस्वरूप भगवान् का यज्ञों द्वारा यजन किया ॥

एकविंशः श्लोकः

ददौ प्राचीं दिशं होत्रे ब्रह्मणे दक्षिणां दिशम् ।
अध्वर्यवे प्रतीचीं वै उद्गात्रे उत्तरां दिशम् ॥२१॥

पदच्छेद— ददौ प्राचीम् दिशम् होत्रे ब्रह्मणे दक्षिणाम् दिशम् ।
अध्वर्यवे प्रतीचीम् वै उद्गात्रे उत्तराम् दिशम् ॥

शब्दार्थ—

ददौ	१३.	दे दी	दिशम्	५.	दिशा
प्राचीम्	१.	पूर्व	अध्वर्यवे	८.	अध्वर्यु को
दिशम्	२.	दिशा	प्रतीचीम्	७.	पश्चिम दिशा
होत्रे	३.	होता को	वै	१२.	निश्चित रूप से
ब्रह्मणे	६.	ब्रह्मा को	उद्गात्रे	११.	उद्गाता को
दक्षिणाम् ।	४.	दक्षिणा	उत्तराम्	९.	उत्तर
			दिशम् ।	१०.	दिशा

श्लोकार्थ—पूर्व दिशा होता को, दक्षिण दिशा ब्रह्मा को, पश्चिम दिशा अध्वर्यु को और उत्तर दिशा उद्गाता को निश्चित रूप से दे दी ॥

द्वाविंशः श्लोकः

अन्येभ्योऽवान्तरदिशः कश्यपाय च मध्यतः ।
आर्यावर्तमुपद्रष्ट्रे सदस्येभ्यस्ततः परम् ॥२२॥

पदच्छेद— अन्येभ्यः अवान्तर दिशः कश्यपाय च मध्यतः ।
आर्यावर्तम् उपद्रष्टे सदस्येभ्यः ततः परम् ॥

शब्दार्थ—

अन्येभ्यः	१.	दूसरे ऋत्विजों को	मध्यतः	६.	मध्य भूमि
अवान्तर	२.	अग्निकोण आदि	आर्यावर्तम्	८.	आर्यावर्त और
दिशः	३.	विदिशायें	उपद्रष्ट्रे	७.	उपद्रष्टा को
कश्यपाय	५.	कश्यप को	सदस्येभ्यः	९.	सदस्यों को
च ।	४.	और	ततः	१०.	उसके
			परम् ॥	११.	बाद की दिशायें दे दीं

श्लोकार्थ—दूसरे ऋत्विजों को अग्निकोण आदि विदिशायें और कश्यप को मध्यभूमि, उपद्रष्टा को आर्यावर्त और सदस्यों को उसके बाद की दिशायें दे दीं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

ततश्चावभृथस्नानविधूताशेषकिल्बिषः ।
सरस्वत्यां ब्रह्मनद्यां रेजे व्यभ्र इवांशुमान् ।।२३।।

पदच्छेद— ततः च अवभृथ स्नान विधूत अशेष किल्बिषः ।
सरस्वत्याम् ब्रह्म नद्याम् रेजे व्यभ्रः इव अंशुमान् ।।

शब्दार्थ—

ततः	२. तदनन्तर	सरस्वत्याम्	११. सरस्वती के तट पर
च	१. और	ब्रह्म	९. ब्रह्म
अवभृथ	४. यज्ञान्त के	नद्याम्	१०. नदी
स्नान	५. स्नान से	रेजे	१५. शोभित हुए
विधूत	६. मुक्त	व्यभ्रः	१२. मेघ रहित
अशेष	७. समस्त	इव	१४. समान
किल्बिषः ।	८. पाप वाले परशुराम ने	अंशुमान् ।।	१३. सूर्य के

श्लोकार्थ—और तदनन्तर यज्ञान्त के स्नान से मुक्त समस्त पाप वाले परशुराम ने ब्रह्मनदी सरस्वती के तट पर मेघ रहित सूर्य के समान शोभित हुये ।।

चतुर्विंशः श्लोकः

स्वदेहं जमदग्निस्तु लब्ध्वा संज्ञानलक्षणम् ।
ऋषीणां मण्डले सोऽभूत् सप्तमो रामपूजितः ।।२४।।

पदच्छेद— स्वदेहम् जमदग्निः तु लब्ध्वा संज्ञान लक्षणम् ।
ऋषीणाम् मण्डले सः अभूत् सप्तमः रामपूजितः ।।

शब्दार्थ—

स्वदेहम्	५. अपना शरीर	मण्डले	८. मण्डल में
जमदग्निः	३. जमदग्नि ने	सः	२. वे
तु लब्ध्वा	६. प्राप्त करके	अभूत्	१०. हो गये
संज्ञानलक्षणम्	४. संकल्पमय	सप्तमः	९. सातवें ऋषि
ऋषीणाम् ।	७. ऋषियों के	रामपूजितः ।।	१. परशुराम से सम्मानित

श्लोकार्थ —परशुराम से सम्मानित वे जमदग्नि संकल्पमय अपना शरीर प्राप्त करके ऋषियों के मण्डल में सातवें ऋषि हो गये ।।

पञ्चविंशः श्लोकः

जामदग्न्योऽपि भगवान् रामः कमललोचनः।
आगामिन्यन्तरे राजन् वर्तयिष्यति वै बृहत् ॥२५॥

पदच्छेद— जामदग्न्यः अपि भगवान् रामः कमल लोचनः।
आगामिनि अन्तरे राजन् वर्तयिष्यति वै बृहत् ॥

शब्दार्थ—

जामदग्न्यः	२.	जमदग्नि के पुत्र	आगामिनि	८.	आने वाले
अपि	७.	भी	अन्तरे	९.	मन्वन्तर में
भगवान्	५.	भगवान्	राजन्	१.	हे राजन् !
रामः	६.	परशुराम	वर्तयिष्यति	१२.	विस्तार करेंगे
कमल	३.	कमल के समान	वै	१०.	निश्चित ही
लोचनः।	४.	नेत्र वाले	बृहत् ॥	११.	वेदों का

श्लोकार्थ—हे राजन् ! जमदग्नि के पुत्र कमल के समान नेत्र वाले भगवान् परशुराम भी आने वाले मन्वन्तर में निश्चित ही वेदों का विस्तार करेंगे ॥

षड्विंशः श्लोकः

आस्तेऽद्यापि महेन्द्रादौ न्यस्तदण्डः प्रशान्तधीः।
उपगीयमानचरितः सिद्धगन्धर्वचारणैः ॥२६॥

पदच्छेद— आस्ते अद्य अपि महेन्द्र आदौ न्यस्त दण्डः प्रशान्तधीः।
उपगीयमान चरितः सिद्ध गन्धर्व चारणैः ॥

शब्दार्थ—

आस्ते	१३.	विराजमान है	प्रशान्तधीः	६.	शान्तचित्त वाले
अद्य	९.	आज	उपगीयमान	४.	गाये जाते हुए
अपि	१०.	भी	चरितः	५.	चरित्र वाले
महेन्द्र	११.	महेन्द्र	सिद्ध	१.	सिद्धों
आदौ	१२.	आदि पर्वतों पर	गन्धर्व	२.	गन्धर्वों और
न्यस्त	८.	न देते हुए (परशुराम)	चारणैः ॥	३.	चारणों के द्वारा
दण्ड ॥	७.	दण्ड			

श्लोकार्थ—सिद्धों, गन्धर्वों और चारणों के द्वारा गाये जाते हुए चरित्र वाले, शान्त चित्त वाले, दण्ड न देते हुए परशुराम आज भी महेन्द्र आदि पर्वतों पर विराजमान हैं ॥

सप्तविंशः श्लोकः

एवं भृगुषु विश्वात्मा भगवान् हरिरीश्वरः ।
अवतीर्य परं भारं भुवोऽहन् बहुशो नृपान् ॥२७॥

पदच्छेद— एवम् भृगुषु विश्वात्मा भगवान् हरिः ईश्वरः ।
अवतीर्य परम् भारम् भुवः अहन् बहुशः नृपान् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	अवतीर्य	७. अवतार लेकर
भृगुषु	६. भृगुवंशियो में	परम्	९. अत्यन्त
विश्वात्मा	२. विश्वरूप	भारम्	१०. भार स्वरूप
भगवान्	४. भगवान्	भुवः	८. पृथ्वी के
हरिः	५. श्री हरि	अहन्	१३. मार दिया
ईश्वरः ।	३. सर्वशक्तिमान्	बहुशः	११. बहुत से
		नृपान् ॥	१२. राजाओं को

श्लोकार्थ—इस प्रकार विश्वरूप सर्वशक्तिमान् भगवान् श्री हरि भृगुवंशियो में अवतार लेकर पृथ्वी के अत्यन्त भार स्वरूप बहुत से राजाओं को मार दिया ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

गाधेरभून्महातेजाः समिद्ध इव पावकः ।
तपसा क्षात्रमुत्सृज्य यो लेभे ब्रह्मवर्चसम् ॥२८॥

पदच्छेद— गाधेः अभूत् महातेजाः समिद्ध इव पावकः ।
तपसा क्षात्रम् उत्सृज्य यः लेभे ब्रह्मवर्चसम् ॥

शब्दार्थ—

गाधेः	१. महाराजगाधि के	तपसा	८. तपस्या से
अभूत्	६. हुए	क्षात्रम्	९. क्षत्रिय धर्म का
महातेजाः	५. महातेजस्वी पुत्र (विश्वामित्र)	उत्सृज्य	१०. त्याग करके
समिद्ध	२. प्रज्वलित	यः	७. जिन्होंने
इव	४. समान	लेभे	१२. प्राप्त किया
पावकः ।	३. अग्नि के	ब्रह्मवर्चसम् ॥	११. ब्रह्मतेज को

श्लोकार्थ—महाराज गाधि के प्रज्वलित अग्नि के समान महातेजस्वी पुत्र विश्वामित्र हुए । जिन्होंने तपस्या से क्षत्रिय धर्म का त्याग करके ब्रह्म तेज को प्राप्त किया ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

विश्वामित्रस्य चैवासन् पुत्रा एकशतं नृप ।
मध्यमस्तु मधुच्छन्दा मधुच्छन्दस एव ते ॥२९॥

पदच्छेद— विश्वामित्रस्य च एव आसन् पुत्राः एकशतम् नृप ।
मध्यमः तु मधुच्छन्दा मधुच्छन्दसः एव ते ॥

शब्दार्थ—

विश्वामित्रस्य	२. विश्वामित्र के	**मध्यमः**	८. मझला पुत्र
च एव	७. और ही	**तु मधुच्छन्दाः**	९. मधुच्छन्दा था
आसन्	६. थे	**मधुच्छन्दसः**	११. मधुछन्दा के
पुत्राः	५. पुत्र	**एव**	१२. ही नाम से विख्यात हुए
एकशतम्	४. एक सौ	**ते ॥**	१०. वे उनके पुत्र
नृप ।	१. हे राजन् !		

श्लोकार्थ—हे राजन् ! विश्वामित्र के ही एक सौ पुत्र हुए थे । और मझला पुत्र मधुच्छन्दा था । वे उनके पुत्र मधुछन्दा के नाम से विख्यात हुए ॥

त्रिंशः श्लोकः

पुत्रं कृत्वा शुनःशेपं देवरातं च भार्गवम् ।
आजीगर्तं सुतानाह ज्येष्ठ एष प्रकल्प्यताम् ॥३०॥

पदच्छेद— पुत्रम् कृत्वा शुनः शेपम् देवरातम् च भार्गवम् ।
अजीगर्तम् सुतान् आह ज्येष्ठः एषः प्रकल्प्यताम् ॥

शब्दार्थ—

पुत्रम्	६. पुत्र	**अजीगर्तम्**	१. अजीगर्त के पुत्र
कृत्वा	७. बनाकर विश्वामित्र ने	**सुतान्**	८. अपने पुत्रों से
शुनःशेपम्	५. शुनःशेप को	**आह**	९. कहा
देवरातम्	३. देवरात नाम से विख्यात	**ज्येष्ठः**	११. बड़ा भाई
च	४ भी	**एषः**	१०. इसे
भार्गवम् ।	२. भृगुवंशी	**प्रकल्प्यताम् ॥**	१२. मान लो

श्लोकार्थ—अजीगर्त के पुत्र भृगुवंशी देवरात नाम से भी विख्यात शुनः शेप को पुत्र बनाकर विश्वामित्र ने अपने पुत्रों से कहा—उसे बड़ा भाई मान लो ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

यो वै हरिश्चन्द्रमखे विक्रीतः पुरुषः पशुः ।
स्तुत्वा देवान् प्रजेशादीन् मुमुचे पाशबन्धनात् ॥३१॥

पदच्छेद— यः वै हरिश्चन्द्र मखे विक्रीतः पुरुषः पशुः ।
स्तुत्वा देवान् प्रजेश आदीन् मुमुचे पाशबन्धनात् ॥

शब्दार्थ—

यः वै	१. जो निश्चित रूप से	स्तुत्वा	११. स्तुति करके
हरिश्चन्द्र	२. हरिश्चन्द्र के	देवान्	१०. देवताओं की
मखे	३. यज्ञ में	प्रजेश	८. वरुण
विक्रीतः	५. खरीदा गया था	आदीन्	९. आदि
पुरुषः	६. पुरुष	मुमुचे	१३. मुक्त हो गया था
पशुः	७. पशु के रूप में (लाया गया था)	पाश ।	११. पाश के
		बन्धनात् ॥	१२. बन्धन से

श्लोकार्थ—जो हरिश्चन्द्र के यज्ञ में निश्चित रूप से खरीदा गया था, पुरुष पशु के रूप में लाया गया था। और वरुण आदि देवताओं की स्तुति करके पाश के बन्धन से मुक्त हो गया था ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

यो रातो देवयजने देवैर्गाधिषु तापसः ।
देवरात इति ख्यातः शुनःशेपः स भार्गवः ॥३२॥

पदच्छेद— यः रातः देवयजने देवैः गाधिषु तापसः ।
देवरातः इति ख्यातः शुनः शेपः सः भार्गवः ॥

शब्दार्थ—

यः	१. जो	देवरातः	१०. देवरात
रातः	६. दिया गया था	इति	११. इस नाम से
देवयजने	३. देवताओं के यज्ञ में	ख्यातः	१२. प्रसिद्ध हुआ
देवैः	४. देवताओं के द्वारा	शुनः शेपः	९. शुनः शेप
गाधिषु	५. विश्वामित्र को	सः	७ वह
तापसः ।	२. तपस्वी	भार्गवः ॥	८. भृगुवंशी

श्लोकार्थ— जो तपस्वी देवताओं के यज्ञ में देवताओं के द्वारा विश्वामित्र को दिया गया था, वह भृगुवंशी शुनः शेप देवरात इस नाम से प्रसिद्ध हुआ ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

ये मधुच्छन्दसो ज्येष्ठाः कुशलं मेनिरे न तत् ।
अशपत् तान्मुनिः क्रुद्धो म्लेच्छा भवत दुर्जनाः ॥३३॥

पदच्छेद— ये मधुच्छन्दसः ज्येष्ठाः कुशलम् मेनिरे न तत् ।
अशपत् तान् मुनिः क्रुद्धः म्लेच्छाः भवत दुर्जनाः ॥

शब्दार्थ—

ये	१.	जो	अशपत्	१०.	शाप दे दिया कि
मधुच्छन्दसः	२.	मधुच्छन्दा के	तान्	७.	उन्हें
ज्येष्ठाः	३.	ज्येष्ठ पुत्र	मुनिः	८.	विश्वामित्र मुनि ने
कुशलम्	५.	अच्छा	क्रुद्धः	९.	क्रुद्ध होकर
मेनिरे	६.	मानते थे	म्लेच्छाः	१२.	म्लेच्छ
न तत्	४.	नहीं उसको	भवत ।	१३.	हो जाओ
			दुर्जनाः ॥	११.	हे दुष्टो तुम लोग

श्लोकार्थ—जो ज्येष्ठ मधुच्छन्दा के पुत्र उसको अच्छा नहीं मानते थे, उन्हें विश्वामित्रमुनि ने क्रुद्ध होकर शाप दे दिया कि हे दुष्टो ! तुम लोग म्लेच्छ हो जाओ ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

स होवाच मधुच्छन्दाः सार्धं पञ्चाशता ततः ।
यन्नो भवान् संजानीते तस्मिंस्तिष्ठामहे वयम् ॥३४॥

पदच्छेद— सः ह उवाच मधुच्छन्दाः सार्धम् पञ्चाशता ततः ।
यत् नः भवान् संजानीते तस्मिन् तिष्ठामहे वयम् ॥

शब्दार्थ—

सः ह	२.	वह मझला	यत्	८.	जो
उवाच	६.	बोला	नः	९.	हमें
मधुच्छन्दाः	३.	मधुच्छन्दा	भवान्	७.	आप
सार्धम्	५.	साथ	संजानीते	१०.	आज्ञा देते हैं
पञ्चाशता	४.	पचास भाइयों के	तस्मिन्	१२.	उसका
ततः	१.	तब	तिष्ठामहे ।	१३.	पालन करने को तैयार है
			वयम् ॥	११.	हम लोग

श्लोकार्थ—तब वह मझला मधुच्छन्दा पचास भाइयों के साथ बोला आप जो हमें आज्ञा देते हैं, हम लोग उसका पालन करने को तैयार है ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

ज्येष्ठं मन्त्रदृशं चक्रुस्त्वामन्वञ्चो वयं स्म हि।
विश्वामित्रः सुतानाह वीरवन्तो भविष्यथ।
ये मानं मेऽनुगृह्णन्तो वीरवन्तमकर्त माम् ॥३५॥

पदच्छेद— ज्येष्ठम् मन्त्र दृशम् चक्रुः त्वाम् अन्वञ्चः वयम् स्म हि।
विश्वामित्रः सुतान् आह वीरवन्तः भविष्यथ।
ये मानम् मे अनुगृह्णन्तः वीरवन्तम् अकर्त माम् ॥

शब्दार्थ—

ज्येष्ठम्	३.	बड़ा भाई	आहवीरवन्तः	१०.	कहा तुम लोग पुत्रवान्
मन्त्र	१.	मन्त्र	भविष्यथ ये	११.	होगे जो कि तुम लोगों ने
दृशम्	२.	द्रष्टा शुनः शेप को	मानम्	१४.	सम्मान किया है और
चक्रुः	४.	मान कर	मे	१२	मेरी
त्वाम्	६.	आपके	अनुगृह्णन्तः	१३.	आज्ञा का पालन करते हुए
अन्वञ्चः	७.	अनुयायी	वीरवन्तम्	१६.	पुत्रवान्
वयम्	५.	हम लोग	अकर्त	१७	बना दिया है
स्महि	८.	हैं	माम्।	१५.	मुझे
विश्वामित्रः सुतान्॥	९.	विश्वामित्र ने पुत्रों से			

श्लोकार्थ— मन्त्र द्रष्टा शुनः शेप को बड़ा भाई मानकर हम लोग आप के अनुयायी हैं। विश्वामित्र ने पुत्रों से कहा तुम लोग पुत्रवान् होंगे। जो कि तुम लोगों ने मेरी आज्ञा का पालन करते हुए सम्मान किया है और मुझे पुत्रवान् बना दिया है॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

एष वः कुशिका वीरो देवरातस्तमन्वित।
अन्ये चाष्टकहारीतजयक्रतुमदादयः॥३६॥

पदच्छेद— एषः वः कुशिकाः वीरः देवरातः तम् अन्वित।
अन्ये च अष्टक हारीत जय क्रतुमत् आदयः॥

शब्दार्थ—

एषः	२.	यह	अन्ये	१४.	विश्वामित्र के दूसरे पुत्र थे
वः	५	तुम लोगों के गोत्र का	च	१३.	भी
कुशिकाः	१	हे कुशिक गोत्र वाले पुत्रो!	अष्टक	८.	अष्टक
वीरः	३.	वीर	हारीत	९.	हारीत
देवरातः	४.	देवरात	जय	१०.	जय
तम्	६	उसका	क्रतुमत्	११.	क्रतुमान्
अन्वित।	७.	अनुसरण करो	आदयः॥	१२.	आदि

श्लोकार्थ— हे कुशिक गोत्र वाले पुत्रो! यह वीर देवरात भी तुम लोगों के ही गोत्र का है। उसका अनुसरण करो। अष्टक, हारीत, जय, क्रतुमान् आदि भी विश्वामित्र के दूसरे पुत्र थे॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

एवं कौशिकगोत्रं तु विश्वामित्रैः पृथग्विधम् ।
प्रवरान्तरमापन्नं तद्धि चैवं प्रकल्पितम् ॥३७॥

पदच्छेद— एवम् कौशिक गोत्रम् तु विश्वामित्रैः पृथक् विधम् ।
प्रवरअन्तरम् आपन्नम तत् हि च एवम् प्रकल्पितम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	प्रवरअन्तरम्	८.	दूसरे गोत्र को
कौशिक	२.	कौशिक	आपन्नम्	९.	प्राप्त होने के कारण
गोत्रम् तु	३.	गोत्र में	तत	१०.	वह
विश्वामित्रैः	४.	विश्वामित्र	हि	११.	भी
पृथक्	५.	अलग	च एवम्	७.	और इस प्रकार
विधम् ।	६.	अलग कई भेद हो गये	प्रकल्पितम् ॥	१२	दूसरे प्रवर का हो गया

श्लोकार्थ—इस प्रकार कौशिक गोत्र में विश्वामित्र के गोत्र के अलग-अलग कई भेद हो गये । दूसरे गोत्र को प्राप्त होने के कारण वह भी दूसरे प्रवर का हो गया ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमस्कन्धे षोडशोऽध्यायः समाप्तः ॥१६॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

सप्तदशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—यः पुरूरवसः पुत्र आयुस्तस्याभवन् सुताः ।
नहुषः क्षत्रवृद्धश्च रजी रम्भश्च वीर्यवान् ॥१॥

पदच्छेद— यः पुरूरवसः पुत्रः आयुःतस्य अभवन् सुताः ।
नहुषः क्षत्रवृद्धः च रजी रम्भः च वीर्यवान् ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जो	नहुषः	७.	नहुष
पुरूरवसः	२	पुरूरवा का	क्षत्रवृद्धः	८.	क्षत्रवृद्ध
पुत्रः	३.	पुत्र	च	९.	और
आयुः	४.	आयु था	रजिः	१०.	रजि
तस्य	५.	उसके	रम्भः	१३.	रम्भ
अभवन्	१४.	हुए	च	११.	तथा
सुताः ।	६	पुत्र	वीर्यवान् ॥	१२.	शक्तिशाली

श्लोकार्थ—जो पुरूरवा का पुत्र आयु था, उसके पुत्र नहुष, क्षत्रवृद्ध और रजि तथा शक्तिशाली रम्भ हुये ॥

द्वितीयः श्लोकः

अनेना इति राजेन्द्र शृणु क्षत्रवृधोऽन्वयम् ।
क्षत्रवृद्धसुतस्यासन् सुहोत्रस्यात्मजास्त्रयः ॥२॥

पदच्छेद— अनेनाः इति राजेन्द्र शृणु क्षत्रवृधः अन्वयम् ।
क्षत्रवृद्ध सुतस्य आसन् सुहोत्रस्य आत्मजाः त्रयः ॥

शब्दार्थ—

अनेनाः	२.	अनेना	क्षत्रवृद्ध	७.	क्षत्रवृद्ध के
इति	३.	इस नाम से भी एक पुत्र हुआ	सुतस्य	८.	पुत्र सुहोत्र
राजेन्द्र	१.	हे महाराज !	आसन्	९.	हुए
शृणु	६.	सुनो	सुहोत्रस्य	१०.	सुहोत्र के
क्षत्रवृधः	४.	क्षत्रवृद्ध के	आत्मजाः	१२.	पुत्र
अन्वयम् ।	५.	वंश को	त्रयः ॥	१०.	तीन

श्लोकार्थ—हे महाराज ! अनेना इस नाम से भी एक पुत्र हुआ । अब क्षत्रवृद्ध के वंश को सुनो । क्षत्रवृद्ध के पुत्र सुहोत्र हुए । सुहोत्र के तीन पुत्र हुए ॥

तृतीयः श्लोकः

काश्यः कुशो गृत्समद इति गृत्समदादभूत् ।
शुनकः शौनको यस्य बह्वृचप्रवरो मुनिः ॥३॥

पदच्छेद— काश्यः कुशः गृत्समदः इति गृत्समदात् अभूत् ।
शुनकः शौनकः यस्य बह्वृच प्रवरः मुनिः ॥

शब्दार्थ—

काश्यः	१. काश्य	शुनकः	७. शुनक
कुशः	२. कुश	शौनकः	१२. शौनक नामक पुत्र हुए
गृत्समदः	३. गृत्समद	यस्य	८. जिसके
इति	४. इस नाम के पुत्र	बह्वृच	९. ऋग्वेदियों में
गृत्समदात्	६. गृत्समद से	प्रवरः	१०. श्रेष्ठ
अभूत् ।	५. उत्पन्न हुए	मुनिः ॥	११. मुनि

श्लोकार्थ—काश्य, कुश, गृत्समद इस नाम के पुत्र उत्पन्न हुए। गृत्समद से शुनक हुए जिनके ऋग्वेदियों में श्रेष्ठ मुनि शौनक नामक पुत्र हुए ॥

चतुर्थः श्लोकः

काश्यस्य काशिस्तत्पुत्रो राष्ट्रो दीर्घतमःपिता ।
धन्वन्तरिर्दैर्घतम आयुर्वेदप्रवर्तकः ॥४॥

पदच्छेद— काश्यस्य काशिः तत् पुत्रः राष्ट्रः दीर्घतमः पिता ।
धन्वन्तरिः दैर्घतमः आयुर्वेद प्रवर्तकः ॥

शब्दार्थ—

काश्यस्य	१. काश्य के पुत्र	पिता	७. पिता थे
काशिः	२. काशि हुए	धन्वन्तरिः	९. धन्वन्तरि हुए
तत्	३. उसके	दैर्घतम	८. दीर्घतमा के पुत्र
पुत्रः	४. पुत्र	आयुर्वेद	१०. जो आयुर्वेदके
राष्ट्रः	५. राष्ट्र हुए	प्रवर्तकः ।	११. प्रवर्तक है
दीर्घतमः ॥	६. जो दीर्घतमा के		

श्लोकार्थ—काश्य के पुत्र काशि हुए, उनके पुत्र राष्ट्र हुए, जो दीर्घतमा के पिता थे। दीर्घतमा के पुत्र धन्वन्तरि हुए जो आयुर्वेद के प्रवर्तक थे।

पञ्चमः श्लोकः

यज्ञभुग् वासुदेवांशः स्मृतमात्रार्तिनाशनः ।
तत्पुत्रः केतुमानस्य जज्ञे भीमरथस्ततः ॥५॥

पदच्छेद— यज्ञभुक वासुदेव अंशः स्मृत मात्र आर्तिनाशनः ।
तत् पुत्रः केतुमान् अस्य जज्ञे भीमरथः ततः ॥

शब्दार्थः—

यज्ञभुक्	१. वे यज्ञों के भोक्ता	तत्	७. उनके
वासुदेव	२ वासुदेव के	पुत्रः	८. पुत्र
अंशः	३. अंश (और)	केतुमान् अस्य	९. केतुमान् थे उनसे
स्मृत	४. स्मरण	जज्ञे	१२. उत्पन्न हुए
मात्र	५. मात्र से	भीमरथः	११. भीमरथ
आर्तिनाशनः ।	६. पीड़ा को हरने वाले हैं	ततः ॥	१०. उनसे

श्लोकार्थ—वे यज्ञों के भोक्ता वासुदेव के अंश और स्मरण मात्र से पीड़ा को हरने वाले हैं। उनके पुत्र केतुमान् थे। उनसे भीमरथ उत्पन्न हुए ॥

षष्ठः श्लोकः

दिवोदासो द्युमांस्तस्मात् प्रतर्दन इति स्मृतः ।
स एव शत्रुजिद् वत्स ऋतध्वज इतीरितः ।
तथा कुवलयाश्वेति प्रोक्तोऽलर्कादयस्ततः ॥६॥

पदच्छेद— दिवोदासः द्युमान् तस्मात् प्रतर्दन इति स्मृतः ।
स एव शत्रुजित् वत्सः ऋतुध्वजः इति ईरितः ।
तथा कुवलयाश्व इति प्रोक्तः अलर्क आदयः ततः ॥

शब्दार्थ—

दिवोदासः	१. दिवोदास	ऋतुध्वजः	१०. ऋतुध्वज
द्युमान्	३. द्युमान्	इति ईरितः	११. भी कहे जाते हैं
तस्मात्	२. उनके पुत्र	तथा	१२. तथा
प्रतर्दन इति	४. जो प्रतर्दन इस नाम से भी	कुवलयाश्व	१३. कुवलयाश्व
स्मृतः	५ कहे जाते है	इति	१४. इस नाम से भी
सः	६. वे	प्रोक्तः	१५. प्रसिद्ध है
एव	७. ही	अलर्क	१७. अलर्क
शत्रुजिद्	८. शत्रुजित् ।	आदयः	१८. आदि हुए
वत्स	९. वत्स	ततः ॥	१६. उनसे

श्लोकार्थ—दिवोदास, उनके पुत्र द्युमान् जो प्रतर्दन इस नाम से भी कहे जाते हैं। वे ही शत्रुजित् वत्स ऋतध्वज भी कहे जाते हैं। वे कुवलयाश्व इस नाम से भी प्रसिद्ध हैं। उनके पुत्र अलर्क आदि हुए ॥

सप्तमः श्लोकः

षष्टिवर्षसहस्राणि षष्टिवर्षशतानि च ।
नालर्कादपरो राजन् मेदिनीं बुभुजे युवा ॥७॥

पदच्छेद— षष्टिवर्षसहस्राणि षष्टिवर्षशतानि च ।
न अलर्काद् अपरः राजन् मेदिनीम् बुभुजे युवा ॥

शब्दार्थ—

षष्टिवर्षसहस्राणि	२.	साठ हजार वर्ष	राजन्	१.	हे राजन्
षष्टिवर्षशतानि च	३.	साठ सौ वर्ष (६०००) तक	मेदिनीम्	७.	पृथ्वी का
न अलर्काद्	४.	नहीं किया अलर्क के	बुभुजे	८.	भोग
अपरः	५.	सिवा दूसरे किसी भी राजा ने	युवा	६.	युवा रह कर

श्लोकार्थ—हे राजन् ! साठ हजार साठ सौ वर्ष (६६०००) वर्षों तक अलर्क के सिवा दूसरे किसी भी राजा ने युवा रह कर पृथ्वी का भोग नहीं किया ॥

अष्टमः श्लोकः

अलर्कात् सन्ततिस्तस्मात् सुनीथोऽथ सुकेतनः ।
धर्मकेतुः सुतस्तस्मात् सत्यकेतुरजायत ॥८॥

पदच्छेद— अलर्कात् सन्ततिः तस्मात् सुनीथः अथ सुकेतनः ।
धर्मकेतुः सुतः तस्मात् सत्यकेतुः अजायत ॥

शब्दार्थ—

अलर्कात्	१.	अलर्क से	धर्मकेतुः	९.	धर्मकेतु और उनसे
सन्ततिः	२.	सन्तति	सुतः	८.	पुत्र
तस्मात्	३.	उससे	तस्मात्	७.	उनसे
सुनीथः	४.	सुनीथ	सत्यकेतुः	१०.	सत्यकेतु
अथ	५.	तदनन्तर	अजायत ।	११.	उत्पन्न हुए
सुकेतनः ॥	६.	सुकेतन			

श्लोकार्थ—अलर्क से सन्तति, उनसे सुनीथ, तदनन्तर सुकेतन, उनके पुत्र धर्मकेतु और उनसे सत्यकेतु उत्पन्न हुए ॥

नवमः श्लोकः

धृष्टकेतुः सुतस्तस्मात् सुकुमारः क्षितीश्वरः ।
वीतिहोत्रस्य भर्गोऽतो भार्गभूमिरभून्नृपः ॥९॥

पदच्छेद— धृष्टकेतुः सुतः तस्मात् सुकुमारः क्षितीश्वरः ।
वीतिहोत्रस्य भर्गअतः भार्गभूमिः अभूत् नृपः ॥

शब्दार्थ—

धृष्टकेतुः	१. सत्यकेतु का धृष्टकेतु	वीतिहोत्रस्य	६. उससे वीतिहोत्र
सुतः	२ पुत्र हुआ	भर्गअतः	७ वीतिहोत्र से भर्ग
तस्मात्	३. और उससे	भार्गभूमिः	८. उससे भार्गभूमि
सुकुमारः	५. सुकुमार हुए	अभूत्	११. हुए
क्षितीश्वरः ।	४. राजा	नृपः ॥	९. राजा

श्लोकार्थ—सत्यकेतु का धृष्टकेतु पुत्र हुआ, उससे राजा सुकुमार हुए । उससे वीतिहोत्र, वीतिहोत्र से भर्ग और उससे राजा भार्गभूमि हुए ॥

दशम श्लोक

इतीमे काशयो भूपाः क्षत्रवृद्धान्वयायिनः ।
रम्भस्य रभसः पुत्रो गम्भीरश्चाक्रियस्ततः ॥१०॥

पदच्छेद— इति इमे काशयः भूपाः क्षत्रवृद्ध अन्वयायिनः ।
रम्भस्य रभसः पुत्रः गम्भीरः च अक्रियः ततः ॥

शब्दार्थ—

इति इमे	१. ये सब के सब	रभसः	७. रभस
काशयः	४. काशि से उत्पन्न	पुत्रः	९. पुत्र उनका
भूपाः	५. राजा हुए	गम्भीरः	१०. गम्भीर
क्षत्रवृद्ध	२. क्षत्रवृद्ध के	च	११. और
अन्वयायिनः	३. वंश में	अक्रियः	१३. अक्रिय हुए
रम्भस्य ।	६. रम्भ के पुत्र	ततः ॥	१२. उनसे

श्लोकार्थ—ये सब के सब क्षत्रवृद्ध के वंश में काशि से उत्पन्न राजा हुये । रम्भ के पुत्र रभस, उनका गम्भीर और उनसे अक्रिय हुये ॥

एकादशः श्लोकः

तस्य क्षेत्रे ब्रह्म जज्ञे शृणु वंशमनेनसः ।
शुद्धस्ततः शुचिस्तस्मात् त्रिककुद् धर्मसारथिः ॥११॥

पदच्छेद— तस्य क्षेत्रे ब्रह्म जज्ञे शृणु वंशम् अनेनसः ।
शुद्धः ततः शुचिः तस्मात् त्रिककुद्‌धर्मं सारथिः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१. उनकी	शुद्धः	९. शुद्ध
क्षेत्रे	२. पत्नी से	ततः	८. उनसे
ब्रह्म	३. ब्राह्मण वंश	शुचिः	११. शुचि
जज्ञे	४. चला (अब)	तस्मात्	१०. उससे
शृणु	७. सुनो	त्रिककुद्	१२. त्रिककुद और
वंशम्	६. वंश	धर्मं	१३. उससे धर्म
अनेनसः ।	५. अनेना का	सारथिः ॥	१४. सारथि हुए

श्लोकार्थ— उनकी पत्नी से ब्राह्मण वंश चला । अब अनेना का वंश सुनो । उनसे बुद्ध, उनसे शुचि, उनसे त्रिककुद और उवसे धर्म सारथि हुए ॥

द्वादशः श्लोकः

ततः शान्तरयो जज्ञे कृतकृत्यः स आत्मवान् ।
रजेः पञ्चशतान्यासन् पुत्राणाममितौजसाम् ॥१२॥

पदच्छेद— ततः शान्तरयः जज्ञे कृत कृत्यः स आत्मवान् ।
रजेः पञ्च शतानि आसन् पुत्राणाम् अमित ओजसाम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. उनसे	रजेः	७. रजि के
शान्तरयः	२. शान्तरय	पञ्च	८. पाँच
जज्ञे	३. उत्पन्न हुए	शतानि	९. सौ
कृतकृत्यः	६. कृतार्थ थे	आसन्	१३. हुए
सः	४. वे	पुत्राणाम्	१२. पुत्र
आत्मवान् ।	५. आत्मज्ञानी होने के कारण	अमित	१०. अत्यन्त
		ओजसाम् ॥	११. तेजस्वी

श्लोकार्थ— उनसे शान्तरय उत्पन्न हुए । वे आत्मज्ञानी होने के कारण कृतार्थ थे । रजि के अत्यन्त तेजस्वी पाँच सौ पुत्र हुए ॥

त्रयोदशः श्लोकः

देवैरभ्यर्थितो दैत्यान् हत्वेन्द्रायाददाद् दिवम् ।
इन्द्रस्तस्मै पुनर्दत्त्वा गृहीत्वा चरणौ रजेः ॥१३॥

पदच्छेद— देवैः अभ्यर्थितः दैत्यान् हत्वा इन्द्राय अददात् दिवम् ।
इन्द्रः तस्मै पुनः दत्त्वा गृहीत्वा चरणौ रजेः ॥

शब्दार्थ—

देवैः	१.	देवताओं के	इन्द्रः	८.	इन्द्र ने
अभ्यर्थितः	२.	प्रार्थना करने पर (रजि ने)	तस्मै	९.	उन्हें
दैत्यान्	३.	दैत्यों को	पुनः	१०.	फिर (स्वर्ग का राज्य)
हत्वा	४.	मार कर	दत्त्वा	११.	देकर
इन्द्राय	५.	इन्द्र को	गृहीत्वा	१४.	पकड़ लिया
अददात्	७.	दे दिया	चरणौ	१३.	पैरों को
दिवम् ।	६.	स्वर्ग का राज्य	रजेः ॥	१२.	रजि के

श्लोकार्थ—देवताओं के प्रार्थना करने पर रजि ने दैत्यों को मार कर इन्द्र को स्वर्ग का राज्य दे दिया । इन्द्र ने उन्हें फिर स्वर्ग का राज्य देकर रजि के पैरों को पकड़ लिया ॥

चतुर्दशः श्लोकः

आत्मानमर्पयामास प्रह्रादाद्यरिशङ्कितः ।
पितर्युपरते पुत्रा याचमानाय नो ददुः ॥१४॥

पदच्छेद— आत्मानम् अर्पयामास प्रह्राद आदि अरिशङ्कितः ।
पितरि उपरते पुत्राः याचमानाय नो ददुः ॥

शब्दार्थ—

आत्मानम्	५.	अपने को भी रजि को	पितरि	७.	पिता (रजि के)
अर्पयामास	६.	अर्पित कर दिया	उपरते	८.	मर जाने पर
प्रह्राद	१	प्रह्राद	पुत्राः	९.	उनके पुत्रों ने
आदि	२.	आदि	याचमानाय	१०.	इन्द्र के प्रार्थना करने पर
अरि	३.	शत्रुओं के	नो	११.	नहीं
शङ्कितः ।	४.	डर से	ददुः ॥	१२.	दिया

श्लोकार्थ—प्रह्राद आदि शत्रुओं के डर से अपने को भी रजि को अर्पित कर दिया । पिता रजि के मर जाने पर उनके पुत्रों ने इन्द्र के प्रार्थना करने पर भी राज्य नहीं दिया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

त्रिविष्टपं महेन्द्राय यज्ञभागान् समाददुः ।
गुरुणा हूयमानेऽग्नौ बलभित् तनयान् रजेः ॥१५॥

पदच्छेद— त्रिविष्टपम् महेन्द्राय यज्ञ भागान् सम् आददुः ।
गुरुणा हूयमाने अग्नौ बलभित् तनयान् रजेः ॥

शब्दार्थ—

त्रिविष्टपम्	२.	स्वर्ग नहीं दिया (और)	हूयमाने	७.	हवन किये जाने पर
महेन्द्राय	१.	इन्द्र को	अग्नौ	६.	अग्नि में
यज्ञभागान्	३.	यज्ञ के भागों को भी	बलभित्	८.	इन्द्र ने
सम्‌आददुः ।	४.	स्वयं ग्रहण करने लगे	तनयान्	१०.	पुत्रों को मार दिया
गुरुणा	५.	(तब) बृहस्पति के द्वारा	रजेः ॥	९.	रजि के

श्लोकार्थ— इन्द्र को स्वर्ग नहीं दिया और यज्ञ के भागों को भी स्वयम् ग्रहण करने लगे। तब बृहस्पति के द्वारा अग्नि में हवन किये जाने पर इन्द्र ने रजि के पुत्रों को मार दिया ॥

षोडशः श्लोकः

अवधीद् भ्रंशितान् मार्गान्न कश्चिदवशेषितः ।
कुशात् प्रतिः क्षात्रवृद्धात् सञ्जयस्तत्सुतो जयः ॥१६॥

पदच्छेद— अवधीत् भ्रंशितान् मार्गान् न कश्चित् अवशेषितः ।
कुशात् प्रतिः क्षात्र वृद्धात् सञ्जयः तत् सुतः जयः ॥

शब्दार्थ—

अवधीत्	३.	मार दिया	प्रतिः	१०.	प्रति उत्पन्न हुए
भ्रंशितान्	२.	भ्रष्ट हुए (रजि के पुत्रों को)	क्षात्र	७.	क्षात्र
मार्गान्	१.	मार्ग से	वृद्धात्	८.	वृद्ध के पौत्र
न	४.	नहीं	सञ्जयः	१३.	सञ्जय
कश्चित्	५.	कोई भी	तत्	११.	उनके
अवशेषितः	६.	बचा	सुतः	१२.	पुत्र
कुशात् ।	९.	कुश से	जयः ।	१४.	उनके पुत्र जय हुए

श्लोकार्थ—मार्ग से भ्रष्ट हुए रजि के पुत्रों को मार दिया, कोई भी नहीं बचा। क्षत्रवृद्ध के पौत्र कुश से प्रति उत्पन्न हुए, उनके पुत्र सञ्जय हुए और उनके पुत्र जय हुए ॥

सप्तदशः श्लोकः

ततः कृतः कृतस्यापि जज्ञे हर्यवनो नृपः ।
सहदेवस्ततो हीनो जयसेनस्तु तत्सुतः ॥१७॥

पदच्छेद— ततः कृतः कृतस्य अपि जज्ञे हर्यवनः नृपः ।
सहदेवः ततः हीनः जयसेनः तु तत् सुतः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. उनके	सहदेवः	८. उनके सहदेव
कृतः	२. कृत	ततः	९. उनके
कृतस्य	३. कृत के	हीनः	१०. हीन
अपि	४. भी	जयसेनः	१३. जयसेन हुए
जज्ञे	७. उत्पन्न हुए	तु तत्	११. और उनके
हर्यवनः	६. हर्यवन	सुतः ॥	१२. पुत्र
नृपः ।	५. राजा		

श्लोकार्थ— उनके कृत, कृत के भी राजा हर्यवन उत्पन्न हुए । उनके सहदेव, उनके हीन और उनके पुत्र जयसेन हुए ॥

अष्टादशः श्लोकः

सङ्कृतिस्तस्य च जयः क्षत्रधर्मा महारथः ।
क्षत्रवृद्धान्वया भूपाः शृणु वंशं च नाहुषात् ॥१८॥

पदच्छेद— सङ्कृतिः तस्य च जयः क्षत्रधर्माः महारथः ।
क्षत्रवृद्ध अन्वयाः भूपाः शृणु वंशं च नाहुषात् ॥

शब्दार्थ—

सङ्कृतिः	२. सङ्कृति	क्षत्रवृद्ध	७. क्षत्रवृद्ध के
तस्य	१. उनके	अन्वयाः	८. वंश में
च	३ और उनके	भूपाः	९. ये राजा हुए अब
जयः	६ जय हुए	शृणु	१३. सुनो
क्षत्रधर्मा	५. क्षत्रिय श्रेष्ठ	वंश	११. वंश को
महारथः ।	४. महारथी	च	१२. भी
		नाहुषात् ॥	१०. नहुष के

श्लोकार्थ— उनके सङ्कृति और उनके महारथी क्षत्रिय श्रेष्ठ जय हुए । क्षत्रवृद्ध के वंश में ये राजा हुए । अब नहुष के वंश को भी सुनो ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमस्कन्धे चन्द्रवंशानुवर्णने सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

अष्टादशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

यतिर्ययातिः संयातिरायतिर्वियतिः कृतिः ।
षडिमे नहुषस्यासन्निन्द्रियाणीव देहिनः ॥१॥

पदच्छेद— यतिः ययातिः संयातिः आयतिः वियतिः कृतिः ।
षड् इमे नहुषस्य आसन् इन्द्रियाणि इव देहिनः ॥

शब्दार्थ—

यतिः	१.	यति	षडइमे	८.	छः यह
ययातिः	२.	ययाति	नहुषस्य	९.	नहुष के
संयातिः	३.	संयाति	आसन्	१०.	पुत्र वैसे थे
आयतिः	४.	आयति	इन्द्रियाणि	१३.	इन्द्रियाँ
वियतिः	५.	वियति	इव	११.	जैसे
कृतिः ।	६.	कृति	देहिनः ॥	१२.	शरीरधारी की

श्लोकार्थ—यति, ययाति, संयाति , आयति, वियति, कृति यह छः नहुष के पुत्र वैसे थे जैसे शरीरधारी की इन्द्रियां होती हैं ॥

द्वितीयः श्लोकः

राज्यं नैच्छद् यतिः पित्रा दत्तं तत्परिणामवित् ।
यत्र प्रविष्टः पुरुष आत्मानं नावबुध्यते ॥२॥

पदच्छे— राज्यम् न ऐच्छत् यतिः पित्रा दत्तम् तत् परिणाम्वित् ।
यत्र प्रविष्टः पुरुषः आत्मानम् न अवबुध्यते ॥

शब्दार्थ—

राज्यम्	७.	राज्य	परिणाम	२.	परिणाम को
न	८.	नहीं	वित्	३.	जानने वाला
ऐच्छत्	९.	चाहता था (क्योंकि)	यत्	१०.	उसमें
यतिः	४.	यति	प्रविष्टः	११.	प्रविष्ट होने पर
पित्रा	५.	पिता का	पुरुषः	१२.	मनुष्य
दत्तम्	६.	दिया हुआ	आत्मानम्	१३.	आत्मा को
तत् ।	१.	उसके	न	१४.	नहीं
			अवबुध्यते ॥	१५.	जानता है ।

श्लोकार्थ—उसके परिणाम को जानने वाला यति पिता का दिया हुआ राज्य नही चाहता था । क्योंकि उसमें प्रविष्ट होने पर मनुष्य आत्मा को नहीं जानता है ॥

तृतीयः श्लोकः

पितरि भ्रंशिते स्थानादिन्द्राण्या धर्षणाद् द्विजैः ।
प्रापितेऽजगरत्वं वै ययातिरभवन्नृपः ॥३॥

पदच्छेद— पितरि भ्रंशिते स्थानात् इन्द्राण्या धर्षणात् द्विजैः ।
प्रापिते अजगरत्वम् वै ययातिः अभवत् नृपः ॥

शब्दार्थ—

पितरि	४.	पिता के	प्रापिते	८.	धारण कर लेने पर
भ्रंशिते	६.	गिरा दिये जाने पर (और)	अजगरत्वम्	७.	अजगर शरीर
स्थानात्	५.	(स्वर्ग) इन्द्रपद से	वै ययातिः	९.	ययाति ही
इन्द्राण्या	१.	इन्द्राणी से	अभवत्	११.	हुआ
धर्षणात्	२.	सहवास करने की चेष्टा कारण	नृपः ।	१०.	राजा
द्विजैः ।	३.	ब्राह्मणों द्वारा			

श्लोकार्थ—इन्द्राणी से सहवास करने की चेष्टा के कारण ब्राह्मणों द्वारा पिता के (इन्द्रपद) स्वर्ग से गिरा दिये जाने पर और अजगर शरीर धारण कर लेने पर ययाति ही राजा हुआ ॥

चतुर्थ श्लोकः

चतसृष्वादिशद् दिक्षु भ्रातॄन् भ्राता यवीयसः ।
कृतदारो जुगोपोर्वीं काव्यस्य वृषपर्वणः ॥४॥

पदच्छेद— चतसृषु आदिशत् दिक्षु भ्रातॄन् भ्राता यवीयसः ।
कृतदारः जुगोप ऊर्वीम् काव्यस्य वृषपर्वणः ॥

शब्दार्थ—

चतसृषु	२.	चार	कृतदारः	९.	विवाह करके
आदिशत्	६.	नियुक्त कर दिया	जुगोप	११.	रक्षा करने लगा
दिक्षु	३.	दिशाओं में	ऊर्वीम्	१०.	पृथ्वी को
भ्रातॄन्	५.	भाइयों को	काव्यस्य	७.	शुक्राचार्य की कन्या देवयानी से
भ्राता	१.	भाई (ययाति ने)	वृषपर्वणः ॥	८.	और वृषपर्वा की कन्या शर्मिष्ठा से
यवीयसः ।	४.	छोटे			

श्लोकार्थ—भाई ययाति ने चार दिशाओं में छोटे भाइयों को नियुक्त कर दिया । शुक्राचार्य की कन्या देवयानी से और वृषपर्वा की कन्या शर्मिष्ठा से विवाह करके पृथ्वी की रक्षा करने लगा ॥

पञ्चमः श्लोकः

ब्रह्मर्षिर्भगवान् काव्यः क्षत्रबन्धुश्च नाहुषः ।
राजन्यविप्रयोः कस्माद् विवाहः प्रतिलोमकः ।।५।।

पदच्छेद— ब्रह्मर्षिः भगवान् काव्यः क्षत्रबन्धुः च नाहुषः ।
राजन्य विप्रयोः कस्मात् विवाहः प्रतिलोमकः ।।

शब्दार्थ—

ब्रह्मर्षिः	३. ब्रह्मर्षि थे	राजन्य	७. क्षत्रिय वर और
भगवान्	१. भगवान्	विप्रयोः	८. ब्राह्मणकन्या का
काव्यः	२. शुक्राचार्य	कस्मात्	११. कैसे हुआ
क्षत्रबन्धुः	६. क्षत्रिय थे	विवाहः	१०. विवाह
च	४. और	प्रतिलोमकः ।।	९. प्रतिलोम (उलटा)
नाहुषः ।	५. ययाति		

श्लोकार्थ—भगवान् शुक्राचार्य ब्रह्मर्षि थे । और ययाति क्षत्रिय थे । क्षत्रियवर और ब्राह्मण कन्या का प्रतिलोम उलटा विवाह कैसे हुआ ।।

षष्ठः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एकदा दानवेन्द्रस्य शर्मिष्ठा नाम कन्यका ।
सखीसहस्रसंयुक्ता गुरुपुत्र्या च भामिनी ।।६।।

पदच्छेद— एकदा दानवेन्द्रस्य शर्मिष्ठा नाम कन्यका ।
सखी सहस्र संयुक्ता गुरुपुत्र्या च भामिनी ।।

शब्दार्थ—

एकदा	१. एक बार	सखी	१०. सखियों के
दानवेन्द्रस्य	२. दानवराज वृषपर्वा की	सहस्र	९. हजारों
शर्मिष्ठा	३. शर्मिष्ठा	संयुक्ता	११. साथ (वन में गई)
नाम	४. नाम की	गुरुपुत्र्या	७. गुरुपुत्री (देवयानी के)
कन्यका ।	६. कन्या	च	८. और
		भामिनी ।	५. सुन्दरी

श्लोकार्थ—एक बार दानवराज वृषपर्वा की शर्मिष्ठा नाम की सुन्दरी कन्या गुरुपुत्री देवयानी और अपनी हजारों सखियों के साथ वन में गई ।।

सप्तमः श्लोकः

देवयान्या पुरोद्याने पुष्पितद्रुमसङ्कुले।
व्यचरत् कलगीतालिनलिनीपुलिनेऽबला ॥७॥

पदच्छेद— देवयान्या पुरोद्याने पुष्पित द्रुम सङ्कुले।
व्यचरत् कलगीत अलिनलिनी पुलिने अबला ॥

शब्दार्थ—

देवयान्या	१०. देवयानी के साथ	**व्यचरत्**	११. घूम रही थी
पुरोद्याने	८. नगर के बीच में	**कलगीत**	४. मधुर स्वर से
पुष्पित	१. फूले हुए	**अलि**	५. गुञ्जार करते हुए भौंरों वाली
द्रुम	२. अनेक वृक्षों से	**नलिनी**	६. कमलिनी के
सङ्कुले।	३. परिपूर्ण	**पुलिने**	७ सरोवर से युक्त
		अबला ॥	९. शर्मिष्ठा

श्लोकार्थ—फूले हुए अनेक वृक्षों से परिपूर्ण, मधुर स्वर से गुञ्जार करते हुए भौंरों वाली कमलिनी के सरोवर से युक्त नगर के बगीचे में वह शर्मिष्ठा देवयानी के साथ घूम रही थी ॥

अष्टमः श्लोकः

ता जलाशयमासाद्य कन्याः कमललोचनाः।
तीरे न्यस्य दुकूलानि विजह्रुः सिञ्चतीर्मिथः ॥८॥

पदच्छेद— ताः जलाशयम् आसाद्य कन्याः कमल लोचनाः।
तीरे न्यस्य दुकूलानि विजह्रुः सिञ्चतीः मिथः ॥

शब्दार्थ—

ताः	३. उन	**तीरे**	७. तट पर
जलाशयम्	५. तालाब पर	**न्यस्य**	९. रख दिया और
आसाद्य	६. पहुँचकर	**दुकूलानि**	८. वस्त्रों को
कन्याः	४. कन्याओं ने	**विजह्रुः**	१२. क्रीड़ा करने लगीं
कमल	१. कमल के समान	**सिञ्चतीः**	११. जल उलीचते हुए
लोचनाः।	२. नेत्रों वाली	**मिथः ॥**	१०. एक दूसरे पर

श्लोकार्थ—कमल के समान नेत्रों वाली उन कन्याओं ने तालाब पर पहुँचकर तट पर वस्त्रों को रख दिया। और एक दूसरे पर जल उलीचती हुई क्रीड़ा करने लगीं ॥

नवमः श्लोकः

वीक्ष्य व्रजन्तं गिरिशं सह देव्या वृषस्थितम् ।
सहसोत्तीर्य वासांसि पर्यधुर्व्रीडिताः स्त्रियः ॥९॥

पदच्छेद— वीक्ष्य व्रजन्तम् गिरिशम् सह देव्या वृष स्थितम् ।
सहसा उत्तीर्य वासांसि पर्यधुः व्रीडिताः स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

वीक्ष्य	७.	देखकर	सहसा	१०.	एकाएक
व्रजन्तम्	६.	आते हुए	उत्तीर्य	११.	सरोवर से निकलकर
गिरिशम्	५.	महादेवजी	वासांसि	१२.	वस्त्रों को
सह	२.	साथ	पर्यधुः	१३.	पहन लिया
देव्या	१.	पार्वती के	व्रीडिताः	९.	लज्जित होकर
वृष	३.	बैल पर	स्त्रियः	८.	कन्याओं ने
स्थितम्	४.	बैठे हुए			

श्लोकार्थ—पार्वती के साथ बैल पर बैठे हुए महादेवजी को आते हुए देखकर कन्याओं ने लज्जित होकर एकाएक सरोवर से निकलकर वस्त्रों को पहन लिया ॥

दशमः श्लोकः

शर्मिष्ठाजानती वासो गुरुपुत्र्याः समव्ययत् ।
स्वीयं मत्वा प्रकुपिता देवयानीदमब्रवीत् ॥१०॥

पदच्छेद— शर्मिष्ठा अजानती वासः गुरु पुत्र्याः सम् अव्ययत् ।
स्वीयम् मत्वा प्रकुपिता देवयानी इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

शर्मिष्ठा	१.	शर्मिष्ठा ने	स्वीयम्	६.	अपना
अजानती	२.	अनजान में	मत्वा	७.	जानकर
वासः	५.	वस्त्र	प्रकुपिता	९.	क्रोधित होकर
गुरु	३.	गुरु	देवयानी	१०.	देवयानी ने
पुत्र्याः	४.	पुत्री देवयानी का	इदम्	११.	यह
सम्अव्ययत्	८.	पहन लिया (इस पर)	अब्रवीत्	१२	कहा

श्लोकार्थ—शर्मिष्ठा ने अनजान में गुरु-पुत्री देवयानी का वस्त्र अपना जानकर पहन लिया। इस पर क्रोधित होकर देवयानी ने यह कहा ॥

एकादशः श्लोकः

अहो निरीक्ष्यतामस्या दास्याः कर्मंह्यसाम्प्रतम् ।
अस्मद्धार्यं धृतवती शुनीव हविरध्वरे ॥११॥

पदच्छेद— अहो निरीक्ष्यताम् अस्याः दास्याः कर्म हि असाम्प्रतम् ।
अस्मत् धार्यम् धृतवती शुनी इव हविः अध्वरे ॥

शब्दार्थ—

अहो	१. अरे	**अस्मत्**	७. मेरे
निरीक्ष्यताम्	६. देखो	**धार्यम्**	८. धारण करने योग्य वस्त्र को
अस्याः	२. इस	**धृतवती**	९. इसने पहन लिया
दास्याः	३. दासी का	**शुनी इव**	११. कुतिया जैसे
कर्म हि	५. काम को	**हविः**	१३. हविष्य को उठा ले
असाम्प्रतम्	४. अनुचित	**अध्वरे**	१२. यज्ञ के

श्लोकार्थ—अरे इस दासी का अनुचित काम तो देखो। मेरे धारण करने योग्य वस्त्र इसने पहन लिया। जैसे कुतिया यज्ञ के हविष्य को उठा ले ॥

द्वादशः श्लोकः

यैरिदं तपसा सृष्टं मुखं पुंसः परस्य ये ।
धार्यते यैरिह ज्योतिः शिवः पन्थाश्च दर्शितः ॥१२॥

पदच्छेद— यैः इदम् तपसा सृष्टम् मुखम् पुंसः परस्य ये ।
धार्यते यैः इह ज्योतिः शिवः पन्थाः च दर्शितः ॥

शब्दार्थ—

यैः	१. जिन ब्राह्मणों ने	**धार्यते**	१२. धारण करते हैं
इदम्	३. इस संसार को	**यैः**	९. जो
तपसा	२. तपस्या के बल से	**इह**	१०. यहाँ
सृष्टम्	४. सृष्टि की (और)	**ज्योतिः**	११. ज्योतिर्मय परमात्मा को
मुखम्	८. मुख है	**शिवः**	१४. कल्याणकारी
पुंसः	७. पुरुष परमात्मा के	**पन्थाः**	१५. वैदिक मार्ग को
परस्य	६. परम	**च**	१३. और (जिन्होंने)
ये	५. जो	**दर्शितः**	१६. दिखाया है।

श्लोकार्थ—जिन ब्राह्मणों ने तपस्या के बल से इस संसार की सृष्टि की और जो परम पुरुष परमात्मा के मुख हैं। जो यहाँ ज्योतिर्मय परमात्मा को धारण करते हैं। और जिन्होंने कल्याणकारी वैदिक मार्ग को दिखाया है ॥

त्रयोदशः श्लोकः

यान् वन्दन्त्युपतिष्ठन्ते लोकनाथाः सुरेश्वराः ।
भगवानपि विश्वात्मा पावनः श्रीनिकेतनः ॥१३॥

पदच्छेद— यान् वन्दन्ति उपतिष्ठन्ते लोक नाथाः सुरेश्वराः ।
भगवान् अपि विश्वात्मा पावनः श्री निकेतनः ॥

शब्दार्थ—

यान्	१०.	जिनकी	भगवान्	८.	भगवान्
वन्दन्ति	१२.	वन्दना करते हैं	अपि	९.	भी
उपतिष्ठन्ते	११.	उपासना	विश्वात्मा	७.	विश्वस्वरूप
लोक	१.	लोक	पावनः	६.	पवित्र करने वाले
नाथः	२.	पाल	श्री	४.	लक्ष्मी के
सुरेश्वराः	३.	देवराज इन्द्र आदि और	निकेतनः	५.	निवास स्थान

श्लोकार्थ— लोक पाल देवराज इन्द्र आदि और लक्ष्मी के निवास स्थान, पवित्र करने वाले, विश्वस्वरूप भगवान् भी जिनकी उपासना वन्दना करते हैं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

वयं तत्रापि भृगवः शिष्योऽस्या नः पितासुरः ।
अस्मद्धार्यं धृतवती शूद्रो वेदमिवासती ॥१४॥

पदच्छेद— वयम् तत्र अपि भृगवः शिष्यः अस्याः नः पिता असुरः ।
अस्मत् धार्यम् धृतवती शूद्र वेदम् इव असती ॥

शब्दार्थ—

वयम्	३.	हम लोग	असुरः	७.	असुर
तत्र	१.	उनमें	अस्मत्	११.	हमारे
अपि	२.	भी	धार्यम	१२	धारण करने योग्य वस्त्र को
भृगवः	४.	भृगुवंशी हैं	धृतवती	१३.	पहन लिया
शिष्यः	९.	शिष्य है (इस)	शूद्रः	१५.	शूद्र
अस्याः	५.	इसका	वेदम्	१६.	वेद को पढ़ ले
नः	८.	हमारा	इव	१४.	जैसे
पिता	६.	पिता	असती	१०.	दुष्टा ने

श्लोकार्थ— उनमें भी हम लोग भृगुवंशी हैं। इसका पिता असुर हमारा शिष्य है। इस दुष्टा ने हमारे धारण करने योग्य वस्त्र को पहन लिया, जैसे शूद्र वेद को पढ़ ले ॥

पञ्चदशः श्लोकः

एवं शपन्तीं शर्मिष्ठा गुरुपुत्रीमभाषत ।
रुषा श्वसन्त्युरङ्गीव धर्षिता दष्टदच्छदा ॥१५॥

पदच्छेद— एवम् शपन्तीम् शर्मिष्ठा गुरु पुत्रीम् अभाषत ।
रुषा श्वसन्ती उरङ्गीव धर्षिता दष्ट दच्छदा ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	रुषा	६.	क्रोध से
शपन्तीम्	२.	शाप देती हुई	श्वसन्ती	७.	सांस लेती हुई
शर्मिष्ठा	५.	शर्मिष्ठा ने	उरङ्गीव	९.	नागिन के समान
गुरु	३.	गुरु	धर्षिता	८.	चोट खाई हुई
पुत्रीम्	४.	पुत्री देवयानी से	दष्ट	११.	होठ दबाकर
अभाषत	१२.	कहा	दच्छदा	१०.	दाँतों से

श्लोकार्थ—इस प्रकार शाप देती हुई गुरु पुत्री देवयानी से शर्मिष्ठा ने क्रोध से सांस लेती हुई चोट खाई हुई नागिन के समान दाँतो से होठ दबाकर कहा ॥

षोडशः श्लोकः

आत्मवृत्तमविज्ञाय कत्थसे बहु भिक्षुकि ।
किं न प्रतीक्षसेऽस्माकं गृहान् बलिभुजो यथा ॥१६॥

पदच्छेद— आत्म वृत्तम् अविज्ञाय कत्थसे बहु भिक्षुकि ।
किम् न प्रतीक्षसे अस्माकम् गृहान् बलिभुजः यथा ॥

शब्दार्थ—

आत्म	२.	अपना	किम् न	११.	क्या नहीं
वृत्तम्	३.	वृतान्त	प्रतीक्षसे	१२.	प्रतीक्षा करती है
अविज्ञाय	४.	न जानकर	अस्माकम्	७.	हमारे
कत्थसे	६.	बहक रही है	गृहान्	८.	घर की ओर
बहु	५.	बहुत	बलिभुजः	९.	कौए और कुत्ते के
भिक्षुकि	१.	भिखारिन	यथा	१०.	समान

श्लोकार्थ—भिखारिन अपना वृतान्त न जानकर बहुत बहक रही है। हमारे घर की ओर कौए और कुत्ते के समान क्या नहीं प्रतीक्षा करती है ? ॥

सप्तदशः श्लोकः

एवंविधैः सुपरुषैः क्षिप्त्वाऽऽचार्यसुतां सतीम् ।

शर्मिष्ठा प्राक्षिपत् कूपे वास आदाय मन्युना ॥१७॥

पदच्छेद— एवम् विधैः सुपरुषैः क्षिप्त्वा आचार्य सुताम् सतीम् ।
शर्मिष्ठा प्राक्षिपत् कूपे वासः आदाय मन्युना ॥

शब्दार्थ—

एवम् विधैः	२.	इस प्रकार के	शर्मिष्ठा	१.	शर्मिष्ठा ने
सुपरुषैः	३.	कठोर वचनों से	प्राक्षिपत्	१२.	ढकेल दिया
क्षिप्त्वा	७.	निन्दा करके	कूपे	११.	कुए में
आचार्य	५.	गुरु	वासः	९.	वस्त्र
सुताम्	६.	पुत्री देवयानी की	आदाय	१०.	लेकर उसे
सतीम्	४.	साध्वी	मन्युना	८.	क्रोध से।

श्लोकार्थ—शर्मिष्ठा ने इस प्रकार के कठोर वचनों से साध्वी गुरु पुत्री देवयानी की निन्दा करके क्रोध से वस्त्र लेकर उसे कुये में ढकेल दिया ॥

अष्टादशः श्लोकः

तस्यां गतायां स्वगृहं ययातिर्मृगयां चरन् ।

प्राप्तो यदृच्छया कूपे जलार्थी तां ददर्श ह ॥१८॥

पदच्छेद— तस्याम् गतायां स्व गृहम् ययातिः मृगयाम् चरन् ।
प्राप्तः यदृच्छया कूपे जलार्थी ताम् ददर्श ह ॥

शब्दार्थ—

तस्याम्	१.	उस शर्मिष्ठा के	प्राप्तः	९.	वहाँ आये और
गतायाम्	४.	चले जाने पर	यदृच्छया	५.	संयोग वश
स्व	२.	अपने	कूपे	१०.	कुये में
गृहम्	३.	घर	जलार्थी	८.	जल पीने की अभिलाषा से
ययातिः	५.	राजा ययाति	ताम्	११.	उस देवयानी को
मृगयाम्	६.	शिकार	ददर्श ह	१२.	देखा
चरन्	७.	खेलते हुए			

श्लोकार्थ—उस शर्मिष्ठा के अपने घर चले जाने पर राजा ययाति शिकार खेलते हुए जल पीने की अभिलाषा से वहाँ आये और संयोग वश कुये में उस देवयानी को देखा ॥

एकोनविंशः श्लोकः

दत्त्वा स्वमुत्तरं वासस्तस्यै राजा विवाससे ।
गृहीत्वा पाणिना पाणिमुज्जहार दयापरः ॥१९॥

पदच्छेद— दत्त्वा स्वयम् उत्तरम् वासः तस्यै राजा विवाससे ।
गृहीत्वा पाणिना पाणिम् उज्जहार दया परः ॥

शब्दार्थ—

दत्त्वा	७. देकर और	गृहीत्वा	१०. पकड़कर
स्वयम्	४. अपना	पाणिना	८. हाथ से
उत्तरम्	५. ऊपर का	पाणिम्	९. उसके हाथ को
वासः	६. वस्त्र (दुपट्टा)	उज्जहार	१३. निकाल लिया
तस्यै	३. उस देवयानी को	दया	११. दया
राजा	१. राजा ययाति ने	परः	१२. करके बाहर
विवाससे	२. निवस्त्र		

श्लोकार्थ— राजा ययाति ने निवस्त्र उस देवयानी को अपना ऊपर का वस्त्र दुपट्टा देकर और हाथ से उसका हाथ पकड़कर दया करके बाहर निकाल लिया ॥

विंश श्लोकः

तं वीरमाहौशनसी प्रेमनिर्भरया गिरा ।
राजंस्त्वया गृहीतो मे पाणिः परपुरञ्जय ॥२०॥

पदच्छेद— तम् वीरम् आह औशनसी प्रेम निर्भरया गिरा ।
राजन् त्वया गृहीतः मे पाणिः परपुरञ्जयः ॥

शब्दार्थ—

तम्	१. उस	राजन्	८. राजन्
वीरम् आह	२. वीर राजा से कहा	त्वया	९. आपने
औशनसी	३ शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी ने	गृहीतः	१२. पकड़ लिया है
प्रेम	४. प्रेम	मे	१०. मेरा
निर्भरया	५. भरी	पाणिः	११. हाथ
गिरा	६. वाणी से	परपुरञ्जय	७. हे श्रेष्ठ वीर

श्लोकार्थ— उस वीर राजा से शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी ने प्रेम भरी मधुर वाणी से कहा—हे श्रेष्ठ वीर राजन् ! आपने मेरा हाथ पकड़ लिया है ॥

एकविंशः श्लोकः

हस्तग्राहोऽपरो मा भूद् गृहीतायास्त्वया हि मे ।
एष ईशकृतो वीर सम्बन्धो नौ न पौरुषः ।
यदिदं कूपलग्नाया भवतो दर्शनं मम ॥२१॥

पदच्छेद— हस्तग्राहः अपरः मा भूद् गृहीतायाः त्वया हि मे ।
एषः ईशकृतः वीर सम्बन्धः नौ न पौरुषः ।
यत् इदम् कूपलग्नायाः भवतः दर्शनम् मम ॥

शब्दार्थ—

हस्तग्राहः	४.	हाथ पकड़ने वाला	नौ	७.	हम दोनों का
अपरः	५.	दूसरा कोई	न	१२.	नहीं है
मा भूद्	६.	न हो	पौरुषः	११.	मनुष्य का किया हुआ
गृहीतायाः	२.	ग्रहण की गई	यत्	१३.	जो
त्वया हि	१.	आपके द्वारा	इदम्	१४.	यह
हि मे	३.	मेरा	कूपलग्नायाः	१५.	कुये में गिरी हुई
एषः	८.	यह	भवतः	१७.	आपका
ईशकृतः	१०.	भगवान् के द्वारा किया हुआ है	दर्शनम्	१८.	दर्शन हुआ
वीर	१.	हे वीर	मम	१६.	मुझे
सम्बन्धः	९.	सम्बन्ध			

श्लोकार्थ—हे वीर ! आपके द्वारा ग्रहण की गई मेरा हाथ पकड़ने वाला दूसरा कोई न हो। यह सम्बन्ध भगवान् के द्वारा किया हुआ है। मनुष्य का किया हुआ नहीं है। जो यह कुये में गिरी हुई मुझे आपका दर्शन हुआ है ॥

द्वाविंशः श्लोकः

न ब्राह्मणो मे भविता हस्तग्राहो महाभुज ।
कचस्य बार्हस्पत्यस्य शापाद् यमशपं पुरा ॥२२॥

पदच्छेद— न ब्राह्मणः मे भविता हस्तग्राहः महाभुज ।
कचस्य बार्हस्पत्यस्य शापाद् यम् अशपम् पुरा ॥

शब्दार्थ—

न	११.	नहीं	कचस्य	६.	कच के
ब्राह्मणः	१०.	ब्राह्मण	बार्हस्पत्यस्य	५.	बृहस्पति के पुत्र
मे	८.	मेरा	शापात्	७.	शाप के कारण
भविता	१२.	होगा (क्योंकि)	यम्	२.	जिसे
हस्तग्राहः	९.	हाथ पकड़ने वाला	अशपम्	४.	शाप दिया था उस
महाभुज	१.	हे महान् पराक्रमी	पुरा	३	पहले (मैंने)

श्लोकार्थ—हे महान् पराक्रमी ! जिसे पहले मैंने शाप दिया था उस बृहस्पति के पुत्र कच के शाप के कारण मेरा हाथ पकड़ने वाला ब्राह्मण नहीं होगा ॥

त्रयोविंशः श्लोक

ययातिरनभिप्रेतं दैवोपहृतमात्मनः ।
मनस्तु तद्गतं बुद्ध्वा प्रतिजग्राह तद्वचः ॥२३॥

पदच्छेद— ययातिः अनभिप्रेतम् दैव उपहृतम् आत्मनः ।
मनः तु तत् गतम् बुद्ध्वा प्रतिजग्राह तत् वचः ॥

शब्दार्थ—

ययातिः	१. राजा ययाति को	मनः तु	८. मन को
अनभिप्रेतम्	५. अभीष्ट नहीं था किन्तु	तत्	६. उसको
दैव	२. प्रारब्ध के द्वारा	गतम्	७. ओर लगे हुए
उपहृतम्	४. दिया हुआ उपहार	बुद्ध्वा	९. जानकर
आत्मनः	३. अपने को	प्रतिजग्राह	११. स्वीकार कर लिया
		तत् वचः	१०. उसकी बात को

श्लोकार्थ— राजा ययाति को प्रारब्ध के द्वारा अपने को दिया हुआ यह उपहार अभीष्ट नहीं था किन्तु उसकी ओर लगे हुए मन को जानकर उसकी बात को स्वीकार कर लिया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

गते राजनि सा वीरे तत्र स्म रुदती पितुः ।
न्यवेदयत् ततः सर्वमुक्तं शर्मिष्ठया कृतम् ॥२४॥

पदच्छेद— गते राजनि सा वीरे तत्र स्म रुदती पितुः ।
न्यवेदयत् ततः सर्वम् उक्तम् शर्मिष्ठया कृतम् ॥

शब्दार्थ—

गते	४. चले जाने पर	पितुः	८. पिता के पास जाकर
राजनि	३. राजा के	न्यवेदयत्	१३. बता दिया
सा	५. उसने	ततः	१. तदनन्तर
वीरे	२. वीर	सर्वम्	१२. सब कुछ
तत्रस्म	६. वहाँ	उक्तम्	११. जो कहा था वह
रुदती	७ रोती हुई	शर्मिष्ठया	९. शर्मिष्ठा ने
		कृतम्	१०. जो किया था और

श्लोकार्थ —तदनन्तर वीर राजा के चले जाने पर उसने वहाँ रोती हुई पिता के पास जाकर शर्मिष्ठा ने जो किया था और जो कहा था, वह सब कुछ बता दिया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

दुर्मना भगवान् काव्यः पौरोहित्यं विगर्हयन् ।
स्तुवन् वृत्तिं च कापोतीं दुहित्रा स ययौ पुरात् ॥२५॥

पदच्छेद— दुर्मनाः भगवान् काव्यः पौरोहित्यम् विगर्हयन् ।
स्तुवन् वृत्तिम् च कापोतीम् दुहित्रा सः ययौ पुरात् ॥

शब्दार्थ—

दुर्मनाः	४.	उदासीन होकर	वृत्तिम्	९.	जीविका को
भगवान्	२.	भगवान्	च	७.	और
काव्यः	३.	शुक्राचार्य	कापोतीम्	८.	कबूतर की
पौरोहित्यम्	५.	पुरोहिताई की	दुहित्रा	११.	पुत्री के साथ
विगर्हयन्	६.	निन्दा करते हुए	सः ययौ	१.	वे चल पड़े
स्तुवन् ।	१०.	प्रशंसा करते हुए	पुरात् ॥	१२.	नगर से

श्लोकार्थ—वे भगवान् शुक्राचार्य उदासीन होकर पुरोहिताई की निन्दा करते हुए और कबूतर की जीविका की प्रशंसा करते हुए पुत्री के साथ नगर से चल पड़े ॥

षड्विंशः श्लोकः

वृषपर्वा तमाज्ञाय प्रत्यनीकविवक्षितम् ।
गुरुं प्रसादयन् मूर्ध्ना पादयोः पतितः पथि ॥२६॥

पदच्छेद— वृषपर्वा तम् आज्ञाय प्रत्यनीक विवक्षितम् ।
गुरुम् प्रसादयन् मूर्ध्ना पादयोः पतितः पथि ॥

शब्दार्थ—

वृषपर्वा	१.	वृषपर्वा	गुरुम्	६.	गुरु शुक्राचार्य को
तम्	२.	उसे	प्रसादयन्	७.	प्रसन्न करने के लिए
आज्ञाय	५.	जानकर	मूर्ध्ना	९.	सिर के बल (उनके)
प्रत्यनीक	३.	शत्रुओं की	पादयोः	१०.	चरणों पर
विवक्षितम् ।	४.	चाल	पतितः	११.	गिर पड़े
			पथि ॥	८.	रास्ते में

श्लोकार्थ— वृषपर्वा उसे शत्रुओं की चाल जानकर गुरु शुक्राचार्य को प्रसन्न करने के लिए रास्ते में सिर के बल चरणों पर गिर पड़े ॥

सप्तविंशः श्लोकः

क्षणार्धमन्युर्भगवान् शिष्यं व्याचष्ट भार्गवः ।
कामोऽस्याः क्रियतां राजन् नैनां त्यक्तुमिहोत्सहे ॥२७॥

पदच्छेद— क्षणार्धमन्युः भगवान् शिष्यम् व्याचष्ट भार्गवः ।
काम: अस्याः क्रियताम् राजन् न एनाम् त्यक्तुम् इह उत्सहे ॥

शब्दार्थ—

क्षणार्धं	१.	आधे क्षण के लिए	अस्याः	८.	इस (देवयानी) की
मन्युः	२.	क्रोध करने वाले	क्रियताम्	१०.	पूर्ण करो
भगवान्	३.	भगवान्	राजन्	७.	हे राजन् !
शिष्यम्	५.	शिष्य से	न एनाम्	१२.	नहीं इसको
व्याचष्ट	६.	कहा	त्यक्तुम्	१३.	छोड़कर
भार्गवः	४.	शुक्राचार्य ने	इह	११.	यहाँ मैं
कामः	९.	इच्छा को	उत्सहे	१४.	रह सकता

श्लोकार्थ—आधे क्षण के लिए क्रोध करने वाले भगवान् शुक्राचार्य ने शिष्य से कहा हे राजन् ! इस देवयानी की इच्छा को पूर्ण करो । यहाँ मैं इसको छोड़कर नहीं रह सकता ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

तथेत्यवस्थिते प्राह देवयानी मनोगतम् ।
पित्रा दत्ता यतो यास्ये सानुगा यातु मामनु ॥२८॥

पदच्छेद— तथा इति अवस्थिते प्राह देवयानी मनोगतम् ।
पित्रा दत्ता यतः यास्ये स अनुगा यातु माम् अनु ॥

शब्दार्थ—

तथा	१	ठीक है	पित्रा	७.	पिता के द्वारा
इति	२.	ऐसा कहकर	दत्ता	८.	दी जाने पर
अवस्थिते	३.	विरत हो जाने पर	यतः	९.	जहाँ मैं
प्राह	६.	कही	यास्ये	१०.	जाऊँ
देवयानी	४.	देवयानी ने	सअनुगा	११.	वहीं शर्मिष्ठा भी अपनी सेविकाओं के साथ
मनोगतम् ।	५.	मन की बात	यातु	१३.	जावे
			मामनु ॥	१२.	मेरे पीछे-पीछे

श्लोकार्थ—ठीक है, ऐसा कह कर विरत हो जाने पर देवयानी ने मन की बात कही । पिता के द्वारा दी जाने पर जहाँ मैं जाऊँ वहीं शर्मिष्ठा भी अपनी सेविकाओं के साथ मेरे पीछे-पीछे जावे ॥

एकोनत्रिंश श्लोक

स्वानां तत् सङ्कटं वीक्ष्य तदर्थस्य च गौरवम् ।
देवयानीं पर्यचरत् स्त्रीसहस्रेण दासवत् ॥२९॥

पदच्छेद— स्वानाम् तत् सङ्कटम् वीक्ष्य तत् अर्थस्य च गौरवम् ।
देवयानीम् पर्यचरत् स्त्री सहस्रेण दाशवत् ॥

शब्दार्थ—

स्वानाम्	१. अपने परिवार का	देवयानीम्	१३. देवयानी की
तत्	२. वह	पर्य	१४. सेवा
सङ्कटम्	३. संकट	चरत्	१५. करने लगी
वीक्ष्य	४. देखकर	स्त्री	१२. सहेलियों के साथ
तत्	६. उनके	सहस्रेण	११. हजारों
अर्थस्य	७. कार्य का	दास	९. दासी के
च	५. और	वत् ।	१०. समान
गौरवम् ॥	८. महत्त्व जानकर शर्मिष्ठा		

श्लोकार्थ—अपने परिवार का वह संकट देखकर और उसके कार्य का महत्त्व जानकर शर्मिष्ठा दासी के समान हजारों सहेलियों के साथ देवयानी की सेवा करने लगी ॥

त्रिंशः श्लोकः

नाहुषाय सुतां दत्त्वा सह शर्मिष्ठयोशना ।
तमाह राजञ्छर्मिष्ठामाधास्तल्पे न कर्हिचित् ॥३०॥

पदच्छेद— नाहुषाय सुताम् दत्त्वा सह शर्मिष्ठया उसना ।
तम् आह राजन् शर्मिष्ठाम् अधः तल्पे न कर्हिचित् ॥

शब्दार्थ—

नाहुषाय	२. ययाति को	तम् आह	७. उस ययाति से कहा
सुताम्	५ पुत्री को	राजन्	८. हे राजन् !
दत्त्वा	६. देकर	शर्मिष्ठाम्	९. शर्मिष्ठा को अपनी
सह	४. साथ (अपनी)	अधः	१३. आने देना
शर्मिष्ठया	३. शर्मिष्ठा के	तल्पे	१२. शय्या पर
उशना	१. शुक्राचार्य ने	कर्हिचित् ॥	११. कभी नहीं

श्लोकार्थ—शुक्राचार्य ने ययाति को शर्मिष्ठा के साथ अपनी पुत्री को देकर उस ययाति से कहा—हे राजन् ! शर्मिष्ठा को अपनी शय्या पर कभी नहीं आने देना ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

विलोक्यौशनसीं राजञ्छर्मिष्ठा सप्रजां क्वचित् ।
तमेव वव्रे रहसि सख्याः पतिमृतौ सती ॥३१॥

पदच्छेद— विलोक्य औशनसीम् राजन् शर्मिष्ठा सप्रजाम् क्वचित् ।
तम् एव वव्रे रहसि सख्याः पतिम् ऋतौ सती ॥

शब्दार्थ—

विलोक्य	५. देखकर	तम् एव	१०. उस राजा से ही
औशनसीम्	३. शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी को	वव्रे	१३. याचना की
राजन्	१. हे परीक्षित् !	रहसि	१२. एकान्त में
शर्मिष्ठा	७. शर्मिष्ठा ने	सख्याः	८. सखी के
सप्रजाम्	४. पुत्रवती	पतिम्	९. पति
क्वचित् ।	२. किसी समय	ऋतौ	११. ऋतु काल में
		सती ॥	६. सती

श्लोकार्थ— हे परीक्षित् ! किसी समय शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी को पुत्रवती देखकर सती शर्मिष्ठा ने सखी के पति उस राजा से ही ऋतु काल में एकान्त में याचना की ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

राजपुत्र्यार्थितोऽपत्ये धर्मं चावेक्ष्य धर्मवित् ।
स्मरञ्छुक्रवचः काले दिष्टमेवाभ्यपद्यत ॥३२॥

पदच्छेद— राजपुत्र्या अर्थितः अपत्ये धर्मम् च अवेक्ष्य धर्मवित् ।
स्मरन् शुक्रवचः काले दिष्टम् एव अभ्यपद्यत ॥

शब्दार्थ—

राजपुत्र्या	१. राजपुत्री शर्मिष्ठा के द्वारा	स्मरन्	१०. स्मरण करते हुए
अर्थितः	३. याचना किये जाने पर	शुक्र	८. शुक्राचार्य के
अपत्ये	२. सन्तान के लिए	वचः	९. वचन का
धर्मम्	५. धर्म को	काले	११. समय पर
च	६. भी	दिष्टम्	१२. भाग्य को
अवेक्ष्य	७. जानकर	एव	१३. ही
धर्मवित् ।	४. धर्म के ज्ञाता राजा ने	अभ्यपद्यत ॥	१४. स्वीकार किया

श्लोकार्थ—राजपुत्री शर्मिष्ठा के द्वारा सन्तान के लिए याचना किये जाने पर धर्म के ज्ञाता राजा ने धर्म को जानकर शुक्राचार्य के वचन का स्मरण करते हुए समय पर भाग्य को ही स्वीकार किया ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

यदुं च तुर्वसुं चैव देवयानी व्यजायत।
द्रुह्युं चानुं च पूरुं च शर्मिष्ठा वार्षपर्वणी ॥३३॥

पदच्छेद— यदुम् च तुर्वसुम् च एव देवयानी व्यजायत।
द्रुह्युम् च अनुम् च पूरुम् च शर्मिष्ठा वार्षपर्वणी ॥

शब्दार्थ—

यदुम्	१. यदु	द्रुह्युम्	९. द्रुह्यु
च	२. और	अनुम्	१०. अनु
तुर्वसुम्	३. तुर्वसु को	च	११. और
च एव	६. तथा	पूरुम्	१२. पूरु को उत्पन्न किया
देवयानी	४. देवयानी ने	च	१३. तथा
व्यजायत।	५. उत्पन्न किया	शर्मिष्ठा	८. शर्मिष्ठा ने
		वार्षपर्वणी ॥	७. वृषपर्वा की पुत्री

श्लोकार्थ—यदु और तुर्वसु को देवयानी ने उत्पन्न किया। तथा वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा ने द्रुह्यु और अनु तथा पूरु को उत्पन्न किया ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

गर्भसम्भवमासुर्या भर्तुर्विज्ञाय मानिनी।
देवयानी पितुर्गेहं ययौ क्रोधविमूर्च्छिता ॥३४॥

पदच्छेद— गर्भसम्भवम् आसुर्याभर्तुः विज्ञाय मानिनी।
देवयानी पितुः गेहम् ययौ क्रोध विमूर्च्छिता ॥

शब्दार्थ—

गर्भ	२. इस शर्मिष्ठा को गर्भ	देवयानी	७. देवयानी
सम्भवम्	३. रहा है	पितुः	१०. पिता के
आसुर्या	५. ईर्ष्या से जलकर	गेहम्	११. घर
भर्तुः	१. मेरे पति से ही	ययौ	१२. चली गयी
विज्ञाय	४. ऐसा जानकर	क्रोध	८. क्रोध से
मानिनी।	६. मानिनी	विमूर्च्छिता ॥	९. बेसुध होकर

श्लोकार्थ—मेरे पति से ही इस शर्मिष्ठा को गर्भ रहा है, ऐसा जानकर ईर्ष्या से जलकर मानिनी देवयानी क्रोध से बेसुध होकर पिता के घर चली गयी ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

प्रियामनुगतः कामी वचोभिरुपमन्त्रयन् ।
न प्रसादयितुं शेके पादसंवाहनादिभिः ॥३५॥

पदच्छेद— प्रियाम् अनुगतः कामी वचोभिः उपमन्त्रयन् ।
न प्रसादयितुम् शेके पादसंवाहन आदिभिः ॥

शब्दार्थः—

प्रियाम्	१. प्रिया के	न प्रसादयितुम्	१०. नहीं उसको प्रसन्न
अनुगतः	२. पीछे-पीछे जाते हुए	शेके	११. कर सका
कामी	३. कामी राजा ने	पाद	६. चरण
वचोभिः	४. वचनों से	संवाहन	७. दबाने
उपमन्त्रयन् ।	५. मनाते हुए तथा	आदिभिः ॥	८. आदि से भी

श्लोकार्थ—प्रिया के पीछे-पीछे जाते हुए कामी राजा मीठे वचनों से मनाते हुए तथा चरण दबाने आदि से भी उसको प्रसन्न नहीं कर सका ॥

षट्त्रिंश श्लोकः

शुक्रस्तमाह कुपितः स्त्रीकामानृतपूरुष ।
त्वां जरा विशतां मन्द विरू॰करणी नृणाम् ॥३६॥

पदच्छेद— शुक्रः तम् आह कुपितः स्त्रीकाम अनृत पूरुष ।
त्वाम् जरा विशताम् मन्द विरूप करणी नृणाम् ॥

शब्दार्थ—

शुक्रः	१. शुक्राचार्य ने	त्वाम्	१२. तुझमें
तम्	३. उससे	जरा	११. बुढ़ापा
आह	४. कहा	विशताम्	१३. आ जाये
कुपितः	२. क्रोधित होकर	मन्द	५. हे मूर्ख
स्त्रीकाम	६. स्त्री लम्पट	विरूप	९. कुरूप
अनृतपूरुष ।	७. मिथ्यावादी पुरुष	करणी	१०. करने वाला
		नृणाम् ॥	८. मनुष्यों को

श्लोकार्थ—शुक्राचार्य ने क्रोधित होकर उससे कहा हे मूर्ख ! स्त्रीलम्पट ! मिथ्यावादी पुरुष ! मनुष्यों को कुरूप करने वाला बुढ़ापा तुझ में आ जावे ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

ययातिरुवाच—अतृप्तोऽस्म्यद्य कामानां ब्रह्मन् दुहितरि स्म ते ।
व्यत्यस्यतां यथाकामं वयसा योऽभिधास्यति ॥३७॥

पदच्छेद— अतृप्तः अस्मि अद्य कामानाम् ब्रह्मन् दुहितरि स्म ते ।
व्यत्यस्यताम् यथा कामम् वयसा यः अभिधास्यति ॥

शब्दार्थ—

अतृप्तः	८.	अतृप्त	व्यत्यस्यताम्	१२.	बदल लो
अस्मि	२.	मैं हूँ (इस पर)	यथा	८.	अनुसार
अद्य	६.	आज भी	कामम्	७.	इच्छा के
कामानाम्	३.	विषय भोग से	वयसा	१०.	जवानी
ब्रह्मन्	१.	हे ब्रह्मन् !	यः	९.	जो अपनी
दुहितरि	४.	पुत्री के	अभिधास्यति ॥	११	दे दे उससे अपना बुढ़ापा
स्म ते ।	५.	साथ आपकी			

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! मैं आपकी पुत्री के साथ आज भी विषय भोग से अतृप्त हूँ। इस प शुक्राचार्य ने कहा—जो अपनी इच्छा के अनुसार अपनी जवानी दे दे, उससे अपन बुढ़ापा बदल लो ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

इति लब्धव्यवस्थानः पुत्रं ज्येष्ठमवोचत ।
यदो तात प्रतीच्छेमां जरां देहि निजं वयः ॥३८॥

पदच्छेद— इति लब्ध व्यवस्थानः पुत्रम् ज्येष्ठम् अवोचत ।
यदो तात प्रतीच्छ इमाम् जरां देहि निजं वयः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	ऐसी	यदो	८.	यदु
लब्ध	३.	मिल जाने पर राजा ने	तात	७.	बेटा
व्यवस्थानः	२.	व्यवस्था	प्रतीच्छ	१०.	ले लो और
पुत्रम्	५.	पुत्र से	इमाम् जराम्	९.	इस बुढ़ापे को
ज्येष्ठम्	४.	ज्येष्ठ	देहि	१३.	दे दो
अवोचत ।	६.	कहा	निजम्	११.	अपनी
			वयः ॥	१२.	जवानी

श्लोकार्थ—ऐसी व्यवस्था मिल जाने पर राजा ने ज्येष्ठ पुत्र से कहा—बेटा यदु ! इस बुढ़ापे क ले लो और अपनी जवानी दे दो ॥

एकोनचत्वारिंश श्लोक

मातामहकृतां वत्स न तृप्तो विषयेष्वहम् ।
वयसा भवदीयेन रंस्ये कतिपयाः समाः ॥३९॥

पदच्छेद— मातामह कृताम् वत्स न तृप्तः विषयेषु अहम् ।
वयसा भवदीयेन रंस्ये कतिपयाः समाः ॥

शब्दार्थ—

मातामह	१ अपने नाना की	अहम्	४. मैं
कृताम्	२. दी हुई इस वृद्धावस्था को ले लो	वयसा	९. जवानी से मैं
वत्स	३. हे वत्स	भवदीयेन	८. तुम्हारी
न	७. नहीं हुआ हूँ ।	रंस्ये	१२. आनन्द लूँगा
तृप्तः	६. तृप्त	कतिपयाः	१०. कुछ
विषयेषु ।	५. विषय भोग से	समाः ॥	११. वर्षों तक

श्लोकार्थ—अपने नाना की दी हुई वृद्धावस्था को ले लो। क्योंकि मैं विषय भोग से तृप्त नहीं हुआ हूँ। तुम्हारी जवानी से मैं कुछ वर्षों तक आनन्द लूँगा ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

नोत्सहे जरसा स्थातुमन्तरा प्राप्तया तव ।
अविदित्वा सुखं ग्राम्यं वैतृष्ण्यं नैति पूरुषः ॥४०॥

पदच्छेद— न उत्सहे जरसा स्थातुम् अन्तरा प्राप्तया तव ।
अविदित्वा सुखम् ग्राम्यम् वैतृष्ण्यम् न एति पुरुषः ॥

शब्दार्थ—

न	५. नहीं	अविदित्वा	८. बिना अनुभव किये
उत्सहे	७. चाहता हूँ	सुखम्	१०. सुख का
जरसा	४. बुढ़ापा लेकर मैं	ग्राम्यम्	९. विषय
स्थातुम्	६. रहना	वैतृष्ण्यम्	१३. वैराग्य को
अन्तरा	१. असमय में	न एति	१४. नहीं प्राप्त करता है
प्राप्तया	२. मिला हुआ	पुरुषः ॥	१२. पुरुष
तव ।	३. आपका		

श्लोकार्थ— असमय में मिला हुआ आपका बुढ़ापा लेकर मैं रहना नहीं चाहता हूँ। विषय-सुख का बिना अनुभव किये पुरुष वैराग्य को नहीं प्राप्त होता है ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

तुर्वसुश्चोदितः पित्रा द्रुह्युश्चानुश्च भारत।
प्रत्याचख्युरधर्मज्ञा ह्यनित्ये नित्यबुद्धयः ॥४१॥

पदच्छेद— तुर्वसुः चोदितः पित्रा द्रुह्युः च अनुः च भारत।
प्रत्याचख्युः अधर्मज्ञाः हि अनित्ये नित्य बुद्धयः ॥

शब्दार्थ—

तुर्वसुः	८. तुर्वसु	प्रत्याचख्युः	१२. अस्वीकार कर दिया
चोदितः	३. कहने पर	अधर्मज्ञाः	४. धर्म को न जानने वाले तथा
पित्रा	१. पिता के	हि अनित्ये	५. अनित्य को
द्रुह्युः	९. द्रुह्यु से	नित्य	६. नित्य
च	१०. और	बुद्धयः ॥	७. समझने वाले,
अनुः च	११. अनु ने भी		
भारत।	१. हे परीक्षित् !		

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! पिता के कहने पर धर्म को न जानने वाले तथा अनित्य को नित्य समझने वाले तुर्वसु, द्रुह्यु और अनु ने भी अस्वीकार कर दिया ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

अपृच्छत् तनयं पूरुं वयसोनं गुणाधिकम्।
न त्वमग्रजवद् वत्स मां प्रत्याख्यातुमर्हसि ॥४२॥

पदच्छेद— अपृच्छत् तनयम् पूरुम् वयसा ऊनम् गुण अधिकम्।
न त्वम् अग्रजवत् वत्स माम् प्रत्याख्यातुम् अर्हसि ॥

शब्दार्थ—

अपृच्छत्	७. पूछा (और कहा)	अधिकम्	४. अधिक
तनयम्	६. पुत्र से (राजा ने)	न त्वम्	१४. नहीं हो तुम अपने
पूरुम्	५. पुरु नामक	अग्रजवत्	१०. बड़े भाईयों के समान
वयसा	१. अवस्था में	वत्स	८. बेटा
ऊनम्	२. कम और	माम्	११. मेरी बात को
गुण	३. गुणों में	प्रत्याख्यातुम्।	१२. अस्वीकार करने
		अर्हसि ॥	१३. योग्य

श्लोकार्थ—अवस्था में कम और गुणों में अधिक पुरु नामक पुत्र से राजा ने पूछा और कहा बेटा ! तुम अपने बड़े भाइयों के समान मेरी बात को अस्वीकार करने योग्य नहीं हो ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

पूरुरुवाच—को नु लोके मनुष्येन्द्र पितुरात्मकृतः पुमान्।
प्रतिकर्तुं क्षमो यस्य प्रसादाद् विन्दते परम् ॥४३॥

पदच्छेद— को नु लोके मनुष्येन्द्र पितुः आत्मकृतः पुमान्।
प्रतिकर्तुम् क्षमः यस्य प्रसादात् विन्दते परम् ॥

शब्दार्थ—

को नु	५. कौन	प्रतिकर्तुम्	७. बदला चुकाने में
लोके	२. संसार में	क्षमः	८. समर्थ हो सकता है
मनुष्येन्द्र	१. हे महाराज !	यस्य	९. जिसकी
पितुः	३ पिता का	प्रसादात्	१०. कृपा से वह
आत्मकृतः	४. उत्पन्न किया हुआ	विन्दते	१२. प्राप्त कर सकता है
पुमान्	६. पुरुष	परम्	११. परम पद को

श्लोकार्थ—हे महाराज ! संसार में पिता का उत्पन्न किया हुआ कौन पुरुष बदला चुकाने में समर्थ हो सकता है जिसकी कृपा से वह परम पद को प्राप्त कर सकता है ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

उत्तमश्चिन्तितं कुर्यात् प्रोक्तकारी तु मध्यमः।
अधमोऽश्रद्धया कुर्यादकर्तोच्चरितं पितुः ॥४४॥

पदच्छेद— उत्तमः चिन्तितम् कुर्यात् प्रोक्तकारी तु मध्यमः।
अधमः अश्रद्धया कुर्यात् अकर्ता उच्चरितम् पितुः ॥

शब्दार्थ—

उत्तमः	१. उत्तम पुत्र वही है	अधमः	९. अधम पुत्र है (और जो)
चिन्तितम्	२. जो पिता के मन की बात	अश्रद्धया	७. अश्रद्धा पूर्वक
कुर्यात्	३. कर दे	कुर्यात्	८. करे
प्रोक्तकारी	५ कहने पर करे	अकर्ता	१०. बिल्कुल न ही करे
तु	४. जो (पिता के)	उच्चरितम्	१२. मल है
मध्यमः	६. वह मध्यम पुत्र है	पितुः	११. वह पिता का

श्लोकार्थ—उत्तम पुत्र वही है, जो पिता के मन को बात कर दे और जो पिता के कहने पर करे वह मध्यम पुत्र है। जो अश्रद्धापूर्वक करे वह अधम पुत्र है। और जो बिल्कुल न करे वह पिता का मल है ॥

पञ्चचत्वारिंश श्लोकः

इति प्रमुदितः पूरुः प्रत्यगृह्णाज्जरां पितुः ।
सोऽपि तद्वयसा कामान् यथावज्जुजुषे नृप ॥४५॥

पदच्छेद— इति प्रमुदितः पूरुः प्रत्यगृह्णात् जराम् पितुः ।
स: अपि तत् वयसा कामान् यथावत् जुजुषे नृप ॥

शब्दार्थ—

इति	२.	ऐसा कहने पर	अपि	८.	भी
प्रमुदितः	४.	प्रसन्न होकर	तत्	९.	उसकी
पूरुः	३.	पुरु ने	वयसा	१०.	जवानी से
प्रत्यगृह्णात्	७.	स्वीकार कर लिया	कामान्	१२.	विषयों का
जराम्	६.	बुढ़ापे को	यथावत्	११.	पूर्ववत्
पितुः	५.	पिता के	जुजुषे	१३.	सेवन करने लगा
सः ।	७.	वह राजा ययाति	नृप ॥	१.	हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! ऐसा कहने पर पुरु ने प्रसन्न होकर पिता के बुढ़ापे को स्वीकार कर लिया । वह राजा ययाति भी उसकी जवानी से पूर्ववत् विषयों का सेवन करने लगा ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

सप्तद्वीपपतिः सम्यक् पितृवत् पालयन् प्रजाः ।
यथोपजोषं विषयाञ्जुजुषेऽव्याहतेन्द्रियः ॥४६॥

पदच्छेद— सप्तद्वीप पतिः सम्यक् पितृ वत् पालयन् प्रजाः ।
यथा उपजोषम् विषयान् जुजुषे अव्याहत इन्द्रियः ॥

शब्दार्थ—

सप्तद्वीप	१.	सातों द्वीप के	यथा	१०.	साथ
पतिः	२.	एक छत्र राजा ययाति	उपजोषम्	९	आनन्द के साथ
सम्यक्	४.	भली भाँति	विषयान्	११.	विषयों का
पितृवत्	३.	पिता के समान	जुजुषे	१२.	उपभोग करते थे
पालयन्	६.	पालन करते थे और	अव्याहत	८.	शक्ति से परिपूर्ण वे
प्रजाः ।	५.	प्रजाओं का	इन्द्रियः ॥	७.	इन्द्रियों की

श्लोकार्थ—सातों द्वीपों के एक छत्र राजा ययाति पिता के समान भली भाँति प्रजाओं का पालन करते थे । और इन्द्रियों की शक्ति से परिपूर्ण वे आनन्द के साथ विषयो का उपभोग करते थे ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोक

देवयान्यप्यनुदिनं मनोवाग्देहवस्तुभिः ।
प्रेयसः परमां प्रीतिमुवाह प्रेयसी रहः ॥४७॥

पदच्छेद— देवयानी अपि अनुदिनम् मनः वाग्देह वस्तुभिः ।
प्रेयसः परमाम् प्रीतिम् उवाह प्रेयसी रहः ॥

शब्दार्थ—

देवयानी	२. देवयानी	प्रेयसः	७. प्रियतम राजा ययाति को
अपि	३. भी	परमाम्	९. अत्यन्त
अनुदिनम्	४. प्रतिदिन	प्रीतिम्	१०. सुख
मनः	५. मन	उवाह	११. देने लगी
वाग्देह	६. वाणी, शरीर	प्रेयसी	१. प्रियतमा
वस्तुभिः ।	७. और वस्तुओं के द्वारा	रहः	८. एकान्त में

श्लोकार्थ—प्रियतमा देवयानी भी प्रतिदिन मन, वाणी, शरीर और वस्तुओं के द्वारा प्रियतम राजा ययाति को एकान्त में अत्यन्त सुख देने लगी ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

अयजद् यज्ञपुरुषं क्रतुभिर्भूरिदक्षिणैः ।
सर्वदेवमयं देवं सर्ववेदमयं हरिम् ॥४८॥

पदच्छेद— अयजत् यज्ञ पुरुषम् क्रतुभिः भूरि दक्षिणैः ।
सर्वदेव मयम् देवम् सर्ववेद मयम् हरिम् ॥

शब्दार्थ—

अयजत्	१२. (राजा ययाति ने) यजन किया	सर्वदेव	४. सर्वदेव
यज्ञ	९. यज्ञ	मयम्	५. स्वरूप
पुरुषम्	१०. पुरुष	देवम्	८. भगवान्
क्रतुभिः	३. यज्ञों के द्वारा	सर्ववेद	६. सर्ववेद
भूरि	१. बहुत	मयम्	७. स्वरूप
दक्षिणैः ।	२. दक्षिणा वाले	हरिम् ॥	११. हरि का

श्लोकार्थ—राजा ययाति ने बहुत दक्षिणा वाले यज्ञों के द्वारा सर्वदेव स्वरूप एवं सर्ववेद स्वरूप भगवान् यज्ञ पुरुष हरि का यजन किया ॥

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

यस्मिन्निदं विरचितं व्योम्नीव जलदावलिः ।
नानेव भाति नाभाति स्वप्नमायामनोरथः ॥४९॥

पदच्छेद— यस्मिन् इदम् विरचितम् व्योम्नि इव जलद आवलिः ।
नाना इव भाति न आभाति स्वप्न माया मनोरथः ॥

शब्दार्थ—

यस्मिन्	१.	जिस परमात्मा में	नाना	११.	अनेक
इदम्	६.	यह जगत्	इव	१२.	प्रकार का
विरचितम्	५.	कल्पित	भाति	१३.	मालूम होता है
व्योम्नि	७.	आकाश में	न आभाति	१४.	कभी नहीं भी मालूम होता है
इव	१०.	समान	स्वप्न	२.	स्वप्न
जलद	८.	मेघों की	माया	३.	माया और
आवलिः ।	९.	पंक्तियों के	मनोरथः ॥	४.	मनोरथ के समान

श्लोकार्थ—जिस परमात्मा में स्वप्न, माया और मनोरथ के समान कल्पित यह जगत् आकाश में मेघों की पंक्तियों के समान अनेक प्रकार का मालूम होता है कभी नहीं भी मालूम होता है ॥

पञ्चाशत्तमः श्लोकः

तमेव हृदि विन्यस्य वासुदेवं गुहाशयम् ।
नारायणमणीयांसं निराशीरयजत् प्रभुम् ॥५०॥

पदच्छेद— तम् एव हृदि विन्यस्य वासुदेवं गुहाशयम् ।
नारायणम् अणीयांसम् निराशीः अयजत् प्रभुम् ॥

शब्दार्थ—

तम् एव	४.	उन्हीं	नारायणम्	६.	नारायण को
हृदि	७.	हृदय में	अणीयांसम्	३.	सूक्ष्म से भी अत्यन्त सूक्ष्म
विन्यस्य	८.	स्थापित करके (राजा ने)	निराशीः	९.	निष्काम भाव से
वासुदेवम्	५.	वासुदेव	अयजत्	१०.	यजन किया
गुहाशयम् ।	१.	सबके हृदय में विराजमान	प्रभुम् ॥	२.	सर्वशक्तिमान्

श्लोकार्थ—सबके हृदय में विराजमान सर्वशक्तिमान्, सूक्ष्म से सूक्ष्म, उन्हीं वासुदेव नारायण को हृदय में स्थापित करके राजा ने निष्काम भाव से यजन किया ॥

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

एवं वर्षसहस्राणि मनःषष्ठैर्मनःसुखम् ।
विदधानोऽपि नातृप्यत् सार्वभौमः कदिन्द्रियैः ॥५१॥

पदच्छेद— एवम् वर्ष सहस्राणि मनः षष्ठैः मनः सुखम् ।
विदधानः अपि न अतृप्यत् सार्वभौमः कदिन्द्रियैः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	विदधानः	९.	भोगते हुए
वर्ष	३.	वर्षों तक	अपि	१०.	भी
सहस्राणि	२.	हजारों	न	१३.	नहीं
मनः	५.	मन इन्द्रिय के साथ	अतृप्यत्	१२.	तृप्त हुए
षष्ठैः	४.	छठे	सार्वभौमः	११.	चक्रवर्ती राजा ययाति
मनः	७.	मन के	कदिन्द्रियैः ॥	६.	कुत्सित इन्द्रियों से
सुखम् ।	८.	अनुकूल विषयों को			

श्लोकार्थ—इस प्रकार हजारों वर्षों तक छठे मन, इन्द्रिय के साथ कुत्सित इन्द्रियों से मन के अनुकूल विषयों को भोगते हुए भी चक्रवर्ती राजा ययाति तृप्त नहीं हुए ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे
अष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥



नवमः स्कन्धः

एकोनविंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

स इत्थमाचरन् कामान् स्त्रैणोऽपह्नवमात्मनः ।
बुद्ध्वा प्रियायै निर्विण्णो गाथामेतामगायत ॥१॥

पदच्छेद— सः इत्थम् आचरन् कामान् स्त्रैणः अपह्नवम् आत्मनः ।
बुद्ध्वा प्रियायै निर्विण्णः गाथाम् एताम् अगायत ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वह राजा ययाति	बुद्ध्वा	८.	जानकर
इत्थम्	२.	इस प्रकार	प्रियायै	१०.	पत्नी देवयानी से
आचरन्	५.	भोग करते रहे	निर्विण्णः	९.	विरक्त होकर
कामान्	४.	विषयों का	गाथाम्	१२.	गाथा का
स्त्रैणः	३.	स्त्री के वश में होकर	एताम्	११.	इस
अपह्नवम्	७.	अधःपतन	अगायत ॥	१३.	गान किया
आत्मनः ।	६.	अन्त में अपना			

श्लोकार्थ—वह राजा ययाति इस प्रकार स्त्री के वश में होकर विषयों का भोग करते रहे । अन्त में अपना अधःपतन जानकर विरक्त होकर पत्नी देवयानी से इस गाथा का गायन किया ।

द्वितीयः श्लोकः

शृणु भार्गव्यमूं गाथां मद्विधाचरितां भुवि ।
धीरा यस्यानुशोचन्ति वने ग्रामनिवासिनः ॥२॥

पदच्छेद— शृणु भार्गवि अमूम् गाथाम् मत् विध आचरिताम् भुवि ।
धीराः यस्य अनुशोचन्ति वने ग्राम निवासिनः ॥

शब्दार्थ—

शृणु	४.	सुनो	भुवि	७.	पृथ्वी पर
भार्गवि	१.	हे भृगुपुत्री !	धीराः	१३.	ज्ञानी पुरुष
अमूम्	२.	इस	यस्य	९.	ऐसे ही
गाथाम्	३.	गाथा को	अनुशोचन्ति	१४.	दुःख के साथ विचार करते हैं
मत्	५.	जो मेरे	वने	१२.	वन में
विध	६.	जैसे व्यक्ति से	ग्रामे	१०.	गाँव में
आचरिताम् ।	८.	आचरित है	निवासिनः ॥	११.	निवास करने वाले के सम्बन्ध

श्लोकार्थ—हे भृगुपुत्री ! इस गाथा को सुनो, जो मेरे जैसे व्यक्ति से पृथ्वी पर आचरित है । ऐसे ही गाँव में निवास करने वाले के सम्बन्ध में वन में ज्ञानी पुरुष दुःख के साथ विचार करते हैं कि इसका कल्याण कैसे होगा ॥

तृतीयः श्लोकः

वस्त एको वने कश्चिद् विचिन्वन् प्रियमात्मनः ।
ददर्श कूपे पतितां स्वकर्मवशगामजाम् ॥३॥

पदच्छेद— बस्तः एकः वने कश्चिद् विचिन्वन् प्रियम् आत्मनः ।
ददर्श कूपे पतिताम् स्वकर्म वशगाम् अजाम् ॥

शब्दार्थ—

बस्तः	४. बकरा था	ददर्श	१३. देखा		
एकः	३. एक	कूपे	१०. कुयें में		
वने	१. वन में	पतिताम्	११. गिरी हुई		
कश्चिद्	२. कोई	स्वकर्म	८. अपने कर्म		
विचिन्वन्	७. ढूंढ़ते हुए उसे	वशगाम्	९. वश		
प्रियम्	६. प्रिय लगने वाली वस्तु को	अजाम् ॥	१२. एक बकरी को		
आत्मनः ।	५. अपने को				

श्लोकार्थ—वन में कोई एक बकरा था अपने को प्रिय लगने वाली वस्तु को ढूंढ़ते हुए उसने अपने कर्मवश कुयें में गिरी हुई एक बकरी को देखा ॥

चतुर्थः श्लोकः

तस्या उद्धरणोपायं बस्तः कामी विचिन्तयन् ।
व्यधत्त तीर्थमुद्धृत्य विषाणाग्रेण रोधसी ॥४॥

पदच्छेद— तस्याः उद्धरण उपायम् बस्तः कामी विचिन्तयन् ।
व्यधत्त तीर्थम् उद्धृत्य विषाण अग्रेण रोधसी ॥

शब्दार्थ—

तस्याः	१. उस बकरी के	व्यधत्त	१२. बना लिया
उद्धरण	२. उद्धार करने का	तीर्थम्	१० धरती
उपायम्	३. उपाय	उद्धृत्य	११. खोदकर रास्ता
बस्तः	६. बकरे ने (अपने)	विषाण	७. सींग के
कामी	५. कामी	अग्रेण	८. अग्रभाग से
विचिन्तयन् ।	४. सोचते हुए (उस)	रोधसी ॥	९. कुयें के पास की

श्लोकार्थ—उस बकरी के उद्धार करने का उपाय सोचते हुए उस कामी बकरे ने अपने सींग के अग्रभाग से कुयें के पास की धरती खोदकर रास्ता बना लिया ॥

पञ्चमः श्लोकः

सोत्तीर्य कूपात् सुश्रोणी तमेव चकमे किल।
तया वृतं समुद्वीक्ष्य बह्व्योऽजाः कान्तकामिनीः ।।५।।

पदच्छेद— सः उत्तीर्य कूपात् सुश्रोणी तम् एव चकमे किल।
तया वृतम् समुद्वीक्ष्य बह्व्यः अजाः कान्तकामिनीः ।।

शब्दार्थ—

सः	२.	उस बकरी ने	तया	८.	उस बकरी के द्वारा
उत्तीर्य	४.	निकल कर	वृतम्	९.	चुने गये बकरे को
कूपात्	३.	कुयें से	समुद्वीक्ष्य	१०.	देखकर
सुश्रोणी	१.	सुन्दरी	बह्व्यः	१२.	बहुत सी
तम् एव	५.	उसी बकरे से	अजाः	१३.	बकरियाँ उसके पीछे हो लीं
चकमे	६.	प्रेम करना चाहा	कान्तकामिनीः।।	११.	पति की इच्छा करने वाली
किल।	७.	ऐसा पूर्व वृत्तान्त है			

श्लोकार्थ—सुन्दरी उस बकरी ने कुयें से निकल कर उसी बकरे से प्रेम करना चाहा, ऐसा पूर्व वृत्तान्त है। उस बकरी के द्वारा चुने गये बकरे को देखकर पति की इच्छा करने वाली बहुत सी बकरियाँ उसके पीछे-पीछे हो लीं ।।

षष्ठः श्लोकः

पीवानं श्मश्रुलं प्रेष्ठं मीढ्वांसं याभकोविदम्।
स एकोऽजवृषस्तासां बह्वीनां रतिवर्धनः।
रेमे कामग्रहग्रस्त आत्मानं नावबुध्यत ।।६।।

पदच्छेद— पीवानं श्मश्रुलम् प्रेष्ठम् मीढ्वांसम् याभकोविदम्।
सः एकः अजवृषः तासाम् बह्वीनाम् रतिवर्धनः।
रेमे कामग्रह ग्रस्तः आत्मानम् न अवबुध्यत ।।

शब्दार्थ—

पीवानम्	१.	हृष्ट पुष्ट	बह्वीनाम्	७.	बहुत सी बकरियों को
श्मश्रुलं	२.	दाढ़ी मूंछ से युक्त	रतिवर्धनः	८.	रति को बढ़ाने वाला
प्रेष्ठम्	३.	अत्यन्त प्रिय	रेमे	१४.	रमण करता था और
मीढ्वांसम्	४.	सबको सुख देने वाले उस	कामग्रह	१२.	कामरूपी ग्रह से
याभकोविदम्	५.	विहार कुशल बकरे को चाहने लगी	ग्रस्तः	१३.	ग्रस्त होकर उनके साथ
सः एकः	९.	वह अकेला ही	आत्मानम्	१४.	अपनी सुध-बुध
अजवृषः	११.	बकरा-सांड़ के समान	न अवबुध्यत।।	१५.	खो बैठा था
तासाम्।	६.	उन			

श्लोकार्थ—हृष्ट पुष्ट, दाढ़ी मूंछ से युक्त, अत्यन्त प्रिय, सब को सुख देने वाले, उस विहार-कुशल बकरे को चाहने लगी। उन बहुत सी बकरियों की रति को बढ़ाने वाला वह अकेला ही सांड़ के समान बकरा काम रूपी ग्रह से ग्रस्त होकर उनके साथ अपनी सुध-बुध खो बैठा ।।

सप्तमः श्लोकः

तमेव प्रेष्ठतमया रममाणमजान्यया ।
विलोक्य कूपसंविग्ना नामृष्यद् बस्तकर्म तत् ॥७॥

पदच्छेद— तम् एव प्रेष्ठतमया रममाणम् अजान्यया ।
विलोक्य कूप संविग्ना न अमृष्यत् बस्तकर्म तत् ॥

शब्दार्थ—

तम् एव	४	उसी को	कूप	६.	कुयें से
प्रेष्ठतमया	१.	अत्यन्त प्रियतमा	संविग्ना	७.	निकाली हुई
रममाणम्	३.	रमण करते हुए	न अमृष्यत्	१०.	सहन नहीं हुई
अजान्यया ।	२.	दूसरी बकरी के साथ	बस्तकर्म	९.	बकरे की यह करतूत
विलोक्य	५.	देखा तब	तत् ।।	८.	उस बकरी को

श्लोकार्थ—अत्यन्त प्रियतमा दूसरी बकरी के साथ रमण करते हुए उसी को देखा तब कुयें से निकाली हुई उस बकरी को बकरे की यह करतूत सहन नहीं हुई ॥

अष्टमः श्लोकः

तं दुर्हृदं सुहृद्रूपं कामिनं क्षणसौहृदम् ।
इन्द्रियाराममुत्सृज्य स्वामिनं दुःखिता ययौ ॥८॥

पदच्छेद - तम् दुर्हृदम् सुहृद् रूपम् कामिनम् क्षणसौहृदम् ।
इन्द्रिय आरामम् उत्सृज्य स्वामिनम् दुःखिता ययौ ॥

शब्दार्थ—

तम्	९.	उस बकरे को	इन्द्रिय	६.	इन्द्रिय
दुर्हृदम्	१.	दुष्ट हृदय वाले	आराम	७.	लोलुप
सुहृद्	२.	मित्र का	उत्सृज्य	१०.	त्याग कर (वह बकरी)
रूपम्	३.	रूप धारण करने वाले	स्वामिनम्	८.	स्वामी
कामिनम्	४.	कामी	दुःखिता	११.	दुःखी होकर
क्षणसौहृदम् ।	५.	क्षण भर मित्रता करने वाले	ययौ ॥	१२.	चली गयी

श्लोकार्थ—दुष्ट हृदय वाले, मित्र का रूप धारण करने वाले, कामी, क्षण भर मित्रता करने वाले, इन्द्रियलोलुप, स्वामी उस बकरे को त्याग कर वह बकरी दुःखी होकर चली गयी ॥

नवमः श्लोकः

सोऽपि चानुगतः स्त्रैणः कृपणस्तां प्रसादितुम् ।
कुर्वन्निडविडाकारं नाशक्नोत् पथि संधितुम् ॥९॥

पदच्छेद— सः अपि च अनुगतः स्त्रैणः कृपणः ताम् प्रसादितुम् ।
कुर्वन् इडविडाकारम् न अशक्नोत् पथि संधितुम् ॥

शब्दार्थ—

सः अपि	१.	वह बकरा भी	कुर्वन्	१०.	करता हुआ
च अनुगतः	८	और पीछे पीछे चलता हुआ	इडविडाकारम्	९.	में में
स्त्रैणः	४.	स्त्री के वश में होकर	न अशक्नोत्	१३.	नहीं सका
कृपणः	२.	दीन	पथि	११.	रास्ते में उसे
ताम्	५.	उस बकरी को	संधितुम् ॥	१२.	मना
प्रसादितुम् ।	६.	मनाने के लिए			

श्लोकार्थ—वह दीन बकरा भी स्त्री के वश में होकर उस बकरी को मनाने के लिए पीछे पीछे चलता हुआ और में में करता हुआ रास्ते में उसे मना नहीं सका ॥

दशमः श्लोकः

तस्यास्तत्र द्विजः कश्चिदजास्वाम्यच्छिनद् रुषा ।
लम्बन्तं वृषणं भूयः सन्दधेऽर्थाय योगवित् ॥१०॥

पदच्छेद— तस्याः तत्र द्विजः कश्चिद् अजा स्वामी अच्छिनत् रुषा ।
लम्बन्तम् वृषणम् भूयः सन्दधे अर्थाय योगवित् ॥

शब्दार्थ—

तस्याः	२.	उस बकरी का	लम्बन्तम्	८.	लटकते हुए बकरे के
तत्र	१.	वहाँ	वृषणम्	९.	अण्डकोश को
द्विजः	४.	ब्राह्मण था	भूयः	१३.	फिर
कश्चिद्	३.	कोई	सन्दधे	१४.	जोड़ दिया
अजा	५.	बकरी के	अर्थाय	१२.	प्रयोजन वश बकरे के अण्डकोश को
स्वामी	६.	स्वामी ने	योग	११	याग के
अच्छिनत्	१०.	काट दिया	वित् ॥	१०.	जानकर (उसने)
रुषा ।	७.	क्रोध वश			

श्लोकार्थ वहाँ उस बकरी का स्वामी कोई ब्राह्मण था । बकरी के स्वामी ने क्रोध वश लटकते हुए बकरे के अण्डकोश को काट दिया । याग के जानकार उसने प्रयोजन वश उस बकरे के अण्डकोश को फिर जोड़ दिया ॥

एकादशः श्लोकः

सम्बद्धवृषणः सोऽपि ह्यजया कूपलब्धया ।
कालं बहुतिथं भद्रे कामैर्नाद्यापि तुष्यति ॥११॥

पदच्छेद— सम्बद्ध वृषणः सः अपि हि अजया कूपलब्धया ।
कालम् बहुतिथम् भद्रे कामैः न अद्य अपि तुष्यति ॥

सम्बद्ध	१. अण्डकोश के जुड़ जाने पर	कालम्	९. तक
वृषणः	३. बकरा	बहुतिथम्	८. बहुत दिनों
सः अपि	२. वह भी	भद्रे	११. हे प्रिये वह
हि अजया	७. बकरी के साथ	कामैः	१०. विषय भोग करता रहा
कूप	५. कुयें से	न अद्य	१३. नहीं आज भी
लब्धया ।	६. निकाली हुई	अपि तुष्यति ॥	१४. सन्तुष्ट हुआ है

श्लोकार्थ—अण्डकोश के जुड़ जाने पर वह बकरा भी कुयें से निकाली हुई बकरी के साथ बहुत दिनों तक विषय भोग करता रहा । हे प्रिये, वह आज भी सन्तुष्ट नहीं हुआ ॥

शब्दार्थ—

द्वादशः श्लोकः

तथाहं कृपणः सुभ्रु भवत्याः प्रेमयन्त्रितः ।
आत्मानं नाभिजानामि मोहितस्तव मायया ॥१२॥

पदच्छेद— तथा अहम् कृपणः सुभ्रु भवत्याः प्रेम यन्त्रितः ।
आत्मानम् न अभिजानामि मोहितः तव मायया ॥

शब्दार्थ—

तथा	२. उसी प्रकार	आत्मानम्	११. अपने को
अहम्	४. मैं	न	१२. नहीं
कृपणः	३. दीन	अभिजानामि	१३. जानता हूँ
सुभ्रु	१. हे सुन्दर भौहों वाली	मोहितः	१०. मोहित होकर
भवत्याः	५. तुम्हारे	तव	८. तुम्हारी
प्रेम	६. प्रेम पाश में	मायया ॥	९. माया से
यन्त्रितः ।	७. बँधकर		

श्लोकार्थ—हे सुन्दर भौहों वाली ! उसी प्रकार दीन मैं तुम्हारे प्रेम पास में बंधकर तुम्हारी माया से मोहित होकर अपने को नहीं जानता हूँ ॥

त्रयोदशः श्लोकः

यत् पृथिव्यां व्रीहियवं हिरण्यं पशवः स्त्रियः ।
न दुह्यन्ति मनःप्रीतिं पुंसः कामहतस्य ते ॥१३॥

पदच्छेद— यत् पृथिव्याम् व्रीहि यवम् हिरण्यम् पशवः स्त्रियः ।
न दुह्यन्ति मनः प्रीतिम् पुंसः काम हतस्य ते ॥

शब्दार्थ—

यत्	२.	जो	न	१४.	नहीं
पृथिव्याम्	१.	पृथ्वी पर	दुह्यन्ति	१५.	पूरा कर सकते हैं
व्रीहि	४.	धान्य	मनः	१२.	मन के
यवम्	३.	जौ आदि	प्रीतिम्	१३.	सन्तोष को
हिरण्यम्	५.	सोना	पुंसः	११.	मनुष्य के
पशवः	६.	पशु (और)	काम	९.	कामनाओं से
स्त्रियः ।	७.	स्त्रियाँ (है)	हतस्य	१०.	जर्जर किये हुए
			ते ॥	८.	वे सब

श्लोकार्थ— पृथ्वी पर जो जौ आदि धान्य, सोना, पशु और स्त्रियाँ हैं, वे सब कामनाओं से जर्जर किये हुए मनुष्य के मन के सन्तोष को पूरा नहीं कर सकते हैं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते ॥१४॥

पदच्छेद— न जातु कामः कामानाम् उपभोगेन शाम्यति ।
हविषा कृष्णावर्त्मा इव भूयः एव अभिवर्धते ॥

शब्दार्थ—

न	५.	नहीं	हविषा	८.	घी की आहुति से
जातु	४.	कभी	कृष्णवर्त्मा	९.	अग्नि
कामः	१.	भोग वासना	इव	७.	जैसे
कामानाम्	२.	विषयों के	भूयः	१०.	पुनः
उपभोगेन	३.	उपभोग से	एव	१२.	ही रहती है
शाम्यति ।	६.	शान्त होती है	अभिवर्धते ॥	११.	बढ़ती

श्लोकार्थ—भोग वासना विषयों के उपभोग से कभी नहीं शान्त होती है । जैसे घी की आहुति से अग्नि पुनः बढ़ती ही रहती है वैसे उपभोग से भोग बढ़ता ही रहता है ॥

पञ्चदशः श्लोकः

यदा न कुरुते भावं सर्वभूतेष्वमङ्गलम् ।
समदृष्टेस्तदा पुंसः सर्वाः सुखमया दिशः ॥१५॥

पदच्छेद— यदा न कुरुते भावम् सर्वभूतेषु अमङ्गलम् ।
समदृष्टेः तदा पुंसः सर्वाः सुखमयाः दिशः ॥

शब्दार्थ—

यदा	१.	जब (पुरुष)	सम	९.	सम
न	६.	नहीं	दृष्टेः	१०.	दर्शी
कुरुते	७.	करता है	तदा	८.	तब
भावम्	५.	भाव	पुंसः	११.	पुरुष के लिए
सर्व	२.	सभी	सर्वाः	१२.	सभी
भूतेषु	३.	प्राणियों के	सुखमयाः	१४.	सुखमयी हो जाती है
अमङ्गलम् ।	४.	अकल्याण का	दिशः ॥	१३.	दिशायें

श्लोकार्थ—जब पुरुष सभी प्राणियों के प्रति अकल्याण का भाव नहीं करता है तब समदर्शी पुरुष के लिए सभी दिशायें सुखमय हो जाती हैं ॥

षोडशः श्लोकः

या दुस्त्यजा दुर्मतिभिर्जीर्यतो या न जीर्यते ।
तां तृष्णां दुःखनिवहां शर्मकामो द्रुतं त्यजेत् ॥१६॥

पदच्छेद— या दुस्त्यजा दुर्मतिभिः जीर्यतः या न जीर्यते ।
ताम् तृष्णाम् दुःख निवहाम् शर्मकामः द्रुतम् त्यजेत् ॥

शब्दार्थ—

या	१.	जो तृष्णा	ताम्	१०.	उस
दुस्त्यजा	३	कठिनाई से त्यागने योग्य	तृष्णाम्	११.	तृष्णा के
दुर्मतिभिः	२.	मन्द बुद्धियों के द्वारा	दुःख	८.	दुःखों के
जीर्यतः	५.	शरीर के वृद्ध होने पर भी	निवहाम्	९.	समूह रूप
या	४.	जो	शर्मकामः	१२.	कल्याण चाहने वाला पुरुष
न	६.	नहीं	द्रुतम्	१३.	शीघ्र
जीर्यते ।	७.	वृद्ध होती है	त्यजेत् ॥	१४.	त्याग दे

श्लोकार्थ—जो तृष्णा मन्द बुद्धियों के लिए कठिनाई से त्यागने योग्य है और जो शरीर के वृद्ध होने पर भी नहीं वृद्ध होती है, दुःखों के समूह रूप उस तृष्णा को कल्याण चाहने वाला पुरुष शीघ्र त्याग दे ॥

सप्तदशः श्लोकः

मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा नाविविक्तासनो भवेत् ।
बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति ॥१७॥

पदच्छेद— मात्रा स्वस्र दुहित्रा वा न अविविक्त आसनः भवेत् ।
बलवान् इन्द्रिय ग्रामः विद्वांसम् अपि कर्षति ॥

शब्दार्थ—

मात्रा	१.	माता	बलवान्	९.	बलवान्
स्वस्रा	२.	बहन	इन्द्रिय	१०.	इन्द्रियों का
दुहित्रा	४.	पुत्री के साथ	ग्रामः	११.	समूह
वा	३.	अथवा	विद्वांसम्	१२.	विद्वान् मनुष्य को
न अविविक्त	७.	नहीं एकान्त में	अपि	१४.	भी
आसनः	६.	एक आसन पर	कर्षति ।	१५.	खींच लेता है
भवेत् ॥	८.	बैठे			

श्लोकार्थ—माता, बहन अथवा पुत्री के साथ एकान्त में एक आसन पर नहीं बैठे । बलवान् इन्द्रियों का समूह विद्वान् मनुष्य को भी खींच लेता है ॥

अष्टादशः श्लोकः

पूर्णं वर्षसहस्रं मे विषयान् सेवतोऽसकृत् ।
तथापि चानुसवनं तृष्णा तेषूपजायते ॥१८॥

पदच्छेद— पूर्णम् वर्ष सहस्रम् मे विषयान् सेवतः असकृत् ।
तथापि च अनुसवनम् तृष्णा तेषु उपजायते ॥

शब्दार्थ—

पूर्णम्	५	पूरा	तथापि	८.	तो भी
वर्षसहस्रम्	६.	एकहत्तर हजार वर्ष बीत गया	च	७.	और
मे	४.	मेरा	अनुसवनम्	१०.	प्रतिक्षण
विषयान्	१.	विषयों का	तृष्णा	११.	तृष्णा
सेवतः	३.	सेवन करते हुए	तेषु	९.	उन विषयों के प्रति
असकृत् ।	२.	बार-बार	उपजायते ॥	१२.	बढ़ती ही जा रही है

श्लोकार्थ—विषयों का बार-बार सेवन करते हुए मेरा पूरा एकहत्तर हजार वर्ष बीत गया और तो भी प्रतिक्षण तृष्णा बढ़ती ही जा रही है ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तस्मादेतामहं त्यक्त्वा ब्रह्मण्याधाय मानसम् ।
निर्द्वन्द्वो निरहंकारश्चरिष्यामि मृगैः सह ॥१९॥

पदच्छेद— तस्मात् एताम् अहम्, त्यक्त्वा ब्रह्मणि आधाय मानसम् ।
निर्द्वन्द्वः निरंहकारः चरिष्यामि मृगैः सह ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१.	इसलिए	निर्द्वन्द्वः	८.	सुख-दुःख सर्दी-गर्मी आदि से परे
एताम्	२.	इस तृष्णा को	निरंहकारः	९.	अहंकार रहित होकर
अहम्	४.	मैं	चरिष्यामि	१२.	विचरण करूँगा
त्यक्त्वा	३.	त्याग कर	मृगैः	१०.	मृगों के
ब्रह्मणि	५.	ब्रह्म में	सह ॥	११.	साथ रहकर वन में
आधाय	७.	लगाकर			
मानसम् ।	६.	मन को			

श्लोकार्थ—इसलिए इस तृष्णा को त्यागकर मैं ब्रह्म में मन को लगाकर सुख-दुःख सर्दी-गर्मी आदि से परे अहंकार रहित होकर मृगो के साथ रहकर वन में विचरण करूँगा ॥

विंश श्लोकः

दृष्टं श्रुतमसद् बुद्ध्वा नानुध्यायेन्न संविशेत् ।
संसृतिं चात्मनाशं च तत्र विद्वान् स आत्मदृक् ॥२०॥

पदच्छेद— दृष्टम् श्रुतम् असद् बुद्ध्वा न अनुध्यायेत् न संविशेत् ।
संसृतिम् च आत्मनाशम् च तत्र विद्वान् सः आत्मदृक् ॥

शब्दार्थ—

दृष्टम्	१.	देखा	संसृतिम्	४.	यही संसार है
श्रुतम्	२	सुना हुआ सब	च	५.	और इससे
असद्	३.	मिथ्या है	आत्मनाशम्	६.	अपना विनाश होता है
बुद्ध्वा	७.	ऐसा समझकर	च तत्र	११.	इसको जो ऐसा
न अनु	८.	न तो उसका	विद्वान्	१२.	जानता है
ध्यायेत्	९.	चिन्तन करना चाहिए	सः	१३.	वही
न संविशेत् ।	१०.	और न भोग ही करना चाहिए	आत्मदृक् ॥	१४.	आत्मज्ञानी है

श्लोकार्थ—देखा सुना हुआ सब मिथ्या है, यही संसार है । इससे अपना विनाश होता है । ऐसा समझकर न तो उसका चिन्तन करना चाहिए और न, भोग ही करना चाहिए । इसको जो ऐसा जानता है, वही आत्मज्ञानी है ॥

एकविंशः श्लोकः

इत्युक्त्वा नाहुषो जायां तदीयं पूरवे वयः ।
दत्त्वा स्वां जरसं तस्मादाददे विगतस्पृहः ॥२१॥

पदच्छेद— इति उक्त्वा नाहुषः जायां तदीयम् पूरवे वयः ।
दत्त्वा स्वाम् जरसम् तस्मात् आददे विगत स्पृहः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	दत्त्वा	८.	देकर
उक्त्वा	४.	कहकर (और)	स्वाम्	१०.	अपना
नाहुषः	२.	नहुष पुत्र ययाति	जरसम्	११.	बुढ़ापा
जायाम्	३.	पत्नी से यह	तस्मात्	९.	उससे
तदीयम्	६.	उसकी	आददे	१२.	ले लिया (और)
पूरवे	५.	पूरु को	विगत	१४.	रहित हो गया
वयः	७.	जवानी	स्पृहः	१३.	अभिलाषा से

श्लोकार्थ—इस प्रकार नहुष पुत्र ययाति पत्नी से यह कहकर और पूरु को उसकी जवानी देकर उससे अपना बुढ़ापा ले लिया और अभिलाषा रहित हो गया ॥

द्वाविंशः श्लोकः

दिशि दक्षिणपूर्वस्यां द्रुह्युं दक्षिणतो यदुम् ।
प्रतीच्यां तुर्वसुं चक्र उदीच्यामनुमीश्वरम् ॥२२॥

पदच्छेद— दिशि दक्षिण पूर्वस्याम् द्रुह्युम् दक्षिणतः यदुम् ।
प्रतीच्याम् तुर्वसुम् चक्रे उदीच्याम् अनुम् ईश्वरम् ॥

शब्दार्थ—

दिशि	३.	दिशा में (अग्नि कोण में)	प्रतीच्याम्	७.	पश्चिम दिशा में
दक्षिण	१.	दक्षिण ओर	तुर्वसुम्	८.	तुर्वसु को ओर
पूर्वस्याम्	२.	पूर्व की	चक्रे	१२.	बना दिया
द्रुह्युम्	४.	द्रुह्यु को	उदीच्याम्	९.	उत्तर दिशा में
दक्षिणतः	५.	दक्षिण दिशा में	अनुम्	१०.	अनु को
यदुम् ।	६.	यदु को	ईश्वरम् ॥	११	राजा

श्लोकार्थ—दक्षिण पूर्व की दिशा में द्रुह्यु को, दक्षिण दिशा में यदु को, पश्चिम दिशा में तुर्वसु और उत्तर दिशा में अनु को राजा बना दिया ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

भूमण्डलस्य सर्वस्य पूरुमर्हत्तमं विशाम् ।
अभिषिच्याग्रजांस्तस्य वशे स्थाप्य वनं ययौ ॥२३॥

पदच्छेद— भूमण्डलस्य सर्वस्य पूरुम् अर्हत्तमम् विशाम् ।
अभिषिच्य अग्रजान् तस्य वशे स्थाप्य वनं ययौ ॥

शब्दार्थ—

भूमण्डलस्य	२.	भूमण्डल की	अभिषिच्य	६.	अपने राज्य पर अभिषिक्त करके तथा
सर्वस्य	१.	सम्पूर्ण	अग्रजान्	७.	बड़े भाइयों को
पूरुम्	५.	पूरु को	तस्य	८.	उसके
अर्हत्तमम्	४.	योग्यतम पात्र	वशे	९.	अधीन
विशाम्	३.	सम्पत्तियों के	स्थाप्य	१०	बनाकर (राजा ययाति)
			वनं ययौ ॥	११.	वन में चले गये

श्लोकार्थ—सम्पूर्ण भूमण्डल की सम्पत्तियों के योग्यतम पात्र पूरु को अपने राज्य पर अभिषिक्त करके तथा बड़े भाइयों को उसके अधीन बनाकर राजा ययाति वन में चले गये ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

आसेवितं वर्षपूगान् षड्वर्गं विषयेषु सः ।
क्षणेन मुमुचे नीडं जातपक्ष इव द्विजः ॥२४॥

पदच्छेद— आसेवितम् वर्ष पूगान् षड्वर्गं विषयेषु सः ।
क्षणेन मुमुचे नीडम् जात पक्षः इव द्विजः ॥

शब्दार्थ—

आसेवितम्	२.	सेवन किये हुए	क्षणेन	६.	क्षण भर में
वर्षपूगान्	१.	बहुत वर्षों तक	मुमुचे	७.	छोड़ दिया
षड्वर्गम्	३.	काम क्रोधादि छः वर्गों को	नीडम्	११.	घोंसले को (छोड़ देता है)
विषयेषु	४.	विषयों के प्रति	जातपक्षः	९.	पंख निकले हुए
सः	५.	उस ययाति ने	इव	८.	जैसे
			द्विजः ॥	१०.	पक्षी

श्लोकार्थ—बहुत वर्षों तक सेवन किये हुए काम, क्रोधादि छः वर्गों को विषयों के प्रति उस राजा ययाति ने क्षण भर में छोड़ दिया जैसे पंख निकले हुए पक्षी घोंसले को छोड़ देता है ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

स तत्र निर्मुक्तसमस्तसङ्ग आत्मानुभूत्या विधुतत्रिलिङ्गः ।
परेऽमले ब्रह्मणि वासुदेवे लेभे गतिं भागवतीं प्रतीतः ॥२५॥

पदच्छेद— सः तत्र निर्मुक्त समस्त सङ्गः आत्म अनुभूत्या विधुत त्रिलिङ्गः ।
परे अमले ब्रह्मणि वासुदेवे लेभे गतिम् भागवतीम् प्रतीतः ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	उस राजा ययाति ने	परे	१०.	परमात्मा
तत्र	२.	वहाँ वन में	अमले	११.	निर्मल
निर्मुक्त	५.	मुक्त होकर	ब्रह्मणि	१२.	ब्रह्म स्वरूप भगवान्
समस्त	३.	सब	वासुदेवे	१३	वासुदेव में
सङ्गः	४.	आसक्तियों से	लेभे	१७	प्राप्त कर ली
आत्म	६.	आत्म	गतिम्	१६	गति
अनुभूत्या	७	साक्षात्कार के द्वारा	भागवतीम्	१५	भागवती
विधुत	९.	नष्ट करके	प्रतीतः ॥	१४.	मिलकर
त्रिलिङ्गः ।	८.	त्रिगुणमय सूक्ष्म शरीर को			

श्लोकार्थ—उस राजा ययाति ने वहाँ वन में सब आसक्तियों से मुक्त होकर आत्म साक्षात्कार के द्वारा त्रिगुणमय सूक्ष्म शरीर को नष्ट करके परमात्मा, निर्मल, ब्रह्म स्वरूप भगवान् वासुदेव में मिलकर भागवती गति प्राप्त कर ली ॥

षड्विंश श्लोकः

श्रुत्वा गाथां देवयानी मेने प्रस्तोभमात्मनः ।
स्त्रीपुंसोः स्नेहवैक्लव्यात् परिहासमिवेरितम् ॥२६॥

पदच्छेद— श्रुत्वा गाथाम् देवयानी मेने प्रस्तोभम् आत्मनः ।
स्त्री पुंसोः स्नेह वैक्लव्यात् परिहासम् इव ईरितम् ॥

शब्दार्थ—

श्रुत्वा	३.	सुनकर	स्त्री	७.	स्त्री
गाथाम्	२.	उस गाथा को	पुंसोः	८.	पुरुष के
देवयानी	१	देवयानी ने	स्नेह	९	प्रेम की
मेने	६.	समझा	वैक्लव्यात्	१०.	विकलता होने पर उसे
प्रस्तोभम्	५.	प्रोत्साहन	परिहासम्	११.	परिहास के
आत्मनः ।	४.	अपना	इव	१२.	समान
			ईरितम् ॥	१३.	माना

श्लोकार्थ—देवयानी ने उस गाथा को सुनकर अपना प्रोत्साहन समझा । स्त्री पुरुष के प्रेम की विकलता होने पर उसे परिहास के समान माना ॥

सप्तविंशः श्लोकः

सा संनिवासं सुहृदां प्रपायामिव गच्छताम् ।
विज्ञायेश्वरतन्त्राणां मायाविरचितं प्रभोः ॥२७॥

पदच्छेद— सा संनिवासम् सुहृदाम् प्रपायाम् इव गच्छताम् ।
विज्ञाय ईश्वर तन्त्राणाम् माया विरचितम् प्रभोः ॥

शब्दार्थ—

सा	११. उस देवयानी ने ऐसा	विज्ञाय	१२. जाना
संनिवासम्	७. इकट्ठा होना (वैसे ही)	ईश्वर	१. ईश्वर के
सुहृदाम्	३. अपने बन्धुओं का	तन्त्राणाम्	२. अधीन
प्रपायाम्	९. प्याऊ पर	माया	५. माया से
इव	८. जैसे	विरचितम्	६. रचित
गच्छताम् ।	१०. पथिकों का	प्रभोः ॥	४. भगवान् की

श्लोकार्थ—ईश्वर के अधीन अपने बन्धुओं का भगवान् की माया से रचित इकट्ठा हो जाना वैसा ही है जैसा प्याऊ पर पथिकों का, उस देवयानी ने ऐसा ही जाना ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

सर्वत्र सङ्गमुत्सृज्य स्वप्नौपम्येन भार्गवी ।
कृष्णे मनः समावेश्य व्यधुनोल्लिङ्गमात्मनः ॥२८॥

पदच्छेद— सर्वत्र सङ्गम् उत्सृज्य स्वप्न औपम्येन भार्गवी ।
कृष्णे मनः समावेश्य व्यधुनोत् लिङ्गम् आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

सर्वत्र	१. सब जगह	कृष्णे	७. भगवान् कृष्ण में
सङ्गम्	५. आसक्ति को	मनः	८. मन को
उत्सृज्य	६. त्यागकर	समावेश्य	९. लगाकर
स्वप्न	२. स्वप्न के	व्यधुनोत्	१२. त्याग दिया
औपम्येन	३. समान	लिङ्गम्	११. लिङ्ग शरीर को
भार्गवी ।	६. देवयानी ने	आत्मनः ॥	१० अपने

श्लोकार्थ—सब जगह स्वप्न के समान आसक्ति को त्याग कर देवयानी ने भगवान् कृष्ण में मन लगाकर अपने लिङ्ग शरीर को त्याग दिया ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

नमस्तुभ्यं भगवते वासुदेवाय वेधसे।
सर्वभूताधिवासाय शान्ताय बृहते नमः ॥२६॥

पदच्छेद— नमः तुभ्यम् भगवते वासुदेवाय वेधसे।
सर्वभूत अधिवासाय शान्ताय बृहते नमः ॥

शब्दार्थ—

नमः	९.	नमस्कार है	सर्वभूत	३.	सभी प्राणियों के
तुभ्यम्भगवते	८.	भगवान् आपको	अधिवासाय	४.	आश्रय स्वरूप
वासुदेवाय	१.	वासुदेव	शान्ताय	५.	शान्त और
वेधसे।	२.	संसार के रचयिता	बृहते	६.	अनन्त
			नमः ॥	१०.	नमस्कार है।

श्लोकार्थ—वासुदेव, संसार के रचयिता, सभी प्राणियों के आश्रयस्वरूप, शान्त, अनन्त भगवान् आपको नमस्कार है नमस्कार है ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमस्कन्धे एकोनविंशः अध्यायः समाप्तः ॥१६॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

विंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—पूरोर्वंशं प्रवक्ष्यामि यत्र जातोऽसि भारत ।
यत्र राजर्षयो वंश्या ब्रह्मवंश्याश्च जज्ञिरे ॥१॥

पदच्छेद— पूरोः वंशम् प्रवक्ष्यामि यत्र जातः असि भारत ।
यत्र राजर्षयः वंश्याः ब्रह्मवंश्याः च जज्ञिरे ॥

शब्दार्थ—

पुरोः	२.	पूरु के	यत्र	८.	जिसमें
वंशम्	३.	वंश का	राजर्षयः	९.	राजर्षि
प्रवक्ष्यामि	४.	वर्णन करूँगा	वंश्याः	१०.	वंशधर
यत्र	५.	जिसमें तुम	ब्रह्मवंश्याः	१२.	ब्रह्मर्षि वंशधर
जातः	६	उत्पन्न हुए	च	११.	तथा
असि	७.	हो और	जज्ञिरे ॥	१३.	उत्पन्न हुए हैं
भारत ।	१.	हे परीक्षित्			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! अब पूरु के वंश का वर्णन करूँगा । जिसमें तुम उत्पन्न हुए हो और जिसमें राजर्षि वंशधर तथा ब्रह्मर्षि वंशधर उत्पन्न हुए हैं ॥

द्वितीयः श्लोकः

जनमेजयो ह्यभूत् पूरोः प्रचिन्वांस्तत्सुतस्ततः ।
प्रवीरोऽथ नमस्युर्वै तस्माच्चारुपदोऽभवत् ॥२॥

पदच्छेद— जनमेजयः हि अभूत् पूरोः प्रचिन्वान् तत् सुतः ततः ।
प्रवीरः अथ नमस्युः वै तस्मात् चारुपदः अभवत् ॥

शब्दार्थ—

जनमेजयः	२.	जनमेजय	प्रवीरः	८.	प्रवीर
हि अभूत्	३.	हुए	अथ	९.	तथा उनसे
पूरोः	१.	पूरु के पुत्र	नमस्युः	१०.	नमस्यु
प्रचिन्वान्	६	प्रचिन्वान्	वै	११.	और
तत्	४.	उनके	तस्मात्	१२.	उनसे
सुतः	५.	पुत्र	चारुपदः	१३.	चारुपद
ततः ।	७.	उनसे	अभवत् ॥	१४.	उत्पन्न हुए

श्लोकार्थ—पूरु के पुत्र जनमेजय हुए । उनके पुत्र प्रचिन्वान्, उनसे प्रवीर तथा उनसे नमस्यु और उनसे चारुपद उत्पन्न हुए ॥

तृतीयः श्लोकः

तस्य सुद्युरभूत् पुत्रस्तस्माद् बहुगवस्ततः ।
संयातिस्तस्याहंयाती रौद्राश्वस्तत्सुतः स्मृतः ॥३॥

पदच्छेद— तस्य सुद्युः अभूत् पुत्रः तस्मात् बहुगवः ततः ।
संयातिः तस्य अहंयातिः रौद्राश्वः तत् सुतः स्मृतः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उनके	संयातिः	८.	संयाति
सुद्युः	३.	सुद्यु	तस्य	६.	उनसे
अभूत्	४.	हुए	अहंयातिः	१०.	अहंयाति (और)
पुत्रः	२.	पुत्र	रौद्राश्वः	१३.	रौद्राश्व
तस्मात्	५.	उनसे	तत्	११.	उनके
बहुगवः	६.	बहुगव	सुतः	१२.	पुत्र
ततः ।	७	उनसे	स्मृतः ॥	१४.	कहे गये है

श्लोकार्थ—उनके पुत्र सुद्यु हुए, उनसे बहुगव, उनसे संयाति, उनके पुत्र अहंयाति और उनके पुत्र रौद्राश्व कहे गये है ॥

चतुर्थः श्लोकः

ऋतेयुस्तस्य कुक्षेयुः स्थण्डिलेयुः कृतेयुकः ।
जलेयुः सन्ततेयुश्च धर्मसत्यव्रतेयवः ॥४॥

पदच्छेद— ऋतेयुः तस्य कुक्षेयुः स्थण्डिलेयुः कृतेयुकः ।
जलेयुः सन्ततेयुः च धर्म सत्य व्रतेयवः ॥

शब्दार्थ—

ऋतेयुः	२.	ऋतेयु	जलेयुः	६.	जलेयु
तस्य	१.	उसके	सन्ततेयुः	७.	सन्ततेयु
कुक्षेयुः	३.	कुक्षेयु	च	१०.	और
स्थण्डिलेयुः	४.	स्थण्डिलेयु	धर्म	८.	धर्मेयु
कृतेयुकः ।	५.	कृतेयु	सत्य	९.	सत्येयु
			व्रतेयवः ॥	११.	व्रतेयु हुए

श्लोकार्थ—उसके ऋतेयु, कुक्षेयु, स्थण्डिलेयु, कृतेयु, जलेयु, सन्ततेयु, धर्मेयु, सत्येयु और व्रतेयु हुए ।

पञ्चमः श्लोकः

दशैतेऽप्सरसः पुत्रा वनेयुश्चावमः स्मृतः ।
घृताच्यामिन्द्रियाणीव मुख्यस्य जगदात्मनः ॥५॥

पदच्छेद— दश एते अप्सरसः पुत्राः वनेयुः च अवमः स्मृतः ।
घृताच्याम् इन्द्रियाणि इव मुख्यस्य जगत् आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

दश एते	८. दश ये	स्मृतः	१३. कहा गया है
अप्सरसः	६. अप्सरा से	घृताच्याम्	५. घृताची
पुत्राः	९. पुत्र उत्पन्न हुए	इन्द्रियाणि इव	४. इन्द्रियों के समान
वनेयुः	१२. वनेयु	मुख्यस्य	३. प्रधान प्राण से
च	१०. और	जगत्	१. विश्व के
अवमः ।	११. उनमें सबसे छोटा	आत्मनः ॥	२. आत्मा

श्लोकार्थ—विश्व आत्मा प्रधान प्राण से इन्द्रियों के समान घृताची अप्सरा से ये दश पुत्र उत्पन्न हुए और उनमें सबसे छोटा वनेयु कहा गया है ॥

षष्ठ श्लोकः

ऋतेयो रन्तिभारोऽभूत् त्रयस्तस्यात्मजा नृप ।
सुमतिर्ध्रुवोऽप्रतिरथः कण्वोऽप्रतिरथात्मजः ॥६॥

पदच्छेद— ऋतेयो रन्तिभारः अभूत् त्रयः तस्य आत्मजाः नृप ।
सुमतिः ध्रुवः अप्रतिरथः कण्वः अप्रतिरथ आत्मजः ॥

शब्दार्थ—

ऋतेयोः	२. ऋतेयु के पुत्र	नृप	१. हे राजन्
रन्तिभारः	३. रन्तिभार	सुमतिः	८. सुमति
अभूत्	४. हुए	ध्रुवः	९. ध्रुव (और)
त्रयः	६. तीन	अप्रतिरथः	१०. अप्रतिरथ
तस्य	५. उनके	कण्वः	१३. कण्व हुए
आत्मजाः ।	७. पुत्र हुए	अप्रतिरथ	११. अप्रतिरथ के
		आत्मजः ।	१२. पुत्र

श्लोकार्थ—हे राजन् ! ऋतेयु के पुत्र रन्तिभार हुए । उनके तीन पुत्र हुए सुमति, ध्रुव, अप्रतिरथ । अप्रतिरथ के पुत्र कण्व हुए ॥

सप्तमः श्लोकः

तस्य मेधातिथिस्तस्मात् प्रस्कण्वाद्या द्विजातयः।
पुत्रोऽभूत् सुमते रैभ्यो दुष्यन्तस्तत्सुतो मतः ॥७॥

पदच्छेद— तस्य मेधातिथिः तस्मात् प्रस्कण्व आद्या द्विजातयः।
पुत्रः अभूत् सुमतेः रैभ्यो दुष्यन्तः तत् सुतः मतः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उसके	अभूत्	१०.	हुआ
मेधातिथिः	२.	मेधातिथि	सुमतेः	७.	सुमति का
तस्मात्	३.	उससे	रैभ्यो	६.	रैभ्य
प्रस्कण्व	४.	प्रस्कण्व	दुष्यन्तः	१३	दुष्यन्त
आद्याः	५.	आदि	तत्	११.	उसी का
द्विजातयः	६.	ब्राह्मण पुत्र उत्पन्न हुए	सुतः	१२.	पुत्र
पुत्रः।	८.	पुत्र	मतः॥	१४.	कहा गया है

श्लोकार्थ—उसके मेधातिथि, उससे प्रस्कण्व आदि ब्राह्मण पुत्र उत्पन्न हुए। सुमति का पुत्र रैभ्य हुआ। उसी का पुत्र दुष्यन्त कहा गया है॥

अष्टमः श्लोकः

दुष्यन्तो मृगयां यातः कण्वाश्रमपदं गतः।
तत्रासीनां स्वप्रभया मण्डयन्तीं रमामिव ॥८॥

पदच्छेद— दुष्यन्तः मृगयाम् यातः कण्व आश्रम पदम् गतः।
तत्र आसीनाम् स्वप्रभया मण्डयन्तीम् रमाम् इव ॥

शब्दार्थ—

दुष्यन्तः	१.	एक बार दुष्यन्त	गतः	७.	पहुँचे
मृगयाम्	२.	शिकार के लिए	तत्र	८.	वहाँ
यातः	३.	वन में गया (और)	आसीनाम्	१३.	बैठी हुई एक स्त्री को देखा
कण्व	४.	कण्व के	स्वप्रभया	११.	अपनी कान्ति से
आश्रम	५.	आश्रम	मण्डयन्तीम्	१२.	शोभित करती हुई
पदम्।	६.	स्थान पर	रमाम्	९.	लक्ष्मी के
			इव॥	१०.	समान (आश्रम को)

श्लोकार्थ— एक बार दुष्यन्त शिकार के लिए वन में गये और कण्व के आश्रम स्थान पर पहुँचे। वहाँ लक्ष्मी के समान आश्रम को अपनी कान्ति से शोभित करती हुई बैठी हुई एक स्त्री को देखा॥

नवमः श्लोकः

विलोक्य सद्यो मुमुहे देवमायामिव स्त्रियम् ।

बभाषे तां वरारोहां भटैः कतिपयैर्वृतः ॥९॥

पदच्छेद— विलोक्य सद्यः मुमुहे देवमायाम् इव स्त्रियम् ।
बभाषे ताम् वरारोहाम् भटैः कतिपयैः वृतः ॥

शब्दार्थ—

विलोक्य	७. देखकर	बभाषे	१२. बात करने लगे
सद्यः	८. तुरन्त	ताम्	१०. उस
मुमुहे	९. मोहित हो गये (और)	वरारोहाम्	११. सुन्दरी स्त्री से
देवमायाम्	४. देवमाया के	भटैः	२. सैनिकों से
इव	५. समान	कतिपयैः	१. कुछ
स्त्रियम् ।	६. उस स्त्री को	वृतः ॥	३. घिरे हुए वह राजा

श्लोकार्थ—कुछ सैनिकों से घिरे हुए वह राजा देवमाया के समान उस स्त्री को देखकर तुरन्त मोहित हो गये और उस सुन्दरी स्त्री से बात करने लगे ॥

दशमः श्लोकः

तद्दर्शनप्रमुदितः संनिवृत्तपरिश्रमः ।

पप्रच्छ कामसन्तप्तः प्रहसञ्श्लक्ष्णया गिरा ॥१०॥

पदच्छेद— तत् दर्शन प्रमुदितः संनिवृत्त परिश्रमः ।
पप्रच्छ काम सन्तप्तः प्रहसन् श्लक्ष्णया गिरा ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. उसके	पप्रच्छ	११. पूछा
दर्शन	२. दर्शन से	काम	४. काम से
प्रमुदितः	३. आनन्दित और	सन्तप्तः	५. संन्तप्त (राजा ने)
संनिवृत्त	७. दूर हो जाने पर	प्रहसन	१०. हंसते हुए (उससे)
परिश्रमः ।	६. थकावट	श्लक्ष्णया	८. मधुर
		गिरा ॥	९. वाणी से

श्लोकार्थ—उसके दर्शन से आनन्दित और काम से सन्तप्त राजा ने थकावट दूर हो जाने पर मधुर वाणी से हँसते हुए उससे पूछा ॥

एकादश: श्लोक:

का त्वं कमलपत्राक्षि कस्यासि हृदयङ्गमे ।
किं वा चिकीर्षितं त्वत्र भवत्या निर्जने वने ॥११॥

पदच्छेद— का त्वम् कमल पत्राक्षि कस्यासि हृदयङ्गमे ।
किम् वा चिकीर्षितम तु अत्र भवत्या निर्जने वने ॥

शब्दार्थ—

का	४	कौन हो	किम्	१२	क्या
त्वम्	३.	तुम	वा	६.	अथवा
कमल	१.	हे कमल	चिकीर्षितम्	१३.	करना चाहती हो
पत्राक्षि	२.	दल के समान नयनों वाली	तु अत्र	८	यहाँ
कस्यासि	५.	किसकी पुत्री हो	भवत्या	११	आप
हृदयङ्गमे ।	७.	हृदय को आकर्षित करने वाली	निर्जने	९.	निर्जन
			वने ॥	१०.	वन में

श्लोकार्थ—हे कमल दल के समान नयनों वाली ! तुम कौन हो, किसकी पुत्री हो, अथवा हे हृदय को आकर्षित करने वाली ! यहाँ निर्जन वन मे आप क्या करना चाहती हो ? ॥

द्वादश: श्लोक:

व्यक्तं राजन्यतनयां वेद्म्यहं त्वां सुमध्यमे ।
न हि चेत: पौरवाणामधर्मे रमते क्वचित् ॥१२॥

पदच्छेद— व्यक्तम् राजन्यतनयाम् वेद्मि अहम् त्वाम् सुमध्यमे ।
न हि चेत: पौरवाणाम् अधर्मे रमते क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

व्यक्तम्	३.	स्पष्ट रूप से	नहि	११.	नहीं
राजन्यतनयाम्	५.	राजा की पुत्री	चेत:	८.	चित्त
वेद्मि	६.	जान रहा हूँ (क्योंकि)	पौरवाणाम्	७.	पुरुवंशियों का
अहम्	२.	मैं	अधर्मे	९.	अधर्म में
त्वाम्	४.	तुमको	रमते	१२.	रमता है
सुमध्यमे ।	१.	हे सुन्दरी	क्वचित् ॥	१०.	कहीं भी

श्लोकार्थ—हे सुन्दरि ! मैं स्पष्ट रूप से तुमको राजा की पुत्री जान रहा हूँ । क्योंकि पुरुवंशियों का चित्त अधर्म में कहीं भी नहीं रमता है ॥

त्रयोदशः श्लोकः

शकुन्तलोवाच—विश्वामित्रात्मजैवाहं त्यक्ता मेनकया वने ।

वेदैतद् भगवान् कण्वो वीर किं करवाम ते ॥१३॥

पदच्छेद— विश्वामित्र आत्मजा एव अहम् त्यक्ता मेनकया वने ।
वेद एतद् भगवान् कण्वः वीर किम् करवाम ते ॥

शब्दार्थ—

विश्वामित्र	२. विश्वामित्र की	वेद	११. जानते हैं
आत्मजा	४ पुत्री हूँ	एतद्	८. यह
एव	३. ही	भगवान्	९. भगवान्
अहम्	१. मैं	कण्वः	१०. कण्व मुनि
त्यक्ता	७. त्याग दिया था	वीर	१२. हे वीर मैं
मेनकया	५. मेनका ने	किम्	१४. क्या (सेवा)
वने ।	६. वन में	करवाम	१५. करूँ
		ते ॥	१३. आपकी

श्लोकार्थ— मैं विश्वामित्र की ही पुत्री हूँ । वन में मेनका ने त्याग दिया था । यह भगवान् कण्व मुनि जानते हैं । आपकी क्या सेवा करूँ ? ।।

चतुर्दशः श्लोकः

आस्यतां ह्यरविन्दाक्ष गृह्यतामर्हणं च नः ।

भुज्यतां सन्ति नीवारा उष्यतां यदि रोचते ॥१४॥

पदच्छेद— आस्यताम् हि अरविन्दाक्ष गृह्यताम् अर्हणम् च नः ।
भुज्यताम् सन्ति नीवाराः उष्यताम् यदि रोचते ॥

शब्दार्थ—

आस्यताम्	२. बैठिये	भुज्यताम्	९. भोजन कीजिये
हि अरविन्दाक्ष	१. हे कमल नयन यहाँ	सन्ति	८. हैं
गृह्यताम्	६. ग्रहण कीजिये	नीवाराः	७. यह तिन्नी का चावल
अर्हणम्	५. स्वागत सत्कार	उष्यताम्	१२. निवास कीजिये
च	३. और	यदि	१०. यदि
नः ।	४. हमारा	रोचते ॥	११. आपको पसन्द हो तो

श्लोकार्थ— हे कमलनयन ! यहाँ बैठिये और हमारा आतिथ्य ग्रहण कीजिये । यहाँ तिन्नी का चावल है, भोजन कीजिये यदि आपको पसन्द हो तो निवास कीजिये ।।

पञ्चदशः श्लोकः

दुष्यन्त उवाच—उपपन्नमिदं सुभ्रु जातायाः कुशिकान्वये ।
स्वयं हि वृणते राज्ञां कन्यकाः सदृशं वरम् ॥१५॥

पदच्छेद— उपपन्नम् इदम् सुभ्रु जातायाः कुशिक अन्वये ।
स्वयम् हि वृणते राज्ञाम् कन्यकाः सदृशम् वरम् ॥

शब्दार्थ—

उपपन्नम्	६.	उचित ही है क्योंकि	स्वयम् हि	११.	स्वयम् ही
इदम्	५.	यह कथन	वृणते	१३	वरण कर लेती है
सुभ्रु	१.	हे सुन्दरि	राज्ञाम्	८.	राजाओं की
जातायाः	४.	उत्पन्न तुम्हारा	कन्यकाः	९.	कन्यायें
कुशिक	२.	कुशिक	सदृशम्	११.	योग्य
अन्वये ।	३.	वंश में	वरम् ॥	१२.	वर का

श्लोकार्थ—हे सुन्दरि ! कुशिक वंश में उत्पन्न तुम्हारा यह कथन उचित ही है। क्योंकि राजाओं की कन्यायें स्वयम् ही योग्य वर का वरण कर लेती है ॥

षोडशः श्लोकः

ओमित्युक्ते यथाधर्ममुपयेमे शकुन्तलाम् ।
गान्धर्वविधिना राजा देशकालविधानवित् ॥१६॥

पदच्छेद— ओम् इति उक्ते यथा धर्मम् उपयेमे शकुन्तलाम् ।
गान्धर्व विधिना राजा देश काल विधान् वित् ॥

शब्दार्थ—

ओम्	१.	ठीक है	गान्धर्व	१०.	गान्धर्व
इति उक्ते	२.	ऐसा कहने पर	विधिना	११.	विधि
यथा	९.	अनुसार	राजा	७.	राजा दुष्यन्त ने
धर्मम्	८	धर्म के	देश	३.	देश
उपयेमे	१३.	विवाह कर लिया	काल	४.	काल और
शकुन्तलाम् ।	१२	शकुन्तला के साथ	विधान	५.	शास्त्र विधान को
			वित् ॥	६.	जानने वाले

श्लोकार्थ—ठीक है, ऐसा कहने पर देश, काल और शास्त्र-विधान को जानने वाले राजा दुष्यन्त ने धर्म के अनुसार गान्धर्व विधि से शकुन्तला के साथ विवाह कर लिया ॥

सप्तदश श्लोक

अमोघवीर्यो राजर्षिर्महिष्यां वीर्यमादधे ।
श्वोभूते स्वपुरं यातः कालेनासूत सा सुतम् ॥१७॥

पदच्छेद— अमोघवीर्यः राजर्षिः महिष्याम् वीर्यम् आदधे ।
श्वोभूते स्वपुरम् यातः कालेन असूत सा सुतम् ॥

शब्दार्थ—

अमोघ	१. अमोघ	श्वोभूते	७. सवेरा होने पर
वीर्यः	२. वीर्य वाले	स्वपुरम्	८. अपने नगर को
राजर्षिः	३. राजर्षि दुष्यन्त ने	यातः	९. चले गये
महिष्याम्	४. शकुन्तला में	कालेन	१०. समय आने पर
वीर्यम्	५. वीर्य का	असूत	११. उत्पन्न किया
आदधे ।	६ आधान किया और	सा सुतम् ॥	११. उस शकुन्तला ने एक पुत्र को

श्लोकार्थ—अमोघ वीर्य वाले राजर्षि दुष्यन्त ने शकुन्तला में वीर्य का आधान किया और सवेरा होने पर अपने नगर को चले गये। समय आने पर उस शकुन्तला ने एक पुत्र को उत्पन्न किया ॥

अष्टादशः श्लोकः

कण्वः कुमारस्य वने चक्रे समुचिताः क्रियाः ।
बद्ध्वा मृगेन्द्रांस्तरसा क्रीडति स्म स बालकः ॥१८॥

पदच्छेद— कण्वः कुमारस्य वने चक्रे समुचिताः क्रियाः ।
बद्ध्वा मृगेन्द्रान् तरसा क्रीडति स्म सः बालकः ॥

शब्दार्थ—

कण्वः	२. कण्व ऋषि ने	बद्ध्वा	११. बाँधकर
कुमारस्य	३. कुमार की	मृगेन्द्रान्	१०. सिंहों को
वने	१. वन में	तरसा	९. बल पूर्वक
चक्रे	६. सम्पन्न की	क्रीडति स्म	१२. खेलता था
समुचिताः	४. उचित	सः	७ वह
क्रियाः ।	५. जातकर्म आदि क्रियायें	बालकः ॥	८. बालक

श्लोकार्थ—वन में कण्व ऋषि ने कुमार की उचित जातकर्म आदि क्रियायें सम्पन्न कीं। वह बालक बलपूर्वक सिंहों को बाँधकर खेलता था ॥

एकोनविंश: श्लोक:

तं दुरत्ययविक्रान्तमादाय प्रमदोत्तमा ।
हरेरंशांशसम्भूतं भर्तुरन्तिकमागमत् ॥१९॥

पदच्छेद— तम् दुरत्यय विक्रान्तम् आदाय प्रमदाउत्तमा ।
हरेः अंशांश सम्भूतम् भर्तुः अन्तिकम् आगमत् ॥

शब्दार्थ—

तम्	७. उस बालक को	हरेः	४. भगवान् के
दुरत्यय	२. अपरिमित	अंशांश	५. अंशों के अंश से
विक्रान्तम्	३. पराक्रम वाले तथा	सम्भूतम्	६. उत्पन्न
आदाय	८. लेकर	भर्तुः	९. पति के
प्रमदोत्तमा ।	१. रमणियों में श्रेष्ठ शकुन्तला	अन्तिकम्	१०. पास
		आगमत् ।	११. आई

श्लोकार्थ—रमणियों में श्रेष्ठ शकुन्तला अपरिमित पराक्रम वाले तथा भगवान् के अंशों के अंश से उत्पन्न उस बालक को लेकर पति के पास आई ॥

विंश: श्लोक:

यदा न जगृहे राजा भार्यापुत्रावनिन्दितौ ।
शृण्वतां सर्वभूतानां खे वागाहाशरीरिणी ॥२०॥

पदच्छेद— यदा न जगृहे राजा भार्या पुत्रौ अनिन्दितौ ।
शृण्वताम् सर्व भूतानाम् खे वाक् आह अशरीरिणी ॥

शब्दार्थ—

यदा	१. जब	शृण्वताम्	१० सुनते हुए
न	६. नहीं	सर्व	८. सभी
जगृहे	७. ग्रहण किया (तब)	भूतानाम्	९. प्राणियों के
राजा	२. राजा दुष्यन्त ने	खे	१२. आकाश
भार्या	४. पत्नी और	वाक् आह	१३. वाणी ने कहा
पुत्रौ	५. पुत्र को	अशरीरिणी ॥	११. शरीर रहित
अनिन्दितौ ।	३. निर्दोष		

श्लोकार्थ—जब राजा दुष्यन्त ने निर्दोष पत्नी और पुत्र को ग्रहण नहीं किया तब सभी प्राणियों के सुनते हुए शरीर रहित आकाश वाणी ने कहा ॥

एकविंशः श्लोकः

माता भस्त्रा पितुः पुत्रो येन जातः स एव सः ।
भरस्व पुत्रं दुष्यन्त मावमंस्थाः शकुन्तलाम् ॥२१॥

पदच्छेद— माता भस्त्रा पितुः पुत्रः येन जातः स एव सः ।
भरस्व पुत्रम् दुष्यन्त मा अवमंस्थाः शकुन्तलाम् ॥

शब्दार्थ—

माता	१. माता	सः	८. वह है
भस्त्रा	२. धौंकनी के समान है	भरस्व	११. भरण पोषण करो
पितुः	४. पिता का ही है	पुत्रम्	१०. पुत्र का
पुत्रः	३. पुत्र	दुष्यन्त	९. हे दुष्यन्त !
येन	५. जिससे	मा	१४. मत करो
जातः	६. उत्पन्न हुआ है	अवमंस्थाः	१३. तिरस्कार
स एव ।	७. वही	शकुन्तलाम् ॥	१२. शकुन्तला का

श्लोकार्थ—माता धौंकनी के समान है । पुत्र पिता का ही है । जिससे उत्पन्न हुआ है वही वह है अर्थात् पिता ही पुत्र के रूप में उत्पन्न होता है । हे दुष्यन्त ! पुत्र का भरण-पोषण करो । शकुन्तला का तिरस्कार मत करो ॥

द्वाविंशः श्लोकः

रेतोधाः पुत्रो नयति नरदेव यमक्षयात् ।
त्वं चास्य धाता गर्भस्य सत्यमाह शकुन्तला ॥२२॥

पदच्छेद— रेतोधाः पुत्रः नयति नरदेव यमक्षयात् ।
त्वम् च अस्य धाता गर्भस्य सत्यम् आह शकुन्तला ॥

शब्दार्थ—

रेतोधाः	२. वंश की वृद्धि करने वाला	च	६. और
पुत्रः	३. पुत्र	अस्य	८. इसके
नयति	५. उद्धार कर देता है	धाता	१०. धारण कराने वाले हो
नरदेव	१. हे राजन्	गर्भस्य	९. गर्भ को
यमक्षयात्	४. नरक से	सत्यम्	१४. सत्य ही
त्वम् ।	७. तुम हो	आह	१३. कहा है
		शकुन्तला ॥	११. शकुन्तला ने

श्लोकार्थ—हे राजन् ! वंश की वृद्धि करने वाला पुत्र नरक से उद्धार कर देता है । और तुम ही इसके गर्भ को धारण कराने वाले हो । शकुन्तला ने सत्य ही कहा है ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

पितर्युपरते सोऽपि चक्रवर्ती महायशाः ।
महिमा गीयते तस्य हरेरंशभुवो भुवि ॥२३॥

पदच्छेद— पितरि उपरते सः अपि चक्रवर्ती महायशाः ।
महिमा गीयते तस्य हरेः अंश भुवः भुवि ॥

शब्दार्थ—

पितरि	१. पिता के	महिमा	१२. महिमा
उपरते	२. मर जाने पर	गीयते	१३. गाई जाती है
सः	३. वह	तस्य	११. उसकी
अपि	४. भी	हरेः	७. भगवान् के
चक्रवर्ती	६. चक्रवर्ती सम्राट् हुआ	अंश	८. अंश से
महायशाः ।	५. महान् यशस्वी	भुवः	९. उत्पन्न
		भुवि ॥	१०. पृथ्वी पर

श्लोकार्थ—पिता के मर जाने पर वह भी महान् यशस्वी चक्रवर्ती सम्राट् हुआ । भगवान् के अंश से उत्पन्न पृथ्वी पर उसकी महिमा गाई जाती है ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

चक्रं दक्षिणहस्तेऽस्य पद्मकोशोऽस्य पादयोः ।
ईजे महाभिषेकेण सोऽभिषिक्तोऽधिराड् विभुः ॥२४॥

पदच्छेद— चक्रम् दक्षिण हस्ते अस्य पद्मकोशः अस्य पादयोः ।
ईजे महा अभिषेकेण सः अभिषिक्तः अधिराट् विभुः ॥

शब्दार्थ—

चक्रम्	४. चक्र का चिह्न था (और)	ईजे	१०. यज्ञ किया (और)
दक्षिण	२. दाहिने	महा	८. महा
हस्ते	३. हाथ में	अभिषेकेण	९. अभिषेक की विधि से
अस्य	१. उसके	सः	११. उसका
पद्मकोशः	७. कमल कोश का चिह्न था	अभिषिक्तः	१४. अभिषेक किया गया
अस्य	५. उसके	अधिराट्	१३. अधिराज के पद पर
पादयोः ।	६. पैरों में	विभुः ॥	१२. राजा

श्लोकार्थ—उसके दाहिने हाथ में चक्र का चिह्न था । और उसके पैरों में कमल कोश का चिह्न था । उसने महाअभिषेक की विधि से यज्ञ किया और उसका राजाधिराज के पद पर अभिषेक किया गया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

पञ्चपञ्चाशता मेध्यैर्गङ्गायामनु वाजिभिः ।
मामतेयं पुरोधाय यमुनायामनु प्रभुः ॥२५॥

पदच्छेद— पञ्चपञ्चाशता मेध्यैः गङ्गायाम् अनुवाजिभिः ।
मामतेयम् पुरोधाय यमुनायाम् अनु प्रभुः ॥

शब्दार्थ—

पञ्चपञ्चाशता	५. पचपन	मामतेयम्	२. ममता का पुत्र दीर्घतमा को
मेध्यैः	७. यज्ञ किये	पुरोधाय	३. पुरोहित बनाकर
गङ्गायाम्	४. गंगोत्री से गंगा सागर तक	यमुनायाम् अनु	८. इसी प्रकार यमुनोत्री से प्रयाग तक किये
अनुवाजिभिः ।	६. अश्वमेध	प्रभुः ॥	१. राजा भरत ने

श्लोकार्थ—राजा भरत ने ममता के पुत्र दीर्घतमा को पुरोहित बनाकर गंगोत्री से गंगा सागर तक पचपन अश्वमेध यज्ञ किये। और इसी प्रकार यमुनोत्री से प्रयाग तक (७८) यज्ञ किये ॥

षड्विंशः श्लोकः

अष्टसप्ततिमेध्याश्वान् बबन्ध प्रददद् वसु ।
भरतस्य हि दौष्यन्तेरग्निः साचीगुणे चितः ।
सहस्रं बद्वशो यस्मिन् ब्राह्मणा गा विभेजिरे ॥२६॥

पदच्छेद— अष्टसप्ततिमेध्य अश्वान् बबन्ध प्रददत् वसु ।
भरतस्य हि दौष्यन्तेः अग्निः साची गुणे चितः ।
सहस्रम् बद्वशः यस्मिन् ब्राह्मणाः गा विभेजिरे ॥

शब्दार्थ—

अष्टसप्ततिमेध्य	१. अठहत्तर पवित्र	साची	८. उत्तम
अश्वान्	२. अश्वों को	गुणे	९. गुण वाले स्थान में
बबन्ध	३. बाँधा और	चितः	११. स्थापना की गई थी (और)
प्रददत्	५. दिया था	सहस्रम्	१४. हजार चौरासी
वसु	४. अपार धन	बद्वशः	१३ तेरह
भरतस्य	७. राजा भरत के यज्ञ में	यस्मिन्	१२. जिस यज्ञ में
हि दौष्यन्तेः	६ दुष्यन्त के पुत्र	ब्राह्मणाः	१६. ब्राह्मणों ने
अग्निः ।	१०. अग्नि की	गाः	१५. गऊओं का
		विभेजिरे ॥	१७. बँटवारा किया था

श्लोकार्थ—(यमुनोत्री से प्रयाग तक में) अठहत्तर पवित्र अश्वों को बाँधा और अपार धन दिया। दुष्यन्त के पुत्र राजा भरत के यज्ञ में उत्तम गुण वाले स्थान में अग्नि की स्थापना की गई थी। और जिस यज्ञ में तेरह हजार चौरासी गऊओं का ब्राह्मणों ने बँटवारा किया था ॥

सप्तविंशः श्लोकः

त्रयस्त्रिंशच्छतं ह्यश्वान् बद्ध्वा विस्मापयन् नृपान् ।
दौष्यन्तिरत्यगान्मायां देवानां गुरुमाययौ ॥२७॥

पदच्छेद— त्रयस्त्रिंशत् शतम् हि अश्वान् बद्ध्वा विस्मापयन् नृपान् ।
दौष्यन्तिः अत्यगात् मायाम् देवानाम् गुरुम् आययौ ॥

शब्दार्थ—

त्रयस्त्रिशत्	३.	तैंतीस	दौष्यन्तिः	१.	दुष्यन्त पुत्र भरत ने
शतम्	२.	एक सौ	अत्यगात्	६.	जीतकर
हि अश्वान्	४.	अश्वों को	मायाम्	८.	माया को
बद्ध्वा	५.	बांध करके	देवानाम्	१०.	देवताओं के
विस्मापयन्	७.	आश्चर्य चकित कर दिया और	गुरुम्	११.	गुरु
नृपान् ।	६.	राजाओं को	आययौ ॥	१२.	भगवान् को प्राप्त किया

श्लोकार्थ— दुष्यन्त पुत्र भरत ने एक सौ तैंतीस अश्वों को बांध करके राजाओं को आश्चर्यचकित कर दिया । और माया को जीतकर देवताओं के गुरु भगवान् को प्राप्त किया ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

मृगाञ्छुक्लदतः कृष्णान् हिरण्येन परीवृतान् ।
अदात् कर्मणि मष्णारे नियुतानि चतुर्दश ॥२८॥

पदच्छेद— मृगान् शुक्लदतः कृष्णान् हिरण्येन परीवृ तान् ।
अदात् कर्मणि मष्णारे नियुतानि चतुर्दश ॥

शब्दार्थ—

मृगान्	९.	हाथियों का	अदात्	१०.	दान किया
शुक्लदतः	३.	सफेद द तों वाले	कर्मणि	२.	कर्म में (भरत ने)
कृष्णान्	४.	काले रंग के	मष्णारे	१.	मष्णार नाम के यज्ञ
हिरण्येन	५.	सोने से	नियुतानि	८.	लाख
परीवृतान् ।	६.	विभूषित	चतुर्दश ॥	७.	चौदह

श्लोकार्थ—मष्णार नाम के यज्ञ कर्म में भरत ने सफेद दातों वाले काले रंग के सोने से विभूषित चौदह लाख हाथियों का दान किया ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

भरतस्य महत् कर्म न पूर्वे नापरे नृपाः ।
नैवापुर्नैव प्राप्स्यन्ति बाहुभ्यां त्रिदिवं यथा ॥२९॥

पदच्छेद— भरतस्य महत् कर्म न पूर्वे न अपरे नृपाः ।
न एव आपुः न एव प्राप्स्यन्ति बाहुभ्याम् त्रिदिवम् यथा ॥

शब्दार्थ—

भरतस्य	१. भरत के	न एव	८. न ही
महत्	२. महान्	आपुः	७. प्राप्त किया
कर्म	३. कर्म को	न एव	९. नहीं ही
न	४. न तो	प्राप्स्यन्ति	११. प्राप्त करेंगे
पूर्वे	५. पहले के	बाहुभ्याम्	१३. बाँहों से
न अपरे	९. बाद के (राजा)	त्रिदिवम्	१४. स्वर्ग को नहीं छू सकता है
नृपाः ।	६. राजाओं ने	यथा ॥	१२. जैसे कोई

श्लोकार्थ—भरत के महान् कर्म को न तो पहले के राजाओं ने प्राप्त किया और न ही बाद के राजा प्राप्त करेंगे जैसे कोई बाँहों से स्वर्ग को नहीं छू सकता है ॥

त्रिंशः श्लोकः

किरातहूणान् यवनानन्ध्रान् कङ्कान् खशाञ्छकान् ।
अब्रह्मण्यान् नृपांश्चाहन् म्लेच्छान् दिग्विजयेऽखिलान् ॥३०॥

पदच्छेद— किरात हूणान् यवनान् अन्ध्रान् कङ्कान् खशान् शकान् ।
अब्रह्मण्यान् नृपान् च अहन् म्लेच्छान् दिग्विजये अखिलान् ॥

शब्दार्थ—

किरात	३. किरात	अब्रह्मण्यान्	१२. ब्राह्मणों के द्रोही
हूणान्	४. हूण	नृपान्	१३. राजाओं को
यवनान्	५. यवन	च	१०. और
अन्ध्रान्	६. अन्ध्र	अहन्	१४. मार डाला
कङ्कान्	७. कङ्क	म्लेच्छान्	११. म्लेच्छ आदि
खशान्	८. खश	दिग्विजये	१. भरत ने दिग्विजय करते समय
शकान् ।	९. शक	अखिलान् ॥	२. सभी

श्लोकार्थ—भरत ने दिग्विजय करते समय किरात, हूण, यवन, अन्ध्र, कङ्क, खश, शक, और म्लेच्छ आदि ब्राह्मणों के द्रोही सभी राजाओं को मार डाला ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

जित्वा पुरासुरा देवान् ये रसौकांसि भेजिरे ।
देवस्त्रियो रसां नीताः प्राणिभिः पुनराहरत् ॥३१॥

पदच्छेद— जित्वा पुरा असुराः देवान् ये रसौकांसि भेजिरे ।
देवस्त्रियः रसाम् नीताः प्राणिभिः पुनः आहरत् ॥

शब्दार्थ—

जित्वा	५.	जीतकर	देवस्त्रियः	८.	देवताओं की स्त्रियों को
पुरा	१.	पूर्वकाल में	रसाम्	९.	रसातल में
असुराः	३.	दैत्य	नीताः	१०.	ले गये थे
देवान्	४.	देवताओं को	प्राणिभिः	११.	भरत ने अपने लोगों के द्वारा
ये	२.	जो	पुनः	१२.	फिर से उन्हें
रसौकांसि	६.	पाताल में	आहरत् ॥	१३.	छुड़ा दिया
भेजिरे ।	७.	रहने लगे थे वे			

श्लोकार्थ—पूर्वकाल में जो दैत्य, देवताओं को जीत कर पाताल में रहने लगे थे वे देवताओं की स्त्रियों को रसातल में ले गये थे, भरत ने अपने लोगों के द्वारा उन्हें छुड़ा दिया ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

सर्वकामान् दुदुहतुः प्रजानां तस्य रोदसी ।
समास्त्रिणवसाहस्रीर्दिक्षु चक्रमवर्तयत् ॥३२॥

पदच्छेद— सर्व कामान् दुदुहतुः प्रजानाम् तस्य रोदसी ।
समाः त्रिणव साहस्रीः दिक्षु चक्रम् अवर्तयत् ॥

शब्दार्थ—

सर्व	४.	सभी	समाः	१०.	वर्ष तक
कामान्	५.	कामनाओं को	त्रिणव	८.	तीन नौ (सत्ताइस)
दुदुहतुः	७.	पूर्ण करते थे (उसने)	साहस्रीः	९.	हजार (वर्षों तक सभी)
प्रजानाम्	२	प्रजाओं को	दिक्षु	११.	दिशाओं में
तस्य	१.	उस भरत की	चक्रम्	१२.	एक छत्र शासन
रोदसी ।	६.	पृथ्वी और आकाश	अवर्तयत् ॥	१३.	किया

श्लोकार्थ—उस भरत की प्रजाओं की सभी कामनाओं को पृथ्वी और आकाश पूर्ण कर देते थे । उसने तीन नौ (सत्ताइस) हजार वर्षों तक सभी दिशाओं में एक छत्र शासन किया ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

स सम्राड् लोकपालाख्यमैश्वर्यमधिराट् श्रियम् ।
चक्रं चास्खलितं प्राणान् मृषेत्युपरराम ह ॥३३॥

पदच्छेद— सः सम्राट् लोकपाल आख्यम् ऐश्वर्यम् अधिराट् श्रियम् ।
चक्रम् च अस्खलितम् प्राणान् मृषा इति उपरराम ह ॥

शब्दार्थ—

सः सम्राट्	१. वे सम्राट् भरत	चक्रम् च	८. शासन और
लोकपाल	२. लोकपाल	अस्खलितम्	७. अखण्ड
आख्यम्	३. नाम का	प्राणान्	९. प्राणों को भी
ऐश्वर्यम्	४. ऐश्वर्य	मृषेति	१०. मिथ्या समझकर
अधिराट्	५. सार्वभौम	उपरराम ह ॥	११. विरक्त हो गये
श्रियम् ।	६. सम्पत्ति		

श्लोकार्थ—वे सम्राट् भरत लोकपाल नाम का ऐश्वर्य, सार्वभौम सम्पत्ति, अखण्ड शासन और प्राणों को भी मिथ्या समझकर विरक्त हो गये ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

तस्यासन् नृप वैदर्भ्यः पत्न्यस्तिस्रः सुसम्मताः ।
जघ्नुस्त्यागभयात् पुत्रान् नानुरूपा इतीरिते ॥३४॥

पदच्छेद— तस्य आसन् नृप वैदर्भ्यः पत्न्यः तिस्रः सुसम्मताः ।
जघ्नुः त्याग भयात् पुत्रान् न अनुरूपाः इति ईरिते ॥

शब्दार्थ—

तस्य	२. उस भरत के	जघ्नुः	१३. मार दिया
आसन्	७. थीं	त्याग	१०. त्यागने के
नृप	१. हे राजन् !	भयात्	११. भय से
वैदर्भ्यः	३. विदर्भ राज्य की कन्यायें	पुत्रान्	१२. पुत्रों को
पत्न्यः	६. पत्नियाँ	न अनुरूपाः	९. नहीं अनुरूप हैं (उन्होंने)
तिस्रः	४. तीन	इति ईरिते ॥	८. भरत के यह कहने पर कि (तुम्हारे पुत्र मेरे)
सुसम्मताः ।	५. आदरणीय		

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उस भरत के विदर्भ राज्य की तीन आदरणीय कन्यायें पत्नियाँ थीं । भरत के यह कहने पर कि तुम्हारे पुत्र मेरे अनुरूप नहीं हैं, उन्होंने त्यागने के भय से पुत्रों को मार डाला ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

तस्यैवं वितथे वंशे तदर्थं यजतः सुतम् ।
मरुत्स्तोमेन मरुतो भरद्वाजमुपाददुः ॥३५॥

पदच्छेद— तस्य एवम् वितथे वंशे तदर्थम् यजतः सुतम् ।
मरुत्स्तोमेन मरुतः भरद्वाजम् उपाददुः ॥

शब्दार्थः—

तस्य	२.	उन भरत का	सुतम्	६.	पुत्र के लिए
एवम्	१.	इस प्रकार	मरुत्स्तोमेन	७.	मरुत्स्तोम नामक
वितथे	४.	विच्छिन्न होने लगा	मरुतः	९.	मरुद्गणों ने
वंशे	३.	वंश जब	भरद्वाजम्	१०.	भरद्वाज नामक पुत्र उनको
तदर्थम्	५.	तब उन्होंने	उपाददुः ॥	११.	दिया
यजतः ।	८.	यज्ञ किया			

श्लोकार्थ—इस प्रकार उन भरत का वंश जब विच्छिन्न होने लगा तब उन्होंने पुत्र के लिए मरुत्स्तो नामक यज्ञ किया । मरुद्गणों ने भरद्वाज नामक पुत्र उनको दिया ॥

षट्त्रिंश श्लोकः

अन्तर्वत्न्यां भ्रातृपत्न्यां मैथुनाय बृहस्पतिः ।
प्रवृत्तो वारितो गर्भं शप्त्वा वीर्यमवासृजत् ॥३६॥

पदच्छेद— अन्त र्वत्न्याम् भ्रातृ पत्न्याम् मैथुनाय बृहस्पतिः ।
प्रवृत्तः वारितः गर्भम् शप्त्वा वीर्यम् अवासृजत् ॥

शब्दार्थ—

अन्त र्वत्न्याम्	१.	गर्भवती	प्रवृत्तः	६.	करना चाहा
भ्रातृ	२.	भाई की	वारितः	८.	रोके जाने पर भी
पत्न्याम्	३.	पत्नी से	गर्भम्	७.	गर्भस्थ बालक के द्वारा
मैथुनाय	५.	मैथुन	शप्त्वा	९.	शाप देकर उन्होंने
बृहस्पतिः ।	४.	बृहस्पति ने	वीर्यम्	१०.	वीर्य को
			अवासृजत् ॥	११.	स्थापित कर दिया

श्लोकार्थ—गर्भवती भाई की पत्नी से बृहस्पति ने मैथुन करना चाहा । गर्भस्थ बालक द्वारा रो जाने पर भी उसको शाप देकर उन्होंने वीर्य स्थापित कर दिया ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

तं त्यक्तुकामां ममतां भर्तृ त्यागविशङ्कितम् ।
नामनिर्वचनं तस्य श्लोकमेनं सुरा जगुः ॥३७॥

पदच्छेद— तम् त्यक्तु कामाम् ममताम् भर्तृ त्याग विशङ्कितम् ।
नाम निर्वचनम् तस्य श्लोकम् एनम् सुराः जगुः ॥

शब्दार्थ—

तम्	४. उस गर्भ को	**नाम**	१०. नाम को
त्यक्तु	५. त्यागने की	**निर्वचनम्**	११. निर्वचन करते हुए
कामाम्	६. इच्छा वाली	**तस्य**	९. उस बालक के
ममताम्	७. ममता से	**श्लोकम्**	१३. श्लोक
भर्तृ	१. पति के द्वारा	**एनम्**	१२. यह
त्याग	२. त्यागने की	**सुराः**	८. देवताओं ने
विशङ्कितम् ।	३. आशंका से	**जगुः ॥**	१४. गाया

श्लोकार्थ—पति के द्वारा त्यागने की आशंका से उस गर्भ को त्यागने की इच्छा वाली ममता से उस बालक के नाम निर्वचन करते हुए देवताओं ने यह श्लोक गाया ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

मूढे भर द्वाजमिमं भर द्वाजं बृहस्पते ।
यातौ यदुक्त्वा पितरौ भरद्वाजस्ततस्त्वयम् ॥३८॥

पदच्छेद— मूढे भर द्वाजम् इमम् भर द्वाजम् बृहस्पते ।
यातौ यत् उक्त्वा पितरौ भरद्वाजः तु ततः अयम् ॥

शब्दार्थ—

मूढे	१. हे मूर्खे !	**यातौ**	११. दोनों चले गये
भर	४. भरण करो (ममता ने कहा)	**यत्**	८. यह
द्वाजम्	३. द्वाज पुत्र को	**उक्त्वा**	९. कहकर
इमम्	२. इस	**पितरौ**	१०. माता पिता
भर	७. भरण करो	**भरद्वाजः**	१४. भरद्वाज कहलाया
द्वाजम्	६. द्वाज पुत्र का	**ततः तु**	१२ इसलिए
बृहस्पते ।	५. हे बृहस्पते ! तुम इस	**अयम् ॥**	१३. यह

श्लोकार्थ—हे मूर्खे ! इस द्वाज (क्षेत्रज और औरस के भेद से दो का पुत्र) पुत्र का भरण करो। ममता ने कहा—हे बृहस्पते ! तुम इस द्वाज पुत्र का भरण करो। यह कहकर माता-पिता दोनों चले गये ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

चोद्यमाना सुरैरेवं मत्वा वितथमात्मजम् ।
व्यसृजन् मरुतोऽबिभ्रन् दत्तोऽयं वितथेऽन्वये ॥३९॥

पदच्छेद— चोद्यमाना सुरैः एवम् मत्वा वितथम् आत्मजम् ।
व्यसृजत् मरुतः अबिभ्रन् दत्तः अयम् वितथे अन्वये ॥

शब्दार्थ—

चोद्यमाना	३. कहने पर भी	व्यसृजत्	७. त्याग दिया तब
सुरैः	१. देवताओं के	मरुतः	८. मरुद्गणों ने उसका
एवम्	२. इस प्रकार	अबिभ्रन्	९. पालन किया और
मत्वा	६. मानकर (ममता ने उसे)	दत्तः	१३. दे दिया
वितथम्	५. अवैध	अयम्	१२. वह बालक
आत्मजम् ।	४. पुत्र को	वितथे	११. विच्छेद होने पर उसे
		अन्वये ॥	१०. भरत के वंश के

श्लोकार्थ—देवताओं के इस प्रकार कहने पर भी पुत्र को अवैध मानकर ममता ने उसे त्याग दिया । तब मरुद्गणों ने उसका पालन किया और भरत के वंश के विच्छेद होने पर उसे यह बालक दे दिया ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे
विंशोऽध्यायः ॥२०॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

एकविंशः अध्यायः

प्रथम श्लोकः

वितथस्य सुतो मन्युर्बृहत्क्षत्रो जयस्ततः ।

महावीर्यो नरो गर्गः सङ्कृतिस्तु नरात्मजः ॥१॥

पदच्छेद— वितथस्य सुतः मन्युः बृहत्क्षत्रः जयः ततः ।
महावीर्यः नरः गर्गः सङ्कृतिः तु नर आत्मजः ॥

शब्दार्थ—

वितथस्य	१.	वितथ के	महावीर्यः	७.	महावीर्य
सुतः	२.	पुत्र	नरः	८.	नर और
मन्युः	३.	मन्यु थे	गर्गः	९.	गर्ग ये पाँच पुत्र हुए
बृहत्क्षत्रः	५.	बृहत्क्षत्र	सङ्कृतिः	१२.	सङ्कृति हुए
जयः	६.	जय	नरः	१०	नर के
ततः ।	४.	उनसे	आत्मजः ॥	११.	पुत्र

श्लोकार्थ—वितथ के पुत्र मन्यु थे । उनसे बृहत्क्षत्र, जय, महावीर्य, नर और गर्ग ये पाँच पुत्र हुए ।
नर के पुत्र सङ्कृति हुए ॥

द्वितीयः श्लोकः

गुरुश्च रन्तिदेवश्च सङ्कृतेः पाण्डुनन्दन ।

रन्तिदेवस्य हि यशः इहामुत्र च गीयते ॥२॥

पदच्छेद— गुरुः च रन्तिदेवः च सङ्कृतेः पाण्डुनन्दन ।
रन्तिदेवस्य हि यशः इह अमुत्र च गीयते ॥

शब्दार्थ—

गुरुः	२.	गुरु	रन्तिदेवस्य	७.	रन्तिदेव का
च	३.	और	हि यशः	८.	यश
रन्तिदेवः	४.	रन्तिदेव	इह	९.	इस लोक में
च	६.	तथा	अमुत्र	११.	परलोक में भी
सङ्कृतेः	५.	संङ्कृति के पुत्र हुए	च	१०.	और
पाण्डुनन्दन ।	१.	हे पाण्डुनन्दन परीक्षित् !	गीयते ॥	१२.	गाया जाता है

श्लोकार्थ—हे पाण्डुनन्दन परीक्षित् ! गुरु और रन्तिदेव सङ्कृति के पुत्र हुए तथा रन्तिदेव का
यश इस लोक में और परलोक में भी गाया जाता है ॥

तृतीयः श्लोकः

वियद्वित्तस्य ददतो लब्धं लब्धं बुभुक्षतः ।

निष्किञ्चनस्य धीरस्य सकुटुम्बस्य सीदतः ॥३॥

पदच्छेद— वियद् वित्तस्य ददतः लब्धम् लब्धम् बुभुक्षतः ।
निष्किञ्चनस्य धीरस्य सकुटुम्बस्य सीदतः ॥

शब्दार्थ—

वियद्	१.	वे आकाश से (भाग्यवश)	निष्किञ्चनस्य	६.	संग्रह-परिग्रह से रहित
वित्तस्य	३.	धन को	धीरस्य	७.	धैर्यशाली
ददतः	५.	दान देते थे	सकुटुम्बस्य	८.	कुटुम्ब के साथ
लब्धम्लब्धम्	२.	प्राप्त	सीदतः ।	९.	दुःख भोग रहे थे
बुभुक्षतः ॥	४.	भूखे रहकर भी			

श्लोकार्थ—वे आकाश से (भाग्यवश) प्राप्त धन को भूखे रहकर भी दान कर देते थे । संग्रह परिग्रह से रहित, धैर्यशाली वे कुटुम्ब के साथ दुःख भोग रहे थे ॥

चतुर्थः श्लोकः

व्यतीयुरष्टचत्वारिंशदहान्यपिबतः किल ।

घृतपायससंयावं तोयं प्रातरुपस्थितम् ॥४॥

पदच्छेद— व्यतीयुः अष्टचत्वारिंशत् अहनि अपिबतः किल ।
घृतपायससंयावम् तोयम् प्रातः उपस्थितम् ॥

शब्दार्थ—

व्यतीयुः	६.	बीत गये (तब)	घृत	८.	घी
अष्टचत्वारिंशत्	४.	अड़तालीस	पायस	९.	खीर
अहनि	५.	दिन	संयावम्	१०.	हलुवा और
अपिबतः	२.	बिना कुछ खाये पिये	तोयम्	११.	जल
किल ।	१.	एक बार उनको	प्रातः	७.	प्रातः काल
			उपस्थितम् ॥	१२.	मिला

श्लोकार्थ—एक बार उनको बिना कुछ खाये अड़तालीस दिन बीत गये । तब प्रातः काल घी, खीर, हलुवा और जल मिला ॥

पञ्चमः श्लोकः

कृच्छ्रप्राप्तकुटुम्बस्य क्षुत्तृड्भ्यां जातवेपथोः ।

अतिथिर्ब्राह्मणः काले भोक्तुकामस्य चागमत् ॥५॥

पदच्छेद— कृच्छ्र प्राप्त कुटुम्बस्य क्षुत्तृड्भ्याम् जात वेपथोः ।
अतिथिः ब्राह्मणः काले भोक्तु कामस्य च आगमत् ॥

शब्दार्थ—

कृच्छ्र	१.	कष्ट	अतिथिः	११.	अतिथि के रूप में
प्राप्त	२.	पाये हुए	ब्राह्मणः	१०.	एक ब्राह्मण
कुटुम्बस्य	३.	कुटुम्ब को	काले	९.	समय
क्षुत्तृड्भ्याम्	४.	भूख प्यास से	भोक्तु	७.	उनके भोजन
जात	६.	उत्पन्न हो गया था	कामस्य	८.	करने के
वेपथोः ।	५.	कम्पन	च आगमत् ॥	१२.	आ गया

श्लोकार्थ—कष्ट पाये हुए कुटुम्ब को भूख प्यास से कम्पन उत्पन्न हो गया था। उनके भोजन करने के समय एक ब्राह्मण अतिथि के रूप में आ गया ॥

षष्ठः श्लोकः

तस्मै संव्यभजत् सोऽन्नमादृत्य श्रद्धयान्वितः ।

हरिं सर्वत्र संपश्यन् स भुक्त्वा प्रययौ द्विजः ॥६॥

पदच्छेद— तस्मै संव्यभजत् सः अन्नम् आवृत्य श्रद्धया अन्वितः ।
हरिम् सर्वत्र संपश्यन् सः भुक्त्वा प्रययौ द्विजः ॥

शब्दार्थ—

तस्मै	७.	उस ब्राह्मण को	हरिम्	२.	भगवान् को ही
संव्यभजत्	१०.	बाँट कर दिया	सर्वत्र	१.	सब जगह
सः	४.	उन रन्तिदेव ने	संपश्यन्	३.	देखते हुए
अन्नम्	९.	भोजन	सः	११.	वह
आवृत्य	८.	आदर पूर्वक	भुक्त्वा	१३.	भोजन करके
श्रद्धया	५.	श्रद्धा से	प्रययौ	१४.	चला गया
अन्वितः ।	६.	युक्त होकर	द्विजः ॥	१२.	ब्राह्मण

श्लोकार्थ—सब जगह भगवान् को देखते हुए उन रन्तिदेव ने श्रद्धा से युक्त होकर उस ब्राह्मण को आदर,पूर्वक भोजन बाँट कर दिया। वह ब्राह्मण भोजन करके चला गया ॥

सप्तम: श्लोक:

अथान्यो भोक्ष्यमाणस्य विभक्तस्य महीपते ।
विभक्तं व्यभजत् तस्मै वृषलाय हरिं स्मरन् ॥७॥

पदच्छेद— अथ अन्य: भोक्ष्य माणस्य विभक्तस्य महीपते ।
विभक्तम् व्यभजत् तस्मै वृषलाय हरिम् स्मरन् ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	विभक्तम्	६.	(पुन:) बाँटकर (रन्तिदेव ने)
अन्य:	३.	दूसरा (अतिथि आ गया)	व्यभजत्	११.	दे दिया
भोक्ष्यमाणस्य	५.	खाये जाने वाले अन्न को	तस्मै	९.	उस
विभक्तस्य	४.	बँटे हुए	वृषलाय	१०.	शूद्र अतिथि को
महीपते ।	२.	हे राजन्	हरिम्	७.	भगवान् हरि का
			स्मरन् ॥	८.	स्मरण करते हुए

श्लोकार्थ— तदनन्तर हे राजन् ! दूसरा अतिथि आ गया । बँटे हुए खाये जाने वाले अन्न को पुन: बाँटकर रन्तिदेव ने भगवान् हरि का स्मरण करते हुए उस शूद्र अतिथि को दे दिया ॥

अष्टम: श्लोक:

याते शूद्रे तमन्योऽगादतिथि: श्वभिरावृत: ।
राजन् मे दीयतामन्नं सगणाय बुभुक्षते ॥८॥

पदच्छेद— याते शूद्रे तम् अन्य: अगात् अतिथि: श्वभि: आवृत: ।
राजन् मे दीयताम् अन्नम् सगणाय बुभुक्षते ॥

शब्दार्थ—

याते	२.	चले जाने पर	आवृत:	४.	घिरा हुआ
शूद्रे	१.	शूद्र के	राजन्	९.	हे राजन् !
तम्	७.	उसके पास	मे	१२.	मुझे
अन्य:	५.	दूसरा	दीयताम्	१४.	दीजिये
अगात्	८.	आया (और कहा)	अन्नम्	१३.	भोजन
अतिथि:	६.	अतिथि	सगणाय	१०.	गणों सहित
श्वभि: ।	३.	कुत्तों से	बुभुक्षते ॥	११.	भूखे

श्लोकार्थ— शूद्र के चले जाने पर कुत्तों से घिरा हुआ दूसरा अतिथि आया और कहा हे राजन् ! गणों सहित भूखे मुझे भोजन दीजिये ॥

नवमः श्लोकः

स आहृत्यावशिष्टं यद् बहुमानपुरस्कृतम् ।
तच्च दत्त्वा नमश्चक्रे श्वभ्यः श्वपतये विभुः ॥९॥

पदच्छेद— सः आदृत्य अवशिष्टम् यत् बहुमान पुरस्कृतम् ।
तत् च दत्वा नमः चक्रे श्वभ्यः श्वपतये विभुः ॥

शब्दार्थ—

सः	१. उस	तत् च	६. उसे भी
आदृत्य	३. आदर करके	दत्वा	९. देकर
अवशिष्टम्	४. बचा हुआ	नमः	१२. नमस्कार
यत्	५. जो अन्न था	चक्रे	१३. किया
बहुमान	७. बहुत सम्मान	श्वभ्यः	१०. कुत्तों को और
पुरस्कृतम् ।	८. के साथ	श्वपतये	११. कुत्तों के स्वामी को
		विभुः ॥	२. राजा ने

श्लोकार्थ—उस राजा ने आदर करके बचा हुआ जो अन्न था उसे भी बहुत सम्मान के साथ देकर कुत्तों को और कुत्तों के स्वामी को नमस्कार किया ॥

दशमः श्लोकः

पानीयमात्रमुच्छेषं तच्चैकपरितर्पणम् ।
पास्यतः पुल्कसोऽभ्यागादपो देह्यशुभस्य मे ॥१०॥

पदच्छेद— पानीय मात्रम् उच्छेषम् तत् च एक परितर्पणम् ।
पास्यतः पुल्कसः अभिआगात् अपः देहि अशुभस्य मे ॥

शब्दार्थ—

पानीय	२. जल ही	पुल्कसः	८. एक चाण्डल
मात्रम्	१. केवल	अभि	९. आ
उच्छेषम्	३. बच रहा था	आगात्	१०. पहुंचा (उसने कहा)
तत् च	४. वह भी	अपः	१३. जल
एक	५. एक ही व्यक्ति	देहि	१४. दे दीजिये
परितर्पणम्	६. को तृप्त करने वाला था	अशुभस्य	१२. नीच को
पास्यतः ।	७. उसे पीना ही चाहते थे कि	मे ॥	११. मुझ

श्लोकार्थ—केवल जल ही बच रहा था । वह भी एक ही व्यक्ति को तृप्त करने वाला था । उसे पीना ही चाहते थे कि एक चाण्डल आ पहुंचा । उसने कहा—मुझ नीच को जल दे दीजिये ॥

एकादशः श्लोकः

तस्य तां करुणां वाचं निशम्य विपुलश्रमाम् ।
कृपया भृशसन्तप्त इदमाहामृतं वचः ॥११॥

पदच्छेद— तस्य ताम् करुणाम् वाचम् निशम्य विपुल श्रमाम् ।
कृपया भृश सन्तप्तः इदम् आह अमृतम् वचः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१. उसकी	कृपया	८. कृपा से
ताम्	२. उस	भृश	९. अत्यन्त
करुणाम्	३. करुणापूर्ण और	सन्तप्तः	१०. सन्तप्त हुए (राजा ने)
वाचम्	६. वाणी को	इदम्	११. यह
निशम्य	७. सुनकर	आह	१४. कहा
विपुल	४. अत्यन्त	अमृतम्	१३. अमृतमय
श्रमाम् ।	५. कष्ट से युक्त	वचः ॥	१२. वचन

श्लोकार्थ—उसकी उस करुणापूर्ण अत्यन्त कष्ट से युक्त वाणी को सुनकर कृपा से अत्यन्त सन्तप्त हुए राजा ने यह अमृतमय वचन कहा ॥

द्वादशः श्लोकः

न कामयेऽहं गतिमीश्वरात् परामष्टर्द्धियुक्तामपुनर्भवं वा ।
आर्तिं प्रपद्येऽखिलदेहभाजामन्तःस्थितो येन भवन्त्यदुःखाः ॥१२॥

पदच्छेद— न कामये अहम् गतिम् ईश्वरात् पराम् अष्ट ऋद्धि युक्ताम् अपुनर्भवम् वा ।
आर्तिम् प्रपद्ये अखिल देहभाजाम् अन्तः स्थितः येन भवन्ति अदुःखाः ॥

शब्दार्थ—

न कामये	८. नहीं चाहता हूँ	आर्तिम्	१३. कष्ट
अहम्	१. मैं	प्रपद्ये	१४. सहन करूँ
गतिम्	६. गति	अखिल	१०. समस्त
ईश्वरात्	२. ईश्वर से	देहभाजाम्	११. प्राणियों के
पराम्अष्टऋद्धि	५. परम आठों सिद्धियों से	अन्तःस्थितः	१२. हृदय में स्थित होकर
युक्ताम्	४. युक्त	येन	१५. जिससे वे (सभी प्राणी
अपुनर्भवम्	७. मोक्ष	भवन्ति	१७. हो जावे
वा ।	६. अथवा	अदुःखाः ॥	१६. दुःख से रहित

श्लोकार्थ—मैं ईश्वर से आठों सिद्धियों से युक्त परम गति अथवा मोक्ष नहीं चाहता हूँ । मैं समस्त प्राणियों के हृदय में स्थित होकर कष्ट सहन करूँ । जिससे वे सभी प्राणी दुःख से रहित हो जावें ॥

त्रयोदशः श्लोकः

क्षुत्तृट्श्रमो गात्रपरिश्रमश्च दैन्यं क्लमः शोकविषादमोहाः ।
सर्वे निवृत्ताः कृपणस्य जन्तोर्जिजीविषोर्जीवजलार्पणान्मे ॥१३॥

पदच्छेद— क्षुत्तृट् श्रमः गात्र परिश्रमः च दैन्यम् क्लमः शोक विषाद मोहाः ।
सर्वे निवृत्ताः कृपणस्य जन्तोः जिजीविषोः जीव जल अर्पणात् मे ॥

शब्दार्थ—

क्षुत्तृट्	८.	भूख-प्यास	सर्वे	१८.	सभी
श्रमः	९.	परिश्रम	निवृत्ताः	१९.	निवृत्त हो गये
गात्र	१०.	शरीर की	कृपणस्य	२.	दीन
परिश्रमः	११.	थकावट	जन्तोः	३.	प्राणी को
च	१६.	और	जिजीविषोः	१.	जीने के इच्छुक
दैन्यम्	१२.	दीनता	जीव	४.	जीवनरक्षक
क्लमः	१३.	ग्लानि	जल	५.	जल
शोक	१५.	शोक	अर्पणात्	६	देने से
विषाद	१४.	विषाद	मे ।	७.	मेरे
मोहाः ।	१७.	मोह से			

श्लोकार्थ—जीने के इच्छुक दीन प्राणी को जीवनरक्षक जल देने से मेरे भूख-प्यास, परिश्रम, शरीर की थकावट, दीनता, ग्लानि, विषाद, शोक और मोह सभी निवृत्त हो गये ॥

चतुर्दशः श्लोकः

इति प्रभाष्य पानीयं म्रियमाणः पिपासया ।
पुल्कसायाददाद्धीरो निसर्गकरुणो नृपः ॥१४॥

पदच्छेद— इति प्रभाष्य पानीयम् म्रियमाणः पिपासया ।
पुल्कसाय अददात् धीरः निसर्ग करुणः नृपः ॥

शब्दार्थ—

इति	५.	इस प्रकार	पुल्कसाय	९.	चाण्डाल को
प्रभाष्य	६.	कहकर	अददात्	११.	दे दिया
पानीयम्	१०.	जल	धीरः	१.	धैर्यशाली
म्रियमाणः	८.	मरते हुए भी	निसर्ग	२.	स्वभाव से
पिपासया ।	७.	प्यास से स्वयं	करुणः	३.	दयापूर्ण
			नृपः ॥	४.	राजा ने

श्लोकार्थ—धैर्यशाली और स्वभाव से दयापूर्ण राजा ने इस प्रकार कहकर प्यास से स्वयम् मरते हुए भी चाण्डाल को जल दे दिया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

तस्य त्रिभुवनाधीशाः फलदाः फलमिच्छताम् ।
आत्मानं दर्शयाञ्चक्रुर्माया विष्णुविनिर्मिताः ॥१५॥

पदच्छेद— तस्य त्रिभुवन अधीशाः फलदाः फलम् इच्छताम् ।
आत्मानम् दर्शयान् चक्रुः माया विष्णु विनिर्मिताः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	६.	उस राजा के (सामने)	आत्मानम्	७.	अपने आपको
त्रिभुवन्	४.	तथा तीनों लोकों के	दर्शयान्	८.	प्रकट
अधीशाः	५.	स्वामी (ब्रह्मा विष्णु महेश ने)	चक्रुः	९.	कर दिया (क्योंकि वह)
फलदाः	३.	फल देने वाले	माया	१२.	माया थी
फलम्	१.	फल की	विष्णु	१०.	विष्णु की
इच्छताम् ।	२.	इच्छा वाले भक्तों को	विनिर्मिताः ॥	११.	रची हुई

श्लोकार्थ—फल की इच्छा वाले भक्तों को फल देने वाले तथा तीनों लोकों के स्वामी ब्रह्मा, विष्णु, महेश ने उस राजा के सामने अपने आपको प्रकट कर दिया। क्योंकि वह विष्णु की रची हुई माया थी ॥

षोडशः श्लोकः

स वै तेभ्यो नमस्कृत्य निःसङ्गो विगतस्पृहः ।
वासुदेवे भगवति भक्त्या चक्रे मनः परम् ॥१६

पदच्छेद— सः वै तेभ्यः नमस्कृत्य निःसङ्गः विगत स्पृहः ।
वासुदेवे भगवति भक्त्या चक्रे मनः परम् ॥

शब्दार्थ—

सः वै	१.	उस राजा ने	वासुदेवे	१०.	वासुदेव में
तेभ्यः	२.	उन तीनों देवों को	भगवति	९.	भगवान्
नमस्कृत्य	३.	नमस्कार करके	भक्त्या	७.	भक्ति से
निःसङ्गः	४.	आसक्ति और	चक्रे	१२.	कर दिया
विगत	६.	रहित होकर	मनः	८.	मन को
स्पृहः ।	५.	अभिलाषा से	परम् ॥	११.	तन्मय

श्लोकार्थ—उस राजा ने उन तीनों देवों को नमस्कार करके आसक्ति और अभिलाषा से रहित होकर भक्ति से भगवान् वासुदेव में मन को तन्मय कर दिया ॥

सप्तदशः श्लोकः

ईश्वरालम्बनं चित्तं कुर्वतोऽनन्यराधसः ।
माया गुणमयी राजन् स्वप्नवत् प्रत्यलीयत ॥१७॥

पदच्छेद— ईश्वर आलम्बनम् चित्तम् कुर्वतः अनन्य राधसः ।
माया गुणमयी राजन् स्वप्न वत् प्रत्यलीयत ॥

शब्दार्थ—

ईश्वर	४. ईश्वर में	माया	६. माया
आलम्बनम्	६. अवलम्बित	गुणमयी	८. गुणमयी
चित्तम्	५. चित्त को	राजन्	१. हे राजन् !
कुर्वतः	७. करते हुए	स्वप्न	१०. स्वप्न के
अनन्य	२. अनन्य	वत्	११. समान
राधसः ।	३. भाव से	प्रत्यलीयत ॥	१२. नष्ट हो गई

श्लोकार्थ—हे राजन् ! अनन्य भाव से ईश्वर में चित्त को अवलम्बित करते हुए राजा के सामने गुणमयी माया स्वप्न के समान नष्ट हो गयी ॥

अष्टादशः श्लोकः

तत्प्रसङ्गानुभावेन रन्तिदेवानुवर्तिनः ।
अभवन् योगिनः सर्वे नारायणपरायणाः ॥१८॥

पदच्छेद— तत् प्रसङ्ग अनुभावेन रन्तिदेव अनुवर्तिनः ।
अभवन् योगिनः सर्वे नारायण परायणाः ॥

शब्दार्थ—

तत्	४. उनके	अभवन्	१०. हो गये
प्रसङ्ग	५. सम्पर्क के	योगिनः	९. योगी
अनुभावेन	६. प्रभाव से	सर्वे	२. सभी
रन्तिदेव	१. रन्तिदेव के	नारायण	७. नारायण भगवान् के
अनुवर्तिनः ।	३ अनुयायी	परायणाः ॥	८. परम भक्त और

श्लोकार्थ—रन्तिदेव के सभी अनुयायी उनके सम्पर्क के प्रभाव से नारायण भगवान् के परम भक्त और योगी हो गये ॥

एकोनविंशः श्लोकः

गर्गाच्छिनिस्ततो गार्ग्यः क्षत्राद् ब्रह्म ह्यवर्तत ।
दुरितक्षयो महावीर्यात् तस्य त्रय्यारुणिः कविः ॥१९॥

पदच्छेद— गर्गात् शिनिः ततः गार्ग्यः क्षत्रात् ब्रह्म हि अवर्तत ।
दुरितक्षयः महावीर्यात् तस्य त्रय्यारुणिः कविः ॥

शब्दार्थ—

गर्गात्	१.	गर्ग से	हि अवर्तत	७	चला
शिनिः	२.	शिनि उत्पन्न हुए	दुरितक्षयः	९.	दुरितक्षय हुआ
ततः	३.	उनसे	महावीर्यात्	८.	महावीर्य का पुत्र
गार्ग्यः	४.	गार्ग्य का जन्म हुआ	तस्य	१०.	उसके
क्षत्रात्	५.	क्षत्रिय से	त्रय्यारुणिः	११.	त्रय्यारुणि और
ब्रह्म	६	ब्राह्मण वंश	कविः ॥	१२.	कवि पुत्र हुए

श्लोकार्थ—गर्ग से शिनि उत्पन्न हुए। उनसे गार्ग्य का जन्म हुआ। क्षत्रिय से ब्राह्मण वंश चला। महावीर्य का पुत्र दुरितक्षय हुआ। उसके त्रय्यारुणि और कवि पुत्र हुए ॥

विंशः श्लोकः

पुष्करारुणिरित्यत्र ये ब्राह्मणगतिं गताः ।
बृहत्क्षत्रस्य पुत्रोऽभूद्धस्ती यद्धस्तिनापुरम् ।२०॥

पदच्छेद— पुष्करारुणिः इति अत्र ये ब्राह्मण गतिम् गताः ।
बृहत्क्षत्रस्य पुत्रः अभूत् हस्ती यत् हस्तिनापुरम् ॥

शब्दार्थ--

पुष्करारुणिः	२.	पुष्करारुणि भी दुरितक्षय का पुत्र था	बृहत्क्षत्रस्य	८.	बृहत्क्षत्र के
इति	१.	यह	पुत्रः	९.	पुत्र
अत्र	३.	यहाँ	अभूत्	११.	हुए
ये	४.	ये सब	हस्ती	१०.	हस्ती
ब्राह्मण	५.	ब्राह्मण	यत्	१२.	जिसने
गतिम्	६.	गति को	हस्तिनापुरम् ॥	१३.	हस्तिनापुर नगर बसाया
गताः ।	७.	प्राप्त हुए (ब्राह्मण हो गये)			

श्लोकार्थ—यह दुरितक्षय का पुत्र पुष्करारुणि भी था। यहाँ ये सब ब्राह्मण गति को प्राप्त हुये (ब्राह्मण हो गये) बृहत्क्षत्र के पुत्र हस्ती हुए। जिन्होंने हस्तिनापुर नगर बसाया ॥

एकविंशः श्लोकः

अजमीढो द्विमीढश्च पुरुमीढश्च हस्तिनः ।
अजमीढस्य वंश्याः स्युः प्रियमेधादयो द्विजाः ॥२१॥

पदच्छेद— अजमीढः द्विमीढः च पुरुमीढः च हस्तिनः ।
अजमीढस्य वंश्याः स्युः प्रियमेध आदयः द्विजाः ॥

शब्दार्थ—

अजमीढः	१. अजमीढ	अजमीढस्य	७. अजमीढ के
द्विमीढः	२. द्विमीढ	वंश्याः	८. वंशधर
च	३. और	स्युः	१२. हुए
पुरुमीढः	४. पुरुमीढ	प्रियमेध	९. प्रियमेध
च	५. ये सब	आदयः	१०. आदि
हस्तिनः ।	६. हस्ती के पुत्र हुए	द्विजाः ॥	११. ब्राह्मण

श्लोकार्थ— अजमीढ, द्विमीढ और पुरुमीढ ये सब हस्ती के पुत्र हुए । अजमीढ के वंशधर प्रियमेध आदि ब्राह्मण हुए ॥

द्वाविंशः श्लोकः

अजमीढाद् बृहदिषुस्तस्य पुत्रो बृहद्धनुः ।
बृहत्कायस्ततस्तस्य पुत्र आसीज्जयद्रथः ॥२२॥

पदच्छेद— अजमीढात् बृहदिषुः तस्य पुत्रः बृहद्धनुः ।
बृहत्कायः ततः तस्य पुत्रः आसीत् जयद्रथः ॥

शब्दार्थ—

अजमीढात्	१. अजमीढ से	बृहत्कायः	७. बृहत्काय हुए
बृहदिषु	२. बृहदिषु हुए	ततः	६. उनसे
तस्य	३. उनके	तस्य	८. उनके
पुत्रः	४. पुत्र	पुत्रः	९. पुत्र
बृहद्धनुः ।	५. बृहद्धनु हुए	आसीत्	११. हुए
		जयद्रथः ॥	१०. जयद्रथ

श्लोकार्थ— अजमीढ से बृहदिषु हुए । उनके पुत्र बृहद्धनु हुए । उनसे बृहत्काय हुए । और उनके पुत्र जयद्रथ हुए ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

तत्सुतो विशदस्तस्य सेनजित् समजायत ।
रुचिराश्वो दृढहनुः काश्यो वत्सश्च तत्सुताः ॥२३॥

पदच्छेद— तत् सुतः विशदः तस्य सेनजित् सम् अजायत ।
रुचिराश्वः दृढहनुः काश्यः वत्सः च तत् सुताः ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. उनके	रुचिराश्वः	१०. रुचिराश्व
सुतः	२. पुत्र	दृढहनुः	११. दृढहनु
विशदः	३. विशद और	काश्यः	१२. काश्य
तस्य	४. उनसे	वत्सः	१४. वत्स हुए
सेनजित्	५. सेनजित्	च	१३. और
सम्	६. उत्पन्न	तत्	८. उनके
अजायत ।	७. हुए	सुताः ॥	९. पुत्र

श्लोकार्थ—उनके पुत्र विशद और उनसे सेनजित् उत्पन्न हुए । उनके पुत्र रुचिराश्व, दृढहनु, काश्य और वत्स हुए ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

रुचिराश्वसुतः पारः पृथुसेनस्तदात्मजः ।
पारस्य तनयो नीपस्तस्य पुत्रशतं त्वभूत् ॥२४॥

पदच्छेद— रुचिराश्वः सुतः पारः पृथुसेनः तत् आत्मजः ।
पारस्य तनयः नीपः तस्य पुत्र शतम् अभूत् ॥

शब्दार्थ—

रुचिराश्व	१. रुचिराश्व का	पारस्य	७. पार का
सुतः	२. पुत्र	तनयः	८. दूसरा पुत्र
पारः	३. पार और	नीपः	९. नीप और
पृथुसेनः	६. पृथुसेन	तस्य	१०. उसके
तत्	४. उनके	पुत्र	१२. पुत्र
आत्मजः ।	५. पुत्र	शतम्	११. सौ
		अभूत् ॥	१३. हुए

श्लोकार्थ—रुचिराश्व के पुत्र पार और उसका पुत्र पृथुसेन हुआ । पार का दूसरा पुत्र नीप और उसके सौ पुत्र हुए ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

स कृत्व्यां शुककन्यायां ब्रह्मदत्तमजीजनत् ।

स योगी गवि भार्यायां विष्वक्सेनमधात् सुतम् ॥२५॥

पदच्छेद— स: कृत्व्याम् शुककन्यायाम् ब्रह्मदत्तम् अजीजनत् ।
स: योगी गविभार्यायाम् विष्वक्सेनम् अधात् सुतम् ॥

शब्दार्थ—

स:	१. उसने	स: योगी	७. वह ब्रह्मदत्त योगी था उसने
कृत्व्याम्	४. कृत्वी से	गवि	८. सरस्वती नाम की
शुक	२. शुक की	भार्यायाम्	९. भार्या से
कन्यायाम्	३. कन्या	विष्वक्सेनम्	१०. विष्वक्सेन नामक
ब्रह्मदत्तम्	५. ब्रह्मदत्त को	अधात्	१२. उत्पन्न किया
अजीजनत् ।	६. उत्पन्न किया	सुतम् ॥	११. पुत्र को

श्लोकार्थ—उसने शुक की कन्या कृत्वी से ब्रह्मदत्त को उत्पन्न किया। वह ब्रह्मदत्त योगी था। उसने सरस्वती नाम की भार्या से विष्वक्सेन नामक पुत्र को उत्पन्न किया ॥

षड्विंश श्लोकः

जैगीषव्योपदेशेन योगतन्त्रं चकार ह ।

उदक्स्वनस्ततस्तस्माद् भल्लादो बार्हदीषवाः ॥२६॥

पदच्छेद— जैगीषव्य उपदेशेन योगतन्त्रम् चकार ह ।
उदक्स्वनः ततः तस्मात् भल्लादः बार्हदीषवाः ॥

शब्दार्थ—

जैगीषव्य	१. जैगीषव्य के	उदक्स्वनः	७ उदक्स्वन हुआ और
उपदेशेन	२. उपदेश से (विष्वक्सेन)	ततः	६. उसके
योग	३. योग	तस्मात्	८. उससे
तन्त्रम्	४. शास्त्र की	भल्लादः	९. भल्लाद
चकार ह ।	५. रचना की	बार्हदीषवाः ॥	१०. बृहद्विषु के वंशज थे

श्लोकार्थ—जैगीषव्य के उपदेश से विष्वक्सेन ने योगशास्त्र की रचना की। उससे उदक्स्वन और

सप्तविंशः श्लोकः

यवीनरो द्विमीढस्य कृतिमांस्तत्सुतः स्मृतः ।
नाम्ना सत्यधृतिर्यस्य दृढनेमिः सुपार्श्वकृत् ॥२७॥

पदच्छेद— यवीनरः द्विमीढस्य कृतिमान् तत् सुतः स्मृतः ।
नाम्ना सत्यधृतिः यस्य दृढनेमिः सुपार्श्व कृत् ॥

शब्दार्थ—

यवीनरः	२. यवीनर और	नाम्ना	८. नामक पुत्र हुआ
द्विमीढस्य	१. द्विमीढ का पुत्र	सत्यधृतिः	७. सत्यधृति
कृतिमान्	५. कृतिमान्	यस्य	९. उसका पुत्र
तत्	३. उसका	दृढनेमिः	१०. दृढनेमि था उसने
सुतः	४. पुत्र	सुपार्श्व	११. सुपार्श्व को
स्मृतः ।	६. कहा गया है उसके	कृत ॥	१२. उत्पन्न किया

श्लोकार्थ—द्विमीढ का पुत्र यवीनर और उसका पुत्र कृतिमान् कहा गया है । उसके सत्यधृति नामक पुत्र हुआ । उसका पुत्र दृढनेमि था । उसने सुपार्श्व को उत्पन्न किया ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

सुपार्श्वात् सुमतिस्तस्य पुत्रः सन्नतिमांस्ततः ।
कृतिर्हिरण्यनाभाद् यो योगं प्राप्य जगौ स्म षट् ॥२८॥

पदच्छेद— सुपार्श्वात् सुमतिः तस्य पुत्रः सन्नतिमान् ततः ।
कृतिः हिरण्यनाभात् यः योगम् प्राप्य जगौ स्म षट् ॥

शब्दार्थ—

सुपार्श्वात्	१. सुपार्श्व से	कृतिः	७. कृति
सुमतिः	२. सुमति	हिरण्यनाभात्	९. हिरण्यनाभ से
तस्य	३. उसका	यः	८. जिसने
पुत्रः	४. पुत्र	योगम्	१०. योग को
सन्नतिमान्	५. सन्नतिमान्	प्राप्य	११. प्राप्त करके
ततः ।	६. और उससे	जगौ स्म	१३. संहिताओं को कहा था
		षट् ॥	१२. छः

श्लोकार्थ—सुपार्श्व से सुमति, उसका पुत्र सन्नतिमान् और उससे कृति हुआ । जिसने हिरण्यनाभ से

एकानत्रिंशः श्लोकः

संहिताः प्राच्यसाम्नां वै नीपो ह्युग्रायुधस्ततः ।
तस्य क्षेम्यः सुवीरोऽथ सुवीरस्य रिपुञ्जयः ॥२९॥

पदच्छेद— संहिताः प्राच्य साम्नाम् वै नीपः हि उग्रायुधः ततः ।
तस्य क्षेम्यः सुवीरः अथ सुवीरस्य रिपुञ्जयः ॥

शब्दार्थ—

संहिताः	२.	संहितायें रची थीं	तस्य	७.	उसका
प्राच्यसाम्नाम्	१.	कृति ने प्राच्यसाम नामक ऋचाओं को	क्षेम्यः	८.	क्षेम्य
वै	३.	निश्चय ही उसका	सुवीरः	१०.	सुवीर था
नीपः हि	४.	पुत्र नीप था	अथ	९.	उसका पुत्र
उग्रायुधः	६.	उग्रायुध हुआ	सुवीरस्य	११.	सुवीर का पुत्र
ततः ।	५.	उससे	रिपुञ्जयः ॥	१२.	रिपुञ्जय हुआ

श्लोकार्थ—कृति ने ऋचाओं की संहितायें रची थीं। निश्चय ही उसका पुत्र नीप था। उससे उग्रायुध हुआ, उसका क्षेम्य, उसका पुत्र सुवीर था। सुवीर का पुत्र रिपुञ्जय हुआ ॥

त्रिंशः श्लोकः

ततो बहुरथो नाम पुरमीढोऽप्रजोऽभवत् ।
नलिन्यामजमीढस्य नीलः शान्तिः सुतस्ततः ॥३०॥

पदच्छेद— ततः बहुरथः नाम पुरमीढः अप्रजः अभवत् ।
नलिन्याम् अजमीढस्य नीलः शान्तिः सुतः ततः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	उसका	नलिन्याम्	८	नलिनी से
बहुरथः	२	बहुरथ	अजमीढस्य	७.	अजमीढ की पत्नी
नाम	३.	नाम का पुत्र हुआ	नीलः	९.	नील हुए
पुरमीढः	४.	पुरमीढ	शान्तिः	१२.	शान्त थे
अप्रजः	५.	सन्तानहीन	सुतः	११.	पुत्र
अभवत् ।	६.	था	ततः ।	१०.	उसके

श्लोकार्थ— उसका बहुरथ नाम का पुत्र हुआ। पुरमीढ सन्तानहीन था। अजमीढ की पत्नी नलिनी से नील हुआ। उसका पुत्र शान्ति हुआ ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

शान्तेः सुशान्तिस्तत्पुत्रः पुरुजोऽर्कस्ततोऽभवत् ।
भर्म्याश्वस्तनयस्तस्य पञ्चासन्मुद्गलादयः ॥३१॥

पदच्छेद— शान्तेः सुशान्तिः तत् पुत्रः पुरुजः अर्कः ततः अभवत् ।
भर्म्याश्वः तनयः तस्य पञ्च आसन् मुद्गल आदयः ॥

शब्दार्थ—

शान्तेः	१. शान्ति के		भर्म्याश्वः	१०.	भर्म्याश्व हुआ
सुशान्तिः	२. सुशान्ति		तनयः	९.	पुत्र
तत्	३. उसके		तस्य	११	उसके
पुत्रः	४. पुत्र		पञ्च	१४.	पाँच पुत्र
पुरुजः	५. पुरुज (और)		आसन्	१५.	हुए
अर्कः	७. अर्क		मुद्गल	१२.	मुद्गल
ततः	६. उसके		आदयः ॥	१३.	आदि
अभवत् ॥	८. हुआ (उसके)				

श्लोकार्थ—शान्ति के, सुशान्ति, उसके पुरुज और उसके अर्क हुआ। उसके पुत्र भर्म्याश्व हुआ। उसके मुद्गल आदि पाँच पुत्र हुए॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

यवीनरो बृहदिषुः काम्पिल्यः संजयः सुताः ।
भर्म्याश्वः प्राह पुत्रा मे पञ्चानां रक्षणाय हि ॥३२॥

पदच्छेद— यवीनरः बृहदिषुः काम्पिल्यः संजयः सुताः ।
भर्म्याश्वः प्राह पुत्राः मे पञ्चानाम् रक्षणाय हि ॥

शब्दार्थ—

यवीनरः	१. यवीनर		भर्म्याश्वः	६.	भर्म्याश्व ने
बृहदिषुः	२. बृहदिषु		प्राह	७.	कहा
काम्पिल्यः	३. काम्पिल्य		पुत्राः	९.	पुत्र
संजयः	४. संजय		मे	८.	मेरे
सुताः ।	५. ये पुत्र हुए		पञ्चानाम्	१०.	पाँच देशों का
			रक्षणाय हि ॥	११.	शासन करने में समर्थ हैं

श्लोकार्थ—यवीनर, बृहदिषु, काम्पिल्य, संजय आदि ये पुत्र हुए। भर्म्याश्व ने कहा—मेरे पुत्र पाँच देशों पर शासन करने में समर्थ हैं॥

त्रयस्त्रिंश श्लोकः

विषयाणामलमिमे इति पञ्चालसंज्ञिताः ।
मुद्गलाद् ब्रह्म निर्वृत्तं गोत्रं मौद्गल्यसंज्ञितम् ॥३३॥

पदच्छेद— विषयाणाम् अलम् इमे इति पञ्चाल संज्ञिताः ।
मुद्गलात् ब्रह्म निर्वृत्तम् गोत्रम् मौद्गल्य संज्ञितम् ॥

शब्दार्थ—

विषयाणाम्	२. राज्यों पर (शासन करने में)	मुद्गलात्	७.	मुद्गल से
अलम्	३. समर्थ है	ब्रह्म	१०.	ब्राह्मण
इमे	१. ये (पाँचों)	निर्वृत्तम्	१२.	चला
इति	४. इस प्रकार (वह देश)	गोत्रम्	११.	गोत्र
पञ्चाल	५. पञ्चाल	मौद्गल्य	८.	मौद्गल्य
संज्ञिताः ।	६. नाम से प्रसिद्ध हुए	संज्ञितम् ॥	९.	नामक

श्लोकार्थ—ये पाँचों राज्यों पर शासन करने में समर्थ हैं। इस प्रकार वह देश पञ्चाल नाम से प्रसिद्ध हुये। मुद्गल से मौद्गल्य नामक ब्राह्मण गोत्र चला ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

मिथुनं मुद्गलाद् भार्म्याद् दिवोदासः पुमानभूत् ।
अहल्या कन्यका यस्यां शतानन्दस्तु गौतमात् ॥३४॥

पदच्छेद— मिथुनम् मुद्गलात् भार्म्यात् दिवोदासः पुमान् अभूत् ।
अहल्या कन्यका यस्याम् शतानन्दः तु गौतमात् ॥

शब्दार्थ—

मिथुनम्	३. जुड़वा (सन्तानें हुईं)	अहल्या	७.	अहल्या
मुद्गलात्	२. मुद्गल से	कन्यका	६.	कन्या
भार्म्यात्	१. भर्म्याश्व के पुत्र	यस्याम्	९.	जिसका विवाह
दिवोदासः	४. जिनमे दिवोदास	शतानन्दः तु	११.	शतानन्द से हुआ
पुमान्	५. पुरुष तथा	गौतमात् ॥	१०.	गौतम के पुत्र
अभूत् ।	८. हुई			

श्लोकार्थ—भर्म्याश्व के पुत्र मुद्गल से जुड़वा सन्तानें हुईं। जिसमें दिवोदास पुरुष तथा कन्या अहल्या हुई। जिसका विवाह गौतम के पुत्र शतानन्द से हुआ।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

तस्य सत्यधृतिः पुत्रो धनुर्वेदविशारदः ।
शरद्वांस्तत्सुतो यस्मादुर्वशीदर्शनात् किल ॥३५॥

पदच्छेद— तस्य सत्यधृतिः पुत्रः धनुर्वेद विशारदः ।
शरद्वान् तत् सुतः यस्मात् उर्वशी दर्शनात् किल ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उसका	तत्	६.	उसका
सत्यधृतिः	३.	सत्यधृति (हुआ जो)	सुतः	७.	पुत्र
पुत्रः	२.	पुत्र	यस्मात्	९.	जिसके
धनुर्वेद	४.	धनुर्वेद में	उर्वशी	१०.	उर्वशी के
विशारदः	५.	निपुण था	दर्शनात्	११.	देखने से ही सन्तान उत्पन्न हुई
शरद्वान् ।	८.	शरद्वान् था	किल ॥	१२.	ऐसा कहा जाता है

श्लोकार्थ—उसका पुत्र सत्यधृति हुआ । जो धनुर्वेद में निपुण था । उसका पुत्र शरद्वान् था । जिसके उर्वशी के देखने से ही सन्तान उत्पन्न हो गयी ऐसा कहा जाता है ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

शरस्तम्बेऽपतद् रेतो मिथुनं तदभूच्छुभम् ।
तद् दृष्ट्वा कृपयागृह्णाच्छन्तनुर्मृगयां चरन् ।
कृपः कुमारः कन्या च द्रोणपत्न्यभवत् कृपी ॥३६॥

पदच्छेद— शरस्तम्बे अपतद् रेतः मिथुनम् तत् अभूत् शुभम् ।
तत् दृष्ट्वा कृपया अगृह्णात् शन्तनुः मृगयाम् चरन् ।
कृपः कुमारः कन्या च द्रोण पत्नी अभवत् कृपी ॥

शब्दार्थ—

शरस्तम्बे अपतद्	२	सरकंडे के झाड़ पर गिर गया	शन्तनुः	९	शन्तनु ने
रेतः	१.	उसका वीर्य	मृगयाम् चरन्	८	शिकार खेलने के लिए गयेहुए
मिथुनम्	५.	एक जोड़े(पुत्र पुत्री का जन्म)	कृपः	१२	कृपाचार्य हुआ
तत्	३.	उससे	कुमारः	११.	बालक
अभूत्	६	हुआ	कन्या	१४	कन्या
शुभम्	४.	शुभ लक्षण वाला	च	१३.	और
तत दृष्ट्वा	७.	उस जोड़े को देखकर	द्रोणपत्नी	१६.	द्रोणाचार्य की पत्नी
कृपया अगृह्णात् ।	१०.	दयावश उठा लिया	अभवत्	१७.	हुई
			कृपी ॥	१५	कृपी

श्लोकार्थ—उसका वीर्य सरकंडे की झाड़ पर गिर गया । उससे शुभ लक्षण वाला एक जोड़े पुत्र-पुत्री का जन्म हुआ । इस जोडे को देखकर शिकार खेलने के लिए गये हुए राजा शन्तनु ने दया वश उठा लिया । उनमें बालक कृपाचार्य हुए और कन्या कृपी द्रोणाचार्य की पत्नी हुई ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे
एकविंशोऽध्यायः ॥२१॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

द्वाविंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

मित्रेयुश्च दिवोदासाच्च्यवनस्तत्सुतो नृप ।
सुदासः सहदेवोऽथ सोमको जन्तुजन्मकृत् ॥१॥

पदच्छेद— मित्रेयुः च दिवोदासात् च्यवनः तत् सुतः नृप ।
सुदासः सहदेवः अथ सोमकः जन्तु जन्मकृत् ॥

शब्दार्थ—

मित्रेयुः	३.	मित्रेयु	सुदासः	८.	सुदास
च	४.	और	सहदेवः	९.	सहदेव
दिवोदासात्	२.	दिवोदास से	अथ	१०.	तथा
च्यवनः	७.	च्यवन	सोमकः	११.	सोमक हुए
तत्	५.	उसका	जन्तु	१२.	जो जन्तु को
सुतः	६.	पुत्र	जन्मकृत् ॥	१३.	जन्म देने वाला हुआ
नृप ।	१.	हे राजन्			

श्लोकार्थ—हे राजन् ! दिवोदास से मित्रेयु और उसका पुत्र च्यवन, सुदास, सहदेव तथा सोमक हुए । जो जन्तु को जन्म देने वाला हुआ ॥

द्वितीयः श्लोकः

तस्य पुत्रशतं तेषां यवीयान् पृषतः सुतः ।
द्रुपदो द्रौपदी तस्य धृष्टद्युम्नादयः सुताः ॥२॥

पदच्छेद— तस्य पुत्रशतम् तेषाम् यवीयान् पृषतः सुतः ।
द्रुपदः द्रौपदी तस्य धृष्टद्युम्न आदयः सुताः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उसके	सुतः	७.	पुत्र
पुत्र	३.	पुत्र (हुए)	द्रुपदः	८.	द्रुपद थे
शतम्	२.	सौ	द्रौपदी	१०.	द्रौपदी और
तेषाम्	४.	उनमें	तस्य	९.	उनकी पुत्री
यवीयान्	५.	सबसे छोटा	धृष्टद्युम्नः	११.	धृष्टद्युम्न
पृषतः ।	६.	पृषत् हुआ उसके	आदयः	१२.	आदि
			सुताः ॥	१३.	पुत्र हुए

श्लोकार्थ—उसके सौ पुत्र हुए । उनमें सबसे छोटा पृषत् हुआ । उसके पुत्र द्रुपद थे । उनकी पुत्री द्रौपदी और धृष्टद्युम्न आदि पुत्र हुए ॥

तृतीयः श्लोकः

धृष्टद्युम्नाद् धृष्टकेतुर्भार्म्याः पञ्चालका इमे ।
योऽजमीढसुतो ह्यन्य ऋक्षः संवरणस्ततः ॥३॥

पदच्छेद— धृष्टद्युम्नात् धृष्टकेतुः भार्म्याः पञ्चालकाः इमे ।
यः अजमीढ सुतः हि अन्यः ऋक्षः संवरणः ततः ॥

शब्दार्थ—

धृष्टद्युम्नः	१. धृष्टद्युम्न के	अजमीढ	७. अजमीढ का
धृष्टकेतुः	२. धृष्टकेतु पुत्र हुआ	सुतः	९. पुत्र था वह
भार्म्याः	३. भर्म्याश्व के वंश में	अन्य	८. दूसरा
पञ्चालकाः	५. पाञ्चाल कहलाये	ऋक्षः	१०. ऋक्ष कहलाया
इमे	४. ये	संवरण	१२. संवरण हुआ
यः ।	६. जो	ततः ॥	११. उससे

श्लोकार्थ—धृष्टद्युम्न के धृष्टकेतु हुआ । भर्म्याश्व के वंश में उत्पन्न ये पाञ्चाल कहलाये । जो अजमीढ का दूसरा पुत्र था, वह ऋक्ष कहलाया उससे संवरण हुआ ॥

चतुर्थः श्लोकः

तपत्यां सूर्यकन्यायां कुरुक्षेत्रपतिः कुरुः ।
परीक्षित् सुधनुर्जह्नुर्निषधाश्वः कुरोः सुताः ॥४॥

पदच्छेद— तपत्यांत सूर्य कन्यायाम् कुरुक्षेत्र पतिः कुरुः ।
परीक्षित् सुधनु जह्नुः निषधाश्वः कुरोः सुताः ॥

शब्दार्थ—

तपत्याम्	३. तपती थी (उससे)	परीक्षित्	९. परीक्षित्
सूर्य	१. सूर्य की	सुधनुः	१०. सुधनु
कन्यायाम्	२. कन्या	जह्नुः	११. जह्नु और
कुरुक्षेत्र	४. कुरुक्षेत्र के	निषधाश्वः	१२. निषधाश्व हुए
पतिः	५. स्वामी	कुरोः	७. कुरु के
कुरुः ।	६. कुरु का जन्म हुआ	सुताः ॥	८. पुत्र

श्लोकार्थ—सूर्य की कन्या तपती थी । उससे कुरुक्षेत्र के स्वामी कुरु का जन्म हुआ । कुरु के पुत्र परीक्षत, सुधनु, जह्नु और निषधाश्व हुए ॥

पञ्चमः श्लोकः

सुहोत्राऽभूत् सुधनुषश्च्यवनोऽथ ततः कृती ।
वसुस्तस्योपरिचरो बृहद्रथमुखास्ततः ॥५॥

पदच्छेद— सुहोत्रः अभूत् सुधनुषः च्यवनः अथ ततः कृती ।
वसुः तस्य उपरिचरः बृहद्रथ मुखाः ततः ॥

शब्दार्थ—

सुहोत्रः	२. सुहोत्र	वसुः	१०. वसु
अभूत्	३. हुआ	तस्य	८. उससे
सुधनुषः	१. सुधनु से	उपरिचरः	९. उपरिचर
च्यवनः	५. च्यवन	बृहद्रथ	१२. बृहद्रथ
अथ	४. तथा उससे	मुखाः	१३. आदि पुत्र उत्पन्न हुए
ततः	६. उससे	ततः ॥	११. उसके
कृती ।	७. कृती		

श्लोकार्थ—सुधनु से सुहोत्र हुआ तथा उससे च्यवन, उससे कृती, उससे उपरिचर वसु और उससे बृहद्रथ आदि पुत्र उत्पन्न हुए ॥

षष्ठः श्लोकः

कुशाम्बमत्स्यप्रत्यग्रचेदिपाद्याश्च चेदिपाः ।
बृहद्रथात् कुशाग्रोऽभूदृषभस्तस्य तत्सुतः ॥६॥

पदच्छेद— कुशाम्ब मत्स्य प्रत्यग्र चेदिप आद्याः च चेदिपाः ।
बृहद्रथात् कुशाग्रः अभूत् ऋषभः तस्य तत् सुतः ॥

शब्दार्थ—

कुशाम्ब	१. कुशाम्ब	बृहद्रथात्	८. बृहद्रथ से
मत्स्य	२. मत्स्य	कुशाग्रः	९. कुशाग्र
प्रत्यग्र	३. प्रत्यग्र	अभूत्	१४. हुए
चेदिप	५. चेदिप	ऋषभः	११. ऋषभ
आद्याः	६. आदि	तस्य	१०. उसका
च	४. और	तत्	१२. उसका
चेदिपाः ।	७. चेदि देश के राजा हुए	सुतः ॥	१३. पुत्र (सत्यहित)

श्लोकार्थ—कुशाम्ब, मत्स्य, प्रत्यग्र और चेदिप आदि चेदि देश के राजा हुए । बृहद्रथ से कुशाग्र, उसका ऋषभ और उसका पुत्र सत्यहित हुआ ॥

सप्तमः श्लोकः

जज्ञे सत्यहितोऽपत्यं पुष्पवांस्तत्सुतो जहुः ।
अन्यस्यां चापि भार्यायां शकले द्वे बृहद्रथात् ॥७॥

पदच्छेद— जज्ञे सत्यहितः अपत्यम् पुष्पवान् तत् सुतः जहुः ।
अन्यस्याम् च अपि भार्यायाम् शकले द्वे बृहद्रथात् ॥

शब्दार्थ—

जज्ञे	२.	उत्पन्न किया	अन्यस्याम्	९.	दूसरी
सत्यहितः	१.	सत्यहित	च अपि	८.	और भी
अपत्यम्	४.	पुत्र	भार्यायाम्	१०.	पत्नी में
पुष्पवान्	५.	पुष्पवान् (और उसका)	शकले	१४.	टुकड़े उत्पन्न हुए
तत्	३.	उसका	द्वे	१३.	दो
सुतः	६.	पुत्र	बृहद्रथात् ॥	१२.	बृहद्रथ से (एक शरीर के)
जहुः ।	७.	जहु (हुआ)			

श्लोकार्थ—सत्यहित उत्पन्न हुआ। उसका पुत्र पुष्पवान् और उसका पुत्र जहु हुआ। और दूसरी भी पत्नी में बृहद्रथ से एक शरीर के दो टुकड़े उत्पन्न हुए ॥

अष्टमः श्लोकः

ते मात्रा बहिरुत्सृष्टे जरया चाभिसन्धिते ।
जीव जीवेति क्रीडन्त्या जरासन्धोऽभवत् सुतः ॥८॥

पदच्छेद— ते मात्रा बहिः उत्सृष्टे जरया च अभिसन्धिते ।
जीव जीवेति क्रीडन्त्या जरासन्धः अभवत् सुतः ॥

शब्दार्थ—

ते	१.	वे दोनों टुकड़े	अभिसन्धिते	१०.	जोड़ दिया
मात्रा	२.	माता के द्वारा	जीव	७.	जीओ
बहिः	३.	बाहर	जीवेति	८.	जीओ इस प्रकार कहकर
उत्सृष्टे	४.	फेंक दिये गये	क्रीडन्त्या	९.	खेल-खेल में (उनको)
जरया	६.	जरा नामक राक्षसी ने	जरासन्धः	१२.	जरासन्ध
च ।	५.	तब	अभवत्	१३.	हुआ
			सुतः ॥	११.	वह पुत्र

श्लोकार्थ—वे दोनों टुकड़े माता के द्वारा बाहर फेंक दिये गये। तब जरा नाम की राक्षसी ने जीओ-जीओ इस प्रकार कहकर खेल-खेल में उनको जोड़ दिया। वह पुत्र जरासन्ध हुआ ॥

नवमः श्लोकः

ततश्च सहदेवोऽभूत् सोमापिर्यच्छ्रुतश्रवाः ।
परीक्षिदनपत्योऽभूत् सुरथो नाम जाह्नवः ॥९॥

पदच्छेद— ततः च सहदेवः अभूत् सोमापिः यत् श्रुतश्रवाः ।
परीक्षित् अनपत्यः अभूत् सुरथः नाम जाह्नवः ॥

शब्दार्थ—

ततः च	१. उस जरासन्ध से	परीक्षित्	६. परीक्षित्
सहदेवः	२. सहदेव	अनपत्यः	७. सन्तान हीन
अभूत्	३. हुआ उससे	अभूत्	८. हुआ
सोमापियत्	४. सोमापि और उससे	सुरथः	१०. सुरथ
श्रुतश्रवाः ।	५. श्रुतश्रवा हुआ	नाम	११. नाम से प्रसिद्ध हुए
		जाह्नवः ॥	९. जह्नु के पुत्र

श्लोकार्थ—उस जरासन्ध से सहदेव हुआ उससे सोमापि और उससे श्रुतश्रवा हुआ । परीक्षित् सन्तानहीन हुआ । जह्नु के पुत्र सुरथ नाम से प्रसिद्ध हुए ॥

दशमः श्लोकः

ततो विदूरथस्तस्मात् सार्वभौमस्ततोऽभवत ।
जयसेनस्तत्तनयो राधिकोऽतोऽयुतो ह्यभूत् ॥१०॥

पदच्छेद— ततः विदूरथः तस्मात् सार्वभौमः ततः अभवत् ।
जयसेनः तत् तनयः राधिकः अतः अयुतः हि अभूत् ॥

शब्दार्थ—

ततः विदूरथः	१. उसके विदूरथ	तत्	७. उसका
तस्मात्	२. उसके	तनयः	८. पुत्र
सार्वभौमः	३. सार्वभौम और	राधिकः	९. राधिक तथा
ततः	४. उसके	अतः	१०. उससे
अभवत्	६. हुआ	अयुतः	११. अयुत (उत्पन्न)
जयसेन ।	५. जयसेन	हि अभूत् ॥	१२. हुआ

श्लोकार्थ—उसके विदूरथ, उसके सार्वभौम और उसके जयसेन हुआ । उसका पुत्र राधिक तथा उससे अयुत उत्पन्न हुआ ॥

एकादशः श्लोकः

ततश्च क्रोधनस्तस्माद् देवातिथिरमुष्य च ।
ऋष्यस्तस्य दिलीपोऽभूत् प्रतीपस्तस्य चात्मजः ॥११॥

पदच्छेद— ततः च क्रोधनः तस्मात् देवातिथिः अमुष्य च ।
ऋष्यः तस्य दिलीपः अभूत् प्रतीपः तस्य च आत्मजः ॥

शब्दार्थ—

ततः	२.	उससे	ऋष्यः	८.	ऋष्य
च	१.	और	तस्य	९.	उसका
क्रोधनः	३.	क्रोधन	दिलीपः	१०.	दिलीप
तस्मात्	४.	उससे	अभूत्	१५.	हुआ
देवातिथिः	५.	देवातिथि	प्रतीपः	१४.	प्रतीप
अमुष्य	७.	उसका	तस्य	१२.	उसका
च ।	६.	और	च	११.	और
			आत्मजः ॥	१३.	पुत्र

श्लोकार्थ—और उससे क्रोधन, उससे देवातिथि और उसका ऋष्य, उसका दिलीप और उसका पुत्र प्रतीप हुआ ॥

द्वादशः श्लोकः

देवापिः शन्तनुस्तस्य बाह्लीक इति चात्मजः ।
पितृराज्यं परित्यज्य देवापिस्तु वनं गतः ॥१२॥

पदच्छेद— देवापिः शन्तनुः तस्य बाह्लीकः इति च आत्मजः ।
पितृ राज्यम् परित्यज्य देवापिः तु वनम् गतः ॥

शब्दार्थ—

देवापिः	२.	देवापि	पितृ	९.	पिता के
शन्तनुः	३.	शन्तनु	राज्यम्	१०.	राज्य को
तस्य	१.	उसके	परित्यज्य	११.	त्याग कर
बाह्लीकः	५.	बाह्लीक	देवापिः तु	८.	देवापि तो
इति	६.	ये	वनम्	१२.	वन को
च	४.	और	गतः ॥	१३.	चला गया
आत्मजाः ।	७.	पुत्र हुए			

श्लोकार्थ—उसके देवापि, शन्तनु और बाह्लीक ये पुत्र हुए । देवापि तो पिता के राज्य को त्याग कर वन को चला गया ॥

त्रयोदशः श्लोकः

अभवच्छन्तनू राजा प्राक्महाभिषसंज्ञितः ।
यं यं कराभ्यां स्पृशति जीर्णं यौवनमेति सः ॥१३॥

पदच्छेद— अभवत् शन्तनुः राजा प्राक् महाभिष संज्ञितः ।
यम् यम् कराभ्याम् स्पृशति जीर्णम् यौवनम् एति सः ॥

शब्दार्थ—

अभवत्	३. हुए		यम्-यम्	७.	जिस-जिस को
शन्तनुः	१. देवापि के छोटे भाई शन्तनु		कराभ्याम्	८.	हाथों से
राजा	२. राजा		स्पृशति	९.	छू देते थे
प्राक्	४. पहले (पूर्वजन्म में)		जीर्णम्	११.	वृद्ध होने पर भी
महाभिष	५. महाभिष		यौवनम्	१२.	युवावस्था
संज्ञितः ।	६. नाम से प्रसिद्ध थे (वे)		इति	१३.	प्राप्त कर लेता था
			सः ।	१०.	वह

श्लोकार्थ— देवापि के छोटे भाई शन्तनु राजा हुए। पहले पूर्वजन्म में शन्तनु महाभिष नाम से प्रसिद्ध थे। वे जिस-जिस को हाथों से छू देते थे। वह वृद्ध होने पर भी युवावस्था प्राप्त कर लेता था ॥

चतुर्दशः श्लोकः

शान्तिमाप्नोति चैवाग्र्यां कर्मणा तेन शन्तनुः ।
समा द्वादश तद्राज्ये न ववर्ष यदा विभुः ॥१४॥

पदच्छेद— शान्तिम् आप्नोति च एव अग्र्याम् कर्मणा तेन शन्तनुः ।
समाः द्वादश तत् राज्ये न ववर्ष यदा विभुः ॥

शब्दार्थ—

शान्तिम्	३. शान्ति को		समाः	९.	वर्षों तक
आप्नोति	४. प्राप्त करता था		द्वादश	८.	एक बार बारह
च एव	१. और		तत्	११.	उनके
अग्र्याम्	२. परम		राज्ये	१२.	राज्य में
कर्मणा	६. कर्म के कारण		न ववर्ष	१४.	नहीं वर्षा की
तेन	५. उस		यदा	१३.	जब
शन्तनुः ।	७. उनका नाम शन्तनु पड़ा		विभुः ।	१०.	इन्द्र ने

श्लोकार्थ—और परम शान्ति को प्राप्त करता था। उस कर्म के कारण उनका नाम शन्तनु हुआ। एक बार बारह वर्षों तक इन्द्र ने उनके राज्य में जब नहीं वर्षा की ॥

पञ्चदशः श्लोकः

शन्तनुर्ब्राह्मणैरुक्तः परिवेत्तायमग्रभुक् ।
राज्यं देह्यग्रजायाशु पुरराष्ट्रविवृद्धये ॥१५॥

पदच्छेद— शन्तनुः ब्राह्मणैः उक्तः परिवेत्ता अयम् अग्रभुक् ।
राज्यम् देहि अग्रजाय आशु पुरराष्ट्र विवृद्धये ॥

शब्दार्थ—

शन्तनुः	१.	शन्तनु से	राज्यम्	११.	राज्य
ब्राह्मणैः	२.	ब्राह्मणों ने	देहि	१२.	दे दो
उक्तः	३.	कहा कि	अग्रजाय	९.	बड़े भाई को
परिवेत्ता अयम्	५.	परिवेत्ता और तुम	आशु	१०.	शीघ्र
अग्रभुक् ।	६.	अग्रभोजी हो (बड़े भाई के अविवाहित रहते विवाह करने वाले हो इसलिये)	पुरराष्ट्र	७.	नगर और राष्ट्र की
			विवृद्धये ॥	८.	वृद्धि के लिए

श्लोकार्थ—तब शन्तनु से ब्राह्मणों ने कहा कि तुम परिवेत्ता और अग्रभोजी अर्थात् बड़े भाई के अविवाहित रहते विवाह करने वाले हो इसलिए नगर और राष्ट्र की वृद्धि के लिए बड़े भाई को शीघ्र राज्य दे दो ॥

षोडशः श्लोकः

एवमुक्तो द्विजैर्ज्येष्ठं छन्दयामास सोऽब्रवीत् ।
तन्मन्त्रिप्रहितैर्विप्रैर्वेदाद् विभ्रंशितो गिरा ॥१६॥

पदच्छेद— एवम् उक्तः द्विजैः ज्येष्ठम् छन्दयामास सः अब्रवीत् ।
तत् मन्त्रि प्रहितैः विप्रैः वेदात् विभ्रंशितः गिरा ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	तत्	६.	उनके
उक्तः	३.	कहे जाने पर	मन्त्रि	७	मंत्रियों के द्वारा
द्विजैः	१.	ब्राह्मणों के द्वारा	प्रहितैः	८	भेजे गये
ज्येष्ठम्	४.	बड़े भाई से (राज्य के लिए)	विप्रैः	९.	ब्राह्मणों ने
छन्दयामास	५.	अनुरोध किया	वेदात्	११.	वेद मार्ग से
सः	१३.	तब उन्होंने	विभ्रंशितः	१२.	विचलित कर दिया था
अब्रवीत् ।	१४.	कहा	गिरा ॥	१०	वाणी से उन्हें

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों के द्वारा इस प्रकार कहे जाने पर बड़े भाई से राज्य के लिए अनुरोध किया । उनके मंत्रियों के द्वारा भेजे गये ब्राह्मणों ने वाणी से उन्हें वेदमार्ग से विचलित कर दिया था । तब उन्होने कहा ॥

सप्तदशः श्लोकः

वेदवादातिवादान् वै तदा देवो ववर्ष ह ।
देवापिर्योगमास्थाय कलापग्राममाश्रितः ॥१७॥

पदच्छेद—

वेद वाद अति वादान् वै तदा देवः ववर्ष ह ।
देवापिः योगम् आस्थाय कलाप ग्रामम् आश्रितः ॥

शब्दार्थ—

वेदवाद	१. उन्होंने वेद को	देवापिः	७. देवापि ने
अति वादान्	३. अर्थवाद कहकर निन्दा की	योगम्	८. योग का
वै	२. निश्चय ही	आस्थाय	९. अवलम्बन करके
तदा	४. तब	कलाप	१०. कलाप
देवः	५. इन्द्र ने	ग्रामम्	११. ग्राम में
ववर्ष ह ॥	६. वर्षा की (तथा)	आश्रितः ।	१२. रहने लगे

श्लोकार्थ— उन्होंने वेद को निश्चय ही अर्थवाद कहकर निन्दा की । तब इन्द्र ने वर्षा की तथा देवापि योग का अवलम्बन करके कलाप ग्राम में रहने लगे ॥

अष्टादशः श्लोकः

सोमवंशे कलौ नष्टे कृतादौ स्थापयिष्यति ।
बाह्लीकात् सोमदत्तोऽभूद् भूरिर्भूरिश्रवास्ततः ॥१८॥

पदच्छेद—

सोमवंशे कलौ नष्टे कृत आदौ स्थापयिष्यति ।
बाह्लीकात् सोमदत्तः अभूत् भूरिः भूरिश्रवाः ततः ॥

शब्दार्थ—

सोम	२. चन्द्र	बाह्लीकात्	७. बाह्लीक से
वंशे	३. वंश के	सोमदत्तः	८. सोमदत्त और
कलौ	१. कलियुग में	अभूत्	१२. हुए
नष्टे	४. नष्ट हो जाने पर	भूरिः	१०. भूरि तथा
कृत आदौ	५. सत्ययुग के प्रारम्भ में	भूरिश्रवाः	११. भूरिश्रवा
स्थापयिष्यति ।	६. देवापि उसी चन्द्रवंश की स्थापना करेंगे	ततः ॥	९. उससे

श्लोकार्थ— कलियुग में चन्द्रवंश के नष्ट हो जाने पर सत्ययुग के प्रारम्भ में देवापि उसी चन्द्रवंश की स्थापना करेंगे । बाह्लीक से सोमदत्त और उससे भूरि तथा भूरिश्रवा हुए ॥

एकोनविंशः श्लोकः

शलश्च शन्तनोरासीद् गङ्गायां भीष्म आत्मवान् ।
सर्वधर्मविदां श्रेष्ठो महाभागवतः कविः ॥१९॥

पदच्छेद— शलः च शन्तनोः आसीत् गङ्गायाम् भीष्मः आत्मवान् ।
सर्वधर्म विदाम् श्रेष्ठः महा भागवतः कविः ॥

शब्दार्थ—

शलः	२.	शल भी	सर्वधर्म	५.	सभी धर्म के
च	१.	और	विदाम्	६.	जानने वालों में
शन्तनोः	३.	शन्तनु से	श्रेष्ठः	७.	श्रेष्ठ
आसीत्	४.	हुए (तथा)	महा	८.	महान्
गङ्गायाम्	१३.	गंगाजी से उत्पन्न हुए	भागवतः	९.	भगवद् भक्त
भीष्मः	१२.	भीष्म	कविः ॥	१०.	विद्वान्
आत्मवान् ॥	११.	जितेन्द्रिय			

श्लोकार्थ—और शल भी शन्तनु से हुए। तथा सभी धर्म के जानने वालों में श्रेष्ठ, महान् भगवद्-भक्त, विद्वान्, जितेन्द्रिय भीष्म गंगा जी से उत्पन्न हुए ॥

विंशः श्लोकः

वीरयूथाग्रणीर्येन रामोऽपि युधि तोषितः ।
शन्तनोर्दाशकन्यायां जज्ञे चित्राङ्गदः सुतः ॥२०॥

पदच्छेद— वीर यूथ अग्रणीः येन रामः अपि युधि तोषितः ।
शन्तनोः दाशकन्यायाम् जज्ञे चित्राङ्गदः सुतः ॥

शब्दार्थ—

वीर	१.	(भीष्म) वीरों के	तोषितः	८.	सन्तुष्ट कर दिया था
यूथ	२.	समूहों में	शन्तनुः	११.	शन्तनु के
अग्रणीः	३.	अग्रगण्य थे	दाश	९.	दास राजा की
येन	४.	जिन्होंने	कन्यायाम्	१०.	कन्या के गर्भ से
रामः	६.	परशुराम को	जज्ञे	१३.	उत्पन्न हुए
अपि	७.	भी	चित्राङ्गदः	११.	चित्राङ्गद नामक
युधि	५.	युद्ध में	सुतः ॥	१२.	पुत्र

श्लोकार्थ—भीष्म वीरों के समूह में अग्रगण्य थे। जिन्होंने युद्ध में परशुराम को भी सन्तुष्ट कर दिया था। दासराज की कन्या के गर्भ से शन्तनु ने चित्राङ्गद नामक पुत्र उत्पन्न किया ॥

एकविंशः श्लोकः

विचित्रवीर्यश्चावरजो नाम्ना चित्राङ्गदो हतः ।
यस्यां पराशरात् साक्षादवतीर्णो हरेः कला ॥२१॥

पदच्छेद— विचित्रवीर्यः च अवरजः नाम्ना चित्राङ्गदः हतः ।
यस्याम् पराशरात् साक्षात् अवतीर्णः हरेः कला ॥

शब्दार्थ—

विचित्रवीर्यः च	१.	विचित्रवीर्य चित्राङ्गद का	यस्याम्	६.	उस दासराज की कन्या में
अवरजः	२.	छोटा भाई था	पराशरात्	७.	पराशर मुनि से
नाम्ना	३.	चित्राङ्गद नाम के गन्धर्व ने	साक्षात्	८.	साक्षात्
चित्राङ्गदः	४.	चित्राङ्गद को	अवतीर्णः	११.	अवतीर्ण हुए थे
हतः ।	५.	मार दिया	हरेः	९.	भगवान् के
			कला ॥	१०.	कलावतार व्यास जी

श्लोकार्थ—विचित्रवीर्य चित्राङ्गद का छोटा भाई था । चित्राङ्गद नाम के गन्धर्व ने चित्राङ्गद को मार दिया । उस दासराज की कन्या में पराशर मुनि से साक्षात् भगवान् के कलावतार व्यास जी अवतीर्ण हुए ॥

द्वाविंशः श्लोकः

वेदगुप्तो मुनिः कृष्णो यतोऽहमिदमध्यगाम् ।
हित्वा स्वशिष्यान् पैलादीन् भगवान् बादरायणः ॥२२॥

पदच्छेद— वेदगुप्तः मुनिः कृष्णः यतः अहम् इदम् अध्यगाम् ।
हित्वा स्वशिष्यान् पैल आदीन् भगवान् बादरायणः ॥

शब्दार्थ—

वेदगुप्तः	३.	वेदों की रक्षा करने वाले हुए	हित्वा	१४.	छोड़कर (मुझे पढ़ाया था)
मुनिः	२.	मुनि	स्वशिष्यान्	१०.	अपने शिष्यों को
कृष्णः	१.	कृष्ण द्वैपायन	पैल	११.	पैल
यतः	४.	जिनसे	आदीन्	१२.	आदि
अहम्	५.	मैंने	भगवान्	८.	भगवान्
इदम्	६.	इस भागवत पुराण	बादरायणः ॥	९.	बादरायण व्यास ने
अध्यगाम् ।	७.	का अध्ययन किया			

श्लोकार्थ—कृष्ण द्वैपायन मुनि वेदों की रक्षा करने वाले हुए । जिनसे मैंने इस भागवत पुराण का अध्ययन किया । भगवान् बादरायण व्यास ने अपने पैल आदि शिष्यों को छोड़कर मुझे पढ़ाया था ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

मह्यं पुत्राय शान्ताय परं गुह्यमिदं जगौ ।
विचित्रवीर्योऽथोवाह काशिराजसुते बलात् ॥२३॥

पदच्छेद— महाम् पुत्राय शान्ताय परम् गुह्यम् इदम् जगौ ।
विचित्रवीर्यः अथ उवाह काशिराज सुते बलात् ॥

शब्दार्थ—

मह्यम्	१.	मुझ	विचित्रवीर्यः	९.	विचित्रवीर्य ने
पुत्राय	३.	पुत्र को	अथ	८.	तथा
शान्ताय	२.	शान्त	उवाह	१३.	विवाह किया
परम्	४.	अत्यन्त	काशिराज	१०.	काशिराज की
गुह्यम्	५.	गुप्त	सुते	११.	पुत्रियों से
इदम्	६.	इस पुराण को	बलात् ॥	१२.	बलपूर्वक
जगौ ।	७.	कहा था			

श्लोकार्थ—मुझ शान्त पुत्र से अत्यन्त गुप्त इस पुराण को कहा था। तथा विचित्रवीर्य ने काशिराज की दो पुत्रियों से बलपूर्वक विवाह किया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

स्वयंवरादुपानीते अम्बिकाम्बालिके उभे ।
तयोरासक्तहृदयो गृहीतो यक्ष्मणा मृतः ॥२४॥

पदच्छेद— स्वयं वरात् उपानीते अम्बिका अम्बालिके उभे ।
तयोः आसक्त हृदयः गृहीतः यक्ष्मणा मृतः ॥

शब्दार्थ—

स्वयंवरात्	१.	स्वयंवर से	तयोः	६.	पत्नियों में
उपानीते	२.	लायी गयी	आसक्त	७.	आसक्त
अम्बिका	३.	अम्बिका	हृदयः	८.	हृदय वाले विचित्रवीर्य
अम्बालिके	४.	अम्बालिका	गृहीतः	१०.	ग्रस्त होकर
उभे ।	५.	दोनों	यक्ष्मणा	९.	यक्ष्मा रोग से
			मृतः ॥	११.	मृत्यु को प्राप्त हो गये

श्लोकार्थ—स्वयंवर से लायी गयी अम्बिका, अम्बालिका दोनों पत्नियों में आसक्त हृदय वाले विचित्रवीर्य यक्ष्मा रोग से ग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हो गये ॥

पञ्चविंश श्लोकः

क्षेत्रेऽप्रजस्य वै भ्रातुर्मात्रोक्तो बादरायणः ।
धृतराष्ट्रं च पाण्डुं च विदुरं चाप्यजीजनत् ॥२५॥

पदच्छेद— क्षेत्रे अप्रजस्य वै भ्रातुः मात्रा उक्तः बादरायणः ।
धृतराष्ट्रम् च पाण्डुम् च विदुरम् च अपि अजीजनत् ॥

शब्दार्थ—

क्षेत्रे	४. पत्नी में	धृतराष्ट्रम्	८. धृतराष्ट्र
अप्रजस्य	२. सन्तान हीन	च	९. और
वै	१. निश्चित ही	पाण्डुम्	१०. पाण्डु को
भ्रातुः	३. भाई को	च	११. तथा
मात्रा	५. माता के	विदुरम्	१३. विदुर नामक पुत्र को भी
उक्तः	६. कहने पर	च अपि	१२ और (दासी से)
बादरायणः ।	७. व्यास	अजीजनत् ॥	१४. उत्पन्न किया

श्लोकार्थ—निश्चित ही सन्तानहीन भाई की पत्नी में माता के कहने पर व्यास ने धृतराष्ट्र और पाण्डु को तथा दासी से विदुर नामक पुत्र को उत्पन्न किया ॥

षड्विंशः श्लोकः

गान्धार्यां धृतराष्ट्रस्य जज्ञे पुत्रशतं नृप ।
तत्र दुर्योधनो ज्येष्ठो दुःशला चापि कन्यका ॥२६॥

पदच्छेद— गान्धार्याम् धृतराष्ट्रस्य जज्ञे पुत्र शतम् नृप ।
तत्र दुर्योधनः ज्येष्ठ. दुःशला च अपि कन्यका ॥

शब्दार्थ—

गान्धार्याम्	२. गान्धारी से	तत्र	७. उनमें
धृतराष्ट्रस्य	३. धृतराष्ट्र के	दुर्योधनः	८. दुर्योधन
जज्ञे	६. उत्पन्न हुए	ज्येष्ठः	९. बड़ा था
पुत्र	५. पुत्र	दुःशला	१२. दुःशला था
शतम्	४. सौ	च अपि	१०. और
नृप ।	१. हे राजन् !	कन्यका ॥	११. कन्या का नाम

श्लोकार्थ—हे राजन् ! गान्धारी से धृतराष्ट्र के सौ पुत्र उत्पन्न हुए । उनमें दुर्योधन बड़ा था । और कन्या का नाम दुःशला था ॥

सप्तविंशः श्लोकः

शापान्मैथुनरुद्धस्य पाण्डोः कुन्त्यां महारथाः ।
जाता धर्मानिलेन्द्रेभ्यो युधिष्ठिरमुखास्त्रयः ॥२७॥

पदच्छेद— शापात् मैथुन रुद्धस्य पाण्डोः कुन्त्याम् महारथाः ।
जाताः धर्म अनिल इन्द्रेभ्यः युधिष्ठिर मुखाः त्रयः ॥

शब्दार्थ—

शापात्	१.	शाप के कारण	जाताः	१३.	उत्पन्न हुए
मैथुन	२.	मैथुन	धर्म	६.	धर्म
रुद्धस्य	३.	न करने वाले	अनिल	७.	वायु और
पाण्डोः	४.	पाण्डु की पत्नी	इन्द्रेभ्यः	८.	इन्द्र से
कुन्त्याम्	५.	कुन्ती में	युधिष्ठिर	१०.	युधिष्ठिर
महारथाः ।	९.	महारथी	मुखाः	११.	आदि
			त्रयः ॥	१२.	तीन पुत्र

श्लोकार्थ—शाप के कारण मैथुन न करने वाले पाण्डु की पत्नी कुन्ती में धर्म, वायु और इन्द्र से महारथी युधिष्ठिर आदि तीन पुत्र उत्पन्न हुए ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

नकुलः सहदेवश्च माद्र्यां नासत्यदस्रयोः ।
द्रौपद्यां पञ्च पञ्चभ्यः पुत्रास्ते पितरोऽभवन् ॥२८॥

पदच्छेद— नकुलः सहदेवः च माद्र्याम् नासत्यदस्रयोः ।
द्रौपद्याम् पञ्च पञ्चभ्यः पुत्राः ते पितरः अभवन् ॥

शब्दार्थ—

नकुलः	१.	नकुल	पञ्च	८.	पाँच
सहदेवः	३.	सहदेव	पञ्चभ्यः	७.	पाँचों पाण्डवों से
च	२.	और	पुत्राः	९.	पुत्र
माद्र्याम्	४.	माद्री में	ते	१०.	तुम्हारे
नासत्यदस्रयोः	५.	दोनों अश्विनी कुमारों से उत्पन्न हुए	पितरः	११.	पितर चाचा
द्रौपद्याम् ।	६.	द्रौपदी में	अभवन् ॥	१२.	हुए

श्लोकार्थ—नकुल और सहदेव माद्री में दोनों अश्विनीकुमारों से उत्पन्न हुए । द्रौपदी में पाँचों पाण्डवों से तुम्हारे पाँच पितर चाचा उत्पन्न हुए ॥

एकानत्रिंशः श्लोकः

युधिष्ठिरात् प्रतिविन्ध्यः श्रुतसेनो वृकोदरात् ।
अर्जुनाच्छ्रुतकीर्तिस्तु शतानीकस्तु नाकुलिः ॥२९॥

पदच्छेद— युधिष्ठिरात् प्रतिविन्ध्यः श्रुतसेनः वृकोदरात् ।
अर्जुनात् श्रुतकीर्तिः तु शतानीकः तु नाकुलिः ॥

शब्दार्थ—

युधिष्ठिरात्	१. युधिष्ठिर से	अर्जुनात्	५. अर्जुन से
प्रतिविन्ध्यः	२. प्रतिविन्ध्य	श्रुतकीर्तिः	६. श्रुतकीर्ति
श्रुतसेनः	४. श्रुतसेन	तु शतानीकः	७. शतानीक हुए
वृकोदरात्	३. भीमसेन से	तु नाकुलिः ॥	८. और नकुल के पुत्र

श्लोकार्थ— युधिष्ठिर से प्रतिविन्ध्य, भीमसेन से श्रुतसेन, अर्जुन से श्रुतकीर्ति और नकुल के पुत्र शतानीक हुए ॥

त्रिंशः श्लोकः

सहदेवसुतो राजञ्छ्रुतकर्मा तथापरे ।
युधिष्ठिरात् तु पौरव्यां देवकोऽथ घटोत्कचः ॥३०॥

पदच्छेद— सहदेव सुतः राजन् श्रुतकर्मा तथा अपरे ।
युधिष्ठिरात् तु पौरव्याम् देवकः अथ घटोत्कचः ॥

शब्दार्थ—

सहदेव	२. सहदेव के	युधिष्ठिरात्	७. युधिष्ठिर से
सुतः	३. पुत्र	तु पौरव्याम्	८. पौरवी नाम की पत्नी में
राजन्	१. हे राजन् !	देवकः	९. देवक
श्रुतकर्मा	४. श्रुतकर्मा	अथ	१०. तथा
तथा	५. तथा	घटोत्कचः ॥	११. घटोत्कच हुए
अपरे ।	६. और भी हुए		

श्लोकार्थ— हे राजन् ! सहदेव के पुत्र श्रुतकर्मा तथा और भी हुए । युधिष्ठिर के पौरवी नाम की पत्नी में देवक तथा भीमसेन के घटोत्कच हुए ।

एकत्रिंशः श्लोकः

भीमसेनाद्धिडिम्बायां काल्यां सर्वगतस्ततः ।
सहदेवात् सुहोत्रं तु विजयासूत पार्वती ॥३१॥

पदच्छेद— भीमसेनात् हिडिम्बायाम् काल्याम् सर्वगतः ततः ।
सहदेवात् सुहोत्रम् तु विजया असूत पार्वती ॥

शब्दार्थ—

भीमसेनात्	१.	भीमसेन से	सहदेवात्	६.	सहदेव से
हिडिम्बायाम्	२.	हिडिम्बा में घटोत्कच हुआ	सुहोत्रम् तु	९.	सुहोत्र को
काल्याम्	३.	काली में	विजया	८.	विजया ने
सर्वगतः	४.	सर्वगत हुआ	असूत	१०.	उत्पन्न किया
ततः ।	५.	उसके बाद	पार्वती ॥	७.	पर्वत की पुत्री

श्लोकार्थ—भीमसेन से हिडिम्बा में घटोत्कच हुआ। काली में सर्वगत हुआ। उसके बाद सहदेव से पर्वत की पुत्री विजया ने सुहोत्र को उत्पन्न किया ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

करेणुमत्यां नकुलो निरमित्रं तथार्जुनः ।
इरावन्तमुलूप्यां वै सुतायां बभ्रुवाहनम् ।
मणिपूरपतेः सोऽपि तत्पुत्रः पुत्रिकासुतः ॥३२॥

पदच्छेद— करेणुमत्याम् नकुलः निरमित्रम् तथा अर्जुनः ।
इरावन्तम् उलूप्याम् वै सुतायाम् बभ्रुवाहनम् ।
मणिपूरपतेः सः अपि तत् पुत्रः पुत्रिकासुतः ॥

शब्दार्थ—

करेणुमत्याम्	२.	करेणुमती में	वै	८.	निश्चय ही
नकुलः	१.	नकुल से	सुतायाम्	१०.	पुत्री में
निरमित्रम्	३.	निरमित्र हुआ	बभ्रुवाहनम्	११.	बभ्रुवाहन को उत्पन्न किया
तथा	४.	तथा	मणिपूरपतेः	९.	मणिपूर के राजा की
अर्जुनः	५.	अर्जुन ने	सः अपि	१३.	वह बभ्रुवाहन भी
इरावन्तम्	७.	इरावान को और	तत पुत्रः	१४.	उसी का पुत्र कहलाया
उलूप्याम् ।	६.	उलूपी से	पुत्रिकासुतः ॥	१२.	कन्या का पुत्र

श्लोकार्थ—नकुल से करेणुमती में निरमित्र हुआ। तथा अर्जुन ने उलूपी से इरावान् को और निश्चय ही मणिपूर के राजा की पुत्री में बभ्रुवाहन को उत्पन्न किया। कन्या का पुत्र बभ्रुवाहन भी उसी राजा का पुत्र कहलाया ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तव तातः सुभद्रायामभिमन्युरजायत ।
सर्वांतिरथजिद् वीर उत्तरायां ततो भवान् ॥३३॥

पदच्छेद— तव तातः सुभद्रायाम् अभिमन्युः अजायत ।
सर्वं अतिरथजित् वीरः उत्तरायाम् ततः भवान् ॥

शब्दार्थ—

तव	१.	आपका	सर्वं	७.	सभी
तातः	२.	पिता	अतिरथजित्	८.	महारथियों को जीतने वाले थे
सुभद्रायाम्	४.	सुभद्रा से	वीरः	६.	वीर अभिमन्यु
अभिमन्युः	३.	अभिमन्यु	उत्तरायाम्	१०.	उत्तरा में
अजायत ।	५.	उत्पन्न हुए (वह)	ततः	९.	उनसे
			भवान् ॥	११.	आप उत्पन्न हुए

श्लोकार्थ—आपके पिता अभिमन्यु सुभद्रा से उत्पन्न हुए । वह वीर अभिमन्यु सभी महारथियों को जीतने वाले थे । उनमें उत्तरा से आप उत्पन्न हुए ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

परिक्षीणेषु कुरुषु द्रौणेर्ब्रह्मास्त्रतेजसा ।
त्वं च कृष्णानुभावेन सजीवो मोचितोऽन्तकात् ॥३४॥

पदच्छेद— परिक्षीणेषु कुरुषु द्रौणेः ब्रह्मास्त्र तेजसा ।
त्वम् च कृष्ण अनुभावेन सजीवः मोचितः अन्तकात् ॥

शब्दार्थ—

परिक्षीणेषु	२.	विनष्ट हो जाने पर	च	७.	भी
कुरुषु	१.	कुरुवंशियों के	कृष्ण	८.	कृष्ण के
द्रौणेः	३.	द्रोण पुत्र अश्वत्थामा के	अनुभावेन	९.	प्रभाव से
ब्रह्मास्त्र	४.	ब्रह्मास्त्र के	सजीवः	१०.	जीवित
तेजसा	५.	तेज से	मोचितः	१२.	बचा लिए गये
त्वम् ।	६.	आप	अन्तकात् ॥	११.	मृत्यु से

श्लोकार्थ—कुरुवंशियों के विनष्ट हो जाने पर द्रोण-पुत्र अश्वत्थामा के ब्रह्मास्त्र के तेज से आप भी भगवान् श्री कृष्ण के प्रभाव से मृत्यु से जीवित बचा लिए गये ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

तवेमे तनयास्तात जनमेजयपूर्वकाः ।

श्रुतसेनो भीमसेन उग्रसेनश्च वीर्यवान् ।।३५।।

पदच्छेद— तव इमे तनयाः तात जनमेजय पूर्वकाः ।

श्रुतसेनः भीमसेनः उग्रसेनः च वीर्यवान् ।।

शब्दार्थः—

तव	२.	आपके	श्रुतसेनः	७.	श्रुतसेन
इमे	३.	ये सब	भीमसेनः	८.	भीमसेन
तनयाः	४.	पुत्र हैं	उग्रसेनः	१०.	उग्रसेन
तात	१.	हे परीक्षित् !	च	९.	और
जनमेजय	६.	जनमेजय	वीर्यवान् ।।	११.	ये सब पराक्रमी हैं
पूर्वकाः ।	५.	सबसे बड़े			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! आपके ये सब पुत्र हैं, सबसे बड़े जनमेजय, श्रुतसेन, भीमसेन और उग्रसेन ये सब पराक्रमी हैं ।।

षट्त्रिंशः श्लोकः

जनमेजयस्त्वां विदित्वा तक्षकान्निधनं गतम् ।

सर्पान् वै सर्पयागाग्नौ स होष्यति रुषान्वितः ।।३६।।

पदच्छेद— जनमेजयः त्वाम् विदित्वा तक्षकात् निधनम् गतम् ।

सर्पान् वै सर्पयाग अग्नौ सः होष्यति रुषा अन्वितः ।।

शब्दार्थ—

जनमेजयः	१.	जनमेजय	सर्पान् वै	११.	साँपों का
त्वाम्	२.	आपको	सर्पयाग	७.	सर्पयज्ञ की
विदित्वा	६.	जानकर	अग्नौ	८.	अग्नि में
तक्षकात्	३.	तक्षक से	सः होष्यति	१२.	वह हवन कर देगा
निधनम्	४.	मृत्यु को	रुषा	९.	क्रोध से
गतम् ।	५.	प्राप्त	अन्वितः ।।	१०.	युक्त होकर

श्लोकार्थ—जनमेजय आपको तक्षक से मृत्यु को प्राप्त जानकर सर्पयज्ञ की अग्नि में क्रोध से युक्त होकर सर्पों का हवन कर देगा ।।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

काववेयं पुरोधाय तुरं तुरगमेधयाट् ।
समन्तात् पृथिवीं सर्वां जित्वा यक्ष्यति चाध्वरैः ॥३७॥

पदच्छेद— काववेयम् पुरोधाय तुरम् तुरग मेधयाट् ।
समन्तात् पृथिवीम् सर्वाम् जित्वा यक्ष्यति च अध्वरैः ॥

शब्दार्थ—

काववेयम्	१. कावषेय	समन्तात्	६. चारों ओर से
पुरोधाय	३. पुरोहित (बनाकर)	पृथिवीम्	८. पृथ्वी को
तुरम्	२. तुर को	सर्वाम्	७. सारी
तुरग	४. अश्व	जित्वा	१०. जीतकर
मेधयाट् ।	५. मेध यज्ञ करेगा	यक्ष्यति	१२. यज्ञ करेगा
		च अध्वरैः ॥	११. यज्ञों के द्वारा भगवान् का

श्लोकार्थ—कावषेय तुर को पुरोहित बनाकर अश्वमेध यज्ञ करेगा। और सारी पृथ्वी को चारों ओर से जीतकर यज्ञों के द्वारा भगवान् का यजन करेगा ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

तस्य पुत्रः शतानीको याज्ञवल्क्यात् त्रयीं पठन् ।
अस्त्रज्ञानं क्रियाज्ञानं शौनकात् परमेष्यति ॥३८॥

पदच्छेद— तस्य पुत्रः शतानीकः याज्ञवल्क्यात् त्रयीम् पठन् ।
अस्त्र ज्ञानम् क्रिया ज्ञानम् शौनकात् परम् एष्यति ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१. उसका	अस्त्र	७. अस्त्रों का
पुत्रः	२. पुत्र	ज्ञानम्	८. ज्ञान तथा
शतानीकः	३. शतानीक	क्रिया	९. कर्मकाण्ड का
याज्ञवल्क्यात्	४. याज्ञवल्क्य मुनि से	ज्ञानम्	१०. ज्ञान
त्रयीम्	५. तीनों वेदों को	शौनकात्	११. शौनक मुनि से प्राप्त करके
पठन् ।	६. पढ़कर	परम् एष्यति ॥	१२. परमात्मा को प्राप्त होगा

श्लोकार्थ—उसका पुत्र शतानीक याज्ञवल्क्य मुनि से तीनों वेदों को पढ़कर अस्त्र-विद्या तथा कर्मकाण्ड का ज्ञान शौनक मुनि से प्राप्त करके परमात्मा को प्राप्त होगा ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

सहस्रानीकस्तत्पुत्रस्ततश्चैवाश्वमेधजः ।
असीमकृष्णस्तस्यापि नेमिचक्रस्तु तत्सुतः ॥३९॥

पदच्छेद— सहस्रानीकः तत् पुत्रः ततः च एव अश्वमेधजः ।
असीम कृष्णः तस्यापि नेमिचक्रः तु तत् सुतः ॥

शब्दार्थ—

सहस्रानीकः	३. सहस्रानीक	असीम कृष्णः	८. असीम कृष्ण
तत्	१. उसका	तस्यापि	९. उसका
पुत्रः	२. पुत्र	नेमिचक्रः तु	१०. नेमिचक्र होगा
ततः	५. उससे	तत् सुतः ॥	९. उसका पुत्र
च एव	४. और		
अश्वमेधजः ।	६. अश्वमेधज		

श्लोकार्थ—उसका पुत्र सहस्रानीक होगा । और उससे अश्वमेधज, उसका असीम कृष्ण और उसका पुत्र नेमिचक्र होगा ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

गजाह्वये हृते नद्या कौशाम्ब्यां साधु वत्स्यति ।
उक्तस्ततश्चित्ररथस्तस्मात कविरथः सुतः ॥४०॥

पदच्छेद— गजाह्वये हृते नद्या कौशाम्ब्याम् साधु वत्स्यति ।
उक्तः ततः चित्ररथः तस्मात् कविरथः सुतः ॥

शब्दार्थ—

गजाह्वये	१. हस्तिनापुर	उक्तः	९. कहा गया है
हृते	३. बह जायेगा (तब वह)	ततः	७. उसका पुत्र
नद्या	२. गंगा में	चित्ररथः	८. चित्ररथ
कौशाम्ब्याम्	४. कौशाम्बी नगरी में	तस्मात्	१०. उससे
साधु	५. सुखपूर्वक	कविरथः	११. कविरथ
वत्स्यति	६. वास करेगा	सुतः ॥	१२. पुत्र होगा

श्लोकार्थ—हस्तिनापुर गंगा में बह जायेगा तब वह कौशाम्बी नगरी में सुखपूर्वक वास करेगा । उसका पुत्र चित्ररथ कहा गया है । उससे कविरथ पुत्र होगा ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

तस्माच्च वृष्टिमांस्तस्य सुषेणोऽथ महीपतिः ।
सुनीथस्तस्य भविता नृचक्षुर्यत् सुखीनलः ॥४१॥

पदच्छेद— तस्मात् च वृष्टिमान् तस्य सुषेणः अथ महीपतिः ।
सुनीथः तस्य भविता नृचक्षुर्यत् सुखीनलः ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	२.	उससे	महीपतिः	६.	राजा
च	१.	और	सुनीथः	९.	सुनीथ
वृष्टिमान्	३.	वृष्टिमान्	तस्य	८.	उसका
तस्य	५.	उसका	भविता	१२.	होगा
सुषेणः	७.	सुषेण	नृचक्षुर्यत्	१०.	नृचक्षु और उसका
अथ ।	४.	तदनन्तर	सुखीनलः ॥	११.	सुखानल होगा

श्लोकार्थ—और उससे वृष्टिमान, तदनन्तर उसका राजा सुषेण, उसका सुनीथ, उसका नृचक्षु और उसका सुखीनल होगा ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

परिप्लवः सुतस्तस्मान्मेधावी सुनयात्मजः ।
नृपञ्जयस्ततो दूर्वस्तिमिस्तस्माज्जनिष्यति ॥४२॥

पदच्छेद— परिप्लवः सुतः तस्मात् मेधावी सुनय आत्मजः ।
नृपञ्जयः ततः दूर्वः तिमिः तस्मात् जनिष्यति ॥

शब्दार्थ—

परिप्लवः	२.	परिप्लव	आत्मजः	५.	उसका पुत्र
सुतः	१.	उसका पुत्र	नृपञ्जयः	८.	नृपञ्जय
तस्मात्	३.	उससे	ततः	७.	उसका
मेधावी	६.	मेधावी होगा	दूर्वः	९.	उससे दूर्व
सुनय ।	४.	सुनय	तिमिः तस्मात्	१०.	उससे तिमि
			जनिष्यति ॥	११.	उत्पन्न होगा

श्लोकार्थ—उसका पुत्र परिप्लव, उससे सुनय, उसका पुत्र मेधावी होगा । उसका नृपञ्जय, उससे दूर्व, उससे तिमि उत्पन्न होगा ।

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

तिमेर्बृहद्रथस्तस्माच्छतानीकः सुदासजः ।
शतानीकाद् दुर्दमनस्तस्यापत्यं वहीनरः ॥४३॥

पदच्छेद— तिमेः बृहद्रथः तस्मात् शतानीकः सुदासजः ।
शतानीकात् दुर्दमनः तस्य अपत्यम् वहीनरः ॥

शब्दार्थ—

तिमेः	१.	तिमि से	शतानीकात्	६.	शतानीक से
बृहद्रथः	२.	बृहद्रथ	दुर्दमनः	७.	दुर्दमन और
तस्मात्	३.	उससे	तस्य	८.	उसका
शतानीकः	५.	शतानीक	अपत्यम्	९.	पुत्र
सुदासजः ।	४.	सुदास उससे	वहीनरः ॥	१०.	वहीनर हुआ

श्लोकार्थ—तिमि से बृहद्रथ, उससे सुदास, उससे शतानीक, शतानीक से दुर्दमन और उसका पुत्र वहीनर हुआ ।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

दण्डपाणिर्निमिस्तस्य क्षेमको भविता नृपः ।
ब्रह्मक्षत्रस्य वै प्रोक्तो वंशो देवर्षिसत्कृतः ॥४४॥

पदच्छेद— दण्डपाणिः निमिः तस्य क्षेमकः भविता नृपः ।
ब्रह्मक्षत्रस्य वै प्रोक्तः वंशः देवर्षि सत्कृतः ॥

शब्दार्थ—

दण्डपाणिः	१.	(वहीनर से) दण्डपाणि	ब्रह्म	९.	ब्राह्मण और
निमिः	३.	निमि उसका पुत्र	क्षत्रस्य	१०.	क्षत्रियों के
तस्य	२.	उसका	वै	१२.	निश्चित रूप से
क्षेमकः	५.	क्षेमक	प्रोक्तः	१३.	बता दिया
भविता	६.	होगा	वंशः	११.	वंशों को
नृपः ।	४.	राजा	देवर्षि	७.	देवर्षियों द्वारा
			सत्कृतः ॥	८.	आदरणीय

श्लोकार्थ—वहीनर से दण्डपाणि, उसका निमि, उसका पुत्र राजा क्षेमक होगा । देवर्षियों द्वारा आदरणीय ब्राह्मण और क्षत्रियों के वंशों को निश्चित रूप से बता दिया ।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

क्षेमकं प्राप्य राजानं संस्थां प्राप्स्यति वै कलौ ।
अथ मागधराजानो भवितारो वदामि ते ॥४५॥

पदच्छेद— क्षेमकम् प्राप्य राजानम् संस्थाम् प्राप्स्यति वै कलौ ।
अथ मगधराजानः भवितारः वदामि ते ॥

शब्दार्थ—

क्षेमकम्	२.	क्षेमक को	अथ	८.	अब
प्राप्य	३.	पाकर	मागध	९.	मगध के
राजानम्	१.	ये वंश राजा	राजानः	११.	राजाओं को
संस्थाम्	६.	समाप्त	भवितारः	१०.	होने वाले
प्राप्स्यति	७.	हो जायेगा	वदामि	१३.	बता रहा हूँ
वै	५.	निश्चय ही	ते	१२.	तुम्हें
कलौ ।	४	कलियुग में			

श्लोकार्थ—ये वंश राजा क्षेमक को पाकर कलियुग में निश्चय ही समाप्त हो जायेगा । अब मगध देश के होने वाले राजाओं को तुम्हें बता रहा हूँ ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

भविता सहदेवस्य मार्जारिर्यच्छ्रुतश्रवाः ।
ततोऽयुतायुस्तस्यापि निरमित्रोऽथ तत्सुतः ॥४६॥

पदच्छेद— भविता सहदेवस्य मार्जारिः यत् श्रुतश्रवाः ।
ततः अयुतायुः तस्य अपि निरमित्रः अथ तत् सुतः ॥

शब्दार्थ—

भविता	११.	होगा	अयुतायुः तस्य	५.	अयुतायु
सहदेवस्य	१.	सहदेव से	अपि	६.	भी
मार्जारिः	२.	मार्जारि	निरमित्रः	१०.	निरमित्र
यत्	३.	उसके	अथ	७.	तथा
श्रुतश्रवाः	४.	श्रुतश्रुवा	तत् सुतः ॥	८.	उसका पुत्र
ततः ।	५.	उससे			

श्लोकार्थ—सहदेव से मार्जारि, उससे श्रुतश्रुवा, उससे अयुतायु तथा उसका पुत्र निरमित्र होगा ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

सुनक्षत्रः सुनक्षत्राद् बृहत्सेनोऽथ कर्मजित् ।
ततः सुतञ्जयाद् विप्रः शुचिस्तस्य भविष्यति ॥४७॥

पदच्छेद— सुनक्षत्रः सुनक्षत्रात् बृहत्सेनः अथ कर्मजित् ।
ततः सुतञ्जयात् विप्रः शुचिः तस्य भविष्यति ॥

शब्दार्थ—

सुनक्षत्रः	१.	निरमित्र का सुनक्षत्र	ततः	६.	उससे
सुनक्षत्रात्	२.	सुनक्षत्र से	सुतञ्जयात्	७.	सुतञ्जय उससे
बृहत्सेनः	३.	बृहत्सेन	विप्रः	८.	विप्र
अथ	४.	तदनन्तर	शुचिः	१०.	शुचि
कर्मजित् ।	५.	कर्मजित्	तस्य	९.	विप्र का
			भविष्यति ॥	११.	होगा

श्लोकार्थ—निरमित्र का सुनक्षत्र, सुनक्षत्र से बृहत्सेन, तदनन्तर कर्मजित्, उससे सुतञ्जय, उससे विप्र, विप्र का पुत्र शुचि होगा ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

क्षेमोऽथ सुव्रतस्तस्माद् धर्मसूत्रः शमस्ततः ।
द्युमत्सेनोऽथ सुमतिः सुबलो जनिता ततः ॥४८॥

पदच्छेद— क्षेमः अथ सुव्रतः तस्माद् धर्मसूत्रः शमः ततः ।
द्युमत्सेनः अथ सुमतिः सुबलः जनिता ततः ॥

शब्दार्थ—

क्षेमः	१.	शुचि से क्षेम	द्युमत्सेनः	९.	द्युमत्सेन उससे
अथ	२.	उससे	अथ	८.	तथा
सुव्रतः	३.	सुव्रत	सुमतिः	१२.	सुमति
तस्माद्	४.	उससे	सुबलः	१२.	सुबल नामक पुत्र
धर्मसूत्रः	५.	धर्मसूत्र	जनिता	१३.	उत्पन्न होगा
शमः	७.	शम	ततः ॥	११.	और उससे
ततः ।	६.	उससे			

श्लोकार्थ—शुचि से क्षेम, उससे सुव्रत, उससे धर्मसूत्र, उससे शम, उससे द्युमत्सेन, उससे सुमति और उसके सुबल नामक पुत्र उत्पन्न होगा ॥

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

सुनीथः सत्यजिदथ विश्वजिद् यद् रिपुञ्जयः ।
बार्हद्रथाश्च भूपाला भाव्याः साहस्रवत्सरम् ॥४९॥

पदच्छेद—
सुनीथः सत्यजित् अथ विश्वजित् यत् रिपुञ्जयः ।
बार्हद्रथाः च भूपालाः भाव्याः साहस्र वत्सरम् ॥

शब्दार्थ—

सुनीथः	१. सुबल से सुनीथ	बार्हद्रथाः	बृहद्रथ वंश के
सत्यजित्	३. सत्यजित् उससे	च	७. ये सब
अथ	२. तदनन्तर	भूपालाः	९. राजा
विश्वजित्	५. विश्वजित्	भाव्याः	१२. होंगे
यत्	४. उससे	साहस्र	१०. एक हजार
रिपुञ्जयः ।	६. रिपुञ्जय होगा	वत्सरम् ॥	११. वर्ष के भीतर

श्लोकार्थ—सुबल के सुनीथ, तदनन्तर सत्यजित्, उससे विश्वजित् और उससे रिपुञ्जय होगा। ये सब बृहद्रथ वंश के राजा एक हजार वर्ष के भीतर होंगे ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे
द्वाविंशोऽध्यायः ॥२२॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

त्रयोविंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अनोः सभानरश्चक्षुः परोक्षश्च त्रयः सुताः ।
सभानरात् कालनरः सृञ्जयस्तत्सुतस्ततः ॥१॥

पदच्छेद— अनोः सभानरः चक्षुः परोक्षः च त्रयः सुताः ।
सभानरात् कालनरः सृञ्जयः तत् सुतः ततः ॥

शब्दार्थ—

अनोः	१. अनु के	सभानरात्	८. सभानर से
सभातरः	२. सभानर	कालनर	९. कालनर
चक्षुः	३. चक्षु	सृञ्जयः	११. सृञ्जय और
परोक्षः	५. परोक्ष	तत्	१०. उससे
च	४. और	सुतः	१३. पुत्र (जनमेजय हुआ)
त्रयः	६. ये तीन	ततः ॥	१२. उसका
सुताः ।	७. पुत्र हुए		

श्लोकार्थ—अनु के सभानर, चक्षु और परोक्ष ये तीन पुत्र हुए । सभानर से कालनर उससे सृञ्जय और उसका पुत्र जनमेजय हुआ ॥

द्वितीयः श्लोकः

जनमेजयस्तस्य पुत्रो महाशोलो महामनाः ।
उशीनरस्तितिक्षुश्च महामनस आत्मजौ ॥२॥

पदच्छेद— जनमेजयः तस्य पुत्रः महाशोलः महामनाः ।
उशीनरः तितिक्षुः च महामनसः आत्मजौ ॥

शब्दार्थ—

जनमेजयः	२. जनमेजय का	उशोनरः	८. उशीनर
तस्य	१. उस	तितिक्षुः	१०. तितिक्षु
पुत्रः	३. पुत्र	च	९. और
महाशोलः	४. महाशील	महामनसः	६. महामना के
महामनाः ।	५. उसका महामना	आत्मजौ ॥	७. दो पुत्र हुए

श्लोकार्थ—उस जनमेजय का पुत्र महाशोल, उसका महामना, महामना के दो पुत्र हुए उशीनर और तितिक्षु ॥

तृतीयः श्लोकः

शिबिर्वनः शमिर्दक्षश्चत्वारोशीनरात्मजाः ।
वृषादर्भः सुवीरश्च मद्रः कैकेय आत्मजाः ॥३॥

पदच्छेद— शिबिः वनः शमिः दक्षः चत्वारः उशीनर आत्मजाः ।
वृषादर्भः सुवीरः च मद्रः कैकेयः आत्मजाः ॥

शब्दार्थ—

शिबिः	४	शिबि	आत्मजाः	३.	पुत्र हुए
वनः	५.	वन	वृषादर्भः	८.	वृषादर्भ
शमिः	६	शमि और	सुवीरः	९.	सुवीर
दक्षः	७.	दक्ष	च मद्रः	१०.	मद्र और
चत्वारः	२.	चार	कैकेय	११.	कैकेय (ये शिबि के)
उशीनर	१.	उशीनर के	आत्मजाः ।	१२.	पुत्र हुए

श्लोकार्थ—उशीनर के चार पुत्र हुए शिबि, वन, शमि और दक्ष । वृषादर्भ, सुवीर, मद्र और कैकेय ये शिबि के पुत्र हुए ॥

चतुर्थः श्लोकः

शिबेश्चत्वार एवासंस्तितिक्षोश्च रुशद्रथः ।
ततो हेमोऽथ सुतपा बलिः सुतपसोऽभवत् ॥४॥

पदच्छेद— शिबेः चत्वारः एव आसन् तितिक्षोः च रुशद्रथः ।
ततः हेमः अथ सुतपाः बलिः सुतपसः अभवत् ॥

शब्दार्थ—

शिबेः	१.	शिबि के	ततः	७.	उससे
चत्वारः	२.	चार	हेमः	८.	हेम
एव	३.	ही	अथ	९.	उससे
आसन्	४.	पुत्र थे	सुतपाः	१०.	सुतपा
तितिक्षोः	५.	तितिक्षु से	बलिः	१२.	बलि
रुशद्रथः	६.	रुशद्रथ	सुतपसः	११.	सुतपा से
			अभवत् ॥	१३.	उत्पन्न हुए

श्लोकार्थ—शिबि के चार ही पुत्र थे । तितिक्षु से रुशद्रथ और उससे हेम, उससे सुतपा, सुतपा से बलि उत्पन्न हुआ ॥

पञ्चमः श्लोकः

अङ्गवङ्गकलिङ्गाद्याः सुह्मपुण्ड्रान्ध्रसंज्ञिताः ।
जज्ञिरे दीर्घतमसो बलेः क्षेत्रे महीक्षितः ॥५॥

पदच्छेद— अङ्गवङ्गकलिङ्ग आद्याः सुह्म पुण्ड्र अन्ध्र संज्ञिताः ।
जज्ञिरे दीर्घतमसः बलेः क्षेत्रे महीक्षितः ॥

शब्दार्थ—

अङ्ग	१. अङ्ग	अन्ध्र	७. अन्ध्र
वङ्ग	२. वङ्ग	संज्ञिताः	८. नामक पुत्र
कलिङ्ग	३. कलिङ्ग	जज्ञिरे	१३. उत्पन्न हुए
आद्याः	४. प्रमुख	दीर्घतमसः	९. दीर्घतमा मुनि से
सुह्म	५. सुह्म	बलेः	११. बलि की
पुण्ड्र ।	६. पुण्ड्र और	क्षेत्रे	१२. पत्नी में
		महीक्षितः ॥	१०. राजा

श्लोकार्थ—अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्ग, सुह्म, पुण्ड्र और अन्ध्र नामक पुत्र दीर्घतमा मुनि से राजा बलि की पत्नी में उत्पन्न हुए ॥

षष्ठः श्लोकः

चक्रुः स्वनाम्ना विषयान् षडिमान् प्राच्यकांश्च ते ।
खनपानोऽङ्गतो जज्ञे तस्माद् दिविरथस्ततः ॥६॥

पदच्छेद— चक्रुः स्वनाम्ना विषयान् षड् इमान् प्राच्यकान् च ते ।
खनपानः अङ्गतः जज्ञे तस्मात् दिविरथः ततः ॥

शब्दार्थ—

चक्रुः	७. बसाया	खनपानः	९. खनपान
स्वनाम्ना	३. अपने नाम से	अङ्गतः	८. अङ्ग से
विषयान्	६. राज्यों को	जज्ञे	१०. उत्पन्न हुआ
षड् इमान्	५. इन छह	तस्मात्	११. उससे
प्राच्यकान्	२. पूर्व दिशा में	दिविरथः	१२. दिविरथ और
च ते ।	१. और उन्होंने	ततः ॥	१३. उसके धर्मरत हुआ

श्लोकार्थ—और उन्होंने पूर्व दिशा में अपने नाम से इन छह राज्यों को बसाया । अङ्ग से खनपान उत्पन्न हुआ । उससे दिविरथ और उससे धर्मरथ हुआ ॥

सप्तमः श्लोकः

सुतो धर्मरथो यस्य जज्ञे चित्ररथोऽप्रजाः ।
रोमपाद इति ख्यातस्तस्मै दशरथः सखा ॥७॥

पदच्छेद— सुतः धर्मरथः यस्य जज्ञे चित्ररथः अप्रजाः ।
रोमपादः इति ख्यातः तस्मै दशरथः सखा ॥

शब्दार्थ—

सुतः	१.	दिविरथ का पुत्र	रोमपाद	७.	वह रोमपाद
धर्मरथः	२.	धर्मरथ हुआ	इति	८.	इस नाम से
यस्य	३.	उससे	ख्यातः	९.	प्रसिद्ध हुआ
जज्ञे	६.	उत्पन्न हुआ	तस्मै	१०.	उसके
चित्ररथः	५.	चित्ररथ	दशरथः	१२.	दशरथ थे
अप्रजाः ।	४.	सन्तान हीन	सखा ॥	११.	मित्र

श्लोकार्थ—दिविरथ का पुत्र धर्मरथ हुआ । उससे सन्तान हीन चित्ररथ उत्पन्न हुआ । वह रोमपाद इस नाम से प्रसिद्ध था । उसके मित्र दशरथ थे ॥

अष्टमः श्लोकः

शान्तां स्वकन्यां प्रायच्छदृष्यश्रृङ्ग उवाह ताम् ।
देवेऽवर्षति यं रामा आनिन्युर्हरिणीसुतम् ॥८॥

पदच्छेद— शान्ताम् स्वकन्याम् प्रायच्छत् ऋष्यश्रृङ्गः उवाह ताम् ।
देवे अवर्षति यम् रामाः आनिन्युः हरिणी सुतम् ॥

शब्दार्थ—

शान्ताम्	१.	उन्होंने शान्ता नाम की	देवे	७.	इन्द्र के
स्वकन्याम्	२.	अपनी कन्या उन्हें	अवर्षति	८.	वर्षा न करने पर
प्रायच्छत्	३.	दे दी	यम्	१०.	उसे
ऋष्यश्रृङ्गः	५.	ऋष्यश्रृङ्ग ने	रामाः	१२.	गणिकायें
उवाह	६.	विवाह किया	आनिन्युः	१३.	ले आई थीं
ताम् ।	४.	उससे	हरिणी	९.	हरिणी के गर्भ से उत्पन्न
			सुतम् ॥	११.	पुत्र ऋष्यश्रृङ्ग को

श्लोकार्थ—उन्होंने शान्ता नाम की कन्या उन्हें दे दी । उससे ऋष्यश्रृङ्ग ने विवाह किया । इन्द्र के वर्षा न करने पर हरिणी के गर्भ से उत्पन्न पुत्र ऋष्यश्रृङ्ग को गणिकायें ले आई थीं ॥

नवमः श्लोकः

नाट्यसङ्गीतवादित्रैर्विभ्रमालिङ्गनार्हणैः ।

स तु राज्ञोऽनपत्यस्य निरूप्येष्टिं मरुत्वतः ॥९॥

पदच्छेद— नाट्य संगीत वादित्रैः विभ्रम आलिङ्गन अर्हणैः ।
सः तु राज्ञः अनपत्यस्य निरूप्य इष्टिम् मरुत्वतः ॥

शब्दार्थ—

नाट्य	१. वे नृत्य	सः तु	७. ऋष्यशृङ्ग मुनि ने
संगीत	२. सङ्गीत	राज्ञः	९. राजा से
वादित्रैः	३. वाद्य	अनपत्यस्य	८. सन्तान हीन
विभ्रम	४. हाव-भाव	निरूप्य	१२. कराया
आलिङ्गन	५. आलिङ्गन और	इष्टिम्	११. यज्ञ
अर्हणैः ।	६. उपहारादि से (मुनि को ले आईं)	मरुत्वतः ॥	१०. इन्द्र देवता का

श्लोकार्थ— वे नृत्य, सङ्गीत, वाद्य हाव-भाव आलिङ्गन और उपहारादि से (मोहित करके मुनि को ले आईं)। ऋष्यशृङ्ग मुनि ने सन्तान हीन राजा से इन्द्र देवता का यज्ञ कराया ॥

दशमः श्लोकः

प्रजामदाद् दशरथो येन लेभेऽप्रजाः प्रजाः ।

चतुरङ्गो रोमपादात् पृथुलाक्षस्तु तत्सुतः ॥१०॥

पदच्छेद— प्रजाम् अदात् दशरथः येन लेभे अप्रजाः प्रजाः ।
चतुरङ्गः रोमपादात् पृथुलाक्षः तु तत् सुतः ॥

शब्दार्थ—

प्रजाम्	१. (और राजा को) सन्तान	प्रजाः ।	६. पुत्रों को
अदात्	२. दी	चतुरङ्गः	९. चतुरङ्ग और
दशरथः	५. दशरथ ने भी	रोमपादात्	८. रोमपाद का पुत्र
येन	३. जिससे	पृथुलाक्षः	१२. पृथुलाक्ष हुआ
लेभे	७. प्राप्त किया	तत्	१०. उसका
अप्रजाः	४. पुत्र हीन	सुतः ॥	११. पुत्र

श्लोकार्थ—और राजा को सन्तान दी। जिससे पुत्रहीन दशरथ ने भी पुत्रों को प्राप्त किया। रोमपाद का पुत्र चतुरङ्ग और उसका पुत्र पृथुलाक्ष हुआ ॥

एकादशः श्लोकः

बृहद्रथो बृहत्कर्मा बृहद्भानुश्च तत्सुताः ।

आद्याद् बृहन्मनास्तस्माज्जयद्रथ उदाहृतः ॥११॥

पदच्छेद— बृहद्रथः बृहत्कर्मा बृहद्भानुः च तत् सुताः ।
आद्यात् बृहन्मनाः तस्मात् जयद्रथः उदाहृतः ॥

शब्दार्थ—

बृहद्रथः	३.	बृहद्रथ	आद्यात्	७	बृहद्रथ से
बृहत्कर्मा	४.	बृहत्कर्मा	बृहन्मनाः	८	बृहन्मना और
बृहद्भानुः	६.	बृहद्भानु हुए	तस्मात्	९.	उससे
च	५.	और	जयद्रथः	१०.	जयद्रथ
तत्	१	उस पृथुलाक्ष के	उदाहृतः ॥	११.	कहा गया है ॥
सुताः ।	२.	पुत्र			

श्लोकार्थ—उस पृथुलाक्ष का पुत्र बृहद्रथ, बृहत्कर्मा और बृहद्भानु हुए । बृहद्रथ से बृहन्मना और उससे जयद्रथ कहा गया है ॥

द्वादशः श्लोकः

विजयस्तस्य सम्भूत्यां ततो धृतिरजायत ।

ततो धृतव्रतस्तस्य सत्कर्माधिरथस्ततः ॥१२॥

पदच्छेद— विजयः तस्य सम्भूत्याम् ततः धृतिः अजायत ।
ततः धृतव्रतः तस्य सत्कर्मा अधिरथः ततः ॥

शब्दार्थ—

विजयः	३.	विजय	ततः	७.	उससे
तस्य	१.	उस जयद्रथ की पत्नी	धृतव्रतः	८.	धृतव्रत
सम्भूत्याम्	२.	सम्भूति से	तस्य	९.	उसका
ततः	४.	उससे	सत्कर्मा	१०.	सत्कर्मा और
धृतिः	५.	धृति	अधिरथः	१२.	अधिरथ हुआ
अजायत ।	६.	उत्पन्न हुआ	ततः ॥	११.	उससे

श्लोकार्थ—उस जयद्रथ की पत्नी सम्भूति से विजय और उससे धृति उत्पन्न हुआ । उससे धृतव्रत, उसका सत्कर्मा और उससे अधिरथ हुआ ॥

त्रयोदशः श्लोकः

वृषसेनः सुतस्तस्य कर्णस्य जगतीपतेः ।
द्रुह्योश्च तनयो बभ्रुः सेतुस्तस्यात्मजस्ततः ॥१४॥

पदच्छेद— वृषसेनः सुतः तस्य कर्णस्य जगती पतेः ।
द्रुह्योः च तनयः बभ्रुः सेतुः तस्य आत्मजः ततः ॥

शब्दार्थ—

वृषसेनः	५.	वृषसेन हुआ	च	६.	और
सुतः	४.	पुत्र	तनयः	८.	पुत्र
तस्य	१.	उस	बभ्रुः	९.	बभ्रु हुआ
कर्णस्य	३.	कर्ण का	सेतुः	१२.	सेतु
जगतीपतेः	२.	राजा	तस्य	१०.	उसका
द्रुह्योः ।	७.	द्रुह्यु का	आत्मजः	११.	पुत्र
			ततः ॥	१४.	उससे

श्लोकार्थ—उस राजा कर्ण का पुत्र वृषसेन हुआ । और द्रुह्यु का पुत्र बभ्रु हुआ । उसका पुत्र सेतु हुआ ॥

चतुर्दशः श्लोकः

योऽसौ गङ्गातटे क्रीडन् मञ्जूषान्तर्गतं शिशुम् ।
कुन्त्यापविद्धं कानीनमनपत्योऽकरोत् सुतम् ॥१३॥

पदच्छेद— यः असौ गङ्गातटे क्रीडन् मञ्जूषा अन्तः गतम् शिशुम् ।
कुन्त्या अपविद्धम् कानीनम् अनपत्यः अकरोत् सुतम् ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जिस	शिशुम्	८.	बालक को प्राप्त किया
असौ	२.	अधिरथ ने	कुन्त्य.	९	कुन्ती के द्वारा
गङ्गातटे	३.	गङ्गा के तट पर	अपविद्धम्	१०.	बहाये गये उस बालक को
क्रीडन्	४.	क्रीडा करते हुए	कानीनम्	११.	कन्यावस्था में उत्पन्न होने से
मञ्जूषा	५.	पिटारी के	अनपत्यः	१२.	सन्तान हीन अधिरथ ने
अन्तः	६.	अन्दर	अकरोत्	१४.	बना लिया
गतम् ।	७.	स्थित	सुतम् ॥	१३.	अपना पुत्र

श्लोकार्थ—जिस अधिरथ ने गङ्गा के तट पर क्रीडा करते हुए पिटारी के अन्दर स्थित बालक को प्राप्त किया । कुन्ती के द्वारा कन्यावस्था में उत्पन्न होने से बहाये गये उस बालक को सन्तान हीन अधिरथ ने अपना पुत्र बना लिया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

आरब्धस्तस्य गान्धारस्तस्य धर्मस्ततो धृतः ।
धृतस्य दुर्मनास्तस्मात् प्रचेताः प्राचेतसं शतम् ॥१५॥

पदच्छेद— आरब्धः तस्य गान्धारः तस्य धर्मः ततः धृतः ।
धृतस्य दुर्मनाः तस्मात् प्रचेताः प्रचेतसम् शतम् ॥

शब्दार्थ—

आरब्धः	१. आरब्ध हुआ	धृतस्य	८. धृत का पुत्र
तस्य	२. उससे	दुर्मनाः	९. दुर्मना
गान्धारः	३. गान्धार	तस्मात्	१०. उसका
तस्य	४. उससे	प्रचेताः	११. प्रचेता तथा
धर्मः	५. धर्म	प्राचेतसम्	१२. प्रचेता के
ततः	६. उसका पुत्र	शतम् ॥	१३. सौ पुत्र हुए
धृतः ।	७. धृत		

श्लोकार्थ—उससे आरब्ध हुआ, उससे गान्धार, उससे धर्म, उसका पुत्र धृत, धृत का पुत्र दुर्मना, उसका प्रचेता तथा प्रचेता के सौ पुत्र हुए ॥

षोडशः श्लोकः

म्लेच्छाधिपतयोऽभूवन्नुदीचीं दिशमाश्रिताः ।
तुर्वसोश्च सुतो वह्निर्वह्नेर्भर्गोऽथ भानुमान् ॥१६॥

पदच्छेद— म्लेच्छ अधिपतयः अभूवन् उदीचीम् दिशम् आश्रिताः ।
तुर्वसोः च सुतः वह्निः वह्नेः भर्गः अथ भानुमान् ॥

शब्दार्थ—

म्लेच्छ	१. म्लेच्छों के	च	७. तथा
अधिपतयः	२. राजा	सुतः	९. पुत्र
अभूवन्	३. हुए और	वह्निः	१०. वह्नि
उदीचीम्	४. उत्तर	वह्नेः	११. वह्नि का पुत्र
दिशम्	५. दिशा में	भर्गः	१२. भर्ग
आश्रिताः	६. रहने लगे	अथ	१३. उससे
तुर्वसोः ।	८. तुर्वसु के	भानुमान् ॥	१४. भानुमान् हुआ

श्लोकार्थ— वे म्लेच्छों के राजा हुए और उत्तर दिशा में रहने लगे । तथा तुर्वसु का पुत्र वह्नि, वह्नि का पुत्र भर्ग और उससे भानुमान् हुआ ॥

सप्तदशः श्लोकः

त्रिभानुस्तत्सुतोऽस्यापि करन्धम उदारधीः ।
मरुतस्तत्सुतोऽपुत्रः पुत्रं पौरवमन्वभूत् ॥१७॥

पदच्छेद— त्रिभानुः तत् सुतः अस्य अपि करन्धमः उदारधीः ।
मरुतः तत् सुतः अपुत्रः पुत्रम् पौरवम् अन्वभूत् ॥

शब्दार्थ—

त्रिभानुः	२.	त्रिभानु	मरुतः	१०.	मरुत हुआ
तत्	१.	उसका	तत्	८.	उसका
सुतः	६.	पुत्र हुआ	सुतः	९.	पुत्र
अस्य	३.	उसके	अपुत्रः	११.	पुत्र हीन मरुत ने
अपि	४.	भी	पुत्रम्	१३.	पुत्र
करन्धमः	७.	करन्धम हुआ	पौरवम्	१२.	पुरुवंशी दुष्यन्त को
उदारधीः ।	५.	उदार बुद्धि वाला	अन्वभूत् ॥	१४.	बना लिया

श्लोकार्थ— उसका त्रिभानु, उसके भी उदार बुद्धिवाला पुत्र करन्धम हुआ, उसका पुत्र मरुत हुआ। पुत्रहीन मरुत ने पुरुवंशी दुष्यन्त को पुत्र बना लिया ॥

अष्टादशः श्लोकः

दुष्यन्तः स पुनर्भेजे स्वं वंशं राज्यकामुकः ।
ययातेर्ज्येष्ठपुत्रस्य यदोर्वंशं नरर्षभ ॥१८॥

पदच्छेद— दुष्यन्तः सः पुनः भेजे स्वम् वंशम् राज्यकामुकः ।
ययातेः ज्येष्ठ पुत्रस्य यदोः वंशम् नरर्षभ ॥

शब्दार्थ—

दुष्यन्तः	३.	दुष्यन्त	राज्यकामुकः	१.	राज्य के इच्छुक
सः	२.	वे	ययातेः	९.	ययाति के
पुनः	४.	फिर	ज्येष्ठ	१०.	बड़े
भेजे	७.	लौट आये	पुत्रस्य	११.	पुत्र
स्वम्	५.	अपने	यदोः	१२.	यदु का
वंशम् ।	६.	वंश में ही	वंशम्	१३.	वंश सुनो
			नरर्षभ ॥	८.	हे मनुष्यों में श्रेष्ठ परीक्षित् अब

श्लोकार्थ— राज्य के इच्छुक वे दुष्यन्त फिर अपने वंश में ही लौट आये। हे मनुष्यों में श्रेष्ठ परीक्षित् ! अब ययाति के बड़े पुत्र यदु का वंश सुनो ॥

एकोनविंशः श्लोकः

वर्णयामि महापुण्यं सर्वपापहरं नृणाम् ।
यदोर्वंशं नरः श्रुत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१९॥

पदच्छेद— वर्णयामि महापुण्यम् सर्वपाप हरम् नृणाम् ।
यदोः वंशम् नरः श्रुत्वा सर्वपापैः विमुच्यते ॥

शब्दार्थ—

वर्णयामि	८.	वर्णन करता हूँ जिसे	यदोः	६.	यदु के
महापुण्यम्	५.	परम पवित्र	वंशम्	७.	वंश का
सर्व	२.	सभी	नरः	१०.	मनुष्य
पाप	३.	पापों का	श्रुत्वा	९.	सुनकर
हरम्	४.	हरण करनेवाला	सर्वपापैः	११.	समस्त पापों से
नृणाम् ।	१.	मनुष्यों के	विमुच्यते ॥	१२.	मुक्त हो जाता है

श्लोकार्थ—मनुष्यों के सभी पापों का हरण करनेवाला परम पवित्र यदु के वंश का वर्णन करता हूँ। जिसे सुनकर मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है ॥

विंशः श्लोकः

यत्रावतीर्णो भगवान् परमात्मा नराकृतिः ।
यदोः सहस्रजित्क्रोष्टा नलो रिपुरिति श्रुताः ॥२०॥

पदच्छेद— यत्र अवतीर्णः भगवान् परमात्मा नर आकृतिः ।
यदो सहस्रजित् क्रोष्टा नलः रिपुः इति श्रुताः ॥

शब्दार्थ—

यत्र	१.	जिस वंश में	यदोः	७.	यदु के
अवतीर्णः	६.	अवतीर्ण हुए थे	सहस्रजित्	८.	सहस्रजित्
भगवान्	३.	भगवान्	क्रोष्टा	९.	क्रोष्टा
परमात्मा	२.	परमात्मा	नलः	१०.	नल और
नर	४.	मनुष्य के	रिपुः	११.	रिपु
आकृतिः ।	५.	रूप में	इति	१२.	ये
			श्रुताः ॥	१३.	प्रसिद्ध पुत्र हुए

श्लोकार्थ—जिस वंश में परमात्मा भगवान् मनुष्य के रूप में अवतीर्ण हुए थे। यदु के सहस्रजित्, क्रोष्टा, नल और रिपु ये प्रसिद्ध पुत्र थे ॥

एकविंशः श्लोकः

चत्वारः सूनवस्तत्र शतजित् प्रथमात्मजः ।
महाहयो वेणुहयो हैहयश्चेति तत्सुताः ॥२१॥

पदच्छेद— चत्वारः सूनवः तत्र शतजित् प्रथम आत्मजः ।
महाहयः वेणुहयः हैहयः च इति तत् सुताः ॥

शब्दार्थ—

चत्वारः	१.	उनके चार	महाहयः	८.	महाहय
सूनवः	२.	पुत्र थे	वेणुहयः	९.	वेणुहय
तत्र	३.	उनमें	हैहयः	११.	हैहय
शतजित्	६.	शतजित्	च	१०.	और
प्रथम	४.	पहले का	इति	१२.	थे
आत्मजः ।	५.	पुत्र	तत्	७.	उसके
			सुताः ॥	१३.	पुत्र थे

श्लोकार्थ—उनके चार पुत्र थे । उनमें पहले का पुत्र शतजित् हुआ । उसके महाहय, वेणुहय, हैहय थे पुत्र थे ॥

द्वाविंशः श्लोकः

धर्मस्तु हैहयसुतो नेत्रः कुन्तेः पिता ततः ।
सोहञ्जिरभवत् कुन्तेर्महिष्मान् भद्रसेनकः ॥२२॥

पदच्छेद— धर्मः तु हैहय सुतः नेत्रः कुन्तेः पिता ततः ।
सोहञ्जिः अभवत् कुन्तेः महिष्मान् भद्रसेनकः ॥

शब्दार्थ—

धर्मः तु	३.	धर्म हुआ	ततः ॥	५.	नेत्र उस
हैहय	१.	हैहय का	सोहञ्जिः	९.	सोहञ्जि
सुतः	२.	पुत्र	अभवत्	१०.	हुआ
नेत्रः	४.	उसका पुत्र नेत्र हुआ	कुन्तेः	८.	कुन्ती से
कुन्तेः	६	कुन्ती का	महिष्मान्	११.	उससे महिष्मान् हुआ
पिता	७	पिता था	भद्रसेनकः ॥	१२.	और उसका पुत्र भद्रसेन था

श्लोकार्थ—हैहय का पुत्र धर्म हुआ । उसका पुत्र नेत्र हुआ । नेत्र उस कुन्ती का पिता था । कुन्ती से सोहञ्जि हुआ । उससे महिष्मान् हुआ और उसका पुत्र भद्रसेन था ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

दुर्मदो भद्रसेनस्य धनकः कृतवीर्यसूः ।
कृताग्निः कृतवर्मा च कृतौजा धनकात्मजाः ॥२३॥

पदच्छेद— दुर्मदः भद्रसेनस्य धनकः कृतवीर्यसूः ।
कृताग्निः कृतवर्मा च कृतौजाः धनक आत्मजाः ॥

शब्दार्थ—

दुर्मदः	२. दुर्मद और	कृतवर्मा	८. कृतवर्मा
भद्रसेनस्य	१. भद्रसेन का पुत्र	च	९. और
धनकः	३. धनक तथा	कृतौजाः	१०. कृतौजा थे
कृतवीर्यसूः	६. कृतवीर्य	धनक	४. धनक के
कृताग्निः ।	७. कृताग्नि	आत्मजाः ॥	५. पुत्र

श्लोकार्थ—भद्रसेन का पुत्र दुर्मद और धनक तथा धनक के पुत्र, कृतवीर्य, कृताग्नि, कृतवर्मा और कृतौजा थे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

अर्जुनः कृतवीर्यस्य सप्तद्वीपेश्वरोऽभवत् ।
दत्तात्रेयाद्धरेरंशात् प्राप्तयोगमहागुणः ॥२४॥

पदच्छेद— अर्जुनः कृतवीर्यस्य सप्तद्वीप ईश्वरः अभवत् ।
दत्तात्रेयात् हरेः अंशात् प्राप्तयोग महागुणः ॥

शब्दार्थ—

अर्जुनः	२. अर्जुन	दत्तात्रेयात्	८. दत्तात्रेय से
कृतवीर्यस्य	१. कृतवीर्य का पुत्र	हरेः	६. श्री हरि के
सप्तद्वीप	३. सातों द्वीपों का	अंशात्	७. अंशावतार
ईश्वरः	४. स्वामी	प्राप्तयोग	९. योग विद्या और
अभवत् ।	५. हुआ (जिसने)	महागुणः ॥	१०. अणिमादि सिद्धियों को प्राप्त कर लिया था

श्लोकार्थ—कृतवीर्य का पुत्र अर्जुन सातों द्वीपों का स्वामी हुआ । जिसने श्री हरि के अंशावतार दत्तात्रेय से योगविद्या अणिमादि सिद्धियों को प्राप्त कर लिया था ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

न नूनं कार्तवीर्यस्य गतिं यास्यन्ति पार्थिवाः ।
यज्ञदानतपोयोगश्रुतवीर्यजयादिभिः ॥२५॥

पदच्छेद— न नूनम् कार्तवीर्यस्य गतिम् यास्यन्ति पार्थिवाः ।
यज्ञ दान तपः योग श्रुतवीर्य जय आदिभिः ॥

शब्दार्थ——

न नूनम्	१०. नहीं निश्चित रूप से	यज्ञ दान	१. यज्ञ-दान
कार्तवीर्यस्य	७. कार्तवीर्य अर्जुन की	तपः योग	२. तपस्या योग
गतिम्	८. बराबरी को	श्रुतवीर्य	३. शास्त्र-पराक्रम और
यास्यन्ति	११. प्राप्त कर सकेंगे	जय	४. विजय
पार्थिवाः ।	६. राजा लोग	आदिभिः ॥	५. आदि गुणों में

श्लोकार्थ——यज्ञ, दान, तपस्या, योगशास्त्र, पराक्रम और विजय आदि गुणों में राजा लोग कार्तवीर्य अर्जुन की बराबरी को निश्चित रूप से नहीं प्राप्त कर सकेंगे ॥

षड्विंशः श्लोकः

पञ्चाशीतिसहस्राणि ह्यव्याहतबलः समाः ।
अनष्टवित्तस्मरणो बुभुजेऽक्षय्यषड्वसु ॥२६॥

पदच्छेद— पञ्चाशीति सहस्राणि हि अव्याहत बलः समाः ।
अनष्ट वित्त स्मरणः बुभुजे अक्षय्य षड् वसु ॥

शब्दार्थ —

पञ्चाशीति	७. पचासी	अनष्ट	४. अक्षय
सहस्राणि	८. हजार	वित्त	५. धन एवम्
हि	१. क्योंकि	स्मरणः	६. स्मरण शक्ति वाला
अव्याहत	२. अक्षय	बुभुजे	१३. भोग करता रहा
बलः	३. बल	अक्षय्य	१२. अक्षय विषयों का
समाः ।	९. वर्षों तक	षड्	१०. छहों
		वसु ॥	११. इन्द्रियों से

श्लोकार्थ——क्योंकि अक्षय बल, अक्षय धन एवम् स्मरण शक्ति वाला सहस्रार्जुन पचासी हजार वर्षों तक छहों इन्द्रियों से अक्षय विषयो का भोग करता रहा ॥

सप्तविंशः श्लोकः

तस्य पुत्रसहस्रेषु पञ्चैवोर्वरिता मृधे ।
जयध्वजः शूरसेनो वृषभो मधुरूर्जितः ॥२७॥

पदच्छेद— तस्य पुत्र सहस्रेषु पञ्च एव उर्वरिता मृधे ।
जयध्वजः शूरसेनः वृषभः मधुः ऊर्जितः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१. उसके	जयध्वजः	७. जयध्वज
पुत्र	३. पुत्रों में से	शूरसेनः	८. शूरसेन
सहस्रेषु	२. हजार	वृषभः	९. वृषभ
पञ्च एव	४. पाँच ही पुत्र	मधुः	१०. मधु और
उर्वरिता	६. बचे थे वे	ऊर्जितः ॥	११. ऊर्जित नाम के
मृधे ।	५ युद्ध में		

श्लोकार्थ—उसके हजार पुत्रों में से पाँच ही पुत्र युद्ध में बचे थे । वे जयध्वज, शूरसेन, वृषभ, मधु और ऊर्जित नाम वाले थे ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

जयध्वजात् तालजङ्घस्तस्य पुत्रशतं त्वभूत् ।
क्षत्रं यत् तालजङ्घाख्यमौर्वतेजोपसंहृतम् ॥२८॥

पदच्छेद— जयध्वजात् तालजङ्घः तस्य पुत्र शतम् तु अभूत् ।
क्षत्रम् यत् तालजङ्घ आख्यम् और्व तेजः उपसंहृतम् ॥

शब्दार्थ—

जयध्वजात्	१. जयध्वज से	क्षत्रम्	१०. क्षत्रिय (कहलाये)
तालजङ्घः	२. तालजङ्घ हुआ	यत्	७. जो
तस्य	३. उसके	तालजङ्घ	८. तालजङ्घ
पुत्र	५. पुत्र	आख्यम्	९. नामक
शतम् तु	४. सौ	और्व	११. और्व मुनि के
अभूत् ।	६. हुए	तेजः	१२. तेज से उनका
		उपसंहृतम् ॥	१३. संहार हो गया

श्लोकार्थ—जयध्वज से तालजङ्घ हुआ । उसके सौ पुत्र हुए । जो तालजङ्घ नामक क्षत्रिय कहलाये । तथा और्व मुनि के तेज से उनका संहार हो गया ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

तेषां ज्येष्ठो वीतिहोत्रो वृष्णिः पुत्रो मधोः स्मृतः ।

तस्य पुत्रशतं त्वासीद् वृष्णिज्येष्ठं यतः कुलम् ॥२९॥

पदच्छेद— तेषाम् ज्येष्ठ वीतिहोत्रः वृष्णिः पुत्रः मधोः स्मृतः ।

तस्य पुत्र शतम् तु आसीत् वृष्णि ज्येष्ठम् यतः कुलम् ॥

शब्दार्थ—

तेषाम्	१.	उनमें	तस्य	८.	उस मधु के
ज्येष्ठः	२.	सबसे छोटा	पुत्र	१०.	पुत्र
वीतिहोत्रः	३.	वीतिहोत्र था (उसका पुत्र मधु हुआ)	शतम्	९.	सौ
वृष्णिः	६.	वृष्णि	तु आसीत्	११.	थे
पुत्रः	५.	पुत्र	वृष्णि	१३.	वृष्णि था
मधोः	४.	मधु का	ज्येष्ठम्	१२.	उसमें सबसे बड़ा
स्मृतः ।	७.	कहलाया	यतः	१४.	जिससे
			कुलम् ॥	१५.	वंश चला

श्लोकार्थ—उनमें सबसे बड़ा वीतिहोत्र था । उस मधु का पुत्र वृष्णि कहलाया । उस मधु के सौ पुत्र थे । उनमें सबसे बड़ा वृष्णि था जिससे वंश चला ॥

त्रिंशः श्लोकः

माधवा वृष्णयो राजन् यादवाश्चेति संज्ञिताः ।

यदुपुत्रस्य च क्रोष्टोः पुत्रो वृजिनवांस्ततः ॥३०॥

पदच्छेद— माधवः वृष्णयः राजन् यादवाः च इति संज्ञिताः ।

यदु पुत्रस्य च क्रोष्टोः पुत्रः वृजिनवान् ततः ॥

शब्दार्थ—

माधवः	२.	मधु के पुत्र माधव हुए	यदु	८.	यदु का
वृष्णयः	३.	वृष्णि के पुत्र वार्ष्णेय तथा	पुत्रस्य	९.	पुत्र
राजन्	१.	हे राजन् !	च	७.	और
यादवाः	४.	यदु के यादव	क्रोष्टोः	१०.	क्रोष्टु था
च इति	५.	इस	पुत्रः	१२.	पुत्र
संज्ञिताः ।	६.	नाम से विख्यात हुए	वृजिनवान्	१३.	वृजिनवान्
			ततः ॥	११.	उसका

श्लोकार्थ—हे राजन् ! मधु के पुत्र माधव हुए । वृष्णि के पुत्र वार्ष्णेय तथा यदु के पुत्र यादव इस नाम से विख्यात हुए । और यदु का पुत्र क्रोष्टु था । उसका पुत्र वृजिनवान् हुआ ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

श्वाहिस्ततो रुशेकुर्वै तस्य चित्ररथस्ततः ।
शशबिन्दुर्महायोगी महाभोजो महानभूत् ॥३१॥

पदच्छेद— श्वाहिः ततः रुशेकुः वै तस्य चित्ररथः ततः ।
शशबिन्दुः महायोगी महाभोजः महान् अभूत् ॥

शब्दार्थ—

श्वाहिः	२. श्वाहि उससे	शशबिन्दुः	१०. शशबिन्दु
ततः	१. उस वृजिनवान् से	महायोगी	७. महायोगी
रुशेकुः वै	३. रुशेकु	महाभोजः	८. महाभोजी और
तस्य	४. उससे महान्	महान्	९. महान् पराक्रमी
चित्ररथः	५. चित्ररथ	अभूत् ॥	११. हुआ
ततः ।	६. उससे		

श्लोकार्थ— उस वृजिनवान् से श्वाहि, उससे रुशेकु, उससे चित्ररथ, उससे महायोगी, महाभोज और महान् पराक्रमी शशबिन्दु हुआ ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

चतुर्दशमहारत्नश्चक्रवर्त्यपराजितः ।
तस्य पत्नीसहस्राणां दशानां सुमहायशाः ॥३२॥

पदच्छेद— चतुर्दश महारत्नः चक्रवर्ती अपराजितः ।
तस्य पत्नी सहस्राणाम् दशानाम् सुमहायशाः ॥

शब्दार्थ—

चतुर्दश	१. वह शशबिन्दु चौदह	तस्य	६. उसका
महारत्नः	२. रत्नों का स्वामी	पत्नी	८. पत्नियों से
चक्रवर्ती	३. चक्रवर्ती	सहस्राणाम्	९. हजार
अपराजितः ।	४. और अजेय था	दशानाम्	७. दश
		सुमहायशाः ॥	१०. महायशस्वी पुत्र हुए

श्लोकार्थ— वह शशबिन्दु चौदह रत्नों का स्वामी, चक्रवर्ती और अजेय था। उसकी दश हजार पत्नियों से महायशस्वी पुत्र हुए ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

दशलक्षसहस्राणि पुत्राणां तास्वजीजनत् ।
तेषां तु षट्प्रधानानां पृथुश्रवस आत्मजः ।।३३।।

पदच्छेद— दशलक्ष सहस्राणि पुत्राणाम् तासु अजीजनत् ।
तेषाम् तु षट् प्रधानानाम् पृथु श्रवसः आत्मजः ।।

शब्दार्थ—

दशलक्ष	२. दस लाख (सौ करोड़)	तेषाम्	६.	उन पुत्रों में
सहस्राणि	३. हजार	तु षट	८.	छः
पुत्राणाम्	४. पुत्रों को	प्रधानानाम्	९.	प्रधान
तासु	१. उन पत्नियों से	पृथुश्रवसः	७.	पृथुश्रवा आदि
अजीजनत् ।	५. उत्पन्न किया	आत्मजाः ।।	१०.	पुत्र थे

श्लोकार्थ—उन पत्नियों से दश लाख हजार (सौ करोड़) पुत्रों को उत्पन्न किया। उन पुत्रों में पृथुश्रवा आदि छः प्रधान पुत्र थे ।।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

धर्मो नामोशना तस्य हयमेधशतस्य याट् ।
तत्सुतो रुचकस्तस्य पञ्चासन्नात्मजाः शृणु ।।३४।।

पदच्छेद— धर्मः नाम उशनाः तस्य हयमेध शतस्य याट् ।
तत् सुतः रुचकः तस्य पञ्च आसन् आत्मजाः शृणु ।।

शब्दार्थ—

धर्मः	१. पृथुश्रवा का धर्म	तत्	८.	उसका
नाम	२. नाम का पुत्र हुआ।	सुतः	९.	पुत्र हुआ
उशनाः	४. उशना था उसने	रुचकः	१०.	रुचक
तस्य	३. उसका पुत्र	तस्य	११.	उसके
हयमेध	६. अश्वमेध यज्ञ	पञ्च आसन्	१२.	पांच हुए
शतस्य	५. सौ	आत्मजाः	१३.	पुत्र
याट् ।	७. किये	शृणु ।।	१४.	उनको सुनो

श्लोकार्थ—पृथुश्रवा का धर्म नामक पुत्र हुआ। उसका पुत्र उशना था। उसने सौ अश्वमेध यज्ञ किये। उसका पुत्र हुआ रुचक। उसके पांच पुत्र हुए, उनको सुनो ।।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

पुरुजिद्रुक्मरुक्मेषुपृथुज्यामघसंज्ञिताः ।
ज्यामघस्त्वप्रजोऽप्यन्यां भार्यां शैव्यापतिर्भयात् ॥३५॥

पदच्छेद— पुरुजित् रुक्म रुक्मेषु पृथु ज्यामघ संज्ञिताः ।
ज्यामघः तु अप्रजः अपि अन्याम् भार्याम् शैव्यापतिः भयात् ॥

शब्दार्थ—

पुरुजित्	१.	पुरुजित्	ज्यामघः तु	७.	ज्यामघ
रुक्म	२.	रुक्म	अप्रजः	८	सन्तान हीन होने पर
रुक्मेषु	३.	रुक्मेषु	अपि	१३.	भी
पृथु	४.	पृथु और	अन्याम्	१२.	दूसरी
ज्यामघ	५.	ज्यामघ इस	भार्याम्	१०	पत्नी ने (नहीं की)
संज्ञिताः	६.	नाम के थे	शैव्यापतिः	९.	शैव्या के पति ज्यामघ ने उस
			भयात् ॥	११.	पत्नी के भय से

श्लोकार्थ—पुरुजित, रुक्म, रुक्मेषु, पृथु और ज्यामघ इस नाम के थे। ज्यामघ सन्तानहीन था। शैव्या के पति ज्यामघ ने उस पत्नी के भय से दूसरी पत्नी नहीं की ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

नाविन्दच्छत्रुभवनाद् भोज्यां कन्यामहारषीत् ।
रथस्थां तां निरीक्ष्याह शैव्या पतिममर्षिता ॥३६॥

पदच्छेद— न अविन्दत् शत्रु भवनात् भोज्याम् कन्याम् अहारषीत् ।
रथस्थाम् ताम् निरीक्ष्य आह शैव्या पतिम् अमर्षिता ॥

शब्दार्थ—

न अविन्दत्	१.	नहीं प्राप्त की	रथस्थाम्	७.	रथ पर बैठी हुई
शत्रु	२.	शत्रु के	ताम्	८.	उसे
भवनात्	३.	घर से	निरीक्ष्य आह	९.	देखकर बोली
भोज्याम्	४.	भोज्या नाम की	शैव्या	१०.	शैव्या
कन्याम्	५.	कन्या को	पतिम्	११.	पति से
अहारषीत् ।	६.	हर लाया	अमर्षिता ॥	१२.	क्रोधित होकर

श्लोकार्थ—(दूसरी पत्नी नहीं प्राप्त की) वह शत्रु के घर से भोज्या नाम की कन्या को हर लाया। रथ पर बैठी हुई उसे देखकर शैव्या क्रोधित होकर पति से बोली ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

केयं कुहक मत्स्थानं रथमारोपितेति वै ।
स्नुषा तवेत्यभिहिते स्मयन्ती पतिमब्रवीत् ।।३७।।

पदच्छेद— का इयम् कुहक मत् स्थानम् रथम् आरोपिता इति वै ।
स्नुषा तव इति अभिहिते स्मयन्ती पतिम् अब्रवीत् ।।

शब्दार्थ—

का इयम्	२. ३.	कौन है यह	स्नुषा	१०.	पुत्रवधू है
कुहक	१.	हे धूर्त	तव	९.	यह तुम्हारी
मत्स्थानम्	४.	जिसे मेरे स्थान पर	इति	११.	ऐसा
रथम्	५.	रथ पर	अभिहिते	१२.	कहने पर वह
आरोपिता	६.	बैठाया है	स्मयन्ती	१३.	मुसकराती हुई
इति	७.	यह	पतिम्	१४.	पति से
वै ।	८.	कहने पर (ज्यामघ ने कहा)	अब्रवीत् ।।	१५.	बोली

श्लोकार्थ—हे धूर्त ! यह कौन है ? जिसे मेरे स्थान पर रथ पर बैठाया है । यह कहने पर ज्यामघ ने कहा । यह तुम्हारी पुत्रवधू है । ऐसा कहने पर वह मुसकराती हुई पति से बोली ।।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

अहं बन्ध्यासपत्नी च स्नुषा मे युज्यते कथम् ।
जनयिष्यसि यं राज्ञि तस्येयमुपयुज्यते ।।३८।।

पदच्छेद— अहम् बन्ध्या असपत्नी च स्नुषा मे युज्यते कथम् ।
जनयिष्यसि यम् राज्ञि तस्य इयम् उपयुज्यते ।।

शब्दार्थ—

अहम्	१.	मैं	कथम्	५.	फिर यह कैसे
बन्ध्या	२.	बन्ध्या हूँ	जनयिष्यसि	११.	उत्पन्न करोगी
असपत्नी	४.	सौत से रहित हूँ ।	यम्	१०.	जिस पुत्र को तुम
च	३.	और	राज्ञि	९.	हे रानी
स्नुषा	७.	पुत्रवधू	तस्य	१२.	उसकी
मे	६.	मेरी	इयम्	१३.	यह
युज्यते ।	८.	हो सकती है (तब ज्यामघ ने कहा)	उपयुज्यते ।।	१४.	पत्नी होगी

श्लोकार्थ—मैं बन्ध्या हूँ और सौत से रहित हूँ । फिर यह कैसे पुत्रवधू हो सकती है । तब ज्यामघ ने कहा—हे रानी ! जिस पुत्र को तुम उत्पन्न करोगी, उसकी यह पत्नी होगी ।।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

अन्वमोदन्त तद्विश्वेदेवाः पितर एव च ।
शैब्या गर्भमधात् काले कुमारं सुषुवे शुभम् ।
स विदर्भ इति प्रोक्त उपयेमे स्नुषां सतीम् ॥३९॥

पदच्छेद— अनु अमोदन्त तत् विश्वेदेवाः पितरः एव च ।
शैब्या गर्भम् अधात् काले कुमारम् सुषुवे शुभम् ।
सः विदर्भः इति प्रोक्तः उपयेमे स्नुषाम् सतीम् ॥

शब्दार्थ—

अनुअमोदन्त	५.	अनुमोदन किया	कुमारम्	११.	कुमार को
तत्	१.	उसके वचन का	सुषुवे	१२.	उत्पन्न किया
विश्वेदेवाः	२.	विश्वे देव	शुभम्	१०.	सुन्दर
पितरः	४.	पितरों ने	सः	१३.	वह कुमार
एव च	३.	और	विदर्भः	१४.	विदर्भ
शैब्या	६.	तब शैब्या ने	इति	१५.	इस नाम से
गर्भम्	८.	गर्भ को	प्रोक्तः	१६.	कहा जाने लगा और
अधात्	९.	धारण किया और	उपयेमे	१९.	विवाह किया
काले	७.	समय पर	स्नुषाम् ।	१७.	पुत्रवधू
			सतीम् ॥	१८.	साध्वी भोज्या से उसने

श्लोकार्थ—उसके वचन का विश्वेदेव और पितरों ने अनुमोदन किया । तब शैब्या ने गर्भ को धारण किया और सुन्दर कुमार को उत्पन्न किया । वह कुमार विदर्भ इस नाम से कहा जाने लगा और पुत्रवधू भोज्या से उसने विवाह किया ॥

**श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां नवमे स्कन्धे
यदुवंशानुवर्णने त्रयोविंशोऽध्यायः ॥२३॥**



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

नवमः स्कन्धः

चतुर्विंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— तस्यां विदर्भोऽजनयत् पुत्रौ नाम्ना कुशक्रथौ ।
तृतीयं रोमपादं च विदर्भकुलनन्दनम् ॥१॥

पदच्छेद— तस्याम् विदर्भः अजनयत् पुत्रौ नाम्ना कुश क्रथौ ।
तृतीयम् रोमपादम् च विदर्भ कुल नन्दनम् ॥

शब्दार्थ—

तस्याम्	२.	उस पत्नी में	क्रथ	४.	क्रथ
विदर्भः	१.	विदर्भ ने	तृतीयम्	९.	तीसरा पुत्र
अजनयत्	७.	उत्पन्न किया	रोमपादम्	१०.	रोमपाद था जो
पुत्रौ	६.	दो पुत्रों को	च	८.	और
नाम्ना	५.	नामक	विदर्भ	११.	विदर्भ
कुश ।	३.	कुश और	कुल	१२.	वंश में
			नन्दनम् ॥	१३.	श्रेष्ठ पुरुष हुआ

श्लोकार्थ—राजा विदर्भ ने उस पत्नी में कुश और क्रथ नामक दो पुत्रों को उत्पन्न किया । और तीसरा पुत्र रोमपाद था जो विदर्भ वंश में श्रेष्ठ पुरुष हुआ ॥

द्वितीयः श्लोकः

रोमपादसुतो बभ्रुर्बभ्रोः कृतिरजायत ।
उशिकस्तत्सुतस्माच्चेदिश्चैद्यादयो नृप ॥२॥

पदच्छेद— रोमपाद सुतः बभ्रुः बभ्रोः कृतिः अजायत ।
उशिकः तत् सुतः तस्मात् चेदिःचैद्य आदयः नृप ॥

शब्दार्थ—

रोमपाद	२.	रोमपाद का	तत्	८.	उसका
सुतः	३.	पुत्र	सुतः	९.	पुत्र
बभ्रुः	४.	बभ्रु हुआ	तस्मात्	११.	उससे
बभ्रोः	५.	बभ्रु से	चेदिः	१२.	चेदि
कृतिः	६.	कृति नामक पुत्र	चैद्य	१३.	चेदि के वंशज चैद्य
अजायत ।	७.	उत्पन्न हुआ	आदयः	१४.	आदि (कहलाये)
उशिकः	१०.	उशिक	नृप ।	१.	हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! रोमपाद का पुत्र बभ्रु हुआ । बभ्रु से कृति नामक पुत्र उत्पन्न हुआ । उसका पुत्र उशिक, उससे चेदि, चेदि के वंशज चैद्य आदि कहलाये ॥

तृतीयः श्लोकः

क्रथस्य कुन्तिः पुत्रोऽभूद् धृष्टिस्तस्याथ निर्वृतिः ।
ततो दशार्हो नाम्नाभूत् तस्य व्योमः सुतस्ततः ॥३॥

पदच्छेद— क्रथस्य कुन्तिः पुत्रः अभूत् धृष्टिः तस्य अथ निर्वृतिः ।
ततः दशार्हः नाम्ना अभूत् तस्य व्योमः सुतः ततः ॥

शब्दार्थ—

क्रथस्य	१.	क्रथ का	ततः	९.	जिससे
कुन्तिः	३.	कुन्ति	दशार्हः	१०.	दशार्ह
पुत्रः	२.	पुत्र	नाम्ना	११	नामक पुत्र
अभूत्	४.	हुआ	अभूत्	१२.	हुआ
धृष्टिः	६.	धृष्टि	तस्य	१३.	उसका
तस्य	५.	उसका पुत्र	व्योमः	१५.	व्योम हुआ
अथ	७.	उसका	सुतः	१४.	पुत्र
निर्वृतिः ।	८	निर्वृति	ततः ॥	१६.	उससे

श्लोकार्थ—क्रथ का पुत्र कुन्ति हुआ, उसका पुत्र धृष्टि, उसका निर्वृति, उससे दशार्ह नामक पुत्र हुआ । उसका पुत्र व्योम हुआ ॥

चतुर्थः श्लोकः

जीमूतो विकृतिस्तस्य यस्य भीमरथः सुतः ।
ततो नवरथः पुत्रो जातो दशरथस्ततः ॥४॥

पदच्छेद— जीमूतः विकृतिः तस्य यस्य भीमरथः सुतः ।
ततः नवरथः पुत्रः जातः दशरथः ततः ॥

शब्दार्थ—

जीमूतः	१.	जीमूत	ततः	७.	उससे
विकृतिः	३.	विकृति	नवरथः	८.	नवरथ
तस्य	२.	उससे	पुत्रः	९.	पुत्र
यस्य	४.	जिसका	जातः	१०.	उत्पन्न हुआ
भीमरथः	६.	भीमरथ हुआ	दशरथः	१२.	दशरथ हुआ
सुतः ।	५.	पुत्र	ततः ॥	११.	उसका पुत्र

श्लोकार्थ—और उसका जीमूत, उससे विकृति, जिसका पुत्र भीमरथ हुआ । उससे नवरथ पुत्र उत्पन्न हुआ । उसका पुत्र दशरथ हुआ ॥

पञ्चमः श्लोकः

करम्भिः शकुनेः पुत्रो देवरातस्तदात्मजः ।
देवक्षत्रस्ततस्तस्य मधुः कुरुवशादनुः ॥५॥

पदच्छेद— करम्भिः शकुनेः पुत्रः देवरातः तत् आत्मजः ।
देवक्षत्रः ततः तस्य मधुः कुरु वशात् अनुः ॥

शब्दार्थ—

करम्भिः	३. करम्भि हुआ	देवक्षत्रः	८. देवक्षत्र
शकुनेः	१. शकुनि का	ततः	७. उससे
पुत्रः	२. पुत्र	तस्य	९. उससे
देवरातः	६. देवरात	मधुः	१०. मधु
तत्	४. उसका	कुरुवशात्	११. मधु का कुरुवश और
आत्मजः ।	५. पुत्र	अनुः ।	१२. उससे अनु हुआ

श्लोकार्थ—शकुनि का पुत्र करम्भि हुआ । उसका पुत्र देवरात, उससे देवसेना, उससे मधु, मधु का कुरुवश और उससे अनु हुआ ॥

षष्ठः श्लोकः

पुरुहोत्रस्त्वनोः पुत्रस्तस्यायुः सात्वतस्ततः ।
भजमानो भजिर्दिव्यो वृष्णिर्देवावृधोऽन्धकः ॥६॥

पदच्छेद— पुरुहोत्रः तु अनोः पुत्रः तस्य आयु सात्वतः ततः ।
भजमानः भजिःदिव्यः वृष्णिः देवावृधः अन्धकः ॥

शब्दार्थं—

पुरुहोत्रः	३. पुरुहोत्र	ततः	७. उससे
तु अनोः	१. अनु का	भजमानः	८. भजमान
पुत्रः	२. पुत्र	भजिःदिव्यः	९. भजि, दिव्य
तस्य	४. उससे	वृष्णिः	१०. वृष्णि
आयुः	५. आयु उससे	देवावृधः	११ देवावृध और
सात्वतः ।	६. सात्वत	अन्धकः	१२. अन्धक हुए

श्लोकार्थ—अनु का पुत्र पुरुहोत्र, उससे आयु, उससे सात्वत, उससे भजमान, भजि, दिव्य, वृष्णि, देवावृध और अन्धक हुए ॥

सप्तमः श्लोकः

सात्वतस्य सुताः सप्त महाभोजश्च मारिष ।
भजमानस्य निम्लोचिः किङ्कणो धृष्टिरेव च ॥७॥

पदच्छेद— सात्वतस्य सुताः सप्त महाभोजः च मारिष ।
भजमानस्य निम्लोचिः किङ्कणः धृष्टिः एव च ॥

शब्दार्थ—

सात्वतस्य	२.	सात्वत के	भजमानस्य	७.	भजमान के पुत्र
सुताः	४.	पुत्र हुए	निम्लोचिः	८.	निम्लोचि
सप्त	३.	सात	किङ्कणः	९.	किङ्कण
महाभोजः	६.	महाभोज भी है	धृष्टिः	११.	धृष्टि
च	५.	और उनमें	एव	१२.	भी हुए
मारिष ।	१.	हे परीक्षित् !	च ॥	१०.	और

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! सात्वत के सात पुत्र हुए । और उनमें महाभोज भी है । भजमान के पुत्र निम्लोचि, किङ्कण और धृष्टि भी हुए ॥

अष्टमः श्लोकः

एकस्यामात्मजाः पत्न्यामन्यस्यां च त्रयः सुताः ।
शताजिच्च सहस्राजिदयुताजिदिति प्रभो ॥८॥

पदच्छेद— एकस्याम् आत्मजाः पत्न्याम् अन्यस्याम् च त्रयः सुताः ।
शताजित् च सहस्राजित् अयुताजित् इति प्रभो ॥

शब्दार्थ—

एकस्याम्	२.	एक	सुताः	८.	पुत्र हुए जो
आत्मजाः	४.	सात पुत्र हुए	शताजित्	९.	शताजित्
पत्न्याम्	३.	पत्नी से	सहस्राजित्	१०.	सहस्राजित् और
अन्यस्याम्	६.	दूसरी पत्नी से	अयुताजित्	११.	अयुताजित्
च	५.	और	इति	१२.	नाम के थे
त्रयः ।	७.	तीन	प्रभो ॥	१.	हे राजन्

श्लोकार्थ—हे राजन् ! एक पत्नी से सात पुत्र हुए । और दूसरी पत्नी से तीन पुत्र हुए जो शताजित्, सहस्राजित् और अयुताजित् नाम के थे ॥

नवमः श्लोकः

बभ्रुर्देवावृधसुतस्तयोः श्लोकौ पठन्त्यमू ।
यथैव शृणुमो दूरात् सम्पश्यामस्तथान्तिकात् ॥९॥

पदच्छेद— बभ्रुः देवावृध सुतः तयोः श्लोकौ पठन्ति अमू ।
यथा एव शृणुमः दूरात् सम्पश्यामः तथा अन्तिकात् ॥

शब्दार्थः—

बभ्रुः	१. बभ्रु	यथा एव	८. जैसा ही
देवावृध	२. देवावृध का	शृणुमः	१०. सुना है
सुतः	३. पुत्र हुआ	दूरात्	९. दूर से
तयोः	४. उन दोनों के सम्बन्ध में	सम्पश्यामः	१३. देखते हैं
श्लोकौ	६. श्लोक	तथा	११. वैसा ही
पठन्ति	७. पढ़ते हैं कि	अन्तिकात् ।	१२. समीप से
अमू ॥	५. ये दो		

श्लोकार्थ—बभ्रु, देवावृध का पुत्र हुआ । उन दोनों के सम्बन्ध में ये दो श्लोक पढ़ते हैं कि जैसा दूर से सुना है, वैसा ही समीप से देखते हैं ॥

दशमः श्लोकः

बभ्रुः श्रेष्ठो मनुष्याणां देवैर्देवावृधः समः ।
पुरुषाः पञ्चषष्टिश्च षट् सहस्राणि चाष्ट च ॥१०॥

पदच्छेद— बभ्रुः श्रेष्ठः मनुष्याणाम् देवैः देवावृधः समः ।
पुरुषः पञ्चषष्टिः च षट् सहस्राणि च अष्ट च ॥

शब्दार्थ—

बभ्रुः	१. बभ्रु	पुरुषाः	११. मनुष्य (मोक्ष को प्राप्त हुए)
श्रेष्ठः	३. श्रेष्ठ है और	पञ्चषष्टिः	१०. पैंसठ
मनुष्याणाम्	२. मनुष्यों में	च	और
देवैः	५. देवताओं के	षट	८. छह
देवावृधः	४. देवावृध	सहस्राणि	९. हजार
समः ।	६. समान है (क्योंकि उन दोनों से)	च अष्ट च ॥	७. और आठ हजार

श्लोकार्थ—बभ्रु मनुष्यों में श्रेष्ठ है । और देवावृध देवताओं के समान है क्योंकि उन दोनों से चौदह हजार और पैंसठ (१४०६५) मनुष्य मोक्ष को प्राप्त हुए हैं ॥

एकादशः श्लोकः

येऽमृतत्वमनुप्राप्ता बभ्रोर्देवावृधादपि ।
महाभोजोऽपि धर्मात्मा भोजा आसंस्तदन्वये ॥११॥

पदच्छेद— ये अमृतत्वम् अनुप्राप्ताः बभ्रोः देवावृधात् अपि ।
महाभोजाः अपि धर्मात्मा भोजाः आसन् तत् अन्वये ॥

शब्दार्थ—

ये	१.	जो पुरुष	महाभोजः	७.	महाभोज
अमृतत्वम्	५.	मोक्ष को	अपि	८.	भी
अनुप्राप्तः	६.	प्राप्त हुए	धर्मात्मा	९.	धर्मात्मा था
बभ्रोः	२.	बभ्रु और	भोजाः	११.	भोजवंशी राजा
देवावृधात्	३.	देवावृध से	आसन्	१२.	हुए
अपि ।	४.	भी (उपदेश लेकर)	तत् अन्वये ॥	१०.	उसके वंश में

श्लोकार्थ—जो पुरुष बभ्रु और देवावृध से भी आदेश लेकर मोक्ष को प्राप्त हुए । (उसकी संख्या १४०६५ है) सात्वत-पुत्र महाभोज भी धर्मात्मा था । उसके वंशमें भोजवंशी राजा हुए ॥

द्वादशः श्लोकः

वृष्णेः सुमित्रः पुत्रोऽभूद् युधाजिच्च परंतप ।
शिनिस्तस्यानमित्रश्च निम्नोऽभूदनमित्रतः ॥१२॥

पदच्छेद— वृष्णेः सुमित्रः पुत्रः अभूत् युधाजित् च परंतप ।
शिनिः तस्य अनमित्रः च निम्नः अभूत् अनमित्रतः ॥

शब्दार्थ—

वृष्णेः	२.	वृष्णि का	शिनिः	९.	शिनि और
सुमित्रः	४.	सुमित्र	तस्य	८.	उसके
पुत्रः	३.	पुत्र	अनमित्र	१०.	अनमित्र
अभूत्	७.	हुआ	च	११.	और
युधाजित्	६.	युधाजित्	निम्नः	१३.	निम्न
च	५.	और	अभूत्	१४.	हुआ
परंतप ।	१.	हे परीक्षित् !	अनमित्रतः ॥	१२.	अनमित्र से

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! वृष्णि का पुत्र सुमित्र और युधाजित् हुआ । उसके शिनि एवं अनमित्र हुए और अनमित्र से निम्न हुआ ॥

त्रयोदशः श्लोकः

सत्राजितः प्रसेनश्च निम्नस्याप्यासतुः सुतौ ।
अनमित्रसुतो योऽन्यः शिनिस्तस्याथ सत्यकः ॥१३॥

पदच्छेद— सत्राजितः प्रसेनः च निम्नस्य अपि आसतुः सुतौ ।
अनमित्र सुतः यः अन्यः शिनिः तस्य अथ सत्यकः ॥

शब्दार्थ—

सत्राजितः	३.	सत्राजित	सुतः	१०.	पुत्र
प्रसेनः च	५.	प्रसेन और	यः	११.	जो
निम्नस्य	१.	निम्न के	अन्यः	९.	दूसरा
अपि	२.	भी	शिनिः	१२.	शिनि था
आसतुः	७.	थे	तस्य	१३.	उससे
सुतौ ।	६.	दो पुत्र	अथ	१४.	बाद में
अनमित्र	८.	अनमित्र का	सत्यकः ॥	१५.	सत्यक उत्पन्न हुआ

श्लोकार्थ—निम्न के भी सत्राजित् और प्रसेन दो पुत्र थे। अनमित्र का दूसरा पुत्र जो शिनि था। उससे बाद में सत्यक उत्पन्न हुआ ॥

चतुर्दशः श्लोकः

युयुधानः सात्यकिर्वै जयस्तस्य कुणिस्ततः ।
युगन्धरोऽनमित्रस्य वृष्णिः पुत्रोऽपरस्ततः ॥१४॥

पदच्छेद— युयुधानः सात्यकिः वै जयः तस्य कुणिः ततः ।
युगन्धरः अनमित्रस्य वृष्णिः पुत्रः अपरः ततः ॥

शब्दार्थ—

युयुधानः	२.	युयुधान था	युगन्धरः	७.	कुणि से युगन्धर हुआ
सात्यकिः वै	१.	सत्यक का पुत्र	अनमित्रस्य	९.	अनमित्र का
जयः	४.	जय और	वृष्णिः	१२.	वृष्णि था
तस्य	३.	उसका पुत्र	पुत्रः	११.	पुत्र
कुणिः	६.	कुणि हुआ	अपरः ।	१०.	दूसरा
ततः	५.	उससे	ततः ।	८.	उस

श्लोकार्थ—सत्यक का पुत्र युयुधान था। उसका पुत्र जय और उससे कुणि हुआ। कुणि से युगन्धर हुआ। अनमित्र का दूसरा पुत्र वृष्णि था ॥

पञ्चदशः श्लोकः

श्वफल्कश्चित्ररथश्च गान्दिन्यां च श्वफल्कतः ।
अक्रूरप्रमुखा आसन् पुत्रा द्वादश विश्रुताः ॥१५॥

पदच्छेद— श्वफल्कः चित्ररथः च गान्दिन्याम् च श्वफल्कतः ।
अक्रूर प्रमुखाः आसन् पुत्राः द्वादश विश्रुताः ॥

शब्दार्थ—

श्वफल्कः	१. वृष्णि के पुत्र श्वफल्क	अक्रूर	६. अक्रूर
चित्ररथः	३. चित्ररथ थे	प्रमुखाः	७. आदि
च	२. और	आसन्	११. हुए
गान्दिन्याम्	५. गान्दिनी में	पुत्राः	१०. पुत्र
च श्वफल्कतः ।	४. और श्वफल्क से	द्वादश	८. बारह
		विश्रुताः ॥	९. प्रसिद्ध

श्लोकार्थ—वृष्णि के पुत्र श्वफल्क और चित्ररथ थे। और श्वफल्क से गान्दिनी में अक्रूर आदि बारह प्रसिद्ध पुत्र हुए ॥

षोडशः श्लोकः

आसङ्गः सारमेयश्च मृदुरो मृदुविद् गिरिः ।
धर्मवृद्धः सुकर्मा च क्षेत्रोपेक्षोऽरिमर्दनः ॥१६॥

पदच्छेद— आसङ्गः सारमेयः च मृदुरः मृदुवित् गिरिः ।
धर्म वृद्धः सुकर्मा च क्षेत्रोपेक्षः अरिमर्दनः ॥

शब्दार्थ—

आसङ्गः	१. आसङ्ग	धर्मवृद्धः	६. धर्मवृद्ध
सारमेयः	२. सारमेय	सुकर्मा	७. सुकर्मा
च मृदुरः	३. तथा मृदुर	च	९. और
मृदुवित्	४. मृदुवित्	क्षेत्रोपेक्षः	८. क्षेत्रोपेक्ष
गिरिः ।	५. गिरिः	अरिमर्दनः ॥	१० अरिमर्दन हुए

श्लोकार्थ—तथा आसङ्ग, सारमेय, मृदुर, मृदुवित्, गिरि, धर्मवृद्ध, सुकर्मा क्षेत्रोपेक्ष और अरिमर्दन हुए ॥

सप्तदशः श्लोकः

शत्रुघ्नो गन्धमादश्च प्रतिबाहुश्च द्वादश ।
तेषां स्वसा सुचीराख्या द्वावक्रूरसुतावपि ॥१७॥

पदच्छेद— शत्रुघ्नः गन्धमादः च प्रतिबाहुः च द्वादश ।
तेषाम् स्वसा सुचीराख्या द्वौ अक्रूर सुतौ अपि ॥

शब्दार्थ—

शत्रुघ्नः	१.	शत्रुघ्न	स्वसा	७.	बहन थी
गन्धमादः	२.	गन्धमाद	सुचीराख्या	६.	सुचीरा नाम की
च प्रतिबाहुः	३.	और प्रतिबाहु	द्वौ अक्रूर	९.	दो अक्रूर के
च द्वादश	४.	ये बारह पुत्र थे	सुतौ	१०.	पुत्र हुए
तेषाम् ।	५.	उनकी	अपि ॥	८.	भी

श्लोकार्थ—शत्रुघ्न, गन्धमाद और प्रतिबाहु ये बारह पुत्र थे। उनकी सुचीरा नाम की बहन थी। दो पुत्र अक्रूर के भी हुए ॥

अष्टादशः श्लोकः

देववानुपदेवश्च तथा चित्ररथात्मजाः ।
पृथुर्विदूरथाद्याश्च बहवो वृष्णिनन्दनाः ॥१८॥

पदच्छेद— देववान् उपदेवः च तथा चित्ररथ आत्मजाः ।
पृथुः विदूरथ आद्याः च बहवः वृष्णिनन्दनाः ॥

शब्दार्थ—

देववान्	१.	अक्रूर के दो पुत्र थे देववान्	पृथुः	७.	पृथु
उपदेवः	३.	उपदेव	विदूरथ	८.	विदूरथ
च तथा	२.	और तथा	आद्याः	९.	आदि
चित्ररथ	५.	चित्ररथ के	च बहवः	११.	और जो बहुत से हुए
आत्मजाः ।	६.	पुत्र	वृष्णिनन्दनाः ॥	१२.	वृष्णिवंश में श्रेष्ठ कहलाये

श्लोकार्थ—अक्रूर के दो पुत्र थे देववान् और उपदेव तथा चित्रर के पुत्र पृथु, विदूरथ आदि बहुत से हुए जो वृष्णिवंश में श्रेष्ठ कहलाये ॥

एकोनविंशः श्लोकः

कुकुरो भजमानश्च शुचिः कम्बलबर्हिषः ।
कुकुरस्य सुतो वह्निर्विलोमा तनयस्ततः ॥१९॥

पदच्छेद— कुकुरः भजमानः च शुचिः कम्बल बर्हिषः ।
कुकुरस्य सुतः वह्निः विलोमा तनयः सुतः ॥

शब्दार्थ—

कुकुरः	१.	अन्धक के चार पुत्र हुए कुकुर	कुकुरस्य	८.	कुकुर का
भजमानः	२.	भजमान	सुतः	९.	पुत्र
च शुचिः	५.	और शुचि	वह्निः	१०.	वह्नि
कम्बल	६.	कम्बल	विलोमा	१३.	विलोमा हुआ
बर्हिषः ।	७.	बर्हिष्	तनयः	१२.	पुत्र
			सुतः ॥	११.	वह्नि का

श्लोकार्थ— अन्धक के चार पुत्र हुए कुकुर, भजमान, शुचि और कम्बलबर्हिष् । कुकुर का पुत्र वह्नि और वह्नि का पुत्र विलोमा हुआ ॥

विंशः श्लोकः

कपोतरोमा तस्यानुः सखा यस्य च तुम्बुरुः ।
अन्धको दुन्दुभिस्तस्मादरिद्योतः पुनर्वसुः ॥२०॥

पदच्छेद— कपोतरोमा तस्य अनुः सखा यस्य च तुम्बुरुः ।
अन्धकः दुन्दुभिः तस्मात् अरिद्योतः पुनर्वसुः ॥

शब्दार्थ—

कपोतरोमा	१.	विलोमा का पुत्र कपोतरोमा	अन्धकः	७.	अनु का पुत्र अन्धक
तस्य अनुः	२.	उसका अनु	दुन्दुभिः	८.	और दुन्दुभि हुए
सखा	५.	सखा	तस्मात्	९.	उससे
यस्य	४.	उसका	अरिद्योतः	१०	अरिद्योत और उसका पुत्र
च	३.	और	पुनर्वसुः ॥	११.	पुनर्वसु हुआ
तुम्बुरुः ।	६.	तुम्बुरु था			

श्लोकार्थ— विलोमा का पुत्र कपोतरोमा उसका अनु और उसका सखा तुम्बुरु था । अनु का पुत्र अन्धक और दुन्दुभि हुए । उससे अरिद्योत और उसका पुत्र पुनर्वसु हुआ ॥

एकविंशः श्लोकः

तस्याहुकश्चाहुकी च कन्या चैवाहुकात्मजौ ।
देवकश्चोग्रसेनश्च चत्वारो देवकात्मजाः ॥२१॥

पदच्छेद— तस्य आहुकः च आहुकी च कन्या च एव आहुक आत्मजौ ।
देवकः च उग्रसेनः च चत्वारः देवक आत्मजाः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उस पुनर्वसु से	आत्मजौ ।	७.	दो पुत्र हुए
आहुकः	२.	आहुक नामक पुत्र	देवकः च	८.	देवक और
च आहुकी	३.	और आहुकी नाम की	उग्रसेनः	९.	उग्रसेन
च कन्या	४.	कन्या हुई	च चत्वारः	१०.	और चार
च एव	५.	और	देवकः	११.	देवक के
आहुक	६.	आहुक के	आत्मजाः ॥	१२.	पुत्र हुए

श्लोकार्थ— उस पुनर्वसु के आहुक नामक पुत्र और आहुकी नाम की कन्या हुई । और आहुक के दो पुत्र हुए देवक और उग्रसेन और देवक के चार पुत्र हुए ॥

द्वाविंशः श्लोकः

देववानुपदेवश्च सुदेवो देववर्धनः ।
तेषां स्वसारः सप्तासन् धृतदेवादयो नृप ॥२२॥

पदच्छेद— देववान् उपदेवः च सुदेवः देववर्धनः ।
तेषां स्वसारः सप्त आसन् धृतदेवा आदयः नृप ॥

शब्दार्थ—

देववान्	२.	देववान्	स्वसारः	११.	बहनें
उपदेवः	३.	उपदेव	सप्त	१०	सात
च सुदेवः	५.	और सुदेवा	आसन्	१२.	थीं
देववर्धनः	६	देववर्धन	धृतदेवा	८.	धृतदेवा
तेषाम् ।	७.	उनकी	आदयः	९	आदि
			नृप ॥	१.	हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! देववान, उपदेव, सुदेव और देववर्धन । उसकी धृतदेवा आदि सात बहनें थीं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

शान्तिदेवोपदेवा च श्रीदेवा देवरक्षिता ।
सहदेवा देवकी च वसुदेव उवाह ताः ॥२३॥

पदच्छेद— शान्तिदेवा उपदेवा च श्रीदेवा देवरक्षिता ।
सहदेवा देवकी च वसुदेवः उवाह ताः ॥

शब्दार्थ—

शान्तिदेवा	१.	शान्तिदेवा	सहदेवा	५.	सहदेवा
उपदेवा	२.	उपदेवा	देवकी	७.	देवकी
च	६.	और	च	८.	और
श्रीदेवा	३.	श्रीदेवा	वसुदेवः	१०.	वसुदेव ने
देवरक्षिता ।	४.	देवरक्षिता	उवाह	११.	विवाह किया
			ताः ॥	९.	उन सबसे

श्लोकार्थ— शान्तिदेवा, उपदेवा, श्रीदेवा, देवरक्षिता, सहदेवा और देवकी तथा उन सब से वसुदेव ने विवाह किया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

कंसः सुनामा न्यग्रोधः कङ्कः शङ्कुः सुहूस्तथा ।
राष्ट्रपालोऽथ सृष्टिश्च तुष्टिमानौग्रसेनयः ॥२४॥

पदच्छेद— कंसः सुनामा न्यग्रोधः कङ्कः शङ्कुः सुहूः तथा ।
राष्ट्रपालः अथ सृष्टिः च तुष्टिमान् औग्रसेनयः ॥

शब्दार्थ—

कंसः	१.	कंस	तथा	७.	तथा
सुनामा	२.	सुनामा	राष्ट्रपालः	८.	राष्ट्रपाल
न्यग्रोधः	३.	न्यग्रोध	अथ	९.	और
कङ्कः	४.	कङ्क	सृष्टिः च	१०.	सृष्टि और
शङ्कुः	५.	शङ्कु	तुष्टिमान्	११.	तुष्टिमान्
सुहूः ।	६.	सुहू	औग्रसेनयः	१३.	ये उग्रसेन के पुत्र थे
			च ॥	१२.	और

श्लोकार्थ— कंस, सुनामा, न्यग्रोध, कङ्क, शङ्कु, सुहू तथा राष्ट्रपाल और सृष्टि और तुष्टिमान् ये सब उग्रसेन के पुत्र थे ॥

पञ्चविशः श्लोकः

कंसा कंसवती कङ्का शूरभू राष्ट्रपालिका ।
उग्रसेनदुहितरो वसुदेवानुजस्त्रियः ॥२५॥

पदच्छेद— कंसा कंसवती कङ्का शूरभू राष्ट्रपालिका ।
उग्रसेन दुहितरः वसुदेव अनुज स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

कंसा	१.	कंसा	उग्रसेन	६.	ये सब उग्रसेन की
कंसवती	२.	कंसवती	दुहितरः	७.	पुत्रियाँ थीं
कङ्का	३.	कङ्का	वसुदेव	८.	वसुदेव के
शूरभू	४.	शूरभू और	अनुज	९.	छोटे भाइयों की
राष्ट्रपालिका ।	५.	राष्ट्रपालिका	स्त्रियः ॥	१०.	स्त्रियाँ

श्लोकार्थ—कंसा, कंसवती, कङ्का, शूरभू और राष्ट्रपालिका ये सब उग्रसेन की पुत्रियाँ थीं। जो वसुदेव जी के छोटे भाइयों को ब्याही थीं ॥

षड्विशः श्लोकः

शूरो विदूरथादासीद् भजमानः सुतस्ततः।
शिनिस्तस्मात् स्वयम्भोजो हृदीकस्तत्सुतो मतः ॥२६॥

पदच्छेद— शूरः विदूरथात् आसीत् भजमानः सुतः ततः ।
शिनिः तस्मात् स्वयम्भोजः हृदीकः तत् सुतः मतः ॥

शब्दार्थ—

शूरः	२.	शूर	शिनिः	६.	शिनि था
विदूरथात्	१.	विदूरथ से	तस्मात्	७.	उसका
आसीत्	३.	हुए उनसे	स्वयम्भोजः	८.	स्वयम्भोज
भजमानः	४.	भजमान	हृदीकः	११.	हृदीक
सुतः	६.	पुत्र	तत्	९.	उसका
ततः ।	५.	उस भजमान का	सुतः	१०.	पुत्र
			मतः ॥	१२.	कहा गया है

श्लोकार्थ—विदूरथ से शूर हुए। उनसे भजमान, उस भजमान का पुत्र शिनि था। शिनि का स्वयम्भोज और उसका पुत्र हृदीक कहा गया है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

देवबाहुः शतधनुः कृतवर्मेति तत्सुताः ।
देवमीढस्य शूरस्य मारिषा नाम पत्न्यभूत् ॥२७॥

पदच्छेद— देवबाहुः शतधनुः कृतवर्मा इति तत सुताः ।
देवमीढस्य शूरस्य मारिषा नाम पत्नी अभूत् ॥

शब्दार्थ—

देवबाहुः	१.	देवबाहु	देवमीढस्य	७.	देवमीढ के पुत्र
शतधनुः	२.	शतधनु	शूरस्य	८.	शूर की
कृतवर्मा	३.	कृतवर्मा	मारिषा	९.	मारिषा
इति	४.	ये सब	नामपत्नी	१०.	नाम की पत्नी
तत्	५.	उस हृदीक के	अभूत् ।	११.	थी
सुताः ॥	६.	पुत्र हुए			

श्लोकार्थ—देवबाहु, शतधनु, कृतवर्मा ये सब उस हृदीक के पुत्र हुए । देवमीढ के पुत्र शूर की मारिषा नाम की पत्नी थी ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

तस्यां स जनयामास दश पुत्रानकल्मषान् ।
वसुदेवं देवभागं देवश्रवसमानकम् ॥२८॥

पदच्छेद— तस्याम् सः जनयामास दश पुत्रान् अकल्मषान् ।
वसुदेवम् देवभागम् देवश्रवसम् आनकम् ॥

शब्दार्थ—

तस्याम्	२.	उससे	अकल्मषान् ।	३.	पापरहित
सः	१.	उन्होंने	वसुदेवम्	७.	वसुदेव
जनयामास	६.	उत्पन्न किया	देवभागम्	८.	देवभाग
दश	४.	दश	देवश्रवसम्	९.	देवश्रवा और
पुत्रान् ॥	५.	पुत्रों को	आनकम् ॥	१०.	आनक

श्लोकार्थ—उन्होंने उससे पापरहित दस पुत्रों को उत्पन्न किया । वसुदेव, देवभाग, देवश्रवा और आनक ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

सृञ्जयं श्यामकं कङ्कं शमीकं वत्सकं वृकम् ।
देवदुन्दुभयो नेदुरानका यस्य जन्मनि ॥२९॥

पदच्छेद— सृञ्जयम् श्यामकम् कङ्कम् शमीकम् वत्सकम् वृकम् ।
देवदुन्दुभयः नेदुः आनकाः यस्य जन्मनि ॥

शब्दार्थ—

सृञ्जयम्	१.	सृञ्जय	देवदुन्दुभयः	९.	देवताओं के नगाड़े और
श्यामकम्	२.	श्यामक	नेदुः	११.	बजने लगे थे
कङ्कम्	३.	कङ्क	आनकाः	१०.	ढोल
शमीकम्	४.	शमीक	यस्य	७.	उन वसुदेव के
वत्सकम्	५.	वत्सक और	जन्मनि ॥	८.	जन्म के समय
वृकम् ।	६.	वृक ये पुत्र थे			

श्लोकार्थ—सृञ्जय, श्यामक, कङ्क, शमीक, वत्सक और वृक ये पुत्र थे । उन वसुदेव के जन्म के समय देवताओं के नगाड़े और ढोल बजने लगे थे ॥

त्रिंशः श्लोकः

वसुदेवं हरेः स्थानं वदन्त्यानकदुन्दुभिम् ।
पृथा च श्रुतदेवा च श्रुतकीर्तिः श्रुतश्रवाः ॥३०॥

पदच्छेद— वसुदेवम् हरेः स्थानम् वदन्ति आनक दुन्दुभिम् ।
पृथा च श्रुतदेवा च श्रुतकीर्तिः श्रुतश्रवाः ॥

शब्दार्थ—

वसुदेवम्	१.	वसुदेव को	पृथा	७.	कुन्ती
हरेः	२.	भगवान् श्रीकृष्ण के	च	१२.	उनकी बहनें थीं
स्थानम्	३.	पिता और	श्रुतदेवा	८.	श्रुतदेवा
वदन्ति	६.	कहते हैं	च	१०.	और
आनक	४.	आनक	श्रुतकीर्तिः	९.	श्रुतकीर्ति
दुन्दुभिम् ।	५.	दुन्दुभि भी	श्रुतश्रवाः ॥	११	श्रुतश्रवा

श्लोकार्थ—वसुदेव को भगवान् श्रीकृष्ण के पिता और आनक दुन्दुभि भी कहते हैं । कुन्ती, श्रुतदेवा, श्रुतकीर्ति और श्रुतश्रवा उन (वसुदेव जी) की बहनें थीं ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

राजाधिदेवी चैतेषां भगिन्यः पञ्च कन्यकाः ।
कुन्तेः सख्युः पिता शूरो ह्यपुत्रस्य पृथामदात् ॥३१॥

पदच्छेद— राजाधिदेवी च एतेषाम् भगिन्यः पञ्च कन्यकाः ।
कुन्तेः सख्युः पिता शूरः हि अपुत्रस्य पृथाम् अदात् ॥

शब्दार्थ—

राजाधिदेवी	२.	राजाधिदेवी	सख्युः	९.	सखा
च एतेषाम्	१.	और ये इनकी	पिता	७.	वसुदेव के पिता
भगिन्यः	६.	बहनें थीं	शूरः हि	८.	शूरसेन अपने
पञ्च	३.	पाँच	अपुत्रस्य	११.	सन्तानहीन
कन्यकाः	४.	कन्यायें	पृथाम्	१२.	कुन्ती
कुन्तेः ।	१०.	कुन्तिभोज को	अदात् ॥	१३.	गोद दे दी

श्लोकार्थ—और ये राजाधिदेवी आदि पाँच कन्यायें इनकी पाँच बहनें थीं । वसुदेव के पिता शूरसेन ने अपने सखा सन्तानहीन कुन्तिभोज को कुन्ती गोद दे दी ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

साऽऽप दुर्वाससो विद्यां देवहूतीं प्रतोषितात् ।
तस्या वीर्यपरीक्षार्थमाजुहाव रविं शुचिम् ॥३२॥

पदच्छेद— सा आप दुर्वाससः विद्याम् देवहूतीम् प्रतोषितात् ।
तस्याः वीर्यपरीक्षार्थम् आजुहाव रविम् शुचिम् ॥

शब्दार्थ—

सा आप	५.	उस कुन्ती ने प्राप्त कर ली	तस्याः	६.	उस विद्या के
दुर्वाससः	२.	दुर्वासा ऋषि से	वीर्य	७.	प्रभाव को
विद्याम्	४	विद्या	परीक्षार्थम्	८.	परीक्षा के लिए
देवहूतीम्	३.	देवताओं को बुलाने वाली	आजुहाव	११	बुलाया
प्रतोषितात् ।	१.	प्रसन्न किये गये	रविम् शुचिम् ॥	१०.	परम पवित्र सूर्य भगवान् को

श्लोकार्थ—प्रसन्न किये गये दुर्वासा ऋषि से देवताओं को बुलाने वाली विद्या प्राप्त कर ली । उस विद्या के प्रभाव की परीक्षा के लिए परम पवित्र सूर्य भगवान् को बुलाया ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तदैवोपागतं देवं वीक्ष्य विस्मितमानसा ।
प्रत्ययार्थं प्रयुक्ता मे याहि देव क्षमस्व मे ॥३३॥

पदच्छेद— तदा एव उपागतम् देवम् वीक्ष्य विस्मित मानसा ।
प्रत्यय अर्थम् प्रयुक्ता मे याहि देव क्षमस्व मे ।।

शब्दार्थ—

तदा एव	१.	उसी समय	अर्थम्	९.	लिए इस विद्या का
उपागतम्	२.	आये हुए	प्रयुक्ता	१०.	प्रयोग किया था
देवम्	३.	सूर्य देव को	मे	७.	मैंने
वीक्ष्य	४.	देखकर	याहि	१३.	जाइये
विस्मितमानसा	५.	आश्चर्य से युक्त होकर कुन्ती ने कहा	देव	६.	हे देव
प्रत्यय ।	८.	विश्वास के	क्षमस्व	१२	क्षमा कीजिए और जाइए
			मे ।।	११.	मुझे

श्लोकार्थ—उसी समय आये हुए सूर्य देव को देखकर आश्चर्य से युक्त होकर कुन्ती ने कहा—हे देव ! मैंने विश्वास के लिए ही इस विद्या का प्रयोग किया था । मुझे क्षमा कीजिये और जाइये ।।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

अमोघं दर्शनं देवि आधित्से त्वयि चात्मजम् ।
योनिर्यथा न दुष्येत कर्ताहं ते सुमध्यमे ॥३४॥

पदच्छेद— अमोघम दर्शनम देवि आधित्से त्वयि च आत्मजम् ।
योनिः यथा न दुष्येत कर्ताहं ते सुमध्यमे ।।

शब्दार्थ—

अमोघम्	३.	निष्फल नहीं होता है	योनिः	११	योनि
दर्शनम्	२.	मेरा दर्शन	यथा	९.	जिससे
देवि	१.	हे देवि	न	१३.	नहीं
आधित्से	७.	उत्पन्न करना चाहता हूँ	दुष्येत	१२.	दूषित
त्वयि	५	तुमसे	कर्ताहं	१४.	वैसा मैं कर दूंगा
च	४.	और	ते	१०.	तुम्हारी
आत्मजम् ।	६.	पुत्र	सुमध्यमे ।।	८.	हे सुन्दरि
			मे ।।	११.	मुझे

श्लोकार्थ—हे देवि ! मेरा दर्शन निष्फल नहीं होता है । मैं तुमसे पुत्र उत्पन्न करना चाहता हूँ । हे सुन्दरि ! जिससे तुम्हारी योनि दूषित न हो वैसा मैं करूंगा ।।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

इति तस्यां स अधाय गर्भं सूर्यो दिवं गतः ।
सद्यः कुमारः संजज्ञे द्वितीय इव भास्करः ॥३५॥

पदच्छेद— इति तस्याम् सः आधाय गर्भम् सूर्यः दिवं गतः ।
सद्यः कुमारः संजज्ञे द्वितीयः इव भास्करः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार कहकर	गतः	८.	चले गये
तस्याम्	४.	उस कुन्ती में	सद्यः	१३.	तत्काल
सः	२	वे	कुमारः	१२.	एक बालक
आधाय	६	स्थापित करके	संजज्ञे	१४.	उत्पन्न हो गया
गर्भम्	५.	गर्भ को	द्वितीयः	९	दूसरे
सूर्यः	३.	सूर्यदेव	इव	११.	समान
दिवम् ।	७.	स्वर्ग को	भास्करः ॥	१०	सूर्य के

श्लोकार्थ—इस प्रकार कहकर वे सूर्यदेव उस कुन्ती में गर्भ को स्थापित करके स्वर्ग को चले गये । दूसरे सूर्य के समान एक बालक तत्काल उत्पन्न हो गया ।

षट्त्रिंशः श्लोकः

तं सात्यजन्नदीतोये कृच्छ्राल्लोकस्य बिभ्यती ।
प्रपितामहस्तामुवाह पाण्डुर्वै सत्यविक्रमः ॥३६॥

पदच्छेद— तम् सा अत्यजन् नदीतोये कृच्छ्रात् लोकस्य बिभ्यती ।
प्रपितामहः ताम् उवाह पाण्डुर्वै सत्यविक्रमः ॥

शब्दार्थ—

तम्	५.	उस बालक को	बिभ्यती	४.	भय से
सा	१.	उस कुन्ती ने	प्रपितामहः	१०.	तुम्हारे परदादा
अत्यजन्	७.	छोड़ दिया	ताम्	१२.	उससे
नदीतोये	६.	नदी के जल में	उवाह	१३	विवाह किया ।
कृच्छ्रात्	३.	निन्दा के	पाण्डुर्वै	११.	पाण्डु ने
लोकस्य ।	२.	लोक	सत्य	८.	सत्य
			विक्रमः	९.	पराक्रम वाले

श्लोकार्थ—उस कुन्ती ने लोक निन्दा के भय से उस बालक को नदी के जल में छोड़ दिया । सत्य पराक्रम वाले तुम्हारे परदादा पाण्डु ने उससे विवाह किया ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

श्रुतदेवां तु कारूषो वृद्धशर्मा समग्रहीत्।
यस्यामभूद् दन्तवक्त्र ऋषिशप्तो दितेः सुतः ॥३७॥

पदच्छेद— श्रुतदेवाम् तु कारूषः वृद्धशर्मा सम् अग्रहीत्।
यस्याम् अभूत् दन्तवक्त्रः ऋषिशप्तः दितेः सुतः ॥

शब्दार्थ—

श्रुतदेवाम्	१. श्रुतदेवा से	यस्याम्	६. जिससे
तु	२. तो	अभूत	८ उत्पन्न हुआ
कारूषः	३. कारूष देश के राजा	दन्तवक्त्रः	७. दन्तवक्त्र
वृद्धशर्मा	४. वृद्धशर्मा ने	ऋषिशप्तः	९. ऋषि के शाप से
सम् अग्रहीत्।	५. विवाह किया	दितेः	१०. दिति का
		सुतः ॥	११. पुत्र हिरण्याक्ष

श्लोकार्थ—श्रुतदेवा से कारूष देश के राजा वृद्धशर्मा ने विवाह किया जिससे दन्तवक्त्र उत्पन्न हुआ जो (पूर्व जन्म में) ऋषि के शाप से दिति का पुत्र हिरण्याक्ष हुआ था ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

कैकेयो धृष्टकेतुश्च श्रुतकीर्तिमविन्दत।
सन्तर्दनादयस्तस्य पञ्चासन् कैकयाः सुताः ॥३८॥

पदच्छेद— कैकेयः धृष्टकेतुः च श्रुतकीर्तिम् अविन्दत।
सन्तर्दन आदयः तस्य पञ्च आसन् कैकयाः सुताः ॥

शब्दार्थ—

कैकेयः	२. कैकेय देश के राजा	सन्तर्दन	७. सन्तर्दन
धृष्टकेतुः	३. धृष्टकेतु ने	आदयः	८. आदि
च	१. और	तस्य	६. उससे
श्रुतकीर्तिम्	४. श्रुतकीर्ति से	पञ्च	९. पाँच
अविन्दत	५. विवाह किया	आसन्	१२. हुए
		कैकयाः।	१०. कैकेय
		सुताः ॥	११. राजकुमार

श्लोकार्थ—और कैकेय देश के राजा धृष्टकेतु ने श्रुतकीर्ति से विवाह किया। उससे सन्तर्दन आदि पाँच कैकेय राजकुमार हुए ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

राजाधिदेव्यामावन्त्यौ जयसेनोऽजनिष्ट ह ।
दमघोषश्चेदिराजः श्रुतश्रवसमग्रहीत् ॥३९॥

पदच्छेद— राजाधिदेव्याम् आवन्त्यौ जयसेनः अजनिष्ट ह ।
दमघोषः चेदिराजः श्रुतश्रवसम् अग्रहीत् ॥

शब्दार्थ—

राजाधिदेव्याम्	२.	राजाधिदेवी से	दमघोषः	६.	दमघोष ने
आवन्त्यौ	३.	अवन्ति के दो राजाओं	चेदिराजः	५.	चेदिराज
जयसेनः	१.	जयसेन ने	श्रुतश्रवसम्	७.	श्रुतश्रवा से
अजनिष्ट ह ।	४.	उत्पन्न किया	अग्रहीत् ॥	८.	विवाह किया

श्लोकार्थ—जयसेन ने राजाधिदेवी से अवन्ति के दो राजाओं (विन्द और अनुविन्द) को उत्पन्न किया। चेदिराज दमघोष ने श्रुतश्रवा से विवाह किया ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

शिशुपालः सुतस्तस्याः कथितस्तस्य सम्भवः ।
देवभागस्य कंसायां चित्रकेतुबृहद्बलौ ॥४०॥

पदच्छेद— शिशुपालः सुतः तस्याः कथितः तस्य सम्भवः ।
देवभागस्य कंसायाम् चित्रकेतु बृहद्बलौ ॥

शब्दार्थ—

शिशुपालः	३.	शिशुपाल हुआ	देवभागस्य	७.	देवभाग की पत्नी
सुतः	२.	पुत्र	कंसायाम्	८.	कंसा से
तस्याः	१	उसका	चित्रकेतुः	९.	चित्रकेतु और
कथितः	६.	बता चुका हूँ	बृहद्बलौ ॥	१०.	बृहद्बल दो पुत्र हुए
तस्य	४.	उसका			
सम्भवः ।	५.	जन्म पहले			

श्लोकार्थ— उसका पुत्र शिशुपाल हुआ। उसका जन्म पहले बता चुका हूँ। देवभाग की पत्नी कंसा से चित्रकेतु और बृहद्बल दो पुत्र हुए ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

कंसवत्यां देवश्रवसः सुवीर इषुमांस्तथा ।
कङ्कायामानकाज्जातः सत्यजित् पुरुजित् तथा ॥४१॥

पदच्छेद— कंसवत्याम् देवश्रवसः सुवीरः इषुमान तथा ।
कङ्कायाम् आनकात् जातः सत्यजित् पुरुजित् तथा ॥

शब्दार्थ—

कंसवत्याम्	१.	कंसवती में	कङ्कायाम्	६.	कंङ्का में
देवश्रवसः	२.	देवश्रवा से	आनकात्	७.	आनक से
सुवीरः	३.	सुवीर	जातः	११.	उत्पन्न हुए
इषुमान्	५.	इषुमान् दो पुत्र हुए	सत्यजित्	८.	सत्यजित्
तथा ।	४.	और	पुरुजित्	१०.	पुरुजित् हुए
			तथा ॥	९.	और

श्लोकार्थ—कंसवती में देवश्रवा से सुवीर और इषुमान् दो पुत्र उत्पन्न हुए। कङ्का में आनक से सत्यजित् और पुरुजित् हुए ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

सृञ्जयो राष्ट्रपाल्यां च वृषदुर्मर्षणादिकान् ।
हरिकेशहिरण्याक्षौ शूरभूम्यां च श्यामकः ॥४२॥

पदच्छेद— सृञ्जयः राष्ट्रपाल्याम् च वृषदुर्मर्षण आदिकान् ।
हरिकेश हिरण्याक्षौ शूर भूम्याम् च श्यामकः ॥

शब्दार्थ—

सृञ्जयः	२.	सृञ्जय ने	हरिकेश	८.	हरिकेश
राष्ट्रपाल्याम्	३.	राष्ट्रपाली से	हिरण्याक्षौ	१०.	हिरण्याक्ष को उत्पन्न किया ।
च	१.	और	शूरभूम्याम्	७.	शूरभूमि से
वृषदुर्मर्षण	४.	वृषदुर्मर्षण	च	९.	और
आदिकान् ।	५.	आदि पुत्रों को उत्पन्न किया	श्यामकः ॥	६.	श्यामकने

श्लोकार्थ— और सृञ्जन ने राष्ट्रपाली में वृषदर्मषण आदि पुत्रों को उत्पन्न किया। श्यामक ने शूरभूमि से हरिकेश और हिरण्याक्ष को उत्पन्न किया ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

मिश्रकेश्यामप्सरसि वृकादीन् वत्सकस्तथा ।
तक्षपुष्करशालादीन् दुर्वाक्ष्यां वृक आदधे ॥४३॥

पदच्छेद— मिश्रकेश्याम् अप्सरसि वृक आदीन् वत्सकः तथा ।
तक्षपुष्कर शाल आदीन् दुर्वाक्ष्यां वृकः आदधे ॥

शब्दार्थ—

मिश्रकेश्याम्	२.	मिश्रकेशी	तक्ष	९.	तक्ष
अप्सरसि	३.	अप्सरा में	पुष्कर	१०.	पुष्कर
वृक	४.	वृक	शाल	११.	शाल
आदीन्	५.	आदि पुत्रों को उत्पन्न किया	आदीन्	१२.	आदि पुत्रों को
वत्सकः	१.	वत्सक ने	दुर्वाक्ष्याम्	८.	दुर्वाक्षी में
तथा	६.	और	वृकः	७.	वृक ने
			आदधे ॥	१३.	उत्पन्न किया

श्लोकार्थ—वत्सक ने मिश्रकेशी अप्सरा में वृक आदि पुत्रों को उत्पन्न किया । और वृकने दुर्वाक्षी में तक्ष, पुष्कर, शाल आदि पुत्रों को उत्पन्न किया ।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

सुमित्रार्जुनपालादीन्शमीकात्तु सुदामिनी ।
कङ्कश्च कर्णिकायां वै ऋतधामजयावपि ॥४४॥

पदच्छेद— सुमित्र अर्जुनपाल आदीन् शमीकात् तु सुदामिनी ।
कङ्कः च कर्णिकायाम् वै ऋतुधामजयौ अपि ॥

शब्दार्थ—

सुमित्र	३.	सुमित्र और	कङ्कः	७.	कङ्क ने
अर्जुनपाल	४.	अर्जुनपाल	च	६.	और
आदीन्	५.	आदि पुत्रों को उत्पन्न किया	कर्णिकायाम्	८.	कर्णिका में
शमीकात् तु	१.	शमीक से	वै ऋतुधाम	९.	ऋतुधाम तथा
सुदामिनी ।	२.	सुदामिनी ने	जयौ अपि ॥	११.	जय को उत्पन्न किया

श्लोकार्थ—शमीक से सुदामिनी ने सुमित्र और अर्जुनपाल आदि पुत्रों को उत्पन्न किया और कङ्क ने कर्णिका में ऋतुधाम तथा जय को उत्पन्न किया ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

पौरवी रोहिणी भद्रा मदिरा रोचना इला।
देवकीप्रमुखा आसन् पत्न्य आनकदुन्दुभेः ॥४५॥

पदच्छेद— पौरवी रोहिणी भद्रा मदिरा रोचना इला।
देवकी प्रमुखाः आसन् पत्न्यः आनकदुन्दुभेः ॥

शब्दार्थ—

पौरवी	१. पौरवी	देवकी	७. देवकी
रोहिणी	२. रोहिणी	प्रमुखाः	८. आदि
भद्रा	३. भद्रा	आसन्	११. थीं
मदिरा	४. मदिरा	पत्न्यः	१०. पत्नियाँ
रोचना	५. रोचना	आनकदुन्दुभेः।	९. वसुदेवजी की
इला ॥	६. इला		

श्लोकार्थ—पौरवी, रोहिणी, भद्रा, मदिरा, रोचना, इला, देवकी आदि वसुदेव जी की पत्नियाँ थीं ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

बलं गदं सारणं च दुर्मदं विपुलं ध्रुवम्।
वसुदेवस्तु रोहिण्यां कृतादीनुदपादयत् ॥४६॥

पदच्छेद— बलम् गदम् सारणम् च दुर्मदम् विपुलम् ध्रुवम्।
वसुदेवः तु रोहिण्याम् कृत आदीन् उदपादयत् ॥

शब्दार्थ—

बलम्	३. बलराम	ध्रुवम्	८. ध्रुव
गदम्	४. गद	वसुदेवः तु	१. वसुदेव जी ने
सारणम्	५. सारण	रोहिण्याम्	२. रोहिणी से
च	९. और	कृत	१०. कृत
दुर्मदम्	६. दुर्मद	आदीन्	११. आदि पुत्रों को
विपुलम्।	७. विपुल	उदपादयत् ॥	१२. उत्पन्न किया

श्लोकार्थ—वसुदेवजी ने रोहिणी से बलराम, गद, सारण, दुर्मद, विपुल, ध्रुव और कृत आदि पुत्रों को उत्पन्न किया ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

सुभद्रो भद्रवाहश्च दुर्मदो भद्र एव च।
पौरव्यास्तनया ह्येते भूताद्या द्वादशाभवन् ॥४७॥

पदच्छेद— सुभद्रः भद्रवाहः च दुर्मदः भद्रः एव च।
पौरव्याः तनयाः हि एते भूतआद्याः द्वादश अभवन् ॥

शब्दार्थ—

सुभद्रः	२. सुभद्र	पौरव्याः	१. पौरवी ने
भद्रवाहः	३. भद्रवाह	तनयाः	११. पुत्रों को
च	४. और	हि एते	९. इन
दुर्मदः	५. दुर्मद	भूत आद्याः	८. भूत आदि
भद्रः	६. भद्र	द्वादश	१०. बारह पुत्रों को
एव च।	७. ही और	अभवन् ॥	१२. उत्पन्न किया

श्लोकार्थ—पौरवी ने सुभद्र, भद्रवाह और दुर्मद, भद्र और भूत आदि इन बारह पुत्रों को उत्पन्न किया ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

नन्दोपनन्दकृतकशूराद्या मदिरात्मजाः ।
कौसल्या केशिनं त्वेकमसूत कुलनन्दनम् ॥४८॥

पदच्छेद— नन्द उपनन्द कृतक शूर आद्याः मदिरा आत्मजाः।
कौसल्या केशिनम् तु एकम् असूत कुल नन्दनम् ॥

शब्दार्थ—

नन्द	१. नन्द	आत्मजाः	७. पुत्र हुए
उपनन्द	२. उपनन्द	कौसल्या	८. कौशल्या ने
कृतक	३. कृतक	केशिनम्	९. केशी नाम का
शूर	४. शूर	तु एकम्	१२. एक ही पुत्र को
आद्याः	५. आदि	असूत	१३. उत्पन्न किया
मदिरा।	६. मदिरा के	कुल	१०. कुल के
		नन्दनम् ॥	११. उजागर

श्लोकार्थ— नन्द, उपनन्द, कृतक शूर आदि मदिरा के पुत्र हुए। कौशल्या ने केशी नामक कुल के उजागर एक ही पुत्र को उत्पन्न किया ॥

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

रोचनायामतो जाता हस्तहेमाङ्गदादयः ।
इलायामुरुवल्कादीन् यदुमुख्यानजीजनत् ॥४९॥

पदच्छेद— रोचनायाम् अतः जाताः हस्तहेम अङ्गद आदयः ।
इलायाम् उरुवल्क आदीन् यदु मुख्यान् अजीजनत् ॥

शब्दार्थ—

रोचनायाम्	२.	रोचना में	इलायाम्	७.	और इला में
अतः	१.	उस केशी ने	उरुवल्क	८.	उरुवल्क
जाताः	६.	उत्पन्न किये	आदीन्	९.	आदि
हस्त	३.	हस्त	यदु	११.	यदुवंशी पुत्रों को
हेमअङ्गद	४.	हेमअङ्गद	मुख्यान्	१०.	प्रधान
आदयः ।	५.	आदि	अजीजनत् ॥	१२.	उत्पन्न किया

श्लोकार्थ—उस केशी ने रोचना में हस्त, हेमाङ्गद आदि उत्पन्न किये और इला में उरुवल्क आदि प्रधान यदुवंशी पुत्रों को उत्पन्न किया ॥

पञ्चाशत्तमः श्लोकः

विपृष्ठो धृतदेवायामेक आनकदुन्दुभेः ।
शान्तिदेवात्मजा राजञ्छ्रमप्रतिश्रुतादयः ॥५०॥

पदच्छेद— विपृष्ठः धृतदेवायाम् एकः आनकदुन्दुभेः ।
शान्तिदेवा आत्मजाः राजन् श्रम प्रतिश्रुत आदयः ॥

शब्दार्थ—

विपृष्ठः	१.	विपृष्ठ नामक	आत्मजाः	६.	पुत्र
धृतदेवायाम्	३.	धृतदेवा में	राजन्	१०.	हे परीक्षित् !
एकः	२.	एक ही पुत्र	श्रम	७.	श्रम
आनकदुन्दुभेः	४.	वसुदेव जी से उत्पन्न हुआ	प्रतिश्रुत	८	प्रतिश्रुत
शान्तिदेवा ।	५.	शान्तिदेवा के	आदयः ॥	९.	आदि हुए

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! विपृष्ठ नामक एक ही पुत्र धृतदेवा में वसुदेव जी से उत्पन्न हुआ । शान्तिदेवा के पुत्र श्रम, प्रतिश्रुत आदि हुए ॥

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

राजानः कल्पवर्षाद्या उपदेवासुता दश ।
वसुहंससुवंशाद्याः श्रीदेवायास्तु षट् सुताः ॥५१॥

पदच्छेद— राजानः कल्पवर्ष आद्याः उपदेवा सुताः दश ।
वसु, हंस सुवंश आद्याः श्रीदेवायाः षट् सुताः ॥

शब्दार्थ—

राजानः	६.	राजा हुए	वसु	८.	वसु
कल्पवर्ष	३.	कल्पवर्ष	हंस	९.	हंस
आद्याः	४.	आदि	सुवंश	१०.	सुवंश
उपदेवा	१.	उपदेवा के	आद्याः	११.	आदि
सुताः	२	पुत्र	श्रीदेवायाः	७.	श्रीदेवा के
दश ।	५.	दश	षट्	१२.	छह
			सुताः ॥	१३.	पुत्र हुए

श्लोकार्थ— उपदेवा के पुत्र कल्पवर्ष आदि दश राजा हुए । श्रीदेवा के वसु, हंस, सुवंश आदि छह पुत्र हुए ॥

द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

देवरक्षितया लब्धा नव चात्र गदादयः ।
वसुदेवः सुतानष्टावादधे सहदेवया ॥५२॥

पदच्छेद— देवरक्षितया लब्धाः नव च अत्र गद आदयः ।
वसुदेवः सुतान् अष्टौ आदधे सह देवया ॥

शब्दार्थ—

देवरक्षितया	२.	देवरक्षिता ने	आदयः	५.	आदि
लब्धाः	७	प्राप्त किया	वसुदेवः	८.	वसुदेव ने
नव	६.	नौ पुत्रों को	सुतान्	११.	पुत्रों को
च अत्र	१-३.	और यहाँ	अष्टौ	१०.	आठ
गद	४.	गद	आदधे	१२.	उत्पन्न किया
			सहदेवया ॥	९.	सहदेवा से

श्लोकार्थ— और देवरक्षिता ने यहाँ गद आदि नौ पुत्रों को प्राप्त किया । वसुदेव ने सहदेवा से आठ पुत्रों को उत्पन्न किया ॥

त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

पुरुविश्रुतमुख्यांस्तु साक्षात् धर्मो वसूनिव ।
वसुदेवस्तु देवक्यामष्ट पुत्रानजीजनत् ॥५३॥

पदच्छेद— पुरु विश्रुत मुख्यान् साक्षात् धर्मः वसून् इव ।
वसुदेवः तु देवक्याम् अष्ट पुत्रान् अजीजनत् ॥

शब्दार्थ—

पुरु	१. पुरु	इव	४. जैसे		
विश्रुत	२. विश्रुत आदि	वसुदेवः तु	८. वसुदेव ने		
मुख्यान्	३. प्रधान पुत्रों को उत्पन्न किया	देवक्याम्	९. देवकी से		
साक्षात्	५. स्वयम्	अष्ट	१०. आठ		
धर्मः	६. धर्म ने (आठ)	पुत्रान्	११. पुत्रों को		
वसून् ।	७. वसुओं को उत्पन्न किया था	अजीजनत् ॥	१२. उत्पन्न किया		

श्लोकार्थ—सहदेवा से पुरु, विश्रुत आदि प्रधान पुत्रों को उत्पन्न किया । जैसे स्वयम् धर्म ने आठ वसुओं को उत्पन्न किया था । वसुदेव ने देवकी से आठ पुत्रों को उत्पन्न किया ॥

चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

कीर्तिमन्तं सुषेणं च भद्रसेनमुदारधीः ।
ऋजुं सम्मर्दनं भद्रं संकर्षणमहीश्वरम् ॥५४॥

पदच्छेद— कीर्तिमन्तम् सुषेणम् च भद्रसेनम् उदार धीः ।
ऋजुम् सम्मर्दनम् भद्रम् संकर्षण महीश्वरम् ॥

शब्दार्थ—

कीर्तिमन्तम्	३. कीर्तिमान्	ऋजुम	६. ऋजु
सुषेणम्	४. सुषेण	सम्मर्दनम्	७. सम्मर्दन
च	९. और	भद्रम्	८. भद्र
भद्रसेनम्	५. भद्रसेन	संकर्षण	११. संकर्षण को उत्पन्न किया
उदार	१. उदार	महीश्वरम् ।	१०. पृथ्वीपति
धीः ॥	२. बुद्धि वाले वसुदेव ने		

श्लोकार्थ--देवकी से उदार बुद्धि वाले वसुदेव ने कीर्तिमान्, सुषेण, भद्रसेन, ऋजु, सम्मर्दन, भद्र और पृथ्वीपति संकर्षण को उत्पन्न किया ॥

पञ्चपञ्चाशत्तमः श्लोकः

अष्टमस्तु तयोरासीत् स्वयमेव हरिः किल ।
सुभद्रा च महाभागा तव राजन् पितामही ॥५५॥

पदच्छेद— अष्टमः तु तयोः आसीत् स्वयम् एव हरिः किल ।
सुभद्रा च महाभागा तव राजन् पितामही ॥

शब्दार्थ—

अष्टमः तु	२.	आठवें पुत्र	सुभद्रा	१२.	सुभद्रा भी देवकी की कन्या थी
तयोः	१.	उन दोनों के	च	८.	और
आसीत्	६.	हुए	महाभागा	११.	महाभाग्यवती
स्वयम् एव	३.	साक्षात् ही	तव	९.	आपकी
हरिः	४.	भगवान् श्रीकृष्ण	राजन्	७.	हे राजन्
किल ।	५.	ही	पितामही ॥	१०.	दादी

श्लोकार्थ—उन दोनों के आठवें पुत्र साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण ही हुए । हे राजन् ! और आपकी दादी महाभाग्यवती सुभद्रा भी देवकी की कन्या थी ॥

षट्पञ्चाशत्तमः श्लोकः

यदा यदेह धर्मस्य क्षयो वृद्धिश्च पाप्मनः ।
तदा तु भगवानीश आत्मानं सृजते हरिः ॥५६॥

पदच्छेद— यदा यदा इह धर्मस्य क्षयः वृद्धिः च पाप्मनः ।
तदा तु भगवान् ईशः आत्मानम् सृजते हरिः ॥

शब्दार्थ—

यदा	१.	जब	पाप्मनः	७.	पाप की
यदा	२.	जब	तदा तु	९.	तब-तब
इह	३	इस संसार में	भगवान्	११.	भगवान्
धर्मस्य	४.	धर्म की	ईशः	१०.	सर्वशक्तिमान्
क्षयः	५.	हानि और	आत्मानम्	१३.	स्वयम्
वृद्धिः च ।	८.	वृद्धि होती है	सृजते	१४.	प्रकट होते हैं
			हरिः ॥	१२.	श्री हरि

श्लोकार्थ जब-जब इस संसार में धर्म की हानि और पाप की वृद्धि होती है । तब-तब सर्वशक्तिमान् भगवान् स्वयम् श्री हरि प्रकट होते है ॥

सप्तपञ्चाशत्तमः श्लोकः

न ह्यस्य जन्मनो हेतुः कर्मणो वा महीपते ।
आत्ममायां विनेशस्य परस्य द्रष्टुरात्मनः ॥५७॥

पदच्छेद— न हि अस्य जन्मनः हेतुः कर्मणः वा महीपते ।
आत्ममायाम् विना ईशस्य परस्य द्रष्टुः आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

न हि	१२.	नहीं है	महीपते	१.	हे राजन्
अस्य	४.	इसके	आत्ममायाम् विना	१०.	योगमाया के बिना
जन्मनः	७.	जन्म	ईशस्य	११.	सर्वशक्तिमान्
हेतुः	२.	कारण	परस्य	२.	परम
कर्मणः	६.	कर्म का	द्रष्टुः	५.	सबको देखने वाले
वा ।	८.	अथवा	आत्मनः ॥	३.	आत्मा के

श्लोकार्थ—हे राजन् ! सर्वशक्तिमान, सबके देखने वाले उस परम आत्मा के जन्म अथवा कर्म का योगमाया के बिना कोई कारण नहीं है ॥

अष्टपञ्चाशत्तमः श्लोकः

यन्मायाचेष्टितं पुंसः स्थित्युत्पत्त्यप्ययाय हि ।
अनुग्रहस्तन्निवृत्तेरात्मलाभाय चेष्यते ॥५८॥

पदच्छेद— यत् माया चेष्टितम् पुंसः स्थिति उत्पत्ति अप्ययाय हि ।
अनुग्रहः तत् निवृत्तेः आत्मलाभाय च इष्यते ॥

शब्दार्थ—

यत्	१.	जिन परमात्मा की	अनुग्रहः	९.	उनका अनुग्रह
माया	२.	माया का	तत्	१०.	माया को
चेष्टितम्	३.	बिलास ही	निवृत्तेः	११.	अलग करके
पुंसः	४.	जीवमात्र का	आत्मलाभाय	१२.	आत्मस्वरूप की
स्थिति	६.	जीवन और	च	८.	और
उत्पत्ति	५.	जन्म	इष्यते	१३.	प्राप्ति करा देने वाला है
अप्ययाय हि ॥	७.	मृत्यु का कारण है			

श्लोकार्थ— जिस परमात्मा की माया का बिलास ही जीवमात्र के जन्म, जीवन और मृत्यु का कारण है । और उनका अनुग्रह उस माया को अलग करके आत्म स्वरूप की प्राप्ति करा देने वाला है ॥

एकोनषष्टितमः श्लोकः

अक्षौहिणीनां पतिभिरसुरैर्नृपलाञ्छनैः ।
भुव आक्रम्यमाणाया अभाराय कृतोद्यमः ॥५९॥

पदच्छेद— अक्षौहिणीनाम् पतिभिः असुरैः नृपलाञ्छनैः ।
भुवः आक्रम्यमाणाया अभाराय कृत उद्यमः ॥

शब्दार्थ—

अक्षौहिणीनाम्	३.	अक्षौहिणीसेनाओं के	भुवः	८.	पृथ्वी के
पतिभिः	४.	स्वामी	आक्रम्य	६.	आक्रान्त
असुरैः	५.	असुरों के द्वारा	माणाया	७.	किये जाने पर
नृप	१.	राजाओं का	अभाराय	९.	भार हटाने के लिए
लाञ्छनैः	२.	वेष धारण करने वाले	कृत ।	११.	लिया था
			उद्यमः ॥	१०.	जिन्होंने अवतार

श्लोकार्थ—राजाओं का वेष धारण करने वाले तथा अक्षौहिणी सेनाओं के स्वामी असुरों के द्वारा आक्रान्त किये जाने पर पृथ्वी के भार हटाने के लिए जिन्होंने अवतार लिया था ॥

षष्टितमः श्लोकः

कर्माण्यपरिमेयाणि मनसापि सुरेश्वरैः ।
सहसंकर्षणश्चक्रे भगवान् मधुसूदनः ॥६०॥

पदच्छेद— कर्माणि अपरिमेयाणि मनसा अपि सुरेश्वरैः ।
सह संकर्षणः चक्रे भगवान् मधुसूदनः ॥

शब्दार्थ—

कर्माणि	५.	लीलाओं को	सह	९.	साथ
अपरिमेयाणि	४	अनुमान करने योग्य	संकर्षणः	८	बलरामजी के
मनसा	२.	मन से	चक्रे	१०.	किया
अपि	३.	भी	भगवान्	६.	भगवान्
सुरेश्वरैः ।	१.	बड़े-बड़े देवताओं के द्वारा	मधुसूदनः ॥	७.	श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ— बड़े-बड़े देवताओं के द्वारा मन से भी अनुमान न करने योग्य लीलाओं को भगवान् श्रीकृष्ण ने बलराम जी के साथ किया ॥

एकषष्टितमः श्लोकः

कलौ जनिष्यमाणानां दुःखशोकतमोनुदम् ।
अनुग्रहाय भक्तानां सुपुण्यं व्यतनोद् यशः ॥६१॥

पदच्छेद— कलौ जनिष्यमाणानाम् दुःखशोक तमः नुदम् ।
अनुग्रहाय भक्तानाम् सुपुण्यम् व्यतनोद् यशः ॥

शब्दार्थ—

कलौ	१.	कलियुग में	अनुग्रहाय	४.	कृपा करने के लिए
जनिष्यमाणानाम्	२.	उत्पन्न होने वाले	भक्तानाम्	३.	भक्तों पर
दुःख	५.	दुःख	सुपुण्यम्	९.	अत्यन्त पुण्यदायक
शोक	६.	शोक और	व्यतनोद्	११.	विस्तार किया
तमः	७.	अज्ञान को	यशः ।	१०.	यश का
नुदम् ॥	८.	मिटाने वाले			

श्लोकार्थ—कलियुग में उत्पन्न होने वाले भक्तों पर कृपा करने के लिए दुःख, शोक और अज्ञान को मिटाने वाले, अत्यन्त पुण्यदायक यश का विस्तार किया ॥

द्विषष्टितमः श्लोकः

यस्मिन् सत्कर्णपीयूषे यशस्तीर्थवरे सकृत् ।
श्रोत्राञ्जलिरुपस्पृश्य धुनुते कर्मवासनाम् ॥६२॥

पदच्छेद— यस्मिन् सत् कर्ण पीयूषे यशः तीर्थवरे सकृत् ।
श्रोत्र अञ्जलिः उपस्पृश्य धुनुते कर्मवासनाम् ॥

शब्दार्थ—

यस्मिन्	५.	जिस	सकृत्	७.	एक बार
सत्	१.	सत्पुरुषों के	श्रोत्र	८.	कानरूपी
कर्ण	२.	कानों के लिए	अञ्जलि	९.	अञ्जलि से
पीयूषे	३.	अमृत स्वरूप और	उपस्पृश्य	१०.	आचमन करके (मनुष्य)
यशः	६.	यश का	धुनुते	१३.	धो बहाता है
तीर्थवरे ।	४.	श्रेष्ठतीर्थ रूप	कर्म	११.	कर्म की
			वासनाम् ॥	१२.	वासनाओं को

श्लोकार्थ—सत्पुरुषों के कानों के लिए अमृत स्वरूप और श्रेष्ठतीर्थ रूप जिस यश का एकबार कानरूपी अञ्जलि से आचमन करके मनुष्य कर्म की वासनाओं को धो बहाता है ॥

त्रिषष्टितमः श्लोकः

भोजवृष्ण्यन्धकमधुशूरसेनदशार्हकैः ।
श्लाघनीयेहितः शश्वत् कुरुसृञ्जयपाण्डुभिः ॥६३॥

पदच्छेद— भोजवृष्णि अन्धक मधु शूरसेन दशार्हकैः ।
श्लाघनीय ईहितः शश्वत् कुरु सृञ्जय पाण्डुभिः ॥

शब्दार्थ—

भोज	१.	भोज	श्लाघनीय	११.	आदर के साथ प्रशंसा
वृष्णि	२.	वृष्णि	ईहितः	१२.	करते रहते थे
अन्धक	३.	अन्धक	शश्वत्	१०.	निरन्तर भगवान् की लीलाओं का
मधु	४.	मधु	कुरु	७.	कुरु
शूरसेन	५.	शूरसेन	सृञ्जय	८.	सृञ्जय और
दशार्हकैः ।	६.	दशार्ह	पाण्डुभिः ॥	९.	पाण्डुवंशी वीर

श्लोकार्थ—भोज, वृष्णि अन्धक, मधु, शूरसेन, दशार्ह, कुरु, सृञ्जय और पाण्डुवंशी वीर निरन्तर भगवान् की लीलाओं का आदर के साथ प्रशंसा करते रहते थे ॥

चतुःषष्टितमः श्लोकः

स्निग्धस्मितेक्षितोदारैर्वाक्यैर्विक्रमलीलया ।
नृलोकं रमयामास मूर्त्या सर्वाङ्गरम्यया ॥६४॥

पदच्छेद— स्निग्ध स्मित ईक्षित उदारैः वाक्यैः विक्रम लीलया ।
नृलोकम् रमयामास मूर्त्या सर्वाङ्ग रम्यया ॥

शब्दार्थ—

स्निग्ध	१.	भगवान् श्रीकृष्ण प्रेम भरी	लीलया	७.	लीला और
स्मित	२.	मुसकान	नृलोकम्	११.	मनुष्य लोक को
ईक्षित	३.	मधुर चितवन	रमयामास	१२.	आनन्दित कर देते थे
उदारैः	४.	उदार	मूर्त्या	१०.	शरीर से
वाक्यैः	५.	वचन	सर्वाङ्ग	८.	सर्वाङ्ग
विक्रम ।	६.	पराक्रमपूर्ण	रम्यया ॥	९.	सुन्दर

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण प्रेम भरी मुसकान, मधुर चितवन, उदार वचन, पराक्रम पूर्ण लीला और सर्वाङ्ग सुन्दर शरीर से मनुष्य लोक को आनन्दित कर देते थे ॥

पञ्चषष्टितमः श्लोकः

यस्याननं मकरकुण्डलचारुकर्ण-
भ्राजत्कपोलसुभगं सविलासहासम् ।
नित्योत्सवं न ततृपुर्दृशिभिः पिबन्त्यो
नार्यो नराश्च मुदिताः कुपिता निमेश्च ॥६५॥

पदच्छेद— यस्य आननम् मकर कुण्डल चारु कर्ण भ्राजत् कपोल सुभगम् सविलास हासम् । नित्य उत्सवम् न ततृपुः दृशिभिः पिबन्त्यः नार्यः नराः च मुदिताः कुपिताः निमेः च ॥

शब्दार्थ—

यस्य	१.	जिन भगवान् के	नित्य उत्सवम्	८.	निरन्तर आनन्द से युक्त
आननम्	९.	मुख कमल को	न ततृपुः	१३.	तृप्त नहीं होते थे (तथा)
मकर कुण्डल	२.	मकराकृति कुण्डलों से	दृशिभिः पिबन्त्यः	१०.	नेत्रों से पीते हुए
चारुकर्ण	३.	सुन्दर कानों को	नार्यः	१२.	नारी
भ्राजत्	४.	कान्ति से	नराः च	११.	नर और
कपोल	६.	कपोल तथा	मुदिताः	१४.	प्रसन्न होते थे और
सुभगम्	५.	सुन्दर	कुपिताः	१६.	क्रुद्ध भी होते थे
सविलासहासम् ।	७.	विलास पूर्वक हँसी वाले	निमेः च ॥	१५.	पलकों के गिरने से

श्लोकार्थ— जिन भगवान् के मकराकृति कुण्डलों से सुन्दर कानों की कान्ति से सुन्दर कपोल तथा विलास पूर्वक हँसी वाले निरन्तर आनन्द से युक्त मुखकमल को नेत्रों से पीते हुए नर और नारी तृप्त नहीं होते थे, प्रसन्न होते थे और पलकों के गिरने से क्रुद्ध भी होते थे ॥

षट्षष्टितमः श्लोकः

जातो गतः पितृगृहाद् व्रजमेधितार्थो
हत्वारिपून् सुतशतानि कृतोरुदारः ।
उत्पाद्य तेषु पुरुषः क्रतुभिः समीजे
आत्मानमात्मनिगमं प्रथयञ्जनेषु ॥६६॥

पदच्छेद— जातः गतः पितृ गृहात् व्रजम् एधित अर्थः हत्वा रिपून् सुत शतानि कृत उरुदारः । उत्पाद्य तेषु पुरुषः क्रतुभिः समीजे आत्मानम् आत्मनिगमम् प्रथयन् जनेषु ॥

शब्दार्थ—

जातः	२.	अवतार लेकर	उत्पाद्य	११.	उत्पन्न करके
गतः	४.	चले गये	तेषु	१४.	उनमें
पितृगृहात्	३.	पिता के घर से	पुरुषः	१.	भगवान् श्रीकृष्ण ने
व्रजम् एधित अर्थः	५.	गोकुल में प्रयोजन वश	क्रतुभिः	१५.	यज्ञों द्वारा
हत्वा	७.	मार कर	समीजे	१७.	यजन किया
रिपून्	६.	शत्रुओं को	आत्मानम्	१६.	अपना
सुत	१०.	पुत्रों को	आत्मनिगमम्	१३.	अपनी वाणी रूप
शतानि	९.	सैकड़ों	प्रथयन्	१४.	विस्तार करते हुए वेदों का
कृतउरुदारः ।	८.	करके बहुत स्त्रियों से विवाह	जनेषु ॥	१२.	लोगों में

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण अवतार लेकर पिता के घर से चले गये । प्रयोजन वश शत्रुओं को मारकर बहुत स्त्रियों से विवाह करके सैकड़ों पुत्रों को उत्पन्न करके लोगों में अपनी वाणी रूप वेदों का विस्तार करते हुए यज्ञों द्वारा अपना ही यजन किया ॥

सप्तषष्टितमः श्लोकः

पृथ्व्याः स वै गुरुभरं क्षपयन् कुरूणा-
मन्तःसमुत्थकलिना युधि भूपचम्वः ।
दृष्ट्या विधूय विजये जयमुद्विघोष्य
प्रोच्योद्धवाय च परं समगात् स्वधाम ॥६७॥

पदच्छेद—पृथ्व्यां सः वै गुरुभरम् क्षपयन् कुरूणाम् अन्तः समुत्थ कलिना युधि भूप चम्वः ।
दृष्ट्या विधूय विजये जयम् उद्विघोष्य प्रोच्य उद्धवाय च परम् समगात् स्वधाम ॥

शब्दार्थ—

पृथ्व्याः	११.	पृथ्वी का	दृष्ट्या	९.	दृष्टि से ही
सः वै	१.	वे भगवान् निश्चित ही	विधूय	१०.	नाश करके
गुरु भरम्	१४.	बहुत बड़ा भार	विजये	१४.	विजय होने पर
क्षपयन्	१३.	हलका करके (और)	जयम् उद्विघोष्य	१५.	जय घोष कराकर
कुरूणाम्	२.	कौरव और पाण्डवों के	प्रोच्य	१८.	उपदेश करके
अन्तः	३.	बीच	उद्धवाय	१९.	उद्धव को
समुत्थ	४.	उत्पन्न	च	१६.	तथा
कलिना	५.	कलह से	परम्	२०.	परम
युधि	६.	युद्ध में	समगात	२२.	चले गये
भूप	७.	राजाओं की	स्वधाम ।	१९.	अपने धाम को
चम्वः ॥	८.	सेनाओं की अपनी			

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने निश्चित ही कौरव और पाण्डवों के बीच उत्पन्न कलह से युद्ध में राजाओं की सेनाओं का अपनी दृष्टि से ही नाश करके पृथ्वी का बहुत बड़ा भार हलका करके और विजय होने पर जयघोष कराकर तथा उद्धव को उपदेश करके अपने परम धाम को चले गये ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां वैयासिक्यामष्टादशसाहस्र्यां संहितायां
नवमे स्कन्धे श्रीसूर्यसोमवंशानुकीर्तने यदुवंशानुकीर्तनं नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥२४॥

